CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

3590
0152 mN44
G0.3
Bhargava, Dularelal, Ed
Sudha.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

0152mN44
G0.3

3590

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
(LIBRARY)
JANGAMAWADIMATH, VARANASI

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc. No. 3590

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माघ, २०७ तु० सं०
(FEBRUARY, 1930)
वर्ष ३; खंड २] [संख्या १; पूर्ण संख्या ३१

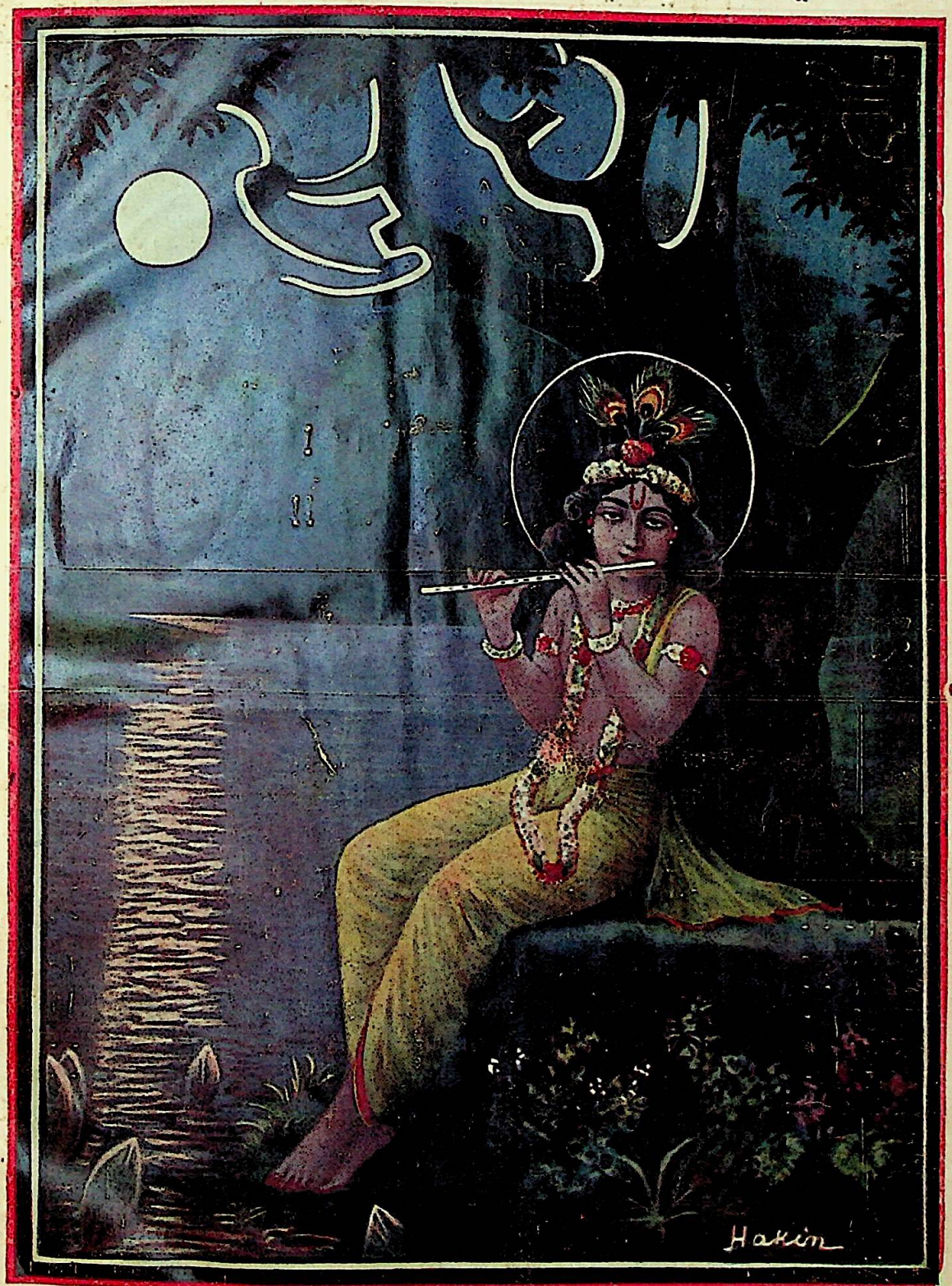

३१ मार्च तक ग्राहक बननेवालों को सुधा ५॥) में और हमारी पुस्तकें २५) सैकड़ा कमीशन पर मिलेंगी।

संपादक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
श्रीरूपनारायण पांडेय

साधारण संस्करण
वार्षिक मूल्य ६॥)
छमाही मूल्य ३॥)
एक प्रति का ॥=)

राजसंस्करण
वार्षिक मूल्य १०)
छमाही मूल्य ५)
एक प्रति का १)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित

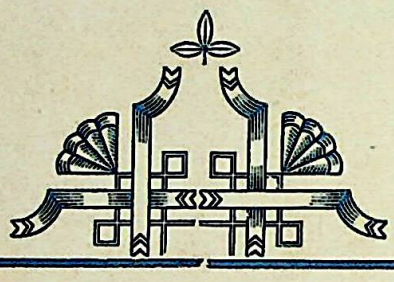

बेकारों के लिये स्वर्ण-संयोग !

धनियों के लिये अपूर्व अवसर !!

शाखाओं और एजेंसियों का आयोजन !!!

गंगा-पुस्तकमाला की पुस्तकें भारत के कोने-कोने में प्रसिद्ध हैं। सुदूरवर्ती मद्रास, बलोचिस्तान, नैपाल, आसाम, ब्रह्मा, फ़िजी तथा जर्मनी तक से हमारी पुस्तकों की धड़ाधड़ माँगें आ रही हैं। इसीलिये

ग्राहकों की सुविधा के विचार से

भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत के प्रसिद्ध नगरों में हम अपनी एजेंसियाँ, सोल एजेंसियाँ और शाखाएँ खोलना चाहते हैं। अतएव इस पृष्ठ पर इधर-उधर, दोनो ओर, लिखे हुए या अन्य नगरों में जो सज्जन आधा रुपया लगाकर हमारे साझे में या (ज़मानत देकर) मासिक वृत्ति पर हमारी शाखा अथवा एजेंसी का भार लेना चाहें, वे शीघ्र ही हमें पत्र लिखें। अधिक-से-अधिक रुपया कमाने के इस अवसर को न चूकें !

नगरों के नाम	
कलकत्ता	-
पटना	- - -
मुज़फ़्फ़रपुर	-
बनारस	- -
कानपुर	-
दिल्ली	*
लाहौर	-

नगरों के नाम	
प्रयाग	- - -
आगरा	- - -
शिमला	-
मंसूरी	†
नैनीताल	
जबलपुर	- -
बंबई	- - -

* एजेंसियाँ खुल गईं।

† केवल गर्मियों के लिये।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीः

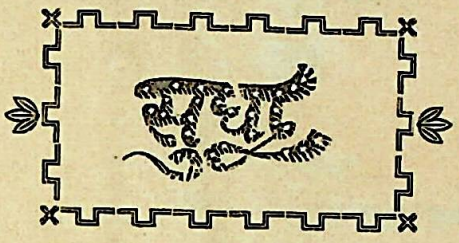

राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक

मासिक पत्रिका

वर्ष ३, खंड २

माघ-आषाढ़, २०७ तुलसी-संवत् (१९८६-८७ वि०)

फ़रवरी-जुलाई, १९३० ई०

संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

वार्षिक मूल्य ६॥)] [छमाही मूल्य ३॥)

राजसंस्करण १०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

0152mNAA
G0.3

मुद्रक तथा प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव, अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-
कार्यालय और गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JAINAMANDIR
LIBRARY
Jangamwadi Math, VARANASI
Acc. No.....3590
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेख-सूची

१—पद्य

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
१.	अनुभूति	श्रीयुत "वीरात्मा"	१८१
२.	अनंत शृंगार	प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा "कुमार" एम्० ए०... ...	२६
३.	आगमन	पं० पद्मकांत मालवीय	१५७
४.	आत्मानुभूति	स्वर्गीय श्रीकौशलेंद्रजी राठौर	६१३
५.	आँखें	पं० जगदंबाप्रसाद मिश्र "हितैषी"	३७३
६.	उनसे	कुमारी लीलावती "सत्य" बी० ए०	५११
७.	गजेंद्र !	पं० रमाशंकर मिश्र "श्रीपति"	२६५
८.	गीत	पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" ..१, २६५, ३१२, ३६७, ४६३ और	६६४
९.	"टूटी वीणा"	कुमारी रामेश्वरीदेवी गोयल बी० ए०	३०७
१०.	टूटे तार	पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"	१२६
११.	द्विदल	श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद"	१४६
१२.	निराशामय आशा	कुमारी रामेश्वरीदेवी गोयल बी० ए०	५३७
१३.	निवेदन	श्रीयुत "गुलाब"	६२७
१४.	पहेली	श्रीयुत "वीरात्मा"	६१३
१५.	प्रथम परिचय	श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद"	५५
१६.	प्रभाती	श्रीयुत "गुलाब"	४१८
१७.	बाँसुरी	बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०	१२६
१८.	महारानी लक्ष्मीदेवी	श्रीयुत द्वारकाप्रसाद गुप्त "रसिकेंद्र"	६८७
१९.	'मालिक' से—	श्रीयुत "वीरात्मा"	२४६
२०.	विनय	कुमारी कौशल्यादेवी स्नातिका	६८७
२१.	सनाथ	बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०	५०१
२२.	स्मृति	पं० रामनरेश त्रिपाठी	२४६
२३.	स्वतंत्रता का स्वागत ! ...	पं० हरिशंकर शर्मा (संपादक आर्यमित्र)	४३४

२—गद्य

१.	अग्नि	अवधवासी लाला सीताराम बी० ए०	३७७
२.	अमेरिका की कुछ आततायी संस्थाएँ	बाबू वृंदावनदास बी० ए०, एल्-एल्० बी०... ...	५०२
३.	इटली की सैनिक प्यास ...	श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा	६६०
४.	कर्तव्य और प्रायश्चित्त (कहानी) ...	श्रीयुत नंदलाल वर्मा	३००
५.	कनपुरिया क्षत्रियों की उत्पत्ति ...	पं० चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०... ...	५१
६.	कला का वर्गीकरण	पं० अवध उपाध्याय	३६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
७.	कसौटी (कहानी)	बाबू रामचंद्र टंडन एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	१६०
८.	कुसुम-कुंज...	श्रीरामअवध द्विवेदी गजपुरी बी० ए०, श्रीशिवनंदनसहाय, श्रीकेदारनाथ मिश्र "प्रभात", श्रीराजेश्वरीप्रसाद, श्रीयुत "निराला", श्रीवीरमणिप्रसाद उपाध्याय बी० ए०, साहित्याचार्य, श्रीमोतीलाल लाठ, श्रीदामोदरसहायसिंह एल्० टी०, "कवि-किंकर", श्री० ईश्वरीदत्त जोशी बी० ए०, श्री० सिद्धनाथ माधव आगरकर 'निरंजन' बी०ए०, श्री० विश्वनाथप्रसाद एम्० ए०, श्री० नवनिहालसिंह, 'ग्राम्य-साहित्य-संघ', प्रयाग, श्री० लज्जाराम मेहता, श्री० शंकरराव जोशी, श्री० शिव-शेखर द्विवेदी, श्री० रत्नांबरदत्त चंदोला, श्री० रामसिंहासनसिंह, श्री० उमेशचंद्र पंत, श्री० लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, श्री० सावित्रीदेवी गर्ग, श्री० पद्मकांत मालवीय, श्री० सूर्यनारायण व्यास, श्री० कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', श्री० शांतिप्रसाद वर्मा, श्री० रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी०, श्री० रसिकरंजन रतूड़ी, मुंशी ज़हूरबख़्श और श्रीबाबूलाल भार्गव "कीर्ति" बी० ए० ... ६७, १३६, ३१५, ४३८, ५५५ और ६८६
९.	ख़लीफ़े और उनका जीवन ...	श्रीराजेश्वरप्रसाद-नारायणसिंह बी० ए०	१७८
१०.	गृह-चिकित्सा	श्रीचतुरसेन शास्त्री, श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव, श्रीमती कृष्णवती-देवी श्रीवास्तव ... ६१, २२१, ३४२, ४७०, ५८२ और ७१४	
११.	गुरुकुल काँगड़ी का क्रीड़ा-विभाग (सचित्र)...	श्रीसर्वमित्रजी, कुल-मंत्री गुरुकुल-विश्वविद्यालय ...	३८१
१२.	.....चला हंस की चाल (कहानी)	श्रीयुत ऋषभचरण	५२७
१३.	जयपुर की जानने योग्य ज़रूरी बातें	पं० हनूमान शर्मा	४०५
१४.	जलप्रपात द्वारा बिजली ...	पं० दयाशंकर दुबे, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, अर्थ-शास्त्र-अध्यापक, प्रयाग-विश्वविद्यालय	४८
१५.	ज्योतिर्मयी (कहानी)	पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"	१५१
१६.	डाका (कहानी)	श्रीयुत कृष्णानंद गुप्त	३६०
१७.	दुर्भाग्य ! (कहानी)	श्रीयुत "गुलाब"	६७४
१८.	दो भाई (कहानी)	श्रीयुत भैयालाल जैन एच्० एम्० बी०	१७३
१९.	नमक	श्रीयुत मोहनलाल बड़जात्या	३६८
२०.	नोट की चोरी (कहानी) ...	बाबू कृष्णानंद गुप्त	२१
२१.	पद्मा और लिली (कहानी) ...	पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"	४१
२२.	परिवर्तन (कहानी)	प्रोफ़ेसर बाबूराम सक्सेना एम्० ए०	४१०
२३.	प्रसादजी की एक कहानी ...	श्रीयुत कृष्णानंद गुप्त	५४१
२४.	पाक-शास्त्र...	श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव, श्रीमती कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव और श्रीमती कमलादेवी चतुर्वेदिन	८६, २१७, ३३८, ४६६, ५७८ और ७१०
२५.	पुस्तक-परीक्षा	श्रीयुत "निराला", श्रीसुधींद्र वर्मा, पं० आद्यादत्त ठाकुर, श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा, श्रीयुत कालिदास कपूर एम्० ए० और श्रीअचलेश्वरनाथ व्यास ... ६८, २३६, ३४४, ४७१, ५८४ और ७१५	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
२६.	फटा पत्र (कहानी)	श्री० पं० गोविंदवल्लभ पंत	६१४
२७.	फूलवालों की सैल (कहानी) ...	आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	२५८
२८.	ब्राह्मण-सत्ता का इतिहास ...	श्रीरमेशनंदनसहाय एम्० ए०	२५०
२९.	ब्रिटिश-पार्लामेंट के सदस्यों की दशा	श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा	४१५
३०.	बैल (कहानी)	बाबू सियारामशरण गुप्त	५४७
३१.	भारत और जापान	पं० लक्ष्मीनारायण-दीनदयालु अवस्थी	२६२
३२.	भारतीय धंधों का ह्रास ...	श्रीयुत सत्यप्रकाश एम्० एस्-सी०	१८२
३३.	मा (कहानी)	श्रीयुत "गुलाब"	५०५
३४.	मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह	साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ .२६६, ४२५, ५१२ और	६३८
३५.	मेरा प्रवास (सचित्र) ...	श्रीयुत कृपानाथ मिश्र (लंदन से)	४९४
३६.	मेस्मेरिज्म	श्रीयुत मूलचंद्र शुक्ल, मेस्मेरिज़्म-मास्टर	५३८
३७.	मोम का पत्थर (कहानी) ...	श्रीयुत ऋषभचरण	६३३
३८.	मोह-पाश (कहानी)	श्रीरामचंद्र टंडन बी० ए०, एल्-एल्० बी०... ...	६१
३९.	रहस्य-पूर्ण प्राच्य	पं० देवीदत्त शुक्ल	२८८
४०.	राज्य-क्रांति क्यों होती है ? ...	श्रीयुत अर्जुनप्रसादसिंह विद्यालंकार बी० ए०, बी० सी० ...	१८७
४१.	राष्ट्र-भाषा और हिंदी	श्रीयुत कामताप्रसाद गुरु	२८२
४२.	रूस में सहयोग-समिति-आंदोलन ...	पं० देवव्रत शास्त्री	२१६
४३.	ललित कला	श्रीचंद्रनारायण सक्सेना बी० ए०, साहित्य-भूषण और श्रीसुधींद्र वर्मा बी० ए०	२०९, ३२८ और ५६३
४४.	लाहौर-कांग्रेस	आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	१३०
४५.	वर्ण-व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप	श्रीयुत संतराम बी० ए०	२९२
४६.	वाममार्ग	साहित्य-भूषण किशनलाल शरमोदे विशारद ...	१६५
४७.	व्यायाम	श्रीयुत गणेशदत्त शर्मा गौड़ 'इंद्र' ...३३३, ४५९ और	५६९
४८.	विश्व-व्यापी शांति पर एक दृष्टि ...	साहित्य-वाचस्पति बाबू बैजनाथ कपूर बी० ए०, विशारद...	५६
४९.	विज्ञान-वैचित्र्य	श्रीयुत रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी० और श्रीयुत नाथूराम शुक्ल ... ७३, २०४, ३२४, ४४७, ५५९ और	६९६
५०.	व्यंग्य-विनोद	श्रीयुत "अभ्र दूत"	७०२
५१.	शकुंतला-नाटक के क़ानूनी आधार	श्री प्रो० परमेश्वरीप्रसाद शर्मा एम्० ए०, बी० एल्० ...	५३१
५२.	शिशु-पालन	श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव और श्रीयुत अत्रिदेव गुप्त ... ८८, २१९, ३३९, ४६७, ५७९ और	७११
५३.	शिशु-शिक्षा-शैली	साहित्यशास्त्री पं० मोहनवल्लभ पंत बी० ए०, विशारद ...	४१९
५४.	श्रीवियोगी हरि	श्रीयुत सोमनाथ गुप्त बी० ए०...	३९२
५५.	समाज-सुधार	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ... ९३, २२३, ३३१, ४५६ और	७०७
५६.	समालोचना	पं० मीनाराम रंगा विशारद, बीकानेर	६५३
५७.	सम्मेलन की संवत् १९८६ की परीक्षाएँ	पं० दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ...	३०८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ
५८.	सहकारिता का सिद्धांत और इसकी व्यापकता	श्रीयुत युगलकिशोरसिंह	६६१
५९.	स्कॉटलैंड की सैर (सचित्र) ...	श्रीयुत धनीराम "प्रेम"	१
६०.	स्वर्गीय पं० श्रीधर पाठक के संस्मरण	श्रीयुत कालिदास कपूर एम्० ए०	३७१
६१.	स्वराज्य-आंदोलन और मुसलमान	मुंशी ज़हूरबख़्श हिंदी-कोविद...	१५१
६२.	स्त्री-समाज	श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव, श्रीयुत "निराला", कु० गोपालदेवी "हिंदी-प्रभाकर", श्रीमती कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव और श्रीमती मनोरमा मेहता एम्० ए० ...	७८, २१३, ४५३, ५६७ और ७१
६३.	साहित्य-सूची	... ...	१०१, २३१ ३५० और ७२०
६४.	सीना-पिरोना	श्रीमती ओमवतीदेवी	८०
६५.	सोवियट रूस का शासन ...	पं० देवव्रत शास्त्री	३०
६६.	संगीत-साधना ...	श्रीयुत लक्ष्मणदास मुनीम, रायसाहब डॉक्टर भोलादत्त काला, गढ़वाल, कु० गोपालदेवी "हिंदी-प्रभाकर" जालंधर नगर और भक्त मंगलरामजी	६५, ३१३ और ४३१
६७.	संपादकीय	...	१०२, २३२, ३५१, ४७६, ५६० और ७२१
६८.	हमारे प्रांत की कुछ समस्याएँ ...	श्रीयुत प्रोफ़ेसर धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, प्रयाग-विश्वविद्यालय इलाहाबाद	१
६९.	हृदयोद्गार	कुमारी शकुंतला गुप्ता 'हिंदी-प्रभाकर'	२८१
७०.	हिंदी में अतकांत कविता ...	श्रीयुत पं० शांतिप्रिय द्विवेदी...	६३८
७१.	हिंदी-व्याकरण	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०	१४०
७२.	क्षय-रोगी की व्यवस्था ...	श्रीयुत वैद्यराज	६८१

चित्र-सूची

क—रंगीन

संख्या	चित्र	चित्रकार	पृष्ठ
१.	उषा-स्वप्न	...श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू	६१३
२.	गढ़-कुंडार		५७२
३.	झाँसी की रानी (श्रीदुलारेलाल भार्गव के चित्र-संग्रह से)		४०५
४.	प्रसिद्ध भारतीय अभिनेता उदयशंकर ...		२४६
५.	पूजा ... श्रीमाहेश्वरीप्रसाद		२८६
६.	प्रेम का नशा...श्रीअजितकुमार बोस ...		१२६
७.	प्रेम-प्याला ...श्रीअजितकुमार घोष ...		५२५
८.	मज़ार ... श्रीकामिल लखनवी ...		७०६
९.	महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर		५७३
१०.	महात्मा गांधी (सत्याग्रह-संग्राम के सैनिक)		३२८
११.	महात्माजी के दर्शन		५१
१२.	महाराजकुमारी श्रीकमला राजा सेंधिया		६
१३.	मारवाड़-नरेश महाराज अजितसिंह (पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ की कृपा से प्राप्त) ...		२१
१४.	मुरली की मादकता...श्रीराधेश्याम भटनागर		४६
१५.	मुसोलिनि के पुत्र		५१
१६.	रमणी-रत्न श्रीमती चंद्रदेवी ...		१
१७.	लतिका (श्रीदुलारेलाल भार्गव के चित्र-संग्रह से)		३
१८.	वीर रमणी ...श्रीमाहेश्वरीप्रसाद ...		१६
१९.	वीर रमणी-रत्न श्रीमती शन्नोदेवी ...		१
२०.	श्री० एमिल जैनिंग्स ...		४

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संख्या	चित्र	चित्रकार	पृष्ठ
२१.	श्रीकृष्ण और व्याध...	श्रीयुत श्रीराम, गवर्नमेंट स्कूल ऑफ़् आर्ट्स ऐंड क्राफ़्ट्स, लखनऊ	१
२२.	श्रीगणेशशंकर विद्यार्थी (गोरखपुर-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति) ...		३२८
२३.	श्री० बाबा राघवदासजी		५७३
२४.	श्री० बेनितो मुसोलिनि		५४१
२५.	श्रीबैजनाथजी केडिया		४५२
२६.	श्रीमती दोलोरेस देल रियो... ...		४५३
२७.	श्रीमती पोला नेग्री		३२६
२८.	श्रीरुडोल्फ़ वैलंटिनो		३२६
२९.	सकुटुंब पं० जवाहरलाल नेहरू ...		६६
३०.	स्वर्गीय पं० श्रीधर पाठक के जीवन का एक दृश्य		४२६
३१.	स्वर्गीय श्रीकौशलेंद्रजी राठौर ...		४५२
३२.	स्व० श्रीचेतनादेवी (रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए० की धर्म-पत्नी) ...		३७
३३.	सीता का हठ...	श्रीकाशिनाथ-गणेश खातू	३७३
३४.	सुख-तरंग ...	श्रीयुत पी० एस्० मुलगाँवकर	६५३
३५.	हमारे बंदी राष्ट्रपति		४२८

ख—व्यंग्य

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१.	अलीभाइयों की दुलत्ती	५२६
२.	कामनवेल्थ का भूत	१६५
३.	ज़ोर-आज़माई	६८८
४.	तराश	६४
५.	नाक की चिंता	४३५
६.	भारतीय रक्त का सदुपयोग ...	५५४
७.	रूस और मंचूरिया	१५८
८.	लोहे का चना	४०४
९.	वारंट या निमंत्रण ?	६५२
१०.	हिंदुस्थान	३८

ग—सादे

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१.	अलार्म की पेटी और केमरा की करतूत ...	२०६
२.	आकाश से विद्युत् के गोले छोड़नेवाली 'टेसला' मीनार	२०५
३.	आप ही बुझ जानेवाला लैंप ...	६६८
४.	इन्फ़्लुएंज़ा के कीटाणुओं की क्रमानुसार वृद्धि की क़दमें	५६१
५.	एक्स-किरणों के प्रयोग से बढ़े हुए वृक्ष ...	७४
६.	एडिनबरा-कैसेल	६
७.	ओबान का एक दृश्य	१७
८.	कैलेंडर के निकट लैनी-नामक जल-प्रपात	१४
९.	कोयले में लकड़ी के चिह्न... ...	७६
१०.	कोयले से बननेवाले विभिन्न पदार्थ ...	७६
११.	कोयले से विभिन्न पदार्थ बनानेवाली मशीन	७६
१२.	ग़रीबों के बच्चे	४६४
१३.	गुरुकुलीय वाद्य-दल, बैंड बजाते समय ...	३८६
१४.	गंगा की २०० गज़ चौड़ी बरसाती धार को २ मिनट में पार करनेवाला तैराक ...	३८८
१५.	चरागाह में भेड़ों का एक झुंड ...	६
१६.	जमनास्टिक के शिक्षक प्रो० उपेंद्रजी ...	३८२
१७.	"जहाज़ो ! अपनी गति का हिसाब कार्लिस के 'नवीगोमीटर' को देते जाओ।" ...	४४७
१८.	जार्ज स्क्वायर, ग्लासगो ...	१६
१९.	जीवन को बचानेवाला	४५१
२०.	टेम्स एंबैंकमेंट के पास बैठकर 'फ़ुटपाथ' पर चित्र अंकित करनेवाले निर्धन चित्रकार। ...	४१८
२१.	(टेसला द्वारा) तीस वर्ष पूर्व बनाया हुआ बे-तार का जहाज़	२०४
२२.	'ट्रोसाख़' का एक दृश्य	११
२३.	डॉ० मिलिकान (नोबल-पुरस्कार के विजेता)	५६०
२४.	डंडी के निकट 'ब्रौटीफ़ैरी' की बालुका पर	१६
२५.	नए प्रकार की विचित्र मोटर ...	७७
२६.	नवीन पेंसिल	५६२
२७.	नीलकंठ रूमाल	८१
२८.	नेदर गेट, डंडी	१६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संख्या	चित्र	पृष्ठ
२९.	नेपाल के नए प्रधान मंत्री... ...	१२१
३०.	नेस नदी और कैसेल, इनवर्नेस ...	१५
३१.	पचास वर्ष बाद इस मोटर के द्वारा १५० मील प्रति घंटे चलना सरल हो जायगा। ...	४४८
३२.	पहले की नाक	४४९
३३.	प्रिंसेज़ स्ट्रीट का दृश्य—एडिनबरा ...	९
३४.	प्रोफ़ेसर ए० एम्० ला	६९६
३५.	पं० सत्यव्रतजी सिद्धांतालंकार, क्रीड़ाध्यक्ष	३८१
३६.	फ़ोर्थ ब्रिज, एडिनबरा	८
३७.	फ़्लोरा मैकडोनल्ड मौन्यूमेंट, इनवर्नेस ...	१५
३८.	३२ कमरे का मकान आध मील की यात्रा कर यहाँ आया।	४४९
३९.	ब्रह्मचारी ऊँची कूद का अभ्यास कर रहे हैं	३८३
४०.	ब्रह्मचारी गोला फेकने का अभ्यास कर रहे हैं	३८६
४१.	ब्रह्मचारी चंडी से तैरते आ रहे हैं ...	३८७
४२.	ब्रह्मचारी जमनास्टिक का अभ्यास कर रहे हैं	३८२
४३.	ब्रह्मचारी तकिया-युद्ध कर रहे हैं ...	३८३
४४.	ब्रह्मचारी पर्वत पर प्याल खा रहे हैं ...	३८५
४५.	ब्रह्मचारी बोटिंग का अभ्यास कर रहे हैं ...	३८४
४६.	ब्रह्मचारी लंबी कूद का अभ्यास कर रहे हैं ...	३८६
४७.	बाल्मोरल कैसेल (शाही परिवार के रहने का महल), हाईलैंड	१७
४८.	बालौख़ पर लौख़ लौमोंड में स्टीमर ...	११
४९.	मि०रैमसे मैकडोनल्ड की जन्म-भूमि लौसीमथ	१८
५०.	मोटर-गति-सूचक	५६२
५१.	मंगल-ग्रह के प्राणी(एच्०जी०वेल्स की कल्पना)	६९९
५२.	मंगल-ग्रह के पौधे(एच्० जी० वेल्स की कल्पना)	६९९
५३.	मंगल-ग्रह	७००
५४.	यह गिरजाघर अपने स्थान से पीछे हटा दिया गया।	४५०
५५.	यह मकान दो हिस्सों में काटा गया और मोटरों के द्वारा अपने नवीन स्थान पर पहुँचा। मेहमान लोग खिड़कियों में बैठे आनंद लूट रहे हैं।	४५०
५६.	युवक-वीर, राजा साहब कालाकाँकर ...	१२०
५७.	यूनियन स्ट्रीट, आबर्डीन	१८
५८.	राजाबहादुर श्रीराजा व्रजेंद्रनारायणराय पडरौना-नरेश	३६९
५९.	राजा महेंद्रप्रताप	२४७

संख्या	चित्र	पृष्ठ
६०.	रात के समय एंबैंकमेंट। बहुतेरे ग़रीब-मज़दूर यहीं, इसी के आस-पास, रात व्यतीत करते हैं।	४९७
६१.	रात में एडमिरेल्टी आर्च—ट्राफ़ाल्गर स्क्वेयर	४९९
६२.	रात में एंबैंकमेंट का पुल	४९७
६३.	राबर्ट बर्न का जन्म-भवन.. ...	८
६४.	लौख़ आख़रे के किनारे प्रसिद्ध 'ट्रोसाख़ होटल' झील में हाईलैंड की दो गाएँ खड़ी हैं	१३
६५	लौख़ कैटराइन और बेन वेनू ...	१०
६६.	लौख़ लौमोंड	१३
६७.	वाद्य-दल के कुछ सदस्य	३८९
६८.	वालेस-मौन्यूमेंट, स्टर्लिंग	१२
६९.	बिना नाविक के समुद्र की लहरों पर बे-तार के द्वारा चलनेवाला आधुनिक अँगरेज़ी जहाज़	२०१
७०.	शरीर-निर्माण-कला	५६१
७१.	"श्रद्धा क्रीड़ा-सान्मुख्य" में "तकिया-युद्ध" का दृश्य	३८७
७२.	श्रीयुत कामताप्रसाद गुरु ...	२८१
७३.	श्रीवियोगी हरि	३६१
७४.	श्रीश्वेतकेतु चतुर्दश, क्रीड़ा-मंत्री स्वदेशी क्रीड़ा-विभाग	३८२
७५.	श्रीसत्यकेतु विद्यालंकार	३५०
७६.	सठिया जानेवाली जर्मन घड़ी ...	६९८
७७.	समुद्र-स्नान बंबई का सादृश्य प्रतीत होता है	६
७८.	समुद्री बेड़े की धज्जियाँ उड़ा दीं ...	२०७
७९.	स्कॉट मौन्यूमेंट, एडिनबरा... ...	१०
८०.	स्वर्गीय डॉ० केशवदेवजी शास्त्री ...	३५१
८१.	स्टर्लिंग का पुराना पुल	१३
८२.	स्वास्थ्य-प्रदर्शन	७१
८३.	सात मील को कुल २५ मिनट में तै करनेवाला तैराक	३८८
८४.	सात मंज़िल की इमारत शिकागो में चलती दृष्टिगोचर हुई। एक ईंट नहीं हिली, तथा एक काँच नहीं टूटा।	४१०
८५.	सिनेमा-ऐक्टर चार्ल्स-चैपलिन। बहुतों ने इनका वास्तविक चेहरा न देखा होगा। इनकी मूछें बनावटी हैं।	४९६
८६.	सुरीले रागवाली	५५६
८७.	होलीरूड, एडिनबरा	१०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

१८. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखक, श्रीयुत राम-नारायण मिश्र एम्० एस्-सी० ... ७३

१९. स्त्री-समाज—[लेखक, श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव ७८

२०. सीना-पिरोना—[लेखिका, श्रीमती ओम-वतीदेवी ८०

२१. पाक-शाला—[लेखक, श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव ८६

२२. शिशु-पालन—[लेखक, श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव ८८

२३. गृह-चिकित्सा—[लेखक, श्रीचतुरसेन शास्त्री ९१

२४. समाज-सुधार—[लेखक, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ... ... ९३

२५. पुस्तक-परीक्षा—[लेखक, श्रीयुत "निराला" २८

२६. साहित्य-सूची... ... ... १०१

२७. संपादकीय १०२

शक्ति का खज़ाना यानी पृथ्वी पर का अमृत

मदनमंजरी

ये गोलियाँ दस्त साफ़ लाती हैं, प्रत्येक नस में ताक़त देती हैं, वीर्यविकार से उत्पन्न होनेवाले सब रोगों को नाबूद करती हैं और पीठ का फटना वग़ैरा रोगों को दूर करके अपूर्व बल और नया जीवन देती हैं।

क़ी० ४० गोली की १ डिब्बी का १) रु०

मेह-मर्दन चूर्ण (रजिस्टर्ड)

सुज़ाक की हुक्मी दवा क़ी० फ़ी डिब्बा १) रु०

अंड-वृद्धि-हर चूर्ण

पोता बढ़ जाने की शर्तिया दवा। फ़ी डिब्बा ३) रु०

रमणविलासिनी वटिका (रजिस्टर्ड)

वीर्य-स्तंभन करनेवाली अक्सीर दवा क़ी० डिब्बी का १) रु०

राजवैद्य नारायणजी केशवजी

हेड आफ़िस—जामनगर (काठियावाड़)

लखनऊ एजेंट—निगम मेडिकल हॉल, नाला फ़तेगंज
दिल्ली एजेंट—जमनादास कुं०, चाँदनी चौक
इलाहाबाद एजेंट—मेसर्स दुबे ब्रादर्स, चौक

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके एक ही रोज़ के तीन बार के लेप से सफ़ेद दाग़ जड़ से न छूटे, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। दाम ३) रु०।

इस जड़ी के प्रशंसापत्रों में से मैं एक को ज्यों-का-त्यों उद्धृत करता हूँ—"वैद्यवर पं० महावीरजी, आपको कोटिशः धन्यवाद। आपकी जड़ी ने जादू का-सा काम किया। रोग काफ़ूर की भाँति उड़ गया। आप-ऐसे महानुभावों को ईश्वर चिरंजीवी करें तथा आपके औषधालय की दिन प्रति दिन उन्नति होती रहे। कृपया खाने की भी दवा शीघ्र ही वी० पी० द्वारा भेजिएगा। आपका रामावतार अवस्थी, कबीरपुर, पो० हरगाम, ज़ि० सीतापुर।"

पता—वैद्यराज पं० महावीर पाठक

नं० ३२ दरभंगा (बिहार)

RAM LAL

DENTIST

27, AMINABAD PARK, LUCKNOW

All Sorts of Dental Works

ARE EXECUTED PROMPTLY

—AT—

Reasonable Rates

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि सुधा में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्र-सूची

(क) रंगीन — पृष्ठ

१. श्रीकृष्ण और व्याध—[चित्रकार, श्रीयुत श्रीराम, गवर्नमेंट स्कूल ऑफ़् आर्ट्स ऐंड क्राफ़्ट्स, लखनऊ १

२. लतिका—[श्रीदुलारेलाल भार्गव के चित्र-संग्रह से ३३

३. रमणी-रत्न श्रीमती चंद्रदेवी ... ६४

४. महाराजकुमारी श्रीकमलाराजा सेंधिया ... ६५

५. सकुटुंब पं० जवाहरलाल नेहरू ... ६६

६. श्रीमती चेतनादेवी—[बा० सीताराम जी बी० ए० की धर्मपत्नी ६७

७. वीर रमणी-रत्न श्रीमती शन्नोदेवी ... ६७

(ख) व्यंग्य

१. हिंदुस्थान ३८

२. तराश ६४

(ग) सादे

१. समुद्र-स्नान बंबई का-सा दृश्य प्रतीत होता है ६

२. पराग़ाह में भेड़ों का एक झुंड... ... ६

३. राबर्ट बर्न का जन्म-भवन ८

यदि आपको कभी हारमोनियम मोल लेना हो, तो

द्वारकीनवाला हारमोनियम ख़रीदिए।

आपको इससे सस्ते हारमोनियम मिल सकते हैं, परंतु ऐसा अच्छा कोई नहीं मिल सकता जो कि देखने में सुंदर और मधुर स्वरीले स्वर-सहित हो। आज ही हमारा सूचीपत्र मँगाइए। जहाँ तक हो सके, केवल अँगरेज़ी में ही पत्र-व्यवहार कीजिए।

Dwarkin and Son.
Inventors of Hand Harmoniums
& The oldest Music Firm In India
8, Dalhausie Square, Calcutta.

१६ साल का परीक्षित

भारत-सरकार तथा जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

१३,००० डॉक्टरों द्वारा विज्ञापित दवा की सफलता का जीता जागता प्रमाण है।

सुधासिंधु

बिना अनुपान की दवा

यह एक स्वादिष्ट और गुणकारक दवा है, जिसके सेवन करने से फ्लू, खाँसी, बैठा, दमा, शूल, संग्रहणी, अजीर्ण, पेट का दर्द, बालकों के हरे-पीले दस्त, हल्लजुएंज़ा इत्यादि रोगों को अतिशय फ़ायदा होता है। मूल्य ॥); डाक-ख़र्च १ से २ डाक ।=)

दुग्धजलेशुद्ध

पाव की दवा

बिना बलन और तकलीफ़ के दाद को २७ घंटे में आराम दिखानेवाली सिर्फ़ यही एक दवा है। मूल्य फ़ी शीशी ।); डाक-ख़र्च १ से २ डाक ।=), १० बेबे से २) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले-पतले और सदैव रोगी रहनेवाले बच्चों को मोटा और तंदुरुस्त बनाना हो, तो इस मीठी दवा को मँगाकर पिलाइए। बच्चे इसे ख़ुशी से पीते हैं। दाम फ़ी शीशी ॥); डाक-ख़र्च ।)

पूरा हाल जानने के लिये सूचीपत्र मँगाकर देखिए। मुफ़्त मिलेगा।

ये दवाइयाँ सब दवा बेचनेवालों के पास भी मिलती हैं।

सुख-संचारक कंपनी, (रु) मथुरा

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि आपने विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

४. फ़ोर्थ ब्रिज, एडिनबरा ८
५. प्रिंसेज़ स्ट्रीट का दृश्य—एडिनबरा ... ९
६. एडिनबरा-कैसेल ९
७. होली रूड, एडिनबरा (पीछे का पर्वत 'किंग-आर्क' है) १०
८. स्कॉट मौन्यूमेंट, एडिनबरा १०
९. 'ट्रोसाक्स' का एक दृश्य ११
१०. बालमोरल पर लोच लोमोंड में स्टीमर ... ११
११. लोच लोमोंड १२
१२. वालेस-मौन्यूमेंट, स्टर्लिंग १२
१३. स्टर्लिंग का पुराना पुल १३
१४. लोच आक्टर के किनारे अवस्थित 'ट्रोसाक्स होटल' झील में हाईलैंड की गौएँ खड़ी हैं ... १३
१५. कैलेंडर के निकट डेनो-नामक जल-प्रपात ... १३
१६. प्रफ़ेसर मैकडोनल्ड मौन्यूमेंट, इनवर्नेस ... १५
१७. नेस नदी और कैसेल, इनवर्नेस १५
१८. जॉर्ज स्क्वायर, ग्लासगो (म्युनिसिपल बिल्डिंग (नवीन इटालियन स्थापत्य), स्कॉट मौन्यूमेंट और युद्ध-स्मारक दिखाई पड़ रहे हैं) ... १६

पृष्ठ

१९. ओबान का एक दृश्य १७
२०. बालमोरल कैसेल (शाही परिवार के रहने का महल), हाईलैंड १७
२१. यूनियन स्ट्रीट, आबर्डीन १८
२२. सि० रैमसे मैकडोनल्ड की जन्म-भूमि लौसीमथ १८
२३. नेदरगेट, डंडी १९
२४. डंडी के निकट 'ब्रौटीफ़ैरी' की बालुका पर १९
२५. लोच कैटराइन और बेन वेनू ... २०
२६. बाबू शालचंद्र टंडन बी० ए०, एल्-एल् बी० ... ६१
२७. स्वास्थ्य-प्रदर्शन ७३
२८. एक्स-किरणों के प्रयोग से बढ़े हुए वृक्ष ... ७४
२९. कोयले में लकड़ी के चिह्न ७५
३०. कोयले से विभिन्न पदार्थ बनानेवाली मशीन... ७६
३१. कोयले से बननेवाले विभिन्न पदार्थ ... ७६
३२. नए प्रकार की विचित्र मोटर ७७
३३. नीलकंठ रूमाल ८१
३४. युवक-वीर, राजा साहब कालाकाँकर ... १२०
३५. नेपाल के नए प्रधान मंत्री १२१

इंजन मार्का की असली रेलवे
"रेग्यूलेटर वाच"

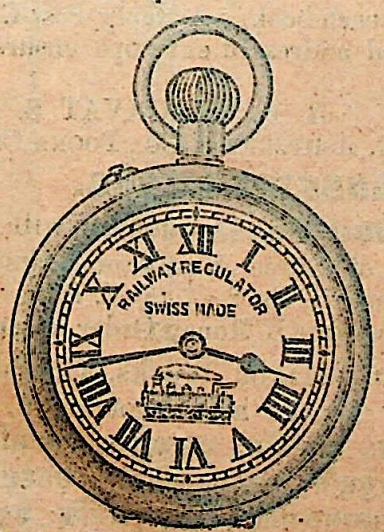

गारंटी आठ साल। उम्दा किस्म।

रेलवे के मुलाज़िम और जेंटिलमैन इसको इसलिये पसंद करते हैं कि यह बहुत ख़ूबसूरत, मज़बूत, पायदार, ठीक वक़्त देनेवाली और बिगड़ने का नाम न लेनेवाली घड़ी है। घड़ी, बक्स और ज़ंजीर-समेत ३।=) तीन रुपया छः आना। वेस्टर्न वाच एजेंसी, लुधियाना, पंजाब।

Western Watch Agency
Ludhiana (Punjab)

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि आपने विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

हिंदुस्तानी एकेडेमी संयुक्त-प्रांत द्वारा प्रकाशित व्याख्यानमाला

(१) मध्यकालीन भारत की सामाजिक अवस्था

व्याख्यानदाता—अल्लामा अब्दुल्लाह युसुफ़अली एम्० ए०, एल्-एल्० एम्०, सी० बी० ई०। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १०० पृष्ठों का मूल्य उर्दू अथवा हिंदी केवल १।)

(२) मध्यकालीन भारतीय संस्कृत

व्याख्यानदाता—रायबहादुर महामहोपाध्याय गौरीशंकर-हीराचंद ओझा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के २३० पृष्ठों और २४ हाफ़टोन चित्रों-सहित का मूल्य केवल ३)

(३) कविरहस्य

व्याख्यानदाता—महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगास्वरूप झा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १२० पृष्ठों का मूल्य केवल १।)

मिलने का पता—जनरल सेक्रेटरी हिंदुस्तानी, एकेडेमी यू० पी०, इलाहाबाद।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

RIGVEDA.

1. English translation of the Rigveda Samhita by Dr. H. H. Wilson with copions notes introduction, index etc. Library edition, complete in six vols. recently reprinted, bound in cloth, fine printing. Price Rs. 30 + postage. Offered at the concession price of Rs. 25 post free, if paid in one sum by Money Order, or at the concession price of Rs. 26—8 post free if the price is paid by instalments—Rs. seven in advance by Money Order and Rs. 3—4 with every Vol. by V. P. P. every month.

2. English translation of the Rigveda Samhita by Dr. H. H. Wilson, cheap edition, complete in two vols. Cloth-binding, fine printing. The cheap edition contains only the translation, does not contain notes, introduction etc. Price Rs. 15, concession price for the present, Rs. Ten post free. No instalments.

3. English translation of the first Ashtoka of the Rigveda by Dr. H. H. Wilson—1300 stanzas—will be sent free of cost on receipt of Twelve Annas for postage and minor expenses. Send either a Money Order or postage stamps. No. V. P. P. Every applicant must write a letter for himself stating his age and profession.

ASHTEKAR & CO.,

POONA CITY.

GRATIS GRATIS

A book which will be your life-long friend. It contains about 400 utterances of ancient Hindu Sages in Sanskrit rendered into English. The price of the book is Rs. 2—8, but for a short time we shall send this book free of cost to those who send us seven annas for postage, etc. The applicant must declare that he understands the English language well and that he likes to read books of high thoughts. He should state his age and profession also.

H. R. BHAGAVAT, B. A.
Secy., Ashtakar & Co.,
1023 Poona City.

GRATIS GRATIS

Thirteen Upanishads with Marathi translation—Kaivalya, Kanshitaki, Jobala, Maitrayani, Shvetashvatara, Atma, Amritabindu, Aguniyi, Gorbha, Pranognihotri, Sarvasara, Parama Hansa and Brahma. 250 pages. Will be sent free of cost on receipt of six annas for postage etc. The applicant must declare that he can read and understand the Marathi language at least tolerably.—Ashtekar and Co., Poona City. 10283

VEDANTA BOOKS AT CHEAP PRICES.

1. *Katha upanishad* कठोपनिषत् Sanskrit text, word for word Meaning, English translation, Shankara Bhashyaw in Sanskrit, English translation of the Bhashyaw and notes. Regular Price Rs. 2—8 + postage.

2. **Patanjala Yoga Darshana** पातंजल-योग-दर्शन Sanskrit text with English translation and notes. Rs 2—8 + postage.

3. **Vedanta-Stotra-Sangraha** वेदान्त-स्तोत्र-संग्रह—mainly of Shankaracharya with English trans. Rs. 2—8 + postage.

4. **Viveka-chudamani** विवेकचूडामणि of Shankaracharya with English trans. and notes, Rs. 2—8 + postage.

For a short time, we are offering these four books cheap on condition that money is sent either by Money Order or in postage stamps.—All four books for Rs. 3—8 post free; any three for Rs. 2—8 post free; any two for Rs. 1—8 post free; and any one for Rupee One post free.

NOTE.—Those who want the books by V. P. P. must be ready to pay Rs. 2—8 + postage for each book. A Reply Post Card or a stamped addressed envelope ensures a reply.

H. R. BHAGAVAT B. A.
SECY. ASHTEKAR & CO., POONA CITY.

SANSKRIT BOOKS.

Bhagavad-Geeta भगवद्गीता with the Bhashyaw of Shree Shankaracharya in original Sanskrit, Rs. 2—7 by V. P. P. Rs. Two, post free if Money Order is sent.

प्रकरणग्रंथाः । Minor Works. Contains 30 minor works and Stotras, *e. g.*, अपरोक्षानुभूतिः, आत्मबोधः, वाक्यवृत्तिः, स्वात्मनिरूपणम्, अद्वैतानुभूतिः, योगतारावली, शतश्लोकी, सर्ववेदान्तसिद्धान्तसारसंग्रहः, विवेकचूडामणिः, उपदेशसाहस्री, विष्णुसहस्रनामभाष्यम्, सनत्सुजातीयभाष्यम्, आत्मानात्मविचारः, वेदान्तस्तोत्राणि, भक्तिस्तोत्राणि, etc Rs. 4—8 by V. P. P.

Rs. 4 post free if Money Order is sent.

ASHTEKAR & Co.,

SADASHIVA PETH, POONA CITY.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

❀ गीत ❀

दृगों की कलियाँ नवल खुलीं।
रूप-इंदु से, सुधा-बिंदु लह,
रह-रह और तुलीं।

प्रणय-श्वास के मलय-स्पर्श से,
हिल-हिल हँसतीं चपल हर्ष से;
ज्योति-तप्त-मुख तरुण वर्ष के
कर से प्रखर धुलीं।

नहा स्नेह का सजल सरोवर,
श्वेत-वसन लौटीं सलाज घर;
अलख-सखा के ध्यान-लक्ष्य पर,
डूबीं अमल घुलीं।

—"निराला"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीकृष्ण और व्याध

[चित्रकार—श्रीयुत श्रीराम, गवर्नमेंट स्कूल ऑफ़् आर्ट्स ऐंड क्राफ़्टस, लखनऊ]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

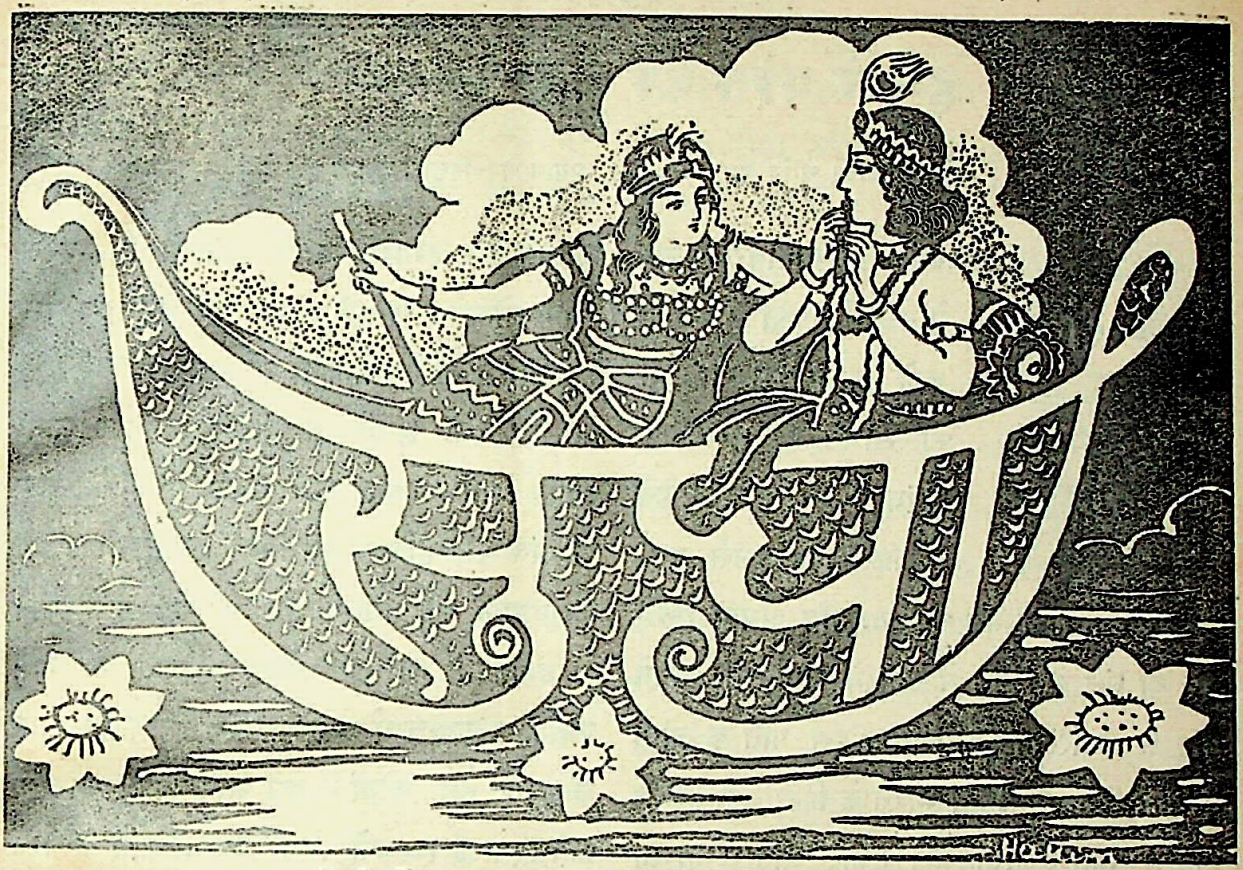

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष ३ खंड २	माघ, ३०७ तुलसी-संवत् (१९८६ वि०)— फ़रवरी, १९३०	संख्या १ पूर्ण संख्या ३१

गीत

[श्रीयुत "निराला"]

मेरे प्राणों में आओ।
शत-शत शिथिल भावनाओं के
उर के तार सजा जाओ।
गाने दो प्रिय मुझे भूलकर
अपनापन, अपार जग सुंदर;
खुली करुण उर की सीपो पर
स्वाती-जल नित बरसाओ।

मेरी मुक्ताएँ प्रकाश में
चमकें अपने सहज हास में;
उनके चंचल भ्रू-विलास में
रूप-रंग-रस सरसाओ।
मेरे स्वर की अनल-शिखा से
जल जाए जग जीर्ण दिशा से;
हे अरूप, नव-रूप-प्रभा से
नित नव-नव छवि दिखलाओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारे प्रांत की कुछ समस्याएँ

[श्रीयुत प्रोफ़ेसर धीरेंद्र वर्मा एम्० ए०, प्रयाग-विश्वविद्यालय, इलाहाबाद]

युक्त-प्रांत का वातावरण कुछ ऐसा है कि यहाँ के रहने-वाले संसार के संबंध में तो सोचते हैं, भारत के संबंध में भी सोच सकते हैं किंतु फिर उससे उतर-कर एकसाथ अपने शहर या गाँव अथवा बिरा-दरी या धंधे के संबंध में सोचने लगते हैं। अपने प्रांत के आस्तित्व को जितना इस प्रांत के लोगों ने भुला दिया है, उतना भारत के किसी भी अन्य प्रांत ने नहीं भुलाया है। हमारे प्रांत में जो भी काम होता है, वह "अखिल भारतवर्षीय" दृष्टि-कोण से होता है। प्रांतीयता का भाव साधारण-तया आता ही नहीं है और यदि कभी आता भी है, तो उसे संकुचित भावना कहकर दुरदुरा दिया जाता है। वास्तव में इस उपेक्षा का कारण हमारा अज्ञान है।

भारतवर्ष के प्रांत संसार के अन्य भागों के देशों के समान हैं। उदाहरण के लिये अपना संयुक्त-प्रांत ही लीजिए। यह योरप अथवा एशिया की किसी भी महान् शक्ति से जन-संख्या अथवा क्षेत्रफल में घटकर नहीं है। संयुक्त-प्रांत की तुलना इन बातों में फ्रांस, जर्मनी, इटली, इँगलैंड, जापान तथा टर्की आदि किसी से भी की जा सकती है। सच पूछिए, तो सच्चा देश तो हमारा प्रांत ही है। हमारा जीवन प्रांत के वातावरण में ही ओतप्रोत रहता है। भारतवर्ष अथवा संसार के संबंध में तो कभी-कभी समाचार-पत्रों में पढ़ लेते हैं। ऐसी स्थिति में प्रांत के संबंध में इतनी उपेक्षा क्यों? व्यक्ति तथा संसार के बीच में देश या प्रांत स्वाभाविक माध्यम है। जिसकी उपेक्षा बिना अपने को हानि पहुँचाए नहीं की जा सकती।

हमारे प्रांत की सभी समस्याएँ उलझी पड़ी हैं; क्योंकि काव्य-चर्चा तथा भारतीय राजनीतिक चाट के आगे हम लोगों ने इस ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया है। सबसे पहली समस्या प्रांत के नाम की है। अपने प्रांत के इस आवश्यक संस्कार के संबंध में हम लोगों ने अभी विचार तक नहीं किया है। अपने धर्म में मनुष्य के संस्कारों में नामकरण एक मुख्य संस्कार है, जो जन्म के बाद शीघ्र ही किया जाता है। शौक़ीन लोग कुत्तों को 'पीटर' तथा अपने साधारण मकान को 'लक्ष्मी-निवास' से नीचा नाम देना नहीं पसंद करते। लेकिन प्रांत के नाम के संबंध में वही सनातनी उपेक्षा!

बंगाली का अपना प्रांत बंगाल है, पंजाबी का पंजाब, गुजराती का गुजरात, उड़िया का उड़ीसा, सिंधी का सिंध, आसामी का आसाम; लेकिन हमारा प्रांत है "आगरा व अवध का संयुक्त-प्रांत" अथवा "यू०पी०", जिन नामों को न तो हमारे बच्चे, स्त्रियाँ,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गाँववाले अथवा साधारण लोग समझ ही सकते हैं और न सुविधा से ले ही सकते हैं। फिर हम अपने को क्या कहें 'संयुक्त-प्रांती' या 'यू० पी०-वाले' ? मैं भूल गया, हम लोग तो 'भारतवासी' हैं। प्रांत के नाम पर हम अपना नाम क्यों रक्खें। दूसरे प्रांतवालों के यदि बंगाली, सिंधी, गुजराती, पंजाबी आदि सुबोध नाम हैं, तो इससे क्या। सच तो यह है कि भारतवर्ष के स्वाभाविक प्रदेशों में एक हमारा ही प्रदेश ऐसा है, जिसके न तो रहनेवालों का ही कोई ठीक नाम है और न जिसके प्रांत का ही ठीक नाम है।

इस त्रुटि को दूर करना कठिन नहीं है। एक नाम ऐसा मौजूद है जिससे दूसरे प्रांत के रहनेवाले प्रायः हमें पुकारा करते हैं। हम भी अपने को कभी-कभी उस नाम से पुकार लेते हैं। विशेषतया जब हम अपने को अन्य प्रांतवालों से पृथक् करना चाहते हैं। यह नाम है "हिंदुस्तानी"। मुसलमान-काल से 'हिंदुस्तान'-शब्द का प्रयोग विशेषतया गंगा की घाटी के पश्चिमी भाग के लिये होता रहा है। कुछ दिनों से हम लोग हिंदुस्तान-शब्द का प्रयोग उत्तर-भारत तथा संपूर्ण भारत के अर्थ में भी करने लगे हैं। यदि इस शब्द का प्रयोग फिर मूल-अर्थ में करने का हम लोग निश्चय कर लें, तो हमें बहुत सुबीते से अपना तथा अपने प्रांत दोनो का सर्व-प्रिय तथा सुबोध नाम मिल सकता है। 'यू० पी०' नाम का संस्कार करके इसका नाम सूबा "हिंदुस्तान" रख दिया जाय, यहाँ के रहनेवाले 'हिंदुस्तानी' कहलाएँ और यहाँ की भाषा 'हिंदुस्तानी' है ही, जिसके 'हिंदी' और 'उर्दू' दो साहित्यिक रूप हैं। बंगाल बंगाली, पंजाब पंजाबी, गुजरात गुजराती, सिंध सिंधी के टक्कर का जोड़ हिंदुस्तान हिंदुस्तानी में मिलता है। संयुक्त-प्रांत तथा यहाँ के निवासियों के नाम के संबंध में यह मेरा प्रस्ताव विचारार्थ है। यदि इससे भी अधिक सुबोध तथा सर्व-प्रिय नाम मिल सके, तो और भी अच्छा है।

हमारे प्रांत की दूसरी समस्या उसकी सीमाओं के संबंध में है। सरकारी 'आगरा व अवध के संयुक्त-प्रांत' की सीमाएँ निर्धारित हैं किंतु इस संबंध में कुछ दिनों से तरह-तरह की कठिनाइयाँ उपस्थित हो रही हैं। कांग्रेस ने अपने प्रांत की मेरठ कमिश्नरी को दिल्ली-प्रांत में डाल दिया और अपने यहाँ किसी के कान पर जूँ भी न रेंगी। सरकारी ढंग से भी मेरठ-कमिश्नरी को दिल्ली में डाल देने के लिये एसेंबली में प्रस्ताव आनेवाला है। हमारे प्रांत के किसी भी पत्र में इस संबंध में कुछ भी विचार नहीं हो रहा है।

"वसुधैव कुटुंबकम्" आदर्श रखनेवाले लोगों के लिये एक कमिश्नरी के घटने-बढ़ने का पता चलना मुश्किल है। प्रांत के अंदर ही अवध और आगरे के प्रश्न को अक्सर छेड़ दिया जाता है और इस संबंध में अवध के लोगों में कुछ हलका-सा चाव आ जाया करता है। उड़ीसा अलग हो जाने पर बिहार के लोगों की धारणा है कि बनारस तथा गोरखपुर-कमिश्नरी का कुछ भाग उस कमी को पूरा करने के लिये मिलने में कठिनाई नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पड़ेगी। संयुक्त-प्रांत के उनके भाइयों का दिल बड़ा उदार है। फिर बनारस-गोरखपुर का भाग, सच पूछिए तो, न अवध में है और न आगरे में ही। हिंदुस्तानी मध्य-प्रांत के राजनीतिज्ञों की निगाह झाँसी-कमिश्नरी पर लगी हुई है, क्योंकि यदि कभी मराठी मध्य-प्रांत अलग हुआ, तो इस दुःख-दायी साझेदार को कमी को संयुक्त-प्रांत के झाँसी, बाँदा, हमीरपुर, जालौन के जमुना पार के ज़िलों को मिलाकर ही किया जा सकता है।

आगे-पीछे यह सब बातें एक-एक करके अवश्य उठेंगी। हम लोगों ने इस विषय पर क्या विचार किया है? हम लोग इस 'संयुक्त-प्रांत' के कितने टुकड़े करना चाहते हैं तथा इनमें से कितने टुकड़े अपने पड़ोसियों को दे देना चाहते हैं? हमारे हित या अहित की दृष्टि से हमारे प्रांत की सीमाएँ क्या रहना चाहिए? हम 'हिंदुस्तानियों' के (इस शब्द का प्रयोग मैंने अपने अर्थ में ही किया है) भविष्य की दृष्टि से यह प्रश्न अत्यंत महत्त्व-पूर्ण हैं, इसमें तो कोई संदेह ही नहीं है। हमारे समाचार-पत्रों तथा मासिक-पत्रिकाओं में कितने लेख इस संबंध में अब तक निकले हैं? अपने प्रांत के संबंध में हमारी उपेक्षा फिर स्पष्ट हो जाती है।

मेरी समझ में भारत को प्रांतों में विभक्त करने के लिये कांग्रेस का सिद्धांत अत्यंत युक्ति-संगत है। कांग्रेस के सिद्धांत के अनुसार एक भाषा बोलनेवाले जन-समुदाय का एक प्रांत होना चाहिए। कांग्रेस ने भारत का प्रांतीय विभाग इसी सिद्धांत के अनुसार किया है। केवल हिंदी-भाषा-भाषी लोगों के संबंध में इस नियम का पालन नहीं किया गया है, क्योंकि यहाँ के लोगों ने कदाचित् अपनी इच्छा ही नहीं प्रकट की। यदि पंजाब को छोड़ भी दिया जाय, तो भी इस सिद्धांत के अनुसार संयुक्त-प्रांत, बिहार, हिंदुस्तानी मध्य-प्रांत, दिल्ली तथा अजमेर का एक प्रांत हो जाना चाहिए, क्योंकि कांग्रेस के रजिस्टरों के के अनुसार भी इन सब प्रदेशों की व्यावहारिक भाषा एक हिंदोस्तानी ही है। मैं स्वयं बिहार तथा राजस्थान को भी पृथक् प्रांतों के रूप में रखना अनुचित नहीं समझता, क्योंकि जैसलमेर से भागलपुर तक का एक प्रांत सोचने की अभी हम लोगों में शक्ति नहीं है। किंतु दिल्ली-कमिश्नरी, संयुक्त-प्रांत तथा हिंदुस्तानी मध्य-प्रांत का एक में मिल जाना मुझे तो सब तरह से स्वाभाविक तथा सिद्धांत के अनुकूल प्रतीत होता है। मेरी राय में संयुक्त-प्रांत की सीमाएँ संकुचित करने के बजाय इन्हें बढ़ाने की आवश्यकता है। या यों समझिए कि समस्त हिंदी-भाषा-भाषी प्रदेशों का, जहाँ तक संभव हो, एक प्रांत के रूप में रहना अधिक हितकर होगा। यह मेरे व्यक्तिगत विचार हैं। आवश्यकता इस बात की है कि अपने प्रांत के लोग इस सीमा-संबंधी समस्या पर खूब अच्छी तरह विचार करके अपना मत निर्धारित कर लें।

अपने प्रांत को एक तीसरी मुख समस्या हिंदी-उर्दू की है। हम लोग हिंदी को अखिल भारतवर्ष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को राष्ट्र-भाषा बनाने के संबंध में सतत उद्योग कर रहे हैं। इसके लिये मदरास में हिंदी-प्रचार कर रहे हैं, आसाम में हिंदी-प्रचार कर रहे हैं, सिंध में हिंदी-प्रचार कर रहे हैं, किंतु स्वयं अपने प्रांत में हिंदी प्रचार के संबंध में हमने कितना उद्योग किया है। एक बेचारी नागरी-प्रचारिणी सभा कभी-कभी अदालतों में उर्दू के स्थान में हिंदी को रखने के लिये कुछ कर-धर लेती है, किंतु उसके उद्योग की मात्रा समुद्र में बूँद की तरह है। अपने प्रांत के समस्त पश्चिमी भाग में आज भी उर्दू का आधिपत्य है। मैं उर्दू-भाषा तथा उर्दू-साहित्य पढ़ने के विरुद्ध नहीं हूँ, किंतु मेरी धारणा तो यह है कि अपने प्रांत की जनता की शिक्षा तथा काम-काज की भाषा केवल-मात्र हिंदी या हिंदुस्तानी होना चाहिए। हिंदी जानने के अतिरिक्त यदि कोई उर्दू अथवा संस्कृत, अँगरेज़ी, बंगला, फ्रेंच आदि जानता है तो बड़ी प्रसन्नता की बात है। मेरी समझ में, मदरास और आसाम में हिंदी-प्रचार करने के पूर्व हमें अपने घर के अंदर की इस द्विभाषा-समस्या को सुलझा लेना अधिक आवश्यक है। किंतु अन्य प्रांतीय समस्याओं की तरह इस ओर भी अपने प्रांत-वासी कुछ भी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

अपने प्रांत की अनगिनती समस्याओं में से मैं यह दो-तीन, बानगी की तरह, हिंदी-भाषा-भाषी लोगों के सामने रख रहा हूँ। आशा तो नहीं है कि मैं इस संकुचित तथा व्यावहारिक विचार-परिधि के अंतर्गत अपने देशवासियों को ला सकूँगा। किंतु निराशा का भी कोई कारण नहीं है, क्योंकि आवश्यकता मनुष्य से सब कुछ करा लेती है। नवीन परिस्थिति धीरे-धीरे ऐसी होती जा रही है कि जो हम लोगों को संसार तथा भारत को भुलवाकर अपने प्रांत के संबंध में आगे-पीछे सोचने को मजबूर करेगी। कदाचित् मेरे यह विचार भी इस नवीन परिस्थिति के ही द्योतक हैं।

Royal College of Physicians and Surgeons of India. (Registered).
Member and Fellowship (M. R. C. P., M. R. C. S., M. R. C. P. & S., F. R. C. P., F., R. C. S., F. R. C. P. & S. Registered) certificate awarded to the medical Practitioners and Students. For Prospectus apply with anna stamp to the Registrar, Dayoganj Road, Dacca, Bengal.

Homoeopathic University of India (Registered by the Govt.)
Member and Fellowship certificate granted to the Homoeopathic Doctors and Students. Also H.L. M.S., H.M.B., H.M.D. & L.L.D. diploma to Successful Candidates. Apply with anna stamp to the Registrar, 21, Chota Katara, Dacca, Bengal.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्कॉटलैंड की सैर

[श्रीयुत धनीराम "प्रेम"]

जिस प्रकार भारत में कश्मीर तथा योरप में स्विट्ज़रलैंड अपनी शोभा के लिये विख्यात हैं, उसी प्रकार ग्रेट-ब्रिटेन में स्कॉटलैंड अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिये प्रसिद्ध है। कौन होगा, जिसे यहाँ के हाईलैंड की झीलें, हरीतिकामय सुंदर शैल-श्रेणी, चित्ताकर्षक झरने आदि मोहित न कर लेंगे? सर वाल्टर स्कॉट ने जिसे 'रौबरोय', 'लेडी

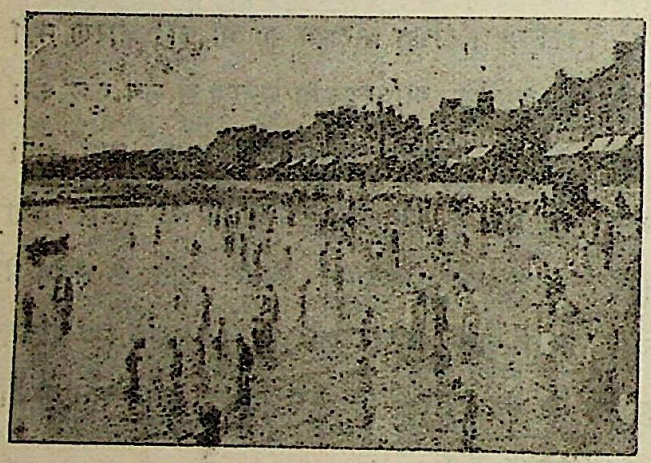

समुद्र-स्नान बंबई का सादृश्य प्रतीत होता है

ऑफ़् दी लेक', 'हार्ट ऑफ़् मिडलौदियान' आदि पुस्तकों में अपनी लेखनी द्वारा अमर कर दिया है, जिसकी कीर्ति राबर्ट बर्न, वर्ड्सवर्थ तथा स्टीवेंसन-जैसे नामी कवियों ने गाई है, जो इँगलैंड के प्रधान मंत्री मि० मैकडानल्ड तथा भारत के उपमंत्री डॉ० शील्स की जन्म-भूमि है, उस स्कॉटलैंड के भ्रमण की किसे इच्छा न होगी?

स्कॉटलैंड ग्रेटब्रिटेन का उत्तरी भाग है। इसका क्षेत्रफल केवल ३० हज़ार वर्ग मील है, तथा आबादी ५० लाख। इसका उत्तरीय दो-तिहाई भाग पर्वतीय है, अतः हाईलैंड कहलाता है। दक्षिणी एक-तिहाई पर्वतीय होते हुए भी चौरस है, अतः यह लो लैंड कहलाता है। आगे देश का एक-तिहाई खेती के योग्य है। गेहूँ की खेती बहुत कम होती है। जौ, जई, आलू तथा शलजम ही अधिक उत्पन्न होते हैं। कुछ प्रांतों में भेड़ें पाली जाती हैं, जिनके ऊन से यहाँ का बड़ा व्यापार चलता है। गाएँ भी कुछ प्रांतों में अधिक संख्या में पाली जाती हैं, जहाँ दूध, मक्खन आदि बनकर देश में चारो ओर जाता है। हाईलैंड के लोग ग़रीब तथा प्राचीन विचारों के हैं। अभी तक वे स्कॉच-भाषा बोलते हैं, यद्यपि राष्ट्र की भाषा अँगरेज़ी है। परंतु बर्ताव में ये लोग बड़े सच्चे तथा ईमानदार हैं। मछली सस्ती हैं और बहुतायत से खाई जाती हैं। अब तो चारो ओर रेल की लाइनें, नहरें तथा सुंदर अस्फ़ाल्ट की सड़कें बन गई हैं, जिनके द्वारा सारे देश में विदेशों से लाई गई वस्तुएँ पहुँचा दी जाती हैं। यात्रा के लिये सर्वत्र मोटर जारी हो गई हैं। घोड़ागाड़ी केवल सामान ढोने के काम में लाई जाती हैं। अब तो प्रत्येक कार्य मशीनों तथा बिजली से होता है। कृषि में प्रत्येक काम के लिये नूतन आविष्कृत मशीनें प्रयुक्त होती हैं। छोटे-छोटे क़स्बों में भी बिजली की रोशनी, टेलीफ़ोन आदि लगे हुए हैं। यद्यपि

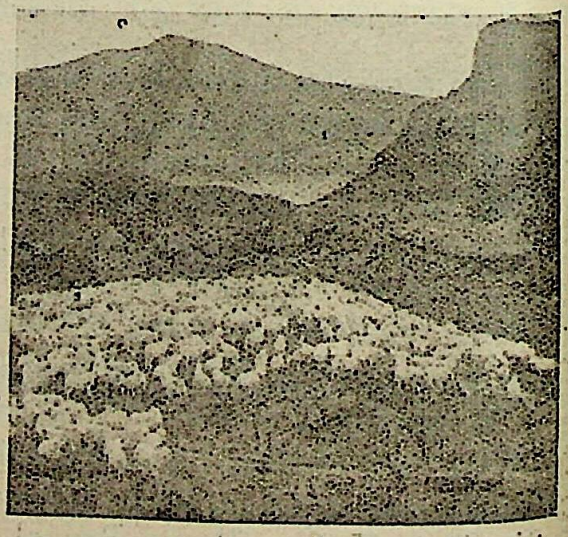

चरागाह में भेड़ों का एक झुंड

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकृति ने इन लोगों को इतनी सुविधा नहीं दी, जितनी भारतवासियों को, परंतु ये लोग अपनी बुद्धि से अपने आराम के सारे सामान इकट्ठे करने में समर्थ हुए हैं। शिक्षा चौदह वर्ष की अवस्था तक निःशुल्क तथा अनिवार्य है। लड़कियाँ उसी प्रकार शिक्षा पाती हैं, जिस प्रकार लड़के। स्कॉटलैंड में चार विश्वविद्यालय हैं—(१) सेंट ऐंड्रूज़, (२) ग्लासगो, (३) आबर्डीन, (४) एडिनबरा। पिछला तो संसार-भर में प्रसिद्ध है। यहाँ के लोग प्रोटेस्टेंट-धर्म के अनुयायी हैं; परंतु इनका चर्च इँगलैंड के चर्च से अधिक स्वतंत्र है। इँगलैंड का चर्च (Spiscopol) पादरियों द्वारा शासित होता है तथा सम्राट् उसके प्रमुख हैं। यहाँ का चर्च (Presbyterian) प्रजा द्वारा निर्वाचित एसेंबली के अधीन है। इसका प्रमुख कोई नहीं है।

जल-वायु यहाँ का बड़ा अच्छा है, परंतु सर्दी विशेष होती है। बर्फ़ गिरने लगती है। वर्षा चाहे जब हो जाती है। एक दिन में ही मौसम तीन-चार बार बदल जाता है—अभी धूप निकल रही है, अभी बादल हो गया, वर्षा होने लगी, कुछ देर में बर्फ़ गिरने लगी। स्कॉटलैंडवाले भारतीयों के विरुद्ध इतना विष नहीं उगलते, जितना इँगलैंडवाले—विशेषकर लंदनवाले। यहाँ के विश्वविद्यालयों में सारे संसार के विद्यार्थी आते हैं।

स्कॉटलैंड का इतिहास भी बड़ा मनोरंजक है। स्कॉट्स (Scots) यहाँ के आदि-निवासी नहीं हैं। यहाँ पहले कैलीडोनियन तथा पिक्ट (Caledonians & Picts) लोग रहते थे। स्कॉट लोग आयर्लैंड के निवासी हैं। इन्होंने पिक्ट लोगों को पराजित करके हाईलैंड की ओर भगा दिया, तथा आप इस देश को स्कॉटलैंड नाम देकर यहीं बस गए। इसके पूर्व इसका नाम 'कैलीडोनिया' था। जब इँगलैंड में नार्मन तथा सैक्सन लोगों का राज्य था, तो उनमें से भी कुछ आकर यहा बस गए। ये लोग सब मूर्ति-पूजक थे, तथा भिन्न-भिन्न देवतों में विश्वास करते थे। सातवीं शताब्दि में ये सब ईसाई हो गए।

इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड के राजा भिन्न-भिन्न थे। इधर हाईलैंड में छोटी-छोटी ज़मींदारियाँ प्रचलित थीं। वहाँ कोई एक शासक न था। स्कॉटलैंड तथा इँगलैंड में बीसियों युद्ध हुए। प्रत्येक देश दूसरे को पराजित करके अपना राज्य विस्तृत करना चाहता था। कभी स्कॉटलैंड पराधीन हो जाता, कभी फिर स्वतंत्र हो जाता। अंत में अभागिन मैरी का पुत्र जेम्स एलज़ाबेथ का उत्तराधिकारी निर्वाचित हुआ। तब से (सन् १६०३) इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड मिलकर एक राष्ट्र हो गए। स्कॉटलैंड को इँगलैंड के ही समान पार्लियामेंट में प्रतिनिधि भेजने, व्यापार करने आदि के अधिकार मिल गए। तबसे दोनो देश एक ही शासन के अंतर्गत हैं। परंतु स्कॉटलैंड का चर्च तथा क़ानून अब भी अलग है।

स्कॉटलैंड ३३ ज़िलों में विभक्त है। ज़िलों तथा नगरों का शासन कौंटी कौंसिलें (हमारे यहाँ के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड) तथा चुंगियाँ करती हैं। इनके सभासद सब निर्वाचित होते हैं। निर्वाचन में अनुदार-दल उदार-दल तथा साम्यवादी दल में से जिसका बहुमत रहता है, उसी दल का शासन होता है। चुंगी का चेयरमैन यहाँ लॉर्ड प्रोवोस्ट (Lord Provost) कहलाता है। इँगलैंड में उसे मेयर कहते हैं।

स्कॉटलैंड पहुँचने के लिये लंदन से दो लाइनें जाती हैं। एल्० एन्० ई० आर० न्यूकैसल, यार्क आदि होती हुई समुद्र के पूर्वी तट पर जाती है। एल्० एम्० एस्० रेलवे कारलायल (Carliole) से तीन शाखाओं में विभाजित हो जाती है। एक आयर तथा डंफ्रीस होती हुई ग्लासगो को जाती है, दूसरी कार्स-टेयर्स होकर एडिनबरा तथा तीसरी मैलरोज़ होकर एडिनबरा।

पहली लाइन में आयर तथा डंफ्रीस मुख्य स्थान हैं। आयर कवि राबर्ट बर्न की जन्म-भूमि है। आयर से दो मील पर वह झोपड़ा अब तक विद्यमान है, जहाँ कवि का शैशव व्यतीत हुआ था। इसमें कवि के अनेकों स्मृति-चिह्नों का संग्रह है। डंफ्रीस में कवि की मृत्यु हुई थी। यहाँ पर कवि का एक स्मारक भी है। यह ज़िला अपनी गायों तथा डेरियों के लिये प्रसिद्ध है।

दूसरी लाइन पर कोई विशेष दर्शनीय स्थान नहीं है। हाँ, इस प्रांत को (Ettrick Shepherd) पुस्तक ने कुछ प्रसिद्ध कर दिया है। तीसरी लाइन पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

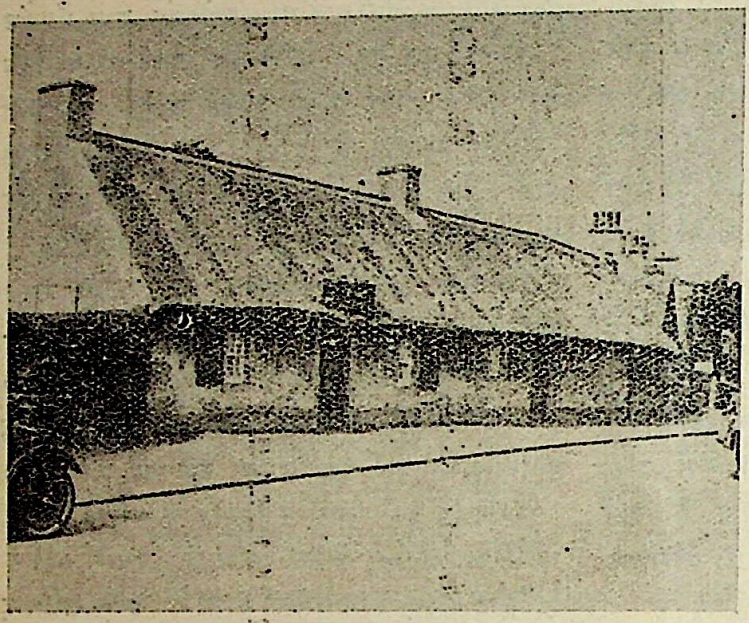

राबर्ट बर्न का जन्म-भवन

फिर हमें एक साहित्यकार के स्मृति-चिह्न मिलते हैं। संसार-प्रसिद्ध औपन्यासिक तथा कवि सर वाल्टर स्कॉट का भवन एबोट्सफ़ोर्ड (Abbotsford) इसी लाइन पर है। इसमें कवि का किया हुआ अपूर्व वस्तुओं का संग्रह है, जिसमें 'रौबरौय' की बंदूक भी है।

यहाँ से चलकर आओ एडिनबरा पहुँचता है। यह नगर स्कॉटलैंड की राजधानी है। बड़ा सुंदर तथा स्वच्छ नगर है, और इसी कारण 'आधुनिक एथेंस' कहलाता है। प्राचीन भाग में तो अब भी पुरानी इमारतें विद्यमान हैं, तथा पत्थर की ईंटों की सड़कें हैं। यहाँ अधिकतर निर्धन तथा मज़दूर लोग निवास करते हैं। नया नगर तो आदर्श-ढंग से बसाया गया है। चारो ओर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं, जो हरियाली से आच्छादित कर दी गई हैं। सड़कें बड़ी सुंदर तथा स्वच्छ हैं, और उनके दोनो ओर सुंदर एक-से मकानों की श्रेणियाँ हैं। प्रत्येक मकान के सामने एक छोटा बाग़ है। वास्तव में एडिनबरा को

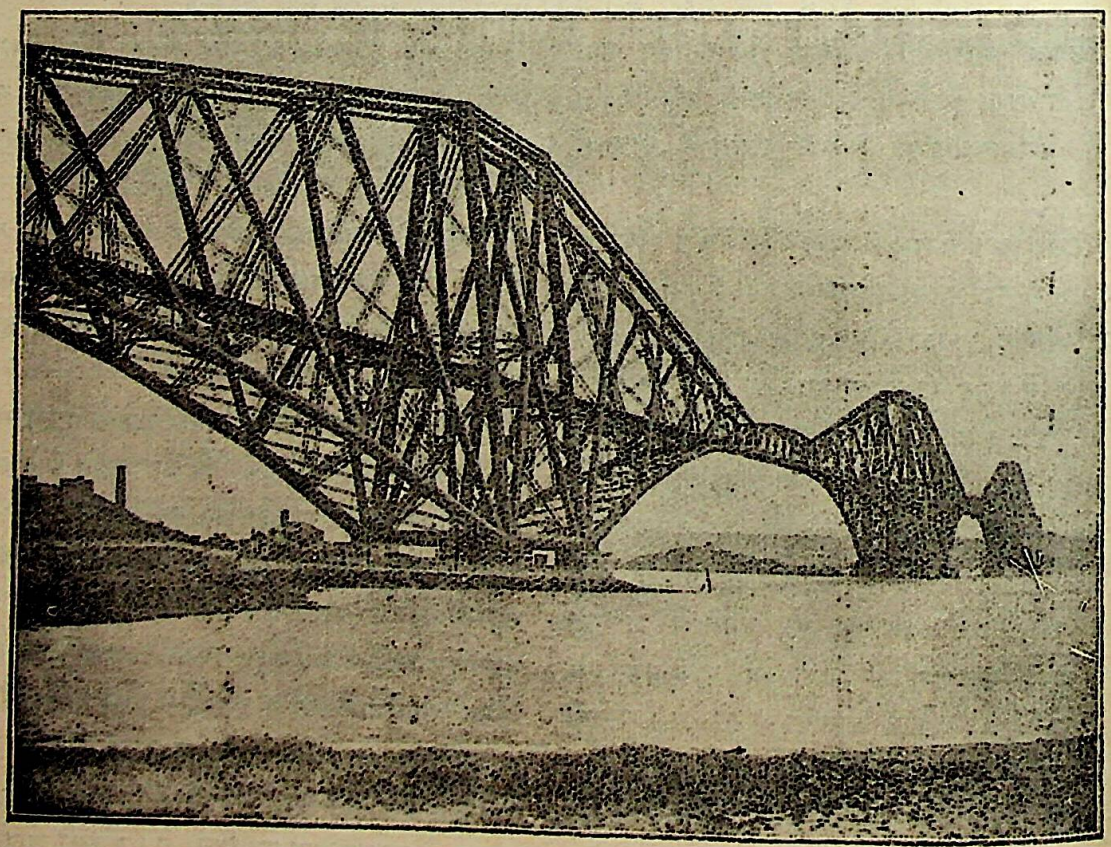

फ़ोर्थ ब्रिज, एडिनबरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक 'पार्क टाउन' कह सकते हैं। नगर के बीच में भी प्रत्येक मुहल्ले में एक-एक सुंदर पार्क है। एडिनबरा से समुद्र केवल २ मील है। यहाँ पर जो बंदरगाह है, उसे 'लीथ' कहते हैं। समुद्र में यहाँ 'फ़ोर्थ' नदी गिरती है, और उसके दहाने को 'फ़र्थ ऑफ़् फ़ोर्थ' कहते हैं। 'फ़र्थ' (firth) स्कॉच-भाषा में नदी के दहाने को कहते हैं। फ़ोर्थ के ऊपर रेल का दो मील लंबा पुल दर्शनीय है।

सबसे सुंदर स्थान, जो यात्री का ध्यान आकर्षित करता है, यहाँ की प्रिंसेज़ स्ट्रीट के एक ओर एक ऊँची पहाड़ी पर यहाँ का क़िला है। क़िले तथा सड़क के बीच में 'प्रिंसेज़ स्ट्रीट गार्डन', 'स्कॉट मौन्यूमेंट' तथा यहाँ की राष्ट्रीय चित्रशाला है।

क़िला यहाँ का बहुत प्राचीन है। इसके अंदर एक कमरे में क्वीन मेरी ने जेम्स प्रथम को जन्म दिया था, जो पीछे से स्कॉटलैंड तथा इँगलैंड, दोनो देशो का शासक हुआ। दूसरे कमरे में, जिसे Regelia कहते हैं, यहाँ के प्राचीन बादशाहों के शाही चिह्न—मुकुट, तलवारें, फटका आदि—रक्खे हुए हैं। ये सब रत्न-जटित हैं। पास ही एक बड़ा भारी हॉल है, जिसमें दरबार होता था। अब इसमें हथियार रक्खे हुए हैं। क़िले में ही स्कॉटलैंड-भर का राष्ट्रीय युद्ध-स्मारक है, जो बड़े शानदार ढंग से बनाया गया है। क़िले के सामने का मैदान अब तो परेड करने के काम में आता है; परंतु प्राचीन समय में फाँसी आदि का दंड यहीं दिया जाता था। क़िले से चारो ओर नगर का सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

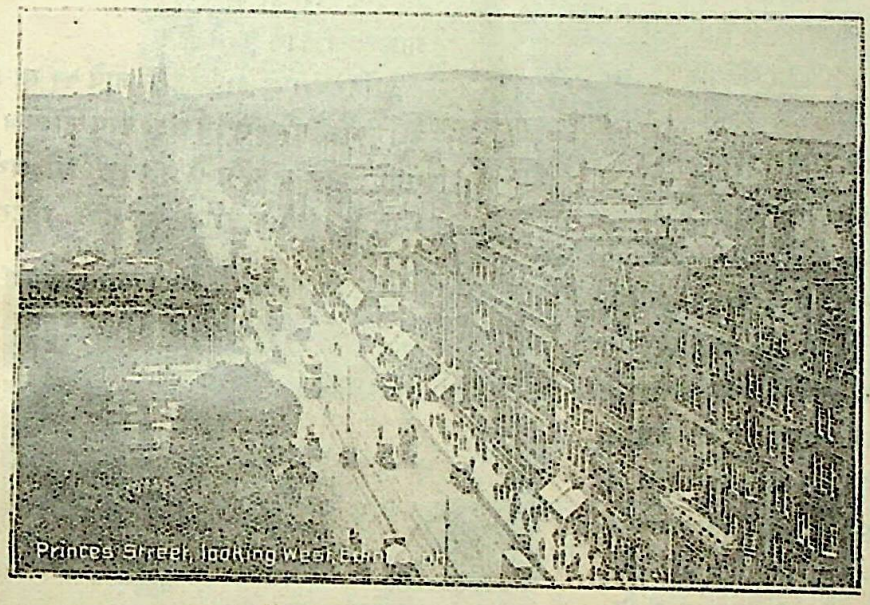

प्रिंसेज़ स्ट्रीट का दृश्य—एडिनबरा

दूसरा दर्शनीय स्थान है होलीरूड पैलेस। यहाँ मेरी रहती थी। एक ओर नीचे मेरी के पति लॉर्ड डार्नले का शयन-स्थान आदि हैं। ऊपर मेरी के शयनागार आदि हैं।

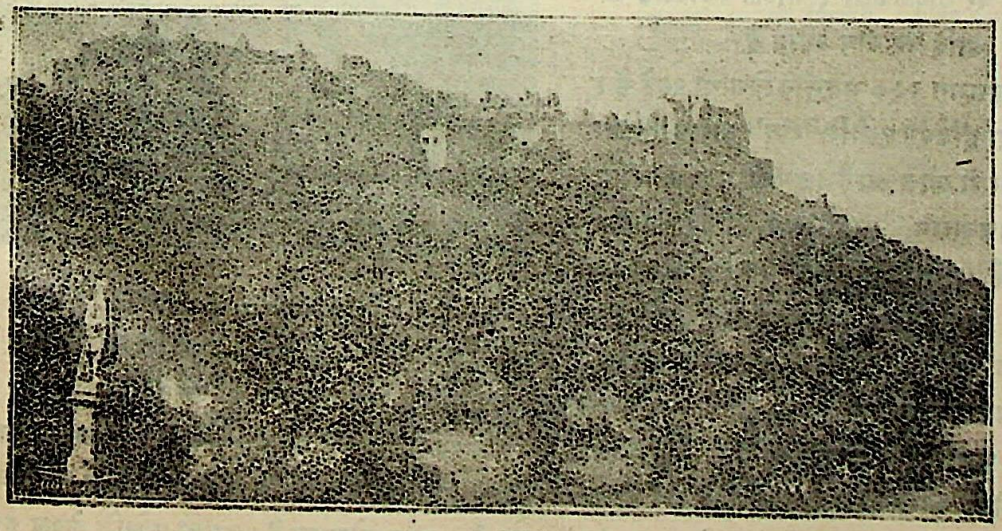

एडिनबरा-कैसेल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

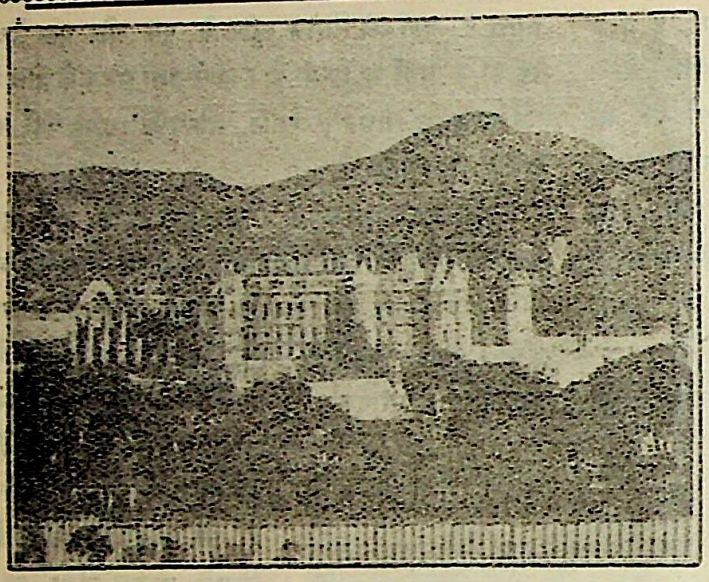

होलीरूड, एडिनबरा
(पीछे का पर्वत 'किंग-पार्क' है)

मेरी का एक मंत्री था रियाज़ो, जिसे वह प्यार करती थी। एक दिन लॉर्ड डार्नले ने चुपचाप जाकर रियाज़ो का प्राणांत, मेरी के कमरे में, कर दिया। दरबार-भवन में भिन्न-भिन्न बादशाहों के चित्र लगे हैं।

इनके अतिरिक्त यहाँ का अजायबघर, विश्वविद्यालय, रायल इनफ़र्मरी (ग्रेट ब्रिटेन में सबसे बड़ा अस्पताल), किंग-पार्क, कास्टनहिल पर नेल्सन स्मारक, सिटी-अजायबघर में बर्न तथा स्कॉट के स्मृति-चिह्न, सेंटगाइल्स का गिर्जा, पार्लियामेंट-भवन, बोटेनीकल गार्डन, चिड़ियाघर, पेंटलेंड पर्वतों, ब्रेड पर्वत पर गोल्फ़कोर्स (गोल्फ़ स्कॉटलैंड का राष्ट्रीय खेल है) आदि दर्शनीय स्थान हैं।

एडिनबरा में लगभग २५० भारतीय विद्यार्थी रहते हैं। इन्होंने 'एडिनबरा इंडियन एसोसियेशन' नाम की संस्था ११, जार्ज स्क्वायर में खोल ली है। इसकी ओर से क्लब, भोजनालय, वाचनालय, पुस्तकालय, बिलियार्डरूम आदि का प्रबंध है। इसके अतिरिक्त यंगमेन क्रिश्चियन ऐसोसियेशन की ओर से ४, ग्रीसवेनर क्रेसेंट में एक 'इंडियन होस्टल' भी है। भारतीयों के ठहरने के लिये यह बड़ा सुविधाजनक स्थान है।

एडिनबरा में चारों ओर ट्राम फैली हुई है। चुंगी की ओर से मोटर कोच हर समय यात्रियों के लिये तैयार मिलती है, जो एक रुपया लेकर सारे नगर की सैर करा देती है।

एडिनबरा सर वाल्टर स्कॉट तथा कवि आर० एल्० स्टीवेंसन की जन्म-भूमि है। यहाँ बर्न तथा कारलाइल भी बहुत दिनों तक रहे थे। विश्वविख्यात पुस्तक 'Wealth of Nations' (राष्ट्रों की संपत्ति) के लेखक आडमस्मिथ का निवास-स्थान भी एडिनबरा था। पाठकों को पढ़कर कौतूहल होगा कि भारत के साम्यवादी उपमंत्री डॉ० डूमंड शील्स की जन्म-भूमि भी एडिनबरा ही है। आपके पिता फ़ोटोग्राफ़र का काम करते हैं।

एडिनबरा से हाईलैंड में जाने का मार्ग है। स्कॉटलैंड का सबसे सुंदर दृश्य 'ट्रोसाक्स' तथा लौख लौमोंड हैं। लौख का अर्थ झील है। एडिनबरा से रेल तथा मोटर,

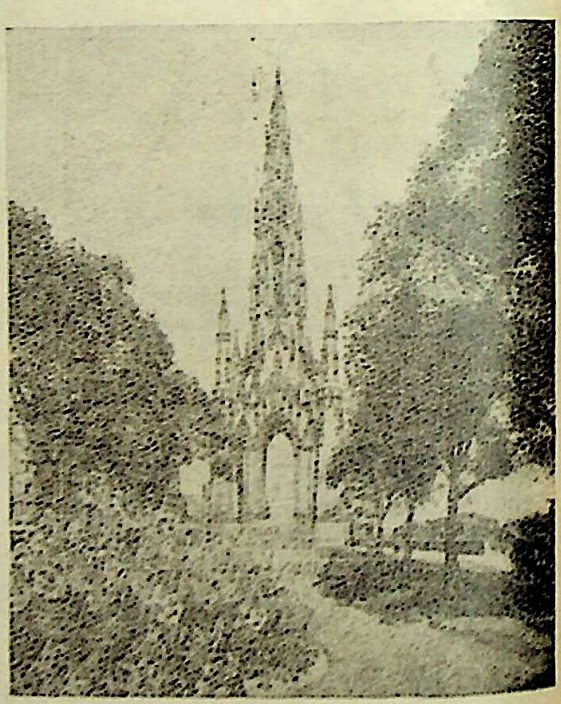

स्कॉट मौन्यूमेंट, एडिनबरा

दोनों जाती हैं। परंतु मोटर द्वारा जाने में मार्ग के नगरों आदि की अच्छी सैर हो जाती है।

एडिनबरा छोड़कर सबसे पहले बड़ा क़स्बा 'किंग-सिथगो' मिलता है। यह इसी नाम के ज़िले का प्रधान नगर है। नगर छोटा-सा है। इसकी प्रसिद्धि केवल इसी लिये है कि यहाँ के राजकीय भवनों में स्कॉटलैंड की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्राज्ञी मेरी (Mary Queen of Scots) का जन्म हुआ था।

burn) का युद्ध-क्षेत्र है, जिसकी पहचान के लिये एक स्तंभ गाड़ दिया गया है। यहाँ सन् १३१४ में स्कॉटलैंड के

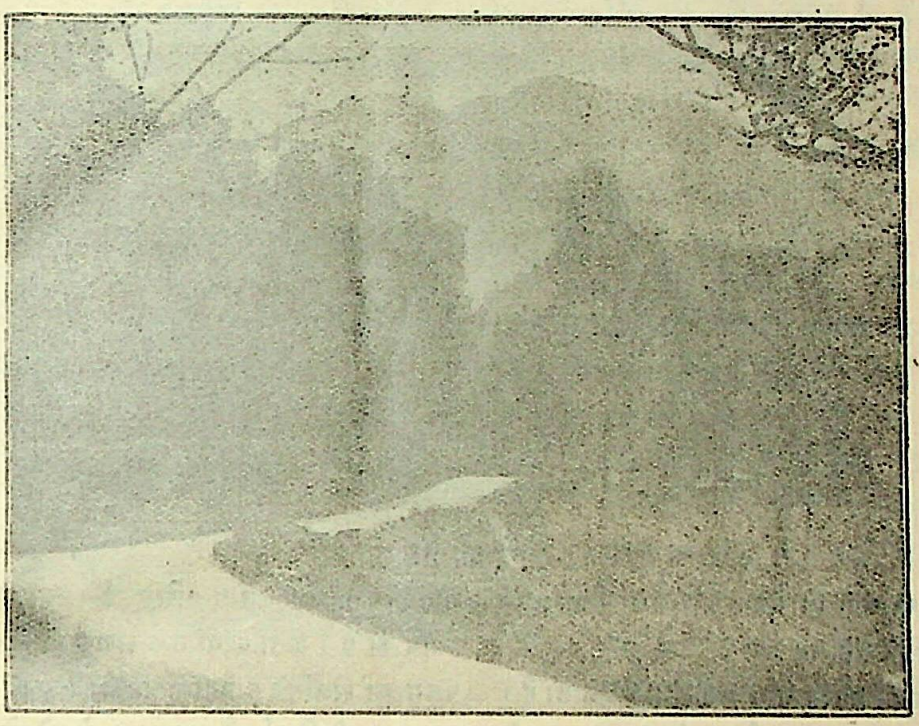

'ट्रोसाख' का एक दृश्य

लिनलिथगो के बाद 'फ़ॉलकर्क'-नामक छोटा-सा क़स्बा मिलता है। परंतु यहाँ पर ट्राम चलती है, तथा बिजली का प्रकाश और टेलीफ़ोन आदि का प्रबंध है। यहाँ पर पास ही लोहे तथा कोयले की खानें हैं।

यहाँ से कुछ दूर आगे 'बैनोकबर्न' (Bannock-

सम्राट् ब्रूस तथा इँगलैंड के सम्राट् एडवर्ड द्वितीय में युद्ध हुआ था। एडवर्ड के पास १ लाख सेना थी; परंतु उसको पराजित होकर भागना पड़ा। उसे अपने विजय का इतना भरोसा था कि साथ में एक कवि को अपने 'विजय' पर पद्य लिखने को ले आया था। दुर्भाग्य से

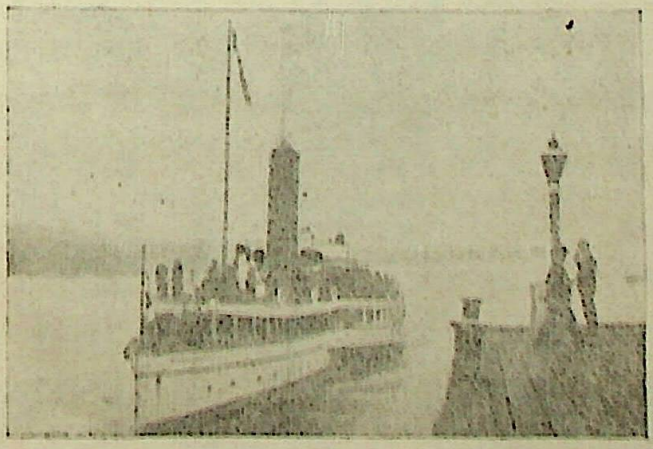

ग्लासगो पर ग्लास्गो में स्टीमर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

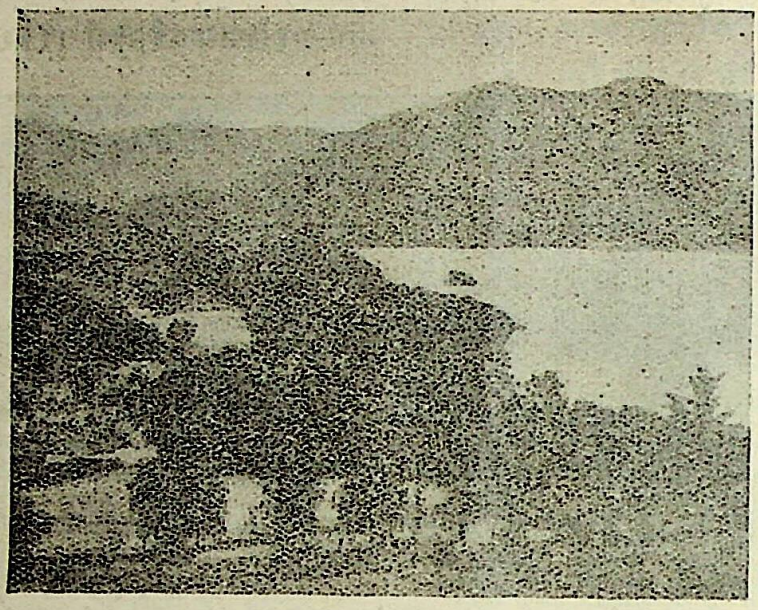

लौख़ लौमोंड

वह कवि ब्रूस का बंदी हो गया, और उसे इँगलैंड के पराजय पर पद्य लिखने पड़े।

दो मील चलकर प्रसिद्ध नगर 'स्टलिंग' आ जाता है। यह हाईलैंड का मुख्य द्वार है। यहीं से शोभाशाली पर्वत आरंभ होते हैं। इसी कारण यहाँ पर इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड के बीच सात युद्ध हुए हैं। यहाँ का गढ़ बड़ा प्राचीन तथा प्रसिद्ध है। यह पूर्वैतिहासिक समय का है। शताब्दियों तक राजधानी रहा है। जेम्स-पंचम का राजतिलक यहीं हुआ था। इसमें पार्लियामेंट भवन, शाही गिर्जा और राजभवन देखने योग्य हैं। यहाँ फ़ोर्थ नदी पर जो पुराना पुल है, वह सन् १४०० में बनाया गया था। अब भी वह बहुत दृढ़ है। इसी के।

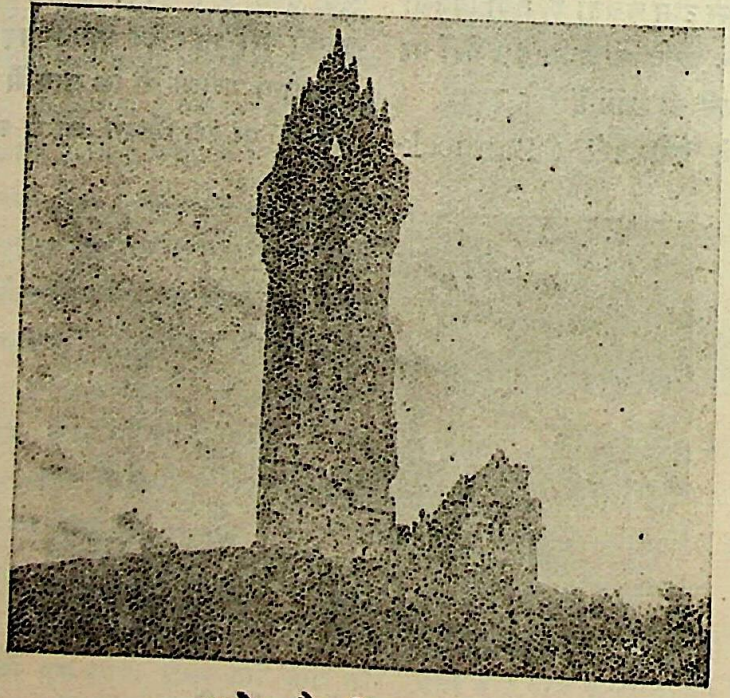

वालेस-मौन्यूमेंट, स्टलिंग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाल सर विलियम वालेस ने इँगलैंड को ब्रूस से प्रथम पराजय दी थी। इसकी स्मृति में एक ऊँची पहाड़ी पर 'वालेस-मौन्यूमेंट' बना हुआ है। यहाँ से दो मील दूर 'ब्रिज ऑफ़् आलन' नाम का ग्राम है। यहाँ का जल अच्छा है, अतः अनेकों मनुष्य यहाँ छुट्टियाँ व्यतीत करते हैं।

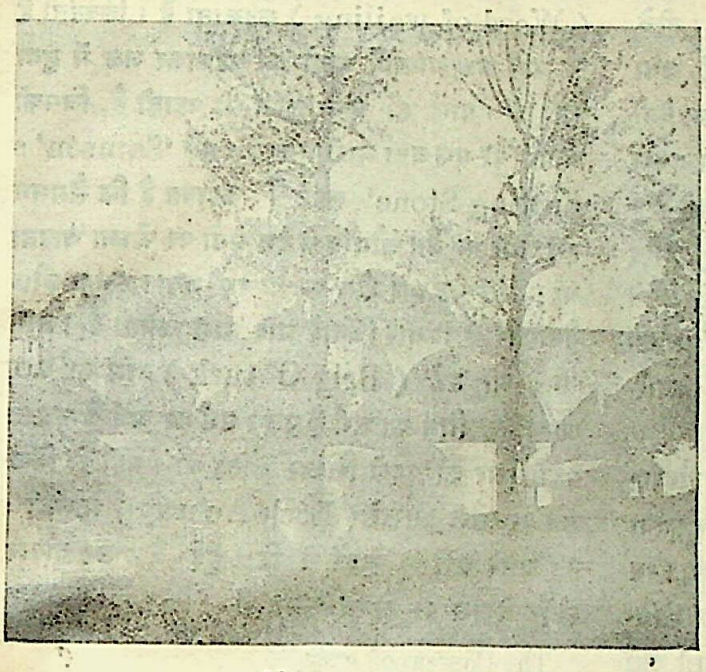

स्टर्लिंग का पुराना पुल

स्टर्लिंग से ट्रोसाख़ जाने के दो मार्ग हैं। पहला आवेर फ़ौयल होकर, जहाँ 'रौबरौय' उपन्यास के दृश्य हैं। दूसरा कैलेंडर होकर, जहाँ स्कॉट की 'लेडी ऑफ़् दी लेक' के संबंध के अनेकों दृश्य हैं। कैलेंडर का मार्ग अधिक सुंदर है। यहाँ से आगे मार्ग का सौंदर्य बढ़ता ही जाता है। कहीं सड़क ऊपर पर्वत की ओर चली जाती है, कहीं नीचे घाटी में उतर जाती है। चारो ओर हरियाली ही दृष्टिगोचर होती है। मार्ग में छोटे-छोटे ग्राम पड़ते हैं, जहाँ ग्रामीणों के छोटे, परंतु सुंदर तथा स्वच्छ झोपड़े बने हुए हैं। कहीं आलू, कहीं जई की फ़सल खड़ी है। कहीं

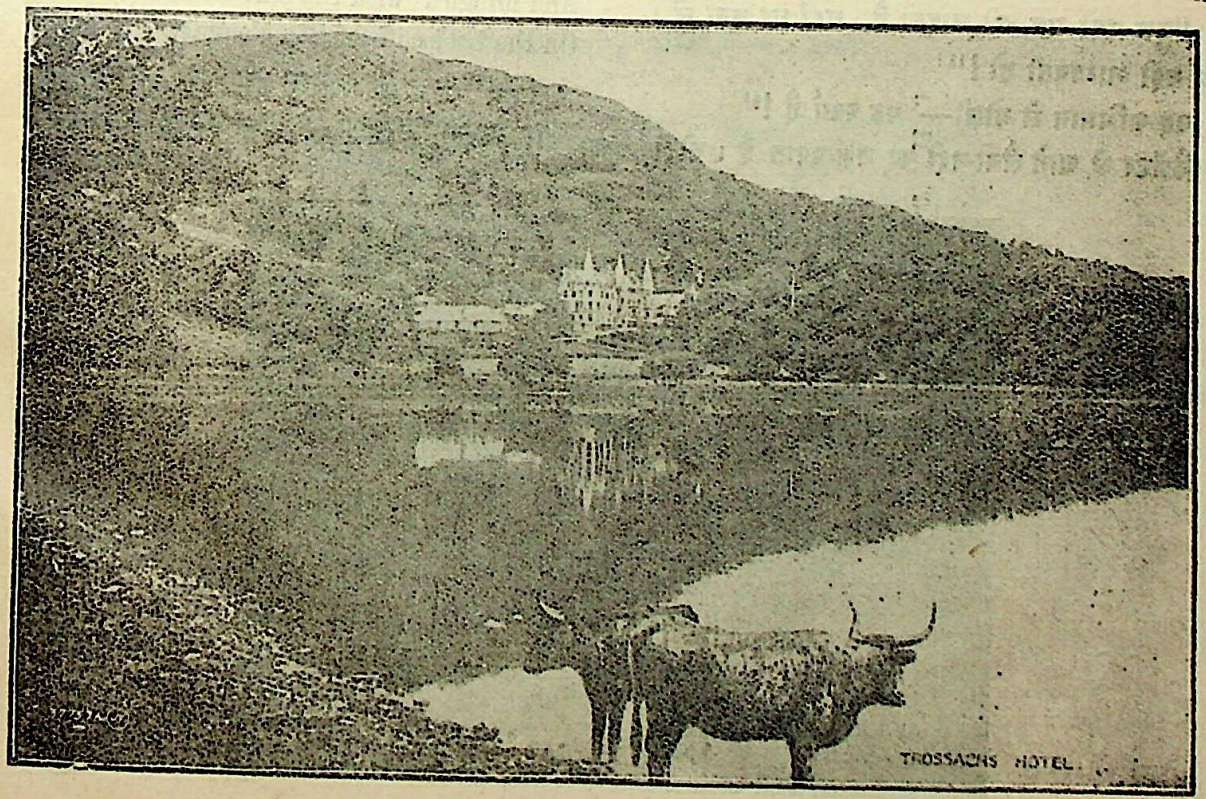

लौख़ आख़रे के किनारे प्रसिद्ध 'ट्रौसाख़ होटल'। झील में हाईलैंड की दो गाएँ खड़ी हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चरागाहों में भेड़ें झुंड बाँधे खड़ी हैं, कहीं लंबे-लंबे सींगों-वाली हाईलैंड की गाएँ खड़ी हैं। हाईलैंड की गायों के शरीर पर लंबे बाल होते हैं, रंग बहुधा लाल होता है। नीचे की ओर गायों का रंग काला अधिक होता है, तथा उनके सींग नहीं होते। दूध यहाँ की गाएँ अधिक देती हैं। कहीं कृषकों के खेत मिलते हैं, जहाँ वे नाना प्रकार के नए यंत्रों द्वारा कृषि के भिन्न-भिन्न कार्य कर रहे हैं। सामने बेन लोमोंड, बन आन तथा बेव वेनू आदि शैल दिखाई देते हैं। 'बेन' स्काच में पर्वत को कहते हैं। 'टीथ'-नदी का पुल आता है, जिसके पास डून का गढ़ है। डून के आगे सड़क टीथ-नदी के किनारे-किनारे कैलेंडर तक गई है।

कैलेंडर एक अत्यंत सुंदर प्राकृतिक दृश्य का उदाहरण है। चारो ओर हरियाले पर्वतों से घिरा हुआ यह क़स्बा टीथ-नदी के तट पर बसा हुआ है। इसका मनोरम दृश्य देखते ही बनता है। यहाँ का 'हाइड्रो होटल' बड़ा शानदार है। यहाँ रेस्टोरेंट में जब भोजन करने गए, तो वहाँ की लड़की ने पूछा—"क्यों, हमारा टाउन कैसा लगा?"

"कुछ पूछो मत, जी चाहता है, यहीं घर बना लें। तुम बड़ी भाग्यवती हो!"

वह अभिमान से बोली—"यह स्वर्ग है!"

कैलेंडर से आगे लैनी-नदी का जल-प्रपात है। थोड़ी दूर आगे लौख़ वैनाख़ार प्रारंभ हो जाती है। इसके दूसरी ओर एक छोटा-सा जंगल है, जो 'व्याकुल-वन' (Wood of wailing) कहलाता है। किंवदंती है कि यहाँ जल-आत्माएँ बच्चों को बहकाकर जल में डुबा देती थीं। पास ही एक छोटी-सी पहाड़ी है, जिसकी खोपड़ी पर एक बड़ा भारी पत्थर है। इसे 'Samson's putting Stone' कहते हैं। कहावत है कि सैमसन इस पत्थर को बेन लौमोंड से बेन लेडी पर फेंकना चाहता था; परंतु वह इस शैल पर ही रह गया। सड़क लौख़ वैनाख़ार के किनारे-किनारे चार मील चलती है। आगे 'ब्रिग ओ 'टर्क' (Brig O' turk) नाम का ग्राम आता है। ब्रिग का अर्थ है पुल। टर्क का अर्थ है सुअर। यहाँ सुअर का पहले शिकार होता था। यहाँ से निकलने पर लौख़ आख़रे (Loch Achray) आती है। यह चारो ओर से वृक्षों से घिरी हुई है। सर वाल्टर स्कॉट ने इस पर लिखा है—

The Copsewood grey
That waved and wept on Loch Achray
And mingled with the pine trees blue
On the bold cliffs of Ben Venue.

जहाँ इस झील की समाप्ति होती है, वहाँ ट्रोसाख़ का प्रारंभ होता है। 'ट्रोसाख़' का अर्थ है दरारेदार

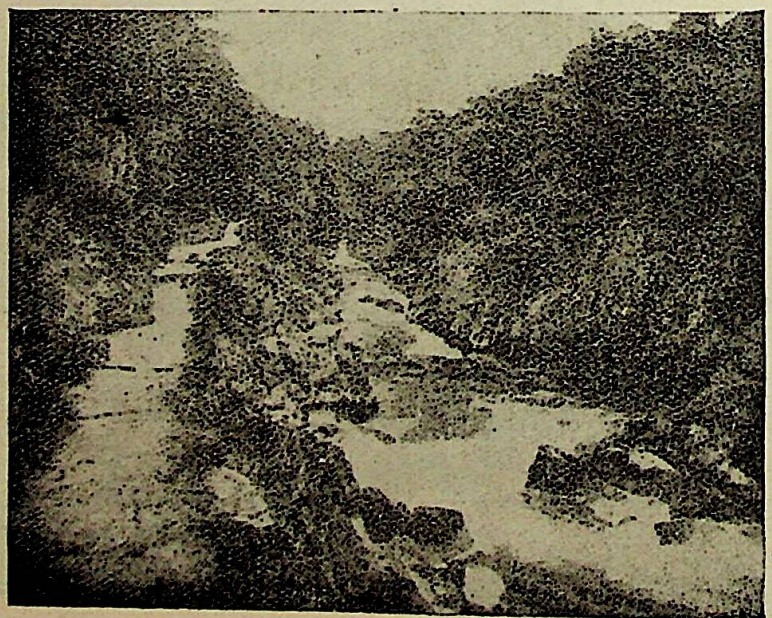

कैलेंडर के निकट लैनी-नामक जल-प्रपात

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर्वतीय प्रदेश। यह भाग लगभग ५-६ मील लंबा है। बड़ा चित्ताकर्षक है। ऊँचे-नीचे पर्वत, हरा-भरा वन, शोभामय घाटियाँ, एक-से-एक मनोरम। वायु यहाँ संगीत की ध्वनि प्रतीत होती है। शब्द-प्रतिध्वनि नीलाकाश का परिहास प्रतीत होती है। यही नहीं, सौंदर्य की परा काष्ठा हो जाती है, जब लौख़ केटरिन की चमकीली चद्दर भगवान् भास्कर की रँगीली रश्मियों के साथ क्रीड़ा करती हुई देख पड़ती है। पास ही 'ट्रोसाक्स'।

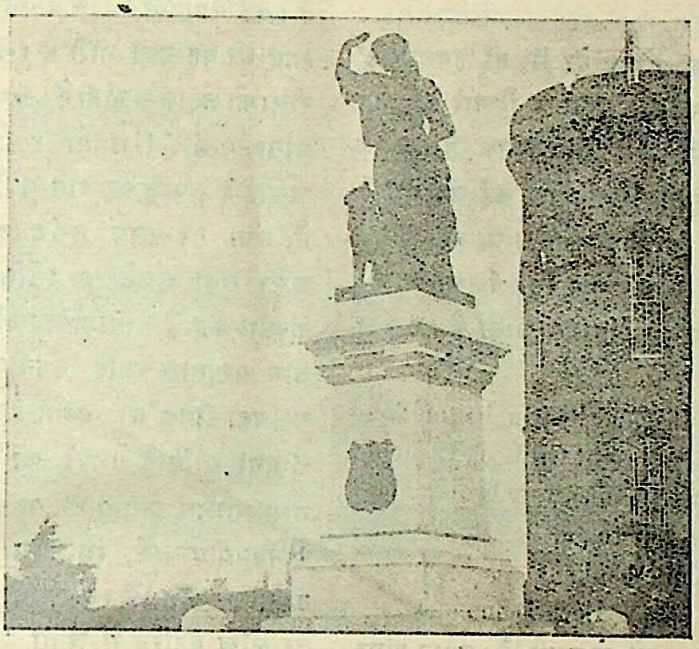

फ्लोरा मैकडोनल्ड मौन्यूमेंट, इनवर्नेस

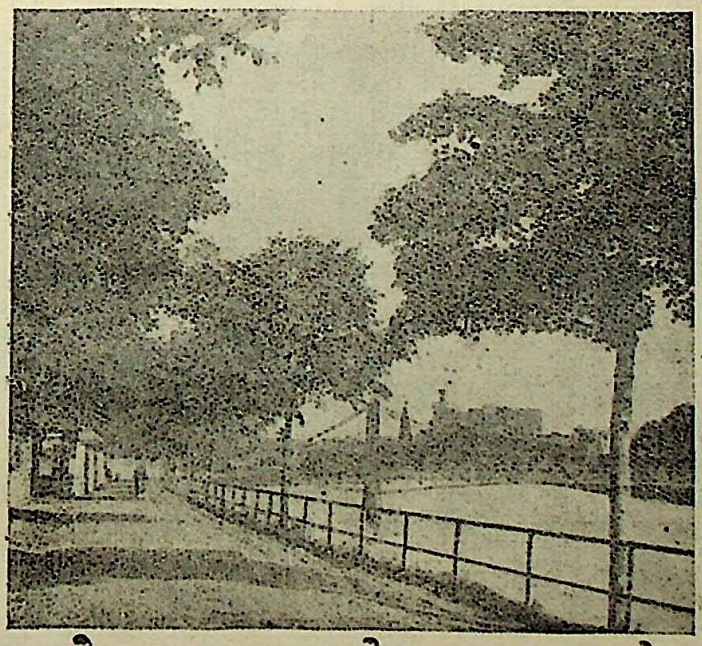

नेस नदी और कैसेल, इनवर्नेस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होस्टल के विशाल भवन हैं। लौख़ केटरिन दस मील लंबी है। इसमें कई छोटे-छोटे द्वीप हैं। एक किनारे पर पगडंडी बना दी है। यहाँ से स्टीमर दूसरे किनारे के नगर 'स्ट्रोसनाख़ लाख़ेर' को ले जाता है।

इस स्थान से मोटर थोड़ी देर में ही 'इनवर्सनेड' पहुँचा देती है, जो लौख़ लौमोंड के किनारे है। यह झील ग्रेटब्रिटेन-भर में सबसे बड़ी झील है। इसके अंदर कई द्वीप हैं, तथा किनारे पर कई बंदरगाह। इनवर्सनेड से बालौख पायर तक की यात्रा बड़ी मनोरंजक है। इस पर एक कवि ने एक गान लिखा है, जो इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड-भर में गाया जाता है। उसका एक पद यह है—

By yon Bonnie banks, and by yon bonnie brae
Where the sun shines bright On Loch Lomond;
Where me and my true lone were evel
wont to gae,
On the bonnie bonnie banks O'
Loch Lomond.

बालुख़ से रेल हमें ग्लासगो ले आती है। महान् अंतर दिखाई पड़ता है। कहाँ एडिनबरा की स्वच्छता तथा ट्रोसाख़ के सुंदर दृश्य, और कहाँ ग्लासगो की गंदी गलियाँ! ग्लासगो ग्रेटब्रिटेन में लंदन के बाद द्वितीय नगर है। इसकी जन-संख्या दस लाख है। यह क्लाइड नदी पर बसा हुआ है। यह जहाज़ बनाने की कारीगरी में विख्यात है। बड़े-बड़े प्रसिद्ध अँगरेज़ी जहाज़ यहीं बने हैं। कई कंपनियाँ जहाज़ बनाने का कार्य करती हैं। बंदरगाह भी यह बड़ा भारी है। कई कंपनियाँ यहाँ से अमरीका को जहाज़ चलाती हैं। यहाँ भी लंदन की देखादेखी पातालगामी (Underground Railways) रेलें चलाई हैं; परंतु वह बात कहाँ! स्थान बड़ा गंदा रहता है, तथा हर समय दुर्गंध आती रहती है। गाड़ी भी छोटी तथा छकड़े की भाँति। ग्लासगो शिक्षा का भी अच्छा केंद्र है। विश्वविद्यालय, तीन मेडीकल-कॉलेज, तीन अस्पताल आदि उपयोगी संस्थाएँ हैं। जॉर्ज स्कायर यहाँ रौनक़ का स्थान है। यहाँ स्कॉट मौन्यूमेंट, चुंगीघर आदि हैं। यहाँ का कैथीड्रल सबसे पुराना है तथा प्राचीन यूनानी ढंग पर बना है। रायल एक्सचेंज, कैल्विनग्रोव पार्क, म्यूज़ियम, पिक्चरगैलरी आदि भी दर्शनीय स्थान हैं। ग्लासगो के लिये जब तीस मील दूर लौख़ केटरिन से आता है।

ग्लासगो से रेल की लाइन लौख़ लांग के किनारे होती हुई 'ओबान' को ले जाती है। लौख़ लांग के किनारे ही

जार्ज स्कायर, ग्लासगो

म्युनिसिपल बिल्डिंग (नवीन इटालियन स्थापत्य), स्कॉट मौन्यूमेंट और युद्ध-स्मारक दिखाई पड़ रहे हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्ड्सवर्थ, उसकी बहन डोरोथी तथा कोलैरिज ने भ्रमण करके 'Ancient Mariner' की नींव डाली थी। ओबान समुद्र के तट पर बड़ा सुंदर छोटा-सा नगर है। यहाँ का जल-वायु बड़ा सुंदर है। यहाँ का मार्ग भी उतना ही मनोरम है, परंतु ट्रोसाक्स की तुलना में नहीं आ सकता। नगर के अंदर अभी तक प्राचीन काल की बातें देखने को मिलती हैं। इधर अनेकों स्थानों पर निर्धन हाईलैंडर लोग बीन बजाकर पैसे माँगते हैं। यहाँ से पाँच मील दूर 'डनस्टाफ़नेग क़िला' है, जो लगभग ११०० वर्ष तक स्कॉटलैंड की राजधानी रहा था। इधर अनेकों स्त्रियों के दाढ़ी-मूछ दिखाई देती हैं।

ओबान से फ़ोर्ट विलियम होते हुए कैलीडोनियन कैनाल में स्टीमर द्वारा इनवर्नेस का मार्ग है। कैलीडोनियन कैनाल पूरी नहर नहीं है। तीन झीलों—लौख़ी, ईश्न तथा नैस—को छोटी-छोटी धाराओं से मिलाकर यह नहर बनाई गई है। इसकी लंबाई लगभग ६० मील है। इसके द्वारा उत्तरसागर अटलांटिक महासागर से मिला दिया गया है।

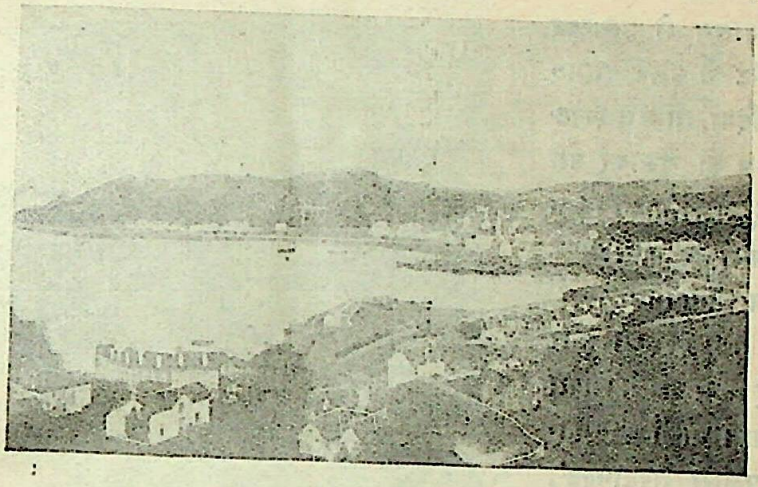

ओबान का एक दृश्य

इनवर्नेस नैस-नदी के किनारे हाईलैंड की

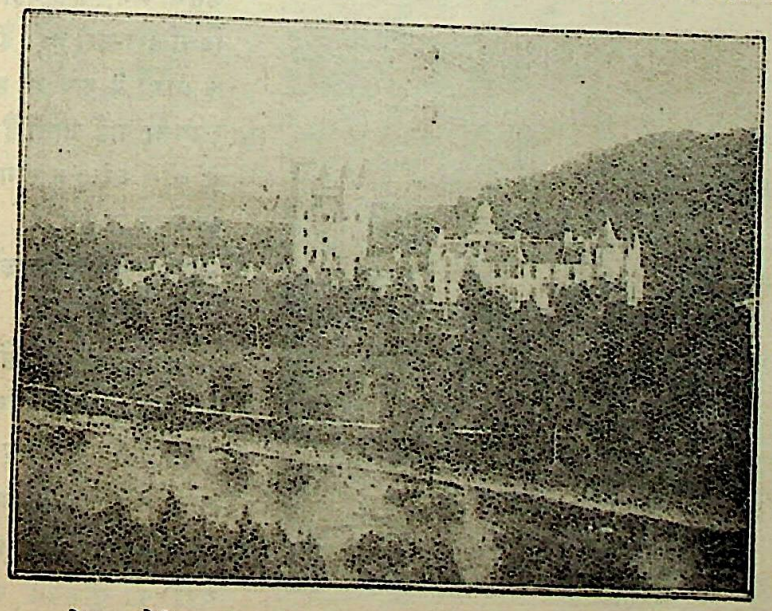

बाल्मोरल कैसेल (शाही परिवार के रहने का महल), हाईलैंड

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। यह छोटा-सा नगर है—जन-संख्या केवल २५ हज़ार है। इनवर्नेस नैस-नदी के दोनो ओर बसा हुआ है। नदी पर आवागमन के लिये कई पुल बना दिए गए हैं। इतिहास में इनवर्नेस ने सब प्रकार के दिन देखे हैं। यहाँ का क़िला कभी इँगलैंड के हाथ में रहा, कभी स्कॉटलैंड के हाथ में। जब जेम्स द्वितीय को सिंहासन से उतारकर इँगलैंड की पार्लियामेंट ने उसके दामाद विलियम को राज्य दे दिया, तो कुछ स्कॉटलैंड के निवासी जेम्स को बुलाकर उसे सहायता करने का षड्यंत्र करने लगे। अंत में इनवर्नेस से चार मील दूर कलौडन के मैदान में जेम्स के पौत्र 'बौनी प्रिंस चार्ली' तथा अँगरेज़ी सेना में युद्ध हुआ, और चार्ली की पराजय हुई। इस देश में आपस का यह अंतिम युद्ध था। चार्ली की सहायक थी एक युवती 'फ़्लोरा मैक्डोनल्ड', जिसका स्मारक देखने योग्य है। अन्य दर्शनीय स्थान हैं—टाउनहॉल, क़िला, सेंट एंड्रूज़ कैथीड्रल।

इनवर्नेस से आबर्डीन जाते समय मार्ग में लौसीमथ क़स्बा पड़ता है। यह इँगलैंड के प्रधान मंत्री मि० रैमज़े मैकडोनल्ड की जन्म-भूमि है। अभी निर्वाचन के बाद आप अपनी पुत्री इशबैल मैकडोनल्ड के साथ कुछ दिन यहाँ रहे थे। यह गोल्फ़ खेल के लिये प्रसिद्ध है।

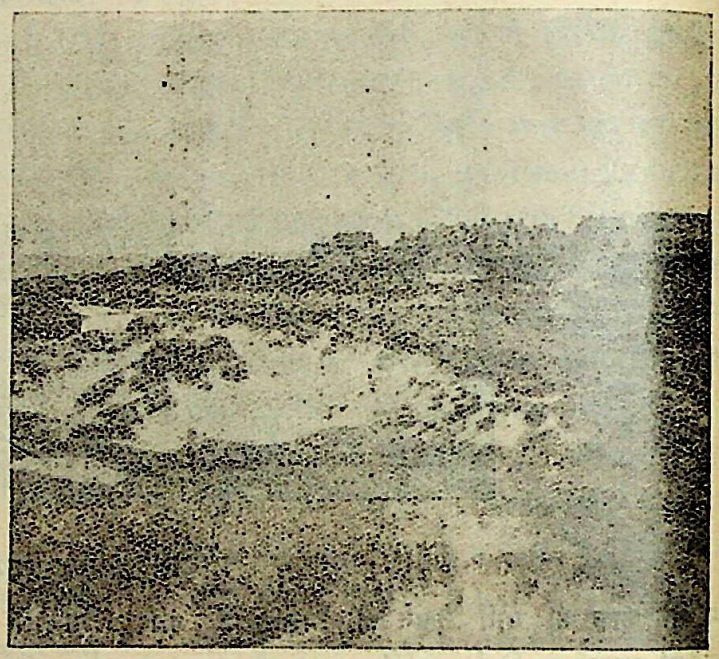

मि० रैमसे मैकडोनल्ड की जन्म-भूमि लौसीमथ

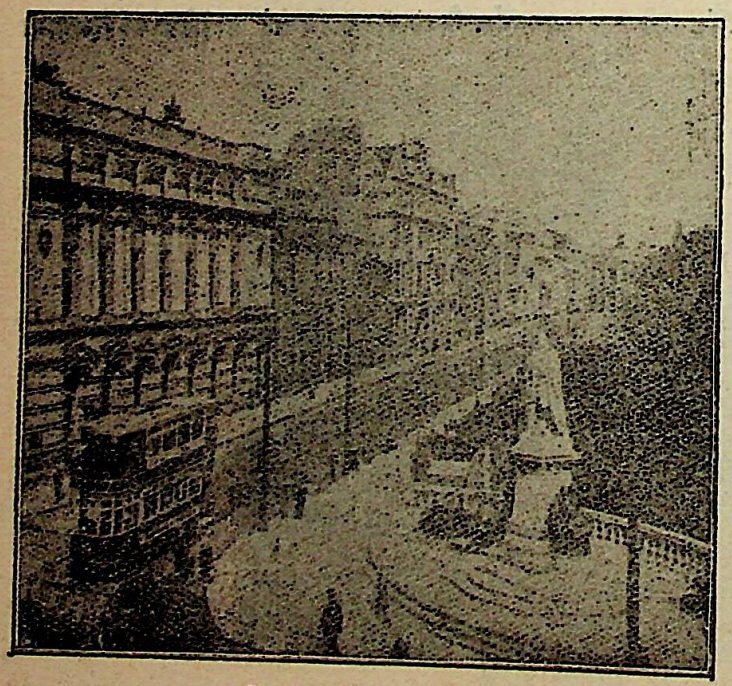

यूनियन स्ट्रीट, आबर्डीन

इनवर्नेस से आबर्डीन तक का मार्ग उतना मनोरंजक नहीं है। इस ओर पहाड़ियाँ हरी-भरी नहीं हैं। इस ओर हाईलैंड के ग्रामों में अब भी हमसे मिलती-जुलती सभ्यता पाई जाती है। अब भी ग्रामों में ये लोग घरेलू कारीगरी करते हैं। नूतन सभ्यता का इन पर उतना प्रभाव नहीं पड़ा। इस ओर सड़कों आदि का भी उत्तम प्रबंध नहीं है।

आबर्डीन स्कॉटलैंड का चौथा नगर है। यह डी तथा डौन नदियों के किनारे बसा हुआ है। यह एक प्रसिद्ध बंदरगाह है। इसके अतिरिक्त यह अपने विश्वविद्यालय के लिये भी प्रसिद्ध है। यहाँ की यूनियन स्ट्रीट एडिनबरा की प्रिंसेज़ स्ट्रीट की भाँति सुंदर है। यहाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाइट-हाउस, समुद्र का तट, ब्रिग ओ' बालगोनी, डी का पुल, मछली-बाज़ार आदि दर्शनीय स्थान हैं। यहाँ से कुछ दूर डी-नदी के तट पर 'बालमोरल गढ़' है, जहाँ कभी-कभी सम्राट् तथा सम्राज्ञी निवास करते हैं।

आबर्डीन से एडिनबरा के कई रेल-पथ हैं। एक समुद्र के किनारे होकर है, जिसमें डंडी तथा उसके पास का सुंदर ग्राम ब्रौटीफ़ैरी और सेंट ऐंड्रूज़ के नगर पड़ते हैं। सेंट ऐंड्रूज़ स्कॉटलैंड की सबसे प्राचीन युनिवर्सिटी है। यह एक छोटा-सा नगर समुद्र के किनारे है। यहाँ का मेडिकल कॉलेज डंडी में है। डंडी सेंट ऐंड्रूज़ से बड़ा नगर है।

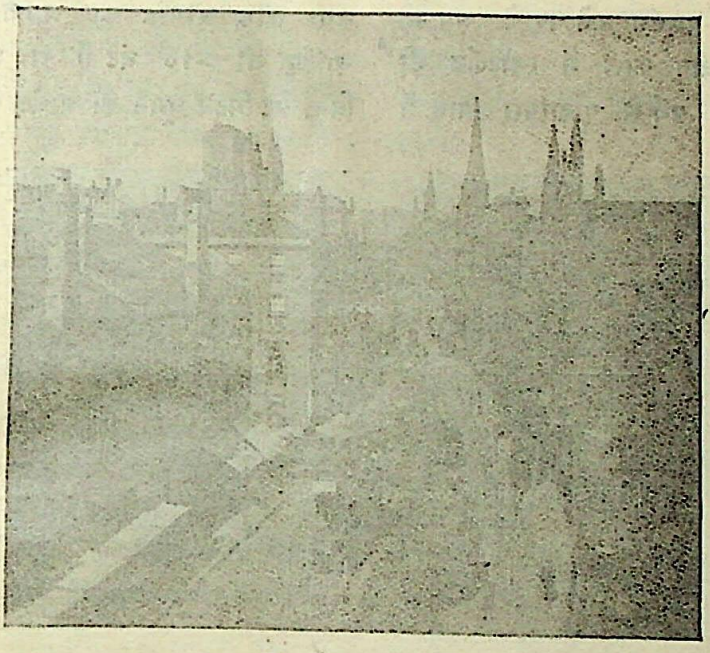

नेदरगेट, डंडी

डंडी के निकट 'ब्रौटीफ़ैरी' की बालुका पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे मार्ग से पर्थ बीच में पड़ता है। पर्थ भी एक सुंदर नगर है। इसे सर वाल्टर स्कॉट ने The fairy land of Perth (पर्थ का परिस्तान) नाम दिया है। यहाँ की पुरानी इमारतें अब गिरा दी गई हैं, तथा नगर आधुनिक ढंग से बसाया गया है। फिर भी प्राचीन ऐतिहासिक चिह्न सुरक्षित रक्खे गए हैं। गौरी-हाउस, जहाँ कई बार षड्यंत्र रचे गए थे, अब भी विद्यमान है। पर्थ प्राचीन काल में स्कॉटलैंड की राजधानी रह चुका है। पर्थ से एडिनबरा आने में फ़ोर्थ ब्रिज पड़ता है, जो अब भली भाँति देखा जा सकता है। यह २ मील लंबा है तथा कई लाख पाउंड के व्यय से बना है।

एडिनबरा में भ्रमण समाप्त हो जाता है। यदि किसी यात्री को पूरा भ्रमण करने का अवकाश न हो, तो उसे दस रुपए व्यय करके मोटर कोच द्वारा ट्रोसाक्स तथा लौक्स लौमोंड का भ्रमण तो अवश्य करना चाहिए, जो ८-१० घंटे में हो जाता है। इन्हें देखे बिना ग्रेट ब्रिटेन घूमने का आनंद अधूरा रह जाता है।

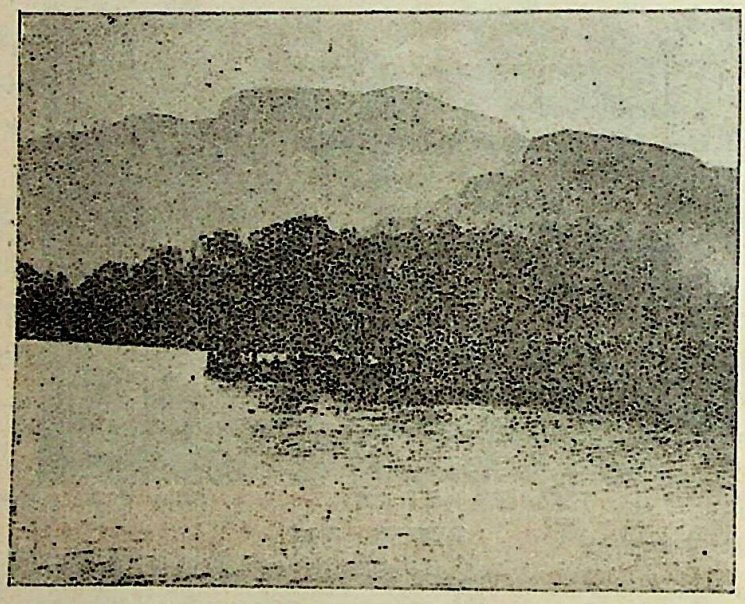

लौख, कैटराइन और बेन वेनू

फ़रवरी १९३० की पुस्तकें

१. हृदय की परख—ले० प्रोफ़ेसर चतुरसेन शास्त्री मूल्य १), सजिल्द १॥)
२. योग-दर्पण—ले० श्रीलाला कन्नोमल एम्० ए० ,, १), ,, १॥)
३. युधिष्ठिर—ले० श्रीकृष्णगोपाल माथुर ,, ॥), ,, १)
४. देवी शकुंतला—ले० अध्यापक हरिप्रसाद द्विवेदी "श्रीहरि" ,, ॥=), ,, १=)
५. राष्ट्रपति जवाहिर—... ... ... ,, ॥=), ,, १=)
६. दिलावर सियार—ले० श्री पं० भूपनारायण दीक्षित ,, ॥), रं० जि० ॥)
७. उत्सर्ग—ले० आयुर्वेदाचार्य प्रो० चतुरसेन शास्त्री ,, ।=), स० ॥)

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट की चोरी

[बाबू कृष्णानंद गुप्त]

(१)

उधार का दिन था। हम लोग बाहर चारपाई पर बैठे गप-शप लड़ा रहे थे। इतने में होस्टल की तरफ़ आते हुए एक ताँगे पर हम लोगों की दृष्टि पड़ी। ताँगा सामान से भरा था। आगे कपड़ों का एक भारी बंडल रक्खा था, जिसकी ओट में ताँगे पर बैठे हुए सज्जन का ख़ाकी साफ़ा नज़र आ रहा था। उन दिनों होस्टल का कोई विद्यार्थी छुट्टी पर बाहर नहीं गया था, अतः हम सभी के मन में यह प्रश्न उठा कि इस वक़्त इलाहाबाद की ट्रेन से कौन आ रहा है। तब तक ताँगा निकट आ गया। हम लोग चारपाई छोड़कर नवागंतुक की सूरत-शकल देखने आगे बढ़े। जनाब कीजिए, उन दिनों हम किसी का स्वागत करने के लिये बहुत कम आगे बढ़ते थे। ताँगे के खड़े होते ही १८-१९ वर्ष का एक नवयुवक कूदकर नीचे उतरा, और हम लोगों के सामने आकर बोला—" I want to see the Superintendent. "

उसे देखते ही हम लोग समझ गए कि वह विद्यार्थी है। जिस तरह रेल का बाबू, कलक्टरी का क्लर्क और दफ़्तर का चपरासी तुरंत पहचाना जा सकता है, उसी तरह आप कॉलेज के विद्यार्थी को भी देखते ही पहचान सकते हैं। युवक मझोले क़द का था। गेहुआँ रंग, सिर पर स्काउट के रंग का ख़ाकी साफ़ा, बदन पर किशमिशी रंग का खद्दर का कोट, ख़ाकी मोज़े और ख़ाकी हाफ़पैंट, हाथ में हाकी का डंडा। मैंने उसकी चाल-ढाल और विशेषकर खद्दर की पोशाक से आकृष्ट होकर कहा—"अभी-अभी बाहर चले गए हैं। आते ही होंगे। संभवतः प्रिंसिपल के बँगले पर गए हैं।"

"कहार होगा....."

"हाँ-हाँ।" मैंने उत्तर दिया, साथ ही होस्टल के कहार फुंदी को आवाज़ लगाई।

फुंदी रसोई-घर से बाहर निकलकर बोला—"क्या है बाबूजी?"

मैंने कहा—"इन बाबूजी का सामान उतारकर रख दो।"

"कहाँ रख दें बाबूजी?"

"यहीं दालान में।"

फुंदी समान उतारकर रखने लगा। युवक इधर-उधर दृष्टिपात करके बोला—"आपका होस्टल बड़ी अच्छी जगह है।"

"हाँ।" फिर मैंने पूछा—"आप कहाँ से आ रहे हैं?"

"इलाहाबाद से।"

"अच्छा!" मैंने कुछ आश्चर्य-चकित होकर कहा—"क्या आप यहाँ पढ़ेंगे?"

"जी हाँ।"

"इलाहाबाद छोड़कर इस जगह पढ़ने आए हैं।"

"क्या करूँ, इलाहाबाद की climate मुझे suit नहीं करती।"

मेरे सहपाठी रामनाथ ने पूछा—"आप कौन-से क्लास में भर्ती होंगे?"

"फ़ोर्थ ईयर में।"

"तब तो आप मेरे साथी हैं।"

इस समय ताँगे का सामान उतर चुका था। युवक ने पैसे देकर ताँगेवाले को विदा किया। इतने में सामने से सुपरिंटेंडेंट साहब आते नज़र आए। मालूम हुआ कि युवक ने पहले ही प्रिंसिपल को अपने आने की सूचना दे दी थी। उससे इधर-उधर की वार्तालाप करने के बाद सुपरिंटेंडेंट ने कहा—"प्रेमबिहारी, ठाकुर साहब तुम्हारे कमरे में रहेंगे?"

युवक का नाम ठाकुर भानुप्रताप था। एक नए अपरिचित विद्यार्थी को अपने कमरे में स्थान देने में कुछ दिनों कितनी असुविधा होती है, इसे छात्रावास में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहनेवाले विद्यार्थी ही समझ सकते हैं। इसलिये मैंने कहा—"किसी और कमरे को देखिए। मेरे साथ संभव है, ठाकुर साहब को कष्ट हो।"

"जी नहीं। आप ठाकुर साहब के कष्ट की परवा मत कीजिए। बहुत दिनों से आप दोनो ने इतने बड़े कमरे पर अधिकार जमा रक्खा है। होस्टल में और जगह ही कहाँ है। सब Double-seated कमरे हैं। केवल तुम्हारे कमरे में तीन के रहने की गुंजाइश है।"

मैं चुप हो गया। वास्तव में मेरा कमरा Stock Room था। अन्य कमरों से दुगुना बड़ा था। होस्टल में स्थान न होने की वजह से हम और रामनाथ उसी कमरे में रहते थे। अधिक प्रतिवाद करने से संभव था, सुपरिंटेंडेंट साहब जान जाते। किंतु युवक के मुँह पर मुझे कुछ कहना अच्छा नहीं लगा। उसका सामान मेरे कमरे के सामने ही रक्खा था, अब कमरे के भीतर रख दिया गया। उस दिन से हम एक कमरे में दो के बजाय तीन हो गए।

(२)

ठाकुर साहब फ़तेहगढ़ के रहनेवाले थे। उनके कहने से मालूम हुआ कि उनके पिता ज़मींदार हैं। एक मामा वकील थे, एक फूफा कहीं डिप्टी-कलेक्टर थे। ऐसी अवस्था में यदि इलाहाबाद का जल-वायु उनके अनुकूल नहीं हुआ, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। ठाकुर साहब बड़े हँस-मुख और मिलनसार निकले। दो ही चार दिन में हम दोनो से इस प्रकार हिल-मिल गए, मानो वर्षों का परिचय हो! उनके आ जाने से हमें तनिक भी असुविधा नहीं हुई, वरन् सुविधा ही विशेष हुई। दरवाज़े पर एक चिक टँग गई, कमरे में एक दरी बिछ गई, दो आराम-कुर्सियाँ आ गईं, रात में अध्ययन करने के लिये एक टेबुल-लैंप आ गया। मालूम हुआ कि खद्दर वे सिर्फ़ मन-बहलाव के लिये या आजकल के फ़ैशन की रक्षा करने के लिये पहनते हैं! क्योंकि दूसरे ही दिन उनके बक्स से कई रेशमी सूट बाहर निकलकर खूँटियों की शोभा बढ़ाने लगे थे! तीसरे दिन एक सूट बदलते थे। दिल के बड़े साफ़ और कुशादा थे। ख़ोमचेवाले के आने पर हम लोगों को ज़बर्दस्ती अपने साथ खिलाते थे। बाद में पैसे भी स्वयं दे देते थे। उनके इस ख़र्चीलेपन का हम लोगों पर, विशेषकर होस्टल के नौकरों पर, एक बड़ा प्रभाव पड़ा। सभी उनसे ठाकुर साहब कहते थे और वे भी शायद मि० भानुप्रताप के बजाय अपनी पैतृक उपाधि से संबोधित होना ज़्यादा पसंद करते थे!

हम लोग देहात के रहनेवाले थे। साधारण ढंग से रहते थे। विशेषकर रामनाथ को टीमटाम बिलकुल पसंद नहीं थी। वह लापरवाह भी अव्वल दर्जे का था। असल बात यह थी कि उसे पढ़ने-लिखने से बिलकुल फ़ुर्सत नहीं मिलती थी। किंतु ठाकुर साहब ठीक उसके विपरीत थे। वे होस्टल में रहना जानते थे। सवेरे आते ही झाड़न से मेज़, किताबों और कपड़ों की सारी धूल साफ़ करते थे, फिर कमरे की सब चीज़ों को यथास्थान सजाकर रख देते। उनकी इस सफ़ाई-पसंदगी से कभी-कभी हम लोगों को बहुत लज्जित होना पड़ता था। वे फ़र्श पर काग़ज़ की एक चिंदी भी पड़ी नहीं देख सकते थे। किंतु इस सिठाई का दोना भी कमरे में ही फेंक देने के अभ्यस्त थे। एक बार रामनाथ ने ऐसा ही किया। ठाकुर साहब ने तुरंत उठकर उस दोने को खिड़की से बाहर फेंक दिया।

उनमें सेवा-भाव की मात्रा भी यथेष्ट थी। एक बार मुझे ज्वर चढ़ आया। मैं चारपाई पर पड़ा कराह रहा था। इतने में ठाकुर साहब ने हाथ में डाकी का डंडा झुलाते हुए कमरे में प्रवेश किया। मुझे चादर ताने पड़ा देखकर बोले—"हलो प्रेमबिहारी, लेटे क्यों हो?"

मैंने कहा—"बार ज्वर चढ़ा है।"

"ओहो! तुमने कहा क्यों नहीं?"

"अभी चढ़ा है।"

"सिर में पीड़ा तो नहीं है?"

"है तो।"

उन्होंने तुरंत बॉक्स खोलकर यू० डी० कोलोन की शीशी निकाली और अपने रेशमी रूमाल को उस सुगंधित द्रव्य में भिगोकर मेरे माथे पर रख दिया। उस दिन वे रात के बारह बजे तक मेरे सिरहाने बैठे रहे। दूसरे दिन भी वे स्कूल नहीं गए।

उनकी इस सेवा-वृत्ति से मेरा हृदय पानी-पानी हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गया। उस दिन से मैं ठाकुर साहब का विशेष मान करने लगा। उनकी प्रत्येक सुविधा का ध्यान रखता, बल्कि एक प्रकार से उनके सामने कुछ दबकर रहने लगा।

होस्टल में ही नहीं, बरन् कॉलेज के विद्यार्थियों में भी उनका यथेष्ट मान होता था। यद्यपि वे पढ़ने में इतने तेज़ नहीं थे, किंतु हाकी, फ़ुटबाल, क्रिकेट आदि खेलने में कोई उनकी सानी नहीं रखता था। अपने इस गुण के कारण वे अध्यापकों के और कॉलेज के प्रिंसिपल के भी प्रिय पात्र बन गए। मीटिंग हो, या मैच हो, या मार-पीट हो, ठाकुर साहब सबमें अगुआ रहते थे। तीसरी कक्षा के छोटे विद्यार्थी तक उनका नाम जानते थे। अगले साल में कैप्टन तथा डिबेटिंग सोसाइटी के सेक्रेटरी का चुनाव होनेवाला था। हम लोगों ने ठाकुर साहब को ही इन पदों का योग्य अधिकारी समझा और प्रयत्न करके उन्हें ही अपना कैप्टन तथा सेक्रेटरी चुना।

(२)

इस बीच में दो-एक घटनाएँ हो गईं। एक दिन मैं टेनिस खेलकर लौट रहा था। मार्ग में रामनाथ मिल गया। उसने मुझे देखते ही कहा—"यार, ठाकुर साहब का एक नोट खो गया है।"

"कितने का ?"

"दस रुपए का।"

"कहाँ रक्खा था ?"

"कोट की जेब में।"

मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ। मेरे कमरे से आज तक कभी कोई चीज़ नहीं खोई थी। फिर जेब से नोट का निकल जाना तो बड़ी बात थी। होस्टल में पहुँचने पर ठाकुर साहब से भेंट हुई। उस समय वे ग्रोमचेवाले की मिठाई पर हाथ साफ़ कर रहे थे। मुझे देखकर उछल पड़े और बोले—"वाह यार, तुम्हारी बड़ी उम्र है। आओ, आओ।—भाई, दो जगह थोड़े-थोड़े कचालू देना।"

ग्रोमचेवाले ने कचालू बनाए। मैंने तब तक कहा—"ठाकुर साहब, आपका नोट खो गया है ?"

"हाँ, बड़ा ताज्जुब है ! कोट की जेब में पड़ा था।"

"आपने तलाश किया ?"

"तलाश करने से क्या होता है, वह किसी के हाथ में पड़ गया है।"

"आपने जेब में कब डाला था ?"

"कल शाम को। बाज़ार जाकर शू ख़रीदने का इरादा था। मगर फिर न जा सका। तबसे नोट जेब में ही पड़ा था।"

मैंने कहा—"चलिए, एक बार मैं भी खोज लूँ। नोट कहीं जा नहीं सकता। कमरे में ही होगा।"

हम तीनो ग्रोमचेवाले की मिठाई खाते हुए कमरे के भीतर पहुँचे। रामनाथ और मैंने ठाकुर साहब की पुस्तकें, उनके दोनो बक्स, उनकी रद्दी की टोकनी, उनके कोट और पतलून, दोनो की एक-एक जेबें एक-एक करके खोज डालीं, मगर नोट न मिला।

अंत में मुझे व्यर्थ का कष्ट उठाते देखकर ठाकुर साहब ने कहा—"अजी होगा। दस रुपए का नोट था। कौन-सी क़िस्मत ले गया है। आगे के लिये होशियार रहूँगा। मगर यह है बुरी बात। होस्टल के विद्यार्थी के सिवा यह काम और किसी का नहीं हो सकता। नौकरों की इतनी मजाल नहीं कि वे मेरे कोट की जेब से हाथ लगावें।"

ठाकुर साहब का कहना एक प्रकार से ठीक था। होस्टल में सभी प्रकार के विद्यार्थी होते हैं। संभव है, कोई विद्यार्थी बहुत ही सहज भाव से उनकी जेब में पेंसिल खोजने आया हो और नोट देखकर उसे लेकर चलता बना हो। हम लोगों ने फिर उस बात को जहाँ-का-तहाँ दबा देना ही उचित समझा।

इस घटना के पाँच-छः दिन बाद ही किसी ने मुझ पर हाथ साफ़ किया। कॉलेज में मुझे बीस रुपए का मनी-ऑर्डर मिला था। वे रुपए मेरी जेब में पड़े थे। होस्टल में आकर मैंने कोट खूँटी पर टाँग दिया। रुपए ज्यों-के-त्यों पड़े रहे। दूसरे दिन कॉलेज जाने के लिये कोट पहना, तो रुपए नहीं खटके। मैंने चौंककर जेब में हाथ डाला। रुपए नदारद ! एक जेब देखी, दूसरी देखी, तीसरी देखी, मगर रुपए वास्तव में नहीं थे। उस समय रामनाथ बाहर गया हुआ था। ठाकुर साहब सूट पहनकर कॉलेज की तैयारी कर रहे थे। मैंने कहा—"ठाकुर साहब !"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ठाकुर साहब ने तुरंत मेरी ओर मुँह करके कहा—"क्या है ?"

"यार किसी ने मेरे रुपए निकाल लिए !"

"सच ?"

"और क्या झूठ। कब तुम्हारे सामने ही तो क्लास में मनीआर्डर मिला था।"

"बक्स में तो नहीं रख दिए ?"

"नहीं यार ! जेब ही में पड़े थे।"

"कहीं रामनाथ ने तो मज़ाक़ नहीं किया ?"

"अभी मालूम हो जायगा।"

इतने में रामनाथ भी आया। मैंने उससे पूछा कि मेरे रुपए तो नहीं देखे। वह तुरंत ज्वालामुखी की तरह भड़ककर बोला—"कैसे रुपए ?"

"यार सच बताओ। मज़ाक़ मत करो। कॉलेज जाने की देर हो रही है।"

वह गंभीर होकर बोला—"तुम्हारी क़सम, मैंने नहीं देखे। क्या खो दिए ?"

"जान तो ऐसा ही पड़ता है। जेब में पड़े थे। किसी ने निकाल लिए हैं ?"

"चलो अच्छा हुआ। मुझे बहुत दोष दिया करते थे कि मैं बड़ा लापरवाह हूँ। अब इन रुपयों के लिये किसे दोष दोगे ?"

मैं चुप हो गया। उस समय कॉलेज की घंटी बज रही थी। कपड़े पहनकर क्लॉस में जा बैठा। मगर बीस रुपए दिन-भर मेरे दिमाग़ में घूमते रहे। मैं उन्हें सहज में चोर के हाथ में जाते नहीं देख सका। सोचता रहा, आख़िर लिए किसने होंगे ? ज़रूर होस्टल का कोई विद्यार्थी है, निस्संदेह उसी ने ठाकुर साहब के रुपए लिए होंगे ! संध्या को मैंने सुपरिंटेंडेंट से कहा। सुनकर उन्हें भी आश्चर्य हुआ। साथ ही वे चोर को खोज निकालने का प्रयत्न भी करने लगे। किंतु कुछ पता नहीं चला।

इसके बाद होस्टल के अन्य विद्यार्थियों के कमरों से भी दो-एक दफ़े रुपए-पैसों की चोरी हो गई। चोर इतना सतर्क और होशियार था कि कमरे को खुला पाते ही भीतर घुस जाता और कोट या पतलून की जेबों को साफ़ करके अपना रास्ता लेता। जब इस प्रकार कई चोरियाँ हुईं, तब होस्टल के नौकरों पर कड़ी नज़र रक्खी जाने लगी। हम लोग घड़ी-भर के लिये भी कमरे से बाहर जाते, तो ताला बंद कर जाते। किंतु इस विषय में रामनाथ और ठाकुर साहब एक-से लापरवाह थे। ताले की दो चाबियाँ रहती थीं। एक मेरे निकट और एक ठाकुर साहब के निकट। ठाकुर साहब को बहुधा हम लोगों से अलग रहना पड़ता था। इन दिनों वे कॉलेज के कैप्टेन बन चुके थे। उनके सुपुर्द होस्टल और कॉलेज का इतना काम रहता था कि बेचारे कमरे में बैठकर सुस्ता भी नहीं पाते थे।

एक दिन हम दोनो नदी पर स्नान करने गए। उस दिन शायद सोमवती अमावस्या थी। किंतु ठाकुर साहब को एक मैच का प्रबंध करना था, इसलिये वे होस्टल में ही रहे। हम लोग तीन घंटा बाद लौटे। ठाकुर साहब मेज़ पर सिर झुकाए कुछ लिख रहे थे। मुझे देखते ही बोले—"यार, आज किसी ने मेरा फ़ाउंटेन-पेन उड़ा दिया।"

"ऐं—" मैं इससे अधिक और कुछ नहीं कह सका। उनकी क़लम बहुत बढ़िया थी। चालीस-पैंतालिस रुपए की होगी।

ठाकुर साहब बोले—"हाँ ! मैं थोड़ी देर के लिये कॉलेज से हाकी के डंडे उठवाने चला गया। बड़ी मुश्किल से पंद्रह मिनट लगे होंगे। यदि इतनी देर के लिये भी कमरा खुला छोड़कर बाहर जाना मुसीबत हो जाय, तो ऐसे होस्टल में रहने से बाज़ आया। मैं आज ही प्रिंसिपल से कहूँगा।"

ठाकुर साहब की भाव-भंगी देखकर हम लोग मुग्ध होकर रह गए। उनके चेहरे पर क्रोध की यथेष्ट मात्रा थी। बात भी भी कुद्ध होने की। चालीस रुपए थोड़े नहीं होते, और फिर ठाकुर साहब शायद बिना फ़ाउंटेन के लिख नहीं सकते थे—उसी प्रकार, जिस प्रकार कुछ लोग बिना चश्मे के पढ़ नहीं सकते।

मैंने कहा—"चोर निस्संदेह बड़ा साहसी है !"

ठाकुर साहब बोले—"यदि देख पाऊँ, तो उसका ख़ून पिए बिना न रहूँ।"

मैंने कहा—"यदि आप उसे देख पाते, तो वह आपकी क़लम ही क्यों ले जाता ?"

ठाकुर साहब ने कहा—"फिर बताइए, क्या किया जाय !"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"यदि आप चाहें, तो सुपरिंटेंडेंट से कहकर इसी क्षण सबकी तलाशी ले सकते हैं।"

"नहीं, नहीं।" ठाकुर साहब ने अत्यंत सहृदयता-पूर्वक कहा—'मेरी क़लम की अपेक्षा मेरे सहपाठियों का सम्मान अधिक मूल्यवान् है। एक साधारण-सी वस्तु के पीछे मैं उनका अपमान नहीं करूँगा।"

मैं चुप हो गया। हृदय की ऐसी विशालता मैंने अपने बहुत कम सहपाठियों में देखी थी। ठाकुर साहब ने किसी से उस क़लम की चर्चा तक नहीं की। फिर भी सबको मालूम हो गया कि उनकी पैंतालीस रुपए की एक बढ़िया क़लम खो गई है। सभी ने उनके प्रति यथोचित सहानुभूति प्रदर्शित की, साथ ही चोर को मनमानी गालियाँ भी सुनाईं।

(४)

रामनाथ और हम पाँच साल से एक ही साथ, एक ही स्कूल में, पढ़ते आ रहे हैं। एंट्रेंस पास करने पर हम दोनो एक ही साथ कॉलेज में भर्ती हुए और होस्टल में एक ही साथ रहे भी। हम दोनो में बड़ा हित-स्नेह था। रामनाथ मेरे प्रति चाहे जिस कारण से आकृष्ट हुआ हो, किंतु मैं उसकी सरलता और त्याग-भावना पर मुग्ध था। वह सदा मेरी सुविधा का ध्यान रखता था। यदि मैं उसकी इच्छा के प्रतिकूल कभी कोई कार्य करता भी, तो वह नज़र बचा जाता। यही कारण था कि इन पाँच साल में हम दोनो में कभी लड़ाई-झगड़ा नहीं हुआ। वह बड़े आदमी का लड़का नहीं था, फिर भी उसका हृदय विशाल था। उसके पिता ज़िले की तहसील में नाज़िर थे। वे अक्सर महीने में एक बार सरकारी काम से कलक्टरी में आते। उस समय होस्टल में घड़ी-आध घड़ी के लिये अपने पुत्र के निकट अवश्य हो जाते।

उस दिन सात तारीख़ थी। सात तारीख़ को नाज़िर-जी के आने की बात थी। संध्या को हम लोग कुछ देर तक उनकी प्रतीक्षा करते रहे। फिर हॉकी खेलने के लिये कमरे से बाहर निकले। इतने में सड़क पर ताँगा आता हुआ दिखाई पड़ा। रामनाथ के पिता ही थे। हमने आगे बढ़कर उन्हें प्रणाम किया। रामनाथ ने चरण-रज ली। फिर उन्हें लेकर हम कमरे में आए। ठाकुर साहब बाहर ही खड़े रहे थे। नाज़िरजी ने इधर-उधर की बातचीत करने के बाद कहा—"तुम्हें कितने रुपयों की ज़रूरत पड़ेगी?"

रामनाथ ने कहा—"सवा सौ से काम चल जायगा। चार महीने की स्कूल की फ़ीस देना है, इम्तिहान की फ़ीस देना है, इसके अलावा और भी ख़र्चा है। फिर शायद ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

उसकी बात सुनकर नाज़िरजी ने जेब में हाथ डाला। उन्हें रुपयों के संबंध में पहले ही सूचना मिल गई थी। उन्होंने रामनाथ को लिख दिया था कि सात तारीख़ को आने पर वे रुपया अपने साथ लेते आवेंगे।

जेब से सौ रुपए का एक नोट और पचीस रुपए निकालकर नाज़िरजी ने रामनाथ के हाथ में दिए। फिर उन्होंने पूछा—"और तो नहीं चाहिए?"

"नहीं।"

नाज़िरजी ने पाँच रुपए और निकाल कर दिए। साथ ही कहा—"अब मेरे पास एक पैसा नहीं। रुपयों के लिये घर चिट्ठी मत लिखना।"

रामनाथ हँसकर बोला—"नहीं पिताजी।"

इसके बाद नाज़िरजी ताँगे में बैठकर शहर चले गए। ठाकुर साहब चलने के लिये तैयार खड़े थे। रामनाथ ने खूँटी पर टँगे हुए कोट में रुपए डालकर कहा—"चलो देर हो रही है। लोग हमारा इंतज़ार कर रहे होंगे।"

मैंने कहा—"रुपयों को बक्स में डाल दो।"

"अजी कौन लिए जाता है।" कहकर ठाकुर साहब ने ताला-चाबी उठाया। हम लोग बाहर निकले और कमरा बंद करके खेलने चले गए।

उस दिन राम-सभा होनेवाली थी। रामनाथ को इस सभा में ख़ास दिलचस्पी थी। यों कहना चाहिए कि वह इस सभा का प्राण था। इसलिये खेलकर लौटने के बाद उसने जल्दी-जल्दी भोजन किया और उसके बाद राम-सभा की बैठक का प्रबंध करने में जुट गया।

मैं अपने कमरे में बैठा ठाकुर साहब से गप-शप भिड़ाता रहा। फिर आठ बजे राम-सभा में गए। वहाँ बारह बज गए। फिर कमरे में आकर हम तीनो कब सो गए, पता नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५)

ठाकुर साहब रोज़ ही दिन चढ़े उठते थे, फिर कल तो रात में बारह बजे तक जागरण किया था। किंतु मुझे और रामनाथ को जल्दी उठने की आदत थी। नित्य के समय पर ही आँख खुल गई। उठकर हम दोनो ने हाथ-मुँह धोया और घूमने चले गए। वापिस आने पर देखा कि ठाकुर साहब चादर ताने अब भी ख़र्राटे ले रहे हैं।

मैंने बुलाया—"ठाकुर साहब!"

ठाकुर साहब ने निद्रा-क्लांति स्वर में कहा "हूँ।"

"अजी उठो भी। कितना दिन चढ़ आया है।"

"यार ठहर जाओ। ज़रा और सो लेने दो। सिर में कुछ दर्द हो रहा है।"

मैंने फिर कुछ नहीं कहा। रामनाथ पुस्तक लेकर अध्ययन करने बैठ गया। मुझे ज़रा ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने की आदत थी। मेरे पढ़ने से कहीं ठाकुर साहब की नींद में व्याघात न हो, इस ख़याल से मैं एक किताब लेकर बाहर बरामदे में चला गया।

दस मिनट बाद रामनाथ मेरे निकट आया। मैंने कहा—"क्या है?"

रामनाथ अपने स्वर को धीमा करके बोला—"जेब में नोट नहीं हैं।" स्वर में काफ़ी उद्विग्नता थी।

मैंने कहा—"तुमने बक्स में नहीं रक्खा था?"

"नहीं।"

"फिर?" साथ ही मैं उठकर खड़ा हो गया।

"न-मालूम कौन ले गया। तुमने तो नहीं निकाला?"

"नहीं। ठाकुर साहब से पूछो!"

एक आवाज़ लगाई, किंतु वे "हूँ" करके फिर ख़र्राटे लेने लगे।

"अच्छा चलो। तुम हो बड़े लापरवाह। नोट उसी समय बक्स में क्यों नहीं रख दिया?"

कमरे में पहुँचकर मैंने सबसे पहले रामनाथ की जेबें टटोलीं। पचीस रुपया पड़े थे, मगर नोट नहीं मिला। यह और भी आश्चर्य की बात थी! अभी कहार कमरे में झाड़ू देने आया था। यदि वह जेब में हाथ डालता भी, तो उसका इतना साहस नहीं हो सकता था कि रुपयों को खनकाकर नोट निकालकर ले जाता। फिर यह किसका काम है? मैंने रामनाथ की ओर देखकर ठाकुर साहब को आवाज़ लगाई। ठाकुर साहब ने चौंककर कहा—"क्या है यार, तुमने आज सोना हराम कर दिया।" मैंने कहा—"अभी कमरे में कोई आया तो नहीं था?" उन्होंने चादर के भीतर से मुँह निकालकर कहा—"क्यों?"

"रामनाथ का नोट नहीं मिलता।"

"ऐं!" साथ ही ठाकुर साहब उछलकर चारपाई पर बैठ गए। "वही नोट न, जो कल इनके पिता दे गए थे?"

"हाँ।"

"इन्होंने जेब में डाल दिया था!"

"जेब में नहीं है।"

"फिर?—कह नहीं सकता, कमरे में कोई आया या नहीं। कहार आया था। मगर झाड़ू लगाकर कब चला गया, मुझे बिलकुल ख़बर नहीं। एकाध दफ़े शायद किसी ने बुलाया भी था—मगर आप लोग कहाँ थे?"

"घूमने गए थे।"

इस समय ठाकुर साहब की नींद अच्छी तरह खुल गई थी। उन्होंने सुराही से पानी लेकर मुँह धोया, बाल सँवारे, फिर बोले—"यह तो अत्यंत आश्चर्य की बात है। चोर निस्संदेह बड़ा साहसी है। मौक़ा ताककर आता है। मेरी क़लम भी उसने बड़ी सफ़ाई से उड़ाई। अब क्या करना चाहिए?"

मैंने कहा—"सौ रुपए थोड़े नहीं होते। आप तो बड़े आदमी हैं। आपकी एक क़लम चली गई, दूसरी आ जायगी। किंतु रामनाथ के पिता अब फिर से सौ रुपए कहाँ से लायँगे। यही रुपए उन्होंने न-जाने किस प्रकार इकट्ठा करके दिए होंगे। परसों के दिन फ़ीस देना है।"

रामनाथ बोला—"मैं निश्चय-पूर्वक कह सकता हूँ कि अभी नोट चोर के निकट ही है। तलाश करने पर अभी मिल सकता है।"

ठाकुर साहब बोले—"शायद ही मिले।"

किंतु मेरा मन भी यही कहता था कि नोट अभी होस्टल के बाहर नहीं गया। मैंने कहा—"अधिक शोर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुल करने की ज़रूरत नहीं। मैं अभी सुपरिंटेंडेंट को सूचना देता हूँ।"

मैं कमरे से बाहर निकलकर सीधा सुपरिंटेंडेंट के क्वार्टर में पहुँचा। उस समय वे ऑफ़िस में बैठने ही जा रहे थे। मैंने उन्हें संक्षेप में सारा क़िस्सा सुनाया। हम विद्यार्थी सौ रुपए के नोट को चाहे जितनी हलकी नज़र से देखें, किंतु सुपरिंटेंडेंट सौ रुपए खो जाने की बात सुनकर सन्नाटे में आ गए। उन्होंने तुरंत चपरासी को घंटी बजाने की आज्ञा दी। साथ ही ऑफ़िस बंद करके मेरे साथ बाहर निकले।

टन-टन-टन-टन-टन की आवाज़ से सारा होस्टल गूँज उठा। विद्यार्थीगण खाना, पढ़ना, लिखना छोड़कर बड़बड़ाते हुए दालान में एकत्र होने लगे। सभी आश्चर्य-चकित होकर एक दूसरे की ओर देख रहे थे और पूछ रहे थे—"भाई, क्या बात है? आज सवेरे-सवेरे क्यों घंटी बजी है?"

सबके एकत्र हो जाने पर सुपरिंटेंडेंट ने कहा—"आप लोग ज़रा सँभलकर खड़े हो जाइए। अपने-अपने करने और कोठियाँ भी झाड़ डालिए। कहीं कोई चीज़ अटकी तो नहीं है। इसके बाद अपने कमरे की तथा बक्सों की चाबियाँ मुझे दीजिए।" विद्यार्थी चकित होकर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। उन्हें समझने देर नहीं लगी कि होस्टल में कोई चोरी हुई है। सबने अपनी-अपनी चाबियाँ लाकर दे दीं। तलाशी शुरू हुई। जिस विद्यार्थी के कमरे की तलाशी होती थी, सुपरिंटेंडेंट के साथ केवल वही भीतर जा पाता था। आध घंटे बाद हमारे कमरे का नंबर आया। पहले मेरा बक्स देखा गया। उसके बाद रामनाथ का। फिर कमरे की एक-एक चीज़ उलट-पलटकर अच्छी तरह देखी गई। किताबों के पन्ने-पन्ने खोले गए। चारपाई के नीचे सिर डाला गया। अलमारी के नीचे देखा गया। उसके बाद ठाकुर साहब ने अपना बक्स खोला। उन्होंने कपड़े की एक-एक तह खोलकर दिखाई।

सुपरिंटेंडेंट ने कहा—"अजी, जल्दी कीजिए। मुझे और भी कमरे देखना है।"

ठाकुर साहब बोले—"नहीं साहब। तलाशी अच्छी तरह होनी चाहिए।"

उसके बाद दूसरा बक्स खुला। रामनाथ इस समय चुपचाप खड़ा था। उसे निस्संदेह इस बात का आंतरिक खेद हो रहा था कि ठाकुर साहब की तलाशी ली जा रही है। सुपरिंटेंडेंट साहब बक्स पर सिर झुकाए खड़े थे, और मैं बक्स में भरे हुए सूटों को स्थिर दृष्टि से देख रहा था।

सब कपड़े बाहर निकल आए। ठाकुर साहब ने कहा—"लीजिए, और उन्होंने कपड़ों को फिर से बक्स में रखने का उपक्रम किया।"

सुपरिंटेंडेंट साहब ने कहा—"फिर कसर क्यों रहे। इस कपड़े को भी फटकारकर बिछा लो।"

बक्स में एक कपड़ा बिछा था। उनका उसी ओर संकेत था। मुझे उनकी यह बात अच्छी नहीं लगी। ठाकुर साहब ने कहा—"उसमें कुछ नहीं है—लीजिए, काग़ज़-पत्र..."

किंतु तब तक सुपरिंटेंडेंट साहब ने थोड़ा और झुककर कपड़ा उठा दिया।

बक्स की सतह खुल गई। उसकी काली वार्निश पर एक मुड़ा हुआ सफ़ेद काग़ज़ पड़ा था और एक फ़ाउंटेन-पेन। उस क़लम को देखकर मैं जैसे आसमान से गिर पड़ा।

सुपरिंटेंडेंट साहब ने काग़ज़ उठाकर खोला—सौ रुपए का नोट था।

हम और रामनाथ बज्राहत की भाँति खड़े रह गए। ठाकुर साहब बैठे-ही-बैठे ऊपर मुँहकर बोले—"जी, सौ रुपए का नोट है। मेरे पास बहुत दिनों से रक्खा है।"

किंतु उनका चेहरा देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। एकदम सफ़ेद था।

सुपरिंटेंडेंट ने उनकी ओर देखकर कहा—"यदि नोट आपका है, तो आपको मिल जायगा।" कहकर वे बाहर निकल आए। हम दोनों कमरे में निश्चल निर्वाक् भाव से तब तक खड़े रहे, जब तक ठाकुर साहब ने बक्स में कपड़े नहीं भर लिए।

फिर मैंने कहा—"क्यों ठाकुर साहब, आपकी क़लम तो खो गई थी?"

"जी, बक्स में न-जाने कैसे पहुँच गई। मैं यही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समझता था कि खो गई है !…" ठाकुर साहब इससे अधिक और कुछ न कह सके।

मामला प्रिंसिपल के सामने पेश हुआ। ठाकुर साहब ने अपनी चोरी स्वीकार की। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि उनकी क़लम वास्तव में खोई नहीं थी। प्रिंसिपल ने उन्हें अधिक दंड नहीं दिया। केवल होस्टल से निकाल दिया। बहुत दिनों बाद हमें इलाहाबाद के एक स्कूल का विद्यार्थी मिला। उसके कहने से मालूम हुआ कि इलाहाबाद का जल-वायु वास्तव में ठाकुर साहब के प्रतिकूल हो उठा था। वहाँ के होस्टल में उन्होंने कई चोरियाँ की थीं और जब भंडाफोड़ हुआ, तब जल-वायु-परिवर्तन के लिये यहाँ चले आए।

छप गया ! प्रकाशित हो गया !!

हिंदी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ मौलिक उपन्यास

पृष्ठ-संख्या लगभग ५००] ## गढ़-कुंडार ## [मूल्य लगभग २॥)

यह सम्राट् हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत के इतिहास के निर्माता चंदेलों, पँवारों, पड़िहारों और खंगारों के पारस्परिक संघर्ष से ओत-प्रोत, मध्य-कालीन भारत की राजनीतिक चालों से भरा हुआ, आल्हा-ऊदल की जन्मभूमि बुँदेलखंड का एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास है।

यदि आप रवींद्र बाबू को भी चुनौती देनेवाली प्रतिभा, शरच्चंद्र को भी मात करनेवाली चरित्र-कल्पना और बंकिमचंद्र को उलाँघनेवाली औपन्यासिकता एक ही जगह देखना चाहते हैं, तो बुँदेलखंड की पार्वत्य उपत्यकाओं एवं सघन वन-प्रांतरों में प्रतिध्वनित और कलकलवाहिनी नदियों की मधुर ध्वनि से मुखरित इस सर्वोत्कृष्ट उपन्यास को एक बार पढ़ जाइए। इस प्रकार का रोमांटिक—प्रेम-गाथा-पूर्ण—वीरत्व-मय, दिल दहला देनेवाला, मनोरंजक मौलिक उपन्यास अब तक हिंदी-साहित्य में एक भी नहीं है।

इसे पढ़कर आप इँगलैंड और फ्रांस के प्रसिद्ध औपन्यासिकों, स्कॉट और डूमाज़, को भूल जायँगे।

"गढ़-कुंडार" एकदम नया है !

इसमें बुंदेलखंड के वीरों का इतिहास, छत्रसाल की इतिहास-प्रसिद्ध जन्मभूमि की मनोमोहक सीनरी तथा सरल चंदेल और खंगार-युवतियों की प्रेम-लीला, देश-प्रेम, वीरता—सब आदि से अंत तक नया-ही-नया है।

इस सर्वोत्तम उपन्यास के लेखक हैं हिंदी के सर वाल्टर स्कॉट श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०—झाँसी के गण्यमान्य एडवोकेट।

फ़ौरन् आर्डर भेजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण का इंतज़ार करना पड़ेगा !

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनंत शृंगार

[प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा "कुमार" एम्० ए०]

केशों का कमनीय कुसुम से,
करती हूँ शृंगार !
लतिका का यौवन माँगा है,
मैंने हाथ पसार !!
कवि ! वीणा में मेरी छवि का,
स्वर भर दो इस बार;
एक उमंग उठी है, उस पर,
कर लेने दो प्यार !!

ओस-बिंदु पीकर जीवित थे,
ये प्रसून सुकुमार;
मेरे नीरस केशों से
कैसे कर लेंगे प्यार ?
पल्लव सुमन बीच कलिकामय,
निर्मित है यह हार;
दो दुष्टों के बीच किया है,
अबला का शृंगार ।

आह ! देखना टूट न जावे, अति द्रुत गति से तार;
बहुत दिनों के बाद कर रही हूँ अपना शृंगार ।

अरे, तोड़ दो हार, तोड़ दो वीणा का स्वर-तार;
बिखरी कलियों से कर लूँगी, मैं अपना शृंगार ।

महान् चमत्कारिक शोध !

बवासीर-विनाशक रामबाण तैल !!

देखो इस दवा की कैसी प्रशंसा होती है, बहुत-से प्रमाणपत्रों में से सिर्फ़ नीचे का एक ही पढ़िए—

महाशय ! आपने जो दवा भेजी है, उसके लिये मैं आपका बड़ा उपकार मानता हूँ । मैं २० वर्ष से बवासीर से दुःखी था, मुझे इस दवा से बहुत फ़ायदा हुआ है, और मेरी ख़ूनी बवासीर मिट गई है । मेरे लिये तो यह दवा ईश्वर की भेजी हुई साबित हुई है । यह दवा चुपड़ने में बहुत आसान है, और इस वजह से बहुत उपयोगी है । मेरे ऐसे मित्रों को, जो बवासीर से दुःखी हैं और जिन्हें ऐसी अकसीर दवा अभी तक नहीं मिली है, उनके पास मैं यह दवा भेजना चाहता हूँ, कृपया तीन शीशियाँ दवा की तुर्त वी० पी० से भेज दीजिए । ता० १४ । २ । २५ W. Ba. Gale, Excise Inspector, myaungmya, L. Burma

दवा की एक बोतल की क़ीमत रु० ५॥-) डाक-महसूल-सहित । इस दवा के चुपड़ने से बिलकुल जलन नहीं होती है ।

दवा मिलने का पता—

आशा भाई बाघजी भाई पटेल
एलीस ब्रीज,
मु० अहमदाबाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोवियट रूस का शासन

[पं० देवव्रत शास्त्री]

संसार के अनेक देशों में अनेक राज्य-क्रांतियाँ हुई हैं, और उनके फल-स्वरूप उन देशों के शासन-प्रबंध में बड़े-बड़े परिवर्तन होते आए हैं। परंतु इन सब राज्य-क्रांतियों में रूस की राज्य-क्रांति का एक बहुत ही बड़ा और महत्व-पूर्ण स्थान है। राज्य-क्रांति के बाद वहाँ जैसा शासन-प्रबंध स्थापित हुआ, अपनी अपूर्वता और विशेषता के कारण उसे भी एक उल्लेखनीय स्थान प्राप्त हो गया है। प्रजा-तंत्र-शासन दूसरे स्वाधीन राष्ट्रों में भी है, जनता की हित-रक्षा और उन्नति का ख़याल उन देशों में भी रक्खा जाता है, और देश को समृद्धिशाली बनाने के आवश्यक साधनों से सब कहीं काम लिया जाता है। परंतु सोवियट-रूस की प्रजातंत्र-शासन-पद्धति, उसकी प्रजा-हित-चिंतना तथा देश को समृद्धिशाली बनाने का ढंग संसार के उन सभी देशों से न्यारा है—अनोखा है। और प्रजातांत्रिक देशों में प्रजातंत्र-शासन का नाम होते हुए भी, वहाँ के संपत्ति-शालियों, बड़े-बड़े विद्वानों और प्रचंड अधिकार-लोलुपों के कारण, देश के बहुत कम साधारण आदमी शासन-कार्य में भाग ले पाते हैं। परंतु रूस का शासन-विधान ऐसा बनाया गया है कि उसमें यह बुराई नहीं आ सकती। वहाँ साधारण-से-साधारण आदमी को भी सरकार के उच्च-से-उच्च पद पर आरूढ होने की पूरी सुविधाएँ प्राप्त हैं। वहाँ की सरकार नीचे से ऊपर तक सोवियटों (पंचायतों) पर अवलंबित है। वहाँ पर पूँजीपति या अन्य किसी श्रेणी के व्यक्तियों के लिये कोई खास सुविधा नहीं। सबों को बराबर हक़ हासिल हैं, और इसी कारण वहाँ की सरकार किसानों और मज़दूरों की सरकार कहलाती है। यहाँ पर इसी शासन-पद्धति पर प्रकाश डाला जायगा।

सर्वोपरि सरकार

रूस की सर्वोपरि—केंद्रीय—सरकार को साम्यवादी सोवियट प्रजातंत्र यूनियन * (यूनियन ऑफ़् सोशलिस्ट सोवियट रिपब्लिक) कहते हैं। इसके अंतर्गत छः प्रजातंत्र हैं, जिनके नाम (१) रशन सोशलिस्ट फ़ेडरल सोवियट रिपब्लिक (आर० एस्० एफ़्० एस्० आर०); (२) यूक्रेनइन सोशलिस्ट सोवियट रिपब्लिक; (३) ह्वाइट रशन सोशलिस्ट सोवियट रिपब्लिक (डबल्यू० आर० एस्० एस्० आर०); (४) ट्रान्सकाकेशियन फ़ेडरल सोवियट रिपब्लिक † (टी० एस्० एफ़्० एस्० आर०); (५) उज़बेक सोशलिस्ट सोवियट रिपब्लिक और (६) तुर्कमान सोशलिस्ट सोवियट रिपब्लिक (टी० एस्० एस्० आर०) हैं। इन प्रजातंत्रों में भी कई-कई संयुक्त (फ़ेडरल) प्रजातंत्र हैं, और उनके अंतर्गत भी अनेक छोटे-छोटे स्वतंत्र प्रजातंत्र (Autonomous republics) तथा स्वतंत्र-क्षेत्र (Autonomous regions) हैं, जिन्हें अपने-अपने परिमित क्षेत्र में यूनियन सरकार द्वारा निर्धारित नीति तथा सिद्धांतों पर, साधारण बातों में अपनी सुविधा और परिस्थिति का ख़याल रखते हुए, शासन-प्रबंध करने की पूरी स्वतंत्रता है।

यूनियन के उपर्युक्त छः प्रजातंत्रों में पहले चार प्रजातंत्रों ने परस्पर मिलकर १९२२ ई० में केंद्रीय सरकार (यूनियन ऑफ़् दी सोशलिस्ट सोवियट रिपब्लिक) की स्थापना करने का निश्चय किया, और मास्को में यूनियन कांग्रेस की प्रथम बैठक में (३० दिसंबर, १९२२ ई० को) एक प्रस्ताव द्वारा यूनियन सरकार की स्थापना की गई। बाद को, सन् १९२४ ई० में, उज़बेक तथा तुर्कमान प्रजातंत्र भी यूनियन में

* आगे सब कहीं केंद्रीय सरकार के लिये 'यूनियन'-शब्द का ही प्रयोग किया गया है।

† अजरबेजां, जार्जिया और आरमिनियाँ के प्रजातंत्र इसी के अंतर्गत हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शामिल हो गए। वह शासन-विधान, जिसके अनुसार आजकल वहाँ का कार्य होता है, यूनियन की केंद्रीय कार्यकारिणी सम्मति द्वारा ६ जुलाई, १९२३ ई० को स्वीकृत हुआ था।

यूनियन (केंद्रीय) सरकार के मूल सिद्धांत और अधिकार

क—राष्ट्र के भीतरी मामलों में प्रतिनिधित्व करना, राजनीतिक संबंध के सभी काम करना, तथा दूसरे राष्ट्रों से राजनीतिक तथा अन्य प्रकार की संधियाँ करना।

ख—यूनियन के अधीन विभिन्न प्रजातंत्रों के आपसी सरहद निश्चित करना, अर्थात् उसको तोड़ना, घटाना, बढ़ाना आदि।

ग—यूनियन में नए प्रजातंत्रों को सम्मिलित करने के लिये उनसे उचित शर्तों पर संधि करना।

घ—युद्ध की घोषणा तथा सुलह करना।

ङ—केंद्रीय तथा विभिन्न प्रजातंत्रों की सरकार को भीतरी या बाहरी क़र्ज़े के लिये मंज़ूरी देना।

च—अंतरराष्ट्रीय समझौतों को मंज़ूर करना।

छ—देशी तथा विदेशी व्यापार का नियंत्रण, देख-रेख और नीति-निर्धारण करना।

ज—यूनियन की बुनियादी आर्थिक नीति-संबंधी साधारण नियम बनाना, यूनियन-संबंधी तथा निजी व्यवसायों की परिभाषा करना और अपने लिये अथवा अपने अंतर्गत विभिन्न प्रजातंत्रों के लिये रिआयती समझौते (Concessionary agreements) करना।

झ—आयात-निर्यात तथा डाक और तार का नियंत्रण करना।

ञ—यूनियन की फ़ौज का संगठन और नियंत्रण करना।

ट—यूनियन के बजट (आय-व्यय का चिट्ठा) को, जिसमें उसके विभिन्न प्रजा-तंत्रों के भी बजट शामिल रहते हैं, मंज़ूर करना, समस्त यूनियन में लागू होनेवाले टैक्स तथा लगान को निश्चित और उसमें कमी-बेशी करना।

ठ—मुद्रा तथा सूद-संबंधी नीति निश्चित करना।

ड—यूनियन के तमाम भूभाग के खान, जंगल, जल और ज़मीन के उपयोग आदि के संबंध में नियम बनाना।

ढ—यूनियन के एक प्रजा-तंत्र से दूसरे प्रजा-तंत्र में जानेवालों के लिये क़ानून बनाना और उनके लिये ज़मीन रिज़र्व रखना।

ण—दीवानी तथा फ़ौजदारी मामलों के न्याय के संबंध में क़ानून बनाना।

त—मज़दूरों तथा किसानों के मूलाधार क़ानून को स्थिर करना।

थ—शिक्षा-नीति स्थिर करना।

द—सार्वजनिक स्वास्थ्य-रक्षा के क़ानून बनाना।

ध—नाप-तोल के क़ायदों को तय करना।

न—यूनियन की जन-संख्या आदि के आँकड़े बनवाना। (Organisation of the general statisticsIof the union)

प—यूनियन के भूभाग में रहनेवाले विदेशियों के नागरिक अधिकारों के संबंध में क़ानून बनाना।

फ—तमाम यूनियन के संबंध में किसी प्रकार की माफ़ी या दया की घोषणा करना।

ब—सोवियट कांग्रेस तथा उसकी विभिन्न स्थानीय कमेटियों के उन क़ानूनों को रद करना, जो वर्तमान शासन-विधान में किसी प्रकार बाधक सिद्ध हो रहे हैं।

भ—यूनियन के विभिन्न प्रजातंत्रों के मतभेदों और झगड़ों को तय करना।

इस शासन-विधान के मूल सिद्धांतों में कोई परिवर्तन सभी प्रजातंत्रों की संयुक्त कांग्रेस द्वारा ही हो सकता है।

संयुक्त प्रजातंत्रों * के मूल सिद्धांत

वर्तमान शासन-विधान और यूनियन के उक्त अधिकारों के सिवा अन्य सब बातों में यूनियन के अधीन प्रजा-तंत्र अपने-अपने यहाँ पूरी आज़ादी के साथ शासन करते हैं। यूनियन सब प्रजातंत्रों के प्रभुत्व के अधिकारों (Sovereign rights) की रक्षा करता है। प्रत्येक अधीन प्रजातंत्र को यूनियन से निकलनेका अधिकार है, परंतु इस के लिये सब प्रजा-तंत्रों की मंज़ूरी लेना आवश्यक है। वर्तमान शासन-विधान के अनुसार काम करने के लिये, सम्मिलित प्रजा-तंत्र को अपने-अपने शासन-विधान में

* संयुक्त प्रजातंत्रों का मतलब यूनियन में शामिल छः प्रजातंत्रों से है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यथोचित परिवर्तन करना पड़ता है। यूनियन के सभी प्रजातंत्रों के नागरिकों को नागरिकता के समान अधिकार प्राप्त हैं। प्रत्येक प्रजातंत्र की सर्वोपरि संस्था क्रमशः उसकी कांग्रेस, कार्यकारिणी समिति तथा प्रेसीडियम है। परंतु इनमें भी कार्य करने की प्रधानता प्रेसीडियम को ही है; क्योंकि पहली दोनो संस्थाएँ मुख्यतः व्यवस्थापन का ही कार्य करती हैं।

सोवियट कांग्रेस

यूनियन की सर्वोपरि शक्ति-संस्था (Authority) उसकी सोवियट कांग्रेस है। पर कांग्रेस के अधिवेशनों के बीच के समय में वहाँ की सर्वोपरि शक्ति (संस्था) उसकी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति (Central executive committee of the union of Socialist Soviet republics) समझी जाती है। सोवियट कांग्रेस के लिये प्रतिनिधि क़स्बा तथा शहरों से २५,००० वोटरों के पीछे एक और देहातों से १,२५,००० अधिवासियों के पीछे एक चुना जाता है। शहरवालों का यह प्रतिनिधित्व देहातवालों की अपेक्षा पाँचगुना अधिक मालूम पड़ता है; परंतु वास्तव में तिगुने का ही अनुपात पड़ता है; क्योंकि देहात में अधिवासियों को संख्या के हिसाब से प्रतिनिधि चुनने का नियम है। और, इन अधिवासियों में बच्चे भी आ जाते हैं, जिन्हें नाबालिग़ होने के कारण वोट देने का अधिकार नहीं होता। चूँकि राज्य-क्रांति में तथा उसके बाद भी शहरवाले ही शासन-संबंधी मामलों में अधिक भाग लेते आए हैं, साथ ही वे अधिक योग्य समझे जाते हैं, इसलिये ही उन्हें ग्रामीणों की अपेक्षा अधिक प्रतिनिधित्व दिया गया है, तथा ग्रामवासियों ने इसे सहर्ष स्वीकार भी कर लिया है। प्रतिनिधित्व का यही अनुपात यहाँ के नीचे से ऊपर तक प्रायः सभी विभागों में है। उक्त हिसाब से सोवियट कांग्रेस में १५०० प्रतिनिधि शामिल होते हैं। साधारणतः कांग्रेस प्रति वर्ष क़रीब उस दिनों तक मास्को के विशाल ओपरा भवन में होती है। परंतु किसी विशेष परिस्थिति में सम्मिलित प्रजा-तंत्रों में से दो के अनुरोध पर साल में एक से अधिक बार भी कांग्रेस का अधिवेशन हो सकता है। कांग्रेस वास्तव में शासन-चक्र को चलाने के लिये क़ानून आदि नहीं बनाती, बल्कि राष्ट्र की उन्नति और रक्षा के लिये नीति तथा सिद्धांतों पर बहस करके नीति तथा सिद्धांत निश्चित करती है। फिर इन्हीं नीतियों तथा सिद्धांतों के आधार पर केंद्रीय कार्यकारिणी समिति की दोनो उपसभाएँ क़ानून बनाती और शासन-प्रबंध करती हैं। कांग्रेस का अधिवेशन प्रति वर्ष उसकी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति कराती है। उसे यह भी अधिकार है कि किसी विशेष कारण से कांग्रेस का अधिवेशन उसके निश्चित समय पर न करके आगे के लिये बढ़ा दे।

केंद्रीय कार्य-कारिणी समिति के कार्य तथा अधिकार

सोवियट यूनियन की वास्तविक व्यवस्थापक संस्था उसकी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति है। इसके अंतर्गत कौंसिल ऑफ़ यूनियन (यूनियन कौंसिल) और कौंसिल ऑफ़ नेशनैलिटीज़ (राष्ट्र-परिषद्) होती है। सोवियट-कांग्रेस संयुक्त प्रजातंत्रों की जन-संख्या के अनुपात से प्रतिनिधि चुनकर यूनियन कौंसिल का निर्माण करती है। इसके कुल सदस्यों की संख्या अधिक-से-अधिक ४१४ हो सकती है। राष्ट्र-परिषद् का निर्माण बड़े संयुक्त प्रजातंत्रों (Allied republics) छोटे स्वशासित प्रजातंत्रों (Autonomous republics) तथा उनसे भी छोटे अन्य स्वशासित प्रदेशों (Autonomous regions) के प्रतिनिधियों द्वारा होता है। इसके प्रतिनिधित्व का हिसाब ऐसा रहता है कि छोटे तथा बड़े प्रजातंत्रों से तो प्रत्येक के पाँच-पाँच तथा छोटे स्वशासित प्रदेशों से एक-एक प्रतिनिधि लिए जाते हैं। इसके कुल सदस्यों की संख्या १३१ होती है। इस प्रकार रशन सोशलिस्ट फ़ेडरल रिपब्लिक भी, जो संयुक्त प्रजातंत्रों में सब से बड़ा और प्रधान है, उतने ही प्रतिनिधि भेज सकता है जितने कि एक छोटा-सा प्रजातंत्र। इस व्यवस्था के अनुसार छोटे प्रजातंत्रों को भी किसी मामले में अपने निर्णायक—निश्चयात्मक—आवाज़ बलंद करने की वही शक्ति प्राप्त है। राष्ट्र-परिषद् के निर्माण के बाद वह सोवियट-कांग्रेस द्वारा मंज़ूर की जाती है।

ये दोनो सभाएँ केंद्रीय कार्यकारिणी कमेटी के अध्यक्ष मंडल (Presidium), मंत्रिमंडल (Poeple Commissaries), कमसरियट, के अलग-अलग मंत्री और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लतिका

[श्रीदुलारेलाल भार्गव के चित्र-संग्रह से]

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केंद्रीय कार्यकारिणी समिति बख़ुद द्वारा उठाए गए प्रश्नों, क़ानूनों, राजाज्ञाओं (Decrees), प्रस्तावों आदि पर विचार और निर्णय करती, उन्हें प्रकाशित करती तथा मंत्रिमंडल के कामों की देख-भाल करती है। यूनियन के राजनीतिक या आर्थिक जीवन के साधारण सिद्धांत में असर डालनेवाले किसी भी प्रकार के प्रस्ताव केंद्रीय समिति के सामने लाना अनिवार्य होता है। केंद्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा मंज़ूर सभी क़ानून, आर्डर, प्रस्ताव आदि शीघ्र-से-शीघ्र तमाम देश में पालन होते हैं। केंद्रीय कार्यकारिणी समिति को, अध्यक्ष-मंडल, विभिन्न कांग्रेसें, सभी प्रजा-तंत्रों की कार्यकारिणी समितियों तथा ऐसी अन्य किसी भी अधिकारी संस्था के किसी भी डिक्री या प्रस्ताव को रद्द या स्थगित करने का पूरा अधिकार होता है।

केंद्रीय समिति का अधिवेशन अमूमन् साल में तीन बार होता है; परंतु राष्ट्र-परिषद् या यूनियन कौंसिल के अध्यक्ष-मंडल अथवा संयुक्त-प्रजातंत्रों में किसी एक की केंद्रीय समिति के चाहने से उसकी विशेष बैठक भी हो सकती है। केंद्रीय समिति को एक पार्लामेंट के रूप में समझना चाहिए।

कोई भी बिल तब तक क़ानून नहीं बनता, जब तक वह केंद्रीय कार्य-समिति की दोनो सभाओं द्वारा पास नहीं हो जाता। किसी मामले में अगर दोनो सभाओं में मतभेद हो जाय, तो वह बात दोनो द्वारा नियुक्त कमेटी के सिपुर्द कर दी जाती है। अगर इस कमेटी द्वारा भी इसका निर्णय न हो, तो दोनो सभाओं के संयुक्त अधिवेशन में उसका निपटारा किया जाता है, और संयोग-वश वहाँ भी अगर उसका फ़ैसला न हो, तो सोवियट कांग्रेस के विशेष अधिवेशन द्वारा उसका निपटारा किया जाता है। केंद्रीय कार्य-कारिणी समिति के अधिवेशनों के बीच के समय में उसके द्वारा निर्मित अध्यक्ष-मंडल (Presidium) ही सर्वोपरि अधिकारिणी शक्ति होती है। केंद्रीय समिति सोवियट-कांग्रेस के प्रति ज़िम्मेदार होती है।

के० स० के अध्यक्ष-मंडल के कार्य

जैसा कि ऊपर बतलाया गया, केंद्रीय समिति के अधिवेशनों के बीच के समय अध्यक्ष-मंडल ही सर्वोपरि व्यवस्थापक, कार्यकारक और शासक होता है। अध्यक्ष-मंडल में सात-सात सदस्य तो दोनो सभाओं से अलग-अलग तथा सात दोनो की संयुक्त बैठक द्वारा—अर्थात् कुल २१ सदस्य चुने जाते हैं। वह देखता है कि सोवियट कांग्रेस तथा शासन-विधान के सब क़ानून, प्रस्ताव, राजाज्ञा आदि का शासन के सब अंगों द्वारा पालन हो रहा है या नहीं ? उसे मंत्रिमंडल, उसके किसी एक मेंबर तथा संयुक्त प्रजातंत्रों की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति और कांग्रेसों के प्रस्ताव को स्थगित और रद्द करने का अधिकार है; परंतु संयुक्त-प्रजातंत्र की कांग्रेसों के प्रस्तावों को रद्द वा स्थगित करने की मंज़ूरी उसे केंद्रीय समिति से भी लेनी पड़ती है। अध्यक्ष-मंडल राजाज्ञा, प्रस्ताव, आर्डिनेंस आदि निकालता, केंद्रीय तथा विभिन्न प्रजा-तंत्री मंत्रिमंडल और उनकी केंद्रीय समिति और अन्य संस्थाओं द्वारा उपस्थित किए गए प्रस्तावों आदि पर विचार करता तथा मंज़ूरी देता है। वह सरकारी प्रस्तावों को देश की विभिन्न प्रचलित भाषाओं में प्रकाशित कराता तथा शासन की विभिन्न ऊँची संस्थाओं के पारस्परिक संबंध के प्रश्न को तय करता है। अध्यक्ष-मंडल अपने काम के लिये केंद्रीय कार्यकारिणी के प्रति ज़िम्मेदार होता है।

कौंसिल ऑफ़् पिपुल कमिसरीज़ (मंत्रिमंडल) के कार्य

यहाँ की कौंसिल ऑफ़् पिपुल कमिसरीज़ दूसरे देशों के मंत्रिमंडल के समान है। परंतु दूसरे देशों के मंत्रि-मंडलों की अपेक्षा यहाँ के मंत्री-मंडल के अधिकार कुछ अधिक हैं। जैसे यहाँ की कौंसिल ऑफ़् पिपुल कमिसरीज़ किसी ख़ास जल्दबाज़ी के समय कोई क़ानून भी बना सकती है तथा राजाज्ञा भी निकाल सकती है। इसके निम्न-लिखित ११ पदाधिकारी और ९ विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग का इंचार्ज उसका कमिसरी (मंत्री) कहलाता है।

क—अध्यक्ष
ख—उपाध्यक्ष
} ये किसी एक विभाग के स्वामी नहीं होते, बल्कि सब विभागों की देख-रेख करते हैं।

(१) पर-राष्ट्र-सचिव (People's Commissary for foreign affairs)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) समर-सचिव (People's Commissary for war and marine)

(३) व्यवसाय-सचिव (People's Commissary for Home and foreign trade)

(४) आवागमन-सचिव (People's Commissary for transport)

(५) डाक-सचिव (People's Commissary for press and telegraph)

(६) मज़दूर-सचिव (People's Commissary for labour)

(७) कृषि-मज़दूर-सचिव (People's Commissary for workmen and peasants)

(८) अर्थ-सचिव (People's Commissary for finance)

(९) आर्थिक कौंसिल के अध्यक्ष (President of the supreme economic Council.)

इस कौंसिल को भी कुछ ऐसे अधिकार प्राप्त हैं, जिनके अनुसार यह प्रस्ताव पास करती तथा सरकारी हुक्म निकालती है, और तमाम देश में उसका पालन होता है। यह कौंसिल अपने मेंबरों तथा संयुक्त प्रजातंत्रों की केंद्रीय कमेटियों और अध्यक्ष-मंडलों के प्रस्ताव तथा सरकारी फ़रमानों की जाँच करती है। परंतु संयुक्त-प्रजातंत्रों के अध्यक्ष-मंडलों तथा मंत्रि-मंडलों को अधिकार है कि वे इसके निर्णय के ख़िलाफ़ केंद्रीय कार्य-कारिणी समिति के पास अपील करें। सभी विभागों के अधिकारी (मंत्री) अपने-अपने विभाग के कार्य की पूरी देख-भाल रखते तथा अपने-अपने विभाग के कार्यों के लिये ज़िम्मेदार होते हैं। पूरा मंत्रि-मंडल अपने कार्यों के लिये केंद्रीय कार्य-कारिणी समिति तथा उसके अध्यक्ष-मंडल (प्रेसीडियम) के प्रति ज़िम्मेदार होता है। यूनियन का पिपुल्स कमसरियट दो भागों में विभाजित है—

(१) केंद्रीय पिपुल्स कमसरियट।

(२) विभिन्न प्रजातंत्रों की संयुक्त पिपुल्स कमसरियट।

केंद्रीय पिपुल्स कमसरियट के अधीन निम्न-लिखित ५ विभाग होते हैं—

(१) विदेशी राजनीति,

(२) लड़ाई और जहाज़,

(३) देशी तथा विदेशी व्यापार,

(४) आवागमन (transports), तथा

(५) डाक और तार।

संयुक्त पिपुल्स कमसरियट ये हैं—

(१) सर्वोपरि आर्थिक कौंसिल,

(२) मज़दूर-विभाग,

(३) अर्थ-विभाग, तथा

(४) मज़दूरों और किसानों का निरीक्षण-विभाग।

पहले प्रकार के कमसरियट के पाँचो विभाग सर्वथा केंद्रीय सरकार के ही अधीन होते हैं और इसके अधिकारी केंद्रीय समिति के ही मेंबर चुने जाते हैं। परंतु दूसरे प्रकार के कमसरियट के चारो विभाग यूनियन-सरकार तथा विभिन्न प्रजातंत्रों में भी होते हैं। यूनियनवालों का काम शासन-सिद्धांत निर्द्धारण तथा निरीक्षण करना होता है, और दूसरे विभागवालों का काम, काम कराना भी होता है। विभिन्न प्रजातंत्रों तथा स्वशासित क्षेत्रों की सरकारों में इन विभागों के अलवा कृषि, स्वराष्ट्र-विभाग, न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक हित, ये छः विभाग भी होते हैं। इन विभागों के संबंध में यूनियन सरकार का काम नीति और सिद्धांत स्थिर कर देना-मात्र है; पर शासन और कार्य-संबंधीय सारा उत्तरदायित्व विभिन्न प्रजातंत्रों पर ही रहता है।

किन्हीं लोगों को यह देखकर आश्चर्य हो सकता है कि कृषि और शिक्षा-जैसे मुख्य विभाग केंद्रीय सरकार के अधीन न रखकर विभिन्न प्रजातंत्रों के ही अधिकार में क्यों रक्खे गए हैं? इसका कारण यह है कि यूनियन के भू-भाग का विस्तार बहुत दूर तक फैला हुआ है, और उन सब स्थानों की ज़मीन तथा आब-हवा एक-सी न होने के कारण उन सब स्थानों के लिये एक प्रकार का क़ानून नहीं बनाया जा सकता। केंद्रीय सरकार के अधीन होने से ऐसा ही करना पड़ता। इसलिये कृषि-विभाग विभिन्न प्रजातंत्रों के ही अधिकार में दे दिया गया है, ताकि वे अपने-अपने यहाँ की परिस्थिति के अनुसार उसके संबंध में क़ानून बनावें, और उसकी समुचित

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्नति के लिये पर्याप्त प्रयत्न करें। शिक्षा-विभाग के संबंध में भी यही बात है। बात यह है कि रूस में अनेक प्रकार की जातियाँ हैं, जिनकी भाषाएँ भी अलग-अलग हैं। शिक्षा से अधिक-से-अधिक लाभ तभी हो सकता है, जब कि लोगों को उनकी मातृ-भाषा द्वारा ही शिक्षा दी जाय, और शिक्षा के केंद्रीय सरकार के अधीन होने से विभिन्न भाषाओं द्वारा अलग-अलग जातियों के लिये अलग-अलग शिक्षा-प्रबंध करने तथा इसके द्वारा उनकी संस्कृति-रक्षा करने में बड़ी दिक़्क़त होती। सोवियट रूस में वहाँ की सभी जातियों की राष्ट्रीय संस्कृति के समुचित आदर और रक्षा का काफ़ी ख़याल रक्खा जाता है, और संयुक्त प्रजातंत्रीय सरकारों द्वारा विभिन्न मातृ-भाषाओं में शिक्षा-प्रबंध के कारण ही जनता को यह लाभ अधिक-से-अधिक हो सकता है, तथा हो रहा है।

प्रत्येक मंत्री के साथ एक परामर्शदायिनी समिति (Collegium) होती है, जिसका अध्यक्ष वही मंत्री होता है। मंत्री को अपने विभाग के मामले में इस समिति को सूचित कर किसी भी विषय में व्यक्तिगत निर्णय करने का अधिकार है। परंतु अगर किसी मामले में मंत्री तथा उक्त समिति में मतभेद हो, तो उनमें से कोई भी, अपने फ़ैसले को रद्द किए बग़ैर, उस संबंध में मंत्रि-मंडल के सामने उस बात को पेश कर सकता है।

सोवियट-सरकार में इन विभागों के अतिरिक्त जाँच-पड़ताल करनेवाला एक विभाग (Audit and inspection department) भी है। इसका काम शासन के हरएक अंग के कार्यों तथा हिसाबों की जाँच तथा देख-भाल करना और जो गड़बड़ी, त्रुटियाँ और कुव्यवस्था हो, उसे दूर करना है।

विभिन्न कांग्रेसों का निर्माण

सोवियट रूस में शासन-प्रबंध के हिसाब से नीचे से ऊपर तक कई प्रकार की कांग्रेसें हैं। सबसे निचली कांग्रेस वोलोस्ट (सब-डिविज़नल या तहसील) कांग्रेस होती है। इसका निर्माण ग्राम-सोवियटों* (पंचायतों) द्वारा होता है, जिसमें प्रत्येक ग्राम-सोवियट के प्रति दस मेंबर पर एक प्रतिनिधि (डिपुटी) वोलोस्ट कांग्रेस के लिये चुना जाता है। परंतु जिन ग्राम-सोवियटों में दस से कम मेंबर होते हैं, उन्हें भी अपना एक प्रतिनिधि भेजने का हक़ हासिल होता है। ज़िला-सोवियट-कांग्रेस (Uzed—यूज़्ड) का निर्माण भी ग्राम-सोवियटों के ही प्रतिनिधियों द्वारा होता है। दस हज़ार तक की संख्यावाले क़स्बे के प्रतिनिधि भी इसमें शामिल होते हैं। इसके लिये ग्रामों से एक हज़ार निवासियों के पीछे एक प्रतिनिधि तथा क़स्बे, कारख़ाने आदि के सोवियटों से २०० वोटरों के पीछे एक प्रतिनिधि चुना जाता है; परंतु तमाम ज़िले के प्रतिनिधियों की संख्या ३०० से अधिक नहीं होनी चाहिए। प्रांतीय कांग्रेस का निर्माण शहर-सोवियटों, व्यावसायिक केंद्रों के सोवियटों (जहाँ की जन-संख्या ५,००० हो) और वोलोस्ट सोवियटों के प्रतिनिधियों द्वारा होता है। इसके लिये वोलोस्ट सोवियट-कांग्रेसों को दस हज़ार अधिवासियों के पीछे एक प्रतिनिधि तथा कारख़ानों, व्यावसायिक केंद्रों और शहर-सोवियटों को दो हज़ार वोटर के पीछे एक प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है। अगर ज़िला-सोवियट कांग्रेस का अधिवेशन प्रांतीय सोवियट कांग्रेस के पहले हो, तो इस हालत में, प्रांत के लिये प्रतिनिधि, वोलोस्ट-कांग्रेस द्वारा चुने जाने के बजाय ज़िला-सोवियट द्वारा ही चुने जाते हैं। प्रत्येक प्रांतीय सोवियट की भी एक कार्यकारिणी समिति होती है, जिसमें क़रीब ५० मेंबर होते हैं। यह भी एक प्रकार से मंत्रि-मंडल-सरीखा होता है, और इसका हरएक मेंबर एक-एक विभाग का इंचार्ज होता है। यह प्रांतीय कार्यकारिणी कमेटी शिक्षा, कृषि और स्वास्थ्य-संबंधी बातों में अपनी अस्थायी नीति से काम लेती है; परंतु अन्य बातों में उसे केंद्रीय तथा विभिन्न प्रजातंत्रीय सरकार के क़ानून-क़ायदों के अनुसार चलना पड़ता है। रीजनल (कमिश्नरी) कांग्रेस का निर्माण शहर-सोवियट तथा ज़िला-सोवियट के प्रतिनिधियों द्वारा होता है। इसके प्रतिनिधियों का चुनाव ज़िला-सोवियटों से २५,००० निवासियों पर एक तथा शहर-

* प्रत्येक छोटे-बड़े ग्राम में एक सोवियट (पंचायत) होती है, जो ग्राम का शासन-संबंधी साधारण कार्य करती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोवियटों से ५,००० निवासियों पर एक के हिसाब से होता है। परंतु उसके (रीजनल सोवियट-कांग्रेस) प्रतिनिधियों की तादाद ५०० से अधिक न होनी चाहिए। अगर प्रांतीय सोवियट-कांग्रेस का अधिवेशन रीजनल-कांग्रेस के अधिवेशन के पहले होता है, तो उसके प्रतिनिधियों का चुनाव भी इसी अनुपात से होता है।

यूनियन के संयुक्त प्रजातंत्रों की सर्वोपरि कांग्रेसों के प्रतिनिधियों का चनाव शहर तथा प्रांतीय सोवियटों के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा होता है, जिसमें शहर-सोवियटों के प्रतिनिधि २५,००० की जन-संख्या पर एक तथा प्रांतीय कांग्रेस (सोवियट) के प्रतिनिधि १,२५,००० की जन-संख्या पर एक के हिसाब से चने जाते हैं। अगर प्रजातांत्रिक कांग्रेसों के अधिवेशनों के पहले ही रीजनल कांग्रेस के अधिवेशन हों, तो रीजनल को भी अपना प्रतिनिधि भेजने का अधिकार होता है।

मताधिकार के नियम

यहाँ १८ वर्ष से अधिक उम्र के निम्न-लिखित प्रकार के व्यक्तियों को छोड़कर अन्य सभी स्त्री-पुरुषों को वोट देने तथा किसी भी पद के लिये उम्मेदवार होने का अधिकार प्राप्त होता है। वे लोग, जो अपने निजी लाभ के लिये दूसरों का धन-चूसते हों (बड़े-बड़े सूद-खोर, महाजन, रईस आदि), जो निंदनीय अपराधों में सज़ा पा चुके हों, जिनका दिमाग़ ख़राब हो, जो मज़दूरों को अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये (घरेलू मज़दूरों की इसमें गणना नहीं होती) रखते हों, जो सट्टे का व्यापार करते हों और जो ज़ारशाही शासन के समर्थक हों (पादरी, उस समय की पुलीस आदि), उन्हें वोट देने वा किसी पद के लिये उम्मेदवार होने का अधिकार नहीं होता। यहाँ के वोटरों को एक ऐसा बड़ा अधिकार भी प्राप्त है, जो संसार के दो ही एक और राष्ट्रों को प्राप्त है। इसे 'मेंबरों को वापस बुलाने का अधिकार' (Power of recall) कहते हैं। इसका मतलब यह है कि अगर कोई मेंबर राष्ट्र की व्यवस्थापक आदि सभा में जाकर उचित रीति से अपना कर्तव्य-पालन नहीं करता, और जनता के सर्वमान्य हितों के ख़िलाफ़ जाता है, तो निर्वाचकों (वोटरों) को यह अधिकार है कि वे अपने उस प्रतिनिधि पर ज़ोर डालकर उससे उसका पद ख़ाली करा दें तथा उसकी जगह किसी दूसरे योग्य व्यक्ति को चुनकर भेजें। इस नियम का फल यह होता है कि कोई भी मेंबर अपनी मनमानी नहीं करता, और न अपने कर्तव्यों को भूल-कर ग़ैर-ज़िम्मेदाराना ढंग से ही काम लेता है।

वोटरों के उद्देश्य

सोवियट रूस के मतदाताओं के लक्ष्य संकीर्ण और निरे स्वार्थमय नहीं होते। वे सिर्फ़ अपने पेशे अथवा श्रेणी या जाति की ही भलाई नहीं बल्कि समस्त देश की भलाई के लक्ष्य से किसी उम्मेदवार को वोट देते हैं। इसका कारण यह भी है कि उनके अलग-अलग पेशों की उन्नति आदि का ख़याल देश में सर्व-व्यापी ट्रेड यूनियनस (मज़दूर-सभाएँ) करती हैं। इसके साथ ही उनके सामने कार्य के जो उद्देश्य रक्खे जाते हैं, वे कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी दल) की प्रधानता होने के कारण, उसी के द्वारा रक्खे जाते हैं। कम्युनिस्ट पार्टी सदा उच्च-से-उच्च और जनता के अधिक-से-अधिक लाभ के लक्ष्य की घोषणा करती है। वोटर भी इतने समझदार, कर्तव्य-निष्ठ और देश-प्रेमी होते हैं कि वे ऐसे ही आदमी को अपना प्रतिनिधि चुनते हैं, जो उन्हें व्यवहार-कुशल और दक्ष, साथ ही जनता के उपकार का हृदय में स्थान रखनेवाला मालूम होता है। कम्युनिस्ट पार्टी का रूस में बहुत ज़ोर है; परंतु चुनाव में मेंबरी के लिये उम्मेदवार होनेवाले व्यक्ति का उस पार्टी का मेंबर होना ज़रूरी नहीं होता। इसी कारण नीचे की सोवियटों में कम्युनिस्ट पार्टीवाले प्रायः सब कहीं स्वल्प संख्या में चुने जाते हैं। साधारण जनता में कम्युनिस्ट पार्टी के मेंबरों की संख्या अधिक नहीं है। फिर भी अपनी व्यवहार-कुशलता, कार्य-चातुरी, मुस्तैदी और उच्च विचारों के कारण सरकार के प्रायः सभी बड़े ओहदों पर और उच्च विभागों में कम्युनिस्ट पार्टीवाले ही काफ़ी तादाद में चुन लिए जाते हैं। इस प्रकार सरकारी नीति-निर्धारण तथा शासन-सूत्र-संचालन में उन्हीं का बोलबाला रहता है। इस पार्टी को अपनी नीति को कार्य-रूप में परिणत करने और प्रजा को अधिक-से-अधिक लाभ पहुँचाने में कहाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तक सफलता मिली है, वह रूस की गत चंद वर्षों की आशातीत उन्नति, समस्त संसार को पुकार-पुकारकर बतला रही है।

ये हैं संक्षेप में संसार की सबसे अनोखी, अभूतपूर्व 'मज़दूर तथा किसानों की सरकार' के शासन-विधान की बातें, जो आज तमाम दुनिया में तहलका मचाए हुए हैं और पूँजीपतियों तथा साम्राज्य-वादियों के लिये हौआ बनकर नाक में दम किए हुए हैं!

भारतीय कांग्रेस के प्रथम साम्यवादी प्रेसिडेंट

तथा नवयुवकों के प्यारे सम्राट्

पं० जवाहिरलालजी नेहरू

की जीवनी तथा जोशीले लेख और भाषण पढ़िए। उनकी अनुपम योग्यता, अदम्य वीरता, दृढ़ संकल्प, सत्य-निष्ठा एवं बच्चों की-सी सरलता के आप क़ायल हो जायँगे। आपको मालूम हो जायगा कि किस कारण उन्होंने देश के नवयुवकों का मन मुट्ठी में कर लिया है, किस प्रकार वह किसानों और मज़दूरों के प्यारे नेता हुए, और क्यों इतनी अल्प आयु में ही कांग्रेस के सभापति चुन लिए गए!

पृष्ठ-संख्या १३६। काग़ज़ बढ़िया ऐंटिक!! छपाई सुंदर!!! ३-४ दर्शनीय चित्र!! इतने पर भी

मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

अगर अभी आपका आर्डर न आएगा, तो पुस्तक मिलना मुश्किल हो जायगा।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदुस्थान

१९२९ में १८८४ में

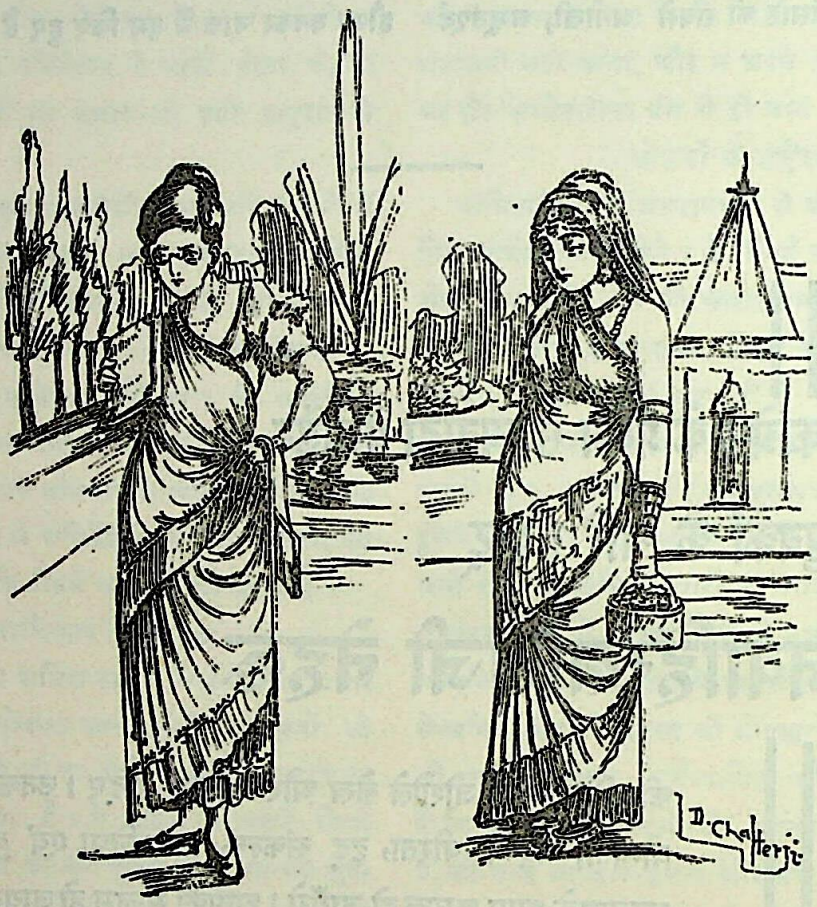

अग्निसंजीवन

स्वादिष्ट

मंदाग्नि, क़ब्ज़, अजीर्ण, भूख का न लगना, वायु, दाह, अफरा आदि पेट के ऐसे सब रोगों की एक उत्तम दवा है।

ट्रेड माक

अग्निसंजीवन की परीक्षा के लिये नमूना एक आने का टिकट भेजकर मँगाइए। क़ीमत छोटी शीशी ।=) आने; बड़ी शीशी (२८ तोला) १।) रु०; डाक-ख़र्च अलग।

हर शहर में एजेंटों की आवश्यकता है।

पता—अग्निसंजीवन-कार्यालय, ३५४, कालबादेवी रोड, बंबई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कला का वर्गीकरण

[पं० अवध उपाध्याय]

हम लोग इस बात को मान लेते हैं कि कला में आदर्श की सत्ता पाई जाती है। इसमें संदेह नहीं कि पहली दशा में आदर्श की सत्ता भी सिद्ध की जाती है, परंतु जब हम कला के वर्गीकरण की ओर ध्यान देते हैं, तथा उसका वर्गीकरण करने लगते हैं, तब हम लोग इस बात को मान लेते हैं कि कला का आदर्श होता है, और वह आदर्श भिन्न-भिन्न कलाओं में भिन्न-भिन्न साधनों की सहायता से प्रकट किया जा सकता है। इस वर्गीकरण के संबंध में यह प्रश्न नहीं उठता कि कला की सुंदरता का आदर्श है या नहीं। भिन्न-भिन्न कलाओं में भी उन्हीं सब बातों का अस्तित्व पाया जाता है, जिनका कला में। प्रत्येक कला के आधारों में कुछ-न-कुछ एकता और विशेषता होती है, और इन विशेषताओं के कारण इन कलाओं का रूप भी भिन्न-भिन्न हो जाता है। प्रत्येक कला सुंदरता की सृष्टि करती है, और उसकी मूर्ति खड़ी करती है। यही सुंदरता सत्य को प्रकाशित करती, और कला की सहायता से सत्य ही को मनुष्य के भावों और विचारों के सामने रखती है।

परंतु विशेष रूप धारण कर लेने के कारण, जितने प्रश्न कला के संबंध में उत्पन्न हो सकते हैं, वे सब-के-सब प्रत्येक कला के संबंध में नहीं उठ सकते। इसका उदाहरण देना अनुचित न होगा। कुछ लोगों का कहना है कि कला से मनुष्यों को मोक्ष मिल सकती है। कुछ लोग कहते हैं, कला व्यर्थ और निरर्थक है। कुछ लोग कहते हैं, कला असत्य और काल्पनिक है। परंतु दूसरे लोग कहते हैं, कला वास्तव में सत्य है, कला से ज्ञान की उत्पत्ति हो सकती है, और इससे कल्याण भी हो सकता है। ये सब बातें कला के संबंध में कही जाती हैं। इनके अतिरिक्त और भी बहुत बातें कला के संबंध में कही जाती हैं। परंतु ये सब बातें भिन्न-भिन्न सब कलाओं के संबंध में नहीं कही जा सकतीं।

अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि किन-किन विशेष कलाओं में किन-किन बातों में समानता होती है, और किन-किन बातों में विषमता। इस प्रश्न का उत्तर भी कला के वर्गीकरण के पहले नहीं दिया जा सकता। वास्तव में कलाओं का वर्गीकरण एक बहुत ही महत्व-पूर्ण, परंतु कठिन प्रश्न है; क्योंकि इनकी संख्या भी निश्चित नहीं है। कोई कला को तीन भागों में विभाजित करते हैं, कोई पाँच और कोई छः तथा कोई इसे और भी अधिक भागों में विभाजित करते हैं। कुछ लोग नृत्य को भी कला समझते हैं; परंतु कुछ लोग इसकी गणना कला में नहीं करते। भारत में प्राचीन काल में नृत्य की गणना कला में की जाती थी। महादेवजी का तांडव-नृत्य भारत में अच्छी तरह प्रसिद्ध है।

कला के वर्गीकरण के पहले उन आधारों तथा सिद्धांतों को निश्चित कर लेना चाहिए, जिनके अनुसार वर्गीकरण करना हो। भिन्न-भिन्न सिद्धांतों तथा आधारों के मानने से भिन्न-भिन्न वर्गीकरण उत्पन्न हो सकते हैं। भिन्न-भिन्न लेखकों ने वर्गीकरण के भिन्न-भिन्न आधार माने हैं। यहाँ पर हीगल के वर्गीकरण का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया जाता है। पहले हीगल ने कला को निम्न-लिखित तीन भागों में बाँटा है—

(1) Symbolic Art,
(2) Classical Art और
(3) Romantic Art.

इसके बाद हीगल प्रत्येक की विशेषताओं का उल्लेख करता है। अंत में कहता है कि प्रथम भाग में वास्तु-कला, दूसरे में मूर्ति-कला और तीसरे में चित्र-कला, संगीत-कला और काव्य-कला हैं। इसके बाद हीगल वास्तु-कला, मूर्ति-कला, चित्र-कला, संगीत-कला और काव्य-कला का निम्न-लिखित संक्षिप्त परिचय देता है—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वास्तु-कला

कलाओं के वर्गीकरण में पहले वास्तु-कला (शिल्प-कला) का नाम लिया जा सकता है। यह ललित-कला का वह भेद है, जिसमें बाहरी जड़ प्रकृति की सहायता से कला की सृष्टि की जाती है। वास्तव में वास्तु-कला में आधार स्थूल-पदार्थ (matter) होता है। जैसे लोहा, पत्थर, लकड़ी और ईंट आदि। इन सब वस्तुओं में बोझ होता और इन बोझों को यंत्र-संबंधी (mechanical) नियमों का पालन करना पड़ता है। वास्तु-कला में जिन पदार्थों की आवश्यकता पड़ती है, अर्थात् जिन आधारों से वास्तु-कला की सृष्टि होती है, उनके आकार भी जड़-पदार्थों के समान ही होते हैं; परंतु उनके पारस्परिक संबंध किसी विशेष आवश्यकता की पूर्ति करते हैं, अर्थात् उनके अवयवों में संगति रहती है, और वे सौष्ठव, यथा प्रमाणता तथा सुंदरता से सदा युक्त रहते हैं। वास्तु-कला के आकार-प्रकार तथा आधार से कला का वास्तविक आदर्श भली-भाँति हृदयंगम नहीं कराया जा सकता। इसमें केवल मूल-वस्तु का दिग्दर्शन-मात्र कराया जाता है। इसीलिये इसमें बाहरी बातों तथा भीतरी विचारों का केवल संबंध-मात्र दिखलाया जा सकता है। इसीलिये इसे कुछ लोग बाह्यिक-कला कहते हैं।

परंतु हमें यह न भूलना चाहिए कि वास्तु-कला, ईश्वर (God) का अनुभव करने की पर्याप्त सामग्री एकत्रित कर देती है, और इस अंश में यह पथ-दर्शक का काम करती है। यह संसार बहुत विस्तृत है, और प्रकृति में असंख्य पदार्थ मौजूद हैं। इस विश्व में तथा इस विशाल प्रकृति में कोई भाग्यवश ईश्वर की ओर आकर्षित होता है। इसलिये वास्तु-कला इस संबंध में वास्तव में प्रशंसनीय काम करती है; क्योंकि यह ईश्वर के लिये एक प्रकार के विशेष स्थान की सृष्टि करती है, और बाह्यप्रकृति की सहायता से एक आकार-प्रकार की सृष्टि करती है, ईश्वर का मंदिर-निर्माण करती है, जहाँ पर आदमी लोग एकत्रित होकर ईश्वर का ध्यान कर सकते हैं। वास्तु-कला वास्तव में ध्यान करनेवाले मनुष्यों को सृष्टि की अन्य सारी वस्तुओं से पृथक् कर देती है, और उनकी तूफ़ान, वर्षा तथा जानवरों आदि से केवल रक्षा ही नहीं करती, किंतु उनके मन में वहाँ एकत्रित होने की प्रवृत्ति भी उत्पन्न कर देती है। इसलिये यदि वास्तु-कला का निर्माता कुशल कलाविद् है, तो वह आकार-प्रकार तथा आधार की सहायता से गहरे भावों को उत्पन्न कर सकता है, और यदि इस कला में पूर्ण न होगा, तो वह गहरे भावों को नहीं उत्पन्न कर सकेगा। पूर्ण कलाविद् अच्छा प्रभाव डाल सकता है, और अपनी सृष्टि को अमर कर सकता है। इस प्रकार वास्तु-कला, आकार-प्रकार तथा साधनों की सहायता से कला की पर्याप्त सत्ता की सृष्टि कर सकती है। परंतु इसके आगे वह नहीं जा सकती; क्योंकि वास्तु-कला आभ्यंतरिक आत्मा की ओर केवल संकेत कर सकती है।

मूर्ति-कला

वास्तु-कला बाहरी प्रकृति से किसी विशेष स्थान को पृथक् करती है, आधारों की सहायता से विशाल भवन में क्रम उत्पन्न करती है, उस स्थान को पवित्र कर देती तथा समाज के लिये ईश्वर का मंदिर बना देती है। इसके बाद मूर्तिकार का कार्य प्रारंभ होता है। वह उस विशाल मंदिर में परमेश्वर को व्यक्ति के रूप में रखता है। मूर्तिकार के साधनों में भी उस व्यक्ति की छाप पाई जाती है। जिस आभ्यंतरिक आत्मा की ओर वास्तु-कला संकेत करती है, उसी को मूर्ति-कला प्रकाशित करती है। वास्तव में मूर्ति-कला में आभ्यंतरिक आत्मा और बाहरी साधनों में समानता रहती है, और इनमें से कोई एक प्रधान नहीं होने पाता। मूर्ति-कला में जितनी बातें दिखलाई जाती हैं, वे सब की-सब इंद्रिय-गम्य होती हैं। इसमें जितनी बातें शारीरिक रूप से प्रकट की जाती हैं, उनका आध्यात्मिक (Spiritual) रूप भी अवश्य ही रहता है, और जितनी बातें आध्यात्मिक होती हैं, वे शारीरिक रूप के द्वारा भी अवश्य प्रकट की जा सकती हैं। कुशल मूर्तिकार ऐसे लोगों के सामने ऐसी मूर्तियों को रक्खेगा, जिनकी आत्मा और शरीर में पर्याप्त सामंजस्य होगा, और मूर्ति के देखने से ही उसकी आत्मा का ठीक-ठीक पता चल जायगा। इसलिये मूर्ति-कला में जड़-पदार्थों के यांत्रिक नियम से ही काम नहीं चल सकता, और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसमें जड़-पदार्थों के केवल आकार-प्रकार से ही काम चल सकता है। और, यह रंगों से भी उदासीन नहीं रह सकता। कुशल मूर्तिकार आभ्यंतरिक आत्मा को पूर्ण तथा शाश्वत और नित्य विश्राम के रूप में प्रकाशित करता है। वह इस बात का भी प्रयत्न करता है कि आकार-प्रकार भी उसी नित्य-विश्राम के सर्वथा अनुकूल हो।

चित्र-कला

जिस प्रकार वास्तु-कला के बाद मूर्ति-कला है, उसी प्रकार से मूर्ति-कला के बाद चित्र-कला नहीं है; क्योंकि इसमें आदर्श का व्यक्तीकरण अच्छी तरह से होता है। चित्र-कला में आधार भी वास्तु-कला तथा मूर्ति-कला की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म होता है। वास्तु-कला और मूर्ति-कला की सृष्टि देश (Space) में होती है; परंतु चित्र-कला के लिये केवल धरातल ही पर्याप्त होता है। इसलिये चित्रकार को वास्तु-कलाविद् तथा मूर्ति-कलाविद् की अपेक्षा अधिक कौशल की आवश्यकता पड़ती है। उसके साधनों में रंग (Colour) का स्थान बहुत ऊँचा है। चित्रकार को एक चित्रपट, रूप और रंग की आवश्यकता प्रायः पड़ा करती है; परंतु मानसिक सृष्टि को कार्य-रूप में परिणत करने के लिये, उसके वास्ते रंग बहुत ही अधिक आवश्यक है। किसी घटना को सजीव बनाने के लिये रंग की जितनी आवश्यकता है, उतनी और किसी चीज़ की नहीं। जिस प्रकार वास्तु-कला तथा मूर्ति-कला आँखों द्वारा मानसिक तृप्ति प्रधान करती है, उसी प्रकार चित्र-कला भी दृष्टि की सहायता से ही आत्मा को संतुष्ट करती है। परंतु चित्र-कला में दृष्टि तथा आँख को विशेष-रूप से आवश्यकता पड़ती है। दृष्टि चित्र-कला में जिस आदर्श की सृष्टि करती है, वास्तु-कला और मूर्ति-कला में उसका अस्तित्व नहीं पाया जाता।

इन सब भेदों के अतिरिक्त इनके विषय (Content) में भी बड़ा अंतर है। अपेक्षाकृत चित्र-कला का विषय वास्तु-कला और मूर्ति-कला से बहुत ही अधिक विस्तृत होता है। मनुष्य के हृदय में जितने भाव, विचार तथा कल्पनाएँ उठ सकती हैं, चित्र-कला में वे सब-की-सब दिखलाई जा सकती हैं। मनुष्य जितने प्रकार के काम कर सकता है, वे सब-के-सब चित्र-कला की सहायता से प्रकाशित किए जा सकते हैं। इसके द्वारा सूक्ष्म-से-सूक्ष्म तथा स्थूल-से-स्थूल पदार्थ चित्रित किए जा सकते हैं। इस प्रकृति के सब दृश्य भी चित्र की सहायता से भली भाँति दिखलाए जा सकते हैं।

संगीत-कला

चित्र-कला के बाद हम संगीत-कला को ले सकते हैं। इसका आधार भी इंद्रिय-गम्य ही है; परंतु इसका अधिक संबंध नाद से है। संगीत-कला का संबंध आपेक्षाकृत भीतरी आत्मा से है। इसमें लेश-मात्र भी संदेह नहीं कि हम अपने मानसिक भावों को नाद की सहायता से प्रकट करते हैं। संगीत का प्रभाव बहुत व्यापक, विस्तृत तथा रोचक होता है। संगीत की तरह काव्य-कला का आधार भी नाद है। इसीलिये इनमें बड़ा घनिष्ठ संबंध है। संगीत-कला में भी ऐंद्रिक आदर्श रहता है, और इसमें देश (Space) एक बिंदु पर निश्चित करने का प्रयत्न किया जाता है। इस प्रकार से चित्र-कला और वास्तु-कला के मध्य में मूर्ति-कला है, इसी प्रकार चित्र-कला और काव्य-कला के बीच में संगीत-कला है। चित्र-कला में देश का चित्रण किया जाता है, और काव्य-कला में सूक्ष्म-आत्मा का। संगीत-कला में इन दोनों का कुछ-कुछ अंश लिया जाता है। संगीत-कला में स्वरों के नियमों का भी पालन करना पड़ता है।

काव्य-कला

काव्य-कला का स्थान सब कलाओं में सब से ऊँचा माना जाता है। चित्र-कला और संगीत-कला में भी मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव काव्य-कला में और भी अधिक हो जाता है। काव्य-कला में केवल नाद ही आधार रहता है। इसका आधार शाब्दिक संकेत है। प्रत्येक नाद भावों अथवा विचारों के द्योतक हैं। इसलिये इन नादों से शब्द बन जाते हैं जो काव्य-कला का आधार है और जो भावों अथवा विचारों को प्रकट करता है। संगीत-कला जिस आदर्श की ओर संकेत करती है और जिसे कार्य-रूप में परिणत करने का प्रयत्न करती है, वह काव्य-कला में प्राप्त हो जाता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। काव्य-कला में कल्पना का स्थान बहुत ऊँचा है। इसमें संदेह नहीं कि सब कलाओं में कल्पना की आवश्यकता होती है। इस अंश में काव्य-कला और सब कलाओं के समान ही है। परंतु काव्य-कला की कल्पना स्वतंत्र होती है। इसलिये यह इस कला में एक विशेष रूप धारण कर लेती है जिसका अस्तित्व अन्य कलाओं में नहीं पाया जाता। कविता, मस्तिष्क की सार्वदेशिक तथा व्यापक कला है और वह अपने क्षेत्र में स्वतंत्र है। इसमें बाहरी बातों की उतनी आवश्यकता नहीं होती क्योंकि इसमें भीतरी विचार और भाव तथा इच्छा से ही काम चल जाता है। जब कविता ऊँची होती है, तो यह बहुत श्रेष्ठ हो जाती है और कल्पना के क्षेत्र से विचार के मैदान में भी पहुँच जाती है।

साहित्य-मणि-माला

हिंदी में अपने ढंग की सबसे सस्ती और उपयोगी पुस्तक-माला। इसमें कथा, कहानी, उपन्यास, जीवन-चरित्र, नाटक, इतिहास, साहित्य, विज्ञान, ललित-कला आदि विषयों की सुंदर और सुपाठ्य पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। छपाई, सफ़ाई और सजावट सभी मनोरम हैं। ८० से २०० पृष्ठ तक की प्रत्येक सजिल्द पुस्तक का मूल्य दस आना। स्थायी ग्राहकों से पोस्टेज नहीं लिया जाता। बारह पुस्तकों के लिये ७॥) रु० पेशगी भेजकर स्थायी ग्राहक बनिए, एवं श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन में हमारा सहयोग कीजिए। प्रकाशित पुस्तकें—

१—झंकार—श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त की अपूर्व गीति-कविताओं का संग्रह।

२—अंकुर—तेरह सुंदर और सुपाठ्य कहानियों का संग्रह।

३—स्वप्नवासवदत्ता—महाकवि भास के सुप्रसिद्ध संस्कृत नाटक का हिंदी-रूपांतर। अनुवादक, श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त।

४—स्वास्थ्य-संलाप—सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई स्वास्थ्य-विज्ञान की अनुपम पुस्तक। पढ़ने में कथा-साहित्य का आनंद आता है।

५—दूर्वा-दल—श्रीसियारामशरण गुप्त-लिखित सुप्रशंसित भाव-पूर्ण कविताओं का संग्रह।

६—शेलकश—रूस के विश्व-विख्यात उपन्यासकार गोर्की के उपन्यास का अनुवाद। और भी एक-से-एक सुंदर ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं। हमारे यहाँ के अन्य ग्रंथ—मेघनाद-वध ३॥), गुरुकुल २), हिंदू १) १॥) त्रिपथगा १॥), विकट भट =), चित्रांगदा ।=), हेमलता सत्ता ।-), रेणु ॥), विषाद ।-), आर्द्रा १) शक्ति १), गीता-रहस्य २॥), वीरांगना १), भारत-भारती १), जयद्रथ-वध ।-)

पता—साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पद्मा और लिली

[पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"]

(१)

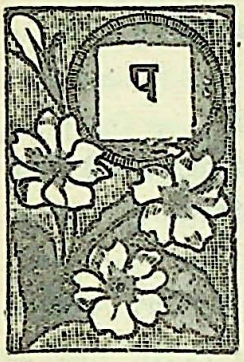

पद्मा के चंद्र-मुख पर षोडश कला की शुभ्र चंद्रिका अम्लान चमक रही थी। हृदय के एकांत कुंज की कली प्रणय के वासंती मलय के स्पर्श से काँप उठती, अपने विकास के लिये उत्सुक अधीर हो रही थी।

पद्मा की प्रतिभा की प्रशंसा सुन उसके पिता ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट पंडित रामेश्वर शुक्ल उसके उज्ज्वल भविष्य की अनेक प्रकार की कल्पनाओं की नींव अपने हृदय की ज़मीन पर डालते रहते। योग्य वर के अभाव के कारण वे उसके विवाह का समय टाल देते थे। मैट्रिक की परीक्षा में पद्मा का सूबे-भर में पहला स्थान आया था। उसे छात्र-वृत्ति मिली थी। विवाह हो जाने पर उसकी पढ़ाई शायद न हो, इधर भी उनका बहुत कुछ ध्यान था। पर उसकी माता को वे योग्य घर के न मिलने के कारण ही विवाह रुका हुआ है, समझा देते थे। इधर साल-भर से कन्या को देखकर माता के स्नेह की लता जैसे किसी भविष्य की शंका से काँपकर सलिन पड़ जाती थी।

पद्मा काशी के विश्व-विद्यालय के कला-विभाग में दूसरे साल की छात्रा थी। गर्मियों की छुट्टी में इलाहाबाद, घर आई हुई थी। अब के पद्मा का उभार, उसका रूप-रंग, उसकी चलन-चितवन, कौशल, वार्तालाप, सब कुछ पहले से बदल गया था। उसके हृदय में अपनी ही कल्पना से अलंकृत, सौंदर्य की भावना, मस्तिष्क में लोकाचार से स्वतंत्र अपनी ही अनुकूलता के उच्छृंखल विचार पैदा हो गए थे। उसे निस्संकोच चलते-फिरते, उठते-बैठते, हँसते-बोलते हुए देख माता के हृदय का वह बोलवाला तार, कुछ और ढीला तथा बेसुरा पड़ गया था।

एक दिन संध्या के डूबते हुए सूर्य के सुनहले प्रकाश में, स्वच्छ निरभ्र प्रसन्न नील आकाश के नीचे, छत पर, दो कुर्सियाँ डलवा माता और कन्या, दोनो गंगा के राजत सौंदर्य की ओर एकटक देख रही थीं। कभी-कभी माता पद्मा की पढ़ाई, कॉलेज में कितनी छात्रियाँ उसके साथ हैं, बालिकाओं के होस्टल का कैसा प्रबंध है, आदि बातें पूछती थीं। पद्मा कहती जाती थी। उसके हाथ में हाल की निकली हुई स्ट्रैंड मैगज़ीन की एक प्रति थी। वह कहती थी और तस्वीरें देखती जाती थी। हवा का एक हल्का-सा झोंका आया, उसके खुले हुए रेशमी बालों को, सर से साड़ी को उड़ा, कुछ गुदगुदाकर चला गया।

"ज़रा सिर ढक लिया करो, तुम तो बेहया हुई जाती हो", माता ने कुछ रुखाई से त्योरियाँ चढ़ाकर कहा।

पद्मा ने सिर पर साड़ी की ज़रीदार किनारी चढ़ा ली और आँखें नीची कर किताब के पन्ने उलटने लगी।

"पद्मा!" माता ने गंभीर होकर पूछा।

"जी।" पद्मा ने नम्रता से, चलते हुए उपन्यास की एक तस्वीर देखते हुए आवाज़ दी।

माता के मन से अपराध की छाप मिट गई। वात्सल्य की सरिता में कुछ देर के लिये बाढ़ आ गई। उठते हुए उच्छ्वास से माता ने कहा—"कानपुर के एक नामी वकील हैं महेशप्राद त्रिपाठी।"

"हूँ" एक दूसरी तस्वीर देखती हुई।

"उनका लड़का आगरा युनिवर्सिटी से एम्० ए० में इस साल फ़र्स्ट क्लास में फ़र्स्ट आया है।"

"हूँ" पद्मा ने सिर उठाया। प्रतिभा से आँखें चमक उठीं।

"तेरे पिताजी को मैंने भेजा था, वे परसों देखकर लौटे हैं। कहते थे, लड़का हीरे का टुकड़ा, गुलाब का फूल है। दस हज़ार में बातचीत पक्की हो गई है।"

"हूँ" मोटर की आवाज़ पा पद्मा उठकर छत के नीचे ताकने लगी। मारे हर्ष के हृदय की तरंगें चंचल हो उठीं। मुसकिराहट को दबा आप ही में हँसती हुई चुपचाप बैठ गई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माता ने सोचा लड़की बड़ी हो गई है, विवाह के प्रसंग से प्रसन्न हुई है। खुलकर कहा—"मैं तो बहुत पहले ही से तेरे पिताजी से कह रही थी, वे तेरी पढ़ाई के विचार में पड़े हुए थे।"

नौकर ने आकर कहा—"राजेन बाबू मिलने आए हैं।" पद्मा की माता ने एक कुर्सी और डालदेने के लिये कहा। कुर्सी डालकर नौकर राजेन बाबू को बुलाने नीचे उतर गया। तब तक दूसरा नौकर रामेश्वरजी का भेजा हुआ पद्मा की माता के पास आया और कहा—"ज़रूरी काम से कुछ देर के लिये पंडितजी जल्द बुलाते हैं।"

(२)

जब ज़ीने से पद्मा की माता उतर रही थी, रास्ते में राजेंद्र से भेंट हुई। राजेंद्र ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। पद्मा की माता ने राजेंद्र के कंधे पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और कहा—"चलो, पद्मा छत पर है। बैठो, मैं अभी आती हूँ।"

राजेंद्र जज का लड़का है। पद्मा से तीन साल बड़ा है, उम्र में भी और पढ़ाई में भी।

बड़ी-बड़ी अपराजिता आँखें बड़ी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा में थीं, जबसे उन्होंने छत पर से उसे देखा था।

"आइए राजेन बाबू। कहिए, कुशल तो है?" पद्मा ने उठकर राजेंद्र का स्वागत किया। एक कुर्सी की तरफ़ बैठने के लिये इंगित कर खड़ी रही। राजेंद्र बैठ गया, पद्मा भी बैठ गई।

"पद्मा!—"

"यह क्या?—राजेन, तुम रोते हो?" पद्मा उठकर खड़ी हो गई। बढ़कर राजेंद्र का हाथ पकड़ ज़ीने की तरफ़ सतर्क देखती हुई—"राजेन, क्या मुझ पर तुम्हें विश्वास नहीं—छिः—तुम इतने कमज़ोर हो—विश्वास करो—मैं सच कहती हूँ—मैंने जो प्रतिज्ञा की है, उस पर हिमालय की तरह अटल रहूँगी।" पद्मा ने अपने रूमाल से राजेंद्र के आँसू पोंछ दिए।

ज़ीने से आहट मालूम दी। राजेंद्र को हिलाकर इशारे से सावधान होने के लिये कह हटकर पद्मा अपनी कुर्सी पर बैठ गई। मैगज़ीन खोल उसी तरह पन्नों में नज़र गड़ा दी।

निगरानी की निगाह से पद्मा को देखती हुई उसकी माता आ रही थीं। सन्नाटा था। पर उनके मन में वैसी ही चंचलता थी।

"क्यों बेटा, तुम तो इस साल बी० ए० हो गए न?" हँसकर पद्मा की माता ने पूछा।

"जी हाँ" सिर झुकाए हुए राजेंद्र ने कहा।

"तुम्हारा विवाह कब करेंगे तुम्हारे पिताजी?"

"मैं नहीं जानता।"

"अब तुम्हारा क्या विचार है?"

"आप लोगों से आज्ञा लेकर विदा होने के लिये आया हूँ, विलायत भेज रहे हैं पिताजी।" नम्रता से राजेंद्र ने कहा।

"क्या बैरिस्टर होने की इच्छा है?" पद्मा की माता ने पूछा।

"अभी विषय का निश्चय नहीं किया।"

"तुम विलायत से साहब बनकर आना और साथ एक मेम लाना, मैं उसकी शुद्धि कर लूँगी।" पद्मा खिलखिला पड़ी।

आँखें नीची किए राजेंद्र भी मुसकिराने लगा।

नौकर ने एक तश्तरी पर दो प्यालों में चाय लाकर दी। दो रकाबियों पर कुछ-कुछ बिस्कुट और केक रखे थे। दूसरा एक मेज़ उठा लाया। राजेंद्र और पद्मा की कुर्सी के बीच में मेज़ रख दी, ऊपर से एक धुली तौलिया बिछा दी। सासर पर प्याले और रकाबियों पर बिस्कुट और केक रखकर नौकर पानी लेने चला गया, दूसरा आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़ा रहा।

(३)

"मैं निश्चय कर चुका हूँ, ज़बान दे चुका हूँ, अबकी तुम्हारी शादी कर दूँगा।" पंडित रामेश्वरजी ने कन्या से कहा।

"लेकिन मैंने निश्चय कर लिया है, डिग्री प्राप्त करने से पहले शादी नहीं करूँगी।" सिर झुकाए हुए पद्मा ने जवाब दिया।

"मैं मैजिस्ट्रेट हूँ बेटी, अब तक अक्ल की ही पर चान करता रहा हूँ, शायद इससे ज़्यादा की आशा तुम मुझसे नहीं करतीं।" गर्व से रामेश्वरजी टहलने लगे।

पद्मा के हृदय के खिले हुए गुलाब की कुल पंखड़ियाँ एक-एक हवा के एक पुरज़ोर झोंके से काँप गईं। पलकों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के पत्रों से मुक्ताओं-सी चमकती हुई दो बूँदें चू पड़ीं। इतना ही उसका उत्तर था।

"राजेन के आने पर तुम्हारी माता को बुलाकर मैंने नौकर को ज़ीने पर भेज दिया था, एकांत में तुम्हारी क्या बातें होती हैं, सुनने के लिये।—तुम हिमालय की तरह अटल हो और मैं वर्तमान की तरह निश्चित, स्थिर, सत्य और दृढ़; प्रकाशमान और प्रत्यक्ष।" रामेश्वरजी कहते गए—"मैंने तुम्हें इसलिये नहीं पढ़ाया था कि तुम कुल-कलंक बनो।"

"आप यह सब क्या कह रहे हैं?"

"चुप रहो। तुम्हें नहीं मालूम?—तुम ब्राह्मण-कुल की कन्या हो और वह क्षत्रिय-घराने का लड़का है—यह विवाह नहीं हो सकता।" रामेश्वरजी की साँस तेज़ चलने लगी, आखें भौंहों में मिल गईं।

"आप नहीं समझे मेरे कहने का मतलब।" पद्मा की निगाह कुछ उठ गई।

"मैं बातों का बनाना आज दस साल से देख रहा हूँ। तू मुझे चराएगी? वह बदमाश.....!"

"बस, इतना बहुत है। आप अदालत के अफ़सर हैं?—अभी-अभी आपने कहा था कि अब तक अक़्ल की ही पहचान करता रहा हूँ, यही आपकी अक़्ल की पहचान है? आप इतनी बड़ी बात राजेंद्र को उसके सामने कह सकते हैं? बतलाइए, हिमालय की तरह अटल सुन लिया, तो इससे आपने क्या सोच लिया?"

आग लग गई, जो बहुत दिनों से पद्मा की माता के हृदय में सुलग रही थी।

"सोच लिया कि तू विवाह नहीं करेगी और वह, वही क्या तेरे साथ विवाह करेगा?" दाँत पीसकर, "बहुत हुआ, हट जा मेरी नज़रों से बाहर, मैंने समझ लिया मेरे कोई लड़की हुई ही नहीं।" रामेश्वरजी क्रोध से काँपने लगे।

"आप ग़लती कर रहे हैं, आप हरगिज़ मेरा मतलब नहीं समझे, और मैं भी बिना पूछे हुए बतलाकर इतनी कमज़ोर नहीं बनना चाहती।" पद्मा जेठ की लू की तरह झुलस रही थी, स्थल-पद्म की तरह चेहरा लाल, तमतमा रहा था। आँखों की दोनो सीपियाँ उसके पुरस्कार की दो मुक्ताएँ लिए हुए सगर्व चमक रही थीं।

रामेश्वरजी भ्रम में पड़ गए। उन्हें चक्कर आ गया। पास की एक कुर्सी पर बैठ गए। सिर हथेली पर रखकर सोचने लगे। पद्मा उसी तरह स्थिर खड़ी रही, जैसे दीपक की अडोल शिखा आप ही अपने प्रकाश में जल रही हो।

"क्या अर्थ है, उन्हें न सही, मुझे बता।" माता ने बढ़कर पूछा।

"मतलब यह कि राजेन को संदेह हुआ था कि मैं विवाह कर लूँगी—यह जो पिताजी पक्का कर आए हैं, इसके लिये मैंने कहा था कि मैं हिमालय की तरह अटल हूँ; न कि यह कि मैं राजेन के साथ विवाह करूँगी। हम लोग भी ज़बान हार चुके हैं कि पढ़ाई का अंत होने पर दूसरी चिंता करेंगे।" पद्मा उसी तरह खड़ी सीधे ताकती रही।

"तू राजेन को प्यार नहीं करती?" रामेश्वरजी ने आँख उठाकर पूछा।

"करती हूँ।"

"करती है?"

"हाँ, करती हूँ।"

"तो बस,—हो गया।"

"पिता!—"

पद्मा की आबदार आँखों से आँसुओं के मोती टूटने लगे, जो उसके हृदय की क़ीमत थे, जिनका मूल्य समझनेवाला वहाँ कोई न था।

माता ने ठोढ़ी पर एक उँगली रख ली और रामेश्वरजी की तरफ़ देखकर कहा—"प्यार भी करती है, मानती भी नहीं, अजीब लड़की है!"

"चुप रहो।" पद्मा की आँखें भौंहों से सट गईं, "विवाह और प्यार एक ही बात है? विवाह करने से होता है, प्यार आप होता है। कोई किसी को प्यार करता है, तो वह उससे विवाह भी करता है? पिताजी जज साहब को प्यार करते हैं, तो क्या इन्होंने उनसे विवाह भी कर लिया है?"

रामेश्वरजी हँस पड़े।

(४)

शंका की दृष्टि से रामेश्वरजी ने डॉक्टर से पूछा—"क्या देखा आपने डॉक्टर साहब?"

"बुख़ार का बड़ा ज़ोर है, अभी कुछ कहा नहीं जा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकता, जिस्म की हालत अच्छी नहीं, पूछने से कोई जवाब नहीं देती। कल तक अच्छी थी, आज एकाएक इतने ज़ोर का बुख़ार आ गया, सबब क्या है ?" डॉक्टर ने प्रश्न की दृष्टि से रामेश्वरजी की तरफ़ देखा।

रामेश्वरजी पत्नी की तरफ़ देखने लगे।

डॉक्टर ने कहा—"अच्छा, एक नुस्ख़ा लिखे देता हूँ, इससे जिस्म की हालत अच्छी रहेगी। थोड़ी-सी बर्फ़ मँगा लीजिए। आइस-बैग तो क्यों होगा आपके यहाँ ? एक नौकर मेरे साथ भेज दीजिए, मैं दे दूँगा। इस वक़्त एक सौ चार डिग्री बुख़ार है। बर्फ़ डालकर सिर पर रखिएगा। एक सौ एक तक आ जाय, तो ज़रूरत नहीं।"

डॉक्टर चले गए। रामेश्वरजी ने अपनी पत्नी से कहा—"यह एक दूसरा फ़साद खड़ा हुआ। न कुछ कहते बनता है, न करते। मैं क़ौम की भलाई चाहता था, कहाँ अब ख़ुद ही नकटों का सिरताज हो रहा हूँ। हम लोगों में अभी तक यह बात न थी कि ब्राह्मण की लड़की का किसी क्षत्रिय-कुल के लड़के से विवाह हो। हाँ, ऊँचे कुल की लड़कियाँ ब्राह्मणों के नीचेवाले कुलों में गई हैं। लेकिन, यह सब आख़िर क़ौम ही में हुआ है।"

"तो अब क्या किया जाय ?" आँखें फाड़े हुए बेवक़ूफ़ की तरह कुछ क़दम बढ़कर उनकी पत्नी ने पूछा।

"जज साहब से ही इसकी बचत पूछूँगा। मेरी अक़्ल अब और नहीं पहुँचती।—अरे छोटा !"

"जी।" छोटा चिलम रखकर दौड़ा।

"जज साहब से मेरा नाम लेकर कहना कि जल्द बुलाया है।"

"और भैया बाबू को भी बुला लाऊँ ?"

"नहीं-नहीं" रामेश्वरजी की पत्नी ने डाँट दिया।

(५)

जज साहब पुत्र के साथ बैठे हुए वार्तालाप कर रहे थे। इँगलैंड के मार्ग का, रहन-सहन का, भोजन-पान का, अदब-क़ायदे का बयान कर रहे थे। इसी समय छोटा बँगले पर हाज़िर हुआ और झुककर सलाम किया। जज साहब ने आँख उठाकर पूछा—"कैसे आए छोटाराम ?"

"हुज़ूर को सरकार ने बुलाया है और कहा है, बहुत जल्द आने के लिये कहना।"

"क्यों ?"

"बीबी रानी बीमार हैं, डॉक्टर साहब आए थे, और हुज़ूर..."

"और क्या ?"

"हुज़ूर..." छोटा ने हाथ जोड़ लिए। उसकी आँखें डबडबा आईं।

जज साहब घबरा गए। ड्राइवर को बुलाया। छोटा चल दिया। ड्राइवर नहीं था। जज साहब ने राजेंद्र से कहा—"जाओ। मोटर ले आओ। चलें देखें तो क्या बात है।"

(६)

राजेंद्र को देखते ही रामेश्वरजी सूख गए। टालने की कोई बात न सूझी। कहा—"बेटा, पद्मा को बुख़ार आ गया है, चलो देखो, तब तक मैं जज साहब से कुछ बातें करता हूँ।"

राजेंद्र उठ गया। पद्मा के कमरे में एक नौकर सिर पर आइस-बैग रक्खे हुए खड़ा था। राजेंद्र को देखकर एक कुर्सी उसने पलँग के नज़दीक रख दी।

"पद्मा !"

"राजेन ! तुम ?"

पद्मा की आँखों से टप-टप गर्म आँसू गिरने लगे। प्रश्न की दृष्टि से एकटक पद्मा को देखते हुए अपने रूमाल से राजेंद्र ने उसके आँसू पोंछ दिए।

सिर पर हाथ रक्खा, सिर जल रहा था। पूछा—"सिर-दर्द है ?"

"हाँ, जैसे कोई छाती मसल रहा हो।"

दुलाई के भीतर से छाती पर हाथ रक्खा, बड़े ज़ोर से धड़क रही थी।

पद्मा ने पलकें मूँद लीं, नौकर ने फिर सिर पर आइस-बैग रख दिया।

सिरहाने थरमामीटर रक्खा था। झाड़कर, बाँहों के बटन खोल राजेंद्र ने आहिस्ते से बग़ल में लगा दिया। उसका हाथ बग़ल से सटाकर पकड़े रहा। नज़र कमरे की घड़ी की तरफ़ थी।

निकालकर देखा, बुख़ार एक सौ तीन डिगरी था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपलक चिंता की दृष्टि से देखते हुए राजेंद्र ने पूछा—"पद्मा, कल तो अच्छी थीं, आज एकाएक कैसे बुख़ार आ गया ?"

पद्मा ने राजेन की तरफ़ करवट ली, कुछ न कहा।

"पद्मा, मैं अब जाता हूँ।"

ज्वर से उभरी हुई बड़ी-बड़ी आँखों ने एक बार देखा और फिर पलकों के पर्दे में मौन हो गईं।

अब जज साहब और रामेश्वरजी भी कमरे में आ गए।

जज साहब ने पद्मा के सिर पर हाथ रखकर देखा, फिर लड़के की तरफ़ निगाह फेरकर पूछा—"क्या तुमने बुख़ार देखा है ?"

"जी हाँ।"

"कितना है ?"

"एक सौ तीन।"

"मैंने रामेश्वरजी से कह दिया है, तुम आज यहीं रहोगे। तुम्हें कब यहाँ से जाना है ?—परसों न ?"

"जी हाँ।"

"कल सुबह बतलाना घर आकर, पद्मा की हालत कैसी रहती है। और रामेश्वरजी, डॉक्टर की दवा देने की मेरे ख़याल से कोई ज़रूरत नहीं।"

"जैसा आप कहें।"

"जज साहब चलने लगे। दरवाज़े तक रामेश्वरजी भी गए। राजेंद्र वहीं रह गया। जज साहब ने पीछे फिरकर कहा—"आप घबराइए मत, आप पर छुआछूत का भूत सवार है।" मन-ही-मन कहा—"ऐसा बाप और ऐसी लड़की !"

(७)

तीन साल बीत गए। पद्मा के जीवन में वैसा ही प्रभात, वैसा ही आलोक भरा हुआ है। वह रूप, गुण, विद्या और ऐश्वर्य की भरी हुई नदी, वैसे ही अपनी पूर्णता में टलमल, अपने अदृश्य की ओर वेग से बहती चली जा रही है। सौंदर्य की वह राशि ज्योति की सहस्रों शिखाओं से वैसी ही अम्लान स्थिर है। अब पद्मा एम्० ए० क्लास में पढ़ती है।

वह सब कुछ है, पर वे रामेश्वरजी नहीं हैं। मृत्यु से कुछ समय पहले उन्होंने पद्मा को एक पत्र लिखा था—"मैंने तुम्हारी कुल इच्छाएँ पूरी की हैं, पर अभी तक तुमने मेरी एक भी इच्छा पूरी नहीं की। अब शायद मेरा शरीर नहीं रहेगा, क्या तुम मेरी सिर्फ़ एक बात मानकर चल सकोगी ?—राजेंद्र से या किसी अपर-जाति के लड़के से विवाह न करना। बस।"

इसके बाद से पद्मा के जीवन में बड़ा परिवर्तन हो गया। उसके जीवन की धारा पलट गई। एक अद्भुत स्थिरता उसमें आ गई। जिस जाति के विचार ने उसके पिता को दुर्बल कर रक्खा था, उस जाति की बालिकाओं को अपनी ही तरह शिक्षित कर, अपने ही आदर्श पर लाकर, पिता की दुर्बलता का प्रतिशोध लेने का उसने निश्चय कर लिया।

राजेंद्र बैरिस्टर होकर विलायत से आ गया है। पिता ने कहा—"बेटा, अब अपना काम देखो।" राजेंद्र ने कहा—"ज़रा और सोच लूँ, देश की परिस्थिति कुछ और है।"

(८)

"पद्मा !" राजेंद्र ने पद्मा का हाथ पकड़ लिया।

पद्मा हँस पड़ी। पूछा—"तुम यहाँ कैसे राजेन ?"

"बैरिस्टरी में जी नहीं लगता। पद्मा, बड़ा नीरस व्यवसाय है, बड़ा बेदर्द। मैंने देश की सेवा का व्रत ग्रहण कर लिया है, और तुम ?"

"मैं लड़कियों को पढ़ाती हूँ—तुमने विवाह किया ?"

"हाँ, किया तो है", हँसकर राजेंद्र ने कहा।

पद्मा के हृदय पर बिजली टूट पड़ी, जैसे तुषार की मारी हुई पद्मिनी क्षण-भर में स्याह पड़ गई। होश में आ तत्काल अपने को सँभाल कृत्रिम हँसकर पूछा—"किससे किया ?"

"लिली से" राजेंद्र ने उसी तरह हँसकर कहा।

"लिली से ?" पद्मा का स्वर काँप गया।

"हाँ, तुम्हींने कहा था न ? विलायत जायँगे और मेम लायँगे।"

पद्मा की आँखें भर आईं।

राजेंद्र ने हँसकर कहा—"तुम अँगरेज़ी की एम्० ए० हो ? लिली के मानी ?"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जलप्रपात द्वारा बिजली

[पं० दयाशंकर दुबे, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, अर्थ-शास्त्र-अध्यापक, प्रयाग-विश्वविद्यालय]

भारत में अब बिजली का युग आरंभ हो गया है। बड़े-बड़े शहरों में रोशनी के लिये बिजली का ही उपयोग होने लगा है, और कारख़ानों के एंजिन तथा मशीनें भी अब बिजली द्वारा ही चालाई जाती हैं। बिजली प्राप्त करने का सबसे सस्ता ज़रिया जलप्रपात है। भारत में पर्वतों से जलप्रपातों की संख्या बहुत अधिक है, परंतु उनका उपयोग बिजली उत्पन्न करने के लिये बहुत कम किया गया है। इसका प्रधान कारण है भारतीय पूँजीपतियों और भारत-सरकार की इस कार्य की तरफ़ उपेक्षा। बंबई की सुप्रसिद्ध टाटा-कंपनी का ध्यान इस कार्य की ओर सबसे पहले गया, और उसने करोड़ों रुपयों की पूँजी लगाकर पश्चिमीयघाट के कुछ जलप्रपातों से बिजली तैयार करने का काम हाथ में लिया। इस बिजली के द्वारा बंबई-शहर की काया-पलट ही हो गई। वहाँ के प्रायः सब कारख़ानों में अब बिजली का उपयोग होने लगा है, यहाँ तक कि रेल भी अब बिजली द्वारा ही चलती है, और इस शहर में कोयले का उपयोग बहुत कम हो गया है। सन् १९१५-१८ के औद्योगिक कमीशन ने भारतीय सरकार तथा प्रांतीय सरकारों का ध्यान जल-प्रपातों को बिजली उत्पन्न करने के लिये उपयोग में लाने की ओर आकर्षित किया और भारत सरकार ने इस बात की जाँच कराई कि भारत के भिन्न-भिन्न भागों में जलप्रपातों द्वारा कितनी बिजली कितने ख़र्च से तैयार की जा सकती है। इस जाँच की अंतिम रिपोर्ट सन् १९२१ में प्रकाशित हुई जिससे भली भाँति सिद्ध हो गया कि भारतीय जलप्रपातों से इतनी अधिक बिजली कम ख़र्चे पर तैयार की जा सकती है कि प्राय सब शहरों को रोशनी पहुँचाने और वर्तमान सब उद्योग-धंधों को चलाने के अतिरिक्त भारतीय ग्रामों में भी वह बहुत सस्ते दर पर पहुँचाई जा सके। यह अनुमान लगाया गया है कि बड़े-बड़े जलप्रपातों द्वारा जो बिजली उत्पन्न होगी उसमें उतनी शक्ति होगी, जितनी २ करोड़ ७० लाख घोड़ों में है, अर्थात् उस बिजली के द्वारा उतना काम लिया जा सकेगा, जितना कि २ करोड़ ७० लाख घोड़ों से लिया जा सकता है। इस रिपोर्ट के आधार पर प्रांतीय सरकारों ने कुछ कार्य आरंभ कर दिया है। इस लेख में संक्षेप में हम यह बतलाते हैं कि बंबई, युक्त-प्रांत और पंजाब में इस संबंध में क्या किया जा रहा है।

पूना के पास पश्चिमीय घाट पर लोनावला नामक एक स्टेशन है। इसके पास ही एक बड़ा जलप्रपात है। जिस स्थान से जल का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस जलप्रपात में आता है, वह इससे पाँच-छः मील दूरी पर है। वह तीन तरफ़ पहाड़ियों से घिरा हुआ है। वर्षा में जो कुछ जल इस पहाड़ी पर बरसता था, वह इस छोटी नदी द्वारा बह जाता था। टाटा-कंपनी ने सबसे पहले इसी जलप्रपात से बिजली उत्पन्न करने का निश्चय किया। कंपनी ने नदी के उद्गम स्थान में, जोकि तीन तरफ़ पहाड़ियों से घिरा हुआ है, नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक एक बड़ी और पक्की दीवार बनाई, जिससे वहाँ एक बड़ी झील बन गई और उसमें सैकड़ों फ़ुट गहरा पानी इकट्ठा हो गया। इस झील का क्षेत्र-फल क़रीब १½ वर्गमील है। इस झील से पानी निर्दिष्ट परिमाण में नदी में जाता है, जिसके दोनो किनारे तीन-चार मील तक पक्के बाँध दिए गए हैं। क़रीब चार मील के बाद एक छोटे-से तालाब में जल आता है और वहाँ से वह दो बड़े-बड़े नलों में जाता है। इन नलों को मोटाई क़रीब १२ फ़ुट है अर्थात् यह नल इतना बड़ा है कि ऊँचे-से-ऊँचा मनुष्य भी अपने सिर पर बोझा लेकर खड़े-खड़े इस नल के अंदर से आसानी से जा सकता है। ये दोनो नल क़रीब दो मील की दूरी पर फिर एक छोटे तालाब में जल को ले जाते हैं, वहाँ से पानी छः नलों में जाता है। इन नलों की मोटाई क़रीब ३ फ़ुट है। ये नल भी उसी मार्ग से जाते हैं जिन से पहले नदी बहती थी और जलप्रपात हो गया था। जहाँ पर पहले जलप्रपात था, वहाँ पर अब छः नल पहाड़ के ऊपर से नीचे की तरफ़ जाते हुए दिखाई देते हैं। पहाड़ी के नीचे खोपोली-नामक स्थान में, जहाँ पर कि टाटा-कंपनी का बिजली का कारख़ाना है, छः बड़ी-बड़ी मशीनें रक्खी हुई हैं। नलों द्वारा जल बड़े वेग से इन मशीनों पर गिरता है, जिससे ये चलने लगती हैं और बिजली पैदा हो जाती है। प्रत्येक मशीन में उतनी शक्ति है, जितनी कि १३,५०० घोड़ों में रहती है। इस प्रकार इन छः मशीनों द्वारा उतनी बिजली पैदा होती है जिस-की शक्ति ८१ हज़ार घोड़ों की शक्ति के बराबर है। मशीनों को चलाने के बाद जल नदी के पुराने मार्ग में आ मिलता है और वह समुद्र में चला जाता है। टाटा-कंपनी ने अब बिजली के दो और कारख़ाने पश्चिमीय घाट पर खोल दिए हैं। इन तीनो कार-ख़ानों में जल पाँच झीलों से आता है। सबसे बड़ी झील, जिसका क्षेत्र-फल क़रीब १५ वर्गमील है, पूना के पास मुलशी-नामक स्थान में है। इन झीलों में अब इतना जल इकट्ठा हो गया है कि यदि लगातार तीन वर्षों तक वर्षा न हो, तो भी बिजली के तीनो कारख़ाने बराबर चलते रहेंगे। इन तीनो कारख़ानों से जो बिजली उत्पन्न होती है, वह तार द्वारा ४०-५०मील बंबई-शहर भेज दी जाती है, और वहाँ उसका उपयोग होता है। पश्चिमीय घाट में अभी कई जलप्रपात ऐसे हैं जिनके द्वारा टाट-कंपनी के कारख़ानों के समान ही बिजली उत्पन्न की जा सकती है। अन्य पूँजीपतियों को ध्यान देना चाहिए।

युक्तप्रांत में इस कार्य को प्रांतीय सरकार ने अपने हाथ में लिया है। हरद्वार से श्रीगंगाजी की एक बड़ी नहर निकाली गई है। अलीगढ़ के पास सुमेरा में इस नहर के जल की सतह हरद्वार के जल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की सतह से १४६ फ़ुट नीचे है। यह निचाई १३ जगहों पर है। इस निचाई का लाभ उठाकर इस नहर द्वारा बिजली उत्पन्न करने का प्रयत्न आरंभ हो गया है। भादराबाद (हरद्वार के पास),पालरा (खुरजा के पास) और भोला (मेरठ के पास) में बिजली के कारख़ाने तैयार हो रहे हैं और इनके द्वारा बिजनौर, मुरादाबाद, सहारनपुर, मुज़फ़्फ़र-नगर, मेरठ, बुलंदशहर और अलीगढ़ ज़िलों के प्रायः सब शहरों और बड़े ग्रामों में रोशनी तथा अन्य कार्य के लिये बिजली की पूर्ति की जायगी। बिजली की दर नीचे-लिखे अनुसार होगी—

रोशनी और पंखे के लिये—पाँच आना ६ पाई प्रति यूनिट

कारख़ानों में मशीन चलाने के लिये—एक आना ६ पाई प्रति यूनिट

(चीनी) शक्कर के कारख़ानों के लिये—एक आना ६ पाई प्रति यूनिट

कुओं से जल उलीचने के लिये—एक आना ६ पाई प्रति यूनिट

जो आजकल बिजली का उपयोग करते हैं, वे आसानी से समझ सकते हैं कि उपर्युक्त दरें कितनी सस्ती हैं। बिजली के कारख़ाने इस वर्ष के अंत तक तैयार हो जायँगे। इन ज़िलों में बिजली की सहायता से उद्योग-धंधों की उन्नति की बड़ी गुंजाइश है। धनवान् किसान भी पाताल-फोड़ी कुओं से पानी उलीचने के लिये मशीनों बिजली का उपयोग कर लाभ उठा सकते प्रांतीय सरकार का इन कारख़ानों को तैयार और तार इत्यादि लगाने में क़रीब १ करोड़ लाख रुपया लगेगा, और यह आशा की जा है कि सरकार को प्रति वर्ष क़रीब पाँच ला रुपयों की आमदनी आरंभ से ही होने लगेगी बिजली का उपयोग बढ़ने पर तो आमदनी और भी अधिक होगी। यदि ये कारख़ाने अपने में सफल हुए, तो अन्य नहरों के जलप्रपातों उपयोग भी बिजली उत्पन्न करने में किया जायगा

पंजाब-प्रांत में भी नहरों के जलप्रपातों उपयोग बिजली उत्पन्न करने के लिये सरक द्वारा किया जा रहा है। क़रीब ५½ करोड़ रु को पूँजी से कारख़ाने तैयार किए जा रहे हैं, जि क़रीब ११ लाख रुपयों की आमदनी प्रति आरंभ में ही होने की आशा की जाती है। १९३७ तक सब कारख़ाने तैयार हो जायँगे। कारख़ानों द्वारा पंजाब-प्रांत के अधिकांश शह तथा बड़े-बड़े ग्रामों में बिजली पहुँचाई जायगी सन् १९३७ तक तो दिल्ली-शहर को भी कारख़ानों से बिजली प्राप्त हो सकेगी। बिज की दर भी बहुत सस्ती रहेगी। आशा है, इस बिजली के उपयोग से पंजाब के उद्योग-धंधों भी अच्छी वृद्धि होगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

JAGADGURU VISHWARADHYA JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR LIBRARY Jangamawadi Math, Varanasi Acc. No. 3590

कनपुरिया क्षत्रियों की उत्पत्ति

[पं० चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्-टी०]

कनपुरिया क्षत्रियों का निवास रायबरेली ज़िले के मोहनगंज, सेमरौता, रायबरेली, सलोन और रोखा परगनों में विशेष है। प्रतापगढ़ ज़िले के रामपुर तथा अठेहा परगनों में और सुल्तानपुर ज़िले के गौराजामों में भी उनकी विशेष बस्ती है। कैथौला (ज़िला प्रतापगढ़), नूरुद्दीनपुर (ज़ि० रायबरेली), तिलोई (रायबरेली), शाहमऊ (रायबरेली), टेकारी (रायबरेली), जामों (सुल्तानपुर), बरवलिया (सुल्तानपुर), कटारी (सुल्तानपुर), भुवनशाहपुर (सुल्तानपुर), रेसी (सुल्तानपुर), अटरा चंदापुर (रायबरेली), सीवन (सेमरौता, ज़िला रायबरेली), राजापुर (प्रतापगढ़), और उमरार (प्रतापगढ़) के ताल्लुक़ेदार कनपुरिया क्षत्रिय हैं। आजकल लगभग २७० छोटे-बड़े ग्रामों में कनपुरिया क्षत्रियों का निवास है।

कनपुरिया क्षत्रियों की उत्पत्ति में एक विशेषता है, जिसे हम नीचे लिखने की चेष्टा करते हैं। ब्रह्माजी के एक पुत्र अंगिरा थे, जिनके पुत्र बृहस्पति हुए, जो इंद्रादि देवतों के पूज्य गुरु थे। बृहस्पति के पुत्र भरद्वाज ऋषि हुए, जिनके नाम से भरद्वाज-गोत्र विख्यात है। 'गोत्र'-शब्द का अर्थ बहुत लोगों ने बहुत प्रकार से किया है। जिस वंश का कोई पूर्व-पुरुष परम कीर्तिमान् हुआ, वह वंश उसी पुरुष को अपना गोत्र-प्रवर्तक मानने लगा। इस पर प्रश्न हो सकता है कि भरद्वाज के पिता बृहस्पति क्या भरद्वाज से कम प्रतापी थे? फिर बृहस्पति-गोत्र क्यों नहीं कहा जाता। इसका समाधान लोगों ने यों किया है कि भरद्वाज ऋषि कुलपति तथा आचार्य थे। उनके यहाँ हज़ारों शिष्य थे, जो एक ही शासन तथा सभ्यता के पाबंद थे, जिनके नियम तथा आचार-विचार एक नियत प्रणाली के थे। उन सब में एक प्रकार की समानता थी। मानो उनके चरित्र पर भरद्वाजजी के प्रभाव की छाप लगी हो। इसी से वे सब भरद्वाज-गोत्रीय कहलाते थे।

भरद्वाजजी के वंशज द्रोणाचार्य और उनके पुत्र अश्वत्थामा ने महाभारत-युद्ध में जो-जो कार्य किए, वे परम विख्यात हैं। यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं। इन्हीं अश्वत्थामा के वंश में सत्याधर और वामदेव नामक दो पुरुष थे, जिनसे कान्यकुब्ज शुक्ल और पांडे लोगों के वंश चले। पांडे लोगों में गेगासों के पांडे बड़े कुलीन होते हैं। गेगासों रायबरेली ज़िले में खजुर-गावँ से थोड़ी दूर पर श्रीगंगाजी के किनारे बसा हुआ एक ग्राम है। इसका पुराना और शुद्ध नाम गर्गाश्रम था। इसी ग्राम के रहनेवाले और कुल में भी गेगासों के पाडे एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे, जिनका नाम सूक्ष्म मुनि था। इन्हीं को छुच्छिम पाडे कहते थे। यह अत्यंत विद्वान्, तपस्वी तथा प्रतापी थे, और तत्कालीन राजा, महाराजा, रईस इनकी सेवा करना अपना परम गौरव समझते थे। इनके आशीर्वाद से कितने ही लोगों का कल्याण हो जाता था।

कोई ७०० वर्ष हुए, मानिकपुर के गहरवार राजा मानिकचंद्र के कोई संतान नहीं थी, इसके लिये उन्होंने सूक्ष्म मुनि की बड़ी सेवा की। मुनि ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि तुम्हारे संतान होगी। राजा ने कहा कि जो संतान होगी वह आप ही की सेवा में रहेगी। निदान कुछ दिनों में राजा मानिकचंद्र के यहाँ एक लड़की हुई। जब लड़की कुछ सयानी हुई, तो राजा प्रतिज्ञानुसार उसे लेकर सूक्ष्म मुनि के यहाँ गए। मुनि ने कहा भी कि हमको इस लड़की की आवश्यकता नहीं; परंतु राजा ने अपना वचन पालन करने के लिये लड़की को वहीं छोड़ दिया। लड़की भी बड़ी श्रद्धा से मुनि की सेवा करने लगी। कुछ दिन बीते, लड़की की युवावस्था हुई। मुनि ने उसकी सेवा से प्रसन्न होकर भावी-वश एक दिन कहा दिया कि राजकुमारी, तू पुत्रवती होगी। लड़की ने उदास होकर चरणों पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिर रख दिया, और कहा, मेरा विवाह तक नहीं हुआ, पुत्रोत्पत्ति से मुझे कलंक होगा। आपने बिना सोचे-समझे मुझे पुत्रवती होने का आशीर्वाद कैसे दे दिया? मुनि ने कहा, अब तो मेरे मुख से वचन निकल गया। वह असत्य नहीं हो सकता। हाँ, यह हो सकता है कि तेरे कान से पुत्र हो। किंवदंती है कि कुछ दिन के उपरांत उस लड़की के कान से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इसी से इस पुत्र का नाम 'कान' या 'कान्ह' हुआ *। कान्ह को अयोनि शुद्ध पुत्र समझना चाहिए। इन्हीं कान्ह के नाम से रायबरेली ज़िले का 'कान्हपुर'-ग्राम विख्यात हुआ। कहा जाता है, कान्ह कुछ ही दिनों में अस्त्र-शस्त्र-कला में अत्यंत निपुण हो गए। उन्होंने सूक्ष्म मुनि से प्रार्थना की कि भगवन्! मैं कौन हूँ, और क्या करूँ? मुनि ने कहा, तुम क्षत्रिय हो, और एक प्रतिष्ठित राज-कुल के प्रवर्तक होगे। तुम इसी समय घोड़े पर सवार होकर चल दो। सात दिन में जितना मंडल पार करके लौट आओगे, उतने में तुम्हारा राज्य होगा। कान्ह उसी समय रवाना हो गए। सात दिन में साढ़े चौदह परगने घूमकर वापस आ गए। कहते हैं, उन्हीं साढ़े चौदह परगनों में आज भी कान्ह के वंशजों अर्थात् कनपुरिया क्षत्रियों का राज्य है।

ऊपर की बातों के लिये किंवदंती के अतिरिक्त और कोई प्रमाण नहीं मिलता। रायबरेली, प्रतापगढ़ आदि ज़िलों के गज़ेटियर लिखनेवाले अँगरेज़-लेखकों ने भी बहुत खोज करने पर जब कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं पाया, तो यही कह दिया कि कनपुरिया क्षत्रियों की उत्पत्ति किंवदंती के कुहरे में छिप गई है। उन लोगों ने मान लिया है कि इस वंश के प्रवर्तक राजा कान्ह सूक्ष्म मुनि के पुत्र थे। यदि ऐसा है, तो यह भी मानना पड़ेगा कि उस समय वर्ण-व्यवस्था के नियम इतने कठोर नहीं थे, जितने अब हैं। हमें स्मरण रखना चाहिए कि धृतराष्ट्र, पांडु आदि महाराजों की उत्पत्ति भी इसी तरह की थी, अर्थात् व्यास मुनि के द्वारा हुई थी। परंतु इसको उस समय कोई दोष नहीं समझता था। इतना ही नहीं, किंतु उन्हीं पांडु के पुत्र युधिष्ठिर जो पांडु के क्षेत्रज पुत्र थे, साक्षात् धर्म का अवतार या रूप समझे जाते थे। उसी नियम के अनुसार कनपुरिया क्षत्रिय भी परम प्रतिष्ठा तथा सम्मान के पात्र हुए।

हमको इतिहास से भी कुछ पता लगाने की चेष्टा करनी चाहिए। भिन्न-भिन्न ज़िलों के गज़ेटियरों में ढूँढ़ने से कुछ बातें ज्ञात होती हैं; परंतु उनमें इतना विरोध है कि कोई निश्चित बात कहना कठिन है। राजा मानिकचंद्र ही के विषय में अनेक बातें पाई जाती हैं। कहीं तो लिखा है कि यह कन्नौज के राजा जयचंद के पिता थे। कहीं लिखा है कि राजा जयचंद के वैमात्र भाई थे। कहीं लिखा है कि राजा जयचंद के भाई बंदों के वंश में थे।

दूसरा भारी झगड़ा यह पड़ता है कि राजा जयचंद राठौर क्षत्रिय कहे जाते थे। उनके भाई या वंश गहरवार क्षत्रिय कैसे हो गए? इस विषय में गज़ेटियर लेखकों ने अपनी-अपनी बुद्धि लड़ाई है। कुछ सम्मतियों के अंश नीचे दिए जाते हैं—

इलाहाबाद ज़िले के गज़ेटियर के सफ़ा ६० पर मि० नेविल ने लिखा है कि गहरवार क्षत्रिय संभवतः राठौर ही हैं, और उनका वंश कन्नौज के पुराने शासकों से चला आया है।

फिर सफ़ा १०४ पर लिखा है कि माँडा के राजा गहवार-वंश के हैं। सन् ११९४ ई० में जब मुईज़ुद्दीन मुहम्मद-बिन-साम ने, जिसका दूसरा नाम शहाबुद्दीन ग़ोरी था, कन्नौज के शासकों को हराया, तो उस राज-वंश के कुछ लोग पूर्व की ओर चले आए, और बनारस के पास बस गए। उनके वंशजों ने भरों आदि मूल-निवासियों को परास्त करके चौदह परगनों में अपना आधिपत्य जमाया। माँडा और कंतित के राजा उन्हीं के वंश के हैं।

मिर्ज़ापुर-ज़िले के गज़ेटियर के सफ़ा २०४-२०६ पर मि० डेकव्राकमैन ने लिखा है—सन् १०९० ई० के लगभग गहवार-वंश के एक वीर ने कन्नौज पर अधिकार करके अपना घराना चलाया। मिर्ज़ापुर के कंतित

* कुछ लोगों का अनुमान है कि 'कान्ह'-शब्द 'कानीन'-शब्द का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ है क्वाँरी कन्या से उत्पन्न हुआ पुत्र—"कन्यायां जातः कानीनः।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राज्य के पुराने काग़ज़ों के देखने से मालूम होता है कि उस समय बनारस पर कन्नौज के गहरवारों का अधिकार था। एक किंवदंती से यह भी पता चलता है कि गहरवारों का आदि-स्थान या कम-से-कम उनकी उन्नति का पहला स्थान बनारस ही था। कहा जाता है, चंद्र-वंशी क्षत्रियों ने पहले-पहल बनारस के राज्य पर अधिकार जमाया था। उनका एक सरदार, जिसका नाम देवदास था, योगी हो गया। शनैश्चर-ग्रह ने उसे कुमार्ग में ले जाने की बहुत चेष्टा की; परंतु उसने शनैश्चर के प्रभाव को दमन कर डाला। जब से उसे ग्रहरार की पदवी मिली जिसका अपभ्रंश गहरवार शब्द हो गया। किंतु अंत में ढुंढिराज गणेश के शाप से देवदास को पवित्र काशी छोड़कर कन्नौज चला जाना पड़ा। कन्नौज के गहरवारों का राज्य सन् ११९३ ई० तक रहा, जब कि मुहम्मद-बिन-साम अर्थात् शहाबुद्दीन ग़ोरी ने उनके शहर को नष्ट कर डाला, और दूसरे साल बनारस पर भी अधिकार कर लिया। पराजित राजा जयचंद मार डाला गया, और उसका उत्तराधिकारी गंगा के उत्तर में जा बसा। एक कथा यह भी प्रचलित है कि राजवंश के किसी सरदार ने, जिसका निवास कड़ा-मानिकपुर में था, पूर्व की ओर बढ़कर कंतित पर अधिकार जमा लिया।

फिर सफ़ा २०८ पर लिखा है कि एक किंवदंती के अनुसार कन्नौज के राजा जयचंद के भाई मानिकचंद के पुत्र ने कंतित पर अधिकार किया।

बनारस के पुराने गज़ेटियर के सफ़ा १०४ पर मि० फ़िशर ने लिखा है—कहा जाता है, बनारस के गहरवार राजा बनार को सन् १०१८ ई० में महमूद ग़ज़नवी ने अपने नवें आक्रमण में हरा दिया। गहरवारों की हार के उपरांत बनारस कन्नौज के राठौर राजों के राज्य का एक भाग हो गया। शहर के निकट कुछ शिलालेख या ताम्रपत्र मिले हैं, जिनमें लिखा है कि अमुक पृथ्वी का दान राठौर राजा जयचंद ने किया। इनमें से एक पत्र बड़े महत्व का है; क्योंकि उसमें जयचंद और उसके पूर्व-पुरुषों की वंशावली कन्नौज-राज्य के प्रारंभ से दी है।

प्रतापगढ़ ज़िले के गज़ेटियर के सफ़ा १९५-१९६ पर नेविल साहब ने लिखा है—प्रचलित किंवदंती के अनुसार कन्नौज के बालदेव के कनिष्ठ पुत्र मानदेव ने मानपुर बसाया था, जो राय जयचंद्र के सौतेले भाई मानिकचंद्र के समय में मानिकपुर कहलाया जाने लगा। यह कहना ठीक नहीं कि मानिकचंद्र ने उसे बसाया; क्योंकि क़िले की नीव के नीचे और भी पुरानी इमारत के चिह्न मिलते हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि मानिकचंद्र के समय से बहुत पहले मानिकपुर की बस्ती रही होगी। मानिकचंद्र गहरवार सरदार माने जाते थे। और, यह भी एक संदेहात्मक बात है कि कन्नौज के अंतिम राजा राठौर थे। कन्नौज के जो क्षत्रिय मारवाड़ भाग गए थे, उन्हीं ने वहाँ अपने को राठौर कहना प्रारंभ किया। एक बात और भी है। मानिकपुर कन्नौज-राज्य का एक भाग नहीं था; किंतु कौशांबी राज्य का भाग था। इस लिये इसके इतिहास का ठीक-ठीक पता लगना कठिन है।

मिर्ज़ापुर ज़िले के पुराने गज़ेटियर के सफ़ा ११८-११९ पर जैक्सन और फ़िशर साहबों ने लिखा है—यह बात संभवतः प्रतीत होती है कि गहरवारों का वंश कन्नौज से आया। ये लोग राजपूतों के ३६ राजकुलों में से हैं, और किसी-किसी के अनुसार राठौर ही हैं। परंतु तत्कालीन लेखकों के वर्णनों के आधार पर यही प्रतीत होता है कि जिस समय मुसलमानों ने कन्नौज पर विजय पाई, उस समय गहरवार और राठौर अलग-अलग दो वंश थे।

सर एलियट ने अनेक परस्पर-विरोधिनी किंवदंतियों पर विचार करते हुए लिखा है कि शायद यह हो कि कन्नौज में पाँच राठौर राजों के पहले गहरवारों का आधिपत्य रहा हो, और राठौरों को राज्य मिल जाने के कारण गहरवार लोग अपने आधुनिक स्थानों को चले आए हों। या यह हुआ हो कि राठौरों की अधीनता में रहने या उनमें मिल-जुल जाने के कारण गहरवार लोग भी उस समय तितर-बितर हो गए हों, जब मुहम्मद ग़ोरी ने कन्नौज पर विजय पाई।

यदि एलियट साहब का उपर्युक्त कथन स्वीकार किया जाय, तो स्पष्ट हो जायगा कि कोई गहरवार सरदार कन्नौज की विपत्ति का मारा गोगासों पहुँचकर सूक्ष्म मुनि की शरण में गया हो, या मानिकपुर ही से कोई गहरवार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सरदार वहाँ गया हो। मानिकचंद्र नाम में भी हमको कोई आपत्ति नहीं। आपत्ति इस बात में है कि राठौर राजा जयचंद का सौतेला भाई मानिकचंद्र गहरवार कैसे हो गया। इस दशा में या तो राठौर और गहरवार को एक ही चीज़ मानना पड़ेगा, या यह मानना पड़ेगा कि मानिकचंद्र राजा जयचंद के कोई ख़ानदानी नहीं थे। लोग अपनी-अपनी समझ के अनुसार नतीजा निकाल सकते हैं। हमें तो यह प्रतीत होता है कि कन्नौज के पतन के बाद गहरवार सरदार मानिकचंद्र पूर्व को आए, और मानिकपुर में रहकर समय पर सूचम मुनि के दर्शन किए। इस प्रकार कनपुरिया क्षत्रियों का मातृ-कुल तो चंद्रवंशी गहरवार-कुल है, और पितृकुल भरद्वाज गोत्र है। फलतः उनका गोत्र भरद्वाज, वेद यजुर्वेद, उपवेद धनुर्वेद, शाखा माध्यंदिनी, सूत्र कात्यायन, शिखा दक्षिण, पाद दक्षिण, इष्टदेव शिव हैं, और प्रवर तीन हैं अर्थात् अंगिरा, बृहस्पति, भरद्वाज।

बेनेट साहब ने अपनी राय यों दी है कि अवध के राजपूतों में कान्ह ही एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनकी स्थानीय उत्पत्ति कही जा सकती है। जैसे कि अन्य राजपूत-वंश अपनी-अपनी उत्पत्ति राजपूताने के सरदारों से बतलाते हैं, उस तरह कनपुरिया लोग नहीं बतलाते। वे इसी बात में अपना गौरव समझते हैं कि उनकी उत्पत्ति उसी स्थान की है, जहाँ वे शासन करते हैं।

आस्तिक लोगों को पुराने ऋषियों, मुनियों और महात्माओं के आशीर्वाद के प्रभाव में कोई संदेह नहीं होता। अतः यदि सूचम मुनि के वचन के अनुसार कान्ह ने सात दिन में साढ़े चौदह परगनों का दौरा कर डाला, और उसी मंडल में अपना राज्य स्थापित किया, तो इसमें कोई देहात्मक बात नहीं। हाँ, यह अवश्य था कि ऐसा राज्य एक ही दिन में या घर बैठे-बैठे नहीं मिल गया, उसके लिये बड़ा युद्ध करना पड़ा। कान्ह का निवास-स्थान कान्हपुर-नामक स्थान था, जो रायबरेली ज़िले में सलोन से प्रतापगढ़ जाने-वाली सड़क पर है। वहाँ पर अब भी राजा कान्ह के महल के चिह्न मौजूद हैं। उन दिनो चारो ओर भर-जाति के लोगों का आधिपत्य था, जो वहाँ के मूल-निवासी माने जाते थे। स्थान-स्थान पर उनके क़िले थे। वे लोग शारीरिक बल में भी बढ़े-चढ़े थे। परंतु मदिरा-पान आदि दुर्गुणों तथा सामरिक शासन में ढीलेपन के कारण उन्हें हर जगह क्षत्रियों का लोहा मानना पड़ता था। कान्ह राजा ने कान्हपुर में अपना राज्य स्थापित किया। उनके तीन पुत्र थे (१) सहस, (२) रहस (३) उदान। इन लोगों ने बड़े परिश्रम से भर लोगों को जीता। सहस बड़े भाई थे, और रहस को राजधानी के निकट ही छोड़कर पूर्व की ओर बढ़ गए। वहाँ भरों के शासन को हटाकर और उन्हें मार-काटकर कैथौला का राज्य स्थापित किया, जो आधुनिक प्रतापगढ़ ज़िले में है। कैथौला का घर अब भी बड़ा घर माना जाता है।

इधर दूसरे भाई रहस ने अपने निकट के भरों को मारना प्रारंभ किया। इसमें उन्हें इतनी सफलता हुई कि कुछ ही दिनो में उन्होंने एक बड़ा राज्य स्थापित कर लिया। उन दिनो भरों के सरदार तिलोकी और बिलोकी-नामक दो भाई थे, जिनके नाम से आज भी तिलोई और बिलोई-नामक ग्राम मौजूद हैं। इन लोगों को रहस और उनके वंशजों ने नष्ट किया। उदान ने कोई राज्य नहीं स्थापित किया। सरकारी गज़ेटियरों में उनका नाम नहीं मिलता। परंतु कनपुरियों की वंशावली में उन्हें भी राजा कान्ह का पुत्र लिखा गया है। उनके वंशज वर्तमान हैं, और अन्य कनपुरियों के साथ उनका भ्रातृ-भाव सर्व-सम्मत है। उदान ने प्रतापगढ़ ज़िले के दर्रा-नामक ग्राम में अपना निवास-स्थान बनाया था।

इन्हीं तीन भाइयों की संतान अब इतने बड़े संसार में फैल गई है। इन लोगों का संबंध प्रायः सभी कुलीन क्षत्रियों से है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रथम परिचय

[श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद "मिलिंद"]

युग-युग की साधना हृदय की—
जन्म-जन्म का जोड़ा धन ;
एक पुलक में उमड़ पड़ा
इन नयनों में दो बूँदें बन।
धीरे से ढलका, उनके चरणों
में, पल भर, लीन हुआ,
फिर मेरा सर्वस्व धूल में
मिलकर परिचय-हीन हुआ।

तन की पुलक, हृदय की धड़कन,
मुख का मौन, पलक का भार ;
छोटे-छोटे क्षण, भावों का
सतरंगी सुंदर विस्तार !
उन्हें ज़रा-सी लज्जा-सी थी,
मुझे ज़रा-सा भय था !
कहता है संसार हमारा
वही प्रथम परिचय था !

'सुधा' का 'राज-संस्करण'

जबसे सुधा की साहित्य-संख्या निकली है, तभी से इसका एक राज-संस्करण भी निकाला जाता है, जो 'सुधा' के प्रेमी, अनुग्राहक ग्राहक बड़े-बड़े राजों, महाराजों, ताल्लुक़ेदारों, ज़मींदारों और सेठ-साहूकारों की सेवा में भेजा जाता है। इस 'राज-संस्करण' का प्रत्येक अंक, प्रति मास, बहुत बढ़िया मोटे, चिकने और चमकदार काग़ज़ पर, क़ीमती स्याही से, छपता है। जो सज्जन कम-से-कम १०) रुपया साल देते हैं, उनकी सेवा में ही यह 'राज-संस्करण' भेजा जाता है।

जो सज्जन 'सुधा' के 'राज-संस्करण' के ग्राहक बनना चाहें, वे १०) रु० का मनीआर्डर भेजें और मनीआर्डर-कूपन पर 'राज-संस्करण' शब्द अवश्य लिखें। 'राज-संस्करण' का वी० पी० मँगानेवालों को भी अपने पत्र में 'राज-संस्करण' का ज़िक्र अवश्य कर देना चाहिए।

'राज-संस्करण' की १ कापी का दाम १) है। जो सज्जन 'राज-संस्करण' का नमूना देखना चाहें, वे १) के टिकट अवश्य भेजें।

☞ मैनेजर 'सुधा' (प्रबंध-विभाग), गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विश्व-व्यापी शांति पर एक दृष्टि

[साहित्य-वाचस्पति बाबू बैजनाथ कपूर बी०ए०, विशारद]

त महायुद्ध की भयंकरता ने समस्त संसार का ध्यान विश्व-व्यापी शांति की ओर आकृष्ट किया है। विगत युद्ध के भीषण रक्तपात और सार्वभौमिक भयंकर दुष्परिणाम ने एक बार उन लड़ाकू और युद्ध-प्रिय राष्ट्रों को भी स्तंभित कर दिया, जो युद्ध में ही अपना गौरव और महत्व समझते थे। युद्ध के रोमांचकारी प्रभावों को देखकर ही आज मानवीय भावों से प्रेरित संसार युद्ध-प्रतिबंधक उपायों का अवलंबन कर रहा है, और इसी लिये आज निश्शस्त्रीकरण के प्रश्न पर सब सभ्य राष्ट्र विचार करने लगे हैं। जून २८, सन् १९१९ ई० की वर्सेलिस-संधि के बाद संसार को युद्ध से बचाने के लिये कितनी ही संधियों और अंतर-राष्ट्रीय संस्थाओं का जन्म हुआ है, और संसार ने तबसे वाशिंगटन कान्फ्रेंस, (१९२२ ई०), लोकार्नो पैक्ट और केलाग पैक्ट आदि के रूप में कितने ही सुखांत नाटकों का प्रहसन भी देखा है। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष जेनेवा में या अन्य स्थान पर युद्ध रोकने के उपायों पर विचार किया जाता है। निस्संदेह यह कहना अत्युक्ति न होगा कि ऊपरी तौर पर प्रत्येक राष्ट्र विश्व-व्यापी शांति की ओर तेज़ी से अग्रसर हो रहा है, और संभवतः इसके लिये वह सब कुछ करने को प्रस्तुत भी है!

अन्य देशों की गति पर ध्यान देनेवाले पाठक इस बात से पूर्ण-रूप से अभिज्ञ हैं कि योरप और एशिया के भू-खंडों में आज परस्पर वैमनस्य और मनोमालिन्य की चिनगारियाँ अंदर-ही-अंदर सुलग रही हैं, और किसी समय भी इन चिनगारियों का भीषण युद्ध में परिणत हो जाना कुछ आश्चर्य की बात न होगी। दस वर्ष पूर्व जिस घड़ी वर्सेलिस की संधि से गत महायुद्ध रुका था, और जिस समय लड़ाकू राष्ट्रों ने अपने-अपने रक्त-पिपासु हथियारों को रख दिया था, उस समय संसार को यह विश्वास दिलाया गया था कि सभ्यता के इस बढ़े हुए युग में यह अब अंतिम युद्ध है। किसी-किसी का यह विश्वास था कि जर्मनी को पूर्ण-रूपेण पंगु कर देने से ही युद्ध का डर जाता रहेगा, और अनेकों के विचार में क़ैसर को फाँसी पर लटका देना ही भावी युद्ध के अंत का सिगनल होगा! इस मृगजाल की ओर निस्संकोच हो निष्पक्ष मानव-समाज ने अपना क़दम बढ़ाया था। किंतु आज भी योरप और एशिया के भूखंडों में उतनी ही अशांति विराज रही है, जितनी महायुद्ध के छिड़ने के पूर्व थी। वास्तविक बात तो यह है कि निश्शस्त्रीकरण-सम्मेलन के कितने ही अधिवेशन क्यों न हों, और कितने ही केलाग-पैक्टों की रचनाएँ क्यों न की जायँ, विश्व-व्यापी शांति इस प्रकार कभी स्थापित नहीं हो सकती। शांति-स्थापनार्थ जिन वस्तुओं की आवश्यकता है, वे अभी केवल मुँह से शांति की बातें करनेवाले देशों में नहीं हैं। सच्ची बात तो यह है कि साम्राज्य-लोलुप देशों के परस्पर एक बंद कमरे में बैठकर बातें कर लेने ही से संसार युद्ध के उन भयंकर और रोमांचकारी प्रभावों से न बच सकेगा, जिनके कारण पिछले महायुद्ध में केवल एक देश—फ्रांस—में ही ११ लाख नर-हत्याएँ हुईं, ७ लाख ४० हज़ार मनुष्यों का अपने बंधुओं द्वारा अंग-विच्छेद हुआ, और लाखों स्त्रियाँ तथा बच्चे विधवा और पितृ-हीन हुए। इन दारुण दुःखों और क्लेशों के अतिरिक्त अकेले फ्रांस-देश का कितना रुपया नष्ट हुआ, और कितनी भव्य-कारीगर इमारतें भू-शायी कर दी गईं। इन बातों का क्लेशमय विस्मरण मानव-हृदय पर अपनी दुःखदायी स्मृति छोड़ जाता है। इसी एक देश की हानि से हम सारे संसार की भारी हानि का अनुमान कर सकते हैं।

शांति-प्रिय मानव-समाज का एक समुदाय अवश्य ही इन भयावने युद्धों से आकुल हो वास्तविक और सच्ची शांति चाहता हो, किंतु वे समुदाय, जिनके हाथों में आज देश के शासन-सूत्र की बागडोर है, अपने कृत्यों से कभी शांति के अभिलाषी नहीं प्रतीत होते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शासनाधिरूढ़ समुदाय सदैव युद्ध की ओर तेज़ी से क़दम बढ़ाता नज़र आता है। प्रत्येक बलशाली देश की गवर्नमेंट हर साल करोड़ों रुपए केवल अपनी सेना और अस्त्र-शस्त्र पर व्यय करती है। एक देश यदि अपनी जल-सेना बढ़ाने में व्यस्त है, तो दूसरा देश स्थल-सेना। एक ओर जब निश्शस्त्रीकरण के प्रश्न पर विचार करने के लिये देश-देश के प्रतिनिधि एकत्रित हो संसार की बढ़ती हुई सामुद्रिक शक्ति के भयंकर प्रभाव से बचना चाहते हैं, तो दूसरी ओर इँगलैंड और अमेरिका की जल-सेना में प्रतियोगिता होती है। प्रमुख राष्ट्रों का वार्षिक बजट प्रतिवर्ष सेना पर अधिक व्यय करता हुआ दिखलाई पड़ता है। इटली देश ने अस्त्र-शस्त्र पर १९२९ ई० के हेतु १,३२,७०,००,००० लिए (इटली का सिक्का) मंज़ूर किए हैं। संयुक्त-राज्य अमेरिका ने अपने देश के लिये १५ जंगी बेड़े बनवाने की आज्ञा दी है, जिसका व्यय अनुमानतः ६२, ८०,००,००० डालर होगा। पिछले युद्ध के परिणामों को न भूला हुआ फ्रांस आज भी अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने में संलग्न है। इस देश ने जल-सेना-व्यय के अतिरिक्त २,२०,००,००,००० फ्रांक (फ्रांसीसी सिक्का) अपनी सेना पर ख़र्च करना मंज़ूर किया है। ग्रेट-ब्रिटेन ने, उपनिवेशों को छोड़कर, १२,०६,९५,००० पौंड एक वर्ष में केवल सैनिक कार्य के लिये ख़र्च किए। इस प्रकार जब प्रत्येक देश अपनी सामुद्रिक, सैनिक और स्थल-शक्ति बढ़ाने में दूसरे देश से होड़ लगाए हुए है, तब शांति की आशा करना बालू की भीत पर निर्भर करना है। यह तो एक निर्विवाद सत्य है कि सेना-वृद्धि सदैव शंका और भय उत्पन्न करते हैं, जिसके फल-स्वरूप संसार को बड़े-बड़े युद्ध देखने पड़ते हैं।

इस प्रकार सेना बढ़ाने का कुछ रहस्य है, और इस रहस्य में ही भावी अशांति और युद्ध के कारण छिपे हुए हैं। राजनीति का प्रत्येक विद्यार्थी इस बात से अवगत है कि आज संसार में किस प्रकार दुर्बल राष्ट्र बलशाली राष्ट्रों द्वारा पीसे जा रहे हैं, और किस हृदय-हीनता से बलवान् राष्ट्र कमज़ोर देशों को चूसते हैं। जिस समय योरपियन अथवा अमेरिकन राजनीतिज्ञ शांति की बातें करता है, तो वह वास्तविकता से कोसों दूर रहकर सुंदर कल्पना के भव्य मंदिर में भ्रमण करता है! उन दुर्बल राष्ट्रों की स्मृति, जिन्हें सबल देशों ने आज सैनिक बल द्वारा अपने अधीन कर रक्खा है, ये राजनीतिज्ञ बिलकुल भूल जाते हैं। जिस भयावनी और अमानुषिक स्थिति में ये देश आज हैं, उन्हें सदैव इसी स्थिति में रखकर ये शांति के उपासक, विश्व-शांति का ढोंग रचते हैं! जो लाभ या अधिकार उन्हें अपने सैनिक बल द्वारा या कूटनीति के कारण मिले हैं, उन लाभों और विशेषाधिकारों को छोड़ना इन लोगों के लिये नितांत दुस्तर कार्य प्रतीत होता है। कितने ही छोटे और बड़े देशों को आजन्म ग़ुलामी में रखकर ये दिखावटी शांति-स्थापक संसार को शांति की ओर ले जाना चाहते हैं! जिन देशों की जनता को अपनी गवर्नमेंट में कुछ भी अधिकार नहीं है, उन देशों को ठुकराकर ये राज-शास्त्र-विशारद विश्व-प्रेम और संसार-व्यापी शांति का पाठ पढ़ा करते हैं। भारत, तिब्बत, मलाया, सिंगापुर, जिब्राल्टर, स्वेज़, मिसर, ईराक़, फ़ारस की खाड़ी और मोरक्को, अलज़ीरिया, कोरिया और फ़िलीपाइंस, ट्रिपालिस आदि देशों को स्वाधीनता से वंचित रखकर ये शांति के इच्छुक राजनीतिज्ञ संसार को शांति की मृगतृष्णा दिखलाते हैं। ऐसी स्थिति में भला यह कब संभव है कि संसार में सच्ची और स्थायी शांति स्थापित हो सके। जब तक इस भूमंडल का एक भी देश राजनीतिक बंधन में जकड़ा रहेगा, तब तक निश्चित रूप से संसार में स्थायी शांति नहीं हो सकती। संसार का कोई भी पराधीन देश विश्व-शांति के मार्ग में रोड़े अटका सकता है। तदर्थ विश्व-शांति के हेतु प्रत्येक देश की राजनीतिक स्वाधीनता वांछनीय है।

राजनीतिक स्वाधीनता के अपहरण के अतिरिक्त दुर्बल राष्ट्रों की आर्थिक लूट भी युद्ध के प्रधान कारणों में है। वे देश, जिनमें आज प्रजातंत्र का बोलबाला है, अवसर मिलने पर पक्के साम्राज्यवादी और लुटेरे हो जाते हैं। कमज़ोर और पिछड़े हुए देशों की आर्थिक लूट ही उनकी नीति है। यह आर्थिक लूट केवल विजित जनता में ही असंतोष और घृणा के भाव नहीं फैलाती, बल्कि इसका विषैला प्रभाव बढ़ते हुए राष्ट्रों की औद्योगिक प्रतियोगिता में परिणत हो जाता है। आज इस औद्योगिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

युग में प्रत्येक औद्योगिक राष्ट्र अपना माल बाहर भेजना चाहता है, जिसका परिणाम आपस में ईर्ष्या, स्पर्धा और द्वेष होता है, और इसी बढ़ती हुई प्रतिद्वंद्विता के फल-स्वरूप सेना बढ़ाकर बड़े-बड़े युद्ध किए जाते हैं। इस समय संयुक्त-राज्य अमेरिका अपना माल बेचने के लिये बाज़ार की तलाश में है, उधर ग्रेट-ब्रिटेन में बेकारी की समस्या भीषण रूप धारण करती जा रही है। साथ ही इँगलैंड ने कितने ही बाज़ारों को अपना रक्खा है, और अपने माल की खपत के लिये भारत, मिसर, सिंगापुर, तिब्बत आदि कितने ही देशों को स्वाधीनता से वंचितकर अपनी दृष्टि से व्यापारिक संरक्षण-नियम बना लिए हैं। जर्मनी भी किसी देश से पीछे नहीं रहना चाहता। यही दशा फ्रांस की है। इधर एशिया में जापान भी इसी मार्ग का अनुकरण कर रहा है, और चीन पर उसने अपनी गिद्ध की दृष्टि लगा रक्खी है। ऐसी दशा में परस्पर मनोमालिन्य का बढ़ना नैसर्गिक है। इन देशों की प्रतियोगिता कभी शांतिदायक नहीं हो सकती। यही व्यापारिक प्रतियोगिता आगे चलकर राजनीतिक रूप धारण कर लेती है, और उसी के फल-स्वरूप भयावने युद्ध छेड़े जाते हैं।

साथ ही एक ही देश के अंदर पूंजीपति और श्रमजीवियों के बीच में कलह और द्वेष बढ़ता जा रहा है। कहीं-कहीं पर इस द्वेष ने इतना भीषण रूप धारण किया है कि उस देश की पूरी शक्ति उसे दबाने में असमर्थ मालूम पड़ी है। बड़ी-बड़ी हड़तालों का होना एक साधारण बात हो गई है। आज भी मज़दूरों के हृदय में पूंजीपतियों के लिये उतनी ही घृणा और क्रोध है, जितनी एक शताब्दी पूर्व थी, जब कि इँगलैंड-ऐसे ठंडे देश की मिलों में शीतकाल में रात्रि के समय ८-१० वर्ष के बालकों से, पानी के छींटों द्वारा जगा-जगाकर, काम कराया जाता था।। आज भी मज़दूरों की दशा संतोषजनक नहीं है। एतदर्थ श्रमजीवियों के हृदय में असंतोष और घृणा के भाव उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। क्या इस दशा में संसार शांति की ओर बढ़ सकता है? मज़दूरों की शिकायतों को दूर करने की जगह अधिकारीवर्ग उनके विरुद्ध कड़े-से-कड़े नियम बनाते हैं, और कहीं-कहीं पर हड़ताल करना भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया जाता है। इस दशा में संसार किस प्रकार शांति से रह सकता यह राजनीति के महारथी ही जानें।

जाति और जन्म से ही कुछ लोग अपने को सर्व समझते हैं। योरप देशों में रंगीन जातियों के मनु को नीच और घृणित समझना एक गौरवशाली मानी जाती है, और इस बात को प्रकट करने में हिचकते भी नहीं। इस निंदित और घृणित मनोवृ का परिचय संसार को जब-तब मिलता रहता निस्संदेह वे लोग, जो वंश के कारण अपनी श्रे सिद्ध करते हैं, विश्व-शांति के मार्ग में भारी रुका डालते हैं। पिछले दिनों अमेरिका के एक करोड़प नीग्रो सज्जन जब लंदन में गए, तब एक के बाद एक होटलों में नीग्रो होने के कारण ही वह ठहर न सके। प्रकार के कृत्य सदैव घृणा और असंतोष उत्पन्न हैं। भारतवर्ष में भी अछूत कही जानेवाली जाति के साथ ऐसा ही निंदनीय और घृणित व्यवहार जाता है। बड़े-बड़े लेखक भी इस वंश-रोग से नहीं हैं। बर्जेस, मेक्डोगल प्रभृति लेखकों के नुसार संसार के नार्डिक रेस (वंश) ही सर्वश्रे और इसी की रक्षा से संस्कृति और सभ्यता का वि हो सकता है। इस प्रकार 'वंश-गौरव' भी संसार के मार्ग में भारी उलझन पैदा करता है।

'जाति-श्रेष्ठता' का अंत यहीं नहीं हो जाता। तीन सौ वर्षों के अंदर इस प्रश्न ने योरप में कितने भीषण युद्ध रचवाए, और उनमें असंख्य मनुष्यों जानें व्यर्थ ही नष्ट हुईं। आज भी जाति, राष्ट्र और भाषा का प्रश्न समस्त संसार को संतप्त है।

योरप कितने ही वंशों का निवास-स्थान है। बहुतों की राष्ट्रीयता वहाँ एक देश में मिला दी गई पिछले युद्ध के कारण कई छोटे-छोटे देशों का प्रादु योरप में हुआ, जिनमें पोलैंड, ज़ेकोस्लोवाकिया, रूमानिया विशेष उल्लेखनीय हैं। इन नवीन देशों कई राष्ट्रीयताएँ मिलाकर एक कर दी गई हैं। अल्पसंख्यावालों के लिये विशेष नियम बनाए गए जो उन देशों की व्यवस्थापक सभाओं की सीमा बाहर हैं। इन विशेष नियमों द्वारा अल्पसंख्यक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की भाषा, धर्म और वंश का संरक्षण किया जाता है। अकेले ज़ेकोस्लोवाकिया देश दो स्लैव कुटुंब हंगेरियन और जर्मन लोगों से बना है। इस देश में हंगेरियन और जर्मन लोगों के धर्म, भाषा और वंश के संरक्षण के लिये राष्ट्र-संघ ने अपने हाथ में प्रबंध लिया है। सारांश यह कि संधि के अनुसार जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी और बलगेरिया के कुछ अंश उनके पड़ोसियों को दे दिए गए, अर्थात् वहाँ के निवासी अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरे देशों के नागरिक बना दिए गए, और वे उन देशों के अधीन किए गए, जो उनसे भाषा, वंश और राष्ट्रीयता में सब प्रकार भिन्न और विरोधी थे। इसलिये भी योरप महाद्वीप में, ऐसी स्थिति में चिर-शांति होना कुछ असंभव कार्य दृष्टिगोचर होता है।

एक देश में दूसरे देशवालों का अल्प-संख्या में होना निस्संदेह संसार को त्रस्त कर रहा है। किंतु अब तक राज्य-शास्त्र के प्रकांड पंडित भी इस प्रश्न को सदैव के लिये हल न कर सके। अल्प-संख्यक दलवालों के लिये केवल तीन ही उपाय प्रतीत होते हैं। परंतु निश्चयात्मक रीति से यह कहना कि अमुक उपाय ही सर्वश्रेष्ठ और लाभदायक है, नितांत असंभव है। पहला साधन या उपाय जो अल्प संख्यावालों के लिये कहा जाता है, वह यह है कि "अगर आप इस देश में रहना चाहते हैं, तो इसी देशवासियों के समान रहिए। अन्यथा अपने देश में तशरीफ़ ले जाइए!" इस उपाय का अवलंबन थ्रेस में लूसेनी संधि के अनुसार ग्रीक (यूनानी) और टर्कीवालों के साथ किया गया था। दूसरा साधन अल्प-संख्यक दल के लिये अपने को उसी राष्ट्र में मिला देने का है। जिस प्रकार संयुक्त-राज्य अमेरिका में, जर्मनी, इटली, फ्रांस, स्पेन आदि देश-वासियों ने अमेरिका में अपने को मिलाकर किया है। इन लोगों के लिये कोई विशेष क़ानून या अधिकार नहीं है। तीसरा उपाय, जिसका अवलंबन राष्ट्र-संघवालों ने किया है, अल्प-संख्यक दल के धर्म, भाषा और जाति की रक्षा का है। और, इसीलिये कुछ नवीन राष्ट्रों का जन्म भी हुआ है। जिस समय प्रेसीडेंट विल्सन ने राष्ट्र-संघ से इस तीसरे उपाय का अवलंबन करने को कहा था, उन्हें स्वप्न में भी यह विश्वास न होगा कि इस घटना के दस वर्ष पश्चात् ही यह प्रश्न फिर भीषण रूप धारणकर संसार के राजनीतिज्ञों को भयभीत करेगा। आज दशा यह है कि अल्प-संख्यक दलवाले बहुमत के घोर विरोधी और शत्रु प्रतीत होते हैं, और दिन-प्रति-दिन दोनो समुदायों के बीच में मनोमालिन्य बढ़ता ही जाता है। आज योरप का एक करोड़ जन-समुदाय अल्प-संख्यक दल के नाम से बहुमत के शासन में पीसा जाकर क्रोध और घृणा के भावों से ओत-प्रोत हो रहा है। क्या इस प्रकार विश्व-व्यापी शांति स्थापित हो सकती है?

अपनी ओर से वर्सेलिस-संधि के विधाताओं ने इस अल्प-संख्यक जाति के लिये विशेष ध्यान दिया था, जिस-के फलस्वरूप इन जातियों के धर्म और भाषा के विकास पर किसी भी राष्ट्र को प्रहार करने या रोकने का कुछ भी अधिकार न था, और अल्प-संख्यावालों को अपने रस्म-रवाज, व्यवहार और अपनी संस्कृति तथा सभ्यता को फैलाने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। किंतु संसार को अब भी अपने वक्षःस्थल पर कितने ही युद्धों को देखना था, तदर्थ इन विशेष नियमों का पालन कहीं भी ठीक तरह से न हुआ। अल्प-संख्यावालों को अपनी ही भाषा और अपनी ही पद्धति के अनुसार स्कूल खोलने और शिक्षा देने का पूर्ण अधिकार था; किंतु प्रत्येक देश के अधि-कारीवर्ग ने इस कार्य को पूरा करने में काफ़ी रुकावटें डालीं। लगभग १० लाख जर्मन, और इतने ही हंगेरियन क्रमशः पोलैंड और रूमानिया के अधीन रक्खे गए। और, इसी प्रकार ३० लाख जर्मन, दस लाख हंगेरि-यन ज़ेकोस्लोवाकिया के अधीन किए गए। इस प्रकार कुल मिलाकर १ करोड़ मनुष्य अल्प-संख्या के नाम से योरप के कुछ देशों में बाँट दिए गए।

यदि इनकी रक्षा, सुख और अधिकारों का ध्यान राष्ट्र-संघ करता, तो आज कुछ दूसरी ही दशा होती। नियम बनाकर सो जाना राष्ट्र-संघ ने पसंद किया। आज उसी का यह फल है कि योरप के कुछ देश अंदर-ही-अंदर दहक रहे हैं। शासकदल अपनी मनमानी करता है, और शासित दुखी होते हैं। व्यर्थ की छेड़छाड़ यहाँ तक पहुँच चुकी है कि ट्रेनसेलवानिया में पुलीस गिरजाघरों में हंगरी-भाषा में दिए गए उपदेशों की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूरी रिपोर्ट लिखती है। अल्प-संख्यक दल के ऊपर पुलीस द्वारा अमानुषिक अत्याचार, ग़ैर-क़ानूनी गिरफ़्तारी और जेलों में काफ़ी समय तक बंद रखना एक साधारण बात हो गई है। अल्प-संख्यावालों को गिनने में हर तरह की चालबाज़ियाँ और धूर्तता की जाती है, ताकि उस देश की गवर्नमेंट को उनके लिये अलग स्कूल न खोलने पड़ें। एक नगर में तो कोई भी मनुष्य जर्मन-भाषा में टेलीफ़ोन पर बातचीत नहीं कर सकता और दूसरे नगर में—जहाँ जर्मन अधिक संख्या में हैं—सैनिकों द्वारा तमाम खेल के विज्ञापन फाड़ डाले गए; क्योंकि वे उस देश की भाषा में नहीं छपे हुए थे। जर्मन और हंगेरियन बालक परीक्षा में अपनी भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते। पोलैंड में कितने ही जर्मन किसान अपनी-अपनी ज़मीन से बल-प्रयोग द्वारा अलग कर दिए गए, और छीनी हुई ज़मीन पोलैंडवासियों को दे दी गई।

इस प्रकार योरप का एक करोड़ जन-समुदाय आज क्रोध और घृणा के भावों से भर रहा है। इन लोगों के धर्म और भाषा को नष्ट करने का पूरा उद्योग किया जा रहा है, और शासकदल इस बात की चेष्टा जी-जान से कर रहा है कि ये अल्प-संख्यक दल के लोग अपनी भाषा और अपनी राष्ट्रीयता को छोड़कर इसी देश में पूरी तरह मिल जायँ। बहुमतवाले इस भ्रम में पड़कर कि इनकी भाषा नष्ट करने से इनकी राष्ट्रीयता भी समाप्त हो जायगी, कार्य कर रहे हैं, और इसी लिये उनके बच्चों को उनकी मातृ-भाषा से वंचित किया जाता है। प्रमत्त शासक इतिहास को पूर्णतया भूल जाते हैं, जब वे इस प्रकार किसी देश की राष्ट्रीयता को कुचलना चाहते हैं। इतिहास के पृ इस बात के साक्षी हैं कि जितना ही राष्ट्रीयता कुचलने का प्रयत्न किया जाता है, उतनी ही तो के साथ राष्ट्रीय भावनाएँ बढ़ती हैं। राष्ट्रीय को पाशविक बल द्वारा नष्ट करना नितांत अ भव है।

इस प्रकार आज संसार का प्रत्येक खंड अशांति असंतोष, क्रोध एवं घृणा के भावों से भरा हुआ विश्व-प्रेम और विश्व-शांति के लिये कहीं भी स्थान नहीं एक समुदाय दूसरे समुदाय को पूरी तरह हड़प क पर तुला हुआ है। परस्पर ईर्ष्या और द्वेष के बीज सर्व बोए जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में संसार चिर-शां कैसे देख सकता है? वास्तविक शांति तो सच्चे प्रजात में है। किंतु आज प्रजातंत्र का चोग़ा पहने हुए दे पूरे साम्राज्यवादी और लुटेरे बन रहे हैं। दूसरा उप महात्मा गांधी का अमर संदेश 'प्रेम' है। भ भले ही दुनिया इस संदेश पर हँसे, किंतु आज भविष्य में इसी के द्वारा शांति स्थापित होती देख संसार इसे अपनाने का प्रयत्न करेगा।

ऐसी स्थिति में यह कहना कि संसार शांति ओर बढ़ रहा है, अपने को भ्रम में डालना है। कितने राष्ट्रसंघों का जन्म क्यों न हो, कितने ही कैलाग पै क्यों न बनाए जायँ और कितनी ही बार इँगलैंड प्रधान भी विश्वव्यापी शांति के लिये अमेरिका क्यों जायँ, किंतु स्थायी और सच्ची शांति तब तक संसार कभी नहीं हो सकती, जब तक अशांति के मूल कार पर कुठाराघात न किया जायगा। संभव हुआ, इन उपायों पर फिर विचार किया जायगा।

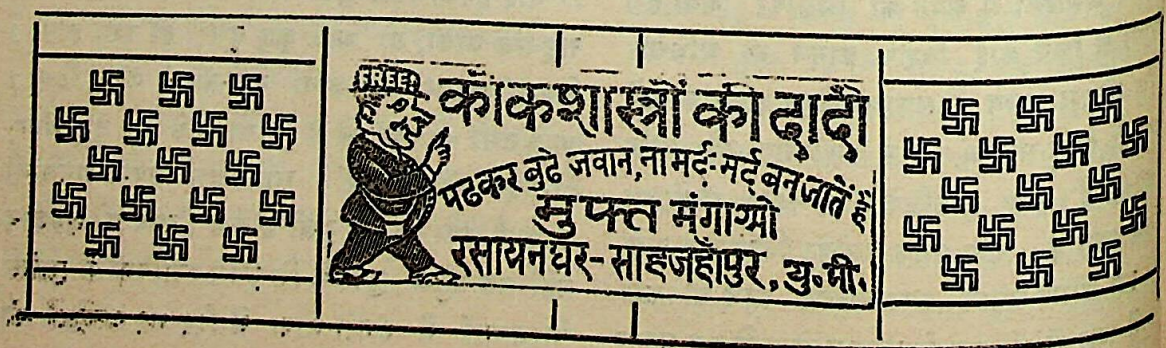

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मोह-पाश

[श्रीरामचंद्र टंडन बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

ही बूरी जगा, उसके कानों में बच्चे के रोने की आवाज़ पड़ी। आँखें बंद किए हुए ही उसने अपनी घरवाली को पुकारा—

"गोल्दा, छोकड़ा गला फाड़ रहा है!"

गोल्दा ने कोई उत्तर न दिया।

बूरी ने चारो ओर देखा। उसकी स्त्री घर में नहीं थी। उसे कुछ आश्चर्य हुआ। फिर सोचा, नहाने-धोने गई होगी। बच्चे का चीख़ना बंद करने के लिये बूरी ने कपड़े का एक टुकड़ा लेकर उसके मुँह में ठूँस दिया, और आप अपने कपड़े पहनने लगा।

मन में कुछ हिसाब लगा रहा था। सोच रहा था कि ज़ोबलिनर के यहाँ से उड़ाए हुए चाँदी के शमादान के कितने दाम मिलेंगे। इसी बीच में ख़याल आया कि माल तो अच्छी तरह देख लें। झट ऊपर की कोठरी में पहुँचा। शमादान का कहीं पता न था। उसने बहुत अच्छी तरह खोजा, शमादान ग़ायब था!

जल्दी से नीचे उतरा, सीधे वहाँ पहुँचा, जहाँ उसकी स्त्री की वस्तुएँ टँगी रहती थीं। उसने ऊपर का परदा चीर डाला। वहाँ की भी सब वस्तुएँ ग़ायब थीं!... अब उसकी समझ में आया कि मेरी घरवाली कहीं निकल भागी है।

सोचने लगा—किसके साथ?

"शुलेमा शूसर के साथ?.....या हयीमल ग़ूब के साथ?.....ख़ैर, जाने दो, भाड़ में जाय.....कौन हरामज़ादी की परवा करता है!"

बनावटी लापरवाही से इतना कहकर बूरी ने दीवाल पर थूक दिया। कहने लगा—"वाह, अच्छी रही।... हा-हा-हा।"

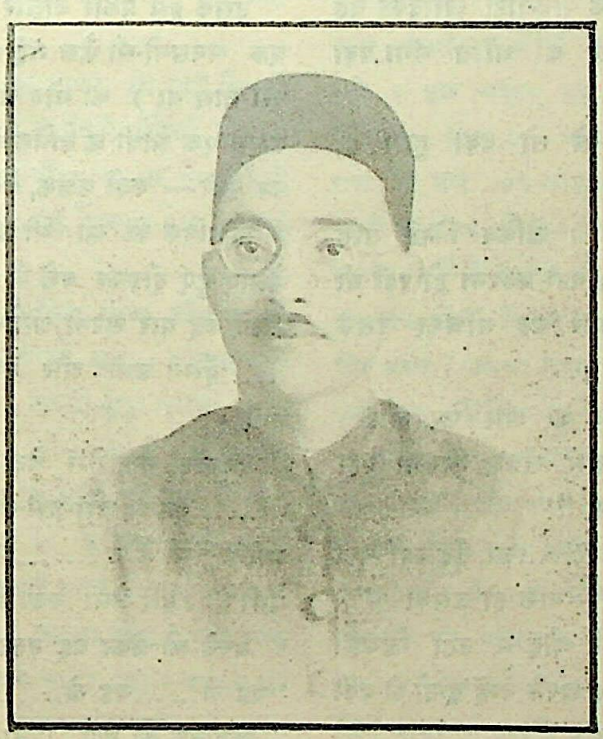

बाबू रामचंद्र टंडन बी० ए०, एल्-एल्० बी०

उसने नन्हें बालक की ओर देखा। कुछ सोचता हुआ गुनगुनाने लगा—"लेकिन इस कम्बख़्त छोकरे को लेकर मैं क्या करूँगा। कहीं पता चल जाय कि वह कहाँ भागकर गई है, तो इसे ले जाकर उसके दरवाज़े पर छोड़ आऊँ।.....कहूँ ले.....ले अपनी बला।"

क्षण-भर के लिये उसके मन में एक ऐसा पाप समाया कि उसका शरीर पीला पड़ गया, अपने होठ चाबने लगा। उसके हाथ काँपने लगे। फिर वह धीरे-धीरे बच्चे के समीप आया। बच्चा नंगा पड़ा हुआ था। कंबल का मैला चीथड़ा उसने पैरों से अलग कर दिया था। मुट्ठी मुँह में भरे पड़ा-पड़ा आँखें खोले हुए मुसकिरा रहा था।..... उसके मुख की गढ़न देखकर बूरी को किसी परिचित आकृति का ध्यान आ गया।.....उसका मुँह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किससे मिलता है ? ..... बूरी ठीक समझ न पाया ।.....

उसने बच्चे की ओर से मुँह फेर लिया । जल्दी से अपना टोप सिर पर रखकर बाहर निकल पड़ा । घर में ताला लगा दिया । वह उद्देश्य-रहित घूमता रहा; लेकिन उसके हृदय में शांति नहीं थी ।.....बालक का रुदन उसके कानों में गूँजता रहा—मानो उसे बुला रहा हो ।.....बूरी की कल्पना में पैरों को पटकते हुए, और चिल्लाते हुए बालक का चित्र था ।..... उसने सोचा, मुझे लौटना ही पड़ेगा ।

बूरी को अपनी स्त्री पर क्रोध आ रहा था । सोच रहा था, कहीं उसे पकड़ पाऊँ, तो उसका गला घोट दूँ—ऐसा घोटूँ कि हरामज़ादी की जीभ निकल पड़े ।

रोटीवाले की दूकान से एक पाव-रोटी ख़रीदकर वह घर लौट आया । बालक पहले की भाँति नंगा पड़ा मुसकिरा रहा था ।

"तेरा भला हो, चैन से तो पड़ा हुआ है, शैतान ।....."

बूरी फिर घर से लौट पड़ा । लेकिन किसी तरह उसके पैर नहीं बढ़ते थे । उसे यही कल्पना हो रही थी कि बालक रो रहा है,.....और यह सोचकर उसके हृदय में बड़ी वेदना होती थी ।

बूरी ने मुट्ठी बाँधी और घर की ओर फिर लौटा । इस बार बालक ख़ूब लंबी साँसें लेकर चिल्ला रहा था—"अम्-सू-मा ! अम्-सू-मा !!"

"तेरी अम्मा; हुँ ? शैतान !.....जा, ढूँढ़ क्यों नहीं लाता अपनी प्यारी अम्मा को—नाश हो उसका !"

बूरी ने बालक को अपनी गोद में उठा लिया । बालक उससे चिपट गया और अपने नन्हें होठों से बड़ी उत्सुकता से कुछ खोजने लगा ।

"जहन्नुम में जाय कहीं की !"

बूरी अपनी स्त्री को कोसता जाता था, और बच्चे के गाल और शरीर को थपथपाता जाता था ।

"रो मत शलोमले,..... चुप हो जा.....चुप हो जा ।"

बालक अपने नन्हें मुँह से कुछ टटोलता ही रहा । उसने अपने हाथ इधर-उधर फेंके, सिर हिलाया—मानो कुछ बोलना चाहता है । बूरी ने बच्चे को और भी चिपटा लिया और दूध खोजने लगा ।

अँगीठी पर उसे थोड़ा-सा दूध रक्खा मिला । इसे उसने पावरोटी का एक टुकड़ा भिगोया, और चम्मच से बालक को खिलाने लगा । बीच-बीच में उसे पुचकारता जाता, और उससे बातें करता जाता था—"ले बेटा, खा ले.....तेरी अम्मा, नाश हो उसका—तुझे छोड़कर भाग गई । कुतिया ! कुतिया भी अपने बच्चे को छोड़कर नहीं भागती.....कुतिया से भी ओछी है.....रो मत.....बच्चा, मैं तो हूँ.....मैं तो तुझे छोड़कर न जाऊँगा.....सच कहता हूँ ।"

बालक जब शांत हुआ, तो एक कपड़ा ओढ़ाकर बूरी उसे सड़क पर ले आया ।

उसके इस प्रकार बाज़ार में दिखाई देने के कारण एक सनसनी-सी फैल गई । बूरी कुलक (यही उसका पूरा नाम था) की गोद में एक बच्चा !..... उसके एक साथी क्रेडनिक ने अड्डे पर से पुकार कर पूछा—"क्यों कुलक, यह लड़का कहाँ पा गया ?"

क्रेडनिक की स्त्री भी उत्तेजित होकर उठी । हाथ फैलाए हुए दौड़कर बच्चे के पास आई । मारे ख़ुशी के उसने कई बार अपनी ओढ़नी से अपना मुँह पोछा,..... .....हँसने लगी और नन्हें बच्चे की पीठ थपथपाने लगी ।

"कुलक, यह तेरा बेटा है ? अरे, मुझे क्या ख़बर थी.....इसकी ज़रा-ज़रा-सी आँखें तो देखो.....ठीक मरीना-जैसी हैं न !.....और नाक भी देखो—ठीक वैसी ही । हीरे-जैसा बच्चा है.....इसे मुझे दे दो ।"

बच्चे को लेकर वह उछालने लगी । कहने लगी—"यह ले.....यह ले.....शैतान कहीं का !"

क्रेडनिक का बूढ़ा पिता—चोरों का सरदार—भी धीरे से उठा । बच्चे के पास आकर उसे देखने लगा और उसकी पीठ पर थपकियाँ देने लगा ।

बोला—"छोकरा तो बड़ा अच्छा है !.....होनहार है, बात-की-बात में बड़ी तेज़ी से खिड़कियों पर चढ़ जायगा । इसकी मा कौन है ?"

"भाड़ में जाय इसकी मा ! न-जाने कहाँ निकल भागी । चाँदीवाला शमादान भी उड़ा ले गई ।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"और वह बच्चा तुम्हारे ऊपर छोड़ गई ?"

"हाँ।"

"यह तो बुरा हुआ, बहुत बुरा हुआ।"

यह कहकर बुड्ढा अपना सिर खुजलाने लगा।

उसके पास आकर बूरी कुलक से कहा—"खूब किया। अब तुम अपना धंधा छोड़कर धाय का काम करो।.....तुम्हारे साथ उसने खूब ही चाल खेली, क्यों ?"

"तुम मेरी चिंता न करो। भगवान् सभी का पेट पालता है !.....मैं भी बूरी कुलक हूँ !"

बच्चे को गोद में लेकर बूरी नदी के एक ओर चल दिया। उसे जान पड़ता था कि लोग उसकी ओर उँगलियाँ दिखाकर हँस रहे हैं।

शहर पार करके वह जंगल में पहुँच गया, और वहाँ एक पत्थर पर जा बैठा।

पास में किसी ओर एक प्राणी भी नहीं दिखाई देता था, वृक्षों की शाखाओं से पीली पत्तियाँ गिरकर उदासी से सरसर कर रही थीं। दूर पर चट्टानों के बीच से बहते हुए झरने का मंद अस्फुट स्वर सुनाई पड़ रहा था।

बूरी ने बालक को पास ही लिटा दिया, और उसकी ओर बड़े वेदना-पूर्ण भाव से देखने लगा। बालक चुपचाप उसकी ओर देखता और अपनी मुट्ठी चूसता रहा। ऐसा जान पड़ता था कि कुछ सोच रहा है। बूरी कुलक बेचारा यह समझ न सका कि बच्चे का क्या करूँ। क्षण-भर के लिये उसे त्याग देने का विचार भी जी में आया। परंतु उसी समय उसके हृदय में नन्हें असहाय बालक पर दया आई। सोचा, अपना ही रक्त और मांस है। उसे त्याग देने का विचार जाता रहा। बालक को फिर गोद में लेकर बूरी ने उसे अपने शरीर से लगा लिया, और उसके अंगों का निरीक्षण करने लगा। "इनमें मेरा ही अंश है" यह विचार करके उसको बड़ी प्रसन्नता हुई। उसके शरीर में गर्मी का-सा संचार हुआ।

वह बालक से कहने लगा—"नन्हें कुलक.....हाँ तू नन्हा कुलक है.....ठीक है।.....तू कैसा अच्छा बेटा होगा ! मैं शर्त लगा सकता हूँ। जब तू खिड़कियों पर चढ़ेगा, ताले तोड़ेगा, और बढ़िया माल मारेगा। तेरे भी बच्चे होंगे, और उनकी मा उन्हें छोड़कर भाग जायगी। उस समय तू—तू क्या अपने बच्चों को गोद में लेकर घर-घर रोटियाँ भीख माँगेगा ? तू है कौन ? कुलक, मेरे ही जैसा—तू—मैं।"

उसने बालक को नदी के किनारे लिटा दिया, और एक पेड़ के पीछे खड़ा होकर देखने लगा कि क्या करता है। बालक अपने पैर फेंकने लगा, हाथ चूसने लगा और खेलते-खेलते अम्-म्-मा ! अम्-म्-मा ! करने लगा।

बूरी और दूर पर एक दूसरे पेड़ के पीछे छिप गया। परंतु उसके कानों में बालक की रुलाई सुनाई देती रही। इस प्रकार एक पेड़ से दूसरे पेड़ के पीछे खिसकता हुआ वह बालक से दूर हटने लगा। यहाँ तक कि उसे अब बालक का रोना न सुनाई देता। इसके बाद वह दौड़कर भागने लगा। परंतु दौड़ते हुए उसके कानों में बालक की रुलाई गूँज रही थी। उसने अचानक सोचा कि बालक कहीं नदी में न लुढ़ककर गिर जाय। उसका सिर दुखने लगा, और हृदय मसोसने लगा। लेकिन वह भागता ही रहा।

तनिक देर बाद वह रुक गया। उसने अपने चारो ओर देखा। और बड़ी तेज़ी से लौट पड़ा।

देखा कि बालक बड़ी ज़ोर से चिल्ला रहा है। बूरी ने उसे गोद में उठा लिया, और जंगल के किनारे के झोपड़ों की ओर बढ़ा। दरवाज़े-दरवाज़े वह टूटे हुए स्वर में भीख माँग रहा था—"एक अनाथ बालक के लिये थोड़ा-सा दूध दे दो—इस अनाथ बालक के लिये थोड़ा-सा दूध दे दो।"*

---

* शोलम एश की एक यिद्दी कहानी का अनुवाद।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तराश

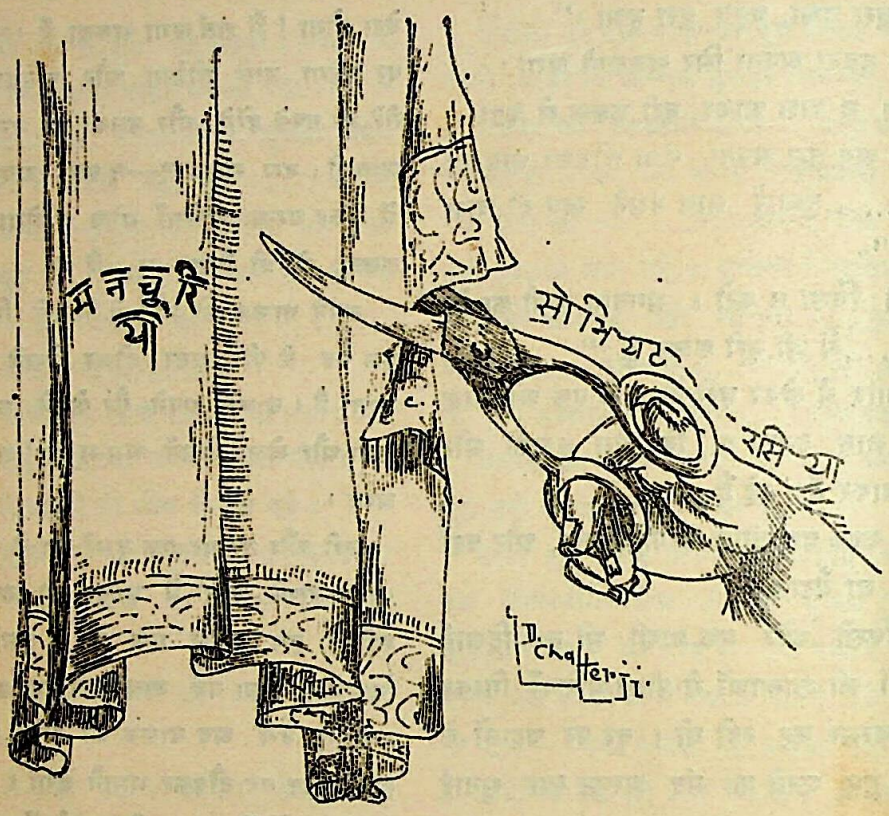

मनचूरिया पर सोवियट रूस

छपकर निकल गया ! बिक रहा है !!

दिलावर सियार

[लेखक, पं० भूपनारायणजी दीक्षित बी० ए०, एल्० टी०]

यह पुस्तक 'Reynard the fox'-नामक अँगरेज़ी पुस्तक के एक संक्षिप्त संस्करण का भाषानुवाद है। अँगरेज़ी बाल-साहित्य में इस पुस्तक का ऊँचा स्थान है। हिंदी में भी इससे बालकों का विशेष मनोरंजन होगा। इसकी कहानियाँ इतनी दिलचस्प हैं कि पुस्तक हाथ में लेने पर बिना ख़त्म किए जी नहीं मानता। बालक इसे पढ़कर हँसी के मारे ज़रूर लोट-पोट हो जायँगे। सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल ॥), छपाई-सफ़ाई सुंदर।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रमणी-रत्न
श्रीमती चंद्रदेवी
(संचालिका मंडारथी)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाराजकुमारी श्रीकमला राजा सेंधिया
(ग्वालियर के अल्पवयस्क नरेश की बड़ी बहन)

Ganga Fine Art Press, Lucknow

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

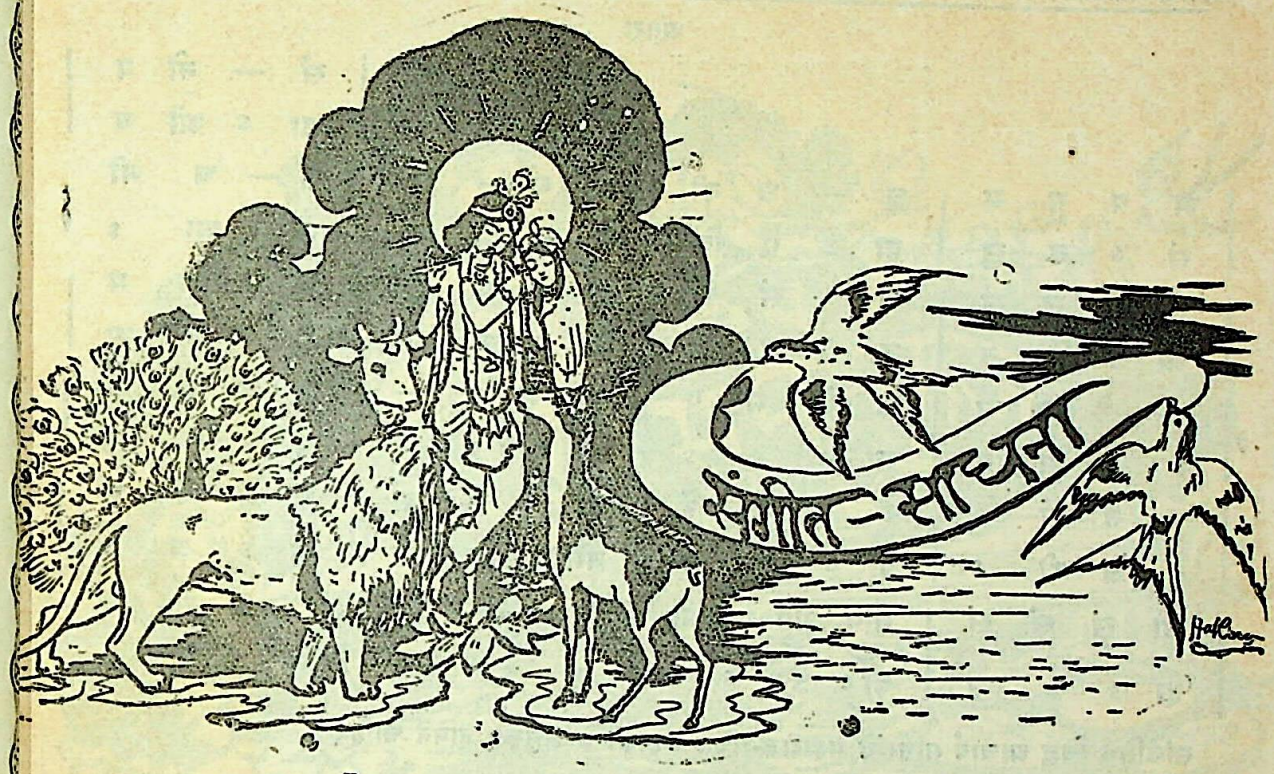

शब्दकार —अज्ञात] [स्वरकार—श्रीयुत लक्ष्मणदास मुनीम

बहार—तीन ताल *

तुम आओ बसंत सुहाए, किरन रंग रँगीन पख उठाए।
लै आओ नित नूतन गायन, फूल पान मन भाए।
मंजु मंजरी पुंज मनोहर कुंज बहार बढ़ाए।

स्थायी

		नी नी	सं — नी प
		तु म	आ ऽ ओ ब
म प ग म	ध — ध नी	सं सं, नी नी	सं — नी प
सं ऽ त सु	हा ऽ ए कि	र न, तु म	आ ऽ ओ ब
म प ग म	ध — ध नी	सं सं — —,	ग — ग म
सं ऽ त सु	हा ऽ ए कि	र न ऽ ऽ,	रें ऽ ग रें
रे — स —	सरे मप नी म	प नी, सं सं	रें सं नी प
गी ऽ न ऽ	पंऽ ऽऽ ख उ	ठा ए, तु म	आ ऽ ओ ब
म प ग म	ध — ध नी	सं सं,	
सं ऽ त सु	हा ऽ ए कि	र न,	

* श्रीभारतेंदु-नाटक-मंडली (काशी) के चंद्रगुप्त में हेलेन द्वारा गाया हुआ गान।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अंतरा

		नी नी	सं — नी प
		तु म	आ ऽ ओ व
म प ग म	ध — ध नी	सं सं — —,	म — ध नी
सं ऽ त सु	हा ऽ ए कि	र न ऽ ऽ,	लै ऽ आ ऽ
सं नी सं सं	नी — सं सं	नी प म प	ग — ग म
ओ ऽ नि त	नू ऽ त न	गा ऽ य न	फू ऽ ल पा
— रे स स	स रे म प	नी म प —	म ध ध नी
ऽ न म न	भा ऽ ऽ ऽ	ए ऽ ऽ ऽ,	मं ऽ जु मं
— नी सं —	रें — सं रें	नी — सं सं	गं मं रें सं
ऽ ज री ऽ	पुं ऽ ज म	नो ऽ ह र	कं ऽ ज व
नी सं सं सं	नोप मप ग म	ध —,	
हा ऽ र ब	ढ़ा ऽ ऽ ऽ ऽ	ए ऽ,	

सांकेतिक चिह्न आचार्य भातखंडे महाराज-रचित प्रणाली के अनुरूप जानने चाहिए।

लीजिए, जिसकी वर्षों से माँग थी, वह

दुबारा छपकर तैयार है!

'हृदय की परख'

(सामाजिक उपन्यास)

इस पुस्तक के लेखक हैं हिंदी के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रोफ़ेसर चतुरसेन शास्त्री आयुर्वेदाचार्य। कौन ऐसा हिंदी-प्रेमी है, जो शास्त्रीजी की लेखनी का क़ायल न हो। उन्हीं का लिखा हुआ यह उपन्यास है। इसे पढ़कर आप मुग्ध होंगे और वाह-वाह किए बिना न रह सकेंगे। इनका लिखा हुआ और हमारे कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'हृदय की प्यास'-नामक उपन्यास जिन्होंने पढ़ा है, वह इसे भी उसी तरह पसंद करेंगे। इसमें संदेह नहीं। मूल्य १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

२३-२५, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

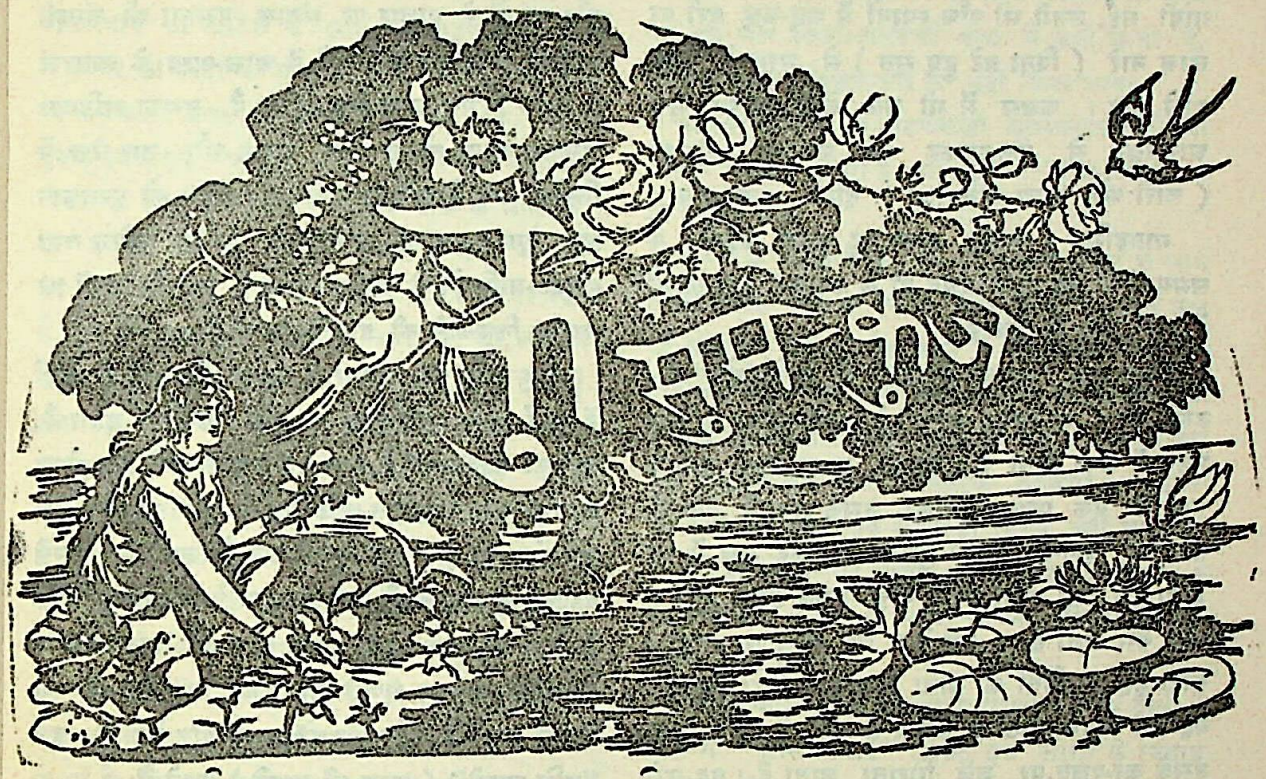

१. प्रथम किरण

किया तुमने जब, प्राणाधार !
उस स्वप्नों के स्वर्णलोक में कोमल पद-संचार,
सोती हुई लालसा जागी,
मैं निर्लिप्त सदा का,
उस दिन पहले-पहल हुआ अनुरागी।
जीवन के उस नव प्रभात में हे प्रिय प्राण !
प्रथम किरण-से, जब तुम आए
ज्योतिर्मय, अम्लान,
मेरा बाल सरल भोलापन,
चिर विस्मृति-सा निद्रित यौवन,
उद्वेलित हो उठा, भर गया एक नया आवेश,
मिला नूतन संदेश।
अवगुंठित जीवन में कुंठित-सा बंदी था प्यार,
सखे, प्रिय, प्राणाधार !
तुमने ही तो मुक्त कर दिया। एक बार,
फिर एक बार,
दर्शन दो प्राणाधार।

श्रीरामअवध द्विवेदी गजपुरी बी० ए०

× × ×

२. विवाह में आम्रपल्लव का उपयोग

विवाह तो अनगिनित देखने में आए ; अपने घर-आँगन में ही एक कोड़ी वर-कन्याओं का विवाहोत्सव देखने का अवसर मिला ; किंतु विवाह-विधियों तथा अन्य शुभानुष्ठानों—पूजा-कथाओं—में जो आम के पल्लव और लकड़ी का इतना व्यवहार होता है, उधर गत जुलाई में अपनी पौत्री के विवाह के समय ही ध्यान आकृष्ट हुआ।

देखा, द्वार पर आम्रपल्लवों की बंदनवार टाँगी गई। मंडप-रचना में जो बड़े-बड़े लंबे बाँस गाड़े गए, उनके सिरों पर पल्लवों के गुच्छे बाँधे गए। उसके चतुर्दिक् भी बंदनवार लटकाई गई। मध्य-मंडप में जो दो-चार बाँस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की पतली डालियाँ क्रमशः एक दूसरे के बाद सटाकर गाड़ी गईं, उनमें भी पाँच स्थानों में कुछ-कुछ दूरी पर लाल नारे (बिना बटे हुए सूत) से आम के पल्लव बाँधे गए। कलस में भी जल देकर उसका मुख आम्रपल्लव से ढक-ढककर उस पर एक चौमुखा (चारो ओर बाला जानेवाला) दीपक रक्खा गया।

गात्रहरिद्रा (अर्थात् कन्या पर हल्दी चढ़ाने) के समय पीसी हुई हल्दी पल्लव ही से उठाकर सब लोगों ने उसके अंग में छुलाई।

इधर एक "इमली घुँटाई" की विधि होती है। उसमें वर (या कन्या, जो हो) अपनी माता के साथ मंडप में खड़ा होता है। उसका मामा उसके माथे के चतुर्दिक् एक पल्लव घुमाकर उसके मुख में देता है, और वह ज़रा-सी उसकी फुनगी काटकर मुख में रख लेता है। इसी प्रकार मामा पाँच पल्लव उसके मुख में पाँच बार देता है। तदनंतर वह वर (या कन्या) काटी हुई फुनगियों को माता के हाथ में गिरा देता है। वह उसे अपने ओठों के समीप ले जाती है। तब मामा उसके कर-पल्लव पर जल गिराता जाता है। वह उसे जिह्वा से छूती जाती है, जल नीचे बहता जाता है और उसी के साथ आम्रपल्लवों की फुनगियाँ भी बह जाती हैं। मामा तब अपनी बहन के हाथ में यथाशक्य और यथासाध्य द्रव्य-वस्त्र रख देता है, और वह विधि समाप्त हो जाती है।

इसी प्रकार अन्य पूजाओं के अवसरों पर भी कुछ-न-कुछ पल्लव व्यवहृत होते हैं।

विवाह तथा अन्य शुभ कामों में इसी की लकड़ी से हवन किया जाता है।

विवाह की विविध विधियों में ब्राह्मण देवता अपना तथा वर-कन्या और उनके पिता का शरीर-मार्जन एवं अन्य कार्यों में अपना और कार्य-कर्ताओं का अंग-मार्जन आम्रपल्लव ही से जल छींटकर किया करते हैं।

पूर्वोक्त विवाह-कार्यों को देखकर हमें १९१९ ई० के जून मास के बिहार और उड़ीसा की खोज-ढूँढवाली मंडली के जर्नल (पत्र) का स्मरण हुआ। हमने उसे निकालकर देखा। उसमें श्रीमान् शरच्चंद्र मित्र एम्० ए०, बी० एल्० ने निज अनुसंधान और जानकारी से एवं रायबहादुर शरच्चंद्र राय एस्० ए०-लिखित और प्रबंधों के आधार पर संताल परगना की जंगली जातियों के विवाहादि कार्यों में आम्र-पल्लव के व्यवहार के वर्णन में एक वृहत् लेख लिखा है, उसका अविकल अनुवाद करना तो अनुचित होगा, और उस लेख में लिखित सब विषयों का उल्लेख इस लेख को वृहत्तर बना देगा। अतएव उसमें मुंडा, बीरोड़, भूमिज तथा संताल-जातियों के जो हाल लिखे गए हैं, उन्हीं का सारांश दिखलाने की हम चेष्टा करेंगे।

मुंडा-जाति की बारात के घर से निकलने पर मार्ग में जहाँ पहले कोई आम का पेड़ दृष्टि-गोचर होता है वहीं वह ठहर जाती है। वर उस वृक्ष के चारो ओर ऐसा लगाकर एक कच्चा सूत बाँध देता है। वर की माता उसे जंघा पर लेकर उस पेड़ के तले बैठ जाती है। उससे वह कई प्रश्न करती है। उनका उत्तर देकर वर अपने मुँह में आम की एक छोटी टहनी और गुड़ डालकर उस टहनी को चबाकर अपनी माता को देता है। माता निगल जाती है, और पुत्र को आशीर्वाद देती है। इसे "डलि-साखी" (आम की साक्षी) कहते हैं।

फिर बारात पहुँचने पर वर डोली की पालकी पर चढ़कर कन्या बहुत-सी अपनी नातेवाली स्त्रियों के साथ आस-पास के किसी आम के वृक्ष के पास जाकर उस पर ऐपन का थापा कर देती है, और उसके चतुर्दिक् सूत बाँध देती है। वह पेड़ उसके विवाह का साक्षी बन जाता है।

वर के आँगन में जाने पर बहुत-सी नारियाँ पीतल के लोटे में जल और मूसल लेकर जाती हैं, और आम्र-पल्लव से उस पर जल छींटकर यह कहती हुई उसके माथे पर मूसल घुमाती हैं कि "यदि लालच करोगे, चोरी करोगे, तो इसी से पीटे जाओगे।" यह मानो उससे कहती हैं। वस्तुतः उससे उसकी "परिछन" करती हैं।

इधर आँगन में प्रथम बार पहुँचने पर स्त्रियाँ उसके ललाट में अक्षत और दधि से तिलक करके उसके माथे के चारो ओर लोढ़ा घुमाती हैं, और यह "परिछन" कहलाती है।

छोटा नागपुर की जंगली जातियों में महाजनों के बिढोड़ में "डलि-साखी" की विधि, कुछ विभिन्नता के साथ उसी रीति से संपन्न की जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन लोगों में वर अपनी माता और अपने "टाँढ़ा"—वास-स्थान की नारियों के साथ बड़े बहनोई की गोद में कन्या की बस्ती की ओर जाता है। स्त्रियाँ एक लोटा या कलश में जल, दो पत्तल और कई दोने, जिनमें पृथक्-पृथक् गुड़, चौरीठा, सेंदुर और नारा रहता है, लेकर वर को किसी आम के पेड़ के पास ले जाती हैं। वर दाहने हाथ की कनिष्ठा से पेड़ के धड़ पर सेंदुर का टीका करता है। उसकी कनिष्ठा पादप ही पर रहती है, जब कि उस दल की कोई नारी नारे की बत्ती को सेंदुर के तिलक के ठीक नीचे पाँच बार लपेट देती है। तब कोई छड़ी या लाठी से मारकर आम का पल्लव या टहनी तोड़ लाता है। उनमें से कई टहनियाँ वर को दी जाती हैं, जो उन्हें कुछ चबाकर अपनी मा को दे देता है। वह उन चबाए पत्तों या टहनियों में गुड़ मिलाकर उन्हें निगल जाती है। यह विधि पाँच बार की जाती है।

कन्या के पिता के द्वार पर बारात पहुँचने पर तीन या पाँच स्त्रियाँ एक नए दोने में पिसी हुई हल्दी और मशाल लिए वर की "अर्चा-पर्चा" (स्वागत) के निमित्त आती हैं। वे बारी-बारी करके जलती हुई मशाल बाएँ हाथ में लिए वर के सम्मुख खड़ी होकर दाहने हाथ से उसकी कनपट्टियों में हल्दी लगाती हैं। तब वर अपने दाहने हाथ से उनकी कनपट्टियों में हल्दी लगाता है। इसके अनंतर मशालें फेंक दी जाती हैं।

तत्पश्चात् किसी समीप की नदी, पोखरे या झरने से कुछ विधि संपन्न कर दो लड़कियाँ दो घड़ा जल लाती हैं, और उन घड़ों में कुछ आम्र-टहनियों को डुबोकर उनसे वर के सारे गात्र पर जल छींटती हैं। उसके बाद वर अपने दल के किसी आदमी के लाए हुए जलघट में एक-दो टहनियाँ डुबोकर उन पर छींटे डालता है।

कन्या की "डलि-साखी" विधि संपन्न करने में कन्या की माता अपनी पुत्री तथा अन्य कतिपय स्त्रियों के संग किसी आम के वृक्ष के निकट जाती है। कन्या उन नारियों में से किसी की गोद में जाती है। परंतु परमावश्यक बात यह है कि वह पेड़ वर के वास-स्थान की ओर न हो। यदि ऐसा पेड़ न मिले, तो उचित दिशा में आम की एक शाखा भूमि में गाड़कर वर की "डलि-साखी" विधि के समान विधि की जाती है।

इस जाति की विवाह-संबंधी अन्य रस्मों में भी आम का वृक्ष और पल्लव-टहनियाँ काम में लाई जाती हैं, जिनका वर्णन विस्तार-भय से नहीं किया जाता।

मानभूमि-ज़िले में रहनेवाली भूमिज-जाति में भी "आम-विवाह" होता है, जो उपर्युक्त "डलि-साखी" के ही समान है।

कन्या के घर जाने के पूर्व वर अपनी माता के साथ जाकर किसी आम के पेड़ के नीचे बैठता है। तब उस पर घोले हुए चौरीठे और सेंदुर से रेखाएँ की जाती हैं। फिर उस पेड़ से एक टहनी तोड़कर और उसे अपने होठों से छुलाकर वह उसे अपनी माता को दे देता है। वह उसे कुछ चबाकर फेंक देती है। पूर्वोक्त जातियों की माता की तरह वह उसमें गुड़ मिलाकर निगल नहीं जाती।

इन लोगों में वर यात्री आने पर असल विवाह के पहले पूर्वोक्त रीति से कन्या का भी "आम-विवाह" किया जाता है।

संताल-जाति में न तो "डलि-साखी" विधि होती है, और न "आम-विवाह"। किंतु इन लोगों के विवाह-कार्य में और असल विवाह के पहले एक रस्म में आम के पल्लवों का व्यवहार होता है। इस जाति के वर और कन्या, दोनो के आँगनों में मंडप रचे जाते हैं, और आम के पल्लवों की झालरों से सजे जाते हैं। गलियों से उनके घरों में प्रवेश के द्वार भी पल्लवों के गजरों से सजाए जाते हैं। गलियों में तीन स्थानों पर। इस पार से उस पार तक, ऊपर-ही-ऊपर, पल्लवों की बंदनवारें टाँगी जाती हैं।

संताल की दुलहिन एक नए और चौड़े टोकरे में बैठती है। वाहकगण उसे उठाकर गली में उस स्थान पर ले जाते हैं, जहाँ दूल्हा अपने बहनोई या मामा के कंधे पर दोनो ओर पैर फैलाए सवार उसके आगमन की प्रतीक्षा करता रहता है। टोकरे को वर की उँचाई तक ऊपर उठाते हैं। तब आम की टहनियों से दोनो दोनो पर तीन बार पानी छींटते हैं।

हमने इसी वर्ष अपने पोते के विवाह में बनारस में भी कलशे में पल्लव रखने और विवाह की रीतियों के समय पल्लव से पानी छिड़कने की चाल देखी है।

बंगाल के वीरभूमि-ज़िले के सदर मुकाम सिउड़ी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(Suri) से एक मील उत्तर तिलपाड़ा-ग्राम में मिर्ज़ापुर ज़िले के कांतित-ग्राम के कोई व्रजकिशोरलाल जा बसे थे। उनके वंश में हमारे पुत्र का विवाह हुआ है, और उस ज़िले के दो-तीन गाँवों में युक्त-प्रांत तथा बिहार के अन्य स्थानों से जाकर बसे हुए लोगों के वंशधर विद्यमान हैं। उन लोगों के यहाँ भी कलशों में पल्लव रखने, पल्लवों से मार्जन करने और गात्र-हरिद्रा में पल्लव से हल्दी चढ़ाने की रीतियाँ देखने में आई हैं। बंगाली कायस्थों से पार्थक्य सूचनार्थ इन लोगों के नामों के साथ "लाला"-शब्द लगाया जाता है।

यहाँ की सभ्य तथा असभ्य जातियों के विवाह तथा अन्यान्य कार्यों में आम्र-पल्लवों का इतना व्यवहार देख आश्चर्य हो सकता है। कहते हैं, पोथियों में पंच-पल्लव (आम, जामुन, पलास, वट और पाकर के पल्लवों) का विधान कहा गया है। अन्य पल्लवों के अभाव में इसी का प्रचार हो गया है। पलास के पेड़ सर्वत्र प्राप्त न हों, किंतु शेष चारो तो नगर, पुर, ग्राम और विशेषतः देहातों में भी सब जगह देखे और पाए जाते हैं।

श्रीमान् मित्र महोदय ने दो कारणों का अनुमान किया है और उनकी पुष्टि में प्रचुर प्रमाण भी दिए हैं। किंतु उन पर हमारा मन अभी पूरा नहीं टिकता। संभव है, वे ठीक हों।

इस समय हम इसके कारण के विचार और संधान के झमेले में न पड़कर इस लेख को यहीं समाप्त करेंगे। अवकाश होने से इसकी विवेचना में कभी आगे प्रवृत्त होंगे। रसाल सरस सुमिष्ठ फलदायक है। विवाह-संबंधी भी ऐसा ही सिद्ध हो, कदाचित् इस भावना से ही लोग इस पर इतने मुग्ध हुए हैं।

शिवनंदनसहाय

× × ×

३. कलेजे के टुकड़े !

(१)

इधर न आओ, तड़प रहा हूँ, ऐ अतीत की घड़ियाँ !
इधर न आओ, छिन्न पड़ी हैं प्राणों की पंखड़ियाँ !
मलिन-विषाद-तमी-में पीड़ित जीवन को खोने दो !
इधर न आओ, रोता हूँ, रोको न, आज रोने दो !
तीखी तिरस्क्रिया मिलती है, बेचारे हारे को !
इधर न आओ, खोज रहा हूँ आँसू में प्यारे को !

(२)

अरे ! क्या कहा, टूटेंगे अब इस वीणा के तार !
लौटेगा आकाश-धूल में मूर्च्छित स्वर-संसार !
इन फूलों में अब न रहेगा सौरभ, ये रोवेंगे !
आह ! निरंतर तड़पेगा, प्राणों का पीड़ित प्यार !
काली रात ! आ रही है जहरीली काली रात !
रे प्रभात ! कब तेरे उर में होगा पुनः प्रभात !

(३)

इस समाधि की राखों में उन्माद किसी का सोया है !
कितनी बार यहाँ आकर बेज़ार किसी ने रोया है !
तड़प चुका है थाम कलेजा, इन चरणों में कितनी बार !
अरे, यहीं आकर अपना सर्वस्व किसी ने खोया है !
तू है रूप-किशोर और मैं तो तेरा मतवाला हूँ !
इस समाधि-मंदिर का मैं ही अलख जगानेवाला हूँ !

केदारनाथ मिश्र "प्रभात"

× × ×

४. कोहेनूर

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि संसार में प्राप्त सब के बीच कोहेनूर, अर्थात् "प्रभा का पर्वत", सबसे उत्तम और बहुमूल्य है। इसको प्राप्ति का समय अतीत के विस्तीर्ण गर्भ में विलीन है, और उसका पता लगाना मानव-शक्ति के बहिर्गत है। अनेकों किंवदंतियों से पता चलता है कि पाँच हज़ार वर्ष पूर्व कोहेनूर गोदावरी नदी में मिला था। पर विद्वानों का कथन है कि ईसा के ५७ वर्ष पूर्व इसका कुछ भी चिह्न नहीं मिलता। केवल सुंदर और निर्दोष होने के कारण ही कोहेनूर का सम्मान नहीं है, वरन् हिंदुओं का विश्वास है कि यह एक ऐंद्रजालिक शिला है, और एक दुष्ट दैत्य इसका स्वामी है, वह इसी में निवास करता है। जब विक्रमादित्य के वंशजों ने इसे खो दिया, तब इस पर उस दानव ने अपना सिक्का जमा लिया, और इसे अपना शयनगृह बना डाला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इतिहास में इसका पता पहलेपहल १३०० ई० में लगा। अलाउद्दीन ने, जिसे लोग प्राचीन काल का "अलादीन" भी मानते हैं, इस पर अपना अधिकार जमा लिया, और कोहेनूर राजवंश के हाथों में आ गया। लोग कहते हैं, यह अलाउद्दीन बड़ा शक्तिशाली था। इसी ने वर्तमान दिल्ली की नींव डाली थी। सन् १५२६ ई० में दिल्ली, कोहेनूर तथा अलाउद्दीन का राज-वंश, सब-के-सब मुग़ल-राज्य-स्थापक बाबर के हाथों में आ गए। उस समय के इतिहास से ज्ञात होता है कि कोहेनूर पराजित मालव के कोषागार में प्राप्त हुआ था। इसके पश्चात् फ्रांसीसी यात्री टवर्नियर (Tavernier) ने इसे औरंगज़ेब के यहाँ देखा था। उसके कथनानुसार इसका वज़न ७९३ करात था। दिल्ली-विजयी नादिर-शाह ने अपने चातुर्य से कोहेनूर को वर्तमान मुग़ल-सम्राट् मोहम्मद शाह के हाथों से ले लिया। तबसे यह अफ़ग़ान-वंश में उत्पन्न शाह शुजा-उल-मुल्क के अधिकार में चला गया।

१७वीं शताब्दि के प्रारंभ में दोस्तमोहम्मद ने काबुल-नरेश शाह शुजा को अपने राज्य से निकाल भगाया। बेचारा शाह शुजा आश्रय-हीन होकर पंजाब-केसरी रणजीतसिंह की शरण में चला आया। आतिथ्य-सत्कार के बदले महाराज रणजीतसिंह ने कोहेनूर लेने की इच्छा प्रकट की। शाह शुजा ने कोहेनूर को छिपाने की अनेकों चेष्टाएँ कीं, पहले तो उनके पास एक बृहत् पुष्पराग (Topaz) भेज दिया। पर महाराज को धोका देना सहज न था। वह उसकी चालाकी ताड़ गए, और अंत में उन्होंने कोहेनूर ले लिया। महाराज को कोहेनूर की अमानुषिक शक्तियों पर दृढ़ विश्वास था। अतएव उन्होंने इस पर ज़र का काम कराके ताबीज़ बना डाला। इस पर उनका बड़ा ध्यान था। इसकी रक्षा के लिये वह सदैव तैयार रहते थे। रणजीत-सिंह की इच्छा हुई कि कोहेनूर को श्रीमत् जगन्नाथ स्वामी के मंदिर में अर्पण कर इसकी अलौकिक शक्तियों का नाश किया जाय। इस प्रस्ताव से महाराज के संबंधी बहुत असंतुष्ट हुए, और उन्होंने इसका घोर विरोध किया। जब पंजाब ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला दिया गया, तब कोहेनूर भी लाहौर के रेज़िडेंट Sir John Login के हाथों में आ गया। लोजिन साहब के जीवन-वृत्तांत से ज्ञात होता है कि पंजाब के कोषागार में अनेकों बहुमूल्य रत्न रस्सी में बटन की तरह बाँधे हुए पाए गए। पर कोहेनूर सदा संदूक़ में बंद रहता था। उस पर पहरे का प्रबंध था। ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से ३ मई, १८४९ ई० को कोहेनूर महारानी विक्टोरिया को उपहार-स्वरूप देने के निमित्त लोजिन साहब को मिला। उस समय आपने अपनी पत्नी को लिखा था—"Sweet heart! The Koh-i-noor is far beyond what I imagine." जब लोजिन साहब ने विलायत पहुँचाने के लिये कोहेनूर लॉर्ड डलहौसी को सौंप दिया, तब उन्हें इसके उत्तरदायित्व से छुट्टी मिली। लंबी यात्रा में इसकी रक्षा के लिये अनेकों प्रबंध किए गए। लंडा डलहौसी नामक चमड़े के एक छोटे थैले में पहले कोहेनूर रक्खा गया। यह थैला लाट साहब के कमरबंद के नीचे छिपाई गई, और तब यह कमरबंद लोहे की चेन के द्वारा उनके गले में लटका दिया गया। "मेडिया"-नामक जहाज़ पर यह रत्न इसी तरह कई मासों तक लाट साहब के शरीर में बँधा रहा। जब यात्रा का अंत हुआ, तब लाट साहब के आनंद की सीमा न रही। आपने लिखा—"My stars! what a relief to get rid of it at the end of the voyage."

३ जून, १८५४ ई० को कोहेनूर महारानी विक्टोरिया को उपहार-स्वरूप दिया गया। १८६१ ई० में कोहेनूर लंडन की महा-प्रदर्शिनी में सर्वसाधारण को दिखलाया गया। उस समय यह ख़ूब साफ़ नहीं किया गया था। अतएव अत्यंत प्रभामय नहीं देख पड़ता था। इसके परिष्करण से सौंदर्य-वृद्धि तो हुई, पर इससे कोहेनूर के ऐतिहासिक माहात्म्य का ह्रास हो गया। सन् १८६२ ई० में Messrs Garrards-नामक कंपनी ने इसके परिष्कार का ठेका लिया, और इसके परिष्करण के लिये Voorsanger-नामक एक विख्यात परिष्कारक को नियुक्त किया। ३१ दिन में कोहेनूर परिष्कृत हो गया, और इसमें ८००० पौंड का व्यय हुआ।

सिख-जाति के राजकुमार दिलीपसिंह की उत्कट लालसा थी कि मैं ही कोहेनूर अपने हाथों से महारानी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को अर्पण करूँ। लेडी लोजिन की चेष्टा से कोहेनूर दिलीपसिंह को मिला, और उन्होंने फिर उसे महारानी को सौंप दिया। जब कोहेनूर दिलीपसिंह के हाथों में दिया गया, तब वह विषण्ण-वदन से आधे घंटे तक उसकी ओर देखते रहे। अंत में उन्होंने ठंडी साँस ले कोहेनूर रानी के हाथों में रखकर कहा—"It is to me, Madam; the greatest pleasure to have the opportunity as a loyal subject, of myself tendering to my sovereign the Koh-i-noor." इस समय कोहेनूर ब्रिटिश-नरेश के अन्य मुकुट-मणियों के संग लंदन-टॉवर में रक्खा हुआ है। समय का फेर है, दुर्भाग्य-वश यह रत्न भारत से लूटा गया। आज लंदन-महानगरी कोहेनूर को अपने गर्भ में रखकर इसकी अपूर्व श्री को देख हर्ष से मुसकिरा रही है।

श्रीराजेश्वरीप्रसाद

× × ×

५. "मनसुखा" को उत्तर

कानपुर के हाल-पैदा-लाल "मनसुखा" पत्र की चौथी संख्या में श्रीयुत रमाशंकर अवस्थी उर्फ़ "मनसुखा" महाशय ने अपने क़लम की नोक बड़ी बेदर्दी से मेरे हृदय में चुभो दी है। कारण आपकी समझ में ग़ालिब के एक अर्थ का मैंने बहुत बड़ा अनर्थ कर डाला है।

गत कार्त्तिक की "सुधा" में मेरा एक लेख निकला है, मुसलमान और हिंदू-कवियों में विचार-साम्य। उस में एक जगह है—

"तेरे सर्वे क़ामत से एक क़दे आदम
क़यामत के फ़ितने को कम देखते हैं।"

मैंने इसके नेगेटिव को अफ़र्मेटिव (ना को हाँ) कर लिया था। भावार्थ के तौर पर, अपने मज़मून पर चलते हुए, लिखा था, महाकवि ग़ालिब क़यामत को एक आदमी-भर लंबी बतलाते हैं। "मनसुखा" महोदय लिखते हैं, "शायर का मतलब यह है कि क़यामत का फ़ितना (उपद्रव) तेरे (माशूक़ के) सर्व (वृक्ष) ऐसे डील से एक आदमी की लंबाई-भर छोटा है।" तो कितना लंबा हुआ? अगर आदमी की लंबाई-भर छोटा है, तो आदमी ही भर लंबा नहीं?

मैंने भावार्थ लिया था। उस तरह अर्थ सीधा हो जाता है। क़यामत और फ़ितना परस्पर संबद्ध हैं जैसे आग और उसकी गर्मी। "आदमी-भर लंबी" द्वारा क़यामत ही माशूक़ में सीमित होती है, आनी माशूक़ को लंबाई में क़यामत नप जाती है—उस अलंकारोक्ति का यही मतलब है। क़यामत ही माशूक़ की चहल-पहल है; इसलिये मैंने क़यामत को प्रधान माना इसी भाव का साम्य सूरदास की पंक्तियों में इसके बाद ही दिखलाया गया है। यह भी एक उद्देश था।

अब आपका भाष्य देखिए—"क़यामत माशूक़ की तरह मूर्तिमान नहीं, इसलिये उसका एक आदमी की ऊँचाई-भर छोटा होना निर्विवाद है।" कैसा तर्क! आकाश माशूक़ की तरह मूर्तिमान नहीं, इसलिये उसका एक आदमी की उचाई-भर छोटा होना निर्विवाद होगा?—हवा माशूक़ की तरह मूर्तिमान नहीं, इसलिये उसका एक आदमी की ऊँचाई-भर छोटा होना निर्विवाद है?—क्यों, कुछ सूझता है?—अरे अवस्थीजी, आप और फ़िलासफ़ी! आपको किसी बहाने मेरी तरफ़ भूँकना था, सो भूँक चुके। इस तरह आप दूसरों को प्रसन्न कर सकते हों, तो कीजिए, पर मैं कहूँगा, कुछ काटना भी सीखिए, आपने अपने चुभीले शब्दों का भांडार बिलकुल ख़ाली कर दिया है, और क़ुसूर मेरा कुछ भी नहीं; पर ख़ैर, मैं मुर्ग़ियाँ नहीं हलाल करता फिरता। यहाँ इतना ही कहूँगा कि वह लेख आप-जैसों के लिये नहीं लिखा गया, मैं भैंस के आगे बीन नहीं बजाता। आप पर मैंने कई सफ़े रँग डाले थे, पर आप बेचारे! मेरे अंतर के आईने में जितनी आग है, आप में सहने की उतनी ताब है? मैं अगर हिंदी के मैदान से खदेड़ा हुआ मनुष्य हूँ, तो राष्ट्रभाषा के स्वयंवर के समय प्रादेशिक महारथियों के मुक़ाबले में अक्षय शब्दास्त्र-शिक्षा के बल पर मत्स्य-लक्ष्य का भेद करनेवाला दूसरा और है कौन?

"निराला"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

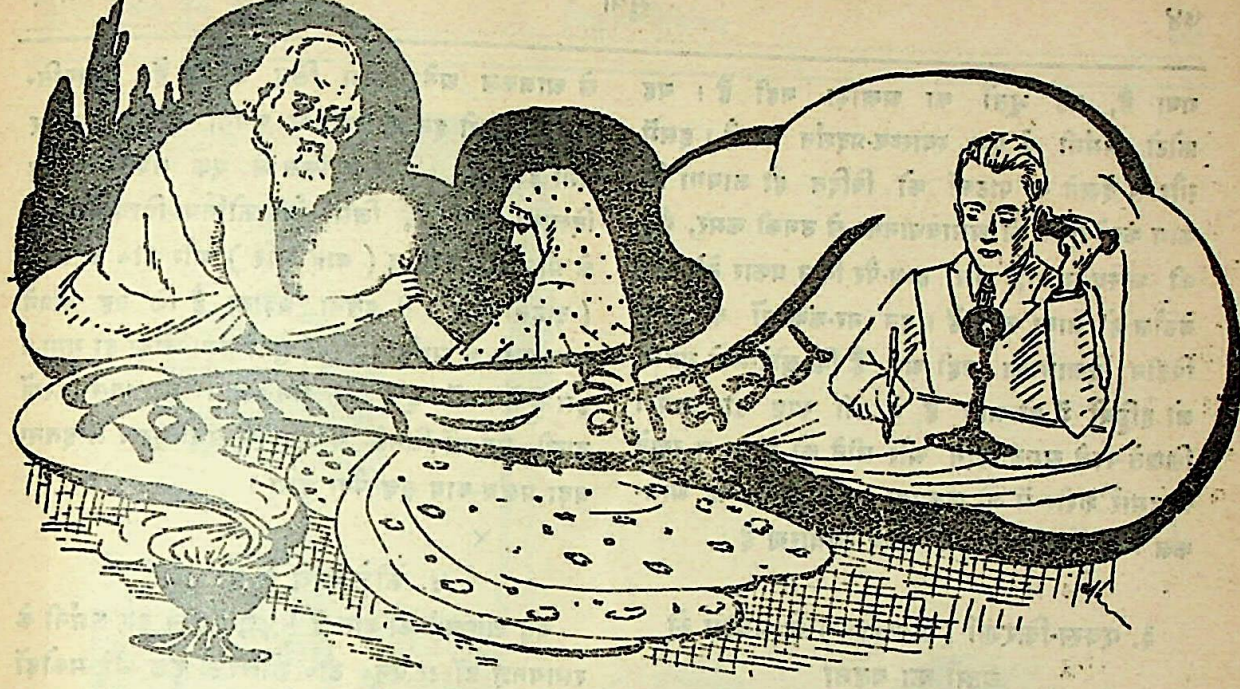

१. आपसे नम रहनेवाली सड़कें

मिशिगन के मि० ए० एल्० बरिज ने सड़कों पर बार-बार पानी छिड़कने की क़वाहत को दूर करने का एक सरल और अत्यंत सुलभ तरीक़ा निकाला है। सड़क पीटते समय यदि उसके ऊपर के सतह की मिट्टी में कैल्शियम-क्लोराइड-नामक पदार्थ मिला दिया जाया करे, तो सारी मुसीबतें—धूल इत्यादिक उड़ने की—रफ़ा हो जायँ। कैल्शियम-क्लोराइड में हवा का जल-भाग सोखकर स्वतः गीले हो जाने की बड़ी प्रबल शक्ति है। इस पदार्थ का यह गुण वैज्ञानिकों को अर्से से मालूम है, और इसका प्रयोग जल सोखने के लिये प्रायः प्रयोगशालाओं में होता है। डेसिकेटरों में इस पदार्थ का प्रयोग आधुनिक रसायन के प्रारंभिक विद्यार्थी के लिये कोई नई बात नहीं; किंतु कैल्शियम-क्लोराइड (Calcium Chloride) का इतना लाभकारी प्रयोग अब तक किसी के विचार में न आया था। इसके प्रयोग से गर्मी में सड़कों के ज़मीन के साथ-साथ फटने का भी भय नहीं रहता, तथा साथ ही म्युनिसिपैलिटियों को पानी छिड़कने की मोटर-गाड़ी रखने व पेट्रोल ख़र्च करने की ज़रूरत न रहेगी। एक मील की लंबी सड़क पर कुटाई करने के लिये छः टन कैल्शियम-क्लोराइड काफ़ी होगा। यदि अपने देश की म्युनिसिपैलिटियाँ इसका प्रयोग आरंभ कर दें, तो उनका तो पैसा बचेगा ही, साथ ही मोटरों की धूल से जिन राहगीरों का नाकों दम हो जाता है, उनका बड़ा कल्याण होगा।

× × ×

२. दैनिक कामों में शरीर को बेडौल होने से बचाना चाहिए

नीचे दिए हुए चित्र में जो कारख़ाना दिखाया

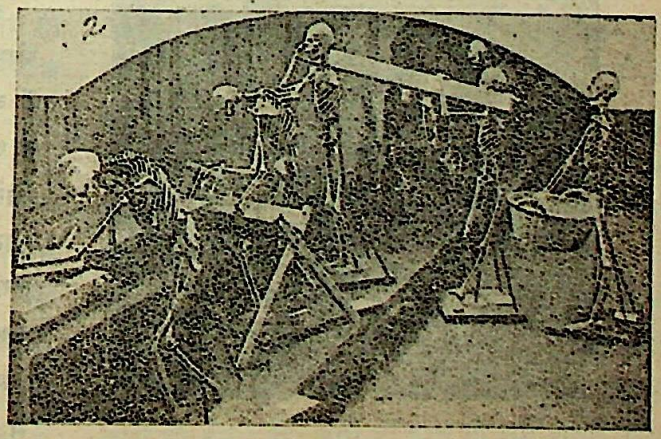

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गया है, वह भूतों का अखाड़ा नहीं है। यह फ़ोटो जर्मनी के एक स्वास्थ्य-प्रदर्शन का है। इसमें ग़ौर से देखने पर पाठकों को विदित हो जायगा कि काम करनेवालों की असावधानता से उनकी कमर, रीढ़ की अस्थि-माला, और हाथ-पैर किस प्रकार टेढ़े और बेडौल हो जाया करते हैं। इन नर-कंकालों को चर्म-विहीन दिखाने का यही अर्थ है कि छोटे-मोटे नुक़्स, जो हड्डियों में हो जाते हैं, वे भी स्पष्ट हो जायँ। लिखते-पढ़ते समय गर्दन और सीने को सीधा न रखने से हमारे शरीर में जो कुरूपता आ जाती है, वह आज-कल विद्यार्थि-समुदाय के लिये साधारण है।

× × ×

३. एक्स-किरणों (x-rays) के प्रयोग से वृक्षों का बढ़ना

एक्स-किरणों के प्रयोग ने डॉक्टरों को सर्जरी के काम में तथा उखड़ी हुई हड्डियों के बैठाने में जो सहायता की है, वह तो पुरानी बात है। इन किरणों से आजकल अनेक काम लिए जा रहे हैं। वनस्पति-विज्ञान में भी इन किरणों ने अपना दख़ल आख़िर जमा ही लिया। ऊपर के चित्र में एक संवाकू का पेड़ दिखाया गया है, जिसे कैलिफ़ोर्निया-विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर गुडस्पीड (बाईं ओर) और प्रो० ओसस्त (दाहनी ओर) ने इतना बढ़ाया है कि वह अपने आस-पास के साथियों से कई गुना लंबा-चौड़ा हो गया। इस प्रयोग में वृक्ष की जननेंद्रियों पर एक्स-किरणें डाली गई थीं जिनके संयोग से संकलि-रूप में इतना बड़ा प्रलंब-काय वृक्ष पैदा हुआ।

एक्स-किरणों के प्रयोग से बढ़े हुए वृक्ष

× × ×

४. कीड़े ताँबे के हो गए

बड़े आश्चर्य की बात है! कुछ महीने हुए जर्मनी के रसायनज्ञ डॉक्टर एन्० डी० ज़ेलिंस्की कुछ कीड़े-मकोड़ों का रासायनिक विश्लेषण कर रहे थे। उन्होंने कीड़ों को ताम्र-भस्म (कॉपर-ऑक्साइड) के भीतर ढककर एक प्लैटिनम की कटोरी में रक्खा, और कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस का आवरण देकर कटोरी को गरम किया। थोड़ी देर गरम करने के बाद जो रसायनज्ञ महाशय ने कटोरी में रक्खे हुए कीड़ों को देखा, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। वे सब कीड़े ताँबे के हो गए थे, और उन पर सारे क़ुदरती बारीक निशान ज्यों-के-त्यों बने थे। इस प्रयोग से लाभ उठाकर म्यूज़ियम के कीड़ों को बड़ी सुगमता-पूर्वक सुरक्षित रक्खा जा सकता है।

× × ×

५. चुंबक-शक्ति का उपयोग

लोह-चुंबक की आकर्षण-शक्ति का प्रयोग वैज्ञानिक संसार में बिजली के डायनामो बनाने के तथा जहाज़ में कंपास के अतिरिक्त जो कुछ हो रहा था, वह अधिक न था। अभी हाल में पुराने जहाज़ों को तोड़ने के लिये लोहे के गोले उँचाई से छोड़ने, रेलों में लोहे का सामान भरने आदि का भी काम चुंबक से लिया जाने लगा है। प्रस्तुत दो चित्रों में से ऊपरवाले में एक बड़ा चुंबक कई मन के वज़न की लोहे की छड़ें तिनकों के समान उठाकर गाड़ी में भरने जा रहा है। दूसरे चित्र में शिकागो के एक हार्टसो नाम के डॉक्टर महाशय अपनी ईजाद की हुई "मैगनेटिक पेंसिल" के द्वारा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

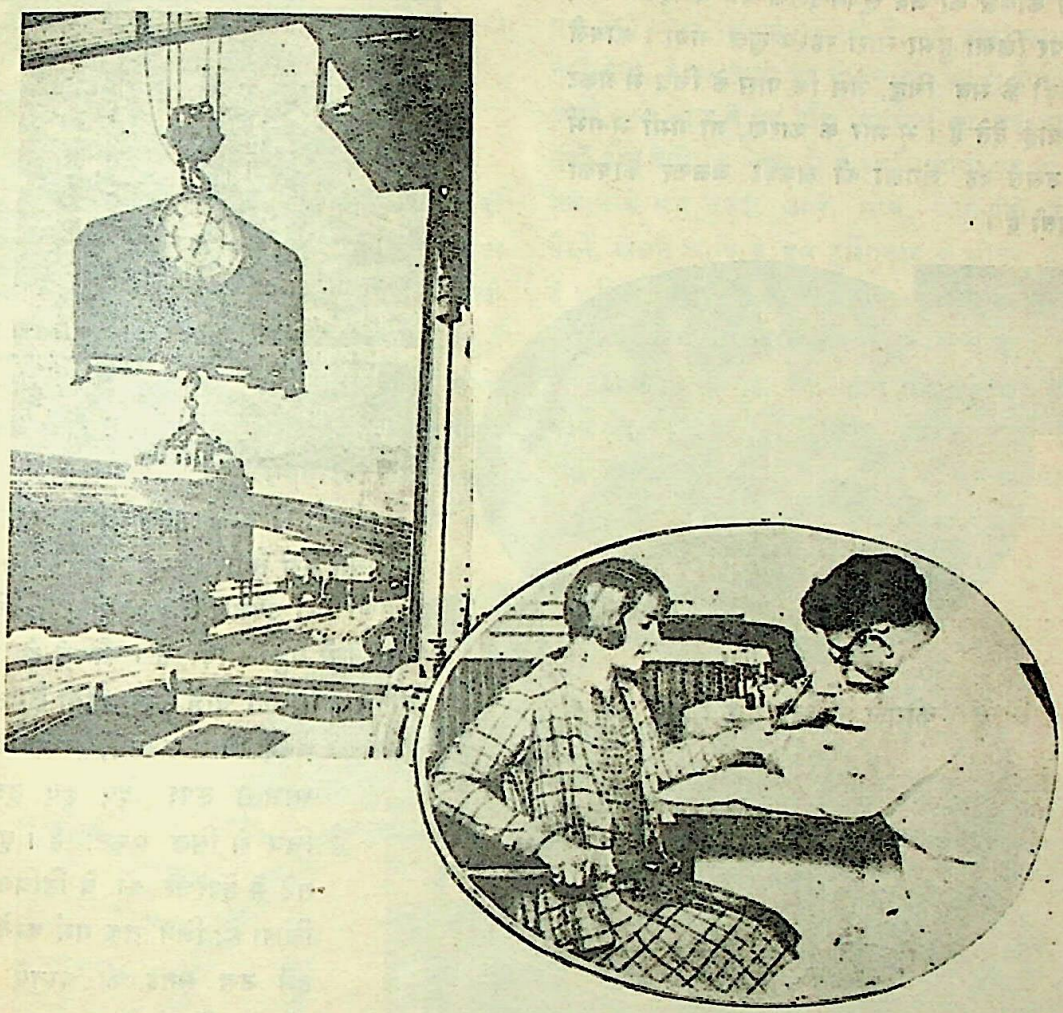

किसी मज़दूरिन के हाथ में घुसी हुई लोहे की कील विना ऑपरेशन किए, केवल चुंबकाकर्षण-शक्ति की सहायता से, निकाल रहे हैं। इस चित्र में रोगी की उत्सुकता, डॉक्टर महाशय की गंभीरता और साथ ही दोनो की एकाग्रता दर्शनीय है। चुंबक की पेंसिल बिलकुल साधारण पेंसिलों-जैसी है।

× × ×

६. कोयले का व्यापक उपयोग

हमारे देश में कोयला एक निहायत नाचीज़ पदार्थ समझा जाता है, इसीलिये 'कोयलों पर मुहर' की कहावत मशहूर है। अभी तक कोयला सिर्फ़ जलाने या स्याही बनाने के काम में आता था; परंतु उसके द्वारा अभी हाल में बीसों चीज़ें ऐसी बनने लगी हैं, जिससे जान पड़ता है, सचमुच हमें कोयलों पर मुहर लगाकर उन्हें सुरक्षित रखना पड़ेगा। जिस कोयले को हम स्टीम-एंजिनों में जलता हुआ देखते हैं, और जिसे पत्थर का कोयला कहते हैं, वह वास्तव में पत्थर का कोयला नहीं है। वह भी लकड़ी का ही कोयला है। पुराने समय में कभी भूचाल के कारण जंगलों के ज़मीन के नीचे दब जाने के कारण यह (खानों में) ज़मीन के भीतर मिलता है। पृथ्वी व मिट्टी आदि का इतना अधिक भार इतने वर्षों में इसे इतना संपृक्त बना देता है कि यह पत्थर का कोयला मालूम होता है।

इस कोयले को जब हम जलाते हैं, तो जो धुआँ बाहर निकलता है, वह भी अनेक बहुमूल्य वस्तुओं के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। इससे धन का लाभ तो होगा ही, साथ ही वायु भी शुद्ध रहेगी, जिस से जनता में बीमारियाँ न फैलने पाएँगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस कोयले को जब सूक्ष्म-दर्शक यंत्र में देखा गया, तो ऊपर लिखा हुआ सारा रहस्य खुल गया। कोयले में लकड़ी के सब चिह्न, जैसे कि पास के चित्र में प्रकट हैं, दिखाई देते हैं। भू-भार के कारण, जो गर्मी भू-गर्भ में है, उससे वह जंगलों की लकड़ी जलकर कोयला बन जाती है।

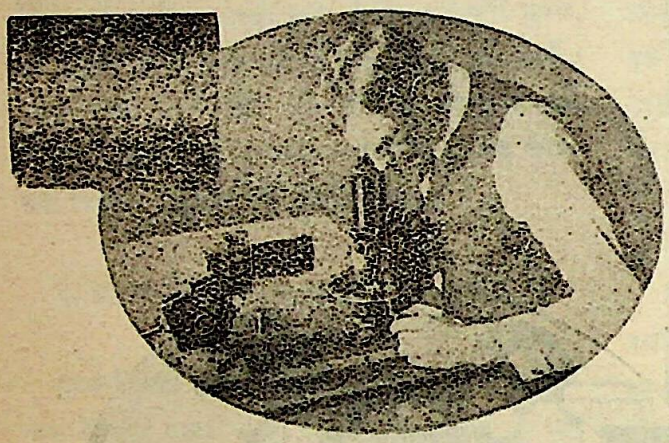

कोयले में लकड़ी के चिह्न

कोयले से बननेवाले विभिन्न पदार्थ के कृत्रिम तेल तैयार किए जा सकते हैं। जिन वस्तुओं का उल्लेख मैं कर चुका हूँ, वे तो वास्तव में बहुत थोड़ी हैं। कोयले से इनके अतिरिक्त जितनी चीज़ें तैयार होती हैं, उनकी संख्या सौ से ऊपर है, इसका किंचित् आभास ऊपर दिए हुए वृक्ष के चित्र से मिल सकता है। वृक्ष के तने में टेंपरेचर की वे डिग्रियाँ भी लिखी हैं, जिन तक गर्म करने पर हमें उस सतह की वस्तुएँ मिल सकती हैं। कोयले का इतना अधिक उपयोग देखकर दाँतों-तले उँगली दबानी पड़ेगी। रसायनज्ञों ने कोयले से बहुमूल्य "हीरा" तक तो तैयार कर लिया है।

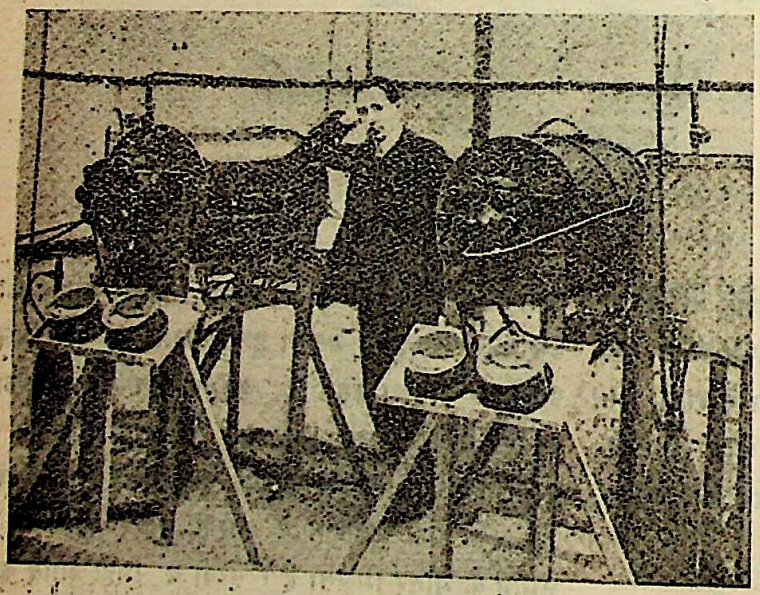

कोयले से विभिन्न पदार्थ बनानेवाली मशीन

ऊपर के चित्र में वह मशीन है, जिसके द्वारा कोयले से शराब, पेट्रोल, नैफ़्थलीन, क्रियाज़ोट, बेंज़ीन, टोलूओल, ज़ाइलोल, अमोनिया व उसके नमक, जो खाद के काम में आते हैं, अनेक प्रकार के रंग, कृत्रिम नील, फ़िनायल, कारबोलिक एसिड और अनेक प्रकार

जिस रबड़ का मोटर-टायरों में इतना अधिक ख़र्च देखकर फ़ोर्ड महाशय ने बहुसंख्यक द्रव्य ख़र्च करके उसकी काश्त के लिये एक जंगल ख़रीद डाला है, वह रबड़ भी तो कोयले से बनना संभव है। मकानों के लिये खपड़े और घोंघी भी कोयला ही देगा। पर फिर भी चिंता का अंत न हो सकेगा; क्योंकि कोयले की खानें, जिनकी संख्या संसार में केवल परिमित है, धड़ाधड़ ख़ाली होती जा रही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। इनके ख़ाली हो जाने पर आदमी का दिमाग़ सुस्त न बैठेगा, जीवन को कृत्रिमता-पूर्ण बनाने की कोई-न-कोई दूसरी सूरत निकल ही आवेगी।

× × ×

७. मोटर-गाड़ी या चलता-फिरता महल

पाश्चात्य देशों में विलासिता की वृद्धि के साथ ही बुद्धि का कितना अधिक उत्कर्ष हुआ है, इसका पता हमें वहाँ के नित्य-नए आधुनिक आविष्कारों को देख-कर मिलता रहता है। मोटर की शक्ति से ऐसी गाड़ियाँ तैयार की गई हैं, जो पृथ्वी, जल और आकाश, तीनों पर समान-रूप से सवारी का काम दें। एक ही गाड़ी पृथ्वी पर मोटर की भाँति दौड़ते-दौड़ते आवश्यकता पड़ने पर आकाश में उड़ सकती है, अथवा सामने नदी या समुद्र पड़ने पर तैर भी सकती है। इस चित्र में एक ऐसी मोटर दिखाई जा रही है, जो तीनों काम तो नहीं देती, केवल पृथ्वी पर ही यात्रा करती है। किंतु अपने इसी काम में वह पाँच यात्रियों को यह मालूम नहीं होने देती कि वे घर में हैं अथवा यात्रा कर रहे हैं। मकान के सब ज़रूरी कमरे, सोने, खाने-पीने, उठने-बैठने, खेलने आदि के इस टूरिंगकार के भीतर मौजूद हैं। चित्र के एक पार्श्व में देखिए, शोफ़र की सीट पर नाश्ते का सब सामान रकाबियों में सजा हुआ रक्खा है। शोफ़र महाशय को खाने-पीने के लिये अपना काम बंद करने की कोई ज़रूरत नहीं; क्योंकि गाड़ी चलाना और खाना-पीना एकसाथ ही हो सकता है।

रामनारायण मिश्र (एम्०एस्-सी०)

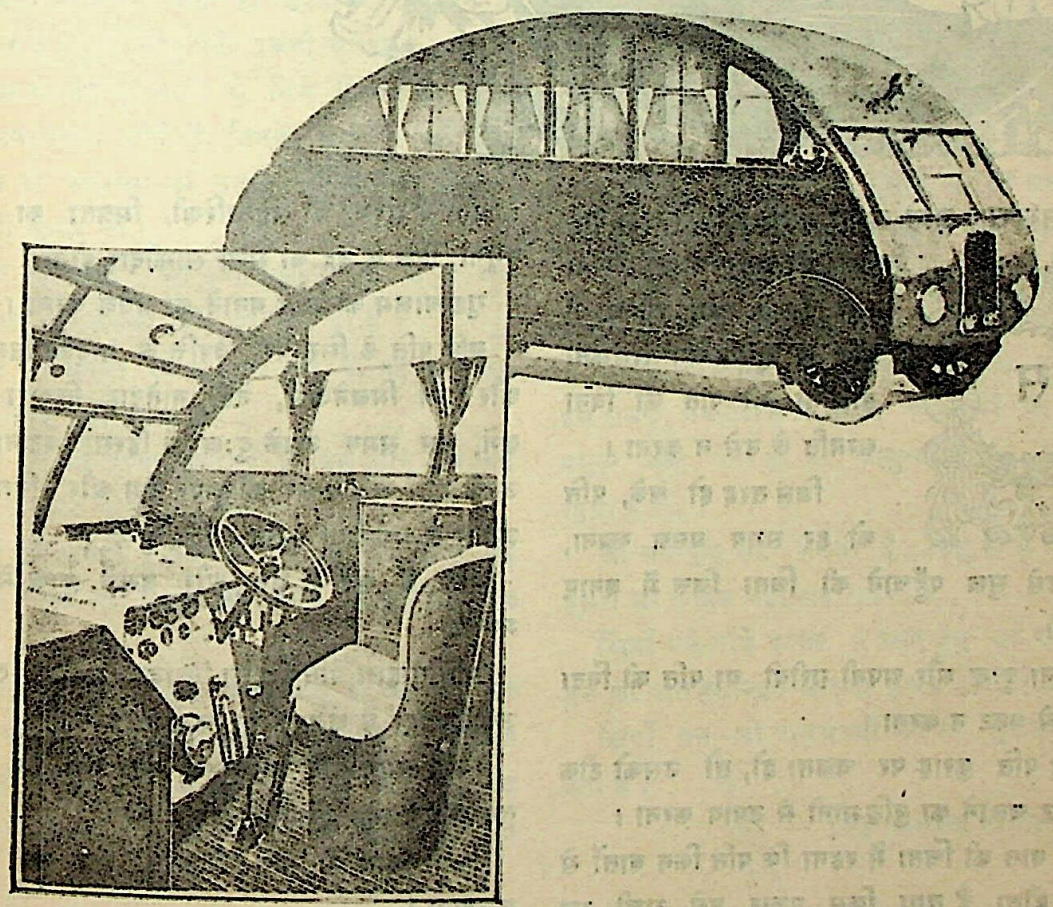

नए प्रकार की विचित्र मोटर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

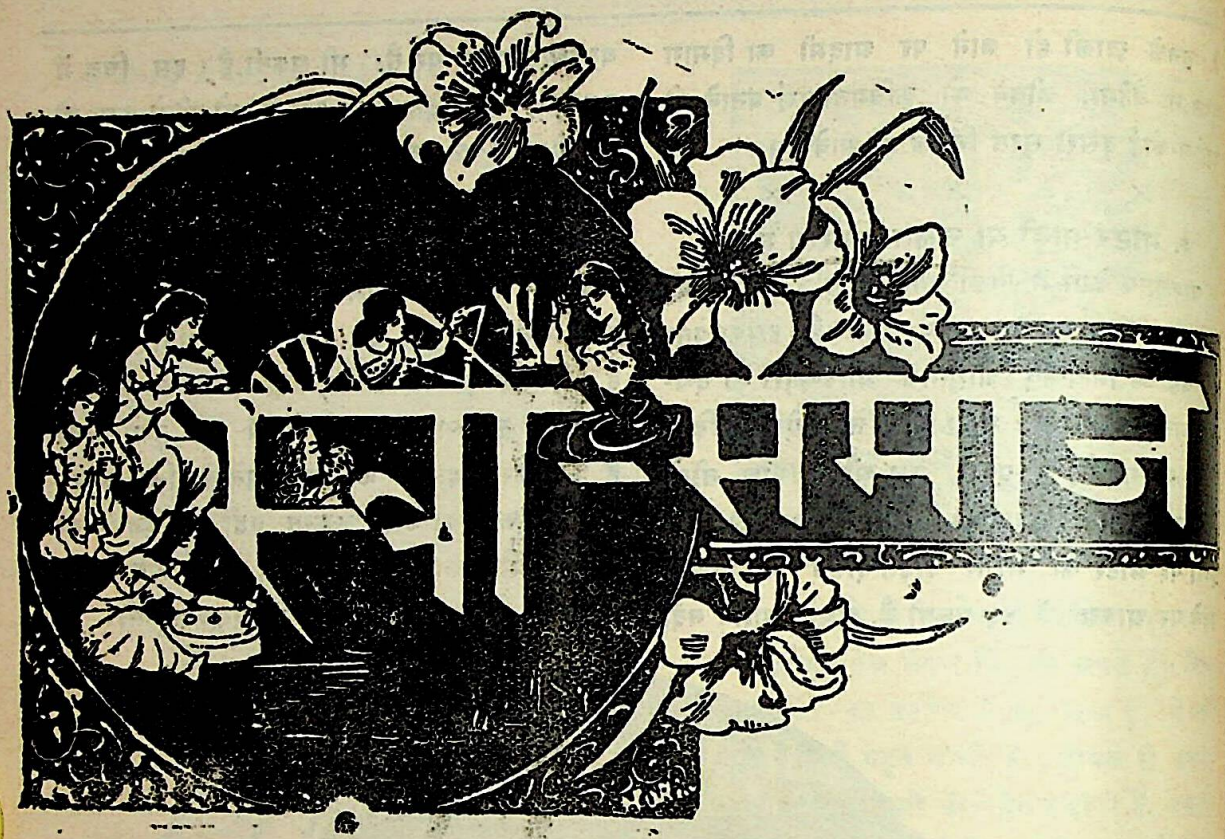

१. ससुराल जाते समय कन्याओं को उपदेश

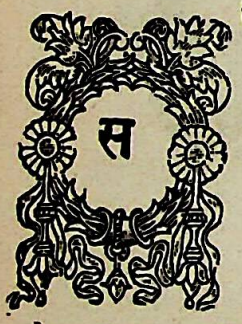

दैव पति की आज्ञा पालन करना और किसी काम को अपनी बुद्धि से तुम उत्तम समझती हो, तो भी पति की बिना सम्मति के उसे न करना।

जिस तरह हो सके, पति को हर समय प्रसन्न रखना, और उसे सुख पहुँचाने की चिंता चित्त में बनाए रखना।

अपना दुःख और अपनी ग़रीबी या पति की निंदा दूसरों से प्रकट न करना।

यदि पति कुराह पर चलता हो, तो उसको ठीक रास्ते पर चलाने का बुद्धिमानी से उपाय करना।

इस बात की चिंता में रहना कि पति किन बातों से प्रसन्न होता है तथा किस प्रकार उसे राज़ी रख सकती हो।

अपनी मधुर वाणी से पति की चिंता और क्रोध को दूर करना।

गृहस्थी का ख़र्च संयम के साथ करना।

पति के हृदय की सहचारिणी, मित्रता का अपूर्व नमूना, दिल के दर्द का सच्चा साझीदार होना।

गृहस्थाश्रम को स्वर्ग बनाने का प्रयत्न करना।

यदि पति के सिर पर विपत्ति के बादल घिर जायँ और सभी मिलनेवाले, नेही, नातेदार किनारा करने लगें, उस समय उसके दुःख में हिस्सा बटाना और उसके मार्ग के अंधकार को अपने प्रेम और पतिव्रत की ज्योति से प्रकाशित करना।

पति के सुख में सुख और उसके दुःख में दुःख मानना।

यदि तुम्हारा पति तुम्हारा निरादर करता हो, तो तुम उसके आदर में भूलकर भी कमी न करना।

किसी समय यदि वह तुमसे स्नेह कम कर दे, तो तुम अधिक स्नेह बढ़ाने का उपाय करना।

किसी बात में पति से कपट, छल तथा चोरी न रखना।

प्राचीन पतिव्रता स्त्रियों के इतिहास अवलोकन कर उनसे सार को ग्रहण करना।

सदा जगत् को सत्यता से, शत्रु को शील से, कृपण को धन से, विद्वज्जनों का विद्या से, मूर्ख को प्रसन्न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से, स्वामी को भक्ति से, क्रोधी को शांति से, कुटुंबी जनों को स्नेह से, दीनों को दान से जीतने अर्थात् वश में करने का उपाय करती रहना।

अपने सास-ससुर की भक्ति-पूर्वक सेवा करना। गृहस्थी के कामों में सास-ससुर की सलाह लेना अत्यंत आवश्यक है। बिना उनकी मरज़ी के कोई काम न करना।

× × ×

२. एक स्त्री के अनुभव

एक नीरव सुस्कान "हाँ" किंतु ज़ोरदार हँसी "नहीं" की सूचक है।

सबसे "नहीं" और पति से "नहीं" का एक ही अर्थ नहीं है।

स्त्रियों को अपने पति को उपहार-स्वरूप देने के लिये कोई-न-कोई वस्तु सदैव रखनी चाहिए।

कुल की मर्यादा रखने के लिये विधवा को शृंगार की आवश्यकता नहीं है, जितनी सदाचार की, किंतु सधवा को सदाचार की उतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी शृंगार की।

स्त्री की "नहीं" भी कभी-कभी "हाँ" के ही अर्थ में आती है। उसकी 'हाँ' तो 'हाँ' ही है।

जो स्त्री अपना स्थान त्याग देती है, वह कभी उस पर लौटकर नहीं आ सकती।

जो स्त्री यह इच्छा रखती है कि उसे लोग देखें, वह विश्वास करने योग्य नहीं है।

जो स्त्री अपनी ज़बान क़ाबू में रख सकती है, वह देवी है। एक बार देवता भी उसके चरणों में मस्तक नवाते हैं।

जिस स्त्री को सादगी पसंद नहीं है, वह तभी तक पतिव्रता रह सकती है, जब तक उसका पति जीवित है। स्त्री के एक ताने से जो काम हो जाता है, वह सारी दुनिया से मिलकर हँसने से भी नहीं हो सकता।

पत्थर को भी मोम बना देनेवाला 'आँसू' नाम का एक बड़ा ज़बरदस्त हथियार स्त्रियों के पास है।

जिस सती स्त्री को उसके सच्चे पति का सच्चा प्रेम प्राप्त हो जाता है, वह स्वर्ग के राज्य को भी ठुकरा सकती है।

स्त्री-शक्ति में दया, क्षमा और सहानुभूति का स्रोत बहा करता है।

स्त्री सदा प्रेम की भूखी रहा करती है।

माता-पिता के वास्तविक जीवन की झलक उनके बच्चों से प्रत्यक्ष-रूप से देखी जा सकती है।

स्त्री एक बार सच्चे दिल से जिसे अपना प्रेम-पात्र बना लेती है, उसके लिये वह सब कुछ त्याग सकती है।

आत्म-हत्या कर लेना स्त्रियों के लिये बहुत ही साधारण बात है।

एक कर्कशा स्त्री सारे कुटुंब के सुख-वैभव को नष्ट कर देती है। एक सुशीला स्त्री नरक को भी स्वर्ग बना देती है।

स्त्री गिरते हुए पुरुष को सुमार्ग पर ला सकती है, और धर्मात्मा पुरुष को नरक के गढ़े में गिरा सकती है।

रोगी की जितनी अच्छी सुश्रूषा स्त्री-जाति कर सकती है, उतना पुरुष नहीं।

विवाह के प्रथम ३-४ वर्ष बड़े महत्व के होते हैं। इस समय नव-दंपति में से जो एक दूसरे पर अपना प्रभुत्व जमा लेता है, वह आयु-पर्यंत उस पर हावी रहता है।

स्त्री सब कुछ सह सकती है; किंतु अपने प्रेमी का दूसरी स्त्री से प्रेम नहीं सह सकती।

स्त्रियाँ थके-माँदे दफ़्तर से आए हुए मर्द को अपने मन की बात समझाने में सदा सफल होती हैं।

स्त्रियाँ वन को राजभवनों से भी सुखमय बना देती हैं।

त्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'नीलकंठ" रूमाल

यह चिड़ियोंवाला रूमाल बहुत ही नवीन वस्तु है। इसको चाहे किसी काम में लाओ। महीन रेशमी धागे से बनाकर रेशमी कपड़े में टाँकने से बच्चों के सिर पर डालने का या गले में डालने का रूमाल हो सकता है, कोरे श्वेत कपड़े और मोटे धागे से मेज़पोश बन सकता है। यद्यपि देखने में कठिन प्रतीत होता है, पर चेन और दोहरों से सजाया हुआ यह बहुत ही सरल और सुंदर है। प्रसन्नता के लिये हम इसका नाम नीलकंठ-पक्षी रखते हैं। यदि परिश्रम करो, तो एक दिन में बन सकता है।

आवश्यक वस्तुएँ—२० नं० का धागा और अनुकूल क्रोशिए से ख़ूब कड़ा-कड़ा और बराबर-बराबर बनाओ।

पक्षी की चोंच से आरंभ करो।

आरंभ में ४ चेन बनाओ।

१ पंक्ति—३ चेन छोड़कर २ ते० अगली चेन से लौटो (हरएक पंक्ति के अंत में लौटो)।

२ पंक्ति—४ तेहरे, ३ तेहरों के ऊपर। (३ पहले तेहरे की जगह है)।

३ पंक्ति—१ चेन, २ दोहरे हरएक तेहरे पर, । एक दोहरेवाली पंक्ति के अंत या शुरू में १ चेन अ बना लो, चाहे लिखा हो या नहीं।

४ पंक्ति—५ दोहरे अगले ५ दोहरों पर (धागों के बीच में बीनना है, जिससे लकीर न पड़े २ दोहरे अगले घर में।

५ पंक्ति—२ दोहरे १ दोहरे में, (हरएक घर १ दोरा जब तक कि ख़ास तरह कुछ और न लि हो) ५ दोरे ५ दोरों पर, २ दोरे अगले में।

६ पंक्ति—५ दोरे, ३ चेन, ३ दोरे, २ दो अगले में।

७ पंक्ति—२ दोर, अगले घर में, ४ दोरे, ५ दो ३ चेन के घर में, ४ दोहरे, २ दोरे अगले घर में।

८ पंक्ति—५ दोहरे, १ छोड़कर, २ दोरे, (यहाँ अंतवाली चेन न करो)।

९ पंक्ति—२ छोड़कर, ४ दोरे, २ दोरे अगले घर में।

१० पंक्ति—१० दोरे, २ चेन, २ छोड़कर २ दो २ दोरे अगले में।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

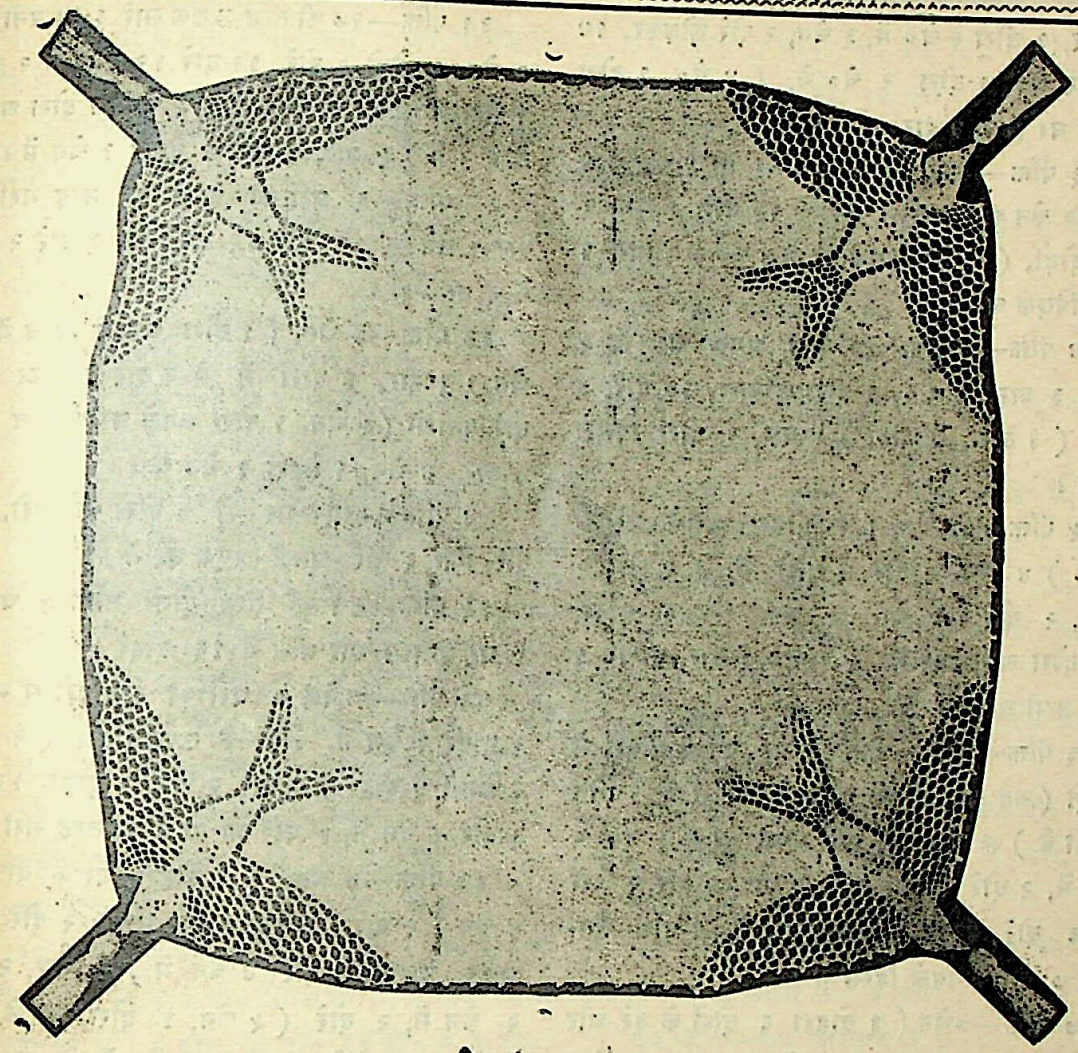

नीलकंठ रूमाल

११ पंक्ति—४ दोरे, २ दोरे, २ चेन में, ४ दोरे, २ चेन, २ छोड़कर, ३ दोरे, २ दोरे अगले में।

१२ पंक्ति—५ दोरे, २ दोरे २ चेन में, ३ दोरे, २ चेन, २ छोड़ो, ४ दोरे २ दोरे अगले में।

१३ पंक्ति—६ दोरे, २ दोरे, २ चेन में, २ दोरे, २ चेन, २ छोड़कर, ६ दोरे।

१४ पंक्ति—१ दोरा छोड़कर ५ दोरे, २ दोरे २ चेन में, २ चेन, २ छोड़ो, ७ दोरे, २ दोरे अगले में।

१५ पंक्ति—६ दोरे, २ दोरे २ चेन में, ७ दोरे।

१६ पंक्ति—१ छोड़कर १६ दोरे, २ दोरे अगले में।

१७ पंक्ति—१८ दोरे।

१८ पंक्ति—१६वीं की तरह।

१९ पंक्ति—१२ चेन, इनमें से ६ चेन छोड़कर (१ दोरा अगले में, ३ चे०, २ छोड़ो) २ दफ़ा, १६ दोरे, २ चेन, १ छोड़ो, १ दोर।

२० पंक्ति—११ चेन ६ चेन छोड़कर १ दोहरा अगली में ३ चेन, २ छोड़ो १ दोरा, ३ चे०, २ दोरे २ चेन में, २ चे०, १ छोड़ो, १५ दोरे, ❀ २ चेन, १ दोरा ३ चेन के घर में, ३ चे० १ दोरा अगले घर में, ३ चे० १ दोरा पंक्ति के अंत के ६ चेन के घर में ३ चेन १ तेहरा उसी घर में।

२१ पंक्ति—५ चे०, (१ दोरा अगले घर में ३ चे०) ३ दफ़ा, १ दोरा २ चे० के घर में, ३ चे०, १ दोरा छोड़कर, १४ दोरे, १४ दोरों पर, २ दोरे, २ चेन में, १ दोरा, दोरे पर; बाक़ी ❀ से लेकर २०वीं पंक्ति की तरह।

२२ पंक्ति—६ चे०, (१ दोरा, अगले घर में ३ चे०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

३ बार, १ दोरा २ चे० में, ३ चेन, २ दोरे छोड़कर, १४ दोरे, २ चे०, १ दोरा २ चे० में, (४ चे०, १ दोरा अगले घर में) ४ बार।

२३ पंक्ति—७ चेन, (१ दोरा घर में, ५ चेन) ४ बार, २ चेन और १ दोरा छोड़ो, १२ दोरे, ५ चेन, ३ चेन छोड़ो, (१ दोरा अगले घर में ५ चेन) ३ बार, १ दोरा पिछले घर में।

२४ पंक्ति—७ चेन, (१ दोरा अगले घर में, ५ चे०) ३ बार, ३ चे०, १ दोरा छोड़कर, १० दोरे, ३ चेन, (१ दोरा, ५ चे०,) ५ बार, १ दोरा पिछले घर में।

२५ पंक्ति—७ चेन, (१ दोहरा अगले घर में, ५ चे०) ४ बार, २ दोरे २ दोरों में, (२ चे०, २ छोड़ो, २ दोरे) २ बार, ५ चेन, ३ चे० छोड़ो, (१ दोरा अगले घर में, ५ चेन) ३ बार, ४ चेन १ तेहरा उसी घर में।

२६ पंक्ति—हरएक चेनों के घर को ६ दोहरों से भर दो (यह याद रहे कि पंक्ति के आरंभ में १ चेन बनानी है) ❀ १० दोरे, इस प्रकार से (२ दोरे २ दोरों में, २ दोरे २ चेनों में,) २ बार, २ दोरे २ दोरों में, ६ दोरे, हरएक ५ चेन के घर में, ६ दोरे अंत-वाली ७ चेन के पहले हिस्से में।

२७ पंक्ति—७चेन (१ दोहरा ६ दोरों के ३रे और ४ थे दोरे के बीच के बीच में, ५ चे०) ४ दफ़ा, १ दोरा अगले घर के बीच में। ❀ २ चे०, १० दोरे १० दोरों में, २ चेन, १ दोरा अगले घर के बीच में, (५ चेन, अगले के बीच में १ दोरा) ४ दफ़ा, ४ चे०, १ ते० पिछली पंक्ति के शुरूवाली १ चेन में।

२८ पंक्ति—❀ तक २६ की तरह, ३ दोरे, २ चेन में, ४ दोरे, २ चेन, २ छोड़ो, ४ दोरे, ३ दोरे, २ चेन में, ६ दोरे अगले हरएक घर में।

२९ पंक्ति—७ चेन (१ दोरा अगले घर के बीच में, ५ चेन) ५ बार, १० दोरे १० दोरों में (५ चेन, १ दोरा ६ दोरों के बीच में) ५ बार, ४ चेन, १ ते० १ चेन में।

३० पंक्ति—२६ की तरह, ६ घरों को दोहरों से भरो, १० दोहरे, १० दोहरों के ऊपर, ६ घरों को भरो।

३१ पंक्ति—२७ की तरह ❀ तक सारे ६ घर बनाओ २ चेन, २ छोड़ो २ दोरे, १२ दोरे १२ दोरों में २ चे० १ दोरा अगले घर के बीच में, (५ चेन, १ दोरा अगले के बीच में) ५ बार, ४ चेन, १ तेहरा १ चेन में।

३२ पंक्ति—६ घरों को पहले की तरह भरो, ३ दोरे २ चेन में, १२ दोरे १२ दोरों में, ३ दोरे २ चे० में ६ घर भरो।

३३ पंक्ति—७ चेन, (१ दोरा घर के बीच में, ५ चेन) ६ बार, ३ दोरों में से २ दोरे छोड़कर, ६ दोरे बनाओ (५ चेन, १ दोरा अगले घर के बीच में) ६ बार, ४ चेन, १ तेहरा १ चेन में।

३४ पंक्ति—हरएक घर को ६ दोरों से भरो, ६ दोरे, फिर ६ दोरे, अगले हरएक घर में।

३५ पंक्ति—३१ की तरह, दोनों तरफ़ ५ चेन ७ घर बनाओ और बीच में १६ दोहरे।

३६ पंक्ति—प्रत्येक ७ घरों को ६ दोहरों से भरो ३ दोहरे २ चेन में, दोहरे के ऊपर दोहरा, (२ चे० २ छोड़ो ४ दोहरे) २ बार, २ चेन, २ छोड़ो, १ दोरा ३ दोरे २ चेन में, ७ घरों को पहले की तरह भरो।

३७ पंक्ति—७ चेन, (१ दोहरा घर के बीच में ५ चेन) ६ बार, ५ चेन, ५ दोरे छोड़ो, २ दोरे, (४ दोरे २ चेन में, ४ दोरे ४ चेन में) २ बार, २ दो० २ चेन में, २ दोरे (५ चेन, १ दोरा घर के बी० में) ७ बार, ४ चेन, १ तेहरा १ चेन में।

३८ पंक्ति—८ घरों को ६ दोहरों से भरो, ३ दो० ३ दोरों में, २ चेन, २ छोड़ो, १ दोरा, २ चेन, २ छो० १ दोरा, २ चेन, २ छोड़ो, ३ दोरे, २ दोरे अगली चेन में, लौटो (शुरूवाली चेन न बनाओ)।

३९ पंक्ति—२ दोरे छोड़ो, ३ दोरे ३ दोरों में, ३ दोरे चेन में, फिर १ दोरा, २ दोरे चेन में, २ दो० २ दोरे चेन में, १ दोरा, २ दोरे चेन में, ५ दोरे ५ घ० में, लौटो (शुरूवाली १ चेन न बनाओ)।

४० पंक्ति—२ दोरे छोड़ो, ५ दोरे ५ दोरों में, ३ चेन, २ छोड़ो, ४ दोरे, २ चेन, २ छोड़ो, ५ दो० २ दोरे ५ चेन में, लौटो।

४१ पंक्ति—१ दोरा छोड़ो ६ दोरे, २ दोरे २ चे० में, ४ दोरे, २ दोरे २ चेन में, ७ दोरे, (५ चेन,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोरा अगले घर के बीच में) ७ बार, ४ चेन, १ ते० १ चेन में।

४२ पंक्ति—७ घरों को ७ दोरों से भरो, ४ दोरे अगले घर में लौटो।

४३ पंक्ति—(५ चेन, १ दोहरा अगले घर के बीच में) ७ दफ़ा, ४ चेन, १ तेहरा १ चेन में।

४४ पंक्ति—४२ की तरह, ६ घरों को भरो।

४५ पंक्ति—४३ की तरह, सारे ७ घर।

४६ पंक्ति—५ घरों को भरो, ४ दोरे अगले में।

४७ पंक्ति—४३ की तरह, सारे ६ घर।

४८ पंक्ति—४ घरों को भरो, ४ दोरे अगले में।

४९ पंक्ति—४३ की तरह, ५ घर सारे।

५० पंक्ति—३ घर भरो, ४ दोरे अगले में।

५१ पंक्ति—४३ की तरह, ४ घर सारे।

५२ पंक्ति—२ घर भरो, ४ दोरे अगले में।

५३ पंक्ति—४३ की तरह, सारे ३ घर।

५४ पंक्ति—पहला घर भरो, ४ दोरे अगले में।

५५ पंक्ति—४३ की तरह, २ घर।

५६ पंक्ति—१ चे०, ४ दो०, ४ चे०, में।

५७ पंक्ति—४ चे०, १ ते०, १ चे०, में।

५८ पंक्ति—१ चे०, ७ दो० ४ चें० में, ३ दो० निचली ख़ाली चेन में, (७ दो० गोल घर में, ३ दोहरे आधे ख़ाली घर में) ७ बार, २१ दो० २१ दो० में, १ दो०, ५ चे० में लौटो।

५९ पंक्ति—१ चे०, २१ दो०, लौटो।

६० पंक्ति—१चे०, १ छोड़ो, ३ दो०,(२ चे०,२ छोड़कर ४ दो०) २ दफ़ा, २ चे०, २ छोड़ो, ३ दो०, लौटो।

६१ पंक्ति—३ दो० ३ दो० में (यह याद रहे कि प्रत्येक दोहरों की पंक्ति के आरंभ में १ चेन होनी चाहिए), (२ दो०, २ चे० में ४ दो० ४ दोरों में) २ बार, २ दोहरे २ चेन में, ३ दोरे, ३ दोरों में।

६२ पंक्ति—२० दोरे।

६३ पंक्ति—१ छोड़ो १९ दोरे।

६४ पंक्ति—१ छोड़कर ५ दोरे, २ चेन, २ छोड़ो, ४ दोरे, २ चेन, २ छोड़ो, ५ दोरे।

६५ पंक्ति—१ छोड़ो (४ दोरे, २ दोरे २ चेन में) २ बार, ५ दोरे।

६६ पंक्ति—१ छोड़ो, १६ दोरे।

६७ पंक्ति—१ छोड़ो, १५ दोरे।

६८ पंक्ति—१ छोड़ो, ६ दोरे, २ चेन, २ छोड़ो, ६ दोरे।

६९ पंक्ति—१ छोड़ो, ५ दोरे, २ दोरे २ चेन में, ६ दोरे।

७० पंक्ति—१ छोड़ो, १२ दोरे।

७१ पंक्ति—१ छोड़ो, ११ दोरे।

७२ पंक्ति—१ छोड़ो, १ दोरा, २ चेन में, २ छोड़ो, ३ दोरे, २ चेन, २ छोड़ो, २ दोहरे।

७३ पंक्ति—१ छोड़ो, १ दोरा अगले में, २ दोरे चेन में, ३ दोरे, २ दोरे चेन में, १ दोरा।

७४ पंक्ति—१ छोड़ो, ८ दोरे।

७५ पंक्ति—१ छोड़ो, २ दोरे, २ चेन, २ छोड़ो, ३ दोरे।

७६ पंक्ति—३ दोरे ३ दोरों में, २ दोरे चेन में, २ दोरे २ दोरों में।

७७ पंक्ति—४ चेन, १ दोरा अगले दोरे पर (४ चेन, १ छोड़ो, १ दोरा अगले में) २ बार, ४ चेन, १ दोरा अगले पर।

७८ पंक्ति—५ चेन, १ दोरा ४ चेन के घर पर, (४ चेन, १ दोरा अगले में) ३ बार।

७९ पंक्ति—७८ की तरह।

८० पंक्ति—१ चेन, ४ दोहरे हरएक ३ घरों में, ३ दोरे अंतवाले घर में।

८१ पंक्ति—(४ चेन, १ दोरा अगले घर के बीच में) ३ बार, ३ चेन, १ तेहरा चेन में ॐ २६ चेन, १० चेन छोड़ो १ दोहरा अगले में (५ चेन, ३ छोड़ो, १ दोहरा अगले में) ४ बार, पिछली चेन को जहाँ लंबी चेन शुरू हुई थी, जोड़ दो।

८२ पंक्ति—अब पिछली २६ चेनों को क्रोशिए की चोंच और धागे के बीच में लाकर उस पर लौटकर १ चेन, ४ दोहरे अगली ३ चेनों में, (५ दोहरे अगले में) ३ बार, १५ दोहरे १० चेन के घर में, (७ दोरे, ५ चेनों में) ४ बार, ३ दोरे ३ चेनों में, २ दोरे ४ चेन के घर में, लौटो।

८३ पंक्ति—४ चेन, ७ दोहरों के बीच में १ दोहरा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५ चे०, १ दोरा अगले घर के बीच में) २ बार, लौटो।

८४ पंक्ति—हरएक ५ चेन के घर को ७ दोरों से भरो, ४ दोरे ४ चेनों में।

८५ पंक्ति—५ चेन, १ दोरा दोहरों के बीच में, लौटो।

८६ पंक्ति—७ दोरे ५ के घर में, २ दोरे ४ चेन के आधे ख़ाली घर में, ४ दोरे ४ चेन के घर में, ३ दोरे अगले घर में ※ से ८१ पंक्ति की तरह।

८७ पंक्ति—७ दोहरे दोनो घरों में, ४ दोरे अगले में, लौटो।

८८ पंक्ति—(५ चेन, १ दोरा ७ दोरों के बीच में) दो बार, ३ चेन, १ दोरा, ४ दोरों के बीच में नीचे की तरफ़, लौटो।

८९ पंक्ति—४ दोहरे ३ चेन के घर में, ४ दोरे ५ चेन में लौटो।

९० पंक्ति—५ चेन ७ दोहरे छोड़कर १ सादे फंदे से अगले में जोड़ दो।

९१ पंक्ति—(७ दोरे, ५ चेन के घर में, ३ दोरे आधे भरे हुए घर में) २ बार, ७ दोरे अगले घर में, १५ दोरे १० चेन में, (५ दोरे ३ चेन में शुरू की लंबी चेन की तरफ़) ३ बार, ४ दोरे अगली ३ चेन में, ३ चेन, १ दोरा ४ चेन के आधे भरे हुए घर में, किनारे पर ३ चेन, १ दोरा ५ चेन के आधे भरे हुए घर में, ३ चेन, १ दोरा ४ चेन के घर में, २१ दोरे दूसरे पंख की पिछली पंक्ति तक चिड़ियों के शरीर की २१वीं पंक्ति के सिरों पर।

९२ पंक्ति—३ दोरे ५ चेन के आधे ख़ाली घर में, ७ दोरे हरएक अगले ७ घरों में।

९३ पंक्ति—७ चेन, (१ दोरा ७ दोरों के बीच में, ५ चेन) ७ बार, १ दोरा अगले जिसम के साथवाले घर के बीच में।

९४ पंक्ति— ७ दोहरों से सारे घर भर दो।

९५ पंक्ति—९३ की तरह सारे ८ घर बनाओ।

९६ पंक्ति—९४ की तरह।

९७ पंक्ति—९५ की तरह सारे ७ घर बनाओ।

९८ पंक्ति से १०१ पंक्ति तक—९६ और ९७ पंक्ति की तरह होंगी केवल विषम पंक्ति में—अथवा १००, ९९, १०१ इत्यादि—एक घर घटाओ और प्रत्येक सम पंक्ति में—अथवा ९८, १०० इत्यादि—७ दोहरों से घरों को भर दो; १०१ पंक्ति में ७ चेन का केवल एक ही घर होगा।

११० पंक्ति—७ चेन के घर में ४ दोहरे, लौटो।

१११ पंक्ति—२ चेन, ३ छोड़ो, १ तेहरा अगले में, ※ २ चे०, २ छोड़ो, १ तेहरा अगले में (घरों के बीच में), ३ चेन, ३ छोड़ो, १ दोहरा अगले में (अगले घर के सिर पर), २ चेन, ३ छोड़ो, १ तेहरा अगले में (उसी घर के नीचे में) ※, ※ से लेकर ※ तक ६ दफ़ा दोहराओ, पर के ऊपर के किनारे की तरह फिर पिछले घर के ३ दोहरे और जिसम के ३ दोहरे छोड़कर, १ तेहरा अगले में, (२ चेन, २ छोड़ो, १ तेहरा अगले में) ५ बार, (२ चेन, १ तेहरा अगले ३ चेन के नीचे) ३ बार, (२ चेन, २ दोहरे छोड़ो, १ ते० अगले में) ८ बार, (२ चेन, १ ते० अगले दोहरे में) ५ बार, २ चेन, २ छोड़ो, १ तेहरा अगले में, ऊपरवाले ※ से लेकर ※ तक ५ दफ़ा, पूँछ के बीच के २ छल्लों के जोड़ पर ३सरा दोहरा आगे (२ चेन, २ छोड़ो, १ तेहरा अगले में) २ बार, (२ चेन, १ तेहरा अगले में) ५ बार, (२ चेन, २ छोड़ो, १ तेहरा अगले में) ७ बार, २ चेन, अगले तेहरे के एक तरफ़ बग़ल में एक तेहरा, २ चेन, १ ते० अगले दोरे में, २ चेन, १ तेहरा ५ चेन के घर में, २ चेन, १ तेहरा जिसम की दूसरी पंक्ति में, (२ चेन, २ पंक्ति छोड़ो, १ तेहरा अगले में) ५ बार, अगली दो पंक्तियाँ जिसम की छोड़ो, और पर के ३ दोहरे छोड़कर, १ तेहरा अगले में, २ चेन, १ दोरा घर के ऊपर, २ चेन, १ दोरा उसी घर के नीचे, ※ से ※ तक फिर ७ बार पर के ऊपर के किनारे पर बीनो, लौटो।

११२ पंक्ति—५ चेन १ कंगूरे के लिये सबसे पहले चेन में फँसाकर निकाल लो ※ (अगली २ चेनों को ३ दोहरों से भर दो) ३ बार, फिर १ कंगूरा बनाओ ※ चिह्न से चिह्न तक दोहराओ, जब कि सारे ११ कंगूरे बन जायँ (अगले दोनो ख़ानों को ३ दोहरों से १ कंगूरा) २ बार, फिर ※ से ※ तक बीनो और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि १३ कंगूरे और न हो जायँ, पहला कंगूरा दूसरी तरफ़ के पर की नोक पर होगा।

११३ पंक्ति—७ चेन के आधे भरे हुए घर में ४ दोहरे, १ कंगूरा, ४ दोरे उसी घर में ❀ ४ दोरे, अगले आधे भरे हुए घर में कंगूरा घरों के बीच में, कंगूरा घरों के बीच में, ४ दोरे अगले आधे भरे हुए घर में ❀ चिह्न से ६ बार, ४ दोरे अगले में, १ कंगूरा, ३ दोरे प्रत्येक अगले तीन घरों या ख़ानों में, १ कंगूरा पंख के कोने पर। (३ दोरे २ चेन में) ३ दफ़ा, ❀ चिड़िया के सिर की तरफ़, चोंच की तरफ़ नीचे तक दोरे बीनो, ज़रा इतना ढीला रहे कि कार्य में जोला न आने पावे। इस प्रकार—१ दोरे ५ पंक्तियों में, २ दोरे अगली में, ३ अगली ३ में, ४ दोरे अगली में, ५ अगली ५ में ३ दोरे प्रत्येक अगले २ तेहरे में, २ चेन, ३ दोहरे दूसरी तरफ़ के प्रत्येक तेहरों पर, ५ दोरे सिर की ५ पंक्तियों में, २ अगली में (२ अगली २ में, २ अगली पंक्ति में) २ बार, १ एक दोहरा हरएक दोहरे पर पंख के ऊपर की तरफ़ जाते हुए, फिर पिछले ❀ चिह्न से घूमकर एक दफ़ा दूसरे पंख की नोक तक बीनो।

सिर को दूसरी तरफ़ घुमाने के लिये १८वीं पंक्ति से शुरू करो।

११ पंक्ति—१ सादा १६ दोहरों पर, २ चे०, १ छोड़ो, सादा फंदा अगले में। यह सादा फंदा तुम्हें सिर के दूसरी तरफ़ ले जाता है।

२० पंक्ति—❀ तक २० की तरह, २ दोरे अगले में।

२१ पंक्ति—१२ चे०, ६ छोड़ो, १ दोरा अगले में, ३ चे०, २ छोड़ो, १ दोरा अगले में, ३ चे०, २ छोड़ो, १७ दोरे १७ दोरों में, २ दोरे २ चेन में, १ दोरा दोरे में, (३ चे०, १ दोरा अगली ३ चे० में) २ बार, ३ चे० १ दोरा सबसे पिछले घर में, ३ चे०, १ ते०, उसी घर में।

२२ पंक्ति—५ चेन (१ दोरा अगले घर में, ३ चेन) ३ बार, २ चे०, २ छोड़ो, १६ दोरे, २ चे०, (१ दोरा अगले घर में, ३ चेन) ३ बार, १ तेहरा उसी घर में।

२३ पंक्ति—५ चे०, (१ दोरा अगले घर में, ३ चे०) ३ बार, १ दोरा २ चेन में, २ चे०, १ दोरा छोड़ो, १४ दोरे, २ चे०, १ दोरा अगली २ चेन में, (३ चे० १ दोरा अगले में) ४ दफ़ा, ३ चे०, १ तेहरा उसी घर में।

२४ पंक्ति—६ चेन, (१ दोरा अगले घर में, ४ चेन) ४ दफ़ा १४ दोरों में का एक छोड़कर १२ दोरे १२ दोरों में, (४ चे०, १ दोरा अगले घर में) ४ बार। आगे २४ पंक्ति के बाद से ऊपर की तरह बनाओ।

प्रत्येक नीलकंठ कोने को हल्की से अच्छी तरह दबाकर, जिस कपड़े पर टाँकना हो, उस पर बिछाकर, उपयुक्त जगह पर पिनों से जड़ लो, जिसमें यह पक्का निश्चय हो जाय कि बिलकुल ठीक स्थान पर है। बारीक धागे से और ख़ूब बारीक-बारीक सींवन से छोटे-छोटे टोप दोहरों की पिछली लकीर और कंगूरों के ज़रा अंदर-अंदर लेकर सी लो। कपड़े को काट दो, इतना रख-रखकर कि अंदर से सिलाई हो सके। कोने से लेकर कोने तक दोहरे और कंगूरों का किनारा बुन दो। दोहरों को ख़ूब पास-पास बनाओ, और हरएक ८ दोहरे के बाद १ कंगूरा बनाओ। अब चाहे जिस तरह का फुँदना लगा लिया जाय। पर जो इसमें लगा है, वह इस प्रकार है—एक मोटे ७ इंच लंबे कार्ड पर १०० बार धागा लपेटकर जितना मोटा-पतला रखना हो, निकाल लो, और दोहरा पकड़कर कसकर पौन इंच के क़रीब बाँध दो। अब ऊपर के लिये छोटी-सी टोपी इस प्रकार बुनो—१ चेन, ६ दोरे पहली चेन में, जोड़ो, २ दोरे हरएक दोरे में (फंदे के दोनो धागों के बीच में बुनो); १ दोहरा दोरे में, २ दोरे अगले में। इसी प्रकार दोहराओ। दोहरा दोनो दोरों में, २ अगले दोरे में, इसी प्रकार की ८ पंक्तियाँ बुनो। अंतवाली पंक्ति में हरएक तीसरा दोहरा छोड़-छोड़कर बुनो, जिसमें टोपी नीचे से सिकुड़ने लगे। अब फुँदने को जहाँ से बाँधा है, वहाँ से टोपी में डालकर कसकर बाँध दो, और चिड़िया को चोंच में अच्छी तरह सी लो।

ओमवतीदेवी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नींबू का अचार

नींबू के अचार कई प्रकार के पड़ते हैं। साबुत, मसाला भरकर, चौफाँक, आधे फाँक।

कार्त्तिक के नींबुओं का अचार अच्छा ठहरता है, और श्रावण-भादों का कम।

मसाला भरकर बनाना हो, तो जितने नींबुओं का बनाना हो, उनमें आधों का रस निचोड़ ले, और आधों को चौफाँक कर ले, पर नीचे से जुड़ा रहने दे। इनमें आम की अचारी का मसाला कूटकर भर दे। ऊपर से वह निकाला हुआ रस डाल दे। आठ-दस दिन तक हिला दिया करे। पीछे महीने-पंद्रह दिनों में हिला दे; अचार तैयार है।

दूसरी विधि

चौफाँक चिरे हुए नींबुओं में मसाला भरकर चिकने बासन में चुनता जाय। खत्म हो जाने पर ऊपर से थोड़े नींबुओं का रस निचोड़कर बासन को आग जलाकर चूल्हे पर रख दे। मंदी-मंदी आँच लगने दे। जब एक उफान आ जाय, तब बर्तन को नीचे उतार ले, और एक दिन-रात तक ठंडा होने दे। पीछे इनको निकालकर अचार के बर्तन में भरकर रख ले। यह अचार जिस दिन तैयार होता है, उसी दिन से खाने लायक हो जाता है, और बरसों बिगड़ता नहीं।

साबुत नींबू का अचार

साबुत नींबू लेकर उनमें सेर पीछे पाव-भर नमक डालकर किसी बर्तन में भरकर रख दो। नित्य हिला दिया करो। एक महीने में बहुत अच्छा अचार हो जायगा। कोई-कोई नमक के साथ उतना ही गुड़ भी डालते हैं।

अदरख का अचार

बड़ी-बड़ी पकी हुई अदरख मँगाकर छील डालें और टुकड़े कर बड़े मुँह की शीशी में रखकर नींबू का अर्क निचोड़ दें। फिर काली मिर्च, धनिया, सौंफ, लौंग इलायची, सेंधा नमक पीसकर डाल दें। शीशी का मुँह कपड़े से बाँधकर घाम में रख दें, और हिला-डुला दिया करें। एक सप्ताह में अदरख का बढ़िया अचार बन जायगा।

दूसरी विधि

अदरख को छीलकर उबाल डालें, फिर उसके चौड़े

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौड़े टुकड़े कर अमृतबान में रख दे, और नींबू का अर्क शीशी के मुँह तक भर दे। फिर लाल मिर्च, साबुत छुहारा, किशमिश डाल दे और नमक, काली मिर्च, धनिया पीसकर मिला दे। फिर शीशी का मुँह बंदकर रख छोड़े। एक सप्ताह बाद खाना आरंभ करे।

आँवले का अचार

डाल के पके हुए आँवले बड़े-बड़े सँगाकर धीमी आँच में उबाले। उबल जाने पर उतारकर सब पानी निकाल डाले, और मिट्टी के बरतन हँडिया या अमृत-बान में डाले। यदि आँवले डाई सेर हों, तो धनिया आध पाव, राई डेढ़ छटाँक, लाल मिर्च कम या ज़्यादा, जितनी उचित समझें, हल्दी आधी छटाँक। सबको पानी में पीसकर आँवलों में मिला दे, और एक सप्ताह घाम में रक्खे। फिर खाने के काम में लावे।

दूसरी विधि

आँवलों को उबालकर गुठली निकाल डाले। फिर थोड़ा तिल्ली का तेल कड़ाही में डालकर तरकारी की तरह भून डाले। भुन जाने पर अमृतबान में रखकर हल्दी, लाल मिर्च, धनिया, इन सबको पीसकर पानी में मिला धीमी आँच में औटावे। जब अच्छी तरह खौलने लगे, तब उतारकर आँवलों में छोड़ दे। फिर सेंधा नमक और राई पीसकर डाल दे। तीन-चार दिन घाम में रक्खे, फिर खाने के काम में लावे।

करेले का अचार

करेलों को छीलकर साफ़ कर ले। फिर चीरकर सौंफ़ और धनिया, पोदीना और अंदाज़ का नमक पीसकर भर दे और डोरे से बाँधकर उबाल डाले। उबल जाने पर घाम में सुखावे, जब पानी सूख जाय, तो अमृतबान में भरकर ऊपर तक सिरका भर दे, और बाँधकर रख दे। एक महीने बाद काम में लावे।

त्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव

पढ़िए ! बिल्कुल नई पुस्तक !! छपकर तैयार है !!!

"भगवान् गौतम बुद्ध"

[लेखक, स्व० पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा, संपादक हिंदू-पंच]

इस पुस्तक में भगवान् बुद्धदेव के बालकपन, विवाह, वैराग्य और उनके संन्यास तथा निर्वाण आदि का वर्णन बड़ी ही सरल एवं मनोरंजक भाषा में किया गया है। यह पुस्तक बालकों के हृदय में भगवान् गौतम बुद्ध के अमृतमय उपदेश अंकित कर उनके जीवन को सफल बनानेवाली है। इसी उद्देश्य से लेखक ने इसे लिखा है। इसलिये इसकी भाषा बोलचाल की और जल्द समझ में आनेवाली है। केवल बालकों के लिये नहीं, सबके पढ़ने और मनन करने की चीज है। मूल्य ।-)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

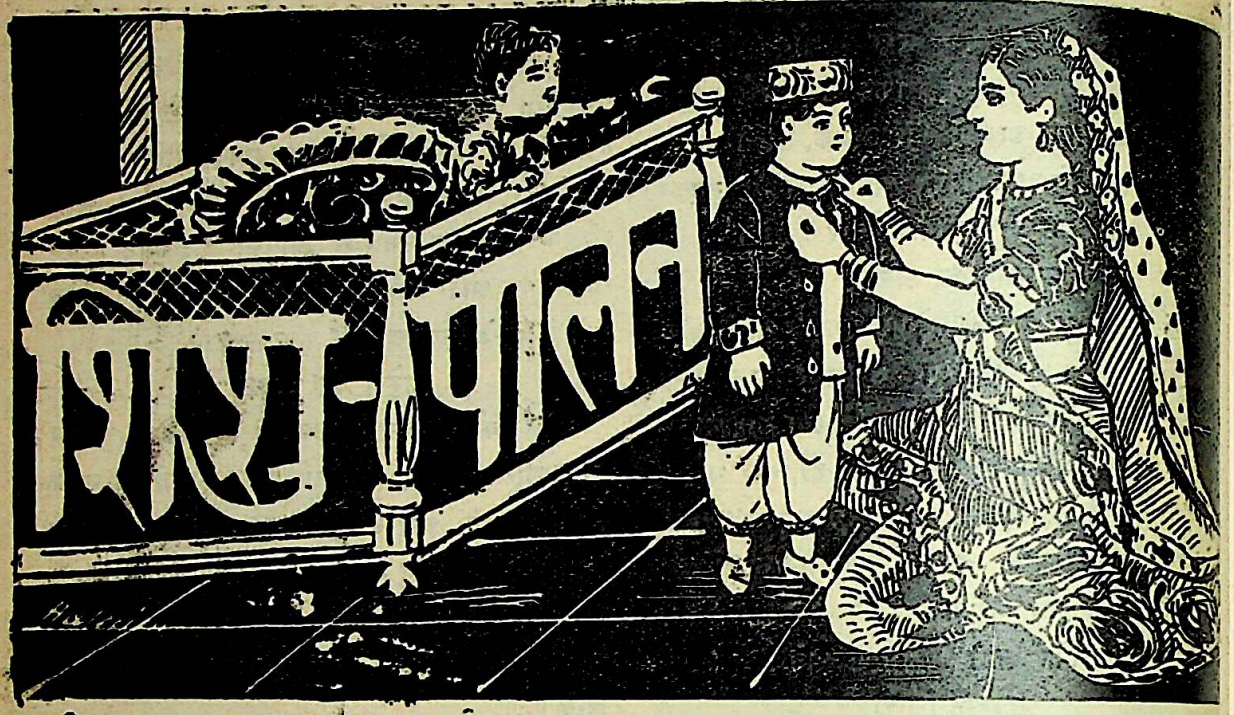

बच्चा पैदा होने के बाद

बच्चे को, पैदा होने के बाद, साफ़ हाथों और क़ैंची से नाल काटकर, रेशम के तागे से बाँध देना चाहिए। एक साफ़ कपड़े में रखकर गर्म पानी और बोरिक एसिड से ख़ूब धोकर कुल बदन को सुखा देना चाहिए और नाल पर बोरिक एसिड छिड़ककर उसके ऊपर रुई का टुकड़ा रखकर हलकी पट्टी से बाँध देना चाहिए।

बालक उत्पन्न हो चुके, तो देखना चाहिए कि वह रोता है या नहीं। बहुत-से बालक बहुत देर तक सुस्त पड़े रहते हैं, या हाँफा करते हैं। उनके मुँह में उँगली डालकर मुँह की राल निकाल देनी चाहिए। मुँह पर ठंडे पानी के छींटे देना चाहिए, जिससे वह रोने लगेगा। जब तक हफनी बंद न हो जाय, तब तक नाल न काटना चाहिए।

बच्चा पैदा होने के बाद जब तक धोकर साफ़ न कर लिया जाय, ज़च्चा को न दिखाना चाहिए।

जहाँ तक मुमकिन हो, ज़च्चा को लेटे-लेटे बच्चा दूध पिलाना चाहिए।

बच्चे के ऊपर ज़्यादा ओढ़ने की चीज़ें, यानी लिहाफ़ वग़ैरह, न डालना चाहिए।

बच्चे को पैदा होने के २४ घंटे तक दूध न देना चाहिए। केवल कई बार उँगली से शहद चटा देना चाहिए।

बालक होने के बाद ६ घंटे तक ज़च्चा को आनंद से लेटा रहने देना चाहिए। यदि पेशाब करने की आवश्यकता हो, तो लेटे-लेटे ही कराना चाहिए। तीन घंटे के पश्चात् ज़च्चा दूसरे बिस्तर पर बिठाई जा सकती है।

❀ ❀ ❀

बच्चों को सदा साफ़-सुथरा वस्त्र पहनाना चाहिए। बदबूदार कपड़े पहनाने से अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं। अगर तेल लगाया जाय, तो किसी और कपड़े से उसके बदन को साफ़ करके फिर साफ़ कपड़े पहनाना चाहिए।

बच्चों को सदा नहलाते रहना चाहिए, जिससे शरीर पर मैल न जमने पावे। मैला रहने से एक तो बच्चा घिनौना रहता है, दूसरे फुंसी वग़ैरह ज़्यादा निकल आती हैं, और बहुधा बीमार भी रहता है।

बच्चे के शरीर पर पाँच-छः महीने तक नित्य-प्रति आटा-तेल-पानी से बनी हुई लोई मलनी चाहिए। कभी-कभी निरा तेल लगाना चाहिए। इससे खाल पुष्ट हो जाती है, और मैल भी जमने नहीं पाता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पश्चात् भी कम-से-कम प्रति सप्ताह उबटन लगाते रहना चाहिए। जो स्त्रियाँ बच्चों को स्नान कराने से सरदी का हो जाना समझती हैं, उनका यह विचार ठीक नहीं। यदि अधिक जाड़े के दिन हों, तो गुनगुने पानी से या धूप में बैठाकर नहलावे।

जिन स्त्रियों के कमज़ोरी या बीमारी के कारण दूध कम होता है, उन्हें उस समय बच्चे को बकरी या गाय का दूध देना चाहिए। दूध में २ या ३ हिस्से पानी होना चाहिए। ख़ालिस दूध कदापि न देना चाहिए।

बच्चों को, जहाँ तक हो सके, कच्चा या देर का रक्खा हुआ दूध न पिलाना चाहिए।

दूध हमेशा समय से देना चाहिए। हमारे यहाँ स्त्रियों की आदत होती है कि जिस समय बच्चा रोया, फ़ौरन् दूध पिलाने लगती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि बच्चे को हमेशा पेट की शिकायत होती है।

मा का दूध पिलाते समय बच्चे को सोने न देना चाहिए।

यदि बच्चा तंदुरुस्त पैदा हो, तो उसको तीन-तीन घंटे के बाद दूध देना चाहिए। जब बच्चा ३-४ महीने का हो जाय, तो उसके दूध पिलाने का समय भी बढ़ा देना चाहिए, अर्थात् तंदुरुस्त बच्चे को चार-चार घंटे के बाद और कमज़ोर बच्चे को २½ या ३ घंटे के बाद।

यदि बच्चे को पानी-मिला हुआ दूध मुवाफ़िक़ न आवे, तो उसमें बजाय पानी के जौ का पानी मिलाना चाहिए। वह इस प्रकार तैयार होता है—जौ को पहले थोड़ा भिगोकर इतना कूटे कि ऊपर के कुल छिलके उतर जायँ। उसके बाद फटककर साफ़ कर ले। एक छटाँक जौ लेकर थोड़ी देर पानी में भिगो दे। बाद में पानी फेंक दे। ऐसा दो मरतबा कर चुकने के बाद क़रीब १ छटाँक कम १ सेर पानी में भिगो दे, और थोड़ी देर के बाद इतना उबाले कि पानी क़रीब ढाई पाव के रह जाय। बाद को कपड़े में छान ले।

जौ का पानी ज़्यादा देर का रक्खा हुआ नहीं इस्तेमाल करना चाहिए। आवश्यकता के अनुसार दिन में २-३ दफ़े तैयार कर लेना चाहिए।

दूध के साथ बजाय पानी के चूने का पानी भी देते हैं। इस कारण गाय का दूध जल्दी हज़म हो जाता है।

बच्चों को अक्सर दूध शीशी के ज़रिए से पिलाया जाता है, इस कारण शीशी हमेशा ऐसी होना चाहिए, जो आसानी से साफ़ हो सके। बाज़ार में इस प्रकार की बोतलें भी बिकती हैं, जिनके दोनो तरफ़ छेद होता है। इसलिये वे आसानी से साफ़ हो सकती हैं। दूध पिलाने के बाद बोतल को फ़ौरन् ठंडे पानी से ख़ूब धो डाले। बाद में गर्म पानी से धोवे और फिर उसको सोडा और पानी के सल्यूशन में रख दे, और ज़रूरत के समय निकालकर फिर ठंडे पानी से धोकर इस्तेमाल करे। रबड़ की चुसकी, जिससे बच्चा दूध पीता है, साफ़ रहनी चाहिए। उसके अंदर थोड़ा-सा नमक डालकर ख़ूब मले और ठंडे पानी से धो डाले।

बच्चों को यदि बदहज़मी रहती हो, तो हर दूसरे महीने जुल्लाब देते रहना चाहिए। पाँच महीने तक के बच्चे को आधे ड्राम से एक ड्राम तक और पाँच महीने से नौ महीने तक के बच्चे को एक ड्राम से दो ड्राम तक कैस्टर-आयल देना चाहिए।

बच्चों को ज़्यादा गोद में नहीं रखना चाहिए, बल्कि उनको पलँग इत्यादि पर लिटाए रक्खे। ऐसा करने से बच्चों को हाथ-पैर चलाकर जल्द दूध हज़म करने का मौक़ा मिलता है।

बच्चों को मिट्टी खाने से रोकना चाहिए। उनको बाज़ार की वस्तुएँ यानी जलेबी, सुहाल, बरफ़ी इत्यादि के खिलाने की आदत नहीं डालनी चाहिए। इससे पेट में ख़राबी हो जाने का डर है।

बच्चों को अफ़ीम इत्यादि कोई नशे की चीज़ कभी न खिलानी चाहिए।

दूध पीते (बे-दाँत के) बच्चों के बालों में कंघी न करनी चाहिए। यदि केश सँवारना हों, तो ब्रुश इस्तेमाल में लाना चाहिए।

उनके सोने बैठने का स्थान ऐसा होना चाहिए, जहाँ रोशनी और शुद्ध वायु की पूरी पहुँच हो।

बच्चों को कभी डराओ मत।

बच्चों को लाड़-प्यार में उनसे अशुद्ध व अनुचित असभ्य शब्द न कहलाना चाहिए।

प्रायः जब बच्चा होता है, तो उसका जी बहलाने के लिये स्त्रियाँ दीपक दिखाने लगती हैं। चूँकि उसमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाश होता है, इसलिये बच्चे की आँख सहज ही में उस ओर आकृष्ट हो जाती है; किंतु यह विकट भूल है। देर तक बच्चे को दीपक दिखलाना उसके नेत्रों के प्रति शत्रुता करना है।

बालकों को पेट के बल मत सोने दो।

बालकों के नहलाने के पानी में यदि नमक डा दिया जाय, तो अति गुणकारी होगा। यदि पानी मे मेथा वा मेहँदी डालकर गरम करके नहलावे, तो अच्छा है।

त्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव

युधिष्ठिर

[लेखक, श्रीकृष्णगोपाल माथुर]

हाथों-हाथ बिक रहा है !

शीघ्र ख़त्म हो जायगा !!

फ़ौरन् आर्डर भेजिए !!!

महाराज युधिष्ठिर का जीवन पवित्रता और धर्मपरायणता से परिपूर्ण है। इनका राज धर्मराज माना जाता है। इस पुस्तक में उनके जन्म, बालकपन, शिक्षा, राजसूय-यज्ञ, वनवास, कौरव-पांडव-युद्ध तथा अश्वमेध-यज्ञ का वर्णन बड़ी ही मनोहर भाषा में किया गया है। बालकों के हृदय में धार्मिक भावों को जाग्रत् करने के लिये इससे बढ़कर दूसरी पुस्तक हमारी समझ में नहीं हो सकती। जो सज्जन अपने बालकों को धर्मनिष्ठ बनाने के इच्छुक हों, उन्हें इस पुस्तक को अवश्य खरीदकर अपने बालक और बालिकाओं के हाथ में देना चाहिए। केवल बालकों के लिये ही नहीं, यह पुस्तक सब स्त्री-पुरुषों के पढ़ने और मनन करने की चीज है। छपाई-सफ़ाई सुंदर। टाइटिल पर महाराज युधिष्ठिर का अति मनोहर चित्र भी है। मूल्य केवल ।॥) सजिल्द, १।)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

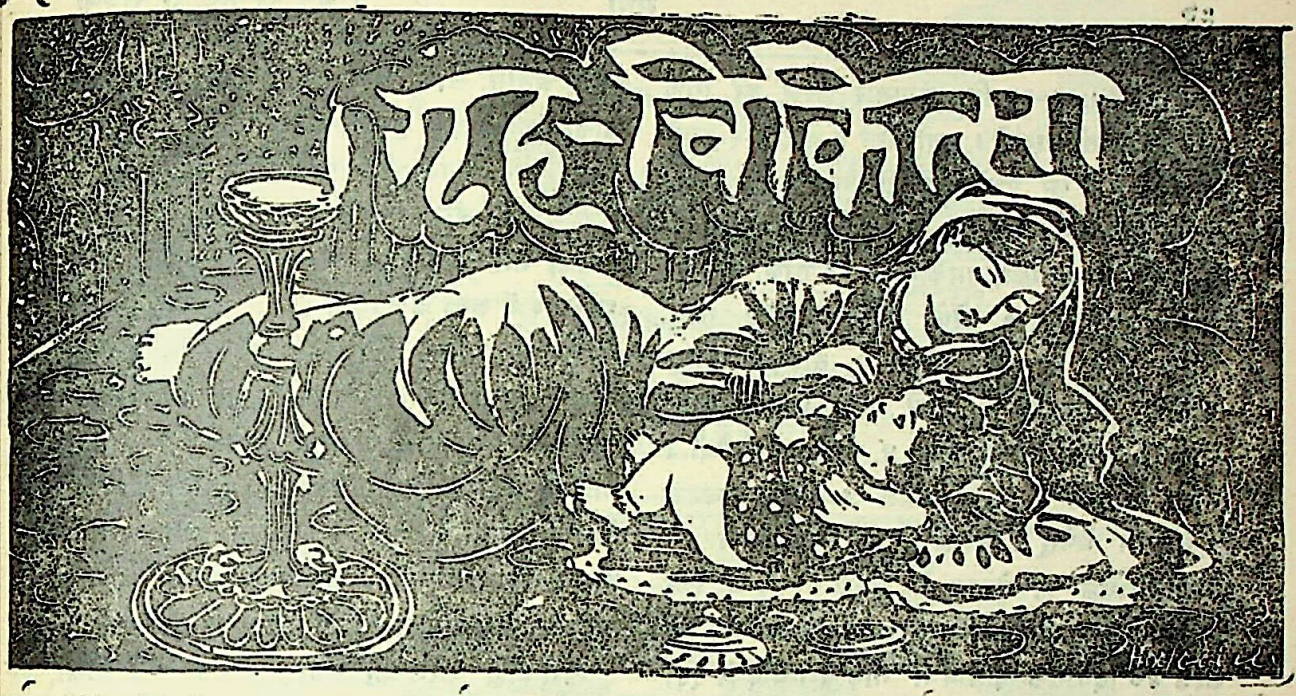

दाद को दवा—सुहागा १६ माशा, मालकँगनी १६ माशा, शीतल चीनी १६ माशा, पारा १६ माशा, इन सबको बारीक पीसकर काग़ज़ी नींबू के रस में गोली बना लो। पानी में घिसकर लगाने से आराम हो जाता है।

सितोपलादि चटनी—मिश्री १६ माशे, वंशलोचन ८ माशे, छोटी इलायची के दाने ४ माशे, तज २ माशे, पीपल छोटी १ माशे। सबको बारीक पीसकर शुद्ध शहद या शरबत-अनार में मिलाकर खाने से ख़ून की गर्मी और ख़ुश्की को दूर करती तथा तरावट रखती है। भूख ख़ूब बढ़ाती है। मात्रा १ माशे से २ माशे तक। यदि शक्ति-वर्द्धन की ज़रूरत हो, तो मूँगा, मोती और चाँदी के वरक़ और मिला ले।

बवासीर को दवा—निबौरी की गिरी, बकायन की गिरी, कच्चे इमली की गिरी, भैंसा गूगल सब बराबर, उसमें चौगुनी मिश्री मिलाकर झरबेरी-सी गोली बना ले। सुबह-शाम खाय।

हुचकी की दवा नं० १—छुहारा १ माशे, मुनक़्क़ा १ माशे, मिश्री १ माशे, घी ६ माशे, शहद २ तोले। सबको पीसकर चटनी बनाकर थोड़ी-थोड़ी खानी चाहिए।

हुचकी की दवा नं० २—इलायची १ माशा, वंशलोचन १ माशा, अगर १ माशा, ज़हरमोहरा खताई १ माशा, पोदीना सूखा १ माशा, पीपल ४ रत्ती, शर्बत-अनार २ तोला। सबकी चटनी बनाकर थोड़ी-थोड़ी खानी चाहिए।

हुचकी की दवा नं० ३ (पिलाने को)—पोदीना सूखा ४ माशे, अगर २ माशे, छोटी इलायची छिलके-सहित ४ माशे। सबको ज़रा कुचलकर पाव-भर पानी में पकावे। जब चौथाई रह जाय, ठंडा करके थोड़ी-थोड़ी देर में पिलावे।

जाले और धुंध के लिये सुरमा—शीशे की गोली चलाई हुई १६ माशा, पीपल छोटी ७ माशा। शीशा पत्र करके ज़ीरे की तरह काटकर पीपल डालकर सुरमे की तरह पीस लेवे, रात को सोती बार लगावे। दाँतों में दर्द हो, तो मंजन करे।

बच्चों को पसली चलना—तूतिया १ माशा, रीठा २ माशा। इनकी गोली बाजरे के समान बना ले, माता के दूध में घिसकर पिलावे।

दाँत के दर्द की दवा—पोस्त ताड़, पोस्त बबूल, पोस्त कचनार, पोस्त अनार, पोस्त बेरी, पियाबाँसा, सब १० तोले ८ माशे प्रत्येक। फिटकरी ८ माशे। बायबिड़ंग ८ माशे। एक घड़ा पानी डालकर जोश दे। जब आधा रह जाय तब सोते समय कुल्ली करे। और दो-तीन घंटे पानी से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परहेज़ करे। १५-२० दिन लगातार कुल्ले करे, सिर्फ़ रात को सोती बार ही। कुल्ली करने के बाद ५-६ कुल्ले गरम पानी से करे, पानी ठंडा होने पर थूक दे।

पेट के दर्द की दवा—नमक लाहौरी २ तोला, नमक साँभर १ तोला, नमक काला ६ तोले, नौसादर ८ तोले, अजमोद ७ तोले, मिरच काली ३ तोले, मिरच सफ़ेद ३ तोले, करफ़स ३ तोले, अफ़तीमून ४ तोले, संबुलतीब ४ तोले, हींग ४ तोले, ज़ीरा सफ़ेद १ तोले, ज़ीरा स्याह ४ तोले, दारचीनी १ तोला, लवकुरतम १, ज़ंजबील १ तोला। मुलहटी १ तोला। अनेसू १ तोला। नमक नकछीकनी २६ तोला। गंधक का तेज़ाब ८ तोला। सबको ख़ूब बारीक पीसकर बोतल में भरकर, बोतल का मुँह बंद करके ४० दिन तक ज़मीन में गाड़ दे। बाद में दर्द, भूख, हाज़मे को चार रत्ती से १ माशा तक सुबह को दे, भूख ख़ूब बढ़ती है।

पेट के दर्द का लेप—समुद्रसोख १६ माशा, मैदा लकड़ी २४ माशा, हाजो २४ माशा, तज २४ माशा, मेथी १६ माशा, हल्दी १६ माशा। सबको कूट पानी में मिलाकर पेट में लेप करे। उपले की आग से दूर से सेंके। ऊपर से अरंड के पत्ते बाँध दे। हल्दी की पोटली को अलसी के तेल में भिगोकर सेंके।

हाज़मे और पेट के दर्द की दवा—सौंफ़, काली मिर्च, लौंग, सेंधा नमक, काला नमक, गंधक आँवला-सार, प्रत्येक ३ तोला। अमलबेती ६ माशा, जवाखार ६ माशा, सज्जी गुलाबी ६ माशा, ज़ीरा काला ६ माशा, इलायची सफ़ेद ६ माशा, चकोतरे का छिलका ६ माशा। सबको कूट-पीसकर ३ दिन नींबू के अर्क़ में घोटे, फिर ४ दिन घीकवार के रस में। मात्रा १ माशे से २ माशे तक।

क़ब्ज़ पर—बेल, अजवायन, बच, चीता, हींग भुनी, अतीस, सौंफ़, पादर, चव्य, कुटकी, सेंधा नमक, काला नमक, साँभर बुरारी, बड़ा नोन, मूद, जवाखार, इंद्रजौ, सोंठ, पीपल, मिर्च काली, हड़, बहेड़ा, आँवला, तज, पत्रज, इलायची बड़ी, सब बराबर। सबको पीसकर गर्म पानी से ले। मात्रा १ से ४ माशे तक। अतिसार में छाछ के साथ दे।

पेशाब अधिक आने की दवा—वंशलोचन १ तोला, सालब मिश्री १ तोला, समुद्रसोख १ तोला, तालमखाने १ तोला, सफ़ेद मूसली १० तोले ६ माशे। सबको बारीक पीसकर सबकी बराबर चीनी मिलावे। मात्रा ६ माशे से १ तोला, तथा २ तोला जामुन की शिकंजबीन, अर्क़ गाज़बाँ १५ तोला में मिलाकर साथ लेने से अधिक पेशाब आना बंद हो।

ख़ून शुद्ध करने की दवा—चोबचीनी १ तोला, असगंध १ तोला, मूसली सफ़ेद, लौंग, जावित्री, कहरवा, वंशलोचन १ तोला प्रत्येक। चिड़ियाकंद, शतावर, कौंच के बीज की गिरी, जायफल, अकरका, कुलींजन, केशर, अजवायन, हाजो, मेथी, मस्तगी, गोंद, ढाँक, सत गिलोय, इलायची सफ़ेद, दालचीनी, पत्रज, इलायची बड़ी, कमलगट्टा की मींगी, तोदरी सफ़ेद, ज़ीरा गुलाब का, ज़ीरा काला, मूँगे की भस्म प्रत्येक ८ माशा, बालछड़, अगर, किशमिश १६ माशा, बादाम गिरी ४ तोला, बहमन दोनो १६ माशा, पिस्ता ४ तोले, चिलगोजा ४ तोले, कस्तूरी ३ माशा, उसबा ११ माशे, मोती ६ माशे, वर्क़ चाँदी ६ माशा, वर्क़ सोना १ तोला, अंबर २ माशे, संगयशब ४ माशे, गोखरू बड़े ६ माशे, तालमखाने ६ माशा। सबको बारीक कपड़-छनकर शहद में मिलाकर ४० दिन परहेज़ से खिलावे। मात्रा १ तोले से २ तोले तक।

चतुरसेन शास्त्री

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

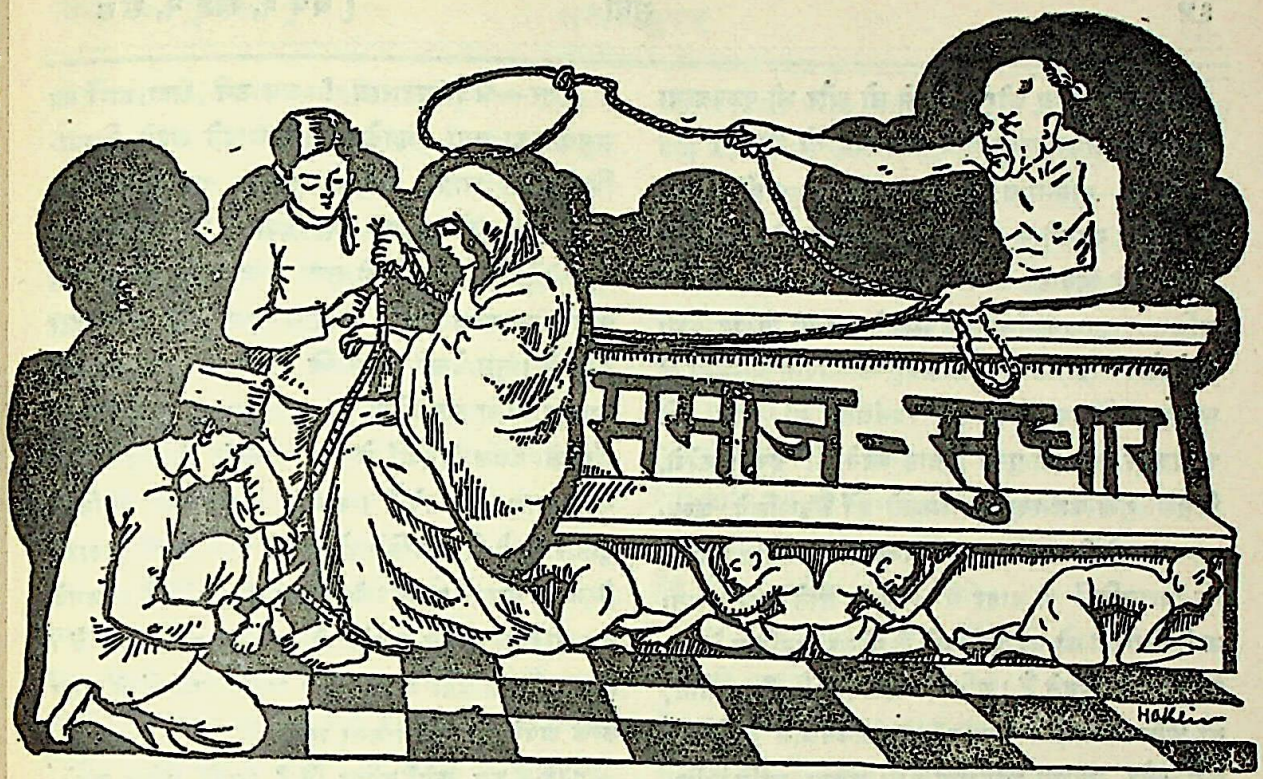

वर्ण-विभाग

(गत अंक से आगे)

प्र—इससे तो वर्णसंकरता फैल जायगी।

उत्तर—वर्णसंकरता तो आजकल है। तुमने वर्णसंकरता का अर्थ ही नहीं समझा है। तुम आजकल सभी स्त्रियों को शूद्र कहते हो, चाहे वह ब्राह्मण की स्त्री हो या क्षत्रिय की या वैश्य की। अब बताओ, इस हिसाब से वर्णसंकरता से कौन बचेगा? वस्तुतः वर्णसंकरता का तात्पर्य यह है कि माता-पिता गुण, कर्म और स्वभाव से भिन्न-भिन्न हों। आजकल प्रायः इसी प्रकार के विवाह होते हैं, जिनमें वर तथा वधू के गुण, कर्म और स्वभाव भिन्न-भिन्न होते हैं; क्योंकि जो ब्राह्मण कहलाते हैं, उनमें दूकान करनेवाले ब्राह्मण, पानी पिलानेवाले ब्राह्मण, खेत जोतनेवाले ब्राह्मण, विद्या पढ़नेवाले ब्राह्मण, सेना में नौकरी करनेवाले ब्राह्मण, सभी सम्मिलित हैं। यही क्षत्रियों, वैश्यों आदि का हाल है। केवल नाम पूछ लेते हैं। गुण, कर्म-स्वभाव पर कोई भी ध्यान नहीं देता। इसलिये वस्तुतः आजकल की परंपरा वर्णसंकरता उत्पन्न कर रही है। जिन गोत्रों के विचार से प्राचीन काल में विवाह होते थे, उनका भी लोप हो गया है। केवल नाम रह गया है। इसलिये वर्णसंकरता का राग अलापना या उसकी शंका करना व्यर्थ है। वस्तुतः विवाह के गौरव का आधार तो रज और वीर्य की शुद्धता थी। परंतु आज रज और वीर्य का ठीक ही क्या रहा। जिन उच्च जातियों में अनेकों रंडीबाज़, व्यभिचारी तथा अन्य कुकर्म करनेवाले उपस्थित हों, उनका वीर्य क्या शुद्ध ही बना रहेगा? अब तो रज-वीर्य की शुद्धता के स्थान में केवल मिथ्याभिमान रह गया है। उसे लेकर चाटते रहो, और अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनते रहो। कौन-सी ऊँच जाति ऐसी है, जिसमें रंडीबाज़ों का अस्तित्व न हो? आप कैसे कह सकते हैं कि उनका वीर्य शुद्ध है; क्योंकि उनमें अनेक प्रकार के भयंकर रोग, इन्हीं कुकर्मों के कारण, होते हैं, फिर भी उनकी संतान शुद्ध-कुलोत्पन्न होने का दावा करती है। इससे अधिक विचित्रता हो ही क्या सकती है? यह रोग उस समय तक न छूटेगा, जब तक लोग ठीक गुण-कर्म-स्वभाव को देखकर विवाह न करेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रश्न—स्वतंत्र छोड़ देने से तो और भी कुव्यवस्था होगी। आजकल नाम-मात्र का बंधन तो भी है।

उत्तर—नाम-मात्र के बंधन से कुछ नहीं होता। इस बंधन का तो न होना ही श्रेयस्कर है। जब स्त्री-पुरुषों को विवाह करने की स्वतंत्रता होती है, तो अधिकतर गुण-कर्म-स्वभाव मिलने पर ही विवाह हुआ करते हैं। यदि लड़के-लड़कियों को अपनी प्रसन्नता के अनुकूल विवाह करने की स्वतंत्रता दी जाय, तो अधिकतर वही स्त्री-पुरुष विवाह करने की इच्छा करेंगे, जिनके गुण-कर्म-स्वभाव मिलते हों। इसलिये कुव्यवस्था न होगी। आजकल कुव्यवस्था का कारण यह है कि बिरादरियों से बाहर तो विवाह होते नहीं। अतः उसी बिरादरी की चहारदीवारी के भीतर अनमिल-बेजोड़ विवाह करने पड़ते हैं। यदि ये चहारदीवारियाँ टूट जायँ, तो अधिक जोड़े। समान गुण-कर्म-स्वभाव के मिलने लगें, और गृहस्थी शांतिमय हो। मिथ्या जाति-अभिमान भी न रहे। छूत-छात-रूपी सामाजिक अत्याचार भी लुप्त हो जाय, और समस्त देश सुखी हो जाय।

प्रश्न—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र-रूपी चार विभाग तो तुम भी करना चाहते हो। क्या यह चहारदीवारियाँ थोड़े दिनों में आजकल की चहारदीवारियों के समान सुदृढ़ न हो जायँगी?

उत्तर—हम सुदृढ़ चहारदीवारियों के पक्ष में नहीं हैं। हम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की पहचान तो केवल व्यवसाय आदि के लिये रखना चाहते हैं। जैसे, आजकल भी डॉक्टरों का अलग समुदाय है, अध्यापकों का अलग, दूकानदारों का अलग, सैनिकों का अलग। इसका यह तात्पर्य नहीं कि सैनिक का लड़का डॉक्टर न हो सके, या डॉक्टर का लड़का अध्यापक न बन सके। ऐसे ही हमारी व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण का लड़का क्षत्रिय और क्षत्रिय का ब्राह्मण हो सकेगा। यही रीति प्राचीन वैदिक काल में थी, जैसे विश्वामित्र क्षत्रिय-कुलोत्पन्न होते हुए भी ब्राह्मण कहलाने लगे।

प्रश्न—हमको यह पसंद नहीं कि नीच जाति के लोग हमारे साथ बैठें। जिनको छूकर आज तक नहाते थे, उनको तुम बराबर बिठालते हो। यह अनर्थ तो हमसे देखा नहीं जाता!

उत्तर—अजी महाराज! अब उन अत्याचारों का समय चला गया, जिनके कारण आपने अपने मिथ्या अभिमान में आकर देश को चापर कर दिया, और समस्त देश को अछूत बना दिया। जिस प्रकार तुम अपने ही हिंदू-भाइयों को छूना पसंद नहीं करते, उसी प्रकार पाश्चात्य देशों के लोग तुमसे भी कुव्यवहार करते हैं। तुम देखते नहीं कि जिस प्रकार चमार तुम्हारा चौका छूत होता है, इसी प्रकार आफ्रिका में अँगरेज़ केवल हिंदुओं के वहाँ बसने से अपने देश को नापाक समझते हैं। उनकी रेलगाड़ियों के डिब्बे तुम्हारे बैठने से अपवित्र हो जाते हैं। उनके जहाज़ के कमरे तुम्हारे घुसने से अशुद्ध हो जाते हैं। उनका देश तुम्हारे मकान बनने से दूषित हो जाते हैं। इसका कारण यही है कि तुमने अपने भाइयों से घृणा करके अपने को दूषित बना रक्खा है।

प्रश्न—हम कहाँ दूषित हैं? हमको दूषित करने वाला दूषित है। हम तो नित्य प्रति स्नान करके शौच जाते, तो जनेऊ कान पर चढ़ा लेते और प्रातःकाल ही शुद्ध होकर मंदिर में शिवजी पर जल चढ़ाते हैं। रास्ते में किसी को छूते तक नहीं। भोजन स्वयं बनाकर खाते हैं। लकड़ियाँ तक धोकर चौके में ले जाते हैं। तब भी तुम हमको अपवित्र बताते हो।

उत्तर—अजी श्रीमान्जी, बुद्धि को ठिकाने कीजिए। इन बातों से आदमी पाक नहीं कहलाया जा सकता। तुम्हारे भीतर तो मिथ्याभिमान, स्वजाति-घृणा और सहानुभूति-अभाव-रूपी महामल भरे हुए हैं। जिन लोगों को तुम नीच जाति कहकर छूने से इनकार करते हो, वही अपनी जाति और धर्म को छोड़कर जब मुसलमान या ईसाई हो जाते हैं, तो तुम्हारे सिरों पर चढ़ते हैं। तुम्हारे भाई-बंदों को ख़ानसामा रखते हैं। उनको जूतों की ठोकर देते हैं। उनसे हर प्रकार की सेवा लेते हैं। तुम्हारे मंदिरों में रंडियाँ नाचती हैं। मुसलमान अटारियों पर बैठकर नौबत बजाते और हुक़्क़ा गुड़गुड़ करते हैं, और तुम अब भी पंडितों को झाड़ते जाते हो। तुमको लज्जा नहीं आती। तुम्हारे मंदिरों में घी के साथ मनों चर्बी तुम्हारे ही बनिए मिलाकर बेच देते हैं, तब भी तुम पवित्र बने रहते हो!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोचो तो सही, जिसका मन पवित्र न हो, वचन पवित्र न हो, वह पवित्र ही कैसे हो सकता है ? क्या जब तुम मंदिरों में पूजा करने जाते हो, और रंडियाँ नाचा करती हैं, तब भी तुम्हारा मन शुद्ध ही रहता है ? तुम्हारे ही कुव्यवहार से तंग आकर सैकड़ों हिंदू ईसाई-मुसलमान होते जाते हैं, और उनके भोजन के लिये इतना मांस बाज़ारों में बिकता है कि उसके बहुत-से परमाणु तो वायु द्वारा तुम्हारे भी नासिका-गृह में प्रवेश कर जाते होंगे। याद रक्खो, कोई व्यक्ति पवित्रता का दावा नहीं कर सकता, जब तक जाति के अधिक लोग पवित्र न हों। इनको तुमने पहले से ही अपवित्र बना रक्खा है। तुम्हारी पवित्रता के विषय में हम एक कहानी कहते हैं, जो तुम्हारी दशा को भली प्रकार प्रकट करती है। एक पंडित थे। वह तुम्हारी तरह बहुत पाक रहते थे। एक बार एक चुहिया ने उनकी उँगली पर पेशाब कर दिया। वह लुहार के पास गए, और कहने लगे—"मेरी उँगली नापाक हो गई। इसे काट दे।" लुहार ने बहुत समझाया कि "महाराज! साबुन से धो डालो। काटने की ज़रूरत नहीं।" परंतु पंडितजी ने न माना। कहने लगे—"चल बे शूद्र! तू क्या जाने, हमारी उँगली नापाक हो गई। इससे श्रीकृष्णजी की मूर्ति पर फूल कैसे चढ़ावेंगे?" लुहार ने परवश होकर कहा—"अच्छा पंडितजी, ज़रा घन पर उँगली रखिए।" लुहार ने एक छोटी चोट ही लगाई थी कि पंडितजी पीड़ा के मारे चिल्लाने लगे, और मनुष्य के स्वभाव के अनुकूल उँगली झट मुँह में जा लगी। इस प्रकार जिस उँगली को वह शरीर में रखना भी पसंद नहीं करते थे, वह, मूत्र-युक्त, बिना धुली हुई, मुँह के भीतर पहुँच गई। यही तुम्हारा हाल है। जब तक एक मनुष्य चमार या भंगी है, जब तक वह हिंदू कहलाता और तुमको हाथ जोड़कर नमस्ते करता है, जब तक वह राम-कृष्ण के प्रति श्रद्धा करता है, जब तक वह गो-रक्षा करता है, तब तक वह नीच है, अछूत है, घृणा का पात्र है, मंदिर में घुस नहीं सकता, पाठशालाओं में जा नहीं सकता। परंतु ज्यों ही वह मुसलमान या ईसाई बन गया, तभी आप उससे हाथ मिलाते, उसका बेचा हुआ शाक खाते, कहीं-कहीं तो उसके बनाए बताशे भी खा लेते हैं। यदि वह अधिक बलवान् हो जाय, तो तुम्हारे मंदिरों को भी तोड़कर तुम्हारे इष्टदेवों की मिट्टी पलीद कर सकता है। देखा नहीं, गुलबर्गा में मुसलमानों ने क्या किया ? मलाबार में मोपलों ने क्या किया ? और, अन्यत्र लोग क्या कर रहे हैं ? ये सब तुम्हारे अत्याचारों से तंग आकर मुसलमान हो गए हैं। पहले ये भी तुम्हारी ही जाति के अंग थे। यदि ऐसी ही तुम्हारी पवित्रता की डींग रही, तो याद रक्खो, समस्त हिंदू-जाति नष्ट हो जायगी, और तुमको पकड़कर लोग जबरन मुसलमान बना लेंगे, या ऐसी परिस्थिति कर देंगे कि तुम पवित्र न रह सकोगे।

प्रश्न—आजकल अँगरेज़ी पढ़े-लिखे लोगों में खान-पान की मर्यादा उठती जा रही है। बोर्डिंगहाउसों में लड़के एक दूसरे का छुआ खा लेते हैं। लोग होटलों में खाने लगे हैं। क्या इससे हिंदू-जाति की उन्नति हो रही है ? हम तो समझते हैं कि भ्रष्टता आ रही है। लोग मद्य-मांस आदि अभक्ष्य पदार्थों से इतनी घृणा नहीं करते, जितनी पहले करते थे। इसके साथ ही जाति-बिरादरी के भाव कम नहीं हुए।

उत्तर—आपका आक्षेप किसी-किसी अंश में ठीक है, सर्वांश में नहीं। आजकल अँगरेज़ी पढ़े-लिखे लोग जो सुधार करते हैं, वह विलास-प्रियता के कारण करते हैं, सुधार-प्रियता के लिये नहीं। जो लड़के कॉलेजों के बोर्डिंगहाउसों में एक दूसरे के साथ खा लेते हैं, वे यह सोचकर थोड़े ही करते हैं कि यह उनकी जाति-बिरादरी को सुधारेगा। उनमें इतना साहस नहीं होता कि शिक्षा की समाप्ति पर उन्हीं नियमों का अपनी जाति में प्रवेश या प्रचार कर सकें। हमने देखा है कि जब ये लड़के बड़े होकर गृहस्थी में प्रवेश करते हैं, तो उस समय समस्त सुधारों को भूल जाते हैं। और जो घोर-से-घोर अत्याचार उनकी जाति-बिरादरी के अन्य लोग करते हैं, वह ये भी करते हैं। भेद ही क्या होता है ? इसका मुख्य कारण यह है कि अँगरेज़ी शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा तो दी नहीं जाती। उनको अपना प्राचीन दृष्टि-कोण भी नहीं बतलाया जाता। उन बेचारों को यह भी पता नहीं चलता कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदू-जाति का प्राचीन आदर्श क्या था। हिंदू-जाति स्वयं इतनी बिखरी अवस्था में है कि पचास पंडित पचास बातें कहते हैं। इसलिये कुछ उनकी सुनी-सुनाई और अँगरेज़ों की सम्मतियाँ मिलाकर जो कुछ उनको मालूम होता है, उसे वे ग्रहण कर लेते हैं। पाश्चात्य सभ्यता का आदर्श यही है कि जब तक जियो, सुख से जियो। यही आदर्श इन्होंने सीखा है। इसलिये इनके आचरण की प्रथा यह है कि जब कॉलेज में रहो, एक दूसरे के साथ खाते रहो, जिससे कोई यह न कहे कि यह बहुत पकाई करते हैं। जब घर जाओ, तो कूदकर चौके में जाओ, जिससे वहाँ कोई भ्रष्ट न कहे। होटलों में अवसर पड़े, तो वहाँ मुसलमान ख़ानसामाओं के हाथ का खा लो, परंतु जब घर आओ, तो अपने भाइयों के हाथ का भी न खाओ। इस प्रकार मान तो सब जगह बना रहेगा।

शाम को खूब ही पी सुबह को तौबा कर ली;
रिंद के रिंद रहे हाथ से जन्नत न गई।

जिन लोगों ने खान-पान का विचार छोड़ भी दिया है, उनमें से भी बिरादरी का भाव नहीं गया। उनके भीतर अपनी संकुचित जाति का पक्षपात वैसा ही मिलता है। वह अपनी जाति के लोगों का पक्ष करते हैं, अन्य का नहीं। इससे कुछ उन्नति नहीं हो सकती। इससे जब तक दिलों के भीतर जाति-बिरादरी का पक्ष विद्यमान है, तब तक खान-पान की बाहरी एकता आडंबर-मात्र ही रहेगी; क्योंकि इसमें उस सहानुभूति का अभाव रहेगा, जो शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों को जोड़ती है।

प्रश्न—फिर तुम खान-पान की छूत-छात को क्यों मिटाना चाहते हो?

उत्तर—हम यह नहीं कहते कि जो जातियाँ एक दूसरे का छुआ खा लेती हैं, वे आपस में प्रेम भी करती हैं। जैसे फ्रांस के फ्रिरंगी और इँगलैंड के अँगरेज़ कई सौ वर्षों से एक दूसरे के शत्रु चले आते थे; परंतु वे एक दूसरे के हाथ का खा लेते थे। पिछली लड़ाई में जर्मन और अँगरेज़ एक दूसरे के परम शत्रु थे। फिर भी एक दूसरे का छुआ खाना खाने से उन्हें परहेज़ न था। परंतु इसमें भी संदेह नहीं कि जो एक दूसरे के छुए हुए खाने से परहेज़ करते हैं, वे कभी एक नहीं हो सकते। उनमें परस्पर घृणा हो ही जाती है। नियम ऐसा है कि जो एक दूसरे का छुआ खा लेते हैं, वे चाहे शत्रु भी हों, परंतु जो नहीं खाते, वे कभी मित्र नहीं हो सकते। इसलिये आवश्यकता है कि यदि हिंदू-जाति एक सूत्र में बँधना चाहती है, तो उसे न केवल प्रत्येक हिंदू के हाथ का खा लेना चाहिए, किंतु जाति-बिरादरी का भाव भी दूर कर देना चाहिए। खान-पान का केवल यह विचार अवश्य रखना चाहिए कि अभक्ष्य पदार्थ कभी न खाएँ और जो अपवित्र रहता हो, उसके हाथ का न खाय। यदि वह पवित्र रह सके, तो उससे घृणा न करें। आजकल यह होता है कि अपवित्र ब्राह्मण के हाथ का खा लेते हैं, और पवित्र कहार के हाथ का नहीं। हमने बहुत-से ब्राह्मण रसोइयों को बड़ा मैला रहते देखा है, और बहुत-से कहारों को शुद्ध। तुम यह नियम कर लो कि जो शुद्ध रहेगा, उसी से खान-पान का परस्पर व्यवहार कर सकेंगे, तो कुछ हानि न होगी। इसमें संदेह नहीं कि बहुत-से एक थाली में खानेवाले भी शत्रु हो जाते हैं, जैसे दारा और औरंगज़ेब। परंतु शत्रुता का एक ही कारण तो नहीं है। धन, धान्य, भूमि, स्त्री, स्वार्थ आदि बहुत-से कारण हो सकते हैं। परंतु ये कारण व्यक्तिगत हैं। जातिगत कारण बड़े भयंकर होते हैं। वे दो मिलनेवाले दिलों को भी नहीं मिलने देते। इसलिये सबसे पहला कर्तव्य यह है कि जातिगत द्वेष को दूर किया जाय। देखो, जब सन् १९२० में मोपलों ने मलाबार में हिंदुओं पर आक्रमण किया, तो हिंदुओं में कुछ परिया-जाति के लोग थे, जिनको नीच कहा जाता था। इनके दर्शन से उच्च जातियाँ नापाक हो जाती थीं। जिस गली में एक नीच जाति का पुरुष चल सकता था, उसमें ब्राह्मण नहीं चल सकते थे; क्योंकि उनके छायापात-मात्र से ब्राह्मणों को भ्रष्ट होने का भय था। जब मोपलों का नीच जातियों पर आक्रमण हुआ, तो ब्राह्मण लोग अपनी पवित्रता की रक्षा करने के कारण उनको बचाने न गए। जब मोपलों ने ब्राह्मणों पर हमला किया, तो नीच-जाति के लोग ब्राह्मणों के घर में न घुस सके कि कहीं ब्राह्मण देवता का घर नापाक न हो जाय। इस प्रकार मुसलमान मोपलों ने ऊँच-नीच सबका बड़ी आसानी से संहार किया। सैकड़ों के लिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

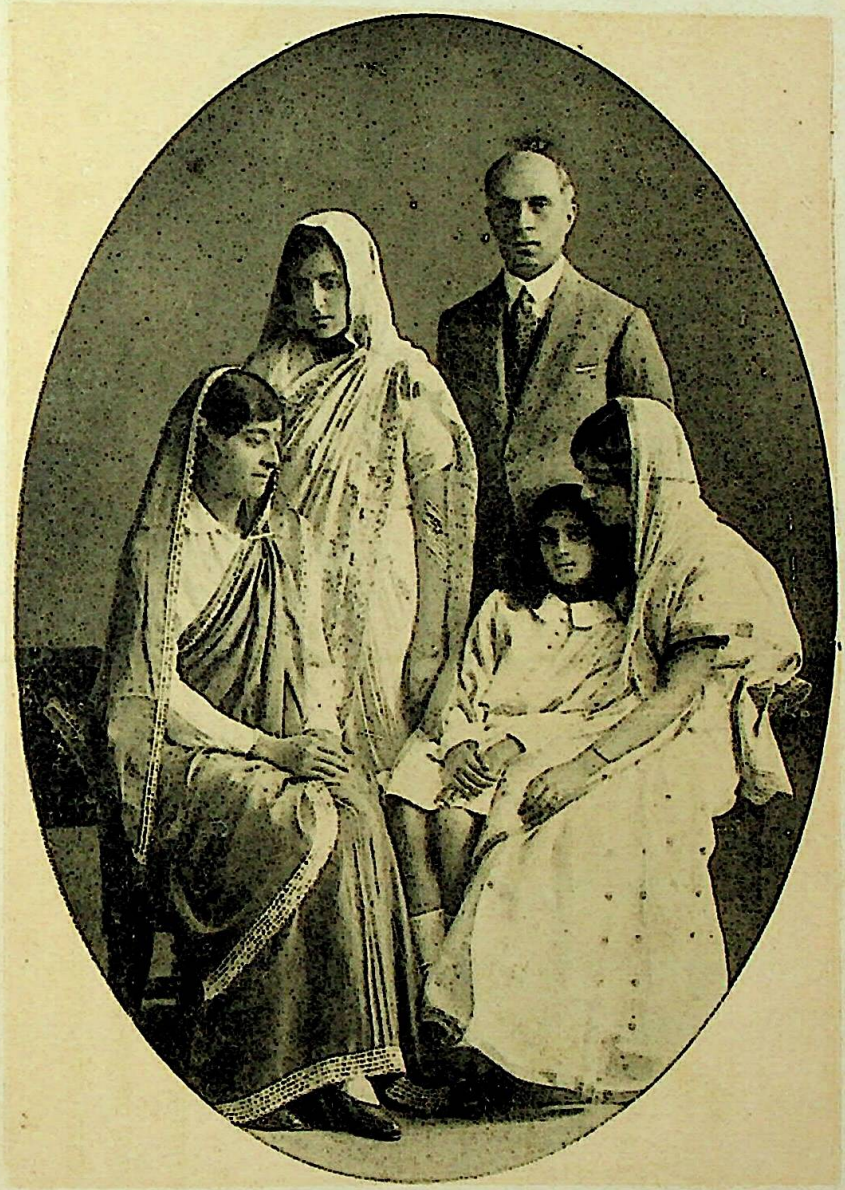

सकुटुंब पं० जवाहरलाल नेहरू

खड़े—कुमारी कृष्णा नेहरू (छोटी बहन) और पं० जवाहरलाल नेहरू

बैठी—श्रीमती कमला नेहरू (पत्नी), इंदिरा (पुत्री) और श्रीमती स्वरूपकुमारी पंडित (बहन)

Ganga Fine Art Press, Lucknow

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्व० श्रीचेतनादेवी
(रायबहादुर लाला सीताराम बो० ए० को धर्म-पत्नी)

गृहिनी गुनवारी प्रिया जगकुल-तिया ललाम ;
जीवन में ज्यों चेतना देवि चेतना नाम ।

× × ×

राम-धाम गइ चेतना लहि निज अमर सरूप ;
जियत: चेतना-हीन अब अवध-निवासी "भूप" ।

श्रीअवधवासी सीताराम "भूप"

वीर रमणी-रत्न
श्रीमती शान्नोदेवी

[जालंधर नगर के सुप्रसिद्ध कन्या-महाविद्यालय की प्रधानाध्यापिका । आप एक दृढ़प्रतिज्ञ वीर रमणी-रत्न हैं । आपने अपने विद्यालय के लिये १,००,०००) एकत्र करने का प्रण किया था, जो आपने पूर्ण भी कर डाला ! इसके लिये आपको भारत-भ्रमण ही नहीं, आफ्रिका तक की यात्रा करनी पड़ी थी !!]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काटकर कुओं में डाल दिए। सैकड़ों को मुसलमान बना लिया। मंदिरों में गोमांस डाला। स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया। परंतु अब भी दक्षिण के ब्राह्मणों का वही हाल है। वहाँ ऐसी जातियाँ हैं, जिनके दर्शन से उच्च जातियाँ नापाक हो जाती हैं। इसलिये यदि किसी नीच जाति के पुरुष या स्त्री को भीख माँगनी होती है, तो वह कपड़ा सड़क पर रखकर स्वयं वृक्ष या झाड़ियों की आड़ में छिप जाता है। ऊँच जाति के दानी पुरुष अन्न के दाने कपड़े में डालकर चल देते हैं। भिखारी उस समय तक उन दानों को लेने के लिये बाहर नहीं आ सकता, जब तक दानी महाशय चले न जायँ; क्योंकि यदि वह पहले चला आवे, तो दानी महाशय को सूतक लग जाय। इसलिये जब तक वह भिखारी बाहर आवे उस समय तक कौए, चिड़ियाँ और अन्य जीव उस अन्न का बहुत कुछ भाग खा जाते हैं। सब हिंदू कहलाते हैं। ये सब एक शरीर के अंग हैं। परंतु एक अंग दूसरे अंग से ऐसी सहानुभूति रखता है, जो पशु-पक्षी भी नहीं रखते। ब्राह्मण देवता कुत्ते को देखकर अपवित्र नहीं होते। मल पर बैठकर उड़ आनेवाली मक्खियाँ उनके मुख या भोजन को अपवित्र नहीं कर सकतीं, सुअर के दर्शन से उनका धर्म भ्रष्ट नहीं होता; परंतु उन्हीं की जाति के मनुष्यों से वे अपवित्र हो जाते हैं। यह सब जाति-बिरादरी का प्रभाव है। यह सब जन्म से वर्ण मानने का प्रभाव है। इस जाति-बिरादरी के पाखंड के दोष कहाँ तक वर्णन किए जायँ। हे पतित हिंदू जाति! तुझसे पतित संसार में कौन होगा? अरे तू तो अपने भाइयों को कुत्ते-बिल्लियों से भी नीच समझती है। तभी तो कुत्ते-बिल्ली तेरा मांस नोचकर खाए जा रहे हैं।

गंगाप्रसाद उपाध्याय

बिलकुल नई पुस्तक ! बिलकुल नई पुस्तक !!

देवी शकुंतला

इस पुस्तक के लेखक हैं अध्यापक हरिप्रसाद द्विवेदी "श्रीहरि"। यह उसी भरत-जननी शकुंतला का चरित है, जिसका वर्णन महाभारत में महर्षि वेदव्यास ने और अभिज्ञान शकुंतलम् में महाकवि कालिदास ने किया है, सबके पढ़ने योग्य पुस्तक है। कन्याओं और महिलाओं के लिये विशेष उपयोगी और आनंदवर्द्धक है। मूल्य लागत-मात्र सादी ॥=), रंगीन जिल्द ॥।=), सजिल्द १=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२३-२५, लाटूश रोड, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

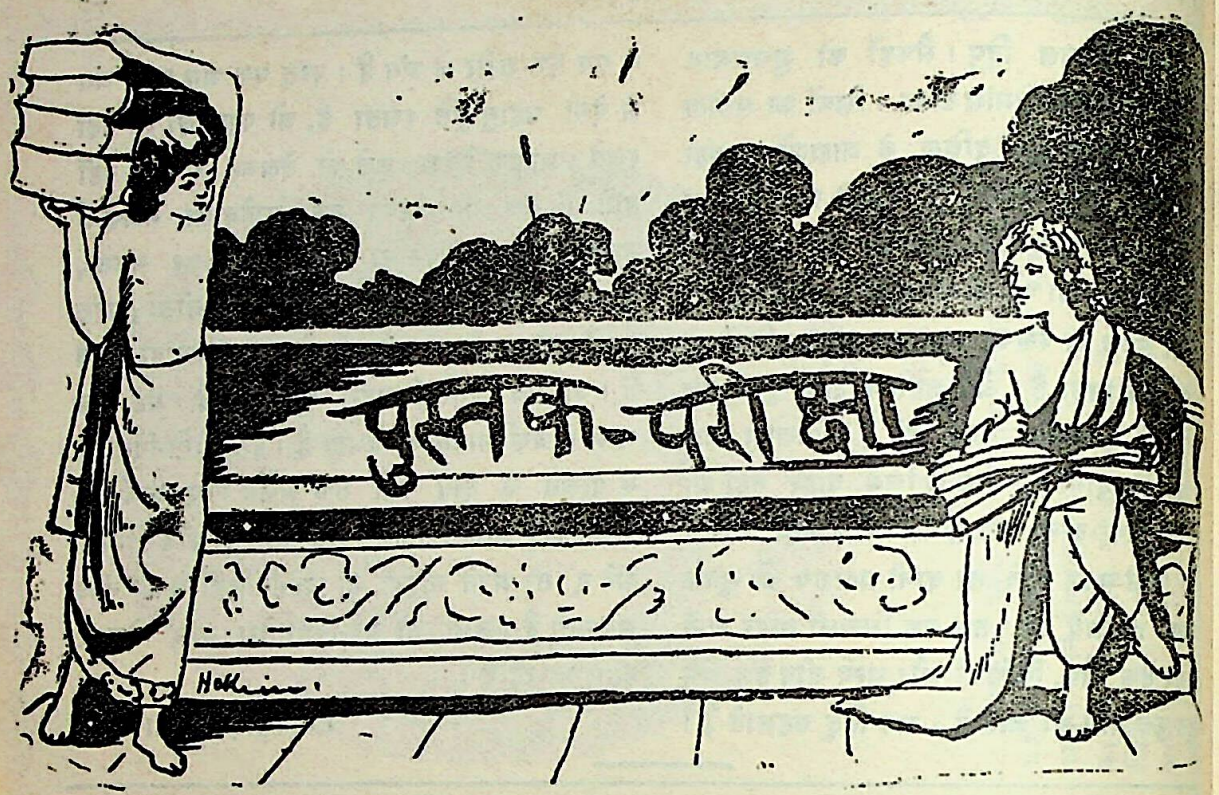

१. कोश

मातृभूमि अब्दकोश (१९२९)—संपादक, श्रीयुत रघुनाथ विनायक धुलेकर एम्० ए०, प्रकाशक, बी० डी० धुलेकर बी० ए०, मातृभूमि-कार्यालय, झाँसी; मूल्य ४) ; सजिल्द ; पृष्ठ-संख्या ५२४ ; आकार बड़ा, प्रति पृष्ठ दो कॉलमों में ; अक्षर छोटे ; काग़ज़ तथा छपाई साधारणतः उत्तम ।

भारतवर्ष के संक्षिप्त इतिहास से आरंभ कर, मनु-मन्वंतर, युग, वर्ष, ऋतु आदि, जगत् के भिन्न-भिन्न स्थानों का समय, भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति, अँगरेज़ी शासन, भारतीय शासन का स्वरूप, अँगरेज़ी शासन की शृंखला, गवर्नर आदि के नाम, कौंसिल के सदस्य, प्रांत-विभाग, सेना, पुलीस, भारत की संपत्ति, आय-व्यय, सरकारी आमदनी, मालगुज़ारी, रेलवे आदि का वर्तमान प्रबंध ; भारत के धर्म तथा संप्रदाय, भारत में शिक्षा-प्रचार, युनिवर्सिटियाँ, राष्ट्रीय विद्यालय; धार्मिक, साहित्यिक तथा सामाजिक संस्थाएँ; आज तक के राजनीतिक परिवर्तन आदि, समाज-संस्कार, सांप्रदायिक संगठन, उनके भिन्न-भिन्न रूप, भारत के प्रसिद्ध व्यक्ति राजनीतिक संस्थाएँ, भारत के देशी राज्य, भारतीय जन-समाज, वर्तमान हिंदी-साहित्य, मज़दूर-आंदोलन, भारतवर्ष के उद्योग-धंधे आदि-आदि आवश्यक प्रायः कुल विषयों का इस ग्रंथ में समावेश कर दिया गया है। कोश की उपयोगिता इससे बहुत अच्छी तरह सिद्ध हुई है । इससे एक ही आधार से बहुत कुछ संचित ज्ञान-राशि मिल जाती है। लिखने का ढंग भी अच्छा है । पुस्तक सर्वथा प्रशंसनीय है। पुस्तकालयों के लिये बड़े महत्त्व की है। जो लोग एक ही आधार से बहुत कुछ सीख लेना चाहते हों, वे इस पुस्तक को अवश्य देखें। हिंदी में ऐसी पुस्तक हमारे देखने में नहीं आई। पुस्तक की भाषा मार्जित है। इसके लिखने में लेखक के परिश्रम का परिचय मिलता है। इसके लिये लेखक को साधुवाद।

× × ×

२. उपन्यास

काला पहाड़—अनुवादक, पं० जनार्दन झा "परमेश" ; प्रकाशक, आनंद-पुस्तकमाला-कार्यालय, पूर्णिया ; मूल्य २।) ; छपाई तथा काग़ज़ बहुत साधारण ; पृष्ठ-संख्या ४०० से कुछ ऊपर ।

काला-पहाड़ का आत्मचरित बंगाल में बहुत प्रसिद्ध है। यह पहले हिंदू थे। फिर मुसलमान हो गए थे। मुसलमान होने के बाद इन्होंने देव-मूर्ति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर बड़ा अत्याचार किया था। इसका कारण हिंदुओं की संकीर्णता का बदला लेना था। हमने बँगला में काला-पहाड़ नाटक देखा था। यह पुस्तक उपन्यास का अनुवाद है। नाटक से और इससे बड़ा अंतर है। कई जगह घटनाएँ भी नहीं मिलतीं। नाटक में और है, उपन्यास में और। नाटक में धार्मिक काला-पहाड़ धोखे से धर्म-भ्रष्ट होते हैं। अनुवाद अच्छा हुआ है। पढ़ने में चित्त लगता है। कथा-क्रम रोचक है ही। उपन्यास में बढ़ाया बहुत गया है। कल्पना से भी बहुत कुछ सहारा लिया गया है।

× × ×

३. गद्य-काव्य

भ्रमित पथिक—लेखक, पं० सद्गुरुशरण अवस्थी बी० ए०; प्रकाशक, अभ्युदय-प्रेस, प्रयाग; मूल्य १॥); छपाई-काग़ज़ साधारण; पृष्ठ-संख्या ३०० के लगभग।

अपने प्रयास पर लिखते हुए अवस्थीजी कहते हैं—"मैंने सारी पुस्तक समाप्त हो जाने के पश्चात् पढ़ी, तो मुझे एक प्रकार से नई-सी मालूम हुई। कई स्थल तो ऐसे प्रतीत हुए कि मानो मैंने कभी उन्हें पढ़ा ही नहीं। संभव है, पाठकों को इस पर सहसा विश्वास न हो (ऐसा ही हमारा भी अनुमान है।—"निराला") मुझे स्वयं भी अपनी विस्मरण-बुद्धि पर हँसी आती है (आपको स्वयं भी हँसी आती है?—क्यों न आवे, जब कि आप भी गद्य-काव्य लिखनेवाले निकले।—"नि०") कुछ स्थल तो मुझे ऐसे मिले, जिनका प्रसंग बार-बार स्मरण करने से उनकी याद आ गई ("आ गई"? "आई" नहीं, गद्य-काव्य ठहरा।—"नि०") परंतु कुछ भागों का तो बिलकुल स्मरण ही नहीं आया (कैसे आता? आप गद्य-काव्य लिख रहे थे या दिल्लगी कर रहे थे?—"नि०") वे ऐसे नए प्रतीत होते थे, मानो उनका लेखक मैं हूँ ही नहीं—यह इसलिये नहीं कि वे स्थल बहुत सुंदर अथवा कला की दृष्टि से अत्युत्तम हैं (इस तरह अपने मुँह मियाँ-मिठ्ठू वही बनते हैं, जिन्हें कला का बिलकुल ज्ञान नहीं।—"नि०") वरन् इसलिये कि मुझे उनमें स्वकीयता का सर्वथा अभाव-सा प्रतीत होता था। ("अभाव-सा" बिलकुल अभाव नहीं तथा कहीं-कहीं ख़ुदा की छाप पड़ी है। मेरी समझ में तो बिलकुल अभाव है, और पूरी किताब स्वर्गीय आत्मा ने लिखी है, आप भावावेश के मारे बेहोश हो गए थे और आप-को यंत्र बनाकर स्वर्गीय आत्मा ने यह किताब लिख दी—उन्हें हिंदी में गद्य-काव्य का उद्धार करना था—धन्य हैं आप, धन्य हैं!—"नि०")

आपके आदरणीय मित्र, आप ही की तरह कानपुर-सनातनधर्म-कॉलेज के एक दूसरे प्रोफ़ेसर, पं० हरदत्त शर्मा एम्० ए० भी बहुत बहके हैं। पढ़िए—"हमारे पथिक भी आटा ही खाते थे, कुछ भूसा तो फाँकते न थे, जो कामोद्यान से बिना केलि किए निकल जायँ ("जायँ" या "जाते"? यह एक प्रोफ़ेसर की भाषा है, जो आर्ट में मास्टर हैं। दूसरी ग़लती, क्या भूसा फाँकने या खानेवाले [बैल] कामोद्यान से बिना केलि किए ही निकल जाते हैं?—"नि०")

ज़रा इस भ्रमित पथिक की भाषा देखिए—

"परिस्थितियाँ नितांत परिवर्तित प्रतीत होने लगीं। मेरी स्थिति उस स्फुटित-उद्बोधित, अर्द्ध-निद्रित, स्वल्प-मुकुलित-नयन-व्यक्ति की भाँति थी, जिसका सूक्ष्मतम कौशेयतंतुनिर्मित, सद्यः अनुभूत स्वप्नजाल उद्बोधन के झटके से उलझ गया हो। स्मरण-मंदिर अंधकारमय था। चिरानुभूति क्रीड़ा-स्थली के पूर्व-परिचित अभिनेताओं के नवीन संस्करणों का ज्ञान भी मुझे न था। सौख शायनिकों को भी मैं पहचान न सका। हाँ, एक सहचरी का विस्मरण न हुआ था। उसी ने इस नवीन संस्करण को अर्वाचीन वातावरण के प्रांगण में नृत्य करने के लिये पुष्ट किया। मेरी निरंतर अटनशीलता ही इस सहचरी की प्रसवकारिणी है।" (और पैरों की पीड़ा उसकी गर्भ-पीड़ा रही होगी?—"नि०")

देखा आपने यह गद्य-काव्य? यह हमारे गदाधर के गद्य-काव्य से बढ़ा-चढ़ा है। गदाधर आजकल विशेषांक का संपादन करने लगे हैं, और यह सब गद्य-काव्य के बल पर।

आजकल दुनिया बहुत दूर चली गई है। पर हिंदी में अभी ऐसी ही कलाबाज़ियाँ होती रहती हैं। पुस्तक किसी काम की नहीं। "जितनी सुंदरियों ने मुझे छला है, वे सब डाकिनी थीं"—"चार पइसे की जलेबी देव"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का संस्कार इतनी शीघ्रता से छूट जायगा ? प्लॉट क्या तमाशा है ! सहस्त्ररजनी के पढ़ने से आख़िर आनंद तो मिलता है; यहाँ तो स्काथर गद्य-काव्य है—चारो तरफ़ गद्गदाता हुआ।

× × ×

४. पद्य

कबीर-ग्रंथावली—संपादक, बाबू श्यामसुंदरदास बी० ए०; प्रकाशक, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग; मूल्य ३); छपाई-सफ़ाई उत्तम; पृष्ठ-संख्या चार सौ से कुछ ऊपर; आकार बड़ा; काग़ज़ साधारण।

भूमिका के साथ एक प्रस्तावना सत्तर से कुछ ऊपर सफ़े की है। बाबू श्यामसुंदरदासजी ने जैसा लिखा है, उससे मालूम हुआ, काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा में २ प्रतियाँ हस्त-लिखित थीं। जिनमें ३२० वर्ष का एक दूसरी से अंतर होते हुए भी पाठ-भेद ज़्यादा न था। हालवाली में पुरानी से १३१ दोहे और ५ पद अधिक थे। अस्तु, इनके आधार पर एक संग्रह के निकालने का निश्चय किया गया। पहले यह कार्य पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय के सिपुर्द किया गया था। पर उन्हें समय नहीं मिला, अ आपने परिश्रम करके यह संग्रह छपाया है। संग्र कठिन शब्दों के अर्थ दे दिए जाते, तो अच्छा होता। शायद आपको इतने परिश्रम के लिये समय न मिला।

× × ×

राष्ट्रीय डंका अथवा स्वदेशी खादी—संपा श्रीचंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु, प्रकाशक हिंदू-समाज-सु कार्यालय, सआदतगंज रोड, लखनऊ; मूल्य -) फ़ ३=) सैकड़ा।

यह १६ पृष्ठ की पुस्तिका, जिसके आवरण-पृ राष्ट्रपति जवाहरलाल का सुंदर चित्र है, हिंदू-सम सुधार-माला की १५वीं संख्या है। इसमें नए-पु चुने हुए सरल, मधुर तथा उत्साह-वर्द्धक १७ गा जो साधारण जनता में प्रभाव करनेवाले हैं। जैसे-

भारत का डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर स्वाधीन बनो, स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर

"निराला"

मैस्मरेज़्म-विद्या की अपूर्व पुस्तक

सचित्र जागती कला

इस पुस्तक के साधनों द्वारा आप चाहे जिस स्त्री-पुरुष की मृतक आत्मा को बुलाकर चाहे जैसा गुप्त भेद पूछ लो, मनुष्य को दृष्टि-मात्र से वशीभूत करना, बेहोश करके भूत-भविष्य का हाल जानना, चोरी गए धन का पता मालूम करना, साँप-बिच्छू का विष उतारना, मैस्मरेज़्म के प्रयोगों से कठिन-से-कठिन रोगों को आराम करना। इत्यादि मूल्य १।) डा० ख़र्च ।=)

वशीकरण-मंत्र—चाहे जिस स्त्री-पुरुष को मंत्रों द्वारा वश में करना। पृष्ठ ६० मू० ।॥)

पता—शेर कंपनी, हरीवापान, अलीगढ़ (यू० पी०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

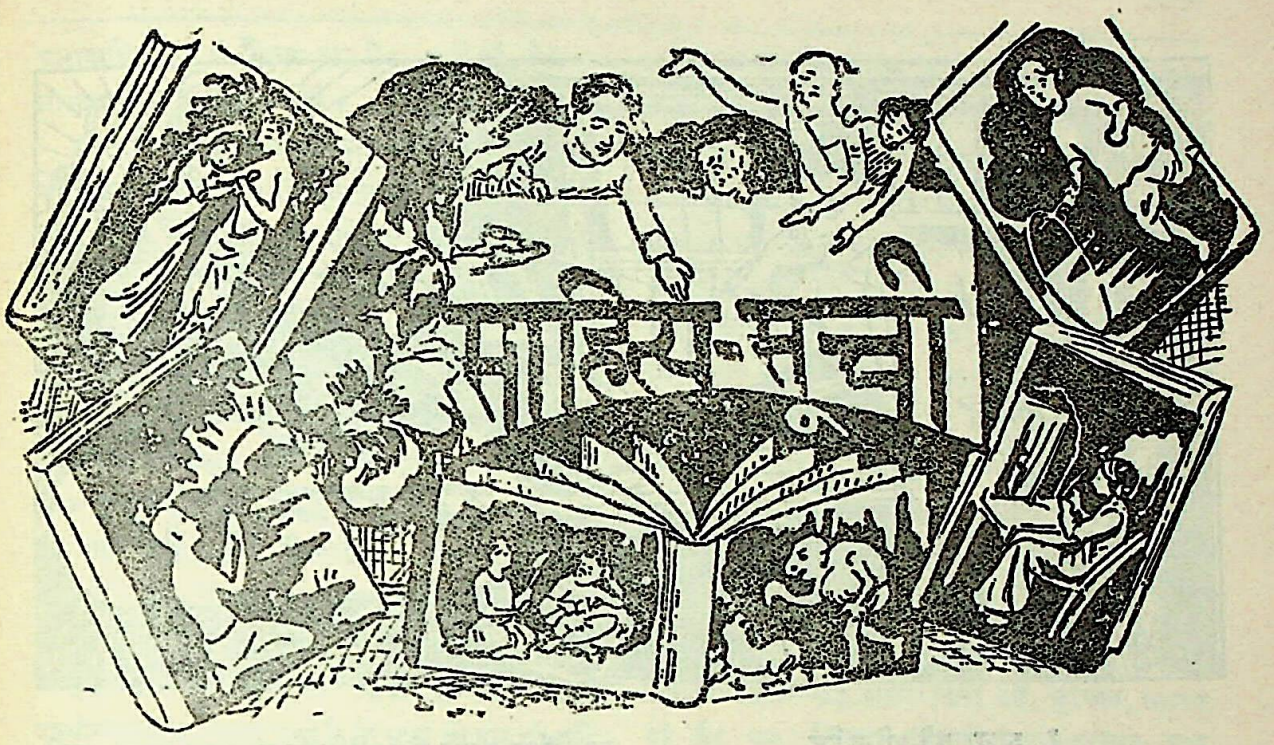

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रति मास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में नीचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) 'राजनीतिशब्दावली'—लेखक, श्रीभगवान-दास केला; मूल्य ।–)

(२) 'वीरबाला' (श्रीचंडीचरण सेन के ऐतिहासिक बँगला उपन्यास का अनुवाद)—अनुवादक, श्रीगणेश पांडेय ; मूल्य ४)

(३) 'निबंधादर्श' (निबंध लिखना सिखाने की पुस्तक)—लेखक, श्रीगोकुलचंद्र शर्मा एम्० ए० ; मूल्य ।॥)

(४) 'गपड़चौथ' (सामाजिक प्रहसन)—संपादक, शिवरामदास गुप्त ; मूल्य ।)

(५) 'शुक्र और सोफ़िया' अर्थात् पूर्व और पश्चिम (उपन्यास)—लेखक, ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत ; मूल्य २॥)

(६) 'लतिका' (कविता-संग्रह)—लेखक, श्री-गुलाबरत्न वाजपेयी ; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ; मूल्य १), सजिल्द १॥)

(७) 'सौभाग्य-लाड़ला नेपोलियन' (नाटक)—लेखक, ठाकुर लक्ष्मणसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी० ; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव ; मूल्य ॥), सजिल्द १)

(८) 'विन्नोदेवो' अर्थात् शुद्धि की देवी—लेखक, पं० वंशीधर पाठक ; मूल्य ॥)

(९) 'त्रिवेणी'—लेखक, पं० पद्मकांत मालवीय ; मूल्य १)

(१०) 'हुएनसांग का भारत-भ्रमण'—अनुवादक, श्रीयुत ठाकुरप्रसाद शर्मा 'सुरेश' ; मूल्य ४)

(११) 'अमेरिकन स्त्री-शिक्षा'—लेखक, डॉ०महेंदु-लालजी गर्ग ; मूल्य १)

(१२) 'युधिष्ठिर'—लेखक, श्रीकृष्णगोपाल माथुर; मूल्य ॥), रंगीन जिल्द १)

(१३) 'समाज' (नाटक)—लेखक, पं० छवि-नाथ पांडेय बी०ए०, एल्-एल् बी०; मूल्य ॥=)

(१४) 'गुरु तेग़बहादुर'—लेखक, श्रीमैथिली-शरण गुप्त; मूल्य ।)

(१५) 'शेलकश' (रूसी उपन्यास-लेखक गोर्की की कहानी)—अनुवादक, श्रीयुत श्रीकांत ; मूल्य ॥=)

(१६) 'स्वास्थ्य-संलाप' (स्वास्थ्य-संबंधी कहानियाँ)—लेखक, श्रीकृष्णानंद गुप्त ; मूल्य ॥=)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. सुधा की श्री-वृद्धि

ईश्वर की असीम अनुकंपा से सुधा अपनी आयु के ढाई वर्ष पूरे करके तीसरे वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रवेश करती है। सुधा ने अब तक क्या काम किया, उसने हिंदी-साहित्य के भांडार में क्या दिया, उसमें किस कोटि की रचनाएँ निकलीं, यह पाठकों से छिपा नहीं। इसमें संदेह नहीं कि हिंदी के पाठकों ने सुधा का यथेष्ट आदर किया। उनमें इसका प्रचार भी, अन्य पत्र-पत्रिकाओं की ग्राहक-संख्या को देखते, अच्छा हुआ। इधर, गत वर्ष, कई अनिवार्य और आकस्मिक कारणों से सुधा नियत समय पर नियमित नहीं निकल सकी, और इससे इसके शुभचिंतकों को इसका अस्तित्व बना रहने के बारे में भी चिंता हुई। इसे ठीक समय पर निकालने का अब पूर्ण प्रबंध हो गया है, और अब, गत कई मास से, यह ठीक समय पर निकल रही है। आशा है, अब इस क्रम में व्यतिक्रम न होने पावेगा।

इस संख्या से हमने सुधा में कई उपयोगी नए स्तंभ और कर दिए हैं। स्त्रियों को हम समाज का प्रधान अंग समझते हैं। इस समय हमारे समाज की इस दुर्दशा अथवा हीन परिस्थिति का प्रधान कारण हमारी स्त्रियों की हीनावस्था ही है। हमने स्त्री-समाज नाम का स्तंभ स्त्रियों के लिये पहले ही खोल रक्खा था। अब हमने उसके अतिरिक्त पाक-शास्त्र, सीना-पिरोना, गृह-चिकित्सा और शिशु-पालन, ये चार स्तंभ और स्त्रियों के लिये खोल दिए हैं। स्त्री-समाज-स्तंभ में साधारणतः स्त्रियों के सामाजिक अधिकार, सामाजिक स्थिति आदि पर विवेचना रहेगी। इसके अलावा उन्हें व्यावहारिक शिक्षा देने के लिये पूर्वोक्त ४ स्तंभ और रख दिए हैं। इनमें क्या रहेगा, यह उन शीर्षकों से ही प्रकट है, और वे कितने उपयोगी तथा आवश्यक हैं, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं।

एक व्यायाम का भी नया स्तंभ रहा करेगा। इसमें स्त्रियों और पुरुषों के व्यायाम-संबंधी (प्रायः सचित्र) लेख आदि रहेंगे। इस प्रकार हमने सुधा को नर, नारी दोनो के लिये समान उपयोगी बना दिया है। आशा है, हमारे पाठक-पाठिका इससे संतुष्ट होंगे।

समाज-सुधार-स्तंभ में अब हम विशेष रूप से समाज की हानिकर रूढ़ियों के मूल में कुठाराघात करेंगे। इस स्तंभ में सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम्० ए० का वर्णभेद-जातिभेद-संबंधी लेख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धारावाहिक रूप से निकल रहा है। आगे भी ऐसे ही ज़ोरदार लेख इसमें निकलेंगे।

हमने जिन नए स्तंभों को इस समय की आवश्यकता को देखते हुए बढ़ाया है, हमें आशा है, हमारे उत्साही लेखक तथा लेखिकाएँ प्रति मास उन पर प्रबंध लिख कर हमारी सहायता तथा साहित्य का उत्कर्ष करेंगी।

ललित कला और व्यंग्य-विनोद-स्तंभ अस्थायी रूप से रहेंगे। विज्ञान-वैचित्र्य में और भी उपयोगिता लाने का उद्योग किया जायगा।

संपादकीय विचार अब सुधा में अधिक रहने लगे हैं। हमारा विचार है कि इसी तरह प्रतिमास २०-२५ पृष्ठ हम लोग लिखा करें। संपादकीय लेख प्रायः इसी स्तंभ में रहेंगे। संपादकीय विचार कैसे होते हैं, इसका निर्णय पाठकों पर ही छोड़ा जाता है।

इस प्रकार हम सुधा को स्त्रियों के लिये विशेष उपयोगी बनाकर आशा करते हैं कि सुधा की इस श्री-वृद्धि से पाठकों को संतोष होगा और शीघ्र ही इसकी ग्राहक-संख्या इतनी और अधिक हो जायगी कि हम इतने ही मूल्य में और भी अधिक पाठ्य विषय दे सकेंगे। हिंदी-जगत् की हम पर आरंभ से ही कृपा रही है, और हम बराबर यह चेष्टा करते आ रहे हैं कि वह कृपा उत्तरोत्तर बढ़ती ही रहे।

अंत में हम अपने कृपालु लेखकों और कवियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं, जिनकी कृपा से हम सुधा को लोक-प्रिय और उपयोगी बना सके हैं। आशा है, उनकी यह कृपा-दृष्टि सुधा पर सर्वदा बनी रहेगी।

× × ×

२. कांग्रेस

लाहौर-कांग्रेस में बड़ा जमाव रहा। कांग्रेस को सफलता भी हुई। बड़े अनुष्ठान में कुछ बाधाएँ आती ही हैं, अतः वह उनसे बरी नहीं रह सकी। एक तरफ़ पुलीस की धर-पकड़ थी, दूसरी तरफ़ बंगाल के बाबू सुभाषचंद्र का किया हुआ कलह, इस्तीफ़ा तथा क्षमा-प्रार्थना आदि। पुलीस ने संदेह से जिस समय कुछ नवयुवकों को गिरफ़्तार करना शुरू कर दिया, उस समय ज़रा खलबली मच गई थी, पर यह तो पुलीस तथा कांग्रेसमैनों का दैनिक कार्य ठहरा, अतएव पकड़ने-वालों की अपेक्षा पकड़े जानेवाले ही ज़्यादा दिलेर रहे। कांग्रेस की सबजेक्ट-कमेटी की बैठक शुरू होने पर राष्ट्रपति मोतीलालजी ने अपने सौभाग्यवान् पुत्र को कार्य-भार समर्पित कर सभापति का आसन ग्रहण करने के लिये अनुरोध किया और दर्शकों से कहा, आप लोगों को जवाहरलाल का परिचय देने की आवश्यकता नहीं, उन्हें आप लोग अच्छी ही तरह जानते हैं, यह युवकों के ही काम करने का समय है, मेरी तरह के वृद्धों का समय पार हो चुका है। पं० जवाहरलालजी के उठने पर बारंबार जय-घोष होने लगा—वंदे मातरम्, पं० जवाहरलालजी की जय, आदि-आदि। जवाहरलालजी की माता वेदी पर बैठी हुई थीं। उन्होंने पहले पुत्र की संवर्धना की, फिर नायडू आदि ने। पं० जवाहरलालजी कोई वक्तव्य बिना कहे, चुपचाप, आसन पर बैठ गए। मित्रवर टंडनजी (साधु-स्वभाव बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन) ने सभापति की दृष्टि आकर्षित करते हुए कहा, कांग्रेस के नियमों में यह है कि यथा-संभव हिंदोस्तानी भाषा में कार्य-निर्वाह किया जाय, परंतु दुःख की बात है कि इस नियम की मर्यादा का अधिकांश समय में पालन नहीं किया जाता—यहाँ तक कि कांग्रेस के बही-खाते सब अँगरेज़ी में हैं। पं० जवाहरलालजी ने कहा कि मैं भरसक नियम की मर्यादा मानकर चलूँगा, परंतु दुःख है कि इससे कार्य के संचालन में अनेक असुविधाएँ हैं। इसके बाद सभा की और थोड़ी-सी काररवाई हुई। फिर सभा का प्रथम अधिवेशन समाप्त कर दिया गया।

× × ×

३. लाहौर की ४४वीं कांग्रेस

इरावती नदी के पूर्व-तट पर महाराज रामचंद्रजी के पुत्र लव की राजधानी (लाहौर), समागत अतिथियों के स्वागत के लिये, असंख्यों मनोहर चित्रों से सजी हुई थी। अगणित श्वेत तंबुओं की श्रृंखलित पंक्तियों से दिन में शुभ्र-वसना देवी की भाँति और असंख्य प्रदीपों की उज्ज्वल कांति से रात्रि में परी की तरह जगमगा रही थी—सोने के सहस्रों अलंकारों से शोभित, स्वस्थ, ग्रीवा झुकाए हुए, रूप की राज-हंसी, हरे पत्रों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की रेशमी साड़ी पहने हुए उर्वशी, जाँघ तक लटकते अंधकार-केशों को खोले हुए ज्योतिर्मयी स्वतंत्रता ; मस्तक पर बालों से गुँथा चमकता हुआ हीरा। आकाश पर हस उड़ती हुई जातीय पताका महासम्मेलन की विजय-घोषणा कर रही थी। क़तार-की-क़तार में बेशक़ीमत सजी हुई दूकानें । हज़ारों मनुष्यों के कंठ-कलरव से स्पंदित वायु-मंडल । नवीन हर्ष से उज्ज्वल मुख, आशा की मृदुल धड़कन से पुलकित हृदय। इस तीर्थ में प्रतिदिन हज़ारों की संख्या में उत्सुक यात्रियों का आगमन हो रहा था।

सभापति पंडित जवाहरलाल नेहरू के स्वागत के लिये लाहौर के स्टेशन पर स्वयंसेवकों की भीड़ एकत्र थी। एक रिसाला साथ था। सभापति की स्पेशल-ट्रेन के पहुँचने पर हर्ष का सागर उमड़ चला। राष्ट्र के नवीन सेनापति के लिये एक अश्व तैयार था। 'वंदे मातरम्' की उठती हुई ध्वनि के भीतर स्वतंत्रता के प्राप्त फल की तरह प्रसन्न वीर सेनापति अश्व पर सवार हो गए। बढ़ती हुई विपुलवाहिनी पर पुनः-पुनः पुष्प-वर्षा हो रही थी। एक मकान पर सपरिवार भूतपूर्व राष्ट्रपति पंडित मोतीलाल नेहरू थे। उन्होंने नवीन राष्ट्रपति पर फूल बरसाए। जवाहरलालजी ने, सिर झुकाए हुए, हाथ जोड़ दिए। जुलूस घूमता बढ़ता हुआ मुक़ाम पर पहुँचा।

भूतपूर्व राष्ट्रपति ने सुयोग्य पुत्र को, बिना परिचय के परिचय देकर, कार्य-भार समर्पित किया। स्वागत तथा आशीर्वाद आदि के पश्चात् कार्यवाही शुरू हुई, जिसका उल्लेख हम आगे कर चुके हैं।

कांग्रेस की वक्तृताओं में पहले महात्माजी अपनी अपार महिमा में मौन ही थे, जैसे वे किसी महान् प्रतिज्ञा को पूर्ण कर रहे हों। जब वह गत वर्ष समाप्ति पर आ गया, और कांग्रेस द्वारा निश्चित किए हुए ध्येय का कोई फल सरकार की ओर से नहीं मिला, तब राष्ट्र के प्राण, संसार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष में वह कैसा ओज, कैसी अपार महाशक्ति प्रत्यक्ष हुई, इसका जड़ लेखनी द्वारा वर्णन नहीं हो सकता। उस दिन— उसी दिन महात्माजी की अजेय सरस्वती की ओज-स्विनी मूर्ति के हमने दर्शन किए।—वे निडर ज्योतिर्नयन, स्वतंत्रता का आलोक भरते चमकते हुए, राष्ट्र की प्रसुप्त प्रतिभा को जगा रहे थे। वह वाणी शब्द-बंधों के सहस्रों तरंगों से अबाध उद्वेलित अवरोध तट को बारंबार छाप-छापकर बहा रही थी। श्वास के आवर्तोच्छ्वास के साथ भाषा के बहते हुए तूफ़ान में उस दिन सहस्रों जीवन शरीर के संकीर्ण रेखा-तट से महाशून्य में उड़ गए थे, और स्वतंत्रता का विशाल दृश्य देखा था। उसी दिन मालूम हुआ, इस पराधीन देश में महात्माजी स्वाधीन साँस ही ले रहे हैं।

पहले ही दिन से बंगाल के युवक-श्रेष्ठ बाबू सुभाष चंद्र बोस की नाड़ी में वायु का विकार प्रबल हो चला था। आपने बड़ी शान से बंगाल के समझौते के लिये सभापति से कहा, पर सभापति ने उस प्रस्ताव को नामंज़ूर कर दिया। बंगाल के जंगल में रहनेवाले एक ही शेर सुभाष बाबू सभा-मंडप में फिर नहीं आ सके।—आप अपने कुछ साथियों के साथ हुंकार भरते हुए मंडप के बाहर निकल गए। शेर में गर्मी कुछ ज़्यादा रहती ही है। अतः आपने भूतपूर्व राष्ट्रपति पं० मोतीलाल नेहरू की शिकायतें लिखकर "ट्रिब्यून" को दे दिया। छप जाने पर बड़ा शोर-शराबा मचा। पं० मोतीलालजी की शान के ख़िलाफ़ और झूठ, या भी कांग्रेस के अहाते में कह देना कोई साधारण-सी बात नहीं। पंडितजी ने राष्ट्र के लिये त्याग भी थोड़ा नहीं किया। उन्हें इससे बड़ा क्षोभ हुआ। फिर क्या, शेर और शिकारी का सामना हो गया। शिकारी ने शेर का शिकार तो नहीं किया, उसे बहुत बचा देखकर पर उसे छकाया ख़ूब। और, अकारण लांछन के लिये माफ़ी मँगाकर छोड़ दिया कि जाओ, यहाँ अखिल भारत का सवाल है, बंगाल में दहाड़ो। शेर ने निकल कर एक दूसरा दल गढ़ा।

कांग्रेस में स्कूल-कॉलेज, अदालत और कौंसिल के वर्जन पर बहस करते हुए, सभापति के भाषण के अनुसार कौंसिलों के त्याग पर ही निश्चय रहा। इस समय तक कितने ही सदस्य कौंसिलों का त्याग कर चुके हैं, और वहीं राय बहादुरी के उम्मेदवार कितने ही महाशय कांग्रेस से इस्तीफ़ा भी दे रहे हैं। यह यंत्र अब के अच्छा निकला है। कारण, दूध और पानी राष्ट्र की बुद्धि के सामने अपना-अपना रूप अलग कर देंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आचार्य पी० सी० राय के सभापतित्व में अखिल भारतवर्षीय सप्तम लाइब्रेरी-सम्मेलन हुआ, जिसमें श्रद्धास्पद आचार्य राय ने थोड़े में विश्व की भारती का मर्म समझा दिया। आपने कहा, कार्लाइल के मत के अनुसार पुस्तकालय ही यथार्थ विश्व-विद्यालय है। आपने पुस्तकें बेचनेवाले दरिद्र पिता के बालक जॉनसन का उल्लेख करते हुए कहा, उन्होंने किसी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं की। कार्लाइल की तरह वह भी पिता की दूकान में बैठे हुए, जितनी किताबें मिलती थीं, समाप्त कर डालते थे। इस तरह वह असाधारण पंडित हो गए। आपने रोम के इतिहास-लेखक प्रसिद्ध गिबन का कॉलेज छोड़ना, सुइज़रलैंड की निर्जन झील के तट पर एक विशाल लाइब्रेरी में दत्तचित्त होना बतलाया। फिर लॉर्ड मेकाले की अध्ययनशीलता का उल्लेख किया। पश्चात् कहा कि वर्तमान संसार के प्रसिद्ध लेखक बर्नार्ड शॉ ने १५) रु० मासिक की नौकरी से अपने जीवन-क्रम का श्रीगणेश किया था। इसके बाद आपने एक बात बड़े मार्के की कही। आपने कहा, इस समय विलायत की मंत्रि-सभा में जो बारह सदस्य हैं, उनमें किसी ने भी विश्व-विद्यालय में अध्ययन नहीं किया। सब-के-सब अपने ही कठोर श्रम से पढ़कर, बढ़कर, आज इस मर्यादा को प्राप्त कर सके हैं। भारत के प्रसिद्ध अनेकों पुस्तकालयों का उल्लेख कर, विश्व-विद्यालयों के पदवीधरों को डिग्री के आवरण में मूर्खता छिपाने की तथा और-और बातें कहकर आपने अपना अमूल्य भाषण समाप्त किया।

सर फ़ीरोज़ सेठना के सभापतित्व में मदरास में द्वादश अखिल भारतवर्षीय उदार-नीतिक सम्मेलन की बैठक हुई। कार्यकारिणी की बैठक में ही महासभा की गति पर बड़ी गवेषणा की गई। सर सप्रू, सर शीतलवाद, राइट ऑनरेबुल मि० शास्त्री, मि० चिंतामणि, मि० सो० पी० रामस्वामी अय्यर, मि० वेंकटराम शास्त्री आदि माननीय सज्जन उपस्थित थे। इन लोगों की कार्यकारिणी में कुछ प्रस्ताव सम्मेलन के सामने उपस्थित करने के लिये तैयार किए गए थे। कांग्रेस की मूलनीति का परिवर्तन, क़ानून-सभाओं का बहिष्कार और गोल-टेबिल-बैठक का वर्जन, इन तीनों पर ज़ोरों का प्रतिवाद हुआ। उदार-नीतिवाले इस सिद्धांत पर पहुँचे हैं, चूँकि पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा के साथ-ही-साथ दिल्ली का निश्चय रद्द हो गया है, अतः वे लोग स्वाधीनतापूर्वक बड़े लाट की घोषणा की आलोचना कर सकते हैं। कार्यकारिणी में निश्चय रहा कि बड़े लाट की घोषणा की संवर्धना की जाय और गोल-टेबिल-बैठक में स्वाधिकार-शासन पर ज़ोर दिया जाय।

महामना पं० मदनमोहन मालवीयजी के सभापतित्व में अखिल भारतवर्षीय छात्र-सम्मेलन का अधिवेशन शुरू हुआ। भारत के भिन्न-भिन्न स्थानों से एक अच्छी संख्या में छात्र आए हुए थे। छात्रों का रुख़ देखकर पहले लोगों का अनुमान था कि ये सरकार के ख़िलाफ़ सशस्त्र विद्रोह करेंगे, पर बात ऐसी नहीं। वे भावों तथा विचार-धारा में ही क्रांति पैदा करना चाहते हैं। महात्माजी का आशीर्वाद मालवीयजी ने पढ़ा, जिसमें उन्होंने लिखा था, छात्रों का कर्तव्य है आत्मसंयम, नियमपूर्वक रहना और खद्दर के प्रचार की चेष्टा करना। पंडित जवाहरलाल नेहरू वक्तृता देने के लिये उठे, तो बड़ी हलचल रही। कहीं-कहीं से "हिंदी-हिंदी" तो कहीं-कहीं से "अँगरेज़ी-अँगरेज़ी" की आवाज़ आने लगी। आपने हिंदी में भाषण किया। फिर उसका मर्म अँगरेज़ी में समझा देने के लिये कहा। आपने कहा, भारत का उत्तरदायित्व युवकों पर ही है। उन्हें संघबद्ध होकर रहना चाहिए। आंदोलन केवल ज़बानी जमाख़र्च नहीं, कुछ कार्य भी करना चाहिए। आपने कहा कि युवकों को बोलना थोड़ा चाहिए, पर कार्य अधिक करना चाहिए।

अखिल भारतवर्षीय-मद्यपान-वर्जन सभा का अधिवेशन श्रीयुत राज गोपालाचारी के सभापतित्व में हुआ। इसमें पाँच प्रस्ताव पास किए गए—(१) शराब की ज़्यादा बिक्री के कारण देश की बड़ी हानि हो रही है, इसलिये यह सम्मेलन मद्यपान के निवारण के लिये देशवासियों को सूचित करता है। देश के प्रायः सभी संप्रदाय इसके विरोधी हैं। अतएव इसके संबंध में कोई मध्यस्थ बात हो नहीं सकती। (२) देश के सब संप्रदायों के लोग मद्यपान-वर्जन पर ज़ोर दे रहे हैं, यह देखकर यह सभा हर्ष प्रकाश करती है। (३) यह सम्मेलन देश के विद्यार्थियों की पाठ्य-पुस्तकों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में, मादक द्रव्यों के निरोध के लिये, उनकी अपकारिता के प्रबंध लिखाकर संयोजित कर देने का अनुरोध करता है। (४) यह सम्मेलन समस्त संवाद-पत्रों से अनुरोध करता है कि वे मद्य-विषयक विज्ञापन न छापें। (५) सरकारी कर्मचारी सभा-समितियों में निमंत्रित मनुष्यों को शराब भी दिया करते हैं, सम्मेलन इस प्रथा की तीव्र निंदा करता है और शीघ्र ही इस प्रथा को रोक देने के लिये अनुरोध करता है।

पीड़ित-राजनीतिक सम्मेलन के सभापति का आसन दिल्ली के श्रीयुत हनुमंतसहाय ने ग्रहण किया। डॉ० सत्यपाल, डॉ० किचलू तथा और भी नेता उपस्थित थे। अमृतसर के वालंटियर कोर द्वारा जातीय गीत गाए जाने के पश्चात् सभा की कार्यावली का श्रीगणेश हुआ। श्रीयुत नलिनीरंजन ने प्रस्ताव किया, ३१ मार्च को सब जगह आत्मावदान-दिवस मनाया जाय। श्रीयुत चंद्रिकाप्रसाद ने इसका समर्थन किया। उन्होंने कहा, जो लोग चुपचाप देश की वेदी पर अपने प्राणों का अर्घ्य लेकर चढ़ जाते हैं, देश के लोगों के मस्तिष्क से स्वप्न की स्मृति की तरह उनकी छाप क्षीण होकर मिट जाती है। इससे भविष्य-भारत के हृदय में उत्साह का प्रकाश फैलेगा, और उन अंधकार में पड़े हुए रत्नों को वह पहचान लेगा। वक्ता ने प्रसंग पर कहा, यतींद्रनाथ ही सबसे प्रथम दीर्घकाल अनशन कर प्राण देनेवाले वीर नहीं हैं, कई साल पहले एक व्यक्ति ने अंदमान में ६० दिन अनशन कर प्राण दिए थे। अध्यापक जयचंद विद्यालंकार ने प्रस्ताव किया कि भारतीय दंड-विधान के छठे अध्याय के अनुसार दंडित, १२३ के अनुसार दंडित, १०७ के अनुसार दंडित तथा श्रमिक और कृषकों का संघटन करने के कारण दंडित लोग भी राजनीतिक बंदियों की संज्ञा में आवेंगे, और श्रीयुत गोविंदानंद तथा पार्वतीदेवी ने जैसा प्रचार किया है, उन सब बंदियों के लिये वैसा ही व्यवहार होना आवश्यक है। जिन लोगों ने अनशन किया है, उनकी संवर्धना करते हुए एक प्रस्ताव किया गया और उनके प्रति जो व्यवहार किया गया है, उसे दूर करने के लिये देशवासियों को आंदोलन करने के लिये कहा गया।

नौजवान-भारत-सभा-सम्मेलन का अधिवेशन श्री मती सुहासिनीदेवी के नेतृत्व में हुआ। आपने कहा हमें राजनीतिक शक्ति तथा स्वाधीनता के मर्म को समझने के लिये पहले दो बातों का ज्ञान रहना आवश्यक है। भारत दो शक्तियों में बँटा हुआ है—(१) वणिक् (२) श्रमिक। सबसे पहले ब्रिटिश धनिक ही देश की राष्ट्र-शक्ति का संचालन करते हैं। यह भी याद रखना होगा कि राजनीतिक अधिकार-प्राप्ति की जड़ में है मुख्य आर्थिक शोषण के द्वारा निश्चित लाभ की आशा। असहयोग-आंदोलन के समय से कांग्रेस में एक परिवर्तन की सूचना हुई है, परंतु कांग्रेस की आशाएँ फलीभूत नहीं हुईं। साम्राज्यवाद से कांग्रेस पराजित हो गई है। कांग्रेसवाले समय-समय पर साधारण जनों को संघबद्ध होने की बात तो कहते हैं, पर उनके सामने कोई राज-नीति तथा अर्थ-नीति से मिली हुई कार्य-तालिका नहीं रख सकते। जो लोग तीव्र हैं, श्रमिक तथा किसानों का पक्ष करते हैं, उनके सब प्रकार के कार्यों को सरकार बड़ी बेदर्दी से पीस देती है। साम्राज्यवाद में यह शक्ति है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि कौन दल औप-निवेशिक स्वाधिकार-शासन के लिये लालायित है। वह है भारत के धनिकों का दल। ये लोग भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की बुनियाद मज़बूत रखना चाहते हैं।

फ़ोर्ट के पास डेरा साहब में अकालियों का सम्मेलन हुआ। मंडप के भीतर "नेहरू-रिपोर्ट की मिट्टी ख़राब", "पंजाब में सांप्रदायिकता नहीं चाहिए", "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" आदि शीर्षक लिखे हुए टँगे थे। सभापति खड्गसिंह के मंडप के भीतर आते ही हर्ष-ध्वनि होने लगी। अभ्यर्थना-समिति के सभापति सरदार अमरसिंह ने कहा भारतीयों में सिक्खों के गुरुओं ने ही पहलेपहल विदेशी सरकार के ख़िलाफ़ तलवार उठाई थी। आज कल भी देश के लिये सिक्खों ने जो आत्म-त्याग किया है, वह उल्लेख-योग्य है। १५ साल पहले सम्राट् के विरुद्ध युद्ध चलाने के षड्यंत्र में १०० सिक्खों को कठोर दंड मिला था, किसी को फाँसी मिली थी, किसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को आजीवन निर्वास, किसी को कारा-दंड। यह बड़े हर्ष की बात है कि अब कांग्रेस भारत के जन-समाज की प्रतिनिधि की हैसियत से उसके अधिकारों की माँग पेश कर रही है। अस्तु। सिक्ख-समुदाय उसके झंडे के नीचे आकर स्वाधीनता के लिये संग्राम करने को तैयार है। सिक्ख लोग कभी सिक्ख-राज्य के पक्ष में नहीं हैं। वे सब संप्रदायों के समान अधिकार का समर्थन करते हैं। सरदार खड्गसिंह ने कहा, देश के भावी राष्ट्र में सिक्खों का कैसा स्थान होगा, यह एक विचारणीय विषय है। नेहरू-रिपोर्ट में सिक्खों के अधिकार मर्दित किए गए थे, पर हर्ष की बात है कि वह रद हो गई है। अंत में आपने कहा, अतीत काल में जाति की मुक्ति के लिये हम लोगों ने एक क़दम भी पीछे नहीं हटाया और भविष्य में भी जातीय सैन्यवाहिनी के आगे रहेंगे। महात्मा गांधी द्वारा स्वीकृत हमारे प्रस्ताव कांग्रेस में ले लिए जाने पर हम लोग कांग्रेस में सम्मिलित हो जायँगे।

लाजपत-नगर में, एक विशेष मंडप के भीतर, जातीय मुस्लिम-सम्मेलन का अधिवेशन चौधरी अफ़ज़ल हक़ के सभापतित्व में हुआ। आपने अपने भाषण में कहा, मुसलमानों को चाहिए कि वे अपने कर्म का मार्ग खोज लें। अब तक हम लोग कांग्रेस के साथ काम करते आ रहे थे। कांग्रेस ने स्वाधीनता का प्रस्ताव ग्रहण कर लिया है। नहेरू-रिपोर्ट रद हो गई है। अब किसी सांप्रदायिकता का झमेला नहीं रह सकता। अताउल्ला-शाह ने मुसलमानों को कांग्रेस में मिलने और देश के कार्यों में त्याग स्वीकार करने के लिये अनुरोध किया।

कांग्रेस की कार्य-कारिणी समिति ने इस साल भी अस्पृश्यता-वर्जन-कमिटी को कार्य चलाते रहने के लिये अनुरोध किया। इस पर कमिटी का इस प्रकार संगठन हुआ। महामना पंडित मदनमोहन मालवीय ने सभापति होना स्वीकार कर लिया है। सेठ जमनालाल बजाज़ वाइस चेयरमैन हुए हैं। सदस्यों में श्रीयुत राजगोपालाचारी, डी० डी० कालेकर और बी० जी० खार आदि हैं। स्वामी आनंद सेक्रेटरी हुए हैं। अस्पृश्यों के अभावों को दूर करने के लिये कमिटी पूर्ण रीति से आंदोलन करेगी।

इनके अतिरिक्त जात-पाँत-तोड़क मंडल तथा और भी कई सम्मेलन हुए।

× × ×

४. लाहौर-कांग्रेस के सभापति पं० जवाहरलाल नेहरू का अभिभाषण

पं० जवाहरलालजी के सभापतित्व में जैसे अभिभाषण की आशा की गई थी, आपने वैसा ही ज़ोरदार विचार-पूर्ण भाषण दिया है। आपने कहा—"महासभा ने इस जाति को दीर्घकाल की निद्रा से जगाकर उसके भीतर राष्ट्रीय चेतना का संचार कर दिया है, राष्ट्रीय आंदोलन की नींव मज़बूत की है। आज हम लोग यहाँ एक संकटजनक मौक़े में आ उपस्थित हुए हैं। हमारी कितनी शक्ति है, यह हम जानते हैं, साथ ही हमारी दुर्बलता कितनी है, इसे भी हम जानते हैं। हम आशा तथा शंका दोनो को लेकर भविष्य की ओर हेर रहे हैं।" आपने जातीय इमारत की चर्चा करते हुए लिखा है—"एक-एक ईंट के सहारे हमारी जातीय इमारत तैयार हुई है। अपना बलिदान करनेवालों के शवों के ऊपर से बहुधा भारत को आगे बढ़ना पड़ा है। अतीत के वे पुरुष-सिंह आज हम लोगों में नहीं हैं। परंतु उनकी हिम्मत हम लोगों में है। भारत-माता अब भी यतींद्रदास तथा विजय की तरह के आत्मदाताओं को पैदा कर सकती हैं।" इसके बाद सभापतित्व के लिये महात्माजी के पहले चुने जाने तथा उनको अपनी अक्षमता सूचित करने, और लोगों द्वारा ज़बरदस्ती अपने सभापति बनाए जाने पर शक्ति का अभाव तथा कृतज्ञता ज़ाहिर करते हुए जाति के वर्तमान जीवन-संकट पर आपने कहा—"आज हमारी जाति के जीवन में कई गहन समस्याएँ आ गई हैं। आप लोगों को इन कुल समस्याओं पर विचार करना होगा। आप लोग जो निश्चय करेंगे, उससे भारत के इतिहास की धारा बदल सकती है। यह समस्या केवल आप ही लोगों के सामने नहीं, तमाम संसार के सामने उपस्थित हो गई है—सब देशों के लोग इसका सामना कर रहे हैं। आज अब विश्वास का युग नहीं रहा, साथ-ही-साथ ऐश-आराम भी चला गया है। हर विषय में आज संशय की झलक मिलती है। जो विषय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारे पूर्व-पुरुषों के निकट बहुत पवित्र थे, अथवा अपरिवर्तनीय थे, उन सब विषयों में भी संशय की रेखा खिंच गई है। सब जगह संशय तथा चांचल्य दृष्टिगोचर हो रहा है, जिससे राष्ट्र तथा समाज एक परिवर्तन के मुहाने पर आ पहुँचा है। स्वाधीनता, न्याय-विचार, संपत्ति और पारिवारिक अधिकारों के संबंध में अब तक जो धारणा चली आ रही थी, अब उस पर हमला किया गया है। फल अनिश्चित है। हम लोग इतिहास के एक संधि-काल में आ गए हैं। नवीन सृष्टि की संभावना से आज संसार चंचल हो रहा है। भविष्य हमें क्या पुरस्कार देगा, यह कोई नहीं कह सकता। फिर भी हम एक दृढ़ता के साथ कह सकते हैं कि पृथ्वी की भविष्य-व्यवस्था के निर्णय में भारत का भी एक महत्त्व-पूर्ण भाग रहेगा। योरपीय प्रभुता का संक्षिप्त आयु-काल प्रायः समाप्त हो आया है। आज अब केवल योरप की ओर ही सब की दृष्टि नहीं लगी है। भविष्य का अवलंब अमेरिका तथा एशिया है। मिथ्या तथा असंपूर्ण इतिहास के पाठ से हममें से बहुतों के मन में यह भ्रम-धारणा पैदा हो गई है कि योरप ही सदा से पृथ्वी के अपर अंशों पर प्रभुत्व करता आ रहा है और पश्चिमी आँधी तथा वज्र के शांत होने पर एशिया फिर अध्यात्म-चिंता में डूब गया है। हम लोग यह भूल गए हैं कि सदियों तक लगातार एशिया के सैनिक योरप पर धावा करते रहे हैं।" इसके बाद आपने भारत के स्थान-निर्णय पर कहा—"संसार के आंदोलन में केवल चीन, तुर्की, फ़ारिस और मिस्र ही नहीं, किंतु रूस तथा अपर पाश्चात्य देशों ने भी भाग लिया है। आज की सभ्यता किसी एक देश अथवा एक ही जाति की बपौती नहीं। सब देशों का दान लेकर इसका संगठन हुआ है। हरएक देश ने अपने ख़ास तरीक़े से उसे अपनाया है। आज जिस तरह संसार को देने के लिये हमारे पास कुछ है, उसी तरह संसार की अपर जातियों के पास से सीखने लायक़ बहुत कुछ हमारे लिये भी है।" अतः भारत के इतिहास की धारा पर आपने विचार किया है, आप कहते हैं—"भारत की समाज-व्यवस्था संसार की आँखों में एक विस्मयकर सृष्टि है। इतिहास में इससे ज़्यादा विस्मय पैदा करनेवाली घटनाएँ बहुत थोड़ी हैं। हज़ारों वर्ष की बाधाओं तथा विघ्नों को अतिक्रमण कर यह समाज जीवित है। इसका कारण यह है कि भारतीय समाज संपूर्ण परिवर्तनों को हज़म कर जाने में समर्थ रहा है। आदर्श की विभिन्नता को भारतीय समाज ने दूर करना नहीं चाहा, उसने चाहा है आदर्शों के भीतर साम्य की प्रतिष्ठा करना। पार्सी आदि जो विदेशी इस देश में आए हैं, उन लोगों ने भारतीय समाज में आदर का स्थान प्राप्त किया है। मुसलमानों के आने के बाद समाज का यह साम्य नष्ट हो गया था। परंतु फिर भी भारत साम्य की स्थापना करता रहा। हमारे दुर्भाग्य से इस भेद के दूर होने के पहले ही हमारे राष्ट्र को व्यवस्था हर गई। इस देश में अँगरेज़ों का शासन हुआ, हमारा पतन हो गया।" फिर आपने परमत-सहिष्णुता का उल्लेख किया। कहा—"योरप ने जब धर्म के नाम पर लड़ाइयाँ लड़ीं, और क्रिस्तान लोगों ने ईसा के नाम पर एक दूसरे की हत्याएँ कीं, भारतवर्ष उस समय भी दूसरों के धर्म पर सहिष्णुता दिखलाता रहा है। दुर्भाग्य की बात है कि आज भारत की वह सहिष्णुता नहीं रह गई। सर्वदल-सम्मेलन ने समस्या-समाधान के लिये जो निश्चय किया, मुसलमान और सिक्ख भाई उसका विरोध कर रहे हैं। गणित की संख्या और सैकड़े के हिसाब की कसौटी चल रही है। छोटी संख्यावाला संप्रदाय यदि दृढ़प्रतिज्ञ हो, तो बड़ी संख्यावाला संप्रदाय उसका नाश नहीं कर सकता। यह याद रखना चाहिए कि संसार के सब स्थानों में अल्पसंख्यक मनुष्य ही अर्थ और शक्ति के अधिकारी होकर अधिक संख्यावाले मनुष्यों पर प्रभुत्व कर रहे हैं।" धार्मिक कट्टरता पर आपने कहा—"धार्मिक कट्टरता पर मुझे बिलकुल विश्वास नहीं। यह कट्टरता दूर हो रही है, देखकर मुझे हर्ष है। किसी विशेष संप्रदाय या धर्ममत के अंतर्गत होने पर ही कोई राजनीतिक या अर्थनीतिक अधिकार अवलंबित है, ऐसा कारण खोजने पर भी मुझे नहीं मिलता। मैं जानता हूँ, शीघ्र ही धर्म और संप्रदायों की छाप दूर होगी और अर्थनीति के ऊपर संग्राम शुरू होगा।" इसके बाद आपने सर्वदल-सम्मेलन की रिपोर्ट पर अपनी चर्चा की फिर समझौते के दिखलावे पर कहा—"बड़े बड़े

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का उद्देश्य अच्छा है, भाषा भी मुलायम है। परंतु बड़े लाट के विशद अभिप्राय तथा मुलायम भाषा की अपेक्षा हमारे सामने प्रतीयमान कठोर सत्य की यथार्थता बढ़कर है। ब्रिटिश-गवर्नमेंट क्या देगी, यह उसने खुलकर नहीं कहा, न किसी निर्दिष्ट विषय के लिये उसने वचन ही दिया है। कल्पना को अत्यधिक विस्तृत किए बिना यह बात किसी तरह भी नहीं कही जा सकती कि यह आमंत्रण कलकत्ते के प्रस्ताव का क्रियात्मक रूप है।" इधर की राजनीतिक देशी-विदेशी स्वाधिकार-शासन की बातों पर कहने के बाद आपने कांग्रेस के कर्तव्य का उल्लेख किया। आपने कहा—"सहयोगिता की शर्तें पूरी नहीं हुईं। जहाँ स्वाधीनता की प्राप्ति के लिये आशा ही नहीं, वहाँ क्या हम सहयोगिता कर सकते हैं? हमारे सहकर्मी जिस समय क़ैद में हों, जिस समय चारो ओर दमन की तांडव-लीला चल रही हो, उस समय क्या हम सहयोगिता कर सकते हैं?" फिर आपने स्वाधीनता के आदर्श पर कहा—"वर्तमान समय में स्वाधीनता का अर्थ छिन्न संकीर्णता है। संकीर्ण जातीयता के दर्प से सभ्यता हैरान है। वह इस समय व्यापक सहयोगिता तथा परस्पर निर्भरशीलता चाहती है। हम जिस स्वाधीनता का प्रयोग करना चाहते हैं, वह किसी तरह भी इस व्यापक अर्थ का विरोध नहीं करती। हमारे पास स्वाधीनता का अर्थ ब्रिटिश-प्रभुत्व तथा साम्राज्यवाद के ग्रास से संपूर्ण मुक्ति है।" पश्चात् आपने ब्रिटिश-साम्राज्य के स्वरूप की वर्णना करते हुए कहा—"ब्रिटिश-साम्राज्य × × × कोई राष्ट्रसंघ नहीं। जब तक यह साम्राज्य लाखों मनुष्यों पर प्रभुत्व करेगा और अधिवासियों की इच्छा के विरुद्ध पृथ्वी के एक विशाल भू-भाग पर अधिकार कर रहेगा, तब तक ब्रिटिश-साम्राज्य इस प्रकार के किसी संघ की गणना में नहीं आ सकता। साम्राज्यवाद जब तक इसकी बुनियाद रहेगा और दूसरी जातियों को चूसना जब तक इसकी आमदनी की प्रधान राह रहेगी, तब तक यह सम्मिलित राष्ट्र नहीं कहा जा सकता। वर्तमान समय में ब्रिटिश-साम्राज्य पर एक राजनीतिक तूफ़ान आया हुआ है। इस साम्राज्य के पैर उखड़ रहे हैं। इस साम्राज्य का दूसरा अंग दक्षिण आफ्रिका इससे संतुष्ट नहीं। आइरिश फ्री स्टेट भी इस साम्राज्य के अंतर्गत नहीं रहना चाहता। मित्र दूर हटता जा रहा है। जब तक साम्राज्यवाद तथा साम्राज्यवाद के आनुसंगिक अन्याय दूर न होंगे, तब तक भारतवर्ष इस ब्रिटिश-साम्राज्य का बराबर का हिस्सेदार नहीं हो सकता। जितने दिनों तक यह सब दूर न होगा, उतने दिनों तक साम्राज्य के टुकड़े की हैसियत से रहने पर भारत को पैरों के नीचे दबकर ही रहना होगा, और उसका चूसना बाक़ायदा जारी रहेगा। ब्रिटिश-साम्राज्य का आलिंगन बड़ा ही ख़तरनाक है। जिस आलिंगन से प्राणों का संचार होता है, अबाध ही जिस आलिंगन का आदान-प्रदान होता है, यह वह आलिंगन नहीं। यह आलिंगन जब वैसा नहीं, तब इसे मृत्यु का आलिंगन कहना चाहिए।" तदनंतर आपने विश्वशांति की बातों को फ़ालतू बातें बतलाया, आपने कहा—"विश्वशांति की एक बात उठी है। संसार की भिन्न-भिन्न जातियाँ आपस में समझौता कर रही हैं। परंतु शांति के समझौते पर भी अस्त्र-शस्त्रों की वृद्धि हो रही है। शांतिदेवी को सिर्फ़ मीठी बातों से संतुष्ट रखने की कोशिश की जा रही है। एक देश जितने दिनों तक दूसरे देश पर प्रभुत्व करेगा, एक संप्रदाय दूसरे संप्रदाय का ख़ून चूसता रहेगा, तब तक वर्तमान व्यवस्था के रद करने का प्रयत्न रहेगा ही, इसके अंदर कोई भी व्यवस्था स्थायी नहीं हो सकती। साम्राज्य-लोलुपता और अर्थ-लोलुपता के भीतर शांति कभी आ नहीं सकती।" इसके बाद आपने ज़बानी जमाख़र्च पर कहा—"स्वाधीनता तथा औपनिवेशिक स्वाधिकार-शासन के संबंध में हम लोगों ने ज़बानी तर्क-वितर्क बहुत किए हैं। परंतु यथार्थ काम है शक्ति छीन लेना। उस शक्ति का नाम हम कुछ भी कहें, उससे कुछ आता-जाता नहीं। × × ×—यदि इस देश की छाती पर से विदेशी सैनिकों को हटा दिया जाय और अर्थनीति के पंजे से भारत को मुक्ति मिले, तो समझा जायगा कि भारत को मुक्ति मिली।" अनिच्छापूर्वक विपत्ति को गले लगानेवाले युवकों के संबंध का उल्लेख करते हुए आपने कहा—"हमारा परिवार उजड़ा जा रहा है। युवकगण जेल जा रहे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं, फाँसी में लटक रहे हैं। क्या यह दृश्य हमारे लिये ताकते रहने का है? जो थोड़ी मज़दूरी पाता है, उसका त्याग कर अनशन में रहकर सत्याग्रह करना क्या उसके लिये आनंद का विषय है? जब उनके लिये कोई चारा नहीं रह जाता, तभी वे लोग निराहार रहकर सत्याग्रह करते हैं। हम लोग जातीय संग्राम के इस विपत्ति-संकुल मार्ग का इसीलिये ग्रहण करते हैं कि सम्मानजनक संधि के लिये और दूसरा उपाय नहीं।" देशी राज्यों की समस्या जैसी करुण हो रही है, उस पर आप कहते हैं—"देशी राज्य अतीत काल के ध्वंसावशेष हैं। इन सब राज्यों के अधिकांश राजागण अब भी विश्वास करते हैं कि उनके अधिकार ईश्वर-प्रदत्त हैं। वे लोग दूसरों के हाथों के खिलौने होकर भी सोचते हैं, राज्य तथा राज्य की चीज़ें उन्हीं की संपत्तियाँ हैं, वे इच्छानुकूल उनका ख़र्च कर सकते हैं। देशी राज्य के एक राजा ने ऐसा भी कहा है कि यदि भारतवर्ष और इँगलैंड में लड़ाई हो, तो वे इँगलैंड का पक्ष लेकर मातृभूमि से लड़ेंगे। देशी नरेश यदि समझकर नहीं चलेंगे, तो उनका ध्वंस अवश्यंभावी है।" "कृषक तथा श्रमिक-समस्या और शिल्प वाणिज्य से दरिद्रों का सहयोग" इन विषयों पर आपने मार्के के विचार ज़ाहिर किए, फिर कहा कि मनुष्य सबसे बड़ा है, रुपए के लिये हम मनुष्यों की बलि नहीं दे सकते। आपने कहा, "यदि श्रमिकों को बिना भूखों रक्खे हुए कोई शिल्प न चलता हो, तो वह शिल्प बंद कर देना उचित है।" इसके बाद यथार्थ शक्ति का आपने उल्लेख किया। कहा, "जब तक हम यथार्थ शक्ति अर्जित न कर पावें, तब तक ये कुल आशाएँ कल्पना-मात्र हैं।" अदालत और विद्यालय के वर्जन पर आपने कहा कि इस समय स्कूल तथा अदालत के वर्जन करने की नीति की घोषणा समीचीन नहीं जँचती, पर जब संग्राम छिड़ जायगा, तब यह ग़ैरमुमकिन है कि हमारे युवक उसमें लिप्त रहकर विद्यालय भी जाया करें, परंतु कौंसिलों का त्याग करना ही चाहिए। प्रवासी भारतवासियों के लिये आपने कहा कि मैं उनके संबंध में विशेष कुछ कहना नहीं चाहता, पर इसके मानी ये नहीं कि उनसे मेरी सहानुभूति है ही नहीं। उनके भाग्य का निर्णय भारत के समर-क्षेत्र में होगा। हम जिस लड़ाई के लिये कमर कस रहे हैं, वह हमारे और उनके लिये ही है। पश्चात् आप कांग्रेस को ही जाति की आशा बतलाते हुए अति सारगर्भित, अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाषण समाप्त किया। यह युक्तिपूर्ण, तेजस्वी भाषण आपके स्वाधीन विचार के अनुकूल ही हुआ है।

× × ×

५. पंडित जवाहरलाल नेहरू

(जीवनी)

वर्तमान लाहौर-कांग्रेस के सभापति पंडित जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रपति पंडित मोतीलाल नेहरू के एकमात्र लड़के हैं। आपकी माता का नाम श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू है। महात्माजी ने कहा था, भारतवर्ष में इसका उदाहरण दूसरा नहीं कि पहले साल पिता कांग्रेस के सभापति चुना जाय और दूसरे साल पुत्र। पं० जवाहरलाल अपने पिता के योग्य पुत्र हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म १८९० ई० में हुआ। अब आपकी उम्र ४० साल से भी कम है। इतनी कम उम्र में अखिल भारतवर्षीय राजनीतिक कांग्रेस के सभापति के आसन पर, एक स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले के अतिरिक्त, अब तक दूसरा नहीं बैठा था। पं० जवाहरलाल की उम्र १४ साल की थी, उस समय पं० मोतीलालजी ने उन्हें इँगलैंड के हैरो-विद्यालय में पढ़ने के लिये भेज दिया। इँगलैंड के हैरो, ईटन आदि पब्लिक-स्कूलों में वहाँ के बड़े-बड़े घरानों के बालक ही पढ़ने के लिये जाया करते हैं। यहाँ पढ़ते समय जवाहरलालजी को इँगलैंड के बड़े-बड़े घरानों के लड़कों से मिलने, उनसे वार्तालाप आदि करने, उनके आचार-व्यवहार देखने तथा सीखने का अवसर मिला था। इँगलैंड के युवराज हैरो में जवाहरलालजी के सहपाठी थे। पं० जवाहरलाल ने इँगलैंड में सात साल तक अध्ययन किया। केंब्रिज विश्वविद्यालय की बी० ए० की परीक्षा पास कर आप क़ानून का अध्ययन करने लगे। १९१२ ई० में बैरिस्टर होकर इलाहाबाद लौटे और अदालत में क़ानून का व्यवसाय करने लगे। यहाँ कुछ ही समय में आपकी प्रतिभा का लोगों को परिचय मिल गया। १९१६ ई० में आपने श्री

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुमारी कमला कौल का शुभ पाणिग्रहण-संस्कार संपन्न किया गया। कौल-परिवार की भारत में काफ़ी प्रसिद्धि है। १९२० ई० में, जब भारत में असहयोग का डंका बजा, देश के दूसरे-दूसरे प्रतिष्ठित लोगों की तरह आपने भी क़ानून-व्यवसाय का परित्याग कर दिया। उसी समय से आज तक एकांत निष्ठा के साथ आप देश की सेवा में लगे हुए हैं। गत कई सालों में आपने देश के राजनीतिक आंदोलनों में जो विशिष्ट स्थान अधिकृत किया है, उसी का यह पुरस्कार है कि आज आप उत्तरदायित्वपूर्ण इतने बड़े सम्मान के योग्य समझे गए हैं। असहयोग-आंदोलन के समय आपने प्रकाश्य-रूप से यह घोषणा की थी कि आप विलायती वस्त्रों की दूकान में धरना देंगे। इसके लिये दूसरे श्रोताओं को भी आपने बुलाया था। कांग्रेस-कमिटी की एक दूसरी सभा से विलायती वस्त्रों के दूकानदारों को विलायती वस्त्रों के बेचने से रोकने-वाली कुछ चिट्ठियाँ मिलीं। इस सभा के सभापति पं० जवाहरलालजी थे। इस अपराध से ३८५ और ५०५ दफ़ा के अनुसार आप गिरफ़्तार कर लिए गए, और अदालत में १८ महीने के सश्रम कारावास की सज़ा मिली। तमाम जीवन विलास की गोद में पले हुए पं० जवाहरलाल ने देश की सेवा में यह दंड स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात् नाभा में १४५ दफ़ा के अनुसार आप पर एक मुक़द्दमा चलाया गया। इस मामले में, नाभा की अदालत में, पं० जवाहरलाल-जी ने जैसे बयान दिए, उनसे आपकी तेजस्विता, देश-प्रेम तथा कूट-नीति के दुरूह जाल को भेद कर जाने की अपार मेधा-शक्ति का अद्भुत परिचय मिला है। यह भारत के इतिहास में चिरकाल के लिये अमर रहेगा। आपको अधिक दिन नहीं लगे, अपनी सच्ची लगन तथा सेवा के बल पर शीघ्र ही आपका स्थान देश के प्रमुख नेताओं में हो गया। आपकी राजनीतिक चेष्टाओं के प्रथम विकास में ही जैसी निर्भीकता तथा प्रतिभा का देशवासियों को परिचय मिला, उससे वे सहज ही समझ गए कि आप एक असाधारण मनुष्य हैं। आप जैसे दूरदर्शी हैं, वैसे ही कर्मी भी। १९२३ ई० से आज तक देश की अनेक बड़ी-बड़ी सभाओं के आप सभापति चुने जा चुके हैं। इन सभाओं में किसी-किसी का गौरव कांग्रेस ही के बराबर है। १९२३ ई० में बनारस में होनेवाले संयुक्त-प्रदेश के राजनीतिक सम्मेलन के आप सभापति चुने गए थे। १९२८ में झाँसी में होनेवाले प्रादेशिक राष्ट्र-सम्मेलन के आप सभापति चुने गए। उसी साल अमृतसर में प्रादेशिक राष्ट्र-सम्मेलन तथा दिसंबर में कलकत्ता के अखिल वंग-छात्र-सम्मेलन के आप सभापति हुए। इस साल दिसंबर में नागपुर में होनेवाली अखिल भारतीय ट्रेड-यूनियन-कांग्रेस के आप ही सभापति चुने गए थे। ट्रेड-यूनियन-कांग्रेस संपूर्ण भारतवर्ष के श्रमिकों की सभा थी। अपर देशों की तरह भारतवर्ष में भी श्रमिक-समस्या बलवती होती जा रही है। पहले स्वर्गीय देशबंधुदास, लाला लाजपतराय आदि इस ट्रेड-यूनियन के सभापति का आसन अलंकृत कर चुके हैं। १९२८ ई० में बंबई में होनेवाले युवक-सम्मेलन के भी आप सभापति चुने जा चुके हैं। १९२७ ई० में आप फिर योरप घूमने गए। इस बार आप जहाँ भी गए, वहाँ भारत की राजनीतिक समस्या का मूल तत्त्व लोगों को समझाया। इसी समय हॉलैंड में साम्राज्यवाद-विरोधी संघ का अधिवेशन हुआ। यहाँ भारत की तरफ़ से भारत के अधिकार की बातें आपने अच्छी तरह प्रकट कर दीं। इस सम्मेलन में संसार के समस्त पीड़ित देशों के प्रतिनिधि गए थे। पं० जवाहरलाल-जी ने अपनी भाषण-शक्ति तथा दूरदर्शिता द्वारा सम्मेलन के संपूर्ण प्रतिनिधियों को इस तरह मुग्ध कर दिया था कि आप ही इस सम्मेलन के वाइस-प्रेसिडेंट नियुक्त किए गए। इसके बाद आप रूस-भ्रमण करने गए, और मद्रास-कांग्रेस के कुछ काल पहले आप भारत लौट आए। इसी समय आपने महात्माजी के "यंग इंडिया" पत्र में रूस में वर्तमान काल की शिक्षा का किस प्रकार प्रसार हो रहा है, इसकी वर्णना करते हुए कई चित्ताकर्षक निबंध लिखे थे। मद्रास-कांग्रेस के कर्तव्य का निर्धारण करने में आपने एक ख़ास अंश ग्रहण किया था। आप ही के प्रयत्न से इस कांग्रेस में "पूर्ण स्वाधीनता ही भारतवासियों का राजनीतिक आदर्श है", यह प्रस्ताव ग्रहण किया गया था। इससे पहले की कांग्रेसों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में मौ० हसरत मोहानी आदि नेताओं ने पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास कराने के लिये प्रयत्न किया था। परंतु महात्माजी के विरोध के कारण उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई थी। मद्रास-कांग्रेस में म०त्माजी मौजूद न थे। इस कांग्रेस में आपके प्रयत्न से एक और महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुआ। योरप में भ्रमण करते समय आपने प्रत्यक्ष कर लिया था कि किस तरह एक दूसरे महासमर के लिये वह तैयार हो रहा है। आपके प्रयत्न से कांग्रेस ने इस मर्म का प्रस्ताव ग्रहण कर लिया कि अँगरेज़ लोग भारतवासियों को स्वाधिकार-शासन नहीं देंगे, तो भविष्य की लड़ाई में भारतवासी भी ब्रिटिश-गवर्नमेंट को किसी प्रकार की सहायता न देंगे। कलकत्ते की कांग्रेस में भी पं० जवाहरलालजी ने प्रमुख स्थान अधिकृत किया था। इस कांग्रेस में आपने स्वाधीनता के प्रस्ताव को पास करा लेने का प्रयत्न किया था। अंत में महात्माजी, पं० मोतीलाल नेहरू आदि नेताओं के साथ आपकी तथा सुभाषचंद्र बसु की इस प्रकार बातचीत हुई कि एक साल के लिये स्वाधीनता की घोषणा का प्रस्ताव स्थगित रक्खा जाय। बाद खुली कांग्रेस में श्रीयुत सुभाषचंद्र बसु ने अपने दल-वालों के आग्रह से, प्रतिज्ञा का भंग कर, स्वाधीनता के प्रस्ताव को पास करा लेने की चेष्टा की। पर आपने प्रतिज्ञा की रक्षा की।

इस साल आप ही लाहौर की कांग्रेस के सभापति चुने गए। कलकत्ता-कांग्रेस के बाद से अब तक राजनीतिक वायु-मंडल में अनेक परिवर्तन हुए हैं, जिनमें कई महत्वपूर्ण हैं। कांग्रेस ने गवर्नमेंट को एक साल के लिये जो समय दिया था, इसके अंदर जातीय दावा पूरा करने के लिये गवर्नमेंट की तरफ़ से कोई उल्लेख-योग्य कार्य नहीं हुआ। बड़े लाट की घोषणा में इस संबंध की जिस आशा का संचार हुआ था, दिल्ली में होनेवाली बड़े लाट के साथ नेताओं की बैठक के उखड़ जाने से वह भी जाती रही। बस कांग्रेस के लिये स्वाधीनता की घोषणा करने के अलावा और दूसरा कोई उपाय नहीं रहा। महात्माजी ने भी, १९२९ की ३१वीं दिसंबर के बाद से स्वाधीनता के प्रस्ताव का समर्थन करेंगे, ऐसा कहा था। अब इस वर्ष स्वाधीनता की घोषणा हो जाने के बाद नौकरशा के साथ देशवालों के एक विराट् संघर्ष की संभा है। इस संघर्ष के समय कांग्रेस की नाव की पा वार पकड़नेवाले जवाहरलालजी कैसी दृढ़ता कार्य-कुशलता दिखलाते हैं, यह देखना है! जवाहरलाल अद्भुत तेजस्वी तथा तीक्ष्ण-धी सा नेता हैं। देश के काम के लिये जिस तरह नौकरशाही को नहीं डरते, उसी तरह वह अपनी नि बुद्धि से जो कुछ ठीक समझते हैं, उसे करते हुए पिता तथा राजनीतिक गुरु महात्माजी को टाल में भी संकोच नहीं करते। महात्माजी ने स्वयं लिखा है, तेजस्विता में कोई भी उन्हें अतिक्रम कर सकता। स्वदेश-प्रेम में उनके मुक़ाबले कोई कोई-कोई कहते हैं, वह बड़ी टेढ़ी प्रकृति के हैं। देश मौजूदा हालत में यह एक गुण है। परंतु सिपाही तरह क्रूर होने पर भी उनमें राजनीतिज्ञोचित दूरदर्शि भी है। वह हुक्म-तामीली के समर्थक हैं। कोई अपनी इच्छा से विरुद्ध होने पर भी निमंत्रण के विचा वह उसे कर देते हैं। वह अपनी साधारण सीमा से दूर तक विचार कर सकते हैं। वह नम्र तथा स्फटि तरह स्वच्छ हैं, और उनकी सत्यवादिता संदेह के है। उनके हाथों से जाति के स्वार्थ की किसी हानि नहीं हो सकती।

× × ×

६. धर्म और विज्ञान का झगड़ा

अखिल भारत-एकेश्वरवादी सम्मेलन में 'रिव्यू' के विद्या-वयोवृद्ध संपादक बाबू रा चट्टोपाध्याय ने सभापति की हैसियत से जो दिया था, उसका मर्म हम यहाँ पाठकों के अवलोक उद्धृत करते हैं—

हम लोग ईश्वरवादी हैं, अतएव सत्य—चाहे आविष्कृत हो—हम मानते और उस पर करते हैं। परंतु इसलिये हम किसी भी अखंड सत्य नहीं मानते, न यही कि उसमें जो लिखा है, हद की बात है। अस्तु। अमुक धर्माचार्य ने ईश्वर के अस्तित्व की घोषणा इसलिये हमें ईश्वर के प्रति विश्वास है,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी हम नहीं कहना चाहते। हरएक मनुष्य की आत्मा ही धर्म-विश्वास का मंदिर है और आत्मा के गुप्त मंदिर से ही मनुष्य ईश्वर-विश्वास की बातें व्यक्त किया करता है।

वैज्ञानिक विश्वास के साथ धर्म-विश्वास की समय-समय पर तुलना की जाती है। साधारणतः लोग यह समझते रहते हैं कि विज्ञान के भीतर से जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, वह बिलकुल सत्य तथा संदेह के बाहर है, परंतु ऐसी धारणा भूल है। विज्ञान की मूल धारणा की बुनियाद हर वक्त बदलती रहती है और तरह-तरह के मतवाद के विवाद छिड़ते रहते हैं। एक विशिष्ट वैज्ञानिक का कहना है कि "वैज्ञानिक मतवाद ने अतीत में अनेक ग़लतियाँ की हैं, और वर्तमान काल में भी अनेक भूलें हो रही हैं, परंतु इन भूलों के भीतर से ही समय-समय पर सत्य की ज्योति समुद्भासित हो उठती है, मनुष्यों का मन इस सत्य को जानने के लिये ही प्रयत्न कर रहा है।"

विज्ञान ही उन्नति का मूल है, धर्म नहीं, इस तरह का विश्वास करने का भी कोई कारण नहीं। इतिहास के जन्म-दिन से अथवा उसके पूर्व-काल से अब तक धर्म-मतों के भीतर भिन्न-भिन्न प्रतिवाद, संस्कार और विरोध देख पड़ते हैं। इस प्रकार अत्यंत प्राचीन धर्म-संप्रदाय के भीतर भी चुपचाप आचार-व्यवहार तथा बाहरी विश्वास का आवरण खुला जा रहा है और उसके ज्ञान का यथार्थ मार्ग आलोक-पूर्ण होता जा रहा है।

जो लोग विज्ञान के पक्ष में हैं, वे कह सकते हैं कि लोग विज्ञान पर इसलिये विश्वास करते हैं कि उसने मनुष्यों के कुसंस्कारों तथा भय को दूरकर मनुष्य के स्वास्थ्य, शक्ति, सुविधा तथा कल्याण का मार्ग खोल दिया है। परंतु धर्म ने भी इस कार्य में इससे अधिक ही कल्याण-साधना की है, आदिम काल से जो कुछ मनुष्यों के अथवा पारिवारिक अपने बृहत्तर जीवन के कार्य हैं, वे सब धर्म के साथ मिले हुए हैं, कुल पारिवारिक और सामाजिक प्रतिष्ठान धर्म की बुनियाद पर टिके हुए हैं। यद्यपि इनके भीतर कभी-कभी स्खलन, पतन तथा अकल्याणकर विषयों का प्रवेश हुआ है; तथापि उदार धर्म-मत और संस्कार आदि ने संपूर्ण बाधाओं, कुसंस्कारों तथा अनावश्यक शंकाओं को पारकर मानव-सभ्यता को उन्नतिशील तथा विकासोन्मुख कर दिया है।

प्राचीन काल की जो स्वास्थ्य-व्यवस्था है, जिससे हिंदुओं के कुछ आचार उनका अनुशासन कर रहे हैं, वह स्वास्थ्य तथा शक्ति की रक्षा के लिये योग-नियमों के साथ बिलकुल मिले हुए हैं। पारिवारिक जीवन तथा अपर सामाजिक संबंध की पवित्रता धर्मोपदेश तथा धर्म-ज्ञान का ही फल है। इन सबसे मनुष्य-जीवन पवित्र और विशुद्ध हुआ है तथा इन्हीं से सभ्य जीवन की उत्पत्ति हुई है। धर्म मनुष्यों को जहाँ तक नीति तथा आदर्श के ऊँचे सोपान तक ले गया है, वहाँ तक और किसी साधन के द्वारा नहीं हुआ; यहाँ तक कि कम्यूनिज़्म अथवा समूह-तंत्रवाद, इस समय के मनुष्यों के जो बोलचाल हैं, नई बातें नहीं। प्राचीन यहूदियों के "एसेन" तथा अपर संन्यासी-संप्रदायों के भीतर भाव की यह धारा प्रचलित थी। परंतु आदिम युग में सभ्यता की प्रथम अवस्था में ये सब धर्म के साथ संश्लिष्ट थे। आज भी हिंदुओं में विश्वकर्मा की पूजा इसका सुबूत है। गत शताब्दी में वैज्ञानिक प्रांत्रिक आविष्कारों को देखकर हम पहले की बातें भूल न जायँ, जिनके आधार पर आज के वैज्ञानिक आविष्कार संभव हो सके हैं।

इस तरह की आपत्ति उठ सकती है कि धर्म के लिये जिस तरह के आचार-विचार निकले हैं, उसके लिये जितना ख़ून बहाया गया है, उससे मनुष्यों की अधिकांशतः क्षति ही हुई है, यह टाली नहीं जा सकती। परंतु जो कुछ धर्म के नाम पर हुआ है, वह धर्मानुमोदित नहीं।

विज्ञान में भी ये सब अनर्थकर बातें हैं। बड़ी-बड़ी तोपें, बंदूकें, ज़हरीली गैसें, हवाई जहाज़, सबमेरीन, और शत्रुओं में महामारी पैदा करने के रोग-जीवाणु आदि विज्ञान के अपव्यवहार और कुसंस्कारों के ही फल हैं। मनुष्यों को अधिक क्षति के साथ नष्ट करने के ये कुल कौशल जो आविष्कृत हुए हैं, इनके लिये विज्ञान ही उत्तरदायी है। केवल ख़ून से तर मैदाने-जंग ही नहीं, अर्थनीति के क्षेत्र में भी विज्ञान की अनर्थकारिता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कम नहीं। अस्त्रों की लड़ाई की अपेक्षा उनकी नीतिक लड़ाई इस समय के लोगों की प्रिय लड़ाई हो रही है। यह विज्ञान के बढ़ने के लिये ही है। जो सब अनुन्नत जातियाँ अपने शिल्प के कारण बची हुई थीं, उनकी वस्तुओं का कलों तथा कारख़ानों की बढ़ी हुई चीज़ों से नष्ट करना ही वर्तमान वैज्ञानिक प्रणाली की रीति है। दासता, अर्द्धदासता, बल-पूर्वक श्रम-नियोग आदि वैज्ञानिक उपायों से माल-उत्पादन के लिये ही होते देखे जाते हैं। धर्म की तरह विज्ञान का जैसा एक उत्कर्ष है, उसी तरह एक अपकर्ष बड़ा भयानक है। जिस विज्ञान के लिये संसार में श्रम-शिल्प की सृष्टि हुई है, उसी विज्ञान के कारण मनुष्य आज एक प्रकार से यंत्र में बदले हुए देख पड़ते हैं, और संपूर्ण संसार में वर्ण-जन्य द्वेष तथा हिंसा और घृणा फूट निकली है।

विज्ञान के विरोध में हमारा कोई द्वेष नहीं, उसका यथार्थ जितना व्यवहार है, हम इसी पर कह रहे थे। जिस तरह आजकल अधिकांश लोग विज्ञान के प्रति अथाह विश्वास की बातें किया करते हैं, परंतु उसके उद्देश्य की बातें नहीं जानते, उसी तरह हमारे देश में बहुत-से मनुष्य हैं, जो कहा करते हैं कि जातीयता और जातीयता-जन्य राजनीति ही हमारा धर्म है।

परंतु जातीयता के नाम पर अपर देशों में बड़े भयानक अपराध किए गए हैं। स्वदेश के प्रेम के कारण अथवा किसी राजनीतिक विश्वास के बल पर मनुष्यों ने अनेक प्रकार के गर्हित कार्य किए हैं। × × × स्वदेश-प्रेम एक उच्च और महान् मनोवृत्ति है, इसमें संदेह नहीं, परंतु वह धर्म की चिरंतन सहायता का स्थान ग्रहण नहीं कर सकता।

साम्यवाद अथवा अत्याचार-मूलक शासन-पद्धति के लिये धर्म की तरह-तरह से दुर्दशाएँ हुई हैं। धार्मिक मनुष्यों की पराधीनता भी उसके एक कारणों में से एक है। लड़ाई जीतकर रँगे हाथों गिर्जे में जाकर ईश्वर को धन्यवाद देना और लड़ाई की रक्त-पताका को सगर्व धर्मसौध पर फहराना और इस तरह के और-और अनुष्ठानों से मनुष्य धार्मिक श्रद्धा खो बैठता है।

आशा और अमंगल के भीतर एक रहस्य है, और उस रहस्य पर सोचते समय हमें यह भी सोचना होगा कि हम एक लोकमत के भीतर रहते हैं, जो की बुनियाद क्रमोन्नति के ऊपर प्रतिष्ठित है। उत्ताल तरंगों ने धीरे-धीरे शांत होकर, आज परिदृश्यमान पृथ्वी को प्राणियों के जीवन, अन्न ऐश्वर्य तथा नाना प्रकार के वैचित्र्य से रहने के बना दिया है, उन्हीं की रहस्य-पूर्ण नीति कभी अग्नि-प्रवाह और भूकंप के आकार से ध्वंस को लाती है। इस उन्नतिशील मनुष्यों की समष्टि भी एक विपत्ति-संकुल पार्श्व है। यदि इस की कोई संभावना न रहती, यदि मनुष्यों की यात्रा किसी भी तरफ़ से असंपूर्ण न रहती, तो होता और दरअसल वह संभव है या नहीं, यह नहीं समझना चाहते, हम सिर्फ़ इतना ही जा हैं, चिरकाल तक अभावों और द्वंद्वों के साथ करते-करते हम लोग जो नैतिक और मानसिक प्राप्त कर रहे हैं, एक बिलकुल अभाव-शून्य संसार वास करने पर उसका कुछ भी हम उपार्जन न कर

पुराने जड़वाद के साथ पुराना नास्तिकवाद संसार से आज लुप्त हो गया है। कोई भी कि यह निश्चय-पूर्वक नहीं कह सकता कि शक्ति ईश्वर क्या है। संदेह और संशय प्राचीन काल में और आगे भी रहेगा। विज्ञान धर्म को नास्तिकता के दर्शन ईश्वर को ग्रस्त कर लेंगे, कोई शंका नहीं देख पड़ती। जो लोग के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करते, अथवा जो अज्ञेयवादी और संशयवादी हैं, ऐसे भी मनुष्य नैतिक जीवन पारकर मानव-समाज सेवा कर गए हैं। परंतु सत्य, न्याय और मानव लिये अब तक जो सब श्रेष्ठ व्यक्ति संग्राम और सह गए हैं, वे अधिकांश में ईश्वर पर विश्वास थे। × × × हमारे भीतर-बाहर और तरफ़ ईश्वर है। अतएव नाना विवाद, कष्ट और के भीतर से लक्ष्य तक हम लोग अवश्य पहुँचेंगे।

× × ×

७. इँगलैंड और भारत का संबंध

इँगलैंड और भारत का जेता और विजित

संबंध है। इस संबंध में दो ही बातें प्रबल हैं, भय और दबाव, जिससे भारत के लिये तरक्की करना अत्यंत कठिन हो गया है। जहाँ कहीं तरक्क़ी का पौदा पनपता हुआ देख पड़ता है, वहीं उसकी जड़ काट दी जाती है। भारत हर तरह से अधिकार-रहित है। इसलिये बाहरी सम्मान का वह क़तई हक़दार नहीं। भीतर भी उसमें अनेक छिद्रान्वेषी जीव हैं, अनेक प्रकार की कमज़ोरियाँ हैं, जिनके दूर करने के उपायों का बड़ी बुद्धिमत्ता से तिरस्कार किया जाता है। इँगलैंड के हाथ भारत एक सोने की चिड़िया फँस गई है। वहाँ के पूँजीपति यह बात किसी तरह पसंद नहीं करते कि भारत को आवश्यकता से अधिक अधिकार दे दिए जायँ। इससे अँगरेज़ी व्यापार को गहरा धक्का लगता है, जिससे इँगलैंड की शक्ति के ह्रास होने की संभावना है। अँगरेज़ों का जातीय सूत्र व्यवसाय, भारत के स्वाधिकारों से दब जायगा, यह भय वहाँवालों को सदा ही लगा हुआ है। महासभा के आंदोलन के बाद से इँगलैंड के व्यवसायी भारत की तरफ़ से ख़ूब सजग रहते हैं। और, ये पूँजीपति ही चूँकि प्रकारांतर से इँगलैंड के विधाता हैं, इसलिये ये इतने उदार होंगे कि अपनी भलाई भूलकर भारत की भलाई का ख़याल करेंगे, यह बिलकुल भ्रांत धारणा है। भारत अँगरेज़ी माल के खपाने के लिये अँगरेज़ों का सबसे बड़ा केंद्र है। यहाँ से कच्चे माल की जितनी पैदावार होती है, उसका अधिकांश वहीं के व्यापारियों के हाथ लगता है, जिसके एक-एक के सैकड़ों वसूल होते हैं। शासन अपने ही हाथ में है। सुविधा खोज लेने में दिक़्क़त नहीं पड़ती। अलावा इसके, अपर स्वतंत्र राष्ट्रों में व्यावसायिक साम्य भी बहुत कुछ है। यहाँ यह बात नहीं। यहाँ तो व्यवसाय की पराधीनता और भी कठोर तथा पीसनेवाली है। यही कारण है कि किसानों की दुर्दशा का अंत नहीं होता। पाट, सन, रुई, ग़ल्ला आदि जितना कच्चा माल यहाँ पैदा होता है, मुँह-माँगे दामों पर ही दिया जाता है। किसान लोगों में माल रोक रखने की दृढ़ता नहीं, और उस दृढ़ता की जड़ भी काट दी गई है। कारण, लगान उन्हें रुपयों से देना पड़ता है, खेत की पैदावार का तिहाई-चौथाई हिस्सा नहीं। समय पर लगान देने के तक़ाज़े का ख़याल उन्हें विवश कर देता है, वे मुँह-माँगे भाव पर माल बेच देते हैं। यह इतनी बड़ी दासता है, जिसका उल्लेख नहीं हो सकता। आजकल के किसान यह बात भूल गए हैं कि माल उनका है, इसलिये वे ही उसके दामों के निर्णायक हैं। वे बाज़ार की तरफ़ आँखें फाड़े हुए भाव का रास्ता देखते रहते हैं। अगर कुछ दिन के लिये भी माल वे रख छोड़ें, तो समय पर लगान न दे सकने के कारण उन पर ज़मींदारों की बेभाव की पड़ती हैं। इस तरह वे सोलहो आने विवश हैं। भारत का कुल बाज़ार पराधीन है। अँगरेज़ व्यापारी इसकी भी ख़बर रखते हैं। इधर भारत की आमदनी की रक़म का भी अधिकांश ब्रेटब्रिटेन के ही पेट में पंच जाता है। कितने ही सँवार यहाँ के पाए हुए प्रभूत अर्थ से पलते और चार पेग चढ़ा जाने के बाद "ब्रिटेन शुल नेवर बी स्लेव्स्" की रागिनी अपने खुरखुरे कंठ से अलापा करते हैं। यहाँ के आराम तथा अधिकारों को अर्थलोलुप इँगलैंड किसी बड़ी हद तक छोड़ देगा, इस पर राजभक्तगण भक्ति की परा काष्ठा के प्रभाव से प्रत्यक्ष विश्वास कर सकते हैं; पर हमें इसपर बिलकुल ही विश्वास नहीं। यह जो अप्रकट इंद्रजाल का बाक्स लेकर बड़े लाट साहब आए हैं, इस पर केवल यहीं नहीं, विलायत में भी ज़ोरों की बहस छिड़ी हुई है। विलायत का श्रमिक दल अब के चुनाव में विजयी हुआ है। वह चाहता है कि भारत को कोई भारी अधिकार सौंपा जाय। पर भारत के नमक से पलकर विलायत लौटनेवाले लॉर्ड रीडिंग तथा सर रेज़ीनाल्ड क्रेडक् आदि अनेक महोदय हैं, जिन्होंने इस समय भारत की अयोग्यता का डंका पीटने का बीड़ा उठा लिया है। आप लोग प्रबंध लिखते हैं, प्रचार करते हैं, वक्तृताएँ देते हैं, कहते हैं, भारत जैसा अयोग्य तथा अशिक्षित है, उसे अधिक अधिकार प्रमत्त कर दे सकता है, उसके हाथों में अधिकारों की अधिकता गई नहीं कि अनर्थ हुआ। अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू लोग कहते हैं, भारत का उत्तरदायित्व अँगरेज़ों ने अपने हाथों में लिया है, उनके लिये यह कदापि उचित नहीं कि वे अपने कर्तव्य का ज्ञान खो दें, अयोग्य को योग्य मान लें, नाबालिग़ के हाथों में अधिकार सौंप दें। इसी भारतहितैषी दल के साथ मिले हैं मि० विंस्टन चर्चिल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आप मशहूर साम्राज्यवादी हैं, और अनुदार दल के एक ज़बरदस्त पाधा। चिर काल से भारत के संबंध में सरकार की जो नीति रही है, उसकी अवहेलना करने पर कौन-कौन से उपद्रवों की शंका है, इसकी एक ख़ासी तालिका तैयार कर अब आप प्रचार के कार्य में व्रती हुए हैं। आप अमिक गवर्नमेंट से बहुत घबराए हुए हैं, और वह भारत को कोई बड़ा-सा अधिकार न दे बैठे, इसकी शंका करके आप अपने अनुभव का प्रचार तन-मन से करने लग गए हैं। आपने कनाडा-क्लब में वक्तृता देने के लिये जाकर कहा है कि कनाडा के गोरे भी इस अधिकार के देने की बात से भौचक्के रह गए हैं। मज़ा यह कि एक अँगरेज़ जनरल साहब ने—बंदा तो सिपाही है, रस की बातें क्या जाने—पेटी खोलकर रख दी है, और लेखनी उठाकर पागल इँगलैंड-वासियों को समझाना आरंभ कर दिया है। आपका फ़र्माना है कि भारत अँगरेज़ों की विहार-भूमि है। यही एकमात्र स्थान है, जिसे अँगरेज़ जाति अपनी लीलाओं के लिये रख सकती है। यहाँ के लोग भी चौथे दर्जे के हैं, और जब कि तोपों के बल पर बिना किसी प्रकार की बाधा के हम लोग अपना दख़ल क़ायम रख सकत हैं, तब उसे अधिकार देना, उसके लिये स्वार्थ-त्याग की बातें करना प्रलाप के सिवा और कुछ नहीं। इस तरह अनेकानेक बातें प्रतिरोध के संबंध में रोज़ सुनने को मिलती हैं। इधर राजभक्तगणों का हाल ही और है। उन्हें बहुत बड़ी शंका है कि युवक-समुदाय, जो अपने ही बल पर स्वराज लेने की बातें कर रहा है, इससे कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ मिल रहा है, वह भी न मिले। वे लोग बड़े समझदार की गहन-गंभीर मुद्रा से कहते हैं—अरे चुप! सरकार की भैंसों को लाल परचे दिखाकर भड़काना ठीक नहीं! ये लोग कहाँ तक आशा और विश्वास रखते हैं, इसका पता लगा लेना बहुत कठिन है; पर इनकी इस तरह की उपदेश-पूर्ण नीति में राज-भक्ति की बदौलत प्राप्त पदवी-प्रसाद की तरह कोई प्रसादाकांक्षा अवश्य छिपी हुई है। भारत के सामने अब वह समय आ गया है, जब वह अपनी आशाओं तथा आकांक्षाओं की आप ही पूर्ति कर लेने के लिये तैयार हो गया है। तोपों की बदौलत ताज का गर्व अगर टिक सकेगा, तो जनरल साहब अवश्य ही उसे छोड़ेंगे नहीं। इसी तरह अपने बल पर अपने अधिकार लेने वाले भी बिना आशाओं को पूरा किए अब हट नहीं सकते, जैसी कि उनकी दृढ़ता देख पड़ती है। ब्रिटिश जाति को भारत अच्छी तरह पहचान चुका है। अब बार-बार एक ही दाँव नहीं चल सकता। भारत ने बचत अच्छी तरह याद कर ली है। वह जितना चाहता है, उतना कभी किसी से मिल नहीं सकता। ब्रिटिश सरकार कुछ संन्यास तो ले नहीं रही, जो कहा जाय कि भई, बेचारी ने सर्वस्व दे डाला। भारत का जो कुछ खो गया है, वह पूरे अंशों में उतना चाहता है। ब्रिटिश-सरकार उसका सब कुछ दे देगी, तो आख़िर उसके पास रह क्या जायगा? उधर वहाँ के देख-निगाहवाले राजनीतिक यह भी समझते हैं कि जैसी हलचल मची हुई है, बिना कुछ दिए अब निस्तार नहीं। मज़दूर-दल को भी ख़ुश करना है। काम मज़दूर ही करते हैं न? उन पर सवारी कसे बिना इँगलैंड के लिये भी ख़तरे में पड़ने का डर है। कहीं उनके विचारों ने पल्टा खाया—रूस पड़ोस ही में है—तो फिर पूँजीपति लोग अकेले राष्ट्रीयता का बोझ कैसे लादेंगे? इँगलैंड की ज़मीन तो कुछ लड़ेगी नहीं, दूसरों के आक्रमण पर ये मज़दूर लोग ही कटेंगे, लिहाज़ा इन्हें भी प्रसन्न रखना है। इस तरह इँगलैंड की प्रभुता भी रहेगी, राष्ट्रीयता में भी बाधा नहीं पड़ेगी और मज़दूरों पर पूँजीपतियों का आशीर्वाद हाथ भी फिर जायगा। यह सब वहाँ के लोग अच्छी तरह जानते हैं। इसीलिये परिस्थिति को डाँवाडोल कर देने के विचार से राजनीति के हथकंडे किया करते हैं, जिससे कोई ताड़ न सके। दो बातें लिख देने से ही जब तिल का ताड़ बन सकता है, तो "बचने का दरिद्रता", ख़ूब खुलकर लिखा गया, कभी इस तरह कभी उस तरह; कोई इस ओर, कोई उस ओर।

ग्राम-पंचायत का अधिकार दिया गया, पर चुनाव में ख़ासा तमाशा रहा; कोई भी पेंशन-याफ़्ता सूबेदार, जमादार और पुलीस के मददगार नहीं बचे, जिन्हें पंच और सरपंच न बनाया हो। एक बड़ा हमारे एक मित्र मुक़द्दमे में फँस गए। कोई छोटी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फ़ौजदारी थी। मुक़द्दमा डिप्टी साहब के यहाँ से वहीं के ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट के पास भेज दिया गया। ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट वज्र बहरे थे। उनके सेक्रेटरी भी बहरे थे। एक वकील साहब गए; पर बक-झककर लौट गए। मामला सुने कौन? हमारे मित्र ने एक दूसरे वकील से सलाह ली कि क्या किया जाय, तो हमारा मुक़द्दमा यहाँ से उठकर फिर डिप्टी साहब के यहाँ चला जाय। यह तो कुछ सुनते ही नहीं। वकील ने कहा—नहीं, मुक़द्दमा इस बहाने से नहीं लौट सकता; सरकार उन्हें कानवाला ही समझती है, मुक़द्दमा उठ सकता है, अगर कोई रिश्ता किसी से उनका पाया जाय। सरकार का दान ऐसा ही तुला हुआ होता है, यह यहाँवाले अब अच्छी तरह समझ गए हैं। सुभाष बाबू ने मध्य-देश के प्रादेशिक युवक-सम्मेलन में जो भाषण दिया है, तथा और-और जगहों में उन्होंने स्वतंत्रता के अर्थ जो लगाए हैं, वे बहुत ठीक हैं। उनका कहना है कि किसी भी प्रकार की परतंत्रता एक क्षण के लिये युवकों को सह्य नहीं होनी चाहिए। युवकगण यह नहीं चाहते कि इसमें इतना अच्छा है और इतना बुरा, इसलिये इतना छोड़कर इतना ग्रहण किया जाय। युवकों को आमूल परिवर्तन चाहिए, जहाँ सब कुछ अपना ही है, जहाँ अपनी ही प्रतिभा का चमत्कार है, अपने ही हाथों की कारीगरी है, अपने ही आदमियों की पाबंदी है, अपने ही कर्तृत्व की अधीनता है; जहाँ परावलंबन किसी बात में नहीं। यही इस समय अधिकांश देश-सेवकों की राय है। सब लोग इँगलैंड की चालों से हैरान हो गए हैं। कोई नहीं सोचता कि गोरी जातियों के सहारे से उठने का कुछ भी साधन प्राप्त न होगा। दक्षिण की महिलाओं ने शिक्षा को भी दूर कर देने की आवाज़ उठाई है। उनका कहना है, इस शिक्षा से मनुष्योचित वीर्य तथा शालीनता की प्राप्ति नहीं होती। ये इतने सब शाब्दिक आक्रमण विलायत के राजनीतिज्ञों के कानों तक पहुँचते नहीं, ऐसी बात नहीं। बल्कि इस आवाज़ को धीमा कर देने के विचार से ही, जहाँ तक जान पड़ता है, लाट साहब भारत के लिये गूलर का यह फल लेकर आए हैं।

× × ×

८. फ्रेंच महावीर क्लेमेंशो

फ्रांस की राष्ट्रीय उन्नति के विधायक महावीर क्लेमेंशो का ८८ साल की उम्र में स्वर्गवास हो गया। क्लेमेंशो का तमाम जीवन घोर कठोरता के भीतर से बीता है। मृत्यु के अंतिम क्षण तक उन्होंने उसी कठोरता की साधना की। वह फ्रांस के प्राण थे। विगत महासमर में जर्मनों से हारने पर जब फ्रांस की नसें ढीली पड़ गईं, तब इन्होंने ही उसकी शिराओं में गर्म ख़ून बहाया था, उसे फिर से दृढ़तापूर्वक शत्रुओं का मुक़ाबला करने के लिये तैयार किया था। राष्ट्र की हित-चिंतना ही इस महावीर का एक-मात्र लक्ष्य था। राष्ट्र की कठोरता के पीछे इनका जीवन इस प्रकार नीरस हो गया था कि लोगों को इनकी हिम्मत देखकर दंग रह जाना पड़ा। २४ नवंबर (१९२९) की २-१५ रात्रि को इनकी आत्मा शरीर-पिंजर से निकल गई। मृत्यु के कुछ पहले इन्होंने शेर की दहाड़ से कहा था—"मैं अपनी मृत्यु-शय्या के चारो ओर स्त्रियों को नहीं देखना चाहता। स्त्रियाँ और आँसू, इनमें से कोई मुझे पसंद नहीं। मैं पुरुषों के सामने मरना चाहता हूँ।" औरतों की सूरत से उन्हें इतनी नफ़रत थी, और वह कमज़ोरी से इतनी घृणा करते थे कि अपर स्त्रियों का आना तो उन्होंने रोक ही दिया था, किंतु जो दो परिचारिकाएँ उनकी सेवा कर रही थीं, उन्हें भी उन्होंने गृह से निकाल दिया था। उनकी मृत्यु के समय साधारण जनों में इतनी चंचलता बढ़ गई थी कि फ्रेंच-सरकार की तरफ़ से इसके लिये ख़ास बंदोबस्त करना पड़ा था। उनके मकान में पहरेदार लगाने पड़े थे। उनकी मृत्यु होने पर संपूर्ण फ्रांस में जातीय पताका गिरा दी गई थी। लोगों ने शोक-सूचक चिह्न धारण किया था। प्रेसीडेंट मिस्टर डूमार्ग और प्रधान मंत्री मिस्टर तारदू तथा और-और प्रतिष्ठित लोग इस महान् राजनीतिज्ञ के प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिये आए थे। इनके मरने पर अख़बारों के विशेषांक निकले थे। उनमें लिखा था—"हम लोग क्लेमेंशो के प्रति विशेष श्रद्धा निवेदित करते हैं।" इस फ्रेंच-शार्दूल ने अपने पिता की समाधि के पास ही क़ब्र बनाने का आदेश दिया था। तदनुसार वेंडी-वन में उनकी क़ब्र तैयार की गई है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिस्टर क्लेमेंशो १८४१ ई० के सितंबर में पैदा हुए थे। आपके पिता ने अपने चरित्र के अनुसार आपको गण-तंत्र की सेवा, कठोर कर्मनिष्ठा और अत्याचार से घृणा करने की शिक्षा दी थी। पुत्र ने अपने भविष्य के जीवन में वैसा ही किया था। शिक्षा समाप्त कर राजनीतिक मतवाद के लिये २४ साल की उम्र में ही आपको २ महीने की सज़ा मिली थी। १८६६ ई० में आप संयुक्त-राज्य, अमेरिका, गए। वहाँ फ्रेंच-भाषा के अध्यापक होकर जीविका चलाने लगे। वहीं एक अमेरिकन युवती से आपने विवाह किया। उससे तीन संतानें हुईं। १८७० ई० में फ्रांको-प्रशियन समर में डॉक्टरी का व्यवसाय लेकर आप फ्रांस वापस आए। इस लड़ाई के बाद मॉंटसारस्टी-शहर के आप मेयर निर्वाचित हुए। शहर के रास्ते-घाट, शासन, स्वास्थ्य, पुलीस आदि की बुरी व्यवस्थाओं को दूर करने के लिये आपने दिलोजान से प्रयत्न किया। इसके बाद फ्रेंच पार्लामेंट की ग़लतियाँ दूर करने और उस समय के मंत्रि-मंडल को तोड़कर उसका पुनर्निर्माण करने का आपने बीड़ा उठाया। उस समय जैसी वाक्चातुरी, राजनीतिज्ञता तथा अध्यवसाय का आपने परिचय दिया है, उसका वर्णन करना असंभव है। उसी समय से आपको "व्याघ्र" कहकर लोग पुकारने लगे। १९०६ में आप फ्रांस के प्रधान मंत्री चुने गए। आपने धर्म और राष्ट्र को पृथक् कर दिया। और भी अनेक प्रकार के शासन-संस्कार किए। १९११ ई० में जर्मन-युद्ध का आभास मिलने पर आपको कुछ शंका हुई थी। १९१३ ई० में आप एक सैनिक संवाद-पत्र के संपादक हुए। उसमें आनेवाले समर की बड़े अच्छे ढंग से आलोचना करने लगे। १९१४ ई० में महायुद्ध का श्रीगणेश हुआ। उस समय आपकी उम्र ७४ साल की थी। पर फिर भी जैसी शक्ति तथा तत्परता का आपने परिचय दिया, उसे देखकर दंग रह जाना पड़ता है। एक तो ऐसे ही फ्रेंचों की कार्य-कुशलता प्रसिद्ध है; उस पर उस समय की आपकी चातुरी, शक्ति तथा साहस आदि लासानी थे। महासमर के समय तीन साल तक आपकी दिनचर्या इस प्रकार थी—

आप रात के एक बजे या दो बजे उठते थे। सुबह से पहले अपना तमाम कार्य समाप्त कर देते थे। छः या सात बजे तक व्यायाम तथा जलपान कर चुकते थे। पश्चात् जो लोग आपसे मिलने आते, उनसे आप वार्तालाप तथा आलोचनाएँ किया करते। इसके बाद सौ-दो सौ पत्रों का उत्तर लिखते। संपूर्ण फ्रांस से ये सब पत्र आपके पास आया करते थे। इनसे आप अपनी जाति के मनोभावों का अध्ययन करते थे। इसके बाद झटपट कुछ भोजन करके देश की रक्षा के लिये मंत्रि-मंडल में सम्मिलित होने थे। फिर आप लक्सेमबर्ग-शहर छोड़कर पेरिस जाते थे। वहाँ अपने संवाद-पत्र के लिये कार्य करते थे।

१९१४ ई० के सितंबर के महीने में आपकी स्पष्टवादिता के अपराध में आपका अख़बार ज़ब्त कर लिया गया। दो दिनों के बाद आपने दूसरा पत्र निकाला, और गोले, बारूद और बंदूकें बढ़ाने के लिये गवर्नमेंट पर दबाव डालने लगे। इस समय की आपकी बड़ी भयंकर-भयंकर वक्तृताएँ हैं। ७६ साल की उम्र में, १९२७ ई० में, आप ही की विजय हुई। आप समर-सचिव बनाए गए। उस समय फ्रांस की हालत बहुत ख़राब थी। वह श्रान्त, हारा हुआ, अवसाद-ग्रस्त, चिंताशील, मृतकल्प हो रहा था। उस समय फ्रांस की नैतिक आबोहवा भी कलुषित हो रही थी। फ्रांस को इन दुर्दशा के दिनों में महावीर क्लेमेंशो—वृद्ध-केसरी क्लेमेंशो, को मौत हथेली में लेकर, अपने सफ़ेद बालों में चमकते, अपनी तनी हुई भौंहों में सोचते, तेज़ आँखों में दृढ़, झुर्रियोंवाले गालों में दृढ़प्रतिज्ञ युद्ध-भूमि में उतरे। फ्रांस की सीमा में इस बार—अंतिम बार के लिये तोपें गरज उठीं—वीर-व्याघ्र की विजय-घोषणा हुई।

इस महान् कर्म का भार ग्रहण कर महावीर क्लेमेंशो ने एक प्रकार विश्राम छोड़ ही दिया। पश्चात् इसी बुढ़ापे में आप भारत-भ्रमण करने के लिये आए। भारत की प्राचीन सभ्यता, शिक्षा, गंगा-तट का सौंदर्य तथा प्राचीन बनारस के दृश्यों ने आपको मुग्ध कर लिया। फिर १९२२ ई० में ८१ साल की उम्र में आप अमेरिका गए। अमेरिका के राष्ट्रों में फ्रांस के पक्ष से प्रचार करते रहे। १९२५ ई० में आप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पेरिस लौट आए। आपने दर्शन-शास्त्र तथा अन्यान्य कई विषयों की पुस्तकें लिखी हैं। मृत्यु से पहले तक, अंतिम समय में, आपने केवल साहित्य की साधना की है। आपके जीवन की नदी अनेक प्रकार के तरंग-भंगों से, अनेक मोड़ लेती हुई, बही है। आज वह सफलता के समुद्र को आलिंगन कर गई। आप अमर हो गए।

आपकी जैसी इच्छा थी, मृत्यु के बाद आपको वेंडी-वन में ले आकर समाधिस्थ किया गया। आपकी इच्छानुसार क़ब्र के पास कोई वक्तृता नहीं दी गई। कोई शोक-प्रकाश नहीं किया गया। लड़ाई के समय आपको जो उपहार मिले थे, तथा जिस छड़ी को लेकर आप युद्ध की खाइयों की देख-भाल करते थे, वे सब भी आपके साथ समाधि में रख दिए गए हैं। संसार-विश्रुत फ्रेंच-वीरांगना जोआन आर्क की क़ब्र से कुछ मिट्टी लाकर इस महावीर के शवाधार पर छोड़ी गई। आपके प्रति अंतिम सम्मान का प्रदर्शन पेरिस में १०१ तोपों की सलामी से किया गया। फ्रांस की दूकानें बंद हो गई थीं। दुनिया की सब जातियों के लोगों ने आपके प्रति सम्मान-प्रदर्शन के तार भेजे हैं। ब्रिटिश गवर्नमेंट के अधिकारियों तथा प्रतिष्ठित लोगों ने आपके गुणों की तारीफ़ की है। मि० मैकडोनाएड, मि० लॉयड जॉर्ज, लॉर्ड ग्रे, लॉर्ड डर्बी आदि लोगों ने आपके शौर्य ओजस्विता, कर्म-तत्परता आदि की मुक्त-कंठ होकर प्रशंसा की है। सबका यही कहना है कि अपनी जाति को जैसी विपत्ति से उन्हों ने बचाया है, उसे देखते हुए, वे सबकी श्रद्धा के पात्र हैं।

× × ×

६. युवक-वीर, राजा साहब कालाकाँकर

कालाकाँकर हिंदी का तीर्थ है। उसे साहित्यिक जन अच्छी तरह जानते हैं। स्वर्गीय राजा रामपालसिंह जी, हिंदुस्तान, मालवीयजी आदि की मनोहर स्मृतियों से उसका आभ्यंतर रूप और भी विशद हो गया है। कितने ही सुकवियों का जीवन कालाकाँकर के इतिहास से मिला हुआ है। इधर कुछ सन्नाटा-सा था। यह स्वर्गीय राजा साहब की मृत्यु के कारण। दूसरा कारण, वर्तमान राजा साहब श्रीमान् अवधेशसिंहजी का "किशोरे विद्यायां विषम-विषये तिष्ठति मनः" जान पड़ता है। राजा साहब अभी नौजवान हैं। आपको देखकर प्रसन्नता होती है। आपके मुख पर नौजवानी की सच्ची कांति झलकती है। आँखों की प्रसन्न-निर्मल दृष्ट-ज्योति में यथार्थ क्षत्रिय-वीर्य मिलता है, वीर-नव-युवक राजकुमारों के जैसे चित्रण पढ़े जाते हैं, आप उसके सजीव रूप हैं। राजा साहब अब की लखनऊ में होनेवाली वीरवर यतींद्रनाथ की शोक-सभा में सभा पति चुने गए थे। तब से देश के नवयुवक-समुदाय की दृष्टि आप पर लगी हुई है। अब की महात्माजी अपने साथियों के साथ लखनऊ आकर आप ही के सुंदर बँगले में ठहरे थे। आप बिलकुल सादी पोशाक में रहते हैं। जैसा कि महात्माजी के 'नवजीवन' में लिखा है, आपको देख-कर यह नहीं जान पड़ता कि आप ही राजा साहब हैं। आपके कुल वस्त्र खद्दर के थे। महात्माजी तथा उनके साथियों की एक स्वयंसेवक की हैसियत से आपने सेवा की। आपको ऐश्वर्य का अभिमान कहीं छू भी नहीं गया। उस दिन एक टेबिल पर खाते वक्त जो अनुभव आपने सुनाया, हम लोग हँसते-हँसते लोट गए। एक बार आप रेल से जा रहे थे, आप जिस तरह खद्दर पहने हुए रहते हैं, उसी तरह थे। फ़र्स्ट-क्लास डब्बे में आपको खद्दरपोश देख-कर लोग आपस में कहने लगे—"देखो, चंदे की रक़म इस तरह पचती है!" राजा साहब के स्वभाव की नम्रता का उल्लेख करते हुए 'नवजीवन' ने लिखा है—"हममें से एक भाई ने उन्हें पहचान नहीं पाया, और उनसे नौकर का काम करवाया। राजा साहब ने बिल-कुल सहज भाव से और बड़ी ख़ूबी के साथ वह काम कर दिया। बाद में जब उन साथी को अपनी भूल मालूम हुई, तब उन्होंने माफ़ी माँगी। राजा साहब ने जवाब दिया—"इसमें माफ़ी की क्या बात है? मैं स्वेच्छा से स्वयंसेवक बना हूँ, और इस तरह का काम न मिलने पर दुःखी होता हूँ।" लखनऊ में आपने महा-त्माजी से कालाकाँकर चलने के लिये आग्रह किया। तदनुसार महात्माजी कुछ दिनों बाद कालाकाँकर गए। उस दिन जो मित्रों ने कहा था कि राजा साहब के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भीतर से उनके पूर्वजों की पुण्य-राशि जाग्रत् हुई है, वह सच है। "केतहु काल कराल परै पै मराल न ताकहिं तुच्छ तलैया।" आपकी रानी साहबा भी खद्दर पहनती हैं। 'नवजीवन' ने लिखा है—"कालाकाँकर ठीक गंगा के तट पर बसा हुआ है। राजा साहब का पुराना, सादा, किंतु सुंदर महल बिलकुल नदी-तट पर है। वहाँ गांधीजी को एकांत मिलने की बात कही गई। किंतु गांधीजी के लिये तो और भी कई प्रलोभन थे। रनिवास की बहुतेरी स्त्रियाँ पर्दा नहीं करतीं। राजा साहब जनता से मिलते-जुलते रहते हैं। ये सब बातें प्रत्यक्ष देखना गाँधीजी को पसंद है ही। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने अपनी कल्पना से भी बढ़कर सृष्टि-सौंदर्य और शांति का अनुभव किया, राजा साहब ने द्रव्य भी खुले हाथों दिया। राजा साहब जैसे लखनऊ में थे, वैसे यहाँ भी पाए गए। अपने गाँव में भी उनके शरीर पर वही पोशाक, वही सादगी थी। राजा साहब के प्रबंध से कालाकाँकर में एक सभा भी हुई थी। सभा के एक कोने में चबूतरे पर बेशक़ीमती विलायती कपड़ों का ढेर रक्खा हुआ था। इनमें राजा साहब के महल में रहे हुए—बचे-खुचे—सारे विलायती कपड़े आ टपके थे। उनके भाई का अभी ताज़ा ही विवाह हुआ था। उनकी नई रानी ने भी अपने क़ीमती विदेशी कपड़े दे डाले थे। कालाकाँकर के मित्र और पड़ोसी ज़मींदार समस्तीपुर के राजा लाल साहब भी अपने साथ अपने विदेशी कपड़ों का ढेर लेते आए थे। इस तरह ग़रीब जामे, अब तक सुंदर मानी जानेवाली महीन बेबहा

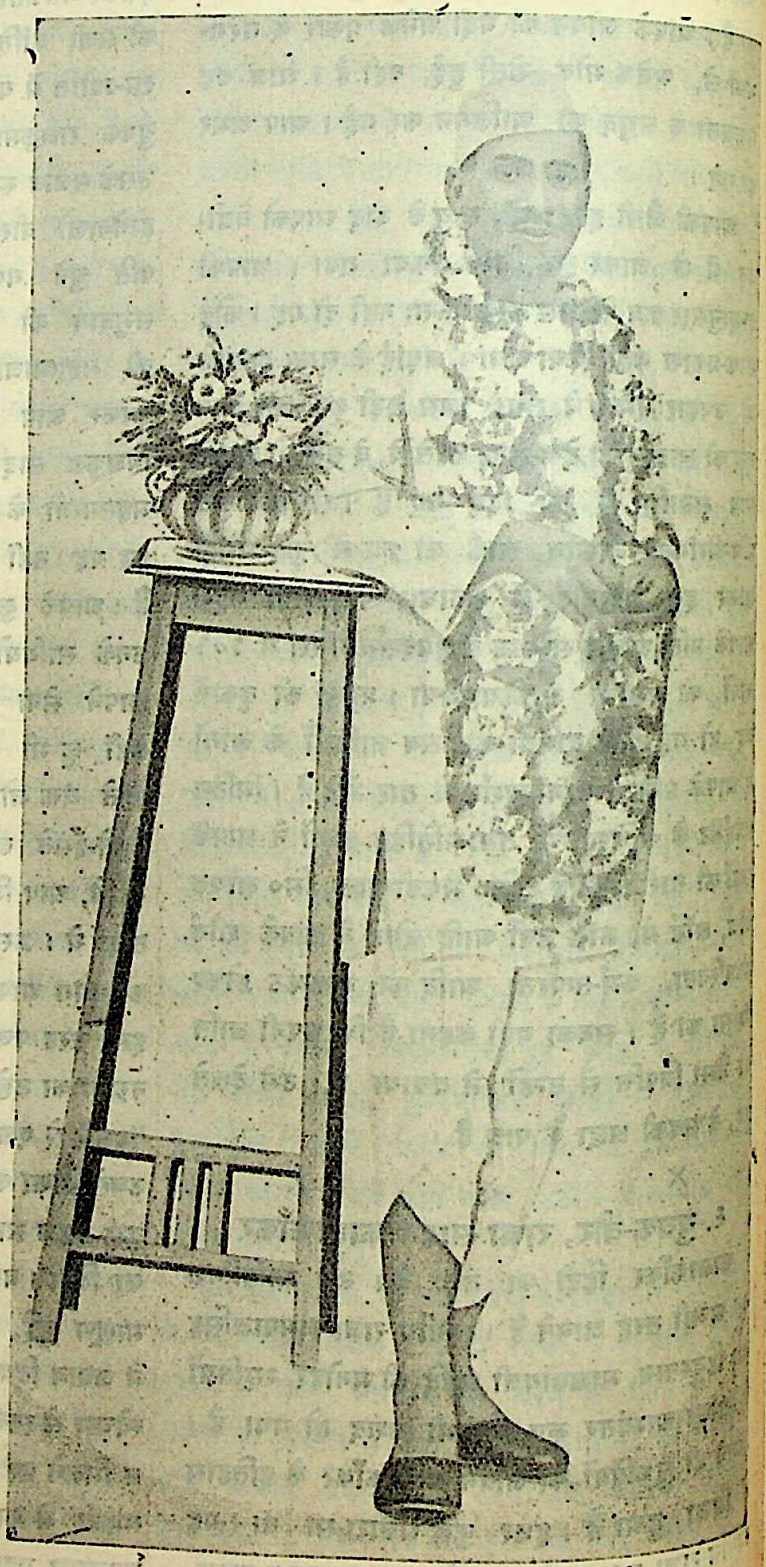

युवक-वीर राजा साहब कालाकाँकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की क़ीमती साड़ियाँ, दुपट्टे वग़ैरह अनेक कपड़े इकट्ठे हो गए थे। राजा साहब ने इन्हें भी गांधीजी के हाथों जलवाया। कुल मिलाकर लगभग ७,०००) के विदेशी कपड़े होंगे। होली जलाने के लिये चाँदी की मूठवाली मशाल गांधीजी को दी गई थी। उस मशाल को जब गांधीजी ने कपड़ों से छुलाया, तो पहली ज्वाला के साथ ही लोग चारों ओर इकट्ठे हो गए, और हर्षध्वनि से आसमान गूँज उठा! अंत में मशाल भी नीलाम की गई, जिसे राजा साहब ने ५००) देकर ले लिया।" आपने महात्माजी को ५०००) की थैली भेंट की। इलाहाबाद के म्युनिसिपल बोर्ड से जिस तश्तरी पर महात्माजी को मान-पत्र दिया गया था, वह तश्तरी भी आपने १०००) देकर ख़रीद ली। अभी-अभी आपके यहाँ एक कवि-सम्मेलन हो चुका है, जिसके सभापति 'सनेही'जी थे। आपने इस नवयुवक मित्र के विकास को देखकर हमारे हृदय में बहुत बड़ी-बड़ी आशाओं का संचार हो रहा है। आपसे जाति, देश तथा साहित्य का कल्याण हो, आप दीर्घ जीवन प्राप्त करें, यही ईश्वर से हमारी प्रार्थना है।

× × ×

१०. नेपाल के प्रधान मंत्री का स्वर्गवास

नेपाल के प्रधान मंत्री तथा प्रधान सेनापति माननीय महाराजा सर चंद्रशमशेरजंगबहादुर राना का, ६७ साल की उम्र में, स्वर्गवास हो गया। आप विद्यानुरागी तथा शिक्षित मनुष्य थे। आप केवल हिंदोस्तान की ही सभ्यता नहीं, पश्चिमी सभ्यता का भी मर्म समझते थे। आप अँगरेज़ी के मर्मज्ञ विद्वान् थे। नेपाल में आप प्रधान मंत्री, प्रधान सेनापति तथा परराष्ट्र-सचिव का कार्य करते थे। १९०३ ई० में, जब सप्तम एडवर्ड सिंहासन पर बैठे थे, दिल्ली में जो दरबार हुआ था, उसमें आप नेपाल के महाराजाधिराज की तरफ़ से आए थे। आपको सम्राट् पंचम जार्ज तथा विलायती गवर्नमेंट की तरफ़ से "मेजर जनरल", जी० सी० एस्० आई०, जी० सी० पी० ओ० आदि सम्मानवाली पदवियाँ मिली थीं, जिनसे आपकी विशेषता सूचित होती है। अपने देश तथा राष्ट्र के कर्णधार बनकर आपने सच्ची योग्यता का परिचय दिया है। आपका शासन नेपाल में प्रशंसनीय रहा है। १९०८ ई० में आप विलायत गए थे। वहाँ से वहाँ तक आपने अपना हिंदुत्व का झंडा हो रक्खा था। आप एक विशेष जहाज़ से होकर गए थे। वहाँ इँगलैंड के राजपरिवार ने बड़े सम्मान से आपकी अभ्यर्थना की थी। गत योरपीय महासमर में आपने बहुसंख्यक गोरखा सिपाहियों से अँगरेज़-सरकार की मदद की थी। इँगलैंड के समाट् तथा युवराज ने दो बार नेपाल में आपका आतिथ्य स्वीकार किया था। आपने नेपाल में नवीनता का भी कुछ प्रचार किया है। काठमांडू से कुछ मील दूर विद्युताधार हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्लैंट स्थापित किया है। भीमपदी से रक्सल तक रेल-लाइन बनवाई है। इसके

नेपाल के नए प्रधान मंत्री

अलावा काठमांडू में आधुनिक वैज्ञानिक यंत्रों का एक अस्पताल खोला है। महासमर में जिन गोरखे सिपाहियों ने मैदाने-जंग में जान लड़ा दी थी, उनकी स्मृति में आपने यह अस्पताल बनवाया है। एक सबसे बड़ा तथा आकर्षक कार्य जो आपने नेपाल में किया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, वह है वहाँ से ग़ुलामों की ख़रीद-फ़रोख़्त बंद करा देना। इस कार्य से आप नेपाल की जनता के श्रद्धा के पात्र हो गए हैं। आप अपने पीछे एक बड़ा परिवार छोड़ गए हैं। आपके पाँच लड़के हैं। वे सभी नेपाली सेना के अफ़सर हैं। नेपाल का प्रधान मंत्री ही सब कुछ है। वहाँ के महाराज शासन-प्रबंध नहीं करते। इसलिये प्रधान मंत्री ही पर वहाँ का सारा उत्तरदायित्व है। आपकी आत्मा को स्वर्ग में शांति मिले, तथा आपके शोक-ग्रस्त परिवार को ईश्वर धैर्य दें। उनके साथ हम समवेदना प्रकट करते हैं।

× × ×

११. ब्रिटिश जहाज़ पर जल-दस्युओं का आक्रमण

चीना-समुद्र में जल-दस्युओं के साथ अँगरेज़ी जहाज़ के लोगों की एक भयंकर लड़ाई हो गई है। यह वर्णना सनसनी पैदा करनेवाली, साथ ही करुण है। "हाइ-चिंग"-नाम का ब्रिटिश जहाज़ तीन सौ यात्रियों को लेकर सोआटो से यात्रा कर रहा था। इस जहाज़ में एक अँगरेज़ और तीन अमेरिकन महिलाएँ थीं। एक दिन बिलकुल सुबह को यात्रियों के रूप से जल-डाकुओं ने पिस्तौल लेकर विकट चीत्कार करते हुए जहाज़ के ब्रिज पर (जहाँ खड़ा होकर कप्तान जहाज़ की गति-विधि का पर्यवेक्षण करता है) धावा बोल दिया। अफ़सर और भारतीय पहरेदार जहाज़ की रक्षा के लिये दौड़ गए। पहले ही से सतर्कता के लिये ब्रिज कँटीले तारों से घेर दिया गया था। चीफ़ अफ़सर और थर्ड अफ़सर पहले ही आक्रमण में बुरे तौर से घायल हो गए। परंतु डाकुओं को हट जाना पड़ा। इसके बाद अफ़सरों ने टार्चलाइट की तीव्र रोशनी से डाकुओं की आँखों को झुलसा दिया। दो-तीन घंटे तक दूर जाते हुए लोगों पर गोलियाँ चलाई गईं। इसके बाद डाकुओं ने ब्रिज के पास ही डेक पर आग लगा दी। परंतु हवा का रुख़ डाकुओं की ही तरफ़ था, जिससे अग्नि-शिखाएँ उसी तरफ़ बढ़ने लगीं। त्रास का जहाज़-भर में संचार हो गया। वहाँ चीनी यात्रियों ने भी आकर भीड़ जमा दी। उन लोगों ने हल्ला मचाते और लड़ते हुए बचानेवाली नावों का सहारा लिया, जो जहाज़ की बग़ल में टँगी हुई थीं। परंतु इस तरह की तीन नावें, यात्रियों से भ हुई, देखते-देखते समुद्र-गर्भ में डूब गईं। उनके साथ यात्रियों की भी वहीं सलिल-समाधि हो गई। विप्र ग्रस्त जहाज़ से विपत्तिसूचक तार की ख़बरें भेज गईं। सुबह को पाँच बजे, जब अग्नि की शिखाएँ चा ओर फैल गई थी, डेस्ट्रॉयर "स्वालि" वहाँ आ पहुँचा। इस दूसरे जहाज़ के सैनिकों ने शीघ्र ही आ बुझा दी, और डाकुओं को हाथ-पैर बाँधकर क़ैद क लिया। इस लड़ाई में १२ आदमी काम आए, ६० चीना पानी में डूब गए। डेस्ट्रॉयर के रक्षक "हाइचिंग" जली हुई हालत में काउलुन-खाड़ी आ पहुँचा है। उसके डेक का जैसा दृश्य है, वह ब ही करुणोत्पादक तथा भयंकर है। डेक पर ख़ून मारे कीच हो गई है। लाशें इधर-उधर पड़ी हुई भयंकरता को और भी भयंकर कर रही हैं। कु असबाब, लाइफ़ बेल्ट तथा और-और चीज़ें जहा पर सर्वत्र बिखरी हुई पड़ी हैं। टार्चलाइट के द्वा डाकुओं की आँखों को झुलसा देने के कारण तथा ब्रि के चारो ओर काँटीले तार घेर देने से इस बार डाकुओं को पराजित होना पड़ा। थर्ड अफ़सर और एक भारतीय पहरेदार काम आया है। क़ैदी डाकू भी बु तरह घायल हुए हैं। वे सब इस समय अस्पताल में दाख़िल हैं।

× × ×

१२. श्रीमती चेतनादेवी

हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक साहित्य-रत्न, रायबहादुर लाला सीतारामजी बी०ए० हिंदी-संसार में पूर्ण-परिचित और सर्वप्रिय हैं। इस समय वृद्धावस्था में आपको अपनी प्रिय धर्मपत्नी के वियोग का दुःख उठाना पड़ा है, यह जान कर हमें बड़ा खेद हुआ। हम लालाजी के प्रति अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए यह आशा करते हैं कि सुशिक्षित, अनुभवी लालाजी इस दुःख को धैर्य के साथ सहन करेंगे।

लालाजी की धर्मपत्नी का नाम श्रीमती चेतनादेवी था। यह एक बड़े प्रतिष्ठित घराने की लड़की थीं। इन के एक भाई—राय राघवप्रसादजी—अयोध्यानरेश, म

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महोपाध्याय, सर श्रीप्रतापनारायणसिंह बहादुर के० सी० आई० ई० के नायब थे। देवीजी की प्रकृति बहुत मिलनसार और नम्र थी। साथ ही इनमें स्वाभिमान की मात्रा भी यथेष्ट थी। घर के और बाहर के सभी लोग इनका सम्मान, आदर और प्रतिष्ठा करते थे। इनके आत्मसम्मान के उदाहरण-स्वरूप एक घटना का यहाँ उल्लेख किया जाता है। एक दफ़े एक बहुत ऊँचे दर्जे के अँगरेज़ अफ़सर की स्त्री लालाजी के घर पर पधारीं। प्रस्ताव हुआ कि उनका फ़ोटो लिया जाय। मेम साहब ने देवीजी से यह आग्रह किया कि आप भी मेरे साथ बैठकर फ़ोटो उतरवाइए। देवीजी ने तुरंत उत्तर दिया—अच्छी बात है; पर एक काम आपको करना पड़ेगा। आप भारतीय वेष धारण कीजिए, तो मैं आपके साथ बैठ सकूँगी। मेम साहब इस पर बहुत प्रसन्न हुईं, और भारतीय महिला का वेश धारण करने को राज़ी हो गईं। दोनों का एकसाथ बैठकर फ़ोटो खींचा गया।

देवीजी को विद्या का व्यसन बहुत अधिक था। इसके अलावा वह गृह-प्रबंध करने में भी बड़ी चतुर थीं। पति की सेवा में घोर परिश्रम करके भी सदा प्रसन्न रहती थीं। लालाजी का स्वास्थ्य अब तक बहुत अच्छा है, और वह साहित्य-सेवा में लगे रहते हैं। यह सब उनकी धर्मपत्नी की ही सेवा और देख-रेख रखने का सुफल है। ऐसी पत्नी के वियोग से लालाजी को तो अकथनीय कष्ट हुआ ही होगा, उनके नातेदारों और इष्ट-मित्रों को भी कम दुःख नहीं हुआ। साधारण श्रेणी के मनुष्यों से लेकर अनेक सरकारी उच्च पदाधिकारियों तक ने पत्र और तार भेजकर लालाजी के प्रति अपने प्रेम का परिचय दिया है। ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है कि वह देवीजी की पवित्र आत्मा को शांति और सद्गति तथा लालाजी को यह दुःख सहने की शक्ति एवं धैर्य दें।

× × ×

१३. राष्ट्र और नारी

संस्कृत-साहित्य में जो विधाता की आदि शृंगार-सृष्टि, वन-पादपों के पाद-मूल में खड़ी सखियों के साथ आलबालों में जल सींचकर कौतुकालाप करती हुई, महाकवि की कल्पना की उज्ज्वल प्रतिमा, शकुंतला वन्य वल्कलों से अपने पीन-पुष्ट भरे-उभरे हुए नवीन यौवनांगों को ढके, सलाज-सप्रेम दृष्टि से चतुर्दिक् चंचल हेरती हुई मिलती है, वह केवल नाटक की प्रधान नायिका या प्रमाणों की कल्पित पात्री ही नहीं, किंतु वह, तत्कालीन राष्ट्र की सर्वोत्तम आदर्श नारियों की ज्योतिर्मयी, साहित्य की प्रधान अभिनेत्री है। संस्कृत-साहित्य में दूसरी शकुंतला नहीं। उसके सरस-कोमल-मधुर उपाख्यान के स्वर्गीय प्रेम का रसास्वादन करने के साथ-ही-साथ हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि वह तपोवन की तपस्या, प्रेममयी नारी-शिरोमणि शकुंतला ही उस समय के एकच्छत्र सम्राट् भरत की जन्मदात्री थी। भारत की साम्राज्ञी, भारत की सम्राट्-माता शकुंतला के चरित्र में भारत-राष्ट्र की आदर्श-नारियों को अनेक प्रकार की शिक्षाएँ मिलती हैं, जिनमें एक ही साथ अपार रूप तथा अविचल तपस्या, एकनिष्ठ पति-परायणता तथा आश्चर्यकर ओज, एक ही देह की द्युति में लावण्य तथा कठोर संयम की विद्युत्-शिखा, अपांगों में अचूक सम्मोहनास्त्र तथा अपार धैर्य और शांति मिलती है। प्रेम-शृंगार जितना ऊँचा, त्याग भी उतनी ही दूर तक समांतराल रेखा की तरह खिंचा, चलता हुआ। यह तत्कालीन भारत-राष्ट्र की कल्याणी नारी-मूर्ति है, जिसे देखकर कामनाएँ आप ही में मुरझाकर मर जाती हैं—शांति के रूप में स्वर्गीय सुख का अनर्गल प्रवाह बह चलता है।

आज जो अतृप्त उद्दाम वासनाएँ विषय के आसन पर बैठने-बिठाने के लिये हमारे राष्ट्र की शिक्षित महिलाओं को सदा ही दर्शन दे रही हैं, जिनके ज़हर से उनका स्वर्णोज्ज्वल शृंगार-शरीर प्रतिदिन स्याह पड़ता जा रहा है, इसका कारण वास्तव में यह है कि आवश्यकताओं की पूर्ति के विशद् उपाय को ही वे भूल गई हैं। वे इतना बहिर्मुख तथा दूसरे राष्ट्रों की ऐश्वर्यवती महिलाओं के रूप-रंग, हाव-भाव, केश-वेश आदि की तरफ़ बढ़ी हुई हैं कि उन्हें अपनी आत्मा की ज्योति की तरफ़ देखने का अवकाश ही नहीं मिलता। आईने में अपने ही चित्र को वे दूसरी स्त्रियों के चित्रों में कल्पित कर देखती हैं, और उस मान-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिक आदर्श से बहुत पीछे रहने के कारण अपने अम्लान रूप के पुष्प को नहीं पहचान पातीं, बल्कि उसे देखकर पाला की मारी हुई फूली डाल की तरह मुरझा जाती हैं। यह आत्मिक दैन्य है, जहाँ दृष्टि रूप पर नहीं, उसके साधनों पर पड़ती है, जहाँ अपने ही साथ राष्ट्र की स्वाधीन सत्ता स्वप्न के छाया-चित्रों की तरह विलीन हो जाती है, और निद्रा के क्रमशः प्रगाढ़ होते हुए स्तब्धांधकार पर सत्य का भान होने लगता है। मरीचिका सत्य नहीं, सत्य जल ही है, और तृष्णार्त के लिये आवश्यक भी वही है; पर मरीचिका की ज्योति, रम्यता तथा आकर्षण अपार, अतुल है। तृष्णा का सताई हुई आत्मा में क्षणिक धैर्य के आए बिना मरीचिका की माया प्रत्यक्ष भी नहीं होती। वह उसी के पीछे भटकना अपने उद्देश्य की सिद्धि समझती है।

अभी उस दिन, लखनऊ में, नारियों के समाज में, एक नेता ने रूप तथा वस्त्रों पर भाषण करते हुए कहा—आप लोगों में वे आँखें होनी चाहिए, जिनमें रूप के सच्चे मूल्य की पहचान हो। अब विदेशी-वस्त्रों मे सौंदर्य बढ़ता नहीं, बल्कि सुंदरता घट जाती है, जैसे रूप को कलंक स्पर्श कर रहा हो। इतना सुनते ही खद्दर की साड़ी से सजी हुई एक किशोरी, प्रभात की ज्योतिर्मयी तरंग की तरह, अपने अल्प-सज्जित रूप का तरुण लहरों से उमड़ पड़ी। वहीं संसार-प्रसिद्ध भारत की आदर्श राष्ट्र-नेत्री भी बैठी हुई थीं। उनके अधरों के पल्लव अंधकार से ढक गए। उनकी बेशक़ीमत विदेशी सूत की ज़रीदार देशी साड़ी भी अपनी रजत-शुभ्र द्युति से उस अंधकार को दूर नहीं कर सकी। उस तरुणी बालिका की अदम्य द्युति राष्ट्र की आत्मा की ज्योति थी, वहाँ प्राणों का प्याला अपने अपार रूप के गर्व से उस समय के लिये ऊपर तक भरकर कुछ छलक गया था, जिसकी प्रभा से सभास्थल कुछ काल के लिये तड़ित-हत, चकित, स्तंभित रह गया था। उस अपरिजित खिली हुई रूप-राशि में थोड़ी देर के लिये राष्ट्र की नारी का अभाव-शून्य अपनी ही मौलिकता से इस स्वर्गीय छवि आ गई थी। इसी छवि की स्थायी प्रतिष्ठा देश की वर्तमान महिलाओं में हो, तो वे अपनी आत्मा की शक्ति तथा सौंदर्य से परिचय प्राप्त कर सकती हैं।

इतनी ही सुंदरता राष्ट्र की नारियों के लिये सोलहो शृंगार नहीं। क्योंकि वस्त्र बाह्य भूषण हैं। आत्मा को अलंकृत करने के लिये उन्हें आंतरिक भूषणों की आवश्यकता है। यहाँ आता है शिक्षा का संस्कृति का प्रश्न। यही आत्मा के स्थायी प्रकाश जिनके खुलने पर राष्ट्र के अज्ञान के कारण होने छल-छिद्र तथा उत्पात-पीड़न अपने फैलाए हुए के अंधकार में अपने को छिपा न सकेंगे, वे पाप प्रकट हो जायँगे। फिर उनके तिरस्कार के लिये होगी। ज्ञान कभी भी पराधीन नहीं रह सक बल्कि यदि एक ही शब्द में स्वाधीनता की परि की जाय, तो वह ज्ञान ही होगा। यह ज्ञान-रा यदि हर तरफ़ से हमारे राष्ट्र की नारियों को प्रा कर रक्खे, तो उनके हृदय से निकला हुआ स्वत का स्रोत भी पर-राष्ट्र-सागर-वाही होगा, उसका कभी भी अपने ज्ञान के महासागर की ओर नहीं सकता। यह दार्शनिक सत्य है। हमारा अभि यह है कि हम अपने राष्ट्र की महिलाओं के लिये हैं, वे दूसरों को अपनी आँखों से देखें, अपने दूसरों की आँखों से नहीं। और, यह उपयोग भौतिक रूप से किया जाय, ताकि फिर एक बार की नारियाँ, पालनों पर बच्चों को झुलाते हुए, "स्व निरंजनः" जैसे शिशु-सुप्ति गीत गावें, और नवीन यौवन के उन्मेष में सहस्र-सहस्र कंठों के स्वर से कह उठें—

"न मे मृत्यु-शंका, न मे जाति-भेदः।"

× × ×

१४. रूप और नारी

आकाश की आत्मा सूर्य का खुला हुआ प्रकाश पृथ्वी के ससीम सहस्रों पादपों के अखिल जीवों में की कमनीय कांति खोल देता, भावना को अपनी एक स्वर्गीय कुछ कर देता, भीतर से उभाड़कर सु प्रशस्त ज्योतिर्मंडल में ले आता है। उस स्वतंत्र प्र के स्नेह-स्पर्श से सुप्त प्रकृति की तंद्रा छूट जाती, सहस्रों रूप अपनी लाख-लाख आँखों से अपने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विभिन्न अनेक अम्लान चित्रों को प्रत्यक्ष करते हैं, हृदय के अंधकार की अर्गला, जिसके कारण प्रकाश-पुंज प्रवेश नहीं कर पाता, खुलकर गिर जाती, ज्योति का जगमग प्रवाह जो चारो ओर बहता हुआ सृष्ट जीवों की स्वाभाविक स्वतंत्रता का स्रोत खोलता फिरता है, हृदय में भर जाता है। मोह का अंत्र-सुप्त आवेश कट जाता, पुलकित हो हृदय, अपने हल्के ऐश्वर्य से प्रसन्न, खिल जाता है, उसी तरह, जैसे ज्योति के एक ही लघु चुंबन से पुष्पों के प्राण खुल जाते, पल्लव प्रसन्न हो हिलने-डोलने झूमने-झूलने लगते हैं।

यह ज्योतिःप्रपात अरूप है। जड़ों में यह चेतन-संयोग ही गति है। प्रत्येक पद पर इसका अज्ञात स्पर्श जीव-जग करता रहता है, अन्यथा दूसरा चरण उठ नहीं सकता, उसे अपनी सत्ता का निश्चय नहीं हो सकता। वह जहाँ निर्जीव प्रस्तर की तरह अचल है। उसमें स्वतःविचरण की शक्ति नहीं, पृथ्वी के साथ ही उसे अलक्ष्य के इंगित से महाकाश की परिक्रमा करनी पड़ती है। जीव को हर साँस में वह स्पर्श मिलता है।

साहित्य में इस अरूप की स्वतंत्र सत्ता को नारियों में स्थिर रूप दिया गया है। कलाविदों ने वहीं पुरुष और प्रकृति का सौहार्द्य, दोनो का अपार प्रेम, निरंतर योग देखा। आकर्षण दोनो के संभोग-विलास में ही है, वह और अच्छा जब एक ही आधार में हो। यही बीज-मंत्र है, जिसका जप कर उन्होंने नारियों के अगणित-अपार रूपों में सिद्धि प्राप्त की। ये सिद्ध रूप परवर्ती काल के साहित्य की आत्मा में प्राणों का प्रवाह भरते गए हैं। बाह्य महाशून्य की चेतन-स्पर्श से जगी हुई असंख्यों रूपसी-अप्सराओं की तरह ये साहित्य की पृथ्वी पर चपल-चरण, नम्र, शिष्ट, भिन्न-भिन्न अनेक प्रकृति की श्री-शृंगारमयी, रूप के ऊषालोक में अपलक ताकती हुई, लावण्य की ज्योति से पुष्ट-यौवना युवती, कुमारिकाएँ हृदय-शून्य के चेतन-स्पर्श से जगकर उठी हुई हैं, जो मूर्त बाह्य रूप-राशि ही की तरह अमर हैं, जिनसे बाह्य स्वतंत्रता की तरह अपार आंतरिक स्वतंत्रता मिलती है, और बाह्य के साथ अंतर के साम्य का निरुपद्रव संदेश।

रूप को चंपा अपने स्नेह की छाया-डाल पर पल्लवों के भीतर अधखुली कोमल-सरल चितवन से अपरिचित संसार को देखती, न-जाने किस अज्ञात चंचल भावावेश में डालकर अपने गृह के पत्र-द्वार बंद कर लेती है; अरूप के इस चपल रूप-स्पर्श से कवि के मस्तिष्क की सुप्त स्मृतियाँ तत्काल आँखें खोल देतीं, रूप की स्वर्ण-छवि चित्त के चित्रपट पर अपनी संपूर्णता के साथ सुडौल अंकित हो जाती है। वह इस मूक वाणी में प्राणों का संचार कर देता है—वही प्राण, जिसका अनुभव, पुलक अभी-ही-अभी उसे रोमांचित कर चुका है। साहित्य के एक पृष्ठ में एक विकच नारी-मूर्ति, तम के अतल-प्रदेश से मृणाल-दंड की तरह अपने शत-शत दलों को संकुचित-संपुटित लेकर, बाहर आलोक के देश में, अपनी परिपूर्णता के साथ खुल पड़ती है। जड़ों में प्राण संचारित हो जाते, अरूप में भुवन-मोहिनी ज्योतिः स्वरूपा नारी।

तरंगों की अंग-संचालन-क्रिया, अविराम-प्रवाह, पुनः-पुनः आकाश के प्रति उठकर उनकी चुंबन-चेष्टा, सहस्रों भंगिमाएँ, उठ-उठ बारंबार गिरना, गिर-गिर उठने की शक्ति प्राप्त करना, उत्थान और पतन के बीच में इतना ही विराम प्राप्त कर क्रमशः बढ़ते ही जाना प्रत्यक्ष कर कवि के हृदय का, आदि-सृष्टि के रहस्य का बंद द्वार खुल जाता है; किस तरह, कितने दुःसाध्य अध्यवसाय के पश्चात्, सहस्रों निष्फल-सफल चेष्टाओं के भीतर से आधार-पद्म की सुप्त शक्ति जाग्रत् हो सहसार में परम प्रिय ब्रह्म से मिलती है, वह दर्शन कर लेता है। जीवन की पराजय का फिर उसे भय नहीं रह जाता। अविराम प्यास, चिरंतन कामना, जिसे सदा ही बहती हुई लहरों में वह देखता है, साहित्य के हृदय में प्रिया की तृष्णा के रूप से अपने अनुभव-सत्य की इस तरह की पंक्तियाँ छोड़ जाता है—

"जनम अवधि हम रूप निहारनु
नयन न तिरपित भेल।
लाख-लाख युग हिये हिय राखनु
तयो हिय जुड़न न गेल।"

भावना के हृदय में रूप की विदग्धता की आग भर देता है—नारी भावनामयी बन रूप के शिखर पर चिरकाल बैठी रहती है, अमर अक्लांत वह अनुपम मूर्ति माइकेल ऐंजेलों की भावना-मूर्ति की तरह मनुष्य-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाति के हृदय की जाग्रत् देवी, शक्ति की अपार महिमा, सौंदर्य की प्रेयसी प्रतिमा बनकर मनुष्य-समाज को स्वतंत्र विचारों की ओर मौन इंगित से बढ़ाती हुई।

× × ×

१५. राजकन्या के विवाह में बम का डर

बेलजियम की राजकन्या और इटली के युवराज के विवाहोपलक्ष में विप्लववादियों से बचने के लिये रोम में बड़ी सावधानी रक्खी गई है। राजकीय उत्सव के समय कहीं से बम न फूट पड़े, इसका बड़ा भय है। इस-लिये रोम के आकाश में विमानों का उड़ना भी बंद है। रोम में कोई मोटर आता है, तो उसके असबाब की बड़ी कड़ी जाँच की जाती है। बेलजियम की राजधानी ब्रुसेल्स शहर में राजकन्या के साथ मिलने के समय युवराज की हत्या की जो कोशिश की गई थी, उस तरह की कोई घटना न हो, इसके लिये पुलिस ने रोम में भी अनेक प्रकार की चेष्टाएँ सावधान रहने के लिये अख़्तियार की हैं। कितने ही कौशल काम में लाए गए हैं। विवाह के उत्सव के लिये अब तक जितने भी अनुष्ठान किए गए हैं, उनमें सबसे श्रेष्ठ यह है—रात को क्विरीनल प्रासाद में राजा और रानी ने, राजकीय अति-थियों, राजदूत-सभासद-ऊँचेकर्मचारी-मंत्रिवर्ग-फ़ैसिस्ट-ग्रांड कौंसिलर वग़ैरह और अनेकानेक कवि, साहित्यिक, वैज्ञानिक, शिल्पी और कर्मचारी-वर्ग की अभ्यर्थना की। इस उत्सव में बड़े ठाट देखे गए। बड़े-बड़े समृद्ध राज-पुरुषों में बड़ा ऐश्वर्य देखने को मिला। बेशक़ीमत पोशाकों, हीरा-जवाहर और मणि-मुक्ताओं की चमक तथा नई-निराली सजधज से रोम-महानगरी षोड़श कला की चाँदनी में रात की तरह, अठारह साल की भरी-उभरी हुई युवती की तरह, अपने नवीन ऐश्वर्य से हँस रही थी। इटली के राजप्रासादों में ऐसी शान इधर कम देखने में आई है। इटली, बेलजियम और बुलगे-रिया के राजा, इटली के युवराज, इँगलैंड के ड्यूक-ऑफ़्-यार्क और संपूर्ण योरप के दूसरे-दूसरे देशों के राजपुत्र मोटरों पर इटली के राजा के मृगया-प्रासाद पर गए थे। सूर्य के फैले हुए रजत-प्रकाश में योरप के समृद्ध बड़े-बड़े घरानों के ये राजे-महाराजे मृगया में पागल हो उठे थे। जंगली सुअर, हिरन, खरगोश आदि का शिकार किया। हर रात को रोमनगरी इस बुढ़ापे में भी सोलहों शृंगार कर सप्तदशी नव-यौवना कामिनी के अहं-कारों की चमक तथा अंग-प्रभा को परास्त कर देती है। बड़े-बड़े कृत्रिम झरनों के इधर-उधर, बीच में, गोलाकार, चतुष्कोण, त्रिकोणाकार जलती हुई बिजली की बत्तियाँ, रास्तों के किनारे के दीपाधार-स्तंभ, विविध वर्णों की पीली-पीली-हरी-बैंजनी-लाल शिखाएँ प्रासाद के पासवाले वृक्षों से फूटता-फैलता हुई अतिथियों का स्वागत तथा मनोरंजन कर रही हैं। परंतु उस चमक-दमक में चंचरीक कोई नहीं।

× × ×

१६. आग़ाख़ाँ की फ्रेंच-प्रेयसी

मुसलमान-समाज के एक प्रतिष्ठित नेता आग़ाख़ाँ ने एक पत्र-प्रतिनिधि के पास कहा है कि उनकी प्रिया मिस कैरन् मुसलमान-धर्म नहीं ग्रहण करना चाहतीं। उनके विवाह की बातों पर जो सब कौतुक तथा रहस्य की सृष्टि हुई है, इससे उन्होंने विस्मय तथा दुःख ज़ाहिर किया। उन्होंने कहा, यह उनका व्यक्तिगत मामला है। इस पर इतना ऊधम उठाना अच्छा नहीं हुआ। वह अगली बार जब भारत आवेंगे, तब अपनी प्रेमिका को भी साथ ले आवेंगे। वास्तव में आग़ाख़ाँ की इस फ्रेंच-प्रेमिका की बाबत बहुत-सी बातें संवादपत्रों में लिखी जा चुकी हैं। हमने भी जैसा पढ़ा, 'सुधा' में वैसा ही लिखा है। गत महीने में ऐसा संवाद आया था कि मिस कैरन् के साथ आग़ाख़ाँ का विवाह यथारीति हो गया। इस मामले में बंबई तथा कलकत्ते के खोजे कई दिन तक खाना-पीना तथा उत्सव मनाते रहे हैं। लेकिन अब पेरिस और लंडन से बारंबार तार आ रहे थे कि उनका विवाह नहीं हुआ : ७ दिसंबर को यह शुभ कार्य संपन्न हुआ होगा। इस विवाह की रिपोर्ट देश-देशांतरों में भेजने के लिये रिपोर्टर बुलाए गए हैं, उन्हें आफ़िस ख़र्च भी दिया जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घासलेटी साहित्य और मारवाड़ी-समाज !

कुछ दिनों से हिंदी के कुछ लेखकों और प्रकाशकों में गंदा साहित्य प्रकाशित कर धनोपार्जन की मनोवृत्ति बढ़ रही है, यह वास्तव में साहित्य और समाज के लिये बहुत ही हानिकारक है। इस समय मातृ-भाषा हिंदी का कलेवर जैसे साहित्य द्वारा अलंकृत किया जा रहा है, उसमें गंदे साहित्य का एक विशेष स्थान है। मारवाड़ी-समाज भी इन गंदे साहित्य-प्रेमियों की लेखनी से बच नहीं सका, और कुछ लोग तो स्पष्ट रूप से यह समझते है कि मारवाड़ी-समाज को गालियाँ देकर धन कमाया जा सकता है। यह मनोवृत्ति कितनी नीच और घृणित है, इसका निर्णय हम सर्व-साधारण पर ही छोड़ते हैं। इन दिनों प्रकाशित 'पर्दे में पाप', 'व्यभिचार-मंदिर', चाँद का 'मारवाड़ी-अंक' तथा चाँद-कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'अबलाओं का इंसाफ़' इसी मनोवृत्ति के ज्वलंत उदाहरण हैं। संसार में कोई भी समाज दोषों से मुक्त है, यह नहीं कहा जा सकता। किसी समाज में कुछ और किसी में कुछ दोष सर्वत्र पाए जाते हैं, और उनके सुधार की इच्छा रखनेवाले व्यक्ति यदि शुद्ध अंतःकरण से उन दोषों की समालोचना सभ्योचित भाषा में करें, और समाज का ध्यान उन दोषों को दूर करने के प्रति आकर्षित करें, तो यह प्रयत्न श्लाघ्य और सराहनीय कहा जा सकता है। परंतु यदि किसी समाज पर झूठे, निर्मूल दोषारोपण कर उसे केवल गालियाँ ही दी जायँ और कपोल-कल्पित झूठे दोष उसके सर मढ़े जायँ, और वह भी ऐसे गंदे और घृणित रूप से कि जिसे कोई भला आदमी पढ़ भी न सके, तो ऐसी मनोवृत्ति कभी सराहनीय नहीं समझी जा सकती। चाँद का 'मारवाड़ी-अंक' भी ऐसी ही गंदी, कपोल-कल्पित तथा अश्लील बातों से भरा है। केवल समाज को दूसरों की दृष्टि में गिरा देना ही इस अंक का मुख्य उद्देश्य है। यह अंक किसी भी भले घराने की बहू-बेटियों के छूने योग्य भी नहीं, पढ़ना तो दूर रहा।

हम लोग इस सूचना द्वारा स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इस अंक के प्रकाशक और लेखकों से हमारी कोई सहानुभूति नहीं। जिन लोगों के लेख और चित्र इसमें प्रकाशित किए गए हैं, उनमें से बहुतों को धोखा दिया गया है, तथा चाँद-कार्यालय का स्पष्ट लिख देने पर भी कि 'हमारे लेख और चित्र मत छापिए', उनके लेख और चित्र छापे गए हैं। मारवाड़ी-समाज से हमारा यही निवेदन है कि वह ऐसे पत्र और साहित्य के लेखकों तथा प्रकाशकों को किसी प्रकार का प्रश्रय न दे। उन्हें किसी भी प्रकार का प्रश्रय देना समाज की जड़ पर कुठाराघात करना है।

साथ ही मातृभाषा हिंदी के लेखकों और संपादकों से भी हमारा नम्र निवेदन है कि वे बढ़ती हुई गंदे साहित्य के प्रकाशन की मनोवृत्ति को रोकें। चाँद के मारवाड़ी-अंक को हिंदी-पत्रों ने जिस प्रकार एकस्वर से निंदा की है, उससे हमें विश्वास हो गया है कि हमारी यह प्रार्थना व्यर्थ न जायगी। हम इस मनोवृत्ति का विरोध केवल मारवाड़ी होने के कारण नहीं, प्रत्युत हिंदी-भाषा-भाषी होने के कारण करते हैं। हिंदी-भाषा और साहित्य हिंदू-संस्कृति और सभ्यता का एक प्रधान अंग है। अतएव ऐसे घासलेटी साहित्य का प्रचार हिंदू-समाज, हिंदू-संस्कृति, मातृ-मंडल और मनुष्यता के प्रति भयंकर अपराध है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विनीत—

जमनालाल बज़ाज़, वर्धा
पद्मराज जैन, कलकत्ता (मंत्री अ० भा० हिंदू-महासभा)
देवीप्रसाद खेतान (एम्० ए०, बी० एल्०, एटर्नी-एट-ला) कलकत्ता
श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, आगरा (संपादक 'सैनिक')
नेकीराम शर्मा, भिवानी
गोविंददास मालपानी (भूतपूर्व सदस्य स्टेट कौंसिल) जबलपुर
प्रभूदयाल हिम्मतसिंहका, कलकत्ता (भूतपूर्व सदस्य बंगाल-कौंसिल तथा सभापति, मारवाड़ी ट्रेड्स एसोसिएशन)
माधवप्रसाद शर्मा, एटर्नी, बंबई
दुर्गाप्रसाद खेतान, कलकत्ता (एम्० ए०, बी० एल्० एटर्नी-एट-ला)
बेनीप्रसाद डालमियाँ, बंबई (मंत्री, अ० भा० मारवाड़ी-अग्रवाल जातीय कोष)
रंगलाल जाजोदिया, कलकत्ता (भूतपूर्व सदस्य भारतीय व्यवस्थापिका सभा)
आनंदीलाल पोद्दार, बंबई।
ईश्वरदास जालान, कलकत्ता (एम्० ए०, बी० एल्०, एटर्नी-एट-ला)
नवलकिशोर भरतिया (बी० ए०) कानपुर
गंगाप्रसाद भोतिका (एम्० ए०, बी०एल्०, काव्यतीर्थ)
रामेश्वरलाल शराफ़, देवघर (भूतपूर्व एम्० एल्० सी०)
छोगमल चोपड़ा, कलकत्ता (बी०ए०, बी०एल्०, वकील)
चाँदकरण शारदा, अजमेर
हनुमानप्रसाद पोद्दार, कलकत्ता (ताराचंद-घनश्यामदास)
देवीबक्स शराफ़, मडावा
ओंकारमल शराफ़, कलकत्ता
हरदेवदास अग्रवाल, झरिया
बालमुकुंददास डागा, कलकत्ता (वंशीधर-अबीरचंद)
हीरालाल शास्त्री, जयपुर
सदासुख काबरा, कलकत्ता
चत्रभुज डीडवानियाँ (दिल्ली-क्लिथ-काटन-मिल्स),
वसंतलाल मुरारका, कलकत्ता (मंत्री, अ० भा० राजस्थानी नवजीवन-संघ)
द्वारकाप्रसाद भरतिया, मथुरा
नारायणदास बाजोरिया (बी० ए०), कलकत्ता
मेलाराम वैश्य, अमृतसर
तुलसीराम सरावगी, कलकत्ता
राधामोहन गोकुलजी, आगरा
शिवकृष्ण झँवर, कलकत्ता (उपसभापति, श्रीमाहेश्वरी सभा)
रामकृष्ण मेहता, कलकत्ता (भूतपूर्व सभापति, अ० भा० माहेश्वरी सभा)
व्रजवल्लभदास मूँदड़ा, कलकत्ता (मंत्री डीहू-माहेश्वरी संघ)
पूनमचंद राँका, नागपुर
रामनारायण चौधरी, ब्यावर (संपादक, तरुण राजस्थान)
बैजनाथप्रसाद देवड़ा (बी० ए०, बी० एल्०, मारवाड़ी ट्रेड्स एसोसिएशन, कलकत्ता)
जगन्नाथ झुंझुनूवाला, रानीगंज
शिवकिसन भट्टड़, कलकत्ता (हुकमचंद-स्वरूपचंद)

सुंदर, सस्ती और मज़बूत
रबर की मुहरें

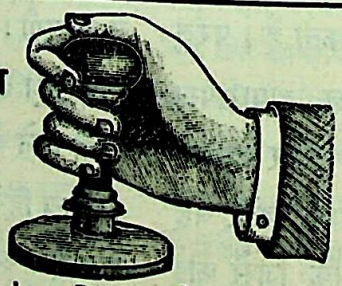

पीतल की सील, मुहरें
और चपरास

हमसे बनवाइए ! हमारे काम से आप ज़रूर खुश होंगे !!
भोलानाथ ऐंड कंपनी, ३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेख-सूची

	पृष्ठ
टूटे तार (कविता, आर्ट-पेपर पर)—[लेखक, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" ...	१२१
बाँसुरी (कविता)—[लेखक, बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०... ...	१२६
लाहौर-कांग्रेस—[लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	१३०
द्विदल—[लेखक, श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद"	१४६
हिंदी-व्याकरण—[लेखक, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०	१४७
ज्योतिर्मयी (कहानी)—[लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" ...	१५२
आगमन (कविता)—[लेखक, पं० यज्ञकांत मालवीय	१५७
रूस और मंचूरिया (व्यंग्य-चित्र) ...	१५८
स्वराज्य-आंदोलन और मुसलमान—[लेखक, मुंशी ज़हूरबख़्श हिंदी-कोविद ...	१५९
वाममार्ग या समाज की रूढ़ियाँ—	

रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क **अमृतगुटिका** "जेनस" नं० ३०२

अशक्त स्त्री-पुरुषों के लिये ताक़त की बढ़िया दवा

इसके सेवन से कमर का दर्द, पिंडलियों का दुखना, आँखों की कमज़ोरी, बदन की सुस्ती, काम-काज में दिल न लगना, नया या पुराना प्रमेह, बदन और इंद्रियों की शिथिलता, मुख, बग़ल या पेशाब के रास्ते से धातु स्खलित होना, शौच के समय धातु गिरना, मग़ज़ ख़ाली पड़ जाना, चेहरा शुष्क इत्यादि बहुत-से दर्द को दूर करके जवानी का मज़ा लूटने के लिये बदन मोटा और ज़ोरदार होता है। हरएक मौसम में उपयोग हो सकता है। दाम ३२ टिकियों की एक ट्यूब का २) रु० डाक-ख़र्च अलग। सूचीपत्र मुफ़्त मँगा देखिए। हर जगह दवाफ़रोशों के यहाँ भी मिलेगी।

पता—जे० एन्० शेठना,
मु० पो० नडीआद (गुजरात)

इंजन मार्का की असली रेलवे "रेग्यूलेटर वाच"

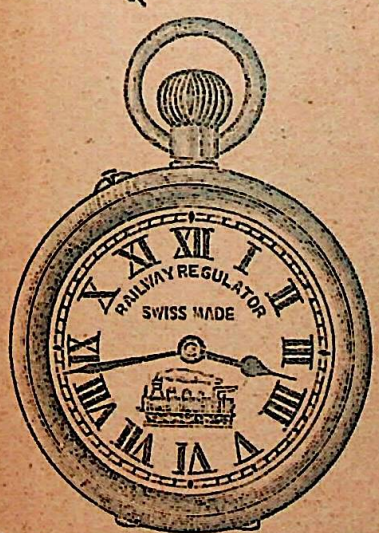

गारंटी आठ साल। उत्तम क़िस्म।

रेलवे के मुअज़्ज़िज़ आर जेंटिलमैन इसको इसलिये पसंद करते हैं कि यह बहुत ख़ूबसूरत, मज़बूत, पायदार, ठीक वक़्त देनेवाली और बिगड़ने का नाम न लेनेवाली घड़ी है। घड़ी, बक्स और ज़ंजीर-समेत ३।=) तीन रुपया छः आना। वेस्टर्न वाच एजेंसी, लुधियाना, पंजाब।

Western Watch Agency
Ludhiana (Punjab)

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय

लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, बेवाली, कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इसकी अलग-अलग या २ से ७ तक पान में खाने से ताक़त बढ़ती है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है। रक्त साफ़ होता है तथा उसकी चाल अबाध्य होती है। खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ लीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम २२० गोलियों का बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥), २५ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित ५=)

मिलने का पता—

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विनीत—

जमनालाल बज़ाज़, वर्धा
पद्मराज जैन, कलकत्ता (मंत्री अ० भा० हिंदू-महासभा)
देवीप्रसाद खेतान (एम्० ए०, बी० एल्०, एटर्नी-एट-ला) कलकत्ता
श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, आगरा (संपादक 'सैनिक')
नेकीराम शर्मा, भिवानी
गोविंददास मालपानी (भूतपूर्व सदस्य स्टेट कौंसिल) जबलपुर
प्रभूदयाल हिम्मतसिंहका, कलकत्ता (भूतपूर्व सदस्य बंगाल-कौंसिल तथा सभापति, मारवाड़ी ट्रेड्स एसोसिएशन)
माधवप्रसाद शर्मा, एटर्नी, बंबई
दुर्गाप्रसाद खेतान, कलकत्ता (एम्० ए०, बी० एल्० एटर्नी-एट-ला)
बेनीप्रसाद डालमियाँ, बंबई (मंत्री, अ० भा० मारवाड़ी-अग्रवाल जातीय कोष)
रंगलाल जाजोदिया, कलकत्ता (भूतपूर्व सदस्य भारतीय व्यवस्थापिका सभा)
आनंदीलाल पोद्दार, बंबई।
ईश्वरदास जालान, कलकत्ता (एम्० ए०, बी० एल्०, एटर्नी-एट-ला)
नवलकिशोर भरतिया (बी० ए०) कानपुर
गंगाप्रसाद भोतिका (एम्० ए०, बी०एल्०, काव्यतीर्थ)
रामेश्वरलाल शराफ़, देवघर (भूतपूर्व एम्० एल्० सी०)
छोगमल चोपड़ा, कलकत्ता (बी०ए०, बी०एल्०, वकील)
चाँदकरण शारदा, अजमेर
हनुमान्प्रसाद पोद्दार, कलकत्ता (ताराचंद-घनश्यामदास)
देवीबक्स शराफ़, मडावा
ओंकारमल शराफ़, कलकत्ता
हरदेवदास अग्रवाल, झरिया
बालमुकुंददास डागा, कलकत्ता (वंशीलाल-अबीरचंद)
हीरालाल शास्त्री, जयपुर
सदासुख कावरा, कलकत्ता
चत्रभुज डीडवानियाँ (दिल्ली-क्लिक्ष-काटन-मिल्स),
वसंतलाल मुरारका, कलकत्ता (मंत्री, अ० भा० राजस्थानी नवजीवन-मंडल)
द्वारकाप्रसाद भरतिया, मथुरा
नारायणदास बाजोरिया (बी० ए०), कलकत्ता
मेलाराम वैश्य, अमृतसर
तुलसीराम सरावगी, कलकत्ता
राधामोहन गोकुलजी, आगरा
शिवकृष्ण झँवर, कलकत्ता (उपसभापति, श्रीमाहेश्वरी सभा)
रामकृष्ण मेहता, कलकत्ता (भूतपूर्व सभापति, अ० भा० माहेश्वरी सभा)
व्रजवल्लभदास मूँदड़ा, कलकत्ता (मंत्री डीडू-माहेश्वरी संघ)
पूनमचंद राँका, नागपुर
रामनारायण चौधरी, ब्यावर (संपादक, तरुण राजस्थान)
बैजनाथप्रसाद देवड़ा (बी० ए०, बी० एल्०, मंत्री मारवाड़ी ट्रेड्स एसोसिएशन, कलकत्ता)
जगन्नाथ झुंझुनूवाला, रानीगंज
शिवकिसन भट्टड़, कलकत्ता (हुकमचंद-स्वरूपचंद)

सुंदर, सस्ती और मज़बूत
रबर की मुहरें
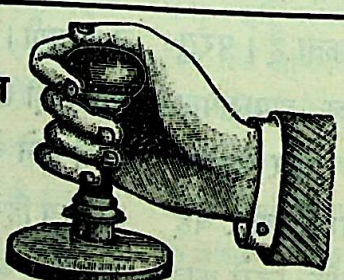
पीतल की सील, मुहरें और चपरास
हमसे बनवाइए ! हमारे काम से आप ज़रूर ख़ुश होंगे !!
भोलानाथ ऐंड कंपनी, ३० अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. टूटे तार (कविता, आर्ट-पेपर पर)—[लेखक, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" ... १२१
२. बाँसुरी (कविता)—[लेखक, बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०... ... १२६
३. लाहौर-कांग्रेस—[लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री १३०
४. द्विदल—[लेखक, श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद" १४६
५. हिंदी-व्याकरण—[लेखक, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ... ... १४७
६. ज्योतिर्मयी (कहानी)—[लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" ... १५२
७. आगमन (कविता)—[लेखक, पं० पद्मकांत मालवीय १५७
८. रूस और मंचूरिया (व्यंग्य-चित्र) ... १५८
९. स्वराज्य-आंदोलन और मुसलमान—[लेखक, मुंशी ज़हूरबख़्श हिंदी-कोविद ... १५९
१०. वाममार्ग या समाज की रूढ़ियाँ—

रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क **अमृतगुटिका** "जेनस" नं० ३०२

अशक्त स्त्री-पुरुषों के लिये ताक़त की बढ़िया दवा

इसके सेवन से कमर का दर्द, पिंडलियों का दुखना, आँखों की कमज़ोरी, बदन की सुस्ती, काम-काज में दिल न लगना, नया या पुराना प्रमेह, बदन और इंद्रियों की शिथिलता, मुख, बग़ल या पेशाब के रास्ते से धातु स्खलित होना, शौच के समय धातु गिरना, मग़ज़ ख़ाली पड़ जाना, चेहरा शुष्क इत्यादि बहुत-से दर्द को दूर करके जवानी का मज़ा लूटने के लिये बदन मोटा और ज़ोरदार होता है। हरएक मौसम में उपयोग हो सकता है। दाम ३२ टिकियों की एक ट्यूब का २) रु० डाक-ख़र्च अलग। सूचीपत्र मुफ़्त मँगा देखिए। हर जगह दवाफ़रोशों के यहाँ भी मिलेगी।

पता—जे० एन्० शेठना,

मु० पो० नडीआद (गुजरात)

इंजन मार्का की असली रेलवे "रेग्यूलेटर वाच"

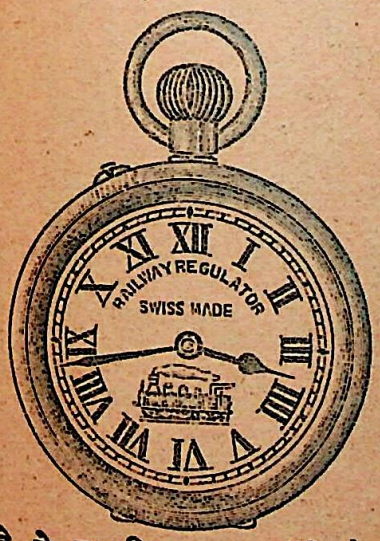

गारंटी आठ साल। उत्तम क़िस्म।

रेलवे के मुलाज़िम और जेंटिलमैन इसको इसलिये पसंद करते हैं कि यह बहुत ख़ूबसूरत, मज़बूत, पायदार, ठीक वक्त देनेवाली और बिगड़ने का नाम न लेनेवाली घड़ी है। घड़ी, बक्स और ज़ंजीर-समेत ३।=) तीन रुपया छः आना। वेस्टर्न वाच एजेंसी, लुधियाना, पंजाब।

Western Watch Agency
Ludhiana (Punjab)

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय

लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, बेवाली, कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इसकी अलग-अलग या २ से ७ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है। रक्त साफ़ होता है तथा उसकी चाल अबाध्य होती है। खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ लीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम २२० गोलियों की बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥), २५ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित ५=)

मिलने का पता—

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर।

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि सुधा में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

[लेखक, साहित्य-भूषण किशनलाल शर- पृष्ठ
सोदे विशारद १६५
११. दो भाई (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत भैयालाल जैन एच्० एम्० बी० ... १७३
१२. ख़लाफ़े आर उनका जावन—[लेखक, श्रीराजेश्वरप्रसाद-नारायणसिंह बी० ए० ... १७८
१३. अनुभूति (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "वीरात्मा" १८
१४. भारतीय धंधों का ह्रास—[लेखक, श्रीयुत सत्यप्रकाश एम्० एस्-सी०... ... १८२
१५. राज्य-क्रांति क्यों होती है ?—[लेखक, श्रीयुत अर्जुनप्रसादसिंह विद्यालंकार, बी० ए०, बी० सी० ... ... १८७
१६. कसौटी (कहानी)—[लेखक, बाबू रामचंद्र टंडन बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... १९०
१७. कामनवेल्थ का भूत (व्यंग्य-चित्र) ... १९५
१८. कुसुम-कुंज—[लेखकगण, श्रीयुत वीरमणिप्रसाद उपाध्याय बी० ए०, साहित्याचार्य, श्रीयुत मोतीलाल लाठ, श्रीदामोदरसहायसिंह एल्० टी०, "कवि-किंकर", श्रीयुत ईश्वरीदत्त जोशी बी० ए०, श्रीसद्गुनाथ माधव

शक्ति का ख़ज़ाना यानी पृथ्वी पर का अमृत

मदनमंजरी

ये गोलियां दर्द भाग जाती हैं, प्रत्यक नस में ताक़त देती हैं, वीर्यविकार से उत्पन्न होनेवाले सब रोगों को नाबूद करती हैं और पीठ का फटना वग़ैरा रोगों को दूर करके अपूर्व बल और नया जावन देती हैं।

क़ी० ४० गोली की १ डिब्बी का १) रु०

मेह-मर्दन चूर्ण (रजिस्टर्ड)

सुज़ाक की हुक्मी दवा क़ी० फ़ी डिब्बा १) रु०

अंड-वृद्धि-हर चूर्ण

पोता बढ़ जाने की शर्तिया दवा। फ़ी डिब्बा ३) रु०

रमणावलासिनी वटिका (रजिस्टर्ड)

वीर्य-स्तंभन करनेवाली अक्सीर दवा क़ी० डिब्बी का १) रु०

राजवैद्य नारायणजी केशवजी

हेड आफ़िस—जामनगर (काठियावाड़)

लखनऊ एजेंट—निगम मेडिकल हॉल, नाला फ़तेगंज
दिल्ली एजेंट—जमनादास कुं०, चाँदनी चौक
इलाहाबाद एजेंट—मेसर्स दुबे ब्रादर्स, चौक

दवाइयों में खर्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिए "अनुभूत योगमाला" पाक्षिक पत्रिका का नमूना मुफ़्त मँगाकर देखिए।

पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला
ऑफ़िस, बरालोकपुर, इटावा।

इंडोबाम बालामृत

का फ़्रेंसी १९३० ई० का नया कैलेंडर मुफ़्त

दो आने का टिकट आने पर यशोदा-कृष्ण कैलेंडर १९३० का नमूना मुफ़्त

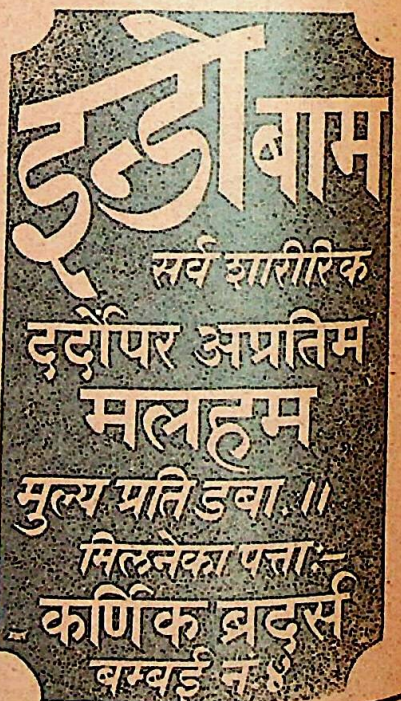

सब जगह एजेंटों की ज़रूरत है!

इंडोबाम

सर्व शारीरिक दर्दों पर अप्रतिम मलहम।

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि सुधा में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आगरकर 'निरंजन' बी० ए०, श्रीविश्वनाथ-प्रसाद एम्० ए० और श्रीयुत नवनिहालसिंह, 'ग्राम्य साहित्य संघ', प्रयाग ... १९६
१९. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखक, श्रीयुत पं० नाथूराम शुक्ल... ... ... २०४
२०. ललित कला—[लेखक, श्रीयुत चंद्रनारायण सक्सेना बी० ए०, "साहित्य-भूषण" ... २०६
२१. स्त्री-समाज—[लेखक, श्रीयुत "निराला" २१३
२२. पाक-शास्त्र—[लेखक, श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव २१७
२३. शिशु-पालन—[लेखक, श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव २१९
२४. गृह-चिकित्सा—[लेखक, श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव २२१
२५. समाज-सुधार—[लेखक, पं० शंभाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ... ... २२३
२६. पुस्तक-परीक्षा—[लेखक, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा बी० ए० ... ... २२६
२७. साहित्य-सूची २३१
२८. संपादकीय २३२

श्वेतकुष्ठ की फ़ौरी जड़ी

प्रिय पाठकगण, एक रोज़ में सिर्फ़ तीन ही बार के लेप से सफ़ेद दाग़ एकदम आराम न हो, तो दूना मूल्य वापस। जो चाहें, एक आने का टिकट भेजकर प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। मूल्य ३) रु०। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

वैद्यवर पंडित कन्हैया मिश्र
मैनेजर विहार-औषधालय
नंबर १४, मधुबनी, ज़ि० दरभंगा

सफ़ेद बाल जड़ से काला

यदि आपके थोड़े गिने बाल पके हैं, तो "सोरम" तेल मँगावें। इससे बाल जड़ से काला पैदा होगा। दाम ३) रु०। यदि आपका बाल कुछ पक गया है, तो "काला चूर्ण" मँगावें। इससे बालों का पकना रुककर पका बाल जड़ से काला पैदा होगा और सदा काला रहेगा। दाम १२) विश्वास न हो, तो शर्तें लिखा लें।

काले से गोरा

स्याही को दूरकर चेहरे को सुंदर और चमकदार बनाने के लिये यह अनमोल दवा है। इससे मुहाँसे, झाँई, काला दाग़, चेचक के दाग़, स्याह व लाल फुंसियाँ सभी दूर होकर चेहरा कमल-केसर के समान हो जाता है। मूल्य ५) रु०।

सफ़ेद दाग़ की जंगी दवा

मैं दावे के साथ कहता हूँ कि मेरी जड़ी-बूटी की दवा के केवल थोड़े दिन इस्तेमाल करने से बिना फोड़े के घाव के दाग़ उड़कर असल चमड़े के समान हो जाते हैं। एक बार अवश्य परीक्षा करें। दाम ५) रुपए।

पता—जड़ी-बूटी-मेडिकल-हाल
कनसी सिमरी, दरभंगा नं० १५५

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके एक ही रोज़ के तीन बार के लेप से सफ़ेद दाग़ जड़ से न छूटे, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। दाम ३) रु०।

इस जड़ी के प्रशंसापत्रों में से मैं एक को ज्यों-का-त्यों उद्धृत करता हूँ—"वैद्यवर पं० महावीरजी, आपको कोटिशः धन्यवाद। आपकी जड़ी ने जादू का-सा काम किया। रोग काफ़ूर की भाँति उड़ गया। आप-ऐसे महानुभावों को ईश्वर चिरंजीवी करें तथा आपके औषधालय की दिन प्रति दिन उन्नति होती रहे। कृपया खाने की भी दवा शीघ्र ही वी० पी० द्वारा भेजिएगा। आपका रामावतार अवस्थी, कबीरपुर, पो० हरगाम, ज़ि० सीतापुर।"

पता—वैद्यराज पं० महावीर पाठक
नं० ३२ दरभंगा (बिहार)

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि सुधा में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. प्रेम का नशा—[चित्रकार, श्रीअजितकुमार बोस १२६
२. वीर रमणी—[चित्रकार, श्रीमाहेश्वरी-प्रसाद १८५

(ख) व्यंग्य

१. रूस और मंचूरिया १५८
२. कामनवेल्थ का भूत १६५

(ग) सादे

१. विना नाविक के समुद्र की लहरों पर बे-तार के द्वारा चलनेवाला आधुनिक अँगरेज़ी जहाज़ २०४
२. (टेसला द्वारा) तीस वर्ष पूर्व बनाया हुआ बे-तार का जहाज़ २०४

RAM LAL
DENTIST
27, AMINABAD PARK, LUCKNOW

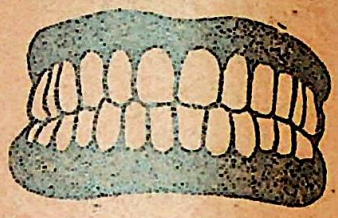

All Sorts of Dental Work
ARE EXECUTED PROMPTLY
— AT —
Reasonable Rates

हिंदुस्तानी एकेडेमी संयुक्त-प्रांत द्वारा प्रकाशित व्याख्यानमाला

(१) मध्यकालीन भारत की सामाजिक अवस्था

व्याख्यानदाता—अल्लामा अब्दुल्लाह यूसुफ़अली एम्० ए०, एल्-एल्० एम्०, सी० बी० ई०। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १०० पृष्ठों का मूल्य उर्दू अथवा हिंदी केवल १।)

(२) मध्यकालीन भारतीय संस्कृत

व्याख्यानदाता—रायबहादुर महामहोपाध्याय गौरी-शंकर हीराचंद ओझा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के २३० पृष्ठों और २४ हाफ़टोन चित्रों-सहित का मूल्य केवल ३)

(३) कविरहस्य

व्याख्यानदाता—महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगास्वरूप का। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १२० पृष्ठों का मूल्य केवल १।)

मिलने का पता—जनरल सेक्रेटरी हिंदुस्तानी, एकेडेमी यू० पी०, इलाहाबाद।

यदि आपको कभी हारमोनियम मोल लेना हो

द्वारकीनवाला हारमोनियम ख़रीदिए

आपको इससे सस्ते हारमोनियम मिल सकते हैं, परंतु ऐसा अच्छा कोई नहीं मिल सकता कि देखने में सुंदर और मधुर स्वरीले स्वर-महित हो। आज ही हमारा सूचीपत्र मँगाइए। जहाँ तक हो सके, केवल अँगरेज़ी में ही पत्र-व्यवहार कीजिए।

Dwarkin and Son
Inventors of Hand Harmoni
& The oldest Music Firm In I
8, Dalhausie Square, Calcu

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि सुधा में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

टूटे तार

[श्रीयुत हरिऔध]

उँगलियों से छिड़ते जिस काल,
सुर की बूँदें पाते कान;
धुन सुने सिर धुनते थे लोग;
तान में पड़ जाती थी जान।

रगों में रस जाती थी रीझ,
कंठ का जब करते थे संग;
मींड़ जब बनते मिले मरोड़;
थिरकने लगती लोक उमंग।

निकलते थे इनमें वे राग,
गलों के जो बनते थे हार;
सुरों में मिलती ऐसी लोच,
बरस जाती थी जो रस-धार।

मनों को जो ले लेती मोल,
लहर वह इनसे पाती बीन;
सितारों में भरते वह गूँज,
दिलों को जो लेती थी छीन।

बोल थे इनके बड़े अमोल,
कभी इनमें भी थी झंकार;
करेगा प्यार इन्हें अब कौन,
आज तो हैं ये टूटे तार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

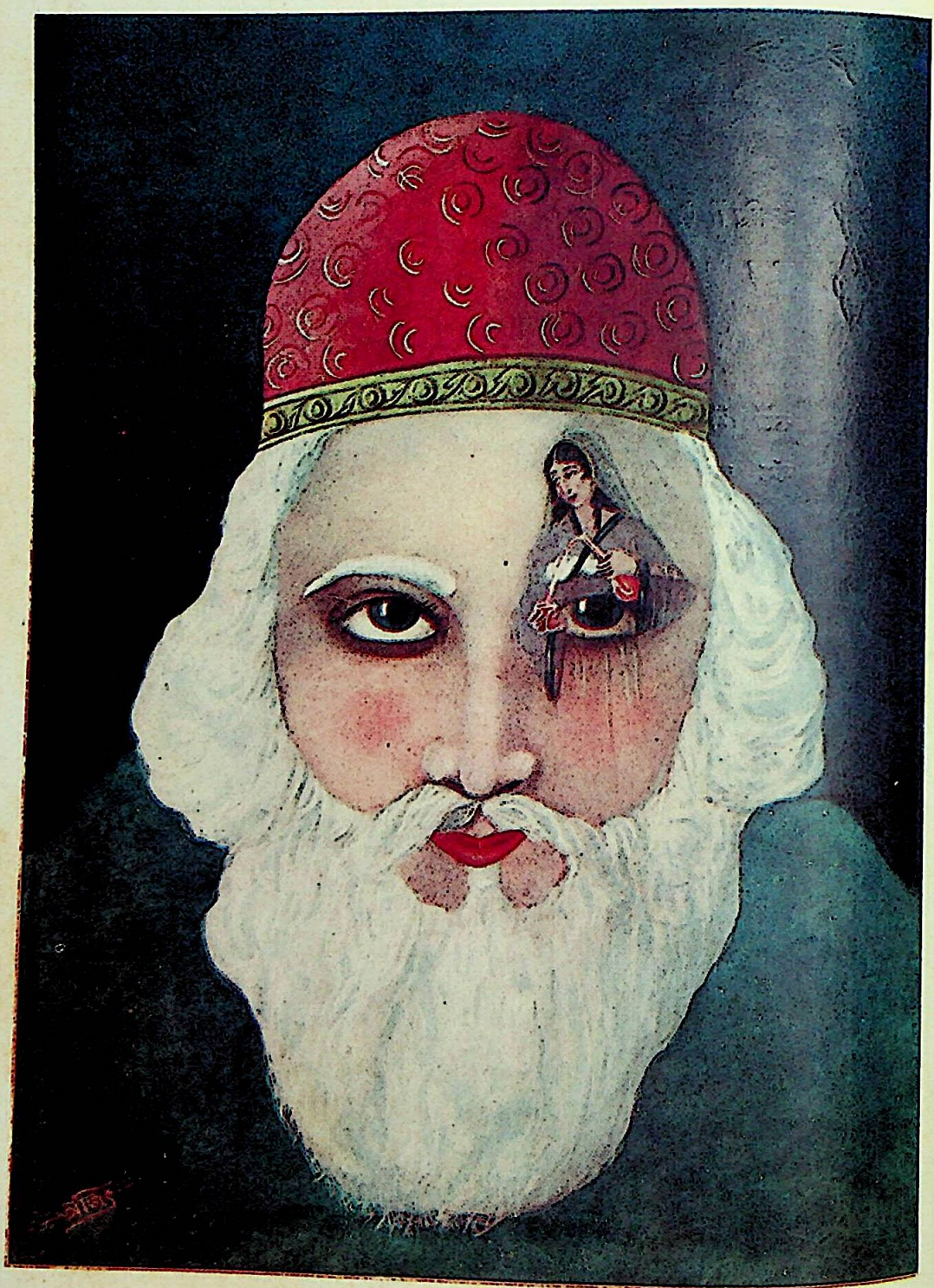

प्रेम का नशा

[चित्रकार—श्रीअजितकुमार बोस]

مادر پیاله عکس رخ یار دیده‌ئیم ❀ اے بے خبر زلذت شرب مدام ما

(हाफ़िज़)

Ganga Fine Art Press, Lucknow.
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष ३ खंड २	फाल्गुन, ३०७ तुलसी-संवत् (१९८६ वि०)— मार्च, १९३०	संख्या २ पूर्ण संख्या ३२

बाँसुरी

[बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर"]

जमुना-कछारनि पै बन-द्रुम-डारनि पै,
और कछू मंजु मधुराई फिरि जाति है;
कहै रतनाकर त्यों नगर-अगारनि पै,
बारनि पै बनत निकाई फिरि जाति है।
नर-पसु-पच्छिन की चरचा चलावै कौन,
पौन-भौन हूँ मैं सरसाई फिरि जाति है;
जहाँ-जहाँ बाँसुरी बजावत कन्हाई वीर,
तहाँ-तहाँ मदन-दोहाई फिरि जाति है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाहौर-कांग्रेस

[आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री]

लाहौर में कांग्रेस—इससे प्रथम लाहौर में दो अधिवेशन हो चुके थे, पहला सन् १८९३ में स्वर्गीय दादाभाई नौरोज़ी की अध्यक्षता में और दूसरा सन् १९०० में। परंतु इस कांग्रेस में और उनमें बहुत अंतर था! वह कांग्रेस अर्ध-सरकारी संस्था थी। लोग बड़े दिन की छुट्टियों का मज़ा लूटने, अँगरेज़ी में सुंदर व्याख्यान झाड़ने और सुनने को इकट्ठे हुआ करते थे। हिंदोस्तानियों को ऊँची नौकरियाँ मिलें—इसी प्रकार के प्रस्ताव होते और उनकी नक़लें सरकार को भेज दी जाती थीं।

कांग्रेस का जन्म—स्वर्गीय देशभक्त सुरेंद्रनाथ बनर्जी को कांग्रेस को जन्म देने का श्रेय मिलना योग्य है। उन्होंने देश में राजनीतिक प्रचार करने और राष्ट्रीयता का भाव भरने को, २६ जुलाई, सन् १८७६ में, कलकत्ते में, इंडियन एसोसिएशन क़ायम किया। श्यामाचरण सरकार उसके सभापति और आनंदमोहन बोस मंत्री बनाए गए। परंतु सच्चे मंत्री तो सुरेंद्रनाथ ही थे। पर चूँकि वह तभी नौकरी से निकाले गए थे, इसलिये राजनीति में अगुआ होना न चाहते थे।

इसी अवसर पर लॉर्ड सालसबरी ने इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा के लिये २१ के बजाय १९ वर्ष की आयु की क़ैद कर दी थी। इस विषय को लेकर इं० ए० ने इसके विरोध में घोर आंदोलन किया। इसके लिये सुरेंद्रनाथजी ने काशी से रावलपिंडी तक और तमाम दक्षिण का दौरा किया। बड़े-बड़े शहरों में आपने भाषण दिए। अलीगढ़ में सर सैयद अहमद सभापति बने। दक्षिण के काशीनाथ त्र्यंबक तैलंग, महादेवगोविंद रानाडे इस आंदोलन में आपके साथी हुए। अंत में श्रीलालमोहन घोष इँगलैंड की कामन्स सभा में इसी उद्देश्य से भेजे गए। अंत को सिविल सर्विस-संबंधी नियमों में आवश्यक सुधार कर दिए गए।

१८७७ में, दिल्ली में, महारानी विक्टोरिया का दरबार हुआ। वहाँ बड़े-बड़े राजे और विद्वान् आए। सुरेंद्रनाथ जी हिंदू-पेट्रिएट के तौर पर उसे देखने गए। उन दिनों देश में भारी अकाल पड़ रहा था। पर वहाँ की फ़िज़ूलख़र्ची और ठाट देखकर वह विचलित हुए। देश की सार्वजनिक शक्ति को एकत्र करने के विचार इसी तरह उनमें उत्पन्न हुए।

सन् १८८० में लॉर्ड रिपन गवर्नर जनरल होकर आए। प्रधान मंत्री ग्लेडस्टन ने भारत की अशांति देखकर ही उन्हें भेजा था। इन्होंने अफ़ग़ानिस्तान से संधि की, और वैज्ञानिक सीमा-प्रांत की और प्रजा की शांति को अधिक संतोष-जनक समझा। इन्होंने १८७८ के देशी अख़बारों के नियंत्रण-संबंधी क़ानूनों को रद कर दिया। ज़िला-बोर्ड और म्यूनिसिपैलिटियाँ क़ायम कीं।

सन् १८८२ में सर सी० पी० एलबर्ट ने कौंसिल में एक प्रसिद्ध बिल रक्खा, जिसका मतलब यह था कि यूरोपियन अभियुक्तों का फ़ैसला भी काले मैजिस्ट्रेट कर सकें। ऐंग्लो-इंडियन लोगों में भारी तूफ़ान उठा। इससे अँगरेज़ी पढ़े-लिखे भारतीयों के मन में यह विचार पैदा हुआ कि गोरे लोग हमें तुच्छ ही समझते हैं। जगह-जगह संस्थाएँ स्थापित होने लगीं। १८८४ में, बंगाल में, जितेंद्रमोहन ठाकुर के नेतृत्व में नेशनल लोग की स्थापना और एक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शिनी हुई। सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने उत्तर-भारत का तीसरा दौरा किया, तथा राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता पर ज़ोरदार भाषण दिए। इधर १८८५ में बंबई प्रेसिडेंसी एसोसिएशन का जन्म हुआ। श्रीयुत फ़ीरोज़शाह मेहता, काशीनाथ तैलंग, दीनशा एदलजी वाचा इसके संयुक्त मंत्री हुए।

परंतु इन सभी सभाओं की सीमा प्रांतों में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थी। इंडियन एसोसिएशन के सिवा सबका उद्देश्य भी प्रांत में ही काम करना था। पर देश-भर की समस्याओं का विचार करने की भावना देश में उत्पन्न हो गई थी।

मिस्टर ह्यूम, जो कांग्रेस के पिता कहे जाते हैं, सन् ५७ का विद्रोह देख चुके थे। वह उन दिनों इटावे के कलेक्टर थे। १८७० में वह भारत-सरकार के स्वराष्ट्र-सचिव रहे, फिर सन् १८७१ से १८७९ तक लगान, कृषि और व्यापार-विभाग के मिनिस्टर रहे। इन उत्तरदायित्व-पूर्ण कार्यों में रहने पर आपको देश की परिस्थिति देखने का बारीकी से अवसर मिला। देश की जनता एक मत से उठ खड़ी हो, तो कैसी विपद् उठ खड़ी हो सकती है, यह वह समझे हुए थे। सन् १८८२ में उन्होंने नौकरी छोड़ी, और शिमले में रहने लगे। आपने लॉर्ड लिटन का कठोर शासन और उसके बाद लॉर्ड रिपन का शांत प्रोग्राम देखा था। वह गोरों के जोश और देश के असंतोष पर गंभीर विचार करने लगे। उन्होंने सोचा, वैध आंदोलन का मार्ग खोलकर यह असंतोष रोका जा सकता है। यह विचारकर इन्होंने सन् १८८४ में एक इंडियन नेशनल यूनियन की स्थापना की। इसने १८८५ में, दिसंबर में, देश-भर के प्रतिनिधियों को एकत्र करने की तैयारी की। भारत के मध्य भाग में होने के कारण इसके लिये पूना स्थान नियत किया गया। उद्देश्य राष्ट्रीय उन्नति तथा आगामी वर्ष के लिये राजनीतिक कार्य थे।

चिपलूणकर स्वागतकारिणी के सभापति बने। ह्यूम साहब का विचार इस सभा के द्वारा केवल सामाजिक विषयों पर विचार करना था। पर तत्कालीन वायसराय लॉर्ड डफ़रिन ने उन्हें राजनीतिक सभा बनाने की सलाह दी। लॉर्ड डफ़रिन ने उनसे कहा—शासन-सूत्रधार को हैसियत से मुझे लोगों की वास्तविक इच्छा जानने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। यदि कोई ऐसी ज़िम्मेदार संस्था हो, जिससे सरकार को देश की इच्छा का पता चलता रहे, तो बड़ी सुविधा हो। १८८५ में, शिमले में, ह्यूम साहब और वायसराय से इस संबंध में बातचीत भी हुई। उसमें वायसराय ने यह भी कहा कि इसमें प्रांत के गवर्नर की अध्यक्षता न रहे, जिसमें लोगों को संकोच न हो। यह तजवीज़ नेताओं ने भी पसंद की। वायसराय ने यह कह दिया था कि उनका नाम इस संबंध में तब तक न प्रकट किया जाय, जब तक वह भारतवर्ष में रहें। यही हुआ भी। इसके बाद ह्यूम साहब इँगलैंड गए, और वहाँ लॉर्ड रिपन, जान ब्राइट एम्० पी०, आर० टी० रेड एम्० पी०, लॉर्ड डलहौसी, वैक्सटन एम्० पी०, स्लैग एम्० पी० और अन्य पुरुषों से भेंट कर अपना अभिप्राय समझा दिया, जिससे कोई ग़लतफ़हमी न होने पावे। यह करके वह नवंबर में भारतवर्ष लौट आए।

अचानक पूने में प्लेग-प्रकोप होने के कारण यह अधिवेशन बंबई में, सन् १८८५ में, श्रीउमेशचंद्र बनर्जी की अध्यक्षता में, ७२ प्रतिनिधियों की उपस्थिति में, हुआ। यह कांग्रेस के जन्म का संक्षिप्त इतिहास है। इसके बाद ४४ वर्ष का इतिहास तो बहुत विस्तृत है। उसे फिर कभी बताया जायगा।

सन् ३० की कांग्रेस से प्रथम की नीति—सन् ३० की कांग्रेस पं० जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में खुले षड्यंत्र की सभा थी। इसमें पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव बहु-सम्मति से पास हुआ। सन् १९०६ में जब कलकत्ते में दादाभाई नौरोज़ी के सभापतित्व में कांग्रेस हुई, तब उसमें स्पष्ट राष्ट्रीयता की गंध आने लगी थी। 'स्वराज्य' शब्द का सबसे प्रथम मंत्रोच्चार उसी समय हुआ था। इसके बाद सन् १९०८ ई० में, इलाहाबाद में, कांग्रेस का ध्येय निश्चित किया गया। उस समय साम्राज्यांतर्गत स्वराज्य की माँग थी। १९२० तक कांग्रेस की यही नीति रही। परंतु नागपुर-कांग्रेस में महात्मा गांधी ने साफ़ कह दिया कि "ब्रिटिश-साम्राज्य के अंदर यदि संभव हो, और ब्रिटिश-साम्राज्य के बाहर यदि ज़रूरत हो।" ९ वर्ष तक यह युग भी क़ायम रहा।

सन् ३० की कांग्रेस—गत वर्ष कलकत्ते की कांग्रेस में महात्मा गांधी ने प्रतिज्ञा की थी कि यदि ३१ दिसंबर, सन् २९ की रात के १२ बजे तक सरकार औपनिवेशिक स्वराज्य भारत को न देगी, तो मैं पूर्ण स्वाधीनता के पक्ष में हो जाऊँगा। इस प्रतिज्ञा के अनुसार उन्होंने रात को १२ बजकर ३ मिनट पर पूर्ण स्वाधीनता की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घोषणा की। इस कांग्रेस के सभापति का पद ग्रहण करने के लिये महात्मा गांधी से बहुत विनय की गई थी; परंतु महात्मा गांधी ने यह जवाब दिया कि देश में जो नई उत्तेजना फैली है, उसे रोककर, अपनी ठीक नीति के आधार पर, क़ब्ज़े में कर रखना मेरे लिये अशक्य प्रतीत होता है। इसलिये मैं चाहता हूँ कि उस प्रवाह को अपने ऊपर से गुज़र जाने दूँ। उन्होंने पं० जवाहरलाल नेहरू को सभापति-पद के लिये पेश किया, और वह चुन लिए गए। देश में इस समय गर्म विचार भरे हुए हैं। यद्यपि लोग देश के लिये साधारण क़ुर्बानी भी करने को तैयार नहीं दीखते, परंतु वे गर्म-से-गर्म प्रोग्राम को अमल में आने का तमाशा देखना अवश्य चाहते हैं। नवयुवक लोग, जिन-में पंजाब, बंगाल और दक्षिण-भारत का ख़ास भाग है, बड़ी उतावली से अपने गर्म विचारों को अमल में लाने की इच्छा करते दीख पड़ते हैं।

वायसराय की ट्रेन पर बम—२३ तारीख़ के प्रातःकाल ७½ बजे निज़ामुद्दीन-स्टेशन और अजमेरी-दरवाज़े के रेलवे केबिन के बीच किसी व्यक्ति ने बम का प्रयोग किया। यह बम बड़ी होशियारी से निज़ामुद्दीन और नई दिल्ली-स्टेशन के बीच ६५२-६ नंबर के खंभे के पास लाइन के नीचे रक्खा था, और उसका संबंध एक बिजली के तार से था, जो मिट्टी के नीचे दबा दिया गया था, और पुराने क़िले की दक्षिणी दीवार से २० गज़ के फ़ासले पर होता हुआ चला गया था। अनुमान होता है कि वहाँ से चौथाई मील के फ़ासले पर कोई शख़्स बैठा था, और बैटरी तार से लगी हुई थी। जहाँ बम रक्खा था, वहाँ से ३० फ़ुट इधर-उधर ज़मीन ढालू थी। यदि ट्रेन पटरी से भी उतर जाती, तो चकनाचूर हो जाती। उस वक़्त घना कुहरा पड़ रहा था। ट्रेन ५० मील की चाल पर दौड़ रही थी। ट्रेन ठीक वहाँ पहुँचने पर धड़ाका हुआ। दो डब्बे बुरी तरह नष्ट हो गए। एक ख़ानसामे को चोट आई। खिड़कियों के शीशे टूट गए। उस स्थान की पटरी २ फ़ीट ६ इंच उड़ गई।

परंतु ट्रेन बिना रुके नई दिल्ली-स्टेशन पर, ठीक टाइम पर, पहुँच गई। बम की ख़बर स्टेशन पहुँचने पर कर्नल हार्वे ने वायसराय को दी। वह उसी घटना-स्थल पर गए। लाइन पर पुलीस का कड़ा पहरा था, और घटना-स्थल पर भी पुलीस तैनात थी। ठीक इसी दिन लॉर्ड हार्डिंग पर भी बम फेंका गया था। इस संबंध में कुछ आदमी लाहौर में गिरफ़्तार हुए हैं, जो ज़मानत पर छोड़े गए हैं।

वायसराय से नेताओं का सम्मिलन—इसी दिन ३ बजे शाम को महात्मा गांधी, पं० मोतीलाल नेहरू, माननीय पटेल, सर तेजबहादुर सप्रू और मि० जिन्ना से वायसराय ने मुलाक़ात की। २½ घंटे तक बात-चीत होती रही। महात्मा गांधी का कहना था कि सम्राट् की गवर्नमेंट की ओर से जब तक यह विश्वास न दिलाया जायगा कि प्रस्तावित राउंड टेबिल कान्फ़्रेंस में औपनिवेशिक स्वराज्य की स्कीम पर विचार होगा तथा ब्रिटिश गवर्नमेंट उसका समर्थन करेगी, तब तक कांग्रेस का उसमें भाग लेना कठिन है। वायसराय ने साफ़ तौर पर कह दिया कि कान्फ़्रेंस का तात्पर्य केवल यही है कि उन प्रस्तावों में, जिन्हें गवर्नमेंट ब्रिटिश पार्लियामेंट के सामने पेश करेगी, अधिकांश अधिक एकमत होने का विचार प्रकट किया जाय। मेरे लिये अथवा सम्राट् की सरकार के लिये पहले से यह बताना असंभव है कि कान्फ़्रेंस में क्या होगा। पार्लियामेंट की स्वाधीनता कम करना भी संभव नहीं। महात्मा गांधी ने कहा—मैं भारत के राष्ट्र के सामने प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि ३१ दिसंबर तक यदि भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य न मिल जायगा, तो मैं पूर्ण स्वाधीनतावादी बन जाऊँगा। अतः शीघ्र ही पूर्ण औपनिवेशिक स्वराज्य की बात स्वीकार कर लेनी चाहिए। वायसराय ने जवाब देते हुए कहा—मैं महात्मा गांधी और पं० मोतीलालजी नेहरू की माँगों से, जो उग्र और स्वीकार करने के अयोग्य हैं, सहमत नहीं।

इस प्रकार यह सम्मेलन व्यर्थ गया।

अफ़वाहें—कांग्रेस से प्रथम चारो तरफ़ कई प्रकार की अफ़वाहें फैल रही थीं। लोग कहते थे, [illegible] जहाज़ और मशीनगनें पंडाल को उड़ा देंगी। [illegible] पूरी न हो सकेंगी। कुछ लोग कहते थे, जवाहरलाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वराज्य-सेना-संग्रह कर युद्ध शुरू कर देंगे । रूस और अमेरिका से मदद मिल रही है। हिंदोस्तान-भर की खुफ़िया पुलीस लाहौर में इकट्ठी हो गई है आदि-आदि ।

सभापति का जुलूस—२५ तारीख़ को ४ बजे पं० जवाहरलाल नेहरू की स्पेशल ट्रेन स्टेशन पर पहुँची। लोगों का कहना है कि इतनी भीड़ लाहौर में पहले कभी नहीं देखी गई । १ घंटे तक सभापति को रास्ता न मिला। प्लेटफ़ार्म पर बैंड बज रहा था। चर्ख़ेदार झंडियाँ थीं। महिलाओं की काफ़ी तादाद थी । स्वयंसेवकों ने सभापति को सलामी दी। जनरल ऑफ़िसर कमांडिंग सरदार मंगलसिंह सफ़ेद घोड़े पर सवार, १०० सवारों के साथ, नेतृत्व कर रहे थे।

पं० जवाहरलाल नेहरू सफ़ेद घोड़े पर सवार हुए। आगे-आगे अनाथ-आश्रम और अन्य दो संस्थाओं का बैंड बजता था। उसके पीछे कांग्रेस-स्वयंसेवक बीन बाजा और शहनाई बजा रहे थे। उसके पीछे नियमित कांग्रेस-वड था। इसके बाद कुमारी जुलशी के संचालन में महिला-स्वयं-सेवक-दल था। इसके पीछे सेनापति मंगलसिंह के नेतृत्व में घुड़सवार-दल था। सरदार शार्दूलसिंह, लाला दुनी [illegible] (लाहौर), नामधारी सिखों के गुरु और अन्य नेता घोड़ों पर सवार थे। सबके बीचमें पं० जवाहरलाल नेहरू थे । पृष्ठ पर नामधारी सिखों का घुड़सवार-दल था। उसके पीछे हथौड़ा और हँसिया लिए हुए सिखों का बड़ा भारी जत्था पैदल चल रहा था। स्वागत-मंत्री डॉक्टर गोपीचंद भार्गव पैदल ही जुलूस का नियंत्रण कर रहे थे। अनुमान है कि जुलूस में १० लाख मनुष्यों की भीड़ थी। जगह-जगह तोरण बनाकर एवं झंडियों से नगर सजाया गया था, और स्वागत हो रहा था। क्रांतिकारी वाक्यों के मोटो जगह-जगह टाँगे गए थे। पुलीस ने प्रबंध में मदद देनी चाही थी, परंतु कार्य-कर्ताओं ने कह दिया कि यदि हम प्रबंध न कर सकेंगे, तो जुलूस ही न निकालेंगे । नगर के तंग और बने रास्तों पर जुलूस को ३ मील का रास्ता तय करना पड़ा था। अनारकली-बाज़ार में पं० मोतीलाल नेहरू ने अपने योग्य पुत्र पर पुष्प-वर्षा की, और इसके उत्तर में राष्ट्रपति ने उन्हें अभिवादन किया । लाला लाजपत राय के मकान पर जुलूस समाप्त हुआ। वहाँ लाला-जी की धर्मपत्नी के आतिथ्य-रूप उन्होंने चाय पी, और लाजपत-नगर को प्रस्थान किया।

मूल-मंत्र—मूल-मंत्र या मोटो, जो नगर और पंडाल में लगाए गए, कुछ इस प्रकार के थे—

"हिंदोस्तान के बेताज के बादशाह, हम तेरा स्वागत करते हैं।"

"बापू! स्वागत, भूखा भारत तुम्हारी ओर टक-टकी लगाए देख रहा है।"

"हिंदोस्तानी हिंदोस्तान में आज़ाद होना चाहते हैं।"

"आज़ादी की लड़ाइयाँ बातों से नहीं जीती जातीं, कामों से जीती जाती हैं।"

"देश-भक्ति से बड़ा कुछ नहीं है।"

"जो अपनी आज़ादी खो देता है, वह अपना आधा धर्म खो देता है।"

"गांधी सत्य की मूर्ति है; सत्य अमरत्व की मूर्ति है।"

"जवाहरलाल युवकों का प्रतिबिंब है, युवक कार्य के प्रतिबिंब हैं।"

"डॉयर और ओडॉयर ने जिस ज़मीन को लाल रंग में रँगा, उसमें हम आपका स्वागत करते हैं।"

"स्वतंत्रता की वेदी पर अपने को बलिदान कर दो।"

"हिंदू, सिख और मुसलमान एक हो जाओ या सदा के लिये जहन्नुम में जाओ।"

पंडाल और लाजपत-नगर—लाजपत-नगर बहुत सुंदर बनाया गया था। रावी के तट पर पट-मंडपों की शोभा देखने योग्य थी। पंडाल एक विशाल शामियाने के नीचे था, जिसमें २० हज़ार आदमी बैठ सकते थे। सभा-पति तथा नेताओं के लिये मंच बनाया गया था। उसी पर स्वागत-समिति, आल इंडिया कांग्रेस-कमेटी के सदस्यों तथा प्रतिष्ठित दर्शकों के बैठने को स्थान था। वेदी के सामने पत्र-प्रतिनिधियों के लिये स्थान थे। आने-जाने के लिये कई मार्ग थे। सर्वत्र खद्दर बिछाया गया था।

ऋतु—शुरू में वर्षा और बर्फ़ गिरने से बड़ी दिक़्क़त रही। लाजपत-नगर में सब जगह कीचड़ थी। डेरे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

टपक रहे थे। सर्दी ख़ूब कड़ी थी, पर २६ तारीख़ को मौसम साफ़ हो गया।

आल इंडिया कांग्रेस-कमेटी की बैठक—२७ दिसंबर की शाम को लाजपत-नगर में आल इंडिया कांग्रेस-कमेटी की बैठक हुई। सभापति पं० मोतीलाल नेहरू थे। दर्शक ठसाठस भर रहे थे। प्रारंभ में जनरल सेक्रेटरी पं० जवाहरलाल नेहरू ने गत वर्ष की रिपोर्ट पढ़ सुनाई। इसके बाद सुभाष बाबू ने बंगाल-कांग्रेस-कमेटी का झगड़ा उठाया। इस पर जो विवाद हुआ, उससे नाराज़ होकर सुभाष बाबू तथा कुछ मदरासी सभ्य वहाँ से उठ गए। सुभाष बाबू ने कार्य-समिति से इस्तीफ़ा भी दे दिया। रिपोर्ट पर बहस शुरू हुई। उसमें मदरास-सरकार द्वारा मद्य-निवारण के लिये ४ लाख रुपए की मंज़ूरी की जो बात कही गई थी, उसका विरोध मुथूरंग मुदालियर ने किया। इसके बाद मालवीयजी के नाम ४५,८४२) रु० की रक़म का जो पावना है, उस पर बहस हुई। निश्चय हुआ कि इसका निपटारा महात्माजी व मालवीयजी कर लेंगे। श्रीबदरुलहसन के नाम जो २७००) रु० थे, उनके लिये क़ानूनी कार्यवाही करने का निश्चय प्रकट हुआ। इसके बाद रिपोर्ट स्वीकृत हुई।

इसके बाद पं० मोतीलालजी ने सभापतित्व का भार पं० जवाहरलाल नेहरू के ऊपर सौंपते हुए हिंदी में भाषण दिया। आपने कहा—

"मैं जो चाहता था, वह कर न सका; पर जो कुछ भी कर सका हूँ, उसका श्रेय महात्मा गांधी और जनरल सेक्रेटरी को है। मैं सभापतित्व का चार्ज अपने पुत्र को देता हूँ। पर फ़ारसी में कहावत है कि जो काम बाप नहीं कर सकता, उसे बेटा कर दिखाता है। मुझे विश्वास है कि जवाहरलाल मुझसे अच्छा काम करेंगे। यह समय मुझ-जैसे बुड्ढों के लिये नहीं है, प्रत्युत यह युग जवानों के लिये है।" इसके बाद आपने कहा—"मैं जवाहरलाल नेहरू को सभापति का आसन ग्रहण करने की आज्ञा देता हूँ, और विश्वास दिलाता हूँ कि मैं उनकी आज्ञा का सदैव विनय-पूर्वक पालन करूँगा।" (इस पर ख़ूब हर्ष-ध्वनि हुई।)

जवाहरलाल नेहरू ने नम्रता-पूर्वक स्थान ग्रहण किया, और उनकी माता तथा सरोजिनी नायडू ने बधाइयाँ दीं। इसके बाद आल इंडिया कांग्रेस-कमेटी विषय-निर्वाचिनी बन गई।

विषय-निर्वाचिनी—विषय-निर्वाचिनी में वायसराय के बम-दुर्घटना से बच जाने के उपलक्ष में बधाई देने का प्रस्ताव आया। इस पर एक घंटे तक बहस होती रही। विरोध पक्ष ख़ूब ज़ोर में बोला, और लोग अधिक हर्षित हुए; पर अंत में ११७ पक्ष और ६६ विपक्ष में से प्रस्ताव पास हो गया।

इसके बाद महात्मा गांधी ने अपना मुख्य प्रस्ताव पेश करते हुए जो भाषण दिया, उसका सारांश यह है—

"मैं और पं० मोतीलाल बहुत प्रयत्न करने पर भी औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त करने में असमर्थ रहे। समझौते के लिये वायसराय ने प्रशंसनीय चेष्टा की। वह हमसे प्रेम और नम्रता से मिले। हमें प्रतीत हुआ कि कांग्रेस का समझौते की सभा में सम्मिलित होना व्यर्थ है। मेरे प्रस्ताव का दूसरा भाग कांग्रेस के ध्येय में परिवर्तन से संबंध रखता है। हम कहते हैं कि स्वराज्य का अर्थ पूर्ण स्वतंत्रता है। उसे प्राप्त करने को हमें शांत और वैध उपायों से ही काम लेना होगा। प्रस्ताव में कौंसिलों आदि के बहिष्कार की बात आगे को बहुत भारी दीखेगी। पर आपका काम भी तो भारी है। आप सम्राट् की सरकार के स्थान पर अपनी सरकार स्थापित करके राजभक्ति की शपथ तो ले ही नहीं सकते। आपको झोपड़ियों में जाना, अछूतों को गले लगाना तथा मुसलमानों को मिलाना होगा। × × × हमें अपनी सारी शक्ति क्रियात्मक काम में लगानी चाहिए। सत्याग्रह के लिये हम अभी तैयार नहीं। यह काम आल इंडिया कमेटी के हाथ में रहे। अब नेहरू-रिपोर्ट रद समझी जाय। उसके कारण जो सिख और मुसलमान कांग्रेस से पृथक् थे, वे अब एक होने चाहिए।"

इस प्रस्ताव का समर्थन श्रीनिवास ऐयंगर ने किया।

२८ तारीख़ को समिति में 'पूर्ण स्वाधीनता के ध्येय' पर ज़बर्दस्त बहस हुई। पंडित मदनमोहन मालवीय ने कहा—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"कांग्रेस को गोलमेज़-कान्फ्रेंस में भाग लेना चाहिए। दिल्ली में, फ़रवरी में, सर्वदल-सम्मेलन किया जाय।"

जब तक मालवीयजी बोलते रहे, लोग उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे। केलकर ने उनका समर्थन किया।

बंगाल के ज्वलंत युवक सुभाष बाबू ने बड़ी ज़ोरदार स्पीच दी। आपने कहा—

"इस प्रस्ताव में इस प्रकार के संशोधन होने चाहिए, जिनसे पूर्ण स्वाधीनता का यह अर्थ स्पष्ट हो जाय कि हमें ब्रिटिश साम्राज्य से कोई सरोकार ही नहीं है। कांग्रेस किसानों, मज़दूरों और युवकों का संगठन करे। व्यवस्थापिका सभाएँ, स्थानिक संस्थाएँ और अदालतें त्याग दी जायँ।"

इसी प्रकार के और भी बहुत-से संशोधन पेश हुए। २१ तारीख़ को फिर मूल-प्रस्ताव पर बहस हुई। श्रीसत्यमूर्ति ने इस दिन कौंसिल-बहिष्कार के विरुद्ध वक्तव्य दिया। अंत में महात्मा गांधी ने सबको उत्तर देते हुए कहा—

"हमें वर्किंग-कमेटी के प्रस्ताव पर विश्वास रखना चाहिए। यह ठीक है कि हम औपनिवेशिक स्वराज्य की बात नहीं सुन सकते; पर हम स्वतंत्रता की बात सुनने को तो किसी के भी साथ बैठ सकते हैं। मालवीयजी आदि ने सर्वदल-सम्मेलन की बात उठाई है। यह सच है कि उससे हमारी एकता में बहुत सहायता मिलेगी। पर जब औपनिवेशिक स्वराज्य हमें मिल ही नहीं रहा है, तो उसकी प्रतीक्षा कब तक? नर्मदलवाले हमसे नहीं मिल सकते, तो जाने दीजिए। हमें कलकत्ते के निर्णय के अनुसार पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास करना चाहिए।"

अंत में महात्माजी का मूल-प्रस्ताव ही स्वीकार कर लिया गया।

ध्वजारोपण—२१ तारीख़ को प्रातःकाल १० बजे सुनहरी धूप में जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रीय पताका अपने हाथों से फहराई। पताका की ऊँचाई दो सौ फ़ुट थी। उस पर बिजली के लैंप जड़े हुए थे, जिससे रात के समय ख़ूब जगमगाहट रहती थी। पौने दस बजे तक १ लाख से अधिक आदमी इकट्ठे हो गए। कुछ लोग पेड़ों पर भी चढ़ गए थे।

१० बजे सबसे प्रथम श्रीनिवास ऐयंगर, पं० मोतीलाल नेहरू, डॉ० अंसारी आदि पहुँच गए थे। इसके बाद पं० जवाहरलाल नेहरू पहुँचे। महिलाओं ने "वंदेमातरम्" का गीत गाया। फ़ोटोग्राफ़रों ने फ़ोटो लिए। स्वयंसेवकों के जनरल कमांडर ने फ़ौजी सलाम किया। इसके बाद पताका-संगीत हुआ। इस अवसर पर पं० जवाहरलाल नेहरू ने जो छोटा-सा भाषण दिया, वह इस प्रकार था—

"आज जिस झंडे के नीचे तुम खड़े हो, वह किसी धर्म और संप्रदाय का नहीं, सारे देश का है। इसके नीचे खड़े हुए हम लोग हिंदू या मुसलमान नहीं, भारतीय हैं। याद रक्खो, जब तक भारतीयों में एक भी बच्चा जीवित है, यह पताका अपमानित या पददलित न होनी चाहिए।"

खुला अधिवेशन—ठीक ५ बजे प्रारंभ हुआ। हाज़िरी ११ हज़ार से अधिक थी। ५ बजे वालंटियरों ने बिगुल बजाकर सभापति के आगमन की सूचना दी। सबसे आगे वालंटियरों का एक जत्था था, पीछे दो-दो लीडर इस क्रम से थे—पं० मोतीलाल नेहरू और मौ० अब्दुलकलाम आज़ाद, श्रीमती सरोजिनी नायडू, मौ० मुहम्मदअली, श्रीनिवास ऐयंगर और मदनमोहन मालवीय, डॉ० अंसारी और सरदार पटेल, जवाहरलाल नेहरू और जे० एम्० सेनगुप्त। सबका स्वागत होने पर कन्याओं ने "वंदेमातरम्" का गाना गाया। इसके बाद और कुछ गायन होने पर स्वागताध्यक्ष डॉ० किचलू का भाषण हुआ।

स्वागताध्यक्ष का भाषण—आपका भाषण अँगरेज़ी में छपा हुआ था। आपके पढ़ते ही चारो ओर से हिंदी-हिंदी की पुकार उठने लगी। आपने खेद प्रकाश करते हुए कहा, हिंदी में भाषण तैयार नहीं है। मैं पीछे से हिंदी में सुना दूँगा। पंडाल में १८ लाउड स्पीकर लगे थे। अतः सब लोग आसानी से भाषण सुन सके। एक घंटे में यह भाषण समाप्त हुआ। अँधेरा होते ही सहस्रों बिजली के रंग-बिरंगे लैंप जल उठे। आपके भाषण का सारांश यह है—

"भाइयो! मैं आपका स्वागत करता हूँ। हम लोग राष्ट्रीय युद्ध के, स्वतंत्रता के युद्ध के बड़े ही महत्त्व-पूर्ण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थान पर पहुँच गए हैं। इस समय हम लोगों को चाहिए कि अपनी अवस्था को अच्छी तरह समझें, और जो-जो शक्तियाँ हमारे पक्ष में और विपक्ष में हों, उन्हें परख लें। अभी विदेशी शासन जारी है, और उससे जनता इस तरह चूसी जा रही है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रश्न की अवहेलना करना संभव ही नहीं। जो ब्रिटिश शक्ति हम पर आज शासन कर रही है, वह यहाँ व्यापार के लिये आई थी। उस समय यह देश बहुत उच्च था। यहाँ का वस्त्र और जवाहरात तथा शिल्प विख्यात था। परंतु आज हमारा वह वैभव रेल और जहाज़ों में भरकर लूट लिया गया है। महायुद्ध के बाद तो हम विदेशी व्यापार के ग़ुलाम बन गए हैं।

लॉर्ड सेल्सबरी ने कहा था—हमें भारत का ख़ून पीना है, और इस समय हमें अपना बर्छा उस स्थान पर मारना चाहिए, जहाँ ज़्यादा ख़ून जमा हो। परंतु हमें ग्रामीणों से कुछ नहीं मिल सकता; क्योंकि वे तो रक्त के अभाव से आप ही मर रहे हैं।

भारत के ग्रामों की दशा का यह सच्चा रूप है। इसे हम तब तक नहीं सुधार सकते, जब तक कि देश की अर्थ-समस्या हमारे हाथ में न हो।

युद्ध के बाद धूर्त ब्रिटेन के आश्वासन और लॉयड जॉर्ज से हमें बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं। मांटेग्यु-चेम्सफ़ोर्ड-स्कीम भी सिर्फ़ लिफ़ाफ़े-बाज़ी थी। इससे देश में चैतन्यता आई थी, जिसे रौलट-बिल से, घोर विरोध होने पर भी, दबाया गया, जिसके सम्मुख महात्मा गांधी ने सत्याग्रह-युद्ध की घोषणा की थी और हिंदू-मुसलमान एक होकर उनके झंडे के नीचे आ खड़े हुए थे। उस समय नौकरशाही काँप उठी थी।

इस उत्थान को कुचलने के लिये डॉयर और ओडॉयर ने निरीह जनता पर गोली चलाई। माताओं को बेपर्द किया गया। जलियानवाला बाग़ में हमारी कड़ी परीक्षा हुई। अंत में हमने अमृतसर-कांग्रेस में बता दिया कि अब हम शांति से अँगरेज़ों के नीचे नहीं बैठे रहेंगे।

महात्मा गांधी ने असहयोग-युद्ध छेड़ा; परंतु देश की कमज़ोरी ने उसे विफल किया। शक्ति बिखर गई। अंत में हिंदू-मुसलिम-वैमनस्य ने सब कुछ नष्ट कर दिया। सरकार की मनचेती हुई। आपस में फूट डालकर शासन करना उसकी पुरानी नीति है।

अब एक ज़बर्दस्त प्रोग्राम सामने रखने की आवश्यकता है, जिसे पूरा करने में हम आपसी द्वेष भूल जाएँ। जनता भूखी है, वह आँसू बहा रही है। पर किसान और मज़दूर ही भारत के भावी मालिक हैं। सांप्रदायिकता को नष्ट कर दो। कोई संप्रदाय ख़तरे में नहीं है।

महात्माजी हमारे नेता बनें और युवक उनका अनुसरण करें, यही मेरी प्रार्थना है।

पं० जवाहरलालजी और मैं कैंब्रिज युनिवर्सिटी में सहपाठी हैं। मैं इनका आज हृदय से स्वागत करता हूँ।

इसके बाद आपने हार पहनाकर जवाहरलालजी से सभापति का आसन ग्रहण करने की प्रार्थना की, और उन्होंने प्रचंड तालियों की गड़गड़ाहट के बीच अपना भाषण हिंदी-भाषा में देना शुरू किया। यह भाषण एक घंटे से अधिक तक होता रहा। उसका सारांश इस प्रकार है—

"हम अपने उन भाइयों और बहनों को नहीं भूल सकते, जिन्होंने परिणाम की परवा न करके विदेशियों की हुकूमत के विरोध में या तो अपना जीवन दे डाला और या जिनकी जोश-भरी जवानी ज़ुल्म सहते बीती है। वे वीर भले ही आज न हों, पर उनका साहस तो आज भी बना है। जतीन और विजय-जैसे पुत्र क्या भी भारत पैदा कर सकता है। अब योरप के प्रभुत्व के दिन गए। ये अमेरिका और एशिया के उत्थान के दिन हैं। विश्व-क्रांति की लहर से भारत अछूता नहीं बच सकता।

भारतीय समाज भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का उत्थान नहीं, बल्कि समानता देता रहा है। मुसलमानों के आने से इस व्यवस्था में गड़बड़ हुई थी। पर बहुत-सी व्यवस्था ठीक हो गई थी। तभी अँगरेज़ों ने अवसर पाकर अपना मतलब गाँठ लिया।

दुःख है कि आज भारत में धर्मसहिष्णुता नहीं। योरप ने धर्म-स्वतंत्रता प्राप्त कर राजनीतिक और उसके बाद आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त की, और वह अब समाज-स्वाधीनता पर विचार कर रहा है।

भारत को भी इसके लिये कोई उपाय ढूँढ निकालना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

LIBRARY
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. 3590

ही पड़ेगा। वरना देश का ढाँचा ठीक न बनेगा। पर इसके लिये हमें अपनी प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप ही चेष्टा करनी पड़ेगी।

भय, अविश्वास और संदेह हममें जो बने हैं, वे वैमनस्य का बीज हैं। हम मतभेद दूर करना नहीं चाहते, परस्पर के भय और संदेह को दूर करना चाहते हैं। खेद है, इस संबंध में सर्वदल-कमेटी को सफलता नहीं मिली। समाज में अनुपात और औसत का भाव बहुत है; परंतु विश्वास और उदारता से ही भय दूर हो सकते हैं।

वह समय आ गया है, जब हमें स्वराज्य-योजना को एक ओर रखकर स्वतंत्र भाव से अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना चाहिए, और पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा कर देनी चाहिए। हमारे राष्ट्रीय और श्रमजीवी नेताओं का बुरी तरह दमन किया जा रहा है, और ज़बर्दस्ती हमारे साथी क़ैद कर लिए गए हैं। बहुतों को स्वदेश नहीं लौटने दिया जाता। सरकारी सेना अपने फ़ौलादी पंजे में देश को जकड़े हुए है, और हममें से जो सिर उठाता है, उसी पर चाबुक पड़ता है।

वायसराय ने समझौता-सभा की घोषणा की है, जिसमें भारतीय नेता निमंत्रित किए जायँगे। पर हमें ब्रिटिश-राजनीति की दुरंगी चाल का पूरा अनुभव हो गया है।

इस घोषणा के बाद ही दिल्ली में विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने एकत्र होकर यह स्पष्ट कर दिया था कि किन शर्तों पर वह घोषणा स्वीकार की जा सकती है। पीछे की व्याख्या से उक्त घोषणा का महत्व प्रकट हो गया है। अभी जो बहस पार्लियामेंट की साधारण सभा में, भारत के बारे में, छिड़ी है, और भारत-मंत्री ने अपनी सरकार की नियत साफ़ होने की बात कही है, वह हो सकती है; पर उससे हमें कुछ आशा नहीं। भारत को हानि पहुँचाकर इँगलैंड तो लाभ उठा ही रहा है।

पिछले दस सालों में सरकार ने भारत की भलाई के लिये क्या-क्या किया है, इसका विवरण भारत-मंत्री ने बताया है। उसका सार यह है कि कुछ भारतीयों को बड़े-बड़े पद देना और शेष को दमन-चक्र में पीस डालना।

संकीर्ण राष्ट्रीयता से संसार ऊब गया है, और वह अब राष्ट्रों के व्यापक सहयोग और पारस्परिक निर्भरता की तलाश में है। हम भी इसी उच्च आदर्श को सामने रखकर स्वाधीनता की घोषणा करने जा रहे हैं। पर इस कार्य में जन-साधारण का शरीक होना बहुत ज़रूरी है। साथ ही उनका शांति-पूर्ण होना भी ज़रूरी है। सुघटित विद्रोह की बात दूसरी है।

असहयोग-आंदोलन में विविध बहिष्कार की चर्चा थी। सेना में नौकरी न करने और टैक्स देने से इनकार करने की भी बात थी। कौंसिल-बहिष्कार के संबंध में मैं अधिक कुछ न कहूँगा। पर इन नक़ली कौंसिलों ने हममें कैसी नीति-भ्रष्टता ला दी है, और हममें से कितने उन्हीं को ये जाल में फँसाए हुए हैं, यह प्रकट है। कौंसिल छोड़ने से हमें आपकी पूर्ण शक्ति को काम में लगाने का अवसर मिलेगा, जिसका स्वरूप टैक्स न देना और हड़ताल करना होगा। इसके सिवा विदेशी-बहिष्कार हम ख़ास तौर पर शुरू करेंगे। हमारा कार्य-क्रम राजनीतिक और आर्थिक, दोनो दृष्टियों से होना चाहिए। हम ब्रिटिश सरकार से कोई संबंध न रक्खेंगे। हम उस क़र्ज़ के चुकाने के ज़िम्मेवार भी नहीं, जो इँगलैंड ने भारत के नाम पर ले रक्खा है।

मैं अंत में सबसे खुला षड्यंत्र करने की अपील करता हूँ।"

इस भाषण के बाद आपने 'विप्लव दीर्घजीवी हो' का नारा लगाया, और हज़ारों कंठों से वह तीन बार घोषित किया गया।

अनंतर विषय-निर्वाचिनी के निर्णयानुसार यतीन और विजय पूँगी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया, और इस दिन की कार्यवाही समाप्त हुई।

३१वीं दिसंबर को दिन के एक बजे से कांग्रेस की कार्यवाही पुनः आरंभ हुई। देश-विदेशों के कितने ही व्यक्तियों और संस्थाओं की ओर से जो सहानुभूति-सूचक तार आए थे, राष्ट्रपति के आदेशानुसार, उनमें से कुछ थोड़े-से डॉक्टर अंसारी द्वारा पढ़कर सुनाए गए।

महात्मा गांधी ने पहले दिल्ली की बम-दुर्घटना के संबंध में खेद-प्रकाश करने का प्रस्ताव पेश किया, जो ८१७ अनुकूल और ८१५ प्रतिकूल वोटों से पास हुआ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके बाद महात्माजी ने अपना यह मूल-प्रस्ताव रक्खा—विगत ३१वीं ऑक्टोबर को वायसराय ने औपनिवेशिक स्वराज्य के संबध में जो घोषणा की थी, और जिसके जवाब में नेताओं ने मिलकर एक नोटिस निकाला था, उसके संबंध में वर्किंग कमेटी ने जो कुछ किया था, उसका यह कांग्रेस अनुमोदन करता है। स्वराज्य-आंदोलन के विषय में बड़े लाट ने जो चेष्टा की, वह भी कांग्रेस की दृष्टि में प्रशंसनीय है। इसके बाद से अब तक जो कुछ हुआ है, और बड़े लाट से नेताओं के मिलने का जो परिणाम देखने में आया है, उन सब बातों पर विचार कर कांग्रेस यह राय ज़ाहिर करती है कि गोलमेज़-कान्फ्रेंस में कांग्रेस के प्रतिनिधियों के जाने से कोई भी लाभ न होगा।

अतएव कांग्रेस के पिछले अधिवेशन के निर्णय के अनुसार यह कांग्रेस घोषणा करती है कि पूर्ण स्वाधीनता अर्जन करना ही कांग्रेस का ध्येय या लक्ष्य है, और साथ ही यह भी घोषणा करती है कि नेहरू-रिपोर्ट भी बेकार हो गई। अब से प्रत्येक कांग्रेस का कर्यकर्ता पूर्ण स्वाधीनता पाने के लिये ही उद्योग करेगा, और पूर्ण स्वाधीनता के लिये ही प्रचार-कार्य करेगा। कांग्रेस की इस नीति की रक्षा के लिये यह कांग्रेस भारतीय और विभिन्न प्रादेशिक व्यवस्थापिका सभाओं, सरकार द्वारा बनाई गई कमेटियों, लोकल बोर्डों, यूनियन बोर्डों इत्यादि को पूर्ण रूप से त्याग देने का निश्चय घोषित करती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए यह कांग्रेस समस्त कांग्रेसी कार्यकर्ताओं और राष्ट्राय आंदोलन के साथ संबध रखनेवाले व्यक्तियों तथा संस्थाओं से भविष्य में चुनावों से किसी प्रकार का संपर्क न रखने के लिये कह रही है, और अभी जो कांग्रेस के कार्यकर्ता व्यवस्थापिका सभाओं, ज़िला बोर्डों और लोकल बोर्डों में काम कर रहे हैं, उनसे यह कांग्रेस अनुरोध करती है कि वे उन्हें एकदम छोड़ दें।

महात्माजी के इस प्रस्ताव का पंडित मोतीलालजी नेहरू ने समर्थन किया; पर बाद को पंडित मदनमोहन मालवीय और श्रीयुत सुभाषचंद्र बसु आदि ने आपके प्रस्ताव में संशोधन करने के लिये अलग-अलग प्रस्ताव पेश किए।

वोट लेने पर एक-एक कर सभी संशोधक प्रस्ताव रद्द हो गए, महात्मा गांधी का मूल-प्रस्ताव पास हो गया।

1ली जनवरी, १९३० को दिन के दो बजे से फिर कांग्रेस का अधिवेशन आरंभ हुआ। आज जो प्रस्ताव पास हुए, उनमें से मुख्य-मुख्य दिए जाते हैं—

(१) पूर्वी आफ्रिका के प्रवासी भारतवासियों के विषय में सभापति महोदय की ओर से जो प्रस्ताव किया गया, वह सर्व-सम्मति से स्वीकृत हो गया।

(२) श्रीयुत सकलतवाला कांग्रेस में सम्मिलित होने के लिये भारत आने को तैयार थे; पर उन्हें पास-पोर्ट नहीं दिया गया। सरकार की इस कारवाई का विरोध करने के लिये सभापति की ओर से जो प्रस्ताव पेश किया गया, वह भी सर्व-सम्मति से स्वीकृत हो गया।

(३) कांग्रेस का अधिवेशन हर साल जाड़े के दिनों में ही हुआ करता है। शीत-प्रधान प्रांत में कांग्रेस के लिये स्वागतकारिणी समिति और प्रतिनिधिगण को गरम कपड़े ख़रीदने के लिये प्रायः बहुत अधिक धन ख़र्च करना पड़ता है। इसके अलावा बहुत जाड़ा होने के कारण प्रायः १७०० इस साल आदमी बीमार पड़े। इन बातों को ध्यान में रखते हुए सभापति की ओर से यह प्रस्ताव किया गया कि जब जिस प्रांत में कांग्रेस का अधिवेशन होनेवाला हो, उस प्रांत की कांग्रेस-कमेटी यदि उचित और आवश्यक समझे, तो कांग्रेस का अधिवेशन फ़रवरी या मार्च के महीने में करा सकती है। इस प्रस्ताव पर बहुत देर तक वाद-विवाद होता रहा। अंत में वोट लेने पर ७५४-४२९ वोटों से प्रस्ताव स्वीकृत हो गया।

(४) यह कांग्रेस समझती है कि विदेशी शासन होने के कारण प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष भाव से भारत पर जिन ऋणों का भार लादा जा रहा है, उन ऋणों के लिये स्वाधीन भारत उत्तरदायी न होगा। सन् १९३० ई० की कांग्रेस में इस प्रकार का जो प्रस्ताव पास हुआ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

था, इस बार को कांग्रेस उसका अनुमोदन करती है, और जिन्हें यह बात जानने की आवश्यकता हो, उनके लिये घोषित करती है कि स्वाधीन भारत उत्तराधिकारी की हैसियत से जिन सुविधाओं एवं उत्तरदायित्वों को प्राप्त करेगा, उन पर विचार करने के लिये एक निरपेक्ष मंडली पर भार दिया जायगा, और वह जिन बातों को मानने योग्य न समझेगी, भारत उन्हें स्वीकार करने के लिये बाध्य नहीं रहेगा।

यह प्रस्ताव भी सभापति महोदय द्वारा उपस्थित किया गया था, और बिना किसी वाद-विवाद के सर्व-सम्मति से स्वीकृत हो गया।

(१) देशी रजवाड़ों के अधिवासी प्रजाजनों ने पूर्ण स्वाधीनता के लिये अपने को तैयार बताया है। उनके अभाव-अभियोगों के लिये भी एक प्रस्ताव रक्खा गया, जो स्वीकृत हो गया।

आगामी वर्ष के लिये डॉक्टर महमूद और श्रीयुत श्रीप्रकाशजी जेनरल सेक्रेटरी तथा श्रीयमुनालालजी बजाज और श्रीशिवप्रसादजी गुप्त कोषाध्यक्ष नियुक्त हुए।

अगले साल कांग्रेस का अधिवेशन कराची में होना निश्चित हुआ है। स्वागत-समिति के सदस्यों को धन्यवाद देने के लिये श्रीमती सरोजिनी नायडू खड़ी हुईं। आपने धन्यवाद देने के बाद कहा—"कोई भी काम क्यों न हो, उसमें नेताओं की वशवर्तिता परम आवश्यक है। यदि हम अपने नेता के आदेशानुकूल नहीं चल सकते, यदि हम इसमें पक्के नहीं उतर सके, तो हमारी सब बातें, सब चेष्टाएँ व्यर्थ हो जायँगी।"

अंत में स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्ष डॉक्टर किचलू ने स्वयंसेवकों को धन्यवाद दिया, और उपस्थित प्रतिनिधियों से अपनी ग़लतियों और कमज़ोरियों के लिये क्षमा माँगी।

अंत में सभापति के अंतिम भाषण के बाद सभा विसर्जित हुई।

कांग्रेस के अवसर पर और धूमधाम—कांग्रेस के मुख्य अधिवेशन के अलावा इस अवसर पर और भी बहुत-से सम्मेलन लाहौर में हुए, जिनका संक्षिप्त परिचय यह है—

सामाजिक सम्मेलन—गत २६, २७, २८ दिसंबर को श्रीहरिविलास सारदा के सभापतित्व में सामाजिक सम्मेलन हुआ। सभापति ने अपने ओजस्वी भाषण में सामाजिक बुराइयों का दिग्दर्शन कराते हुए सुधार की आवश्यकता बतलाई। आपने कहा कि सामाजिक सुधार से राजनीतिक सुधार के आंदोलन में बड़ी शक्ति मिलती है। सामाजिक संघटन की उन्नति के कारण ही भारत का भूतकाल महान् था। प्राचीन भारत और वर्तमान भारत की अवस्थाओं में महान् भेद है, अतः पुरानी कोई भी व्यवस्था आज के लिये उतनी उपयुक्त नहीं हो सकती। आपने स्त्रियों के अधिकार के विषय में क़ानून बनाने के लिये बड़ा ज़ोर दिया। सम्मेलन में कई आवश्यक प्रस्ताव पास हुए। एक प्रस्ताव में कहा गया कि सब संप्रदायवाले आपस में मेल बढ़ाने का प्रयत्न करें, दूसरे में विधवाओं के उत्तराधिकार-संबंधी बिल का समर्थन किया गया, तथा सिफ़ारिश की गई कि वह बिल मुसलमान-विधवाओं के लिये भी लागू किया जाय। इसके बाद बाल-विवाह तथा बहुविवाह के विरुद्ध प्रस्ताव पास हुए, और सर्वजातीय विवाह पर ज़ोर दिया गया। क्षयरोग के कारण और इलाज के बारे में एक कमेटी क़ायम करने का निश्चय हुआ। अंत में एक सहभोज हुआ, जिसमें सब प्रांतों और जातियों के स्त्री-पुरुष सम्मिलित थे।

राजनीतिक पीड़ित-सम्मेलन—श्रीहनुमंतसहाय के सभापतित्व में गत ३० दिसंबर को राजनीतिक पीड़ित-सम्मेलन हुआ, जिसमें एक प्रस्ताव द्वारा देश की स्वतंत्रता के लिये शहीद होनेवालों के प्रति श्रद्धा प्रकट की गई। प्रति वर्ष ३१ मार्च को शहीद-दिवस मनाने का निश्चय हुआ।

सिख-सम्मेलन—गत २० दिसंबर को सरदार खड्गसिंह के सभापतित्व में अकाली-सम्मेलन हुआ। सभापति ने नेहरू-विधान के रद्द होने पर प्रसन्नता प्रकट की, और कहा कि राष्ट्र के लिये स्वार्थ-त्याग करने में हम कभी नहीं चूके हैं, और न आगे चूकेंगे। हमारा प्रस्ताव जो महात्माजी ने मान लिया है, वह जब कांग्रेस में पास हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जायगा, तो हम कांग्रेस में मिल जायँगे। सम्मेलन में दो महत्त्व-पूर्ण प्रस्ताव पास हुए। एक में कहा गया कि यदि सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की प्रथा जारी रहे, तो सिखों को पंजाब में ३० प्रति सैकड़ा स्थान मिलने चाहिए, और दूसरी जगहों में इनके अधिकारों की रक्षा होनी चाहिए। दूसरे प्रस्ताव द्वारा सभापति को कम-से-कम ७ आदमियों की समिति बनाकर कांग्रेस के साथ समझौते की बात करने का अधिकार दिया गया। अगर समझौता हो गया, तो सिख कांग्रेस का साथ देंगे, अन्यथा अलग रहेंगे।

विद्यार्थी-सम्मेलन—गत ३० दिसंबर को महामना मालवीयजी के सभापतित्व में विद्यार्थी-सम्मेलन हुआ। सभा में पं० जवाहरलाल नेहरू तथा श्रीवल्लभ भाई पटेल आदि कई नेता भी उपस्थित थे। स्वागताध्यक्ष के भाषण के बाद सभापति ने महात्मा गांधी का संदेश पढ़ सुनाया। महात्माजी ने लिखा था कि विद्यार्थियों का प्रथम कर्तव्य अपने ऊपर अधिकार करना, अपना सुधार करना तथा खद्दर की उन्नति करना है। इसके बाद पं० जवाहरलालजी का बड़ा ही प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। आपने कहा कि अब नौजवानों के काम करने की बारी है, जिनमें काफ़ी जागृति हो गई है। हमारे विचार से भारतीय नौजवानों में अभी अपनी ज़िम्मेदारी का सच्चा ज्ञान नहीं उदय हुआ है, और जब तक वे अपनी ज़िम्मेदारी पूर्ण रूप से नहीं समझेंगे, अपना सुधार नहीं करेंगे, तब तक उनकी शक्ति और जोश व्यर्थ ही होगा। विद्यार्थियों के अँगरेज़ी बोलने के लिये आग्रह करने पर आपने कहा कि देश की सर्वसाधारण जनता तक पहुँचने के लिये उनकी भाषा बोलना भी आवश्यक है। बाद में सभापति ने अपने भाषण में नवयुवकों को संघटन करने, धार्मिक बनने, सांप्रदायिकता छोड़ने, अपने ध्येय पर चलने और स्वदेश से प्रेम करने की सलाह दी। आपने कहा कि यदि छात्र नेताओं के आज्ञानुसार चलें, तो वे सन् ३० में स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं। अंत में कई प्रस्ताव पास हुए, जिनमें भारतवर्षीय विद्यार्थी-संघ स्थापित करने की सिफ़ारिश की गई, खद्दर या स्वदेशी वस्त्र के व्यवहार का अनुरोध किया गया, यतींद्रनाथ दास की देश-सेवा की प्रशंसा की गई, तथा विद्यार्थियों को गिरफ़्तारी के लिये बधाई दी गई।

जाति-पाँति-तोड़क सम्मेलन—श्रीरामानंद [illegible] के सभापतित्व में गत २८ दिसंबर को [illegible] पाँति-तोड़क सम्मेलन हुआ। सभापति ने [illegible] यह सच है कि भारत की राजनीतिक निर्बलता और पतन का कारण जाति-प्रथा है। यह राष्ट्र-निर्माण में सदा बाधक रही है। किसी समय यह भले ही व्यवहार में रही हो, पर अब प्रचलित नहीं रह सकती। इससे संघटन में बाधा पड़ती है। सम्मेलन में निम्न-लिखित प्रस्ताव पास हुए—

१—इस सम्मेलन की सम्मति में जाति-पाँति के [illegible] पर स्थापित संस्थाएँ केवल हिंदू-संघटन, शुद्धि तथा दलितोद्धार के रास्ते में ही भारी रुकावट नहीं हैं, बल्कि हिंदू-जाति के अस्तित्व के लिये भी अत्यंत हानिकारक हैं।

२—यह सम्मेलन सब हिंदू-संस्थाओं से [illegible] रोध करता है कि वे अपने सामान्य कार्य के प्रोग्राम में जाति-पाँति को तोड़ने और जाति-पाँति-तोड़क विवाह के प्रचार को स्थान दें।

३—जाति-पाँति में विभक्त हिंदू-समाज को एक सूत्र में पिरोने के लिये यह सम्मेलन प्रत्येक अविवाहित युवक और युवती से अपील करता है कि विवाह के समय वे जाति-पाँति की कुछ भी परवा न करें।

४—हिंदुओं में जाति-पाँति-तोड़क विवाहों को सरकारी क़ानून की दृष्टि में जायज़ ठहराने के उद्देश्य से एक बिल तैयार करने और उसे शीघ्र ही लेजिस्लेटिव एसेंबली में पेश कराने के लिये एक उपसभा बनाई जाय।

५—यह सम्मेलन सब प्रकार के हिंदुओं से [illegible] प्रेरणा करता है कि वे जन-संख्या के समय अपनी [illegible] की जाति न लिखावें, और इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि उन्हें केवल हिंदू लिखा जाय।

६—यह सम्मेलन सरकार से प्रबल प्रार्थना करता है कि जन-संख्या का क़ानून इस ढंग से बनाया जाय कि जन-संख्या करते समय किसी पुरुष को भी अपनी [illegible] की जाति बतलाना आवश्यक न हो।

७—अछूतपन के घृणित भेद-भाव को मिटा [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विचार से यह सम्मेलन लेजिस्लेटिव एसेंबली के सभासदों से प्रार्थना करता है कि वे अछूतपन को मिटानेवाला बिल पास करें।

राष्ट्रीय-मुस्लिम-सम्मेलन—गत ३० दिसंबर को चौधरी अफ़ज़लहक़ की अध्यक्षता में राष्ट्रीय-मुस्लिम-सम्मेलन हुआ। सभापति के भाषण के बाद प्रस्ताव पास हुआ कि मुसलमान देश-हित के लिये त्याग करें, और नेहरू-विधान के कारण अलग हुए मुसलमान भी अब कांग्रेस के काम में सहायक हों।

अछूत-सम्मेलन—अछूत-सम्मेलन महात्मा गांधी के सभापतित्व में हुआ। महात्माजी ने अपने भाषण में कहा कि अछूतों की मुक्ति उन्हीं के हाथों में है। आपने उन लोगों को साफ़ और सुथरा रहने तथा तंबाकू, शराब आदि छोड़ने की सलाह दी। मंदिर-प्रवेश के विषय में आपने कहा कि सत्याग्रह या ज़बर्दस्ती मंदिर में जाने से कुछ लाभ नहीं। मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहना चाहिए। फिर सत्याग्रह की कोई ज़रूरत नहीं। अंत में आपने अस्पृश्यता-निवारणार्थ धन की अपील की, और ख़ासा धन-संग्रह हुआ। बाद में श्रीजयकर के बिल के समर्थन में एक प्रस्ताव पास हुआ। कई और प्रस्ताव पास हुए।

पंजाब-सीमाप्रांतीय हिंदू-सम्मेलन—पंजाब-सीमाप्रांतीय हिंदू-सम्मेलन श्रीकेलकर के सभापतित्व में हुआ। इसमें कई महत्व-पूर्ण प्रस्ताव पास हुए, जिनमें वायसराय की स्पेशल को बम से उड़ाने के प्रयत्न तथा सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की निंदा की गई। पंजाब-कौंसिल द्वारा स्वीकृत एकाउंट्स बिल का विरोध किया गया। कौंसिल में स्त्रियों के लिये स्थान रक्षित रखने की सिफ़ारिश की गई, तथा पंजाब और सीमा-प्रांत के हिंदुओं से प्रत्येक तहसील में हिंदू-सभा स्थापित करने की अपील की गई।

राष्ट्र-भाषा-सम्मेलन—राष्ट्र-भाषा-सम्मेलन सरदार वल्लभभाई पटेल के सभापतित्व में हुआ। सभापति ने अपने भाषण में कहा कि हमारे देश में अनेक संप्रदाय हैं। यहाँ एकता तभी हो सकती है, जब हम अपनी राष्ट्रीय भाषा अपनावें। अगर हम अपनी भाषा एक बना लें, तो हमारी पराधीनता के पाश भी शीघ्र ही कट जायँगे, तथा हम उन्नति कर सकेंगे। हमारी राष्ट्र-भाषा हिंदी होनी चाहिए। उर्दू भी हिंदी ही है। इसके लिये झगड़ा नहीं होना चाहिए। मेरे विचार में दोनों में कोई अंतर नहीं। स्वराज्य के चार स्तंभ हैं, जिनमें पहली देश की भाषा है। अतएव देश में सर्वत्र हिंदी का प्रचार होना चाहिए। जितना शीघ्र इसका प्रचार होगा, उतना ही शीघ्र हम स्वतंत्र हो सकेंगे।

भाषण के बाद कुछ उपयोगी प्रस्ताव पास हुए। पहले प्रस्ताव में कांग्रेस से प्रार्थना की गई कि वह अपनी सब काररवाई अँगरेज़ी की जगह हिंदी-भाषा में लिखा करे।

हिंदोस्तानी सेवादल-सम्मेलन—गत २७ दिसंबर को श्रीनिवास ऐयंगर के सभापतित्व में हिंदोस्तानी सेवादल-सम्मेलन हुआ। सभापति ने अपने भाषण में कहा कि सेवादल का मुख्य उद्देश्य नवयुवकों की शारीरिक, मानसिक और नैतिक उन्नति करना होना चाहिए। नवयुवकों में उद्यम, कार्यशीलता और संयम के गुण बढ़ाने चाहिए। सैनिकों की अपेक्षा संयमी पुरुषों ने आज तक अधिक कल्याणकर कार्य किए हैं। आज भारत को भी ऐसे ही पुरुषों की अत्यंत आवश्यकता है। आपने डॉ० हार्डीकर के कामों की प्रशंसा की। अंत में कई प्रस्ताव पास हुए। एक प्रस्ताव द्वारा प्रांतीय कांग्रेस-कमेटियों से स्वयंसेवक-दल तैयार करने तथा उसकी शिक्षा के लिये ख़र्च स्वीकार करने की प्रार्थना की गई। सेवादल का शिक्षा-क्रम स्त्रियोपयोगी बनाने के लिये एक समिति नियुक्त की गई।

भारतीय ईसाई-कान्फ्रेंस—भारतीय ईसाई-कान्फ्रेंस के सभापति रेवरेंड बी० ए० नाग ने अपने भाषण में इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की कि ब्रिटिश सरकार का ध्येय भारत में औपनिवेशिक स्वराज्य स्थापित करना है। आपने भारतीय ईसाइयों को राउंडटेबिल-कान्फ्रेंस का स्वागत करने और मजूर-सरकार पर विश्वास करने की राय दी।

अ० भा० नौजवान-सभा-सम्मेलन—यह सम्मेलन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२६, २७ दिसंबर को हुआ। दर्शकों की भीड़ के कारण शामियाना उखाड़ देना पड़ा। स्वागताध्यक्ष श्रीरामकृष्ण के हाल में ही गिरफ़्तार होने के कारण उनका भाषण दूसरे ने पढ़ सुनाया। उसमें कहा गया था कि देश का कल्याण साम्राज्यांतर्गत स्वराज्य में नहीं, बल्कि पूर्ण स्वाधीनता में है। पश्चात् सभानेत्री श्रीसुहासिनी नेंबियर ने अपने ओजस्वी भाषण में कांग्रेस के कार्यक्रम की निंदा की, तथा १ जनवरी से स्वराज्य-प्राप्ति के लिये युद्ध-घोषणा करने को कहा। अंत में कई प्रस्ताव पास हुए, जिनमें यतींद्रनाथ दास के प्रति आदर-भाव प्रकट किया गया, लाहौर एवं मेरठ के मामलों में सरकारी नीति की निंदा की गई, संसार के युवक-संघों को बधाई दी गई, तथा कांग्रेस के नेताओं की अँगरेज़ों से संबंध रखनेवाली नीति की निंदा की गई। लाहौर के मामले के लिये अपील करने पर ५००) रु० इकट्ठे हुए।

अ० भा० पुस्तकालय-सम्मेलन—श्रीरामानंद चटर्जी के सभापतित्व में २६, २७ दिसंबर को पुस्तकालय-सम्मेलन हुआ। आपने अपने भाषण में कहा कि पुस्तकालयों के द्वारा जनता ख़ूब शिक्षित बनाई जा सकती है। और कई लोगों के भाषण हुए, जिन्होंने कहा कि पुस्तकालयों के प्रचार की भी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी स्वराज्य-प्राप्ति की। सम्मेलन में सरकार से पुस्तकालयों का प्रचार करने तथा धनी, राजा एवं साहूकारों से उसकी सहायता करने के लिये कहा गया। वहाँ एक प्रदर्शिनी भी हुई थी, जिसमें अनेक हस्त-लिखित अमूल्य ग्रंथ तथा चित्र रक्खे गए थे।

कीर्ति किसान-सम्मेलन—यह सम्मेलन मेरठ-षड्यंत्र के अभियुक्त के भाई श्रीअधिकारी के सभापतित्व में हुआ। इसमें ज़मीन तथा कारख़ानों पर किसान और मज़दूरों का अधिकार स्थापित करने, भविष्य में साम्राज्यवाद के युद्धों में भाग न लेने आदि के अनेक प्रस्ताव पास हुए।

अ० भा० गो-महासभा—यह सभा सेठ गोविंददास के सभापतित्व में हुई। इसमें एक प्रस्ताव में कांग्रेस से अनुरोध किया गया कि वह २१ करोड़ हिंदुओं की गो-वध बंद कराने की माँग की ओर ध्यान दे, और गो-रक्षा का प्रश्न हल करे। दूसरे प्रस्ताव द्वारा सरकार की वर्तमान नीति पर खेद प्रकट करते हुए गो-रक्षा-संबंधी कुछ प्रश्नों की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित कराते हुए उससे उन्हें हल करने की अपील की गई। इसके अलावा कई और आवश्यक प्रस्ताव पास हुए।

चिकित्सक-सम्मेलन—गत २७ दिसंबर को, भारतीय मेडिकल सम्मेलन, डॉक्टर विधानचंद्र राय के सभापतित्व में, हुआ। सभापति ने अपने व्याख्यान में उन विषयों पर प्रकाश डाला, जो वर्तमान समय के डॉक्टरों में हलचल पैदा किए हुए हैं। ब्रिटेन की जेनरल मेडिकल कौंसिल के भारतीय डॉक्टरों की डिग्री स्वीकार न करने के प्रश्न पर आपने कहा कि इंडियन मेडिकल एसोसिएशन इस प्रश्न पर अच्छी तरह विचार करे और डॉक्टरों से अपील करे कि वे इँगलैंड की बनी दवाएँ काम में न लावें। सम्मेलन में इँगलैंड की बनी दवाएँ न रक्खी जावें। भारतीय मेडिकल कौंसिल स्थापित किए जावें। ये प्रस्ताव पास हुए।

कांग्रेस के अवसर पर बाहर से कुछ संदेश आए थे, जो अनेक भारतीय और विदेशीय गण्य-मान्य संस्थाओं और व्यक्तियों द्वारा भेजे गए थे। चूँकि इनकी संख्या अधिक थी, अतः डॉक्टर अंसारी ने कुछ संदेशों का थोड़ा-थोड़ा भाग सुनाया, जो इस प्रकार है—

पहला संदेश साम्राज्य-विरोधी संघ के अँगरेज़ी विभाग की ओर से था—

"यह (संघ) भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की राष्ट्रीय लगन के प्रति सहानुभूति प्रकट करता है, और आशा है कि संघ कांग्रेस के लाहौर-अधिवेशन को बड़ी उत्सुकता के साथ देख रहा है।"

संघ के डच-विभाग ने भी कांग्रेस-सहानुभूति का संदेश भेजा है, और कहा है कि "भारतीयों को अपनी स्वतंत्रता के लिये ख़ूब कोशिश करनी चाहिए, और साम्राज्य से छुटकारा पाना चाहिए।"

ईरान की सोशलिस्ट पार्टी ने कांग्रेस से अनुरोध किया है कि वह अपनी स्वतंत्रता का निर्माण सोशलिज़्म के आधार पर करे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इनके सिवा इब्शी-अधिकाररक्षिणी सभा, पेरिस, अंतरजातीय राजनीतिक बंदी-समिति, काबुल-जापान-कांग्रेस-कमेटी, ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन, जोंसबर्ग, अमेरिका-कांग्रेस-कमेटी, न्यूयॉर्क की भारतीय राष्ट्र-समिति, केपटाउन के साउथ आफ्रिकन भारतीय संघ, सिलोन की युवक-परिषद्, ब्रिटिश मज़दूर-नेताओं, साउथ आफ्रिकन भारतीय समिति, अमेरिका की भारतीय समिति, और ईस्ट आफ्रिकन भारतीय कांग्रेस के सहानुभूति के संदेश आए थे।

श्रीशिवप्रसाद गुप्त ने, जो कांग्रेस की वर्किंग-कमेटी के सदस्य हैं, जेनेवा से एक संदेश भेजा है, और कांग्रेस से अनुरोध किया है कि वह मदरास और कलकत्ता के प्रस्तावों को द्वयर्थक्य से निकालकर तर्क-पूर्ण परिणामों में परिणत करे।

शैलेंद्र घोष (न्यूयॉर्क) और राजा महेंद्रप्रताप के संदेश भी आए हैं।

जब डॉ० असारी ने उक्त दोनो महापुरुषों का नाम लिया, तो समस्त पंडाल देर तक तालियों की आवाज़ से गूँजता रहा।

कांग्रेस के निर्णय के स्पष्ट होने पर इँगलैंड के कुछ पत्रों ने इस प्रकार सम्मतियाँ दीं—

'मैंचेस्टर गार्जियन' कांग्रेस की नीति पर टिप्पणी करता है—

"हम उन चेष्टाओं पर खेद प्रकट करते हैं, जो भारतीय शासन को असंभव बनाने के लिये की गई हैं। इसलिये यह निश्चित है कि ऐसी चेष्टाओं के सफल होने के पहले दबाव की आवश्यकता पड़े।"

'डेली एक्सप्रेस' भारतीय अधिकारियों को कड़ाई की नीति अख़्तियार करने की राय देता है; क्योंकि कड़ाई ही भारत को उस नाज़ुक मौक़े से बचा सकती है, जो संभव है, भारत को उन्नति के पथ पर बीस वर्ष पीछे हटा दे।

'डेली न्यूज़' ने लिखा है—

"हम भारत के लिये क्रमशः औपनिवेशिक स्वराज्य की कल्पना कर सकते हैं; परंतु पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य तो ग़ैर-अमली ही नहीं, कल्पनातीत है।"

'मॉर्निंग-पोस्ट' ने कहा है कि जिस शक्ति ने पिछली २३ दिसंबर को वायसराय की स्पेशल के नीचे बम फेंका है, वही कांग्रेस के इस प्रस्ताव की पीठ पर थी। सरकार ने कांग्रेस का यह विद्रोही अधिवेशन होने की आज्ञा कैसे दी? पंजाब-सरकार ने कांग्रेस के लिये ज़मीन दी, और उसकी रक्षा के लिये एक लाख रुपया ख़र्च किया।.....पंजाब-सरकार ने यहाँ तक-ही कांग्रेस को आत्म-समर्पण नहीं किया, बरन् सच पूछो, तो उसने लठबंद बदमाशों को, जिन्होंने प्रजा पर लाठियाँ चलाईं, अपना रक्षक बनाने की आज्ञा कांग्रेस को देकर अपने अधिकार का त्याग किया।

'संडे टाइम्स' ने लिखा कि "हरएक आदमी इस बात को मानेगा कि स्वराजिस्ट लोग शक्तिशाली हो गए हैं, और सरकार से अनुरोध करेगा कि वह गरम दलवालों के साथ बिना रोक-टोक और बिना अधिक सोचे-विचारे सख़्ती का व्यवहार करे।"

'डेली मेल' ने लॉर्ड इरविन और मि० बाल्डविन को लताड़ते हुए उन्हें मुट्ठी-भर गरम दलवालों से दब जाने का दोष दिया है, और बम-दुर्घटना के निंदात्मक प्रस्ताव-संबंधी विरोध की तरफ़ इशारा करते हुए लिखा है कि कांग्रेसवालों का एक बड़ा भाग ऐसी बम-दुर्घटनाओं के पक्ष में है।

'डेली टेलीग्राफ़' ने सर फ़िरोज़ सेठना के भाषण पर टिप्पणी करते हुए लिखा है—"माडरेट भी अभी स्वप्न-संसार में विचर रहे हैं।"

'डेली टेलीग्राफ़' के विशेष संवाददाता ने एक तार में लिखा है कि पंडित जवाहरलाल के भाषण में अनेक राजद्रोहात्मक वाक्य हैं, परंतु अधिकारीवर्ग उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही करने को प्रस्तुत नहीं दिखाई देता; क्योंकि कांग्रेस-भूमि अत्यंत पवित्र और आदरणीय मानी जा रही है।

'मॉर्निंग-पोस्ट' का नई दिल्ली का संवाददाता इस पत्र को तार देता है कि "जाँच करने पर मालूम हुआ है, भारत-सरकार निश्चय कर चुकी है कि महात्मा गांधी देश को अनारकी की तरफ़ ले जाने से रोके जायँगे।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साप्ताहिक 'स्पेक्टेटर' लिखता है कि "केवल एक काम, जो कांग्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता की नीति को संभाव्य बना सकता है, एक स्वतंत्र या कई स्वतंत्र देशों पर शासन करने की एक भारतीय स्कीम का अस्तित्व होगा; परंतु ऐसी कोई भी स्कीम नहीं है।" यह पत्र आगे ब्रिटिश सरकार को सख़्ती, मज़बूती और निर्भयता की नीति अख़्तियार करने की राय देता है।

साप्ताहिक 'न्यू स्टेट्समैन' सरकार को असहयोगियों का बॉयकॉट करने की सम्मति देता है, और लिखता है—"हम भारत को प्रजा-तंत्र अथवा स्वराज्य नहीं दे सकते। हमें ज़बर्दस्ती उसे उस रास्ते पर ले चलना चाहिए, जिस पर हम चाहें, और केवल उन भारतीयों की सुननी चाहिए, जो हमसे सहयोग करने को राज़ी हों, शेष की कोई परवा न करनी चाहिए। एक सप्ताह से अगर हम राय लें, तो वह हमारी मदद करेगा; परंतु एक नेहरू उसकी वाहियात माँगों की तरफ़ हमारे बढ़ने का सिर्फ़ फ़ायदा ही उठावेगा।"

साप्ताहिक 'सैटर्डे रिव्यू' ने ब्रिटेन को आगे बढ़ने की सम्मति दी है, और भारतीय सहयोग का स्वागत और सहयोग से इनकारों की उपेक्षा करने को कहा है।

'नेशन' यह विचार प्रकट करता है कि "चूँकि लॉर्ड इर्विन की नीति नरम और 'मिले रहने' की है, तो कोई कारण नहीं कि उसका राज्य-संबंधी प्रबंध भी शिथिल और कायरता-पूर्ण होगा। उसे पूर्ण विश्वास मिलना चाहिए कि प्रत्येक अवस्था में उसे इँगलैंड से पूरा सहयोग मिलेगा, चाहे वह यथार्थ अशांति को दबावे, अथवा पहले से ही वैसा मौक़ा न आने देने की कोशिश करे।"

पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा करके महात्मा गांधी ने इस बार सारे देश को मानो जलती हुई भट्ठी में डाल दिया है। यदि घोषणा के अनुसार देश ने स्वाधीनता की ओर अग्रसर होने की सच्ची चेष्टा की, तो मैं निश्चय-पूर्वक कह सकता हूँ कि सन् तीस भारतवर्ष के लिये बड़ा भयानक साल होगा।

मेरी इस धारणा के दो ज़बर्दस्त कारण हैं—[illegible] को अग्रसर होना ही पड़ेगा, चूँकि घोषणा महात्मा गांधी ने की है, और वह अब प्राण देकर भी विश्राम लेनेवाले जीव नहीं हैं। गत वर्ष महात्मा गांधी ने देश-भ्रमण घूमकर अपनी शक्ति को तोल लिया है, और वह एक निराश नहीं हैं। यदि ऐसा होता, तो निश्चय महात्मा गांधी इस ज़बर्दस्त जवाबदेही को सिर पर न लेते। परंतु महात्माजी ने ऐसे नाज़ुक मौक़े पर ऐसी भीषण घोषणा करने का इरादा पक्का करके भी इस बार कांग्रेस के सभापति का स्थान स्वीकार न कर और उसे [illegible] जवाहरलाल नेहरू को बलात् देकर युवक-हृदयों को बहुत स्वाधीन कर दिया है, और यह काम असाधारण जोखिम से भरा हुआ है।

संसार के सभी देशों के युवक राष्ट्रीय भावना से गर्म दल के होते ही हैं। भारतीय युवकों के उग्र [illegible] आज छिपे नहीं हैं। भारत के युवकों के हृदय में जि[illegible] तेज़ी से ग़ैरत के भाव पैदा हुए हैं, और वे जिस साह[illegible] और त्याग का परिचय इन पिछले दिनों में दे चुके [illegible] वह साधारण नहीं है। परंतु जैसा कि महात्माजी [illegible] मंतव्य है, और जो वास्तव में यथार्थ बात है कि [illegible] भारतवर्ष-जैसे विशाल देश का प्रतापी ब्रिटेन [illegible] साम्राज्य-सत्ता पर विजय प्राप्त कर पूर्ण स्वाधीनता [illegible] प्राप्त करना उन उपायों से बिलकुल संभव नहीं [illegible] जिन्हें ये वीर युवक उपयोग में अब तक लाते रहे हैं। ब्रिटेन की महाशक्तियों को विजय करने के लिये [illegible] को असाधारण सामूहिक त्याग, संगठन और सहिष्णुता एवं स्थैर्य की ज़रूरत है, जिसका कि अभी देश में बड़ा अभाव है।

महात्मा गांधी ने हठ-पूर्वक देश पर युवक-संघ का प्रभुत्व होने दिया है। यह केवल भारत ही ने नहीं पृथ्वी-भर ने चकित होकर देखा है। परंतु संसार को इस बार इस प्रबल और महान् घटना से उतना भय की आशंका नहीं हुई, जितनी सन् २१ में उदीयमान असहयोग-आंदोलन से हो गई थी। उस असाधारण [illegible] क्रम ने संसार की महाशक्तियों की राजनीतिक [illegible] भारत के इस सच्चे आंदोलन की ओर फेरी थी, [illegible] यह भारत इस निस्सहाय अवस्था में भी [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुज़रेगा, यह ब्रिटेन की सत्ता एवं पृथ्वी की महाशक्तियों को भी भास गया था।

इस बार हम सन् तीस के प्रभाव में जब सोते हुए उठे, तब हमने अपनी आत्मा को स्वाधीन भारत की घोषणा के प्रभाव से ओत-प्रोत पाया, परंतु इस असाधारण चीज़ की प्राप्ति से जो आनंद हृदय में होना चाहिए, वह हमें नहीं हुआ, बल्कि एक बोझ छाती पर रक्खा गया है, और इसका एक ही कारण है कि वर्तमान परिस्थिति और कार्य-क्रम के देखते देश इस घोषणा के अनुरूप स्वाधीन हो सकेगा, इसमें हमें घोर संदेह है। भारतवर्ष के पूर्ण स्वाधीन होने का समय अभी किसी तरह हमें निकट नहीं दीख रहा है।

यह बात सच है कि महात्मा गांधी अपने प्राणों की आहुति देने का सुयोग खोज रहे हैं, इसलिये हल्का और सीधा प्रोग्राम उनके हृदय से निकलना संभव ही नहीं हो सकता। परंतु यह बात भी निश्चित है कि आज महात्मा गांधी सरलता से अकेले आत्म-आहुति नहीं दे सकते। मालूम होता है, पंजाब के शेर की अपमृत्यु भारतवर्ष ने चुपचाप सहन कर ली है। यदि साधारण दृष्टि से देखा जाय, तो यह कहा जा सकता है कि कदाचित् महात्माजी के प्राणों पर भी वह दिन आए, तो देश उसे इसी तरह दरगुज़र कर देगा। परंतु आँखोंवाले देख सकते हैं कि देश की राष्ट्रीयता के हृदय में जो दुर्धर्ष रोष उत्पन्न हो गया है, वह लालाजी के प्राणों का मोल है, और यह संभव ही नहीं हो सकता कि महात्माजी अपने प्राणों पर खेल जायँ और देश का वातावरण सोता रहे। अब कठिनता यह है कि महात्माजी जो कुछ करनेवाले हैं, उसे बिलकुल उन्हीं की पद्धति पर, आदि से अंत तक, निबाहना इस समय देश की शक्ति से बाहर है। ऐसी अचानक विपत्तियाँ, जो आज देश के सिर पर सवार हैं, और ऐसी प्रचंड बाधाएँ, जो उसकी स्वाधीनता के मार्ग में अड़ी हुई हैं, क्रोध और अविचार से नहीं दूर की जा सकतीं। उनके लिये बड़ा भारी संयम, ज़बरदस्त धैर्य और अचल सहिष्णुता की आवश्यकता है, जो देश में है ही नहीं।

महात्माजी की यह घोषणा बड़ी तेज़ी से समुद्रों को चीरती और पर्वतों को लाँघती हुई संसार के दरवाज़ों पर पहुँच गई है। आज सारा संसार भारत की जवानी और बुढ़ापे के एक ही क्षण के इस निश्चय को क्रियात्मक रूप में देखने को उत्सुक है। संसार पर—ख़ासकर ब्रिटेन पर—यह घटना कितना बड़ा प्रभाव रखती है, इसका परिचय एक ब्रिटिश-पत्र के यह कहने से मिलता है कि "आज भारत से हमारी सत्ता उठ गई।"

लाहौर की राष्ट्रीय महासभा के अवसर पर जो वक्तव्य प्रकट किए गए, वे इस बात को स्पष्ट करते हैं कि देश की बेचैनी इस समय देश को पूर्ण अहिंसक नहीं बनाए रख सकती, जिसका महात्मा गांधी के कार्य-क्रम में एक बहुत ही आवश्यक भाग है।

पूर्ण स्वाधीनता के लक्ष्य को सामने रखकर यदि देश कार्य-रूप से अग्रसर हो, तो सबसे पहली टक्कर जो उसको झेलनी पड़ेगी, वह गवर्नमेंट की दमन-नीति की चोट होगी। वह चोट इतनी साधारण नहीं है, जिसकी चर्चा ही न की जाय। यह बात तो प्रकट हो रही है कि ब्रिटिश-गवर्नमेंट ने, सन् ३० में, भारतवर्ष से मुक़ाबला करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है, और वायसराय ने अपनी मुलाक़ात में स्पष्ट ही भारतवर्ष को उत्तरदायित्व देने से इनकार कर दिया है।

अगर भारतवर्ष को आज स्वाधीनता न प्राप्त हो, तो भी वह बड़ी ख़ुशी से अभी पचास साल ज़िंदा रह सकता और अपने संगठन तथा बल को उत्तरोत्तर बढ़ा सकता है। परंतु ग्रेट-ब्रिटेन यदि भारत की अभिलाषा के सामने परास्त हो जाय, तो वह निस्संदेह एक ही वर्ष में बरबाद हो जायगा। भारतवर्ष ग्रेट-ब्रिटेन का एकमात्र जीवन-अवलंब है, इसलिये भारतवर्ष को अपने अधीन बनाए रखने के लिये सारी अँगरेज़-जाति, आवश्यकता पड़ने पर, एक बार जूझ मरेगी। इसमें तो कोई शक नहीं कि आज साम्यवाद की बदौलत इँगलैंड में भी यह भाव फैला हुआ है कि कमज़ोर-से-कमज़ोर और छोटी-से-छोटी क़ौम को भी आत्म-शासन का स्वाभाविक अधिकार प्राप्त है, जैसा कि एक बार श्रीयुत सकलतवाला ने कहा था कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"वर्तमान साम्राज्यवाद के पृष्ठ-पोषक इँगलैंड में भी मुश्किल से ६० हज़ार मनुष्य होंगे", परंतु हम इस बात की गंभीरता पर विचार करना चाहते हैं कि भारत की पूर्ण स्वाधीनता को इँगलैंड का क्या कोई भी उदार-से-उदार दल सहन कर सकेगा ? औपनिवेशिक स्वराज्य तो एक ऐसी सरल चीज़ है, जहाँ समस्त जातियों का—ख़ासकर ग्रेट-ब्रिटेन का—व्यापारिक स्वार्थ अबाध रूप से चल सकता है। इसके सिवा ग्रेट-ब्रिटेन की राजनीतिक मैत्री भी उसका एक अनिवार्य रूप है, इसलिये औपनिवेशिक स्वराज्य का समर्थन इँगलैंड के जन-बल से होना कदाचित् संभव होता, परंतु पूर्ण स्वाधीनता का ध्येय तो ग्रेट-ब्रिटेन के विध्वंस का प्रश्न है। हम नहीं समझते कि ब्रिटेन का जन-बल इस प्रश्न का समर्थन करेगा अथवा उदासीन भी रह सकेगा। फिर भारत के शासन में इँगलैंड का जन-बल बहुत दूर का हाथ रखता है, और भारत-सरकार को उसे स्याह-सफ़ेद करने का असाधारण अधिकार प्राप्त है। इसके सिवा वह बुरी तरह से इंडिया-हाउस के बंधन में बँधी हुई है, जो निर्धारित रीति से इधर-उधर हो ही नहीं सकता। तब एक ही बात रह है कि भारतवर्ष को इस पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा की पूर्ति के लिये ब्रिटिश-सत्ता से युद्ध करना पड़ेगा। चूँकि इस युद्ध का नेतृत्व महात्मा गांधी के हाथ में रहेगा, इसलिये यह निश्चय है कि देश को अपने युद्ध की नीति पूर्ण अहिंसात्मक बनाए रखना पड़ेगा, क्योंकि अहिंसा महात्माजी का सर्वोपरि शस्त्र है, और सारे संसार ने इसी के कारण उन्हें महत्त्व का पद दिया है। परंतु ब्रिटिश-सत्ता को खुली आज़ादी है कि वह अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये अपने समस्त सामरिक बल और नीतिक छलों का उपयोग करे। यदि महात्मा गांधी का समस्त भारतीय युवक दल को लेकर अग्रसर होना अनिवार्य है, तो ब्रिटिश-सत्ता का अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये अपने समस्त बल का उपयोग करना भी अनिवार्य है, और इसलिये सन् ३० में भारत को जलती हुई भट्ठी में तपना पड़ेगा, इसमें ज़रा भी संदेह नहीं।

हिलोर

[श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद खत्री "मिलिंद"]

(१)

❀❀❀ मेरे हृदय-पात्र को तुम्हारी स्मृति का निर्झर न-जाने कब आकर भर गया। जान पड़ता है, यह अनादि काल से लबालब है। नयनों के पथ से कभी-कभी कुछ छलक भी पड़ता है, पर ख़ाली नहीं होता। आवेगों का एक क्षण आता है। इसे ज़रा ख़ाली कर जाता है। दूसरा आता है। फिर पूर्ण कर जाता है। जीवन के सारे सुख-दुःख इसकी छोटी-छोटी लहरों के साथ खेल-खेलकर सरस बन गए हैं। अंतर की असीम प्यास इसमें लय हो चुकी है, फिर भी यह ससीम है। इसके सौंदर्य का अनुभव होता है। मेरे देवता, मानो इसमें मिलकर तुम्हीं मेरे प्राणों में हिलोरें ले रहे हो!

(२)

❀❀❀ तुम्हारी एक ही किरण के स्पर्श से जीवन के भीतर-बाहर, चारो ओर, प्रकाश छा जाता है। उसे छिपाने को भी जगह नहीं रहती। तुम्हारी एक ही हिलोर घट को सागर बना देती है। उसे भरने को भी जगह नहीं रहती। जब मैं तुममें मिलने को एकांत खोजता हूँ, तो अखिल विश्व को अपने में छुपा लाते हो। तुममें लय हो जाता है इस हृदय का सूनापन। इसके कोने-कोने में रम जाते हो तुम। चुपचाप। हलचल नहीं मचती। यौवन का मौन, गोपन का संकोच और हृदय का एकांत लुट जाता है, पर तन्मयता भंग नहीं होती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी-व्याकरण

[पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०]

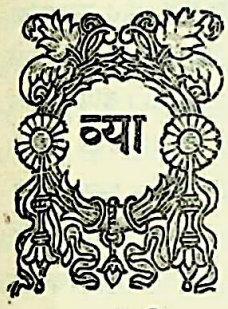

करण उन नियमों की संस्था का नाम है, जो किसी भाषा में ओत-प्रोत रहते हैं। यहाँ मैंने जान-बूझकर 'संस्था' शब्द का प्रयोग किया है; क्योंकि केवल नियम-समूह या नियमावलि को व्याकरण नहीं कह सकते। व्याकरण के नियम एक दूसरे से अलग नहीं होते; किंतु वे उसी प्रकार परस्पर संबद्ध होते हैं, जैसे सूर्य-मंडल के ग्रह और उपग्रह।

संस्कृत में व्याकरण को एक शास्त्र माना गया है। पूर्व मीमांसा में, जो षड्दर्शनों में से पाँचवाँ है, व्याकरण के अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया है। व्याकरण वस्तुतः एक दर्शन है; क्योंकि उसमें मानवी मस्तिष्क के व्यापार का वर्णन होता है। कालिदास ने रघुवंश के पहले श्लोक में "वागर्थाविव संपृक्तौ" कहकर वाणी और अर्थ का घनिष्ठ संबंध बतलाया है। वाणी का अर्थ क्या है? साधारणतया लोग मेज़, कुर्सी आदि चीज़ों को ही वाणी का अर्थ समझते हैं, और इसीलिये इन चीज़ों का नाम पदार्थ है। परंतु यदि गहरी दृष्टि डाली जाय, तो मानवी मस्तिष्क में जो विचार-शृंखला चक्कर लगाया करती है, वही वाणी का अर्थ अर्थात् पदार्थ (पदानां अर्थः) है। इसलिये व्याकरण का मुख्य संबंध मनोविज्ञान (Psychology) से है। चूँकि ये नियम एक शृंखला में बँधे रहते हैं, अतः तर्कशास्त्र या लॉजिक (Logic) भी इसका संबध है। इस प्रकार व्याकरण, से तर्क-शास्त्र और मनोविज्ञान का एक दूसरे पर अवश्य प्रभाव पड़ता है। एक सच्चे वैयाकरण को इन शास्त्रों से यथोचित सहायता लेनी चाहिए।

साधारण लोग समझते हैं, व्याकरण के अनुकूल भाषा होती है, परंतु यह बात ग़लत है। वस्तुतः भाषा के अनुकूल व्याकरण होता है, न कि व्याकरण के अनुकूल भाषा। इस प्रकार व्याकरण-निर्माता साहित्य-निर्माताओं के अनुगामी होते हैं, न कि साहित्य-निर्माता व्याकरण-निर्माताओं के। यदि व्याकरण भाषा का पूर्वगामी होता, तो भाषा में कभी परिवर्तन ही न होता। चूँकि मनुष्यों अथवा जातियों के विचारों में परिवर्तन होता रहता है, इसलिये भाषाओं में भी परिवर्तन हो जाता है, और इस परिवर्तन का प्रकाशित करना ही व्याकरण का काम है।

व्याकरण के नियम दो प्रकार के होते हैं—एक सामान्य या सर्वदेशी, दूसरे विशेष या एकदेशी। सर्वदेशी या सामान्य नियम वे हैं, जो मनुष्य-जाति के मुख की आकृति आदि की समानता से संबंध रखते हैं। संसार-भर के मनुष्यों के मुँह एक प्रकार से बने हैं। उनमें एक प्रकार से आवाज़ उत्पन्न होती है। रूसी और बर्मी, दोनो एक प्रकार हँसते हैं। लंकावासी और स्वीडन-वासी, दोनो एक प्रकार रोते हैं। इसलिये बहुत-से नियम, जो स्थान और प्रयत्न के आश्रित हैं, सभी भाषाओं में सामान्य हैं। व्यंजन-संधि के बहुत-से नियम एक-से ही हैं। संस्कृत का सं और पूर्व मिलकर संपूर्व होता है अर्थात् प के पहले अनुस्वार का म हो जाता है। इसी प्रकार अँगरेज़ी के 'इं' 'पॉसीबिल' का इंपॉसीबिल (Impossible) हो जाता है। इसी प्रकार फ़ारसी का शब्द انبہ यद्यपि 'अन् बः' लिखा जाता है, परंतु उसका उच्चारण 'अंबः' ही होता है।

हिंदी-व्याकरण के सामान्य नियम वे ही हैं, जो अन्य भाषाओं के। ये आज भी वही हैं, जो सौ वर्ष पहले थे, अथवा पाँच सौ वर्ष पीछे रहेंगे।

परंतु विशेष नियम वे हैं, जो भिन्न-भिन्न भाषाओं के निज के हैं। वे अन्य किसी भाषा में पाए नहीं जाते। इनका आश्रय अधिकतर उस जाति के विचारों के ऊपर होता है। भिन्न-भिन्न युगों में भिन्न-भिन्न जातियों के विचार परिवर्तित होते रहते हैं। इसी कारण भाषा में भी अंतर हो जाता है, यही स्थल है, जहाँ मनोविज्ञान व्याकरण पर प्रभाव डालता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी में व्याकरण का अभाव है। अभी कोई पाणिनि तो क्या, शाकटायन भी उत्पन्न नहीं हुआ। हिंदी-निर्माताओं ने इस शास्त्र की आवश्यकता ही नहीं समझी। अन्य भाषाओं के व्याकरण की देखा-देखी स्कूलों में हिंदी के पढ़ानेवालों ने अवश्य व्याकरण की आवश्यकता का अनुभव किया। परंतु हिंदी भाषा, हिंदी के स्कूल, हिंदी के अध्यापक तथा हिंदी के विद्यार्थी सब अनादर की दृष्टि से देखे जाते रहे। जिनमें स्वाभिमान तथा मस्तिष्क था, उन्हें हिंदी से मुँह फेरना पड़ा, और हिंदी-मंडल में केवल उनका प्रवेश हुआ, जो अंतिम श्रेणी के थे। उनमें स्वतंत्र विचारों की योग्यता ही न थी। इसलिये अन्य पाठ्य पुस्तकों की भाँति व्याकरण भी बाज़ारू ही बने।

सबसे प्रसिद्ध और शायद पहला व्याकरण 'भाषा-भास्कर' था। इसका श्रेय भी किसी हिंदी-भाषी को नहीं, किंतु पादरी एथरिंग्टन साहब को था। संभव है, उन्होंने अपनी आवश्यकता को दृष्टि में रखकर इसका निर्माण किया हो। परंतु इसमें संस्कृत-पंडितों की अवश्य सहायता ली गई होगी। संस्कृत-पंडित बहुत दिनों से सच्चे वैयाकरण नहीं रहे, किंतु व्याकरण के दास हो गए हैं, अतः यह छुटा भाषा-भास्कर में भी पाई जाती है। इसमें जाति की वर्तमान मनोवृत्ति तथा हिंदी-भाषा में ओत-प्रोत नियमों की अपेक्षा प्राचीन मनोवृत्ति से काम लिया गया है। भाषा-भास्कर के पश्चात् जो व्याकरण स्कूलों के लिये बनाए गए, वे बिलकुल बाज़ारू रहे।

व्याकरण शास्त्र का विचार छोड़कर पैसे बटोरने पर अधिक लक्ष्य रक्खा गया। यही कारण है, स्कूली व्याकरणों में बड़ी भद्दी मौलिक अशुद्धियाँ भरी पड़ी हैं। न निरीक्षकवर्ग को अवकाश है, न अध्यापकवर्ग में योग्यता है, और इसका फल भोगना पड़ता है बेचारे विद्यार्थियों को। नागरीप्रचारिणी सभा ने, १९०९ में, इस आवश्यकता का अनुभव किया। एक विषय-सूची तैयार की गई, और पं० कामताप्रसादजी गुरु ने एक व्याकरण का निर्माण किया। अनेक अंशों में यह पुराने व्याकरणों से अच्छा है; परंतु इसमें भी व्याकरण की आंतरिक शक्तियों का विश्लेषण नहीं किया गया। मनोविज्ञान तथा तर्कशास्त्र, दोनों से काम नहीं लिया गया। अभी हिंदी के पाणिनि के शुभागमन में बहुत देर है।

संस्कृत के आदि वैयाकरण कौन थे, यह बताना कठिन है। परंतु जो पारिभाषिक शब्द इन लोगों ने दिए, उनसे इनकी बुद्धिमत्ता का पता लगता है। उदाहरण के लिये हम एक शब्द 'सर्वनाम' को लेते हैं। अँगरेज़ी भाषा का पर्याय 'प्रोनाउन' (Pronoun) दूषित शब्द है। एक नाउन दूसरे नाउन का स्थानापन्न हो सकता है; परंतु उसको प्रोनाउन नहीं कह सकते। अतः प्रोनाउन अर्थात् नाउन का स्थानापन्न—इस शब्द से वह अर्थ नहीं निकलता, जो संस्कृत के सर्वनाम से निकलता है। सर्वनाम का अर्थ सर्वेषां नाम अर्थात् सबका नाम। व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक संज्ञाएँ विशेष वस्तुओं के नाम होते हैं। परंतु सर्वनाम सब वस्तुओं के नाम हो सकते हैं। 'मैं', 'तुम', 'वह', 'यह' आदि सब वस्तुओं के लिये प्रयुक्त होने के कारण सर्व नाम कहलाते हैं। यह है सर्वनाम का भाव। इसी प्रकार अन्य शब्दों का हाल है। परंतु कुछ दिनों में संस्कृत-व्याकरण की परिभाषाएँ इतनी प्रचलित हो गईं कि वैयाकरणों को उनके प्रकाशन की आवश्यकता नहीं रही। यही कारण है, पाणिनि ने सर्वनाम का अर्थ या परिभाषा देने के बजाय 'सर्वादीनि सर्वनामानि' अर्थात् सर्वनामों को गिनाना ही पर्याप्त समझा।

परंतु संस्कृत के व्याकरण में शब्दों के रूपों पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है, उनके अर्थों पर अधिक विचार नहीं किया गया। जो शब्द सुबंत थे, उनकी एक कोटि हो गई, अर्थात् वे सब शब्द, जिनके रूपों में एक प्रकार के प्रत्यय लग सकते थे, एक कोटि के हो गए। इसमें सभी संज्ञाएँ, सर्वनाम तथा विशेषण सहित, आ गईं। जो शब्द संज्ञा तो थे, परंतु इस प्रकार के रूप धारण नहीं करते थे, उनको 'संज्ञा-कोटि' से अलग कर दिया गया। जैसे 'ओ३म्' शब्द अव्यय अर्थात् ईश्वर-वाचक है, फिर भी इसलिये अव्यय है कि उसके सुबंत शब्दों के समान रूप नहीं चलते। इसी प्रकार 'दारा' शब्द 'पत्नी'वाचक होते हुए भी इसलिये पुंलिंग रहा कि उसके रूप नर शब्द की भाँति चलते रहे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परंतु हिंदी-व्याकरणवालों ने संस्कृत-व्याकरण का आँख बंद करके अनुसरण करने में बुद्धिमत्ता नहीं की। संस्कृत-शब्दों की तीन कोटियाँ—संज्ञा, क्रिया और अव्यय—उनके रूप के अनुसार थीं, परंतु हिंदी में पहले दो शब्द अर्थों और तीसरा शब्द रूप का द्योतक होने से विभाजन दूषित हो गया। इसी प्रकार संस्कृत का 'तारतम्य' शब्द अर्थबोधक नहीं था, तर और तम प्रत्ययों का स्मरण दिलाने के लिये ही यह शब्द बनाया गया था। परंतु हिंदीवालों ने संस्कृतवालों के उद्देश्य को न समझकर उनका अनुचित अनुकरण किया। संस्कृत के अच् और हल् शब्द हिंदी में निरर्थक-से ही प्रतीत होते हैं।

इसमें संदेह नहीं कि हिंदी की जननी प्राकृत और मातामही संस्कृत है, और इसलिये हिंदी-व्याकरण के निर्माण में इन दोनो भाषाओं के व्याकरणों की पर्याप्त सहायता लेनी चाहिए। परंतु एक बात स्मरण रखनी चाहिए। सहायता लेना और बात है और बिना दाएँ-बाएँ देखे नक़ल करना और बात। हिंदी-व्याकरण-वालों से यही शिकायत है कि उन्होंने अपने स्वतंत्र विचारों से काम नहीं लिया।

पिछले दिनों लीडर आदि पत्रों में यह विवाद छिड़ा था कि हिंदी-व्याकरणों को संस्कृत का अनुसरण करना चाहिए या अँगरेज़ी का। पहले दल के लोग कहते हैं कि संस्कृत से उत्पन्न हुई होने के कारण हिंदी को संस्कृत का अनुगामी होना ही श्रेयस्कर है। इस दल के लोग अग्नि को पुंलिंग ही कहेंगे। दूसरे दल के लोग कहते हैं कि अँगरेज़ी प्रचलित और जीवित भाषा है, अतः यदि हिंदी को जीवित भाषा बनाना चाहते हैं, तो लुप्तप्राय भाषाओं के अनुकरण से काम न चलेगा। हम इन दोनो पक्षों के बीच का मार्ग बताते हैं। हिंदी अब उस अवस्था में नहीं है, जिसमें शायद चंदबरदाई के समय में थी। एक हज़ार से अधिक वर्षों के संघर्षण से वह अब काफ़ी बड़ी हो चुकी है। इसकी वृद्धि शनैः-शनैः होती रही। मुसलमानी राज्य की फ़ारसी और अँगरेज़ी राज्य की अँगरेज़ी इसे कुचल न सकीं। इसलिये न तो संस्कृत के अनुकरण से ही कार्य चलेगा और न अँगरेज़ी के अनुकरण से। अँगरेज़ी व्याकरण में भी अनेक दोष हैं। परंतु अँगरेज़ी में एक विशेषता यह है, कि वह वृद्धिशील है। उसमें दोष हैं; परंतु साथ ही दोषों का परिज्ञान भी है। हिंदी में भी यही होना चाहिए। हिंदी को अपनी टाँगों पर खड़े होने की कोशिश करनी चाहिए। हिंदी-वैयाकरणों को ध्यान रखना चाहिए कि उनका काम उन नियमों का अन्वेषण करना है, जो हिंदी-भाषा में पाए जाते हैं। उनका संस्कृत या अँगरेज़ी के नियम देखकर उनके अनुकूल हिंदी को चलाना, मानो घोड़े को गाड़ी के पीछे जोतना है। हिंदी भी एक प्रकार से वर्धनशील है। इसका प्रभाव-क्षेत्र दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। नए-नए साहित्य-सेवी उत्पन्न हो रहे हैं। साहित्य का भांडार बढ़ रहा है। वृद्धि के साथ-साथ विभिन्नता भी आ रही है। नए यात्री नए मार्ग ढूँढ़कर निकाल रहे हैं। लकीर के फ़क़ीरों को लकीरों को त्यागना पड़ेगा। जब हिंदी-भाषा समस्त भारत की भाषा बनेगी, तो वह केवल काशी, प्रयाग या व्रज की भाषा न होगी। भिन्न-भिन्न प्रांत अपना-अपना प्रभाव डालेंगे। नए धार्मिक, सामाजिक, नीतिक तथा वैज्ञानिक आंदोलनों के कारण परिवर्तन होगा। इस संघर्षण से निकलकर जो भाषा बनेगी, वह वस्तुतः हिंदी भाषा होगी।

अतः हिंदी-वैयाकरणों को इन सबका ध्यान रखना पड़ेगा। प्रत्येक विभाग के अधिकारों पर दृष्टि रखनी होगी, और प्रत्येक के सुबीते को देखना पड़ेगा।

अब तक हिंदी-व्याकरण संश्लेषणात्मक (Synthetic) रहा है, परंतु वैज्ञानिक रीति चाहती है कि इसको विश्लेषणात्मक (Analytic) किया जाय। पहले अवयवी का ज्ञान होता है, फिर अवयवों का। बच्चा पहले गाय को पहचानता है, फिर गाय के अंगों को। हमको संपूर्ण पर्वत, संपूर्ण नदी, संपूर्ण वृत्त, संपूर्ण चंद्र, संपूर्ण सूर्य का ज्ञान पहले हो जाता है, फिर उनके भिन्न-भिन्न भागों का ज्ञान होता है। बच्चा जानता है कि गुलाब का फूल क्या है, परंतु बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी फूल की एक पंखड़ी के अनेक अवयवों के विषय में बहुत कम जान सके हैं। इस नीति का अवलंबन करने से हमको व्याकरण में वाक्यों से आरंभ करना पड़ेगा, न कि शब्दों से। पाठशालाओं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में शब्दों से आरंभ करने की रीति उलटी है। इससे बच्चों का ध्यान शब्दों के रूपों तक ही सीमित रहता है। वे भावों तक नहीं जा सकते। भाव सूक्ष्म होते हैं। उनके पारस्परिक संबंध और भी सूक्ष्म होते हैं। परंतु ये भाव ही केंद्र हैं, जिनके चारो ओर शब्द घूमा करते हैं। व्याकरण में अब तक शब्दों से आरंभ करने का कारण यह प्रतीत होता है कि लोगों ने भूल से समझ रक्खा था कि बच्चा पहले शब्द सीखता है, यह एक मनोवैज्ञानिक भूल थी। वस्तुतः बच्चा जो टूटे-फूटे शब्द भी उच्चारण करता है, वे भावों के स्थानापन्न होते हैं। उनको शब्द नहीं, किंतु टूटे हुए वाक्य कहना चाहिए। यदि इस बात को दृष्टि में रखकर व्याकरण का विश्लेषण किया जाय, तो ठीक होगा। वस्तुतः व्याकरण शब्द ही बताता है कि वि+आ+करण अर्थात् विश्लेषण से तात्पर्य है, न कि संश्लेषण अर्थात् समीकरण से।

व्याकरण के तीन मुख्य विभाग हैं—रूप-विभाग (Inflectioned), क्रम-विभाग (Syntactical) तथा ऐतिहासिक विभाग (Historical)।

रूप-विभाग में भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में शब्दों के क्या-क्या रूप बदलते हैं, इसका वर्णन है। प्राचीन भाषाओं में एक शब्द के अनेक रूप हुआ करते थे। कारक आदि का भेद रूपांतर से ही ज्ञात हुआ करता था। संस्कृत, अरबी, लैटिन, यहाँ तक कि प्राचीन अँगरेज़ी का भी यही हाल था। परंतु आधुनिक भाषाओं की प्रणाली भिन्न है, अँगरेज़ी में तो कारक-भेद रहा ही नहीं। वहाँ केवल शब्दों के क्रम से ही कारकों के अर्थ का बोध होता है। हिंदी में कारकों की विभक्तियाँ संस्कृत-विभक्तियों के समान शब्दों का अंग नहीं रहीं। ने, को, से आदि, जो विभक्तियों के नाम से प्रसिद्ध हैं, वस्तुतः एक प्रकार के प्रत्यय ही हैं, विभक्तियाँ नहीं। उनको शब्दों से अलग लिखने की प्रथा भी है। केवल श्रीरामदासजी गौड़ आदि कुछ विद्वान् इनको संस्कृत की भाँति शब्दों में मिलाकर लिखते हैं। परंतु मुझे उनकी यह बात न तो न्याय-संगत ही जँचती है, न सर्वप्रिय ही प्रतीत होती है। आधुनिक सब भाषाओं की प्रवृत्ति यह है कि शब्द अपने रूपों को बदला न करें। दूसरे, अनेक अवस्था ऐसी हैं, जिनमें 'ने', 'को' आदि का प्रयोग होता नहीं। 'राम नहीं आया', 'उसने रोटी नहीं खा इन दोनो स्थलों पर कर्तृकारक तथा कर्मकारक है और 'को' चिह्नों का अभाव है।

प्राचीन भाषाओं में रूप-भेद होने के कारण संबंधी नियम बहुत साधारण थे। वस्तुतः क्र आवश्यकता भी न रहती थी। प्रत्येक शब्द अर्थ के अनुसार अर्थ देता था, चाहे उसे पहले रक्खो, बीच में या पीछे। परंतु अब रूपों की विभिन्न कम करने के लिये शब्दों का वाक्यों में स्थान नि हो गया है। हिंदी-भाषा में क्रम पर विशेष ज़ो जाता है। स्थान-भेद से अर्थ-परिवर्तन हो जाता यह प्रवृत्ति एक प्रकार से अच्छी है; क्योंकि शब्द जितना कम विचार हो, उतना ही अच्छा।

ऐतिहासिक विभाग का संबंध शब्दों के लि इनके विकास के इतिहास आदि से है। हिं वर्तमान प्रवृत्ति यह है कि प्राकृत के समय के शब्दों को हटाकर शुद्ध संस्कृत-शब्दों को प्रयो जाय। फ़ारसी के शब्दों के विषय में भी यही बा देव, बिहारी, सूर, तुलसी आदि फ़ारसी के श प्रयोग करते थे, परंतु वे उनको अपना बना लेते आजकल इनको तद्वत् प्रयोग करते हैं। अब न लिखकर 'काग़ज़' लिखते हैं। यह प्रवृत्ति क रहेगी, यह कहना कठिन है। मराठी भाषा में फ़ारसी शब्द आते हैं, परंतु उनका रूप वि गया है, या यों कहना चाहिए कि मराठी ने हज़म कर लिया है। कुछ दिनों में हिंदी भी यह गुण पैदा हो जायगा, परंतु इसके लि नियम बन जायँ, तो अच्छा हो। तुलसी और सू परिस्थिति तो आज है नहीं। आजकल तो संघर्षण है। अतः जब तक यह संघर्षण निवृ धारण नहीं करता, उस समय तक वैयाक भाषा की चाल का ध्यानपूर्वक निरीक्षण होगा।

हिंदी-भाषा में लिंग-भेद बड़ा आपत्तिजनक विषय में अँगरेज़ी अच्छी है। परंतु अँगरेज़ी की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में लिंग-भेद नहीं, किंतु हिंदी की क्रियाओं में लिंग-भेद है। एक बार एक बिहारी महाशय ने बड़ी शिकायत की। वह कहने लगे—"तुम क्रियाओं के लिंग-भेद को दूर कर दो, तो बहुत सुगमता हो जाय।" संस्कृत की क्रिया में लिंग-भेद न था, "वह आवै है", "वह खावै है" आदि रूप शायद इसी बात को दृष्टि में रखकर बनाए गए थे। परंतु इस भेद को दूर कौन करे? वैयाकरण तो कर नहीं सकता। साहित्य-सेवियों की प्रवृत्ति इस ओर नहीं है, अतः यह प्रश्न ऐसा ही रहेगा। सब जीवित भाषाओं में इस प्रकार की कुछ-न-कुछ कठिनाइयाँ हैं और वे हिंदी में भी रहेंगी। जीवित भाषाओं का लक्षण यह है कि मशीन के समान जकड़ी नहीं होतीं। उनमें वर्धन-शीलता होती है। वे सूखे वृक्ष के समान कड़ी नहीं, किंतु हरी डालियों के समान लचकीली होती हैं। उनमें पाचन-शक्ति होती है। उनको कोई पुरुष केवल पुस्तकों या व्याकरण से नहीं सीख सकता, किंतु उस भाषा के बोलनेवालों के व्यवहार से ही वे आ सकती हैं। हिंदी भी उसी प्रकार की भाषा है।

"राष्ट्रपति जवाहर"

[४४वीं कांग्रेस के सभापति श्री पं० जवाहरलाल नेहरू की जीवनी]

छपकर तैयार है! आज ही आर्डर भेजिए!!

देर होने से दूसरे संस्करण तक ठहरना पड़ेगा!!!

नवयुवकों के हृदय-सम्राट् पं० जवाहरलालजी की योग्यता, सत्य-निष्ठा, निर्भयता तथा दृढ़ संकल्प आदि सद्गुणों का वर्णन इस पुस्तक में बड़ी ख़ूबी से किया गया है। आप पढ़कर ज़रूर प्रसन्न होंगे। प्रत्येक भारतवासी को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए! पृष्ठ-संख्या १३६, ऐंटिक बढ़िया काग़ज़। छपाई सुंदर, ३ मनोहर चित्र, मूल्य केवल ॥=), सजिल्द १=)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्योतिर्मयी

[पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"]

(१)

नती रहें न ?—इसलिये कि आप लोगों ने, आपके बनाए हुए शास्त्रों ने, जो हमारे प्रतिकूल हैं, ज़बरन हमें ग़ुलाम बना रक्खा है; कोई चारा भी नहीं—कैसी बे-लगाम बात !" कमल की पंखड़ियों-सी बड़ी-बड़ी उज्ज्वल आँखों से देखती हुई, एक सत्रह साल की, रूप की चंद्रिका, भरी हुई युवती ने कहा।

"नहीं, इसलिये कि पतिव्रता पत्नी तमाम जीवन तपस्या करने के पश्चात् परलोक में अपने पति से मिलती है।" सहज स्वरों में कहकर युवक निरीक्षक की दृष्टि से युवती की जाँच करने लगा।

युवती मुसकिराई—तमाम चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ गई। गुलाब के दलों-से सुकुमार लाल होंठ ज़रा-ज़रा बढ़े, उस मर्मरोज्ज्वल मुख पर प्रसन्न-कौतुक-पूर्ण एक ज्योति-चक्र छोड़ यथास्थान आ गए।

"बचने का दरिद्रता ?" मुसकिराती हुई "अच्छा बतलाइए तो, अगर पहली ब्याही हुई स्त्री मरकर इसी तरह स्वर्ग में अपने पूज्यपाद पति-देवता के लिये प्रतीक्षा करती रहे, और उसके पतिदेव क्रमशः दूसरी, तीसरी, चौथी पत्नी को मार-मारकर प्रतीक्षार्थ स्वर्ग भेजते रहें, तो ख़ुद मरकर किसके-किसके पास पहुँचेंगे ?" युवती खिलखिला दी।

युवक का चेहरा उतर गया।

"आपने इस साल एम्० ए० पास किया है, और अँगरेज़ी में ? वहाँ पतिव्रता स्त्रियों की जीवनियाँ शायद पत्नीव्रत पुरुषों की जीवनियों से आपने ज़्यादा याद कीं—क्यों ?" युवती ने दून की ली।

युवक अपने बड़े भाई की ससुराल गया था। युवती उसकी विधवा छोटी साली थी।

"आप क्या पढ़ी हैं ?" युवक ने पूछा।

"सिर्फ़ हिंदी और थोड़ी-सी संस्कृत" डब्बे को [illegible] दीक सरकाकर युवती पान लगाने लगी।

"मैं इतना ही कहूँगा कि आपके विचार समाज [illegible] तिनके के लिये आग हैं।" युवक ने ताज्जुब की निगाह से देखते हुए कहा।

"लेकिन मेरे भी उर के मोम के पुतले को गला [illegible] बहा देने, मुझसे जुदा कर देने के लिये समाज आया साथ ही यह भी कहिए", उँगली चूनदानी में, बड़ी-बड़ी आँखों की तेज़ निगाह युवक की तरफ़ फेरकर युवती कहा—"मैं १२ साल की थी, ससुराल भी नहीं [illegible] जानती नहीं पति कैसे थे, और विधवा हो गई !" बूँद आँसू कपोलों से बहकर युवती की बाईं जाँघ पर पड़े। आँचल से आँखें पोंछ वह पान लगाने लगी।

"तंबाकू खाते हैं आप ?" आँख उठाकर युवती ने पूछा।

"नहीं।" युवक के दिल में सन्नाटा था। इतनी [illegible] इतने आश्चर्य की, इतनी ख़तरनाक बात आज [illegible] किसी विधवा युवती की ज़बान से उसने नहीं सुनी थी। वह जानता था, यह सब अख़बारों का आंदोलन है। इस तरह की कल्पना भी उसने कभी नहीं की कारण, वह कान्यकुब्जों के एक श्रेष्ठ कुल का बालक था। युवती की बातों से वह घबरा गया।

"लीजिए।" युवती ने कई बीड़े दिए।

"आप बुरा मत मानिएगा, मैं आपको टटोल [illegible] थी कि आप कितने दर्दमंद हैं।" युवती ने साधारण आवाज़ में कहा।

युवक ने पान ले लिए, पर लिए ही बैठा रहा। "खाइए" युवती ने कहा—"आपसे एक बात पूछूँ ?"

"पूछिए।"

"अगर आपसे कोई विधवा-विवाह करने के लिए कहे ?" युवती मुसकिराई।

"मैं नहीं जानता, यह तो पिताजी के हाथ की [illegible] है।" युवक शरमा गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"अगर पिताजी की जगह आप ही अपने आममुख्तार होते ?"

युवक संकुचित हो गया। हिम्मत बाँधकर कहा—"मुझे विधवा-विवाह करते हुए शरम मालूम होती है।"

युवती मनोभावों को दबाकर छलछलाई आँखों से रह गई। एक बार उसी तरह युवक को देखा, फिर सिर झुका लिया।

दूसरे दिन युवक घर चलने लगा। मकान की बड़ी-जेठी स्त्रियों के पैर छुए। आँखें इधर-उधर युवती की तलाश कर रही थीं। वह नहीं मिली। युवक दोमंज़िले से नीचे उतरा। देखा, दरवाज़े के पास खड़ी हुई वह उसकी राह देख रही है। युवक ने कहा—"आज्ञा दीजिए, अब जा रहा हूँ।" हाथ जोड़कर युवती ने प्रणाम किया। एक पत्र युवक को देते हुए कहा—"फिर जल्द दर्शन दीजिएगा।" युवक के हृदय में एक अज्ञात प्रसन्नता की लहर उठी। उसने देखा, पलकों के नील पंखों से उसकी आँखों की परियाँ अनंत आकाश की ओर उड़ जाना चाहती हैं, जहाँ स्नेह के स्वर्ण-वसंत में मदन और रति का नित्य संयोग है, जहाँ किसी प्रकाश की निष्ठुर शृंखला नवीनोन्मेष को जकड़कर पदानत नहीं कर रखती, जहाँ प्रेम ही आँखों में मनोहर चित्र, कंठ में मधुर संगीत, हृदय में सत्यनिष्ठ भावना और अंगों में रूप की ढकी आग है।

"ज्योती !" युवक ने स्नेह के मधुर कंठ से, सहानुभूति की ध्वनि में, कहा।

निस्संकोच युवती कुछ क़दम आगे बढ़ गई। युवक के बिलकुल नज़दीक, एक तरह सटकर, खड़ी हो गई। सिर युवक की ठोढ़ी के पास, आँखें आँखों में मिली हुई। उसके वस्त्र के स्पर्श से युवक की शिराओं में एक ऐसी तरंग बहने लगी, जिसका अनुभव आज तक उसे नहीं हुआ था। तमाम अंगों से आनंद के परमाणु निकलने लगे। आँखों में नशा छा गया।

"अच्छा फिर कहूँगा।" युवक चल दिया। "याद रखिएगा—आपसे इतनी ही प्रार्थना".....युवक दृष्टि से बाहर हो गया।

(२)

"पत्थर भी पिघलकर बह जाता है उस पत्र को पढ़ने से वीरेन" विजय ने सहानुभूति के शब्दों में कहा।

"तुम दिल के इतने कमज़ोर हो ?—एक नष्ट होते हुए समाज-क्लिष्ट जीवन का तुम उद्धार नहीं कर सकते विजय ? तुम्हारी शिक्षा क्या तुम्हें पुरानी राह का सीधा-सादा लद्दू बैल करने के लिये हुई है ?" वीरेंद्र ने चिंता-युक्त भर्त्सना के शब्दों में कहा।

"पिताजी से कुछ वश नहीं, मैं उनके प्रतिकूल आचरण नहीं कर सकूँगा। पर मैं आजीवन—आजीवन सोचूँगा, दुर्बल समाज के दरिया में बहते हुए एक निष्पाप पुरुष का उद्धार मैं नहीं कर सका और इसलिये कि उसने मुझे तैरना नहीं सिखलाया।"

"तुम्हें एक दूसरे समाज की शिक्षा से तैरना मालूम हो चुका है।"

"हो चुका है, पर तैरते ही रहना, फिर किनारे पर लगना नहीं; सब घाट समाज द्वारा अधिकृत हैं और केवल तैरते रहना मनुष्य के लिये असंभव है।"

"तुम कूल पर आ सकते हो।"

"पर उस फूल को लेकर समाज के किसी घाट पर नहीं जा सकता। वह कूल इतना बीहड़ है कि मेरे थके हुए पैर वहाँ जमेंगे नहीं। वहाँ दृष्टियों का ताप इतना प्रखर है कि फूल मुरझा जायगा, मैं झुलस जाऊँगा।"

"तो सारांश यह कि तुम उस पावन-मूर्ति अबला का, जिसने बढ़कर तुम्हें प्यार किया—मित्र समझ हृदय की गुप्त व्यथा प्रकट कर दी, उस देवी का समाज के पंक से उद्धार नहीं कर सकते ?"

"मेरा हृदय उसने छीन लिया है, पर शरीर पिताजी का दिया हुआ है वीरेन, मैं यहाँ दुर्बल हूँ।"

"कैसी वाहियात बात ! कितनी बड़ी आत्म-वंचना ! विजय, हृदय क्या शरीर से अलग है ? जिसने तुम पर विजय प्राप्त कर ली, अब उसका तिरस्कार करना जानते हो किसका अपमान करना है ?—परोक्ष अपना। समाज का धर्म क्या उसके लिये नहीं था ?—फूटे हुए बरतन की तरह क्या वह भी एक तरफ़ निकालकर न रख दी जाती ? क्या उसने यह सब नहीं सोचा ?"

"उसमें और-और तरह की भावनाएँ होंगी।"

"क्या ? और-और तरह की भावनाएँ होतीं, तो वह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारे भाई की ससुरालवालों के सगर्व मुखों पर अच्छी तरह स्याही पोतकर अब तक कहीं चली गई होती, समझे ? वह समझदार है। और, तुम्हारे सामने जो इतना खुली है, इसका कारण काम नहीं, यथार्थ ही उसने तुम्हें प्यार किया है विजय। अच्छा, उसका पता क्या है ?"

वीरेंद्र ने अपना नोटबुक निकालकर पता लिख लिया। फिर विजय से कहा—"तुम मेरे मित्र हो, वह मेरे मित्र की प्रेयसी।"

दोनो एक दूसरे की ओर देखकर हँसने लगे।

(३)

इस घटना को कई महीने बीत चुके। अब भाई की ससुराल जाने की कल्पना से ही विजय का कलेजा काँप उठता, संकोच की सर्दी से तमाम अंग जकड़ जाते, उसे संकल्प से निरस्त हो जाना पड़ता है। वीरेंद्र उसकी यह हालत देख-देख मन-ही-मन कुढ़ा करता, पर तब से फिर उसने किसी प्रकार की स्वतंत्र इच्छा का दबाव उस पर नहीं डाला। विजय इलाहाबाद-युनिवर्सिटी में रिसर्च-स्कॉलर है। वीरेंद्र बी० ए० पास कर लेने के पश्चात् वहीं अपना कारोबार देखता रहता है। वह इटावे के प्रसिद्ध रईस नागरमल-भीखमदास-फ़र्म के मालिक मसाराम अग्रवाल का इकलौता लड़का है।

महीने के लगभग हुआ, वीरेंद्र इटावे चला गया है। चलते समय विजय से बिदा होकर गया था।

इधर तीन-चार दिन हुए, घर से पत्र द्वारा विजय को बुलावा आया है। ज़िला उन्नाव, मौज़ा बीघापुर विजय की जन्म-भूमि है।

विजय के पिता साधारण स्थिति के मनुष्य हैं। माँझगाँव के मिश्र, कुलीन कान्यकुब्ज हैं। विजय का विवाह अधिक दहेज़ के लोभ से उन्होंने रोक रक्खा था। अब तक जितने संबंध आए हुए थे, तीन हज़ार से अधिक नहीं दे रहे थे। अबके एक संबंध आया हुआ है, जिसकी तरफ़ विजय के पिता का विशेष रूप से झुकाव है। ये लोग मुरादाबाद के रहनेवाले हैं। १५ दिन पहले विजय की जन्म-पत्रिका ले गए थे। विवाह बनता है, इसलिये दोबारा पक्का करने के लिये कन्या-पक्ष से कोई आया हुआ है। विजय के पिता चचा आपस में मकान के भीतर सलाह करते हैं।

"दादा, लेकिन एक पै है, ये सनाढ्य ब्राह्मण ऐसा न हो कि फिर कहीं के न रहें।"

"तुम भी ; मारो गोली ; हमको रुपए से मतलब हमारे पास रुपया है, तो जात-बिरादर भाई-बंद साले आवेंगे ; नहीं तो कोई लोटे-भर पानी को न पूछेगा।"

"तो क्या राय है ?"

"विवाह करो, और क्या ?"

"सात हज़ार से आगे नहीं बढ़ता।"

"घर घेरे बैठा है, देखते नहीं ? धीरे-धीरे गु लेकिन शिकार निकल न जाय।"

"अब फसा है, तो क्या निकलेगा।"

"डर कौन—बारात में घर के चार आ चलेंगे। कहेंगे दूर है, ख़र्चा नहीं मिला।"

"वही ख़र्चा यहाँ करके खिला दिया जा क्यों ?"

"और क्या ?"

"बस यही ठीक है।"

विजय के पिता पं० गंगाधर मिश्र और पं० कृष्णशंकर रक्त चंदन का टीका लगाए, रु माला पहने हुए, खड़ाऊँ खटपटाते दरवाज़े-चौ नेवाड़ के पलँग पर, धीर-गंभीर मुद्रा से, बि हुए आकर बैठ गए। एक मूँज की चारपाई पर पक्ष के पं० सत्यनारायण शर्मा मिर्ज़ई पहने, बाँधे बैठे हुए थे। मिश्रजी को देखकर पूछा क्या आज्ञा है मिश्रजी ?"

पंडित गंगाधर ने पं० कृष्णशंकर की ओर करके कहा—"बातचीत इनसे पक्की कीजिए। मालिक यही हैं।"

पं० सत्यनारायणजी ने पं० कृष्णशंकर देखा।

"बात यह है पंडितजी कि दहेज़ बहुत रहा है। आप साचें कि अब तक सात-आ रुपया लड़के की पढ़ाई में लग चुका है। के बाजपेयी आए थे, हमारा उनका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छः हज़ार देते थे, पर हमने इनकार कर दिया। अब हमको ख़र्च भी नहीं मिला, तो लड़के को पढ़ाकर हमने फ़ायदा क्या उठाया? इस संबंध में (इधर-उधर झाँककर) हमें कुछ मिला भी नहीं, तो इतना गिरकर।"

"अच्छा कहिए, क्या चाहते हैं आप?"

"पंद्रह हज़ार।"

"तब तो हमारे यहाँ बरतन भी नहीं रह जायँगे।"

"अच्छा, अब आप ही कहिए।"

"नौ हज़ार लीजिए।"

"अच्छा, बारह हज़ार में पक्का।"

पं० सत्यनारायण अपनी अधारी सँभालने लगे।

"ग्यारह हज़ार देते हैं आप? पं० कृष्णशंकर ने उभड़कर पूछा।"

"दस हज़ार सही, बताइए।"

"अच्छा पक्का; मगर पाँच हज़ार पेशगी।"

पं० सत्यनारायण ने काग़ज़, स्टांप और हज़ार-हज़ार के पाँच नोट निकालकर कहा—"लीजिए, आप दोनो इसमें दस्तख़त कीजिए। पहले लिखिए कि पं० सत्यनारायण, मुरादाबाद, की कन्या से श्रीयुत विजयकुमार मिश्र एम्० ए० के विवाह के संबंध में, जो दस हज़ार में मैं गवहीं और गौने के ख़र्च के पक्का हुआ है, कन्या के पिता से पाँच हज़ार पेशगी नक़द वसूल पाया। स्टांप पर वल्दियत के साथ दस्तख़त कीजिए।"

पंडित गंगाधर गद्गद हो गए। लिखा-पढ़ी हो गई। विवाह का दिन स्थिर हो गया।

तिलक चढ़ गया। तिलक के पहले समय तक विजय को ज्योतिर्मयी की याद आती रही। पर नवीन विवाह के प्रसंग से मन बट गया। फिर धीरे-धीरे, जैसा हुआ करता है, वह स्मृति भी चित्त की अतलता का स्पर्श करने चली, जो स्वयं ही बढ़कर अपना सर्वस्व दे देने चली थी। अब विजय को उसके चरित्र पर कभी-कभी शंका होने लगी है। सोचने लगा, बुरा फस गया था, बच गया। सच कहा है, "स्त्रीचरित्रं पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः।"

अब नई-नई कल्पनाओं की समीर उसके मस्तिष्क में बहने लगी है। एक अज्ञात, अपरिचित मुख को जैसे कल्पना के बल से वह प्रत्यक्ष कर लेना चाहता है, और इस चेष्टा में कितना सुख! इतना कभी उसे नहीं मिला। इस अज्ञात रहस्य में वह ज्योतिर्मयी की अम्लान कांति को एक प्रकार भूल ही गया।

(४)

विजय ने विवाह के उत्सव में सम्मिलित होने के लिये वीरेंद्र को लिखा था, पर उसने उत्तर दिया—"मैं विजय का मित्र हूँ, किसी पराजय का नहीं; इस विवाह में मैं शरीक नहीं हो सकूँगा।"

जैसा पहले से निश्चय था, जल्दबाज़ी का बहाना कर पं० गंगाधर ने पास-पड़ोस के आदमियों को छोड़ और किसी को बुलाया भी नहीं था। यही कारण है कि ज्योतिर्मयी के यहाँ, विजय के बड़े भाई की ससुराल निमंत्रण नहीं पहुँच सका। इधर भी जहाँ कहीं न्योता गया, वहाँ से कुछ ही लोग आए। कारण, संदेह की हवा दूर-दूर तक बह चुकी थी।

बारात चली। लखनऊ में वीरेंद्र से विजय की मुलाक़ात हुई। वीरेंद्र ने पूछा—"यार, तुम तो ज्योतिर्मयी को भूल ही गए। इतना जल्द गल गए इस विवाह में?"

"बात यह है कि इस तरह की स्त्रियाँ समाज के काम की नहीं होतीं।"

"अरे, तुमने तो स्वर भी बदल दिया!"

"क्या किया जाय?"

"और जहाँ विवाह करने जा रहे हो, यही बड़ी सती-सावित्री निकलेगी, इसका क्या प्रमाण?"

"क्वाँरी और विधवा में फ़र्क़ है भाई?"

"यह मानता हूँ।"

"कुछ संस्कृति का भी ख़याल रखना चाहिए। संस्कृति से ही संतति अच्छी होती है।"

"अरे, तुम तो पूरे पंडित हो गए!"

"अपने कुल का सबको ख़याल रहता है—केतहु काल कराल परै पै मराल न ताकहिं तुच्छ तलैया।"

"यह बात!"

"जी हाँ।"

"तब तो यार, जी चाहता है, तुम्हारे साथ मैं भी चलूँ।"

"चलो, मैंने तो तुम्हें लिखा भी था, पर तुम दुनिया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की वास्तविकता का विचार तो करते नहीं। विचारों की दीवारें उठाया-गिराया करते हो।"

"अच्छा भई, अब ज़रा वास्तविकता का आनंद भी ले लें। कहो, कितने गिनाए?"

"दस हज़ार।"

"दस हज़ार! उसके मकान में लोटा तो मज़बूत न छोड़ा होगा?"

"कान्यकुब्ज-कुलीन हैं या दिल्लगी?"

"वे कोई मामूली कान्यकुब्ज होंगे?"

"बहुत मामूली नहीं, १७ बिस्वे मर्याद है।"

"हूँ।" वीरेंद्र सोचने लगा। "तुमसे घृणा हो गई है। जाओ, अब नहीं जाऊँगा। तुम इतने नीच हो।"

वीरेंद्र शहर की ओर चला गया। बारात मुरादाबाद चली।

(५)

विवाह हो गया। पं० सत्यनारायण शर्मा ने वर-यात्रियों का हृदय से स्वागत-सम्मान किया। खोरे में पाँच हज़ार नक़द दिए और कन्या को पाँच हज़ार का ज़ेवर ऊपर से बनवा दिया। विजय को सोने की चेन, जेब-घड़ी, रिस्टवाच, साइकिल, अँगूठी और कुछ सामान देकर प्रसन्न कर दिया।

बड़ा-छोटा "बड़हार" हो गया। चतुर्थी के बाद कन्या के साथ बारात बिदा हो गई।

वर-कन्या के लिये पं० सत्यनारायणजी ने एक सेकंड क्लास कंपार्टमेंट पहले ही से रिज़र्व्ड करा रक्खा था। और लोगों के लिये इंटर क्लास अलग।

पं० सत्यनारायण हाथ जोड़कर पं० गंगाधर और कृष्णशंकर आदि से बिदा हुए। कन्या से कहा—"बेटी, वहाँ पहुँचकर अपने समाचार जल्द देना।" गाड़ी छूट गई।

प्रणय के चुंबन से चित्त चंचल हो उठा। अब तक जिस अदेख मुख पर विजय ने असंख्यों कल्पनाएँ की थीं, उसे देखने का यह कितना शुभ-सुंदर अवसर मिला। उसने पिता को, ससुर को, समाज को आनंद से हुए, छलकते-उछलते-मचलते हुए हृदय से धन्यवाद दिया। युवती नई बहू का घूँघट उठा के देखने की उसकी चकोर-लालसा प्रबल हो डाकगाड़ी पूरी रफ़्तार से चली जा रही थी।

विजय उठकर बहू के पास जाकर बैठ गया। काँप उठा। घूँघट हटाने के लिये हाथ उठाया। काँप गया। उस कंपन में कितना आनंद!—रोम के भीतर से आनंद-मंदाकिनी बह चली।

विजय ने बहू का घूँघट उठा दिया। विजय हो होकर चीख़ उठा!—ऐं—तुम?

"हाय-हाय! यही विवाह का सुख है!" ज्योतिर्मयी के रोम-रोम से घृणा का ज़हर मध्याह्न की ज्वाला तरह निकल रहा था। "छिः! मैंने क्या किया! वही विजय—वही सुंदर शांत विजय है? ओह-कितना परिवर्तन! इस कीड़े के साथ अब मुझे अपनी की तरह सिकुड़कर घर के एक कोने में संपूर्ण जीवन पार करना होगा। मेरा वैधव्य इससे कितना अच्छा था। कितनी मधुर कल्पनाओं में पल रही थी वीरेंद्र!— तुम्हारे-जैसा सिंह-पुरुष ऐसे स्यार का साथ करता है? तुमने इधर डेढ़ महीने से मेरे लिये कितना दुःख, कितना कष्ट, मुझे और अपने इस अधम को सुखी करने के लिये स्वीकार किया! १८ ख़र्च किए! तुम्हारे मैनेजर—सत्यनारायण—ने कल्पित पिता! वह देवताओं का निर्मल परिवार है! ज्योतिर्मयी मन-ही-मन और कितना, न-जाने क्या, सोच रही थी।

विजय ने पूछा—"तुम वहाँ कैसे गईं?"

"वीरेंद्र से पूछना।" नफ़रत से ज्योतिर्मयी ने कहा।

(६)

ज्योतिर्मयी मिश्र-ख़ानदान में मिल गई है। पर वीरेंद्र फिर विजय से नहीं मिला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आगमन

(राग हिंडोल)

[पं० पद्मकांत मालवीय]

नाच उठता है क्यों मन-मोर ?
आ रहे क्या मेरे चित-चोर ?
खेलती मेघावलियाँ देख,
मत्त हो उठते प्रेमी मोर ;
लुटातीं वे संचित निधि सभी,
लजीले लोचन तोर-मरोर।
मचाता है यह अतिशय शोर ;
आ रहे क्या मेरे चित-चोर ?

जभी प्रतिबिंबित होते चंद्र,
देखता अपलक नयन उघार ;
चंद्र भी होकर अति गति-हीन,
सुधा की बरसाते हैं धार।
तृप्त हो जाता दीन चकोर ;
आ रहे क्या मेरे चित-चोर ?
लिए उर में बहु कोमल घाव,
फिरा करता हूँ मैं चुपचाप ;
खोज हारा पर मिले न कहीं,
न-जाने किसका कैसा शाप ?
रहा यों मुझे आज झकझोर ;
आ रहे क्या मेरे चित-चोर ?

हृदय में उठतीं लोल हिलोर,
उमड़ता आता सिंधु अथाह ;
खुले जाते हैं अब दृग-द्वार,
नहीं रुकता है आज प्रवाह।
ठहर ! होता ही है अब भोर ;
आ रहे क्या मेरे चित-चोर ?

"अप्सरा"

छप रही है ! छप रही है !!

हिंदी के रंग-मंच की शृंगारमयी अभिनेत्री

रोमांटिक उपन्यास

"निराला"जी की लेखनी का चमत्कार ! हिंदी के उपन्यास-संसार में शानदार रचना। ऐसा आनंद कि पढ़कर मंत्र-मुग्ध रह जाइएगा। भाषा, भाव, शैली और कल्पना का इंद्रजाल ! ऐसा कि अभी इसी में मिल सकता है। आला काग़ज़, बढ़िया छपाई। मूल्य लगभग १), शानदार जिल्द १॥)

व्यवस्थापक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रूस और मंचूरिया

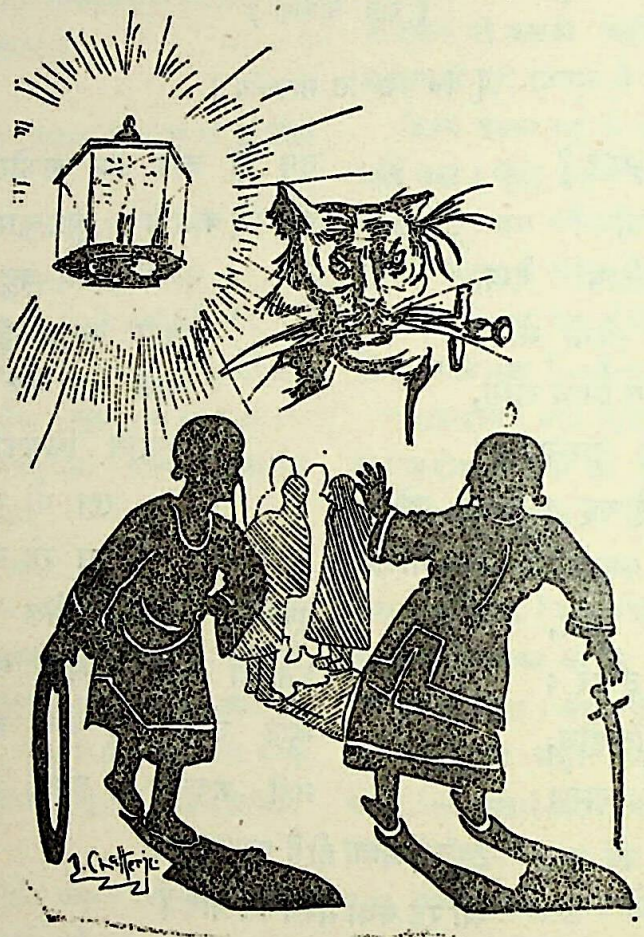

उत्सर्ग

(मौलिक नाटक)

छप गया ! प्रकाशित हो गया !! हाथोंहाथ बिक रहा है !!!

शीघ्र ख़रीदिए, वर्ना पीछे पछताना होगा !

यदि आपको पं० चतुरसेनजी शास्त्री की लेखनी का चमत्कार देखना हो, तो इस छोटे से ऐतिहासिक नाटक को पढ़िए। इस पुस्तक में चित्तौर के राजा जयमल और उनकी रानी की वीरता का वर्णन बड़े ही ओजस्वी शब्दों में किया गया है। राजपूतों की रमणियों और वीर बालकों की वीरता का वर्णन पढ़ने से कायरों की भी भुजाएँ फड़कने लगती हैं। देश-रक्षा के कार्य में कहाँ तक और कितना आत्मसमर्पण राजपूताना की वीरांगनाओं ने किया है, यह बात इस पुस्तक के पढ़ने से भली भाँति जानी जा सकती है। यह नाटक स्टेज पर भी सफलता-पूर्वक खेला जा सकता है। मूल्य सादी प्रति ।=), सजिल्द ।॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २३-२५, लाटूशरोड, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वराज्य-आंदोलन और मुसलमान

[मुंशी ज़हूरबख़्श हिंदी-कोविद]

जब हम किसी मित्र को यह कहते हुए सुनते हैं कि मतांधता ही इस देश के मुसलमानों की स्वदेश-प्रीति है—मतांधता ही उनकी राजनीति है, तब वास्तव में हमें बड़ा खेद होता है, क्षोभ से हमारी आत्मा आकुल हो उठती है, और हमारा ध्यान अरब की उस अज्ञात बालुका-राशि से जा टकराता है, जिसने लगभग पंद्रह सौ वर्ष पूर्व मुस्लिम स्वदेश-प्रीति और राजनीति का गंभीरतम उद्घोष सुना था। मुस्लिम मत की नींव साम्यवाद के आधार पर स्थिर की गई थी। उसकी दृष्टि में मनुष्य-मात्र का पद बराबर था। धनिक-से-धनिक और दरिद्र-से-दरिद्र व्यक्ति के धार्मिक अधिकारों में कोई विभेद नहीं था। इसी सिद्धांत के कारण मुस्लिम मत फला, फूला और फैला। उसने जहाँ की यात्रा की, वहीं के लोगों ने हृदय खोलकर उसका स्वागत किया। मुस्लिम-मतानुयायियों की संख्या में दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति होने लगी। इसके साथ ही साम्राज्य-वृद्धि की जैसे आँधी आ गई। इस्लाम-मत के उस महान् प्रवर्तक का हृदय आशंका से डगमगाने लगा कि कहीं इस्लाम के ये उठते हुए पौदे साम्राज्य-लोलुपता की कँटीली झाड़ियों में न फस जायँ। उसने नियम बना दिया कि केवल ख़ुदा ही सबका बादशाह है; सब देशों का स्वामी है। किसी व्यक्ति-विशेष को यह अधिकार नहीं कि वह देश पर शासन करे, उसमें बसनेवाले लोगों को अपनी आज्ञा पर चलने के लिये बाध्य करे। राज्य का समुचित प्रबंध करने के लिये वे स्वयं अपना प्रतिनिधि चुनेंगे, और वह प्रतिनिधि लोक-मत के सामने उत्तरदायी रहेगा, इसी पवित्र राजनीति के सिद्धांत पर हज़रत महम्मद साहब के पश्चात् ख़िलाफ़त की प्रणाली स्थिर की गई थी।

परंतु इस्लाम के ये दोनो पवित्र उद्देश्य आज भारत के मुसलमानों में 'मतांधता' के रूप में प्रस्फुटित हुए हैं। कारण स्पष्ट है। स्वभाव की दुर्बलता के सामने मनुष्य को पराजित होना ही पड़ता है। ज्यों-ज्यों मुस्लिम-साम्राज्य की वृद्धि हुई, त्यों-त्यों मुसलमानों की लोभ-वृत्ति उन्नत होती गई, साम्यवाद के सिद्धांत में शिथिलता आ गई और प्रजा-तंत्र का सिद्धांत तो एकबारगी विनष्ट हो गया, उसकी शव-समाधि पर शुद्ध राजतंत्र का भवन खड़ा किया गया। ख़ुदा के स्थान पर मनुष्य ही मनुष्य का भाग्य-विधाता बन बैठा। इस्लाम के उज्ज्वल सिद्धांतों की यह कैसी हृदय-हीन हत्या थी। कहने को इस्लाम-मत का बहुत प्रचार अवश्य हो गया, इस्लाम साम्राज्य-वृद्धि की सीमा पर अवश्य पहुँच गया; पर वास्तव में हुआ उसका पतन ही! विजय के रूप में ऐसी पराजय, इतिहास में कदाचित् ही दिखाई देगी।

वास्तविक इस्लाम की हत्या करने के पश्चात् उसके थोथे हिमायतियों की दृष्टि भारत के देदीप्यमान् वैभव पर पड़ी, और उसने उन्हें खींच लिया। एक बार वे कोमल सिद्धांत यहाँ पुनः कुचले गए, मनुष्य ने मनुष्य का रक्त बहाया। इसके पश्चात्? इसके पश्चात् उस रक्त पर सिंहासन रक्खा गया, मुसलमान मुसकिराता हुआ बड़े अभिमान से उस पर बैठा भारत का भाग्य-विधाता बनकर। यहाँ की प्रजा ने उसे अपना भाग्य-विधाता नहीं चुना था। परंतु एक बात अच्छी हुई, वह यहीं रह गया। उसने यहीं रहकर, यहाँ की धन-राशि यहीं रहनेवालों को बाँट दी। यहाँ की उन्नति को ही उसने अपनी उन्नति समझा। यहाँ बस जाने के पश्चात् भी वह अरब या टरकी को अपना देश समझता रहा या नहीं, इस विषय में इतिहास चुप है, बल्कि बतलाता यह है कि इस देश की रक्षा करने में—उन्नति करने में उसने किसी प्रयत्न को बाक़ी नहीं छोड़ा, और उसके उत्तराधिकारियों—सिराज, मीरक़ासिम, हैदरटीपू आदि—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ने इस देश की स्वतंत्रता सुरक्षित रखने के हेतु अपने अस्तित्व तक को नष्ट कर दिया। आह! आज उन महान् आत्माओं की संतान ने उनके उद्देश्य को पैरों-तले कुचल दिया है। मतांधता में ही उसकी राजनीति, स्वदेश-प्रीति और स्वतंत्रता रह गई है। भारत के वर्तमान स्वातंत्र्य आंदोलन में उसने कोई महत्त्व-पूर्ण भाग नहीं लिया, यह उसके लिये बड़े कलंक का विषय है।

मुसलमान इस देश के बादशाह थे। इस देश की स्वतंत्रता ही उनकी शासन-नीति का ध्येय था। परंतु आश्चर्य का विषय है कि ज्यों ही उनके हाथ से भारत का शासन-सूत्र छीन लिया गया, ज्यों ही अँगरेज़ इस देश के स्वामी हुए, त्यों ही मुसलमानों का रूप बदल गया। न उनमें वह तेज रहा, न वह वीर्य। उलटे वे विजेताओं के दास बन गए। उनसे मिलकर रहने में ही उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा समझी। इसके साथ ही उनमें एक नई मनोवृत्ति की लहर उत्पन्न हुई। वे अरब और टर्की को अपनी मातृभूमि समझने और उन्हीं के तराने गाने में अपना गौरव समझने लगे। जिन हिंदुओं के साथ वे सदियों घुल-मिलकर रह चुके थे, उन्हीं से अब उन्हें घृणा हो गई। वास्तव में यह मुसलमानों की अत्यंत भीषण नीतिक पराजय थी—देश हाथ से निकल जानेवाली पराजय से भी कहीं अधिक भयंकर। अंतस्तल के कोने-कोने में प्रविष्ट हुई इस पराजय-भावना से अब तक मुसलमानों का उद्धार नहीं हुआ।

कहते हैं, सन् ५७ का तूफ़ान भारत के उद्धार के लिये था, और हिंदू-मुसलमानों का सम्मिलित प्रयत्न था। हम मानते हैं, उन दिनों मुसलमान भी हिंदुओं के साथ थे। परंतु क्या भारतोद्धार के लिये? हृदय विश्वास नहीं करता। मुसलमानों में एक भी लक्ष्मीबाई, धुंधुपंत, तात्याटोवे या जगदीशसिंह के दर्शन नहीं होते। उच्च श्रेणी के श्रीमंत मुसलमानों ने उस आयोजन में योग नहीं दिया। केवल साधारण स्थिति के लोग उस विग्रह में सम्मिलित हुए थे, और वे भी इस विचार से कि कारतूसों में सुअर की चर्बी न लगाई जाय या बहती गंगा है, हाथ क्यों न धोलें, लूटा-मारी में कुछ मिल ही जायगा।

यद्यपि सन् ५७ के विद्रोह का शमन करने में सरकार समर्थ अवश्य हुई, पर भारत के अंतस्तल में स्वाधीनता की जो भावना जाग्रत् हो गई थी, उसे वह वशीभूत नहीं कर सकी। कुछ दिनों के पश्चात् भारतीय महासभा की स्थापना हुई, और उसके द्वारा भारत की इच्छाओं का अत्यंत धुँधला चित्र सरकार के सम्मुख उपस्थित किया जाने लगा। उन दिनों कांग्रेस एक मृत संस्था के सदृश थी। तीन सौ बासठ दिन सन्नाटा छाया रहता था। केवल तीन दिन कांग्रेस होता था, और वह भी बड़ी शांति के साथ। तुच्छ से-तुच्छ माँग के लिये भी भारतवासी ब्रिटिश-सरकार के सम्मुख गिड़गिड़ाते थे। यद्यपि यह आंदोलन अत्यंत वैध और शांत था, फिर भी मुस्लिम जनमत उसके साथ सहानुभूति तक प्रदर्शित नहीं कर सका। इतना ही नहीं, उसने संसार को यह दिखलाने के लिये कि इस आंदोलन से हमें कोई सहानुभूति नहीं, मुस्लिम-लीग की स्थापना की, और अप्रत्यक्ष-रूप से इस बात की घोषणा कर दी कि हम फूट और विद्वेष के अनन्य पुजारी हैं; जिस भेद-नीति पर सरकार के शासन का चक्र घूमता है, हम उसके समर्थक हैं; मुस्लिम-लीग के द्वारा विजेताओं से थोड़ी-सी सुविधाएँ प्राप्त कर लेने से ही हमारी आत्मा तृप्त हो जायगी। यद्यपि कांग्रेस के उस समय के सभापतियों की सूची में हमें दो-एक नाम मुसलमान सज्जनों के भी दिखाई देते हैं; पर यह कहने में हमें कोई संकोच नहीं कि भारत के मुस्लिम-संसार पर उनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा, और न उनका उज्ज्वल व्यक्तित्व उसकी देश-विमुख नीति पर ही गौरव का आवरण डाल सकता है।

मुसलमानों ने इस देश के राष्ट्र-वादियों का साथ सरकार से मिलकर ही कंटकाकीर्ण नहीं किया, प्रत्यक्ष रूप से भी कभी-कभी उनका विरोध करने तत्पर दिखाई दिए हैं। वंग-भंग के समय तो उन्होंने खुलकर अपनी इस प्रवृत्ति का परिचय दिया था। जब संपूर्ण देश में वंग-भंग के प्रश्न को लेकर विरोध की लहरें परिव्याप्त हो रही थीं, स्वदेशी का आंदोलन उग्र रूप धारण कर रहा था, तब देश में अपने आपको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का हृदय कुचलनेवाले एवं सरकार की पीठ ठोंकनेवाले मुसलमान प्रचुरता से दिखाई दिए थे। और, जब सम्राट् ने दोनो बंगाल एकत्र कर भारतीयों के आहत हृदय पर शीतल जल के कण बिखेर दिए थे, तब भी बंगाल में ऐसे मुसलमानों का अभाव नहीं था, जिन्हें सम्राट् की कृपा से आनंद प्राप्त हुआ हो।

यद्यपि बंग-भंग और स्वदेशी आंदोलन के समय दमन-चक्र की गति धीमी नहीं थी, फिर भी देश-प्रेम से ओत-प्रोत कितने ही नवयुवक-हृदय शांत नहीं रह सके। उन्होंने गुप्त समितियाँ स्थापित कीं, और सरकार के प्रति षड्यंत्र रचने के आयोजन किए। हम यह निस्संकोच होकर कह सकते हैं कि स्वराज्य या स्वाधीनता की प्राप्ति के लिये उनके ये प्रयत्न भ्रम-पूर्ण थे, देश के लिये हानिकारक थे, पर उनके हृदय में मातृ-भूमि के प्रति जो पवित्र स्नेह था, उस स्नेह पर अपना सर्वस्व अर्पण करने की जो त्यागमय आकांक्षा थी, उसकी प्रशंसा कौन न करेगा? इस विप्लव-यज्ञ में अपने सर्वस्व की आहुति दे डालनेवाले होताओं की संख्या में भी मुसलमान युवकों के नाम प्रायः नहीं के बराबर हैं—बहुत होंगे तो दो-चार। यद्यपि इसके लिये हमें परिताप नहीं है, पर यह तो स्वीकार करना ही पड़ता है कि देश के लिये बलिदान होने की भावना रखनेवाले युवक मुस्लिम-समाज में नहीं हैं, और वह भी तब, जब कि मुस्लिम-समाज वीरता को अपना बाना समझता हो।

यद्यपि देश को मुस्लिम-समाज का सहयोग प्रायः नहीं के बराबर ही प्राप्त हुआ, पर उसकी उमंगें और आकांक्षाएँ उन्नत ही होती गईं। महायुद्ध के पश्चात् तो उसकी आकांक्षाओं का स्वरूप अत्यंत स्पष्ट हो गया, और देश में एक नूतन जागृति हलचल करने लगी। ठीक उसी समय इस देश के मुसलमान भी सहसा जाग उठे। अब तक वे इसी आशा में संतुष्ट रहते थे कि सरकार उन्हें एक निश्चित संख्या में नौकरियाँ देती रहे। इसी संतुष्टि के कारण वे महायुद्ध में अपने ख़लीफ़ा टर्की के सामने भी ताल ठोंककर खड़े हो गए थे। परंतु महायुद्ध के पश्चात् उन्होंने देखा कि ब्रिटिश-सरकार उनके उसी ख़लीफ़ा का विविध रूप से तिरस्कार कर रही है—उसकी स्वाधीनता नष्ट किए डालती है, जो उनके धर्म का नेता और संरक्षक है। उन्होंने चीख़ना-चिल्लाना शुरू किया; पर उनकी पुकार किसी ने सुनी नहीं। मुसलमानों के नेत्र खुले, और पराधीन रहते हुए भी वे एक दूर देश की स्वाधीनता के लिये व्याकुल हो उठे। यह आश्चर्य का विषय है कि उन्होंने एक बार भी न सोचा कि हम पराधीन लोगों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति है, जिसके भरोसे पर हम एक दूसरे देश की स्वतंत्रता की रक्षा कर सकेंगे।

जो हो, देश में स्वराज्य-आंदोलन चल ही रहा था, अब ख़िलाफ़त आंदोलन की भी उत्पत्ति हुई और महात्मा गांधी-जैसे पुरुष-पुंगव ने केवल इस सदाशा से कि इससे सदा के लिये हिंदू-मुस्लिम ऐक्य सुदृढ़ हो जायगा, उसका नेतृत्व ग्रहण किया। एक बार सचमुच हिंदू-मुस्लिम ऐक्य हो गया, देश की शक्ति बहुत बढ़ गई, उसके सामने आशा मनोहर रूप में नृत्य करने लगी। परंतु स्वराज्य के रूप में जो सुधार दिए गए, उनसे लोग बहुत ही हताश हुए। ख़िलाफ़त के प्रश्न का भी संतोषदायक निपटारा नहीं हुआ। उधर पंजाब में अग्नि-वर्षा हुई। बस, आंदोलन का स्वरूप और भी विराट् और भी उग्र हो गया। देश के कोने-कोने में असहयोग के भाव फैल गए। सरकार की आत्मा भी काँप गई। परंतु वह धैर्य-च्युत नहीं हुई—उसे अपने सदा के साथी मुसलमानों की आत्मनिर्बलता पर अब भी विश्वास था। मोपला-विद्रोह हुआ। शक्तिशाली भारत-सरकार प्रायः तीन मास तक उसका दमन करने में असमर्थ रही। मोपला लोगों ने अपने चारो ओर बसनेवाले निर्बल हिंदुओं पर यथेच्छ अत्याचार किए। राष्ट्रीयता के उस प्रवाह में हिंदू-नेता हृदय मसोसते हुए वह दृश्य देखते रहे, और हमें अत्यंत दुःख के साथ यह स्वीकार करना पड़ता है कि उन ख़िलाफ़ती नेताओं ने, जो केवल ख़िलाफ़त के प्रश्न का संतोषजनक निपटारा न होने के कारण उस आंदोलन में सम्मिलित हो गए थे, मोपलाओं के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की। वे भी मोपलाओं की करतूत चुपचाप देखा किए। स्मरण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रखना चाहिए कि इस मोपला-कांड और ख़िलाफ़ती नेताओं की उदासीनता ने भविष्य में देश की स्वाधीनता के आंदोलन पर घातक आघात किए।

यद्यपि उस आंदोलन में शुद्ध राष्ट्रीय भावना रखनेवाले मुस्लिम नेता भी सम्मिलित थे, पर अधिकता और प्रबलता ऐसे ही नेताओं की थी, जो केवल ख़िलाफ़त के लिये ही संपूर्ण आपत्तियों का भार सिर पर धारण करने को प्रस्तुत रहते थे। परंतु देश ने कभी उन पर अविश्वास नहीं किया। उसने उनका साथ ही नहीं दिया, बल्कि उनका सम्मान करने के लिये उसने अपने हृदय और नेत्र तक बिछा दिए। उनका सम्मान करने के लिये उसके पास जो श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ पदार्थ था, वह भी उसने उन्हें स्नेह-पूर्वक अर्पण कर दिया। महात्मा गांधी के उस समय के दाहने हाथ मौलाना मुहम्मदअली साहब राष्ट्रीय महासभा के सभापति-पद पर प्रतिष्ठित किए गए। परंतु उस गुरुत्व-पूर्ण सिंहासन पर बैठकर मौलाना साहब ने अपने ओजस्वी और विद्वत्ता-पूर्ण भाषण में कुछ ऐसी बातें भी कह डालीं, जिनसे देश में एक नवीन हलचल मच गई। राष्ट्रीय भावनाओं से पूर्ण हृदय मौलाना साहब की बातों से कुछ क्षुब्ध हुए, और हिंदुओं की एक बहुत बड़ी संख्या मुसलमानों की ओर संदेह-दृष्टि से देखने लगी।

इस समय तक ख़िलाफ़त की समस्या एक दूसरे ही ढंग से हल हो चुकी थी। शताब्दियों से सोए हुए टर्की ने करवटें बदलना शुरू कर दिया था। अंत में वह जाग उठा। उसने एक-तंत्र प्रणाली को ठुकराकर प्रजा-तंत्र की स्थापना की, मानो इस्लाम के उस प्राचीन कुचले हुए राजनीतिक सिद्धांत के पौदे पर अमृत छिड़क दिया। परंतु इससे भारत का दक़ियानूसी मुस्लिम-समाज बहुत असंतुष्ट हुआ। उसके नेता टर्की को कोसते हुए यहाँ-वहाँ दौड़ते फिरे। एक बार तो वे टर्की के द्वार पर भी जा पहुँचे। परंतु उसने उन्हें बुरी तरह दुतकार दिया। भारतीय मुसलमानों के दुःख की सीमा न रही। उन्हें इस्लाम पर आपत्ति की भयंकर घटाएँ घिरी हुई दिखने लगीं। भारत के दुर्भाग्य से इसी समय हिंदुओं द्वारा मोपला-विद्रोह की स्मृति जाग्रत् की गई। अब वे मुसलमान से उस अपमान का बदला लेने के लिये बद्धपरि हुए। फल-स्वरूप राष्ट्रीयता का शोषण करनेवाले और संगठन के आंदोलन का जन्म हुआ। मुस मानों के आहत हृदय पर एक और ज़बर्दस्त आघ हुआ। वे तिलमिला उठे। जिन मुसलमानों में ख़िल फ़त के साथ राष्ट्रीयता पर भी पूर्ण स्नेह था, वे अब राष्ट्रीयता को कुचलने लगे। परिणाम-स्वरूप हिंदू-मुस्लिम-विग्रह की उत्पत्ति हुई। मांट-फ़ोर्ड से जो थोड़े-से सुधार हुए थे, उनसे भी इस गृह को कुछ बल प्राप्त हुआ। सरकार ने कभी हिंदुओं और कभी मुसलमानों की पीठ ठोंकी। राजनीति मत-संकीर्णता के चपेटाघातों में दोनो पिस गए।

जब माता के लाल माता के अंचल को इस प्र निष्ठुरता-पूर्वक छिन्न-भिन्न कर रहे थे, तब ऐसे म का भी अभाव नहीं रहा, जो माता के मुखड़े उज्ज्वल करने में अहोरात्र प्रयत्नशील रहे। हर्ष कहते हुए हर्ष होता है कि इस आंदोलन में कि ही मुस्लिम युवकों और नेताओं ने देश का पूर्ण साथ दिया। यह स्मरण रखना चाहिए कि उनका निष्कंटक नहीं था। उन्हीं के सगे भाई-बंधु उन विश्वास नहीं करते थे, उनके प्रयत्नों में बाधक थे। फिर भी उन्होंने जिस सत्साहस का परिचय दि उसकी प्रशंसा स्वराज्य-आंदोलन के इतिहास में स्व शब्दों द्वारा की जायगी। स्वराज्य-आंदोलन के इति में स्वर्गीय हकीम अजमलख़ाँ साहब, डॉक्टर अंसारी, मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, राजा महमूदाबाद, पटने के इमाम-बंधु आदि मुस्लि नेताओं के नाम अमर रहेंगे इन महोदयों ने एक बार भी—देश के साथ विश्वासघात नहीं कि ये सदा हिंदू-मुस्लिम ऐक्य के समर्थक रहे। इ हमेशा यही आकांक्षा रहा कि देश की प्रगति कुं होने पावे। एतदर्थ इन्होंने भगीरथ प्रयत्न भी कि

देश में यद्यपि स्वराज्य-आंदोलन चल रहा उसके सामने स्वराज्य की ऐसी कोई निश्चित नहीं थी, जिस पर देश के समस्त दल निर्भ कर सकें। अतः बड़े परिश्रम से नेहरू-रि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निर्माण किया गया। यद्यपि हकीम साहब माता की गोदी सूनी कर गए थे, परंतु उक्त शेष नेताओं ने, और विशेषतया अंसारी साहब ने, नेहरू-रिपोर्ट के साथ जो परिश्रम किया, जो सहानुभूति प्रकट की, उसे संपूर्ण भारत जानता है। उनका नेहरू-रिपोर्ट-संबंधी प्रयत्न स्वराज्य-आंदोलन की एक चिरस्मरणीय घटना रहेगी। ये सज्जन मुसलमानों की मनोवृत्तियों से अपरिचित नहीं थे, अतः उन्होंने अपने सहयोगी मित्रों से घोर स्नेहमय युद्ध किया, और नेहरू-स्कीम में मुसलमानों के लिये वाजिब-से-वाजिब अधिकार स्थिर कराए। आशा तो यह की गई थी कि समस्त मुस्लिम-समाज इस स्कीम का स्वागत हृदय खोलकर करेगा, पर उसकी संकीर्ण मनोवृत्तियाँ उसे ऐसा करने देतीं, तब न? उनकी अधिकार-लालसा भैरव-हाहाकार करती हुई जाग उठी। उन्होंने क्रोध में आकर नेहरू-स्कीम को पैरों से कुचल डाला। जितना उनसे बन सका, उतना उसके विरुद्ध उन्होंने विष वमन किया। और, कहते लज्जा मालूम होती है कि बहुत-से मुसलमानों ने अपनी चिर-परिचित दास्य वृत्ति का नग्न रूप दिखलाते हुए सरकार तक से यह प्रार्थना कर डाला कि नेहरू-स्कीम हमें मान्य नहीं है, वह हमारे अधिकारों की उचित मीमांसा नहीं करती। स्वराज्य प्रदान करते समय सरकार हमारे अधिकारों का ख़याल रक्खे। भारत को यह सबक़ मिल चुका है कि स्वराज्य भिक्षा-वृत्ति से प्राप्त होनेवाला पदार्थ नहीं। परंतु इस अभागे देश के अधिकांश मुसलमानों को अब भी भिक्षा-वृत्ति की सफलता पर विश्वास है। सारी दुनिया जाग उठी है, पर ये अब तक अपनी ख़ुमारी-भरी आँखें मोड़ रहे हैं। ये अपनी मतांधता को ही दोनो हाथों से पकड़े बैठे हैं। स्वराज्य मिले, इसकी इन्हें चिंता नहीं; ये तो केवल इसी में संतुष्ट हैं कि सरकारी नौकरियों में हमारा ही सितारा ऊँचा रहे।

आश्चर्य का विषय तो यह है कि स्वराज्य-प्राप्ति के लिये जिन्होंने कुछ भी युद्ध नहीं किया, कुछ भी त्याग नहीं किया, वे भविष्य-अधिकारों की चिंता में व्यस्त हैं। हम देश के लिये चाहें कुछ भी न करें, पर हमें अधिकार मिलने का—और वह भी सबसे अधिक—निश्चय प्राप्त हो जाना चाहिए। इस मनोवृत्ति की टीका करना व्यर्थ है। हम यह नहीं कहते कि हमारे मुसलमान भाई अधिकार न माँगें। नहीं, माँगें और ख़ूब माँगें; पर उनकी प्राप्ति के लिये उन्हें कुछ त्याग भी तो करना चाहिए। बिना त्याग के उत्कर्ष कहाँ! हम अपने मुसलमान भाइयों से यह स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि जब तक आप धार्मिक संकीर्णता का त्यागकर राष्ट्रीयता की उपासना न करेंगे, तब तक आपका भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता। अब मतांधता का युग नहीं है। अब राष्ट्र-सेवा का ही समय है। हम आपसे यह नहीं कहते कि आप अपने धर्म पर स्नेह न करें। आप मज़े से पाँचो वक्त की नमाज़ अदा करें, तीन सौ पैंसठ दिन रोज़े रक्खा करें, चौबीसों घंटे क़ुरान-शरीफ़ की तिलावत किया करें, उठते-बैठते, सोते-जागते क़यामत पर यक़ीन रक्खा करें, पर यह सब घर के भीतर हो। बाहर तो आपको राष्ट्रीयता के नारे ही बलंद करना चाहिए। ख़ूब स्मरण रखिए, जिस प्रकार हिंदू-संगठन राष्ट्रीयता का घातक है, उसी प्रकार आपकी धार्मिक संकीर्णता भी आपको राष्ट्रीयता से दूर रखनेवाली तथा आपके जातीय गौरव पर कालिमा पोतनेवाली है।

भारत में स्वराज्य के साथ स्वदेशी का घनिष्ठ संबंध है। दोनो अन्योन्याश्रित हैं। असहयोग-आंदोलन के समय मुसलमानों के सामने बड़े ज़ोरों से यह तज़वीज़ पेश की गई थी कि जिस इँगलैंड ने उनकी ख़िलाफ़त पर ऐसे दारुण आघात किए हैं, उन्हें उचित है कि वे उसकी बनाई हुई प्रत्येक वस्तु का बहिष्कार करें। परंतु आज देखिए, सौ में शायद एक मुसलमान भी ऐसा न निकलेगा, जो स्वदेशी का सिर से पैर तक भक्त हो! जिसे देखो, वही विदेशी पर फ़िदा है। ऐसा अनन्य है मुसलमानों का ख़िलाफ़त-प्रेम। जिनका यह ध्येय रहा हो कि इस देश के प्रत्येक कार-बार की उन्नति हो, यहाँ का एक पैसा भी बाहर न जाने पावे, उन्हीं की संतान विदेशी की भक्त हो—अपने विजेता की जेबें गरम करने में अपने को सौभाग्यशालिनी समझती हो—इससे बढ़कर आश्चर्य-पूर्ण दूसरी घटना संसार में नहीं हो सकती। यदि मुसलमानों ने स्वदेशी पर ही आसक्ति दिखलाई होती, तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी संतोष की एक बात थी, और इसमें उनकी मतांधता पर भी कुछ आँच न पहुँचती। पर उनके तो सभी खेल निराले हुआ करते हैं।

यदि भारत के समस्त मुसलमान अब भी चेत जायँ, अब भी उनकी समझ में अपने मत का साम्यवाद और राजनीतिक सिद्धांत आ जायँ, अब भी उनकी स्मृति अपने पूर्वजों का स्वदेशी-प्रेम एवं सिराज, मीर क़ासिम हैदर टीपू आदि का ध्येय उदित हो जाय, तो भारत हृदय का एक बहुत बड़ा कष्ट नष्ट हो जाय। राष्ट्र परीक्षा का समय भी सामने है।

छप गया ! प्रकाशित हो गया !! हाथोंहाथ बिक रहा है !!!

हिंदी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ मौलिक उपन्यास

पृष्ठ-संख्या लगभग ५००] ✻ गढ़-कुंडार ✻ [मूल्य लगभग ३)

यह सम्राट् हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत के इतिहास के निर्माता चंदेलों, पँवारों, पड़िहारों और खंगारों के पारस्परिक संघर्ष से ओत-प्रोत, मध्य-कालीन भारत की राजनीतिक चालों से भरा हुआ, आल्हा-ऊदल की जन्मभूमि बुंदेलखंड का एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास है।

यदि आप रवींद्र बाबू को भी चुनौती देनेवाली प्रतिभा, शरच्चंद्र को भी मात करनेवाली चरित्र-कल्पना और बंकिमचंद्र को उलाँघनेवाली औपन्यासिकता एक ही जगह देखना चाहते हैं तो बुंदेलखंड की पार्वत्य उपत्यकाओं एवं सघन वन-प्रांतरों में प्रतिध्वनित और कलकलवाहिनी नदियों की मधुर ध्वनि से मुखरित इस सर्वोत्कृष्ट उपन्यास को एक बार पढ़ जाइए। इस प्रकार का रोमांटिक—प्रेम-गाथा-पूर्ण—वीरत्व-मय, दिल दहला देनेवाला, मनोरंजक मौलिक उपन्यास अब तक हिंदी-साहित्य में एक भी नहीं है।

इसे पढ़कर आप इँगलैंड और फ्रांस के प्रसिद्ध औपन्यासिकों, स्कॉट और डूमाज़, को भूल जायँगे।

"गढ़-कुंडार" एकदम नया है

इसमें बुंदेलखंड के वीरों का इतिहास, छत्रसाल की इतिहास-प्रसिद्ध जन्मभूमि की मनोमोहक सीनरी तथा सरल चंदेल और खंगार-युवतियों की प्रेम-लीला, देश-प्रेम, वीरता—सब आदि से अंत तक नया-ही-नया है।

इस सर्वोत्तम उपन्यास के लेखक हैं, हिंदी के सर वाल्टर स्कॉट श्रीवृंदावनलाल वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०—झाँसी के गण्यमान्य एडवोकेट।

फ़ौरन् आर्डर भेजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण का इंतज़ार करना पड़ेगा।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाममार्ग

या

समाज की रूढ़ियाँ

[साहित्य-भूषण किशनलाल शरसोदे विशारद]

"अथ किमेतैर्वाऽपरेऽन्ये महाधनुर्धराश्चक्रवर्तिनः केचित् सुद्युम्नभूरिद्युम्नेन्द्रद्युम्नकुवलयाश्वयौवनाश्वबद्ध्यूश्वाश्वपतिशशबिन्दुहरिश्चन्द्राऽम्बरीषननक्तुशर्यातिययात्यनरण्याक्षसेनादयः। अथ मरुत्तभरतप्रभृतयो राजानः।"

(मैत्रेयोपनिषद्)

स उपनिषद् के वचन से सिद्ध है कि सृष्टि के आदि से लेकर पाँच सहस्र वर्ष पर्यंत आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था, और समस्त आर्य एक ही धर्म—वैदिक धर्म—के अनुयायी थे। इसके अनंतर परस्पर के विरोध से महाभारत के युद्ध में बड़े-बड़े वीरों और विद्वानों की मृत्यु होते ही आर्यावर्तीय प्रचंड मार्तंड भी अस्ताचल की ओर प्रस्थानित होता गया। यह प्राकृतिक नियम है कि आवश्यकता से अधिक द्रव्य होने पर आलस्य, कापुरुषता, ईर्षा, विषयासक्ति और प्रमाद का आविर्भाव होने लगता है। ठीक यही अवस्था इस आर्य-जाति की हुई। धीरे-धीरे गुणों की जगह दुर्गुणों का समावेश होता गया। आर्य लोग मद्य-मांसादि का सेवन कर अनार्य बनते गए। जिस आर्य-जाति की विजय-दुंदुभी एक दिन समस्त भू-मंडल को निनादित करती थी, वही दुर्भाग्य से आज राज्य-भ्रष्ट होकर विदेशियों द्वारा पद-दलित की जा रही है। जब आर्यों की राजकीय सत्ता को ही काल ने इस तरह ठुकरा दिया, तब वैदिक धर्म में क्या-क्या परिवर्तन न हुए होंगे!

महाभारत के युद्ध के अनंतर बड़े-बड़े विद्वान् और ऋषि-महर्षियों का अंत होते ही वैदिक धर्म का भी पाया डगमगाया। धर्म के कर्णधार ब्राह्मणों में भी विद्या का अभाव तथा स्वार्थ और मत्सर का समावेश हुआ। उन्होंने वेदादि सद् ग्रंथों का अध्ययन छोड़कर नए-नए धर्मों का आविष्कार आरंभ किया, जिसके फल-स्वरूप आज भारतवर्ष में सैकड़ों धर्मों का आधिपत्य दिखाई दे रहा है। विद्वान् धर्मोपदेशकों के अभाव में अंध-परंपरा का आविर्भाव हुआ, और स्वार्थी तथा मत्सरी लोगों ने एक नए धर्म—वाममार्ग—को जन्म दिया। इन्होंने अनेक नए मंत्रों की रचना की, और उनके आरंभ में शिव उवाच, विष्णु उवाच आदि शब्द लिखकर उन्हें वैदिक मंत्र बतलाया और लोगों को अपने जाल में फसाना आरंभ किया। पाठकों के अवलोकनार्थ इनका काली-तंत्र में लिखा एक मंत्र उद्धृत करता हूँ—

मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च ;
एते पंच मकाराः स्युर्मोक्षदा हि युगे युगे।

पाठक देखें, इनके मंत्र सदाचार, नीति और धर्म से कितनी दूर हैं। यही नहीं, इन्होंने इंद्रिय-लोलुप होकर रुद्रयामल-तंत्र में यहाँ तक लिख दिया—

रजस्वला पुष्करं तीर्थं चांडाली तु स्वयं काशी ;
चर्मकारी प्रयागः स्याद्रजकी मथुरा मता।

क्या इससे भी अधिक मनुष्यता की अवहेलना कुछ हो सकती है? इसी प्रकार इनके अनेक मंत्र मांस-भक्षण, मदिरा-पान और व्यभिचार की पुष्टि में मिलते हैं। आप सोचते होंगे, यह बात किसी ज़माने की रही होगी, अब तो इस देश में इस मत के माननेवाले नहीं हैं, फिर इस समय यह बेतुका राग अलापने से आपका क्या अभिप्राय है? इसका उत्तर देते दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि इस मत का माननेवाला कोई जनसमूह न होने पर भी आज इस मत के पोषक प्रत्येक जाति, धर्म और समाज में पाए जाते हैं, जिनका मैं क्रम से दिग्दर्शन कराने का प्रयत्न करता हूँ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तंत्र-मंत्र

इस देश में तंत्र-मंत्र का अधिक प्रचार है। छोटी-छोटी बातों में इनका प्रयोग किया जाता है। प्रति वर्ष सैकड़ों नहीं, सहस्रों मृत्युएँ केवल तंत्र-मंत्रों पर विश्वास करने के कारण ही हुआ करती हैं। किसी भी रोग की चतुर वैद्यों द्वारा चिकित्सा न करा, तांत्रिक लोगों द्वारा रोगी का उपचार कराया जाता है, जिससे रोग घटने के स्थान पर बढ़ता जाता है, और अंत में रोगी को इन वाममार्गी तांत्रिकों के बहकावे में आकर अपने अमूल्य जीवन से हाथ धोना पड़ता है। कोई-कोई तांत्रिक कुछ चिकित्सा करना भी जानते हैं, जिससे वे प्रत्यक्ष में तो "हां हीं हूँ बगलामुख्यै फट् स्वाहा" आदि ऊलजलूल शब्दों का उच्चारण करते और परोक्ष रीति से कुछ चिकित्सा भी करते रहते हैं। यदि भाग्यवश कहीं उनकी चिकित्सा से लाभ हो गया, तो भोले-भाले अशिक्षित लोग उनके मंत्रों पर विश्वास करने लगते और उन्हें बड़ा सिद्ध समझते हैं। ये लोग दूसरों को डराने और अपने वश में करने के लिये उन्हें मृत्यु का भय दिखलाते हैं। वे प्रत्यक्ष में आटे अथवा मिट्टी की मूर्ति बनाकर उस पर हल्दी से भैरव अथवा दुर्गा की मूर्ति बनाकर उसके कंठ में चाकू भोंककर उसे नदी में फेंक आते हैं, और गुप्त रीति से विष आदि के प्रयोग से उन्हें मारने का प्रयत्न करते रहते हैं। यदि दुर्भाग्य से वे ऐसे दुष्कर्म में किसी तरह सफल हो गए, तो लोग उनसे डरने लगते और उनकी आज्ञा के अनुसार चलने में ही अपना हित समझते हैं। ये वाममार्गी तांत्रिक ऐसी दुष्ट क्रियाएँ करते समय मद्य-मांसादि का यथेष्ट सेवन करते और भैरव, दुर्गा आदि के नाम पर अनेक निरपराध जीवों की बलि भी देते हैं। इस प्रकार इन देश के दुश्मनों द्वारा प्रतिवर्ष सहस्रों प्राणियों का जीवन स्वाहा होता जाता है। खेद है, इनके दमन का कोई प्रयत्न नहीं किया जाता।

इन तांत्रिकों की एक शाखा और भी है, जो अपने को 'भगत' कहती है। इनके कार्य करने का विशेष समय दशहरा और चैत्र-पूर्णिमा है। इन दिनों में ये लगभग एक सप्ताह तक दुर्गा, काली आदि के गढ़ंत गीत गाते और मद्यपानादि कर ढोल पीट-पीट जंगली ढंग से नृत्य करते हैं। इस समय इनके शिष्य एकत्र होकर इनके इस कार्य में सहायता हैं। इनको 'रजाल्या' कहते हैं। रजाल्या एक से गुप्तचर का कार्य करते हैं। जो रोगी 'भगत' घर उपचार कराने आते हैं, उनके घर की सब का पता लगाकर 'रजाल्या' अपने भगत को बता हैं। रोगी के आने पर 'भगत' अपने सिर को हिला-हिला कर शरीर कँपाता है, और अपने में किसी देवता के प्रवेश करने का स्वाँग 'रजाल्या' के कहे अनुसार रोगी के संबंध बातें अपनी विचित्र भाषा में बकता और रोगी हृदय में विश्वास जमाता है। ये रोगी को रोग निवृत्त करने के बहाने जीवों का बलिदान कर हार करते अथवा अपने शिष्यों-सहित हलवा उड़ाते हैं। इनके देव आने का दिन साधारणतः वस, पूर्णिमा, रविवार अथवा बुधवार रहा करता पर यदि अधिक लाभ होने की आशा दिखाई दे, अन्य दिनों में भी इनके शरीर में देवता का हो जाता है। इस प्रकार झूठा जाल रचकर ये वाममा 'भगत' भी जनता को ठगते हैं।

भूत-प्रेतादि की भावना

"विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।" जब दुर्भाग्य उदय होता है, तब बुद्धि भी वि रीत हो जाती है। हम भार वासियों के हृदय में अनेक दुर्भा नाओं ने स्थान कर लिया है, जिसमें से एक भू प्रेतादि की भावना भी है। 'भूत' का अर्थ है बीता समय, और 'प्रेत' का अर्थ है मृत शरीर, जैसा मनुस्मृति के इस मंत्र से प्रकट होता है—

"गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेंध समाचरन्।"

जब वर्तमान में दिखाई देनेवाले प्राणियों का हो जाता है, तब उन्हें उनके भूतस्थ होने के 'भूत' संज्ञा मिलती है। पर अनेक धूर्त, और पाखंडी भोली जनता को अपने जाल में के लिये उनके हृदय में भूत-प्रेतादि की भावना करते हैं। हमारे शास्त्रों का तो मत यह है कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक शरीर से निकलने के अनंतर अपने कर्मों के अनुसार दूसरी योनि में शरीर धारण करता है। फिर उसका भूत-प्रेतादि होना कैसे संभव है? कई मनुष्य अपनी आँखों से भूत, प्रेत, शाकिनी, डाकिनी आदि के देखने की बातें बतलाते हैं। पर वास्तविक बात यह है कि कुसंस्कारों और कुसंगति से दृढ़ हुई कल्पना ही कभी-कभी अँधेरे स्थान में मूर्तिमान् होकर दिखाई देती है। पर यदि उस काल्पनिक चित्र को, अपनी झूठी भावनाओं को अलग कर, ध्यान से देखें, तो भ्रम-मात्र मालूम होता है। ऐसी झूठी भावनाओं पर विश्वास करनेवाले सैकड़ों स्त्री-पुरुष और बच्चे अँधेरे में सफ़ेद चट्टान, झाड़ो अथवा पशु आदि को देखकर उन्हें भूत समझ लेते और भयभीत होकर प्राण त्याग देते हैं। कभी-कभी मानसिक वेदना के कारण भी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती, और वह पागल की तरह मनमाना बकने लगता है। ऐसी अवस्था में ओषधियों द्वारा उसकी चिकित्सा न करा, भूत-प्रेतादि की भावना के वश होकर भंगी-चमार आदि वाममार्गियों से मिथ्या तंत्र बँधवाते और अपनी उच्च जाति का गर्व करनेवाले बड़े-बड़े ठाकुर और लाला उन शूद्रों का उच्छिष्ट भोजन तक करने में नहीं हिचकिचाते।

ग्रहों का प्रकोप

एक दिन ज्योतिषशास्त्र की शिक्षा पाने के लिये अनेक विदेशी इस पुण्य-भूमि भारत के पैरों पर लोटते थे, वहीं अब कुछ अल्पबुद्धि वाममार्गी उसी विद्या के नाम पर स्वार्थ-साधन करने में लगे हुए हैं। ये बनावटी ज्योतिषीजी जनता को बड़ी-बड़ी आशाएँ दिलाते और उनका धन लूटते हैं। वे ज्यों ही किसी को आपत्ति-ग्रस्त देखते, उनके घर पहुँच जाते और कहते हैं कि आप राहु के चक्र में हैं, आप पर शनि का प्रकोप है, आपके चंद्र उलटे पड़े हैं। इत्यादि कहकर उनके हृदय को सशंक करते और ग्रहों की शांति करने के बहाने उनका द्रव्य हरते हैं। जिस प्रकार हमारी पृथ्वी जड़ रूप है, उसी प्रकार सूर्य, चंद्र, राहु, शनि आदि गृह भी हैं। वे ताप, प्रकाश से अधिक कुछ नहीं दे सकते। वे चेतन तो हैं नहीं, जो क्रोधित होकर दुःख दें और शांत होकर सुख की वर्षा करें। फिर मैं नहीं समझता कि लोग मिथ्यावाद में फसकर वाममार्गियों की संख्या क्यों बढ़ाते हैं!

मूर्ति पूजा

इस देश के अधिकांश निवासी मूर्ति-पूजक हैं। जिस देश में शिक्षितों की संख्या—ऐसे शिक्षितों की संख्या, जो अपनी शिक्षा का उपयोग-धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में कर सकते हैं—केवल उँगलियों पर गिनी जाने के योग्य ही हो, उस देश के निवासी मूर्ति-पूजा के पक्षपाती हों, तो आश्चर्य ही क्या है? पर आश्चर्य केवल इस बात का है कि रात-दिन धर्म-ग्रंथों और इतिहासों के पन्ने पलटनेवाले सज्जन भी इस नाशकारी प्रथा को देश से उठा देने के पक्षपाती नहीं हैं! हम मूर्ति-पूजा करके अपने को धार्मिक प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं, पर वास्तव में हम अपने इस प्रयत्न द्वारा धीरे-धीरे धर्म से दूर होते जाते हैं। हम मूर्ति-पूजा करते समय ईश्वर का आवाहन करते और मूर्ति में उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करते हैं; पर यह केवल बच्चों का खेल-सा जान पड़ता है; क्योंकि हमारा परमेश्वर चौथे अथवा सातवें आसमान पर थोड़े ही रहता है, जिसका पूजन के समय आवाहन करने की आवश्यकता पड़े। वह तो सर्वव्यापक है। फिर उसका आवाहन और विसर्जन करना बच्चों का खेल नहीं, तो क्या है? हम मूर्ति में उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करके उस महान् परमेश्वर को एक संकुचित स्थान में मानकर उसकी महत्ता कम करने का प्रयत्न करते हैं। अतः यह उसका पूजन नहीं, विरोध है। राजनीतिक दृष्टि से भी इस मूर्ति-पूजा ने इस देश को कितनी कल्पनातीत हानि पहुँचाई है, इसका साक्षी हमारे देश का इतिहास है। हमने जड़ मूर्ति में सर्वज्ञता का विश्वास कर अपने देश को श्री-विहीन बना दिया, दूसरों के हाथ में सौंप दिया, और अपने को घोर आपत्ति में फसा लिया। पाठक सोचते होंगे कि मैं मूर्ति-पूजा को वाममार्ग में क्यों घसीट रहा हूँ? 'वाममार्ग' का अर्थ है उलटा रास्ता। अतएव हमारे देश में प्रचलित जितनी प्रथाएँ हमारे देश, धर्म और समाज की घातक हैं, वे सभी वाममार्ग की पोषक हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूर्ति-पूजा के साथ ही इस देश में मंदिर-निर्माण की भी प्रथा चली। जब मूर्ति-पूजकों की संख्या से भी अधिक मूर्तियों की संख्या हो गई, तब मंदिरों का भी लाखों की तादाद में होना कोई आश्चर्य-जनक बात नहीं।

मंदिरों की अवस्था

पर क्या कोई भी धर्म की डींग मारनेवाला हिंदू अपने हृदय पर हाथ रखकर यह कह सकता है कि देश के समस्त मंदिरों में ईश्वर की सच्ची उपासना की जाती है? धार्मिक शिक्षा का प्रबंध है? क्या सभी मंदिरों के पेटू पुजारी सदाचार और धार्मिक भावों के समर्थक हैं? क्या देव-मंदिरों में वेश्या-नृत्य होते नहीं देखा जाता? क्या अनेक पुजारी 'भैरवोऽहम्' 'शिवोऽहम्' कहकर व्यभिचार नहीं बढ़ाते? क्या ये मंदिर देश में निठल्लों की संख्या नहीं बढ़ाते? क्या इन्हीं मंदिरों के कारण आज देश में लोग मज़हबी दीवाने बनकर विद्वेष नहीं फैला रहे हैं? यदि यह सब सत्य है, तो फिर कहिए, आपके मंदिर और मंदिरों के पुजारी वाममार्ग के अनुयायी हैं या नहीं?

इस देश में प्रयाग, काशी, बदरीनाथ, केदारनाथ, रामेश्वर आदि अनेक तीर्थस्थान हैं, जहाँ प्रतिवर्ष लाखों हिंदू जाते और स्नान-पूजन कर अपने को धन्य मानते हैं। हम हिंदुओं पर वाममार्ग ने इतना गहरा हाथ जमा रक्खा है कि हमें विचार करने की आवश्यकता ही नहीं जान पड़ती। हमें खाने-पीने में, पहनने-ओढ़ने में, चलने-फिरने में पद-पद पर धर्म-ही-धर्म दिखाई देता है। यही कारण है कि यह हिंदू-जाति बलहीन, कापुरुष और मूर्ख बनी हुई है। हमारे प्रत्येक कार्य में हमारा धर्म—नहीं-नहीं, वाममार्ग—अपनी टाँग अड़ा देता है। जिन तीर्थ-स्थानों से हम सच्चे धार्मिक होकर आते थे, उन तीर्थों में अब स्नान और मूर्ति-पूजन के अतिरिक्त कुछ भी न रहा। प्राचीन काल में इन तीर्थ-स्थानों में बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि और विद्वान् लोग रहा करते थे। वे वहाँ आनेवाले यात्रियों को धार्मिक शिक्षा देते और उनके हृदय में उच्च भावों को भरते थे। पर अब हमारे दुर्भाग्य से इन पवित्र स्थानों पर आज कलह, असत्य और व्यभिचार का अटल साम्राज्य है। वेद भगवान्

तीर्थ-यात्रा

कहते हैं—नमस्तीर्थ्याय च। (अजु० अ० १६)। वेदादि शास्त्र और सत्य भाषणादि धर्म-लक्षणों से यु हो, उसे अन्नादि पदार्थ देना और उससे विद्या ग्र करना ही तीर्थ कहलाता है; पर आज हम इ धार्मिक सिद्धांत को ठुकराकर वाममार्गी ग्रंथों में—

गंगा गंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि;
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।

पढ़ते और तीर्थ-यात्रा कर आते हैं। यही नहीं, इन्हीं ग्रंथों में आगे चलकर यह भी मिलता है—

प्रातःकाले शिवं दृष्ट्वा निशि पापं विनश्यति;
आजन्मकृतं मध्याह्ने सायाह्ने सप्तजन्मनाम्।

यदि सचमुच सहस्रों कोस की दूरी से मनुष्य गंगा कहते हुए पाप-मुक्त हो सकता हो, और शिव-लिंग के दर्शन से ही सात जन्म तक के पाप न सकते हों, तो फिर पाप से डरने की आवश्यकता ही है? मेरे विचारशील बंधुओ, ज़रा सोचो तो सही, ये वाममार्गी ग्रंथ हमें पापाचार बढ़ाने के लिये नहीं करते? यदि करते हैं, तो फिर आप ही कहिए, ये मंत्र और जिन ग्रंथों में ऐसे मंत्र हैं, वे ग्रंथ वाम के पोषक नहीं हैं? क्या आज कोई भी समझदार इन स्वार्थ-पूर्ण मंत्रों के आधार पर तीर्थ-यात्रा कर आपको उद्दंड नर-पिशाच पंडों के हथकंडों में फसाने प्रयत्न करेगा? प्रत्येक तीर्थ की रामकहानी सुनाने आवश्यकता नहीं। शिक्षित-समुदाय, समाचार-पत्रों और अधिकांश जनसमूह अपनी आँखों द्वारा तीर्थ की नग्न लीला का दिग्दर्शन करते ही रहते होंगे।

हम धर्म-प्राण हिंदुओं के हृदय में सदैव भक्ति स्रोत बहता रहता है, चि वह धर्म के अनुकूल हो या प्रतिकूल। यह भक्ति-स्रोत इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन काल से अतिथियों का सत्कार करनेवाले पर खेद है, आज हम अतिथियों को पहचानना गए हैं। इन अतिथियों में विशेष संख्या हमारे साधु-संन्यासियों की है। जहाँ कहीं भी देखिए, साधु धूनी रमाए मिल ही जायँगे, और उनके चारों दस-पाँच मनुष्य भी, उन पर श्रद्धा रखनेवाले दिखाई देंगे। प्रत्येक गृहस्थ को यह

साधु-भक्ति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कठिन हो जाता है कि हम जिसकी सेवा करने की इच्छा कर रहे हैं, वह वास्तव में साधु है या असाधु। साधु आजकल की प्रचलित भाषा में संन्यासी को कहते हैं। हमारे धर्म-शास्त्र में लिखा है—

"वनेषु च विहृत्यैवं तृतीयं भागमायुषः ;
चतुर्थमायुषो भागं त्यक्त्वा संगान् परिव्रजेत्।"

अब देखना यह है कि क्या हमारे देश के समस्त नामधारी संन्यासी शास्त्रानुसार तीनों आश्रमों का पालन कर संन्यासी हुए हैं? हम देखते हैं, हमारे देश के संन्यासियों में बाल, युवा, वृद्ध सभी हैं। यही नहीं, प्रत्युत अपने को साधु-संन्यासियों में गणना कराने-वालों की कुछ जातियाँ तक बन गई हैं, जो अपने को गुसाईं, जोगी, बैरागी आदि के नाम से प्रसिद्ध करते हैं। ये गृहस्थ होते हुए भी अपने को साधु-संन्यासी की उपाधि से विभूषित करते और कुछ अपढ़ लोगों को अपने शिष्य बनाकर निर्वाह करते हैं। ये लोग "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ; गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।" आदि मन-गढ़ंत श्लोक सुनाकर "आपन मुख तुम आपनि करणी; बार अनेक भाँति बहु बरणी।"-वाली लोकोक्ति चरितार्थ करते हैं। ये भक्ष्याभक्ष्य का भी कुछ विचार नहीं करते। मैंने अपनी आँखों से इन कनफुँकवे गुरुओं को मद्य-पान और मांसा-हार करते भी देखा है। गाँजा इनका सबसे प्रिय पदार्थ है। वे इसकी प्रशंसा में मनमानी ऊलजलूल पद्य-रचना सुनाकर स्वयं पीते और अपने शिष्यों को भी पिलाते हैं।

अब संन्यासियों का आदर्श देखिए—

अध्यात्मरतिरासीनो निरपेक्षो निरामिषः ;
आत्मैनव सहायेन सुखार्थी विचरेदिह।
इंद्रियाणां निरोधेन रागद्वेषक्षयेण च ;
आहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते।
दूषितोऽपि चरेद्धर्मं यत्र तत्राश्रमे रतः ;
समः सर्वेषु भुतेषु न लिंगं धर्मकारणम्।
चतुर्भिरपि चैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः ;
दशलक्षणको धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः।
धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिंद्रियनिग्रहः ;
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।

मेरे भद्र भ्राताओ, अब आप आदर्श संन्यासियों के लक्षणों और आधुनिक नामधारी साधुओं (संन्या-सियों) के लक्षणों और धर्म से तुलना करके बतलाइए, क्या ये नामधारी साधु वाममार्ग के प्रचारक और उन पर श्रद्धा रखनेवाले हिंदू वाममार्ग के अनुयायी नहीं हैं? मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं कि भारतवर्ष में सच्चे संन्यासियों का बिलकुल ही अभाव है। अब भी यहाँ कुछ संन्यासी ऐसे अवश्य हैं, जो सदैव हमें आदर्श की ओर ले जाने का प्रयत्न करते रहते हैं, और इसी कार्य में अपना अमूल्य जीवन समर्पण करने को तैयार रहते हैं। उन्हें मैं बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखता हूँ, और प्रत्येक देश-वासी को भी देखना चाहिए।

मांसाहार

इस देश में मांसाहारियों की संख्या भी कम नहीं है। यहाँ तक कि देश के कुछ विद्वानों का भी मत है कि इस समय हिंदू-मात्र को मांस भक्षण करना चाहिए। पर मैं समझता हूँ, मांसाहार से उन विद्वानों की बुद्धि भी इतनी नष्ट हो गई है कि वे हिंदुओं की वर्तमान कमज़ोरी को दूर करने के लिये कोई दूसरा उपाय ही नहीं ढूँढ़ सकते। पहले मैं धार्मिक दृष्टि से इस पर विचार करता हूँ। महात्मा मनु कहते हैं—

"योऽहिंसकानि भूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया ;
स जीवंश्च मृतश्चैव न क्वचित् सुखमेधते।"

अर्थात् जो अहिंसक प्राणियों को अपने सुख की इच्छा से मारता है, उसे जीवित अवस्था में अथवा मरने पर, कभी सुख नहीं मिलता। इसके आगे इसी विषय पर विचार प्रकट करते हुए वह लिखते हैं—"यक्षरक्षःपिशाचान्नं मद्यमांसं सुरासवम्" अर्थात् मद्य, मांस, सुरा और आसव यक्ष, राक्षस और पिशाचों का अन्न है। अब आप ही कहिए, मांस-भक्षण करनेवाले मनुष्य मनुष्य हैं या पिशाच? हमारे धर्म-शास्त्रों में 'अहिंसा' की ही प्रधानता दी है, और हिंसा का घोर विरोध किया गया है। महाभारत के मोक्ष-धर्म-पर्व में लिखा है—

"सर्वकर्मस्वहिंसां हि धर्मात्मा मनुरब्रवीत् ;
अहिंसा सर्वभूतेभ्यो धर्मेभ्यो ज्यायसी मता।"

कुछ लोगों का मत है कि जब बड़े-बड़े डॉक्टर मांसाहार करने की सलाह देते हैं, तब हमें धर्म के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आडंबरों पर लक्ष्य देने की क्या आवश्यकता है? ऐसे सज्जनों की सेवा में मेरा निवेदन है कि वे पाश्चात्य मांसाहारी देशों के डॉक्टरों के मत पर विचार करने का कष्ट उठावें। इँगलैंड के प्रसिद्ध डॉक्टर अर्नेस्टवेल ने अपनी 'कैंसर रोग से बचने के उपाय'-नामक पुस्तक में लिखा है कि केवल इँगलैंड में ही मांसाहार से उत्पन्न होनेवाले 'कैंसर' रोग से ६०,००० मनुष्यों की मृत्यु होती है। इस प्रकार दुनिया के समस्त मांसाहारियों की संख्या का विचार करने से स्पष्ट प्रकट होता है कि इस रोग से २५०,००,००० मनुष्य मांसाहार कर इस भयंकर रोग के शिकार बनते हैं।

इँगलैंड के दूसरे प्रसिद्ध डॉक्टर किंगसफ़ोर्ड और अमेरिका के डॉक्टर हेरा आदि का मत है कि मांसाहार से क्षय, नासूर, जलोदर और संग्रहणी के सदृश भयंकर रोग उत्पन्न होते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने पर भी मालूम होता है कि मनुष्य की शरीर-रचना का साम्य जितना शाकाहारी प्राणियों की शरीर-रचना से है, उतना मांसाहारी प्राणियों के शरीर से नहीं। यही कारण है कि मनुष्य के शरीर में मांस को पचानेवाले अवयव न होने के कारण वह उसे पचा नहीं सकता, जिससे वह मांस पेट में सड़कर अनेक भयंकर रोग उत्पन्न करता है। अब मैं मांसाहार पर डॉक्टरी मत का पुछल्ला बाँधनेवाले बंधुओं से पूछना चाहता हूँ कि वे इस देश के निवासियों को मांसाहारी बनाकर उन्हें सशक्त बनाना चाहते हैं या भयंकर रोग में फसाकर उनका सर्वनाश करना चाहते हैं? यदि प्रत्येक मनुष्य नियम-पूर्वक व्यायाम कर दुग्ध, घृत और ताज़े, पके फलों का ही सेवन पर्याप्त मात्रा में करता रहे, और ब्रह्मचर्य का यथावत् पालन करे, तो वह अद्वितीय शक्तिशाली बन सकता है, जिसके प्रमाण आज हमारे सामने प्रोफ़ेसर राममूर्ति के सदृश नर-पुंगव हैं।

बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि इन वाममार्ग के पक्षपातियों ने धर्म-ग्रंथों में भी, अनेक स्थानों पर, मांसाहार के मन-गढ़ंत श्लोक मिलाकर वाममार्ग को पुष्ट किया है। इसके अनेक प्रमाण मुझे मालूम हैं; पर लेख बढ़ जाने के भय से अधिक उदाहरण न देकर विष्णुपुराण के दो श्लोक पाठकों के समक्ष रखता हूँ, जिनमें श्राद्ध के दिन पितरों को भाँति-भाँति के मांस देने की आज्ञा दी गई है—

और्व उवाच—हविष्य मत्स्यमांसैस्तु शशस्य नकुलस्य च।
सौकराच्छागलैणेय रौरवैर्गवयेन च ॥ १ ॥
और्भ्रगव्यैश्च तथा मासवृध्द्या पितामहाः।
प्रयान्ति तृप्तिं मांसैस्तु नित्यवार्ध्रीण सामिषैः ॥
खड्गमांसमतीवात्र कालशाकं तथा मधु।
शस्तानि कर्मण्यत्यन्ततृप्तिदानिनरेश्वर ॥

(विष्णुपुराण अंश ३, अ० १

अर्थात् और्व बोले—श्राद्ध के दिन ब्राह्मणों को हविष्य भोजन कराने से पितर लोग एक महीने तक तृप्त रहते हैं। नकुली देने से दो महीने, शशक के मांस से तीन महीने, नकुल-मांस से चार महीने, सूअर के मांस से पाँच महीने, बकरी के मांस से छः महीने, मकर-मांस से सात महीने, रुरु के मांस से आठ महीने, गवय-मांस से नौ, मेढ़े से दस और गो-मांस से ग्यारह महीने तक पितृगण परितृप्त रहते हैं। पर यदि वार्ध्रीणस का मांस दिया जाय, तो पितर बारह वर्ष तक तृप्त रहते हैं। हे राजन्! गैंडे का मांस, कृष्णशाक और मधु, ये वस्तुएँ श्राद्ध में बहुत ही श्रेष्ठ और तृप्तिदायक हैं।

अब धर्म-प्राण हिंदू विचार करें कि इन वाममार्गियों ने कितना अंधेर मचा रक्खा है। यहाँ तक कि उन्होंने गो-मांस तक की आज्ञा दे दी। फिर कहिए, जब तक धार्मिक ग्रंथों का विद्वानों द्वारा संशोधन कराके इन वाममार्गियों की संख्या कम न की जायगी तब तक गो-रक्षा समिति और पिंजरापोल संस्थाओं को सफलता कैसे मिलेगी?

मांसाहार की तरह मद्य-पान करनेवालों की संख्या कम नहीं है। यदि सिगरेट, तमाखू, गाँजा, चरस, चंडू आदि मादक पदार्थों का आस्वादन भी मद्य-पान के ही अंतर्गत समझा जाय, तो यह कहना न होगा कि प्रतिशत पाँच मनुष्य भी कठिनाई से मिलेंगे, जो इस चक्कर में न पड़े हों। यह देख

मद्य-पान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दुर्भाग्य है कि इस देश के अधिकांश निवासी इस बुरी आदत के द्वारा अपना सर्वनाश होते देखकर भी नित्य-प्रति इसकी वृद्धि ही करते जा रहे हैं। इन नशेख़ोर वाममार्गियों ने मद्य-पान ही स्वर्ग-प्राप्ति का साधन समझ रक्खा है। इनका मन-गढ़ंत धार्मिक सिद्धांत देखिए—

"हालां पिबति दीक्षितस्य मंदिरे सुतो निशायां गणिकागृहेषु विराजते कौलव चक्रवर्ती .....।"

जो कलार के घर जाकर बोतल-पर-बोतल चढ़ावे, वेश्याओं के घर जाकर कुकर्म करे, वही इनमें चक्रवर्ती राजा समझा जाता है। ये वाममार्गी अपने महानिर्वाण-तंत्र में मद्य की महत्ता बतलाते हुए लिखते हैं—

"पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले;
पुनरुत्थाय वै पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।"

यही नहीं, इन देश के दुश्मनों ने स्वार्थ-साधन के लिये ऋषि-प्रणीत ग्रंथों में मांसाहार की तरह मद्य-विषयक भी कुछ मंत्र मिला दिए हैं। नमूने के रूप में मनुस्मृति का प्रक्षिप्त श्लोक देखिए—

सौत्रामण्यां सुरां पिबेत्। प्रोक्षितं भक्षयेन्मांसम्।
वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति।
न मांसभक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने;
प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला। (अ०५। ५६)

अब मैं पाठकों से ही पूछना चाहता हूँ कि जब तक देश में ऐसे वाममार्गी मनुष्य और पाखंडी उपदेशक बने रहेंगे, तब तक इस देश का उन्नति की ओर अग्रसर होना कहाँ तक संभव है?

सनातनधर्म के मान्य ग्रंथ ब्रह्मांडपुराण में लिखा है—

प्राप्ते कलियुगे घोरे सर्वे वर्णाश्रमेतराः;
तमालं भक्षितं येन स गच्छेन्नरकार्णवे।

इसी तरह पद्मपुराण में भी लिखा है—

धूम्रपानरतं विप्रं दानं कुर्वन्ति ये नराः;
दातारो नरकं यान्ति ब्राह्मणो ग्रामशूकरः।

अब कहिए मेरे सनातनधर्मी बंधुओ, आप लोगों में से कितने ऐसे हैं, जो अपने धर्मग्रंथ की आज्ञा भुलाकर नरक जाने की तैयारी नहीं करते? और मेरे पूज्य ब्राह्मणो, आप भी बतलाइए, इस धूम्र-पान से कितने ऐसे हैं, जो पद्मपुराण के मतानुसार ग्राम-शूकर बनने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं?

बाल-विवाह

हत्यारे बाल-विवाह का नाम लेते ही शरीर में कंपन हो आता और नेत्र अश्रु-पूर्ण हो जाते हैं। परतंत्रता में परावलंबी जीवन व्यतीत करते हुए हम आर्यों (हिंदुओं) का इतना अधिक अधःपतन हो गया है कि हम अपने सच्चे हित को अहित और अहित को हित मान बैठे हैं। हमारे मस्तिष्क इतने विवेक-शून्य हो गए हैं कि किसी परिस्थिति-वश जिस प्रथा का चलन हो गया, उसे आज सैकड़ों वर्षों के अनंतर—उस परिस्थिति का अंत होने पर भी—समाज से उठा देने का प्रयत्न नहीं करते। हम आज इतने बल-हीन क्यों हो गए, हम पद-पद पर क्यों ठुकराए जाते हैं, इस विषय पर मैं अपने विचार कभी अन्यत्र प्रकाशित करूँगा, पर तो भी इस समय इतना कह देना आवश्यक समझता हूँ कि इस अधःपतन और बलहीनता का सबसे प्रधान कारण बाल-विवाह ही है। जिस देश में एक दिन राम-कृष्ण-अर्जुन-से वीर, हनुमान्-भीष्म-से ब्रह्मचारी, वाल्मीकि-से कवि, व्यास-से वक्ता और जनक-से राजर्षि उत्पन्न होकर इसका 'देव-भूमि' नाम सार्थक करते थे, उसी देश में आज इस पैशाचिक प्रथा के कारण सहस्रों की संख्या में क्लीव, कामी, मूर्ख, नास्तिक और निर्लज्ज उत्पन्न होकर इसे 'श्मशान-भूमि' बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

मुझे यह कहने में कुछ भी संकोच नहीं होता कि वाम-मार्ग के आचार्य, अनुयायी और पोषक इस कुप्रथा के प्रचारक हैं। जब हमारे धर्म-ग्रंथ पर्याप्त रूप में इस विषय का स्पष्टीकरण कर रहे हैं, तब धर्म-ग्रंथ को ठुकराकर इस प्रथा का संचालन करनेवाले पंडितों का नाम हम किस उपाधि से विभूषित करें? मेरा तो यह मत है कि देश की परिस्थिति में परिवर्तन करने के पूर्व इन वाममार्ग के आचार्यों के मस्तिष्क का—जिन्होंने स्वार्थवश पराशर उवाच, ब्रह्म उवाच आदि लिखकर अपने मन-गढ़ंत श्लोक रच दिए—ऑपरेशन कर इस सर्वनाशकारी प्रथा को देश-निकाला देना अत्यावश्यक है। इसके पूर्व उन्नति की आशा करना निराशा-मात्र होगी। ये गुरुघंटाल आचार्य—

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी;
दशवर्षा भवेत्कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माता चैव पिता तस्या ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ;
त्रयस्ते नरकं यांति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ।

बतलाकर बाल-विवाह का प्रचार करते और देश को गहरे गर्त में डुबाकर अपनी बर्बरता का परिचय देते हैं। वे अपने लबेद को वेद-शास्त्र और स्मृतियों से कहीं ऊँचा स्थान देते हैं। हमारे प्रसिद्ध स्मृतिकार भगवान् मनु कहते हैं—

"त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती ;
ऊर्ध्वं तु कालादेतस्माद्विंदेत सदृशं पतिम् ।"

कन्या रजस्वला हुए पश्चात् तीन वर्ष पर्यंत पति की खोज करके अपने सदृश पति से विवाह करे। यही नहीं, इस विषय में वेद का भी मत है—

"युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।"
(ऋ० मं० ३ । सू० ८ । मं० ४)

अर्थात् जो पुरुष सब ओर से यज्ञोपवीत, ब्रह्मचर्य-सेवन से उत्तम शिक्षा और विद्या से युक्त वस्त्र धारण किए हुए, ब्रह्मचर्य-युक्त युवा विद्या ग्रहण कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है, वही प्रसिद्ध, अतिशय शोभायुक्त, मंगलकारी होता है और अच्छी तरह ध्यान-युक्त विज्ञान से विद्या-वृद्धि की कामना-युक्त धैर्यशील विद्वान् लोग उसी पुरुष को उन्नतिशील करके प्रतिष्ठित करते हैं।

इससे यह सिद्ध है कि ब्रह्मचर्य-अवस्था के पूर्व अर्थात् पचीस वर्ष की अवस्था के पहले विवाह करना युक्ति-संगत और हितकारक नहीं है। आप आयुर्वेद की दृष्टि से भी देखेंगे कि बाल-विवाह कितना वर्जित है। इस विषय में मुनिवर धन्वंतरिजी सुश्रुत में कहते हैं—

"ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तः पंचविंशतिम् ;
यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते।
जातो वा न चिरंजीवेज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः ;
तस्मादत्यन्तबालायां गर्भाधानं न कारयेत्।"

यदि सोलह वर्ष से कम आयु की स्त्री में पच्चीस वर्ष से न्यून आयुवाला पुरुष गर्भस्थापन करे, तो वह कुक्षिस्थ गर्भ विपत्ति में पड़ता है। वह उत्पन्न होकर चिरकाल तक जीवित नहीं रहता और जीवित रहा भी, तो सदैव दुर्बलेंद्रिय ही रहेगा। अतः अत्यन्त बाल-वस्था में गर्भाधान न करे।

इससे यह स्पष्ट है कि धार्मिक और आयुर्वेदिक नियमों का उल्लंघन कर बाल-विवाह करनेवाले वाममार्गी हैं।

यदि 'वाममार्ग' विषय पर और भी अधिक लिखा किया जाय, तो इस नाम की एक पुस्तक ही बन सकती है। अभी मैंने इस लेख में केवल मुख्य-मुख्य बातों पर ही विचार किया है। अस्पृश्यता, छुआछूत आदि अनेक बातें छोड़ दी गई हैं। आशा है, मेरे विचार-शील सत्यानुयायी देशवासी इस पर विचार करेंगे।

* समस्त पत्र-संपादकों, हिंदू-सभाओं और सुधारकों से इस लेख को प्रकाशित कर प्रत्येक हिंदू-जनता तक पहुँचाने की प्रार्थना है।—लेखक

THE GANGA PUSTAK MALA PUBLICATIONS

THE HON'BLE RAJA SIR RAMPAL SINGH, K. C. S. I., WRITES:—

I have been a regular subscriber of the Ganga Pustak Mala since its re- inception and am thus in a position to say that its Promoters and Organisers- chiefly its Proprietor, Pt. Dularey Lal Bhargava, well known to the Hin- reading public as a poet of fine taste and the able Editor-in-chief of the Hin- monthly, the Madhuri (now Sudha)—have been working with unabated intere- in the cause of the Hindi literature. They seem to be simply too eager to pu- lish any good work, no matter what side of our life it deals with and it is this reason that they have become practically the best institution in the Upp- India for propagating Hindi learning and diffusing the right sort of know- ledge. I hope that with the increasing appreciation of the Hindi-reading publ- they will try to prove themselves of still greater service to the cause they ha- undertaken so enthusiastically. I congratulate them heartily on the gre- success they have achieved so far and wish them every success in future.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दो भाई

[श्रायुत भैयालाल जैन एच्० एम्० बी०]

(१)

हाँ जो ताज़िया उठा करता था, उसमें हिंदू लोग बहुत मदद दिया करते थे—रुपए से, पैसे से, तन से, मन से, हर तरह से। इतने उत्साह से भाग लेते थे कि उसमें और ही रौनक़ आ जाती थी। पर उस साल दोनो फ़िरक़ों में वैमनस्य हो जाने से मज़ा किरकिरा हो गया। बेचारे मुसलमान, जिन्होंने केवल हिंदुओं के बल पर अभी तक अपनी शान निभाई थी, बुरी तरह से निराश हो गए। साथ ही उन्हें ग़ुस्सा भी कम न आया। काफ़िरों को इसका मज़ा न चखा दिया, तो क्या रह गया! खिसियानी बिल्ली की तरह जहाँ देखो, वहीं मुसलमान ग़ुर्राने लगे। बंदिशें बँधने लगीं। कभी मियाँजी के घर पर, कभी मौलाना साहब के मकान पर और कभी क़ाज़ीजी के यहाँ मुसलमानों का जमाव होने लगा। हिंदुओं ने सब सुना, सब समझा; पर उनके सनातनी शांत स्वभाव में बल नहीं पड़ा। दो-चार जने कहीं इकट्ठे होते, तो ज़रा फुस-फुस कर लेते—"यार, ये मुसल्ले तो बदमाशी करने पर तुले हुए हैं। अब की ताज़िए में बड़ा झमेला मचावेंगे।"

आख़िर क़तल की रात आई। मुसलमानों का दिल जला हुआ था; वे मुस्तैद होकर निकले। सबकी आँखों में ख़ून उतरा हुआ था। चेहरे ख़ूँख़्वार थे। जिस समय वे 'अली-हुसेन' का ज़ोरों का नारा लगाते हुए निकल जाते थे, हिंदुओं का कलेजा काँप जाता था। छत के झरोखे और द्वार की संधि से देखते थे। देखकर सिहर उठते थे। किसी में इतना हियाव न था कि उनके सामने ज़रा बाहर तो आ जाय। झुंड के दूर निकल जाने पर कुछ दिखाऊ वीर अपने-अपने घर के दरवाज़ों पर आते और बातें करते थे—"यार, हिंदू लोग बड़े उरपोंक हैं; नहीं तो इनकी क्या मजाल कि इस तरह उछल-कूद मचा लें। एका नहीं है।" दूसरा कहता था—"हाँ भाई, एका नहीं है। क्या किया जाय? सभी हिंदू पस्त-हिम्मत नहीं होते; पर उनमें बहुत-से ऐसे होते हैं कि दूसरों की कमज़ोरी देखकर उनके भी घुटने मुड़ जाते हैं।" अनेक हेकड़ हिंदुओं ने दूसरों के सामने एक आदर्श रखने के विचार से लाठियाँ लीं, और निकल पड़े—"आ जाय जिसकी हिम्मत हो।" मुसलमान उन पर टूटते थे; वे मुसलमानों पर टूटते थे। ख़ासी बजती थी। पर हार हिंदुओं ही की होती थी। बुरी तरह पीटे जाते थे। दिलेर हिंदू जूझते थे; नामर्द हिंदू चूड़ियाँ पहनकर तहख़ानों में घुसे रहते थे। ख़ुदा न ख़ास्ता अगर कोई धोखे से बाहर रह जाता, तो लाठी लेने के बहाने चट अंदर चला जाता था। ऐसी बात न थी कि मुसलमान सभी झगड़ालू थे। उनमें अच्छे भी थे, जो हिंदुओं को अपना भाई, पड़ोसी और हमवतन समझते थे। पर उजड्डों ही की संख्या में अधिकता थी। वे उन नेक मुसलमानों की बातें सुनकर उनका मज़ाक उड़ाते और अपनी डींग हाँकते थे।

घनश्याम का छोटा भाई राधाकांत रात को ताज़िए की घमर-घमर से जाग उठा। उठकर बैठ गया। बोला—"भैया! ताज़िया!"

घनश्याम को ज़ोर की नींद लगी थी। ज़रा-सा कसमसाया। कहा—"हाँ, सो जाओ।"

कुछ देर के बाद राधाकांत पहले की अपेक्षा ज़ोर से बोला—"भैया! ताज़िया आया है।"

घनश्याम ने थोड़ा-सा सिर उठाकर कहा—"सोओ।"

राधाकांत को किसी तरह नींद नहीं आ सकती थी। उसने कहा—"मैं देखने जाता हूँ।"

घनश्याम—"यहीं छत पर से देख लो।"

लड़का चिलबिला और चंचल था। नीचे दौड़ गया। वहाँ घनश्याम फिर सो गया। जागने पर उसने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखा, राधाकांत का बिस्तर ख़ाली है। पुकारा—"राधा! ओ राधा!" ताज़िया निकल गया। राधा कहाँ गया? लालटेन लेकर खोजने उठा। घर में नहीं मिला। बाहर देखा, वहाँ भी नहीं। हृदय में धड़कन हुई। पड़ोसियों को जगा-जगाकर पूछा—"भाई, कहीं राधा को तो नहीं देखा?" उन्होंने कहा—"नहीं। कहाँ गया?" रात-ही-रात थाने में जाकर रिपोर्ट की। मेरा भाई राधाकांत नहीं मिल रहा है। घर के सामने से ताज़िया निकला था, तभी से। दो बजे होंगे। पूरी हुलिया भी लिखा दी।

बहुत खोज-पड़ताल हुई। राधाकांत का पता नहीं चला। घनश्याम को अपने छोटे भाई के गुम हो जाने का अत्यंत शोक हुआ। पर उस शोक से अधिक मुसलमानों पर क्रोध हुआ। ज़रूर इन्हीं की कारवाई है।

(२)

राधाकांत बाहर निकला। एक मुसलमान ने उसका गोरा-गोरा मुँह और चमचमाती आँखें देखीं, तो मोहित हो गया। पूछा—"ताज़िया देखोगे?"

राधाकांत—"हाँ।"

उस मुसलमान का नाम उसमान था। उसने कहा—"चलो, मैं पास से दिखा दूँ।"

राधकांत राज़ी हो गया।

उसमान ने उसे गोद में उठा लिया। दो पैसे की रेवड़ी ले दी। चुमकारता-पुचकारता ताज़िए के पास-पास चलने लगा। दोनो बहुत दूर निकल गए। तब एकाएक राधाकांत को घर की याद आई। गोद से उतरने लगा। बोला—"घर जाऊँगा।"

उसमान—"चलो, थोड़ी दूर और है। अभी लौटेंगे, तो तुमको तुम्हारे घर पहुँचा देंगे।"

राधाकांत—"नहीं, मैं अभी जाऊँगा।"

उसमान—"अकेले चले जाओगे?"

राधाकांत—"हाँ।"

उसमान—"डर न लगेगा?"

राधाकांत—"नहीं।"

उसमान—"हम पहुँचा देने को तो कहते हैं।"

राधाकांत नहीं माना। मचल गया। उसमान ने उसका गाल मसककर एक तमाचा मार दिया। डाँट कर कहा—"चुप! नहीं तो फिर..."

इस व्यवहार से घर का लाड़ला राधाकांत एकदम सन्न रह गया। फिर उसके मुँह से बोल नहीं निकला। तमाम रास्ते-भर चुपचाप मुँह लटकाए चला गया। सवेरा होते-होते उसमान उसे गोद में लादे लौटा। राधाकांत के घर नहीं, अपने घर। बिस्तर बिछाकर उसे सुला दिया। राधाकांत का साहस नहीं हुआ कि अपने घर का नाम ले। मुँह ढाँपकर धीरे-धीरे रोने लगा। थोड़ी देर में सो गया।

पंद्रह दिन तक उसमान ने राधाकांत को उसी गाँव में, अपने घर में, छिपाकर रक्खा। किसी को कानोकान ख़बर न हुई। उसे बाहर नहीं निकलने देता था। आप कहीं जाता था, तो बाहर से ताला जड़ दिया करता था। जाते समय कह जाता था कि मैं यहीं पास हूँ। तुम ज़रा भी रोए या चिल्लाए, तो आकर गला दबा दूँगा। डर के मारे वह कुछ नहीं बोलता था। दिन-रात मौन पड़ा रहता था। कभी-कभी अकेले में भीतर-ही-भीतर ख़ूब फफक-फफककर रोता भी था। उसमान की आहट पा जाने पर तुरंत ही आँसू पोंछ डालता था। राधाकांत उसे बहुत डरने लगा था। उसे यह उम्मीद ज़रा भी नहीं रह गई थी कि वह मुझे कभी घर भी पहुँचा देगा।

एक दिन उसमान रात के सन्नाटे में राधाकांत को लेकर रेल में बैठ गया। अलीगढ़ पहुँचा। वहाँ उसके बहुत-से मुलाक़ाती मुसलमान थे। जल्दी ही रहने का ठीक-ठिकाना लग गया। काम-धंधा भी मिल गया।

जुमे के दिन उसमान राधाकांत को मसजिद में गया। वहाँ उसके मुसलमान बनाने की रस्म पूरी की गई। कलमा पढ़ाया गया। चोटी काट दी गई। पाँचों वक़्त नमाज़ पढ़ने की हिदायत की गई। नाम बदल दिया गया। शाम को दावत की ठहरी। बहुत-से नामी-गिरामी मुसलमान आए। उस दावत में राधाकांत को ज़बरदस्ती गोश्त खिला दिया गया।

राधाकांत फंदे में फस ही चुका था। निकलना दुश्वार था। धीरे-धीरे उस पर मज़हबी रंग चढ़ने लगा। वह भी अपने को मुसलमान समझने लगा। उसने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखा, जैसे-जैसे वह ढर्रे पर आता जाता था, वैसे-वैसे उसमान उस पर ख़ुश होता जाता था। उस पर किसी तरह का ज़ोर-ज़ुल्म नहीं किया जाता था; बल्कि नेक नज़र ही रक्खी जाती थी। अंत में वह पक्का मुसलमान बन गया। उसमान को अपना सरपरस्त समझने लगा, और दूसरे मुसलमानों को अपना अज़ीज़ भाई। उसके प्रति उसका प्रेम भी बढ़ गया।

(३)

घनश्याम की ज़िंदगी के दिन पहले दूसरी ही तरह से बीतते थे। भाई के गुम हो जाने के बाद से उसने वह तरीक़ा बदल दिया। हम हिंदुओं की यह दुर्गति क्यों है? हमारे इतने हीन होने का क्या कारण है? अंत में उसने यही निष्कर्ष निकाला कि सच ही यह जाति संगठित नहीं है। संगठन के अभाव ही से इसकी यह अधोगति है, और हमारी इस दुर्बलता के उत्तर-दायी हमी हैं। किसी दूसरे का इसमें दोष नहीं है। हमारे ऊपर दूसरी जाति के लोगों के द्वारा जो अत्याचार किए जा रहे हैं, उनकी तह में पैठकर यदि हम देखें, तो साफ़ मालूम हो जायगा कि मूल-कारण हमी हैं। हमारी मुट्ठी में ज़ोर नहीं है, और हम अपनी चीज़ के छिन जाने का अपराध दूसरों के माथे पर मढ़ते हैं। कैसी बेवक़ूफ़ी है! रुपए की थैली सामने रखकर यदि हम ऊँघ जायँ, तो अपराध किसका? दूसरे का? छिः! आज मेरा भाई मुझसे छीन लिया गया है, तो मैं उत्तेजित हो उठा हूँ; कल दूसरों की मा-बहनें और बहू-बेटियाँ छीन ली गई थीं, तब मैं पड़ा सोता था। मैं भी दोषी हूँ। प्रत्येक हिंदू दोषी है। इसी तरह सब कान में तेल डाले पड़े रहेंगे, तो एक दिन हिंदू-जाति का सर्वनाश हो जायगा।

घनश्याम काम में जुट गया। उसने सारे शहर के हिंदुओं में उत्तेजना फैलाने की कोशिश की। मुहल्ले-मुहल्ले घूमा। एक-एक आदमी से मिला। उसके बाद उसने हिंदुओं की एक विराट् सभा का आयोजन किया। ख़ूब दौड़-धूप की। दिन निश्चित किया। सब जगह पर्चे बँटवाए। निर्दिष्ट समय पर सभा-स्थल पर जब देखा गया, चारो ओर सन्नाटा ही दिखा। कोई आया ही न था। कुछ समय के लिये घनश्याम का दिमाग़ चक्कर खा गया। कुछ समझ में न आया कि हिंदुओं के भाग्य में क्या बदा है? आँखों में उँगली डालकर दिखलाते हैं कि देखो, यह तुम्हारी भलाई का रास्ता है; तब भी इन्हें कुछ नहीं सूझता। पर वह हतोत्साह नहीं हुआ। किसी तरह भी काम हो, करूँगा; पीछे न हटूँगा।

बिजली की तरह चारो ओर ख़बर फैल गई कि बंबई से एक गानेवाली आई है। गले का स्वर कोयल को मात करनेवाला है। गाने में वह रस होती है, वह राग रहता है, वह रस रहता है कि बस, सुनते ही बनता है। रूप-रंग ऐसा है कि क्या किसी का होगा? लाखों में एक। मैदान में ठाठ भीड़ भर गई। सारा शहर उमड़ पड़ा। पर उन लोगों की उस समय की निराशा का क्या पूछना कि जब गानेवाली के बदले घनश्याम खड़ा होकर अपनी वक्तृता झाड़ने लगा—"हिंदुओ! तुमको धिक्कार है! हज़ारों बार धिक्कार है! तुम्हें ज़रा भी होश नहीं। ऐसे ग़ाफ़िल हो कि अपनी भलाई-बुराई भी नहीं देखते। कैसा समय है? क्या करना चाहिए? कुछ ध्यान नहीं। मर मिटने का मौक़ा आवेगा, तभी शायद चेतोगे। कोई राह बतलाता है, उसकी सुनते ही नहीं। लक्षण बड़े ख़राब हैं। तुम अपने भाई को अपना भाई नहीं समझते। अपने ही खाने-पीने में मस्त रहते हो। अपनी चैन की वंशी की ध्वनि के आगे ग़रीबों का रोना नहीं सुनते। नर होकर भी पशु ही बने हुए हो। हद है। सोचते होगे, मज़ा करते हैं। भगवान् की कृपा से आनंद से दिन कटते जाते हैं। जब अपने पर आवेगी, तब देखा जायगा। निश्चिंत हो। यहीं पर गड्ढा है। यह मत सोचो कि बच जाओगे। ऐसी बीतेगी कि छठी का दूध याद आ जायगा। इतने गहरे गिरोगे कि पता न चलेगा।"

इतनी लानत-मलामत के बाद उसने संगठन का विषय छेड़ दिया। संगठन के गूढ़ तत्त्व समझाए। उससे होनेवाले लाभों का ब्योरेवार वर्णन किया। अनेकों उदाहरण दिए। कहा—"तब किसी भाई के लाल की हिम्मत न पड़ेगी कि हमें आँख तो दिखा सके। संगठन-शक्ति क्या ऐसी-वैसी शक्ति है? इस शक्ति से शक्तिशाली होकर हम असंभव को संभव सिद्ध कर देंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर यदि इसी तरह हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहेंगे, तो चाहे जो हमें दिन-दहाड़े लूट लेगा। ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप कर सकते हैं। इसलिये चलो, उठो, खड़े हो जाओ। अब भी समय है। बहुत कुछ कर सकते हो। सवेरे का भूला मनुष्य शाम तक घर पहुँच जाय, तो वह भूला नहीं कहलाता।"

लोगों में जोश फैला। घनश्याम के साहस और दृढ़ता की प्रशंसा होने लगी।

कोई भी काम हो, उसमें रुपए की ज़रूरत पहले सामने आ खड़ी होती है। घनश्याम ने इसका अनुभव किया। ऐसा होना तो नहीं चाहिए; पर परिस्थिति ही ऐसी हो गई है। ख़ैर, वह चंदा इकट्ठा करने की फ़िक्र में भी लगा। धनी-मानी सज्जनों और सेठ-साहूकारों के पास गया। बहुत थोड़ा पैसा इकट्ठा हुआ। सेठ चाँदमल नाम का एक धनी असामी था। सबने उसकी आड़ ली। वह हम लोगों का सरपंच है। यदि वह चंदा देना शुरू कर दे, तो हम लोगों को कोई एतराज़ नहीं। घनश्याम वहाँ गया। सेठ का आसन गद्दी पर जमा था। घनश्याम को देखते ही वह सँभल-कर बैठ गया। शायद पहले ही उसको कुछ आभास मिल चुका था। घनश्याम ने सब मामला समझा-बुझाकर, रुपए की अपील की। उत्तर मिला—"मैं ग़रीब आदमी हूँ। रोज़गार-धंधा आजकल बिलकुल ठीला है। पैसे की बड़ी तंगी है।" घनश्याम ने सुना; सुनकर चुपचाप उठ आया।

उसके थोड़े ही दिन बाद सेठ चाँदमल से और एक नीच जाति के आदमी से, बीच बाज़ार में, किसी बात पर झिकझिक हो गई। वह आदमी जूता तानकर खड़ा हो गया। उस समय तो सेठ कुछ अधिक नहीं बोला, पर बाद में उसने नालिश कर दी। मामले ने बड़ा तूल दिया। हज़ारों रुपए ख़र्च किए। उसे एक महीने के लिये जेल भिजवाकर ही छोड़ा।

मौक़ा देखकर एक दिन घनश्याम फिर सेठ चाँदमल के यहाँ गया। बोला—"सेठजी, आप तो कहते थे, मैं ग़रीब आदमी हूँ। पास में पैसा नहीं है। पर मुक़दमे में लगाने के लिये इतना रुपया कहाँ से निकल पड़ा? मुझे आप सिर्फ़ सौ ही रुपए दे देते, उतने ही में काम बन जाता।"

पहले तो सेठ ने बहुत लाल-पीली आँखें कीं; पर जब घनश्याम ने उसे सीधी पट्टी पढ़ाई, भेजे में बात घुसा दी कि मैं यों ही पिंड छोड़ देनेवाला जीव नहीं, किसी-न-किसी तरह लेकर ही रहूँगा, तब उसने आख़िर बड़ी मुश्किल से पेटी खोली। फिर तो धड़ाधड़ चंदा इकट्ठा हुआ। काम भी ज़ोरों के साथ चल निकला।

(४)

घनश्याम ने सब दूसरे स्थानों में घूम-घूमकर संगठन का प्रचार करना प्रारंभ किया। ऐसा कुछ हुआ कि वह जहाँ गया, वहीं बड़ाके के साथ काम हुआ। हज़ारों की संख्या में लोग जमा होते, स्थायी समिति बनती, फ़ंड इकट्ठा होता।

एक पलड़ा जब नीचे झुकने लगता है, तब दूसरा पलड़ा आप-ही-आप ऊपर उठने लगता है। मुसलमानों ने हिंदुओं का उत्कर्ष देखा, तो जल-भुनकर ख़ाक हो गए। यह संगठनवाला कहाँ से आया है? सुनते हैं, यही सब आफ़त बरपा करता है। गुड़ का बाप कोल्हू यही है। यहाँ इसकी दाल न गलने देनी चाहिए। किसी तरह हिकमत लगाकर इस पर हाथ साफ़ कर देना चाहिए। फिर तो फ़तेह है। बहुत-से मुसलमान एक एकांत स्थान में मिलकर मशविरा करने लगे।

एक ने कहा—"सबकी राय से किसी एक को यह काम सौंप देना चाहिए।"

दूसरा बोला—"ऐसा नहीं; पहले देख लेना चाहिए कि क्या कोई ऐसा भी बहादुर है, जो अपनी मर्ज़ी से इस काम को अंजाम देने के लिये मुस्तैद होकर खड़ा होता है?"

आवाज़ें आईं—"ठीक है, ठीक है।"

तत्क्षण ही एक सत्रह वर्ष का पट्ठा उठ खड़ा हुआ, बोला—"मैं तैयार हूँ।"

सबने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। यह क्या और यह दिलेरी! सरदार ने कहा—"तुम अभी छोकरे हो। बैठ जाओ।"

उस नवयुवक का नाम मुबारक था। मुबारक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़ूबसूरत चेहरा ग़ुस्से से तमतमा उठा। आपे से बाहर होकर बोला—"आप इस तरह मेरी हतक क्यों कर रहे हैं? छोकड़ा ही समझा था, तो मुझे इसमें क्यों शरीक किया? मेरी कलाई में ताक़त है। मुझे अपने पर भरोसा है। मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। फिर मुझे क्यों नहीं इस काम को पूरा करने की इजाज़त दी जाती?"

उसकी बातों से सब सन्नाटे में आ गए। बहस-मुबाहिसे के बाद आख़िर उसी पर भार छोड़ दिया गया।

उस परदेश में घनश्याम एक सज्जन के यहाँ निमंत्रित होकर गया था। रात अधिक बीत जाने के कारण वहीं रह गया। गर्मी के दिन थे; पर आकाश में बदली छाई रहने से वह भीतर ही सोया था। दरवाज़ा और खिड़कियाँ सब खुली थीं। कोई सामान तो था नहीं कि किसी के ले जाने का डर हो। एक सुराही-भर कोने में रक्खी थी।

रात के दो बजे थे। पानी से सनी हुई हवा झर्-झर् बह रही थी। मुबारक कमर में पैना छुरा खोंसे हुए लुकता-छिपता पहुँचा। देखा, रास्ता साफ़ है। चारो ओर निगाह फेरी, कहीं कोई नहीं। उछल पड़ा। मार लिया पड़ाव। छुरे की मूठ पर हाथ रखकर वह दरवाज़े पर पहुँचा। नया पोता हुआ सफ़ेद झक कमरा लैंप की तेज़ रोशनी में चम-चम कर रहा था। घनश्याम का मुँह सामने ही था। मुबारक पास गया। छुरा निकाला। ऊपर ताना। किंतु एकाएक उसका हाथ सन्न रह गया। हृदय की धड़कन जैसे रुक गई। बाहर की साँस बाहर और भीतर की भीतर ही रह गई। छुरा हाथ से छूटकर धरती पर गिर पड़ा।

घनश्याम ने आहट पाकर झट आँखें खोल दीं। कहा—"कौन?"

मुबारक उसके पैरों से लिपट गया। मुँह से केवल निकला—"भैया!"

वह राधाकांत था। घनश्याम ने उसे तुरंत ही पहचान लिया। जल्दी से उठाकर गले से लगा लिया।

फिर दोनो ख़ूब रोए—ख़ूब रोए। यहाँ तक रोए कि आँसुओं से तर हो गए, और उनकी देह खिड़की में से आती हुई ठंडी हवा से काँपने लगी।

सुधा पर सम्मतियाँ

श्रीयुत धर्मेंद्रनाथ शास्त्री एम्० ए०, तर्कशिरोमणि—हिंदी की मासिक पत्रिकाओं में सुधा सर्वोच्च स्थान ग्रहण करेगी। इस समय गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय हिंदी का सबसे बड़ा प्रकाशन-भवन (Publishing House) है। यह बिलकुल उचित ही है कि ऐसे बड़े साहित्य-केंद्र से हिंदी की एक उच्च श्रेणी की साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित हो। माधुरी को जन्म देकर उच्च पद तक पहुँचाने का श्रेय उपर्युक्त संपादक-युगल को ही है। पत्रिका जहाँ साहित्यिक और कला की दृष्टि से आकर्षक है, वहाँ उसकी एक विशेषता यह है कि उसमें उच्च, उदार, निर्भीक सामाजिक सुधार के विचारों को स्थान दिया गया है। इसलिये यह पत्रिका न केवल पुरुषों तक, प्रत्युत प्रत्येक गृह-देवी के हाथों में पहुँचने योग्य है।

पं० आद्यादत्त ठाकुर एम्० ए० (संस्कृताध्यापक, लखनऊ-विश्वविद्यालय)—इसमें संदेह नहीं कि इस दिव्य साहित्य-सुधा से सहृदय रसिक असीम आनंद का अनुभव करेंगे। छपाई-सफ़ाई और चित्र तो मनोमोहक हैं ही, लेख-माला भी उच्च कोटि की है। संपादन में भी आपने अपना अच्छा कौशल दिखाया है। यह सर्वथा आपके अनुरूप है। वास्तव में इस पत्रिका से हिंदी का गौरव और बढ़ेगा। हिंदी में तो उच्च कोटि की पत्रिकाएँ अंगुल-परिच्छेद्य ही हैं, बँगला, मराठी और गुजराती-पत्रिकाएँ भी इसे देखकर लज्जावनत हो सकेंगी। इतनी सर्वांग-सुंदर सुधा का प्रकाशन करके आपने यथार्थ में हिंदी-संसार का बड़ा उपकार किया है। इसके लिये हम आपका हृदय से अभिनंदन करते हैं। हमें आशा है, हिंदी-संसार इसे सादर ग्रहण करेगा, और इस सर्वोच्च मासिक पत्रिका का प्रचार भी शीघ्र ही सब पत्रिकाओं से अधिक हो जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़लीफ़े और उनका जीवन

[श्रीराजेश्वरप्रसाद-नारायणसिंह बी० ए०]

मुहम्मद साहब ने मरते समय तक अरब में अपनी पूरी सत्ता स्थापित कर ली थी। इसलाम-धर्म का सौरभ अरब के कोने-कोने तक फैल चुका था। उनके कुछ अनुयायी अब उसे दिग्-दिगंत में फैलाने का उद्योग कर रहे थे। पर मुहम्मद साहब की मृत्यु से उनके इस उद्देश्य में भारी रुकावट आ पड़ी; क्योंकि वह शक्ति, जिसने सारे अरब को एकता के सूत्र में बाँध रक्खा था, जाती रही। मुहम्मद साहब की मृत्यु के कुछ ही दिनों के बाद इस धर्म-साम्राज्य के टूटने के लक्षण देख पड़ने लगे। अरब के कुछ बुद्धिमान् पुरुषों ने, जो मुहम्मद साहब के सच्चे शिष्य और दूरदर्शी थे, इस आती हुई दुर्घटना को रोकने के अभिप्राय से यह आवश्यक समझा कि मुहम्मद साहब के स्थान पर कोई दूसरा योग्य व्यक्ति, धार्मिक तथा सांसारिक मामलों की देख-रेख के लिये, अध्यक्ष चुना जाय। अतएव सर्व-सम्मति से मुहम्मद साहब के-से साधु-स्वभाव आबूबेकर इस पद पर संस्थापित हुए, और तभी से ख़िलाफ़त की सृष्टि हुई। आबूबेकर पहला ख़लीफ़ा हुआ। उनके बाद तीन और ख़लीफ़े चुने गए—उमर, उतमान और अली। अली के बाद ख़िलाफ़त एक विशिष्ट परिवार में चला गया, और तब से उसी परिवार के लोग ख़ानदानी तरीक़े पर ख़लीफ़ा होने लगे। निर्वाचन-पद्धति उठा दी गई।

ख़िलाफ़त के आरंभ में ख़लीफ़े बड़े साधु-स्वभाव हुआ करते थे। सादगी और दयालुता के लिये विख्यात थे। धार्मिक कृत्यों में ही अपने जीवन का अधिकांश समय बिताते थे। सांसारिक विषय-वासनाओं से दूर रहते थे। दौलत से कोई निजी वास्ता न था। उसे परोपकार का साधन-मात्र समझते थे। ग़रीबों के-से जीवन बिताते थे। हाँ, हृदय विशाल था, उदारता विख्यात थी। उनकी इस मिज़ाज-ग़रीबी, सादगी और हृदय के औदार्य की इतिहास लिखनेवालों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। ख़लीफ़ा आबूबेकर के संबंध में कहते हैं कि जब उन्होंने ख़िलाफ़त की बागडोर अपने हाथ में ली, तो अपनी पुत्री आयशा को बुलाकर कहा—"बेटी, हम लोगों की जो पैतृक संपत्ति है, उसका लेखा अलग कर ले। ताकि अंत में मैं यह देख सकूँ कि अपने कर्तव्य-पालन में मैं ग़रीब हुआ या धनी।" वह अपने लिये सिर्फ़ तीन टुकड़े सोने के और एक ऊँट तथा एक अनुचर के जीवन-निर्वाह की सामग्री के सिवा और कुछ न लेते थे। इसमें भी जो सप्ताह के अंत तक बच जाता था, उसे वह प्रति शुक्रवार को दान कर देते थे। उनकी मृत्यु के बाद जब उनके कपड़े तथा अन्य सामग्री उनके उत्तराधिकारी उमर को मिली, तो उन्होंने बड़े अफ़सोस के साथ कहा—मुझमें यह शक्ति नहीं कि मैं उनकी तरह सादा जीवन व्यतीत कर सकूँ। पर सच पूछिए, तो उमर किसी क़दर उनसे कम न निकले। वह भी फटे-चिथड़े कपड़ों को ही पहनते थे। उन्होंने सिर्फ़ रूखी-सूखी रोटियाँ खाकर और कुएँ का पानी पीकर ही अपनी उम्र बिता दी। कहते हैं, एक बार फ़ारस का राजदूत उनसे मिलने आया, तो उसने उमर को मदीने की एक मस्जिद की सीढ़ियों पर, भिखमंगों के साथ, सोते पाया।

इतनी सादगी के साथ जीवन बिताते हुए भी ये ख़लीफ़े राज्य-विस्तार में किसी तरह कमी नहीं करते थे। वे स्वयं तो लड़ाइयों में कम—बहुत कम—जाया करते थे, पर उनके वीर सेनाध्यक्षों ने कुछ ही दिनों में फ़ारस, सीरिया, मिसर, आफ़्रिका, स्पेन आदि देशों में विजय-पताका फहरा दी। इन देशों से लूटकर आई हुई दौलत ने अरब की समृद्धि दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ा दी। पीछे चलकर तो ये ख़लीफ़े संसार-भर में इसलाम-धर्म के प्रधान समझे जाने लगे। रोम के पोप की तरह इनकी भी पूजा होने लगी।

जब ख़िलाफ़त अब्बासियों के हाथ आई, तो उन्होंने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी राजधानी बदलने की सोची। फलतः सन् ७६८ ई० (A. D.) में बग़दाद की नींव डाली गई, और तब से ख़लीफ़े बग़दाद में ही रहने लगे। बग़दाद आते ही ख़लीफ़ों के जीवन में बड़ा भारी परिवर्तन हुआ। टिग्रिस-नदी के तीर पर बसे हुए इस नगर की शोभा और ऐश्वर्य दिन-दूना रात-चौगुना बढ़ने लगा। कुछ ही दिनों में इसकी आबादी ख़ूब घनी हो गई *। बग़दाद आकर ख़लीफ़ों ने ऐशो-आराम की ओर क़दम बढ़ाया। और, कुछ ही दिनों में वे इसमें ख़ूब ही डूब गए, भोग-विलास में लिप्त रहने लगे। सारी बातों में फ़ारस के बादशाहों की नक़ल करनी शुरू कर दी। पानी की तरह धन बहाने लगे। तो भी एक-एक ख़लीफ़ा मरने के बाद करोड़ों की संपत्ति छोड़ गया। बग़दाद में बड़ी-बड़ी इमारतें उठ खड़ी हुईं। उनके भीतर की सजावट देखने ही योग्य थी। उनमें लगे हुए मणि-मोतियों और बेशक़ीमती कपड़ों की रौनक़ कुछ और ही थी। देखकर आँखें चकाचौंध हो जातीं। भट्टि का यह श्लोक बग़दाद पर सोलहो आने चरितार्थ होता है

सदलमुक्ताफलवज्रभाञ्जि
विचित्रधातूनि सकाननानि ;
स्त्रीभिर्युतान्यप्सरसामिवोर्वे-
मेरोः शिरांसीव गृहाणि यस्याम्।

ये ख़लीफ़े ख़र्चीले भी ख़ूब थे। माहदी ने मक्के की एक ही सफ़र में साठ लाख दीनार ख़र्च कर डाले थे। राह में उसने बहुत-सी सराएँ बनवाईं, और ग़रीबों को भीख दी। इनके साथ-साथ खाने-पीने और ऐशो-आराम में भी काफ़ी ख़र्च किया। उसके साथ हज़ारों ऊँट, और आदमी माल ढोने के लिये गए थे। राह में जो इस जलूस को देखता, आश्चर्य-चकित हो जाता। एक दूसरे ख़लीफ़े के पुत्र की शादी में एक हज़ार बड़े-बड़े मोती नववधू के मस्तक पर बरसाए गए थे *, और बहुत-सी ज़मीन और मकानात लोगों को पुरस्कार के रूप में मिले थे। एक बार यूनान से ख़लीफ़ा के दरबार में राजदूत आए। उनके स्वागत में जो तैयारियाँ हुई थीं, उनका ज़िक्र अबुलफ़िदा नाम के एक तवारीख़ लिखनेवाले ने इस प्रकार किया है—

"ख़लीफ़ा की सारी फ़ौज शस्त्रों से सुसज्जित थी, जिसमें सैनिकों की संख्या एक सौ साठ हज़ार के क़रीब थी। राज्य के बड़े-बड़े अफ़सर और मुख्य-मुख्य दास उसके—ख़लीफ़ा के—पास ही, बग़ल में, खड़े थे। उनके वस्त्र बड़े उज्ज्वल थे, और उनके कमरबंद में लगे हुए मणियों और सोने की चमक देखते ही बनती थी। दरवाज़ों पर क़रीब ७०० प्रहरी थे। नौकाएँ ख़ूब सजाई गई थीं, और वे टिग्रिस-नदी के जल पर मदमाती चाल से तैर रही थीं। राजप्रासाद की शोभा भी कुछ और ही—अद्वितीय—थी। ३८ हज़ार पर्दे राजमहल में टँगे हुए थे, जिनमें साढ़े बारह हज़ार तो सिर्फ़ रेशम के चारो ओर सोने से मढ़े हुए थे। २२ हज़ार कारपेट ज़मीन पर बिछाए गए थे। एक सौ बड़े-बड़े सिंह पिंजड़ों से बाहर निकाले गए थे, जो देखने में अत्यंत भयंकर थे। ऐसे तो देखने-योग्य हज़ारों—एक-से-एक बढ़कर—चीज़ें थीं। पर एक वृक्ष का, जो सोने-चाँदी का बना था और जिसमें अठारह बड़ी-बड़ी शाखाएँ थीं, नज़ारा देखने ही लायक़ था। उन अठारह बड़ी तथा अगणित छोटी शाखाओं पर उन्हीं अमूल्य धातुओं की बनी हुई अनेक प्रकार की चिड़ियाँ बैठाई गई थीं। इस वृक्ष की पत्तियों का सृजन भी अलौकिक ही था। सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह था कि कल के द्वारा उन पक्षियों से उनकी ही-जैसी बोलियाँ बोलाई जा रही थीं। सुननेवाले दंग हो रहे थे। इन दृश्यों को

---

* एक बार बग़दाद के एक लोकप्रिय फ़क़ीर के जनाज़े के साथ शहर के आठ लाख मर्द और साठ हज़ार औरतें क़ब्रिस्तान तक गई थीं। इससे शहर की आबादी का अनुमान किया जा सकता है।

* पूर्व के कुछ देशों में यह प्रथा पहले थी, और अब भी है। भारतवर्ष में भी शादी के मौक़े पर वर-वधू के मस्तक पर तरह-तरह की चीज़ों की वर्षा की जाती है। मिल्टन ने इसी की ओर संकेत करके लिखा है—

Or where the gorgeous East, with richest hand,
showers on her kings Barbaric pearls and gold.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिखाते हुए वज़ीर यूनान के राजदूतों को ख़लीफ़े की गद्दी के पास ले गया।"

मनुष्य की आत्मा को शांति और सुख ऐशो-आराम की चीज़ों से नहीं मिलता। भोग-विलास में शरीर-सुख भले ही मिले, पर मानसिक सुख का अनुभव वह कदापि नहीं कर सकता। ख़लीफ़ों में जब तक जीवन की सादगी बनी रही—जब तक वे साधु-जीवन बिताते रहे—उनकी आत्मा स्वर्गीय सुख का अनुभव करती रही; पर जब उन्होंने भोग-विलास में—सांसारिक सुखों में—अपने जीवन को लगाया, तो वह सुख, वह शांति, वह इच्छा-निवृत्ति सदा के लिये विलीन हो गई। अब्दुलरहमान की भोग-विलासिता पराकाष्ठा को पहुँच चुकी थी। पर उसी के कमरे में, उसकी मृत्यु के बाद, यह लिखा हुआ पाया गया—"मैं पचास साल तक शांति और विजय के साथ शासन कर चुका। मेरी प्रजा का मुझ पर प्रेम बना रहा, शत्रु सदैव मुझसे भय खाते रहे, मित्र राष्ट्र आदर की दृष्टि से देखते रहे। धन और सम्मान की या प्रभुता और आमोद-प्रमोद की मुझे कमी नहीं रही—वे सदैव मेरी उँगलियों के इशारों पर नाचते रहे। इनके होते हुए भी जब मैंने अपने जीवन के पिछले दिनों पर ग़ौर किया, तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अपने जीवन के पचास वर्षों में सिर्फ़ चौदह दिन मेरी क़िस्मत में ऐसे लिखे थे, जिनमें मैंने सच्चे और पवित्र सुख का अनुभव किया। हे मनुष्य! तू सांसारिक सुखों पर व्यर्थ विश्वास न रख, उनकी उम्मीद न कर।" भोग-विलास में लिप्त सभी मनुष्यों का अंत में यही अनुभव होता है, सभी इसी नतीजे पर पहुँचते हैं।

ख़लीफ़ों के समय में ज्ञान-विस्तार भी ख़ूब हुआ, क्योंकि ख़लीफ़ों में कुछ ऐसे भी हुए, जो सदाचारी और विद्या-प्रेमी थे। ख़लीफ़ा हारूँरशीद और मामूँरशीद के अद्भुत विद्या-प्रेम की कथाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं। इनका अधिक समय विद्योपार्जन तथा ज्ञान-चर्चा में ही बीतता था। गणित, ज्योतिष, चिकित्सा-शास्त्र आदि विषयों में अरबवालों ने ख़ूब तरक़्क़ी की थी, और इसका अधिक श्रेय उन ख़लीफ़ों को है, जो विद्या के प्रेमी थे।

थोड़े ही दिनों के भीतर इतनी नई पुस्तकें और तैयार हुई हैं—

विदा (सचित्र मौलिक उपन्यास)	२॥), ३)	चित्रशाला द्वि० भा० (कहानियाँ)	१), १॥)
संभाषण (हिंदी-भाषा की उन्नति का विवेचन)	।), ॥)	पद्य-पुष्पांजलि (मिश्रबंधु का कविता-संग्रह)	१॥), २)
आहुति अथवा जयपाल (नाटक)	१), १॥)	पतिव्रता (सचित्र नाटक)	१।=), १॥=)
प्रेम-परीक्षा (मेरी कॉरेली का उपन्यास)	॥।=), १।=)	जब सूर्योदय होगा (सुंदर, सचित्र उपन्यास)	१), १॥)
देवी सीता (सचित्र पौराणिक उपाख्यान)	१॥), २)	कर्म-फल (रोचक, सचित्र उपन्यास)	१॥), २)
देवी शकुंतला	॥=), ॥।=) १=)	मदर-इंडिया का जवाब (पढ़ने योग्य पुस्तक)	१), १॥)
गिरिबाला (सचित्र उपन्यास)	१), १॥)	मुक्ति-मंदिर (साधु वास्वानी के व्याख्यान)	॥।=), १)
सौभाग्य-लाड़ला नेपोलियन	॥), १)	अबला (स्त्रियोपयोगी सचित्र उपन्यास)	१), १॥)
भगवान् गौतम बुद्ध	।=), ॥)	पतन (ऐतिहासिक सचित्र उपन्यास)	१॥), २)
दिलावर सियार	॥), ॥।)	मा (उपन्यास दो भागों में)	३), ४)
युधिष्ठिर	॥।), १)	मधुपर्क (कहानियाँ)	१॥), २)
परिमल ('निराला'जी की कविताओं का संग्रह)	१॥), २)	उत्सर्ग (वीररस-पूर्ण नाटक)	।=), ।)
		हृदय की परख (उपन्यास) द्वि० संस्करण	१), १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुभूति

[श्रीयुत "वीरात्मा"]

रहा तुम्हारे मधुर अंक में
जब तक प्रियतम ! इतने
थे न निकटतम मेरे, हो अब
दूर लोक से जितने।
क्षण में कैसे टूट गए वे
मेरे मीठे सपने;
गिरकर नीचे देख रहा अब,
हो तुम ऊँचे कितने!

❀ ❀ ❀

जितने ही तुम दूर दीखते,
उतने ही हो पास;
पीड़ा के क्रीड़ा-स्थल पर नित
मचा रहे हो रास।

पर बेहोशी की घड़ियों का
जब होता है अंत,
मिट जाता है क्षण में मेरा
सुंदर विश्व अनंत।

❀ ❀ ❀

सागर की लहरें तट पर आ
गातीं राग विराग;
क्षुद्र जगत् के मानस में जब
भर जाता अनुराग।
रो उठते तब 'तारे' मेरे,
"वैभव यह अस्थिर है!"
(इन्हीं तरंगों की 'श्रुतियों'-
सा क्या यह मेरा स्वर है?)

'सुधा' का 'राज-संस्करण'

जब से सुधा की साहित्य-संस्था निकली है, तभी से इसका एक राज-संस्करण भी निकाला जाता है, जो 'सुधा' के प्रेमी, अनुग्राहक ग्राहक बड़े-बड़े राजों, महाराजों, ताल्लुक़ेदारों, ज़मींदारों और सेठ-साहूकारों की सेवा में भेजा जाता है। इस 'राज-संस्करण' का प्रत्येक अंक, प्रति मास, बहुत बढ़िया मोटे, चिकने और चमकदार काग़ज़ पर, क़ीमती स्याही से छपता है। जो सज्जन कम-से-कम १०) रुपया साल देते हैं, उनकी सेवा में ही यह 'राज-संस्करण' भेजा जाता है।

जो सज्जन 'सुधा' के 'राज-संस्करण' के ग्राहक बनना चाहें, वे १०) रु० का मनीआर्डर भेजें और मनीआर्डर-कूपन पर 'राज-संस्करण' शब्द अवश्य लिखें। 'राज-संस्करण' का वी० पी० मँगानेवालों को भी अपने पत्र में 'राज-संस्करण' का ज़िक्र अवश्य कर देना चाहिए।

'राज-संस्करण' की १ कापी का दाम १) है। जो सज्जन 'राज-संस्करण' का नमूना देखना चाहें, वे १) के टिकट अवश्य भेजें। विना टिकट आए नमूना कदापि न भेजा जायगा।

☞ मैनेजर 'सुधा' (प्रबंध-विभाग), गंगा-पुतकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय धंधों का ह्रास

[श्रीयुत सत्यप्रकाश एम्० एस्-सी०]

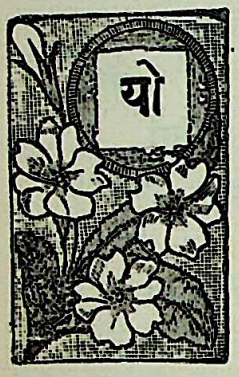

रपियन व्यापारियों के आने के बाद भारतवर्ष में पाश्चात्य विधियों का प्रयोग किया जाने लगा। अठारहवीं शताब्दि के आरंभ तक भारत के व्यापारियों और अँगरेज़, पुर्तगाल, फ्रांसीसी एवं डच सौदागरों में पारस्परिक विनिमय ही अधिक होता था। इन लोगों ने यतस्ततः अपनी फ़ैक्टरियाँ अवश्य खोली थीं, पर इन फ़ैक्टरियों में वे अधिकतर अपने रहने का प्रबंध करते और अपने दफ़्तर आदि रखते थे। आकस्मिक आक्रमणों से अपनी रक्षा करने के लिये ये आवश्यकतानुसार कुछ सेना भी रखने लगे। इस प्रकार इनकी फ़ैक्टरियों को छोटा-सा दुर्ग कहना चाहिए, न कि कारख़ाना। कुछ काल के उपरांत वैज्ञानिक साधनों के उपयोग से कुछ आवश्यक वस्तुओं का धंधा भी इस देश में आरंभ हो गया।

भारतवर्ष का अपना व्यापार भी बहुत बढ़ा-चढ़ा था। आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु अपने ही देश में तैयार कर ली जाती थी। कपड़े बुने जाते थे, खाद्य पदार्थ, शक्कर, मिसरी आदि तैयार किए जाते थे, खानों से धातुएँ निकाली जाती थीं, और उनको शोधकर बर्तन तैयार किए जाते थे, चाँदी, पीतल, लोहा, काँसा, सोना, सभी का व्यवहार होता था। इत्रों का व्यवसाय जितना इस देश में था, उतना उस समय कदाचित् ही किसी देश में होगा। यह भी भारतवासी अपनी ही विधि से तैयार करते थे। शोरे का व्यवसाय हमारे देश में बहुत ही था। इन्हीं शोरेवालों के आश्रय पर भारत की गोला-बारूद निर्भर थी। नमक भी झील, पहाड़ और समुद्रों से आवश्यक मात्रा में तैयार किया जाता था। रंगीन वस्त्रों के पहनने का जितना शौक़ भारतवासियों को रहा है, उतना और जगह के लोगों को नहीं। आज भी भारतीय महिलाएं और भारतीय बच्चे जिस रुचि से तरह-तरह के रंगों के कपड़े पहनते हैं, उतना और देशवाले क्या पहनेंगे। थोड़े दिनों पहले के पुरुषों को भी रंगीन कपड़े अच्छे लगते थे। ये रंग हल्दी, गेरू, टेसू, मंजीठ और नील से तैयार किए जाते थे। नील की कोठियाँ अभी कुछ दिनों तक बहुत पाई जाती थीं; जिनके अनेक स्थानों में अब केवल अवशेष ही देखने को मिल सकते हैं। सुहागा, फिटकरी, कसीस, पारा, वंग आदि अनेक वस्तुओं का भी धंधा इस देश में किया जाता था।

पर इन सब चीज़ों के व्यापार के लिये इस देश में बड़े-बड़े कारख़ाने नहीं थे। इन सबको घरेलू धंधा (या काटेज इंडस्ट्री) कह सकते हैं। आठ-दस काम करनेवाले मज़दूर रखकर एक-एक धंधा आसानी से चल जाता था। आजकल जहाँ खाँड़ का व्यवसाय देशी विधि से किस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाता है, काम करनेवाले चार-पाँच आदमी ही होते हैं। यही हाल तेल पेरने और लाख, चूड़ी आदि के काम करनेवालों का है। वस्त्रों के कारखाने में एक-दो चरखे, एक-दो करघे और दो-तीन काम करनेवाले आदमी। इस प्रकार एक नगर में छोटे-छोटे अनेक कारखाने बराबर चलते रहते थे। क़न्नौज में यदि इत्र का काम होता है, तो वहाँ घर-घर यही काम पावेंगे। बनारस में यदि पीतल का व्यवसाय है, तो इसका तात्पर्य यह कभी नहीं कि वहाँ पीतल की बड़ी भारी फ़ैक्टरी होगी। बस, यही कि किसी विशेष मोहल्ले या प्रत्येक गली में इसका छोटा-छोटा काम होते पाइएगा।

आजकल के पाश्चात्य व्यापार का ढंग दूसरा है। वहाँ कई संपत्तिशाली व्यक्ति मिलकर एक बड़ा कारखाना खोलते हैं, और फिर वह कार्य आरंभ करते हैं। उनकी एक-एक कारखाना हमारे एक-एक नगर के बराबर है। इसका प्रभाव यह होता है कि वे थोड़े-से व्यय में बहुत-सी वस्तु तैयार कर सकते हैं। हमारे देश में जहाँ हाथ का उपयोग होता है, वहाँ उनका कार्य यंत्रों द्वारा होता है।

पाश्चात्य व्यापार के कारखाने आर्थिक स्थिति के हिसाब से अच्छे और बुरे, दोनो ही हैं। अंतर-जातीय व्यापारिक सफलता प्राप्त करने के लिये यंत्रों का उपयोग अनिवार्य है, पर व्यवसायहीनता का प्रश्न इनसे उत्तरोत्तर जटिल ही होता जायगा।

भारतवर्ष की समस्या विचित्र है। यहाँ पाश्चात्य विधियों का अनुसरण करनेवाले कारखाने तो खुलने नहीं पाते, पर घरेलू धंधे उत्तरोत्तर बंद होते जा रहे हैं। इसलिये देश का दोनो ही प्रकार से घाटा है। यदि हमारे चरखे-करघे की जगह वस्त्रों के बड़े-बड़े कारखाने हमारे पूँजीपतियों द्वारा खोल दिए जाते, तो हमें कोई आपत्ति न होती, प्रत्युत ऐसा होना हितकर ही था। पर हुआ क्या कि कारखाने तो खुले नहीं, हमने चरखे-करघे का भी उपयोग छोड़ दिया। विदेश से तैयार होकर हमारे लिये वस्त्र आने लगे।

जो वस्तु भारतवर्ष में न हो, वह यदि विदेश से हमारे यहाँ आवे, तो अधिक आपत्ति नहीं है—जैसे चाँदी। चाँदी का व्यवहार भारतवर्ष में बहुत किया जाता है; पर हमारे देश में यह बहुत कम पाई जाती है। प्रतिवर्ष १५,००,००,००० रुपयों की यह विदेश से आती है। उत्तरी बर्मा के शान-राज्यस्थ बौडविन में तीन लाख औंस चाँदी, जिसका मूल्य पाँच लाख रुपए के लगभग है, अवश्य तैयार की जाती है।

ताँबा हमारे देश में सिंहभूमि, छोटा नागपुर, अजमेर, अलवर, सिक्किम आदि स्थानों में बहुतायत से पाया जाता है। पर आजकल सिंहभूमि को छोड़कर और कहीं इसका सफल व्यवसाय नहीं हो रहा है। अजमेर, जयपुर और राजपूताने के अन्य स्थानों में ताँबे और काँसे के बहुत-से अच्छे धंधे थे; पर विदेश से आनेवाले ताँबे की ये सस्तेपन में समता न कर सके। प्रभाव यह हुआ कि ताँबे का धंधा भी भारतवर्ष से उठा जा रहा है। विचार तो कीजिए कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ताँबा-जैसी वस्तु भी प्रतिवर्ष तीन करोड़ रुपए के लगभग मूल्य की विदेश से हमारे यहाँ आ रही है।

लोहा इस देश में बहुत मिलता है। मोरभंज, मध्यप्रदेश के रायपुर, बर्दवान, सिंहभूमि आदि में इसकी अच्छी खानें हैं। लोहे के खनिजों से पहले पिग (Pig)—लोहा तैयार किया जाता है, और फिर उससे इस्पात आदि तैयार करते हैं। सन् १९२५ में, भारतवर्ष में, लोहे के खनिज इस प्रकार पाए गए—

मोरभंज	९,५७,२७५	टन मूल्य	२८,७१,८२५रु०
संबलपुर	७०३	,, ,,	४,९२० ,,
सिंहभूमि	४,७७,५८०	,, ,,	१२,३६,८४० ,,
मध्यप्रदेश	१,०३७	,, ,,	४,१८२ ,,
मैसूर	५६,२१८	,, ,,	१,५,४,००० ,,
समस्त भारत से	१५,४४,५७८	,,	४,४७,९१०१ ,,

इस खनिज से पहले पिग-लोहा तैयार किया जाता है। पर लोहे का असली मूल्य इस्पात बनाने में है। ताता-कंपनी, (जमशेदपुर) इसके लिये एक बहुत बड़ा कारखाना है, जिसमें सन् १९२५-२६ में ८, ७२, ५४७ टन इस्पात तैयार किया गया। शेष पिग-लोहा इस्पात बनने के लिये निम्न-देशों में भेज दिया गया—

	टन	रुपया
यूनाइटेड किंगडम	२०,१७८	९,३३,९१६
जर्मनी	११,२८८	५,२४,५०९
जापान	१,६८,१८८	७६,५७,०२५
यूनाइटेड स्टेट अमेरिका	१,५६,०६४	७२,१८,०३६
सब देशों को मिलाकर	३,८१,९८९	१,७५,५०,२०४

इस प्रकार हमारे देश में कारखानों के अभाव के कारण इतनी संपत्ति का नाश हो रहा है। विदेश से प्रतिवर्ष कुल ३५ करोड़ रुपए के लगभग का लोहा इस देश में आ रहा है। यह संख्या कुछ कम हृदय-विदारक नहीं है।

अल्यूमिनियम धातु (रफटम्) की दशा इस देश में और भी अधिक शोचनीय है। इस धातु का मुख्य खनिज बौक्साइट कहलाता है। यह खनिज जितना भारतवर्ष में पाया जाता है, उतना और देशों में नहीं। पर खेद की बात केवल इतनी ही है कि इस खनिज से धातु तैयार करने की कोई आयोजना हमारे देश में नहीं है। अतः अल्यूमिनियम के लिये समस्त खनिज विदेशों में भेज दिया जाता है। इस धातु के बनाने के लिये बिजली की भट्ठियों की आवश्यकता पड़ती है; पर इस देश में बिजली का प्रचार बहुत कम होने के कारण बिजली तेज़ पड़ती है। यदि हमारे धनी लोग इस व्यवसाय की ओर ध्यान दें, तो हमें इतनी हानि न उठानी पड़े। विदेश से आने पर भी यह धातु कितनी सस्ती और उपयोगी है। कहीं यदि हमारे ही देश में यह तैयार होने लगे, तो फिर इसका क्या कहना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर,
नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोष-प्रद होने की गैरंटी!

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फाइन आर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुधा

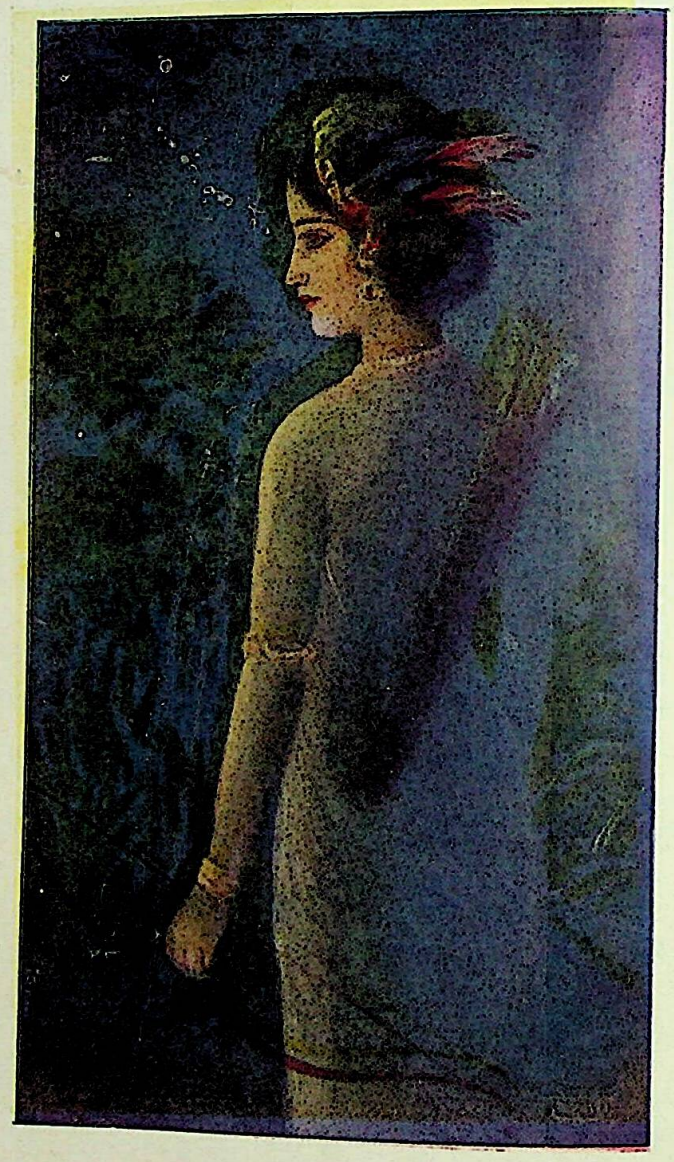

वीर रमणी

[चित्रकार—श्रीमाहेश्वरीप्रसाद]

Ganga Fine Art Press, Lucknow
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शोरे के व्यवसाय की अवस्था हमारे देश में प्रतिवर्ष शोचनीय होती जा रही है। यही नहीं, इसकी दशा बिलकुल उलटी हो गई है। पहले बिहार-प्रांत से शोरा अमेरिका और योरप को बहुत भेजा जाता था। पर अब विदेशों में यह कृत्रिम रासायनिक विधियों से भी तैयार किया जाने लगा है। आज देश की अवस्था यह हो गई है कि दक्षिणी अमेरिका के चिली-प्रांत का शोरा हमारे देश में विदेशी कंपनियों द्वारा बहुत भेजा जा रहा है। खेद इस बात का है कि हमारे कृषि-विद्या-विशारद चिली के शोरे की खाद का उपयोग करने के लिये किसानों को परेशान कर रहे हैं। भारत के शोरे और चिली के शोरे में थोड़ा-सा भेद है। भारत के शोरे का रासायनिक नाम पांशुजनोषेत है, जिसमें ३९ प्रतिशत नोषजन (नाइट्रोजन) होता है। चिली के शोरे का रासायनिक नाम सैंधकनोषेत है, जिसमें २७ प्रतिशत नोषजन होता है।

खाद की उपयोगिता नोषजन की मात्रा पर निर्भर है। इस प्रकार यह स्पष्ट ही है, कि चिली के शोरे से भारत का शोरा अधिक अच्छी खाद बना सकता है। चिली का शोरा कदाचित् कुछ सस्ता आता हो। उसका कारण यह है कि चिली-प्रदेश में ७७,००० वर्गमील के बीच में यह शोरा विद्यमान है, जिसकी मात्रा अनुमानतः २४,००,००,००० टन है। पर जिस हिसाब से यह शोरा खर्च हो रहा है, उससे यह केवल १०० वर्ष या अधिक-से-अधिक ३०० वर्ष तक काम में आ सकता है। भारतवर्ष में आजकल सत्रह हज़ार टन के लगभग शोरा प्रतिवर्ष तैयार किया जाता है। पहले केवल बिहार-प्रांत में ही बीस हज़ार टन तैयार किया जाता था। प्रतिवर्ष यह व्यवसाय कम ही होता जा रहा है। हमने कृत्रिम विधियों से शोरा तैयार करना सीखा ही नहीं। अतः भविष्य में हमें इसके लिये दूसरों का ही मुँह तकना होगा। यह परतंत्रता राज्य की परतंत्रता से भी अधिक भयंकर होगी। जर्मन आदि देशों में वायु के नोषजन से शोरे के समान अनेक उपयोगी खादें बनाई जा रही हैं, अतः वे लोग अब प्राकृतिक शोरे के दासत्व से मुक्त हो गए हैं।

भारत की एक प्रसिद्ध वस्तु फिटकरी थी इसका उपयोग रंग और चमड़े के व्यवसाय में किया जाता है। कच्छ, राजपूताना और पंजाब के कुछ स्थानों में इसके अच्छे धंधे थे; पर इसक व्यवसाय भी अब बंद हो रहा है। काला बाग़ और कच्छ में ही कुछ रह गया है।

सुहागा भारत की मुख्य वस्तु नहीं है; क्योंकि यह लदख़ (पूगा घाटी) और तिब्बत के सोतों और खारी झीलों में पाया जाता है। पर जब से अमेरिका में खटिकटंकेत की प्रचुर राशि का पता चला है, तब से यहाँ का व्यवसाय बहुत ही कम हो गया है। पहले १६,००० हंडरवेट सुहागा उक्त स्थानों में तैयार किया जाता था; पर अब केवल ४,५०० हंडरवेट प्रतिवर्ष ही का धा रह गया है। कहने का तात्पर्य यह कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विदेशों का उत्कर्ष हमारे यहाँ के धंधों को बड़े वेग से खाए जा रहा है।

नील की कहानी बहुत रोई जा चुकी है। रसायन-शास्त्र का उपयोग करके जर्मनी ने कृत्रिम नील का संश्लेषण किया। उसमें उसे इतनी सफलता हुई कि भारतवर्ष के नील के कारखाने धड़ाधड़ बंद होने लगे। कारखानों को बंद करने के पूर्व यदि हमारे देश में भी कृत्रिम नील के कारखाने खोल दिए जाते, तो हमें कोई आपत्ति न होती। हुआ यह कि जो कुछ हमारे पास था, उससे भी हम हाथ धो बैठे। सन् १८८२ में बायर और ड्रूसन ने तथा सन् १८९० में ह्यूमन ने नील की विधि पेटेंट कराई। तब से अब तक नील के व्यवसाय की जो दुर्दशा हुई, वह सर्व-विदित है। सन् १८९३ में, भारत में, १५,००,००० एकड़ भूमि में नील की खेती की जाती थी। सन् १९१४ में यह केवल १,५०,००० ही अर्थात् पहले का दसवाँ भाग ही रह गई। महायुद्ध के दिनों में जर्मन-प्रदेश से भारत में नील आना बंद हो गया था, अतः नील की खेती फिर कुछ बढ़ी, और सन १९१७ में ७,५०,००० एकड़ तक हो गई। पर युद्ध समाप्त होने के बाद ही फिर इसकी खेती कम हो गई। अब इसके व्यवसाय की उन्नति की कोई आशा नहीं है।

यही हाल मंजीठ के रंग का हुआ। सन् १८६८ में ग्रावे और लीबरमैन ने कृत्रिम मंजीठ का रंग तैयार किया। तब से प्राकृतिक मंजीठ [illegible] लुप्त होने लगा, और अब प्राकृतिक रंग देखने [illegible] भी मिलना दुष्कर है। यही हाल कृत्रिम सुगंधों का भी हुआ। यद्यपि भारत में अब भी चमेली, गुलाब, केवड़ा, खस आदि के इत्र बहुतायत से तैयार किए जाते हैं, पर विदेशी कृत्रिम सुगंध [illegible] बाज़ार में बहुत आने लगे हैं। कस्तूरी की कृत्रिम सुगंध भी बर्गमैन, बौर आदि वैज्ञानिकों ने बना [illegible] है। और भी अनेक सुगंधित पदार्थ बनाए [illegible] हैं; पर अभी प्राकृतिक और कृत्रिम, दोनों प्रकार की सुगंध व्यवहार में आ रही हैं, अतः भारतीय व्यवसाय पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ा।

विज्ञान की उन्नति योरप और अमेरिका के देशों में हुई। भारतवर्ष ने वैज्ञानिक साधनों से बहुत ही कम अपनाया; पर वैज्ञानिक साधनों द्वारा बनाई गई वस्तुओं का इसने खुले दिल से स्वागत किया। इसका परिणाम यही होना था कि [illegible] अपने प्राचीन धंधे तो छोड़ दिए, और विदेशों के अधीन हो गया। इस अवसर पर हमारा अनुरोध यह है कि या तो नवीन वैज्ञानिक साधनों को अपने देश में उपयोग करके बड़े-बड़े कारखाने खोले जायँ, अथवा जब तक ऐसा न हो सके अपने प्राचीन धंधों को ही जाग्रत् किया जाय। आर्थिक परतंत्रता से बढ़कर पराधीनता [illegible] कोई नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राज्य-क्रांति क्यों होती है ?

[श्रीयुत अर्जुनप्रसादसिंह विद्यालंकार, बी० ए०, बी० सी०]

जब कोई शासक शासित की इच्छा के विरुद्ध आचरण करता है, और चाहता है कि बल-पूर्वक अपनी हुकूमत का बोझ शासित पर लादे, तो उसका बिगड़ उठना स्वाभाविक हो जाता है, और इस प्रकार 'क्रांति' की भीषण अग्नि में बल-प्रयोग का घृत पड़ जाता है, और वह विकराल रूप धारण कर लेती है—छल, प्रपंच (fraud) भी क्रांति देवी के भारी सहायक हैं।

कभी-कभी नागरिकों को उसका शासक यह कहकर सांत्वना देता है कि वह शासन-प्रणाली में बहुत कुछ सुधार करेगा; पर जब वह देखता है कि 'क्रांति' का प्रबल प्रवाह कुछ ढीला पड़ गया, तो उलटे शासित की इच्छा के विरुद्ध उसे अपने क़ब्ज़े में लाने का प्रयत्न करता है। जनता से चिकनी-चुपड़ी बातें कहकर अपनी ओर मिला लेता है; पर जब जनता को इसकी सूचना मिलती है, तो वह बिगड़ उठती है।

जिस देश में अनेक धर्म के लोग होते हैं, वहाँ तो 'क्रांति' होने की और भी ज्यादह संभावना रहती है; कारण कि वहाँ के लोगों का भिन्न-भिन्न हित (interest) रहता है। इस वजह से छोटी-छोटी बातों के लिये उनमें बराबर मतभेद हो जाया करता है। इसके अलावा और भी 'क्रांति' होने के कितने ही कारण हैं, जो सार्वभौम हैं। नमूने के तौर पर मैं यहाँ कुछ का नाम उद्धृत किए देता हूँ। * १—समानाधिकार प्राप्त करने की ख्वाहिश २—सम्मान-प्राप्ति की प्रबलेच्छा ३—भय ४—महत्त्वाकांक्षा ५—घृणा, अपमान (contempt) ६—चुनाव-षड्यंत्र ७—असावधानी एवं छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं देना। कभी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता है—फलतः शासन-प्रणाली में एकबारगी बड़ा भारी परिवर्तन हो जाता है।

सुक़रात (Socratis) ने राज्य के तीन साधारण प्रकार बताए हैं। १—प्रजातंत्र † २—कुलीनतंत्र ३—राजतंत्र। और, प्रत्येक में राज्य-क्रांति अवश्यंभावी है।

प्रजातंत्र में विशेषतः देखा जाता है कि जिसे बोलने की अच्छी क्षमता हुई, वह झट अपनी वाक्-पटुता से लोगों पर अपना प्रभाव जमा लेता है, और धनी लोगों के विरुद्ध झूठी अफ़वाहें उड़ाया करता है। भोली-भाली जनता समझती है कि ये हमारे हितेच्छु हैं, और उन पर झट विश्वास कर लेती है। वह damagogue (धूर्तफंदी नेता) अवसर पाकर राज्य के विरुद्ध भी 'क्रांति' ला देता है, और आप कोई बड़ा पद लेकर बैठ जाता

* लेख के विस्तार-भय से हरएक विषय पर टिप्पणी नहीं की गई है।

† वह शासन-प्रणाली जहां प्रजा ही सर्वेसर्वा हो। (The Govt. for the people byt he deodle)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। राजनीति-विशारद अरस्तू (Aristotle) महोदय यूनान के नगर-राज्य (city state) के विषय में फ़रमाते हैं कि उस ज़माने में जब कि नगर राज्य-शासन का छोटा केंद्र था, तो ऐसी घटनाएँ बराबर घटा करती थीं।

स्वार्थीकुलीनतंत्र (Oligarchy) में ज़्यादह 'क्रांति' होने की संभावना रहती है। जब Oligarchs अपनी प्रजा पर बहुत अत्याचार करता है, और प्रजा को यह असह्य हो जाता है, तो Oligarchs की वही हालत होती है, जो एशिया के 'ज़ार' और फ्रांस के १६वें लुई की हुई थी। Oligarchs के आपस की स्पर्द्धा के कारण भी 'क्रांति' उग्र रूप धारण करती है।

कुलीनतंत्र (Aristocracy) में शासन की बागडोर इने-गिने सुप्रतिष्ठित व्यक्तियों के हाथ में होती है। जब कभी कुछ व्यक्ति किसी कारण से शासन-कार्य में भाग लेने से वंचित किए जाते हैं, तो वे बिगड़ उठते हैं. और भारी 'क्रांति' ला देते हैं।

'क्रांति' को दबाने के कुछ उपाय

मेकियावेली-जैसे विचार रखनेवाले कूट-नीतिज्ञों का कहना है कि शासक को चाहिए कि 'क्रांति' होने के क़ब्ल (Precautionary measures) (पहले ही से यत्न करना) ले, और जनता की जो कुछ माँग हो, उसे यथासाध्य पूरा करने की चेष्टा करे। ख़ास करके नागरिकों के बीच में विषम-वृद्धि (disporportionate increase) न होने दे। जन-प्रिय बनने के ख़याल से शासक को किसी नागरिक को बड़ा अधिकार न देना चाहिए, जिससे उसको अपनी ही शक्ति पर घमंड पहुँचे। शासक को बराबर मध्यम नीति (Moderate policy) से काम लेना चाहिए। इसके लिये दूसरा उचित उपाय यह भी हो सकता है कि विरुद्ध पक्ष को बराबर राज्य-प्रबंध में स्थान दिया जाय, चाहे वह व्यक्ति दरिद्र, धनी या कुछ भी क्यों न हो; पर यह ध्यान रखना होगा कि वह नेक-नियत है। दरिद्र एवं धनी, दोनों को मिलाकर एक सूत्र में बाँध देना चाहिए, जिससे एक मध्यम श्रेणी (middle class) के लोग तैयार हो जायँ, जिससे प्रारंभ ही में 'क्रांति' पर कुठाराघात कर दिया जा सके। नागरिकों का भी यह फ़र्ज़ होना चाहिए कि वे बराबर अपने में सद्भाव बनाए रक्खें।

प्रजातंत्र-राज्य में धनी लोगों की संपत्ति और उनकी आमदनी बराबर करके सब प्रजा में बाँट दी जानी चाहिए, जिससे नागरिकों में शक्ति-संतुलन सदा क़ायम रहे। इससे यह भी होगा कि पूँजीपति और मज़दूर में कोई भेद नहीं रह जायगा। पूँजीपति लोग देश का असंख्य धन शौक़ीनी के प्रवाह में बहाया करते हैं, और एक तरफ़ मज़दूर लोगों को सर्वदा फ़ाक़ेकशी की नौबत लगी रहती है। यह अन्याय किसी हद तक कम हो जायगा।

स्वार्थी कुलीनतंत्र (Oligarchy)

इस प्रकार की शासन-प्रणाली में ख़ास करके ग़रीबों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए, और राज-कार्य में उसे ही स्थान देना चाहिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनमें बहुत ऐसे-ऐसे गुण होते हैं, जो धनिकों में कम पाए जाते हैं, जैसे शासन करने की क्षमता आदि।

राजतंत्र (Monarchy)

इस प्रकार की शासन-प्रणाली में राजा प्रजा की उन्नति नहीं देखना चाहता (यहाँ मेरा अभिप्राय अनियंत्रित राजा से है)। वह बराबर देखता रहता है कि उसके विरुद्ध कोई षड्यंत्र तो नहीं हो रहा है ? या उसकी रिआया को कोई भड़का तो नहीं रहा है ? वह किसी प्रकार की साहित्यिक संस्था को क़ायम नहीं होने देता, और उसकी सफलता के मार्ग में रोड़े अटकाया करता है। उसके राज्य में कहाँ क्या हो रहा है, इसको जानने के लिये वह ख़ुफ़िया पुलीस का विभाग रखता है। वह अपने राज्य को सुदृढ़ रखने के लिये भेदनीति (Divide and rule) से काम लेता है। वह प्रजा पर इतना कर का बोझ लाद देता है, जिसको वहन करने में उसकी प्रजा असमर्थ हो जाती है। इस रक्त-शोषण की नीति से प्रजा बिलकुल खोखली हो जाती है। वह अपने मित्रों पर भी विश्वास नहीं करता। संग्राम-प्रेमी होना तो इसका प्रधान धर्म ही है।

शीघ्र आवश्यकता है

१—हिंदी की अद्वितीय पत्रिका सुधा तथा गंगा-पुस्तकमाला की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के प्रचार के लिये कुछ ऐसे मिडिल-पास लड़कों की जो १००) की नक़द ज़मानत दे या दिला सकें। १०) मासिक वेतन और हेडक्वार्टर से बाहर होने पर १०) मासिक ख़ूराक और साथ में सफ़र-ख़र्च, जो १०) मासिक से अधिक न हो, दिया जायगा।

२—कुछ ऐसे हिंदी-प्रेमी और उत्साही नवयुवकों की जो ५००) की नक़द ज़मानत दे या दिला सकें। यू० पी०, सी० पी०, बिहार और राजपूताना में से किसी एक प्रांत में इन्हें पुस्तकों के प्रचार का आयोजन करना होगा। २५) मासिक वेतन और हेडक्वार्टर से बाहर होने पर छः आना रोज़ ख़ूराक और साथ में सफ़र-ख़र्च, जो १०) मासिक से अधिक न हो, दिया जायगा।

३—कुछ ऐसी पढ़ी-लिखी स्त्रियों की, जो १००) या ५००) की नक़द ज़मानत दे या दिला सकें। नगरों में घूमकर और घरों में जाकर इन्हें पुस्तकें बेचनी और सुधा के ग्राहक बनाने होंगे। वेतन योग्यतानुसार २०) से ४०) तक दिया जायगा।

ज़मानत के रुपए पर १२) सैकड़ा प्रतिवर्ष सूद दिया जायगा। अपनी जाति, आयु, योग्यता और अनुभव का उल्लेख करते हुए नीचे-लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। सार्टीफ़िकेट कोई हो, तो उसकी नक़ल भी भेजें।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २३-२५, लाटूशरोड, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कसौटी*

[बाबू रामचंद्र टंडन एम्० ए, एल्-एल्० बी०]

एक राजा था। संसार में उसका बड़ा मान था। उसकी मुसकान फूल के सुगंध की भाँति मीठी थी; परंतु आत्मा संकुचित थी। उसके दो बेटे थे। छोटा बेटा तो उसके मन का था। बड़े बेटे से वह भय खाता था। एक बार, दिन निकलने से पहले ही, राजा के दुर्ग में, नगाड़े की आवाज़ हुई। राजा अपने दोनो बेटों के साथ घोड़े पर सवार होकर निकला। उनके पीछे और भी सजे हुए जवान थे। दो घंटे तक सब-के-सब चलते रहे। इसके बाद वे एक भूरी पहाड़ी के तले पहुँचे। इस पहाड़ी की चढ़ाई बड़ी कठिन थी।

बड़े बेटे ने पूछा—"हम लोग कहाँ चल रहे हैं?"

राजा ने कहा—"इस भूरी पहाड़ी के उस पार।" यह कहकर राजा अपने मन में मुसकिराया।

छोटा बेटा बोला—"पिताजी जो करते हैं, ठीक करते हैं।"

दो घंटे तक सब लोग और चलते रहे। आगे एक काली नदी मिली। यह नदी बड़ी गहरी थी।

बड़े बेटे ने पूछा—"हम लोग कहाँ चल रहे हैं?"

राजा ने कहा—"इस काली नदी के उस पार।" यह कहकर राजा अपने मन में मुसकिराया।

छोटा बेटा बोला—"पिताजी जो करते हैं, ठीक करते हैं।"

इसके बाद सब लोग दिन-भर चलते रहे। जब सूर्य डूबने का समय आया, तब वे एक झील के किनारे पहुँचे। यहीं पर एक दूसरा बड़ा दुर्ग था।

राजा ने कहा—"हम लोग यहीं आए हैं। यह एक ऐसे राजा का घर है, जो एक महान् पंडित भी है। इस घर में तुम बहुत कुछ सीखोगे।"

पंडित राजा इन सबका स्वागत करने के लिये दुर्ग के द्वार पर आया। वह एक गंभीर-चित्त मनुष्य था। उसके पास ही उसकी बेटी खड़ी थी। वह प्रभात-काल की भाँति सुंदर थी। उसने मुसकिराकर आँखें नीची कर लीं।

पहले राजा ने कहा—"ये मेरे दोनो बेटे हैं।"

पंडित राजा ने कहा—"और यह मेरी बेटी है।"

पहले राजा ने कहा—"यह कुमारी परम सुंदरी है। इसकी मुसकान मुझे बड़ी भली मालूम होती है।"

दूसरे ने कहा—"ये बड़े हृष्ट-पुष्ट कुमार हैं। मैं इनकी गंभीरता पसंद करता हूँ।"

इसके बाद दोनो राजों ने एक दूसरे की ओर देखा, और कहा—"संभव है, संयोग मिल जाय।"

इधर दोनो लड़कों ने भी कुमारी की ओर देखा। एक तो उसे देखकर पीला पड़ गया; दूसरे के मुँह पर लाली झलक आई। कुमारी सिर नीचा करके मुसकिराने लगी।

बड़े ने कहा—"इस कुमारी के साथ मैं ब्याह करूँगा; क्योंकि यह मुझे ही देखकर मुसकिराई है।"

छोटे बेटे ने अपने पिता की आस्तीन पकड़कर कहा—"पिताजी, मैं आपके कान में एक बात कहना चाहता हूँ। अगर आपकी मुझ पर कृपा है, तो आप आज्ञा दें कि मैं इस कुमारी से ब्याह कर लूँ; क्योंकि मुझे ही देखकर यह मुसकिराई है।"

राजा ने छोटे बेटे से कहा—"तुम्हारे कान में एक बात कहता हूँ। देखो, जल्दी न करो। अभी अपनी ज़बान से कोई बात न निकालो।"

इसके बाद सब दुर्ग के भीतर गए। दावत की तैयारी की गई। यह मकान इतना बड़ा था कि कुमार लोग इसे देखकर आश्चर्य में थे। पंडित राजा मेज़ के एक किनारे चुप बैठा था। उसे मौन देखकर कुमारों ने

* स्काटलैंड के प्रसिद्ध साहित्यिक स्व० राबर्ट लुई स्टिवेंसन की एक कहानी का अविकल अनुवाद। यह कहानी लेखक के जीवन-काल में न प्रकाशित हो सकी थी।—लेखक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मन में बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हुई। कुमारी आँखें नीची किए हुए और मुसकिराती हुई भोजन परस रही थी। कुमारों के हृदय आनंद से विह्वल थे।

सवेरा होने से पहले ही बड़ा बेटा सोकर उठा। उसने देखा, कुमारी कपड़ा बुन रही थी। कुमारी बड़ी कामकाजी लड़की थी। बड़े बेटे ने उसके पास जाकर कहा—"कुमारी, मैं तुमसे ब्याह करना चाहता हूँ।"

कुमारी ने कहा—"मेरे पिता से कहो।" मुसकिराकर उसने अपनी आँखें नीची कर लीं। उस समय वह गुलाब की तरह सुंदर थी।

बड़े बेटे ने सोचा—"इसका जी मुझसे लगा है।" वह झील के किनारे चला गया, और गीत गाने लगा।

कुछ देर बाद छोटा बेटा आया। बोला—"कुमारी, हम लोगों के पिता राज़ी हों, तो मैं तुमसे ब्याह करना चाहता हूँ।"

कुमारी ने कहा—"मेरे पिता से कहो।" उसने आँखें नीची कर लीं। वह मुसकिराई। इस समय भी उसकी सुंदरता गुलाब की भाँति थी।

छोटे बेटे ने सोचा—"यह बड़ी आज्ञाकारिणी पुत्री है। अवश्य यह आज्ञाकारिणी स्त्री भी बनेगी।" फिर उसने सोचा—"क्या करना चाहिए?" और यह विचार करके कि कुमारी का पिता पंडित है, वह मंदिर में गया। वहाँ उसने एक भेड़े और एक ख़रगोश का बलिदान चढ़ाया।

धीरे-धीरे बात फैलने लगी। एक दिन पंडित राजा अपने ऊँचे सिंहासन पर बैठा। उसने पहले राजा को और उसके दोनो बेटों को बुलवाया।

पंडित राजा ने कहा—"न मुझे वैभव की चाह है, और न बल की। हम लोगों का जीवन छाया-जीवन की भाँति है। मेरा हृदय वैभव और बल, दोनो ही देखकर खिन्न हो चुका है। हम लोग इस संसार में इस प्रकार रहते हैं, जैसे गीला वस्त्र हवा में सूखने के लिये डाल दिया गया हो। वायु के संपर्क से भी मेरा जी भर गया है। मैं केवल एक वस्तु का मूल्य लगाता हूँ, वह वस्तु है 'सत्य'। मैं अपनी बेटी उसी से ब्याह दूँगा, जो मुझे सत्य की कसौटी ला दे। उस पत्थर की ज्योति में वस्तुएँ अपना बाहरी आवरण छोड़ देती और सच्चा रूप धारण कर लेती हैं। उसके आगे सभी वस्तुएँ तुच्छ हैं। अतएव कुमारो, यदि मेरी बेटी से ब्याह करना चाहते हो, तो इसी समय चल खड़े हो। जो मुझे सत्य की कसौटी लाकर देगा, उसी से मेरी पुत्री का ब्याह होगा। वही मेरी पुत्री का मूल्य है।"

छोटे बेटे ने अपने पिता से कहा—"तनिक कान में सुन लीजिए। मेरे विचार में हम लोगों का इस पत्थर के फेर में न पड़ना ही अच्छा।"

पिता ने भी कहा—"कान में सुनो। मेरा भी यही ख़याल है। परंतु मुँह से कोई बात निकालना ठीक नहीं।" यह कहकर वह पंडित राजा की ओर देखने और मुसकिराने लगा।

परंतु बड़ा बेटा उठ खड़ा हुआ। उसने पंडित राजा को 'पिता' कहकर संबोधन किया। बोला—"मेरा इस कुमारी के साथ ब्याह हो चाहे न हो, मैं आपको इसी नाम से पुकारूँगा; क्योंकि आप विद्वान् हैं, और वयोवृद्ध भी। मैं अभी घोड़े पर सवार होकर इस कसौटी की खोज में संसार में भ्रमण करता हूँ।" यह कहकर वह बिदा हुआ, और कसौटी की खोज में निकल पड़ा।

छोटे बेटे ने कहा—"मैं समझता हूँ, मुझे भी जाना चाहिए। अगर आपकी आज्ञा हो, तो मैं भी जाऊँ। इस कुमारी ने मुझे मोहित कर लिया है।"

उसके पिता ने कहा—"तुम मेरे साथ घर चलो।"

अतएव वे दोनो घर लौट आए। जब अपने दुर्ग में पहुँच गए, तो राजा अपने बेटे को ख़ज़ाने में ले गया। कहने लगा—"यह लो, यही सत्य की कसौटी है। जो वस्तु प्रकट में जैसी है, वही उसका सत्य रूप है। तुम इसे देखो, इसमें तुम्हें अपना यथार्थ रूप दिखाई पड़ेगा।"

छोटे बेटे ने उसे देखा, तो उसमें उसे अपना मुँह दिखाई दिया। अपनी चिकनी ठुड्ढी को, अपनी युवावस्था को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसके हाथ में एक साधारण दर्पण था।

उसने सोचा—"यह कौन ऐसी वस्तु है, जिसके लिये इतनी आपत्ति सिर पर उठाई जाय। परंतु इसके द्वारा यदि मुझे कुमारी प्राप्त हो जाय, तो मैं संतुष्ट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हूँ। मेरा भाई कितना मूर्ख है कि इसके लिये दुनिया की ख़ाक छानने निकला है। चीज़ तो घर ही पर मौजूद है"

वे लोग फिर लौटकर पंडित राजा के दुर्ग में आए। दर्पण पंडित राजा को दिखाया। बोले—"यही सत्य की कसौटी है।" पंडित राजा ने दर्पण देखा। अपने को एक राजा की भाँति पाया। उसका घर राजा के घर की भाँति दिखाई दिया। सभी वस्तुएँ जैसी-की-तैसी देखीं। वह ईश्वर को धन्यवाद देने लगा। उसने कहा—"अब मैं समझा। जो वस्तु प्रकट में जैसी है, वही उसका सत्य रूप है। मैं वास्तव में राजा हूँ! मेरा हृदय नहीं मान रहा था।" उसने अपने मंदिर को तुड़वा दिया। एक दूसरा महल बनवाया। छोटे बेटे के साथ कुमारी का ब्याह हो गया।

उधर बड़ा बेटा सत्य की कसौटी पाने के लिये दुनिया की ख़ाक छान रहा था। जब किसी नई बस्ती में पहुँचता, तो लोगों से उसका हाल पूछता। सभी यही कहते कि "इसका हाल हमने केवल सुना ही नहीं; वह वस्तु भी हमारे ही पास है। हमारे घर में अँगीठी के पास रक्खी है।" इस पर कुमार प्रसन्न होता। उसे देखना चाहता। कभी वह वस्तु दर्पण निकलती, जिसमें वस्तुएँ ज्यों-की-त्यों दिखाई देतीं। इस पर वह कहता—"यह वह वस्तु नहीं हो सकती। इसमें तो वस्तुओं की बाहरी दिखावट का प्रतिबिंब-मात्र है। इससे काम न चलेगा।" कभी कोई कोयले का ढेला दे देता। इस पर भी वह कहता—"यह वह वस्तु नहीं हो सकती, इसमें तो कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता।" कभी-कभी उसे सचमुच कोई सुंदर, रंगीन और चमकदार पत्थर मिल जाता। जब उसे ऐसी वस्तु मिलती, तो उसे वह लोगों से माँग लेता। लोग उसे वह वस्तु दे देते; क्योंकि लोग यह वस्तु बड़ी प्रसन्नता से दे डालते थे। अंत में बड़े बेटे का थैला ऐसे पत्थरों से भर गया। जब वह घोड़े पर चलता, तो ये पत्थर एक दूसरे से टकराकर बजते। जब वह कहीं ठहरता, तो इनको थैले से निकाल लेता। एक-एक करके सबको देखने लगता—यहाँ तक कि उसका सिर चक्की के पहिए की तरह चक्कर खाने लगता।

कुमार ने कहा—"भला, इस काम का भी कोई ठिकाना है। अंत होने ही नहीं आता। यह लाल पत्थर है, तो यह नीला है, यह हरा है। सभी बहुत अच्छे जान पड़ते हैं। सभी एक दूसरे को मात कर गए हैं। पत्थर पड़े ऐसे व्यापार पर! यदि उस पंडित राजा का ध्यान न होता, जिसे मैंने 'पिता' कहकर संबोधन किया है, और उस दुर्ग की सुंदरी कुमारी का, जिसका ध्यान आते ही मेरे मुँह से गीत निकल पड़ता है, और हृदय विशाल हो जाता है, तो मैं इन सबको खारी समुद्र में फेंक देता, और घर जाकर जैसे और राजा लोग राज्य करते हैं, वैसे मैं भी राज्य करता।"

राजकुमार की दशा उस शिकारी की-सी हो रही थी, जिसने पहाड़ पर हिरन देख लिया है। रात होती है, चूल्हा जलता है, घर में दीपक का प्रकाश होता है, परंतु उसके हृदय में हिरन की लालसा बनी रहती है।

इस प्रकार बहुत वर्ष बीत गए। राजकुमार खारी समुद्र के तट पर पहुँचा। रात हो गई थी। बड़ा भयावना स्थल था। समुद्र की लहरें बड़े शोर से किनारे की चट्टान पर टकरा रही थीं। उसे वहाँ पर एक घर दिखाई दिया। उस घर में मोमबत्ती जलाए हुए कोई आदमी बैठा जान पड़ा। वहाँ आग नहीं जल रही थी। राजकुमार बेटा उसके पास पहुँचा। उस आदमी ने राजकुमार को जल पिलाया। उसके पास भोजन के लिये कुछ न था। बोलने पर वह मनुष्य सिर हिलाता, मुँह से शब्द न निकालता।

राजकुमार ने पूछा—"तुम्हारे पास सत्य की कसौटी है?" आदमी ने सिर हिलाया। राजकुमार बोल उठा—"यह तो मैं जानता ही था! भला, किसके पास नहीं है? देखो, मेरे पास कसौटियों से थैला भर रहा है।" राजकुमार थका हुआ था, परंतु इतना कहकर वह हँसने लगा।

इस पर वह आदमी भी हँसने लगा, और उसके मुँह की फूक से मोमबत्ती बुझ गई।

आदमी ने कहा—"सो रहो। अब तुम बहुत दूर आ गए हो। तुम्हारी खोज समाप्त हुई, और मेरी मोमबत्ती भी बुझ गई।"

जब सबेरा हुआ, तो उस आदमी ने राजकुमार को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक स्फटिक दिया। न इसमें विशेष सुंदरता थी, न कुछ ऐसा रंग ही। राजा के बेटे ने उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखते हुए सिर हिलाया। इसके बाद वह पत्थर को पास रखकर आगे बढ़ा। उसे वह पत्थर विशेष मूल्यवान् न जान पड़ा।

दिन-भर वह चला किया। उसका मन आज शांत था। खोज की इच्छा तृप्त हो चुकी थी। उसने सोचा, "कहीं यही तुच्छ पत्थर सत्य की कसौटी न हो?" वह घोड़े पर से उतर पड़ा। थैले से सब पत्थर सड़क के किनारे उँडेल दिए। उसने देखा, एक दूसरे के प्रकाश में सभी पत्थरों का रंग हत हो जाता था, और सभी की ज्योति प्रभात-काल के तारों की भाँति विलीन हो जाती थी। परंतु इस स्फटिक के प्रकाश में सभी पत्थर अपना वास्तविक रूप और रंग धारण किए रहे। हाँ, अन्य पत्थरों की अपेक्षा यह स्फटिक विशेष ज्योतिर्मय था।

राजकुमार अपनी भौंहों को मलकर कहने लगा—"ऐसा तो न हो कि यही पूर्ण सत्य है, और शेष सभों में केवल सत्य के अंश हैं?"

उसने स्फटिक उठा लिया। उसको आकाश की ओर उठाकर देखा। उसमें आकाश का रंग और भी गहरा दिखाई दिया, और आकाश एक गड्ढे की तरह जान पड़ा। फिर उसने घूमकर पहाड़ियों की ओर देखा। स्फटिक में पहाड़ियाँ ठंडी और बीहड़ दिखाई दीं; परंतु उनमें एक जीवन की रेखा दिखाई पड़ी। इसके बाद उसने उस स्फटिक में धरती पर पड़ी हुई धूल को देखा। जो कुछ उसने देखा, उसे देखकर उसके हृदय में आश्चर्य भी हुआ और भय भी। अंत में उसने स्फटिक का प्रकाश अपने ऊपर डाला, और घुटनों के बल गिरकर प्रार्थना करने लगा।

राजकुमार ने कहा—"ईश्वर को धन्यवाद है। मुझे अंत में सत्य की कसौटी मिल ही गई। अब घर लौट चलना चाहिए, और पंडित राजा से, और उस दुर्ग की कुमारी से—जिसके ध्यान से मेरे मुँह से गीत निकल पड़ता है, और हृदय विशाल हो जाता है—भेंट करनी चाहिए।"

इस प्रकार बड़ा बेटा जब उस दुर्ग के समीप आया, तो देखता क्या है कि जहाँ फाटक पर उससे पहले दिन पंडित राजा से भेंट हुई थी, वहाँ पर कुछ बालक खेल रहे हैं। उसने सोचा, यहाँ पर तो मेरे बालकों को खेलना चाहिए था। उसका आनंद क्षण-भर के लिये जाता रहा। भीतर जब वह दरबार में गया, तो देखा, सिंहासन पर उसका छोटा भाई बैठा है। उसी के पास कुमारी बैठी है। उसने सोचा, यहाँ पर तो मुझे बैठना चाहिए था, और कुमारी को मेरे पास होना चाहिए था। यह सोचकर उसके हृदय में क्रोध उमड़ा।

उसके छोटे भाई ने पूछा—"तुम कौन हो, और इस दुर्ग में क्यों आए हो?"

उसने उत्तर दिया—"मैं तुम्हारा बड़ा भाई हूँ। मैं कुमारी से ब्याह करने आया हूँ; क्योंकि सत्य की कसौटी लेकर आया हूँ।"

छोटा भाई खिलखिलाकर हँस पड़ा। बोला—"मैंने तो कसौटी बहुत वर्ष हुए पा ली थी। मैंने कुमारी से ब्याह भी किया, और वह देखो, फाटक पर हमारे बच्चे भी खेल रहे हैं।"

यह सुनकर बड़े भाई का रंग उषा की भाँति धूमिल हो गया। वह बोला—"तुमने न्याय को छोड़ा तो नहीं? मैं देखता हूँ, मेरा जीवन व्यर्थ गया!"

छोटे भाई ने जवाब दिया—"न्याय? तुम्हारे-जैसे अशांत और भटकनेवाले आदमी के मुँह से मेरे अथवा मेरे पिता के न्याय पर संदेह किया जाना अच्छा नहीं जान पड़ता। संसार जानता है, हम लोग न्याय-प्रिय हैं।"

बड़े भाई ने कहा—"अच्छा, तुमने सब कुछ पा लिया सही। तनिक शांति से मेरी बात सुनो। संसार में अनेकों कसौटियाँ हैं। यह कहना सरल बात नहीं कि उनमें कौन-सी सच्ची है।"

छोटा भाई बोला—"मैं अपनी कसौटी पर लज्जित नहीं हूँ। यह लो, इसमें अपने को देख लो।"

बड़े भाई ने उस दर्पण को देखा। उसे देखकर वह बड़े आश्चर्य में हुआ। उसने देखा, मैं बुड्ढा हो गया हूँ। मेरे सिर के बाल सफ़ेद हो गए हैं। वह दरबार में बैठ गया, और फूट-फूटकर रोने लगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छोटा भाई कहने लगा—"अब तुम्हीं देखो! तुमने कितनी बड़ी मूर्खता की। तुम दुनिया-भर में मारे-मारे फिरे। जिस वस्तु के लिये तुमने ऐसा किया, वह हमारे पिता के पास मौजूद थी। अब अपने बाल पकाकर लौटे हो। तुम्हें देखकर कुत्ते भूँकते हैं। न तुम्हारे आगे कोई बाल-बच्चा है। मुझे देखो, मैं आज्ञाकारी पुत्र था। बुद्धिमान् था। यहाँ सिंहासन पर ताज लगाए बैठा हूँ। सुख है, समृद्धि है, परिवार है।"

बड़े भाई ने कहा—"हाँ, लेकिन तुम्हारी जीभ बड़ी पैनी है।" यह कहकर उसने अपना स्फटिक निकाला। उसमें अपने भाई को देखा। उसे स्पष्ट दिखाई दिया कि उसका भाई झूठ बोल रहा है। उसने देखा, छोटे भाई की आत्मा संकुचित है। उसका हृदय एक छोटी-सी थैली की तरह जान पड़ा। उसमें अनेकों आशंकाएँ बिच्छुओं की भाँति भरी हुई थीं। उसके हृदय में प्रे मृत हो चुका था। यह देखकर बड़े भाई के मुँह एक चीख़ निकल पड़ी।

इसके बाद उसने स्फटिक का प्रकाश कुमारी पर डाला। उस प्रकाश में उसने स्पष्ट देखा कि कुमारी आत्मा मर चुकी है। उसके ऊपर केवल स्त्रीत्व आवरण पड़ा हुआ है। जिस प्रकार घड़ी टिक-टि करती है, उसी प्रकार वह मुसकिराती है। वह मुसकिराने का कारण आप ही नहीं जानती थी। देखकर राजकुमार ने एक दीर्घ उच्छ्वास ली।

उसने छोटे भाई से कहा—"अच्छा और बु दोनो ही हुआ। अब मैं बिदा होता हूँ। तुम दुर्ग में जैसे जी चाहे रहो। मैं अपनी झोली में स्फटिक रखकर फिर से संसार की यात्रा करता हूँ।"

युधिष्ठिर

[लेखक, श्रीकृष्णगोपाल माथुर]

हाथोंहाथ बिक रहा है! शीघ्र ख़त्म होगा!! फ़ौरन् आर्डर भेजिए!!!

महाराज युधिष्ठिर का जीवन पवित्रता और धर्मपरायणता से परिपूर्ण है। इनका राज धर्मराज माना जाता है। इस पुस्तक में उनके जन्म, बालकपन, शिक्षा, राजसूय-यज्ञ, वनवास, कौरव-पांडव-युद्ध तथा अश्वमेध-यज्ञ का वर्णन बड़ी ही मनोहर भाषा में किया गया है। बालकों के हृदय में धार्मिक भावों को जाग्रत् करने के लिये इससे बढ़कर दूसरी पुस्तक हमारी समझ में नहीं हो सकती। जो सज्जन अपने बालकों को धर्मनिष्ठ बनाने के इच्छुक हों, उन्हें इस पुस्तक को अवश्य ख़रीदकर अपने बालक और बालिकाओं को पढ़ाना चाहिए। केवल बालकों के लिये ही नहीं, यह पुस्तक स्त्री, पुरुष और नवयुवक तथा वृद्ध सबके पढ़ने और मनन करने की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई सुंदर। टाइटिल पर महाराज युधिष्ठिर का अत्यंत सुंदर चित्र भी है। मूल्य केवल ।॥), सजिल्द १।)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कामनवेल्थ का भूत

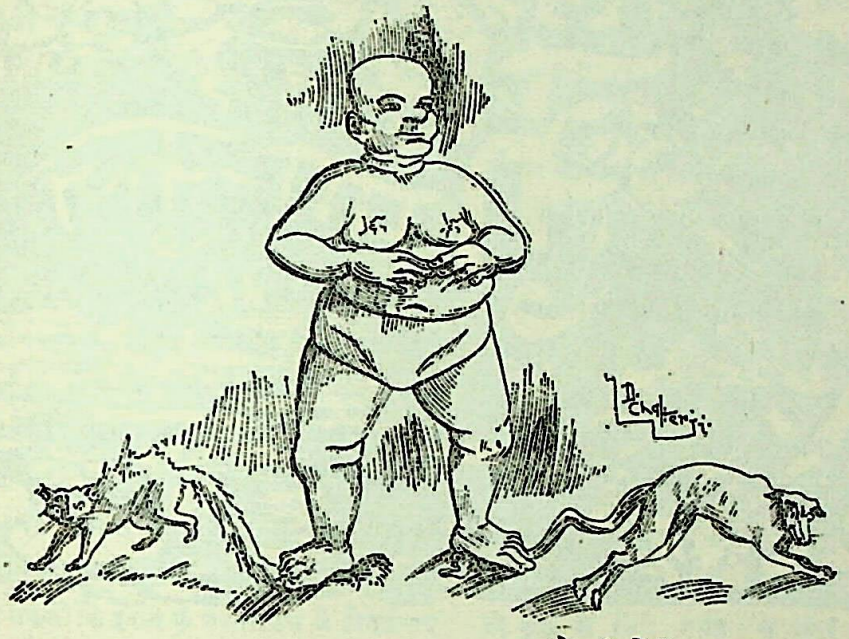

स्वतंत्रता औपनिवेशिक स्वराज्य

भिखारी से भगवान्

[अनुवादक, श्रीबाबूनंदनसिंह]

यह पुस्तक जेम्स ऐलेन की From Poverty to Power का हिंदी-अनुवाद है। समस्त हिंदी-संसार ने जेम्स ऐलेन की सभी पुस्तकों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। इस पुस्तक में बुराइयों से शिक्षा, संसार अपनी ही मानसिक दशा का प्रतिबिंब है, अनिष्ट दशाओं से छुटकारा पाने का उपाय, स्वास्थ्य, सफलता, स्वार्थ तथा सत्य, शक्ति और परमानंद का रहस्य, आध्यात्मिक शक्ति का उपार्जन आदि-आदि विषयों का विशद वर्णन है। स्त्री-पुरुष सभी के पढ़ने योग्य है। नवयुवकों के लिये विशेष उपयोगी है। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२३-२५, लाटूशरोड, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

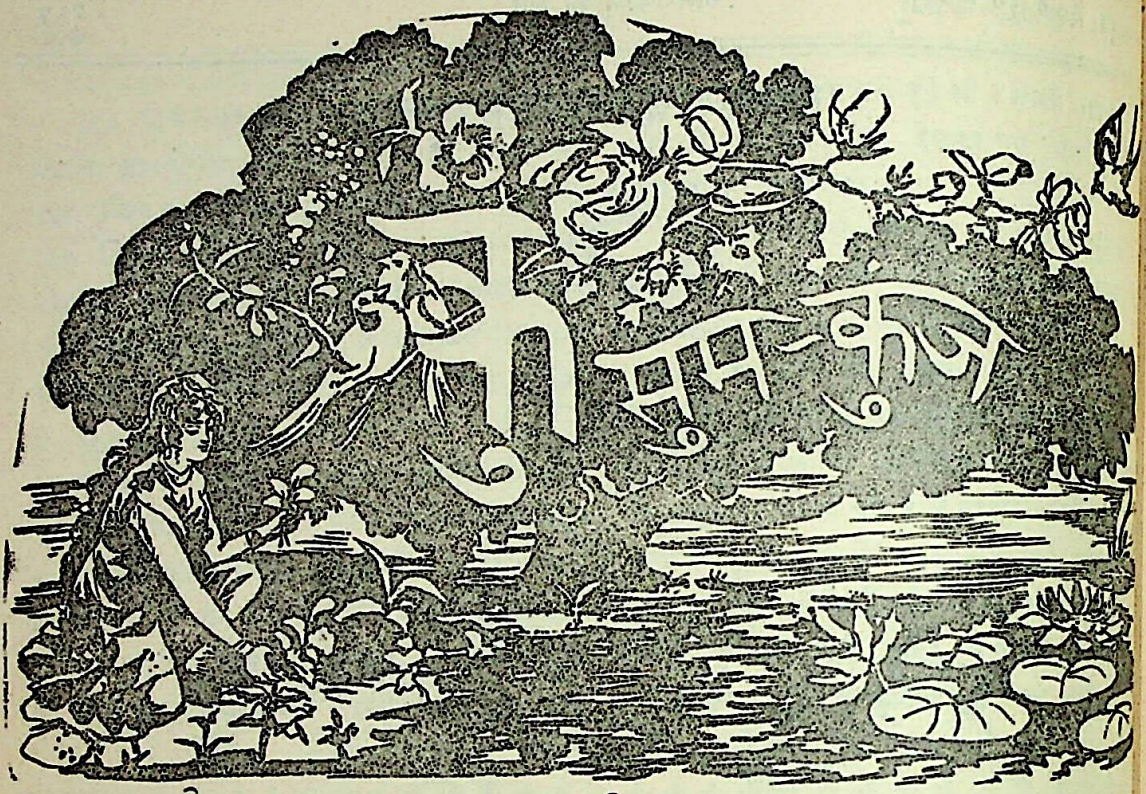

१. साहित्य में रस का त्याग तथा उत्पत्ति

साहित्य में रस का उतना ही उपयोग है, जितना कि जीवन में आत्मा या शरीर का, कलियों में समुचित ठंडक या गर्मी का, चित्त में प्रकाश या छाया का, प्रेम में संयोग या वियोग का। किसी-न-किसी रस के मधुर तथा मनोहर संचार से ख़ाली कविता वैसी ही होती है, जैसी यौवन की कमनीयता से रहित कृशित-कलेवरा कामिनी, मधुकरों के कलित कलरव से वियुक्त तथा प्रशांत कली, पुष्पों के विकास, सौंदर्य तथा धवल हास्य से परित्यक्त वन-लता। इसके इस महान् उपयोग को समझते हुए ही रस-शास्त्र के प्रेमियों ने 'रस एवात्मा काव्यस्य' माना है, अर्थात् रस ही कविता का आत्मा है। अब प्रश्न यह उठता है कि कविता के जीवन का आधार-भूत रस कौन-सी वस्तु है ?

जिस तरह समुद्र में सर्वदा लहरें उठा करती तथा विलीन हो जाया करती हैं, परंतु उन लहरों के नीचे स्थिर जल-समूह कभी भी हटता हुआ नहीं दि आता, उसी प्रकार प्रत्येक रस के प्रादुर्भाव में ऐसा स्थायी भाव हुआ करता है, जिसके आधार रंग-मंच पर आनेवाले भिन्न-भिन्न पात्रों की तरह, तेरे भाव उठते तथा विलीन हो जाते हैं। स्थायी भाव अन्य सहायकों से अभिव्यक्त होकर रस संज्ञा प्राप्त करता है। यह स्थायी भाव प्रत्येक रस लिये भिन्न-भिन्न तथा निर्दिष्ट हुआ करता है, शृंगार के लिये 'रति', वीर के लिये 'उत्साह', का 'शोक' आदि। जैसे नृपति मनुष्यों में श्रेष्ठ लाता है, शिष्यों के पूजनीय होने के कारण गुरु कहलाता है, इसी प्रकार सभी भावों में तथा चिरवर्ती होने के कारण यह 'स्थायी' जाता है।

अब यहाँ विचारणीय विषय यह है कि रस प्रकार के होते हैं, तथा रस के लिये किन-किन की आवश्यकता होती है ? साधारणतः रस भेद होते हैं; शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयान बीभत्स, अद्भुत तथा शांत। इस विषय में बहुत भेद भी हैं। भवभूति—जिसका सर्वोत्तम 'उत्तर चरित' साहित्य के रसिक सज्जनों से छिपा नहीं है—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिद्धांत है कि वास्तव में 'करुण' ही एक प्रधान रस है, तथा अन्य रस उसके 'विवर्त'। रसों की एकता को सिद्ध करनेवाला वचन यह है—

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्
भिन्नान् पृथग्पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।
आवर्त्तबुद्बुदतरंगमयान्विकारा-
नम्भो यथा सलिलमेव हि तत्समस्तम् ॥ १ ॥

(उ० तृ० अं०)

जिस प्रकार अधखिली कलियों में, विकसित पुष्पों में तथा मधु-पूर्ण पराग में, समुद्र के प्रशांत जल में, उत्ताल-तरंग-मालाओं में, भँवर में, कोई अंतर नहीं, केवल अवस्थाओं का चकराते हुए भेद-मात्र है, उसी प्रकार इन रसों में कोई भेद नहीं, वरन् करुण के ही ये सब अवस्थांतर में भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं। इसी तरह के अभेद को 'विवर्त' कहते हैं। दर्शन-शास्त्र के जाननेवालों से यह बात छिपी नहीं रह सकती कि दर्शन के नभोमंडल में विवर्तवाद तथा परिणामवाद भिन्न-भिन्न उज्ज्वल नक्षत्र माने गए हैं। परंतु उक्त पद्य में भवभूति ने दोनो के साथ खिचड़ी पकाकर कदाचित् यह अभिव्यक्त करना चाहा है कि उनके समय में या तो ऐसे भेद का अभाव हो या उनके स्वतंत्र विचार में 'विवर्त' तथा 'परिणाम' एक ही वस्तु हो।

कुछ लोगों का विचार है कि शांत-रस कोई स्वतंत्र रस हो ही नहीं सकता।

न यत्र दुःखं न सुखं न चिंता न द्वेषरागौ न च काचिदिच्छा;
रसः स शान्तः कथितो मुनीन्द्रैः सर्वेषु भावेषु समप्रमाणः।

इस प्रकार का प्रकाश, जिसमें सुख, दुःख, चिंता, द्वेष, राज, इच्छा आदि भावों की गति रुक जाय, मोक्ष की अवस्था में विना पहुँचे हुए सांसारिक मनुष्यों के लिये संभव नहीं; क्योंकि ये भाव बड़े प्रबल होते हैं। संसार के संन्यासी, तपस्वी प्रभृति गृहस्थों की विषय-वासनामयी लीला-भूमि में रहकर इन भावों को क़ाबू में नहीं रख सकते। इसी कारण विषय-वासना की उद्यान-वाटिका से अपने को कोसों हटाकर गिरि-कंदराओं की शरण लेते हैं। इसके उत्तर में यह कहा तो अवश्य जा सकता है कि मनुष्य के जीवन में ऐसे अवसरों की कमी नहीं, जब वह किसी वस्तु की प्राप्ति के चिंतन में इतना तन्मय तथा संलग्न हो जाता है कि सांसारिक सुख, दुःख आदि भावों की धारा उसके मानस-स्रोत में उतनी देर के लिये सर्वथा बंद हो जाती है। परंतु ऐसी अवस्था में अन्य भावों का प्रकाश हृदय-कानन में चाहे छिप भी जाय, मगर सुख के संचार का बंद हो जाना सत्यता का गला घोटना है; क्योंकि अपनी अभिलषित वस्तु के पास क्रमशः पहुँचने में जो एक उत्कर्षात्मक सुख (Pleasure of progressive realisation) होता है, उस सुख का प्रभाव नहीं मिट सकता। और, ऐसे प्रशम की अवस्था की सत्यता के बारे में विचार उठाने पर कल्पना भी जवाब दे देती है।

रस की उत्पत्ति के लिये स्थायी भाव के अतिरिक्त अन्य भावों की एकांत आवश्यकता होती है, जो 'विभाव', 'अनुभाव' तथा 'संचारीभाव' के नाम से साहित्य में कहे जाते हैं। जिस प्रकार कोकिल की कूक के लिये वसंत के सुंदर दिवस की आवश्यकता है, तारों की अभिव्यक्ति के लिये यामिनी के प्रारंभ की ज़रूरत है, उसी प्रकार स्थायी भाव की अभिव्यक्ति के लिये इन भावों की सहायता अनिवार्य है। 'विभाव' उसको कहते हैं, जिसके द्वारा 'स्थायी भाव' के आस्वाद का सूक्ष्म रूप से आविर्भाव हो सके। इस प्रकार आविर्भूत स्थायी भाव का, जिसके द्वारा, रस की तरह, अनुभव हो, उसे 'अनुभाव' कहा जाता है। पुनः इस अनुभूत रस का जिन सहकारी कारणों से सम्यक् संचार हो जाय, उसे 'संचारी भाव' बतलाया गया है। इससे यह बात स्पष्ट है कि 'विभाव' अभिव्यक्ति के कारण होते हैं, 'अनुभाव' कार्य होते हैं, तथा संचारीभाव सहकारी कारण। परंतु व्यवहार-क्षेत्र में इन तीनो को भी अविशेष रूप से कारण ही माना जाता है। जिस प्रकार मिर्च आदि के साथ मादक द्रव्यों के व्यवहार में एक विलक्षण आस्वाद होता है, उसी प्रकार विभाव आदि का स्थायी भाव के साथ सम्मिश्रण होने से एक विलक्षण आह्लाद उत्पन्न हो जाता है। कभी-कभी एक या दो ही के रहने पर रस की उत्पत्ति पाई जाती है; परंतु ऐसी जगहों में भी बाक़ी का प्रकरण आदि के बल से समावेश हुए विना नहीं रहता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक प्रश्न और भी उठता है। वह यह कि 'करुण' आदि रसों के दुःखमय होने के कारण उनके विभाव आदि के सम्मिश्रण से क्या आह्लाद हो सकता है? प्रथमतः इस विषय में सहृदयों का अनुभव ही प्रमाण है। दूसरी बात यह कि संसार में कोई भी मनुष्य अभिनिवेश के साथ दुःख के लिये प्रवृत्त नहीं होता; परंतु करुण आदि रसों में अभिनिवेश के साथ प्रवृत्ति देखी जाने के कारण इसकी सुखमयता साफ़-साफ़ झलकती है। इसका रहस्य यह है कि संसार में वन-वास आदि जो दुःख के कारण होते हैं, वे भी काव्य, नाटक के क्षेत्र में आकर दुःख का कारण नहीं रह जाते, बल्कि आह्लाद के ही कारण में परिणत हो जाते हैं। इसलिये यह व्यवस्था कि लौकिक शोक, हर्ष आदि के कारणों से लौकिक शोक, हर्ष आदि उत्पन्न होते हैं, केवल लोक में ही रह जाती है; काव्य में सभी विभावों से केवल हर्ष-ही-हर्ष होता है।

साधारणतः साहित्य में रस की उत्पत्ति की सामग्री तथा स्थान यही है। उपर्युक्त बातों का समन्वय शृंगार-रस में उदाहरणार्थ इस प्रकार हो सकता है। इस रस का स्थायी भाव रति है। इस सोई हुई रति-वासना को जगानेवाले दो प्रकार के विभाव होते हैं—एक आलंबन (नायिका) और दूसरा उद्दीपन अर्थात् चारो ओर के बिखरे हुए नैसर्गिक सौंदर्य, जिनके अवलोकन से कल्पना जाग्रत् एवं उत्तेजित हो जाती है। चुंबन तथा कांता-कटाक्ष आदि इस रस के अनुभाव होते हैं। पुनः लज्जा तथा हास इसके संचारी भाव माने गए हैं। इन भावों से अभिव्यक्त जो रति-भाव है, वही शृंगार माना जाता है। काम के उद्बोध को 'शृंग' कहते हैं, वह जिसके द्वारा हो उसे शृंगार कहा जाता है। इसी प्रकार अन्य रसों में उपर्युक्त बातों का समन्वय हो जाता है।

वीरमणिप्रसाद उपाध्याय
(बी० ए०, साहित्याचार्य)

× × ×

२. अश्लील साहित्य और चाँद

मानव-स्वभाव की प्रवाह-धारा प्रकृति से ही अधोगामिनी होती है। उसको ऊर्ध्वगामिनी बनाने के लिये नियंत्रण, संयम, त्याग और तपस्या की आवश्यकता होती है। जहाँ इन दुर्लभ गुणों का अभाव होता है, वहाँ मानव-स्वभाव नीच-से-नीचतर होता जाता है। प्रकृति का यह नियम अटूट है। इसीलिये हम देखते हैं कि साधारण जन-समुदाय की अभिरुचि प्रायः ऐसी होती है, जो अश्लीलता, गंदगी और भद्देपन को अधिक पसंद करती है। अभिरुचि के सुधारने का काम लेखकों, संपादकों, प्रकाशकों और शिक्षा-प्रेमियों का है। एक आदर्श लेखक अपनी अमूल्य रचना द्वारा समाज की निम्नगामिनी प्रवृत्ति को उठाने की चेष्टा करता है, और एक संपादक अपने पत्र के समुचित संपादन द्वारा वह अवस्था लाता है। इसी प्रकार एक प्रकाशक तथा उच्च शिक्षा-प्रेमी सज्जन अपने-अपने अनुकूल कार्यों द्वारा जनता की उपर्युक्त स्वभाव-धारा को नियंत्रण और संयम के साथ ऊँचा उठाने का प्रयत्न करते हैं। जो लेखक, संपादक, प्रकाशक या शिक्षा-प्रेमी ऐसा नहीं करते, वे अपनी शक्ति और अपने गुण का दुरुपयोग ही नहीं करते, बल्कि अपने समाज और साहित्य के साथ घोर अन्याय करते हैं।

यह देखकर हमें बड़ा दुःख होता है कि हिंदी के कुछ साहित्य-सेवी कहलानेवाले स्वार्थी लोग इसी कुप्रवृत्ति के पोषक बन रहे हैं। यह तो सत्य है ही कि जनता को, विशेषतः उस जनता को, जिसमें उचित शिक्षा का अभाव है, वह साहित्य, जो अधिक कुरुचि-पूर्ण होगा, अधिक अच्छा लगेगा। फलतः वह उसे अधिक पढ़ेगी भी। और, यदि कोई पुस्तक या पत्र अधिक पढ़ा गया, फिर वह चाहे जिस कारण से हो, तो उसकी बिक्री भी अधिक होगी, और उसके लेखक, संपादक या प्रकाशक को उससे लाभ भी अधिक ही होगा। परंतु इस प्रकार के लाभ से लाभान्वित होना कहाँ तक उचित और न्याय-संगत होता है, यह स्पष्ट है। स्वार्थ के पीछे आँख बंद कर पड़नेवाले धन-लोलुप व्यक्तियों की बात हम नहीं कहते, परंतु प्रत्येक शिष्ट, न्याय-प्रिय और विवेक-शील सज्जन हमारी इस बात से सहमत होंगे कि इस प्रकार की कुप्रवृत्ति से धनोपार्जन करना नीचता और घृणा का व्यापार है। इतना होते हुए भी कुछ लोगों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की प्रवृत्ति उस ओर बड़ी तेज़ी के साथ आकृष्ट हो रही है। कारण क्या है ? केवल यह कि उनका पापी पेट नेकी की कमाई से नहीं भरता।

हिंदी-प्रकाशकों में चाँद का कार्य सबसे अधिक घृणित और निंदनीय है। यह अपने को क्रांतिकारी समाज-सुधारक बताकर बड़े-बड़े अक्षरों में विज्ञापन करता है। परंतु उसके कार्य समाज-सुधार की तो छाया तक का स्पर्श नहीं करते, उलटा अनेक प्रकार के अनाचार और निंद्य प्रवृत्ति का प्रचार करने में अग्रसर होते हैं। समय-समय पर अश्लील-से-अश्लील लेख प्रकाशित करके चाँद ने अपना मुँह काला किया है। इसके लिये उसकी बड़ी-से-बड़ी आलोचनाएँ भी हुईं। प्रताप के साथ तो नोटिसबाज़ी तक की नौबत आ गई थी। परंतु प्रताप चाँद की बंदर-घुड़की से दबकर दुबक रहनेवाला न था। उसका पक्ष प्रबल था। उसमें न्याय का सत्य था, विवेक था, कर्तव्य-ज्ञान था, और धर्म-परायणता थी, और चाँद, अन्याय, अनाचार कुवृत्ति, हठधर्मी, स्वार्थांधता और नीचता से भरा हुआ था। अंत में वही हुआ, जो होना चाहिए था। चाँद अपना-सा मुँह लेकर बैठ गया। इस प्रकार की आलोचना-प्रत्यालोचनाएँ एक ही बार नहीं, अनेक बार हुईं। परंतु फिर भी चाँद की गति-विधि में अंतर नहीं आया। जब-जब उसे अवसर मिला—इतना ही क्या मौक़े-बे-मौक़े भी—वह अपनी गंदी मनोवृत्ति की दुर्गंधि फैलाने से बाज़ नहीं आया, और अंत में अपने विशेष अंक, मारवाड़ी-अंक, के नितांत नग्न और वीभत्स रूप में तो उसने इतनी अश्लीलता दिखलाई कि जिसको देखकर स्वयं अश्लीलता भी काँप उठेगी! अश्लीलता, गंदगी और नीचता का जितना घिनौना नाच इस अंक में नाचा गया है, वह भी नितांत नीचता और असभ्यता के साथ, उतना गंदे-से-गंदे साहित्य में भी मिलना दुर्लभ है। समाज-सुधार, भावना और सदाशयता का ढोल पीटनेवाला चाँद क्या अपनी इन काली करतूतों के लिये लज्जा का अनुभव करता है ?

दुःख का विषय तो यह है कि जब साहित्य-संसार में इस प्रकार का आंदोलन हो रहा है कि अश्लील साहित्य का प्रकाशन और निर्माण सदा के लिये बंद कर दिया जाय, तब चाँद का गंदगी-भरा विशेषांक प्रकाशित हुआ! उसने इस आंदोलन से शिक्षा ग्रहण करने पर भी इनकार कर दिया, और अपनी कुप्रवृत्ति का उदाहरण देते हुए अपने पत्र के कॉलम काले किए। मगर जहाँ धर्माधर्म और न्यायान्याय का विचार छोड़कर अर्थ-पिशाचों की भाँति धनी लोग धनोपार्जन के निमित्त छटपटा रहे हों, वहाँ इन बातों पर विचार ही कौन करता है ? वहाँ तो विचार होता है कि सभ्यता भाड़ में जाती हो तो जाय, साहित्य के उज्ज्वल मस्तक पर कलंक का भद्दा कालिख पुतता हो, तो पुते और समाज रसातल में जाता हो तो जाय, परंतु अपने टके सीधे होने चाहिए। यह विचार आता अवश्य है, परंतु इसका भी प्रकाश्य रूप में जो आवरण होता है, वह कुछ दूसरा ही। यदि सच्ची बात कही जायगी, तब तो भय होगा कि लोग नीच कहेंगे, सो तो कहेंगे ही, और स्वयं भी नीच बनने की नौबत आवेगी। यह ठीक न होगा। इसलिए समाज-सुधार का सीधा-सा बहाना क्यों न कर लिया जाय ? बस, एक ही टट्टी तैयार कर ली गई, और उसी की ओट से गंदे-से-गंदे और असभ्य-से-असभ्य लेख प्रकाशित होने लगे। साहित्य-सेवा की यह कितनी घृणित विडंबना है! समाज-सेवा के नाम पर समाज पर किया जानेवाला कितना नीच प्रहार है!! हम चाहते हैं, इस प्रकार की गति-विधि का पूर्ण विरोध किया जाय। साहित्य-सम्मेलन शीघ्र होने जा रहा है। हमारी अपील है कि शिष्टता-सभ्यता, शालीनता, साहित्य-सेवा और समाज-सुधार के नाम पर सम्मेलन में एकत्र होनेवाले साहित्य-महारथी इस समस्या पर गंभीरता-पूर्वक विचार करें। यदि इसकी प्रगति रोकी न गई, तो इसका परिणाम इतना भयंकर होगा कि साहित्य के सिर पर व्यर्थ का कलंक लगेगा, सो तो लगेगा ही, समाज को भी बड़ी घातक चोट पहुँचेगी।

मोतीलाल लाठ

× × ×

३. माला

बाहर भीतर एक नहीं,
अति उज्ज्वल बाहर, भीतर काला ;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं कहते, कुछ औ' करते कुछ,
ज्यों चिथड़े को लपेटे दुशाला।
ऐसे बड़े-बड़े लोग यहाँ,
जिनके बस में है विचित्र मसाला;
साँच को झूठ, असत्य को सत्य
करें, पर फेरते हाथ में माला।

श्रीदामोदरसहायसिंह एल्० टी०, "कवि-किंकर"

× × ×

४. काल-विजय

तू जीवन-उर में प्रभात बन
प्रखरित करती है नव आस;
तेरी साँसें संचारित कर
देती हैं तरंग-उल्लास।
होकर जीवन गगन-शिखर में
उदित रचातो है मध्याह्न;
विजयैश्वर्य कांति भर देती,
दे निज दीप्ति-स्वर्ण का दान।
यदि तू कभी सरल संध्या-सी
लाती अधर-बीच मुसकान;
होती है सुदूर से आकर
हृदयांकित शैशव-सुधि म्लान।
जब तू तन्मय दृष्टि लगा
सुनती है मेरा प्रेमालाप;
शशि-ज्योत्स्ना-विमुग्ध रजनी-सी
बैठी रहती है चुपचाप।
काल-नियम से निज स्वतंत्र ये
नाना रूप सजाती है;
काल-चक्र के घर्घर-स्वर में
अपना राग बजाती है।
यदि यह काल तुझे दुख-युक्ति
लड़ा चाहे करना आधीन;
तो बन हृदय! अनन्य हमारे
आत्मा-नभ में हो जा लीन।

ईश्वरीदत्त जोशी (बी० ए०)

× × ×

५. ग़दर के ज़माने में

पंजाब के हत्याकांड और कुछ गोरे सैनिकों द्वारा हिंदोस्तानी स्त्रियों के प्रति किए गए दुर्व्यवहार की चर्चा चल रही थी। एक वृद्ध बैठा सब बातें सुन रहा था। जब चर्चा समाप्त हो चुकी, तब उससे न रहा गया। उसने कहा—"क्या अँगरेज़ लोग भूल गए कि हम लोगों ने उनके साथ क्या किया है?"

चर्चा करनेवाले नवयुवकों ने पूछा—"क्यों, आपने क्या किया, सुनाइए तो।"

उस वृद्ध ने जो कुछ कहा, नीचे लिपि-बद्ध किया जाता है—

सन् १८५७ का समय था। गोरों को हिंदोस्तान के बाहर निकाल भगाने का आयोजन किया जा चुका था। अवध के सिपाही धर्म के लिये प्राण न्योछावर करने का निश्चय कर चुके थे। इधर गोरे लोग भी अपने प्राणों की बाज़ी लगा रहे थे। कहीं का क़हर हो गया था। अँगरेज़ों के बड़े-बड़े अफ़सरों के क़दम उखड़ गए थे। साम्राज्य की सत्ता का स्वप्न देखनेवाले आज के अँगरेज़ों के पिता और पितामह, जॉन कंपनी के फ़ौजी और मुल्की नौकरों की राज्य-नौका मझ धार डूबी—अब डूबी हो रही थी।

उस संघर्ष के समय अगर पशुओं की पाशविकता प्रबल हो उठी थी, तो दया के स्रोत महात्माओं के हृदय में भी सार्वदेशिक प्रेम प्रबल हो उठा था। संसार की बुराइयाँ और भलाइयाँ, दोनो ही अपना-अपना कार्य कर रही थीं। पागल पशुता चीरने और काटने के लिये लालायित हो रही थी, और स्नेहमयी दयार्द्रता मनुष्यता को ज़िंदा रखने का प्रयत्न कर रही थी।

ऐसे भयंकर समय की एक कहानी मैं सुनाता हूँ। मई के महीने से हिंदोस्तान में गर्मी विशेष बढ़ जाती है। देशवासियों तक को इस गर्मी से कष्ट होता है,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तब ठंडे मुल्कों में रहनेवाले योरपियनों की कठिनाइयों का कहना ही क्या ? सन् सत्तावन का ग़दर मई महीने में ही ज़ोर से शुरू हुआ था। सिपाही लोगों ने कई जगह की छावनियाँ जला दी थीं। जहाँ-जहाँ योरपियन थे, वहाँ-वहाँ से वे दिल्ली, लखनऊ, कानपुर आदि की रक्षा के लिये बुलाए जाते थे। ईसामसीह के दया-धर्म का प्रचार करनेवाले मिशनरी और हिंदोस्तान के भूखे अनाथों को बपतिस्मा देकर बनाए हुए ईसाई—जितनों का संबंध अँगरेज़ों से था—सभी लड़ने के लिये बुलाए जाते थे। मि० लारेंस ने लखनऊ के क़िले में गोले-बारूद के बड़े-बड़े पीपे भरकर ज़मीन में गड़वा दिए थे। यह सब काम हिंदोस्तानी मज़दूरों द्वारा—विशेषकर ईसाई-धर्म की दीक्षा पाए हुए हिंदोस्तानी ईसाइयों द्वारा—कराया गया था; पर उनको यह पता न लगने दिया गया था कि पीपों में कौन-सी चीज़ भरी हुई है। उन्हें यही बतलाया गया था कि पीपों में नाज भरा गया है, और उसे सुरक्षित रखने के लिये ज़मीन की खोह में रक्खा जा रहा है। इतना इंतज़ाम होते हुए भी एक के बाद दूसरा क़िला बलवाई सिपाहियों के हाथ लग ही गया, और ऐसा मालूम होने लगा कि कंपनी-सरकार का राज्य हिंदोस्तान में न रहेगा।

अन्य स्थानों की तरह आगर-छावनी की फ़ौज भी बाग़ी हो गई थी। अपने योरपियन अफ़सरों को गोली मारकर उसने गोरों के बँगलों में आग लगा दी थी। मई का महीना, गर्मी के दिन और फिर पहाड़ी मुल्क। आगर-छावनी में सात-आठ गोरे अफ़सर रहते थे, उनमें से ३ आदमियों के बाल-बच्चे भी थे। बाग़ियों के विप्लव की ख़बर पाकर अंगरेज़ लोग अपनी औरतों को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचाना चाहते थे। वे अपना इंतज़ाम पूरी तरह से कर भी नहीं पाए थे कि फ़ौज बाग़ी हो गई। बाहर के कई बलवाई फ़ौज में शामिल हो गए, और उन्होंने छावनी में आग लगा दी।

छावनी को मेमें और कुछ गोरे अपने नौकरों के साथ जंगल को भागे। खाने के लिये उनके पास सामग्री नहीं थी, न पीने के लिये पानी। जब बलवाइयों ने बँगलों में आग लगा दी थी, तब उनका ख़याल था कि अंदर के सभी जीव जलकर भस्म हो गए होंगे; किंतु दो-तीन घंटों के बाद उन्हें मालूम हुआ कि बाग़ियों के आने की सूचना पाकर अँगरेज़-औरतें और बच्चे घोड़ों पर सवार कराकर सारंगपुर की तरफ़ भेज दिए गए हैं। दोपहर के दो बजे बाग़ियों ने छावनी में आग लगाई थी, और चार बजे उनको यह मालूम हुआ कि अँगरेज़ लोग भाग गए। हाथ का शिकार छूट जाने पर जिस तरह चीता क्रोध के मारे अंधा हो जाता है, उसी तरह बाग़ियों में से कुछ लोगों की हालत हुई। वे अपने घोड़ों पर सवार होकर अँगरेज़ों का पीछा करने के लिये रवाना हुए। दो घंटे तक बराबर उन्होंने अपने घोड़ों को भगाया। मुँह के फेन और बदन के पसीने से घोड़ों की थकावट का पूरा पता लग रहा था; पर बाग़ियों की निगाह अपने शिकार की तरफ़ थी, घोड़ों की या अपनी थकावट का उन्हें ख़याल ही कहाँ था।

कुछ देर तक और चलने के बाद उन्हें भागे हुए अँगरेज़ों के घोड़े दिखाई देने लगे। इधर अँगरेज़ों ने भी देखा कि बाग़ी पीछा किए आ रहे हैं। दिन-भर की कड़ी धूप के कारण ८-१० जीवों का वह गोरा काफ़िला थक गया था। पर प्राणों का प्यार इतना अधिक रहता है कि मरते-मरते भी मनुष्य एक बार और अपने को बचाने का प्रयत्न करता है। उन अँगरेज़ों ने भी यही किया। अपने घोड़ों को उन्होंने भगाया। उनमें से लगभग सभी लोग आगे निकल गए, पर एक मेम का घोड़ा पीछे रह गया। वह अपने प्राणों के लिये घोड़े को बराबर मारने लगी, पर कुछ न हुआ, वह बिलकुल ही थक गया था। आख़िर उस मेम ने घोड़े को छोड़ दिया, और वह पैदल भागने लगी। पीछे बाग़ी लोग पास-पास आ रहे थे। उनमें से एक आदमी सिर्फ़ एक मील के फ़ासले पर रह गया था। उसने मेम को पैदल भागते हुए देख लिया था। उसने अपना घोड़ा बढ़ाया। १०-५ मिनट के अंदर ही यह बेचारी उसके क़ब्ज़े में आनेवाली थी। इतने में सड़क के पास एक गाँव दिखाई दिया। वह गाँव की तरफ़ चली और पासवाले एक मकान में घुस गई। उस घर में एक किसान अपनी स्त्री-सहित रहता था। मेम के एकाएक घर में घुस पड़ने पर वह घबराया; पर जब उसने उसकी दीन मुद्रा देखी, और उसकी टूटी-फूटी हिंदी में उसके भय का कारण सुना, तब उसका

Acc. No.
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा उसकी स्त्री का हृदय दया से भर आया। उसने निश्चय कर लिया कि हर तरह से इस बेचारी को बचाना चाहिए।

उपाय सोचते-सोचते पाँच मिनट बीत गए। इधर बलवाई लोग सड़क से मेम को एकदम ग़ायब होते देखकर उस गाँव की तरफ़ आए और उन्होंने उस किसान के दरवाज़े पर खड़े होकर पूछा—"एक मेम अभी यहाँ से गई है?"

"नहीं।"

"अभी तो वह इधर आई है। तेरे घर में तो नहीं है?"

"नहीं।"

बाग़ियों को उसकी बात पर विश्वास न हुआ। वे उसके घर में घुसने लगे। किसान ने घर के किवाड़ बंद कर दिए। बाग़ियों का संदेह और भी बढ़ गया। दो-तीन मिनट के अंदर उन्होंने किवाड़ों को उखाड़ फेंका और घर में घुस गए।

बाग़ियों ने उसके घर की पूरी-पूरी तलाशी ली। उन्होंने नाज भरने की कोठियाँ तक देख डालीं। कहीं भी मेम का पता नहीं था। उन्हें पक्का शक था कि वह इस घर में घुसी, पर वह तो घर में कहीं नहीं थी। घर के एक कोने में किसान की स्त्री मुँह ढके हुए खड़ी थी, निश्चय ही वह मेम नहीं थी; क्योंकि उसके सभी कपड़े मोटे, गज़ी के बने हुए और हिंदोस्तानी ढंग के थे। फिर मेम गई कहाँ? क्या वह कोई भुतनी है, जो देखते-देखते ग़ायब हो गई?

इतने में एक बाग़ी की निगाह मकान के दूसरी ओर पड़ी। उसने देखा, सफ़ेद कपड़े पहने कोई भागा जा रहा है। शाम हो चुकी थी; पर गर्मी के दिनों में शाम का प्रकाश भी थोड़ी-बहुत रोशनी लिए हुए होता है। उस बाग़ी ने निगाह जमाकर देखा, तो उसे मालूम हुआ कि वह व्यक्ति और कोई नहीं, विलायती लहँगा, हैट और बूट पहने हुए मेम ही है। वह अपने अन्य साथियों के साथ दौड़कर उस मेम के पास गया, और उस निर्दय पशु ने एक ही हाथ में उसका काम तमाम कर दिया।

दो-तीन घंटों के बाद जब बलवाई लोग गाँव से रवाना हो चुके थे, तब एक स्त्री को साथ लिए हुए वह किसान बाहर निकला। उसको मालूम हुआ कि अन्य अँगरेज़ गाँव की गढ़ी में ज़मींदार के घर पर छिपे हुए हैं। वह उस स्त्री को लेकर गढ़ी में गया, और वहाँ के समस्त अँगरेज़ों के आश्चर्य की सीमा न रही, जब लहँगे और लुगड़े के अंदर से वही गोरी मेम, जिसका उन्हें कोई पता नहीं लगा था, जिसे बाग़ियों द्वारा मरा हुआ जानकर उसके पाने की आशा उन्होंने छोड़ दी थी, उन्हें दिखाई दी।

रात को अँगरेज़ वहाँ से भागकर दूसरे सन को चले गए, और बेचारा किसान अपनी साध्वी स्त्री की मृत्यु के दुःख में रोकर दिन बिताने लगा। अपनी स्त्री को योरपियन वेश पहनाकर उसने मरवा डाला था, और गोरी मेम की रक्षा की थी।

सिद्धनाथ माधव आगरकर 'निरंजन' बी० ए०

× × ×

६. वैभव-भार

कुसुम में भी है काफ़ी भार,—
सँभलकर लाद, सँभलकर लाद।
लादकर समधिक सुख-शृंगार
न कर दे वह छवि यों बरबाद!

गुच्छ-के-गुच्छ मुकुल मत साज,
मिटा बल्ली-बहार बेकार।
छलक जाएगा जीवन-पात्र,—
अधिक अब ढाल न मधुमय प्यार।

कहाँ इतने वैभव का बोझ
सँभालेंगे उनके कल अंग,—
एक हलकी झकोर ही जिन्हें
हवा की, कर देती है भंग?

ललित लोनो लतिका सुकुमार
अभी वह क्या समझे नादान,—
कि दुर्भर मेरा यौवन-भार
कभी कर देगा बेसुध प्राण!

लता अलसाई वह दब, हाय!
लोट जाएगी धरती में।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ाते गए कांतियाँ कोंच—
कोंच करके जो भरती में।
सुमन-सुख उन्हें चाहिए, किंतु,
हाय रे! इतना—इतना नहीं—
कि जिसके विकट बोझ से विकल
हो उठे नव लतिका लहलही।
विश्वनाथप्रसाद (एम्० ए०)

× × ×

७. ग्राम्य गीत

यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय, तो हमारा वर्तमान हिंदी-संसार अपूर्ण है। जिस प्रकार हमने अपने समाज के आधे अंग (स्त्री-समाज) को बिलकुल ही ठुकरा दिया है, उसी प्रकार उस समाज के गीतों को भी त्याग दिया है। गीतों में स्त्री-समाज के मनोभावों का बड़ा ही हृदयग्राही एवं उच्च स्पष्टीकरण हुआ है। वात्सल्य रस की एक-मात्र अधिकारिणी—करुणा एवं प्रेम की मूर्ति—माताओं के हृदय के उच्छ्वासों से ये गीत पूर्णतः ओत-प्रोत हैं। इनमें स्वाभाविकता है और मिठास—रस है और भाव। ये गीत न तो पिंगल-बद्ध हैं और न तुकांतता ही की बेड़ी से जकड़े गए हैं। यही कारण है कि इनका स्वाभाविक विकास हो पाया है। कृत्रिमता तो पास ही नहीं फटकने पाई है। इनका सबसे प्रधान गुण रस है। ये गीत सरल हैं। इनकी बनावट सीधी है। इनके भाव सीधी-सादी ग्रामीण स्त्रियों के सरल और पवित्र हृदय के सच्चे और मर्मस्पर्शी हैं। अतएव ये बहुत शीघ्र ही हृदय में चुभ जाते हैं। एक बार आप इनके रसों का पान करके परीक्षा कीजिए।

नीचे दिए हुए गीत को सोहर कहते हैं। यह शुभ अवसरों पर गाया जाता है। जब किसी के पुत्र उत्पन्न होता है, तब आस-पास की सब स्त्रियाँ इकट्ठा होकर इसको गाती हैं। लड़की पैदा होने पर यह नहीं गाया जाता, क्योंकि लड़की पैदा होने पर दंपति अपना दुर्भाग्य समझते हैं। इसका एक-मात्र कारण यही हो सकता है कि विवाह के झंझटों का बढ़ जाना। नीचे का सोहर बनारस-प्रांत में गाया जाता है।

दुअरे से उठैं सिरी कृस्न बखरियैं जाइक बोलैं।
रुकमिनि कवने भोजनियाँ क साधि कहउ रुचि आपन॥ १॥
सात पदारथ मोरे घरे एकहु न मने भावै।
राधा के बेइलिया क फूल हमारे मन भावे॥ २॥
सँझवैं घोड़ा पलाने अधिय रात पहुँचेन।
खोलु राधा बजर केवार भितरे हम अउबै॥ ३॥
कहउ त सेजिया बिछावउँ फुल छितरावउँ।
कहउ त दाबा पावँ पयँत लगि सोवउँ॥ ४॥
जिन तुँ हो सेज बिछाव फुल छितराव।
जिन तुँ हो दाबौ पावँ पयँत जिन सोवउ।
तोहरे बेइलिया क फूल रुकमिनि मन भावै॥ ५॥
मरहु भ काटौ सिरि कृस्न भ देसवा निसारौ।
अपनी बेइलिया क फूल सवति नाहीं देबै॥ ६॥

अर्थ—द्वारे से श्रीकृष्णजी उठे और घर में जाकर बोले—"रुक्मिणी, तुम अपनी रुचि बतलाओ, किस खाद्य-पदार्थ की इच्छा है"॥ १॥

रुक्मिणी ने कहा—"हमारे घर में तो सातो पदार्थ हैं, किंतु मुझे एक भी अच्छा नहीं लगता। राधा की लता का फूल हमको अच्छा लगता" है॥ २॥

संध्या ही को घोड़े पर चढ़कर श्रीकृष्णजी आधी रात को राधा के यहाँ पहुँचकर बोले—"राधा, इन कठिन किवाड़ों को खोलो, मैं भीतर आऊँगा"॥ ३॥

राधा ने कहा—"कहिए तो सेज बिछाऊँ और फूलों से सजाऊँ; कहिए तो पैर दाबूँ और पैरों के पास सोऊँ"॥ ४॥

कृष्णजी बोले—"न तो सेज बिछाओ, न फूलों से सजाओ, न पैर दाबो और न पैर के पास सोओ। तुम्हारी लता का फूल रुक्मिणी चाहती हैं"॥ ५॥

राधा ने कहा—"श्रीकृष्ण, चाहे मारो, चाहे काटो, और चाहे देश से निकाल दो, किंतु मैं अपनी लता का फूल सौत को नहीं दूँगी"॥ ६॥

सौतों में सौत की किसी भी विशेष वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा होती है। इनमें परस्पर स्वाभाविक द्वेष होता है। इस गति की अंतिम पंक्तियों में कितना सरस उत्तर है। सौत के लिये वह तृण भी नहीं दे सकती है। वह तो सौत को प्रसन्न ही नहीं देखना चाहती।

नवनिहालसिंह, 'ग्राम्य-साहित्य-संघ', प्रयाग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

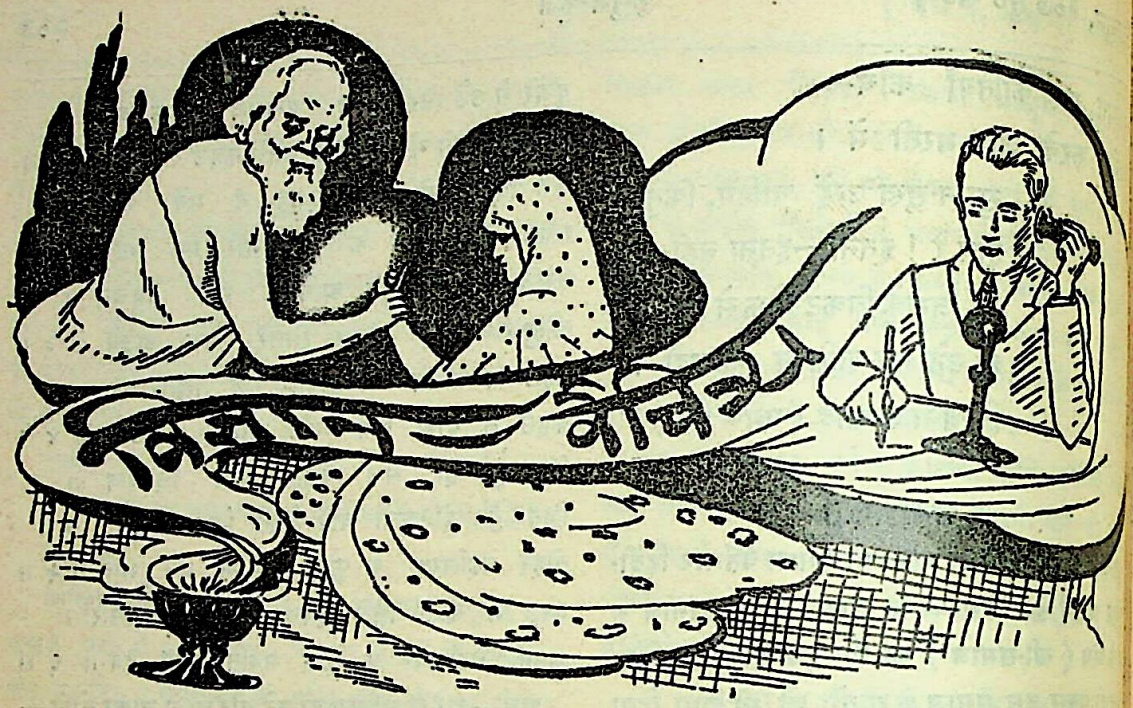

१. भविष्य में क्या होगा ?

(एक वैज्ञानिक भविष्यवक्ता की बातें)

हमारे देश में भविष्य की बातें बतलानेवाले वीर पंडितों की कमी नहीं है। वे दो पैसे में जीवन का रहस्य खोल देते हैं, परंतु उस रहस्य का कितना अंश सत्य रहता है ? भविष्य की बात का अनुमान करना एक बड़ा कठिन काम है। परंतु वैज्ञानिक लोग प्रायः अपने अनुमान में सफल ही हुआ करते हैं। इसका प्रधान कारण यह है कि वे ऊटपटाँग बातें न कहकर अपने सिद्धांतों के आधार पर निर्णय निकालते हैं। परीक्षाएँ करते और इनके द्वारा भविष्य में सफल होनेवाली कलों का मानसिक चित्र देख लेते हैं।

वैज्ञानिक-संसार में निकोलस टेसला का स्थान बहुत ऊँचा है। यह एक संसार-प्रसिद्ध जादूगर कहलाता है। उसके विचित्र आविष्कारों और आश्चर्यमय सत्य सिद्ध होनेवाली भविष्य-वाणियों ने उसे जन-साधारण के दिमाग़ में एक विशेष रूप से भयंकर स्थान दे दिया है।

तीस वर्ष पहले जब टेसला ने कहा था कि आपत्ति में पड़े हुए जहाज़ बे तार के द्वारा, रक्षा की प्रार्थना दूर-

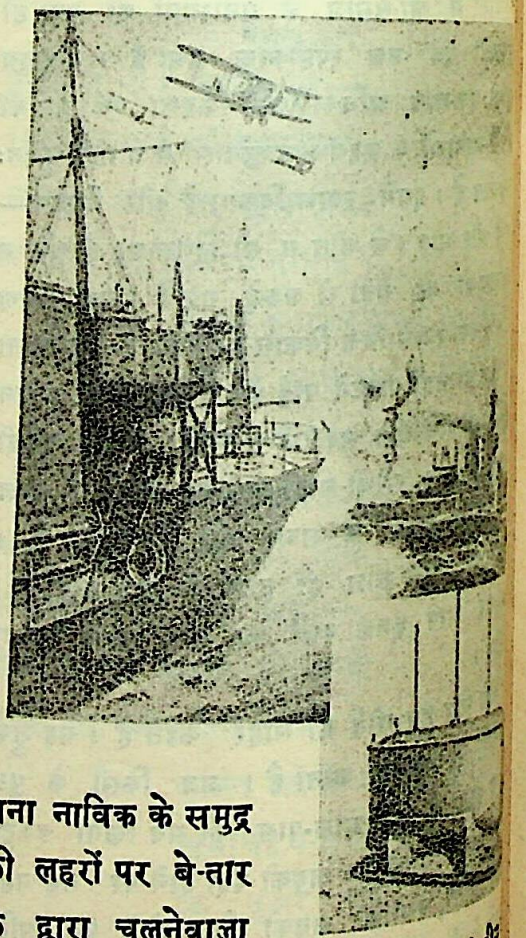

बिना नाविक के समुद्र की लहरों पर बे-तार के द्वारा चलनेवाला आधुनिक अँगरेज़ी जहाज़

(टेसला द्वारा) पूर्व बनाया हुआ का जहाज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूर तक भेज सकेंगे। लोग इस बात को सुन आपको पागल कहने लगे, परंतु डॉक्टर टेसला की बातों पर अविश्वास करनेवालों ने अपनी आँख से देख लिया कि आरटिक समुद्र के बर्फ़ में भटकनेवाले जहाज़ों ने किस तरह बे तार के द्वारा अपना संदेशा भेजा था। तीस वर्ष पहले जब आपने एक ऐसे जहाज़ का नमूना बनाया था जो बिना यात्री के चलता था, तब लोग हँसते थे, परंतु हम देखते हैं, आज भी ब्रिटिश नाविक बेड़ा एक ऐसे जहाज़ के पूर्ण करने में लगा हुआ है, जो बे-तार के द्वारा समुद्रों में विचरण कर सके। जर्मनी ने भी इस मार्ग में अपने क़दम बहुत आगे बढ़ा लिए हैं। बीस वर्ष पहले जब टेसला ने एक ऐसी आटोमोबाइल तैयार की थी जो कि धड़ाके के द्वारा जल और भूमि पर चलती थी, तब लोगों को उसकी बात पर विश्वास नहीं होता था, परंतु जर्मनी ने राकेट मोटर बनाकर संसार को चकित कर दिया, तब उनकी आँखें खुल गईं।

अतएव इन सब घटनाओं को ध्यान में रखते हुए हम एकदम अविश्वास नहीं कर सकते कि टेसला का भविष्य-चित्रण भ्रांति-पूर्ण है। जिस वैज्ञानिक के आविष्कारों ने संसार को इतना लाभ पहुँचाया हो, उसकी बातों को सम्मान-पूर्वक सुनना हमारा काम है।

डॉक्टर साहब का कहना है कि घरों में रोशनी बे-तार के द्वारा हो जाया करेगी, हवाई जहाज़ और मोटर-गाड़ियाँ बे-तार के द्वारा संचालित होंगी। विज्ञान एक ऐसा छोटा-सा यंत्र तैयार कर लेगा जो आसानी से जेब में रक्खा जा सकेगा। इसे लेकर आप सुख-पूर्वक मरुभूमि की सैर कर सकेंगे, बर्फ़ के ढके हुए स्थानों पर घूम सकेंगे और वायुमंडल में विहार कर सकेंगे। आवश्यकता होते ही यह यंत्र आपका भोजन बना देगा और उसके प्रकाश में आप ग्रंथों का अवलोकन कर सकेंगे।

कुछ वर्ष पूर्व डॉक्टर टेसला ने भविष्य-वाणी की थी कि बे-तार के द्वारा, पृथ्वी को माध्यम बनाकर, शक्ति-संचालन की एक ऐसी युक्ति ढूँढी जा सकती है जिसके द्वारा संसार के व्यापार-संबंधी कार्यों में बड़ी सहायता मिल सकेगी। आज अपने इन वचनों को सिद्ध करके दिखाने के लिये एक दो सौ फ़ुट ऊँची मीनार बनाई। लोग इसे 'टेसला मीनार' कहते थे और यह अफ़वाह दूर-दूर उड़ गई थी कि इसके द्वारा टेसला विद्युत् के भयंकर आवाज़ करनेवाले गोले पृथ्वी पर फेंकेंगे। ऐसा समझने का एक कारण और भी था। कुछ वर्ष पूर्व इस महापुरुष ने विज्ञानशाला में लाखों वोल्ट-शक्ति की विद्युत् तैयार कर परीक्षा की थी। इस परीक्षा में इतनी भयंकर आवाज़ हुई थी जो १३ मील की दूरी तक सुनाई पड़ी थी।

हाँ, टेसला की यह मीनार पूर्ण भी न बन पाई कि वह आकस्मिक घटना से नष्ट हो गई। अब आप एक नई मीनार बनाने में लगे हुए हैं, और आपका विश्वास है कि सन् १९३१ में यह कार्य-रूप में परिणत हो सकेगी। इसके द्वारा पृथ्वी में विद्युत् की इतनी शक्ति पहुँचाई जा सकेगी जो लाखों लैंपों को जला सके, और अन्य सैकड़ों कार्यों को कर सके। न कहीं लंबे-लंबे तारों की आवश्यकता होगी और न लोहे के खंभे ही लगाना पड़ेंगे।

डॉक्टर टेसला का कथन है कि उनकी मीनार विद्युत् के भयानक प्रवाह को पृथ्वी में तो अवश्य ही भेजेगी,

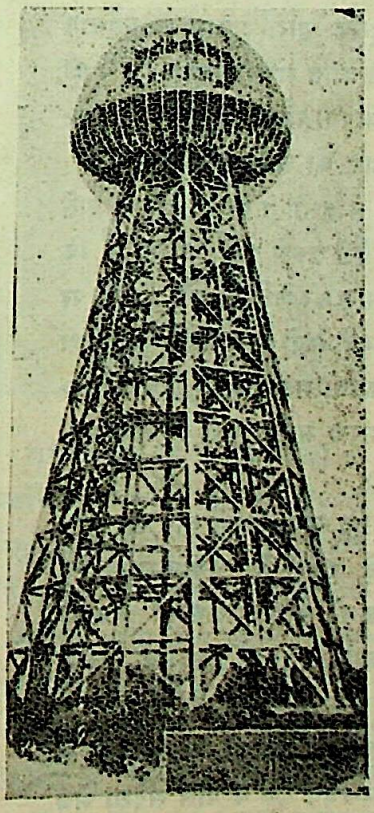

आकाश से विद्युत् के गोले छोड़नेवाली 'टेसला' मीनार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परंतु किसी प्रकार की आवाज़ नहीं होगी, और न विद्युत् की अग्निमय रेखाएँ ही दिखाई पड़ेंगी ; परंतु मीनार से सौ फ़ुट की दूरी पर रहनेवाले मनुष्य के शरीर से विद्युत् की चिनगारियाँ निकलने लगेंगी और उसके बाल खड़े हो जायँगे।

इतना ही नहीं, यह वैज्ञानिक अनेकों स्वप्न देखा करता है। उसका एक अन्य स्वप्न भी कम आश्चर्यमय नहीं। आप इस समय एक ऐसे हवाई जहाज़ के बनाने में लगे हुए हैं, जो एकदम सीधा आकाश में उड़ सके, जिसका वज़न २०० पौंड से अधिक न हो, जो ७ घन फ़ुट स्थान में रक्खा जा सके, और जो ४०० मील प्रति घंटे की गति से दौड़ सके, तथा जिसके संचालन का यंत्र बहुत ही छोटा और भयहीन हो। इत्यादि।

अभी आपने अपनी विज्ञानशाला में यह सिद्ध करके दिखा ही दिया है कि बे-तार के द्वारा विद्युत् के लैंप जलाए जा सकते हैं। यह आविष्कार बड़े ही महत्त्व का है। इसके द्वारा प्रकाश की वर्तमान प्रणाली में क्रांति मच जायगी, ख़र्चे की कमी हो जायगी और थोड़े-से मनुष्य देश-भर के प्रकाश को चालित कर सकेंगे।

टेसला ने इसी तरह की अनेकों बातें प्रकट की हैं। इनसे पता चलता है कि मानव-समाज की शक्तियाँ और प्रकृति पर अधिकार बड़ी तेज़ी से बढ़ रहे हैं। हमारा भविष्य कितना महान् होगा, इसका अनुमान साधारण मनुष्य नहीं कर सकता।

× × ×

२. मज़ाक़ करनेवालों की आफ़त

बड़े-बड़े शहरों में, स्थान-स्थान पर, अग्नि-कांड की सूचना भेजने की 'अलार्म-पेटियाँ' लगी रहती हैं। ज्यों ही किसी स्थान पर आग लग जाती है, त्यों ही कोई व्यक्ति दौड़कर पासवाली 'अलार्म-पेटी' के द्वारा अग्नि-रक्षक दल के पास संदेशा भेज देता है। तत्काल ही अग्नि-रक्षकों का दल अपने समस्त यंत्रों को लेकर घटना-स्थल पर उपस्थित होता है। गत वर्ष केवल न्यूयार्क नगरी में इस तरह के सात हज़ार अलार्म बजाए गए और उनके अनुसार अग्नि-रक्षक-दल उन स्थानों पर पहुँचा, परंतु कई बार उसे अपनी ग़लती के लिये पछताना पड़ा। वास्तव में बात यह होती थी कि कई मज़ाक़ करनेवाले झूठे अलार्म बजा देते थे। चार बार में कम-से-कम एक बार अवश्य ही उन लोगों को व्यर्थ ही आने का कष्ट उठाना पड़ता था। पुलीस इस तरह के अपराधियों का पता नहीं लगा सकती थी। अतएव समय और धन का, आने-जाने में, बहुत ख़र्च हो जाता था। यह

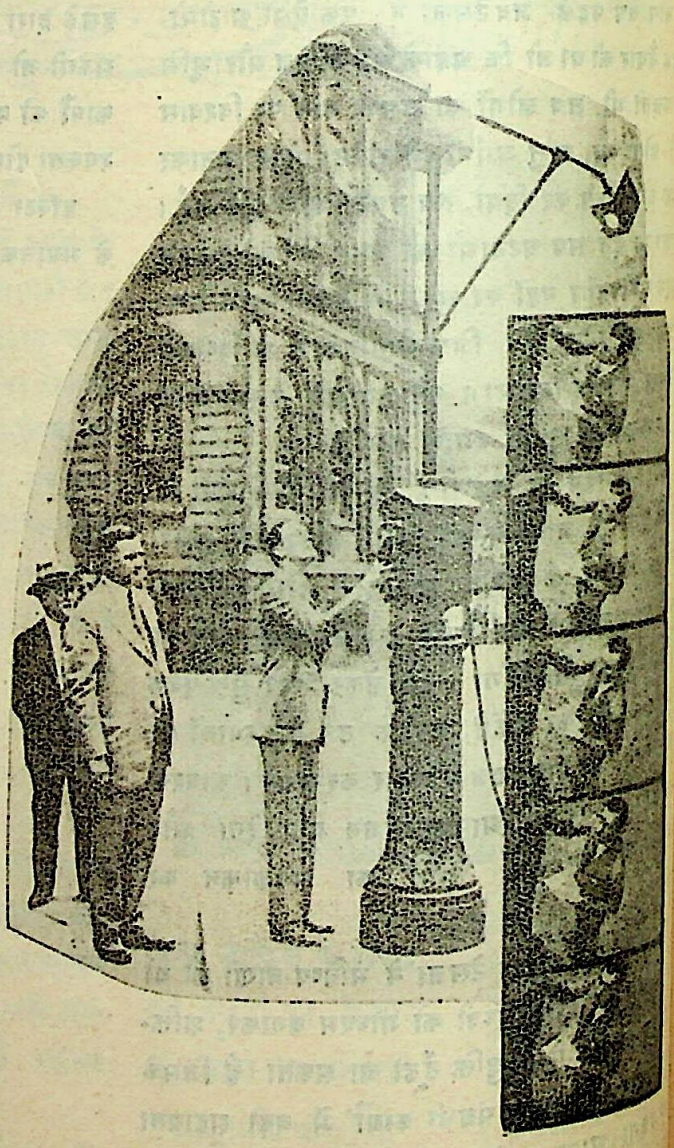

अलार्म की पेटी और केमरा की करतूत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देख न्यूयार्क नगरी के मेयर जेम्स वाकर ने एक नवीन प्रकार की 'अलार्म-पेटी' बनाई। इसके ऊपर एक गतिवान् वस्तुओं के चित्र लेनेवाले कैमरे का भी संयोग कर दिया। यहाँ आदमी अलार्म बजाता है और वहाँ ऊपर से कैमरा उसके कई चित्र ले लेता है। यदि अलार्म झूठा होता है, तो उन चित्रों के द्वारा पुलीस अपराधी को खोजने का प्रयत्न करती है। मज़ाक़ करनेवालों को अब अपने मज़ाक़ का फल शीघ्र ही मिल जाया करेगा, तथा नगर के प्रबंध में भी सहायता मिला करेगी।

× × ×

२. वायुयान से टक्कर लेनेवाले जहाज़

(लहरों के हृदय को विदीर्ण कर एक दिन में लंदन से न्यूयार्क)

हर आटो प्रोब्स (Herr Otto Probst) नामक एक जर्मन वैज्ञानिक ने अपने एक लेख में नवीन प्रकार के जहाज़ का वर्णन किया है। वैज्ञानिक संसार में नवीनता चार दिन की चाँदनी हुआ करती है। जिसे आज नवीन कहकर संसार प्रशंसा के पुल बाँध देता है, उसे ही वह कल पुरानी कहकर परवा भी नहीं करता। अभी इस जर्मन वैज्ञानिक की घोषणा को सुनकर संसार की नाविक शक्तियों के कान खड़े हो गए हैं। परंतु कई लोग उसकी बात पर अविश्वास दिखाने में ही अपना गौरव समझते हैं।

आपने लिखा है कि यह जहाज़ संसार की एक बड़ी ही अद्भुत वस्तु होगा। योरप के लोग सप्ताह का अंतिम दिन बड़े आराम से नवीन दुनिया में बिता सकेंगे, और समय पर अपने देश को लौट आवेंगे। युद्ध के समय में तो ये जहाज़ अत्यंत ही काम के सिद्ध होंगे। इन जहाज़ों का एक छोटा-सा बेड़ा बड़े-से-बड़े समुद्री बेड़े को वश में कर सकेगा। और, दृष्टिगोचर होनेवाले शत्रु के ७० फ़ी सदी जहाज़ों को वह निस्संदेह नष्ट कर सकेगा। इस कार्य के लिये जहाज़ के ऊपर एक विशेष प्रकार का यंत्र लगा होगा। इस तरह नवीन जहाज़ भविष्य में होनेवाले युद्ध का एक भयंकर शस्त्र सिद्ध होगा।

एक घंटे में इस जहाज़ की गति ३०० नाट (knot) होगी, तथा लहरों की दीवालें उसकी गति में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित न कर सकेंगी। उसके संचालन की विधि इन बाधाओं से स्वतंत्र होगी।

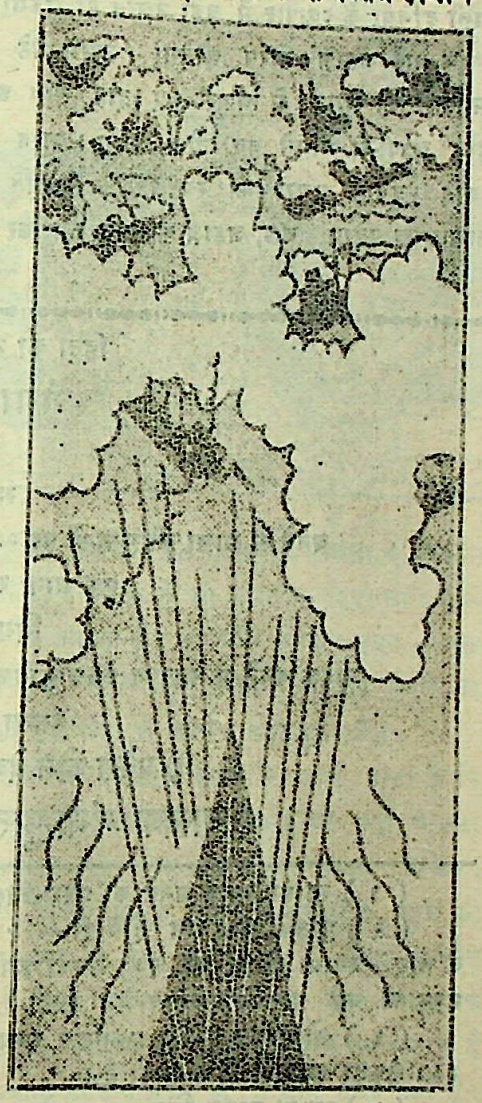

समुद्री बेड़े की धज्जियाँ उड़ा दीं

उस समय की कल्पना कीजिए, जब इस तरह के जहाज़ समुद्र के विशाल आँगन में खेलते हुए दृष्टिगोचर होंगे। वे अपनी तीव्र गति के द्वारा भूमध्य-रेखा की समुद्रीय यात्रा ८० घंटे में कर सकेंगे। जो समय आज जर्मनी से लंदन पत्र ले जाने में लगता है, उसी समय में वे इँगलैंड से न्यूयार्क सामान ले जा सकेंगे, और लौट भी आवेंगे। एक सेकंड में इनकी गति १५० मीटर होगी। [(एक मीटर=एक गज़ ३ इंच) अर्थात् ५६ मील प्रति घंटे चलनेवाली एक्सप्रेस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गाड़ी से छै गुनी अधिक।] इस गति के कारण समय की समस्या शीघ्र ही हल हो जायगी। अतएव नई और पुरानी दुनिया के व्यापार में बड़ी उन्नति हो सकेगी।

एक बार जहाज़ योरप छोड़ेगा। उसमें बैठे हुए मुसाफ़िरों को समुद्र में बिखरे हुए द्वीप तथा अन्य जहाज़ छाया-से भागते हुए दीख पड़ेंगे। बारह घटे के बाद न्यूयार्क नगरी की स्वतंत्रता की मूर्ति का प्रकाश दीख पड़ेगा। बस, जहाज़ की गति कम कर दी जायगी और आप अमेरिका में पदार्पण करेंगे। इस तरह व्यापार के क्षेत्र में, युद्ध के क्षेत्र में, केवल यात्रा के क्षेत्र में और रक्षा के कार्य में यह जहाज़ बड़ा ही उपयोगी सिद्ध होगा। वैज्ञानिक का कथन है कि मैं सब प्रकार से अपनी विज्ञानशाला में इस आविष्कार की परीक्षा कर ली है, और शीघ्र ही संसार की ज्ञान-शाला में इसकी करामात दिखलाऊँगा।

नाथूराम शुक्ल

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक-माला

गंगा-पुस्तकमाला

के

स्थायी ग्राहक

बनने से माला की पुस्तकों पर २५) सैकड़ा और हिंदुस्थान-भर की पुस्तकों पर एक आना रुपया कमीशन मिलेगा।

नियम नीचे पढ़िए

ग्राहक बनने से आप न केवल पुस्तकों से लाभ उठावेंगे, बरन् मातृभाषा के प्रचार में हमारा हाथ भी बटाएँगे।

॥) प्रवेश-फ़ीस देकर आज ही ग्राहक बन जाइए

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

(१) स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फ़ीस सिर्फ़ ॥) है।

(२) पुस्तकें, प्रकाशित होते ही—१५ दिन पहले मूल्य आदि का "सूचना-पत्र" * भेज देने के बाद—स्थायी ग्राहकों को, २५) सैकड़ा कमीशन काटकर, वी० पी० द्वारा, भेज दी जाती हैं। ५-६ रुपए की कई पुस्तकें एकसाथ भेजी जाती हैं, जिसमें डाक-ख़र्च में बचत रहे।

(३) जो पुस्तकें हमारी प्रकाशित अन्य मालाओं में निकलती हैं, उन पर भी स्थायी ग्राहकों को २५) सैकड़ा कमीशन दिया जाता है।

(४) स्थायी ग्राहक जिस पुस्तक को चाहें, लें; जिस पुस्तक को न चाहें, न लें; यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। वे चाहे जिस पुस्तक की चाहे जितनी प्रतियाँ, चाहे जब, ऊपर-लिखे कमीशन पर मँगा सकते हैं।

(५) बाहर की—हिंदुस्थान-भर की—सब पुस्तकें स्थायी ग्राहकों को —) रुपया कमीशन पर मिलती हैं।

(६) स्थायी ग्राहक ऑर्डर देते समय अपना ग्राहक-नंबर अवश्य नोट कर दिया करें, जिसमें उनके ऑर्डर पर कमीशन कटने में भूल न हो।

(७) स्थायी ग्राहक की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक-ख़र्च उनको ही देना पड़ता है, और दो बार वी० पी० लौट आने पर स्थायी ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

* नई पुस्तकों में से यदि कोई या सब न लेनी हों, अथवा और कोई पुस्तक मँगानी हो, तो 'सूचना-पत्र' मिलते ही हमें पत्र लिखना चाहिए, जिसमें इच्छानुसार कारवाई कर दी जा सके। १५ दिन के अंदर कोई सूचना न मिलने पर सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपन्यास

आधुनिक हिंदी-साहित्य में उपन्यास को विशेष स्थान प्राप्त है। प्राचीन कवियों ने काव्य-ग्रंथ तथा गद्य-कारों ने नाटक लिखकर साहित्य-भांडार को भरा था। परंतु नए युग में लेखकों ने अधिकतर अपना समय और मस्तिष्क उपन्यास लिखने ही में लगाया। हिंदी-साहित्य की जो नवीन पुस्तकें निकली हैं, उनमें प्रायः ६० प्रतिशत उपन्यास हैं। लेखक, प्रकाशक तथा पाठक, सबने ही उपन्यास को विशेष करके अपनाया है, यह उसका सौभाग्य है।

कोई मासिक पत्रिका ऐसी नहीं, जिसमें अनेकानेक उपन्यासों के भाँति-भाँति के विज्ञापन न निकलते हों। 'काव्य-ग्रंथों' तथा 'नाटकों' को तो 'उपन्यास' ने प्रायः निस्तेज-सा कर दिया है। यदि यही क्रम रहा, तो अति शीघ्र हिंदी के पुस्तकालय उपन्यास से ही भरे हुए दीख पड़ेंगे।

इन पंक्तियों के लिखने से मेरा यह तात्पर्य नहीं कि उपन्यास घृणित विषय है—या उसको इतनी उन्नति देना अनुचित है।

किंतु यह अवश्य है कि पश्चिमीय सभ्यता के विकास के साथ ही उपन्यास ने भी भारतीय हिंदी-साहित्य में अपना पैर जमाया है। उपन्यास साहित्य-सदन में एक नया भवन है, जो वर्षों से निरंतर परिश्रम करने पर भी अभी पूर्ण रीति से निर्माण नहीं हुआ है।

साहित्य का इतिहास देखने से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में 'उपन्यास' को कोई भी नहीं जानता था। आजकल 'सर कानन डायल', 'रोनाल्डस्', 'बंकिम', 'प्रेमचंद', 'शरत्' आदि उपन्यास-लेखकों के नाम की साहित्य-संसार में धूम मची हुई है, परंतु प्राचीन समय के किसी उपन्यास-लेखक का नाम आज तक सुनने में भी नहीं आया। यही इस बात का प्रमाण है कि उपन्यास साहित्य-सदन का प्राचीन भवन नहीं है। साहित्याचार्य ऋषियों ने काव्य-ग्रंथों तथा नाटकों के विषय में अनेकशः नियम निर्धारित किए हैं, किंतु उपन्यास के विषय में उनके लेख सर्वथा मौन हैं, इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन साहित्य में 'उपन्यास' को कोई स्थान प्राप्त नहीं था।

हिंदी के उपन्यासकारों ने बँगला से विशेषकर और मराठी तथा गुजराती आदि भाषाओं के उपन्यासों का अनुवाद करके हिंदी-साहित्य-भांडार भरने का श्रीगणेश किया। जब स्वतंत्र रूप से हिंदी-भाषा में उपन्यास लिखे गए, तब भी बँगला के उपन्यास ही आदर्श माने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गए, और उसी प्रणाली पर हिंदी-उपन्यासकार लेखनी-बद्ध हुए।

एक समय था, जब उपन्यास पढ़ना समाज में घृणित समझा जाता था। तब "उत्तम-उत्तम उपन्यास लिखकर पाठकों के कर-कमलों में पहुँचाना चाहिए", इस उद्देश्य से बहुत-से अच्छे सामाजिक उपन्यासों के लिखने तथा लिखवाने की आयोजना की गई। इस आयोजना में, अधिकांश में, हिंदी प्रचारकों को सफलता प्राप्त हुई। आज हिंदी के बहुत-से स्वतंत्र रूप से लिखे हुए मौलिक उपन्यास दूसरी भाषाओं के प्रथम श्रेणी के उपन्यासों से टक्कर ले सकते हैं। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि प्रचुर धन व्यय करने, प्रखर मस्तिष्क लगाने तथा अधिक काल तक निरंतर परिश्रम करने पर भी हिंदी के उपन्यासों में ९९ प्रतिशत आखोर की भर्ती है। इसका कारण है। नवीन लेखक को कीर्ति-प्राप्ति की उत्कट इच्छा होती है। वह चटपट एक या दो उपन्यास लिखकर यशार्जन करना चाहता है। नवीन प्रकाशक को एक-दो उपन्यास छापकर पाठकों से धन-प्राप्ति की प्रबल अभिलाषा होती है, वह एक-दो नाटक छापकर धनार्जन करना चाहता है, तब ये यशेच्छु तथा धनेच्छु महोदय "खूब गुज़रेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो" की तरह चटपट उपन्यास छाप डालते हैं और पत्रिकाओं में 'अपूर्व उपन्यास', 'हाथ में लेकर छोड़ देना विरले ही पुरुष-पुंगव का काम है', 'हमारा दावा है कि ऐसा उपन्यास आज तक नहीं निकला', 'प्रचुर धन व्यय करके बढ़िया हाफ़टोन ब्लाक बनवाए हैं' आदि शीर्षकों से सुसज्जित विज्ञापन देना प्रारंभ करते हैं। उनका उद्देश्य केवल धनार्जन तथा यशार्जन है। केवल इतना ही, इससे अधिक कुछ नहीं।

क्या ऐसे उपन्यास वास्तव में उपन्यास कहलाने योग्य हैं? क्या ऐसे उपन्यासों से साहित्य-भांडार की वृद्धि हो सकती है? क्या ऐसे उपन्यास समाज को उन्नति के मार्ग पर ले जा सकते हैं? नहीं।

क्योंकि ऐसे उपन्यास केवल नाम के उपन्यास हैं, किंतु अंदर ढोल की पोल है—ऐसे उपन्यास उस 'चतुर्वेदी' उपाधि-संयुक्त नामवाले ब्राह्मण की नाईं हैं, जो 'को नामाऽसि' प्रश्न करने पर खीसें काढ़ अपने निरक्षर-भट्टाचार्यत्व का परिचय देता है।

'उपन्यास' इन सब बातों से ऊपर होना चाहिए। 'उपन्यास' यदि ऐतिहासिक दृष्टि से लिखा जाय, तो वह भूत-काल की सामाजिक अवस्था का चित्र कहा जाता है। यदि उसमें वर्तमान अवस्था चित्रित की गई है, तो वर्तमान काल की 'हिस्ट्री शीट' है। उपन्यास-कार यदि समाज को किसी विशेष मार्ग पर ले जाना चाहता है, तो उन विचारों को वह उपन्यास द्वारा समाज के कान तक पहुँचा सकता और अपने उद्देश्य में सफल हो सकता है।

मुझे एक मुक़द्दमे की 'पेपरबुक' पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह मुक़द्दमा बरेली-प्रांत का है। अभि-युक्त ने अपने बयान में कहा कि 'पीतल की मूर्ति'-नाम का उपन्यास पढ़ने से मेरे दिल में यह विचार उठा हुआ कि मैं अपने वृद्ध पिता को डाकुओं द्वारा मरवा डालूँ, तो मैं उनकी भू-संपत्ति इत्यादि का स्वामी हो सकता हूँ। उसने यह भी कहा कि उक्त उपन्यास का कथानक भी ऐसा ही है (मैंने उपन्यास नहीं देखा है, अतः उसके संबंध में कुछ नहीं कह सकता)।

देखिए, एक साधारण उपन्यास से कितना अनर्थ परिणाम निकला। कहने का तात्पर्य यह है कि उप-न्यास के कथानक सामाजिक अवस्था को उन्नत बनाने वाले हों।

उपन्यास लिखने का उद्देश्य सामाजिक अवस्था के साथ चलता है। उपन्यासकार को चाहिए कि अपनी लेखनी द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न करे। यदि समाज किसी बुरे मार्ग पर जाता हो, तो उसको जाने से रोकना चाहिए।

उपन्यास लिखने से पूर्व जिस विषय पर प्रकाश डालना हो, उसको पूर्ण रूप से जान लेना आवश्यक है। उस विषय को अच्छी तरह जाने बिना उस पर कुछ लिखना पाठकों को धोका देना है। अँगरेज़ी-साहित्य के एक प्रसिद्ध उपन्यासकार से किसी प्रकाशक ने रेलवे की सामाजिक अवस्था का अपने उपन्यास में चित्रण करने को कहा। वह उपन्यासकार प्रकाशक महोदय से धन लेकर पेरिस के एक होटल में जा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बसने लगा। लगभग एक वर्ष तक वहाँ रहने पर उसको वहाँ की अवस्था का पर्याप्त ज्ञान हो गया। उन बातों को उसने अपने उपन्यास में व्यक्त किया। उस उपन्यास की अत्यधिक बिक्री हुई, दोनो ने यशार्जन तथा धनार्जन किया। यही वास्तविक यशार्जन तथा धनार्जन है।

उपन्यासकार को आवश्यक है कि किसी दृश्य का चित्र खींचने से पूर्व भूगोल आदि की पुस्तकों का अध्ययन कर ले, तब उसके विषय में कुछ लिखे। दिल्ली के चाँदनी चौक का हाल लिखते समय अमीनाबाद पार्क-लखनऊ का हाल लिख देने से पाठकों को भ्रम हो सकता है। खेद की बात यह है कि हमारे बहुत-से उपन्यासकार आजकल यही कर रहे हैं और फिर भी अपने उपन्यास को मौलिक बताते हैं।

उपन्यासकार को भाषा पर पूरा अधिकार होना चाहिए। अशुद्ध भाषा लिखना सर्वथा अनुचित है। मुझे कई प्रसिद्ध सिद्धहस्त लेखकों की भाषा देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ। उन्होंने मुहावरों पर लेखनी द्वारा वह कुठार चलाया कि साहित्य-रसज्ञों की दृष्टि में वह पाप है। मुहावरों की गर्दन तोड़कर या उनके अन्य अंग मरोड़कर उनको अपना मुहावरा बना लेना वैसा ही है जैसा कि कोई पशु-चोर एक भैंस को चुराकर उसकी सींगें मोड़ ले अथवा उसकी पूँछ काटकर दूसरी भैंस की पूँछ उसके जोड़कर उस भैंस को अपनी बताने लगे। 'घर फूँककर तमाशा देखना', यह मुहावरा हमारे दैनिक बोलचाल में प्रयुक्त होता है, किंतु एक स्वनामधन्य उपन्यासकार महोदय ने 'घर बेंचकर तमाशा देखना' प्रयोग किया है। यह मौलिकता नहीं है। नवीन मुहावरे बनाकर उनको भाषा में प्रयोग करना, यह मौलिकता हो सकती है।

उपन्यासकार का कर्तव्य है कि वह विशुद्ध भाषा में उन्नत भाव व्यक्त करके सुंदर मौलिक चरित्रों का चित्रण करके साहित्य-भांडार की वृद्धि करे। यह सत्य है कि बहुधा उपन्यासकार के मार्ग में कतिपय ऐसी बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं, जो उसको कर्तव्य-पथ से डिगा देती हैं। पुस्तक के दाम अधिक न हों, ताकि सब लोग सरलता से क्रय कर सकें। भाषा क्लिष्ट न हो, जिससे साधारण ज्ञानवाले भी पढ़ सकें। भाव सरल हों, जिससे समझने में कठिनाई न हो। ये ऐसी बातें हैं, जिनको ध्यान में रखकर उपन्यासकार उत्तम उपन्यास नहीं लिख सकता। इन बातों पर कार्य-बद्ध होकर जो उपन्यास लिखा जायगा, वह निस्संदेह चार आनावालों को ही रुचिकर हो सकता है। साहित्य-रसज्ञ तथा शिक्षित-समुदाय को इन उपन्यासों से कुछ लाभ नहीं हो सकता।

चरित्र-चित्रण करते समय बड़ी सावधानी से काम करना आवश्यक है। कई उपन्यासों में इतने गंदे चरित्र व्यक्त किए गए हैं कि वे साहित्य-समाज के लिये कलंक का विषय हैं। उपन्यास के चरित्रगण पाठक के साथी हो जाते हैं। पढ़ते समय कई चरित्रों से उसकी मैत्री हो जाती है। कुछ चरित्रों से उसे सहानुभूति, अन्यों से घृणा उत्पन्न हो जाती है। पाठक किसी चरित्र की वीरता पर वाह-वाह तथा किसी की सुंदरता पर विमुग्ध हो जाता है। अतः यह आवश्यक है कि उत्तम उच्च आदर्श को लेकर चरित्र चित्रित किए जायँ। पाठक और उपन्यास का घनिष्ठ संबंध है, जैसा कि कवि ने कहा है—

My days among the days are passed
Around me I behold
And wherever these casual eyes are cast
The mighty maids of old.
My never failing friends are they
With whom I converse day by day.

यदि किसी भले आदमी का संग किसी नीच व्यभिचारी, कामी, जुआरी, चोर, शराबी अथवा कुकर्मी मनुष्य से पड़ जाय, तो उसकी संगति का प्रभाव उसके हृदय, उसके चरित्र, उसकी कीर्ति आदि पर अवश्य पड़ेगा। इसी प्रकार उपन्यास के दुश्चरित्रों अथवा सच्चरित्रों का प्रभाव पाठक पर अवश्य पड़ेगा—बल्कि पड़ता है, जैसाकि उपरि-लिखित दृष्टांत में कहा गया है।

पश्चिमीय देशों में 'उपन्यास' साहित्य-संसार तथा समाज में आदर की दृष्टि से देखा जाता है। अच्छे सिद्ध-हस्त उपन्यासकार का आदर किसी ज़मींदार, राजा या रईस से कम नहीं होता। वहाँ उपन्यासकार को पथ-प्रदर्शक, सुदशा-प्रवर्तक तथा साहित्य-भांडार-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्द्धक समझते हैं। हमारे यहाँ दुर्भाग्य से अभी तक उपन्यास तथा उपन्यासकार को वह मान, आदर तथा श्रेय प्राप्त नहीं हुआ है। यह एक प्रकार की बाधा है। उपन्यास पढ़ना समय नष्ट करने की बात है—उपन्यास पढ़नेवालों को समाज समुचित आदर से नहीं देखता—यह भूल है।

प्रत्येक मनुष्य न तो सारे संसार में जा सकता है, न भिन्न-भिन्न सभा-समाजों में जाकर वहाँ के मनुष्यों की वास्तविक दशा का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अतः उसको आवश्यक है कि वह उपन्यास का अध्ययन करे।

उपन्यास पढ़कर आप भिन्न-भिन्न देशों की वास्तविक दशा का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। घर बैठे हुए आप पेरिस अथवा लंडन के जगमगाते हुए होटलों में निवास का आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

हिंदी-साहित्य में यद्यपि उपन्यास को उच्चासन प्राप्त है, तथापि हमको इतनी उन्नति से संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। यह मान भी लिया जाय कि हिंदी में कुछ उत्तमोत्तम उपन्यास विद्यमान हैं, तथापि संसार की अन्य भाषाओं के उपन्यासों की अपेक्षा हिंदी-उपन्यास उतने उच्च नहीं हैं, अतः हिंदी-उपन्यासकारों को अपनी लेखनी वेग तथा उत्साह से चलाना चाहिए, तभी साहित्य का यह अंग शीघ्र ही पूर्ण रीति से परिपक्व हो जाय।

चंद्रनारायण सक्सेना
बी० ए० "साहित्य-भूषण"

साहित्य-मणि-माला

हिंदी में अपने ढंग की सबसे सस्ती और उपयोगी पुस्तक-माला। इसमें कथा, कहानी, उपन्यास, जीवन-चरित्र, नाटक, इतिहास, साहित्य, विज्ञान, ललित कला आदि विषयों की सुंदर और सुपाठ्य पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। छपाई, सफ़ाई और सजावट सभी मनोरम हैं। ८० से २०० पृष्ठ तक की प्रत्येक सजिल्द पुस्तक का मूल्य दस आना। स्थायी ग्राहकों से पोस्टेज नहीं लिया जाता। बारह पुस्तकों के लिये ७॥) रु० पेशगी भेजकर स्थायी ग्राहक बनिए, एवं श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन में हमारा सहयोग कीजिए। प्रकाशित पुस्तकें—

१—झंकार—श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त की अपूर्व गीति-कविताओं का संग्रह।

२—अंकुर—तेरह सुंदर और सुपाठ्य कहानियों का संग्रह।

३—स्वप्नवासवदत्ता—महाकवि भास के सुप्रसिद्ध संस्कृत नाटक का हिंदी-रूपांतर। अनुवादक, श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त।

४—स्वास्थ्य-संलाप—सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई स्वास्थ्य-विज्ञान की अनुपम पुस्तक। पढ़ने में कथा-साहित्य का आनंद आता है।

५—दूर्वा-दल—श्रीमियारामशरण गुप्त-लिखित सुप्रशंसित भाव-पूर्ण कविताओं का संग्रह।

६—शेलकश—रूस के विश्व-विख्यात उपन्यासकार गोर्की के उपन्यास का अनुवाद। और भी एक-से-एक सुंदर ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं। हमारे यहाँ के अन्य ग्रंथ—मेघनाद-वध ३॥), गुरुकुल २), हिंदू १)॥, त्रिपथगा १॥), विकट भट =), चित्रांगदा ।=), हेमलता सत्ता ।-), रेणु ॥), विषाद ।-), आर्द्रा १), शक्ति १), गीता-रहस्य २॥), वीरांगना १), भारत-भारती १), जयद्रथ-वध ।-)

पता—साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

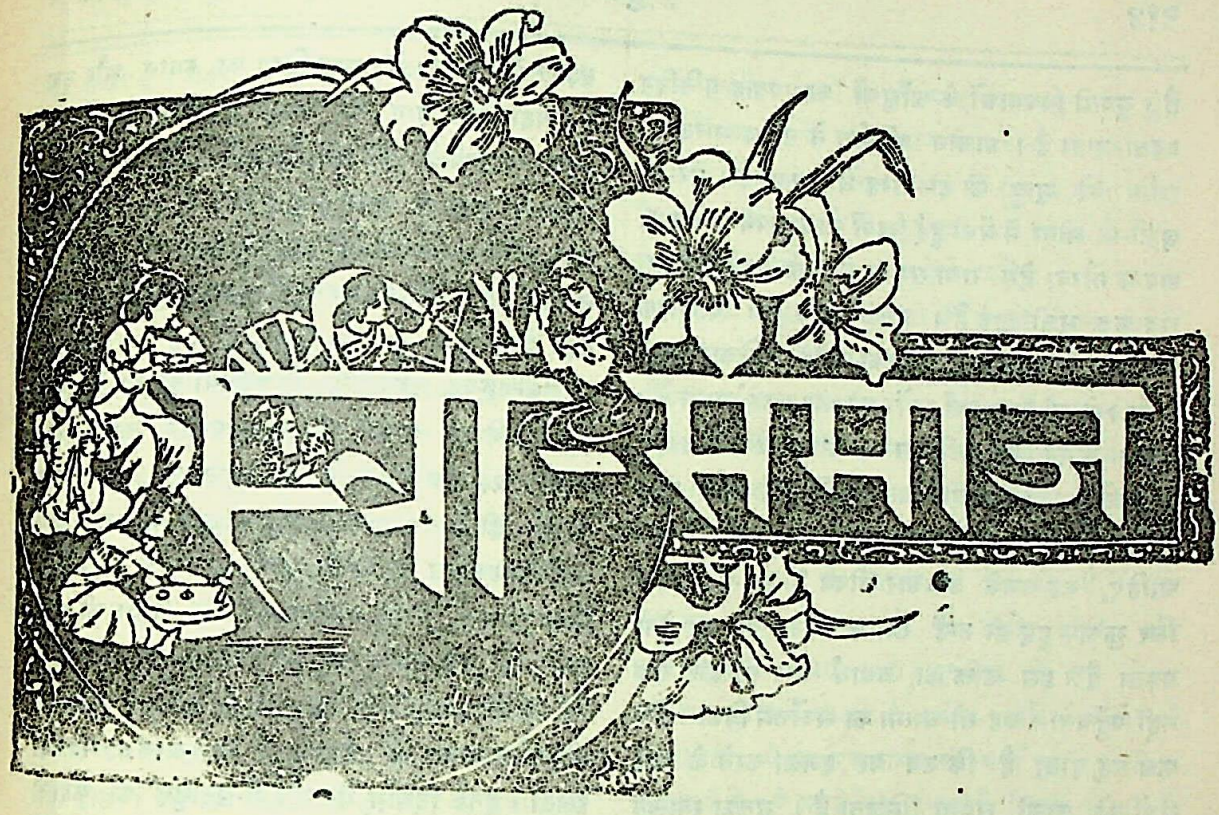

बाहरी स्वाधीनता और स्त्रियाँ

अब वह समय नहीं रहा कि हम स्त्रियों के सामने वह रूप रक्खें, जिसके लिये गोस्वामी तुलसीदासजी ने "चित्र-लिखे कपि देखि डेराती" लिखा है। सारल्य तथा कोमलता के भीतर की वह सृष्टि निस्संदेह अनुपम थी। उस त्रेता-काल की कल्पना की ही तरह कोमल विलास के मंजु अंक पर पली हुई स्त्रियों को प्राप्त करके तेज्य के कठोर पुरुषों को संसार के यथार्थ सुख का अनुभव होता था, और उस समय के चित्रण में अत्यंत कठोर और अत्यंत कोमल का ही सम्मिश्रण समाज तथा काव्यों में किया गया है। परंतु अब आवश्यकता है, हरएक मनुष्य के पुतले में, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, कोमल और कठोर, दोनों भावों का विकास हो। अब दोनो के लिये एक ही धर्म होना चाहिए। पुरुष के अभाव में स्त्री हाथ समेटकर निश्चेष्ट बैठी न रहे। उपार्जन से लेकर संतान-पालन, गृह-कार्य आदि वह सँभाल सके, ऐसा रूप, ऐसी शिक्षा उसे मिलनी चाहिए। पहले दोनो के भाव और कार्य अलग-अलग थे, अब दोनो के भाव और कार्यों कार्य एक ही में साध्य होना आवश्यक है। इस तरह गार्हस्थ्य धर्म में स्वतंत्रता बढ़ेगी। परावलंबन न रह जायगा। स्त्रियाँ भी मेधा की अधिकारिणी होंगी। हृदय और मस्तिष्क, दोनो का दोनो में एकीकरण होगा। एक ही में हम उभय धर्मों को देख सकेंगे। इस समय जो हम यह देखते रहते हैं कि किसी कारण पुरुष से एक दीर्घकाल के लिये विच्छेद हो जाने पर स्त्री बिलकुल निस्सहाय हो जाती है, अपने घर का काम नहीं सँभाल पाती, अनेक प्रकार की असुविधाएँ आ जाती हैं, बदमाशों की उन पर दृष्टि पड़ती है, मन-ही-मन वे डरी रहती हैं, घर उन्हें जेल से भी बढ़कर हो जाता है, यह सब न होगा। पुरुष के अभाव में स्त्री स्वयं उसका स्थान अधिकृत करेगी।

इसके लिये प्रथम आवश्यक साधन है शिक्षा। हमारे देश में स्त्रियों की शिक्षा के अभाव से जैसी दुर्दशा हो रही है, उसकी वर्णना असंभव है। उनका लांछन देखकर पाषाण भी गल जाते हैं। प्रतिदिन भारतवर्ष का आकाश स्त्रियों के क्रंदन से गूँजता रहता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। युवती विधवाओं के आँसुओं का प्रवाह प्रतिदिन बढ़ता जाता है। प्राचीन शीर्णता ने नवीन भारत की शक्ति को मृत्यु की हो तरह घेर रक्खा है। घर की छोटी-सी सीमा में बँधी हुई स्त्रियाँ आज अपने अधिकार, अपना गौरव, देश तथा समाज के प्रति अपना कर्तव्य, सब कुछ भूली हुई हैं। उनके साथ जो पाशविक अत्याचार किए जाते हैं, उनका कोई प्रतिकार नहीं होता। वे चुपचाप आँसुओं को पीकर रह जाती हैं। उनका जीवन एक अभिशप्त का जीवन बन रहा है। उन्हें जो यह शिक्षा दी जाती है कि तुम्हें अपने पुरुष के सिवा किसी दूसरे पुरुष का मुख नहीं देखना चाहिए, यह उनके अंधकार जीवन में टार-पेंटिंग है। सिर झुकाए हुए ही उन्हें तमाम जीवन पार कर देना पड़ता है। इस उक्ति का यथार्थ तत्त्व तो उन तक नहीं पहुँचता। यह तो आत्मा का सर्वोत्तम विकास है। फल यह होता है कि उन पर हमला करने के लिये गुंडों को काफ़ी सुयोग मिलता है। उनका स्वास्थ्य उनके अवरोध के कारण क्रमशः क्षीण ही होता रहता है। शिक्षा से यह सब दूर होगा। देवियाँ अपना दिव्य रूप पहचानेंगी। उन्हें अपने कर्तव्य का ज्ञान होगा। वे नदियों की तरह समाज के करारों से बहती हुई सहस्रों जीवन प्रतिदिन पवित्र कर जायँगी। उनका जो स्थान संसार की स्त्रियों में है, उसे प्राप्त करेंगी। राष्ट्र की स्वतंत्रता की उपासना में उनके जो अधिकार हैं, उन्हें ग्रहण कर अपने कर्तव्य का पालन करेंगी। बच्चों की पीड़ा के समय उन्हें तड़पना न होगा। वे उनकी दवा कर उन्हें रोग-मुक्त कर सकेंगी। समाज की नृशंसता, जो प्रतिदिन बढ़ती जाती है, उन पर अपना अधिकार न जमा सकेगी। विदेश जाने पर मकान में उनकी जो दुर्दशा होती रहती है, उससे वे बची रहेंगी। ज़रूरत पड़ने पर वे स्वयं उपार्जन करके अपना निर्वाह कर सकेंगी। प्रतिदिन एक ही प्रकार का भोजन खाते-खाते जो जी ऊब जाता है, ऐसा न होगा। वे अनेक प्रकार के भोजन पकाने की विधियाँ सीख लेंगी, और संसार में रह संसार के यथार्थ सुखों का अनुभव करेंगी। कहा है, संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर है। शिक्षा में शब्द-विद्या का स्थान और सब है। यही विद्या ज्ञान की धात्री कहलाती है। जितने प्रकार के दैन्य हैं, जितनी कमज़ोरियाँ हैं, उन सबका शिक्षा के द्वारा ही नाश हो सकता है। अशिक्षित, अपढ़ होने के कारण ही हमारी स्त्रियों को संसार में नरक-यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं—उनके दुःखों का अंत नहीं होता।

"कन्याप्येवं पालनीया शिक्षणीयातियत्नतः", मनु महाराज के इस कथन का अब पालन नहीं किया जाता। यह सच है कि इसका बहुत कुछ कारण देश का दैन्य ही है; पर पुरुषों की अश्रद्धा भी कहीं कम नहीं। जो संपन्न हैं, जिन्हें दोनो वक्त मज़े में भोजन मिल जाता है, वे भी बालिकाओं की शिक्षा की ओर ध्यान नहीं देते, बल्कि उच्च स्वर से यही घोषणा करते हैं कि लड़कियों को शिक्षा देना पाप है, वे बिगड़ जाती हैं। पीछे पिता-माता को समाज में रहने-लायक़ भी नहीं रखतीं। इनके दिमाग़ में 'सारंगा-सदावृक्ष' की कहानी पढ़ लेने तक ही विद्या परिमित है। ये लोग रूढ़ियों के ऐसे ग़ुलाम हैं कि जीते-जी उन्हें छोड़ नहीं सकते, और इससे समाज का पहिया ज़रा भी आगे नहीं बढ़ने पाता। देहात में शिक्षा की बहुत कमी है, वहाँ लड़कों को ही मदरसा भेजना दुश्वार है। गाँवों से कोस-कोस की दूरी पर मदरसे हैं। हरएक तहसील में मुश्किल से एक मिडिल स्कूल है। आठ-आठ, दस-दस कोस के लड़के मिडिल स्कूल के बोर्डिंग-हाउस में ठहरकर पढ़ नहीं सकते। अधिकांश लोगों की आर्थिक स्थिति वैसी नहीं है। जो लोग संपन्न हैं, उनमें अकारण प्यार की मात्रा इतनी बढ़ी हुई है कि वे बच्चे को अपने से अलग नहीं कर सकते, वह मूर्ख भले ही रह जाय। जहाँ लड़कों का यह हाल है, वहाँ लड़कियों की बात ही क्या? हरएक गाँव से प्रतिदिन जितनी भीख निकलती है, यदि उतना अन्न रोज़ एकत्र कर लिया जाय, तो गाँव में ही एक छोटी-सी पाठशाला खोल दी जा सकती है। एक शिक्षक की गुज़र उससे हो जायगी। अविद्या का जो यह प्रबल मोह फैला हुआ है, यह न रह जायगा। बालिकाओं के लिखने-पढ़ने का गाँव ही में प्रबंध हो सकता है। इस तरह उनके प्रति सच्चा न्याय गार्हस्थ्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर सकते हैं। शहरों में तो लड़कियों को पढ़ाने के अनेक साधन हैं।

अब घर के कोने में समाज तथा धर्म की साधना नहीं हो सकती। ज़माने ने रुख़ बदल दिया है। हमारे देश की लड़कियों पर बड़े-बड़े उत्तरदायित्व आ पड़े हैं। उन्हें वायु की तरह मुक्त रखने में ही हमारा कल्याण है। तभी वे जाति, धर्म तथा समाज के लिये कुछ कर सकेंगी। उन्हें दबाव में रखकर इस देश के लोग अपने जिस कल्याण की चिंतना में पड़े हैं, वह कल्याण कदापि नहीं, प्रत्युत निरी मूर्खता ही है। आज तक जितने अत्याचार, बलात्कार आदि हुए हैं, वे सब पर्दानशीन स्त्रियों पर ही हुए हैं। पर्दे के भीतर जितनी तीव्रता से दृष्टि प्रवेश करना चाहती है, खुले मुख पर उतनी तीव्रता से नहीं आक्रमण करती। पाशविक प्रवृत्तियाँ अंधकार में ही प्रबल वेग धारण करती हैं। प्रकाश को देखकर वे दब जाती हैं, उनका साहस नहीं होता। इसलिये स्त्रियों को हर बात में प्रकाश को सम्मुखीन करना चाहिए। ज्ञान के बिना जीवन व्यर्थ है। निर्वाह होना कठिन है। स्वावलंबन नहीं आता। स्वावलंब कोई पाप नहीं, प्रत्युत पुण्य है। हमारे देश के लोग इस समय आधे हाथों से काम करते हैं। उनके आधे हाथ निष्क्रिय हैं। जब स्त्रियों के भी हाथ काम में लग जायँगे, कार्य को सफलता हमें तभी प्राप्त होगी। अभी जो काम स्त्रियाँ करती हैं, वह काम नहीं; वह संस्कारों का प्रवर्तन है। उससे मेधा और नष्ट होती है। मनुष्य-जाति मशीन के रूप में बदल जाती है। हमारी स्त्रियों की यही दुर्दशा है। उनका कार्य ज्ञान-संयुक्त नहीं होता। कारण, एक ही कार्य की प्रदक्षिणा उन्हें प्रतिदिन करते रहना पड़ता है। उससे उनको बुद्धि का संयोग नहीं हो पाता। बुद्धि को कभी एक ही कार्य पसंद भी नहीं। वह नित्य नए आविष्कार करना चाहती है। विद्या के न रहने से हमारे देश की स्त्रियाँ मेधा बुद्धि तथा कला-कौशल को भी खो चुकी हैं। विद्या-बुद्धि से रहित मनुष्य मनुष्यता से गिरकर इतर श्रेणी में चला जाता है। उस पर दूसरे लोग ही प्रभुत्व करते हैं। धार्मिक संस्कारों के चक्र की प्रदक्षिणा करते रहने के कारण ही हम पराधीन हैं, हम पर दूसरी-दूसरी जातियों के बुद्धिमान् लोग प्रभुत्व कर चुके हैं, और कर रहे हैं। हम लोग स्वयं जिस तरह ग़ुलाम हैं, उसी तरह अपनी स्त्रियों को भी ग़ुलाम बना रक्खा है, बल्कि उन्हें दासों की दासियाँ कर रक्खा है। इस महादैन्य से उन्हें शीघ्र मुक्ति देनी चाहिए। तभी हमारी दासता की बेड़ियाँ कट सकती हैं। जो जीवन बाहरी स्वतंत्रता नहीं प्राप्त कर सकता, वह मुक्ति-जैसी सार्वभौमिक स्वतंत्रता कब प्राप्त कर सकता है? उसकी धर्म की साधना भी ढोंग है। धर्म तो वह है जिससे अर्थ, काम तथा मोक्ष, तीनों मिल सकें। सच्चा धर्म इस समय स्त्रियों के सब प्रकार के बंधन ढीले कर देना, उन्हें शिक्षा की ज्योति से निर्मल कर देना ही है, जिससे देश की तमाम कामनाओं की सिद्धि होगी, और स्वतंत्र-सुखी जीवन बाह्य सुतंत्रता से तृप्त होकर आत्मिक मुक्ति के संधान में लगेगा। रूढ़ियाँ कभी धर्म नहीं होतीं, वे एक-एक समय की बनी हुई सामाजिक शृंखलाएँ हैं। वे पहले की शृंखलाएँ जिनसे समाज में सुथरापन था—मर्यादा थी, अब ज़ंजीरें हो गई हैं। अब उनकी बिलकुल आवश्यकता नहीं। अब उन्हें तोड़कर फेंक देना चाहिए। जिन लोगों ने ऐसा किया है, वही लोग देश में पूजनीय हो रहे हैं। वे ही कहते हैं, और शास्त्रों के उद्धरण देते हुए कहते हैं कि अब हर तरह से स्त्रियों को शिक्षित देवियों के रूप में परिणत करो, जिससे वे स्वयं अपने कल्याण की कल्पना कर सकें; नहीं तो, हे देशवासियो, प्रतिदिन तुम्हारे ऊपर स्त्री-हत्या का पाप चढ़ रहा है। इससे तुम्हारा निस्तार न होगा।

जब तक स्त्रियों में नवीन जीवन की स्फूर्ति भर नहीं जायगी, तब तक ग़ुलामी का नाश नहीं हो सकता। यहाँ एक समय था, जब ज्ञान का इतना प्रकाश फैला हुआ था कि बच्चों को पालने पर झुलाती हुई माता गाती थी—"त्वमसि निरंजनः।" क्या कोई इस समय कल्पना भी कर सकता है कि वह कितना उज्ज्वल युग था? मुक्ति का यथार्थ सूत्र स्त्रियों के ही हाथ में है। स्त्रियों का आदर-सम्मान जब तक नहीं होता, तब तक देवता भी संतुष्ट नहीं होते, भगवान् मनु ने स्वयं कहा है। स्त्रियाँ यदि अपढ़ रह गईं, यदि उन्हीं की ज़बान न मँजी, तो बच्चा पढ़कर भी कुछ कर नहीं सकता। मौलिकता का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूल बच्चे की माता है। भाषा का सुधार, संशोधन स्त्रियाँ ही करती हैं। जब तक वर्तमान खड़ी बोली स्त्रियों के मुख से मँजकर नहीं निकलती, तब तक उसमें कोमलता का आना स्वप्न है। वही बच्चा भविष्य के हिंदी-साहित्य का महाकवि है, जिसे अपनी माता के मुख से साफ़-शुद्ध, मार्जित, सरल, श्रुतिमधुर तथा मनोहर खड़ी बोली के सुनने का सौभाग्य प्राप्त होगा। हमारे देश की ललित कलाओं का विकास भी हमारी स्त्रियों के विकास की ओर अनिमेष दृष्टि से हेर रहा है। जब तक हमारी गृह-देवियाँ लक्ष्मी तथा सरस्वती के रूपों में हमारे गृह का अंधकार दूर नहीं करतीं, तब तक सुख तथा शांति की कल्पना पुरुषों के मस्तिष्क की एक बहुत बड़ी भूल है, यह हरएक भारतवासी को समझ लेना चाहिए। लक्ष्मी और सरस्वतियों को क़ैद करना भी अपने ही अंधकार के दीपक को गुल कर देना है। राष्ट्र की स्वतंत्र भावना कैसे पैदा हो? घर की देवियाँ आँसू बहाएँ और आप बहादुर हो जायँ? ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ, और न कभी हो सकता है। कोई भी सोच सकता है, स्त्रियों को उत्साह देने से पुरुषों में कितनी बड़ी शक्ति का जागरण हो सकता है। फिर आज उत्साह देना तो दूर रहा, राष्ट्र के कल्याण के लिये नारियों को भी पुरुषों के साथ रहने की आवश्यकता आ पड़ी है। श्रीकृष्ण के नाम पर निछावर होनेवाली हिंदू-जाति बिलकुल भूल गई है कि श्रीकृष्ण का जन्म कहाँ और कैसे हुआ था। इस घटना में जो सत्य छिपा हुआ है, उनके बंदीगृह में जन्म लेने का जो अर्थ है, जहाँ से स्वतंत्रता पैदा होती है, उसका उपयोग कितने मनुष्य आज कर रहे हैं? श्रीकृष्ण का नाम लेना तो बहुत सहज है; पर उनके आदर्श पर काम करना उतना ही कठिन। पर कठिनता का सामना किए बिना कभी महान् फल की प्राप्ति हो भी नहीं सकती। हमारे शास्त्रों के प्रति पृष्ठ में उदारता तथा स्वतंत्रता का शंख-नाद सुन पड़ता है। पर उसके दुरुपयोग की भी हद नहीं। रूढ़ियों में पड़कर ज्ञान का जो दुरुपयोग किया जा रहा है, उसके मानो ही दासता के हो गए हैं। यह उसी का फल-भोग चल रहा है। ज्ञान का निरादर अपने ही मस्तिष्क का अपमान है, और स्त्रियों की मान-हानि साक्षात् लक्ष्मी और सरस्वती की मान-हानि है। हिंदुओं ने दोनों का अनादर किया। वैसा ही फल भी मिला। अब, जब कि तमाम संसार स्त्रियों की मर्यादा तथा विकास को सामने कर, हर तरह की समृद्धि का अधिकारी हो रहा है, हमें अपने शास्त्रों से शिक्षा लेनी चाहिए, स्त्रियों की योग्यता के बढ़ाने के लिये प्रयत्नशील होना चाहिए, संसार में अपने विकास की ज्योति फैलानी चाहिए। स्पर्द्धा ही जीवन है। उसमें पीछे रहना जीवन की प्रगति को खोना है। जीवन में विजय प्राप्त करना हर जाति और हर धर्म की शिक्षा है। वहाँ स्त्रियाँ ही प्रधान सहायक के रूप से संसार के रंग-मंच की अभिनेत्री के रूप से आती हैं। स्त्रियों का शव लेकर विजयी होना असंभव है। वे ही स्त्रियाँ, जो बाह्य विभूति की मूर्तियाँ हैं, लक्ष्मी तथा सरस्वती की कृतियाँ हैं, अपने पुरुषों में शक्ति-संचार कर सकती हैं। स्त्रियों के रूप में जो विजय घर में मौजूद है, वही बाहर भी मिलती है। घर का अभागा कभी बाहर प्रसिद्धि नहीं पाता। अतएव हमें स्त्रियों की बाह्य स्वतंत्रता, शिक्षा दीक्षा आदि पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। अन्यथा अबके पुरुषों की तरह उनके बच्चे भी, गुलामी की अँधेरी रात में उड़नेवाले, गीदड़ होंगे; स्वाधीनता के प्रकाश में दहाड़नेवाले शेर नहीं हो सकते। और, हमारी मातृ-भाषा का मुख उज्ज्वल नहीं हो सकता।

"निराला"

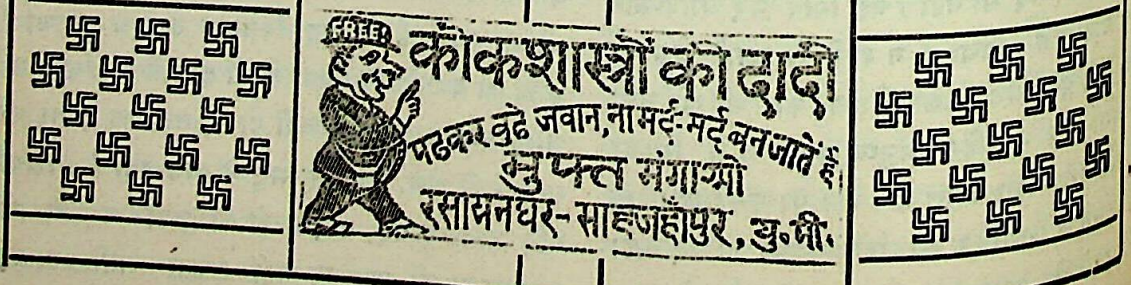

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कटहल का अचार

कटहल को उबालकर राई, नोन, धनिया, लाल मिर्च, मेथी और हल्दी अंदाज़ से लेकर कूट-पीसकर कटहल में मिलावे, फिर मिट्टी के घड़े में रख ऊपर से कड़ुआ तेल भर दे, और घड़े का मुँह कपड़े से ढक घाम में रख दे। पंद्रह दिन बाद काम में लावे।

मूली का अचार

कोमल मूली लेकर टुकड़े कर डाले और मिट्टी या काठ के बर्तन में रखकर थोड़ा नमक बारीक पीसकर मिला दे, और दो-तीन दिन घाम में रखकर हिला-डुला दिया करे। तीसरे दिन हल्दी, राई, मिर्चा, धनिया, नमक और भुना हींग बारीक पीसकर मिला दें और थोड़ा-सा पानी गरम करके छोड़ दे, फिर घाम में रखकर एक सप्ताह प्रतिदिन दो-चार बार हिला-डुला दिया करे। इस प्रकार अचार तैयार हो जायगा।

गाजर का अचार

देशी गाजर मँगाकर लंबी-लंबी बीच से चीर ले और उनके बीच की कड़ी गाँठ निकाल डाले, फिर धीमी-धीमी आँच में उबाले। जब उबल जायँ, तो उतारकर पानी निचोड़ डाले, और घड़े में भरकर राई, नमक, लाल मिर्च, हल्दी, धनिया सबको पीसकर डाले, और मेथी तथा हींग भूनकर पीसे, फिर गाजरों में मसाला डालकर थोड़ा-सा गरम पानी डाल दे, और घाम में एक सप्ताह रखकर दिन में कई बार हिला-डुला दिया करे। एक सप्ताह बाद काम में लावे।

कैथे का अचार

कच्चे कैथे लेकर फोड़ डाले और उनके भीतर का गूदा निकालकर उबाल डाले। ऊपर से हल्दी, मेथी, राई, धनिया, मिर्चा, कुल मसाला भूनकर नमक अंदाज़ से मिलाकर एक बड़े बरतन में कैथे के गूदे को लौटकर सब मसाला खूब मिला दे। ऊपर से एक सेर तेल डालकर एक मिट्टी के बरतन में भरकर धूप में रख दे।

करौंदे का अचार

बड़े-बड़े पके हुए ताज़े करौंदे मँगाकर उबाल डाले। फिर हल्दी, नमक, राई, मिर्च आदि पीसकर मिला दे, और थोड़ा तेल डालकर घाम में रख हिला-डुला दिया करे। यह अचार भी तेल या नोन-पानी का डाला जाता है। करौंदे सिरके में भी डाले जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कमरख का अचार

कमरख के टुकड़े कर थोड़ा नमक मिलाकर घाम में रख दे। फिर हल्दी, मिर्चा, नमक, धनिया, ज़ीरा, हींग भूनकर पीसकर मिला दे। इसमें पानी या तेल डालने की ज़रूरत नहीं है। ऊपर लिखा सब मसाला डालकर घाम में रखकर हिला-डुला दिया करे। दो-तीन दिन बाद काम में लावे।

छुहारे का अचार

छुहारे मँगाकर साफ़ करके उबाल डाले। फिर गुठली निकालकर सब मसाला पीसकर छुहारों में भर दे, और डोरे से बाँधकर अमृतबान में भरकर काग़ज़ी नींबू का अर्क़ ऊपर तक भरके कपड़े से बाँधकर घाम में रक्खे। दो-तीन दिन बाद उठाकर साया में रख दे, और एक सप्ताह बाद काम में लावे।

मोहनभोग

(१) सूजी के बराबर घी डालकर कढ़ाई में भून ले। जब भुन जाय, तो खौलता हुआ गरम पानी व दूध सूजी से तिगुना उसमें डाल दे और सूजी से ड्यौढ़ा बूरा डालकर चला दे। ऊपर से मेवा डाल दे।

(२) मैदा या सूजी और घी को कढ़ाई में चढ़ाकर मध्यम आँच से भून ले। जब कुछ-कुछ सुर्ख़ी आ जाय, तब छिले और कतरे हुए बादाम डाल दे। जब बादाम में भी सुर्ख़ी आ जाय तब मिसरी की चाशनी में (जो पहले से बनाकर तैयार कर लेनी चाहिए) डालकर चलाता रहे। थोड़ी देर बाद किशमिश और किशमिश भी डाल दे और गुलाब-जल के छींटा देता रहे। जब हलवा गाढ़ा हो जाय, तो उतार ले।

आलू के पापड़

आलू को उबालकर पीस लो। उसमें अंदाज़ से नमक, मिर्च, गर्म मसाला और भुना ज़ीरा मिलाकर छोटी-छोटी टिकियाँ बनाकर एक मोटे कपड़े पर रखकर धूप में सुखा लो। टिकियाँ यदि आसानी से न बनें तो थोड़ा पानी डालकर गीला कर लो। जब सूख जायँ तो कपड़े को उलटकर पानी के छींटे देकर टिकियों को छुड़ा लो और उन्हें सुखाकर रख दो। जब जी चाहे, घी में भूनकर खाओ।

क़ुलफ़ी

दूध को ख़ूब औटा ले और मिसरी मिलाकर गुलाब या केवड़ा के इत्तर के बूँद डाल दे और टीन की क़ुलफ़ियों में भरकर ऊपर से ढक्कन बंद करके उनका मुँह आटे से ख़ूब बंद कर दे और एक बरतन में चुनकर रख दे और ऊपर-नीचे बरफ़ भर दे। दो घंटे में क़ुलफ़ियाँ तैयार हो जायँगी।

श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव

अग्निसंजीवन

स्वादिष्ठ

मंदाग्नि, क़ब्ज़, अजीर्ण, भूख का न लगना, वायु, दाह, अफरा आदि पेट के ऐसे सब रोगों को एक उत्तम दवा है।

ट्रेड माक

अग्निसंजीवन की परीक्षा के लिये नमूना एक आने का टिकट भेजकर मँगाइए। क़ीमत छोटी शीशी ।=) आने; बड़ी शीशी (एक तोला) १।) रु०; डाक-खर्च अलग।

हर शहर में एजेंटों की आवश्यकता है।

पता—अग्निसंजीवन-कार्यालय, ३५४, कालबादेवी रोड, बंबई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

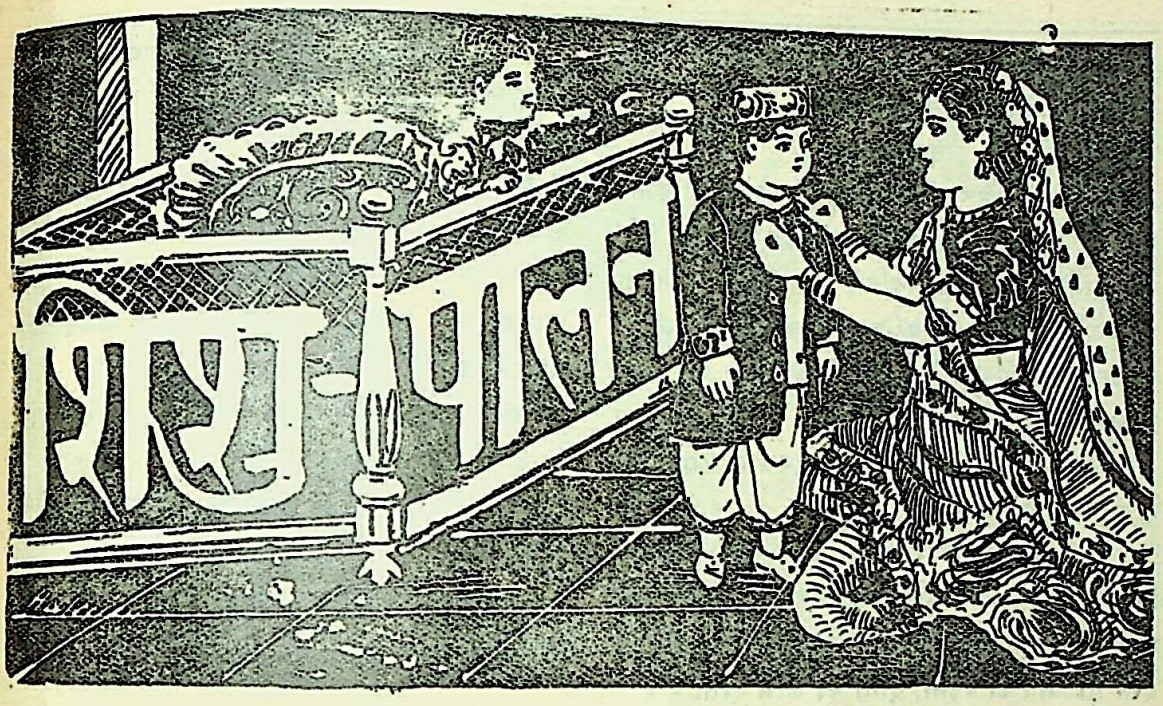

बच्चों की पसली चलना

फ़ीम को गरम करके पेट पर लेप करने से बंद हो जाती है।

(२) गंदाविरोज़ा की पट्टी बराबर बाँधने से पसली चलना बंद हो जाता है।

(३) बारहसिंघा को पानी में घिसकर गरम करके लगाने से आराम होता है।

(४) खाने का सोडा ४ मा०, आक की जड़ की छाल ३ मा०, अमारबेंद ६ मा०, सबको पीसकर चूर्ण करे। एक रत्ती मा के दूध में देने से पसली चलना बंद हो जाता है।

होम्योपैथिक—एकोनाइट की ४-६ ख़ूराकें देने से आराम हो जाता है।

ब्राइनिया, हेपर सलफ़र भी दिया जाता है।

बाईकेमिक—'कालीम्यूर'—यह ख़ास दवा है। अगर उल्टी हो, तो फेरम फ़ास' के साथ देनी चाहिए।

बच्चों के दाँत

(१) मँभालू की जड़ का एक छोटा टुकड़ा बच्चों के गले में बाँधने से दाँत सहज में निकल आते हैं।

(२) चूना और शहद मिलाकर मसूढ़ों पर लगाने से बालक के दाँत जल्दी निकल आते हैं।

होम्योपैथिक की ख़ास दवा—बिलाडोना, केमेमिला और चाइना।

बाईकेमिक—केलकेरिया फ़ास। यह ख़ास दवा है। दूसरे-तीसरे दिन एक-दो ख़ुराक दे देने से दाँत जल्दी निकलते हैं। मैगनेशिया फ़ास भी केलकेरिया फ़ास के साथ देते हैं। अगर मुँह से राल ज़्यादा बहे, तो नैटरमम्यूर भी दिया जाता है।

बच्चों की हिचकी

(१) यदि बालक को हिचकी अधिकता से आने लगे, तो कलौंजी एक माशा बारीक पीसकर शहद में मिलाकर चटावे।

(२) सौंफ़ और शक्कर पीसकर पिलाने से भी हिचकी बंद हो जाती है।

(३) हिचकी के रोगी को कच्चा सिंघाड़ा खिलाने से भी आराम होता है।

(४) मुलहठी के चूर्ण को शहद में मिलाकर चाटने से हिचकी बंद हो जाती है।

(५) गर्म घी सूँघने से भी आराम होता जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) नारियल पीसकर शक्कर मिलाकर चटावे, और गीला कपड़ा तालू पर रक्खे ।

दस्त आना

(१) ज़रा-से प्याज़ के रस में बाजरे-बराबर अफ़ीम घोलकर देने से बालक के दस्त बंद हो जाते हैं ।

(२) ज़ीरा, हरा पोदीना, मुनक्का, काला नमक, उपर्युक्त तीनो चीज़ें बराबर-बराबर लेकर नमक अंदाज़ से डालकर बारीक पीस डाले । दिन में ४-५ बार चटाने से बच्चों के दस्त बंद हो जाते हैं ।

(३) मरोड़फली को सेंधा नमक के साथ देने में आँव बंद हो जाती है ।

(४) सोंठ १ तोला, गुड़ पुराना २ तोले, दोनो को मिलाकर झड़बेर के समान गोली बना ले । प्रत्येक दस्त आने के बाद एक गोली ठंडे जल से सेवन करने से दस्त या आँव का पड़ना, दोनो को लाभ करता है ।

(५) जब आँव आती हो, तो बायविडंग, अ... मोद, पीपल महीन पीसकर चावलों के पानी... खिलावे ।

(६) यदि लोहू आता हो, तो सफ़ेद ज़ीरा, ... के बीज जल में पीसकर मिसरी मिलाकर खिलावे ।

होम्योपैथिक—केमोमिला । यह ख़ास दवा है, ख़ासकर उन दस्तों के लिये, जो दाँत निकलने ... वजह से आते हैं ।

चाइना, पलसेटला, एपीकाक, कलकेरिया ... भी देते हैं ।

जब आँव के दस्त आते हों, तो मयूरिअस देना चाहिए ।

बाईकेमिक—कालीम्यूर, कलकेरिया फ़ास, मेगनी... शिया फ़ास ।

श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव

योग-दर्शन

[लेखक—श्रीलाला कन्नोमल एम्० ए०]

योगशास्त्र एक अद्भुत, अमूल्य, अनूठी एवं अनुपम संपत्ति है । इसका प्रचार पहले भारतवर्ष में इतना अधिक था कि इसी के बल पर वह सारे जगत् पर शासन करता था—जगत् का गुरु था । पर जब से इसके योग-बल का ह्रास हुआ, तब से वह अपने गौरव-पूर्ण उच्च पद से गिर गया । अस्तु । योगविद्या, हमारे और हमारी संतानों के लिये, नितांत आवश्यक है । इसी अभिप्राय से इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है । यह पुस्तक पातंजल योग-सूत्रों, श्रीव्यासभाष्य और वाचस्पति मिश्र की वृत्ति के आधार पर लिखी गई है । पुस्तक की भूमिका में प्रायः उन सभ बातों का समावेश किया गया है, जो योग-दर्शन से संबंध रखती हैं, और जो आधुनिक गवेषणा से मालूम हुई हैं । पुस्तक के अंत में आठ परिशिष्ट लगे हैं, जिनमें योग-सिद्धांत पूर्ण रीति से समझने के लिये पर्याप्त सामग्री है । पुस्तक सर्वांग-पूर्ण है । यदि भूमंडल की सभ्य जातियों पर अपने गौरव और महत्त्व का सिक्का जमाकर आध्यात्मिक तथा भौतिक स्वराज प्राप्त करना है, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए । मूल्य १), सजिल्द १॥)

योगशास्त्र-संबंधी नीचे-लिखी पुस्तकें भी पढ़ने योग्य हैं । हिंदी-संसार ने इनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है ।

योग-शास्त्रांतर्गत धर्म—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥), १)

योगत्रयी—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥) १)

राजयोग—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; १॥), २)

हठयोग—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य १।=), १॥=)

कर्मयोग—लेखक, श्रीसंतराम बी० ए० ; मूल्य ॥), १)

जीवन-मरण-रहस्य—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ।=)

प्राणायाम—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥।=), १।=)

योग की कुछ विभूतियाँ—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥), १)

संचालक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गर्भवती स्त्रियों के लिये उपयोगी नियम

१. बादी, बासी अथवा वायु बढ़ानेवाली और दस्त को रोकनेवाली चीज़ें न खानी चाहिए।

२. गर्भिणी स्त्रियों को लंघन, मैथुन, बहुत भोजन, रात में जागरण, शोक, सवारी, रक्त-मोक्षण, मल-मूत्र आदि वेगों का रोकना, उत्कट आसन से बैठना अत्यंत हानिकारक हैं।

३. मलिन, विकृत आकार और अंग-हीन किसी स्त्री का स्पर्श न करे।

४. परिश्रम बहुत भी न करे, और बिलकुल थोड़ा भी नहीं। देहात की परिश्रमी स्त्रियों की संतान स्वस्थ होती है, और उन्हें प्रसव-कष्ट की पीड़ा कम होती है।

५. दिन को ज़्यादा न सोवे और न रात में ज़्यादा जागे।

६. मैले और बहुत चुस्त कपड़े न पहने।

७. भयानक स्थानों में जाना-आना और भयंकर कर्मों का देखना वर्जित है।

८. दुर्गंधित पदार्थों को न सूँघे और न ऐसे पदार्थों को देखे, जो देखने में बुरे लगें और न 'कर्ण-अप्रिय' वाणी सुने।

९. भावी माता के शरीर और हृदय की जैसी अवस्था होगी, वैसी ही भिन्न-भिन्न स्वभाव और योग्यता वाली संतान होती है। अतएव लड़ाई-झगड़े, क्रोध, चिंता और बुरे विचारों से सदा दूर रहना आवश्यक है। पौष्टिक पदार्थ शरीर का भोजन है। और उत्तम विचार मन का।

१०. कभी दौड़कर न चले और न धमक से उतरे या चढ़े, और न कोई भारी चीज़ उठावे।

११. चंद्र या सूर्य-ग्रहण कभी न देखे।

१२. सब नियमों से श्रेष्ठ नियम स्वच्छ वायु का सेवन करना है।

सौर का प्रबंध

ज़च्चाख़ाना साफ़ व सुथरा और अच्छी जगह होना चाहिए। इसके लिये कोई सड़ी-बदबूदार कोठरी, जहाँ बहुत ही नमी हो और कई साल तक बंद रही हो, नहीं होना चाहिए।

जाड़ों में ज़च्चाख़ाना गरम रहे और उसमें हवा के आमने-सामने दो-तीन बड़े-बड़े रोशनदान या खिड़की अवश्य हों, वर्ना कमरे की हवा गंदी होकर बच्चे और मा दोनो के लिये हानिकारक होगी।

ज़च्चाख़ाने की ज़मीन साफ़ और सूखी होनी चाहिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दरवाज़ा दक्षिण व पूर्व की ओर हो। कमरे की लंबाई कम-से-कम आठ हाथ और चौड़ाई चार हाथ होना चाहिए।

बच्चा पैदा होने से पहले ये सामान तैयार कर लेना चाहिए—

(१) ख़ूब कसा हुआ पलँग जिस पर गुदगुदा बिछौना हो और उस पर मोमजामा बिछा हो।

(२) पेट पर लपेटने के लिये मोटा और साफ़ कपड़ा।

(३) पुराना धुला हुआ बहुत-सा साफ़ कपड़ा।

(४) रेशम का तागा बटा हुआ, नाल बाँधने के लिये।

(५) तेज़ क़ैंची या चाक़ू नाल काटने के लिये (इसको गर्म पानी में ख़ूब उबाल डालना चाहिए। ऐसा करने से नाल काटने में कुछ ख़राबी नहीं होने पाती)।

(६) गुनगुना पानी।

(७) कारबालिक साबुन दाई वग़ैरह के हाथ धुलाने के लिये।

(८) साफ़ धुनकी हुई रुई ज़च्चा के मुक़ाम पोंछने और उस पर फ़ाहा रखकर बाँधने के लिये।

(९) "लाइसोल"—यह एक अँगरेज़ी दवा है। इसके लोशन से दाई के हाथ धुलाना चाहिए, और बाद में ज़च्चा को पिचकारी देने के लिये।

दाई को सौर में भेजने से पहले उसके कपड़े बदलवा देना चाहिए और उसके नाख़ून यदि बड़े हों, तो कटवा देना चाहिए। नाख़ून बड़े रहने से गर्भस्थान में खरोंच लग जाने का भय रहता है। उसके हाथ कारबोलिक साबुन और गर्म पानी से ख़ूब धुला देना चाहिए।

सौर में बहुत-से मनुष्य न रहना चाहिए।

रोशनी ऐसी जगह रक्खी जाय, जो ज़च्चा के आँखों के पीछे हो।

श्रीत्रिपुरारिशरण श्रीवास्तव

हिंदू-जीवन का रहस्य

लेखक, देवता-स्वरूप भाई परमानंदजी एम्० ए०। हिंदू-संगठन की इस उदीयमान गति में भाईजी की सेवाएँ, त्याग और योजनाएँ अपना ख़ास स्थान रखती हैं। इस पुस्तक में आपके ऐसे ही अनुभव का निचोड़ है। पुस्तक ऐतिहासिक दृष्टि से लिखी गई है। धार्मिक जड़ता के कारण हिंदू-शक्ति किस प्रकार छिन्न-भिन्न हुई, इसका इसमें अच्छा निरूपण है। साथ ही हिंदू-जीवन का महत्त्व क्या है और क्या होना चाहिए, इसकी तर्क-पूर्ण विवेचना है। प्रत्येक हिंदू को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए। इसमें हिंदू-वैभव, एकदेशीयता, जातीयता तथा सामाजिक संगठन आदि की पहेलियाँ स्वरैक्य के साथ हल की गई हैं। दार्शनिक तर्कों के साथ हिंदू-जीवन का रहस्य इतने अच्छे ढंग से अंकित किया गया है कि पाठक फड़क उठेंगे, और निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचे बिना न रहेंगे। अवश्य मँगाइए। मूल्य सादी ।॥=), सजिल्द १।=)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

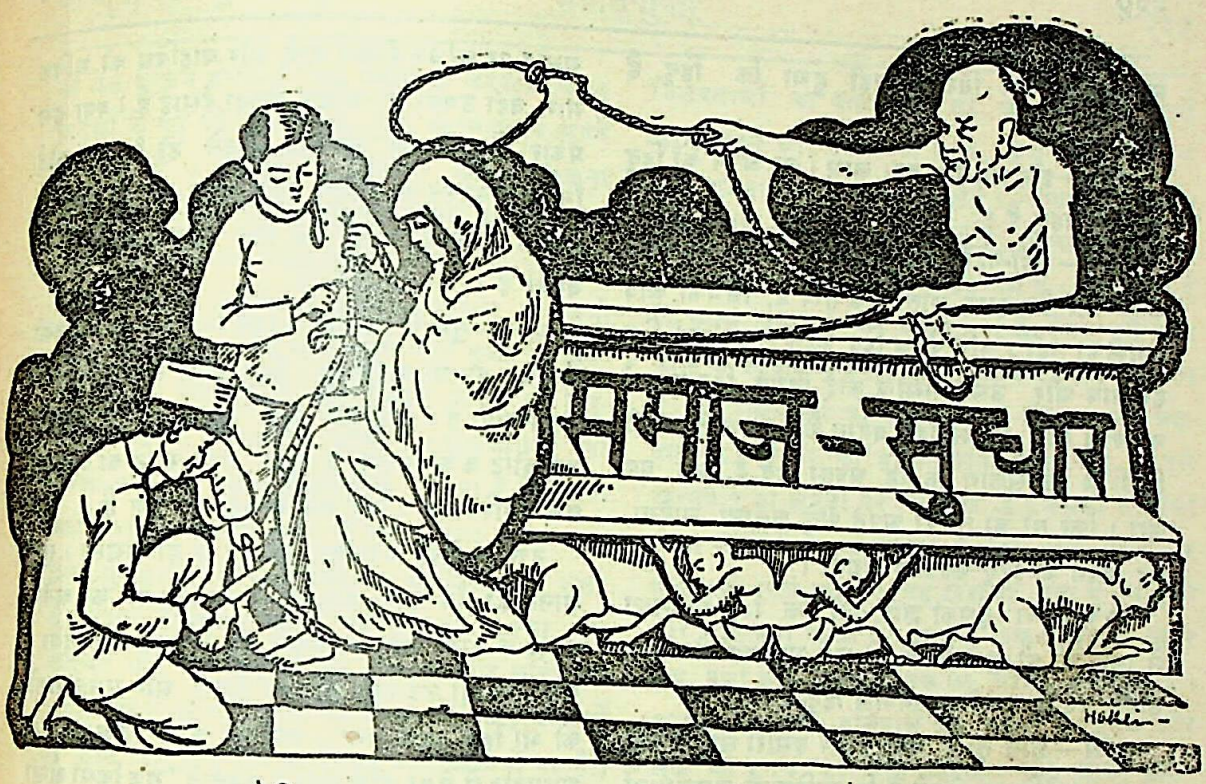

वर्ण-विभाग

(गत अंक से आगे)

श्न—क्यों घबराते हो ? हिंदू-संगठन हो रहा है। हिंदू-महासभा काम कर रही है। अब तो अवश्य ही हिंदू-जाति एक सूत्र में बद्ध हो जायगी।

उत्तर—हिंदू-संगठन और हिंदू-महासभा के होने से उन्नति के कुछ चिह्न तो अवश्य दिखाई पड़ते हैं, परंतु रोग की निवृत्ति की यह एकमात्र औषधि नहीं है। प्रथम त्रुटि तो यह है कि हिंदू-सभा की विद्वन्मंडली का दृष्टिकोण परिवर्तित नहीं हुआ। विद्वन्मंडली यह तो चाहती है कि उसको वही सम्मान-युक्त पद दे दिया जाय, जो मुसलमानों में जमीयतुल-उलमा को है, और जिस प्रकार जमीयतुल-उलमा के फ़तवे मुसलमान लोग अक्षरशः मानने को उद्यत हो जाते हैं, उसी प्रकार हिंदू लोग भी विद्वन्मंडली की व्यवस्थाओं को मानने लगें। परंतु इस विद्वन्मंडली में मुसलमानी जमीयतुल-उलमा के-से गुण विद्यमान नहीं। वह अपने अधिकार तो चाहती है, परंतु कर्तव्यों का पालन नहीं करती। मुसलमानी जमीयतुल-उलमा का प्रत्येक सदस्य प्रत्येक मुसलमान से प्रेम रखता है। उसे किसी से घृणा नहीं। उसको मुसलमान-जाति की वृद्धि की हर समय चिंता है। वह मुसलमानों की आवश्यकताओं पर हर घड़ी दृष्टि रखता है, परंतु हिंदू-सभा की विद्वन्मंडली में कोई ऐसा सदस्य नहीं, जिसको नीच ऊँच का विचार न हो, जो हिंदुओं की हीन दशा और संख्या की न्यूनता पर आँसू बहाता हो और जिसने मिथ्या जाति-अभिमान को छोड़ दिया हो।

प्रश्न—यह तुमने पहला दोष बताया। दूसरा दोष क्या है ?

उत्तर—दूसरा इससे भी बड़ा दोष यह है कि हिंदू-सभा के नेताओं ने यह निश्चित नहीं किया कि हिंदुत्व का सामान्य लक्षण क्या है। इस समय केवल यह पुकार हो रही है कि हिंदू निर्बल हैं, हिंदुओं की संख्या कम हो रही है, इसलिये संगठन करना चाहिए, परंतु याद रखना चाहिए कि कोई संगठन बिना भावों की एकता के अधिक समय तक नहीं चल सकता। कम-से-कम नेताओं में तो अवश्य भावों की एकता होनी चाहिए, तभी साधारण जनता उनका अनुसरण कर सकेगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अभी तक यही निश्चय नहीं हुआ कि हिंदू है कौन ?

प्रश्न—इस झमेले से क्या लाभ। जो अपने को हिंदू कहे, वह हिंदू है।

उत्तर—नहीं-नहीं। यह व्यर्थ का झमेला या वाक्-जाल नहीं है। इसके भीतर एक तत्त्व है, जिसको आप समझे ही नहीं। यदि केवल हिंदू कहने से ही कोई हिंदू हो जाय और उसके सम्मुख कोई विशेष हिंदू-आदर्श न रक्खा जाय, तो वह हिंदू बनेगा कैसे। क्या तुम कभी किसी से कह सकोगे कि वह अच्छा हिंदू है, और वह बुरा। फिर तो जो तुमको अपने पीछे चलाना चाहेगा, वह अपने को हिंदू कहलाने लगेगा।

प्रश्न—क्या तुमको ज्ञात नहीं कि हिंदू-महासभा से निश्चित हो चुका है कि जो धर्म भारतवर्ष के भीतर उत्पन्न हुए हैं, उनके माननेवाले हिंदू हैं ?

उत्तर—ज्ञात तो है, परंतु इससे हमारी संतुष्टि नहीं होती। क्योंकि हम देखते हैं कि क़ादियानी मुसलमानों का मत भी पंजाब के क़ादियान-स्थान से आरंभ हुआ है। सर आग़ाख़ाँ की पूजा भी इसी अभागे भारत-वर्ष में आरंभ हुई है। यदि वह भी किसी दिन अपने को हिंदू कहकर हिंदू-सभा में मिल जायँ और कहें कि हम अछूतों को उठावेंगे, तो तुम्हें मालूम है, क्या हाल होगा ? वस्तुतः बात यह है कि स्थान का एक होना कभी संगठन उत्पन्न नहीं कर सकता। विचारों की समानता ही संगठन उत्पन्न कर सकती है। आज-कल 'हिंदू' का जो लक्षण किया जाता है, वह विधेयात्मक नहीं, किंतु निषेधात्मक है। हिंदू कौन है ? जो मुसल-मान और ईसाई नहीं, वह हिंदू है। यह कोई लक्षण है, और क्या इतने से आप हिंदुओं में उत्तम गुणों का संचार कर सकते हैं ? लक्षण ऐसे होने चाहिए, जिनको दृष्टि के सम्मुख रखकर मनुष्य में उन गुणों के धारण करने के लिये उत्साह हो। मुसलमानों से पूछो, तो वह बतलावेंगे कि मुसलमान वह है, जो पैग़ंबर मुहम्मद साहब को मानता हो और क़ुरान शरीफ़ पर ईमान लावे। उनके लिये अच्छा मुसलमान वह है, जो मुहम्मद साहब को अधिक माने, क़ुरान शरीफ़ के अनुकूल अधिक चले। इसी प्रकार जितना जो मनुष्य ईसा-मसीह पर अधिक ईमान लावे और बाइबिल को अधिक माने, वही उतना ही अधिक अच्छा ईसाई है। क्या इस प्रकार हिंदुओं को भी कह सकते हो ? जब कोई निश्चित उद्देश्य ही सामने नहीं रक्खा, तो क्या कहकर उत्साह दिलावें, लोगों को क्या मालूम हो कि क्या बनना है।

प्रश्न—तुम हिंदुओं का उद्देश्य निश्चित करके उनको संकुचित बनाना चाहते हो। हिंदू उदार हैं, उनके लिये विश्वव्यापी हैं। हिंदू-धर्म ऐसा उदार धर्म है, जिसमें उच्च कोटि के आत्मवाद से लेकर नीच कोटि का जड़वाद तक उपस्थित है। हिंदू धर्म में यही तो गुण है।

उत्तर—ऐसी उदारता को दूर से ही प्रणाम। तुम जानते हो कि ऐसी उदारता ने ही हिंदुओं को अनेक प्रकार के ढोंगों और आडंबरों का शिकार बना दिया। यदि ऐसी ही उदारता हो, तो ईसाई और मुसलमानों को भी हिंदू कहने लगो। क्या यह लोग "उच्च कोटि के आत्मवाद से लेकर नीच कोटि के जड़वाद" तक किसी श्रेणी में नहीं आते। फिर क्या है ? इन लोगों की चढ़ बनेगी, और थोड़े ही दिनों में भी गो-मांसभक्षी मुहम्मद साहब के भक्त हिंदू ही भारतवर्ष में दीखने लगेंगे। इसी उदार शिक्षा का परिणाम है कि हिंदू-लीडरों को हिंदू-धर्म पर वह विश्वास नहीं जो मुसलमान-लीडरों को मुसलमानी धर्म पर है। इसलिये हिंदू-लीडरों को अपनी आवश्यकताओं का इतना परिज्ञान नहीं, जितना मुसलमान-लीडरों को है। इसलिये जब कभी हिंदू और मुसल-मानों की संयुक्त सभा हिंदू-मुसलमानों के पारस्परिक झगड़े निबटाने के लिये होती है, तो हिंदू-लीडर अफ्रीका-स्वासियों की भाँति अपने उद्देश्य को जल्दी खो बैठते हैं, और मुसलमान चींटे की तरह चिपटे रहते हैं। कारण यह है कि उनका उद्देश्य निश्चित है और हिंदुओं का अनिश्चित। हिंदुओं ने 'अनिश्चित' का नाम 'उदार' रख छोड़ा है। हिंदुओं के बड़े-बड़े लीडर कह बैठते हैं—"यदि हिंदू मुसलमान हो जायँ तो हानि ही क्या ? रहेंगे तो वह इसी देश के निवासी। यदि बाईस करोड़ हिंदुओं में से बावन लाख मुसलमान हो भी गए, तो किसी का क्या बिगड़ा। यदि कुछ हिंदू ताज़िया पूजते हैं, तो पूजने दो। इससे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो मेल अधिक होगा।" इस प्रकार के ऊटपटाँग वचन हिंदुओं के बड़े-बड़े नेताओं के मुख से नित्यप्रति सुनने में आते हैं। इसको वे उदारता और सहिष्णुता कहते हैं। जानते हो कि इसका कारण क्या है? इन लीडरों को कभी यह नहीं बताया गया कि हिंदू धर्म क्या है? उसके महत्त्व पर उनको विश्वास भी कभी नहीं हुआ। उनको यह भी मालूम नहीं हुआ कि हिंदू-धर्म की क्या विशेषता है और किसी मनुष्य को हिंदू-धर्म छोड़ने से क्या हानि होती है। मुसलमानों को इसका पता है। प्रत्येक मुसलमान जानता है कि किसी व्यक्ति का मुसलमानी धर्म से बाहर रहना उसके तथा अन्य मुसलमानों के लिये कितना हानिकारक है, अतः वे अपना दृष्टिकोण कभी नहीं छोड़ते। फिर एक तमाशा और है। हिंदुओं की उदारता और सहिष्णुता वे चारे अछूतों पर नहीं, भंगी-चमारों पर नहीं, नाई-धोबियों पर नहीं, किंतु हिंदू-धर्म के विरुद्ध मतावलंबियों पर है। यह उदारता नहीं, किंतु कायरता है। कायर मनुष्य अपनी वीरता अपनी स्त्री पर, अपने बच्चों पर और अपने नौकरों पर ही दिखाता है। बाहरवालों के लिये वह भीगी बिल्ली ही रहता है। ये हिंदू लोग भी अपनी सहिष्णुता दूसरों पर ही दिखाते हैं, अपनों पर तो इनकी छुरी ही चलती रहती है। यदि इनको हिंदू-धर्म की विशेषताओं का पता होता, तो ये स्वयं भी उन्हें ग्रहण करते और दूसरों को उनके ग्रहण करने से ख़ुश और परित्याग करने से दुखी होते। जिसको ये विश्व-व्यापी और उदार हिंदू-धर्म कहते हैं, वह वस्तुतः लक्षण-रहित, अनिश्चित, ऊटपटाँग हिंदू-धर्म है। जो कहता है कि हमारे हिंदू-धर्म की यह श्रेष्ठता है कि उसमें नीच कोटि के जड़वाद से उच्चकोटि का आत्मवाद तक विद्यमान है, उस भलेमानस को आत्मवाद की श्रेष्ठता और जड़-वाद की नीचता का ही परिज्ञान नहीं, और न उसे आत्मवाद की श्रेष्ठता पर विश्वास है। उसकी तो ऐसी उदार थाली है, जिसमें हलवा, पकौड़ी, मांस, घास और मल सभी रक्खे हुए हैं। वह ख़ुश हो रहा है कि देखो मेरी कैसी बड़ी थाली है जिसमें उच्च ब्राह्मण से लेकर पशु, पक्षी और वाराहजी तक का भोजन उपस्थित है। वस्तुतः उस ख़ुश होनेवाले को हलवे की सुगंध और मल की दुर्गंध का पता नहीं है। यही हाल हमारे उदार हिंदुओं का है। यदि वह किसी हिंदू को ताज़िया-दारी करते देखते हैं, तो ख़ुश होते हैं कि चलो अच्छी मेल-मिलाप की सूरत निकल आई। इनको यह पता नहीं कि हिंदू-धर्म में क्या विष मिलाया जा रहा है।

गंगाप्रसाद उपाध्याय

मैस्मरेज़्म-विद्या की अपूर्व पुस्तक

सचित्र जागती कला

इस पुस्तक के साधनों द्वारा आप चाहे जिस स्त्री-पुरुष की मृतक आत्मा को बुलाकर चाहे जैसा गुप्त भेद पूछ लो, मनुष्य को दृष्टि-मात्र से वशीभूत करना, बेहोश करके भूत-भविष्य का हाल जानना, चोरी व गड़े धन का पता मालूम करना, साँप-बिच्छू का विष उतारना, मैस्मरेज़्म के प्रयोगों से कठिन-से-कठिन रोगों को आराम करना। इत्यादि। मूल्य १।) डा० ख़र्च ।=)

वशीकरण-मंत्र—चाहे जिस स्त्री-पुरुष को मंत्रों द्वारा वश में करना। पृष्ठ ६० मू० ।।।)

पता—शेर कंपनी, हरीवापान, अलीगढ़ (यू० पी०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. उपन्यास-कहानी

शोलकश—लेखक, मैक्सिम गोर्की; अनुवादक, श्री 'श्रीकांत'; प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी; प्रकाशक से ही प्राप्य; मूल्य ॥=)

प्रस्तुत पुस्तक 'साहित्य-मणिमाला'-नामक एक नई पुस्तकमाला की छठी मणि है। सुंदर छपाई, बढ़िया जिल्द और आकर्षक रूप है। पुस्तक एक रूसी कहानी का अनुवाद है।

मूल-पुस्तक के लेखक मैक्सिम गोर्की रूसी साहित्य के एक प्रसिद्ध लेखक हैं। क्रांतिकारी रूस की 'प्रोलिटारियट' सोसाइटी, दरिद्र-समाज का जैसा सुंदर चित्र वे चित्रित कर सके हैं, वैसा अब तक संसार का दूसरा कोई लेखक नहीं कर सका। शराबी, चोर, उचक्कों और ग़रीब मज़दूरों का ऐसा सजीव और सुंदर चित्रण अँगरेज़ी और फ्रेंच-साहित्य में भी हमें नहीं मिला है। साम्राज्यवादी इँगलैंड की भाषा होने के कारण अँगरेज़ी-साहित्य विलासिता और अमीरी के चित्रों से भरा पड़ा है। चार्ल्स डिकेंस के उपन्यासों के सिवा बहुत कम लेखकों की कृतियों में दरिद्र-समाज ने स्थान पाया है। इसी प्रकार विक्टर ह्यूगो, गस्टव फ्लाबर्ट आदि दो-एक उच्चकोटि के फ्रेंच-साहित्यिकों को छोड़कर बहुत कम फ्रेंच-लेखकों ने दुःख दरिद्रता के घेरे हुए दरिद्र-समाज पर कुछ लिखने की चेष्टा की है। इन लेखकों के दारिद्र्य-चित्र अधिकतर घृणा-व्यंजक ही हैं। उनसे दरिद्र-समाज पर हमारी सहानुभूति का उद्रेक नहीं होता। हम उसकी ओर आकर्षित नहीं होते। किंतु रूसी साहित्य ने दरिद्र-समाज के चित्रण करने में कमाल कर दिया है। केवल पिछले सौ वर्षों में ही ज़ारशाही के फ़ौजी बूटों की ठोकर से जागी हुई रूसी राष्ट्रीयता ने अपने असली आधार दरिद्र-समाज को अपनाकर सर्वक्षेत्र-व्यापिनी क्रांति का जो बीजारोपण कर दिया था, उसी बीज के विविध अंकुरों में से रूसी साहित्य भी एक है। वह इस समय केवल अपने दरिद्र-समाज के चित्रों के कारण ही संसार के सर्वश्रेष्ठ साहित्यों में गिना जाता है। डास्ट्रोवस्की, टार्जनीव्, शेखभ्, गारशिन, कारोलेंको, मैक्सिम गोर्की, टॉल्स्टाय आदि लेखकों ने उसे अमर कर दिया है। इन लोगों के शब्द चित्रों से रूसी दरिद्र-समाज सजीव हो गया है। सोवियट रूस को सफल क्रांति का बहुत कुछ श्रेय इन्हीं औपन्यासिकों को है।

ऐसे प्रसिद्ध साहित्य से हिंदी के पाठक अभी तक बहुत कम परिचित हैं। गोर्की का तो वे नाम तक नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जानते। अतएव साहित्य-सदन के संचालकों का यह प्रथम प्रयास अत्यन्त स्तुत्य है। 'साहित्य-मणिमाला' में, अन्य मालाओं के समान, खैण वंग-साहित्य की कायरता-पूर्ण प्रेम-कहानियाँ न गूँथी जायँ, तो अत्युत्तम हो। उनके स्थान पर वीरता-पूर्ण और देश को जागृति की ओर ले जाने-वाली पुस्तकें ही गूँथने से समाज का बड़ा उपकार होगा। गोर्की के अन्य ग्रंथ भी इसी प्रकार जनता के सामने लाकर—जैसा कि उनका इरादा है—वे बड़ा उपकार करेंगे। हिंदी के अंधे, प्रेम-कहानी को ही गल्प का उच्चतम आदर्श माननेवाले नए और पुराने गल्प-सम्राटों को इससे पता तो चलेगा कि कहानी होती क्या चीज़ है। दो-चार सौ-डेढ़ सौ पेज की कहानियाँ लिखकर चट गल्प-साम्राज्य पर छापा मारने की तब उनकी हिम्मत न होगी।

अनुवाद की भाषा अत्यंत उत्तम और चलती हुई है। उसमें मूल-भाषा रूसी की ओज-रक्षा ख़ूब हुई है। कहीं-कहीं तो वह काव्य का-सा मज़ा दे जाता है। जैसे—(पृ० ७०)

"सुदूर क्षितिज पर, नाव से आगे, समुद्र के काले जल में से नील-वर्ण की एक विशाल ज्वालामयी खड्ग बाहर निकलती जान पड़ती थी। उसका फल अंधकार का हृदय भेदता हुआ, बादलों में इधर-से-उधर, चमक रहा था।" इत्यादि।

पृष्ठ १३ का प्रथम पैरा भी इसी काव्यमयी भाषा का एक बहुत ही उत्तम उदाहरण है।

इस सफल अनुवाद के लिये अनुवादक महोदय को बधाई।

× × ×

प्रत्यागत—लेखक, श्रीवृंदावनलालजी वर्मा बी० ए०, एल्-एल्० बी०, ऐडवोकेट, झाँसी; प्रकाशक, श्री-अयोध्याप्रसाद शर्मा, स्वाधीन-प्रेस, झाँसी; मूल्य १॥); पृष्ठ-संख्या ३०० से ऊपर

अभी हाल में ही वर्माजी के दो उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। यह उनका तीसरा उपन्यास है। पिछले दो उपन्यासों ने हिंदी-साहित्य में एक ऊँचा स्थान प्राप्त किया है। 'लगन' को तो लोगों ने हिंदी-साहित्य का सर्वोत्तम रोमांस बतलाया है। वर्माजी की क़लम से निकले हुए इस तीसरे उपन्यास में भी उत्तम औपन्यासिकता का निदर्शन होता है। भाषा और भावों का सम्मिश्रण बहुत ही उत्तम हुआ है। वर्माजी के अन्य उपन्यासों के समान इस उपन्यास में भी बुंदेलखंडी समाज का ही एक चित्र चित्रित किया गया है। बुंदेलखंड-जैसे अशिक्षित प्रदेश में गँवार ब्राह्मणों का समाज पर बड़ा गहरा अधिकार है। वे उसमें मनमाने उलट-फेर किया करते हैं। कभी रामायण-सभा को लेकर और कभी सहभोज को लेकर वे ऐसी-ऐसी लीलाएँ दिखलाते हैं कि लीलामय को भी उनमें झेप मालूम होती है। निरपराध व्यक्तियों को बिरादरी से निकाल देना, नृशंस बॉयकॉट करवा देना तथा सदा अपने हाथ में अधिकार-सूत्र बनाए रखने की चेष्टा करना ही उनके ब्राह्मणत्व का लक्षण रह गया है। जिस प्रकार कुत्ता सूखी हड्डी को नहीं छोड़ना चाहता, उसी प्रकार वे भी इस निरर्थक अधिकार-चिंता, पद-प्राप्ति की चेष्टा से मुख नहीं मोड़ना चाहते। बल्कि कभी-कभी तो वे ऐसे भयानक कृत्य कर बैठते हैं कि दाँतों-तले उँगली दबानी पड़ती है। स्वार्थ-सिद्धि के लिये भगवान् की मूर्ति को उलट देने, उसे सिर के बल खड़ा कर देने, में भी उन्हें संकोच नहीं मालूम होता।

बुंदेलखंडी ब्राह्मण-समाज के इन्हीं सद्गुणों को लेकर इस उपन्यास की रचना हुई है। सुधार-प्रेमी, राष्ट्रवादी मंगलदास घर से रूठकर, ब्राह्मण-पिता का आश्रय छोड़कर, मलावार जा पहुँचता है। वहाँ मोपला-विद्रोह में मुसलमान बनाया जाता है। किंतु पुलीस की कृपा से फिर घर आता है। यहाँ वह पंडितपन का शिकार होता है। उसका सब घर बहिष्कृत होता है। प्रायश्चित्त करने को तैयार होने पर भी पंडित लोग उसे लेने को तैयार नहीं होते। तब नई रोशनी के नौजवानों की शरारत से इन पुराने ठूँठों को मरम्मत होती है। इन महाशयों में एक धूर्त नवलबिहारी भी हैं। वे अपनी प्रतिष्ठा क़ायम रखने के लिये मूर्ति के पैर उलट देते हैं। किंतु जनता को पता लग जाता है कि यह दैवी कोप नहीं है, किंतु मानवी क्रोध है। उनका बहिष्कार करके मरम्मत की जाती है। बस, यही कथा है। आदि से अंत तक घटना-क्रम ख़ूब आकर्षक है। वर्माजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की प्रौढ़ लेखनी के रथ पर बैठा हुआ पाठक का मन बड़े मज़े में घटना-क्रम की उलझी सड़क पर चला जाता है।

पुस्तक प्रत्येक समाज-सुधार-प्रेमी के अवश्य पढ़ने योग्य है। जाग्रत् युवक-समाज में ऐसी पुस्तकों का नित्य पाठ होना चाहिए।

× × ×

वेदना—लेखक, श्रीविश्वनाथसिंह शर्मा ; प्रकाशक, साहित्य-प्रसारक मंडल १५५।१ ए मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट कलकत्ता ; मूल्य २॥) ; पृष्ठ-संख्या ३२८ ; सजिल्द।

'वेदना' भी एक सामाजिक उपन्यास है। अछूतों के प्रति बड़ी जातियों के भयानक अत्याचारों का यह चित्र है। एक अस्पृश्य कहलानेवाला अछूत-नामधारी हिंदू भोला किस प्रकार उच्च कोटि का धर्म-प्रेम प्रदर्शित करता है। वह कैसा सच्चरित्र, दृढ़-विश्वासी और धर्म-भक्त है, तथा अपने को ऊँची जाति का कहनेवाले जनार्दन ब्राह्मण और हृदयनारायण आदि नीच, दुश्चरित्र, व्यभिचारी, झूठे, कायर और दुष्ट प्रकृति के मनुष्य किस प्रकार उस पर अनंत अत्याचारों का बोझ लादकर उसे पीस डालना चाहते हैं; केवल इस अपराध के लिये कि उसके घर में एक सुंदर पुत्री है और वह स्वयं एक अछूत है। यही इस उपन्यास का विषय है। धर्म के ढोंगी हिंदू-समाज और उसके नेता पेटू, पतित और कर्म-हीन ब्राह्मण-नामधारी नर-पशुओं की संकीर्ण-हृदयता का चित्र चित्रण करने में लेखक ने सफलता पाई है। यही शायद उनका उद्देश्य भी था। किंतु यदि सफल उपन्यास-लेखक कहलाने के लिये ही उन्होंने यह प्रयत्न किया है, तो उन्हें अभी काफ़ी समय तक साहित्य-सेवा करना चाहिए तथा उपन्यास-लेखन-कला का तुलनात्मक अध्ययन भी करना चाहिए। सफल उपन्यास अभी हिंदी के लिये दुर्लभ-से ही हैं। हाँ, शिक्षा तथा मनोरंजन के लिये उसका उपन्यास-भंडार अच्छी पुस्तकों से भरा जा रहा है। उन्हीं उपयोगी उपन्यासों में 'वेदना' को भी गिना जा सकता है।

कुछ खटकनेवाली बातें आ जाने के कारण कथा में भारीपन आ गया है। लेखक की पुराने ढंग की स्वगत बातचीत, कहीं-कहीं प्रच्छन्न उपदेश देने के ढंग की-सी भाषा और कहीं पादरी साहब के-से 'वाज़' का लहज़ा कथा के प्रवाह में कुछ बाधा देता है। इन दो-एक बातों का ज़माना अब नहीं है। आधुनिक उपन्यास में लेखक के मनोगत भावों और उसके व्यक्तित्व की खुली हुई छाप नहीं होती। वह पात्रों के कार्य-कलाप, भाव-भंगी, समालाप और पारस्परिक व्यवहार से ही उचित रीति में प्रकट की जाती है। लेखक स्वयं किसी पात्र के रूप में ही प्रकट होता है, वह ऊँचाई पर खड़ा हुआ उपदेश नहीं देता।

आशा है, लेखक महोदय हमारी इन पंक्तियों को बुरा न मानकर ईमानदारी की सम्मति और सलाह के रूप में ही इन्हें ग्रहण करेंगे।

पुस्तक की छपाई, काग़ज़, जिल्द तथा बहिरंग बहुत सुंदर है। लेकिन २॥) दाम शायद हिंदोस्तानियों के लिये ज़्यादा है।

× × ×

पाथेयिका—गल्प-संग्रह। लेखक, श्री ठा० श्रीनाथ सिंह ; प्रकाशक, तरुण भारत-ग्रंथावली कार्यालय, दारागंज, प्रयाग ; मूल्य १)

पुस्तक का बहिरंग जितना सुंदर है, उतना उसका अंतरंग नहीं है। कहानियाँ अजीब ढंग की और बिलकुल नौसिखियों की लिखी-सी मालूम होती हैं। उनमें इस बात का ख़याल ही नहीं रक्खा गया कि आधुनिक गल्प जीवन का एक सजीव चित्र होती है। कल्पना और अनुमान की भोंडी उड़ान को उसमें कोई स्थान नहीं। इसीलिये शायद कहीं-कहीं ऐसी अस्वाभाविकता आ घुसी है कि बस देखते ही बनता है। भूमिका-लेखक महोदय ने शायद आँख मूँदकर मित्रता का कर्तव्य निबाहा है, जो इस प्रकार की 'थर्ड क्लास' कहानियों की अद्वितीय प्रशंसा में इन्होंने स्याही को सफ़ेद कर डाला है। हिंदी-साहित्य में इस प्रकार का फ़ेवरिटिज़्म एकदम बंद होना चाहिए। प्रत्येक भूमिका-लेखक, समालोचक और प्रशंसक को सदा सत्य बात का ही अनुमोदन करना चाहिए। मित्र-भाव से प्रेरित होकर जनता को धोका देना बड़ा अन्याय है। इससे लेखक महोदय के हृदय में अभाविक अभिमान तो उत्पन्न होता ही है, जनता को भी ख़ूब धोका हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हाँ, 'पाथेयिका' की गल्पें क़िस्सा तोता-मैना पढ़नेवाले युवकों के मनोरंजन की अच्छी सामग्री है। ये उस प्रसिद्ध क़िस्से से हज़ारगुना अच्छी हैं।

× × ×

दिल्ली-एक्सप्रेस—लेखक, श्रीहरद्वारप्रसादजी जालान ; मूल्य १)

'दिल्ली-एक्सप्रेस' रेलवे सीरीज़ का उपन्यास है। लंबी यात्रा में केवल समय व्यतीत करने के लिये यह कथानक अच्छा और मनोरंजक है। किंतु औपन्यासिक दृष्टि से यह बिलकुल साधारण-सी चीज़ है। एक नव-युवक मारवाड़ी पहले केवल मज़ाक़ में ही एक वेश्या को अपने दिल्ली-एक्सप्रेस के रिज़र्व्ड डिब्बे में बैठने की आज्ञा दे देता है। फिर मामला गहरा होता देख घबराता है। आगे उसकी पत्नी एक स्टेशन पर उसे मिलती है, तब वेश्या और पत्नी के लिये उसके मन में संघर्ष उत्पन्न होता है। पत्नी और वेश्या के हृदयों में भी मानसिक बवंडर उठकर एक दूसरे की यात्रा को अशांतिमय बना देते हैं। बमुश्किल तमाम यात्रा समाप्त होती है। लेकिन लोगों के दिलों में वह अपना डंक छोड़ जाती है। कलकत्ता वापस आने पर फिर वही मानसिक उलझन प्रारंभ होती है, और हमारे भोले, बुद्धू मारवाड़ी युवक महोदय अपनी सती पत्नी के लिये सौत-रूप में उस वेश्या को ग्रहण करने का इरादा करते हैं। पत्नी बेचारी अपनी बेवक़ूफ़ी-भरी झूठी पति-भक्ति के कारण उन्हें अनुमति दे देती है, और ख़ुद आत्म-हत्या कर लेती है। उधर उस वेश्या को मारवाड़ीजी दिल्ली-एक्सप्रेस की लाइन पर आत्म-हत्या करते हुए पाकर बचा लाते हैं और बाद को पत्नी-रूप में ग्रहण करते हैं। सब काम दिल्ली-एक्सप्रेस में ही होता है। अंत में परिणाम भी दिल्ली-एक्सप्रेस के द्वारा ही निकलता है। इसीलिये शायद पुस्तक का यह नामकरण हुआ। ऐसी सदाचार और नीति को तिलांजलि देनेवाली पुस्तकें न-मालूम लोग क्यों लिखते हैं। बक़ौल 'चाँद' मारवाड़ी लोग वैसे ही बहुत पाकदामन हैं, उस पर "दिल्ली-एक्सप्रेस" की शह उनमें और भी पवित्र विचार उत्पन्न करेगी, ऐसा हमारा विश्वास तो है नहीं भाई! हाँ, जालानजी अपने युवकों के विचार अच्छी तरह जानते हैं। उनका ही ऐसा विश्वास हो सकता है।

× × ×

२. नाटक

स्वप्नवासवदत्ता—लेखक, महाकवि भास ; अनुवादक, राष्ट्रकवि श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त ; प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी ; मूल्य ॥=)

'स्वप्नवासवदत्ता' संस्कृत के सर्वोत्तम नाटकों में गिना जाता है। ईसा से ३०० वर्ष पूर्व लिखे हुए इस नाटक में महाकवि भास की प्रौढ़ प्रतिभा का पूर्ण विकास हुआ है। भारतीय नाटक-साहित्य का यही सबसे पहला सफल नाटक है। इससे पहले के लिखे अन्य कवियों के नाटकों का पता ही नहीं लगता। ऐसे प्रसिद्ध और सुंदर नाटक को हिंदी में प्रकाशित करके साहित्य-सदन ने बड़ा अच्छा काम किया है।

अनुवादकर्ता श्रद्धेय श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त स्वयं प्रसिद्ध कवि हैं। अतएव अनुवाद की सफलता निश्चित ही है। भाषा के अलावा मूल-श्लोकों का पद्य-बद्ध अनुवाद तो और भी उत्तम हुआ है। उन्हें पढ़ने में मूल पाठ का-सा ही आनंद आता है। १२ वर्ष पहले गुरु-मुख से स्वप्नवासवदत्ता का अध्ययन करते समय हमें जो आनंद आया था, वही इस हिंदी-अनुवाद के पढ़ने से भी प्राप्त हुआ। ऐसा मालूम हुआ, मानो हम कोई मौलिक रचना पढ़ रहे हैं। ऐसे सुंदर नाटक को हिंदी-प्रेमियों द्वारा अवश्य आदर मिलना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक साहित्य-मणिमाला की ३री मणि है। माला में भास के अन्य नाटकों के भी प्रकाशन की बात भूमिका में कही गई है। हम इस प्रयत्न का हृदय से स्वागत करते हैं।

× × ×

३. कविता

दूर्वादल—संग्रह। लेखक, श्रीसियारामशरणजी गुप्त ; प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी ; मूल्य ॥=) ; सजिल्द।

श्रीसियारामशरणजी हिंदी के नवीन कवि समुदाय में अग्रणी हैं। 'मौर्य-विजय', 'आर्द्रा' आदि उच्च कोटि की कविता ने आपको पर्याप्त प्रसिद्धि कर दी है। आपकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कविता में प्रवाह, भाव-प्रवणता और संगीत ख़ूब होता है। भाषा की विशुद्धता तो गुप्त-परिवार की कविताओं का एक ख़ास गुण है। जिन्होंने आपकी 'आर्द्रा' का अध्ययन किया है, वे कहते हैं कि उसमें गुप्तजी की प्रतिभा का ख़ूब विकास हुआ है। 'दूर्वादल' गुप्तजी की समय-समय पर लिखी हुई तथा हिंदी-पत्रों में प्रकाशित कविताओं का संग्रह है। इन कविताओं का पाठकों ने ख़ूब आदर किया था। सभी प्रसिद्ध पत्रिकाओं में वे प्रकाशित होती रही हैं। अतएव इन बिखरी हुई कणिकाओं का संग्रह करके एक सुसंबद्ध मणि-रूप में जनता के सामने रखने के लिये साहित्य-सदन धन्यवादार्ह है। पुस्तक 'साहित्य-मणिमाला' की २४वीं मणि है।

वैसे तो 'दूर्वादल' की सभी कविताएँ पढ़ने योग्य हैं, किंतु उनमें से 'वृद्ध', 'बाढ़', 'घट', 'कोजागर पूर्णिमा', 'तुलसीदास', 'गत दिवस', 'गृहप्रदीप', 'मृत्युभय', 'लेखनी', 'जननी', 'मूर्ति', 'समीर के प्रति'-नामक कविताएँ बहुत ही सुंदर हैं।

× × ×

विषाद—संग्रह। लेखक, श्रीसियारामशरणजी गुप्त; साहित्य-सदन, चिरगावँ से प्रकाशित; मूल्य ।-)

यह भी श्रीसियारामशरणजी गुप्त की नई तथा प्रौढ़ कविताओं का संग्रह है। हार्दिक भावों के चित्रण करने में इस संग्रह में उन्होंने ख़ूब कुशलता दिखलाई है। प्रत्येक कविता में मूर्तिमान् विषाद के दर्शन होते हैं। निम्न-लिखित कुछ कविताएँ तो बहुत ही उत्तम हुई हैं—'किरण', 'स्मृति', 'मौनालाप', 'अभिसार', 'घन'ह्लाद'। 'घनाह्लाद'। की पंक्तियाँ तो इतनी सुंदर मालूम हुई हैं कि उन्हें उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं किया जा सका। देखिए, कैसी सुंदर पंक्तियाँ हैं—

पावस का यह घनघटा पुंज
कर स्निग्ध धरा का नव निकुंज
बरसा बरसाकर सुरसधार,
करता है नभतल में विहार।
भरकर नव मौक्तिक बिंदुमाल,
वसुधा का यह अंचल विशाल
आनंदविकंपित है अधीर;
क्रीड़ा-रत है सुरभित समीर।
नव-सूर्य-करोज्ज्वल, रजत-गात,
झर-झरकर यह निर्झर प्रपात
कर उथलित प्रचुर प्रमोदपान
करता है कलकल कलित गान।
रह-रहकर यह पिक बार-बार,
कर रहा मधुरिमा का प्रसार;
है हरित धरा का हेम-गात्र
भर ओतप्रात प्रमोदपात्र।

× × ×

अमर शहीद यतींद्र—लेखक, श्रीमंगलदेव शर्मा; प्रकाशक, राष्ट्र-भारती मंडल (पुस्तक-विक्रेता के प्रकाशक), प्रयाग; मूल्य ॥=); पृष्ठ-संख्या १७६

जो जाति अपने वीरों का सम्मान करना नहीं जानती, जो उनकी जीवनी का पारायण नहीं करती वह कभी जीवित नहीं रह सकती। उसकी वीरता ही उसके जीवन का प्रधान साधन हुआ करती है। आत्मोसर्ग के अनुपम कार्यों द्वारा जिन माता के लालों ने भारतीय राष्ट्र का मुख उज्ज्वल किया है, जिन्होंने अदम्य साहस और अभूतपूर्व त्याग के कारण जगत् में नाम अमर हो गया है, उन्हीं भारतीय वीरात्माओं में वीरवर यतींद्र की भी गणना है। पं० मंगलदेव शर्मा ने उन वीराग्रणी देश-भक्त यतींद्र की जीवनी लिखकर हिंदी का बड़ा उपकार किया है। यतींद्र की यह जीवनी अब तक प्रकाशित जीवनियों में सर्वश्रेष्ठ कही जा सकती है। इसमें दत्त और भगतसिंह-जैसे देश के लिये सर्वस्व निछावर करनेवाले युवकों का भी परिचय देकर शर्माजी ने और भी अच्छा किया है। भारत की स्वतंत्रता के इतिहास में—विशेषतः राजबंदियों के अधिकारों के संबंध में—इन तीन युवकों का नाम सदा अमर रहेगा। आगामी भारत संतति इनके नाम पर गर्व से फूल उठेगी। ऐसी वीरात्माओं का एक ओजः-पूर्ण जीवनचरित्र लिखकर शर्माजी ने भी भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास के लिये उत्तम सामग्री इन पृष्ठों में जुटा दी है। प्रत्येक देश-प्रेमी तथा कायर भारतीय युवक को इन वीरात्मा की इस जीवनी का अवश्य पाठ करना चाहिए।

सुधींद्र शर्मा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुभीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में नाचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) 'आत्मकथा' (द्वितीय खंड)—लेखक, महात्मा गांधी; मूल्य १।)

(२) 'क्या करें ?' (दूसरा भाग)—मूल-लेखक, लियो टॉलस्टाय; अनुवादक, श्रीचेमानंद 'राहत'; मूल्य १)

(३) 'खेलो भैया'—लेखक, श्रीविद्याभूषण 'विभु'; मूल्य ।।)

(४) 'सफलता का रहस्य'—मूल-लेखक, मिस्टर वर्नार फ्रेडन; अनुवादक, ठाकुर शिवनाथसिंह; मूल्य १)

(५) 'आकाश-दीप'—लेखक, श्रीयुत जयशंकर 'प्रसाद'; मूल्य १॥)

(६) 'मयूख'—मूल-लेखक, श्रीराखालदास वंद्योपाध्याय एम्० ए०; अनुवादक, श्रीब्रजरंगबली गुप्त 'विशारद'; मूल्य १)

(७) 'योग-दर्पण'—लेखक, श्रीलाला कन्नोमल एम्० ए०; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव; मूल्य १), सजिल्द १॥)

(८) 'हृदय का परख' (उपन्यास, द्वितीयावृत्ति)—लेखक, प्रो० चतुरसेन शास्त्री; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव मूल्य १), सजिल्द १॥)

(९) 'घिरचा'—लेखक, श्रीयुत 'व्यग्र'; मूल्य १)

(१०) 'उत्सर्ग'(नाटक)—लेखक, श्री प्रो० चतुरसेन शास्त्री; संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव; मूल्य सादी ।=), सजिल्द ।-)

(११) 'राष्ट्रपति जवाहर' (जीवनी)मूल्य ॥=)

(१२) 'यौवन, सौंदर्य और प्रेम'—लेखक, अनाथसिंह; मूल्य सादी १॥), सजिल्द २)

(१३) 'ऋग्वेदालोचन'—प्रणेता, पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ; मूल्य १॥)

(१४) 'सुधांशु'—लेखक, श्रीयुत राय कृष्णदास; मूल्य ।-)

(१५) 'प्रताप-प्रतिज्ञा'—लेखक, श्रीजगन्नाथप्रसाद 'मिलिंद'; मूल्य ॥=)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. कांग्रेस का ध्येय

कां

ग्रेस का ध्येय अब पूर्ण स्वाधीनता है। लाहौर के अधिवेशन में उसने अपना यह ध्येय निश्चित किया है। उस ध्येय की प्राप्ति के लिये उसने कुछ उपाय भी निर्दिष्ट किए हैं। वे उपाय हैं—

१. सविनय क़ानून-भंग तथा सत्याग्रह का अवलंबन।

२. कौंसिलों और अदालतों का बॉयकॉट।

३. स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार और विदेशी का बहिष्कार।

पूर्ण स्वाधीनता की प्राप्ति के लिये इन उपायों का पूर्णतः उपयोग अत्यंत आवश्यक बतलाया गया है।

हमारी सम्मति में ये उपाय स्वाधीनता-प्राप्ति के लिये उत्तम होते हुए भी क्रियात्मक रूप में बड़ी कठिनाई से लाए जा सकते हैं। सविनय क़ानून-भंग और सत्याग्रह के लिये जिस उच्च कोटि की आत्मिक शक्ति, संयम और नियत्रण की आवश्यकता होती है, उसका भारतीय जनता में एकांत अभाव है। छोटे-छोटे कामों के करने में भी जब हम नियंत्रण-पूर्वक नहीं चल सकते, तब सत्याग्रह और क़ानून-भंग-जैसे उत्तरदायित्व-पूर्ण क्रिया-कलाप में हम क्योंकर सफल हो सकेंगे? आपस के छोटे-मोटे अधिकार-संबंधी वाद-विवाद में जब हम अपने संयम को तिलांजलि दे बैठते हैं, तब फिर हम के अधिकारों के लिये लड़ते हुए हम संयत रह सकें इसकी कोई गारंटी नहीं दी जा सकती। चौरीचौरा-हत्याकांडों की फिर भी संभावना रहती ही आपस के लड़ाई-झगड़ों का प्रश्न बना ही रहता ऐसी दशा में यदि हमने सत्याग्रह प्रारंभ कर दि और कहीं कोई ज़रा-सी भी गड़बड़ हुई, तो फौरन महात्माजी के आग्रह से हमें सत्याग्रह बंद कर देना पड़ेगा। महीनों का काम बरसों के लिये पिछड़ जाएगा और स्वाधीनता का रास्ता काफ़ी लंबा हो जायगा।

कौंसिलों और अदालतों के बॉयकॉट का प्र भी ऐसा ही टेढ़ा है। जब तक हमारी राष्ट्रीय अदाल की स्थापना नहीं होती और जब तक उन अदालतों आज्ञा प्रचारित तथा प्रतिपालित कराने के साधन नहीं उपस्थित कर लेते, तब तक वर्तमान अदाल का—वे चाहे जितनी दोष-पूर्ण क्यों न हों—बॉय करना, हमारी समझ में, एक नासमझी का काम इसी प्रकार कौंसिलों द्वारा देश की भलाई करने प्रयत्न करनेवाले देश-भक्त मेंबरों को कौंसिलों परित्याग करने के लिये मजबूर करना—उस समय जब तक कि हम स्वयं अपनी कौंसिलों का निर्माण कर लें—बड़ी ही अदूरदर्शिता है। सरकारी कौं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की कुर्सियाँ कभी ख़ाली नहीं रह सकतीं। यदि उनके लिये योग्य सभासद् प्राप्त नहीं होंगे, तो निकम्मे और देश-द्रोही अयोग्य पुरुषों द्वारा ही वे भर दी जायँगी, और तब जो क़ानून पास होंगे, वे हमारे लिये अत्यंत भयंकर सिद्ध होंगे। इसमें संदेह नहीं कि इस प्रकार की गड़बड़ी मचाने से हम जनता और संसार के सामने सरकारी संस्थाओं का नग्न रूप रख सकेंगे, किंतु इससे जो फ़ायदा होगा, वह इससे होनेवाले नुक़सान के सामने कुछ भी न होगा। ब्रिटेन के साम्राज्यवाद से दुनिया ख़ूब परिचित है। संसार का बच्चा-बच्चा ब्रिटेन की कुटिलाशय नीति से अभिज्ञ है। उसकी चाल-बाज़ियाँ और शरारतें प्रत्येक देश में विख्यात हो चुकी हैं। अतएव यदि हम उसकी क़लई खोलने का प्रयत्न करेंगे, तो उससे कोई विशेष लाभ न होगा। हम तो तभी फ़ायदा उठा सकेंगे, जब हम उसके दिए हुए अस्त्रों द्वारा ही उसका मुक़ाबला करेंगे। सन् १९१९ के बाद से जो नवीन अधिकार हमें मिले हैं, उनका उपयोग करके ही हम अन्य अधिकार प्राप्त कर सकेंगे। कौंसिलों में रहकर ही हम सरकार के कार्य को एक-दम स्थगित कर सकने में समर्थ हो सकते हैं। उसके अन्याय-पूर्ण कार्यों को रोकने का यही एक वैध उपाय हमारे पास है। इस उपाय को छोड़कर बेकार गाल बजाने से हमारा कुछ भला नहीं हो सकता।

यह कहा जा सकता है कि हमारे राजनीतिक नेता कौंसिलों का कार्य करते हुए देश का काम नहीं कर सकते। इसका एक उपाय है। यदि हम अन्य ऐसे कांग्रेस के सभासदों से, जिन पर हम पूर्ण विश्वास रखते हैं, कौंसिलों को भरकर अपने राजनीतिक नेताओं को फ़ुर्सत दे दें, तो हम दोनों काम बड़ी आसानी से कर सकते हैं। हमारे राजनीतिक नेताओं की देख-रेख में कौंसिलों के अंतर्गत हमारा वैध युद्ध भी ठीक तौर से चल सकता है, और बाहर का ग्राम-संगठन और सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक युग-परिवर्तन का कार्य भी ख़ूब तेज़ी से किया जा सकता है।

रही विदेशी और स्वदेशी की बात, सो वह भी इस हालत में बड़ी आसानी से निबाही जा सकती है। राजनीतिक नेताओं की देख-रेख में कार्य करनेवाले हमारे स्वयंसेवकों का दल देश-भर में धरना और प्रचार-कार्य के द्वारा स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम और अनुराग तथा विदेशी वस्तुओं के प्रति उपेक्षा और परित्याग के भाव उत्पन्न कर सकता है। हमारे भावी सत्याग्रह-संग्राम के लिये उपयुक्त वायु-मंडल उत्पन्न करने का कार्य भी इसी के साथ-ही-साथ किया जा सकता है। इस प्रकार केवल एक साल-भर के अंदर ही कांग्रेस देश को अपने ध्येय के बहुत कुछ निकट ले आ सकती है। किंतु यदि वह सत्याग्रह और सविनय क़ानून-भंग आदि कठिन उपायों का पहले से ही अवलंबन करेगी, तो उसे पिछले असहयोग के दिनों की-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। उसका मार्ग तब एकदम कंटकाकीर्ण हो जायगा।

× × ×

२. स्वाधीनता के पथ पर

२६ जनवरी को युवक भारत ने आज़ादी का झंडा खड़ा किया था। कांग्रेस के युवक राष्ट्रपति जवाहरलाल के नेतृत्व में, उस दिन, हिंदोस्तान के नौजवानों ने देश को स्वतंत्र करने की शपथ ली थी। उस दिन हमारे देश की वीर माताओं और बहनों ने भारत-माता पर अपने प्राणों तक का बलिदान देने की प्रतिज्ञा की थी। इतिहास में वह दिन भारतीय स्वतंत्रता का दिन कहलायगा। सदियों से राजाओं, बादशाहों और शाहंशाहों की जूतियों के नीचे पले हुए हम हिंदोस्तानियों ने उस दिन ग़ुलामी के बोझ से दबे हुए अपने सिर को पहले-पहल ऊँचा उठाने का प्रयत्न किया था। उस दिन पुराने भारत के दक़ियानूसी रीति-रिवाजों, अंध-विश्वासों और रूढ़ियों तथा पूँजीवाद, साम्राज्यवाद और वर्गविच्छेद आदि ढकोसलों की क़ब्र पर नवीन भारत के क्रांति के युग ने मृतात्मा की शांति के लिये शांति-पाठ किया था। परतंत्र भारत उस दिन स्वतंत्रता के मार्ग पर अग्रसर हुआ था।

मार्ग बड़ा ही विपदाकीर्ण है। पग-पग पर सरकारी पहरे-चौकी हैं। चारो ओर ख़ुफ़िया पुलिस का भयानक जंगल है। थोड़ी-थोड़ी ही दूर पर मेशीनगनों के भयावह मुहरे मुँह खोले खड़े हैं। सामने ही जेल की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तमिस्रामयी कंदराएँ हैं। दूर पर फाँसी की टिकटी और रस्सी का छोर नज़र आ रहा है। माता, पुत्र और स्नेहमयी पत्नी के रुदन से आकाश भी थर्रा रहा है। सामने ही हहराती हुई अपने साथियों के ख़ून की नदी और दहाड़ता हुई ब्रिटिश-सिंह की भयानक मूर्ति है। सिर पर विपत्ति के काले बादल गरज रहे हैं। केवल आशा और आत्मविश्वास के धुँधले आलोक के सहारे युवक भारत इस मार्ग पर अग्रसर हुआ है। वह निस्सहाय है, निरस्त्र है, और है बड़ा ही निर्धन। किंतु उसके पास केवल एक निधि है—आत्मबल। वह आत्मबल, जिसके सामने विपत्तियाँ काई के समान फट जाती हैं, जिसके सामने सम्राटों के मुकुट भी झुक जाते हैं; और है उसका युवक हृदय, जो मुसीबतों के पहाड़ों को क्षण-भर में उलाँघ जाता है।

ऐ जवान बटोही, भगवान् तुम्हारा मंगल करें, विजय-श्री तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। जाओ, शीघ्र जाओ। 'शुभास्ते संतु पंथानः'।

× × ×

३. स्वाधीनता और हिंसा

हिंसा और स्वाधीनता का अनिवार्य संबंध है। जब कोई परतंत्र राष्ट्र स्वतंत्र होने का प्रयत्न करता है, तो उसके लिये युद्ध और उसकी आनुषंगिकी हिंसा अनिवार्य हो जाता है। सदियों का अनुभव इस बात का साक्षी है कि संसार के इतिहास में किसी भी जाति ने बिना रक्तपात के स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की। आत्मिक बल का दृढ़ विश्वासी भारत इस ऐतिहासिक सत्य का अपवाद बनने जा रहा है। आज तक जो संभव नहीं था, वह उसे संभव करने जा रहा है। आत्म बलिदान के उच्च आदर्श को सामने रखकर वह ब्रिटेन की फ़ौजी शक्ति का सामना करेगा। भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति के लिये वह सत्याग्रह करेगा। कितनी विचित्र बात वह करने जा रहा है!

सरकार की जेल की दीवारों की दृढ़ता का वह अपने हृदय की दृढ़ता से मुक़ाबला करेगा। वह पुलिस के डंडों की शक्ति अपनी पीठ की मज़बूती से आज़माएगा। सरकार के गोलों का जवाब वह अपने कटे हुए सिर से देगा। वह छाती खोलकर संगीनों के वार झेलेगा, और सहर्ष स्वीकार करेगा दुनिया-भर के अत्याचारों को, किंतु अपने सत्याग्रह से वह तिल-भर भी पीछे नहीं हटेगा।

संसार के इतिहास में यह एक नया युग होगा। आत्मिक बल और पशु-बल का यह संघर्ष एक अभूतपूर्व घटना होगी। किंतु क्या वास्तव में हिंदोस्तान सफल होगा? क्या संसार का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र इँगलैंड फ़क़ीर भारत के चिमटे की आवाज़ से डर जायगा? क्या सत्याग्रह वास्तव में हिंसात्मक उपायों से अधिक उपयुक्त सिद्ध होगा?

भविष्य ही इन प्रश्नों का उत्तर दे सकता है। किंतु इतना तो निश्चित ही है कि वर्तमान परिस्थिति में सत्याग्रह के अतिरिक्त उसके पास कोई और अस्त्र है ही नहीं। हिंसात्मक उपायों का अवलंबन वे ही राष्ट्र कर सकते हैं, जहाँ की जनता एक सुसंगठित क्रांति के लिये तैयार हो। भारतवर्ष जैसे देश के लिये, और ख़ासकर आजकल की परिस्थिति में, हिंसात्मक उपाय सफल नहीं हो सकते। अभी देश में सामाजिक रूढ़ियों का ऐसा तान-वितान फैला हुआ है कि यहाँ का अधिकांश जनता को चौका-चूल्हे के प्रश्न हल करने से ही फ़ुरसत नहीं मिलती। वर्ण-व्यवस्था के वर्तमान विकृत रूप, वैवाहिक अत्याचार, खान-पान-संबंधी अत्याचार तथा अन्य सामाजिक व्याधियों का समूलोच्छेद हुए बिना हमारी राष्ट्रीय एकता एकदम असंभव है, और उसके बिना हिंसात्मक अथवा अहिंसात्मक उपायों का सफल होना भी असंभव है। देश का सबसे पहले एक भयानक सामाजिक क्रांति की आवश्यकता है। समाज के सड़ते हुए आर्थिक और राजनीतिक क्रांति स्वयं ही हो जायगी। सुधरे हुए समाज में पूँजीवाद और साम्राज्यवाद टेकासले एक मिनट को भी नहीं जीवित रह सकते। समानाधिकार का सिद्धांत ही तब मनुष्य-समाज का आधार होगा। राजा और रंक का तब प्रश्न ही नहीं होगा। उस दशा में समाज के मार्ग में जो संस्थाएँ जो व्यक्ति तथा जो साम्र उस बाधक होंगे, उन्हें सुधारने का प्रयत्न किया जायगा। वह प्रयत्न ही स्वाधीनता-प्राप्ति का उपयुक्त मार्ग होगा। तब फिर वह चाहे जो हो।

× ×

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

४. दक्षिण-आफ्रिका से लौटे हुए भारतीय

दक्षिण-आफ्रिका में सदा से प्रवासी भारतीयों का अनादर होता आया है। सत्याग्रह-संग्राम आदि अस्त्रों के काम में लाए जाने के कारण आफ्रिकन गवर्नमेंट ने उनके प्रति कुछ सद्व्यवहार दिखलाने का प्रयत्न किया था। किंतु भारतीयों को अधिकार-प्रदान करने के लिये वह कुछ उत्सुक नहीं। वह चाहती है कि जहाँ तक हो, हिंदोस्तानी लोग हिंदोस्तान को ही वापस चले जायँ। इसलिये वह तरह-तरह के प्रलोभन उनके सामने रखकर उन्हें भारत वापस जाने के लिये उकसाया करती है। बहुत-से हिंदोस्तानी लोग इन प्रलोभनों में पड़कर यहाँ वापस भी आ चुके हैं। किंतु यहाँ जीवन की समस्या और भी अधिक जटिल होने के कारण तथा स्वभावानुकूल वायु मंडल न मिल सकने के कारण उनकी दशा अत्यंत शोचनीय हो जाती है। वे बेबस होकर भीख माँगने तक के लिये लाचार हो जाते हैं अतएव उनका यहाँ लौटकर आना ख़तरे से ख़ाली नहीं है। किंतु हम पर भी सैकड़ों लोग यहाँ आने के लिये तैयार बैठे हैं। उन्हीं की आँखें खोलने के लिये श्रीस्वामी भवानोदयालजी संन्यासी द्वारा अपने पास भेजी हुई एक रिपोर्ट हम प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है, हमारे प्रवासी भाई स्वामीजी से बिना पूछ-ताछ किए कोई जल्दबाज़ी न करेंगे। स्वामीजी लिखते हैं—

"दक्षिण-आफ्रिका से बिदा होते समय वहाँ की जनता ने मुझे एक काम सौंपा था। वह काम था सरकारी ख़र्च से हिंदोस्तान वापस आनेवाले भाइयों की दशा की जाँच करके उसकी सच्ची और निष्पक्ष रिपोर्ट प्रकाशित करना। मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया, हिंदोस्तान में हज़ारों मील की यात्रा करके और सैकड़ों ही लौटे हुए प्रवासी भाइयों से मिलकर उनकी दशा अपनी आँखों देखी। जिस परिणाम पर मैं पहुँचा, उसे यहाँ प्रकाशित करता हूँ। पर आरंभ में ही यह लिख देना मेरा कर्तव्य है कि मेरी यह जाँच पूर्णतया स्वतंत्र थी, और इसका ज़िम्मेवारी मुझ ही पर है। पूरी और पक्की रिपोर्ट प्रकाशित करने के प्रथम कच्ची रिपोर्ट का सारांश यहाँ दिया जाता है। पक्की रिपोर्ट के लिये मुझे उन लोगों की सम्मति की प्रतीक्षा करना पड़ेगी, जिनका इस प्रश्न से घनिष्ठ संबंध है, और जो इस विषय पर अधिकार-पूर्वक बोल सकते हैं। प्रश्न गंभीर है, और उसके ठीक तरह से हल होने अथवा न होने का परिणाम दक्षिण-आफ्रिका के केप-टाउनवालों पर पड़ेगा, इसलिये जो कुछ इस विषय में निश्चय किया जाय, वह बहुत सावधानी से किया जाना चाहिए। इसलिये पक्की रिपोर्ट प्रकाशित करने के पहले कुछ प्रस्ताव जनता तथा सरकार के सम्मुख रखना उचित समझा है। परिणाम यह है—

(१) जो मज़दूर दक्षिण-आफ्रिका तथा अन्य दूरस्थ उपनिवेशों से लौटकर यहाँ आते हैं, उनके लिये हिंदोस्तान में बस जाना अत्यंत कठिन है। मुझे अपनी इस तीन महीने की जाँच में एक भी आदमी ऐसा न मिला, जो फिर उस उपनिवेश को, जिससे वह लौटा है, जाने को तैयार न हो जाय, यदि उसे साधन मिल जायँ। जो आदमी हिंदोस्तान में ही पैदा हुए थे, उनमें शायद दस-पंद्रह फ़ी-सदी ऐसे आदमी निकल भी आवें, पर उपनिवेशों में पैदा हुए (Colonial born) लड़कों में दो-चार फ़ी सदी लड़के भी ऐसे नहीं होंगे, जो हिंदोस्तान में रहना पसंद करते हों।

(२) जो लोग दक्षिण-आफ्रिका से लौटकर यहाँ आ रहे हैं, वे प्रायः अशिक्षित या अर्द्ध-शिक्षित हैं, और वे उस जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते, जो उन्हें यहाँ आकर व्यतीत करना पड़ेगा। उनमें से अधिकांश के लिये तो यह देश विदेश ही है। इसलिये यह कहना कि ये लोग जान-बूझकर अपनी राज़ी से स्वदेश को लौट रहे हैं, अर्द्ध-सत्य ही है। जो सहस्रों स्त्री-पुरुष दक्षिण-आफ्रिका से यहाँ लौटकर आए हैं, उनमें से यदि सौ आदमियों को भी दक्षिण-आफ्रिका वापस जाने के साधन मिल जायँ और वे वहाँ अपने अनुभव लौटनेवालों को सुना सकें, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि दस फ़ी-सदी आदमी भी हिंदोस्तान को न लौटें।

(३) जो लोग यहाँ लौटकर आ रहे हैं, उनमें से कितनों ही को मलाया और सीलोन को फिर जाना पड़ता है। स्वयं भारत-सरकार द्वारा नियुक्त स्पेशल ऑफ़िसर रायसाहब कुन्हीरमन नैयर का यह अनुमान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है कि तीस फ़ी-सदी आदमी ऐसे होते हैं, जो फिर मलाया और सीलोन को चल देते हैं। वे लिखते हैं—'तीस फ़ी-सदी तो पहले कोई ऐसा काम लेने को राज़ी नहीं होते, जिसे वे उपनिवेश में न करते रहे हों। अगर कोई काम मिल भी जाय, तो उसे शीघ्र ही छोड़ देते हैं, क्योंकि वेतन कम मिलता है। जब उनके पास कुछ भी नहीं रहता, तो फिर वे मलाया या सीलोन चल देते हैं।' मुझे इस बात की आशंका है कि रायसाहब कुन्हींरमन नैयर के अनुमान से कहीं अधिक दक्षिण आफ्रिक़ा से लौटे हुए आदमी मलाया और सीलोन जा रहे हैं। जब तक भारत-सरकार इस बात की जाँच न करावे, तब तक ठीक-ठीक संख्या का पता नहीं लग सकता।

(४) दक्षिण-आफ्रिक़ा से लौटे हुए आदमियों में कितने फ़ी-सदी आदमी भारतवर्ष के सामाजिक जीवन में स्थान पा जाते हैं, यह जानने के लिये हमारे पास इस समय कोई साधन नहीं है। रायसाहब कुन्हींरमन नैयर निस्संदेह बड़े परिश्रमी और सहृदय व्यक्ति हैं, पर उनके लिये भी यह निश्चित रूप से पता लगाना कि किस गाँव में कौन कुटुंब बस गया है, अत्यंत कठिन है। वे अकेले इसका पता लगा भी नहीं सकते, इसके लिये जाँच-कमीशन की आवश्यकता है।

(५) यह तो हुई दक्षिण-भारत की बात। अभी उत्तर-भारत में लौटे हुए भारतीयों की दशा की ओर ध्यान ही नहीं दिया गया! मैं स्वयं उत्तर-भारत का निवासी हूँ। यहाँ मैंने सैकड़ों ही आदमियों से बातचीत की है, पर मज़दूरों में ऐसे आदमी मुझे दस फ़ी-सदी भी नहीं मिले, जो उपनिवेशों से लौटने के बाद यहाँ के सामाजिक जीवन में प्रवेश कर सके हों। गुजराती व्यापारियों की बात मैं नहीं कहता, क्योंकि उन्होंने तो अपना संबंध भारत से बनाए रक्खा था। इन सब बातों पर ख़याल करते हुए मेरी समझ में यह अत्यंत आवश्यक है कि भारत-सरकार एक जाँच-कमीशन नियुक्त करे, जिसमें सरकारी और ग़ैर-सरकारी सदस्य हों। यह कमीशन इस बात की जाँच करे कि दक्षिण-आफ्रिक़ा से लौटे हुए कितने फ़ी-सदी आदमी उत्तर तथा दक्षिण भारत में शांति-पूर्वक बस जाते हैं। नई आयोजना को काम में लाते हुए दो वर्ष से अधिक हो गए, इसलिये यह जाँच अब भली प्रकार हो भी सकती है।

(६) जब तक यह जाँच न हो जाय, तब तक एक भी आदमी को दक्षिण-आफ्रिक़ा से नई आयोजना के अनुसार लौटाना अनुचित होगा, इसलिये तब तक के लिये आयोजना का प्रयोग स्थगित कर दिया जाय। हज़ारों मील की यात्रा करके और सैकड़ों आदमियों से मिलकर मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि बीस पौंड के प्रलोभन में आकर कितने ही दक्षिण-आफ्रिक़ा-प्रवासी भाई हिंदोस्तान को लौट आते हैं, और इस तरह वे अपने जीवन को तो ख़राब करते ही हैं, पर साथ ही अपने बच्चों के जीवन को भी सदा के लिये बरबाद कर देते हैं। अपने इस कथन की पुष्टि के लिये मैंने प्रमाण और बयान इकट्ठे किए हैं। मैं उन्हें किसी भी जाँच-कमीशन के सम्मुख उपस्थित कर सकता हूँ।

(७) दक्षिण-आफ्रिक़ा के सैकड़ों ही आदमी, जिन्होंने मेरे भारत को रवाना होते समय मुझे जाँच का काम सौंपा था, बड़े अधैर्य के साथ मेरी रिपोर्ट की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पर मैं यह उचित समझता हूँ कि भारत-सरकार को दो महीने का अवसर दिया जाय कि वह एक जाँच-कमीशन नियुक्त करे। इसीलिये मैं अपनी रिपोर्ट की (जो लिखी हुई क़रीब-क़रीब तैयार है) फरवरी एप्रिल के आरंभ तक नहीं करूँगा।

मुझे विश्वास है कि इस बीच में भारत-सरकार इस प्रश्न की गंभीरता का अनुभव करके जाँच-कमीशन नियुक्त कर देगी।

अपने दक्षिण-आफ्रिक़ा-प्रवासी भाइयों से मैं यह प्रार्थना करूँगा कि वे दो-तीन महीने के लिये और धैर्य धारण करें। यदि दो महीने में भारत-सरकार ने कोई कारवाई न की, तो मैं अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कर दूँगा, और तब आप लोगों से मेरी प्रार्थना होगी कि आप लोग उस रिपोर्ट के बतलाए हुए उपायों को काम में लावें।"

× × ×

५. लंका में भारतीय

श्रीयुत संत निहालसिंह संसार के प्रसिद्ध देशों में गिने जाते हैं। विदेशी राष्ट्रों की चालबाज़ियों को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अंतरराष्ट्रीय नीति की गुत्थियों पर उनके लेख प्रायः निकला करते हैं। अभी हाल में ही लाहौर के 'पीपुल्स'-नामक सहयोगी में उनके दो लेख प्रकाशित हुए हैं। लंका-प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा का उनमें एक अत्यंत करुण चित्र है। उन लेखों में उन्होंने बतलाया है कि किस प्रकार इँगलैंड की मज़दूर-गवर्नमेंट के सहयोग, सहमति और आज्ञा से सीलोन अथवा लंका के गवर्नर महोदय ने वहाँ के प्रवासी भारतीयों के अधिकारों का बलिदान कर डाला है। यह अत्याचार केवल कुछ भारत-विद्वेषी लोगों को प्रसन्न करने के लिये ही किया गया है। क्योंकि ब्रिटिश-सरकार नहीं चाहती थी कि लंका में भी दक्षिण-आफ्रिक़ा के समान भारत-विद्वेषी लोग उसके विरुद्ध आग उगलने लगें। संत महोदय लिखते हैं—

"मैक्डोनाल्ड सरकार ने ऐसे प्रस्तावों पर सहमति प्रदान कर दी है, जिनके द्वारा लंका की कौंसिल के चुनाव-संबंधी अधिकार प्राप्त करने के लिये वहाँ के प्रवासी भारतीयों को अपनी नागरिकता का परित्याग करना पड़ेगा।" (अर्थात् उन्हें भारत-राष्ट्र के नागरिक कहलाने का अधिकार न होगा।)

यदि यह अत्याचार सभी प्रवासी लोगों पर किया जाता, तो हमें कुछ कहने की गुंजायश न थी। लेकिन यह प्रहार तो केवल हिंदोस्तानियों पर ही है, जैसा कि संत महोदय के लेख से मालूम होता है। वे लिखते हैं—

"१. यह त्याग केवल भारतीयों से ही कराया जा रहा है।

२. अँगरेज़ लोगों को बिना नागरिकता परित्याग किए ही वोट देने का अधिकार मिल जायगा। उन्हें इसके लिये मजबूर न किया जायगा।

३. अब तक अपने भूमि-संबंधी अधिकारों के कारण भारतीय लोग मताधिकार में अँगरेज़ों और अन्य जातियों का पूरा मुक़ाबला कर सकते थे। अतएव (उनकी परिस्थिति कमज़ोर करने के लिये—सं०) यह पहला ही मौक़ा है कि जब उन पर इस प्रकार का प्रहार किया जा रहा है।

परिणाम बिल्कुल स्पष्ट है। लंकेश गवर्नर ने लंका-प्रवासी भारतीयों के अधिकारों का ख़ून कर डाला है। उसके आफ्रिक़ा में किए हुए कृत्यों के कारण, उससे इससे कम की आशा भी नहीं की जा सकती थी। लेकिन मैक्डोनाल्ड साहब की सरकार को हम क्या कहें कि जिसने बिंदु-विसर्ग का भी परिवर्तन किए बिना इस गवर्नर के उपदेश को मान लिया!

उस पर तुर्रा यह कि हमारे इँगलिस्तान के दोस्त आशा करते हैं कि हम हिंदोस्तानी मज़दूर-सरकार की भारत-संबंधी सदिच्छाओं पर श्रद्धा और भक्ति बनाए रहें।"

हम संत महाशय के उपर्युक्त कथन से सर्वथा सहमत हैं। उनके इस एकरथ-महायुद्ध के लिये हम उन्हें बधाई देते हैं। लंका-प्रवासी भारतीयों के लिये किया हुआ उनका यह कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है। प्रत्येक भारतीय पत्रकार का कर्तव्य है कि वह संत महोदय को उनके इस पवित्र कार्य में सहायता पहुँचावे। जब तक हम हिंदोस्तानी विदेशों में फैले हुए भारतीय भाइयों के अधिकारों की रक्षा का प्रयत्न अभी से नहीं करेंगे, तब तक भावी भारतीय राष्ट्र की मान-प्रतिष्ठा का वहाँ संरक्षण न हो सकेगा। दूर-दूर के उपनिवेशों में बसे हुए भारतीयों के अधिकारों के लिये जहाँ हम इतना लिखते हैं, वहाँ अपने पड़ोस के ही द्वीप में बसे हुए भाइयों के प्रति हमारी इतनी उदासीनता अत्यंत निंदनीय है। हमें आशा है, सभी भारतीय पत्र संत निहालसिंहजी को उनके इस प्रशंसनीय कार्य में सहायता देंगे।

× × ×

६. अली-भाइयों की मूर्खता

जो अली-भाई किसी समय ख़िलाफ़त की चौखट पर सिर दे मारने के लिये तैयार थे, जो किसी ज़माने में भारतीय स्वतंत्रता के सिंहासन के मज़बूत पाए समझे जाते थे, जो सात समुद्र पार तक टर्की के अधिकारों के लिये लड़ने को जा पहुँचे थे, वे ही अली-भाई अपने अंधे कट्टरपन के कारण आज हिंदोस्तान की आज़ादी के सबसे बड़े विरोधी, हिंदू-मुसलिम-एकता के सबसे बड़े कंटक और देश-भर के नासमझ मुसलमानों को गुमराह करनेवाले कहे जाते हैं। अपनी बड़ी-बड़ी आकांक्षाएँ पूरी करने के लिये उन्हें जिधर भी स्थान मिला है, वे उधर ही ढुलक जाने के आदी-से हो गए हैं। उनकी इस विश्वासघातकता के कारण ही देश के समझदार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोगों में कोई उनका विश्वास नहीं करता। हाँ, केवल देश के जाहिल मुसलमानों को—जिनकी संख्या ज़रूरत से ज़्यादा है—उनकी मूर्खता-पूर्ण बातें अवश्य रुचिकर हुआ करती हैं। अभी हाल में ही इन दोनो भाइयों ने एक और चाल दिखलाई है। स्वातंत्र्य-दिवस मनाने के विरुद्ध इन दोनो भाइयों की जो उक्तियाँ पत्रों में प्रकाशित हुई हैं, उनसे इनके हृदय की क्षुद्रता का काफ़ी परिचय मिलता है। देश के मुसलमानों को कांग्रेस के विरुद्ध भड़काकर ये दोनो भाई अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। उनको अच्छी तरह मालूम है कि वे भारत के राजनीतिक रंग-मंच से सदा के लिये धक्के देकर निकाल दिए गए हैं। अतएव वे अब देश की राजनीतिक प्रगति में बाधा डालना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। उसके लिये हथियार भी उन्हें काफ़ी पैसे मिल गए हैं। हिंदोस्तान के मुसलमान टर्की और ईरान के मुसलमानों के समान शिक्षित और देशभक्त नहीं हैं। वे कमालपाशा के समान राष्ट्रीय उन्नति में बाधक धार्मिक अंध-विश्वासों को ठुकरा देने के आदी नहीं हैं, न वे हिंदोस्तान को अपनी जन्मभूमि समझते हैं। अरब के जलते हुए रेगिस्तान को ही वे मोक्ष-दायक समझते हैं। उसे ही वे अपना सब कुछ जानते हैं। हिंदोस्तान तो उनके लिये एक मुसाफ़िरख़ाना-सा है। उसके लिये कुछ भी त्याग करना उन्हें अखरता है। हिंदोस्तान के निवासी हिंदू उनकी दृष्टि में 'काफ़िर' हैं, उनको क़त्ल करने से उन्हें जन्नत नसीब होती है। बस इन मूर्ख गुंडों को जहाँ ज़रा-सा हवासों का झूठ-मूठ हवाला दिया, जहाँ उस पाक पैग़ंबर का नाम अरने नापाक गंदे मुँह से निकालकर उकसाया, वहाँ फ़ौरन् वे 'दीन' के नाम पर घृणित-से-घृणित कार्य करने के लिये भी तैयार हो जाते हैं।

इन्हीं पैसे हथियारों से हमारे अली-भाई मूर्खता-पूर्ण खेल खेलने चले हैं। इन अंध-विश्वासी, मूर्ख तथा कट्टर मुसलमानों के झुंड को साथ लेकर वे चले हैं भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध का विरोध करने, मुसलिम कान्फ्रेंसों और लीगों में स्वतंत्रता के विरुद्ध प्रस्ताव पास कराने तथा मरी हुई ख़िलाफ़त की क़ब्र ख़िलाफ़त-कान्फ्रेंस में लीडर बनने। लेकिन उन्हें याद रखना चाहिए कि इन क्षुद्र हरकतों से आज़ादी के दीवाने हिंदू मुसलिम नौजवान अपने प्रयत्नों को बंद नहीं कर देंगे। उनका प्रयत्न बराबर जारी रहेगा। डॉ० किचलू, मौलाना 'आज़ाद', डॉक्टर अंसारी, मि० शेरवानी आदि देश-भक्त मुसलमान गंभीर प्रकृति के समझदार मुसलमान भाइयों की सहानुभूति और सहयोग से देश में हिंदू-मुसलिम-एकता क़ायम रक्खेंगे, और शीघ्र ही वह समय आएगा, जब देश के अन्य मुसलमान भी इन देशभक्तों के समान ही मुल्क की आज़ादी की लड़ाई में कांग्रेस का साथ देंगे।

तब इन भाइयों को पता चलेगा कि देश-द्रोह की कट्टरपन का क्या मूल्य होता है। राजनीतिक विश्वास-घात के दाम भी तब इन्हें काफ़ी देने पड़ेंगे। पर इन दोनो अंधे भाइयों की ग़लती के कारण देश के बेचारे निरपराध, जल्दबाज़, कट्टर और नासमझ मुसलमानों को बहुत नुक़सान उठाना पड़ेगा।

उनके इस देश-द्रोह का उन्हें भयानक नैतिक दंड मिलेगा। संसार में उनका नाम विश्वास-घातकों और देश-द्रोहियों में गिना जायगा। हिंदोस्तान की आज़ादी के सिपाहियों के निकट भी वे अविश्वास के पात्र होंगे। तब हम सब महान् पाप के पुरोहित इन अली-भाइयों को पेट-भर कोसने के सिवा इन भेड़-चाल चलनेवाले मुसलमानों के हाथ में और कोई उपाय न रह जायगा।

सदा आँखों पर पट्टी बाँधकर नेतृत्व करनेवाले अली-भाइयों पर इन पंक्तियों या ऐसी ही अन्य पंक्तियों का शायद ही कोई असर पड़े, क्योंकि वे बहुत मोटी खालवाले जीव हैं। स्वार्थ, प्रसिद्धि की इच्छा और नेतृत्व की भूख, जो उनकी बेवक़ूफ़ियों की जड़ है, उन्हें कभी शांति से बैठा न रहने देगी। अफ़सोस तो हमें तो केवल यह कि कुछ मुसलमान भी इनकी देश-द्रोहिता में शामिल हैं।

× × ×

७. महात्माजी की शर्तें

लाहौर-कांग्रेस के पूर्ण स्वाधीनता के प्रस्ताव के बाद महात्माजी के कई दृढ़ भक्तों में भी खलबली-सी मच गई है। उनका विश्वास है कि जनता में संघर्ष के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नियंत्रण की वृद्धि किए बिना इस प्रकार के प्रस्ताव का कार्य-रूप में परिणत होना बड़ा कठिन और भयंकर होगा। देश में गड़बड़ और स्वेच्छाचार का बाज़ार फिर गर्म हो उठेगा, और सरकार के पशु-बल तथा दमन-चक्र को एक बार फिर पूरा मौक़ा मिल जायगा। इसीलिये उन लोगों ने बार-बार महात्माजी का ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न किया है। महात्माजी पर भी उन लोगों के इस प्रकार के निस्स्वार्थ विरोध का प्रभाव पड़ा है। इसीलिये उन्होंने वायसराय के सामने समझौते के लिये कुछ शर्तें रक्खी हैं। वे लिखते हैं—

"लॉर्ड रीडिंग के सामने मुझे जिन 'बच्चों की-सी' शर्तों को रखने का सौभाग्य मिला था, प्रायः वे ही शर्तें मैं लॉर्ड इर्विन के समक्ष भी पेश करता हूँ।

वे शर्तें निम्न-लिखित हैं—

१. शराब की बिक्री बिलकुल बंद कर दी जाय।

२. विनिमय की दर को घटाकर १ शि० ४ पें० कर दिया जाय।

३. मालगुज़ारी कम-से-कम आधी कर दी जाय, और उस पर धारा-सभा का नियंत्रण कर दिया जाय।

४. नमक-कर उठा लिया जाय।

५. प्रारंभ में फ़ौजी ख़र्च कम-से-कम आधा कर दिया जाय।

६. घटा हुई मालगुज़ारी के अनुसार उच्च कर्मचारियों की तनख़्वाह आधा या उससे भी कम कर दी जाय।

७. विदेशी कपड़े पर इतनी चुंगी लगाई जाय कि वह यहाँ आ ही न पावे।

८. भारतीय जहाज़ों के लिये समुद्र-तट सुरक्षित करने का क़ानून (Coastal Reservation Bill वेजा-व्यापार-निरोध बिल) पास कर दिया जाय।

९. जो लोग साधारण न्यायालयों द्वारा हत्या या हत्या करने की चेष्टा के दोषी ठहराए गए हों, उनके सिवा और सब राजनीतिक क़ैदियों को छोड़ दिया जाय; सब राजनीतिक मुक़द्दमे हटा लिए जायँ। १२४ अ धारा और १८१८ का रेगुलेशन तथा ऐसे ही दूसरे क़ानून रद्द कर दिए जायँ, और तमाम भारतीय निर्वासितों को स्वदेश लौटने की इजाज़त दी जाय।

१०. ख़ुफ़िया पुलिस का मुहकमा या तो उठा दिया जाय या फिर वह जनता के अधीन कर दिया जाय।

११. जनता के नियंत्रण में आत्मरक्षा के लिये हथियार रखने के परवाने दिए जायँ।"

इन शर्तों के विषय में महात्माजी लिखते हैं—

"देश की ज़रूरतों की यह कोई पूरी सूची तो है नहीं; फिर भी वायसराय साहब इन सीधी-सादी किंतु जीवन-मरण से संबंध रखनेवाली ज़रूरियातों को ही पूरा कर दें। अगर ये माँगें मंज़ूर हुईं, तो फिर उन्हें देश में सविनय-भंग की आवाज़ भी नहीं सुन पड़ेगी। यही नहीं, बल्कि अपने विचार और अपनी माँगें पूरी स्वतन्त्रता के साथ प्रकट करने की सुविधा होने पर महासभा किसी भी परिषद् में हृदय से हाथ बटावेगी।"

महात्माजी की उपर्युक्त शर्तें भारतवासियों के दैनिक जीवन से बड़ा घनिष्ठ संबंध रखती हैं। वे हमारे देश की अत्यंत आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। देश के शासन में थोड़ी-बहुत रद्दोबदल कर देने से ही ये शर्तें पूरी हो सकती हैं। इनकी पूर्ति का परिणाम होगा ग़रीब जनता के उदर पोषण में सुविधा। भारत के लिये यही उदर-पोषण का सवाल बड़ा जटिल है। इसके इस प्रकार हल हो जाने पर ग़रीबों की संस्था कांग्रेस सरकार का सहयोग देने के लिये किसी अंश तक तैयार हो सकती है, तथा इसके साथ ही देश में शीघ्र ही उठनेवाले सत्याग्रह, असहयोग और अशांति के बादल-बवंडर भी शांत किए जा सकते हैं।

किंतु ब्रिटिश-व्यापार और ब्रिटिश-स्वार्थों पर भारत का बलिदान करनेवाली ब्रिटिश-सरकार कभी भी इन शर्तों को मंज़ूर करेगी, ऐसा विश्वास नहीं होता। सन् १८१३ से भारत-वासियों को मद्य पिलाकर लूटने का बंदोबस्त करनेवाले ब्रिटिश-व्यापारी शराब के क्रय-विक्रय से होनेवाली महान् आय को आसानी से नहीं छोड़ सकेंगे। न वे फ़ौज का ख़र्च कम करने के लिये ही सहमत होंगे; क्योंकि भारत के रुपयों से जिन ७०,००० अँगरेज़ सिपाहियों का पोषण होता है, और जो समय-समय पर रोटी कमाकर खिलानेवाले हिंदोस्तानियों के पेट में संगीनें घुसेड़कर अपनी कृतज्ञता प्रकट किया करते हैं, तथा जो अँगरेज़ ब्रिटिश-उपनिवेशों और दूसरे देशों की प्रजा पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्रिटिश-साम्राज्यवाद का सिक्का जमाने में ब्रिटेन का हाथ बटाते हैं, वे ही सरकार के प्यारे ब्रिटिश-सिपाही, शायद भूखों मरने लगेंगे, अथवा नाराज़ हो जायँगे।

इसी प्रकार कपड़े तथा समुद्र-तट के व्यापार के विषय में भी महात्माजी की शर्तें नहीं मानी जा सकतीं; क्योंकि इससे मैनचेस्टर और लंकाशायर के मिल-मालिक और जहाज़ बनानेवाले एकदम बिगड़ उठेंगे।

तब फिर हम ग़रीबों के पास अपने पेट के सवाल को हल करने के लिये सत्याग्रह के सिवा और कोई उपाय नहीं रह जाता।

यदि सरकार चाहती है कि देश में शांति स्थापित रहे और जनता उसके साथ सहयोग करे, तो उसे ब्रिटिश-व्यापारियों की चिल्ल-पों की परवा न करके महात्माजी की इन शर्तों को मानकर 'गोलमेज़-कान्फ्रेंस' के लिये द्वार खोल देना चाहिए। बिना उसके इन शर्तों को माने कांग्रेस किसी भी कान्फ्रेंस में सम्मिलित न होगी। कांग्रेस के सहयोग के बिना गोलमेज़-कान्फ्रेंस का एक भी निश्चय भारतीय जनता पर लागू न होगा। पद-पद पर उसका विरोध किया जायगा। अतएव लॉर्ड इरविन और मि० बेन को महात्माजी के इस नए मौक़े को हाथ से न जाने देना चाहिए।

× × ×

८. टॉमस मैन

इस साल साहित्य-संबंधी 'नोबल'-पुरस्कार, जिसका मूल्य सवा लाख रुपया होता है, जर्मनी के प्रसिद्ध लेखक टॉमस मैन को दिया गया है। वे जर्मनी के वर्तमान लेखकों में सर्वोत्तम माने जाते हैं। उनकी अधिकांश पुस्तकों का अँगरेज़ी-अनुवाद अमेरिका के एक पुस्तक-विक्रेता ने प्रकाशित किया है।

संसार के अन्य प्रसिद्ध लेखकों के समान मैन का जीवन घटना-चक्र से परिपूर्ण नहीं है। उन्होंने बहुत ही सीधा-सादा जीवन व्यतीत किया है। सन् १८७५ में, लबक-नगर में, उनका जन्म हुआ था। उनके पिता एक पुराने अमीर ख़ानदान के वंशधर थे। लेकिन थे वे निर्धन। इसलिये उन्हें जीविका की खोज में इधर-उधर भटकना पड़ता था। टॉमस मैन जब १६ वर्ष के थे, तब उनके पिता-माता म्यूनिच-शहर में आकर रहने लगे थे। वहाँ ही आमैन एक बीमा-कंपनी में काम किया करते थे। काम से बचे हुए समय में वे साहित्य तथा मानव-प्रकृति का अध्ययन किया करते थे। कुछ से मैन महोदय हटली चले गए, और 'सिम्प्लिसिस्मस' पत्र के कर्मचारियों में शामिल हो गए। यह काम करते हुए भी उन्होंने अपने साहित्य-प्रेम को उन्नत करने का प्रयत्न सदा जारी रक्खा। जिसका परिणाम यह हुआ कि सन् १८९४ में उनका 'जिफ़ालेन'-नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ, और प्रकाशित होते ही इतना प्रसिद्ध हो गया कि टॉमस मैन के पास बधाइयों और धन्यवाद के पत्रों के ढेर लग गए। इससे प्रोत्साहित होकर उन्होंने अन्य सब काम छोड़कर केवल साहित्य-सेवा करने का ही निश्चय कर डाला। धीरे-धीरे उनकी प्रसिद्धि और भी बढ़ी। सन् १९०१ में, जब उनका 'बदन ब्रुक्स'-नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ, तो साहित्य-जगत् में हलचल-सी मच गई। इस उपन्यास की ख़ूबी यह थी कि इसके पात्रों का चरित्र बड़ी कुशलता से चित्रित किया गया था, तथा 'लबक'-नगर के आस-पास के समाज का ऐसा सुंदर चित्र खींचा गया था कि कथा ज़रा भी काल्पनिक नहीं प्रतीत होती थी। दूसरी नई बात यह भी थी कि इस उपन्यास का नायक एक व्यक्ति न होकर एक परिवार था। साहित्य-जगत् में होनेवाली क्रांति का यह प्रथम चिह्न था। उस समय तक पुराने बुड्ढों द्वारा बनाए हुए साहित्यिक नियमों का किसी ने उल्लंघन नहीं किया था। टॉमस मैन ने सबसे पहले इस साहित्यिक क्रांति की ओर पैर बढ़ाया था।

'बदन ब्रुक्स' के कारण टॉमस मैन को यह पुरस्कार अवश्य मिला। किंतु केवल एक इसी पुस्तक के कारण वे उसके अधिकारी नहीं हुए हैं। नोबल-पुरस्कार केवल एक पुस्तक के कारण कभी नहीं दिया जाता। यह सम्मान उन लोगों को दिया जाता है, जो मनुष्य-जाति के उपकार के लिये किसी महान् विचार-परंपरा को जन्म देते हैं, अथवा जो अपनी अनवरत साहित्य-सेवा से मनुष्य-जाति का महान् उपकार करने में समर्थ होते हैं। टॉमस मैन की साहित्य-सेवा भी ऐसी ही उच्च कोटि की थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान को सदा वृद्धि ही होती गई। सन् १९०३ में उन्होंने एक गल्पमाला प्रकाशित की, और सन् १९१५ में 'रॉयल हाइनेस'-नामक उपन्यास। उसके बाद 'डेथ इन वेनिस' और 'टोनियो क्रोगर' प्रकाशित हुए। इन दोनों के बाद टॉमस मैन का दूसरा बड़ा उपन्यास 'दि मैजिक माउन्टेन' प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में मैन ने आधुनिक मनुष्य के मानसिक रंग-मंच पर अपना अभिनय दिखलानेवाली सभी आधुनिक शक्तियों के ऊहापोह का विश्लेषण कर डाला है। उपन्यास की कथा का आरंभ स्विट्ज़रलैंड के क्षयरोग-संबंधी एक सेनेटोरियम में होता है। इसके द्वारा टॉमस मैन ने सन् १९१४ से पहले की योरपियन सोसाइटी (योरप के सभ्य-समाज) की उस निस्सारता का प्रदर्शन किया था, जिसके सुधार के लिये सन् १९१४ में प्रारंभ होनेवाले योरपियन महासमर की अनिवार्य आवश्यकता थी। इस उपन्यास के बाद मैन ने 'चिलून ऐंड फ्रूल्ज़' की भी रचना की, लेकिन 'बदन ब्रुक्स हाउस' ही उनकी सर्वोत्तम कृति मानी जाती है।

इस समय मैन की अवस्था ५४ वर्ष की है। वे स्वभावतः मितभाषी और शांत हैं। किंतु उनके उस शांत व्यक्तित्व के नीचे एक ज्वालामुखी की-सी आग सुलगा करती है। उसमें मनुष्य-समाज के दुर्गुणों का अनवरत होम हुआ करता है, तथा उसी में उत्तप्त होकर मैन के पात्र खरे सोने के समान संसार के लिये आकर्षण की सामग्री बन जाते हैं। आज मैन जर्मन-उपन्यासकारों के अग्रणी हैं। मनुष्य-जीवन के दुःखांत नाटक का जैसा अनुभव उन्हें है, वैसा बहुत कम लेखकों को होता है। चरित्र-चित्रण में तो वे सिद्धहस्त हैं ही, कभी-कभी वे ऐसी गहरी चुटकी भी लेते हैं कि बस दाँतों-तले उँगली दबाना पड़ती है। आधुनिक समाज की कमज़ोरियों और मानव-हृदय के गहरे गह्वरों के कोने-कोने से वे परिचित हैं। इसीलिये उनके उपन्यास इतने उत्कृष्ट होते हैं।

× × ×

९. तलाक़ और हिंदू-समाज

पिछले साल बड़ौदा रियासत की धारा-सभा में एक हिंदू-विवाह-विच्छेद(तलाक़)-बिल पेश किया गया था। धारा-सभा ने उस बिल को जनता की सम्मति जानने के लिये प्रकाशित किया था। बड़ौदा की प्रजा तथा अन्य लोगों की सम्मति आ जाने पर वह बिल अब फिर धारा-सभा के सामने आया है। एक विशेष अधिवेशन में उस पर विचार किया जायगा।

मालूम नहीं, बड़ौदा की धारा-सभा उस बिल पर क्या सम्मति दे। संभव है, बिल पास हो जाय। किंतु उसका न पास होना ही अधिक संभव मालूम होता है। हिंदू-धर्मशास्त्र के अनुसार किन्हीं अत्यंत भयानक कारणों के उपस्थित होने पर ही वैवाहिक विच्छेद होता था। अन्यथा विच्छेद करना अत्यंत गर्हणीय समझा जाता था। भयानक कारणों के होने पर भी बिना पति-पत्नी दोनों की सहमति के यह विच्छेद नहीं हो सकता था। किंतु आजकल तो यह विच्छेद की प्रणाली एक-दम उठ-सी गई है। केवल द्विजेतर जातियों में ही यह प्रथा प्रचलित है। द्विजों में उसका एकदम अभाव है। इसके विपरीत यदि कोई द्विज-स्त्री आजकल विवाह-विच्छेद का नाम भी लेती है, तो उसकी बड़ी बदनामी होती है। तलाक़ का नाम भी लेना हिंदू-धर्म के विरुद्ध समझा जाता है। हिंदू-समाज की पतित दशा को देखते हुए उसका अपने नारी-समुदाय की पवित्रता का इतना कट्टर संरक्षक होना सचमुच बड़े ही आश्चर्य की बात है! आजकल तो कट्टरता और अंध-विश्वास केवल उन्हीं समाजों में पाया जाता है, जिनका अंतरतम विभाग बिलकुल जीर्ण और खोखला होता है। बाहरी दिखाव और दृढ़ता के द्वारा ही वे समाज संसार में अपना अस्तित्व क़ायम रखने का प्रयत्न किया करते हैं। दुनिया के नए और पुराने धर्म इस प्रवृत्ति के बड़े सुंदर उदाहरण हैं। धार्मिक विचारों की क्रांति के इस युग में जो धर्म युक्ति और तर्क का सामना करते हैं, वे ही जीवित रह सकते हैं। जो इस कठिन अग्नि-परीक्षा से डरते हैं, वे अंध-विश्वास, धर्म-शास्त्र, हदीस, क़ुरान और इंजील तथा कट्टरपन के कठोर कवच में कछुए के समान सर्वांग वेष्टन करके आत्मरक्षा करते हैं। इसलाम इस प्रवृत्ति का सबसे बड़ा उदाहरण है। पैग़ंबर और क़ुरान के शब्दों के विषय में युक्ति और तर्क का नाम भी उसे अत्यंत घृणित मालूम होता है। हिंदू-धर्म के कुछ पुरातन प्रणाली के पंडितों में भी यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रवृत्ति अब देखी जा रही है। प्राचीन रूढ़ियों की संरक्षणशीलता के वे इतने पक्षपाती हैं कि असामयिक शास्त्रीय वचनों में समयानुकूल परिवर्तन करना उन्हें एक जघन्य पाप मालूम होता है। वे भारतीय इतिहास के विभिन्न घटना-क्रम के कारण उत्पन्न हुई अनेक अनिष्ट-कर धार्मिक रूढ़ियों का बहिष्कार करके सनातन हिंदू-धर्म की प्रारंभिक पवित्रता पुनरुज्जीवित करने के घोर विरोधी हैं। हिंदू-धर्म की प्राचीन व्यापकता को जिन विनाश-कारिणी रूढ़ियों ने परिसीमित करके नष्ट कर डाला था, उन्हें एकदम नष्ट करके उसे उसके पूर्व रूप में लाना, उसे व्यापक बनाना उन्हें बहुत ही अखरता है।

ऐसे लोगों को बड़ौदा-धारा-सभा का यह कार्य अत्यंत अनुचित मालूम होगा; किंतु वे लोग जो हिंदू-धर्म में सुधारों के पक्षपाती हैं, उसके इस कार्य को प्रशंसा की दृष्टि से देखेंगे। हिंदू-स्त्रियों की वर्तमान दास्यवृत्ति की ओर देखते हुए यही उचित प्रतीत होता है कि उन्हें भी गार्हस्थ्य जीवन में समानाधिकार प्राप्त होने चाहिए। एक पत्नी के जीवित रहते हुए जो लोग अन्य स्त्रियों से वैवाहिक अथवा अनुचित संबंध स्थापित करके बेचारी पत्नी की छाती पर मूँग दला करते हैं, उन-की मरम्मत करने के लिये स्त्रियों के हाथ में भी कोई अस्त्र होना चाहिए। अपने अपमान का बदला लेने के लिये, अपने उचित क्रोध को प्रकट करने के लिये तथा अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिये उसके पास भी कोई साधन होना चाहिए। हिंदू-विवाह-विच्छेद-बिल इसी प्रकार का साधन है, ऐसा ही अस्त्र है। मदांध और कामुक हिंदू-पति के भीषण अत्याचारों और व्यभिचारों का नियंत्रण करने के लिये पत्नी के हाथ में इस सामाजिक अंकुश का होना अत्यंत लाभदायक हो सकता है। अतएव प्रत्येक सुधार-प्रेमी हिंदू, पुरुष और नारी बड़ौदा-धारा-सभा के इस कार्य से सहानुभूति रक्खेगा, चाहे वह उसके इस कार्य को अभी अपामयिक भले ही कहे। हम सदा से हिंदू-धर्म में सुधारों के पक्षपाती रहे हैं। अपनी हार्दिक इच्छाओं को जब हम इस प्रकार कार्य-रूप में परिणत होते देखते हैं, तो हमें अत्यंत हर्ष होता है। हिंदू-विवाह-विच्छेद बिल को जनता तथा धारा-सभा के सामने आते देखकर हमें बेहद प्रसन्नता हुई है, किंतु—और यह एक बड़ा किंतु है—हमारी सम्मति में ऐसे बिलों का अभी समय नहीं आया है। अभी हिंदू-समाज का क्षेत्र इतना उपजाऊ नहीं है कि ऐसी नाजुक सामाजिक समस्याओं के बीज उसमें उग सकें। वे सड़कर अन्य समाज-सुधार के अंकुरों में भी कीड़े लगा देंगे। अभी तो हमें हिंदू-समाज की उर्वरा-शक्ति बहुत बढ़ाने की आवश्यकता है। उसमें अभी इतने कौंस-कचरा खड़े हैं कि उनका मूलोच्छेद किए बिना अन्य उपयोगी बीज बोए ही नहीं जा सकते। अतएव अभी इस प्रकार के बिल पेश होना हम असांप्रतिक समझते हैं।

विवाह-विच्छेद-प्रथा के पनपने के विरुद्ध अभी हमारे समाज में तीन बड़े कारण हैं।

पहला कारण है—हिंदू-स्त्रियों की शोचनीय सामाजिक परिस्थिति। बचपन से मृत्यु तक वे पुरुषों की इच्छाओं और आज्ञाओं के जिस शिकंजे में पलती हैं, उसके कारण उनकी मानसिक तथा शारीरिक बाढ़ में भयानक व्यवधान पड़ता है। वे एक अस्वाभाविक रूप में बढ़ती और अस्वाभाविक रूप में ही जीवन व्यतीत करती हैं। अप्राकृतिक बंधनों के कारण उनका मानसिक विकास बिलकुल मारा जाता है। वे पुरुषों की सामाजिक तथा शारीरिक दासी तो होती हैं, मानसिक विचारों में भी वे पुरुषों की ही दासता स्वीकार करती हैं। स्वतंत्र मानसिक वातावरण में पली न होने के कारण वे स्वयं कुछ भी नहीं सोच सकतीं। अतएव आजकल के जीवन-संघर्ष के युग में—जहाँ कि आत्मनिर्भरता ही विजय का साधन समझा जाता है—इस प्रकार की मानसिक दासता के कारण वे कभी भी जीवित नहीं रह सकतीं। उन्हें पुरुषों का आश्रय लेना ही होगा और दासी-वृत्ति करना ही होगी। हम जब तक उन्हें इतना आत्म-निर्भर नहीं बना देते, जिससे वे इस संघर्ष के घोर घोरों का वीरता-पूर्ण सामना कर सकें, तब तक विवाह-विच्छेद-जैसे क़ानूनों का—जिनमें स्त्री का आत्म-निर्भर होना नितांत आवश्यक है—पास होना असामयिक ही समझा जायगा।

इसके अतिरिक्त हिंदू-स्त्रियों की आर्थिक दशा इतनी असंतोष-जनक है कि वे अपने पैरों आप खड़ी नहीं हो सकतीं। हिंदू-धर्मशास्त्रों की आधुनिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

टिप्पणियों ने उनके सब आर्थिक अधिकारों पर हस्ताक्षेप किया है। स्त्री-धन के अतिरिक्त उनके और कोई आर्थिक अधिकार ही वे स्वीकार नहीं करतीं। वर्तमान हिंदू-क़ानून भी स्मृतियों—विशेषतः आधुनिक स्मृतियों—के ही आधार पर बनाया गया है। अतएव उसमें भी उनके अधिकारों की रक्षा नहीं की गई है। रक्षा तो दूर रही, उनके लिये अधिकार ही नहीं रक्खे गए हैं। हिंदू-समाज ने भी उन्हें शिक्षा से वंचित रखकर आर्थिक आत्म-निर्भरता से कोसों दूर हटा दिया है। ऐसी दशा में अत्याचारी पतियों द्वारा वैवाहिक दशा में ही परित्यक्ता स्त्रियाँ जब नितांत दरिद्रता और तज्जन्य कष्टों से पूर्ण जीवन व्यतीत कर रही हैं, तो फिर तलाक़ दी हुई स्त्रियों की कठिनाइयों का तो कहना ही क्या। जब तक हम स्त्रियों को इतना शिक्षित नहीं बना देते कि वे पुरुष-सापेक्षिणी न रहें, जब तक हम उन्हें आर्थिक अधिकार देकर आत्म-निर्भर नहीं बना देते, तब तक विवाह-विच्छेद की चर्चा करना नितांत अनावश्यक-सा ही है।

विवाह-विच्छेद-क़ानून के विरुद्ध तीसरी और शायद सबसे मुख्य बात है, हिंदू-समाज का विरुद्ध वातावरण। केवल हिंदू-पुरुष ही नहीं हिंदू-स्त्रियाँ तक स्वयं इस नए क़ानून का उपयोग करने के लिये तैयार नहीं हैं। ऐसी दशा में इस प्रकार के सामाजिक क़ानून पास करना कभी लाभदायक सिद्ध नहीं होता। अतएव हमारी सम्मति में बड़ौदा-धारा-सभा को बड़ी समझदारी से काम लेकर इस क़ानून को अभी न पास करना चाहिए।

× × ×

१०. अफ़ग़ानिस्तान की गृह-कलह

कुछ दिन हुए 'सुधा' में हमने नादिरख़ाँ के अफ़ग़ानिस्तान के शाह बन बैठने पर अपने विचार प्रकट किए थे। अफ़ग़ानिस्तान से हाल में ही आए हुए समाचारों से विदित होता है कि वहाँ फिर विद्रोहाग्नि भड़क उठी है। इस नवीन उत्तेजना का कारण है जनरल नादिरख़ाँ की कटुता और विश्वासघात। अपने पैर मज़बूत करने के लिये उन्होंने वहाँ के गँवार मुल्लाओं को विशेष अधिकार देकर तथा उन्हीं कठमुल्लों की सम्मति से राज्य-प्रबंध करने की अनुमति देकर अमानुल्लाशाह के सब किए-कराए पर चौका फेर दिया है। देश अब फिर जाहिल और अधे कटमुल्लों के क़ब्ज़े में चला गया है। अतएव वहाँ की सुधार-प्रिय प्रजा उनसे एकदम अप्रसन्न हो उठी है।

इसके साथ ही नादिरख़ाँ ने अमानुल्ला के साथ जो घोर विश्वासघात किया है, उसे भी वहाँ की प्रजा भूली नहीं है। वही नादिरख़ाँ जो कभी अमानुल्ला और अफ़ग़ानिस्तान के उद्धार के ऊँचे आदर्शों की घोषणा किया करते थे, अब कहते हैं कि उनमें और अमानुल्ला में आज तक कभी सद्भाव ही नहीं रहा, मित्रता कैसी? इस धूर्तता और नीचता को अफ़ग़ानिस्तान की प्रजा क्षमा नहीं कर सकी, इसीलिये वह बाग़ी हो उठी है। अमानुल्ला के भाई और व्यापारिक एजेंट की गिरफ़्तारी ने इस प्रज्वलित अग्नि में आहुति का काम किया है। अब शिनवारी पठानों ने नादिरख़ाँ के नाश की प्रतिज्ञा कर ली है। वे उन्हें गद्दी से उतारे

रायबहादुर श्रीअवधवासी लाला सीतारामजी बी० ए०

"सुधा" के संबंध में लिखते हैं—

"मुझे इस बात के कहने में संकोच नहीं कि आजकल जितनी मासिक पत्रिकाएँ हिंदी में निकलती हैं, उनमें सुधा सबसे बढ़कर है। लेख सब सुंदर हैं। बाबू धीरेंद्र वर्मा का 'हमारे प्रांत की कुछ समस्याएँ' और 'जल-प्रपात द्वारा बिजली' दोनो लेख ऐसे विद्वानों के लिखे हैं, जिन्हें इन विषयों पर पूरा अधिकार है। 'सोना-पिरोना' आदि स्तंभ जोड़कर यह पत्रिका स्त्रियों के लिये भी अत्यंत उपयोगी बना दी गई है।"

दो मास तक ५॥) वार्षिक में मिलेगी!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विना चैन से नहीं बैठेंगे। इधर सुना है, शाह अमानुल्ला भी अफ़ग़ानिस्तान के लिये रवाना हो गए हैं। उनके वहाँ जा पहुँचते ही विद्रोह की प्रचंड ज्वालाएँ और भी अधिक तेज़ हो उठेंगी। तब इन बनावटी शाह नादिर को अपने विश्वासघात का उचित दंड मिलेगा, और तभी हमारी भविष्यवाणी भी पूरी होगी।

ब्रिटिश सरकार न-मालूम क्यों नादिरख़ाँ की सहायता कर रही है। अमानुल्ला के लिये जो सहायता निषिद्ध थी, वही सहायता नादिरख़ाँ के लिये न-मालूम किस क़ानून से विधेय हो गई है। अंतरराष्ट्रीय चालबाज़ियाँ ही इस परिवर्तन का कारण हैं। स्वार्थी ब्रिटेन अपने अफ़ग़ानिस्तान-संबंधी स्वार्थों की रक्षा के लिये घृणित-से-घृणित कार्य करने पर भी उद्यत हो सकता है, इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

× × ×

११. हिंदी-साहित्य-सम्मेलन और नागरी-प्रचारिणी सभा

कुछ दिन हुए, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के स्वागत-मंत्री महोदय का एक निमंत्रण-पत्र हमें मिला था। उसमें २री, ३री और ४थी मार्च को सम्मेलन का अधिवेशन होने की बात कही गई थी। उसके कुछ ही दिन बाद नागरीप्रचारिणी सभा के कवि-सम्मेलन और कला-भवनोद्घाटन का एक नोटिस और निमंत्रण-पत्र भी हमारे पास आ पहुँचा। इन दोनो अधिवेशनों की तिथियाँ भी प्रायः वही थीं। जब हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की बैठक की तिथियाँ इतने दिन पहले से ही निश्चित हो चुकी थीं, तब सभा का अपने उत्सव के लिये भी उन्हीं तिथियों का चुनाव ठीक नहीं हुआ। कारण, जो लोग दोनों जगह सम्मिलित होना चाहेंगे, वे ऐसा नहीं कर सकेंगे। आख़िर इस तिथि-साम्यता का क्या रहस्य है या अनायास ही ऐसा हो गया है?

× × ×

१२. साहित्य में नीति का स्थान

आदिम काल से लेकर आज तक के संसार के साहित्य को देखते हुए यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि मनुष्य-जाति ने केवल उसी साहित्य का आदर किया है, जिसने उसकी ज्ञान-पिपासा, उसकी सदाचार-नीति तथा उसकी आत्मरक्षा के विषय में कुछ नवीन सामग्री प्रस्तुत की है। मनुष्य-जाति के इतिहास में सदा उसी कला को सर्वश्रेष्ठ समझा गया है, जिसमें धर्म को प्राधान्य दिया गया हो—जिसमें सदाचार तथा मनुष्य-जाति को हित-कामना के सिद्धांतों की भरपूर रक्षा की गई हो। दुराचार-पूर्ण और मानव-जाति का ह्रास करनेवाले साहित्य का संसार आदर नहीं करता। किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि साहित्यिक लेखक धर्म-शास्त्री अथवा स्मृतिकार के समान सदा सदाचार और नीति का ही रोना रोया करे, वह अपने ग्रंथों में धार्मिक उपदेशों के पुल बाँधा करे। कला और नीति के उद्देश्य इतने भिन्न हैं कि साहित्यिक लेखक और नीतिज्ञ का क्षेत्र एक दूसरे से बहुत दूर पड़ जाता है। दोनो का कार्य एक दूसरे से एकदम अलग हो जाता है। धर्म-शास्त्र जीवन के सब पहलुओं का विश्लेषण करता और उनके विषय में शिक्षा तथा आज्ञा देता है। साहित्य जीवन के इन परस्पर भिन्न पहलुओं का समीकरण करके उनको एकरस बनाकर मानव-जीवन को सुंदर, शिव और सत्य बना देता है।

अनादि काल से मनुष्य-जाति सभ्यता की ओर अग्रसर हो रही है। उसका प्रारंभिक जंगलीपन कम होता जा रहा है। इस जंगलीपन के दूर होने से नीति और सदाचार की वृद्धि होती जा रही है। सामाजिक जीवन के लिये जिन नैतिक आवश्यकताओं का अनुभव होता जा रहा है, उनका संरक्षण तथा अनावश्यक नैतिक बंधनों का परित्याग मनुष्य की इस उन्नति का प्रधान गुण है। अतएव नीति और सदाचार के विरुद्ध चलने वाला साहित्य सभ्य-संसार में आदरणीय नहीं हो सकता। मनुष्य-जाति की उन्नति में बाधक होने अथवा उसकी उन्नति की ओर से उदासीन होने के कारण सभ्य-समाज में उसे कोई नहीं अपनाता। वह केवल उस समाज में आदर पाता है, जिसमें आदिम काल का जंगलीपन, नैतिक अधःपतन तथा पापाचार ख़ूब घर कर चुका है।

हिंदी के उपन्यासों की नई शैली नैतिक दृष्टि से हीनता की ओर अग्रसर हो रही है। उसमें समाज की गंदी नालियों का कूड़ा-करकट इतना आ चला है कि वे समाज के लिये आशंकाजनक हो उठी हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वासना-लोलुप कुछ युवकों को छोड़कर सभ्य-समाज इन उपन्यासों का आदर नहीं करता। किंतु फिर भी इन उपन्यासों के लेखकों की आँखें नहीं खुलतीं, उन्हें अपने कर्तव्य का ध्यान नहीं आता, वे साहित्य और नीति के उपर्युक्त संबंध की ओर से एकदम उदासीन होकर अपने पतनोन्मुख मार्ग की ओर ही अग्रसर होते जा रहे हैं। उन्हें मालूम होना चाहिए कि कला और नीति का गहरा संबंध है। कला जीवन से उत्पन्न होती है। जीवन ही उसका भोजन है, और जीवन ही उसकी प्रतिक्रिया।

जब कला और जीवन का इतना गहरा संबंध है, तो मानव-जीवन के प्रति कलाकार का उत्तरदायित्व भी ख़ूब है। उपन्यास-लेखन और मानव-जीवन का संबंध तो और भी घनिष्ठ है। उपन्यास जीवन का प्रतिबिंब होता है। अतएव उपन्यासकार जीवन के तथ्य, सदाचार और नीति का बहिष्कार नहीं कर सकता। जीवन के नैतिक पहलुओं को लेकर चलने में ही उसकी कला की विशेषता है।

× × ×

१३. नमक और हिंदोस्तानी

नमक दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तु है। उसके विना मनुष्य का जीवन बड़ा ही कठिन हो जाता है। भोजन का सारा रस ही नमक के विना नीरस हो जाता है। स्वास्थ्य के लिये भी वह एक आवश्यक वस्तु है। नमक की कमी के कारण ही कोढ़ और खाज-जैसी त्वचा की बीमारियाँ उत्पन्न हुआ करती हैं। मनुष्य और पशुओं की पाचन-शक्ति ठीक रखने के लिये भी नमक एक आवश्यक वस्तु है। प्रत्येक ग़रीब और अमीर को इसकी प्रतिदिन आवश्यकता पड़ती है। इसीलिये हिंदू लोगों में नमक बड़ा ही पवित्र माना गया है। उसका फेकना और अनादर करना एक बहुत बुरी बात समझी जाती है। कहावत तो यह है कि जो कोई नमक फेकता है, उसे अगले जन्म में पलकों से उसे बीनना पड़ता है। जीवन की इतनी आवश्यक वस्तु यदि सस्ती नहीं होती, तो ग़रीबों के लिये बड़ी ही विपत्ति का कारण हो जाती है। बरसों से नमक साधारण जनता के लिये उपयुक्त दामों पर बिकता चला आ रहा था। यद्यपि ये दाम भी महँगे अवश्य थे, किंतु तो भी ग़रीब-से-ग़रीब आदमी भी उन दामों नमक ख़रीद सकता था। इधर दो-तीन बरसों से सरकार ने नमक पर नज़रे-इनायत की है, अतएव उसका दाम भी बराबर बढ़ता ही जा रहा है। अभी हाल में उसका दाम फिर बढ़ा है। नमक-जैसी आवश्यक वस्तु पर प्रति सेर एक पैसा दाम बढ़ जाना बड़ी ही चिंता की बात है। इससे ग़रीबों की असंख्य कठिनाइयाँ और भी बढ़ गई हैं। लेकिन सरकार को इससे क्या? चाहे हिंदोस्तानी मरें या जिएँ, उसे तो अपने होम-मेंबरों और व्यापारियों की बेहद बढ़ी हुई तोंद को सहलाने के सिवा और कोई काम ही नहीं। बड़े-बड़े व्यापारियों की सुविधा के लिये वह आयात-कर कम कर सकती है, मोटरों पर टैक्स माफ़ कर सकती है, तथा मैनचेस्टर और शेफ़ील्ड के सामान को कर-मुक्त कर सकती है, किंतु ग़रीबों के लिये नमक और पोस्टकार्ड सस्ते नहीं कर सकती। दुष्टता और हृदयहीनता की हद हो गई। जिनके पास आराम के सारे सामान मौजूद हों, उनकी सुविधा के लिये ग़रीबों को रोगों और मृत्यु के मुख में ढकेल दिया जाय! और फिर विना किसी अपराध के!! नमक-कर और पोस्टकार्डों के दाम बढ़ाने के विषय में सब हिंदोस्तानी मेंबरों के विरुद्ध होने पर भी वायसराय-जैसे उत्तरदायी राज्य-कर्मचारी ने अपने विशेष अधिकारों का उपयोग करके अनुमति दे दी, इससे बढ़कर सरकार की हृदयहीनता का और कौन-सा प्रमाण मिल सकता है। ऐसे अत्याचार-पूर्ण करों का विरोध और प्रबल विरोध किए विना सरकार का यह अंधापन दूर न होगा। अतएव देश के मान्य नेता महात्माजी ने नमक-कर के विरुद्ध सत्याग्रह उद्घोषित करने का निश्चय किया है। वे नमक के गोदामों पर धावा बोलकर सब नमक उठा लाकर ग़रीबों को बाँट देना चाहते हैं। सचमुच सरकार की दुष्टता के लिये इससे बढ़कर और कोई उत्तर नहीं हो सकता। इस लूट-खसोट से होनेवाले दंगों से सरकार का औंधा दिमाग़ शायद कुछ दुरुस्त हो जायगा। हम समझते हैं कि प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है कि नमक-कर-जैसे सरकार के भीषण अत्याचार का वह प्रबल विरोध करे, और प्रत्येक प्रकार से अपने अपढ़ भाइयों तक महात्माजी की निम्न-लिखित पंक्तियाँ पहुँचा दे—

"भारत-जैसे देश में नमक पर कर लगाने से बढ़-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर और क्या अन्याय हो सकता है ? तमाम देश-नेताओं ने इस कर की सख़्त मुख़ालिफ़त की है। आर्थिक ही नहीं, सामाजिक दृष्टि से भी यह कर नितांत अनिष्ट है, और जनता का सर्वनाश करता है। मि० ब्लंट कहते हैं जो लोग बहुत ही ग़रीब हैं, उन्हें ज़रूरत के मुताबिक़ नमक नहीं मिलता ; और बदनसीबी से दक्षिण हिंदोस्तान के ज़्यादातर लोग बहुत ही ग़रीब हैं। दूसरे, दक्षिण में यह कर और भी खटकता है, क्योंकि क़ुदरती नमक ज़मीन पर रहता है, चंद लोगों के सामने पड़ी होती है फिर भी उन्हें तंगी उठानी पड़ती है। बहुतेरे गाँववालों ने मुझसे कहा था, 'जहाँ नमक पड़ा होता है, उस जगह रात को हम अपने ढोर हाँक ले जाते हैं, और इस तरह चोरी करके ढोरों को नमक चटाते हैं, लेकिन पकड़े जाने पर चौकीदार मवेशी को डब्बों में पूर देता है। और, अभी-अभी यह हुक्म जारी हुआ है कि जहाँ क़ुदरती हालत में ज़मीन पर नमक पाया जाय, वहाँ सिपाही उसे इकट्ठा करके उसका नाश कर दें।' एक और जगह किसी ने मुझसे कहा था कि 'जिन्हें अत्यंत आवश्यक नमक काफ़ी मात्रा में नहीं मिलता, उन लोगों को एक तरह की कोढ़ फूट निकलती है। सरकार लागत क़ीमत से १,२०० फ़ी-सदी से लेकर २,००० फ़ी-सदी तक अधिक क़ीमत पर नमक बेचती है।' कार्य-साधकता की दृष्टि से भी यह कर बुरा है, क्योंकि इसे वसूल करने में आय की २० फ़ी-सदी रक़म ख़र्च हो जाती है। मि० मैकडॉनल्ड कहते हैं—'नमक पर कर लगाने का मतलब धन लूटना और ज़ुल्म करना है। अगर लोग इस बात को समझें, तो अंतोष की मात्रा बढ़ जाय—आग सुलग जाय। मुनाफ़ा कमानेवाले पुराने व्यापारियों की कंपनी भारत के ग़रीबों को लूटती थी, यह उस लूट का बचा हुआ चिह्न-भर है।' अगर लोग राज्य-संबंधी अपनी ज़िम्मेदारी समझें, तो इस कर की आवश्यकता का जो ढोंग किया जाता है, वह एक दिन भी न टिके। मगर सर्व-साधारण इतने अज्ञान और निरक्षर हैं कि वे न तो यह समझते हैं, और न जानते हैं कि नमक पर कर लिया जाता है, और अगर जानते भी हों, तो उनके ज़बान नहीं है। जहाँ राज्य जनता के प्रति ज़िम्मेदार होता है, उसी देश के लिये ये सब बातें हैं। अतएव राजनीतिक दृष्टि से भी यह कर अनुचित है।"

× × ×

१४. राजा महेंद्रप्रताप

काबुल से अभी जो समाचार और पत्र आ रहे हैं उनसे पता चला है कि सुप्रसिद्ध देश-भक्त, भारत के लाल राजा महेंद्रप्रताप अब काबुल आ पहुँचे हैं। उनके वहाँ पहुँचते ही ब्रिटिश-सरकार का आसन डोल उठा होगा, क्योंकि उसके लिये राजा साहब एक भीषण शत्रु हैं। न-मालूम उन्होंने अपने देश के लिये सर्वस्व त्याग कर उसकी स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न करने में कौन-सा पाप कर डाला कि सरकार उन्हें एकदम अपने जान-माल का दुश्मन समझने लगी है। उनके जीवन की प्रत्येक घटना आदर्श-त्याग और देश-प्रेम का सजीव उदाहरण है। अतएव सरकार का यह डर एक दृष्टि से ही पहेली मालूम होता है।

राजा साहब का जन्म सन् १८८६ में मुरसान के राजा श्रीराजाबहादुर घनश्यामसिंह के यहाँ हुआ था। किंतु २½ वर्ष की अवस्था में ही वे हाथरस के राजा हरनारायणसिंह द्वारा गोद ले लिए गए थे। उनके दोनों बड़े भाई राजा दत्तप्रसाद तथा कुँवर बजदेवसिंह मुरसान में ही रहते थे। ९½ वर्ष की अवस्था में राजा साहब के गोद लेनेवाले पिता हरनारायणजी का स्वर्गवास हो गया था, अतएव उनका संरक्षण एवं शिक्षण कोर्ट ऑफ वार्ड्स के निरीक्षण में चला गया। प्रारंभ में उनकी शिक्षा उनके वृंदावनवाले महल में ही एक निजू शिक्षक द्वारा हुई। कुछ दिनों बाद हाई स्कूल में भरती होकर उन्होंने इंट्रेंस की परीक्षा पास की, और फिर अलीगढ़ कॉलेज में उच्च शिक्षा प्राप्त करने चले गए। वहाँ उन्होंने एफ़्०ए० पास किया। १६ वर्ष की अवस्था में ही रियासत के महाराज की छोटी बहन से इनका विवाह हो गया, और यह बी० ए० में पढ़ने लगे।

बाल्य-काल से ही राजा साहब युद्ध और स्वाधीनता के बड़े शौक़ीन थे। नेपोलियन के समान सेना बनाकर विजय-यात्रा का खेल खेलना उन्हें बहुत ही पसंद था। बाल्यकाल में भी उनका यह शौक़ बराबर जारी रहा। एक बार तो अपनी इसी स्वातंत्र्य-प्रियता के कारण वे एक दि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घटना-चक्र में पड़ गए कि जिसने उनके जीवन-स्रोत को एकदम बदल दिया। अपने कॉलेज के किसी अन्याय-युक्त कार्य के विरोध में इन्होंने अपने सहपाठियों के साथ हड़ताल कर दी थी, अतएव कॉलेज के अधिकारियों की इन पर कृपादृष्टि हुई थी। उनकी दासत्व-पूर्ण मनोवृत्ति तथा दासत्वमय न्याय-पद्धति को देखकर राजा साहब ने सदा के लिये कॉलेज त्याग दिया, और घर पर आकर अध्ययन करने लगे।

१८ वर्ष की अवस्था में राजा साहब ने अपनी रानी-सहित शिक्षा-संस्थाओं का अध्ययन करने के उद्देश्य से योरप की यात्रा की। वहाँ के शिक्षणालयों में शिल्प तथा उद्योग-धंधों की शिक्षा देखकर उन्हें भी इस प्रकार के शिक्षा-केंद्रों के स्थापन की धुन सवार हुई। भारतवर्ष के कारीगरों की अशिक्षा तथा यहाँ के शिल्प की अवनति देखकर उनके मन में आया कि वह एक ऐसा केंद्र स्थापित करें, जहाँ साहित्यिक और औद्योगिक, दोनों शिक्षाओं का साथ-साथ प्रबंध हो।

योरप से लौटने पर, सन् १९०७ में, इनकी रियासत कोर्ट ऑफ़् वार्ड्स से छूटकर इन्हें मिल गई। रियासत मिलते ही अपने उद्देश्य पूरे करने की इन्हें धुन सवार हुई। सन् १९०९ के मई मास में उन्होंने अपने इष्ट-मित्रों, राजा-महाराजाओं तथा नेताओं को अपने यहाँ पुत्रोत्पत्ति के निमंत्रण-पत्र भेज दिए। २४ मई को नामकरण-संस्कार के दिन सब आमंत्रित सज्जन वृंदावन आ पहुँचे। पं० मदनमोहन मालवीयजी की अध्यक्षता में सभा हुई। वहाँ राजा साहब ने कहा—"मैंने एक निश्शुल्क राष्ट्रीय विद्यालय खोला है। वही मेरा पुत्र है। परंतु अभी वह बेजान है, आप सब लोग मिलकर उसमें जान डालें, और उसका नामकरण करें। अपनी सब रियासत इस विद्यालय को अर्पण करना मैंने निश्चित कर लिया है।" इत्यादि। सभी लोग राजा साहब के इस कार्य पर आश्चर्य-चकित रह गए! सभी ने उन्हें उनको इस सहसा-कारिता से रोकना चाहा। किंतु दृढ़-प्रतिज्ञ राजा साहब ने जो निश्चय कर लिया था, उसे न त्यागा। माताओं और अन्य मित्रों के कहने-सुनने से उन्होंने आधी जायदाद अपने लिये रखकर बाक़ी आधी प्रेम-महाविद्यालय के नाम रजिस्ट्री करा दी।

इसके अतिरिक्त गुरुकुल वृंदावन के लिये भी राजा साहब ने यमुना-तटवर्ती अपना विशाल बाग़ और जायदाद दान कर दी। इस प्रकार दो-दो उपयोगी संस्थाओं की स्थापना के कारण होकर राजा साहब ने अनंत यश कमाया, और राष्ट्रीय शिक्षा-विस्तार के अपने उद्देश्य की पूर्ति की।

सन् १९१२ में राजा साहब फिर योरप गए, और शीघ्र ही लौट आए। वहाँ से आकर राजा साहब ने किसानों के उद्धार के लिये अनेक उपयोगी कार्य किए। अनेक लेख लिखकर तथा स्वयं किसानों से मिलकर उन्होंने उनकी उन्नति के लिये आंदोलन प्रारंभ किया। स्वयं अपने प्रत्येक गाँव में उन्होंने पाठशालाएँ खुलवाईं, और उनके ख़र्च के लिये अलग २० हज़ार रुपए प्रेम-महाविद्यालय के ट्रस्टियों के सुपुर्द कर दिए। अछूतों के लिये भी राजा साहब के हृदय में बड़ा स्थान था। वे उनके साथ स्वयं भोजन करते और उनके लिये लेख लिखते थे। उनके साथ वे सदा समानता का बर्ताव करते थे। वे सच्चे साम्यवादी थे। वे कहते थे कि "भूमि और धन मनुष्य-जाति का साझे का माल रहेगा।"

अपने देश को स्वतंत्र करने की इच्छा राजा साहब के मन में बहुत दिनों से थी, सन् १९१४ के महा-

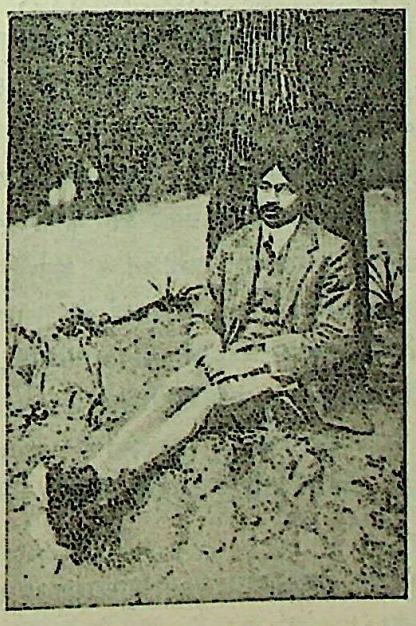

राजा महेंद्रप्रताप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

युद्ध में उस इच्छा की पूर्ति का आभास पाकर वे फ़ौरन् योरप के लिये रवाना हो गए। उन्होंने पासपोर्ट तक नहीं लिया, और न अपने परिवार की ही कोई चिंता की। राजा साहब का कहना है कि "१९१४ में मेरा विचार हुआ कि युद्ध में जर्मनी की सहायता से शायद मैं अपने देश भारत को अँगरेज़ी पंजे से स्वतंत्र कर सकूँ, और इसी भाव से महायुद्ध में गया।" अपने देश की स्वतंत्रता के पीछे इस प्रकार पागल होने के कारण ही राजा साहब आज देश से निर्वासित हैं। आपका अब कहीं घर नहीं है। देश-देशांतर में घूमकर आप अब इँगलैंड के साम्राज्यवाद के विरुद्ध आंदोलन करते रहते हैं। आप मनुष्य-मात्र में प्रेम का संबंध कराना चाहते हैं।

अपार कष्टों और आर्थिक संकटों का न-मालूम किस प्रकार सामना करते हुए राजा साहब अब भी अपनी धुन में लगे हुए हैं। देश को जब तक स्वतंत्र नहीं कर लेंगे, तब तक चैन से न बैठने का इन महान् देश-भक्त का प्रण है। दोनो माताओं और प्रिय सहधर्मिणी की मृत्यु के समाचार भी इन महाव्रती को अपने उद्देश्य से नहीं डिगा सके हैं। परमात्मा देश के लाल राजा साहब को चिरजीवी और सफल-मनोरथ करें, यही हमारी प्रार्थना है।

× × ×

१५. निखिल भारतवर्षीय वैद्य-सम्मेलन, कराँची

गत जनवरी मास में निखिल भारतवर्षीय वैद्य-सम्मेलन का २०वाँ अधिवेशन पटियाला के राजवैद्य प० रामप्रसाद शर्मा वैद्यरत्न के सभापतित्व में सकुशल और सानंद संपन्न हुआ। देश-भर के प्रसिद्ध वैद्यों की उपस्थिति से सम्मेलन सुशोभित था। सम्मेलन के अंतर्गत अनेक उपयोगिनी परिषदें तथा सभाएँ हुई थीं। लगभग २७ आयुर्वेद की उन्नति करनेवाले प्रस्ताव पास हुए, जिनके द्वारा देश की सरकार तथा बोर्डों से प्रार्थना की गई थी कि वे वैद्यक की उन्नति में सहायता दें। आगामी वर्ष के लिये निम्न-लिखित पदाधिकारियों का चुनाव हुआ—

सभापति—श्रीवैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्य, पटियाला।

प्रधान मंत्री—पं० शिवनारायणजी मिश्र भिषक्, कानपुर।

पत्रिका-संपादक—पं० शिवशर्माजी आयुर्वेदाचार्य इत्यादि।

अपने परमप्रिय मित्र श्रीपं० शिवनारायणजी को उनकी इस पद-प्राप्ति के लिये बधाई देते हैं। आशा है उनके द्वारा वैद्य-सम्मेलन की और भी अधिक उन्नति होगी।

१६. प्रेम का नशा

हाफ़िज़ फ़ारसी के बड़े प्रसिद्ध कवि हुए हैं। उन्होंने मानव-जीवन की समस्याओं का बड़ा ही सुंदर अध्ययन किया है। मानवीय हृदय की हर्ष, शोक, चिंता, सुख, दुःख, प्रेम तथा स्नेह की विविध दशाओं पर उन्होंने जो कविता की है, वह इतनी सच्ची और अनुभव-पूर्ण है कि उसे पढ़कर हाफ़िज़ की महती प्रतिभा पर आश्चर्य किए बिना नहीं रहा जा सकता। प्रेम के विषय में तो उनके जितने शेर हैं, वे प्रायः सब-के-सब लोगों को ज़िह्वाग्र ही हैं। उन शेरों में कितना रस और कितना सत्य है, यह उनकी इसी जन-प्रियता से पता लग जाता है। इसी प्रकार के एक नीचे-लिखे लोक-विश्रुत शेर को लेकर चित्रकार ने एक चित्र की रचना की है, जो इसी अंक में प्रकाशित है—

बादर-पियाला अज़्मे-रुखे-यार दीदएम।
ऐ बेख़बर, ज़े लज़्ज़ते शुर् बे मुदामे मा।

(अर्थात् प्याले में हमें अपने प्रियतम के मुखारविंद के जिस प्रतिबिंब के दर्शन होते हैं, वह इतना मादक है कि हम सदैव उसके मद में मस्त रहते हैं। इस मस्ती का ऐ अनभिज्ञ! तुझे अनुमान भी नहीं हो सकता।)

इसके द्वारा उन्होंने हाफ़िज़ द्वारा वर्णित प्रेम की मादकता तथा उसके कारण का निदर्शन किया है। प्रेयसी के मुखारविंद का अनवरत ध्यान करते-करते प्रेमी की मानसिक दशा इतनी भावुक हो गई है कि वह अपने प्याले में भी अपने मनोराज्य की अधिष्ठात्री प्रेमाकृति का प्रतिबिंब देखता है। संसार के नश्वर मद्य से भी अधिक मादक 'प्रेम कान शा' उसे इस सांसारिक मद्य से दूर प्रेम-राज्य के सुंदरतम प्रदेश में खींच ले जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेख-सूची

		पृष्ठ
१.	स्मृति (कविता)—[लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी	२४१
२.	'मालिक' से (कविता)—[लेखक, श्री० वीरात्मा	२४१
३.	ब्राह्मण-सत्ता का इतिहास—[लेखक, श्रीयुत रमेशनंदन सहाय एम्० ए० ...	२५०
४.	फूलवालों की सैल (कहानी)—[लेखक, आचार्य श्रीचतुरसेन शास्त्री	२५८
५.	भारत और जापान—[लेखक, पं० लक्ष्मी-नारायण-दीनदयालु अवस्थी... ...	२६२
६.	गीत (कविता)—[लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"	२६५
७.	मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह—[लेखक, साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ	२६६
८.	राष्ट्र-भाषा और हिंदी—[लेखक, श्रीयुत कामताप्रसाद गुरु	२८२
९.	हृदयोद्गार—[लेखिका, कुमारी शकुंतला गुप्ता "हिंदी-प्रभाकर"	२८६

रजिस्टर्ड ! भारत-सरकार से !! रजिस्टर्ड !!!

हैदराबाद-प्रदर्शिनी से उत्तमता के लिये

रजत-पदक से सम्मानित

एक महात्मा द्वारा प्राप्त

सूर्यमार्क

ट्रेड मार्क

जन्मघुटी

बच्चों के हर प्रकार के रोगों में लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा कीजिए और अपने बच्चों को रोगों से बचाइए।

क़ीमत बड़ी शीशी ॥)

" मँझली शीशी ।-)

" छोटी शीशी =)

मुरारीलाल ऐंड कं० संभल (यू० पी०)

अपूर्व अवसर! जल्दी कीजिए!

वेदांत-पुस्तक

ब्रह्मनिष्ठ श्रीरामगुरु-कृत

पंचीकरण

तथा

ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीजयकृष्ण-कृत गुजराती टीका जो स्वामी श्रीयुगलानंद द्वारा हिंदी-भाषा में अनुवादित है। मूल्य २)

न्यायसारः श्रीभासर्वज्ञप्रणीत

An ancient work on logic by an eminent scholar of the 9th century A. D. Edited with notes by VISHVANATH P. VAIDYA. B. A., J. P., M. R. A S. Bar-at-Law. Price Rs. 2/4/- 2nd Edition.

डाक-खर्च अलग—व्यापारी को उत्तम लाभ।

मिलने का पता—मैनेजर वेदधर्मसभा, ३१, फ़ोरबेस स्ट्रीट, बंबई।

सूज़ाक की हुक्मी दवा

मेह-मर्दन चूर्ण

पेशाब में जलन होना, पेशाब रुक-रुककर आना, पेशाब में रसी का गिरना वग़ैरा प्रमेह-संबंधी तमाम दर्द नाबूद करके पेशाब साफ़ लाता है; फ़ी डिब्बा रु० १)

अंडवृद्धहर चूर्ण

पोता बढ़ जाने की शर्तिया दवा। फ़ी डिब्बा ३)

राजवैद्य नारायणजी केशवजी

हेड ऑफ़िस—जामनगर (काठियावाड़)

लखनऊ एजेंट—निगम मेडिकल हॉल, नाला फ़तेगंज

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र

जगत्-विख्यात

Regis-tered ☞ 'कौनटैक्स' ☜ रजि-स्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता, जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं वे 'कौनटैक्स' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १॥) रु० डाक-खर्च ।=)

पता—आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

१०. रहस्य-पूर्ण प्राच्य—[लेखक, पं० देवीदत्त शुक्ल २८८

११. वर्ण-व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप—[लेखक, श्रीयुत संतराम बी० ए० ... २९२

१२. गजेंद्र ! (कविता)—[लेखक, पं० रमाशंकर मिश्र "श्रीपति" २९५

१३. रूस में सहयोग-समिति-आंदोलन—[लेखक, पं० देवव्रत शास्त्री २९६

१४. कर्तव्य और प्रायश्चित्त (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत नंदलाल वर्मा ... ३००

१५. "टूटो वीणा" (कविता)—[लेखिका, कुमारी रामेश्वरीदेवी गोयल ... ३०७

१६. सम्मेलन की संवत् १९८६ की परीक्षाएँ—[लेखक, पं० दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ३०८

१७. गीत (कविता)—[लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" ३१२

१८. संगीत-साधना—[स्वरकार तथा शब्दकार, रायसाहब डॉक्टर भोलादत्त काला, गढ़वाल ३१३

इंजन मार्का की असली रेलवे
"रेग्यूलेटर वाच"

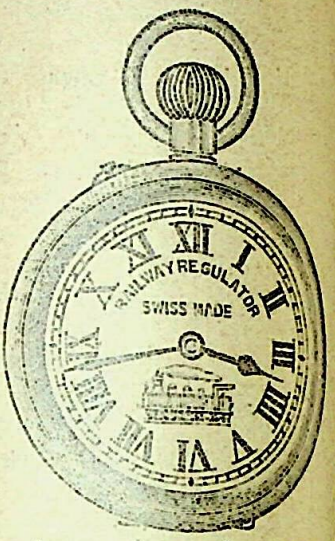

गारंटी आठ साल।

रेलवे के मुलाज़िम और जेंटिलमैन इसलिये पसंद करते हैं कि यह बहुत मज़बूत, पायदार, ठीक वक़्त देनेवाली और का नाम न लेनेवाली घड़ी है। घड़ी, ज़ंजीर-समेत ३।=) तीन रुपया छः आना। वाच एजेंसी, लुधियाना, पंजाब।

Western Watch A
Ludhiana (Pu

सर्व रोग को दूर करनेवाला
(भारत-सरकार से रजिस्टर्ड)

जीवनधारा

र० ट्रेडमार्क "जेनस" नं० ३०२

हर समय अपने पास रखिए। यह पेट-संबंधी विकार, हैज़ा या दाढ़ का दर्द, सर्दी, सूजन, घाव, कमज़ोरी, प्रदर, प्रमेह, हर तरह का बुख़ार, संधिवात, सिरदर्द बवासीर, ज़हरी डंक, हाथ, पाँव और बदन का दुखना आदि बहुत-से दर्द को शर्तिया आराम करता है। दाम बड़ी शीशी १॥) रु०, आधी शीशी १) रु०, छोटी शीशी ।।) रु०, महसूल अलग। सूचीपत्र मुफ़्त मिलेगा। देखिए, यह "जीवनधारा" सब जगह मिलता है।

पता—जे० एन्० सेठना, मु० पो० नड़ियाद [गुजरात]

"श्वेतकुष्ठ एक दिन में -
— — — जड़ से आरा

नहीं तो कुल क़ीमत वापस। विश्वा
तो प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लें। दाम फ़ी

"एस्० के० चिकित्सक कार्या
नं० २१, दरभंगा (बिहा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

९. कुसुम-कुंज—[लेखकगण, श्रीयुत लज्जाराम मेहता, श्रादामोदरसहायसिंह पुत्र-टी० "कवि-किंकर", श्रीयुत शंकरराव जोशी और श्रीयुत शिवशेखर द्विवेदी ३१५

१०. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखक, श्रीयुत नाथूराम शुक्ल ३२४

११. ललित कला—[लेखक, श्रीयुतेंद्र वर्मा बी० ए० ... ... ३२८

१२. समाज-सुधार—[लेखक, पं० श्यामलाल उपाध्याय ३३१

१३. व्यायाम—[लेखक, श्रीयुत गणेशदत्त शर्मा गौड़ 'इंद्र' ३३६

१४. पाक-शास्त्र—[लेखिका, श्रीमती कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव ३३८

१५. शिशु-पालन—[लेखक, श्रीयुत अखिलेश गुप्त ३३९

१६. गृह-चिकित्सा—[लेखिका, श्रीमती कृष्णवती श्रीवास्तव ३४२

श्वेतकुष्ठ की फ़ौरी जड़ी

प्रिय पाठकगण, एक रोज़ में सिर्फ़ तीन ही बार के लेप से सफ़ेद दाग़ एकदम आराम न हो, तो दूना मूल्य वापस। जो चाहें, एक आने का टिकट भेजकर प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। मूल्य ३) रु०। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

वैद्यवर पंडित कन्हैया मिश्र
मैनेजर बिहार-औषधालय
नंबर १४, मधुबनी, ज़ि० दरभंगा

सफ़ेद बाल जड़ से काला

यदि आपके थोड़े गिने बाल पके हैं, तो "सोरम" तेल मँगावें। इससे बाल जड़ से काला पैदा होगा। दाम ३) रु०। यदि आपका बाल कुल पक गया है, तो "काला चूर्ण" मँगावें। इससे बालों का पकना रुककर पका बाल जड़ से काला पैदा होगा और सदा काला रहेगा। दाम १२) विश्वास न हो, तो शर्तें लिखा लें।

काले से गोरा

स्याही को दूरकर चेहरे को सुंदर और चमकदार बनाने के लिये यह अनमोल दवा है। इससे मुहाँसे, फोड़े, काला दाग़, चेचक के दाग़, स्याह व लाल झुर्रियाँ सभी दूर होकर चेहरा कमल-केसर के समान हो जाता है। मूल्य ५) रु०।

सफ़ेद दाग़ की जंगी दवा

मैं दावे के साथ कहता हूँ कि मेरी जड़ी-बूटी की दवा के केवल थोड़े दिन इस्तेमाल करने से बिना फोड़े के घाव के दाग़ उड़कर असल चमड़े के समान हो जाते हैं। एक बार अवश्य परीक्षा करें। दाम ५) रुपए।

पता—जड़ी-बूटी-मेडिकल-हाल
कनसी सिमरी, दरभंगा नं० १५५

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके एक ही रोज़ के तीन बार के लेप से सफ़ेद दाग़ जड़ से न छूटे, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। दाम ३) रु०।

इस जड़ी के प्रशंसापत्रों में से मैं एक को ज्यों-का-त्यों उद्धृत करता हूँ—"वैद्यवर पं० महावीरजी, आपको कोटिशः धन्यवाद। आपकी जड़ी ने जादू का-सा काम किया। रोग काफ़ूर की भाँति उड़ गया। आप-ऐसे महानुभावों को ईश्वर चिरंजीवी करें तथा आपके औषधालय की दिन प्रति दिन उन्नति होती रहे। कृपया खाने की भी दवा शीघ्र ही वी० पी० द्वारा भेजिएगा। आपका रामावतार अवस्थी, कबीरपुर, पो० हरगाम, ज़ि० सीतापुर।"

पता—वैद्यराज पं० महावीर पाठक
नं० ३२ दरभंगा (बिहार)

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२७. पुस्तक-परीक्षा—[लेखकगण, श्रीसुधींद्र वर्मा बी० ए०, पं० आद्यादत्त ठाकुर एम्० ए० और श्रीयुत "निराला" ३४४
२८. साहित्य-सूची... ... ... ३५०
२९. संपादकीय ३५१

इंडोबाम बालामृत

का फ़ैंसी १९३० ई० का नया कैलेंडर

मुफ़्त

दो आने का टिकट आने पर
यशोदा-कृष्ण
कैलेंडर १९३० व नमूना मुफ़्त

इन्डोबाम
सर्व शारीरिक
दर्दों पर अप्रतिम
मलहम
मुल्य प्रति डबा. ।।
मिलनेका पत्ता:-
कर्णिक ब्रदर्स
बम्बई नं. ४

सब जगह एजेंटों की ज़रूरत है !

इंडोबाम
सर्व शारीरिक दर्दों पर अप्रतिम मलहम ।

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वे...

लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों ... सोना, चाँदी, बेवाली, कस्तूरी, मूँ... से बनाई गई हैं। इसकी अलग... या २ से ७ तक पान में खाने से ... बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार ... होता है। जल-वायु और भो... परिवर्तन का असर बराबर हो... रक्त साफ़ होता है तथा उसकी ... अबाध्य होती है। खाँसी, सर्दी, ... पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और ... का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार ... प्लेग को नाश करती हैं। जिस ... में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान ... ३-४ गोलियाँ लीजिए। बच्चों के रोग में ... समान असर दिखाएँगी। दाम २२० गोलियों ... बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का ... २५ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित ५≡)

मिलने का पता—

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर।

पी० के० सेन ऐंड संस का

ड्रग और केमिकल वर्क्स,

हेड ऑफ़िस—चिटागांग।
शाखा—८६ दशाश्वमेध, बनारस।

पी० के० सेन का "चालमूगरा मलहम" ... प्रकार के चर्मरोग की रामबाण औषधि। ... आराम होता है। बड़ी डिब्बी ॥=), छोटी ।=)

पी० के० सेन का "चालमूगरा साबुन"—... मिश्रित ख़ुशबूदार, सबसे अच्छा साबुन। रोज़ाना ... माल से चर्मरोग नहीं होता। मूल्य ॥)

पी० के० सेन का "चालमूगरा तैल"—... कच्चा चालमूगरा तैल। कोढ़ की सबसे अच्छी ... दाम १।)

पी० के० सेन का "फ़ीव्हरेक्स"—हर ... बुख़ार की लाजवाब दवा। मूल्य १) शीशी।

पी० के० सेन की "शक्ति पिल्स"—धातु ... नामर्दी दूर करता है। मूल्य १॥) शीशी।

पी० के० सेन का "शोराव"—सबसे ... ख़ुशबूदार तैल। मूल्य ।॥=)

To be had of :—
P. K. SEN & SONS.,
MERCHANTS
Chittag...

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. मारवाड़-नरेश महाराज अजितसिंह—[श्री पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ की कृपा से प्राप्त २४१
२. पूजा—[चित्रकार, श्रीमाहेश्वरी प्रसाद ... २८६
३. महात्मा गांधी—[सत्याग्रह-संग्राम के सैनिक ३२८
४. श्रीगणेशशंकर विद्यार्थी—[गोरखपुर-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति... ... ३२८
५. श्रीरुडोल्फ़ वैलंटिनो ३२६
६. श्रीमती पोला नेग्री ३२६

(ख) सादे

१. श्रीयुत कामताप्रसाद गुरु २८२
२. डॉक्टर केशवदेवजी शास्त्री ३५६
३. श्रीसत्यकेतु विद्यालंकार ३५७
४. राजाबहादुर श्रीराजा बलेंद्रनारायण राय पडरौना-नरेश ३६६

RAM LAL

DENTIST

27, AMINABAD PARK, LUCKNOW

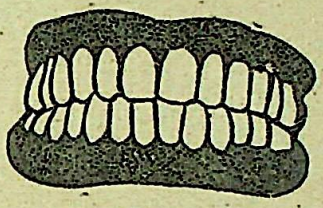

All Sorts of Dental Works

ARE EXECUTED PROMPTLY

—AT—

Reasonable Rates

हिंदुस्तानी एकेडेमी संयुक्त-प्रांत द्वारा प्रकाशित व्याख्यानमाला

(१) मध्यकालीन भारत की सामाजिक अवस्था

व्याख्यानदाता—अल्लामा अब्दुल्लाह यूसुफ़अली एम्० ए०, एल्-एल्० एम्०, सी० बी० ई०। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १०० पृष्ठों का मूल्य उर्दू अथवा हिंदी केवल १।)

(२) मध्यकालीन भारतीय संस्कृत

व्याख्यानदाता—रायबहादुर महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद ओझा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के २३० पृष्ठों और २४ हाफ़टोन चित्रों-सहित का मूल्य केवल ३)

(३) कविरहस्य

व्याख्यानदाता—महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगास्वरूप झा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १२० पृष्ठों का मूल्य केवल १।)

मिलने का पता—जनरल सेक्रेटरी हिंदुस्तानी, एकेडेमी यू० पी०, इलाहाबाद।

साग, तरकारी, फूल आदि के उत्तम और परीक्षित बीज सदा मिलते हैं। सचित्र सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए। पत्र-व्यवहार अँगरेज़ी में करें।

पता—पेस्टनजी पो० पोचा ऐंड सन, पोस्टबक्स ५५, पूना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

औरतों-बच्चों के लिये बढ़िया पुस्तकें

हम दावे के साथ कहते हैं कि हिंदी-संसार में इतनी बढ़िया, सुंदर और सस्ती पुस्तकें अभी तक प्रकाशित नहीं हुई हैं।

स्त्रियों के लिये

पत्रांजलि	...	।=)	महिला-मोद	...	...
भारत की विदुषी नारियाँ	...	॥)	देवी सती	...	...
नारी-उपदेश	...	॥)	वनिता-विलास	...	...
कमला-कुसुम	...	॥।)	गुप्त संदेश	...	...
देवी द्रौपदी	...	।=)	भारतीय स्त्रियाँ	...	...
लक्ष्मी	...	॥)	देवी पार्वती	...	...
देवी सीता	...	१॥)	नल-दमयंती	...	...
जच्चा	...	॥।)	सती सावित्री	...	...

लड़के-लड़कियों के लिये

युधिष्ठिर	...	॥।)	भगवान् गौतम बुद्ध	...	...
दिलावर सियार	...	॥)	मर्यादाराम की कहानियाँ	...	
सुघड़ चमेली	...	=)	कीड़े-मकोड़े	...	...
भगिनी-भूषण	...	=)	भारत के सपूत	...	...
गधे की कहानी	...	॥=)	खिलवाड़	...	...
लड़कियों के खेल	...	।=)	इतिहास की कहानियाँ	...	
खेल-पचीसी	...	।)	बाल-विलास	...	...
बालनीति कथा (दो भाग) प्रत्येक	...	१)	परोपकारी हातिम	...	...
विचित्र वीर	...	॥।)	नटखट पाँड़े	...	...
हँसी खेल	...	॥=)	सुनहरी नदी का राजा	...	...

हिंदी की सभी पुस्तकें मँगाने का एकमात्र पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़-नरेश महाराज अजितसिंह

[पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ की कृपा से प्राप्त]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष ३ खंड २	चैत्र, ३०७ तुलसी-संवत् (.१९८७ वि०)— एप्रिल, १९३०	संख्या ३ पूर्ण संख्या ३३

स्मृति

[पं० रामनरेश त्रिपाठी]

सुंदर सदन सुखदायक वही है, जहाँ
तरु के तने तू प्रिये ! करती निवास है ;
नंदन वहीं है, अमरावती वहीं है, वहीं
खेलता बसंत, जहाँ तेरा मंद हास है।
तेरी याद ही में मेरे प्राण जी रहे हैं, मेरे
जीवन का ध्येय तेरे प्रेम का विकास है ;
तेरी मंजु मूर्ति मेरे मन में बसी है, मन
रात-दिन रहता उसी के आस-पास है ।

'मालिक' से—

[श्रीवीरात्मा]

मेरी पाप-पुंज-गरिमा पर तेरी मति है हारी !
बनी निकटतम दूरी फिर भी ; निर्णय की बलिहारी !!
मिट्टी का पुतला सोने के दाम बिका जाता है !
दुनिया की दर पर तू गाहक ! आज ठगा जाता है !!
बिखेरो मत यों करुणा-फूल,
पँखड़ियाँ कितनी हैं अनमोल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मण-सत्ता का इतिहास

[रमेशनंदनसहाय एम्० ए०]

वर्ण-विभेद के उत्पत्ति-काल में चाहे जितना मतभेद हो, किंतु इतना तो सर्व-सम्मत है कि यह व्यवस्था समाज में सभ्यता के विकास के साथ क्रमशः की गई थी। कुछ लोगों का—ख़ासकर पश्चिमी विद्वानों का—यह मत है कि वैदिक काल में इस वर्ण-विभेद का नाम-निशान नहीं था। किंतु और लोग कहते हैं कि आर्यों के भारत में आने के पहले ही समाज कर्मानुसार विभाजित हो चला था, और जाति-बंधन का बीज उत्पन्न हो गया था। अतः वैदिक काल में भी इसका सूत्रपात पाया जाता है। यद्यपि ये बंधन अभेद्य नहीं थे, किंतु इतना तो मानना ही पड़ेगा कि कोई समय ऐसा भी था, जब सारी आर्य-जाति एक थी—सबका रहन-सहन, आचार-व्यवहार समान था—और सभी अपने को एक ही समाज का मानते थे। वायु-पुराण में कहा है कि कृतयुग में कोई जाति-पाँति नहीं थी। पीछे ब्रह्मा ने मनुष्यों को, उनके व्यवसायों के अनुसार, भिन्न-भिन्न जातियों में विभाजित कर दिया। रामायण के उत्तरकांड (७४ अध्याय) में लिखा है कि कृतयुग में जप-योग करनेवाले केवल ब्राह्मण थे। पीछे त्रेता में क्षत्रियों की उत्पत्ति हुई, और समाज ने क्रमशः आधुनिक रूप धारण किया।

वर्ण-विभेद का रहस्य

इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरातन समय में केवल एक जाति थी—उसे चाहे जिस नाम से पुकारा जाय। और, उसका मुख्य कर्म पूजा-पाठ करना तथा आचार-विचार के साथ रहना था। किंतु सभ्यता के विकास तथा समाज के फैलाव के साथ कर्मक्षेत्र का भी विस्तार होने लगा। आर्य लोग उर्वरा भूमि की खोज में अपना आदिम निवास परित्याग कर चुके थे, तथा आगे बढ़ते जाते थे। अतः उन्हें बड़े-बड़े शत्रुओं का सामना करना पड़ा, नव-विजित प्रदेशों की व्यवस्था करनी पड़ी, साथ ही विदेशीय जल-वायु तथा परिस्थितियों के अनुरूप पारिवारिक प्रबंध भी करना पड़ा। क्रमशः बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित हो गए, तथा एक ही आदमी के लिये सब कामों का प्रबंध करना असंभव हो गया। शत्रुओं से लड़ना तथा उन्हें वश में रखना तो अनिवार्य ही था, किंतु आर्य लोग अपने धर्म में पक्के थे—धार्मिक कर्मों में बाधा सह नहीं सकते थे। अतः मेरी समझ में लड़ने-भिड़ने में दत्तचित्त न रहनेवाले, मार-काट से घृणा करनेवाले, शांति-प्रिय मनुष्यों को अधिकांश पूजा-पाठ आदि का भार सौंप, सब कामों से निश्चिंत हो, शक्तिमान् वीर साहसी पुरुष राजनीतिक तथा सामरिक क्षेत्र में अवतीर्ण हुए।

इसीसे प्राचीन काल में केवल दो ही वर्णों का नाम पाई जाती है *। महाभारत-मीमांसा के भी पाँचवें अध्याय में लिखा है—"पहले उनमें दो वर्ण उत्पन्न हुए होंगे—ब्राह्मण और क्षत्रिय। आर्यों के देवताओं की स्तुति करना और देवताओं का यज्ञ करना ब्राह्मणों का काम था तथा युद्ध करना क्षत्रियों का।"

प्राचीन वर्ण-व्यवस्था में कट्टरता का अभाव

किंतु जो मैं ऊपर कह आया हूँ, वही सम्मति-सिद्ध जान होता है। जो जिस काम के लिये उपयुक्त था, उसने वही काम ले लिया। मेरी समझ में इसके विधि कर्ताओं ने कभी न सोचा होगा कि हम लोग सदा के लिये विभाजित हो रहे हैं, और दिन दिन हम लोगों की विभिन्नता बढ़ती जायगी। वह एक पारिवारिक प्रबंध था—सभी कामों को सुसम्पन्न रूप से निपटाने का एक उपाय था। उनके प्रबंधकर्ता यह पारस्परिक सहयोग का एक नमूना था, न कि एवं वैमनस्य का बीज। जिसे जिस काम के करने क्षमता होती थी, वह वही काम उठा लेता था।

महाभारत-मीमांसा के उसी प्रकरण में आगे चल

* R. C. Dutt's 'Ancient India' Book Chapter V.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिखा है—"ये जातियाँ उस समय अन्य बंधनों से जकड़ी न गई थीं, अर्थात् न तो उनके आचार-विचार विभिन्न थे, और न उनमें बेटी-व्यवहार या पेशे की कोई सख्त रुकावट थी। क्षत्रियों और ब्राह्मणों की बेटियाँ परस्पर ब्याही जाती थीं, और चंद्रवंशीय क्षत्रियों में से कुछ लोग अपना पेशा छोड़ ब्राह्मण हो गए थे। ..... प्रतीप का बड़ा लड़का क्षत्रिय-व्यवसाय छोड़कर वन में तपश्चर्या करने लगा। उसने एक सूत्र भी बनाया है। मतिनार के वंश में कण्व उत्पन्न हुआ था। वह ब्राह्मण हो गया, और उसके सभी वंशज ब्राह्मण ही हुए। ये कण्व लोग ऋग्वेद के कई सूक्तों के कर्ता हैं।"

फिर ऋग्वेद के नवें मंडल में कहे गए निम्न-लिखित स्तोत्र से भी यही बात प्रमाणित होती है—"देखो, मैं सूक्तकार हूँ, मेरे पिता वैद्य थे, मेरी मा चक्की पीसती है। जैसे गाएँ भोजन के लिये गोचर-भूमि की विभिन्न दिशाओं में विचरण करती हैं, तथैव हे सोमदेव! हम सभी विविध व्यवसायों में रहकर तुम्हारी पूजा करते हैं।"*

ऋग्वेद में वर्णित वर्णोत्पत्ति की कथा

ऋग्वेद के उत्तर-कालीन स्तोत्रों में वर्णोत्पत्ति की एक बड़ी मनोहर कथा कही गई है। बाह्य दृष्टि से उपर्युक्त बातें उस कहानी के विरुद्ध प्रतीत होंगी, किंतु तनिक भी सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन करने पर उसका तथ्य साफ़ मालूम हो जायगा। मेरी समझ में वर्णों का ब्रह्मा के भिन्न अवयवों से उत्पन्न होना ही उपर्युक्त बातों को दृढ़ रूप से निर्धारित करता है। पाठकों को ऋग्वैदिक कथा को मामूली क़िस्सा नहीं समझना चाहिए। मेरी समझ में तो वह एक रूपक है, और बड़ी सुंदरता तथा सरलता के साथ वर्णोत्पत्ति का गुप्त भेद प्रकाशित करता है। सभी वर्ण एक ही पुरुष के भिन्न अवयवों से उत्पन्न हुए हैं, यानी एक ही समाज के भिन्न अंग हैं। जैसे मनुष्य भिन्न अवयवों द्वारा अपना सब काम कर लेता है, वैसे ही समाज ने भी भिन्न जातियों को भिन्न-भिन्न काम करने का उत्तरदायित्व सौंपा। किंतु फिर भी सभी एक ही समाज के अंग बने रहे। विभिन्नता नाम-मात्र की थी। मनुष्य का मुख उसके शरीर से पृथक् नहीं कहा जा सकता। एक गृहस्थ के घर की कोई स्त्री तो रसोई बनाती है, कोई घर की सफ़ाई की देख-रेख करती है, और कोई अन्नादि वस्तुओं को सँभालती है। पर इससे यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि उनके पद-प्रतिष्ठा में कोई अंतर है। अतएव प्राचीन काल में वर्णोत्पत्ति हो जाने पर भी पारस्परिक वैमनस्य तथा विरोध का बीजारोपण नहीं हुआ था।

ब्राह्मणों की महत्ता

किंतु भारतवर्ष प्राचीन काल से ही धर्म-प्रधान देश है। धर्म-संबंधी सभी कर्मों को यहाँ के लोग प्रधानता देते आए हैं, अतः कालांतर में ब्राह्मण लोग, जिन्हें देवतों की स्तुति करने का काम सौंपा गया था, पूज्य तथा आदर की दृष्टि से देखे जाने लगे। धीरे-धीरे इन्हें भी अपनी स्थिति का अनुभव होने लगा। ये लोग अब समझने लगे कि समाज का सिरताज हो जाना हमारे लिये कोई बड़ी बात नहीं है। अनायास मिलते हुए पद और प्रतिष्ठा का परित्याग करना भी कोई बुद्धिमानी की बात नहीं। अतः अब वे लोग अपनी सत्ता जमाने का प्रयत्न करने लगे। किंतु क्षत्रिय लोग भी किसी तरह उनसे कम नहीं थे। उन्हें कब यह बात सहन होती? वे अपनी तुच्छता मानने को कब तैयार थे? अतएव इसी बात को लेकर आपस का एक झगड़ा उठ खड़ा हुआ।

ब्राह्मण-क्षत्रियों का पारस्परिक विरोध

जब तक समाज में जीवन तथा उत्साह बना रहा, यह पौरोहित्य सत्ता का मूलोच्छेद करने तथा अपने असंवृत अधिकारों को संस्थापित करने का बारंबार प्रयत्न करता रहा। महाकाव्यों के समय में भी ऐसे प्रयत्नों की बात पाई जाती है। फिर आगे चलकर बौद्ध-धर्म का संस्थापन तथा देश में इसका प्रस्तार कर क्षत्रियों ने ब्राह्मणाधिपत्य का बिलकुल मूलोच्छेद ही कर देने का पुनर्वार प्रबल प्रयास किया। किंतु ब्राह्मणों की चतुरता तथा बुद्धि के सामने उनकी एक न चली, आख़िर सिर झुकाना ही पड़ा। ब्राह्मणों ने स्वयं बुद्ध को विष्णु का एक अवतार मान तथा उनके सिद्धांतों को अपने धर्म में समावेशित कर बौद्ध-मत को भारतवर्ष से सदा के लिये बिदा ही कर

* Ball's Translation.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिया। बौद्ध-धर्म के पतन के बाद ऐसे प्रयत्नों की इति-श्री हुई, और अंततः ब्राह्मण-सत्ता पूर्ण-रूपेण भारतवर्ष में संस्थापित हो गई *।

महाभारत-मीमांसा से भी इसी बात का समर्थन होता है। उसके छठे प्रकरण में लिखा है—"……किंतु आरंभ में क्षत्रियों ने ब्राह्मणों की यह बात चलने न दी। वशिष्ठ और विश्वामित्र के बाद से स्पष्ट होता है कि क्षत्रियों ने इस विषय में ख़ूब झगड़ा किया। ……. किंतु तात्पर्य इसका एक ही है। ब्राह्मणों का यह आग्रह था कि ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण हो, और क्षत्रिय का बेटा क्षत्रिय; परंतु विश्वामित्र का यह आग्रह था कि क्षत्रिय के बेटे ने यदि अपनी बौद्धिक शक्ति बढ़ा ली हो, तो उसके ब्राह्मण होने में क्या बाधा है?"

महाभारत-मीमांसा के मतानुसार यह खींचा-तानी बहुत प्राचीन काल ही से शुरू हो गई थी। विश्वामित्र की कथा सूर्यवंशीय क्षत्रियों के समय और पंजाब-प्रदेश की है। किंतु फिर भी महाकाव्यों के समय तक ब्राह्मणों की कट्टरता परा काष्ठा तक नहीं पहुँची थी। यद्यपि विभिन्नता दिनो-दिन बढ़ती चली जा रही थी, तथापि अभी तक आपस में भाईचारे का नाता नहीं टूटा था। अभी तक ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों को प्रायः समान अधिकार प्राप्त थे, तथा सभी ज्ञान-दीक्षा और शास्त्राध्ययन के समान अधिकारी समझे जाते थे।

वर्ण नहीं वरन् ज्ञान और सत्य की मर्यादा

अभी अन्य जाति के लोग अपने शील, गुण तथा बुद्धि-बल के द्वारा ब्राह्मणत्व प्राप्त कर सकते थे। इस युक्त कथन के समर्थनार्थ मैं ऐतरेय ब्राह्मण (२,१९) में कथित इलुशात्मज कवष के उपाख्यान की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना अनुचित नहीं समझता। कवष को ऋषियों ने यज्ञ-मण्डप रोह से धूर्त, अब्राह्मण, दासी-पुत्र कहकर निकाल दिया था, तथा उसे दीक्षा देना अंगीकार न किया था। किंतु कवष देवतों से परिचित था, तथा देवता लोग कवष को जानते थे (यानी कवष ज्ञानी, विद्वान् तथा धर्मात्मा पुरुष था), अतः कवष महर्षि बना लिया गया।

फिर छांदोग्योपनिषद् में वर्णित सत्यकाम जाबाल के उपाख्यान से यह स्पष्ट मालूम होता है कि उन दिनों सत्यता एवं विद्या के द्वारा ही मनुष्य प्रतिष्ठा के उच्च शिखर पर पहुँच सकता था। जाति-पाँति के विघ्न उसके रास्ते में अड़चन नहीं डाल सकते थे।

छांदोग्योपनिषद् के चतुर्थ प्रपाठकीय चौथे खंड में वह आख्यान यों वर्णित है—जाबाला के पुत्र सत्यकाम ने अपनी माता से कहा—मा, मैं ब्रह्मचर्याश्रम ग्रहण करना चाहता हूँ (यानी विद्याध्यन करना चाहता हूँ) मुझे मेरे गोत्र का परिचय बतला दो।

माता ने कहा—वत्स, मैं नहीं जानती, तुम किस कुल के हो। यौवनावस्था में, जब मैं प्रायः दासी की तरह अपना जीवन व्यतीत करती थी, मैंने तुम्हें गर्भ में धारण किया। मैं नहीं जानती, तुम्हारा गोत्र क्या है। मेरा नाम जाबाला है। तुम सत्यकाम हो। अतः तुम को 'सत्यकाम जाबालि' कहना।

सत्यकाम गौतम हारिद्रुमत् के पास गया, और उन से बोला—आर्य, मैं ब्रह्मचारी बनना चाहता हूँ। क्या आप की शरण में आ सकता हूँ?

हारिद्रुमत् ने पूछा—वत्स, तुमने किस गोत्र में जन्म लिया है?

सत्यकाम ने उत्तर दिया—आर्य, मैं किस कुल का हूँ, यह नहीं जानता। मैंने अपनी माता से पूछा, उसने उत्तर दिया—यौवनावस्था में, जब वह प्रायः

---

* In the earliest periods, so long as the nation had the life and the strength of youth, it made repeated attempts to throw off priestly supremacy and to assert its free born rights. The Kshatriyas made an attempt to assert themselves in the very period of which we are now speaking (epic period), as we have seen before (refers to Vishwamitra's story). And the Kshtriyas made a still mightier attempt later on to throw off Brahmanism over board, and adopted the Budhist religion all over the land. With the extination of Budhism such attempts seemed to end and priestly supremacy became ten times worse than before.—R. C. Dutt, Book II, Chapter V.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जैसी अपने पिता के घर आए हुए अतिथियों की आव-भगत किया करती थी, उसने मुझे गर्भ में पाया। वह नहीं कह सकती कि मैं किस कुल का हूँ। उसका नाम जाबाला है, और मैं सत्यकाम हूँ। अतः आर्य, मैं 'सत्यकाम जाबालि' हुआ।

हारिद्रुमत् ने कहा—सच्चे ब्राह्मण को छोड़ दूसरा कोई इस तरह अपने भेद को नहीं कह सकता। (मैं तुम्हें तुम्हारी सचाई के कारण ब्राह्मण मानता हूँ।) जाओ मित्र, कुश लाओ, मैं तुम्हें दीक्षा दूँगा। तुम सत्यव्रत से पराङ्मुख नहीं हुए।

अतएव ब्रह्मर्षि द्वारा दीक्षित होकर उस अज्ञात-कुलशील बालक ने ब्राह्मणोचित ज्ञान का उपार्जन किया, और अंत को महाराज दशरथ के मुख्य ऋत्विजों * में सम्मिलित हो ब्राह्मणोत्तम † की उपाधि से विभूषित हुआ।

भेद-भाव शुरू हो जाने पर भी अभी तक विच्छेद में कट्टरता एवं संकीर्णता नहीं आई थी। किंतु दिनो-दिन यह विभिन्नता बढ़ती ही गई, और पारस्परिक विरोध प्रबल होता ही गया। यहाँ तक कि महाकाव्य-काल का अंत पहुँचते-ही-पहुँचते हम लोग इस बंधन को दृढ़ तथा प्रायः अभेद्य पाते हैं। पूर्वापर महाकाव्य-काल की सामाजिक व्यवस्था में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ पाया जाता है।

धर्म की बागडोर ब्राह्मणों के हाथ में थी। ये लोग प्रतिष्ठित तथा आदरणीय आसन पर बिठा दिए गए थे। धार्मिक कर्मों से संबंध रखने के कारण समाज इन्हें सत्कार की दृष्टि से देखने लग गया था। यद्यपि क्षत्रिय-गण इनसे किसी प्रकार कम नहीं थे, बरन् कितनी ही बातों में बढ़े ही चढ़े थे, किंतु धर्म की ध्वजा इनके हाथ रहने के कारण वे इनके साथ प्रतिद्वंद्विता करने में पूर्ण रूप से समर्थ नहीं थे। इसी से झगड़ा शुरू हो जाने पर भी सदा क्षत्रियों को मुँह की खानी ही पड़ती थी। ब्राह्मणों ने भी अपनी स्थिति को पूरी तौर से समझ लिया था। वे जानते थे कि उनके पास एक ऐसी शक्ति है—एक ऐसा अस्त्र है, जिसके सामने कोई भी खड़ा नहीं रह सकता। वे समझते थे कि एक बार धर्म की दोहाई दे देने पर फिर धर्मभीरु आर्य जनता ज़बान नहीं हिला सकती। किंतु फिर भी इस सदा के रगड़े-झगड़े को एकदम मिटा ही देना उन लोगों ने निरापद समझा। इसका उपाय भी उन लोगों ने बहुत ही उत्तम सोच निकाला। धर्म की बागडोर उनके हाथ में थी ही—उसे ही उन लोगों ने इस तरह ऐंठना शुरू किया कि अंत को सबों से अलग हो अपना सर्वोच्च वर्ण क़ायम ही कर लिया। यह योजना महाकाव्य-काल के प्रायः अंत होते-होते की गई थी। और इसी के फल-स्वरूप ब्राह्मण-ग्रंथों का निर्माण हुआ।

ब्राह्मणों की युक्ति

उस काल का साहित्य विषम धार्मिक विधि-विधानों से ओत-प्रोत है। वेदों से यज्ञों के नियामक स्तोत्र चुन लिए गए। वैदिक समय की सीधी-सादी धर्म-व्यवस्था विषम तथा संकुल बना दी गई। धर्माचार के पग-पग पर नियम बनाए गए। सरल तथा स्वाभाविक देव-पूजा के स्थान पर बड़े-बड़े आडंबर-युक्त यज्ञों तथा अग्निहोत्रों का समावेश हुआ। यज्ञ बहुव्ययशाली विधि-विधान-वेष्टित तथा समारोहाच्छन्न बना दिए गए। प्रतीत ऐसा होता था, मानो विधि-निरूपण के अतिरिक्त धर्म दूसरी कोई शिक्षा दे ही नहीं सकता। फलतः धार्मिक बातें जन-साधारण की समझ के बाहर की चीज़ हो गईं, और जनता को धार्मिक विषयों से हाथ खींच लेने को बाध्य होना पड़ा। बिना सारा जीवन लगाए उन विविध नियमों तथा विधानों में पारंगत होना असंभव था। ये यज्ञ वे ही करा सकते थे, जो जन्म से इन्हें देखते आए हों, और इस विषय का मनन तथा अध्ययन करते रहे हों। अतः देखते-देखते ब्राह्मणों की सत्ता जमने लगी। लोग अपनी धर्म-संबंधी स्वाधीनता खोने लगे।

ब्राह्मण-साहित्य की अवस्था

किंतु सौभाग्य-वश विदेह आदि विज्ञ तथा ज्ञानी नृपतियों की भी उस काल में कमी नहीं थी। वे लोग इस तरह की निस्सार एवं अरुचिकर विधि-पद्धतियों की वृद्धि होते कहाँ तक देख सकते थे। साहित्य की इस

* सुमंत्रा वाहय क्षिप्रमृत्विजो ब्रह्मवादिनः।
सुयज्ञं वामदेवं च जाबालिमथ काश्यपम्॥ ५॥
बालकांड सर्ग १२

† आश्वासयन्तं भरतं जाबालिर्ब्राह्मणोत्तमः।
उवाच रामं धर्मज्ञं धर्मापेतमिदं वचः॥ १॥
अयोध्याकांड १०२ सर्ग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निकृष्ट एवं हास्यास्पद अवस्था को देख वे व्याकुल हो उठे, और गूढ़ चिंता में निमग्न हो गए। उन लोगों ने स्पष्ट देख लिया कि इतना ही धर्म ज्ञान के लिये यथेष्ट नहीं है, और उच्चतर तथा गंभीर विचार-विमर्श में लवलीन हुए। सारगर्भ तथ्य की खोज में उनकी आत्मा प्रवृत्त हुई। परब्रह्म परमेश्वर का सच्चा स्वरूप तथा आत्मा का अभीष्ट जानने के लिये वे उद्विग्न हो उठे, और मनन एवं चिंतन में लग गए। विद्या-वारिधि में ग़ोता लगा ज्ञान-रत्न को खोजने लगे।

क्षत्रियों की चेष्टा

उनके नए सिद्धांत एवं विचार इतने ठोस, सार-गर्भित तथा विचक्षण निकले कि आत्मगर्वित ब्राह्मणों को उनकी महत्ता माननी ही पड़ी, और नव-अर्जित ज्ञान को सीखने के लिये उनसे दीक्षा लेनी पड़ी। महाकाव्य-काल का प्रायः अंत होते-होते राजर्षि-उपार्जित इस नवीन ज्ञान ने सारे संसार को चकित एवं स्तंभित कर दिया। प्राचीन भारतीय साहित्य में उपनिषदों ही का स्थान प्रायः सर्वश्रेष्ठ है। संसार में शायद किसी भी भाषा के साहित्य में इतने उच्च दार्शनिक विचारों से ओत-प्रोत सर्वांग-सुंदर तथा विद्वत्ता-पूर्ण ग्रंथ नहीं मिल सकता। बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसे विचक्षण एवं अमूल्य ग्रंथ-रत्न के संकलन का गौरव क्षत्रियों—मुख्यतः विदेहराज जनक ही—को प्राप्त हुआ, जिनका प्रधान कर्म प्राचीनतम काल से ही केवल युद्ध, कूट-नीति तथा रक्षणान्वेक्षण ही करना था। ऐसे ज्ञान-भांडार का उद्घाटन तो अध्यात्म तथा बुद्धि के संरक्षकों ही द्वारा होना उपयुक्त था। किंतु जिस गौरव तथा महत्ता को लोग कोटिशः ग्रंथ बनाकर नहीं प्राप्त कर सके, उसे क्षत्रियों ने केवल इसी एक उपनिषद् का निर्माण कर प्राप्त किया। यह ग्रंथ प्राचीन भारत के अमूल्य साहित्य का सिरताज हो गया, और इसने संसार में भारतीय साहित्य का सिर ऊँचा किया।

उपनिषदों का निर्माण तथा उनका महत्त्व

किंतु इन बातों पर कितने ही पाठक प्रमाण पाए विना अनायास विश्वास नहीं करेंगे। प्रमाणों की तो कोई कमी नहीं है। उस काल के क्षत्रियार्जित सारगर्भित उत्तम ज्ञान की दीक्षा ग्रहण करने के निमित्त सैनिक जाति की शरण में जानेवाले सैकड़ों ब्राह्मणों के उदाहरण यहाँ उद्धृत किए जा सकते हैं; किंतु स्थानाभाव से वैसा करने में मैं असमर्थ हूँ। तथापि विना दो-चार उदाहरण दिए काम भी नहीं चलता।

जनकराज की एक दिन नवागत तीन ब्राह्मणों से भेंट हुई। उनके नाम श्वेतकेतु आरुणेय, सोमशुष्म सत्ययज्ञि एवं याज्ञवल्क्य थे। जनक ने उन लोगों से अग्निहोत्र करने की विधि पूछी। सबों ने जहाँ तक हो सका, बतलाने का प्रयत्न किया; किंतु कोई भी कृतकार्य नहीं हुआ। याज्ञवल्क्य का उत्तर प्रायः ठीक था—बहुत थोड़ी भूल रह गई थी। जनक उन लोगों को यह बतलाकर रथ पर चढ़े, और चले गए। पुरोहितों ने विचारा कि इस धृष्ट राजा ने इन लोगों को बड़ा ही अपमानित किया। अतः याज्ञवल्क्य भी अपने रथ पर आरूढ़ हो जनक के पीछे चल पड़े, किंतु आख़िर जनक द्वारा अपनी अशुद्धि का विवरण पाकर उन्हें लौट आना पड़ा। (शतपथ ब्राह्मण ११,४)

क्षत्रियों की श्रेष्ठता के कुछ प्रमाण

फिर छांदोग्योपनिषद् के पंचम प्रपाठक तृतीय खंड में उपर्युक्त श्वेतकेतु आरुणेय की एक और भी कथा पाई जाती है।

जब श्वेतकेतु आरुणेय पांचालों की सभा में गया, तो प्रवाहन जैबलि ने उससे पूछा—कुमार! क्या तुम्हारे पिता ने तुम्हें शिक्षा दी है?

आरुणेय—जी हाँ।

जैबलि—क्या तुम जानते हो, यहाँ से मनुष्य कहाँ जाते हैं?

आरुणेय—जी नहीं।

जैबलि—क्या तुम बतला सकते हो कि फिर वे वहाँ किस तरह लौटते हैं?

आरुणेय—जी नहीं।

जैबलि—क्या तुम जानते हो, देवों तथा पितरों का पथ-व्यावर्तन कहाँ होता है?

आरुणेय—जी नहीं।

जैबलि—क्या तुम जानते हो, पितृलोक अनंत क्यों नहीं हो जाता?

आरुणेय—जी नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे ही एक और प्रश्न का भी उत्तर 'नहीं' पाकर वह बोल उठा—तब तुम अपने को 'शिक्षित' क्यों कहते हो? जो मनुष्य इन सब बातों को नहीं जानता, वह शिक्षित कैसे कहा जा सकता है?

आख़िर आरुणेय बड़ा खिन्न हो अपने पिता के पास लौट गया, और उनसे कहने लगा—पिता, मुझे शिक्षा न देकर यों ही आपने मुझसे कह दिया कि मैं शिक्षित हो गया। आख़िर उस धृष्ट राजा ने मुझसे पाँच प्रश्न पूछे; किंतु मैं एक का भी उत्तर न दे सका।

पूछने पर प्रश्नों को सुनकर पिता ने कहा—वत्स, मैं स्वयं ही इन प्रश्नों में एक का भी उत्तर नहीं दे सकता। इन प्रश्नों ने तो मेरी बुद्धि चक्कर में डाल दी। यदि मैं इन विषयों के संबंध में कुछ भी जानता होता, तो फिर भला कहो, तुम्हें कैसे नहीं बतलाता?

आख़िर कुश हाथ में लेकर पिता-पुत्र पुनः जैबलि के पास गए, और उक्त विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिये आग्रह करने लगे।

पहले तो जैबलि बहुत घबराया, और आना-कानी करता रहा, किंतु अंत को बहुत हठ करने पर उसने गौतम (श्वेतकेतु के पिता) से कहा—महर्षि, आप कुछ दिनों तक मेरे पास ठहरें—मैं आपको उस ज्ञान की दीक्षा दूँगा। किंतु आज के पहले यह विद्या ब्राह्मणों के पास कभी नहीं गई थी। अभी तक यह विद्या एकमात्र क्षत्रियों की सामग्री समझी जाती थी *।

इतना कह उसने गौतम को आत्मा के स्वरूप, उसका परमात्मा के साथ संबंध, आत्मा के अभीष्टादि के विषय में बृहत् व्याख्या दी, जिसे पाठक पंचम प्रपाठक के चतुर्थ से दशम खंड तक पावेंगे।

फिर एकादश खंड में इसी प्रकार का एक दूसरा आख्यान पाया जाता है।—प्राचीनशाल औपमन्यव, सत्ययज्ञी पौलुषि, इंद्रद्युम्न भाल्लवेय, जन शर्कराक्ष्य तथा बुडिल आश्वतराश्वि नाम के पाँच वेदांती आत्म-स्वरूप का परिचय तथा ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिये उत्कंठित हो उद्दालक आरुणि के पास गए। किंतु उद्दालक आरुणि उनका शंका-समाधान करने में असमर्थ था। अतः वह उन लोगों को अश्वपति कैकेय के पास ले गया। कैकेय ने उन लोगों को बड़े सम्मान के साथ अपने राज्य में रखकर ज्ञान-दीक्षा दी *।

यह कथा बड़े बृहद्रूप से छांदोग्योपनिषद् में कही गई है, तथा शतपथ-ब्राह्मण में भी पाई जाती है †।

श्वेतकेतु आरुणेय की एक और कथा हम लोगों को कौषीतकि उपनिषद् (प्रथम अध्याय) में मिलती है।

चित्र गार्ग्यायणि ने एक यज्ञ-समारोह में उद्दालक आरुणि (गौतम) को अपना आचार्य नियुक्त किया। आरुणि ने अपने पुत्र श्वेतकेतु को यह काम सौंप दिया। किंतु बेचारा श्वेतकेतु तो चित्र के एक ही प्रश्न ‡ से विचलित हो गया, और अपने पिता के पास उसका उत्तर पूछने के लिये गया। किंतु उद्दालक भी उसका उत्तर देने में असमर्थ थे। अतः हाथ में कुश ग्रहण कर ज्ञानार्थी हो वह चित्र के पास गए। चित्र ने उन्हें मरणांतर आत्मा के स्वरूप, गति तथा अनुभव के विषय एवं पुनर्जन्म के सिद्धांत का बृहत् विवरण दिया।

पाठकों को आश्चर्य होगा कि पुनर्जन्म का सिद्धांत भी क्षत्रियों ही द्वारा उद्घाटित किया गया। श्वेतकेतु

---

* स ह कृच्छ्री बभूव त ँ ह चिरं वसेत्याज्ञापयां चकार त ँ ह होवाच यथा मा त्वं गौतमावदो यथेयं न प्राक् त्वत्तः पुरा विद्या ब्राह्मणान्गच्छति तस्माद् सर्वेषु लोकेषु क्षत्रस्यैव प्रशासनमभूदिति तस्मै होवाच ॥ ७ ॥ (पंचम प्रपाठक, तृतीय खंड)

ते ह संपादयांचक्रुरुद्दालको वै भगवन्तोऽयमारुणिः संप्रतीममात्मानं वैश्वानरमभ्येति त ँ ह .....स ह संपादयां चकार प्रत्यन्ति मामिमे महाशाला महाश्रोत्रियास्तेभ्यो न सर्वमिव प्रतिपत्स्ये हन्ताहमन्यमभ्यनुशासानीति। तान्होवाचाश्वपतिर्वै भगवन्तोयं कैकेयः संप्रतीममात्मानं वैश्वानरमध्येति .....ते ह समित्पाणयः पूर्वाह्णे प्रतिचक्रमिरे तान्हानुपनीयैवैतदुवाच। (पंचम प्रपाठक, एकादश खंड)

† Max Muller's—'Sacred Books of the East' V Prapathaka, II Khaud, foot note.

‡ प्रश्न यह था—"...गौतमस्य पुत्रास्ते संवृतं लोके यास्मिन्माधास्यस्यन्यमहो वादध्वा तस्य लोके धास्यसीति" स होवाच नाहमेतद्वेद हन्ताचार्यं प्रच्छानीति...स ह समित्पाणिश्चित्रं गार्ग्यायणिं प्रतिचक्रम उपायानीति। (कौषीतकि उपनिषद्, प्रथम अध्याय)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के पहले कोई भी ब्राह्मण इस सिद्धांत के विषय में कुछ नहीं जानता था * ।

उसी प्रकार गार्ग्य बालाकि-नामक आत्मश्लाघी तथा गर्वित ब्राह्मण के अजातशत्रु द्वारा परास्त होने की तथा कुश ग्रहण कर उस नृपति के शिष्य बनने की कथा कौषीतकि उपनिषद् (चतुर्थ अध्याय) में कही गई है † ।

ऐसी कितनी ही कथाएँ बृहदारण्यक, केन आदि उपनिषदों में भी पाई जाती हैं। किंतु मैं यहाँ अधिक कथाओं का उद्धृत करना बाहुल्य समझता हूँ। पाठक उपर्युक्त आख्यानों से ही महाकाव्य-कालीन क्षत्रियों की बुद्धि-विद्या का अनुमान कर सकते हैं। मैं तो समझता हूँ, इतनी ही बात उस समय क्षत्रियों के समाज में प्राप्त स्थान एवं गौरव को प्रमाणित करने के लिये यथेष्ट होगी। मानव-ज्ञान के इतिहास में उपनिषद्-काल एक नवीन युग का उद्घाटन करता है, और यह ज्ञान पहले ब्राह्मणों को नहीं प्राप्त था, वरन् क्षत्रियों की स्वकीय संपत्ति समझा जाता था।

क्षत्रियों का गौरव

इतना ही क्यों, मेरी बुद्धि तो वेदों के संकलन एवं संग्रहकर्ता के भी वर्ण का निर्णय करने में चकरा जाती है। समझ में नहीं आता, कृष्ण द्वैपायन को ब्राह्मण माना जाय या क्षत्रिय। द्वैपायन का जन्म महाराज शंतनु की पत्नी देववती तथा पराशर ऋषि के संयोग से हुआ था, और उन्हीं द्वारा प्राप्त अंबिका तथा अंबालिका के पुत्र पांडु और धृतराष्ट्र क्षत्रिय समझे जाने लगे। हिंदी-शब्द-सागर ‡ के मतानुसार तो यही व्यासदेव उत्तर-मीमांसा के भी रचयिता थे। बादरायण व्यास वेदव्यास ही का दूसरा नाम था। फिर सांख्यकर्ता कपिल के क्षत्रिय होने में तो कोई शंका ही नहीं। गोस्वामीतुलसीदास ने तो रामायण में उनकी वंशावलिही दे दी है * । अतः देखा जाता है कि दर्शनों में भी तेरों के निर्माण का गौरव क्षत्रियों ही को प्राप्त है। सारांश यह कि तत्कालीन क्षत्रिय विद्या-बुद्धि में से बढ़े-चढ़े थे। सबों की द्युति उनके सामने फीकी पड़ गई थी—सबों को उनके सामने सिर झुकाना पड़ता था।

यह तो महाकाव्य-कालीन अवस्था थी। किंतु यहीं ब्राह्मण-क्षत्रियों के पारस्परिक झगड़े की इतिश्री नहीं हुई। जैसा मैं ऊपर कह आया हूँ, बौद्ध-मत प्रचारित कर क्षत्रियों ने पुनः एक बार ब्राह्मण-सत्ता के दमन करने का प्रबल प्रयास किया। बौद्ध-काल में क्षत्रिय लोग अपने को अध्यात्म-गुरु कहने लगे, तथा अपने को ब्राह्मणों से अधिक प्रतिष्ठित समझने लगे। उस समय का साहित्य ब्राह्मणों की निंदा से भरा हुआ है। सर्वत्र क्षत्रियों की प्रशंसा की गई है, तथा ब्राह्मणों का उल्लेख अपमान और नीचता-सूचक शब्दों में किया गया है। "जातक कथाओं में क्षत्रिय लोग सब वर्णों से श्रेष्ठ समझे गए हैं, तथा ब्राह्मणों के लिये "तुच्छ ब्राह्मण", "नीच ब्राह्मण" आदि शब्द प्रयुक्त किए गए हैं †।"

बौद्ध-काल में ब्राह्मणों की अवस्था

रीज़ डेविड साहब ने ‡ अपनी पुस्तक में लिखा है कि ब्राह्मण-ग्रंथों में ब्राह्मणों के जीवन का जो चित्र मिलता है, वह आदर्श-जीवन का है। पर जातक-कथाओं में ब्राह्मणों का जो चित्र मिलता है, वह उनके साधारण घरेलू जीवन का है।

तित्तिर-जातक में एक कथा है कि एक बार बुद्धदेव ने भिक्षुओं की सभा में पूछा कि सबसे अधिक

---

* R.C.Dutt's Ancient India, Book II, Chapter IX.

† तत उ ह बालाकिस्तूष्णींमास तं होवाचाजातशत्रुरेतावन्तु बालाकीति एतावदीति होवाच बालाकिस्तं होवाचाजतशत्रुर्म्हषा वै किल मा संवदिष्टा.....तत उ ह बालाकिः समित्पाणिः प्रतिचक्रामोपायानीति।

‡ व्यास—पृष्ठ ३२५२।

* स्वायंभुव मनु अरु सतरूपा ; जिनते भइ नर-सृष्टि अनूपा।
× × × × × × × ×
नृप उत्तानपाद सुत तासू ; ध्रुव हरिभक्त भए सुत जासू।
लघुसुत नाम प्रियव्रत ताहीं ; वेद पुरान प्रसंसत जाहीं।
देवहुती पुनि तासु कुमारी ; जो मुनि कर्दम की प्रिय नारी।
आदि देव प्रभु दीनदयाला ; जठर धरे जेहिं कपिल कृपाला।
सांख्यसास्त्र जिन प्रकट बखाना ; तत्त्व-विचार-निपुन भगवाना।
(बालकांड)

† बौद्धकालीन भारत—ग्यारहवाँ अध्याय।

‡ Rhys Davids—Bhuddhistic India.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सबसे पहले किसका आदर होना चाहिए ? इसके उत्तर में कुछ भिक्षुओं ने कहा—"खत्तियकुला पव्वजितो" (क्षत्रिय-कुल में उत्पन्न हुए भिक्षुओं का)।

जैन-साहित्य की भी यही दशा है। जैन-कल्पसूत्र में महावीर के जन्म की एक विचित्र कथा कही गई है। उसमें लिखा है कि "महावीर जब पुष्पोत्तर नाम के स्वर्ग से जन्म लेने के लिये उतरे, तो ऋषभदत्त-नामक ब्राह्मण की पत्नी देवानंदा के गर्भ में आए। पर इसके पहले यह कभी नहीं हुआ था कि किसी महापुरुष ने ब्राह्मण-कुल में जन्म लिया हो। अतएव शक्र ने उस महापुरुष को देवानंदा के गर्भ से हटाकर रानी त्रिशला के गर्भ में रख दिया *।"

बात भी ऐसी ही है। बड़े आश्चर्य की बात है कि दशावतार-कथाओं में एक भी महापुरुष का विप्र-कुलोद्भव होना नहीं पाया जाता। दस अवतारों में केवल चार ही—राम, कृष्ण, बुद्ध तथा परशुराम—गर्भ-जात माने गए हैं। इनमें तीन के क्षत्रिय होने में तो कोई संदेह ही नहीं, किंतु चौथे भी क्षत्रियांशी ब्राह्मण ही समझे जाते हैं। इसी से उनका स्वभाव तथा आचार-व्यवहार भी क्षत्रियों का-सा पाया जाता है। उनके क्षत्रियांशी होने की बात पाठकों को अनुशासन-पर्व के तीसरे अध्याय में वर्णित उनकी जन्म-कथा सुनने से स्पष्ट हो जायगी।

अवतारों का वर्ण

भृगु-ऋषि के पुत्र ऋचीक का ब्याह गाधि-तनया सत्यवती के साथ हुआ था। गाधि के कोई पुत्र न था। अतः पुत्रेच्छु हो गाधि ने अपने जामाता से पुत्र माँगा। इधर सत्यवती ने भी उनसे पुत्र माँगा। ऋचीक ने दोनों को मंत्रित चरु दिया—अपनी स्त्री को ब्रह्मतेज से अभिमंत्रित किया हुआ, और सास को क्षात्रतेज से। किंतु माबेटी ने अपना-अपना चरु अदल-बदल कर लिया। फलतः सत्यवती से क्षत्रियांशी ब्राह्मण परशुराम जन्मे, एवं गाधि-पत्नी ने ब्रह्मतेज-युक्त विश्वामित्र का प्रसव किया।

किंतु क्षत्रियों का यही अंतिम प्रयत्न था। जैसा कि मैं ऊपर कह आया हूँ, ब्राह्मणों ने अपनी चतुरता से बौद्ध-धर्म को भारत से विदा कर दिया, तथा क्षत्रियों के दुर्निवार प्रयत्न को निष्फल बना दिया। क्षत्रिय लोग अपने इस सुनिरूपित प्रयत्न को विफल होते देख हिम्मत हार गए, और ब्राह्मण-सत्ता दसगुनी प्रबल हो गई।

क्षत्रियों के विरोध का अंत तथा क्षत्रियों का पराजय

इसके बाद किसी ने उनका विरोध नहीं किया। दिनोदिन उनकी प्रबलता बढ़ती गई। पौराणिक समय में विज्ञ ब्राह्मणों को 'भूसुर' की प्रतिष्ठा दी गई। किंतु अभी ब्राह्मणों को पूजनीय होने के लिये विद्वान् होना अत्यावश्यक था। गरुड़पुराण में तो अज्ञानी ब्राह्मणों का श्राद्धादि कर्मों में सम्मिलित होना भी वर्जित है।

किंतु आगे चलकर वह अड़चन भी हटा दी गई, और 'अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मणो ममकी तनुः' का सिद्धांत प्रतिपादित कर दिया गया। गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी अपनी रामायण में लिखा है—"पूजिय विप्र शील-गुण-हीना।"

---

* बौद्धकालीन भारत, तीसरा अध्याय।

श्रीविश्वेश्वरनाथजी रेउ "सुधा" के संबंध में लिखते हैं—

"आपकी "सुधा" हिंदी-साहित्य के लिये एक गौरव की वस्तु है। इसके लेख, इसके चित्र और इसके नोट उत्तम होते हैं। साथ ही इसका स्टाइल भी हिंदी-साहित्य की अन्य पत्रिकाओं के लिये अनुकरणीय है।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फूलवालों की सैर

[आचार्य चतुरसेन शास्त्री]

(१)

क़ुतुब की लाट दिल्ली की प्रधान दर्शनीय वस्तु है। जाननेवालों की दृष्टि में वह अनेक भेद गर्भ में छिपाए स्तब्ध खड़ी न-मालूम किस अज्ञात की प्रतीक्षा कर रही है। साल के तमाम दिनों में, चाहे आँधी हो या पानी, गर्मी हो या सर्दी, क़ुतुब के यात्रियों का ताँता लगा रहता है। हिंदू और मुसलमान सब उस पर फ़िदा हैं। दिल्लीवाले एक ही मन-चले छैला होते हैं—ज़रा बदली ने रँग बदला, हवा में नमी आई, और दिल्लीवाले स्त्री-पुरुष छोटी-छोटी पुटलियों में खाने की सामग्री बाँध क़ुतुब पर चढ़ दौड़े। अजमेरी दर्वाज़े के बाहर आप मोटरलारियों की फ़ौज रात-दिन खड़ी देखेंगे। ११ मील के रास्ते का बेचारे पाँच पैसे तक का भाव कर देते हैं। फिर भला क़ुतुब क्या महँगा रहा? बाहरी सैलानियों के लिये एक और भी सुविधा है। ये लारियाँ रायसीना (नई दिल्ली) की प्रशस्त, काँच के समान चमकती हुई और प्राचीन रोम-साम्राज्य की प्रतिलिपि-रूपी घूम-घुमौवल सड़कों पर जब दौड़ती हैं, तो यह दुर्लभ सैर उन्हें मुफ़्त ही प्राप्त हो जाती है। लगभग आधी दूर तक तो रायसीने का गोरख-धंधा ही है। उसके बाद क़ुतुब के दर्शन हो ही जाते हैं।

(२)

११ साल बाद इस वर्ष फूलवालों की सैर का मेला लगा था। यह मेला प्रतापी, किंतु भाग्यहीन मुग़ल-सम्राट् शाहजहाँ ने लगाना प्रारंभ किया था। क़ुतुब के एक पार्श्व में पृथ्वीराज के समय की प्राचीन योगमाया एक जीर्ण-मंदिर में आसीन हैं, दूसरे पार्श्व में ख़्वाजा साहब की दर्गाह है। बादशाह ने हिंदू-मुसलमान दोनो को प्रतिवर्ष ५००)-५००) रु० का वज़ीफ़ा देना स्वीकार किया था। उस रक़म से हिंदू योगमाया पर और मुसलमान दर्गाह शरीफ़ पर फूलों के पंखे चढ़ाया करते थे। जब मुग़ल-तख़्त का अंत हुआ, और अँगरेज़ों ने भारत के साम्राज्य का भार सिर पर लिया, तब यह वज़ीफ़ा घटाकर १००)-१००) रुपए की शक्ल में हिंदू-मुसलमानों को मिलता रहा। परंतु गत ११ वर्ष से गवर्नमेंट ने (महायुद्ध-काल से) यह वज़ीफ़ा बंद कर दिया। मेला भी बंद हो गया। इस बार ११ साल बाद गवर्नमेंट ने इस सोते हुए मेले को फिर जाग्रत् किया—फिर सैकड़ों रुपए उन परिवारों को प्रदान करने की उदारता दिखाई जो क़दीम से पंखा चढ़ाने का शाही अधिकार प्राप्त कर चुके हैं। ११ साल बाद इस बार इस मेले के लिये दिल्ली को उकसाने की सरकार को क्या आवश्यकता आ पड़ी, इस पर कुछ बुद्धिमानों ने विचार किया। समाचार-पत्रों ने भी नुक़्ताचीनी की। यही तो समय था जब पंजाब के सिंह-शावकों ने भूख-हड़ताल की थी और अमर यतीन मृत्यु-शय्या पर अंतिम श्वास ले रहे थे। राष्ट्रीय नेता उस अनैतिक मेले के उग्र विरोधी थे। दिल्ली देश की वेदना के साथ शरीक है या नहीं, यह बात देखने योग्य समझी गई। फूलवालों की सैर में एक झलक देखने की हमारे मन में अभिलाषा पैदा हुई।

(३)

सचमुच दिल्ली को वेदना न थी। दिल्ली और वेदना! महाराज्ञों की यह विधवा-पुंश्चली जिस तरह नए पति को प्राप्त कर नए ठाठ सजती है—वह क्या जगत् देखता नहीं है? यह महामंदोदरी कब वेदना के अनुभव करेगी, हर्गिज पावेगी, यह सदासुहागिन महावेश्या आज अपने नरवरों के प्राणों को एक-एक घूँट में पीकर ब्रिटेन-सिंह के पंजों की कृपा से नए रूप, नए वेश में, नवेली दुलहिन की तरह, जगमगा रही है। हज़ार यतीन मरें, इसे क्या? लाख वीर भूख-हड़ताल करें, इसे वास्ता?

इस वर्ष वर्षा मज़े की हो गई थी। जंगल हरियाली से लहलहा रहे थे। रायसीने के प्रभुओं ने मनुष्यों से प्रायः सभी जलाशयों को नष्ट कर दिया है। अतएव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहीं-कहीं नवीन इंजीनियरी की प्रतिष्ठा रखने को सड़कों पर पानी भरा दीख पड़ता था। दिल्लीवालों पर हरियाली को देखते ही रंग चढ़ गया। सबकी ज़बान पर 'फूलवालों की सैल' उछल रही थी। दिल्ली के प्राण क़ुतुब पर आ अटके। क़ुतुब के पार्श्व में महरोली का छोटा-सा क़स्बा, शैतान की आँत की तरह लंबा एकमात्र बाज़ार लिए चुपचाप सो रहा है। उसमें जागृति के चिह्न दीख पड़े। दिल्लीवाले टूट पड़े। दो दिनों के लिये सभी मकान, कोठे, छत, मुँडेर, खँडहर किराए पर उठ गए। एक वर्ष का किराया दो दिन में मिल गया। गैस के हंडे, बिजली के लैंप, और झाड़-फ़ानूस जलने लगे। खँडहरों पर ईरानी क़ालीन और दरियाँ बिछ गईं। उन पर डेरे-तंबू खड़े कर दिए गए। महरोली सज-सजाकर वार-वनिता की तरह मानो छनाछम नाचने के लिये उठ खड़ी हुई। दिल्ली की प्रख्यात वेश्याओं ने कोठों के भाव आसमान पर चढ़ा दिए। रामलीला की सवारी जिन्होंने अपनी पुण्य-आँखों से चावड़ी बाज़ार के राज-पथ पर लौटती बार देखी है, वे उस महरोली के स्थायी दृश्य को समझ लें।

(४)

हिंदुओं का पंखा तो कल चढ़ चुका था, आज दर्गाह पर मुसलमानों का पंखा चढ़ना था। मुसलमान उन्मत्त हो रहे थे। नर-समुद्र क़ुतुब की ओर उमड़ रहा था। सभी की रात बसने को तैयारियाँ थीं। रात लौटने की जो सोचता था, फ़ौरन् जवाब मिलता—"क्यों, दो बजे तो पंखा दर्गाह शरीफ़ तक पहुँचेगा।" रात बसने जो जा रहे थे, उनके हाथ में वही छोटी-सी पुटलिया, बग़ल में शतरंजी, जेब में सिगरेट का बक्स और दियासलाई की पेटी, थोड़े-से पैसे आदि सामान था। मुसलमान जाति तेज़ी से नष्ट हो रही है—यह साफ़ देखने को मिल रहा था। छोटे-छोटे बच्चे गंदे और बेहूदे गीत गा रहे थे।

(५)

वह गंदा और बेहूदा तथा अनैतिक मेला क्या देखने योग्य था। पुराने और तंग बाज़ार में ठसाठस आदमी भर रहे थे—पसीने और साँस की दुर्गंध, भुनते हुए कबाब और सड़े तेल के तले जाते हुए पकौड़ों की भयानक वास दिमाग़ को फाड़े डालती थी। धूल और अंधकार, मोटरों की घोंघों-पें-पों, सब श्रेणियों के मनुष्यों की चिल्लाहट की मिश्रित ध्वनि, लड़ाई-झगड़े, गाली-गलौज और हँसी-ठट्ठा एक अजब गड़बड़-झाला पैदा कर रहा था। पंखा अभी बाज़ार तक भी न पहुँचा था, पर छतों पर, छज्जों पर, आदमी लद रहे थे। कोठों पर वेश्याओं के रंगीन प्रदर्शन लोगों के दिल-बहलाव की सामग्री बन रहे थे। हम सब आफ़त से घबराकर, असह्य गर्मी और गंदगी से ऊबकर, एक अंधकाराबृत खँडहर के एक शून्य भाग पर खड़े रात-भर परेशानी भोगने के लिये मनोबल संग्रह कर रहे थे।

एक बूढ़ा उस अंधकार में एक पुरानी शतरंजी बिछाए चुपचाप बैठा था। हमें उसके अस्तित्व का ख़याल भी न था। उसने आवाज़ लगाकर कहा—"इधर आ जाइएगा। पंखा तो दो बजे पहुँचेगा।" हमने नज़दीक जाकर देखा—एक क़ब्र के तकिए के सहारे अतिशय कृषकाय एक वृद्ध साधारण मलमल का एक अँगरखा पहने बैठा है। उसकी दाढ़ी और भौं बिलकुल सफ़ेद थी। उसकी आवाज़ काँप रही थी। उसके पैर में पुराना, किंतु असली वसली का जूता था।

हमने निकट जाकर बूढ़े का उसकी मेहरबानी के लिये शुक्रिया अदा किया। उसने बंदगी करके कहा—"मालूम होता है, आप पहली ही बार फूलवालों की सैल को आए हैं?"

"जी हाँ। मगर आप क्या पहले भी यह मेला देख चुके हैं?"

बूढ़ा कुछ हँसा। उसने आकाश की ओर एक बार देखा, और कहा—"जनाब! इसी फूलवालों की सैल को देखकर ज़िंदा रह सका हूँ। मैं जो कुछ देखता हूँ, आप क्या वह देख सकेंगे?"

"माफ़ कीजिएगा, बदबू और शोर के मारे हमारे नाक में दम हो गया।"

उसने बीच ही में बात काटकर कहा—"आह! बाबू साहब, मेला तो दिल का होता है। भीड़ देखने में क्या ख़ाक मज़ा आ सकता है? आज ८८ साल से यह मेला देख रहा हूँ, इस मेले की बदौलत न मैं अपने को बूढ़ा समझता हूँ न ग़रीब; न भूख महसूस करता हूँ न प्यास, न नींद, न थकावट, न सर्दी, न गर्मी। मैं वैसा ही १८ साला नौजवान, वैसा ही चुस्त ज़र्क़-बर्क़ बना हूँ। मेरी आँखें आज के दिन-रातों को देखने में कमज़ोर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और धुँधली हो गई हैं। मगर मैं अपने उन प्यारे दिनों को हूबहू देख रहा हूँ।" इतना कहकर बूढ़े ने फिर आकाश की ओर देखा और अपनी आँखें मूँद लीं।

हम शतरंजी पर बैठ गए। हमने कहा—"जनाब की बातों से कुछ भेद मालूम होता है। अगर हर्ज न हो, तो ज़रा खोलकर कहिए। ज़रूर आपकी ज़िंदगी से किसी भेद का सिलसिला है।"

बूढ़े ने एक बार अंधकार में मृतकवत् पड़े हुए उस खँडहर पर एक विषाद-पूर्ण दृष्टि डाली, एक लंबी साँस ली, फिर कहना शुरू किया—

"आराम से बैठ जाइएगा जनाब! सन् १८५६ की बात है। यही महीना और यही दिन था। इसी तरह फूलवालों की सैर हो रही थी। उन दिनों मोटर-लारियाँ नहीं थीं। अभी आए और अभी गए, यह भी भला कोई मेला हुआ। उन दिनों नागौरी बैलों की जोड़ियाँ जब मँझोलियों में उछलती थीं, तब देखते ही बनता था। रथ, बहली, तामज़ाम, पालकी, हाथी, घोड़े, ख़ास-दान, इनपर शहर के रईस दो-चार दिन पहले आते और दो-चार दिन बाद जाते थे। हफ़्तों बाज़ार रहता था—दूकानदार मुँहमाँगा दाम पाते और गाँठ बाँधकर घर ले जाते थे। उस मेले में मज़ा था, आराम था, मस्ती थी। वह मेला था। नन्हीं-नन्हीं भादों की फ़ुव्वारें चलती थीं, बाग़ों में झूले पड़ते थे, लोग मलार गाते थे। नशा-पानी होता था, शेर और ग़ज़लों के, ख़्याल और झूलनों के अखाड़े जमते थे। ग़रज़, हफ़्ते-भर के लिये मौज का दरिया उमड़ आता था।

"दिल्ली के आख़िरी बादशाह फूलवालों की सैर देखने आए थे। वह ज़ईफ़ और सच्चे साधु थे। उनका क़लामे 'ज़फ़र' तो आपने देखा ही होगा। ऐसा सोज़ और किसकी क़लम में है। दरअसल वह बादशाह न थे, शायर थे। आख़िर बादशाही उनसे छिन ही गई?

"खैर, बादशाह के साथ उनका हरम और क़रीब २ हज़ार आदमी थे। मशहूर शायर ज़ौक़ भी साथ थे। बादशाह इन्हें उस्ताद मानते थे। मिर्ज़ा ग़ालिब से ज़ौक़ की लाग-डाँट थी—मगर इस बार वह भी बादशाह के साथ थे। हज़रत सलामत को शायरी का इस क़दर शौक़ था कि वही उनकी तफ़रीह और वही दर्शन भी बन गया था। बादशाह के हुक्म से उस रो मुशायरे का ख़ास बंदोबस्त किया गया था। दूर-दूर शायर बादशाह की नज़र में चढ़ने और इनाम-इक पाने की नियत से आए थे। इस मामले में वह ही फ़ैयाज़-दिल थे। बादशाह क्या थे, औलिया थे।

"जिस दिन पंखा निकलता था, उस दिन की है। जिस खँडहर को आप इस वक्त ऐसा उजाड़ और उजाड़ देख रहे हैं, उस दिन इसकी सजावट रौनक़ देखने के क़ाबिल थी। यह इमारत भरतपुर लाल पत्थर की बनी थी। और इस पर मकानें असली संगमरमर का फ़र्श था। ठीक इसी जगह, आप बैठे हैं, शामियाना चाँदी की मेख़ों पर खड़ा और काफ़ूरी शमादान जल रहे थे। ईरानी क़ालीन हुए थे। विलायती साटन के पर्दे पड़े थे। बादशा लिये काश्मीरी दस्तकारी की एक निहायत नर्म ख़ूबसूरत मसनद ठीक उस मुक़ाम पर रक्खी थी, आप वह क़ब्र देख रहे हैं। शायर लोग सफ़ बाँध बैठे थे। चोबदार, भालेबरदार, बरक़ंदाज़ अदब खड़े थे। नक़ीब ने आवाज़ दी—'हज़रत सलाम बरामदकर्द—मुजरा अदब से।' सब लोग सहमकर हो गए। बादशाह दो बाँदियों के कंधे का सहारा आए और मसनद पर बैठ गए। मुजरा हुआ, हज़रत के हुक्म से बालाई और क़ुलफ़ियाँ बाँटी इसके बाद मुशायरा शुरू हुआ। चिलमन के पीछे ज़ादियाँ और बेगमें बैठती थीं। शायरों के सामने बारी से शमादान रक्खा गया। उन्होंने अपनी-अ ग़ज़लें पढ़नी शुरू कीं। हर ग़ज़ल के ख़त्म होने वाह-वाह की गूँज होती थी। बादशाह सलामत ने हुए फ़र्माया—'इंजानिब ने भी एक शैर फ़र्माया है, भी सुनिए।' लोगों में सन्नाटा छा गया। बादशा अपनी ग़ज़ल पढ़ना ही चाहते थे कि एक बाँका गबरू सामने आ खड़ा हुआ। उसका रंग माफ़िक़ साफ़ और आँखें पानीदार थीं। उम्र साल से ज़्यादा न थी। वह ज़र्क़-बर्क़ पोशाक पहने एक गंगा-जमुनी काम की सुनहरी मूठ की तलवार कमर से लटक रही थी। यह बादशाह सलामत भतीजे वलीमुहम्मद के बेटे शाहज़ादा मिर्ज़ा अहमद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"बादशाह ने हैरत में आकर युवक को देखा। इस तरह एकाएक उसका मुशायरे में बादशाह सलामत के सामने आना तहज़ीब और क़ायदे के ख़िलाफ़ था। उसने दोज़ानू होकर बादशाह से अर्ज़ी की—'हज़रत, एक शेर मेरा भी सुन लिया जाय।' बादशाह बहुत नाराज़ हुए। मगर उन्होंने हुक्म दिया—'पढ़ो'।

"शमादान उसके सामने रक्खा गया। उसने काँपते हाथों से जेब से काग़ज़ निकाला। उसका मुँह चिलमन की तरफ़ था। उसका ख़ूबसूरत चेहरा शमादान की पीली और काँपती रोशनी में अजीब असर पैदा कर रहा था। शायरों में कभी यह न देखा गया था। न इसकी चर्चा थी। लोग हैरान थे। वे सन्नाटा खींचकर उसकी ग़ज़ल सुनने की इंतज़ारी में थे, जिसने बादशाह सलामत को बीच में रोक दिया था।

"युवक ने ग़ज़ल पढ़ी। आग थी, एक-एक हुरूफ़ तड़प रहा था। वह शायरी न थी, दिल के टुकड़े थे। लोग हैरान थे—तारीफ़ करें, या चुप रहें। बादशाह की त्योरियाँ चढ़ रही थीं। नौजवान शाहज़ादे की हरकत जैसी गुस्ताख़ाना थी, ग़ज़ल भी वैसी ही कुछ ज़रूरत से ज़्यादा रँगी हुई थी।

"ग़ज़ल ख़त्म हुई। त्योंही चिलमन में से एक चीख़ सुनाई दी, और धड़ाम से किसी के गिरने की आवाज़ आई। बाँदी ने ख़बर दी—'हुजूर शाहज़ादी लैला बेहोश हो गई है।' बादशाह उठे, मुशायरा बर्ख़ास्त हुआ, और वह नौजवान वहाँ पत्थर की तरह दोनो हाथों में मुँह छिपाए बैठा रहा।

(६)

"अँधेरे और मनहूस क़ैदख़ाने में, जहाँ रोशनी की गुंजाइश न थी, एक सूराख़ से, जिसमें मुशकिल से हाथ जा सकता था, हवा और रोशनी आती थी, और उसीमें से दिन में एक बार दो रोटी और एक सुराही पानी कोई रख जाता था। बद-नसीब नौजवान शाहज़ादा ज़िंदा ज़मीन में दफ़ना दिया गया था, जिसका क़ुसूर सिर्फ़ मुहब्बत थी। आह! क्या शाहज़ादियाँ पत्थर या आग की बनी होती हैं? क्या शाहज़ादी होने से उनमें से इंसानियत चली जाती है, जो वे इंसान के क़ाबिल ही नहीं रहतीं? क्या उनके दिल नहीं, हाड़-मांस नहीं, और रहम-करम कुछ नहीं? और ऐसे बादशाह, जो अपनी तमाम नाज़ुक-ख़याली शेरों में ख़त्म करते हैं क्या यह नहीं समझ सकते?

"इंसान से इंसान को मुहब्बत पैदा होनी अनहोनी बात तो नहीं। मगर मुग़ल-ख़ानदान की शाहज़ादियाँ हमेशा एक ऐसी अछूती चीज़ रहीं कि जिसने उनकी मुहब्बत का दम भरा, वह ज़हर देकर, आग में जलाकर, ज़िंदा दफ़न करके, पानी में डुबाकर या इस तरह सड़ाकर मार डाला गया। परंतु युवक शाहज़ादे के इन विचारों पर तरस खानेवाला वहाँ कौन था?

"एक साल बीत गया। सत्तावन का साल था। ग़दर ने ग़ज़ब कर दिया था। ७०० साल का जमा हुआ तख़्त उलट गया था। बादशाह पकड़े जाकर नज़रबंद किए गए। शाहज़ादे क़त्ल किए गए। शाही क़ैदी सभी छोड़ दिए गए। वह बद-नसीब शाहज़ादा भी उस अँधेरी और क़ब्र की तरह गंदी कोठरी से निकला। एक ही साल में वह बूढ़ा हो गया था—कमज़ोर, पीला और दुबला, हड्डियों का ढाँचा रह गया था, मगर वह सीधा महरौली आया। आकर जो देखा, कलेजा थामकर बैठ गया। यह महल ग़दर में तोपों से उड़ा दिया गया था, और खँडहर हो गया था। पूछने से पता लगा—लैला उसी दिन—जब वह हादसा हुआ था, मर गई या मार डाली गई—और इसी महल में दफ़ना दी गई थी। एक पुरानी शाही बाँदी ने, जिसने ग़दर में भागकर महरौली में रहना शुरू किया था, बताया कि यही क़ब्र शाहज़ादी लैला की है।"

इतना कहकर बुड्ढा बहुत थककर चुप हो गया। वह किसी गहरे विषाद में डूब गया। हमने पूछा—"जनाब! शाहज़ादे का फिर क्या हुआ?"

वह हँसा और बोला—"उसने लैला की क़ब्र से निकाह किया, और तब से अब तक उसी के पास रात-दिन रहता है, उसे साफ़ रखता है, उस पर चिराग़ जलाता है, और साल में चार बार सफ़ेदी करा देता है। इसी क़ब्र के पास उसने ७८ साल व्यतीत कर दिए हैं।"

हमने अकचकाकर पूछा—"क्या वह अभी ज़िंदा है?"

"यही बूढ़ा अपाहिज आदमी वह बद-नसीब शाहज़ादा है।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारत और जापान

[पं० लक्ष्मीनारायण दयालु अवस्थी]

भारत और जापान, दोनो एशिया-खंड के देश हैं। इनमें पहला बड़ा और दूसरा छोटा है। दोनो आपस में एक-दूसरे के पड़ोसी हैं। प्रकृति देवी ने भारत के लिये प्रत्येक चीज़ दे रक्खी है। उसके पैरों-तले सोने, चाँदी, कोयले आदि की खानें ठुकरा रही हैं। कई एक खानें तो अभी चल रही हैं, तथा कई एक चलने को हैं, और कइयों का अभी तक पता भी मालूम नहीं हुआ। संसार का सबसे बड़ा पहाड़, उत्तम-उत्तम पवित्र नदियाँ, स्वच्छ जल-वायु, अच्छी उपजाऊ भूमि, और नाना प्रकार की उत्तमोत्तम वस्तुएँ प्रकृति द्वारा भारत को प्रदान की गई हैं। क़रीब-क़रीब सभी आवश्यकीय चीज़ें भारतवर्ष में मौजूद हैं। यहाँ के निवासियों को दूसरों का मुँह ताकने की ज़रूरत नहीं। वे अपने पैरों खड़े रह सकते हैं। परंतु जापान के लिये मानो प्रकृति-देवी रूठ गई हो। उसका ऐसा हाल नहीं है। वहाँ पर भूकंप के मारे नाक में दम है। सदा भूकंप बना रहता है। कोयला, लोहा और तेल के समान चीज़ों की वहाँ न्यूनता है। मनुष्य-जीवन तथा कल-कारख़ानों के लिये, इन्हीं तीनो चीज़ों की नितांत आवश्यकता है। ये तीनो चीज़ें मनुष्य-जीवन के लिये खाद्य पदार्थ के समान आवश्यकीय हैं। परंतु जापान इन्हीं मुख्य चीज़ों के लिये परावलंबी है। यद्यपि उस पर प्रकृति देवी की अकृपा से ये चीज़ें पूर्णतया उसे प्राप्त नहीं हैं, तथापि स्वतंत्रता देवी उसका हाथ पकड़े हुए है, और वह अपनी उन्नति सपाटे के साथ करता जा रहा है। परंतु परतंत्रता-पाश में बँधा हुआ भारत-वर्ष जहाँ-का-तहाँ अवनत-दशा में पड़ा हुआ ज्यों-का-त्यों बना हुआ है। भारत के पास की एक भी चीज़ उसकी वास्तविक उन्नति का साधन नहीं बन सकती।

लड़ाई के पहले और उसके अनंतर भारत और जापान की कैसी दशा थी, और अब कैसी है, इन बातों को जानकर जिस समय तुलना करते हैं, तो जापान की उन्नति देखकर अवाक् रह जाना पड़ता है। यह बात समझ में आने लगती है कि स्वतंत्रता कैसी अनमोल वस्तु है। महायुद्ध के पहले जापान भी भारत के समान केवल खेती पर निर्वाह करनेवाला एक कृषि-प्रधान देश था। कच्चे माल को पैदा करके सस्ते भाव में बेच देना और उसी के पक्के माल को महँगे भाव में मोल लेना, यह भारत की तरह, वहाँ का मुख्य व्यवसाय था। ये दोनो देश एक ही समान थे, और दोनो की एक ही समान कहानी तथा व्यवसाय था। सन् १८६८ में जापान का परराष्ट्र-व्यापार केवल २,६२,४६,००० येन (एक येन १॥) रु०) का था। सन् १८८० में केवल २०० कारख़ाने थे, तथा उनमें १५०० आदमी काम करते थे। परंतु सन् १९१४ में काम करनेवालों की संख्या साढ़े नौ लाख तक पहुँच गई थी, और परराष्ट्र-व्यापार १,२२,३५,४२,००० येन का हो गया था। इससे पाठक अनुमान कर सकते हैं कि जापान ने अपनी कैसी अलौकिक उन्नति केवल चौबीस वर्षों में की। यह तो हुई लड़ाई के पहले की बात, परंतु लड़ाई के समय में जापान को व्यापार करने का ख़ासा मौक़ा मिल गया था। दूसरे राष्ट्र तो लड़ाई की गड़बड़ में पड़े हुए थे, उनका ध्यान पूरा व्यापार की ओर नहीं था, परंतु जापान उन दिनों करोड़ों का व्यापार कर रहा था। जल-मार्ग उसके लिये सदा से खुला हुआ है। वह निस्संकोच अपना माल भेज सकता है। भारत को पक्के माल की सदा ज़रूरत रही ही है। लड़ाई के दिनों में दूसरी विलायतों का माल आना कम हो गया था, इसलिये जापान को पूरा मौक़ा मिल गया। उसने भारत के बाज़ारों को अपने माल से पाट दिया था। भारतीयों के लिये उसने आवश्यकता की नई-नई वस्तुएँ बनाईं, नए आविष्कार करके लाभ उठाया और पैसा पैदा किया। उसको उन दिनों बड़ा श्रम उठाना पड़ा। परंतु उस परिश्रम की बदौलत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी अलौकिक उन्नति और अगणित द्रव्य प्राप्त कर लिया। एक छोटा-सा जापान आज दिन कर्म-पटायणता द्वारा बड़े राष्ट्रों के समान हो गया है। सन् १६२१ तक जापान में पचास हज़ार कारख़ाने बने, और उनमें १७,००,००० आदमी काम करने लगे। सन् १८८० से सन् १६२१ तक, केवल ४१ वर्षों में, उसने अपनी ढाई सौ गुनी उन्नति की। इसी प्रकार सन् १६१४ में रेशम के कारख़ानों की उन्नति पहले से पाँच-छः गुना अधिक बढ़ गई थी। रेशम ही जापान का ख़ास व्यापार और पैदावार है। रेशम वहीं पैदा होता है, और उसके कपड़े भी वहीं तैयार किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त लगभग और सभी चीज़ें जापान बाहर से कच्चे रूप में लाता है। और फिर उनको नया रूप देकर अर्थात् नया बनाकर व्यापार के लिये दूसरे देशों में भेज देता है, और ख़ासी रक़म पैदा करता है। जापान ने महायुद्ध के बाद से अबतक रेशम के व्यवसाय में ४५० गुनी अधिक उन्नति की। प्रत्येक वर्ष नब्बे करोड़ येन का रेशमी माल जापान और दूसरे देशों को भेजता है। इसी प्रकार और दूसरे व्यापारों और व्यवसायों में भी उसने अपनी अपूर्व उन्नति की। सन् १६१४ में कपास ६२,४६,००० पिकल (१ पिकल १३३॥ पौंड) पैदा हुआ था। वही सन् १६२७ में ६६,६७,००० पिकल हो गया। बहुत-से कारख़ाने बिजली से ही चलते हैं, इसलिये बिजली की भी शक्ति बढ़ाई गई। उसका व्यय १६१४ में केवल ७,१६,००० किलोवैट्स था। परंतु सन् १६२७ में वही ३६,००,००० किलोवैट्स करना पड़ा। महायुद्ध के पहले जापान में रंग नहीं बनता था। वह रंग दूसरे देशों से लाता था। परंतु अब उसने उसे भी बनाना आरंभ कर दिया। इस प्रकार जापान ने अपनी उन्नति की। जापान में जिधर देखो, उधर कारख़ाने-ही-कारख़ाने नज़र आवेंगे। मानो सारा जापान कारख़ानों और कलों का बना हुआ है। यह तो हुई जापान की बात। अब अपने भारत की ओर देखो और विचार करो। सन् १८६६ में यहाँ साढ़े छः सौ कारख़ाने थे, और सन् १६२५ में उनकी संख्या बढ़कर केवल सात हज़ार हुई। जितने समय में भारत ने अपनी केवल १० गुनी उन्नति की, उसी समय में जापान ने अपनी २५० गुनी उन्नति की। जापान और भारत की उन्नति में ज़मीन और आसमान का भेद है। यह केवल स्वतंत्रता की बलिहारी है। वह अपने भरोसे है, और सब कुछ कर सकता है। उसे भारत के समान दूसरों का मुँह थोड़े ही ताकना पड़ता है। भारत के समान वहाँ पर बेकारी बिलकुल नहीं है। वहाँ बेकार आदमी को काम ढूँढ़कर देते हैं, और जबतक काम न मिले तबतक उसको मुफ़्त कपड़े व भोजन दिया जाता है। यह बात भारत के लिये कहाँ नसीब हो सकती है। बेकार रहकर मज़े में भीख माँगा करो, यहाँ कोई नहीं पूछने का। वहाँ की सरकार हरएक बात की ओर लक्ष देती है, व्यापार और व्यवसाय की ओर अधिक ध्यान रखती है, तथा अपने पास का पैसा लगाती है। इस विषय में भारत का जो हाल है, वह पाठक स्वयं जानते हैं, लिखना वृथा है।

महायुद्ध के ज़माने से जापान ने एक बड़ा सबक़ सीख लिया है। वह उसी समय से यह जान गया है कि किसी के भरोसे रहना ठीक नहीं, अपनी ही मातृभूमि अपनी आवश्यकताओं को पूर्ति करेगी और खाने को देगी। इसी लिये वह और राष्ट्रों के भरोसे नहीं है। उसने प्रत्येक प्रकार का माल अपने यहाँ ही बनाना सीखा। उसने परराष्ट्र-व्यापार बढ़ा दिया। ख़ासकर भारत के लिये तो वह एक विलायत ही बन गया। कृषि में भी उसने अलौकिक उन्नति की। केवल पचास वर्षों में ही जापान की जन-संख्या दूनी बढ़ गई। वहाँ की जन-संख्या पहले जो तीन करोड़ थी, वह एकदम छः करोड़ हो गई। ऐसी दशा में जब उन्होंने देखा कि अपना निर्वाह इस छोटे-से देश में नहीं हो सकता और बड़ी कठिनता पड़ती है, तो उन्होंने अपने पैर कोरिया की ओर बढ़ाए। वहाँ जाकर बस गए। जब कोरिया में उनका निवास हो चुका, तब उन्होंने अपने पैर आगे बढ़ाए और दूसरे राष्ट्रों में जाने का यत्न करने लगे। परंतु जापान की रहन-सहन साधारण होने के कारण दूसरे बड़े देशों ने उससे घृणा की, अपने द्वार बंद कर लिए, इनका प्रवेश न हो पाया। अमेरिका ने तो प्रतिबंधक क़ानून ही पास कर डाला। जापानियों ने पूर्ण विश्वास कर लिया कि अपनी मातृभूमि ही अपनी रक्षा करेगी, और खाने को देगी। बाहर भटकना ठीक नहीं। कोई अपने देश के अधिकार किसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को क्यों देने लगा। जब हमारा पेट हमारी मातृभूमि ही नहीं भर सकती है, तो फिर और दूसरा कौन भर सकेगा। पर-राष्ट्र में जाकर दूसरों की सेवा करके अपना पेट पालना जापानियों को पसंद नहीं आया। कुलीगीरी करना उसने ठीक न समझा। वहाँ से फिर लौटकर अपने ही देश में आकर उन्होंने अपनी कृषि, व्यापार, वाणिज्य, कला-कौशल आदि की अपूर्व उन्नति की। आज अपने पैरों वे एक स्वतंत्र राष्ट्र-वासियों के समान खड़े हुए हैं। आज वहाँ की जन-संख्या का ५०% खेती कर रहा है, और ५०% व्यवसाय। बहुधा लोग खेती को छोड़कर व्यवसाय की ओर अधिक ध्यान देते हैं। परंतु हिंदोस्तान की दशा निराली है। यह तो केवल खेती के भरोसे पर ही है। यहाँ की ७२ प्रति शत जनता खेती करती है। उद्योग-धंधों में केवल ११·२ मनुष्य काम करते हैं। व्यापार ५-६ मनुष्य करते हैं, और नौकरी १०°। इसके अतिरिक्त जो शेष रहे, वे पर-राष्ट्रों में जाकर मज़दूरी करके अपना पेट पालते हैं, और बुरी तरह अपमानित होते हैं। यह दशा इस परतंत्र भारत की है, और वह दशा स्वतंत्र जापान की! जब हमारा भारतवर्ष व्यापार और व्यवसाय की ओर अधिक ध्यान देगा, साथ-ही-साथ अपनी कृषि की भी वास्तविक उन्नति करेगा, तब तो इसका निर्वाह हो सकता है, अन्यथा जो कठिनाइयाँ आज दिन उठानी पड़ रही हैं, इनसे कहीं और अधिक दुःख न उठाने पड़ेंगे।

जापान ने अपनी उन्नति अवश्य की, परंतु साथ ही उसे बड़ी-बड़ी आपत्तियाँ भी उठानी पड़ीं। बिना परिश्रम और धैर्य के कभी सफलता नहीं मिलती। सतत परिश्रमी होना चाहिए। जापान को सन् १९२० में माल का भाव उतर जाने के कारण बड़ा घाटा उठाना पड़ा था। अपूर्व आर्थिक हानि पहुँची। उसने जो माल रुपए में बनाया था, उसको आठ-आठ आने और चार-चार आने में बेचना पड़ा। लगे हाथ सन् १९२३ में वहाँ भूकंप हुआ, जिसके कारण अनेक मनुष्यों की जानें गईं, और आर्थिक हानि भी हुई। सन् १९२७ में चीनियों ने जापान के माल का बहिष्कार कर दिया था, इसलिये फिर उसको भारी नुक़सान उठाना पड़ा। परंतु वह ऐसी दैविक और मानवीय आपत्तियों से डरा नहीं। वह हताश नहीं हुआ, वरन् अपना काम पूर्ववत् ही चलाता रहा। आज उसकी दशा पहले से कई गुनी उत्तम और उन्नति की ओर अग्रसर है। जापान की सरकार किस व्यवसाय-प्रेमी और प्रजा-वत्सल है, यह उसकी केवल एक मोटी बात जानकर ही आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि उसने राष्ट्रीय कर का आधा भाग व्यवसाय की ओर लगा दिया है। आज दिन सन् १९१४ की अपेक्षा चार-पाँच गुना अधिक रेशमी माल वहाँ बनता और बाहर भेजा जाता है। केवल रेशम ही के व्यवसाय में उन्नति हुई हो, सो बात नहीं है। प्रत्येक व्यवसाय पहले से दूने-तिगुने बढ़ गए हैं। वहाँ पर कपड़े और कपास का काम इतने ज़ोरों पर चलता है कि उसके मारे लंकाशायर तक काँप उठता है। कपड़ों के अगणित कारख़ाने हैं; और उनकी बदौलत लंकाशायर को भारी धक्का पहुँचा। कपड़े ही के समान ऊनी माल, लोहे और फ़ौलादी सामान में उसने ऐसी उन्नति की है कि बड़े-बड़े राष्ट्रों को चकित कर दिया है। बड़े-बड़े राष्ट्र भी इस छोटे-से जापान की उन्नति देख चकित रह जाते हैं। इस ज़रा-से जापान ने उनके बड़े-बड़े व्यवसायी बाज़ार को धक्का पहुँचा दिया, सो भी बहुत थोड़े समय में। इतना ही नहीं, उसने सारे संसार के व्यवसायियों में तीसरा नंबर पा लिया है। अब पाठक विचार करें कि कहाँ छोटा-सा जापान और कहाँ यह इतना बड़ा हिंदोस्तान। परंतु जापान केवल अपनी स्वतंत्रता के बल पर इतनी उन्नति कर गया है, और वह सब कुछ कर सकता है।

इन बातों से पाठक स्वयं अनुमान करेंगे कि हम किसके सामने ग्राहक बनकर सौदा लेने जानेवाला जाति आज दिन सेठ बनकर सौदा देनेवाला बन गया। यह किसे मालूम था कि इतने थोड़े समय में वह ऐसी अलौकिक उन्नति करके दूसरे बड़े राष्ट्रों का मुक़ाबला करने लगेगा। परंतु यह सब व्यवसाय, सतत परिश्रम और स्वातंत्र्य की कृपा का परिणाम है। इन तीनों में से हमारे हाथ में अभी एक भी नहीं है। यदि हम ख़ूब परिश्रम और व्यवसाय करने भी लगें, तो भी जब तक व्यापार-स्वातंत्र्य प्राप्त नहीं है। जब तक स्वातंत्र्य न होगा, तब तक हमारी कभी उन्नति नहीं हो सकती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गीत

[पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"]

(१)

पास ही रे हीरे की खान,
खोजता कहाँ उसे नादान ?
कहीं भी नहीं सत्य का रूप,
अखिल जग एक अंध-तम-कूप,
ऊर्मि-घूर्णित रे मृत्यु महान्,
खोजता कहाँ यहाँ नादान ?

(२)

विश्व तेरे नयनों से फूट
प्रश्न चित्रों का फैला कूट,
साँस तेरी बनती तूफान
बहा ले जाती तन-मन-प्राण,
डूब जाता तेरा जल-यान,
खोजता कहाँ यहाँ नादान ?

(३)

दैत्य-जड़-दंष्ट्राओं के बीच
पीसता तू हो अपनी मीच;
उठा जब, उच्च; गिरा, तब नीच;
मिला, तो मृदुल; गया, पाषाण;
तुझी में अखिल सृष्टि को शान—
खोजता कहाँ उसे नादान ?

(४)

चक्र के सूक्ष्म छिद्र के पार
बेधना तुझे मीन शर मार
चित्त के जल में चित्र निहार,
कर्म का कार्मुक कर में धार,
मिलेगी कृष्णा, सिद्धि महान्—
खोजता कहाँ उसे नादान ?

(५)

एक तू ही उर से रस खींच
भावनाओं के द्रुम-दल-बीच,
खोल देता दृग-जल से सींच
कामना की कलियों के प्राण;
बेचता तू ही रे निज ज्ञान,
खोजता फिरता फिर नादान ?

(६)

व्यर्थ की चिंता में चित डाल
गूँथ अपना ही मायाजाल,
फँसा पग अपने तू तत्काल
बुलाता औरों को बेहाल;
सकल तेरा आदान-प्रदान
खोजता कहाँ हाय नादान ?

(७)

स्पर्श-मणि तू ही अमल, अपार
रूप का फैला पारावार,
व्यष्टि में सकल सृष्टि का सार,
कामिनी की लज्जा, शृंगार
खोलते-खिलते तेरे प्राण,
खोजता कहाँ उसे नादान ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह

[साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ]

(१)

स समय जमरूद में महाराजा जसवंतसिंहजी की मृत्यु हुई, उस समय उनकी नरूकी और जादमन *-वंश की दो रानियाँ गर्भवती थीं। अतः महाराज के साथ के सरदारों ने इन्हें सती होने से रोक लिया। इसके बाद महाराज के द्वादशाह का कार्य समाप्त हो जाने पर वे लोग इन्हें साथ लेकर वि० सं० १७३५ की माघ सुदी १३ (ई० सन् १६७६ की १४ जनवरी) को लाहौर की तरफ़ रवाना हो गए।

इनके अटक नदी पर पहुँचने पर, पहले तो वहाँ के शाही हाकिम ने इन्हें बादशाही आज्ञा या काबुल के सूबेदार का परवाना न होने के कारण रोकने की चेष्टा की, परंतु जब ये लोग मरने-मारने और नावों पर जबरदस्ती अधिकार करने को उद्यत हो गए, तब अंत में उसने इन्हें अटक पार करने की आज्ञा दे दी †। इसके बाद इनके लाहौर पहुँचने पर वि० सं० १७३५ की चैत्र वदी ४ (ई० सन् १६७६ की १६ फ़रवरी) बुधवार को इन रानियों के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें से बड़े राजकुमार का नाम अजितसिंह और छोटे का दलथंभन रक्खा गया।

इधर यह हो रहा था, और उधर बादशाह औरंगज़ेब इस घटना की सूचना पाते ही स्वर्गीय महाराज के कुटुंब से बदला लेने का प्रबंध कर रहा था। यद्यपि महाराजा जसवंतसिंहजी ने बार बार को छेड़छाड़ से वह प्रारंभ से ही उनसे मन-ही-मन द्वेष रखता था, तथापि उनके जीते-जी खुलकर शत्रुता करने की उसको हिम्मत न हुई थी। परंतु महाराज के इस प्रकार निस्संतान जाने से उसे अच्छा मौक़ा मिल गया। अतः वि० सं० १७३५ की माघ सुदी १२ (ई० सन् को ११ जनवरी) को ख़िदमतगुज़ारख़ाँ को जो का क़िलेदार, ताहिरख़ाँ को फ़ौजदार, शेख को अर्मान (तहसीलदार) और अब्दुलरहीम कोतवाल बनाकर मारवाड़ को रवाना किया कुछ दिन बाद वह स्वयं भी मारवाड़ पर

---

* बालकृष्ण दाक्षित-रचित अजित-चरित्र में लिखा है—

अतःपरं यादवराजपुत्र्या जन्मान्तरीयं कथयाम्युदन्तम् ;
अजीतसिंहो जनितो ययात्र कार्ये गुणाः कारणतो भवन्ति।
(सर्ग ६, श्लोक १)

† सैहरुल-मुताख़रीन में 'मारवहर' को आहत और परास्तकर राठौड़-सरदारों का अटक पार होना लिखा है। (देखो जिल्द १, पृ० ३४३)

मुंतख़िबुल्लुबाब से भी इस बात की पुष्टि होती है। (भा० २, पृ० २५६)

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७२। महाकवि जीवन-रचित अजितोदय-नामक (३२ सर्गों के) ऐतिहासिक संस्कृत-काव्य से ज्ञात होता है कि पहले बादशाह की आज्ञा से हफ़ीज़ियारख़ाँ-नाम का मारवाड़ पर अधिकार करने के लिये अजमेर से आया था। परंतु उसके आगमन की सूचना राठौड़ वीर उसके मुक़ाबले को पहुँच गए। नगर के बाहर ही रुक जाना पड़ा। इसके बाद पत्र द्वारा यहाँ का सारा हाल बादशाह को लिख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिकार करने के लिये अजमेर की तरफ़ रवाना हुआ। इसके साथ ही उसने असदख़ाँ, शाइस्ताख़ाँ और शाहज़ादे अकबर को भी अपने-अपने सूबों से वहाँ पहुँचने की आज्ञाएँ भेजीं। परंतु औरंगज़ेब के मन में स्वर्गवासी महाराज से इतना डाह था कि उसे अपने अजमेर पहुँचने तक का विलंब भी सहन न हो सका। इसी से उसने मार्ग से ही फाल्गुन सुदी ७ (७ फ़रवरी) को ख़ाँजहाँ बहादुर और हुसैनअलीख़ाँ आदि अपने बड़े-बड़े अमीरों को मारवाड़ पर अधिकार करने के लिये आग भेज दिया *।

इसी बीच महाराजा जसवंतसिंहजी की मृत्यु का समाचार पाकर उनके सरदार भी अपने-अपने स्थानों से आकर जोधपुर में एकत्रित होने और ख़ाँजहाँ बहादुर † से सम्मुख रण में लोहा लेने का विचार करने लगे। परंतु अंत में भाटी रघुनाथसिंह ‡ ने महाराजा के मंत्री कायस्थ केसरीसिंह से सलाहकर रानियों के पुत्र उत्पन्न होने की सूचना मिलने और स्वर्गवासी महाराज के साथ के दल के मारवाड़ में पहुँचने तक युद्ध करने का विचार रोक दिया, तथा भाटी रामसिंह को कुछ सरदारों के साथ ख़ाँजहाँ बहादुर से संधि करने के लिये रवाना किया। भाटी रामसिंह ने भी उसके पास पहुँच मारवाड़ का अधिकार उसे सौंप देने का वादा § कर लिया। परंतु इसके साथ ही यह शर्त भी तै की गई कि यदि महाराज की गर्भवती रानियों में से किसी के भी पुत्र उत्पन्न होगा, तो बादशाह की तरफ़ से मारवाड़ का राज्य उसे लौटा दिया जायगा।

इसके बाद ख़ाँजहाँ बहादुर ने मेड़ते पहुँच उसे शीघ्र ही अधिकार में ले लिया। वहाँ से चलकर जिस समय वह पीपाड़ पहुँचा ¶, उसी समय लाहौर में महाराजकुमारों के जन्म होने की सूचना भी सरदारों के पास आ पहुँची। यहाँ से आगे बढ़कर ख़ाँजहाँ ने जोधपुर पर अधिकार करने का इरादा किया, और वह नगर के बाहर पहुँच शेखावतजी के तालाब पर ठहर गया। इसकी सूचना पाते ही चाँपावत वीर सोनग ‡ ने उसको रोकने का इरादा किया। परंतु भाटी रघुनाथसिंह आदि ने समय की गति का ध्यान दिलाकर उसे ऐसे समय युद्ध छेड़ देने से रोक दिया §। इस पर ख़ाँजहाँ ने जोधपुर का प्रबंध ताहिरख़ाँ को सौंप सिवाना, सोजत, जैतारण आदि प्रांतों पर भी यवन-शासक नियत कर दिए ¶। इस प्रकार मारवाड़ पर यवनों का अधिकार हो जाने से यहाँ के मंदिर और मूर्तियाँ नष्ट की जाने लगीं। परंतु बालक महाराजकुमारों और उनके मुख्य-मुख्य सरदारों के मारवाड़ से

इसी से उसे स्वयं अजमेर की तरफ़ आना पड़ा। (सर्ग ५, श्लो० ३४-४३)

इसी (इफ़्तियारख़ाँ) इफ़्तख़ारख़ाँ के स्थान पर वि० सं० १७३५ की चैत्र बदी ११ (ई० सन् १६७६ की २६ फ़रवरी) को औरंगज़ेब ने तहव्वरख़ाँ को अजमेर का फ़ौजदार नियत किया था। (मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७३)

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७२

† अजितोदय में इसका नाम बहादुरख़ाँ लिखा है। (देखो सर्ग ५, श्लो० ४४)

‡ यह लवेरे का ठाकुर था।

* अजितोदय सर्ग ५, श्लो० ४५-५४।

† अजितोदय सर्ग ५, श्लो० ५५-५६।

‡ यह चाँपावत बिट्ठलदास का पुत्र था।

§ अजितोदय सर्ग ६, श्लो० २७-२६।

¶ अजितोदय सर्ग ६, श्लो० ४६, ५१-५३।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाहर होने के कारण यहाँ के उपस्थित राठौड़-वीरों ने उपद्रव करना उचित न समझा।

बादशाह भी वि० सं० १७३५ की चैत्र बदी ४ (ई० सन् १६७६ को १६ फ़रवरी) को अजमेर पहुँच उपर्युक्त कार्यों की गति-विधि देख रहा था। परंतु चैत्र बदी ११ (२६ फ़रवरी) को जब उसे स्वर्गवासी महाराज के वकील द्वारा महाराज-कुमारों के जन्म की सूचना मिली *, तब उसने अपना पथ निष्कंटक करने के लिये देहली लौटने का विचार किया। इसी के अनुसार उधर तो चैत्र सुदी ६ (१० मार्च) को उसने सैयद अब्दुल्लाख़ाँ को स्वर्गवासी महाराज के सामान और द्रव्य आदि पर अधिकार करने के लिये सिवाने के दुर्ग पर भेजा †, और इधर स्वर्गवासी महाराजा के माल-असबाब पर अधिकार करने तथा मारवाड़-राज्य की आय का हिसाब तैयार करने का प्रबंध कर स्वयं दोनो नवजात कुमारों को छीन लेने के लिये देहली को चला।

यद्यपि बादशाह औरंगज़ेब मज़हबी मामलों में आरंभ से ही कट्टर होने के कारण हिंदुओं से मन-ही-मन बड़ा द्वेष रखता था, तथापि महाराज जसवंतसिंहजी के जीते-जी उसे खुलकर अत्या नहीं कर सका था। अतः इस समय उनका स्व वास हो जाने से वह निश्शंक हो गया, और देह पहुँचते ही उसने वि० सं० १७३६ को वैशाख सु २ (ई० सन् १६७६ की २ एप्रिल=हि० सन् १० को १ रबी-उल्-अव्वल) को हिंदुओं से जज़िया वसूल करने की आज्ञा प्रचारित कर दी।

जब मारवाड़ में बादशाही प्रबंध हो गया, त ख़ाँजहाँ बहादुर भी मंदिरों के तोड़ने से एकत्र हुई मूर्तियों को गाड़ियों में भरकर द्वितीय बदी ११ (२५ मई) को देहली जा पहुँचा। इसी के साथ भाटी रघुनाथ और मंत्री केसरीसिं (कायस्थ) भी कई सरदारों को साथ ले बादशाह से प्रार्थना करने के लिये देहली गए थे।

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७२-१७४

† अजितोदय में बहादुरख़ाँ (ख़ाँजहाँ) के द्वारा को-चकवेड़ा का सिवाने भेजा जाना लिखा है। (देखो सर्ग ६, श्लो० ५१) परंतु यदुनाथ सरकार की लिखी 'हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब' से ज्ञात होता है कि चैत्र बदी १४ (१ मार्च) को पहले-पहल ख़िदमतगुज़ारख़ाँ ही सिवाने के क़िले और ख़ज़ाने पर अधिकार करने के लिये भेजा गया था। परंतु जब वहाँ का ख़ज़ाना उसके हाथ न लग सका, तब दूसरा सेनापति (सैयद अब्दुल्लाख़ाँ) वहाँ के लिये नियत किया गया, और उसको आज्ञा दी गई कि वहाँ की पृथ्वी तक को खोद-कर माल-असबाब का पता लगावे। (देखो भा० ३, पृ० ३७०-३७१)

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७४। यह कर हबो कर था, जो मुसलमान बादशाह मुसलमानेत्तर धर्मवालों से लिया करते थे। परंतु अकबर ने इस प्रथा को अपने राज्य के लिये हानिकारक समझ रद कर दिया था।

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७५। उसमें य भी लिखा है कि बादशाह ने ख़ाँजहाँ को शाबा देकर आज्ञा दी कि इन मूर्तियों को दरबार के और जुमा-मसजिद के आगे डलवा दे, ताकि वे लो के पाँवों के नीचे कुचली जाती रहें। इनमें की मूर्तियाँ जड़ाऊ, सोने, चाँदी, ताँबे और पीतल की कुछ पत्थर की थीं।

‡ अजितोदय में ख़ाँजहाँ का पहले राठौड़-दारों को लेकर बादशाह के पास अजमेर जाना वहाँ से उसके साथ ही देहली लौटना लिखा (देखो सर्ग ६, श्लो० ५६-५७)

ईश्वरदास ने लिखा है कि ख़ाँजहाँ के मारवाड़ राज्य महाराज जसवंतसिंह के नवजात कुमार का निवेदन करने पर बादशाह उससे असहम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बादशाह ने नवजात कुमारों के लिये राठौड़-सरदारों का आग्रह देख इसके दूसरे ही दिन उनमें फूट डालने के लिये स्वर्गवासी महाराज के बड़े भ्राता राव अमरसिंहजी के पौत्र (रायसिंह के पुत्र) इंद्रसिंह को ख़ासा ख़िलअत, जड़ाऊ साज़ की तलवार, सोने के साज़ का घोड़ा, हाथी, नक्कारा और निशान देकर जोधपुर का राजा बना दिया *। इस पर उसने भी इसकी एवज़ में बादशाह को ३६ लाख रुपए नज़र करने की प्रतिज्ञा की। इसके बाद वह जोधपुर पर अधिकार करने के लिये देहली से नागोर पहुँचा, और वहाँ के राठौड़-सरदारों को अपनी तरफ़ मिलाने की कोशिश करने लगा। अजितोदय † से ज्ञात होता है कि यह नागौर से जोधपुर भी पहुँचा था, परंतु राठौड़ों ने आपस में ही लड़कर अपना बल क्षीण करना उचित न जान उससे किसी प्रकार की छेड़-छाड़ नहीं की।

इसी बीच काबुल से चला हुआ राठौड़ों का दल भी कुछ दिन लाहौर में ठहर आषाढ़-शुक्ल (जून के अंत) में देहली आ पहुँचा ‡, और मारवाड़ से आए हुए सरदारों के साथ मिलकर बालक महाराज अजितसिंहजी को मारवाड़ का राज्य देने का आग्रह करने लगा। इस पर बादशाह ने उत्तर दिया कि अभी तो यह बालक ही हैं। अतः कुछ दिन तक इन्हें और इनकी माताओं को नूरगढ़ § में रहने दो। जब यह बड़े हो जायँगे, तब इन्हें इनका राज्य दे दिया जायगा †। परंतु राठौड़ों ने यह बात नहीं मानी। यह देख औरंगज़ेब राठौड़-सरदारों को अनेक तरह के प्रलोभन देने लगा। जब इसमें भी वह कृतकार्य न हो सका, तब उसने स्वर्गवासी महाराज के मंत्री केसरीसिंह से महाराज के ख़ज़ाने का हिसाब आदि समझाने का बखेड़ा शुरू किया, और उसके इनकार करने पर उसे क़ैद में डाल दिया। परंतु इस पर भी वह स्वामि-भक्त मंत्री विचलित न हुआ, और अन्न-जल त्यागकर इस संसार के बंधन से ही मुक्त हो गया ‡।

इसके बाद राठौड़-वीरों ने सलाहकर बादशाह से प्रार्थना की कि हममें से बहुत-से सरदार अपने-अपने कुटुंबों के साथ देश को जाना चाहते हैं। अतः यदि आप आज्ञा दें, तो रवाना हो जायँ। इस पर बादशाह ने भी वहाँ पर इनकी संख्या के कम हो जाने में अपना लाभ समझ यह बात स्वीकार § कर ली। परंतु साथ ही यह आज्ञा भी दी कि नवजात कुमारों और दोनो रानियों को यहीं रक्खा जाय। इस पर दुर्गादास आदि तीन सौ सरदार तो देहली में ही रहे, और बाक़ी सरदार जोधपुर को रवाना हो गए ¶।

गया। (हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ३, पृ० ३७२ का फुटनोट)

नहीं कह सकते कि यह घटना इसी अवसर की है या बादशाह के दुबारा अजमेर आने पर भाटी रामसिंह के बादशाह को समझाने के लिये ख़ाँजहाँ को पत्र लिखने के समय की है। (देखो अजितोदय सर्ग ६, श्लो० १८)

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७५-१७६

† देखो सर्ग ६, श्लो० १-७

‡ वास्तव में यह ईसवी सन् १६७६ की जुलाई में देहली में पहुँचा था।

§ अजितोदय में सलेमकोट लिखा है। (सर्ग ६, श्लो० ६६)

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७७

‡ अजितोदय सर्ग ६, पृ० ६७-७३, ७६

§ सैहरुल-मुताख़रीन भा० १, पृ० ३४३

¶ अजितोदय सर्ग ६, श्लो० ८५-९०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसी अवसर पर दलथंभन का स्वर्गवास हो गया। अतः इन लोगों ने बालक नरेश अजितसिंहजी को वहाँ से निकाल ले जाने का प्रबंध किया। यद्यपि इनकी देख-भाल के लिये शाही गुप्तचरों और सैनिकों का पूरा-पूरा पहरा बिठा दिया गया था, तथापि बलूँद के चाँदावत सरदार मोहकम-सिंह की स्त्री बाघेली के साथ यह सकुशल देहली से निकाल दिए गए।

अजितोदय में लिखा है कि चाँदावत मोहकम-सिंह की स्त्री ने अपनी दूध पीती हुई कन्या को तो अजितसिंहजी की धाय को सौंप दिया, और वह इन्हें लेकर मारवाड़ की तरफ़ रवाना हो गई। यह देख उसका पुत्र हरिसिंह और खीची वीर मुकुंद-दास भी उसके पीछे हो लिए *। इन लोगों के निकल जाने पर देहली में ठहरे हुए सरदारों ने शाही पुरुषों को धोका देने के लिये एक बालक को बनावटी राजकुमार बना लिया।

मारवाड़ में पहुँचने पर कुछ दिन तक तो बालक महाराज † बलूँदे में ही रक्खे गए। परंतु इसके बाद उक्त स्थान के चारो तरफ़—जैतारण, मेड़ता, बीलाडा और सोजत आदि में—मुसल-मानों का अधिकार देख खीची मुकुंददास और दुर्गादास इन्हें सिरोही की तरफ़ ले गए ‡, और वहाँ पर स्वर्गवासी महाराजा जसवंतसिंहजी की रानी देवड़ोजी § को सलाह से पुरोहित जय-देव-नामक पुष्करणे ब्राह्मण को स्त्री को सौंप दिया। वह भी अपने गाँव कालिंद्री में रहकर इनका लालन-पालन बड़ी होशियारी से करने लगी। खीची मुकुंददास भी संन्यासी का वेशधर वहीं आस-पास में बस गया, और दूर से ही बालक महाराज पर दृष्टि रखने लगा *।

* अजितोदय सर्ग ६, श्लो० ११-१३, राज-रूपक में मोहकमसिंहजी की स्त्री का उल्लेख नहीं है। (देखो पृ० ११)

† अजितोदय सर्ग ७, श्लो० १

‡ अजितोदय सर्ग ७, श्लो० ४-७

§ क्योंकि सिरोही का राव बादशाह के भय से इन्हें अपने यहाँ रखने में सहमत नहीं हो सका था।

* राजपूताने के इतिहास में लिखा है कि राठौड़ दिल्ला से अजीतसिंह को साथ लेकर मारवाड़ की तरफ़ गए, परंतु संपूर्ण जोधपुर-राज्य पर बादशाह का अधिकार हो जाने से अजितसिंह की चिंता रहने के कारण दुर्गादास, सोनिग आदि ने महाराणा राजसिंह को अर्ज़ी लिखकर अजितसिंह को अपनी शरण में लेने की प्रार्थना की। उसे स्वीकार करने पर वे अजितसिंह को महाराणा के पास ले गए और महाराणा को नज़र ज़ेवर-सहित एक हाथी, ११ घोड़े, एक तलवार, रत्न-जटित कटार, दस हज़ार दीनार (चाँदी का सिक्का) नज़र किए। महाराणा ने उसे १२ गाँवों-सहित देलवाड़े का पट्टा देकर वहाँ रक्खा, और दुर्गादास आदि से कहा कि बादशाह सीसोदियों और राठौड़ों की सम्मिलित सेना का मुक़ाबला नहीं कर सकता, आप निश्चित रहिए। (देखो भा० ३, पृ० ८६५)

वह (सोनिग) उस (महाराजा जसवंतसिंह) की मृत्यु के पीछे राठौड़ दुर्गादास के साथ महाराजा अजितसिंह को लेकर महाराणा राजसिंह के पास आया। अजितसिंह के मेवाड़ से चले जाने के पश्चात् सोनिग भी राठौड़ दुर्गादास के साथ राठौड़ों की सेना का मुखिया बनकर लड़ा। (देखो भा० ३, पृ० ८६७ का पृ० ८६६ के फ़ुटनोट १८ का शेषांश)

औरंगज़ेब के साथ महाराणा की संधि होने के पश्चात् सोनिग आदि राठौड़ महाराजा अजितसिंह को मेवाड़ से सिरोही इलाक़े में ले गए, वहाँ वह कुछ वर्षों तक गुप्त-रूप से रक्खा गया। (देखो भा० ३, पृ० ८६१ का फ़ुटनोट नं० ३)

जोधपुर के महाराज अजीतसिंह ने भी उन (सोनिगरा ही के देवड़ों) की सहायता की, क्योंकि वह उनके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार जब बहुत-से राठौड़-सरदार मारवाड़ की तरफ़ चले गए, तब पीछे से सावन बदी २ (१५ जुलाई) को बादशाह ने देहली के कोतवाल फ़ौलादख़ाँ को राठौड़ों के स्थान पर भेजा।

छोड़ने के बाद कई वर्ष तक सीरोही-राज्य में रहा था। इस बात से महाराणा और अजीतसिंह के बीच मनमुटाव हो गया। परंतु कुछ समय बाद स्वयं अजीतसिंह ने... महाराणा से मेल करना चाहा।...महाराजा को जोधपुर प्राप्त करने के लिये महाराणा की सहायता की आवश्यकता थी। (देखो भा० ३, पृ० ६१०)

परंतु वास्तव में बालक महाराजा अजितसिंहजी देहली से चाँदावत ठाकुर मोहकमसिंह की ठकुरानी के साथ बलूँदे भेज दिए गए थे। उस समय खीची मुकुंददास भी इनके साथ था। इसके बाद यहाँ पर बालक महाराज का सुरक्षित रहना असंभव समझ राठौड़-वीर दुर्गादास और मुकुंददास इन्हें लेकर सिरोही पहुँचे और वहाँ पर ये स्वर्गवासी महाराजा जसवंतसिंहजी की रानी देवड़ाजी की सलाह से कालिंद्री के पुरोहित ब्राह्मण जयदेव की स्त्री को गुप्त-रूप से सौंप दिए गए।

इस विषय में हम मारवाड़ और मेवाड़ के इतिहासों को छोड़कर तटस्थ लेखक यदुनाथ सरकार की 'हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब' से कुछ अवतरण उद्धृत करते हैं—

.....दुर्गादास आकर फिर (मार्ग में) अपने बालक महाराज से मिला और उन्हें (२३ जुलाई) को सकुशल मारवाड़ में ले आया।

अजितसिंह ने गुप्त-रूप से आबू के दुर्गम पर्वतों के मठ में परवरिश पाई। (भा० ३, पृ० ३७८)

उसी में आगे लिखा है कि

इस समय उदयपुर-नरेश के सामने दो बातें थीं। या तो वे बाग़ी राठौड़ों का साथ देते या अपनी स्वाधीनता को छोड़ते। मारवाड़ पर बादशाही अधिकार हो जाने से उनके पहाड़ी स्थान भी ख़तरे में पड़ गए थे। इसके अलावा महाराणा को भी जज़िया देने के लिये दबाया गया था। इसीसे महाराणा ने राठौड़ों का साथ दिया। बहुत-से सीसोदिए भी गोड़वाड़ में आए हुए राठौड़ों से मिल गए थे। (देखो भा० ३, पृ० ३८२-३८३)

इसके अलावा उस समय महाराजा जसवंतसिंहजी का सारा माल-असबाब बादशाह ने छीन लिया था और सारे ही मारवाड़ पर मुग़लों का अधिकार हो गया था। इससे राठौड़-सरदार भी संकट में थे। ऐसी हालत में बालक महाराज की तरफ़ से महाराणा को सब ज़ेवरों से सजा हुआ हाथी और दस हज़ार रुपए आदि नज़र करना और उनका महाराज को मेवाड़ में रखकर जागीर देना कहाँ तक ठीक है।

अजितसिंह के मेवाड़ से चले जाने पर सोनग का राठौड़ दुर्गादास के साथ होकर शाही सेना से लड़ने का उल्लेख भी विचारणीय है; क्योंकि इन दोनों ने वि० सं० १७३६ (ई० सन् १६८०) में ही जालोर के बिहारी पठान फ़तेहख़ाँ पर हमला किया था।

अस्तु। इधर-उधर की बातों को छोड़कर हम वास्तविक बात पर ही विचार करना उचित समझते हैं।

स्वयं राजपूताने के इतिहास में बादशाह के और महाराणा के बीच वि० सं० १७३८ की श्रावण वदी ३ (ई० सन् १६८१ की २४ जून) को संधि होना लिखा है (देखो भा० ३, पृ० ८६७), परंतु दुर्गादास तो इससे २३ दिन पूर्व ही दक्षिण में शंभाजी के राज्य के पालीनगर में जा पहुँचा था। (देखो हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ४, पृ० २४६) मआसिरे-आलमगीरी में भी अकबर और दुर्गादास का (हि० सन् १०९२ की ७ जमादि-उल-अव्वल (वि० सं० १७३८ की ज्येष्ठ सुदी ८ =ई० सन् १६८१ की १५ मई) को दक्षिण में पहुँचना लिखा है, और महाराणा के साथ की संधि की तिथि ७ जमादि-उल-आख़िर (आषाढ़ सुदी ६ = १४ जून) लिखी है। (देखो पृ० २०६-२०८) ऐसी हालत में उक्त घटना के बाद दुर्गादास का बालक महाराज को ले जाकर सीरोही की तरफ़ छिपाना और सोनग के (जो उसके दक्षिण से लौटने के पूर्व ही मर चुका था) साथ मिलकर शाही सैनिकों से युद्ध करना कहाँ तक संभव हो सकता है।

रहा महाराज को जोधपुर प्राप्त करने में महाराणा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसे आज्ञा दी गई थी कि वह अजितसिंहजी के साथ ही स्वर्गवासी महाराज को दोनो रानियों को भी रूपसिंह राठौड़ की हवेली * से लाकर नूर-गढ़ में रख दे, और यदि उनके साथ के राठौड़ इसमें बाधा दें, तो उन्हें दंड दे। इसी के अनुसार वह शाही सैनिकों को लेकर राठौड़ों के स्थान पर जा पहुँचा, और उनसे बादशाह की आज्ञा पालन करने का आग्रह करने लगा। परंतु स्वामि-भक्त राठौड़ इसकी कुछ भी परवा न कर युद्ध के लिये तैयार हो गए †।

जैसे ही यह समाचार महाराज की दोनो रानियों के पास पहुँचा, वैसे ही वे भी मर्दाना वेशकर अपने सुभटों का युद्ध देखने और उन्हें उत्साहित करने को मैदान में आ खड़ी हुईं। यह देख शाही फ़ौ ने राठौड़ों पर हमला कर दिया। इस पर दो तरफ़ से घमासान युद्ध मच गया। पहले-पह भाटी रघुनाथ (की अध्यक्षता में १०० राजपू वीरों) ने बड़ी वीरता से यवन-वाहिनी का साम किया। दोनो तरफ़ के अनेक योद्धा मारे ग इसके बाद जब राठौड़ों की संख्या बहुत ही क रह गई, तब दुर्गादास आदि बचे हुए सरदारों दोनो रानियों के क्षत-विक्षत शरीरों को यमुना में प्रवाहित कर लड़ते-भिड़ते मारव का मार्ग लिया †। तुग़लकाबाद तक तो शा सेना भी इनके पीछे लगी रही, परंतु

की सहायता की आवश्यकता का प्रतीत होना, सो न तो स्वयं राजस्थान के इतिहास में ही वि० सं० १७६३ (ई० सं० १७०७) की घटनाओं में इस प्रकार की सहायता का उल्लेख है, न किसी अन्य इतिहास में ही। हाँ हम यह मान लने को तैयार हैं कि अन्य राजनैतिक कारणों से सीसोदियों के भी राठौड़ों के साथ बग़ावत इख़्तियार कर लेने से दोनो पक्षों को एक-दूसरे से समय-समय पर सहायता मिलती थी, और वे एक दूसरे के रहस्यों से भी बहुत कुछ परिचय रखते थे। परंतु इससे यह सिद्ध करना कि जोधपुर के बालक महाराज को शरण देने के कारण ही महाराना को बादशाह का कोप-भाजन होना पड़ा, नितांत असत्य है।

* जोधपुर का राज्य देने के साथ ही बादशाह ने देहली में को महाराज की हवेली भी इंद्रसिंह को दे दी थी। इसीलिये ये लोग किशनगढ़-नरेश की हवेली में ठहरे थे। अजितोदय में सरदारों का यमुना के किनारे ठहरना लिखा है। (देखो सर्ग ६, श्लो० ५८)

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७७-१७८; अजितोदय सर्ग ७, श्लो० १०-१८।

* अजितोदय सर्ग ७, श्लो० १६-२०। रू रूपक में लिखा है कि रानियों ने अपने सिर कटवा पति का अनुगमन किया था। किसी-किसी ख्यात इनके सिर काटनेवाले का नाम जोधा चंद लिखा है। यदुनाथ सरकार ने अजितसिंहजी को मा का मेवाड़ राजवंश की होना और उसका देहली मारवाड़ पहुँच महाराना से सहायता माँगना लि है। (हिस्ट्री ऑफ़ औरंगज़ेब, भा० ३ पृ० ३ ३७८ और ३८३-३८४) यह ठीक प्रतीत नहीं हो

वी० ए० स्मिथ ने भी अपनी ऑक्सफ़र्ड हि ऑफ़् इंडिया में क़रीब-क़रीब यही बात लिखी (देखो पृ० ४३८)

बालकृष्ण दीक्षित-रचित अजित-चरित्र में लिखा

प्रेषणीयावतो देशे धात्रीभ्यां सहिताबुभौ।
युद्धेस्मिनातिरस्माकं खड्गेनैव न संशयः।
तदा क्षत्रिया विस्मिताः प्रोचुरेनां
स्वदेशेषु युक्तो गमः श्रीमतीनाथ।
तथानेति चोक्तं गमः पुत्र योस्ते
ध्वजिन्यासमं कारयामाशुरेते।
(सर्ग ८, श्लो० ११-१२)

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७८। उ हास में यह भी लिखा है कि इस युद्ध में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को रात्रि के कारण उसे आग बढ़ने का साहस न हुआ।

राठौड़ों के चले जाने के बाद जब फ़ौलादख़ाँ को बालक महाराज का कुछ भी पता न चला, तब उसने उनके बदले एक दूध बेचनेवाले के बालक को ले जाकर बादशाह के सामने उपस्थित कर दिया। बादशाह ने भी उसे वास्तविक राजकुमार समझ * उसका नाम मोहम्मदीराज रक्खा, और उसे अपनी कन्या ज़ेबुन्निसाँ बेगम को सौंप दिया †।

इन दिनों मुग़ल-सैनिक मारवाड़ में मनमाने अत्याचार करने लगे थे। यह देख सातलवास के (माधोदासोत) मेड़तिए राजसिंह ने अपने भाई-बंधुओं को एकत्रित कर मेड़ते पर चढ़ाई कर दी। इस पर वहाँ का हाकिम शेख़ सादुल्लाख़ाँ भी उससे लड़ने के लिये नगर के बाहर निकल आया। राजसिंह के निकट पहुँचने पर दोनो तरफ़ से

के जोधा रणछोड़दास आदि ३० सरदार मारे गए, और बादशाह के बहुत-से सैनिक क़त्ल हुए।

अजितोदय सर्ग ७ श्लो० १६-८८

परंतु यदुनाथ सरकार ने लिखा है कि जिस समय भाटी रघुनाथ यवन-सैनिकों का ध्यान अपनी तरफ़ खींचे हुए था, उसी समय राठौड़ दुर्गादास रानियों को मरदाने भेस में लेकर मय राजकुमार के मारवाड़ की तरफ़ चल पड़ा। परंतु जब डेढ़ घंटे के युद्ध में अन्य ७० राजपूत-वीरों के साथ ही रघुनाथ भी मारा गया, तब यवनों ने दुर्गादास का पीछा किया, और उसके क़रीब ६ मील पहुँचते-पहुँचते उसे जा घेरा। इस पर रणछोड़दास जोधा ने थोड़े-से वीरों को लेकर उनका मार्ग रोक लिया। परंतु इन मुट्ठी-भर वीरों के मारे जाने पर फिर मुग़ल सैनिकों ने इनका पीछा किया। तब दुर्गादास ने महाराज के परिवार को तो ४० योद्धाओं के साथ मारवाड़ की तरफ़ रवाना कर दिया, और स्वयं २०० वीरों के साथ पलटकर मुग़लों का सामना किया। इस बार घंटे-भर के युद्ध के बाद ही सूर्यास्त का समय हो जाने और दिन-भर के युद्ध में थक जाने के कारण यवन-सेना भी शिथिल पड़ गई। अतः जिस समय अपने बचे हुए ७ आहत योद्धाओं के साथ दुर्गादास यवन-वाहिनी में से मार्ग काटकर निकल गया, उस समय मुग़ल-सेना भी देहली को लौट गई। इसके बाद दुर्गादास भी महाराज के परिवार के साथ श्रावण बदी ११ (२३ जुलाई) को मारवाड़ में पहुँच गया। (हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ३, पृ० ३७७-३७८)

* मआसिरे-आलमगीरी में लिखा है कि बादशाह ने उस बालक को राठौड़ों के डेरे से पकड़कर

लाई गई दासियों को दिखलाकर अपनी तसल्ली कर ली थी।

परंतु इतिहास से प्रतीत होता है कि स्वामि-भक्त दासियों ने उसे साफ़ धोका दिया था। उसमें यह भी लिखा है कि फ़ौलादख़ाँ ने दूसरे दिन लड़के का कुछ ज़ेवर भी लाकर बादशाह के सामने पेश किया था। कुछ माल राठौड़-सरदारों का भी बादशाह के हाथ आया। (देखो पृ० १७८)

मआसिरुल-उमरा में भी अजितसिंहजी को जसवंतसिंहजी का असली पुत्र लिखा है। (देखो भा० ३, पृ० ७५५) सैरुल-मुताख़रीन में लिखा है कि राठौड़ों ने वहाँ पर असली महाराजकुमारों के बदले नक़ली बालकों को रखकर देहली से कूच कर दिया, और पीछे ठहरनेवाले अपने साथियों से यह भी कह दिया कि यदि किसी तरह यह भेद खुल जाय, तो वे शाही सैनिकों से युद्ध छेड़कर कुछ समय तक उन्हें वहीं रोक रक्खें। इसके बाद वे ही बालक बादशाही महल में पहुँचाए गए, और बहुत समय तक लोग उन्हें ही असली महाराजकुमार समझते रहे। (देखो पृ० ३४३)

मुंतख़बुल् लुबाब से भी इसी बात की पुष्टि होती है। उसमें यह भी लिखा है कि जब तक रानाजी ने अपने कुटुंब की कन्या से अजितसिंहजी का संबंध नहीं कर दिया, तब तक बादशाह का उनके विषय का संदेह दूर नहीं हुआ। (देखो भा० २ पृ० २६०)

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घमासान युद्ध होने लगा। परंतु शाम होने पर उक्त खाँ नगर का भार (केशवदासोत) मेड़तिए पृथ्वीसिंह को सौंपकर स्वयं क़िले में चला गया। दूसरे दिन कुछ ही देर के युद्ध के बाद क़िला तो राजसिंह के हाथ आ गया, और सादुल्लाखाँ पकड़ा गया। इस पर मेड़ते के मंदिरों में फिर से मूर्ति-पूजन होने लगा ❀।

सावन बदी ११ (२३ जुलाई) को बचे हुए राठौड़-सरदार भी देहली से जोधपुर पहुँच गए। इनकी ज़बानी देहली के युद्ध का हाल सुनकर चाँपावत वीर सोनग और भाटीराम आदि ने (अजमेर के फ़ौजदार) तहव्वरखाँ को जोधपुर से निकालकर नगर पर अधिकार कर लिया। इसी प्रकार धवेचा सुजानसिंह ने सिवाने के क़िले को भी हस्तगत कर लिया †।

इन घटनाओं की सूचना पाते ही बादशाह तहव्वरखाँ से नाराज़ हो गया। उसने उसका खाँ का ख़िताब छीनकर उससे अजमेर की फ़ौजदारी भी ले ली। इसी प्रकार इंद्रसिंह को भी अयोग्य समझ उसके पास देहली लौट आने की आज्ञा भेज दी। इसके बाद भादों बदी ६ (१७ अगस्त) को बादशाह ने फिर से राठौड़ों को परास्त कर जोधपुर पर अधिकार करने के लिये सरबलंदखाँ को अधीनता में एक बड़ी सेना रवाना ‡ की। इस सेना ने भी जोधपुर पहुँच दुबारा वहाँ पर अधिकार कर लिया। इन्हीं दिनों इस गड़बड़ में मौक़ा पाकर पड़िहारों ने फिर से अपनी पुरानी राजधानी मंडोर पर अधिकार कर लिया था §।

❀ अजितोदय सर्ग ८, श्लो० १३४

† अजितोदय सर्ग ८, श्लो० ३०-३२

‡ मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७१

§ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ३, पृ० ३७१

इसी बीच मेड़तिया राजसिंह द्वारा मेड़ते के [illegible] जाने की सूचना पाकर अजमेर के फ़ौजदार तहव्वर खाँ ने उसपर फिर अधिकार करने का निश्चय किया, और इसी के अनुसार वह अपनी सेना को लेकर पुष्कर पहुँचा। इतने में राजसिंह भी अपनी राठौड़-वाहिनी लेकर उसके मुक़ाबले को [illegible] गया। दोनों तरफ़ से तीन दिन तक घोर युद्ध होता रहा। अंत में शाही सेना को नष्ट करता हुआ राजसिंह भी अपने भाइयों के साथ इसी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ ❀। यह घटना भादों बदी ६ (१६ अगस्त) की है।

भादों बदी १३ (२३ अगस्त) को जब इसकी सूचना बादशाह को मिली, तब भादों सुदी ३ (३ सितंबर) को वह स्वयं अजमेर की तरफ़ रवाना हुआ, और उसी दिन उसने पालम के मुक़ाम से अपने शाहज़ादे मोहम्मद अकबर को आगे चलकर अजमेर पहुँचने की आज्ञा दी †।

आसोज (काँर) सुदी १ (२५ सितंबर) को जब बादशाह अजमेर पहुँच गया ‡, तब महाराज रामसिंह ने खाँजहाँ बहादुर को पत्र लिखकर एक बार फिर बादशाह को समझाने और महाराज अजितसिंहजी को उनका पैतृक राज्य दिलवा देने की प्रार्थना की। परंतु किसी प्रकार इसकी सूचना राव इंद्रसिंह को हो गई, और उसके आदमियों ने अचानक पहुँच जोधपुर में रामसिंह के मकान को घेर लिया। इस पर

❀ मआसिरे-आलमगीरी पृ० १७६-१८० ; अजितोदय सर्ग ८, श्लो० ३५-७० । [illegible] में इस युद्ध का भादों सुदी ११ को होना लिखा है। (देखो पृ० १८)

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० १८०

‡ मआसिरे-आलमगीरी पृ० १८१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वीर भी तलवार लेकर बाहर निकल आया, और सम्मुख रण में लड़ता हुआ शत्रुओं के हाथों मारा गया *।

इसके बाद बादशाह के अजमेर पहुँचते ही सरबलंद और शाहज़ादे अकबर को सेनाओं ने मेड़ते की तरफ़ होकर जोधपुर पर चढ़ाई की। आश्विन बदी २ (२६ सितंबर) को बादशाह ने इलाहाबाद के सूबेदार हिम्मतख़ाँ को भी अकबर की सहायता के लिये भेज दिया †।

यद्यपि मार्ग में स्थान-स्थान पर इस सम्मिलित मुग़ल सैन्य का सामना कर राठौड़-वीर इसकी गति में बाधा खड़ी करने लगे, तथापि अंत में इस विशाल सेना ने अपना मार्ग साफ़कर हिंदू-मंदिरों को नष्ट भ्रष्ट करना शुरू किया। मेड़ता, डाडवाना, रोहट परबतसर आदि पर भी शाही सेना का क़ब्ज़ा हो गया।

इसके बाद ही बादशाह ने मारवाड़ के भिन्न-भिन्न प्रांतों में अपने फ़ौजदार भेज दिए, और इस प्रकार मारवाड़ पर अधिकार हो जाने से उन्मत्त हाकर यवनों ने भी हर तरफ़ अत्याचार करने शुरू किए। यह देख महाराना राजसिंहजी ने राठौड़ों का साथ देना उचित समझा *। और इसी के अनुसार राठौड़ों के २५,००० और सीसोदियों के १२,००० सवारों † ने मिलकर शाही सेना को हैरान करना शुरू किया। इस पर बादशाह और भी क्रुद्ध हो गया, और उसने तहव्वरख़ाँ आदि मुसलमान-अमीरों और मोहकमसिंह आदि हिंदू-सरदारों ‡ को मेवाड़ के भिन्न-भिन्न परगनों पर

* यह घटना अजितोदय से लिखा गई है (सर्ग ६, श्लो० १४-२२)। अजित-ग्रंथ से भी इसकी पुष्टि होती है। (देखो, छंद ३१४-३१६) मआसिरे-आलमगीरी में सावन में ही बादशाह का इंद्रसिंह को देहली बुला लेना लिखा है। परंतु बादशाह के अजमेर आते समय वह भी शाही सेना के साथ था।

किसी-किसी ख़यात में इसका भादों सुदी १ को बादशाह की आज्ञा से जोधपुर आना और भादों सुदी ७ का क़िले पर चढ़ाई करना लिखा है। उसमें यह भी लिखा है कि आसोज-सुदी १३ को यह फिर से सिवाने पर अधिकार करने को गया था। परंतु वहाँ पर इसे सफलता नहीं हुई।

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० १८१

* Lord of Udaipur had to choose between rebellion and the loss of whatever is dearest to man. The Mughal annexation of Marwar turned his left flank and exposed his country to invasion through the Aravali passes on its western side, while the eastern half of his state, being comparatively level, lay open to a foe as before. The mountain fastness of Kamalmir, which had sheltered Pratap during the dark days of Akbar's invasion, would cease to be an impregnable refuge to his successor. The annexation of Marwar was but the preliminary to an easy conquest Mewar. Besides, Aurangzeb's compaign of temple destruction was not likely to stop within the imperial dominions.....On the revival of the Jaziya tax, a demand for its enforcement throughout his state had been sent to the Maharana. If the Sisodias did not stand by the Rathors now, the two clans would be crushed piecemeal, and the whole of Rajsthan would lie helpless under the tyrants' feet. So thought Maharana Rajsingh. (History of Aurangzeb, vol. III, p. 382-383.)

† हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ३, पृ० ३८३

‡ मआसिरे-आलमगीरी में इन्हीं में इंद्रसिंह का भी नाम है। (देखो पृ० १८२)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिकार करने के लिये रवाना किया। साथ ही मगसिर सुदी ८ (३० नवंबर) को वह स्वयं भी अजमेर से उदयपुर की तरफ़ चला। इस पर मोहम्मद अकबर, जो इस समय मेड़ते में था, दिवराई में आकर बादशाह से मिला ❀। पौष बदी ६ (१६ दिसंबर) को शाहज़ादा मोहम्मद-आज़म भी बंगाल से आकर बादशाह के साथ हो लिया। जब महाराना को यह समाचार मिला, तब वह उदयपुर छोड़कर पहाड़ों के आश्रय में चले गए †। इस पर मारवाड़ के बहुत-से राठौड़ भी उनके पास पहुँच गए। यह देख बादशाह ने इधर तो हसनअली को रानाजी का पीछा करने की आज्ञा दी, और उधर उदयपुर में मंदिरों को नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रबंध किया। यद्यपि वीर सीसोदियों ने भी ऐसे समय आत्म-बलि देकर यवनों को रोकने की बहुत कुछ चेष्टा की, परंतु उनके विशाल समूह के आगे वे कृतकार्य न हो सके ‡।

इस प्रकार मेवाड़ की दुर्दशा होते देख राठौड़ उत्तेजित हो उठे। दुर्गादास तथा सोनग ने और भी ज़ोर-शोर से मारवाड़ में उपद्रव शुरू करने का प्रबंध किया। इसी के अनुसार ये लोग पहले जालोर पहुँचे। परंतु उनके उत्पात से डरकर वहाँ के शासक फ़तेहख़ाँ § ने इन्हें कुछ दे-दिलाकर संधि कर लो। इस पर ये लोग वहाँ से बीलाडे की तरफ़ चले गए ❀।

जैसे ही इसकी सूचना बादशाह को मिली कि ही वह चित्तौड़ की रक्षा का भार शाहज़ादे मोहम्मद अकबर को देकर, चैत्र बदी १ (ई० सन् १६८० की ६ मार्च) को उदयपुर से अजमेर को लौट चला † और चैत्र सुदी २ (२२ मार्च) को वहाँ आ पहुँचा।

इसी प्रकार जब इंद्रसिंह को राठौड़-सरदारों के बीलाडे की तरफ़ जाने की सूचना मिली, तब वह भी बदनोर से इनके मुक़ाबले को चला। खेतासर के तालाब के पास दोनों की मुठभेड़ हुई। दिन-भर तो दोनों तरफ़ के वीरों ने जी खोलकर

❀ मआसिरे-आलमगीरी पृ० १८२

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० १८६

‡ मआसिरे-आलमगीरी पृ० १८६

§ तवारीख़े-पालनपुर में लिखा है कि बादशाह ने वि०स० १७३६ की फागुन सुदी १४ को गुजरात के सूबेदार की सिफ़ारिश से जालोर, साँचोर और भीनमाल के प्रांत फ़तेहख़ाँ को दे दिए थे। (देखो पृ० १४६) ये प्रांत पहले इसके पूर्वजों के अधिकार में भी रह चुके थे। परंतु इस समय केवल पालनपुर पर ही इसका अधिकार था। यह प्रबंध बादशाह ने राठौड़ों को दबाने के लिये ही किया था।

टॉड ने अपने राजस्थान के इतिहास में लिखा है कि जिस समय बादशाह उदयपुर पर हमला करने में लगा था, उसी समय उसे दुर्गादास के जालोर पर आक्रमण करने की सूचना मिली। इस पर वह अपनी उदयपुर की विजय को छोड़कर अजमेर को आया, और उसने मुकर्रबख़ाँ को बिहारियों की सज़ा पर भेजा। परंतु उसके वहाँ पहुँचने के पूर्व ही दुर्गादास दंड के रुपए लेकर जोधपुर की तरफ़ चला गया था। (देखो भा० २, पृ० ६६६)

राजरूपक में भी बादशाह का मुकर्रब को जालोर की रक्षार्थ भेजना लिखा है। परंतु मआसिरे-आलमगीरी में लिखा है कि बादशाह ने उदयपुर से अजमेर की तरफ़ लौटते समय मुकर्रमख़ाँ को रणथंभौर (और बदनोर) की तरफ़ भेजा था। (पृ० १६०)

❀ अजितोदय सर्ग ६, श्लो० २७

† मआसिरुल-उमरा पृ० १६०

‡ राजरूपक में इस घटना का वि० स० १७१८ की ज्येष्ठ सुदी १० को होना लिखा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तलवार चलाई, परंतु सायंकाल के समय इंद्रसिंह की सेना के पैर उखड़ गए *। इसके बाद दुर्गादास आदि वीर चेराई गाँव में पहुँचे, और जोधपुर पर चढ़ाई करने का विचार करने लगे। इसकी सूचना पाते ही पहले तो इंद्रसिंह ने राठोड़ों को अपनी तरफ़ मिला लेने की चेष्टा की, परंतु जब अनेक प्रभोलन दिखलाने पर भी इसमें उसे सफलता नहीं हुई, तब वह स्वयं जोधपुर चला आया, और यहीं से बादशाह को सारा हाल लिख भेजा। इस पर उसने भी तत्काल नवाब मुकरमखाँ को जोधपुर की तरफ़ रवाना किया। अतः जिस समय राठौड़ों की सेना जोधपुर को घेरकर उस पर अधिकार करने का उद्योग कर रही थी, उसी समय वह यहाँ आ पहुँचा। इस पर ये लोग जोधपुर का घेरा उठाकर मेवाड़ की तरफ़ चले गए। यद्यपि नवाब और इंद्रसिंह ने बहुत कुछ इनका पीछा करने की चेष्टा की, तथापि ये उनके हाथ न आए †।

इसके बाद राठौड़ सरदार रानाजी के साथ मिलकर ‡ सोजत और जैतारण के प्रांतों में मार-काट करने और वहाँ की रबी की फ़सल को लूटने लगे। यह देख वहाँ के शाही हाकिमों ने सारा हाल बादशाह को लिख भेजा। इस पर उसने भी वि० सं० १७३७ की जेठ बदी ३ (६ मई) को हामिदखाँ को सोजत और जैतारण में उपद्रव करनेवाले राठौड़ों को दबाने के लिये रवाना किया*। परंतु जब उसे सफलता नहीं मिली, तब बादशाह ने शाहज़ादे मोहम्मदआज़म को तो चित्तौड़ की रक्षा के लिये भेजा, और शाहज़ादे अकबर को सोजत और जैतारण पहुँच राठौड़ों को दंड देने की आज्ञा दी †। इसी के अनुसार वह (वि० सं० १७३७ की आषाढ़ सुदी ६ = ई० सन् १६८० की २५ जून को) चित्तौड़ से रवाना होकर बरकी-घाटी के मार्ग से मारवाड़ को चला। उसकी सेना के अग्र-भाग का मार्ग साफ़ करने के लिये तहव्वरखाँ नियत किया गया। यह देख राठौड़ों ने पग-पग पर आक्रमण कर मुग़ल-सेना के बढ़ने में बाधा डालना शुरू की। व्यावर और मेड़ते के पास तो और भी जमकर सामना किया। परंतु अंत में सावन सुदी ३ (१८ जुलाई) को शाहज़ादे अकबर ने दल-बल-सहित सोजत पहुँच उसे अपना सदर मुक़ाम बनाया।

इस पर राठौड़ भी अपने को भिन्न-भिन्न दलों में बाँटकर देश में चारो तरफ़ मार-काट करने और देश को उजाड़ने लगे। ये लोग जहाँ कहीं मौक़ा पाते, मुग़लों की चौकियों पर टूटकर उन्हें नष्ट कर देते या मार्ग में उनकी रसद को लूटकर उन्हें तंग करते थे। इससे मुग़लों का हर समय अपनी चौकियों आदि की रक्षा के लिये चौकन्ना या इधर-उधर घूमते रहना पड़ता था। यदि राठौड़ों का एक दल मारवाड़ के दक्षिणी भाग जालोर और

* अजितोदय सर्ग ६, श्लो० २७-४७। राजरूपक में इस युद्ध का वि० सं० १७३७ की जेष्ठ सुदी १३ को होना लिखा है।

† अजितोदय (सर्ग १०, श्लो० १-१६)। मआसिरे-आलमगीरी में बालाडे और जोधपुर की इस चढ़ाई का उल्लेख नहीं मिलता।

‡ राजरूपक से ज्ञात होता है, राना राजसिंहजी ने बादशाह से बदला लेने के लिये अपने पुत्र राजकुमार भीम को सेना देकर राठौड़ों के साथ कर दिया था।

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० १६३

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० १६४। अजितोदय सर्ग १०, श्लो० २६-३७

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिवाने पर अचानक आक्रमण करता था, तो दूसरा मारवाड़ के पूर्वी भाग गोड़वाड़ पर टूट पड़ता था। इसी प्रकार तीसरा दल देश के उत्तरी भाग में स्थित नागार को लूटता, तो चौथा तत्काल ईशान-कोण के प्रदेश डोडवाने और साँभर में मार-काट मचा देता था। इससे मुग़ल सेना बहुत ही हैरान हो गई थी *।

उन दिनों राठौड़ों का मुख्य शिविर नाडोल में था, और वहीं से ये लोग रानाजी से मिलकर मेवाड़ के यवनों को भी तंग किया करते थे। अतः सोजत पहुँचते ही शाहज़ादे अकबर ने तहव्वरखाँ को नाडोल हस्तगत कर कुंभलमेर पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। परंतु अपने प्राणों के मोह को त्यागकर रणांगण में जूझनेवाले राठौड़-वीरों का एकाएक मुक़ाबला करने को उसके सैनिकों की हिम्मत न हुई, इसलिये कई महाने तो तैयारी में ही लगा दिए गए। इसके बाद भी मार्ग में सैनिकों के आगे बढ़ने से फिर इनकार कर देने पर उसे एक मास तक खरवे में रुकना पड़ा। अंत में बड़ी मुशकिल से जब वह सेना नाडोल पहुँची तब फिर मुग़लों को भय ने आ घेरा। इस पर लाचार होकर आश्विन सुदी ८ (२१ सितंबर) का स्वयं शाहज़ादे अकबर को सोजत से वहाँ जाना पड़ा। यद्यपि इस समय तक जोधपुर से (सोजत होते हुए) नाडोल तक मार्ग में स्थान-स्थान पर शाही चौकियों का प्रबंधकर रसद आदि के लिये मार्ग साफ़ कर दिया गया था, तथापि तहव्वरखाँ ने पहाड़ी मार्ग में आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। अंत में अकबर के बहुत दबाव डालने पर आश्विन सुदी १४ (२७ सितंबर) को जैतारण वह आगे बढ़ देसूरी की घाटी के पास पहुँचा, जहाँ ही राठौड़ों और राजकुमार भोम की सम्मिलित सेना ओं ने पहाड़ों से निकल उस पर आक्रमण कर दिया †। दोनों तरफ़ के वीर एक दूसरे को पछाड़ने में बहादुरी दिखाने लगे। परंतु पूरी सफलता किसी पक्ष को न मिली ‡। इसके बाद राठौड़ों ने वहाँ रहना अनुचित समझ घाटणी की तरफ़ प्रस्थान किया, और वहाँ पर लूट-मारकर ये लोग मेवाड़ की तरफ़ चले आए। इस पर मगसिर बदी ४ (६ नवंबर) को हामिदखाँ को उधर जाने की आज्ञा दी गई। परंतु राठौड़ों ने इसकी भी कुछ परवा नहीं की, और डोडवाने § तथा साँभर में जाकर उपद्रव शुरू कर दिया।

यह देख मगसिर सुदी २ (१३ नवंबर) को रुहुल्लाखाँ तथा माहम्मद अकबर की सहायता को भेजा गया §, और मुग़लखाँ को साँभर और डोडवाने

* हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ३, पृ० ३६२-३६३

* राजरूपक में इस युद्ध का नाडोल में होना लिखा है।

† हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ३, पृ० ३६४-३६५

‡ अजितोदय सर्ग १०, श्लो० ५१-५२

§ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में लिखा है—

मगसिर सुदी ७ (१८ नवंबर) को बादशाह ने भेजा हुआ रुहुल्लाखाँ नवीन सेना और ख़ज़ाने के रुपयों के साथ नाडोल पहुँचा। उसके द्वारा बादशाह ने शाहज़ादे अकबर को शीघ्र ही आगे बढ़ने की आज्ञा भेजी थी। अतः वह दूसरे ही दिन मार्ग से देसूरी की तरफ़ चला, और वहाँ पहुँचकर मगसिर सुदी ११ (२२ नवंबर) को उसने तहव्वरखाँ को झालवाड़े की तरफ़ रवाना किया। इस मार्ग में राजपूत-वीरों ने सम्मुख रण में प्रचंड भीषण मार-काट मचाई, तथापि अपनी संख्याधिक्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रवा के लिये जाने को आज्ञा मिली। इसी के १८वें रोज़ शाहज़ादे कामबख़्श का बख़्शी-मोहम्मद नईम भी अकबर की सहायता के लिये भेज दिया गया *। इस पर राठौड़-सरदार फलोधी की तरफ़ चले गए, और वहाँ पर युद्ध की सामग्री आदि का संग्रह कर फिर गोड़वाड़ की तरफ़ लौट आए †। इसके बाद एक बार फिर ये मैदान के युद्धों में अपने सवारों और पहाड़ी लड़ाइयों में पैदल सैनिकों द्वारा समय-समय पर शाही सेना से सम्मुख रण में लोहा लेकर अथवा उनकी रसद आदि को लूटकर या उसपर नैश आक्रमण कर यथासंभव उसे तंग करने लगे।

इधर यह सब हो रहा था, उधर दुर्गादास ने मारवाड़ के उद्धार के लिये पहले तो गुजरात की तरफ़ जाकर उपद्रव करने का इरादा किया, परंतु अंत में एक नवीन युक्ति सोच निकाली। उसी के अनुसार उसने शाहज़ादे मुहम्मद मोअज़्ज़म को अपने पिता का पदानुसरण कर राठौड़ों को सहायता से बादशाह बन जाने के विषय में पत्र लिखे। पर जब इसमें सफलता की आशा न देखी, तब इसी विषय की बातचीत शाहज़ादे मुहम्मद अकबर से शुरू की। इस पर उक्त शाहज़ादे ने अपने अधीनस्थ सेनापति तहव्वरख़ाँ से सलाह कर इस बात को अंगीकार कर लिया, और अपने बादशाह हो जाने पर महाराज अजितसिंहजी को उनका राज्य लौटा देने की प्रतिज्ञा की *।

इसके बाद ही दुर्गादास आदि सरदारों ने शाहज़ादे अकबर से मिलकर नाडोल में उसका बादशाह होना घोषित कर दिया †, और साथ ही ये लोग उक्त नवीन बादशाह को लेकर पुराने बादशाह औरंगज़ेब पर चढ़ चले। जैसे ही इसको सूचना औरंगज़ेब को मिली, वैसे ही एक बार तो वह बिलकुल ही घबरा गया; क्योंकि उस समय उसके पास कुल मिलाकर दस हज़ार से भी कम अनुयायी थे। अतः उसने अपने निवासस्थान के चारो तरफ़ मोरचे बँधवाकर पास की पहाड़ियों पर तोपें लगवा दीं। इसी बीच वि० सं० १७३७ की माघ बदी ३० (ई० सन् १६८१ की ६ जनवरी) को शहाबुद्दीनख़ाँ भी, जो सोनग और दुर्गादास को गुजरात की तरफ़ जाकर उपद्रव करने से

के कारण अंत में किसी तरह मुग़ल-सेना कुंभलमेर से ८ मील उत्तर के झालवाड़ा ग्राम में पहुँचकर ठहर गई। (देखो भा० ३, पृ० ३६६-३६७)

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० १६५

† अजितोदय सर्ग १०, श्लो० ५२-५३

(बादशाह राठौड़ों से इतना क्रुद्ध हो गया था कि वह मारवाड़ को उजाड़ देने तक तो उद्यत था। उसने अपने अमीरों को आज्ञा दे दी थी कि जोधपुर और उसके आस-पास के प्रदेशों को बर्बाद कर दो, शहर और गाँवों को जला दो, फलवाले दरख़्तों को काट दो, स्त्री-पुरुषों को पकड़कर ग़ुलाम बना डालो, और सारी रसद को लूट लो।)

* अजितोदय और राजरूपक में अकबर की तरफ़ से इस प्रस्ताव का किया जाना लिखा है। (देखो सर्ग ११, श्लो० ४-६)

† यह घटना वि० सं० १७३७ की माघ बदी ६ (ई० सन् १६८१ की ३ जनवरी) को है।

हिस्ट्री ऑफ़ औरंगज़ेब (भा० ३, पृ० ३६८) में इस घटना का समय ई० सन् १६८१ की १ जनवरी लिखा है। उसमें यह भी लिखा है कि इस कार्य में महाराना राजसिंह का भी हाथ था, परंतु २२ ऑक्टोबर (वि० सं० १७३७ की कार्तिक सुदी १०) को उनकी मृत्यु हो जाने से उस समय यह कार्य न हो सका। अतः कुछ दिन बाद उनके उत्तराधिकारी महाराना जयसिंह के समय यह कार्य संपन्न हुआ। (देखो भा० ३ पृ० ४०५)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोकने के लिये सिरोही की तरफ़ भेजा गया था, अजमेर लौट आया। यह मीरकलाँ को भी, जो शाहज़ादे अकबर के साथ था, समझा-बुझाकर अपने साथ ले आया * था। परंतु अपने बादशाहत पाने की ख़ुशी में मस्त हुए और नाच-रंग में लगे अकबर ने इधर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इसी प्रकार धीरे-धीरे और भी कई अमीर उसकी सेना से निकल गए †।

जब ७-८ दिनों में इधर-उधर से आकर कुछ सेना औरंगज़ेब के शिविर में इकट्ठी हो गई, तब वि० सं० १७३७ को माघ सुदी ४ (ई० सन् १६८१ को १३ जनवरी) को वह अजमेर से निकलकर ६ मील दक्षिण के दोराई-नामक गाँव में पहुँचा। वहीं पर उसे शाहज़ादे अकबर और राजपूत-सैनिकों के कुड़की में (अजमेर से नैर्ऋत कोण में २४ मील पर) होने की सूचना मिली। उस समय अकबर के पास क़रीब १६ हज़ार ‡ सेना थी। तीसरे दिन बादशाह औरंगज़ेब वहाँ से और भी चार मील दक्षिण के दोराहा स्थान पर पहुँचा §। परंतु यहाँ से आगे बढ़ने को उसकी भी हिम्मत न हुई।

जैसे-जैसे शाहज़ादे अकबर और बादशाह औरंगज़ेब की सेनाएँ परस्पर निकट होती जाती थीं, वैसे-ही-वैसे बादशाही अमीर अकबर की सेना से निकल-निकलकर शाही लश्कर में मिलते जाते थे। यहीं पर शाहज़ादा मुअज़्ज़म भी, मेवाड़ से आकर शाही लश्कर के साथ हो गया। इसके बाद यहाँ से बादशाह ने पहले तो पत्र लिखकर अकबर को धोका देने की चेष्टा की, परंतु उसमें उसे सफलता नहीं हुई, तब उसने उसके सेनापति तहव्वरख़ाँ को *(उसके ससुर) इनायतउल्ला के द्वारा भय और लालच दिखलाकर अपनी तरफ़ मिला लिया। इस पर वह भी पहर रात रहे पर चुपचाप अकबर के शिविर † से निकल बादशाह की डेवढ़ी पर जा पहुँचा। परंतु वहाँ पर शस्त्र खोलकर अंदर जाने से इनकार करने पर मार डाला गया।

इसी बीच राठौड़ों को भी तहव्वर के बादशाह के पास चले जाने की सूचना मिल गई। इससे वे संदेह में पड़ गए और इनका विश्वास अकबर से भी उठ गया ‡। ऐसी अवस्था में ये

---

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० १६६-१६६

† इसी बीच हामिदख़ाँ भी बादशाह के पास पहुँच गया था, और शाहज़ादा मुअज़्ज़म भी शीघ्र ही पहुँचने-वाला था।

‡ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में ३० हज़ार सेना का होना लिखा है। (देखो भा० ३, पृ० ४१०)

§ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में लिखा है कि यहाँ से दो रास्ते निकलते थे। एक पश्चिम की तरफ़ ब्यावर होता हुआ मारवाड को, और दूसरा पूर्व की तरफ़ आगरे को जाता था। (देखो भा० ३, पृ० ४१०)

* मआसिरे-आलमगीरी में बादशाह कुलीजख़ाँ को लिखा है। (देखो पृ० २००-२०१) यह तहव्वरख़ाँ का ख़िताब था, जो बादशाह ने उसकी मेवाड़ की स्थल में दिखलाई हुई वीरता के उपलक्ष में दिया था। (देखो मआसिरुलउमरा भा० १, पृ० ४४८ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ३, पृ० ३६६)

† उस समय दोनो सेनाओं के बीच केवल मील का ही फ़ासला था।

‡ राजरूपक में लिखा है कि जिस समय तहव्वरख़ाँ बादशाह के पास जाने लगा, उस समय उसने राठौड़ों से भी कहला दिया कि मैंने आपके और शाहज़ादे अकबर के बीच पड़कर संधि करवाई थी। अब मुझे शाहज़ादे के बादशाह से मिल जाने से लाचार होता है। अतः अब मैं इसकी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं रख सकता। आप लोगों को भी सावधान होकर लौट जाना चाहिए।

वी० ए० स्मिथ ने अपनी ऑक्सफ़र्ड हिस्ट्री

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसका साथ छोड़ पीछे हट गए। जब प्रातःकाल होने पर इस घटना की सूचना शाहज़ादे अकबर को मिली, तब वह बहुत घबराया। उस समय उसके पास केवल ३५० सवार ही रह गए थे। अतः वह बाप के क्रोध से बचने के लिये अपने कुटुंब और माल-असबाब को लेकर १० कोस के फ़ासले पर ठहरे हुए राठौड़ों की शरण में चला। यह घटना वि० सं० १७३७ की माघ सुदी ७ (ई० सन् १६८१ की १६ जनवरी) की है। उसको यह दशा देख राठौड़ भी असली भेद को समझ गए। इसी से दूसरे दिन रात्रि में दुर्गादास ने उसके पास पहुँच उसे अपनी शरण में ले लिया। परंतु इस समय तक मौक़ा हाथ से निकल चुका था। अतः वे उसको साथ लेकर जालोर की तरफ़ चले गए *।

इस घटना से बादशाही शिविर में बड़ा आनंद मनाया गया। इसके बाद बादशाह भी शहाबुद्दीन खाँ, शाह आलम, कुलीचखाँ, इंद्रसिंह आदि को बाग़ियों का पीछा करने की आज्ञा देकर स्वयं अजमेर को लौट गया †।

[क्रमशः

इंडिया में लिखा है कि स्वयं बादशाह ने राजपूतों को धोका देने के लिये अकबर के नाम का पत्र लिखकर उनके हाथ में पहुँचवा दिया था। इसी से वे लोग शाहज़ादे को बाप से मिला हुआ समझ उससे अलग हो गए। (देखो पृ० ४४१)

हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब से भी इसकी पुष्टि होती है। उसमें लिखा है कि बादशाह ने उस पत्र में अकबर को लिखा था कि मैं तेरे राठौड़ों को धोका देकर फंसा जाने से बहुत प्रसन्न हूँ। कल प्रातःकाल के युद्ध में मैं आगे से उन पर आक्रमण करूँगा और तू पीछे से हमला कर देना। इससे वे आसानी से नष्ट हो जायँगे। जब यह पत्र दुर्गादास को मिला, तब वह इसके बाबत अपना संदेह मिटाने को अकबर के शिविर में पहुँचा। परंतु उस समय अर्द्धरात्रि से भी अधिक समय बीत चुका था। अतः अकबर गहरी नींद में सोया हुआ था। ऐसे समय यद्यपि दुर्गादास ने उसके अंग-रक्षकों से उसे जगाने को कहा, तथापि ऐसा करने की आज्ञा न होने के कारण उन्होंने इस बात के मानने से इनकार कर दिया। इससे दुर्गादास क्रुद्ध होकर लौट गया। इसके बाद उसने तहव्वुरखाँ की तलाश की। परंतु जब उसके भी शाही सेना में चले जाने का समाचार मिला; तब तो राठौड़ों का संदेह दृढ़ हो गया, और वे प्रातःकाल होने के ३ घंटे पूर्व ही अकबर के शिविर को लूटकर मारवाड़ की तरफ़ लौट गए। यह देख अन्य शाही सेना-नायक भी बादशाह से जा मिले। (देखो भा० ३, पृ० ४१४-४१५)

---

* अजितोदय सर्ग ११, श्लो० १२-१६

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० २०३। हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में लिखा है कि बादशाह औरंगज़ेब ने शाहज़ादे मोअज़्ज़म को सेना देकर अकबर को पकड़ने के लिये मारवाड़ की तरफ़ रवाना किया, और साथ ही तमाम शाही चौकियों के अफ़सरों के नाम भी इधर-उधर के मार्गों को रोककर अकबर को राजस्थान से बाहर न जाने देने की आज्ञा लिख भेजी। (देखो भा० ३, पृ० ४१६-४१७)

For Rubber Stamp & Badges write to:—

BHOLA NATH & CO.,

30, AMINABAD PARK, LUCKNOW.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्र-भाषा और हिंदी

[श्रीयुत कामताप्रसाद गुरु]

आजकल हिंदी के समाचार-पत्रों और मासिक पत्रों में जहाँ-तहाँ राष्ट्र भाषा के प्रश्न पर चर्चा हो रही है। गोसाईं तुलसीदासजी के शब्दों में धनी, ग़रीब, ग्राम-नर, नागर; पंडित, मूढ़, मलीन, उजागर; सुकवि कुकवि—सब नर नारी, निज-मति के अनुसार, इसे सराहते हैं। महात्मा गांधी ने 'नवजीवन' में इस विषय पर अपने उच्च विचार प्रकटकर इसका महत्व और भी बढ़ा दिया है। ऐसी अवस्था में भी अपने नम्र विचार अपनी अल्प मति के अनुसार प्रकट करने का साहस करता हूँ।

कुछ दिन हुए, एक उच्च-शिक्षा-प्राप्त मेम ने यह जानकर कि इन पंक्तियों का लेखक एक हिंदी-शिक्षक है, बातचीत के अवसर पर उससे कहा कि भविष्य में हिंदी एक महत्व-पूर्ण भाषा होनेवाली है। लेखक ने मेम के विचारों से सहमत होकर संतोष प्रकट किया और उनके इस विषय के ज्ञान की प्रशंसा की। यथार्थ में अँगरेज़ लोग और इस देश के अन्य-भाषा-भाषी सज्जन इस विषय पर जितना अनुराग और उत्साह प्रकट करते हैं, उतना हम हिंदी-भाषा स्वयं नहीं करते।

श्रीयुत कामताप्रसाद गुरु

राष्ट्र-निर्माण में भाषा की एकता की बड़ी आवश्यकता होती है। लोगों में धर्म की भिन्नता भले ही हो, उनके आकार-प्रकार, रीति-रस्म और स्वभाव में अंतर क्यों न हो, उनकी विचार-प्रणाली में भी समता न रहे, पर उनमें विचार-विनिमय और राष्ट्रीय प्रगति के लिये भाषा की एकता अवश्य होनी चाहिए। शासन-कार्य में भी शासकों और शासितों को एक भाषा की आवश्यकता पड़ती है। विदेशी शासक तो इस आवश्यकता का बहुधा यहाँ तक दुरुपयोग करते हैं कि वे अपनी भाषा को प्रजा पर बल-पूर्वक लाद देते हैं। आज बीसवीं शताब्दि में भी निज़ाम के राज्य में इस अत्याचार का रूप दिखाई देता है। वहाँ अधिकांश लोगों की मातृ-भाषा तैलगू अथवा मराठी होने पर भी उन पर शासक की ओर से उर्दू-भाषा लादी गई है। इतना ही नहीं, वहाँ के विश्रुत विद्यालय में शिक्षा का माध्यम यही रक्खा गया है जिससे अन्य भाषा-भाषियों की शिक्षा में बाधा पड़ती है। इसमें कुछ संदेह नहीं कि विदेशी शासक बहुधा प्रजा की भाषा को दबाकर अपनी भाषा का प्रचार करते हैं, इस नीति से प्रजा को एक प्रकार से निर्बल बना देते हैं। इस उपाय से वे प्रजा की भाषा को स्वयं सीखने के कष्ट से भी बच जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदुस्तान में सरकारी राष्ट्र-भाषा अँगरेज़ी हो गई है। सरकारी और राष्ट्रीय अनेक महत्त्व-पूर्ण विषय इसी भाषा में लिखे जाते हैं। राजनीतिक परिषदों में बहुधा इसी भाषा का व्यवहार होता है और जिन विषयों का संबंध ठेठ प्रजा से है वे भी अँगरेज़ी-रूप में प्रकाशित होते हैं। कई जना भी उपयोगिता की दृष्टि से अँगरेज़ी ही को राष्ट्र-भाषा मानने के पक्ष में हैं। उनके सामयिक पत्र भी बहुधा अँगरेज़ी में प्रकाशित होते हैं और वे सरकार के जानने के लिये अपने महत्त्व-पूर्ण वक्तव्य प्रकाशित करने में इसी भाषा का उपयोग करते हैं। साथ ही स्वयं अँगरेज़ी-भाषा की योग्यता भी इस समय ऐसी है कि उसमें उच्च कोटि का साहित्य और उत्तम भाव-व्यंजकता है। ऐसी अवस्था में यह बात संभव नहीं दिखाई देती कि कई वर्षों तक कोई देशी भाषा अँगरेज़ी का स्थान ग्रहण कर सके। यदि भारत के भावी स्वराज्य में बर्मा-प्रदेश हिंदुस्तान का एक भाग माना जाय, तो बर्मी लोगों के लिये तो अँगरेज़ी के बदले भारत की किसी देशी-भाषा का प्रयोग और लोगों की अपेक्षा अधिक कष्टकर होगा। इस प्रकार अँगरेज़ी का आसन डिगाना सहज कार्य नहीं है।

मान लिया जाय कि आगे कभी अँगरेज़ी के बदले अथवा उसके अतिरिक्त किसी एक देशी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने की आवश्यकता होगी, तो ऐसी दशा में हिंदोस्तान की केवल दो ही भाषाएँ ऐसी हैं जो इस देश में लगभग सभी जगह थोड़े-बहुत परिमाण में समझी जा सकती हैं, और जिनके विषय में राष्ट्र-भाषा के संबंध से विचार किया जा सकता है। वे भाषाएँ हिंदी और उर्दू हैं। इनमें से यद्यपि उर्दू हिंदी की एक उप-भाषा ही है अथवा यों कहिए कि दोनों "हिंदोस्तानी" की उप-भाषाएँ हैं, तथापि मुसलमानी राज्य के प्रभाव तथा मुसलमानों के प्रशंसनीय भाषा-प्रेम के कारण उर्दू को भाषा का महत्त्व प्राप्त हो गया है। इतना ही नहीं, इस भाषा के समर्थक और प्रवर्तक उसे स्वाभाविक और हिंदी को कृत्रिम सिद्ध करने का भी प्रयत्न करते हैं। इसके विरुद्ध अनेक लोगों की दृष्टि में हिंदी के कृत्रिम रूप में भी उसके स्वाभाविक होने के अनेक प्रमाण पाए जाते हैं। इन लोगों से भिन्न अनेक लोग ऐसे भी हैं जो "हिंदी" और "उर्दू" नामों का झगड़ा मिटाने के विचार से उनके बदले "हिंदोस्तानी" नाम रखना चाहते हैं और उसके रूप में हिंदी और उर्दू के सहज शब्दों का समावेश करते हैं। यद्यपि यह एक प्रकार का समझौता है तथापि यह विषय भी मत-भेद से मुक्त नहीं है। सब से अधिक आश्चर्य और विनोद की बात तो यह है कि स्वयं "हिंदोस्तानी" शब्द ही के विषय में लोग एक-मत नहीं हैं। कई इसको "हिंदुस्तानी" और कई एक "हिंदुस्थानी" लिखते हैं, और कोई भी दल अपने मत को निर्बल नहीं मानता।

हिंदी और उर्दू आजकल जैसी व्यवहार में बोली और लेखों में लिखी जाती हैं, वैसी हिंदू और मुसलमान—दोनों को प्रिय नहीं हो सकती। साधारण बातचीत में भी, हिंदू "रीति" और मुसलमान "रस्म" कहेगा, चाहे दोनों लोग दोनों शब्द मिलाकर "रीति-रस्म" भले ही कह लें। इसी प्रकार धर्म-विषय में एक 'पुनर्जन्म' और दूसरा "तनासुख़" कहेगा। मेरी समझ में कितना ही समय बीत जाय, पर "पिता" "वालिद" और "वालिद" "पिता" न हो सकेगा। ऐसी विषम अवस्था में भी हिंदू और मुसलमानों के मेल के समान कभी-न-कभी हिंदी और उर्दू का मेल कराने की आवश्यकता होगी। "मोटा-ताज़ा", "धन-दौलत", "काग़ज़-पत्र" आदि दुरंगे शब्दों के समान दुरंगे वाक्य और दुरंगी (हिंदोस्तानी) भाषा तैयार करना आवश्यक होगा। यद्यपि भाषा किसी एक व्यक्ति के बनाने से नहीं बनती—किंतु क्रमशः आप-ही-आप उत्पन्न होती और बदलती जाती है—तथापि राजनीतिक और दूसरे कारणों से समय-समय पर उसमें परिवर्तन किया जाता है। शिवाजी के समय में अरबी-फ़ारसी शब्दों के बदले संस्कृत-शब्दों का उपयोग इस कृत्रिम परिवर्तन का एक उदाहरण है। आज भी कई लेखकों में हिंदी या उर्दू के स्थान में "हिंदोस्तानी" भाषा के प्रयोग की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

यदि "हिंदोस्तानी" नाम की आड़ में उर्दू का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रचार न किया जाय और मुसलमानों को हिंदी-शब्दों से घृणा न हो, तो हिंदुओं को संभवतः "हिंदोस्तानी" नाम स्वीकृत करने में कठिनाई न होगी। यह बनी हुई "हिंदोस्तानी" भाषा कदाचित् हिंदी और उर्दू-साहित्यों की उन्नति में सहायक न हो सकेगी; इस लिये इन भाषाओं और इनके साहित्यों की उन्नति अलग-अलग होती रहेगी। यह बात कभी संभव नहीं है कि आगे चलकर हिंदी और उर्दू-साहित्यों में किसी प्रकार की समता स्थापित हो सके, क्योंकि दोनो की रचना-शैली, काव्य-कल्पना, धर्म-संस्कृति और सामाजिक विचारावली में बहुत ही भिन्नता है।

जो लोग राष्ट्र-भाषा के प्रश्न पर विचार करते हैं, वे बहुधा दो बातों पर बहुत बल देते हैं। एक तो यह कि भाषा ऐसी सहज हो जिसे साधारण पढ़ा-लिखा मनुष्य समझ सके और दूसरी यह कि उसमें संस्कृत और अरबी-फ़ारसी के शब्दों के उपयोग का कोई कड़ा बंधन न हो। ये दोनो बातें कहने में जितनी सहज हैं उतनी करने में नहीं। राजनीति और दूसरी विद्याओं से संबंध रखनेवाले अनेक विषय ऐसे जटिल हैं कि वे सहज भाषा में लिखे जाने पर भी बहुधा साधारण पढ़े-लिखे लोगों की समझ में नहीं आ सकते। अँगरेज़ी के सामयिक पत्रों की भाषा भी विलायत का किसान, मज़दूर अथवा सिपाही सरलता से नहीं समझ सकता। बात यह है कि शास्त्रीय विषयों का विवेचन साधारण भाषा में करने का उद्योग एक दुष्कर कार्य है। यथार्थ में उच्च विचार शिक्षित लोगों ही के लिये प्रकट किए जाते हैं, और यदि वे उच्च भाषा में प्रकट किए जायँ, तो भी शिक्षित लोग उन्हें समझ सकते हैं। दूसरी बात भाषा-रचना की कला से संबंध रखती है और उसका निर्वाह अधिकांश में रचना के नियमों पर और कहीं-कहीं वक्ता वा लेखक की रुचि पर निर्भर है। ऐसा नियम है कि जिस रचना में शिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसमें साधारण या ग्रामीण शब्दों का प्रयोग दूषित समझा जाता है; जैसे "संस्कृत-साहित्य की कट्टरता और धर्म के प्रकांड पाखंड तथा अनुदारता की छाप देश पर ख़ूब लग चुकी थी।" इसी तरह साधारण भाषा की रचना में कठिन शब्दों का प्रयोग भी दोष-पूर्ण माना जाता है; जैसे "जहाँ-कहीं हाकिम थे, उनके हुक्म में ख़लल-अज़ीम वाक़ै हुआ।" ऐसे प्रयोग दूषित होने पर भी आजकल की हिंदी अथवा हिंदोस्तानी कहलाने वाली रचना में विशेषतया पाए जाते हैं।

हिंदी-रचना की असंगति में सबसे बड़ा दोष गंगा-मदार का जोड़ा है। लेखकों के मन में जहाँ जिस भाषा का शब्द रखने की इच्छा होती है, वहीं वे उसकी स्थापना कर देते हैं; जैसे "निहायत शोचनीय हालत", "नैतिक ज़ाब्ता में अनुचित इजाज़त", "इस हलाला पर संख्या की क़ैद नहीं।" हममें से कुछ लोगों का कदाचित् यह अनुमान है कि हिंदी-वाक्यों के बीच-बीच में उर्दू शब्द रख देने से हमारी भाषा संस्कृत के पक्षपात और अरबी-फ़ारसी के बहिष्कार के दोष से मुक्त हो सकती है; पर इस उपाय से भी हम लोग अपने मुसलमान भाइयों को संतुष्ट नहीं कर सकते; क्योंकि वे लोग "हिंदोस्तानी" भाषा में भी सहज हिंदी-शब्दों को स्थान नहीं देते; जैसे "मेरे मकान में जो पानी मुहैया किया जाता है, उसके क़ाबिल-ऐतराज़ की तरफ़ भी मैं आपकी तवज्जुह को मुख़ातिब करता हूँ।"

हिंदी के कई एक लेखक व्याकरण को अवहेलना की दृष्टि से देखते हैं, और इस दोष के कारण भी वे भाषा-रचना के गौरव से गिरते हैं। अन्य भाषाओं के कई हिंदी-अनुवादक भी इस दोष की वृद्धि करते हैं। अँगरेज़ी का अनावश्यक अनुकरण करनेवाले लेखक भी हिंदी के व्याकरण को बिगाड़ते हैं। भाषा की वर्तमान अस्थिर अवस्था में तरुण लेखकों को मन-मानी करने का अच्छा अवसर मिल रहा है। अन्य-भाषा-भाषी हिंदी-लेखक भी बहुधा हिंदी-भाषा को विचलित कर देते हैं। ऐसी अवस्था में हिंदी को अस्थायी स्थिरता भी प्राप्त होना कठिन है।

राष्ट्र-भाषा का रूप निश्चित् करने में एक बड़ी कठिनाई पारिभाषिक शब्दों की रचना की है। मुसलमानों ने अपनी भाषा के राजनीतिक और साहित्यिक पारिभाषिक शब्द बनाने के बदले अधिकांश अँगरेज़ी-शब्द जैसे-के-तैसे ले लिए हैं; जैसे लीडर, रिज़ोलूशन, रिव्यू, पोलिटिकल, एडिटर, एक्टर, पार्ट। जब इन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपने ही शब्द पसंद नहीं, तब ये संस्कृत के नेता, प्रस्ताव, समालोचना, राष्ट्रीय आदि शब्द क्यों लेने लगे। कई वर्ष पहले प्रसिद्ध कोषकार फैलन साहब ने संस्कृत और अरबी-फ़ारसी शब्दों के बदले सहज हिंदोस्तानी (अथवा ठेठ हिंदी)-शब्द गढ़ने का प्रयत्न किया था; पर उनकी योजना सफल न हुई। उनके रचे हुए शब्दों के कुछ उदाहरण ये हैं—

अँगरेज़ी	हिंदी	उर्दू	हिंदोस्तानी
Centre of Gravity	गुरुत्व-केंद्र	मरकज़े-सिक्ल	बोझ-बीच
Diagonal	कर्ण	वतर	कोनीरेखा
Education	शिक्षा	तालीम	पढ़ाई-लिखाई

पारिभाषिक शब्दों की विषमता को दूर करने के लिये यही एक उपाय हो सकता है कि राष्ट्र-भाषा में हिंदुओं के लिये संस्कृत और मुसलमानों के लिये अँगरेज़ी के पारिभाषिक शब्दों का उपयोग किया जाय, जिन्हें उन्होंने स्वयं ग्रहण किया है।

राष्ट्र-भाषा का रूप निश्चित हो जाने पर लिपि का प्रश्न आता है। इसमें हिंदू लोग स्वभावतः देवनागरी-लिपि को और मुसलमान शार्क़ी-लिपि को पसंद करेंगे। हमारे इन भाइयों का तो यहाँ तक कहना है कि उर्दू शब्द देवनागरी-लिपि में लिखे ही नहीं जा सकते। मालूम नहीं, जब उर्दू रोमन-लिपि में सफ़ाई-पूर्वक लिखी जा रही है, तब उसके देवनागरी-लिपि में लिखे जाने में क्या बाधा है? इस विषय में महात्मा गांधी ने यह मत प्रकट किया है कि राष्ट्र-भाषा के लिये दोनो लिपियों का प्रयोग हो सकता है, पर अंत में उसी लिपि का प्रचार बढ़ेगा जो दोनो में अधिक उपयोगी सिद्ध होगी। न-जाने महात्माजी का अनुमान ठीक निकलता है या नहीं; पर यह बात निश्चित है कि मुसलमानों के लिये हमें राष्ट्र-भाषा में उर्दू-शब्दों के साथ-साथ उर्दू-लिपि को भी स्थान देने की आवश्यकता है। जिस प्रकार उनके बिना स्वराज्य की समस्या हल नहीं हो सकती, उसी प्रकार उनकी भाषा और उनकी लिपि के बिना राष्ट्र-भाषा का प्रश्न भी नहीं सुलझाया जा सकता।

इस लेख का सारांश यह है कि राष्ट्र-भाषा के स्वरूप का निर्णय इतना सहज नहीं है, जितना हम लोग उसे समझते हैं। पं० प्रतापनारायण मिश्र का पुराना मंत्र, "हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान" आजकल कालित हो गया है। इस भाषा का यथार्थ निर्णय दोनो जातियों के सम्मिलित-प्रयत्न और सद्विचार से ही होगा। राष्ट्रीय महासभा को भी इस दिशा में नेहरू-रिपोर्ट के समान एक योजना उपस्थित करनी होगी। तथापि इस बात की सावधानी अवश्य रखनी होगी कि भाव को प्रधानता देते समय भाषा अशुद्ध और अस्पष्ट न हो जाय।

बाल-नीति-कथा

(दो भाग)

यह पुस्तक हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रो-वाइस चांसलर श्री ए० बी० ध्रुव एम० ए०, एल्-एल्० बी० की लिखी हुई है। आपने महाराजा साहब बड़ौदा के आज्ञानुसार बड़ौदा-राज्य की पाठशालाओं के लिये इस ग्रंथ की, गुजराती में, रचना की थी। पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०, अध्यापक लखनऊ-युनिवर्सिटी ने इसका हिंदी-अनुवाद किया है। पुस्तक कितनी उच्च कोटि की है और बालकों के चरित्र पर इसका कितना अच्छा असर पड़ेगा, इसका अनुमान इसी से किया जा सकता है कि विद्वान् लेखक इस विषय के प्रकांड पंडित हैं, और चरित्र-गठन-संबंधी पुस्तकें लिखने के लिये आपसे बड़ा अधिकारी इस देश में मुश्किल से मिलेगा। पुस्तक दो भाग में है। प्रत्येक भाग का मूल्य १।) है। दोनो का मूल्य २।), सजिल्द ३।)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदयोद्गार

[कुमारी शकुंतला गुप्ता "हिंदीप्रभाकर"]

हे सर्व-नियंता ! तुझे आलिंगन करने के लिये मेरी भुजाएँ वारंवार उठने का प्रयत्न करती हैं; परंतु ज्योंही मैं आगे बढ़ता हूँ, तेरी मूर्ति मेरी आँखों से ओझल हो जाती है, मेरे हाथ फैले ही रह जाते हैं। चारों ओर आँखें खोलकर तुझे देखने का प्रयत्न करती हूँ, परंतु तेरी अदृश्य प्रतिभा कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होती। ज्योंही मैं आँखें मूँदकर कुछ ध्यानावस्थित होता हूँ कि तुम शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किए मेरे सम्मुख उपस्थित हो जाते हो, मैं अवाक् हो निस्तब्ध बन जाता हूँ। हा! अज्ञान-वश तुम्हारे रूप-पीयूष का पान करने के लिये ज्योंही नेत्र खोलती हूँ, तुम्हारा पद-चिह्न तक दिखाई नहीं देता। आशा निराशा में परिवर्तित हो जाती है।

हे हृदयेश्वर ! जहाँ तुमने इतने महापापियों का उद्धार किया है, आज मेरे लिये ही इतनी देर क्यों हो रही है। मुझे इस अंधकार-मय संसार में एक शरत्-पूर्णिमा के चंद्रमा की भाँति चमका दो, जिस-से मेरा शीतल छाया लाखों ज्वलित हृदयों को शीतल करने में समर्थ हो।

माता-पिता का हृदय तो संतान का नाम लेते ही द्रवित होने लगता है, फिर वे उनको विपत्तियों को क्योंकर देख सकते हैं। परंतु आश्चर्य है, आज आपका हृदय कैसा हो गया है, जो मेरे दिन-रात के कराहने को सुनकर भी नहीं पसीजता। हा! इतनी निष्ठुरता! यदि अपना पराक्रम ही दिखाना था, तो किसी बलवान् पर दिखाते भला कहाँ मैं नवयौवना-सुकुमार अबला और कहाँ तुम्हारी भयंकर निष्ठुरता! यह आग और तृण का मेल कैसा।

हे दुःख-भंजन! आज तक तो यह हृदय वज्र का छोटा-सा पिंड होने पर भी पत्थर बनकर सब सांसारिक विपत्तियों को, मूक होकर, सहन कर रहा; परंतु हा! अब तो यह क्षण-क्षण में मोम की भाँति पिघलता जा रहा है।

अब इसमें वह शक्ति नहीं, जो झंझटों का सहन हुआ भी धैर्यवान् बना रहे। नेत्रों के रास्ते इसका सारा रुधिर जल में परिवर्तित होकर बहा जा रहा है।

हे असहायों के सहाय! बताओ, तुम्हारे सिवा मेरे दुःखित हृदय की वेदना को कौन सुनेगा? चिल्लाते चिल्लाते गला दुख गया, आँखें मुँद गईं पर कोई भी चीत्कार तुम्हारे कर्ण-कुहर तक न पहुँच प्रतीत होता है, तुममें भी पुरुषत्व की गंध फिर भला स्त्रियों के दुःख को क्यों निवारण करें उनकी आहों को तो सुनी अनसुनी करके ही देते हो।

हे हृदयाधिदेव! आओ! आओ!! इस विधि हुए दुखित शकुंत को हृदय से लगा लो। वह शुभ घड़ी कब होगी, जब तुम अपने प्रेमामृत से मेरे दग्ध हृदय को शांत करोगे। मेरे अश्रित सदा तुम्हारे आने की राह पर लेटे हुए तुम्हारी जोहते रहते हैं, कर्ण प्रतिक्षण तुम्हारे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की आहट को सुनने रहते हैं। हृदय यह कहता हुआ सदा साक्षी रहता है कि अब मिला हृदयेश्वर, अब आया सर्व-नियंता ! हा ! हंत !! इसी प्रतीक्षा में प्रातः से सायं और सायं से प्रातः हो जाती है ! भला भाग्यहीन का ऐसा सौभाग्य कहाँ !

हे विश्व के स्वामी ! जल्दी करो, जल्दी करो ! हा ! फूट गया, अरे फूट गया, मेरा भाग्य-कलश ! हा दैव ! था तो वही मिट्टी का, परंतु सारे जीवन की मेरी यह पूँजी थी, इसके आगे तो रत्न-जटित स्वर्ण-कलश भी तुच्छ है। सावधानी से रखने का यही परिणाम हुआ कि मुझे उससे हाथ धोने पड़े।

महिलाओं के पढ़ने के लिये उत्तम पुस्तकें

देवी पार्वती

लेखक, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक मुं० ज़हूरबख़्श 'हिंदी-कोविद'। इसमें जगज्जननी देवी पार्वती का जन्म विवाह-संबंधी नारद की भविष्यवाणी, पार्वतीजी की तपस्या, शिवजी की आराधना, शिवजी का प्रसन्न होना, उनका विवाह, पार्वतीजी का हठात् अपने मैके जाना, वहाँ उनका अनादर, स्वामिकार्त्तिक का जन्म, ताड़कासुर-वध आदि सभी एक-से-एक रोचक ज्ञातव्य और मनोरंजक बातें बड़ी सुंदर, सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई हैं। बाल, वृद्ध और नारी सभी बड़े चाव से इसे पढ़ और समझ सकते हैं। अनेक रंगीन और सादे चित्रों ने तो इसकी शोभा और भी बढ़ा दी है। मूल्य ॥), सजिल्द १)

नल-दमयंती

लेखक मुंशी ज़हूरबख़्श 'हिंदी-कोविद'। लेखक ने मुसलमान होकर भी हिंदू-पौराणिक साहित्य का कितना अच्छा मनन किया है, यह इसके पढ़ने से मालूम होगा। इसे पढ़कर बच्चे जान जायँगे कि जुआ खेलने का फल कैसा बुरा होता है, और सती की रक्षा भगवान् किस प्रकार करते हैं। इत्यादि। कथानक में नवीनता, शैली में रोचकता, भाषा में मिठास और सरलता, सब एकसाथ देख लीजिए। पृष्ठ-संख्या १२६; मूल्य ॥), सजिल्द १)

देवी सती

लेखक, मुंशी ज़हूरबख़्श 'हिंदी-कोविद'। यदि पौराणिक उपाख्यान पर एक मुसलमान-लेखक का चमत्कार देखना हो, तो इसे पढ़िए। कितने ही लेखकों ने देवी सती के चरित्र का चित्रण किया है, लेकिन ज़हूरबख़्शजी की क़लम में, शैली में और ढंग में कुछ अजीब ही लुत्फ़ है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य ॥)

देवी द्रौपदी

लेखक, कविवर पं० रामचरित उपाध्याय। यह पुस्तक देवी द्रौपदी का जीवन-चरित है। आख्यायिका के ढंग पर लिखा गया है, जिसमें इसके पाठ से उपन्यास, प्राचीन इतिहास और जीवन-चरित तीनों के पढ़ने का आनंद आता है। यों तो यह पुस्तक समान रूप से सबके लिये शिक्षा-प्रद है, पर स्त्रियों के लिये यह पुस्तक अमूल्य रत्न है। इस नवीन संस्करण में कई रंगीन चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य ।=)

सती सावित्री

लेखक, अध्यापक हरिप्रसाद द्विवेदी। इसमें सती सावित्री के, जिनके नाम पर घर-घर स्त्रियाँ वट-सावित्री का व्रत करती हैं, पतिव्रत-धर्म का वर्णन है, जिसके आगे स्वयं यमराज को भी हार माननी पड़ी थी। सावित्री ने अपने पति को मौत के पंजे से छुड़ा लिया था। ऐसा कौन भारतीय परिवार होगा जो अपनी बहू-बेटियों और वनिताओं को सावित्री के पतिव्रत की कथा न पढ़ाना चाहता हो। पुस्तक का तिरंगा कवर आँखों के आगे से हटाने को जी नहीं चाहता। मूल्य ॥=), रंगीन जिल्द ॥=), राज-संस्करण सजिल्द १=)

संचालक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहस्य-पूर्ण प्राच्य*

[पं० देवीदत्त शुक्ल]

मानव-जाति का लगभग दो तिहाई भाग एशिया में निवास करता है। यह बात संभव है कि आज की अपेक्षा पूर्व-काल में योरप के मुकाबले में यह संख्या और भी अधिक रही हो। मानव-जाति के इतिहास के प्रारंभ-काल में एशिया उच्च सभ्यताओं का जन्म-स्थान था। ईसा के सत्रह सौ वर्ष पहले चीन के सम्राटों के यहाँ मंदिरों में काँसे के चिराग़ जलते थे, और वनस्पति-विज्ञान-संबंधी बाग़ थे एवं उनके कार्य-कलापों के लिखित वृत्तांत। जब टाल्मी (Ptolemy) ने अलेक्ज़ेंड्रिया पर चमकनेवाले स्थिर नक्षत्रों का निश्चय किया था, उसके बहुत पहले पूर्वी एशिया में चित्र-कला तथा रेशम बुनने और बर्तन बनाने की कलाओं का उच्च विकास किया जा चुका था। इस एशियाई सभ्यता में सुंदरता तो यह है कि यह बराबर अविच्छिन्न चली आई है। मिस्र की शक्ति का ध्वंस हो गया, 'निनेवेह' का नाम-मात्र रह गया और बैबिलन स्मृति की वस्तु हो गया, परंतु आज का एक शिक्षित चीनी अपने को साहित्यिक कालीन (Classical) चीन के साधुओं और कवियों का प्रत्यक्ष वंशज समझता है। ऐसी दशा में वह उत्तरी योरप की कल की सभ्यताओं की ओर गुप्त घृणा की दृष्टि से देखेगा ही।

निस्संदेह इन पूज्य-जातियों के पास अभी बहुत कुछ सिखाने को है। परंतु एशिया की इन प्राचीन जातियों में से जो महाद्वीप के पश्चिमी भाग में निवास करती थीं, उन्हीं का हमारे विचारों पर अधिक प्रभाव पड़ा है। जिन यहूदियों से हमें बायबिल और ईसाई धर्म प्राप्त हुआ, वे योरप के इतना अधिक निकट रहते थे कि स्वयं ही एक प्रकार से योरपीय थे। बौद्धिक दृष्टि से तो एशिया के पूर्वी और दक्षिणी भागों के लोग पिछले दिनों तक हमें किसी दूसरे लोक के निवासी जान पड़ते थे। अठारहवीं सदी के पहले यात्री और व्यापारी, भारत और चीन की विचित्र कहानियाँ योरप लाए थे, परंतु उनका साहित्यिक विचारों की अपेक्षा वहाँ के मसालों और कपड़ों से ही विशेष अनुराग था। और जापान तो अभी १९ वीं सदी के मध्य तक पारखियों के लिये एक बंद पुस्तक के समान था।

सुदूर प्राच्य की यह प्राचीन पुस्तक अभी हम लोगों के लिये बंद ही है। क्योंकि हम उसे पढ़ नहीं सकते और अनुवाद का कार्य अभी प्रारंभ ही हुआ है। विचार ग्रहण करने के लिये विद्वान् भेजने की अपेक्षा नगर अपहृत करने के लिये सैनिक भेजने में हम अधिक उत्साह प्रकट करते हैं। तो भी सहानुभूति रखनेवाले ईसाई-धर्मोपदेशकों ने प्रमाणित किया है कि हम जहाँ शिक्षा दे सकते हैं, वहाँ सीख भी सकते हैं। पूर्वी एशियाइयों ने भी अपने विद्वान् राजनैतिक, धार्मिक और साहित्यिक दूत हमारे यहाँ भेजे हैं। उन्होंने हमारी भाषाओं में पारगत होकर अपने लोगों का हमें परिचय दिया है। अभी हाल में हमारे कवि और विद्वान् एशिया जाकर अनुप्राणित होने तथा वहाँ के अनुवादों से अपने साहित्य को पूर्ण करने लगे हैं।

चीन के साधु कान्फूशस ईसा से कोई पाँच हज़ार वर्ष पहले हुए थे। कान्फूशस कई बातों में ईसा के सदृश हैं। वे उपदेशक थे, लोगों में जाकर उन्हें उपदेश देते थे। उन्हें धैर्य, प्रेम और आत्म-निरीक्षण में विश्वास था। इन बातों में वे सुकरात और दूसरे यूनानी दार्शनिकों से मिलते-जुलते हैं। वे अत्यंत धैर्यवान् पुरुष थे। उनका जीवन विनम्रता का

---

* मिस्टर जॉर्ज मेकी ने 'दि स्टोरी ऑफ़ दि वर्ल्डस लिटरेचर' नाम की एक महत्त्व-पूर्ण पुस्तक लिखी है। उसके दूसरे अध्याय में 'मिस्टीरियस ईस्ट' के शीर्षक में उन्होंने प्राच्य के मुख्य राष्ट्रों के साहित्य की विहग-दृष्टि से चर्चा की है। उसी का संक्षिप्त अनुवाद यहाँ दिया गया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर,
नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोष-प्रद होने की गैरंटी!

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

आर्य-फ़ाइन आर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

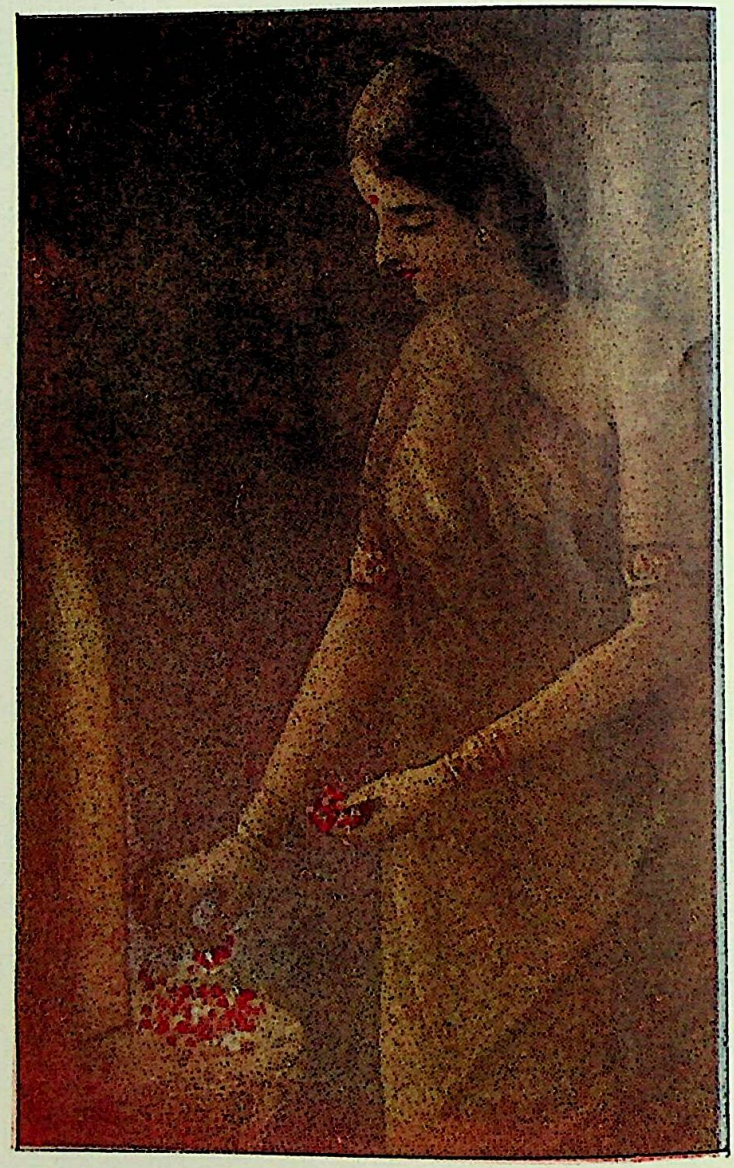

पूजा

[चित्रकार—श्रीमाहेश्वरीप्रसाद]

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीवन था, जिसका वे उपदेश करते थे। उन्हें अपनी विशेषता का दावा नहीं था। पीछे से उनके शिष्यों और अनुयायियों ने उनको देवता बना दिया। जो अनेक पुस्तकें उनके नाम से प्रसिद्ध हैं, वे सब इन्हीं लोगों की रची हुई हैं। हाँ यह सच है कि उनका आधार उन्हीं के विचार हैं।

कान्फूशस की मुख्य रचना प्राचीन चीनी साहित्य का संग्रह है। इस संग्रह में इतिहास, कविता और नैतिक शिक्षाएँ हैं। कान्फूशस की नैतिक उक्तियाँ अत्यंत व्यावहारिक हैं। लौत्ज़ू के रहस्यवाद की कमी की इनसे पूर्ति होती है। लौत्ज़ू ने अबोध प्रकृति से एक रस करने के मार्ग का उपदेश किया है। ये दोनो साधु और इनके शिष्य—मेन्कस कान्फूशस का अनुयायी और चुआंगत्ज़ू, लाओत्ज़ू का अनुयायी सदियों तक साथ-साथ चीनी पांडित्य पर प्रभाव डाले रहे और आज भी लाखों चीनियों के विचारों पर प्रभाव डालते हैं। कान्फूशस के फुटकर सिद्धांतों के सिवा चीनी साहित्य के विशाल भांडार का बहुत थोड़ा अंश पाश्चात्य भाषाओं में अनूदित हो पाया है। परंतु हाल में चीनी गीत-कवियों की ओर यहाँ का उत्साह वृद्धि पर है। इन कवियों में ली-पो सर्वश्रेष्ठ था। वह आठवीं सदी में मौजूद था। वह फ्रैनिस विलन (Francois Villon), उमर ख़ैयाम और हीने (Heine) का संमिश्रण था।

चीनी नक़्क़ाशी और पत्थर की कारीगरी का ज्ञान कम-से-कम उन सब लोगों को होगा, जिन्होंने अजायबघर या पूर्वी बर्तन बेचनेवाली दूकान देखी होगी। चीनी कलश की सुंदरता और पाश्चात्य दृष्टि के बीच भाषा बाधक नहीं है, और कुछ चाहे भले ही बाधक हो। विशेषज्ञों का कहना है कि चीनी कविता, जहाँ तक एक कला का दूसरी कला से सादृश्य व्यक्त कर सकता है, नक़्क़ाशीदार हाथी-दाँत की चीज़ों, बर्तनों और ज़रीदार रेशमी वस्त्रों से बहुत कुछ साम्य रखती है। साहित्य एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा सुदूर विलग बसे हुए लोग अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं।

चीनी चलित कलाओं के द्वारा हमें जापान का ज्ञान होता है। जापान ने अपना उच्च साहित्य उसी प्रकार चीन से लेकर समुन्नत किया है, जिस प्रकार आधुनिक योरप ने अपने मौलिक विचार रोम और यूनान से उधार लिए हैं। जापानी-गीत-काव्य मौलिक और उमंग-जन्य है। ८ वीं सदी में जापानी कविता का स्वर्ण-काल था। हितोभारो और अकाहितो उस समय प्रधान कवि थे। जापानी गीत-कविता छोटी और संकेतात्मक होती है। लेफ़्काडिओ हर्न (Lafcadio Hearn) ने कहा है कि "जापानी कविता मुझे ठीक जापानी रंगीन चित्र-शब्द मालूम पड़ती है, इससे अधिक और कुछ नहीं।"

जापान आधुनिक राष्ट्र बन गया है। ऊपर से वह आधा योरपीय हो गया है, अतएव भारत की अपेक्षा हम से कम दूर मालूम पड़ता है। भारत भीतर से योरपीय विचारों के प्रभाव का विरोध करता है। यद्यपि वह योरपीय सरकार और प्रणाली से पराभूत है, तो भी हिंदू लोग हमारे सर्व प्रथम भतीजे हैं। आर्यों या इंडो-योरपीय के नाम से प्रसिद्ध मानव-जाति के बड़े भाग की एक शाखा में ही वे हैं। तीस से अधिक सदियाँ बीतीं, जब उन्होंने ऊँचे दर्जे की सभ्यता प्राप्त की थी। उनका धार्मिक दर्शन-शास्त्र तो यूनान से बहुत ही अधिक पुराना है। यूनानी विचारों पर उसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। गेलीली के तट पर उस दया-पूर्ण आवाज़ के सुनाई देने के बहुत पहले बुद्ध और उसके शिष्यों ने मनुष्य के भ्रातृ-भाव और ईश्वर के पितृ-भाव का उपदेश किया था।

प्रारंभिक काल से ही हिंदू लोग अपने विचारों के प्रकाशन में प्रगल्भ और प्रवीण रहे हैं। उनकी रचनाओं की सावधानता से रक्षा की गई है। किसी दूसरी जाति के साहित्य की अपेक्षा, जिसकी रचनाओं का भी समय इतना ही लंबा पहुँचता है, उनकी रचनाओं की हानि और उनमें परिवर्तन बहुत कम हुआ है। हिंदुओं का विचार हमें दो मार्गों से मिलता है। एक प्राचीन, और दूसरा आधुनिक। प्राचीन प्रभाव यूनानियों के द्वारा पड़ा था, जो हमारे विचार-क्रम में अप्रत्यक्ष रीति से बे-ठिकाने पड़ा था।

पहले के यूनानी दर्शनिकों ने विशेषकर पिथागोरस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ने भारतीय दर्शनिकों से यह सीखा था कि ज्ञान आत्मा का विचार है, जड़-पदार्थों के पीछे तत्त्व है, विचार है। प्लेटो के दर्शन का यही आधार है, जो सभी आधुनिक दर्शनों में पाया जाता है। हिंदुओं का कहना है कि 'आत्मा सब मनुष्यों में विद्यमान है, परंतु सभी मनुष्यों को उसके अस्तित्व का पता नहीं है।'

दूसरा मार्ग, जिसके द्वारा हिंदुओं का विचार पाश्चात्य-साहित्य में प्रविष्ट हुआ है, आधुनिक पठन-पाठन है। जब योरपीय सेनाएँ भारत का विजय कर रही थीं, कला के पंडित और प्रेमी भारतीय साहित्य के अनुवाद-कार्य में लगे थे। उनके कार्य की उन हिंदू विद्वानों ने पूर्ति की है जो अँगरेज़ी विश्वविद्यालयों में शिक्षित हुए और जो अपने देश का योरप को परिचय देने के लिये विशेष रूप से उत्सुक थे। इस प्रकार भारत हमारे लिये प्रायः एक खुली पुस्तक के समान है। परंतु है यह एक विशाल पुस्तक। इसकी रचना में हज़ारों वर्ष लगे हैं। हममें से अनेक इसका अधिक अंश पढ़ने में समर्थ नहीं है। वर्तमान काल में भी एक भारतीय कवि का उदय हुआ है, जिसकी आवाज़ उसके धर्म और उसकी भाषा की बौद्धिक सीमाओं के परे सुनाई देती है। यह कवि बंगाली है, नाम है रवींद्रनाथ ठाकुर। संभवतः उनका अत्यंत आनंदप्रद नाटक चित्रा है।

भारतीय दार्शनिकों में गौतम-बुद्ध सबसे अधिक प्रभावशाली हैं, जो ईसा से कोई पाँच सौ वर्ष पहले हुए हैं। वे उपदेशक थे। पाश्चात्य जातियों के शोपनहार-जैसे दार्शनिकों और विद्वानों को ही उनके बौद्ध-धर्म में अनुराग हुआ है। लोकप्रिय विचार-धारा पर उनका प्रभाव नहीं पड़ा है। वे हम लोगों के लिये अत्यंत विदेशी हैं। उनकी शिक्षा है कि सारे दुःखों की जड़ इच्छा है, अतएव दुःखों से दूर रहने के लिये सारी इच्छाओं का त्याग कर देना चाहिए, और जीवन का उद्देश्य निर्वाण की प्राप्ति है। वे वस्तुतः जीवन से भाग खड़े होने की शिक्षा देते हैं, जो तब तक हम लोगों के विचार-क्रम में नहीं प्रवेश पा सकती जब तक हमारी सभ्यता का पराभव नहीं होता। परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि यह एक कादर दर्शन है।

इसी तरह एक दूसरा बड़ा एशियाई धर्म ईसाई-मंडल को अज्ञेय रहा है। यह धर्म मुसलमान धर्म है। योरप की जातियाँ और पैग़ंबर के अनुयायी केवल धार्मिक कारणों से ही निरंतर परस्पर युद्ध करते रहे हैं और उसको अभी समाप्ति नहीं हुई है। सातवीं सदी के प्रारंभ में मोहम्मद और उनके उत्तराधिकारियों के नेतृत्व में अरबों ने एशिया और आफ्रिका को पद-दलित कर डाला और वहाँ के निवासियों को शिक्षा एवं तलवार के बल से इसलाम की दीक्षा दी। आज इस धर्म के अनुयायियों की संख्या बीस करोड़ से भी अधिक है। इसलाम-धर्म की पवित्र पुस्तक का नाम क़ुरान है। इसमें मोहम्मद की उन शिक्षाओं का संकलन है जो उन्हें थोड़ी-थोड़ी करके ईश्वर से प्राप्त हुई हैं। सभी मुसलमानों को क़ुरान पढ़ना पड़ती है, अतएव संसार में सबसे अधिक पढ़ी जानेवाली पुस्तकों में यह एक है। कार्लाइल का कहना है कि क़ुरान की विशेषता मुझे यही मालूम पड़ती है कि उसमें सचाई सभी अर्थों में पाई जाती है। जो पुस्तक बारह सौ वर्ष से लाखों मनुष्यों के लिये जीवन का मार्ग दिखलाती आई है, वह निस्संदेह एक महत्त्व-पूर्ण पुस्तक है।

साहित्यिक दृष्टि से तो हम क़ुरान की अपेक्षा सहस्र-रजनी-चरित्र की कहानियों को अधिक महत्त्व देंगे। यद्यपि इस ग्रंथ का अनुवाद योरपीय भाषाओं में १८ वीं सदी तक नहीं हुआ था, तो भी वेनिस और जेनेआ के वे व्यापारी जो पूर्वी देशों को व्यापार के लिये जाते थे, चार-पाँच सौ वर्ष पहले ही उसकी अनेक मनोमोहक कहानियाँ अपने साथ योरप से ले आए थे। अलादीन और उसका चिराग़, नाविक सिंदबाद, अली बाबा ४० चोर आदि कहानियाँ योरप में सभी काल के बालकों में प्रचलित रही हैं। बग़दाद के ख़लीफ़ा हारूँअलरशीद उपन्यासों के श्रेष्ठ राजाओं में से एक रहा है। निस्संदेह कल्पना और जादू से भरी कहानियाँ सदा लोक-प्रिय रही हैं। परंतु दूसरे ढंग की कहानियों का भी एक बड़ा भेद है, जो सब-की-सब आजकल की रुचि के अनुकूल तो नहीं हैं, तो भी वे बड़े अच्छे ढंग से कही गई हैं।

पुराने समय के कहानी कहनेवाले चरित्र चित्रण की अपेक्षा साहस के कार्यों का वर्णन करने में अधिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुराग रखते थे। परंतु 'अलसमत' में उन्होंने एक ऐसे विदूषक की रचना की है कि उसके कारण वह पुस्तक किसी भी हास्य-रस-प्रधान उपन्यास के मुक़ाबिले में रक्खी जा सकती है। पाश्चात्य देशवालों के लिए सहस्ररजनीचरित्र प्राच्य—ईरान, मिस्र और भारत के साधारण जीवन का एक संक्षिप्त संग्रह है। इस से अनेक कहानियाँ निकाली गई हैं।

प्राच्य की जिस कविता का पाश्चात्य पर अधिक प्रभाव पड़ा है, वह है ईरान की। और ऐसा हो होना भी चाहिए था। क्योंकि ईरानी कविता का प्राधान्य पूर्वी एशिया के दूसरे लोग—अरब और तुर्क लोग—भी स्वीकार करते हैं। उसके सौंदर्य का उन योरपीय अनुवादकों पर अच्छा प्रभाव पड़ा है, जो कलाविद् और विद्वान् होना थे। अँगरेज़ी के पाठकों में ईरानी कविता में सबसे अधिक प्रसिद्ध उमर-ख़ैयाम की रुबाईयात रही हैं। ईरान का महाकवि फ़िर्दौसी है। यह दसवीं सदी में मौजूद था। उसने शाहनामा की रचना की है। इसमें ईरान के प्रारंभिक काल से उसके इतिहास का वर्णन है। यह एक बड़ी भारी रचना है। कहा जाता है कि इसके अनेक स्थल और वाक्य बहुत ही अधिक सौंदर्य-पूर्ण हैं। संसार के वीर-काव्यों से इसमें एक विशेषता है कि पुर्तगाली-कवि के मोइंस को छोड़कर एक यही रचना है जो कवि के जीवन-काल में ही राष्ट्रीय महाकाव्य के रूप में स्वीकृत हुई है। उमर के बाद दो और ईरानी गीत-कवि हुए हैं, जो हम लोगों के लिये महत्त्व रखते हैं। ये हैं सादी और हाफ़िज़। सादी के अत्यंत अधिक प्रसिद्ध 'बोस्ताँ और 'गुलिस्ताँ' में दार्शनिक और नैतिक चर्चा की गई है, जो अरुचिकर नहीं है।

हाफ़िज़ अपने ससुर सादी की अपेक्षा कम नैतिक शिक्षक था। उसमें उमर की-सी शक्ति अधिक थी। उसे मद्य, द्यूत, संगीत और प्रकृति से अधिक अनुराग था। यही नहीं, उमर की भी अपेक्षा अधिक। उमर के भाग्यवाद में तो किसी मात्रा में दुःख और निराशा का भाव दिखाई दे जाता है, परंतु हाफ़िज़ तो कभी-कभी जीवन के आनंद का अनुभव करता मालूम पड़ता है। प्राच्य का ऐसा ही भव्य रूप है।

आवश्यकता है

एक ऐसे हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के विशारद की, जिन्होंने साहित्य में बहुत ऊँचे नंबर पाए हों और जो वर्तमान और प्राचीन पुस्तकों का काफ़ी ज्ञान रखते हों। हिसाब-किताब और लिखने में तेज़ हों। वेतन योग्यतानुसार। उन्हें कार्यालय में विक्रय-विभाग का निरीक्षण करना होगा।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ, १ एप्रिल, १९३०

दुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्ण-व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप

[संतराम बी० ए०]

संसार की प्रत्येक प्राचीन जाति में यह विश्वास पाया जाता है कि इस पृथ्वी पर कभी कोई ऐसा एक समय रह चुका है जब सर्वत्र सुख और शांति थी, जब दूध और शहद की नदियाँ बहती थीं; पेट की ज्वाला को बुझाने के लिये जब मनुष्य को कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ता था, जब कलह और क्लेश का नाम तक न था, जब मनुष्यों की प्रकृतियाँ सीधा-सादा और निष्कपट थीं। उस स्वर्ण-समय को सत्ययुग या गोल्डन एज कहा जाता है। जिस प्रकार गंगोत्री से निकलनेवाला गंगा-जल निर्मल और निर्विकार होता है, उसी प्रकार आदि-काल में मनुष्य-जाति सब प्रकार के पापों और विकारों से रहित थी। लोग सत्यवादी और शुद्धाचारी थे। इसलिये दंड की आवश्यकता न थी। कोई राजा न था, कोई पुलिस न थी, कोई जेलख़ाना न था। लोग भूख लगने पर खाते थे, नींद आने पर सोते थे, थक जाने पर आराम करते थे और स्वाभाविक आवेग होने पर ऋतु-काल में संतानोत्पादन करते थे। बड़े-बड़े नगर न थे, गंदी गलियाँ न थीं, तंग मकान न थे। लोग जंगलों में रहते थे। स्वच्छ पवन, निर्मल जल और आरोग्य-वर्धक स्वादिष्ट फल सब उनको प्राप्त थे। अतएव रोग का नाम-निशान न था। अकाल-मृत्यु न थी। लोग पूर्ण आयु को भोगकर ही, डाल से गिरनेवाले पके हुए फल की तरह, संसार को छोड़ते थे। आवश्यकताएँ बहुत कम थीं। खाद्य-सामग्री की प्रचुरता थी। इसलिये चोरी और डाके की ज़रूरत न होती थी।

उस सोनहले समय में कलिकाल का ऐसा विवाह का बंधन न था। उस समय स्त्री, पुरुष की जंगम संपत्ति न थी। वह अपनी इच्छा से चाहे, जिससे संतान उत्पन्न कर सकती थी। शायद नचिकेता पहला व्यक्ति था जिसने विवाह की प्रथा चलाई। तब से स्त्री की स्वतन्त्रता का ह्रास आरंभ हुआ। गिरते-गिरते आज वह पुरुषों की निजी सम्पत्ति बन गई है। दूसरे लोग उसे चुरा न ले जायँ, इससे वह उस सम्पत्ति को बुरके में छिपाय रखने लगा।

सत्ययुग की दूसरी विशेषता मुद्रा—सिक्के—का अभाव था। उस समय सिक्के का चलन न था। किसान अनाज पैदा करता था। अध्यापक उसके बच्चों को पढ़ाता था। जुलाहा उसके लिये कपड़ा बुनता था। चमार उसके लिये जूता बनाता था। लोहार और बढ़ई उसके लिये लोहे और लकड़ी की वस्तुएँ तैयार करते थे। इन के बदले में वह उन्हें अनाज देता था। कोई वस्तु मोल न बिकती थी। सभी लोग काम करते थे और सभी को खाने को मिलता था। सोने-चाँदी का सिक्का न होने से पूँजी और श्रम का झगड़ा ही पैदा न हो सकता था। पूँजीपति सिक्का इकट्ठा करता है। इसके लिये वह छल-कपट या चतुराई से सैकड़ों लोगों का रक्त चूसता है। सिक्के के अभाव में कोई मनुष्य ऐसा दुष्कर्म नहीं कर सकता। यदि कोई बहुत-सा अनाज इकट्ठा कर भी लेगा, तो वह अनाज अधिक दिन तक उसके पास रह न सकेगा, वह ख़राब हो जायगा। इसीसे हम मनुष्यों और जातियों को प्राचीन युगों में धन-संग्रह के लिये अन्याय करते नहीं पाते। सत्ययुग के बाद त्रेता आया, और त्रेता के बाद द्वापर। इन युगों में मानव-प्रकृति क्रमशः मैली और कुटिल होती गई। फिर भी भारत में हम रुपए-पैसे की नहीं, बरन् घोड़ों और गायों की चोरी ही देखते हैं। राजाओं की संपत्ति दिखलाने के लिये भी इतने करोड़ पौंड नहीं, बरन् इतने लाख गाएँ या घोड़े ही बताए जाते थे। सच तो यह है कि मनुष्य-समाज की शांति को जितना सिक्के ने भंग किया है, उतना किसी दूसरी चीज़ ने नहीं।

वर्ण व्यवस्था का जो स्वरूप स्मृतियों में वर्णित है,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह उपर्युक्त अवस्था ही में प्रचलित हो सकता है। वर्तमान रुपए-पैसे के युग में न वह व्यवस्था चल सकती है, और न उसकी आवश्यकता ही रह गई है। वर्ण-व्यवस्था का—और बोलशेविज़्म का—एक बड़ा सिद्धांत यह है कि प्रत्येक मनुष्य काम करे और प्रत्येक मनुष्य को रोटी मिले। जो मनुष्य पढ़ने-पढ़ाने का काम कर सकता था, उसे ब्राह्मण कहा जाता था। वह एक विशेष प्रकार का चिह्न या जनेऊ धारण करता था। क्योंकि रुपए-पैसे का चलन न था, इसलिये दूसरे स्थान में जाकर उसके लिये भोजन-वस्त्र खरीदना मुशकिल था। इसलिये समाज उस को ब्राह्मण का चिह्न देकर यह विशेषता कर देता था कि हमसे पढ़ने-पढ़ाने का काम लिया जाय, और इसके बदले में हमें रोटी दी जाय। वह जहाँ भी जाता था, उसे खान-पान की सब सामग्री मिल जाती थी, और उसके बदले में वह पठन-पाठन द्वारा समाज की सेवा करता था। यही कारण है कि अब तक भी कहीं-कहीं गाँवों में दूध, घी और गल्ला आदि खाद्य पदार्थों का बेचना बुरा समझा जाता है और ये चीजें परदेशियों को मुफ़्त में दे दी जाती हैं। इसी प्रकार जो मनुष्य लड़ाई और देश-रक्षा का काम कर सकता था, उसको क्षत्रिय का और जो कौशल-हीन होने से दूसरों को केवल शरीर द्वारा सेवा करने में समर्थ था, उसे शूद्र का टिकट समाज की ओर से दिया जाता था। जहाँ भी वह जाता था, उस टिकट को—यज्ञोपवीत आदि चिह्न को—दिखाकर वह भोजन-वस्त्र प्राप्त कर लेता था, और उसके बदले में अपनी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार समाज की सेवा करता था। क्योंकि यदि ऐसा न होता, तो सिक्के के अभाव में, मनुष्य के लिये विदेश में जाकर निर्वाह करना कठिन हो जाता। बस इसी व्यवस्था का नाम वर्ण-व्यवस्था था। इसका ब्याह-शादी के साथ कुछ भी संबंध न था। यह केवल व्यवसायों का नियंत्रण करती थी। सब लोग अपनी रुचि और स्वभाव के अनुसार चाहे जहाँ विवाह कर सकते और करते थे। परंतु समाज इस सात्विक अवस्था में चिरकाल तक न रह सका। गंगोत्री का निर्मल नीर जैसे हुगली में कीचड़ बन गया है उसी प्रकार सत्ययुग की वह सात्विक प्रकृति कलि-युग में पहुँचकर गंदी हो गई। उसमें स्वार्थ की मात्रा अत्यधिक बढ़ गई। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र का या दूसरे शब्दों में विचारक, योद्धा, वणिक् और सेवक का जो टिकट, भोजन-वस्त्र पाने के लिये, योग्यता के अनुसार दिया जाता था वह जन्म के आश्रित कर दिया गया। जो लोग निरक्षर-भट्टाचार्य थे, उनको अध्यापक और विचारक का सर्टिफ़िकेट दिया जाने लगा। जो आटा-दाल बेचते और परले दर्जे के कायर थे, उन्हें रण योद्धा कहा जाने लगा। इससे समाज की घोर हानि हुई। इसी गर्हित नीति के प्रभाव से मनुष्य की प्रकृति इतनी गंदी हो गई कि जाति-पाँति के झूठे सिक्के को वर्ण-व्यवस्था कहकर चलाया जा रहा है।

जो लोग वर्तमान युग में प्राचीन वर्ण-व्यवस्था स्थापित करना चाहते हैं, उनके सामने सबसे बड़ी कठिनाई रुपए-पैसे के चलन की है। रुपया-पैसा और वर्ण-व्यवस्था दो परस्पर-विरोधी चीज़ें हैं। एक की विद्यमानता में दूसरी का अस्तित्व असंभव है। सिक्के का चलन रखते हुए यदि वर्ण-व्यवस्था को चलाने का यत्न किया जायगा, तो घोर अनर्थ होने की आशंका है। योरप आज पूँजीपतियों के अत्याचारों से पीड़ित होकर हाहाकार कर रहा है। रूस के बोलशेविस्ट या साम्यवादी इसका इलाज अपने सोवियट राज्य में कर रहे हैं। सोवियट-शासन का रूप बहुत कुछ हमारी पुरानी वर्ण-व्यवस्था से मिलता-जुलता है। परंतु सच तो यह है कि जब तक सिक्के का चलन बंद नहीं होता, पूँजी और श्रम का झगड़ा पूर्ण-रूप से समाप्त नहीं हो सकता।

अपने को क्रांतिकारी कहनेवाले हमारे युवक आज "पूँजी और साम्राज्यवाद का नाश" की घोषणा करते हैं। परंतु वर्तमान अवस्थाओं में पूँजी और राज्य के बिना कोई भी काम नहीं चल सकता। फिर पूँजी भी एक सापेक्ष परिभाषा है। जो समाचार-पत्र पूँजीवाद के विरुद्ध कोलाहल मचाते हैं, यदि उनके पीछे साठ-साठ सत्तर-सत्तर हज़ार की पूँजी न हो तो क्या उनके पत्र चल सकें? जिन पत्रों के स्वामी दो-दो हज़ार रुपया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मासिक अपनी जेब में डालते हैं, क्या वे १००) मासिक पानेवाले संपादक के लिये पूँजीपति नहीं ? क्या सौ रुपया मासिक कमानेवाला दूकानदार अपने २०) मासिक पानेवाले नौकर की दृष्टि में पूँजीपति नहीं ? इस प्रकार "पूँजी का नाश" का क्या अर्थ ? बात वास्तव में यों है कि वर्तमान अवस्था में पूँजी तो ज़रूर रहेगी ही और देश में शांति रखने के लिये राजा भी ज़रूर चाहिए। आवश्यकता केवल इस बात की है कि "पूँजी और शासन" केवल किसी एक व्यक्ति या मनुष्य-समूह के हाथ में न हो। उस पर किसी एक का इजारा न रहे। उसमें सारी जाति का हाथ हो। परंतु जाति-पाँति या वर्तमान वर्ण-व्यवस्था इस सिद्धांत की विरोधी है। वह एक मनुष्य-समूह—ब्राह्मणों—को विद्या का, क्षत्रियों को शासन का और वैश्यों को धन का इजारा देती है। इसलिये जाति-पाँति को रखते हुए "पूँजीवाद और साम्राज्यवाद का नाश" का शोर मचाना व्यर्थ है, क्योंकि ये दोनों चीज़ें जाति-पाँति का ही दूसरा रूप हैं। परंतु हमारे नवयुवक दिल्ली को जानेवाली सड़क पर चलकर पेशावर पहुँचना चाहते हैं—जाति-पाँति में फँसे रहकर भी "पूँजी और साम्राज्यवाद का नाश" करना चाहते हैं।

इस प्रकार यह बात स्पष्ट है कि यदि सच्ची वर्ण-व्यवस्था स्थापित हो जाय, तो पूँजी और श्रम का झगड़ा समाप्त हो सकता है। परंतु वर्तमान सिक्के के युग में वह संभव कैसे होगा, इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

योग-दर्पण

[लेखक, लाला कन्नोमल एम्० ए०]

छपकर तैयार हो गया ! हाथोहाथ बिक रहा है !!

शीघ्रता कीजिए वर्ना दूसरे संस्करण तक ठहरना पड़ेगा।

योग-शास्त्र एक अद्भुत, अमूल्य, अनूठी एवं अनुपम संपत्ति है। इसका प्रचार पहले भारतवर्ष में इतना अधिक था कि इसी के बल पर वह सारे जगत् पर शासन करता था—जगत् का गुरु था। पर जबसे इसके योग-बल का ह्रास हुआ, तबसे वह अपने गौरव-पूर्ण उच्च पद से गिर गया। अस्तु। योग-विद्या, हमारे और हमारी संतानों के लिये, नितांत आवश्यक है। इसी अभिप्राय से इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। यह पुस्तक पातंजल योग-सूत्रों, श्रीव्यासभाष्य और वाचस्पति मिश्र की वृत्ति के आधार पर लिखी गई है। पुस्तक की भूमिका में प्रायः उन सभी बातों का समावेश किया गया है, जो योग-दर्शन से संबंध रखती हैं और जो आधुनिक गवेषणा से मालूम हुई हैं। पुस्तक के अंत में आठ परिशिष्ट लगे हैं, जिनमें योग-सिद्धांत पूर्ण रीति से समझने के पर्याप्त सामग्री है। पुस्तक सर्वांग-पूर्ण है। यदि भू-मंडल की सभ्य जातियों पर अपने गौरव और महत्त्व का सिक्का जमाकर आध्यात्मिक तथा भौतिक स्वराज्य प्राप्त करना है, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। मूल्य १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गजेंद्र !

[पं० रमाशंकर मिश्र "श्रीपति"]

(१)

झूमते द्वार, गजेंद्र ! नरेंद्र के,
झूमना बंधन में किस काम का ;
हैं कहते "गजराज" सभी, पर
आज तो नाम रहा बस नाम का।
गर्जते थे वन में भय से हरि,
भूकता श्वान तुम्हें अब ग्राम का;
सत्य ही क्या बनना पड़ता सदा,
दास पराजय में बिन दाम का।

(२)

हो बलशाली महान् भला, तब
निर्बल के कुल क्यों तुम घालते ;
आदर पाते अवश्य हो यूथप !
केसरी के बल को जो सँभालते।
शुंड में लेते लपेट मृगेंद्र को,
कंदुक-सा नभ में जा उछालते ;
देते दबा फिर दंत से कुंजर !
पैर से धूल में जो मल डालते।

(३)

हा ! अपने ही पराक्रम से तुम,
वृक्ष का तोड़के पीठ पै लाते ;
रूखा सही, अपने पुरुषार्थ से,
जो कुछ भी मिला भूख मिटाते।
हो करके परतंत्र कहो तब,
क्यों परद्वार पै दाँत दिखाते ;
शोक है, अंकुश के भय कुंजर !
मस्तक में पद-रेणु लगाते।

(४)

व्यर्थ क्यों शोर मचा रहा कुंजर !
फूले-फले वन-वृक्ष उजाड़ता ;
कीच उलीच रहा सर पै खल !
क्यों अरविंद की शोभा बिगाड़ता।
पैठ हरे-भरे कानन में नित,
क्या हरिणी-दल को तू पछाड़ता ;
भाग मदांध ! उठा अब सोकर,
देख तो ! आ रहा, सिंह दहाड़ता।

(५)

कंचन हेम के हौदे सजे यदि,
मस्तक पै चँदवों की बहार है ;
झूल जरी की पड़ी हुई ऊपर,
झालरें मोतियों की भी हज़ार हैं।
दामिनी-सी लसती द्युति है गज ;
तो भी नहीं इसमें कुछ सार है ;
श्वान-शृगाल ही हैं तुमसे भले,
ढोते न वे किसी और का भार हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रूस में सहयोग-समिति-आंदोलन

[पं० देवव्रत शास्त्री]

समितियों का उद्देश्य तथा साधारण बातें

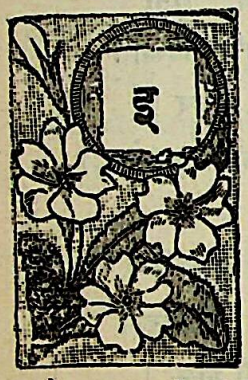

इन दिनों सोवियट रूस में हज़ारों की तादाद में सहयोग-समितियाँ (Co-operative Societies) हैं। इन संस्थाओं से यहाँ के लोगों के दैनिक जीवन और कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रोग्राम में बड़ी मदद मिल रही है। इनसे साम्यवादी समाज का निर्माण हो रहा है। इस कारण सहयोग-समितियों को रोज़ ब-रोज़ बड़ा प्रोत्साहन मिल रहा है, तथा शहरों और देहातों में बड़ी तेज़ी से इनका प्रचार हो रहा है। सोवियट-सरकार इन समितियों को साम्यवादी लाइन पर चलाने तथा उनके प्रचार प्रचार द्वारा प्राइवेट व्यापार का अंत करने की कोशिश कर रही है। वह इन समितियों को साम्यवाद-रूपी जंज़ीर की कड़ी बनाया चाहती है। इनके संगठन और संचालन द्वारा देहातों में किसानों में मिलकर काम करने के भाव को अधिक दृढ़ तथा व्यावहारिक बनाया जा रहा है। ये समितियाँ कृषक, व्यवसायी, विभिन्न पदार्थों की उत्पत्ति करनेवाले, चाज़ों की खपत करनेवाले आदि में परस्पर सहयोग और संबंध स्थापित करती जा रही हैं। कम्यूनिस्ट पार्टी तथा ट्रेड यूनियन (मज़दूर-संघ) इस दिशा में बहुत काम कर रहे हैं। ये संस्थाएँ इनके संगठन, मेंबर बनाने, रुपया लगाने आदि कार्यों में ख़ूब दिलचस्पी लेती हैं। कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रत्येक कन्वेंशन (सभा) तथा ट्रेड यूनियन कांग्रेस के हरएक अधिवेशन में सहयोग-समितियों के संबंध में ख़ास तौर पर विचार होते तथा उनकी उन्नति आदि के संबंध में प्रस्ताव पास किए जाते हैं।

सहयोग-समिति का चलन रूस में बहुत पहले से है, परंतु १९१५-१६ ई० में इस आंदोलन की बहुत अधिक तरक्क़ी हुई, तथा हज़ारों नई समितियाँ क़ायम की गईं। सोवियट-सरकार की स्थापना के समय समिति-वालों ने इस सरकार का विरोध किया; पर सरकार ने अपनी शासन-चातुरी द्वारा धीरे-धीरे उन्हें रिआयतें देकर और उनके नियंत्रण आदि के संबंध में कई क़ानून बना-कर उन्हें अपने अधिकार में किया; परंतु आगे चलकर उसने उनपर से सब बंधन उठा लिए, सिर्फ़ मामूली नियंत्रण-मात्र का अधिकार रक्खा और उन्हें अपना कार-बार पूरी स्वाधीनता के साथ करने की आज़ादी दे दी।

समितियों के विभाग

इस समय रूस में मुख्यतः तीन प्रकार की सहयोग-समितियाँ हैं—(१) उपभोगी सहयोग-समिति (Consumers' Co-operative Societies), (२) कृषक सहयोग-समिति (Agricultural Co-operative Societies) तथा (३) हस्तकला सहयोग समिति (Handicraft Co-operative Societies)। इनमें प्रत्येक प्रकार का समितियों के स्थानीय, प्रांतीय तथा केंद्रीय संगठन (Organization) है, जो विभिन्न समितियों को एक सूत्र में बाँधते हैं। एक अखिल रूसी सहयोगी बैंक भी है। रूस में इसकी ६१ शाखाएँ तथा ६०२ कारेसपौंडेंट (एजेंट) हैं, तथा विदेशों के मुख्य मुख्य नगरों में भी इसके ६१ कारेसपौंडेंट हैं। यह सभा सहयोग-समितियों को द्रव्य दिया करती है। सहयोग-समितियों के काम में इश्योरेंस यूनियन, कोआपरेटिव पब्लिशिंग सोसाइटी, कोआपरेटिव हाउ-सिंग मूवमेंट आदि भी शामिल हैं।

उपभोगी सहयोग-समिति

उपभोगी समितियाँ लोगों की ज़रूरतों के माफ़िक़ अनेक रूप में खुल चुकी हैं, तथा अभी तक खुलती जा रही हैं। उपभोगी समितियों की सर्वोपरि संस्था 'सेंट्रो-सोयस' (Centrorsoyus) कहलाती है। इसके अधीन २५६ प्रांतीय, ज़िला, तहसील आदि की उपभोगी समितियाँ हैं। साथ ही इन २५६ समितियों के अधीन ३०,००० छोटी सहयोग-समितियाँ हैं, जिनके द्वारा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

५६,००० को-आपरेटिव स्टोर्स हैं। इनमें भी व्यावसायिकों, कृषकों तथा अन्य काम करनेवालों के अलग-अलग संगठन हैं। सन् १६२६ ई० में इनके सदस्यों की संख्या एक करोड़ दस लाख थी। देहातों में चूँकि सिर्फ़ घर का मालिक ही सोसाइटी का मेंबर होता है, इसलिये देहात के क़रीब २८ प्रतिशत ही किसान सोसाइटी के मेंबर होते हैं; परंतु शहरों में परिवार के मालिक के सिवा और आदमियों के भी मेंबर हो सकने के कारण ४० प्रतिशत लोग सोसाइटी के मेंबर हो जाते हैं। सोसाइटी के हरएक मेंबर को सोसाइटी का हिस्सेदार (Shareholder) होना पड़ता है तथा कम-से-कम एक हिस्सा लेना लाज़िमी होता है। उपभोगी समिति मुख्यतः तीन काम करती है—(१) उपभोगियों को मुख्यतः व्यावसायिक चाज़ें देना, (२) खेतों से उत्पन्न पदार्थों—ख़ासकर नाज—को व्यावसायिक केंद्रों (शहरों) में पहुँचाकर उनकी बिक्री करवाना, (३) शहर की चीज़ों को देहातों में ले जाकर उन्हें बेचना। तात्पर्य यह कि शहर की चीज़ें देहात में तथा देहात की चीज़ें शहर में ले जाकर उपभोगियों को सहूलियत के साथ सस्ते दामों पर दी जाती हैं। साथ ही यह समिति जहाँ नाज की कमी हो, वहाँ नाज पहुँचाती तथा देशांतर्गत व्यापार के अलावा विदेशों से आयात-निर्यात भी किया करती है। इसकी शाखाएँ यारप तथा अमेरिका के प्रायः सभी बड़े-बड़े नगरों में खुली हुई हैं, जिनसे प्रतिवर्ष लाखों रूबल का व्यापार होता है। लोगों को माल सस्ता मिलने के लिये कोशिश की जाती है कि जहाँ जिन चाज़ों की फुटकर बिक्री की ज़रूरत हो, वहाँ वे चीज़ें सीधी पहुँचाई जायँ। समितियाँ यह भी कोशिश करती हैं कि जहाँ कच्चा माल तैयार होता है, भरसक उसके द्वारा पक्का माल वहीं तैयार हो; क्योंकि इस प्रकार वह माल अधिक सस्ता पड़ता है। सोसाइटियों द्वारा इस प्रकार सस्ते से-सस्ते दामों पर चीज़ें बेची जाने पर भी उन्हें मुनाफ़ा होता है, और वह हिस्सेदारों का बाँटा जाता है। उपभोगी समिति के कई कारख़ाने भी हैं।

शिक्षा-प्रचार-कार्य

उपभोगी सहयोग-समितियाँ सिर्फ़ व्यापारिक काम ही नहीं करतीं, बल्कि शिक्षा-प्रचार का भी काम करती हैं। १६२६ ई० में 'सेंट्रोसोयुज' के प्रधान कार्यालय में संगठन-विभाग के विशेष शिक्षकों के सिवा ५८ घूम-फिरकर शिक्षा-प्रचार करनेवाले व्यक्ति थे। इनके सिवा शाखा सहयोग-समितियों के पास २,३३६ साधारण शिक्षक थे, जिनकी संख्या इधर और बढ़ गई है। साथ ही इस समिति की ७१ शिक्षा-प्रदायिनी संस्थाएँ भी हैं, जिनमें क़रीब ६,५०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। सहयोगी क्लबों के वाचनालय भी होते हैं, और कई सोसाइटियाँ सहयोग-संबंधी पत्र—अधिकतर वाल न्यूज़-पेपर (दीवार-अख़बार)—निकालती हैं। स्त्रियों तथा साधारण कोटि के मज़दूरों को प्रोत्साहित कर आगे बढ़ाने और उन्हें अधिक कार्यक्षम बनाने के लिये, उन लोगों को इस संस्था के कार्यों की ओर खींचने का ख़ास प्रयत्न किया जाता है। इस संस्था का अपना एक प्रेस भी है, और वहाँ से 'दी को-आपरेटिव लाइफ़'-नामक एक मुख्य एवं केंद्रीय पत्र तथा अन्य अनेक स्थानीय छोटा-मोटी पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकें आदि प्रकाशित होती हैं। इस समिति की ओर से बड़े-बड़े नगरों में किताबों की बड़ी-बड़ी दूकानें भी खोली गई हैं। साथ ही समिति की देहाती दूकानों में भी छोटे-छोटे पुस्तक-भांडार खुलते जा रहे हैं। इन पुस्तक-भांडारों में प्रायः कृषि, राजनीति, अर्थ-शास्त्र, सहयोग-समिति-आंदोलन आदि विषयों की पुस्तकें रक्खी जाती हैं। उपभोगी सहयोग-समितियाँ प्रति वर्ष क़रीब दो करोड़ रूबल धन शिक्षा-प्रचार के काम में ख़र्च करती हैं।

कृषक-सहयोग-समिति

यहाँ की सहयोग-समितियों का दूसरी श्रेणी कृषक-सहयोग समितियों (Agriculturalo Co-perative Societies) की है। १६२१ के बाद इस श्रेणी की समितियों की अधिक उन्नति हुई है। इस श्रेणी की समितियों का कार्य संयुक्त-रूप से कृषि-कार्य करना, लोगों को इसके लिये प्रोत्साहित करना, कृषि के अच्छे-से-अच्छे साधन (औज़ार, बीज आदि) अपने मेंबरों को प्राप्त कराना, कृषि-नाशक-निषेध दवाएँ देना, मेंबरों द्वारा उत्पन्न की गई चीज़ों को उचित मूल्य पर बिकवाना, कृषि के नए तरीक़े सिखाना आदि है। कृषकों के सहयोग-संगठन की भी एक केंद्रीय संस्था है, जिसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'अखिल रूसी सहयोगी कृषक संघ' (All Russian Union of Agricultural Co-operatives—'Selskosoyuz') कहते हैं। यह संस्था कृषक सहयोग-समितियों की साधारण नीति स्थिर करती तथा जनता की साधारण ज़रूरतों को पूरा करने के कामों के सिवा कुछ विशेष कार्य भी करती है। १ ऑक्टोबर, १६२७ ई० को देश-भर की ऐसी कृषक-समितियों की संख्या ५०,००० और उनके मेंबरों की तादाद क़रीब ७० लाख थी। कृषक-समितियों के प्रदान-विभाग (Supply department) द्वारा किसानों में कृषि के औज़ार २० से ३० प्रतिशत तक बेचे जाते हैं। क़रीब इतना ही उनके द्वारा उत्पन्न की गई चीज़ें बिकवाई जातीं; परंतु कुछ ख़ास चीज़ें तो पूर्णतः समितियों द्वारा ही बिकती हैं। इसके साथ ही ये समितियाँ स्वयं भी उत्पादन का कार्य करती हैं। आजकल इस श्रेणी की समितियों द्वारा चीज़ों को उत्पन्न और तैयार करनेवाले सैकड़ों प्रकार के कार्य होते हैं, जिनमें काम करनेवालों की तादाद ५० हज़ार से भी अधिक है। इनके द्वारा प्रतिवर्ष लगभग पाँच करोड़ रूबल का माल तैयार होता है। इसकी प्रगति का अनुमान सिर्फ़ इसीसे लगाया जा सकता है कि १६२३-२४ ई० में इन लोगों द्वारा सिर्फ़ ६५ लाख रूबल का माल तैयार होता था, और इस समय ५ करोड़ का।

ऊपर कहा गया है कि कृषक-समितियाँ संयुक्त-रूप से खेती (Collective farming) भी करती-कराती हैं। १६२५ ई० में ऐसे २१,६२३ फ़ार्म थे। इनमें उस समय १०,८५,४५६ आदमी काम करते थे। इनकी खेती करने की ज़मीन का क्षेत्रफल ८० लाख एकड़ था। सोसाइटियाँ, इन फ़ार्मों में खेती करने के अलावा, उनके द्वारा उनके आस-पास के ग्रामीण किसानों को नमूने के रूप में खेती करने की शिक्षा देने का कार्य भी करती हैं। संयुक्त खेती के तीन प्रकार—हैं (१) कम्यून (Communes)—ये बिलकुल साम्यवादी ढंग के होते हैं, और इनके मेंबरों में कोई भी अपने हिस्से की ज़मीन, औज़ार आदि वापस नहीं ले सकता। (२) आर्टेल्स (Artels)—ये अंशतः साम्यवादी ढंग के होते हैं। इनके मेंबर एकसाथ काम तो करते हैं, परंतु उनमें जो जब चाहे, अपने हिस्से की ज़मीन, औज़ार आदि संघ से अलग करके अपनी खेती अलग कर सकता है। (३) टिलेज सोसाइटी (Tillage Societies)—इनमें अनेक आदमी मिलकर खेती करते हैं। औज़ार, ट्रैक्टर (बड़े हल) आदि मशीनें एकसाथ ख़रीदते तथा अपने-अपने खेतों में एकसाथ उनसे काम भी करते हैं। इस प्रकार की संघ-प्रथा से किसानों को यह लाभ होता है कि साधारण किसान भी बड़े-बड़े औज़ारों आदि का लाभ उठाता है, तथा एकसाथ बहुतों के काम करने से खेती का ख़र्च बहुत कम पड़ता है।

कृषक सहयोग-समितियाँ कृषकों में खेती-संबंधी साधारण शिक्षा-प्रचार का काम भी बड़े पैमाने पर करती हैं। लेक्चर, पत्र-पत्रिकाएँ, पैम्फ़लेट आदि द्वारा ख़ूब प्रचार किया जाता है। साथ ही कुछ स्पेशल स्कूल भी खुले हुए हैं, जिनके द्वारा खेती करने की शिक्षा दी जाती है। इस कार्य में इस समय १,५०० से भी अधिक वैज्ञानिक कृषि-विशेषज्ञ लगे हुए हैं। खेती करने के पुराने और कम उपयोगी तरीक़ों को तलाक़ दी जा रही है, और नए तथा अधिक लाभप्रद उपायों का व्यवहार एवं प्रचार बढ़ाया जा रहा है। इस समिति की ओर से १६२५ ई० में अच्छे बीज चुनने, रखने तथा बेचने के ४००० केंद्र, खेती की मशीनें किराए पर देनेवाले ८,००० केंद्र और पशुओं को बच्चा जनने की सुविधा देनेवाले २५०० केंद्र खुल चुके थे। इनके सिवा अन्य दिशाओं में भी अनुभव करके उपयोगी केंद्र खोलने का यत्न हो रहा है। इस संस्था के द्वारा कृषकों को औज़ार, बीज तथा नक़द द्रव्य भी क़र्ज़ के रूप में बहुत कम सूद पर दिया जाता है, जो कि अगली फ़सल के समय कृषक लोग नाज के रूप में या नक़द अदा करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में कृषक सहयोगी समितियों की बड़ी आश्चर्यजनक उन्नति हुई है। देहातों में इस संस्था का प्रचार ख़ूब हो रहा है। इस संस्था के पास इस समय करीब ११ करोड़ रूबल की संपत्ति है। परंतु जिस बड़े पैमाने पर यह संस्था काम कर रही और करना चाहती है, उसके लिये यह धन पर्याप्त नहीं है। सरकार की ओर से इस संस्था को सरकारी बैंकों से अधिक समय के लिये साधारण सूद पर क़र्ज़ मिलने, ट्रैक्स कम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिए जाने, मालों के आयात-निर्यात में सहूलियतें देने आदि प्रकार की रियायतें प्राप्त होती हैं।

हस्तकला-सहयोग-समिति

हाथ से किए जानेवाले छोटे-छोटे उद्योग-धंधों की उन्नति के लिये इनके कार्यकर्ताओं को संगठित तथा प्रोत्साहित किया जाता है। इनके कार्य-कर्ताओं को संगठित कर इन उद्योग-धंधों को समवाय रूप से चलवाने का प्रबंध किया जाता है। क्रांति के पूर्व इस श्रेणी के लोगों का कोई संगठन न था; परंतु वर्तमान सरकार इन लोगों को एक सूत्र में बाँधने और संगठित करने के लिये सचेष्ट है, और अबतक उसने बहुत कुछ कर भी दिखाया है। १ ऑक्टोबर, १९२६ ई० को हस्तकला-कार्यकर्ता सहयोगी समितियों की संख्या १२,००० तथा उनके मेंबरों की संख्या ५,००,००० थी। ये समितियाँ अपने मेंबरों को उनके काम के लिये कच्चे माल देतीं तथा उनके द्वारा तैयार किए गए पदार्थों को बिकवाती हैं। माल बिकवाने के कार्य में सरकार तथा उपभोगी सहयोग-समितियों से इन हस्तकला-कार्यकर्ता-सहयोग-समितियों को काफ़ी मदद मिलती है। ऐसी सहयोगी समितियों का प्रचार यहाँ तक हो गया है कि अनेक सामूहिक (संयुक्त) दूकानें भी खुलने लगी हैं, जिनमें अनेक आदमी एकसाथ मिलकर काम करते हैं। अब तक इस क़िस्म की ५०० से भी अधिक दूकानें खुल चुकी हैं। इस समिति की ओर से 'दी हैंडीक्राफ़्ट को-आपरेटिव हेरल्ड'-नामक एक मासिक तथा 'हैंडीक्राफ़्ट आर्टेल'-नामक साप्ताहिक पत्र निकलते हैं। इनके सिवा छोटे-छोटे घरेलू उद्योग-धंधे-संबंधी अनेक पुस्तक-पुस्तिकाएँ आदि भी बराबर निकलती रहती हैं। इस संस्था की ओर से अपने मेंबरों की अशिक्षा दूर करने, उनकी शारीरिक शक्ति बढ़ाने, उनका मनोरंजन करने आदि के लिये विद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय, व्यायाम-शालाएँ, क्लब आदि भी खुले हुए हैं।

सोवियट रूस में इन सहयोग-समितियों का एक बहुत प्रमुख स्थान है। ये समितियाँ, लोगों—ख़ासकर किसानों तथा दस्तकारीवालों—के हृदयों में, अपनी कार्य-पद्धति द्वारा साम्यवादी भाव भरने में बहुत सफल हो रही हैं। इनके द्वारा लोगों में एकसाथ मिलकर काम करने की शक्ति, विश्वास-पात्रता, मितव्ययिता, सहयोगिता आदि का भाव दिनोदिन दृढ़ होता जा रहा है। उसके साथ ही यह आंदोलन भी ज़ोर पकड़ता जा रहा है। भारतवर्ष के अधिकांश स्थानों के—मुख्यतः देहातों के, जहाँ पर सहयोग-समितियों की सबसे अधिक आवश्यकता है—लोग तो अभी यह भी नहीं जानते कि 'सहयोग-समिति' किस चिड़िया का नाम है; उसका संचालन करना तथा लाभ उठाना तो दूर की बात है।

बिलकुल नई पुस्तकें

१. हृदय की परख—ले० प्रोफ़ेसर चतुरसेन शास्त्री मूल्य १), सजिल्द १॥)
२. योग-दर्पण—ले० श्रीलाला कन्नोमल एम्० ए० ,, १), ,, १॥)
३. युधिष्ठिर—ले० श्रीकृष्णगोपाल माथुर ,, ॥), ,, १)
४. देवी शकुंतला—ले० अध्यापक हरिप्रसाद द्विवेदी "श्रीहरि" ,, ॥=), ॥=) १=)
५. राष्ट्रपति जवाहिर—... ... ... ,, ॥=), ,, १=)
६. दिलावर सियार—ले० श्री पं० भूपनारायण दीक्षित ,, ॥) रं० जि० ॥)
७. उत्सर्ग—ले० आयुर्वेदाचार्य प्रो० चतुरसेन शास्त्री ,, ।=), स० ॥)

राधाकृष्ण लाला कार्यालय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्तव्य और प्रायश्चित्त

[श्रीयुत नंदलाल वर्मा]

(१)

प्रिये ?"

"प्राणधन !"

"तुम कहती हो कि प्रेम मधुर है, पर मैं कहता हूँ कि प्रेम साक्षात् विष है। जैसे अग्नि देखने में सुंदर है, परंतु उसके अंदर भयंकर भस्म कर देनेवाली ज्वाला वर्तमान है। कलाधर में कला है, निर्मल आकाश उनका शुभ स्थान है, पर विरही जनों के लिये वह यम से कम नहीं। गुलाब में काँटे हैं। इसीलिये मैं कहता हूँ कि प्रेम साक्षात् में मधुर अवश्य है, पर उसके भीतर घोर विष है।"

"तो क्या किसी से प्रेम करना मूर्खता है ?"

"हाँ, इसीलिये तो कहता हूँ कि मुझसे संबंध तोड़ दो। तुम इस पाखंडी समाज के अत्याचार न सह सकोगी।"

"प्यारे, तुमने यह किस प्रकार कह दिया कि मैं अत्याचार सहने योग्य नहीं हूँ ? समाज स्त्री-जाति पर हो सकनेवाला सबसे बड़ा अन्याय तो मेरे ऊपर कर चुका। अब और अधिक क्या करेगा ? मेरे सारे जीवन को तो उसने नीरस बना दिया। इससे अधिक नीरसता अब मेरे जीवन में आ ही नहीं सकती। यदि मुझे सताया भी गया, तो भी मैं आपकी शरण में रह-कर उस सताए जाने को अच्छा समझती हूँ। आप मेरे हृदय के बोझ को नहीं समझ सकते। स्त्री हूँ, सब कुछ सह लूँगी, पर यह नहीं सहा जाता।"

अंतिम शब्द कहते-कहते शीला की आँखों में आँसू आ गए। अपनी परिस्थिति से तंग आकर आज उसने विनोदशंकर से विवाह का प्रस्ताव किया था।

(२)

सचमुच समाज ने शीला के ऊपर घोर अत्याचार किया है। उसके पिता दामोदरदास एक बड़े रईस थे। नगर में उनकी अच्छी ख्याति थी। उनके विचार सनातन-धर्मी थे। वे "अष्टवर्षा भवेत् गौरी..." वाले सिद्धांत को माननेवाले थे। अतः शीला की अवस्था जब ११ वर्ष की हुई, तब उसकी शादी दामोदरदास ने लाला राधामलजी के साथ कर दी। राधामलजी के केश श्वेत हो गए थे, पर थे वे बड़े रँगीले। इस ५५ वर्ष की अवस्था में भी ऐसे रहते थे कि उनके मुक़ाबले में २५ वर्ष का सुंदर युवक भी क्या रहेगा। जब से शीला का विवाह उनसे हुआ, तब से वह और भी टीम-टाम से रहने लगे। शरीर रोगी एवं वृद्ध था, पर मन चंचल और जवान। वासनाएँ उनको चारो ओर से घेरे रहती थीं। धन काफ़ी था।

शीला इस नए घरमें मालकिन होकर आई थी। घर का सारा काम-काज तथा इंतज़ाम दासों और लालाजी की विधवा भगिनी के हाथों में था। सुंदर विशाल कोठी एवं विलासमय वस्तुओं के बीच में रहकर उसका मन बहुत चंचल हो गया था। उसके लिये नाना प्रकार की सुविधाओं का योजनाएँ की गई थीं। कहीं लालाजी नाराज़ न हो जायँ, इसलिये शीला को सब लोग हाथों ही-हाथ लिए रहते थे। लालाजी ने अब अपने मित्रों से मिलना बहुत कम कर दिया था, वह इसलिये कि नवयुवती शीला का ध्यान कहीं दूसरी ओर आकर्षित न हो। और, यह ठीक भी था, जब चोर चोरी करता है, तो उसे सदैव यह भय बना रहता है कि कहीं ऐसा न हो कि वह पकड़ा जाय, और इसीलिये वह बचने के लिये पचासों यत्न भी करता है। पर उस महाप्रभु की ऐसी सुंदर व्यवस्था है कि प्रकृति के विरुद्ध चलनेवाले सदैव धोका खाते हैं।

शीला जिन बूढ़े पति को अपना सर्वस्व और सर्वाधार समझती थी, उन्हीं से अब उसे धीरे-धीरे घृणा उत्पन्न होने लगी। लखनऊ के दूषित वायुमंडल ने उसके मस्तिष्क को ख़राब कर दिया था। जिस समय वह [illegible]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवीन दंपति को आपस में परिहास करते देखती, उस समय उसका मन कुढ़ जाता था। सोचती थी, एक मेरे वह बूढ़े पति हैं जिनकी शरीर की त्वचा अजगर सूख रही है, हड्डियाँ दिखलाई दे रही हैं, गाल पोपले हो रहे हैं, आँखें अंदर घुस गई हैं, उनकी ज्योति कम हो गई है, मुख में नक़ली दाँत लगे हुए हैं, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई हैं। शरीर में बिलकुल बल नहीं। दुर्बल हाथों से जिस समय वह मुझे गोद में लिटाकर मेरे केशों के ऊपर हाथ फेरते हैं, उस समय मुझे बड़ी व्याकुलता मालूम पड़ती है। यही इच्छा होती है कि किसी प्रकार वे मेरे पास से फ़ौरन् हट जायँ। और दूसरे ये युवक हैं, जिनके पास खड़े होकर दो मिनट बात करने की इच्छा होती है। सुंदर मुख, मुख से निकलती हुई सुगंधित श्वास, गठा हुआ बलिष्ठ शरीर, सँवरे हुए केश। इच्छा होती है कि एकटक देखा करूँ। इसी प्रकार शीला के विचार एकदम बदल गए। उसके नेत्रों को देखने से ऐसा मालूम होता था कि वे वासना के भिखारी हैं। वे प्रेम की तृप्ति चाहते हैं।

(३)

गर्मियों के दिन थे। दिन-भर लू चलते रहने के कारण तहख़ाने से बाहर निकलना कठिन था। सायंकाल ठंढक हो जाने पर ही लोग पार्कों और बाग़ों की सैर के लिये निकला करते थे। लाला राधामलजी भी शीला के साथ हवा खाने कभी-कभी जाया करते थे, लेकिन बहुत कम। आज दिन ठंढा था, अतः वे सिकंदरबाग़ की ओर हवा खाने के लिये शीला को ले गए थे। झुटपुटा हो चुका था। अँधेरे में दूर की चाज़ दीखती न थी। घूमते-घूमते दोनो दंपति बाग़ की एक बेंच पर आकर बैठ गए थे। गोमती के ऊपर से आते हुए सांध्य समीरण के पराग-मिश्रित झोंकों ने शीला के मन में वासना की आग भड़का दी थी। उसने एक बार लालाजी के झुर्रियोंदार मुँह को देखा और घृणा से दूसरी ओर मुँह फेर लिया। उस बुज़ुर्ग चेहरे में यौवन का उल्लास, प्रेम की उमंग उसे कहीं न देख पड़ी। वह उदास हो गई। एकाएक क्रोध और उद्वेग से पागल-सी होकर वह लालाजी से दूर हटकर बैठ गई। दूर पर एक कुर्सी और पड़ी हुई थी। उस पर एक युवक बैठा हुआ कुछ गुनगुना रहा था। उसका इन लोगों की ओर ध्यान आकर्षित न हुआ था। किंतु शीला की वासना-लोलुप आँखों ने उसे देख लिया था। जिस जगह वह युवक बैठा था, ठीक उसके सामनेवाले पथ पर दो गहरे-गहरे गड्ढे किसी काम के लिये खोदे गए थे। कुछ देर में शीला और राधामलजी उसके सम्मुख होकर उस गड्ढेवाले पथ पर जाने लगे। वे कुछ ही दूर गए होंगे कि युवक ने किसी स्त्री की बड़ी ज़ोर से चीख़ने की आवाज़ सुनी। वह फ़ौरन् ही उठकर उस ओर भागा। उसने देखा कि वे दोनो स्त्री-पुरुष, जो अभी-अभी उसके सम्मुख होकर निकले थे, गड्ढों में गिर पड़े हैं और बेहोश हो गए हैं। स्त्री के सर से बहुत ख़ून निकल रहा था। उसकी साड़ी फट गई थी। पुरुष को उठाने पर मालूम हुआ कि जैसे उसमें कुछ जान ही न रही हो। उसने दोनो को निकालकर घास पर लिटा दिया और दियासलाई जलाकर उन दोनो के घावों को देखने लगा। शीला के सर से बहुत ख़ून निकल चुका था, उसके केश उसके मुख पर चारो ओर बिथर गए थे। सारा शरीर अस्त-व्यस्त हो गया था। आधे शरीर पर ही साड़ी ढकी हुई थी, बाक़ी भूमि पर पड़ी थी। युवक ने पास ही से पानी लेकर उसका ख़ून धोया और अपनी धोती का थोड़ा-सा टुकड़ा फाड़कर उसके मस्तक में बाँध दिया। राधामलजी अभी तक बेहोश पड़े थे। उसने उनको होश में लाने के लिये बहुत चेष्टा की, पर उसे सफलता न मिली। इतने में उसने देखा कि शीला ने मुँह से तनिक आह की, और आँखें खोलीं। उसने जब अपने सम्मुख उस युवक को देखा, तो उसे तनिक लज्जा मालूम हुई। उसने फ़ौरन् आँखें बंद कर लीं। फिर दो मिनट बाद उठकर अपने वस्त्र सँभालने लगी। युवक ने उसे उठते देखकर कहा—"आप तनिक लेटी रहें, आपके सर से बहुत अधिक रुधिर निकल गया है, कमज़ोरी बहुत होगी।" इस पर शीला ने धीमी आवाज़ में पूँछा—"इनके तो कहीं अधिक चोट नहीं लगी? यह क्या बेहोश हैं?"

युवक—"हाँ बेहोश हैं, चोट तो कहीं मालूम नहीं देती। संभव है, कहीं कोई अंदरूनी चोट लगी हो।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीला—"क्या आप किसी सवारी का इंतज़ाम कर दीजिएगा ?"

युवक—"आप किस मुहल्ले में रहती हैं ?"

शीला—"ऐशबाग़वाली कोठी में, जो डॉक्टर उमाशंकर के मकान के समीप है।"

युवक—"अच्छा। तो आप लोग ठहरिए, मैं सवारी लेकर अभी आता हूँ।"

इतना कहकर युवक चला गया। इतने में राधामलजी को कुछ-कुछ होश आया। शीला ने उनके मस्तक पर भीगा हुआ कपड़ा रख दिया, और बराबर उनके ऊपर पंखा झलने लगी। होश आने पर वे उठने की चेष्टा करने लगे; पर जब उन्हें मालूम हुआ कि उनका एक हाथ और एक पैर उतर गया है, और दर्द बहुत है, तो वे अपने को सँभाल न सके और फिर वहीं लेट गए और शीला से पूछने लगे—"तुम्हारे तो अधिक चोट नहीं आई ? मेरे तो हाथ-पैर उखड़ गए हैं, बड़ा दर्द हो रहा है।" शीला ने ज्योंही उनके पैर को छुआ, वे फ़ौरन् चिल्ला दिए। इतने में युवक ताँगा ले आया। उसने उन दोनों को बड़ी सावधानी से बिठला दिया, और राधामलजी से पूछा—"यदि आप आवश्यकता समझते हैं, तो मैं आपके घर तक आपको सावधानी से पहुँचा दूँ, क्योंकि संभव है कि रास्ते में हिलने डुलने से आपको अधिक कष्ट हो।"

राधामलजी के हाथ-पैर गड्ढे में गिरने के कारण उतर गए थे, इस कारण ताँगे में पीछे बैठना उनके लिये बड़ा हानिकारक था, इसलिये युवक की बात से वे बड़े असमंजस में पड़ गए। शीला के कारण उन्होंने अपने मित्रों से मिलना-जुलना कम कर दिया था, क्योंकि उनको भय था कि शीला की दृष्टि किसी दूसरे या किसी दूसरे की शीला पर न पड़ जाय। पर काल चक्र बड़ा विचित्र है। समय के फेर में पड़ जाने से इच्छा न रहते हुए भी आज उन्हें अपनी अनुमति देनी पड़ी। लालाजी आगे बैठे, युवक और शीला पीछे। ऐशबाग़ मुहल्ले और इस उद्यान की ताँगे की रास्ता पौन घंटे की थी। वे लोग थोड़ी ही दूर गए होंगे कि शीला को एक बार फिर चक्कर आ गया। ताँगे पर अधिक जगह न होने के कारण युवक ने उसका सर बड़े संकोच, भय एवं लज्जा से अपनी जंघा पर रख लिया। इसके सिवा वहाँ और हो ही क्या सकता था। शीला को एक बार फिर चेत हुआ। उसे इस प्रकार पड़े रहने में बड़ा आनंद का अनुभव होने लगा। उसके शरीर में एक प्रकार की विद्युत्संचालित होने लगी, केवल लज्जा एवं संकोच के कारण उसने उठने का प्रयत्न भी किया। परंतु न-जाने उसके मन को इस सुख को लूटने के लिये कौन विवश कर रहा था। वह लेटी ही रही। युवक के शरीर में भी रोमांच हो आया। इस क्षण उसे और भी आनंद हुआ। इस समय स्थिति ही ऐसी थी कि युवक भी अपने को न सँभाल सका, उसका एक हाथ अपने आप उठकर शीला के मस्तक पर जा पहुँचा। उसने शीला के मस्तक पर बिखरे हुए सारे केशों को एक-एक करके ऊपर कर दिया। शीला का हृदय न-जाने क्यों धक-धक होने लगा। साथ-ही-साथ वह आनंद-मग्न हो गई। उसकी इच्छा यही थी कि उसके मस्तक पर युवक योंही हाथ रक्खे रहे। शीला सोचने लगी—"अहा ! कैसा स्वर्गीय आनंद है। कहाँ वे बूढ़े और सिर्फ़ हड्डीवाले शिथिल हाथ, जिनमें तनिक भी स्फूर्ति नहीं और कहाँ यह आनंद में मग्न कर देनेवाले कोमल-कोमल हस्त जिनके स्पर्श-मात्र से ही शरीर पुलकित हो रहा है। कहाँ वे गड्ढों में धँसी हुई छोटी-छोटी ज्योति-हीन आँखें और कहाँ ये विशाल लोचन ! मस्त—एकदम मस्त, मदिरा से भरे हुए दो, बड़े-बड़े, लाल, तेज एवं विलास-पूर्ण नेत्र। जी चाहता है, इनमें छिप बैठूँ।" सोचते-सोचते वह एकदम पागल-सी हो गई। वह अपने शूल को बिलकुल भूल गई। उसने एक-एक युवक के कपड़ों में अपना मुँह छिपा लिया। युवक बड़े असमंजस में पड़ गया। उसका चित्त बड़ा व्याकुल होने लगा। पर ताँगेवाले और लालाजी के भय के कारण, कि कहीं इन लोगों को अपना भेद न खुल जाय, चुपचाप बैठा रहा। लालाजी के तो होश ठिकाने न थे। वे तो बैठे-बैठे बड़े मधुर स्वर में कराह रहे थे। उनको उस समय अपने सिवा और किसी की चिंता न थी। वे लोग किसी प्रकार कोठी पर पहुँच गए। वहाँ पहुँचकर डॉक्टर उमाशंकरजी फ़ौरन् बुलाए गए। वे औषधि देकर घर चले गए। युवक जिस समय घर जाने को हुआ, उस समय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीला ने रोक लिया। उसने पूछा—"आपका मकान कहाँ है?"

युवक—"हज़रतगंज में।"

शीला—"आपका शुभ नाम?"

युवक—"मुझे विनोदशंकर कहते हैं।"

शीला ने नीचे निगाह करके बड़े संकोच और लज्जा से कहा—"आपने हम लोगों पर जो दया दिखलाई है, उसके लिये मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूँ।"

विनोद—"इसमें दया की क्या बात थी। यह तो मनुष्य के नाते मेरा कर्तव्य था। अच्छा, अब आज्ञा दीजिए।"

विनोद का मन वहाँ से जाने को न था, पर शिष्टाचार भी कोई चाज़ होती है। बस इसीलिये विवश होकर उसे आज्ञा माँगनी पड़ी। विनोद ने शीला की ओर एक बार देखा, शीला ने भी विनोद की ओर देखा। उस समय दोनो की आँखों में अलसता थी, दोनो के हृदय धक-धक हो रहे थे, दोनो को एक दूसरे से विलग होते हुए कष्ट मालूम हो रहा था। बड़ी हिम्मत करके शीला ने कहा—"आज भोजन यहीं कर लीजिए।" इसके लिये विनोद ने इनकार कर दिया। शीला ने फिर कहा—"अच्छा तो मुझे आशा है कि कल तो आप दर्शन अवश्य देंगे।" अबकी विनोद को शीला का आग्रह मानना पड़ा, वे उससे दूसरे दिन आने का वादा करके अपने घर लौट आए। उस दिन शीला की रात्रि बड़ी बेचैनी के साथ कटी। शय्या पर रात-भर करवटें लेती रही। दर्द का ध्यान उसे तनिक भी न था, वह उसे बिलकुल भूल-सी गई थी।

(४)

दूसरे दिन राधामलजी की बूढ़ी आँखों ने शीला का पलटा भाव समझ लिया। उन्हें जिन बातों का भय था, वे उनके सम्मुख हो घटित होने लगीं। जब उन्होंने देखा कि विनोदशंकर का आना-जाना अब नियमपूर्वक हो गया है, तो वे और भी कुढ़े, पर कर ही क्या सकते थे। उन्हें भय था कि कहीं शीला नाराज़ न हो जाय। समाज में इस गुप्त संबंध के प्रकट होने से जो बावैला मचेगा, उससे भी वे बहुत घबराते थे। शिथिलेंद्रिय और कायर होने के कारण उन्होंने इस पारस्परिक मिलन में कोई प्रबल अड़चन नहीं डाली। हाँ, कभी-कभी शीला को समझा-बुझाकर वश में करने का उन्होंने प्रयत्न अवश्य किया। किंतु एक बार खुलकर खेलने की इच्छुक शीला ने बूढ़े पति की वाग्वाणों से खूब ही मरम्मत की। उस दिन से लालाजी कुछ न बोलते, केवल भीतर-ही-भीतर कुढ़ते रहते।

शीला और विनोद में इतनी घनिष्ठता हो गई थी कि वे विना संकोच के आपस में मिलने लगे। शीला के इस नवीन संबंध को घर के सभी नौकर-चाकर जानते थे। पर मारे डर के कोई चूँ तक नहीं कर सकता था। ऐसी आनंदपूर्ण अवस्था में रहने पर भी शीला को सुख न था। उसने आज बहुत ढाढ़स के साथ विनोदशंकर से पुनर्विवाह का प्रस्ताव किया था।

(५)

उस समय बातें करते-करते रात्रि हो गई थी। शीला ने अपने प्रस्ताव पर बहुत अधिक ज़ोर दिया, उसने कहा—"हृदयेश, मुझे इस प्रकार छुप-छुपकर बातें करते लज्जा मालूम होती है। मैं तुम्हें अपना तन-मन सभी कुछ अर्पण कर चुकी, मुझे यह राज-प्रासाद, धन, और ऐश्वर्य किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। मैं केवल तुम्हारे प्रेम की भूखी हूँ। बोलो, क्या कहते हो?" विनोद उसे हृदय से चाहते थे, पर वे केवल उसकी परीक्षा ले रहे थे। उन्हें समाज का बिलकुल भय न था। उन्होंने उससे एक बार फिर कहा—"देखो सोच लो, फिर कहीं पछताना न पड़े। क्या तुम यह सोचती हो कि यह समाज के प्रति अत्याचार नहीं है?"

इतना सुनते ही शीला का भाव बदल गया। उसका मुख क्रोध से रक्त-वर्ण हो गया। उसने ज़ोर से कहा—"हैं! समाज के प्रति अत्याचार? या समाज का हमारे प्रति अत्याचार? बस रहने दीजिए। इस निठुर हिंदू-समाज ने मेरा सर्वस्व हरण किया है। क्या एक ११ वर्ष की बालिका का विवाह ५५ वर्ष के बूढ़े के साथ कर देने में अत्याचार नहीं है? निरपराध गऊ को क़साई के खूँटे से बाँध दो और कहो कि गऊ का अत्याचार क़साई पर है। क्यों ठीक है न? अरे! मैं तो ऐसा मज़ा चखाऊँगी कि ऊँचा-ऊँची नाकवाले देखेंगे कि कोई है। संबंध हो जाने पर हम लोगों को यह ढोंगी समाज व्यभिचारी कहेगा, पर मूर्ख को यह पता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं कि सारा संसार ही व्यभिचारी है। बूढ़ बाबा जाते हैं, अपनी पोती-तुल्य पत्नी से व्यभिचार करने। यह अत्याचार नहीं है, यह है स्वर्ग का महापुण्य। क्यों ठीक है न? यदि कोई बाबा निरपराध बालिका का गला घोटते हैं, तो समाज चूँ नहीं करता, लेकिन यदि कहीं भूले से भी किसी स्त्री का पैर नीचे पड़ जाय, तो समाज उसे दूध की मक्खी की तरह निकालकर दूर फेंक देता है। यह समाज के न्यायाधीशों का न्याय-पूर्ण न्याय है। पर अब देखूँगी कि वे मेरा क्या बिगाड़ते है। मैं ऐसा पदाघात करूँगी कि समाज का सारा घमंड चकनाचूर हो जायगा, सारी व्यवस्थाएँ मिट्टी में मिल जायँगी, सारे उपदेश रसातल पहुँच जायँगे। हम व्यभिचारी हैं, और वह सदाचारी। कैसा विडंबना है यह!" यह कहते-कहते शीला एकदम चुप हो गई, और बड़ी उत्सुकता से विनोद की ओर देखने लगी।

विनोद ने कहा—"हाँ, ये सारी बातें ठीक हैं, पर तुमसे जानती हो कि तुम संबंध जोड़ने पर मेरे घरवाले कितने बिगड़ेंगे और उस अवस्था में मुझे घर-बार सब कुछ छोड़ना पड़ेगा। और क़ानून भी मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ेगा।"

"तो क्या आप चाहते हैं कि मैं अपने हृदय को ऐसी नारकीय अवस्था में रखकर तिल-तिल करके जला दूँ?" यह कहते-कहते शीला के नेत्रों में आँसू आ गए। उसने एक लंबी साँस भरकर कहा—"आह! संसार भी कैसा स्वार्थी है, सभी अपने स्वार्थ को देखते हैं। क्या माता, क्या पिता, क्या भाई, पति, मित्र, इस संसार में सभी स्वार्थी हैं, स्वार्थ से सभी अंधे हैं। आप चाहते हैं कि बिना किसी हानि के सारा कार्य संपादित हो जाय। आप घर पर ही रहें, पिता-माता की सेवा भी करते रहें।" अब शीला रो दी। उसने रोते-रोते कहा—"मैं यह कब चाहती हूँ कि आप अपने माता-पिता से विलग हों। आप भी स्वार्थी हैं, आप ऐसा कठिन बलिदान नहीं कर सकते। आप युवक हैं, आपसे आपकी जाति को बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। मैं आपसे पूछती हूँ कि आपका हम-ऐसी अबलाओं के प्रति क्या कर्तव्य है? यही न कि आप कोरी व्यवस्थाओं का हवाला देकर हमें समझाएँ। पर मान लीजिए कि ऐसा करने से आपको सफलता न मिली, और मैं मुसलमान अथवा ईसाई हो जाऊँ या किसी गुंडे के फंदे में फँस जाऊँ, तो उस समय आपका समाज और आप क्या करेंगे?" शीला चुप हो गई। विनोद ने शीला को अच्छी प्रकार ठोंक-बजाकर देख लिया। विनोदशंकर चरित्रवान् थे, वे कामी न थे। उन्हें कर्तव्य का अधिक ध्यान था, और ख़ासकर स्त्रियों पर अत्याचार तो वे कभी नहीं देख सकते थे। हाँ, शीला के विषय में विनोद में एक बात का अंतर तो अवश्य हुआ। वह अंतर था शीला के ऊपर विनोद का अनुराग और प्रेम। विनोद को शीला की इन बातों ने विवश कर दिया।

(६)

आज लाला राधामल के यहाँ बड़ी गड़बड़ मची हुई है। छोटे से लेकर बड़े तक सभी के चेहरे उतरे हुए हैं। नौकर-चाकर सभी घबराए हुए हैं। लालाजी अपना माथा टेके एक कुर्सी पर बैठे हुए हैं। उनकी आँखों में आँसू साफ़ झलक रहे थे। थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा। फिर उन्होंने अपना मस्तक ऊपर करके अपने एक दास से कहा—"क्यों बेनी, तूने कल रात को दरवाज़ा किस वक़्त बंद किया था?"

बेनी ने डरते-डरते उत्तर दिया—"सरकार, उस समय ११ बजा होगा।"

लालाजी—"उस वक़्त मालकिन अपने कमरे में थीं या नहीं?"

बेनी—"सरकार, इसका पता मुझे नहीं है, क्योंकि कल रात को मैं ऊपर नहीं गया।"

लालाजी फिर किसी गहरे विचार में डूब गए। उस समय वह कमरा ऐसा मालूम हो रहा था, मानो उसमें किसी की मृत्यु हो गई हो। इस समय दस बज गया था, अभी तक घर में चूल्हा न जला था। सब लोग भूखे प्यासे थे। रात की घटना ने सबके चेहरे फ़क़ कर दिए थे। शीला चली गई और किसी को उसके जाने की आहट भी न हुई, इससे लाला राधामल के ऊपर वज्र गिर पड़ा। उनका माथा ठनकने लगा। अब उन्हें अपनी भूल मालूम हुई। पर अब क्या हो सकता है, जब "चिड़ियाँ चुग गईं खेत"। इस घटना के दो दिन तक लालाजी से कुछ भी खाया-पिया न गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें हर समय शीला का ध्यान बना रहता था। उनके हृदय में उसके प्रति कभी तो क्रोध, कभी घृणा, कभी हँसी और कभी दया मालूम होती थी।

समय बीत गया। उनको शीला का पता लग गया। उन्हें मालूम हो गया कि वह विनोदशंकर के साथ पटना चली गई, और वहीं रहने लगी है। विनोदशंकर के घर-वालों ने भी उसे एक चरित्र-भ्रष्ट युवक समझकर प्रत्यक्षमें छोड़ दिया था। पर उसके माता-पिता के दिलों में उसके प्रति प्रेम जैसा-का-तैसा बना था। उसके जाने के बाद उन लोगोंके २-६ दिन भूख से कटे; पर मुहल्लेवालों को दिखलाने के लिये उनको विनोद के प्रति कृत्रिम घृणा दिखलानी पड़ती थी। जब उन्हें मालूम हो गया कि विनोद एक शक्कर के कारख़ाने में २००) मासिक पर मैने-जर है, तब वे संतुष्ट हो गए। उन्हें कोई विशेष चिंता न रही। इधर जितना अधिक समय व्यतीत होता जाता था, उतना अधिक लाला राधामलजी व्याकुलता एवं कष्ट से अधीर होते जाते थे। उनके मन में एक काँटा बैठ गया था। उन्हें अपने किए पर बड़ा पछतावा होने लगा। वे सोचने लगे कि कौन-से प्रायश्चित्त से यह ग्लानि, कष्ट और हृदय का कंटक दूर होगा। एक दिन लालाजी अपने कमरे में अकेले बैठे सोच रहे थे, इतने में उनके होठों से कुछ शब्द निकले। वे कहने लगे—"इसमें उस बेचारा का दोष ही क्या, मैंने क़साई बनकर उसका वध किया था। वह किसी प्रकार बचकर चली गई। हाँ, उस समय मैं बिलकुल अंधा हो गया था। हाय! मैंने कामातुर होकर उसका सर्वनाश कर डाला। मुझे चाहिए था कि बाक़ी आयु हरि-भजन करने में बिता देता। ज़िंदगी-भर विषय-वासना में फँसा रहा। अंतिम समय उन महाप्रभु से किसी कोने में बैठकर क्षमा माँगता। मेरे पास धन था, उससे दीनों का कष्ट दूर करता। उसने इस नारकीय गृह को त्याग दिया; अच्छा ही किया। यह उसके रहने योग्य हो न था। अग्नि और जल का क्या साथ? सच पूछो, तो घर छोड़कर उसने मेरा बड़ा उपकार किया। मेरा आँखें खोज दीं। मुझे अपने कर्तव्य का ज्ञान करा दिया। हा प्रभो! अब मेरा कर्तव्य क्या है?" कहते-कहते लालाजी मेज़ पर माथा टेककर कुछ सोचने लगे।

(७)

लालाजी के घर में आज सबके चेहरे प्रसन्न मालूम देते हैं, पर हृदय सबके धड़क रहे हैं। आज लालाजी का वेश देखने योग्य है। खद्दर की गांधी-टोपी, खद्दर का कुरता और खद्दर की धोती पहने हुए हैं। वस्त्र सब गेरुए रँग में रँगे हैं। उनका चेहरा इस समय बड़ा पवित्र मालूम हो रहा है। उसपर गंभीरता है। मुख की आकृति को देखकर ऐसा मालूम पड़ता है, मानो कोई महान् योगिराज किसी पवित्र कार्य-सिद्धि के लिये समाधि में मग्न होना चाहते हैं। थोड़ी देर चुप रहकर उन्होंने बेनी से पूछा—"क्यों बेनी, स्टेशन से मोटर आ गया?"

बेनी—"अभी तो नहीं आया, सरकार।"

लाला—"अच्छा, कल जो चिट्ठी आई है, उसे लाना तो।"

बेना ने फ़ौरन् चिट्ठी लाकर दी। लालाजी चिट्ठी खोलकर पढ़ने लगे। पत्र में लिखा था—

पटना

४—५—२१ ई०

"पूजनीय लालाजी,

मुझे आपका पत्र मिला। आश्चर्य है कि आपमें इतना जल्दी ऐसा परिवर्तन क्योंकर हो गया। आप मेरे और शीला के इस कार्य को बुरा कहने की अपेक्षा भला बतलाते हैं। ख़ैर, जो कुछ भी हो, मैंने अपना कर्तव्य पालन किया है। मैं अपने को समाज का एक तुच्छ क्रांति-कारी सेवक समझता हूँ। यदि मैं पहले से ही विवाहित होता, तो यह कार्य न करता। और उस अवस्था में मैं शीला का विवाह और किसी से करा देता। ख़ैर, ये तो हुईं मेरे विचारों की बातें। आगे आप लिखते हैं कि शीला-समेत आकर मैं आपसे एक दफ़ा अवश्य मिलूँ। इस पत्र के आने के बाद आपके दो तार भी आए। मैं अब आपकी इच्छा को नहीं टाल सकता। शीला को रात में ज्वर हो आया था। यदि सोमवार को ठीक हो गई, तो उसे साथ लेकर प्रातःकाल मंगलवार को आपके यहाँ अवश्य पहुँचूँगा।

आपका दास—

विनोद"

लालाजी ने जैसे ही पत्र समाप्त किया, वैसे ही किसी ने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनके कमरे का पीछेवाला दरवाज़ा खोला। उन्होंने मुड़कर देखा, तो विनोद और उनके पीछे शीला संकोच के साथ लालाजी की ओर बढ़ रहे थे। लालाजी ने बढ़कर विनोद को गले से लगा लिया, और शीला से कहा—"बेटी, अच्छी तो रहीं न?"

शीला 'बेटी'-शब्द से अवाक् रह गई। उसे ऐसा होते देख लालाजी ने कहा—"बेटी, चौंक मत। मैंने तेरे प्रति बड़ा भारी अत्याचार किया है। अच्छा ही हुआ जो तूने ऐसे उन्नतिशील युवक को इच्छानुसार अपना पति चुना। यदि कहीं तेरा पैर और कहीं पड़ जाता, तो मैं कहीं का न रहता। ऐसे क्रांतिकारी सुधारक की जय हो।" यह कहते-कहते लालाजी ने मेज़ पर रक्खी हुई माला विनोद को पहना दी और फिर आवेश में कहने लगे—"मैंने अपना कर्तव्य स्थिर कर लिया। किसी तीर्थ-स्थान में जाकर परमात्मा का भजन करूँगा। आजसे तुम लोग मेरी संपत्ति के अधिकारी हुए। मैंने सारी संपत्ति तुम्हारे नाम लिखकर उसको नियम-पूर्वक रजिस्ट्री करा दी है। मेरी भयंकर भूल का यही प्रायश्चित्त है। मैं तुम लोगों के आने तक का इंतज़ार कर रहा था। लो, यह सब काग़ज़ सँभाल लो, और बाक़ी हिसाब-किताब का शीला को पता है। ताँगा बाहर खड़ा है। अच्छा, मुझे क्षमा करना। मैं पहुँचकर अपना पता लिखूँगा।"

विनोद और शीला को स्वप्न में भी यह आशा न थी कि लालाजी यों एकदम ही बदल जायँगे। उनमें ऐसा आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा। विनोद और शीला इस अपार त्याग को देखकर गद्गद हो गए। उनकी आँखों से आँसू निकल आए। वे दोनो खद्दरधारी योगी के चरणों पर गिर पड़े। उन दोनो ने लालाजी से रुकने के लिये बहुत आग्रह किया, पर वे न माने। और उसी समय की गाड़ी से कहीं चले गए। विनोद इच्छा न रहते हुए भी शीला के आग्रह से लालाजी का सारा काम-काज देखने लगे। थोड़े दिनों के बाद शीला और विनोद हरद्वार गए। वहाँ उन लोगों से लालाजी की भेंट हो गई। विनोद ने देखा कि लालाजी ने यहाँ पर एक छोटा-सा अबला-आश्रम खोल दिया है। उसमें भूली-भटकी स्त्रियाँ आश्रय पाती हैं। उसका ख़र्च वे स्वयं मेहनत करके चलाते हैं। थोड़े दिन बाद विनोद वग़ैरह लखनऊ लौट आए। अब शीला लालाजी से घृणा नहीं करती, बल्कि उनमें उसकी अटल श्रद्धा है। वह लालाजी को अपना गुरु और पिता समझती है, और उनसे प्रेम करती है।

मनोविज्ञान

[लेखक, प्रिंसिपल चंद्रमौलि सुकुल एम्० ए०, एल्० टी०]

इस पुस्तक में मनोविकारों, मानसिक वृत्तियों और मनोभावों तथा मनोवेगों का सूक्ष्म परिचय अतीव सरल एवं साधु भाषा में स्पष्टता-पुर्वक लिखा गया है। मुखाकृति हृदय का परिचय जानने की कला सीखने के लिये इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। प्रत्येक शिक्षक और छात्र के पास इसकी एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए। विषय गहन है, पर लेखन-शैली इतनी सरल और सरस कि पुस्तक मनोरंजन और शिक्षा दोनों का उत्तम साधन बन गई है। बातें बारीक हैं, रचना रोचक है। यू० पी० को की सरकार ने नार्मल-स्कूलों के अध्यापकों के लिये इसे स्वीकृत भी किया है। मूल्य ॥।), सुनहरी रेशमी जिल्द १।)

संचालक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"टूटी वीणा"

[कुमारी रामेश्वरी देवी गोयल]

(१)
झिलमिल करते थे तारे
आशा के सूने नभ में;
मलयानिल-सी निश्वासें,
उठता थीं अंतस्तल में।

(२)
उर की निरंत पीड़ा ने
सोता उन्मद जगाया;
अपने कंपित हाथों से,
वीणा को आन उठाया।

(३)
हाँ; तार सभी उसमें थे—
निर्दय! तूने क्यों तोड़ा?
ज्यों-ज्यों मैंने फिर उसको,
कर यत्न बहुत, था जोड़ा।

(४)
उन आँखों को मदिरा से—
भरकर अवदात कटोरा,
होठों तक ही लाई थी—
तूने आ, क्यों झकझोरा?

(५)
बजतो कैसे अब वीणा?
टूटो ध्वनि निकली उससे;
हो खिन्न, दिया मैंने भी—
रख दूर उसे निज कर से।

(६)
वह जीवन का जोवन थी!
प्रणयन करती थो निशिदिन,
बैठा रोता है अब तो—
यह भग्न हृदय उसके बिन!!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्मेलन की संवत् १९८६ की परीक्षाएँ

[पं० दयाशंकर दवे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

इस वर्ष की प्रथमा और मध्यमा परीक्षाएँ ९ सितंबर, सन् १९२९ से तथा उत्तमा परीक्षा २२ ऑक्टोबर से आरंभ हुई। प्रति दिन दो प्रश्न-पत्र दिए गए। परीक्षा-फल पर १ दिसंबर को परीक्षा-समिति ने विचार किया। २५०४ परीक्षार्थियों ने आवेदन-पत्र भेजे थे। इनमें से १७१९ परीक्षार्थी सम्मिलित और ८०० उत्तीर्ण हुए। भिन्न-भिन्न परीक्षाओं के परीक्षार्थियों की संख्या नीचे-लिखे अनुसार थी —

परीक्षा	आवेदन-पत्र आए	सम्मिलित हुए	उत्तीर्ण	प्रतिशत
प्रथमा—	१,६५७	१,१८५	६१८	५३
मध्यमा—	६५८	४११	१२८	३१
उत्तमा—	५४	३४	१६	४७
मुनीमी—	७२	५०	१०	२०
आरायज़नवीसी—	१७	१२	५	४२
राष्ट्रभाषा-प्रचार-परीक्षा—	३६	२७	२३	८५
योग—	२,५०४	१,७१९	८००	४६

इस वर्ष जितने परीक्षार्थियों ने आवेदन-पत्र भेजे, उनमें से केवल ६९ प्रतिशत परीक्षा में सम्मिलित हुए। सब परीक्षाओं में केवल ४६ प्रतिशत ही परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए। गत वर्ष यह संख्या ४४ प्रतिशत थी। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की संख्या कम होने का प्रधान कारण यही है कि परीक्षा-समिति सम्मेलन की परीक्षाओं के स्टैंडर्ड को किसी प्रकार से कम करना नहीं चाहती। मध्यमा परीक्षा में तो इस वर्ष उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की संख्या केवल ३१ प्रतिशत ही है।

इस वर्ष उत्तमा परीक्षा में सम्मिलित होनेवाले परीक्षार्थियों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई। गत वर्ष केवल १३ परीक्षार्थी ही सम्मिलित हुए थे। परंतु इस वर्ष उनकी संख्या ३४ तक पहुँच गई, जिसमें एक परीक्षार्थिनी भी थी। इस वर्ष परीक्षा-समिति ने नियम-परिवर्तन कर उन व्यक्तियों को भी इस परीक्षा में सम्मिलित होने की आज्ञा दी, जो किसी विश्वविद्यालय की बी० ए० या एम्० ए० परीक्षा हिंदी लेकर उत्तीर्ण कर चुके थे। इस प्रकार सम्मेलन के विशारद और विश्वविद्यालयों के बी० ए० या एम्० ए० एक ही साथ इस परीक्षा में सम्मिलित हुए। इस कारण परीक्षा-फल भी इस वर्ष अच्छा हुआ। साहित्य-रत्नों की संख्या इस वर्ष इतनी अधिक हो गई, जितनी कि सम्मेलन के स्थापित होने के संवत् से लगाकर गत वर्ष तक न हुई थी। यह संख्या उत्तमा-परीक्षा के स्टैंडर्ड को कम करके नहीं बढ़ाई गई है।

विश्वविद्यालयों के कुछ बी० ए० और एम्० ए० परीक्षोत्तीर्ण व्यक्तियों का इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण होना स्पष्ट-रूप से सिद्ध करता है कि सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा का स्टैंडर्ड विश्वविद्यालयों की एम्० ए० परीक्षा से ऊँचा है। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये कम-से-कम ४५ प्रतिशत अंक प्राप्त करने होते हैं। किसी भी विश्वविद्यालय में एम्० ए० की परीक्षा के लिये ४५ प्रतिशत उत्तीर्ण अंक नहीं रक्खे गए। हम युक्त प्रांत के इंटरमीजिएट बोर्ड और अन्य प्रांतों के बोर्डों तथा देशी राज्यों के शिक्षा-विभाग के अधिकारियों से अनुरोध करते हैं कि वे सम्मेलन के उत्तमा-परीक्षोत्तीर्ण व्यक्तियों को वे सब सुविधाएँ देने की कृपा करें, जो वे विश्वविद्यालयों के एम्० ए०-परीक्षोतीर्ण व्यक्तियों को देते हैं।

मध्यमा-परीक्षा का स्टैंडर्ड यद्यपि काफ़ी ऊँचा है, फिर भी परीक्षा-समिति उसको और भी ऊँचा करने का प्रयत्न कर रही है। इसके वैकल्पिक विषयों में अभी तक केवल एक प्रश्नपत्र रहता था, जिसमें कि उस विषय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के संबंध में काफ़ी पाठ्य पुस्तकें नहीं रक्खा जा सकती थीं। इस कारण वैकल्पिक विषयों का स्टैंडर्ड उतना ऊँचा नहीं रक्खा जा सकता था, जितना कि इतिहास का आजकल है। इसलिये परीक्षा-समिति ने आगामी वर्ष से मध्यमा के प्रत्येक वैकल्पिक विषय में दो प्रश्नपत्र कर दिए हैं। उनका पाठ्य-क्रम भी बदल दिया है। इससे हम आशा करते हैं कि भविष्य में हमारे विशारदों के साहित्य और इतिहास के साथ अपने वैकल्पिक विषय के ज्ञान में भी काफ़ी वृद्धि होगी। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होनेवाले परीक्षार्थियों की संख्या की कमी का प्रधान कारण परीक्षा के स्टैंडर्ड का काफ़ी ऊँचा होना ही है। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये परीक्षार्थियों को ४० प्रतिशत अंक प्राप्त करने होते हैं। इसके परीक्षक भी प्रायः विश्वविद्यालय तथा कॉलेज के ऐसे अध्यापक होते हैं, जो अपने विषय के विशेषज्ञ होते हैं। सम्मेलन के विशारदों को हिंदी-साहित्य और इतिहास का अच्छा ज्ञान होता है, और वे अपने विषयों को योग्यता-पूर्वक पढ़ा भी सकते हैं। सैकड़ों विशारद शिक्षक का कार्य बहुत सफलता-पूर्वक कर रहे हैं। लेखन-कार्य में भी कई विशारदों ने अच्छा कार्य करके दिखाया है। सम्मेलन द्वारा इस वर्ष एक 'विशारद'-सूची प्रकाशित की गई है, जिसमें १००० से अधिक विशारदों का संक्षिप्त परिचय है। इससे कोई भी सज्जन आसानी से मालूम कर सकता है कि हमारे विशारदगण बिना विशेष प्रोत्साहन के ही क्या कर रहे हैं। यदि उन्हें जनता, सार्वजनिक संस्थाओं जैसे म्युनिसिपैलिटी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और देशी रियासतों के शिक्षा-विभाग द्वारा उचित प्रोत्साहन मिलने लगे, जिसको प्राप्त करने का उनको पूरा अधिकार है, तो हमें पूर्ण विश्वास है कि वे और भी उत्तम कार्य करके दिखा सकेंगे। वे अपने गुणों के उपयोग का अवसर चाहते हैं। क्या उनको वे अवसर प्राप्त न हो सकेंगे? जिन देशी रियासतों ने हमारे मध्यमा-परीक्षोत्तीर्ण व्यक्तियों को वेतन-वृद्धि कर प्रोत्साहित किया है, उनका परीक्षा-समिति और सम्मेलन बहुत कृतज्ञ है। आशा है, अन्य देशी राज्यों के तथा म्युनिसिपैलिटी एवं शिक्षा-विभाग के अधिकारीगण हमारे विशारदों को उचित प्रोत्साहन देने की कृपा करेंगे।

अभी तक संपादन-कला-विषय मध्यमा-परीक्षा के अंतर्गत ही समझा जाता रहा, और जो परीक्षार्थी इसमें सम्मिलित होना चाहता था, वह मध्यमा के साथ ही सम्मिलित हो जाता था। इस वर्ष दो परीक्षार्थियों ने इस विषय के साथ ही मध्यमा-परीक्षा देने का आवेदन-पत्र भेजा। वे सम्मिलित भी हुए, और अनुत्तीर्ण हुए।

मध्यमा-परीक्षा के साथ इस परीक्षा के विषयों का भी लिया जाना ठीक नहीं समझा गया, और परीक्षा-समिति ने स्थायी समिति की अनुमति से 'संपादन-कला' की दो नवीन परीक्षाएँ स्थापित कर दीं। इन परीक्षाओं में विशेषतः विशारद ही सम्मिलित हो सकेंगे। जो 'विशारद' पत्र-संपादन का कार्य अपनी जीविका का साधन बनाना चाहते हैं, उनको इस परीक्षा में सम्मिलित होकर अपनी योग्यता बढ़ानी चाहिए। इन परीक्षाओं का पाठ्य-क्रम और नियमावली तैयार हो चुकी है, और विवरण-पत्रिका में प्रकाशित कर दी गई है। आशा है, इस परीक्षा का प्रचार भी सम्मेलन की अन्य परीक्षाओं के समान खूब होगा।

प्रथमा परीक्षा का परीक्षा-फल इस वर्ष गत वर्ष की की अपेक्षा अच्छा रहा। यह परीक्षा विशेष रूप से प्रचार की ही दृष्टि से रक्खी गई है। इसी उद्देश्य से परीक्षा-समिति ने इस परीक्षा में सम्मिलित होने के संबंध में कुछ विशेष सुविधाएँ दे दी हैं। जिन परीक्षार्थियों की मातृभाषा हिंदी नहीं है, वे केवल साहित्य-विषय में ही उत्तीर्ण होने पर प्रथमा के प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के अधिकारी हो जाते हैं। जो परीक्षार्थी मिडिल परीक्षा हिंदी लेकर उत्तीर्ण होते हैं, उनको भी इसी प्रकार का अधिकार दे दिया गया है। महिलाओं के लिये गार्हस्थ्य-शास्त्र-नामक एक नया विषय अनिवार्य करके उनके दो अनिवार्य विषय कम कर दिए गए हैं। इन सब सुविधाओं का लाभ परीक्षार्थियों ने खूब उठाया। यद्यपि परीक्षा में सम्मिलित होनेवाले परीक्षार्थियों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि नहीं हुई, पर उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की संख्या ६०० से भी अधिक हो गई है। हम इस परीक्षा का प्रचार ख़ासकर उन प्रांतों में बहुत अधिक चाहते हैं, जहाँ के निवासियों की मातृभाषा हिंदी नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन प्रांतों में इस परीक्षा के नए केंद्र खोलने को भी परीक्षा-समिति तैयार है।

बर्मा, आसाम, बंगाल, उत्कल, दक्षिण-भारत, महाराष्ट्र, गुजरात और सिंध में राष्ट्रभाषा हिंदी का विशेष रूप से प्रचार करने के लिये परीक्षा-समिति ने 'राष्ट्र-भाषा-प्रचार-परीक्षा'-नामक एक नवीन परीक्षा स्थापित की है। समय की कमी होने पर भी आसाम, मैसूर और कोचीन-राज्यों से २७ परीक्षार्थी इस परीक्षा में सम्मिलित हुए, और २६ उत्तीर्ण हुए। अभी इस परीक्षा के केवल तीन-चार केंद्र ही इन प्रांतों में खुल पाए हैं। परीक्षा-समिति कम-से-कम ५० केंद्र इन प्रांतों में खोलना चाहती है। किसी भी प्रतिष्ठित पाठशाला में, जहाँ कि परीक्षा की उचित व्यवस्था हो सकती हो, केंद्र खोला जा सकता है। परीक्षा का पाठ्य-क्रम ऐसा रक्खा गया है कि हिंदी न जाननेवाला व्यक्ति भी नौ-दस महीने १ घंटा प्रतिदिन समय देने पर आसानी से पाठ्य-क्रम पूरा कर सकता है। क्या हम आशा करें कि इन प्रांतों के देश-प्रेमी सज्जनगण इस कार्य में विशेष-रूप से सहयोग करने की कृपा करेंगे?

आरायज़नवीसी-परीक्षाओं में सम्मिलित होनेवाले परीक्षार्थियों की संख्या बहुत ही कम है। अदालती कारवाई करने के लिये हिंदी जाननेवाले व्यक्तियों की कमी दूर करने को ही यह परीक्षा क़ायम की गई है। युक्त-प्रांत में और अन्य प्रांतों में भी अदालतों कारवाई उर्दू में ही की जाती है। वकीलों को हिंदी जाननेवाले मुंशी अब भी आसानी से नहीं मिलते। यदि हमारे वकील लोग अपने मुंशियों को हमारी आरायज़नवीसी-परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये उत्साहित करें, तो अदालतों में हिंदी-प्रचार की एक बड़ी असुविधा दूर हो जाय।

महिला-समाज में सम्मेलन-परीक्षाएँ गत तीन-चार वर्षों से लोकप्रिय हो रही हैं। इस वर्ष १०१ देवियों ने आवेदन-पत्र भेजे थे। गत वर्ष उनकी संख्या ६१ थी। प्रथमा परीक्षा में गार्हस्थ्य-शास्त्र-विषय विशेषकर उन्हीं की सुविधा के लिये रक्खा गया है। आशा है, आगामी वर्ष और भी अधिक महिलाएँ हमारी परीक्षाओं में सम्मिलित होंगी।

आजकल परीक्षा-केंद्रों की संख्या २५४ है। गत दो वर्षों में भिन्न-भिन्न प्रांतों तथा राज्यों में केंद्रों की संख्या नीचे-लिखे अनुसार थी—

प्रांत	संवत् १९८५	संवत् १९८६
संयुक्त-प्रांत	७२ केंद्र	९३ केंद्र
बिहार	३६ ,,	५७ ,,
मध्य-प्रांत	२१ ,,	३० ,,
इंदौर-राज्य	६ ,,	१५ ,,
ग्वालियर-राज्य	३ ,,	४ ,,
मध्यभारत के अन्य राज्य	४ ,,	५ ,,
बीकानेर-राज्य	६ ,,	७ ,,
जयपुर-राज्य	५ ,,	८ ,,
काठियावाड़	२ ,,	२ ,,
अन्य-राज्य	८ ,,	१५ ,,
बंगाल-प्रांत	३ ,,	४ ,,
मदरास	३ ,,	३ ,,
आसाम	२ ,,	२ ,,
बर्मा	२ ,,	२ ,,
पंजाब	२ ,,	४ ,,
बंबई	१ ,,	३ ,,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस कोष्ठक से स्पष्ट रूप से विदित होता है कि भारत के कई प्रांतों और देशी राज्यों में सम्मेलन-परीक्षाओं के नवीन केंद्र स्थापित कर उनका प्रचार करने की बहुत गुंजाइश है।

गत वर्ष सम्मेलन के परीक्षा-केंद्रों के बढ़ाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया गया था। सबसे अधिक वृद्धि संयुक्त-प्रांत और बिहार में हुई। मध्य-प्रांत और इंदौर-राज्य में भी नवीन केंद्र यथेष्ट संख्या में बढ़े। इंदौर-राज्य में नवीन केंद्र स्थापित करने में श्रीयुत हरिहरजी त्रिवेदी एम्० ए० काव्यतीर्थ ने विशेष रूप से सहायता दी। परीक्षा-समिति की ओर से हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। इस वर्ष अन्य-भाषा-भाषी प्रांतों और देशी राज्यों में हम ५० नवीन केंद्र स्थापित करना चाहते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि भिन्न-भिन्न स्थानों के हिंदी-प्रेमी सज्जन परीक्षाओं के प्रचार के पवित्र कार्य में परीक्षा-विभाग की सब प्रकार से सहायता करेंगे।

इस वर्ष परीक्षा-समय में सम्मेलन-कार्यालय से भेजे गए निरीक्षकों द्वारा विशेष रूप से निरीक्षण किए जाने की व्यवस्था की गई थी। बिहार, युक्त-प्रांत और राजपूताने के २०-२५ केंद्रों का निरीक्षण कराया गया था। इससे कई आश्चर्यजनक बातों का पता लगा। एक केंद्र में तो परीक्षा-समय में परीक्षा-भवन में व्यवस्थापक, निरीक्षक व परीक्षार्थियों का कुछ पता नहीं था। तो भी उत्तर-पुस्तकें सम्मेलन-कार्यालय में ठीक समय पर प्राप्त हो ही गईं। यह केंद्र तोड़ दिया गया, और वहाँ के सब परीक्षार्थी इस वर्ष भी अनुत्तीर्ण माने गए। कुछ केंद्रों के संबंध में निरीक्षकों ने ठीक समय पर परीक्षा आरंभ न किए जाने की शिकायत की। कहीं-कहीं परीक्षार्थियों को अनुचित लाभ उठाने के अवसर दिए जाने की भी शिकायत आई, और उन केंद्रों में मध्यमा के केंद्र तोड़ दिए गए। यदि भविष्य में इन केंद्रों के व्यवस्थापकों ने विशेष ज़िम्मेदारी के साथ कार्य नहीं किया, तो प्रथमा के केंद्र भी तोड़ने को परीक्षा-समिति बाध्य होगी। इस प्रकार की शिकायतें बहुत ही कम केंद्रों के संबंध में आई हैं। प्रायः सब केंद्र-व्यवस्थापकों ने अपना सब कार्य अवैतनिक रूप से, पूरी ज़िम्मेदारी के साथ, किया। हम उनको अपने कार्य की सफलता पर बधाई देते हैं, और आशा करते हैं कि संवत् १९८७ की परीक्षा के लिये हमारे सब केंद्र-व्यवस्थापक परीक्षाओं का इतना अच्छा प्रबंध करेंगे जिससे किसी भी व्यक्ति को किसी प्रकार की शिकायत करने का मौक़ा न मिलेगा।

अवैतनिक रूप से परीक्षक का कार्य करने में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के अध्यापकों, परीक्षा-समिति के सदस्यों और विशारदों ने हमारी बड़ी सहायता की। प्रथमा-परीक्षा के परीक्षक तो विशेष संख्या में अनुभवी 'विशारद' ही नियत किए गए थे यह सूचित करते हर्ष होता है कि इन्होंने अपना काम बड़ी लगन, ज़िम्मेदारी और तत्परता के साथ किया। इस वर्ष परीक्षक इतनी संख्या में नियुक्त किए गए थे कि किसी भी परीक्षक के पास ६० से अधिक उत्तर-पुस्तकें नहीं भेजी गईं। इसका परिणाम संतोष-प्रद ही हुआ।

उत्तर-पुस्तकें अधिक सावधानी के साथ देखी गईं, और परीक्षा-फल भी उनके पास से जल्दी प्राप्त हुआ। यदि कुछ परीक्षकों ने विशेष कारणों से अपना परीक्षा-फल बहुत समय तक न रोक रक्खा होता, तो परीक्षा-फल कई दिन पहले प्रकाशित हो जाता। मैं सब परीक्षकों को सम्मेलन की ओर से धन्यवाद देता हूँ, और आशा करता हूँ कि भविष्य में वे इसी प्रकार की कृपा किया करेंगे।

सम्मेलन की परीक्षाओं का कार्य इतना बढ़ गया है कि अब परीक्षा-समिति का संगठन नए ढंग से किया जाना बहुत आवश्यक है। वर्तमान परीक्षा-समिति ने उसे हिंदी विश्व-विद्यालय-समिति का रूप देना स्वीकार कर लिया है। जब हमारी सम्मेलन की परीक्षा-समिति का संगठन वर्तमान विश्वविद्यालयों की समितियों के समान हो जायगा, तो कार्य और भी अधिक सुचारु-रूप से चलने लगेगा। परीक्षाओं का महत्त्व बढ़ जायगा, और हिंदी-प्रचार का कार्य अधिक तेज़ी के साथ हो सकेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गीत

[पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"]

कहाँ उन नयनों की मुसकान ?
खोल देती द्रुत परिचय, प्राण !
पल्लवित तनु की लंबी ज्योति
जगमगा जीवन के सब पात
सहस्रों सुख-स्मृतियों की तान—
तरंगों में उठ फिर-फिर काँप,
तड़ित पथ की-सी चकित अजान,
खोल देती द्रुत परिचय, प्राण ।
अर्थ से रहित दृष्टि अश्लेष,
शून्य में एक पूर्ण अवशेष,
प्रिया आजानु विलंबित-केश,
शेष तनु में अशेष, निर्देश,
ज्ञान में भी पूरी नादान,
खोल देती द्रुत परिचय, प्राण।
विजन की-सी सुहाग अम्लान
जाग, फिर कर प्रभात-सर-स्नान,
रेणु के राग किए शृंगार
सहज-जगमग, नभ रही निहार;
मौन पिक-प्रिय-उर में आह्वान
खोल देती द्रुत परिचय, प्राण।

पतिव्रता

मूल-लेखक—
बँगला के सुप्रसिद्ध नाटककार
स्वर्गीय गिरीशचंद्र घोष;

[अनुवादक, पं० रूपनारायण पांडेय]

यह एक बढ़िया सामाजिक नाटक है। इसकी विशेषता इसीसे जानी जा सकती है कि अनेक ग्रंथों के रचयिता स्वनामधन्य पांडेयजी ने इसका अनुवाद किया है। नाटक सामाजिक है। इसमें एक भले आदमी का बिगड़ना और अंत में पतिव्रता स्त्री के प्रभाव से सुधरना, बड़ी ख़ूबी से, दिखाया गया है। स्त्री-पुरुष सबके पढ़ने लायक़ है। दो रंगीन और दो सादे चित्र। पृष्ठ-संख्या २४०; मूल्य १।=), सजिल्द १।।।=)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

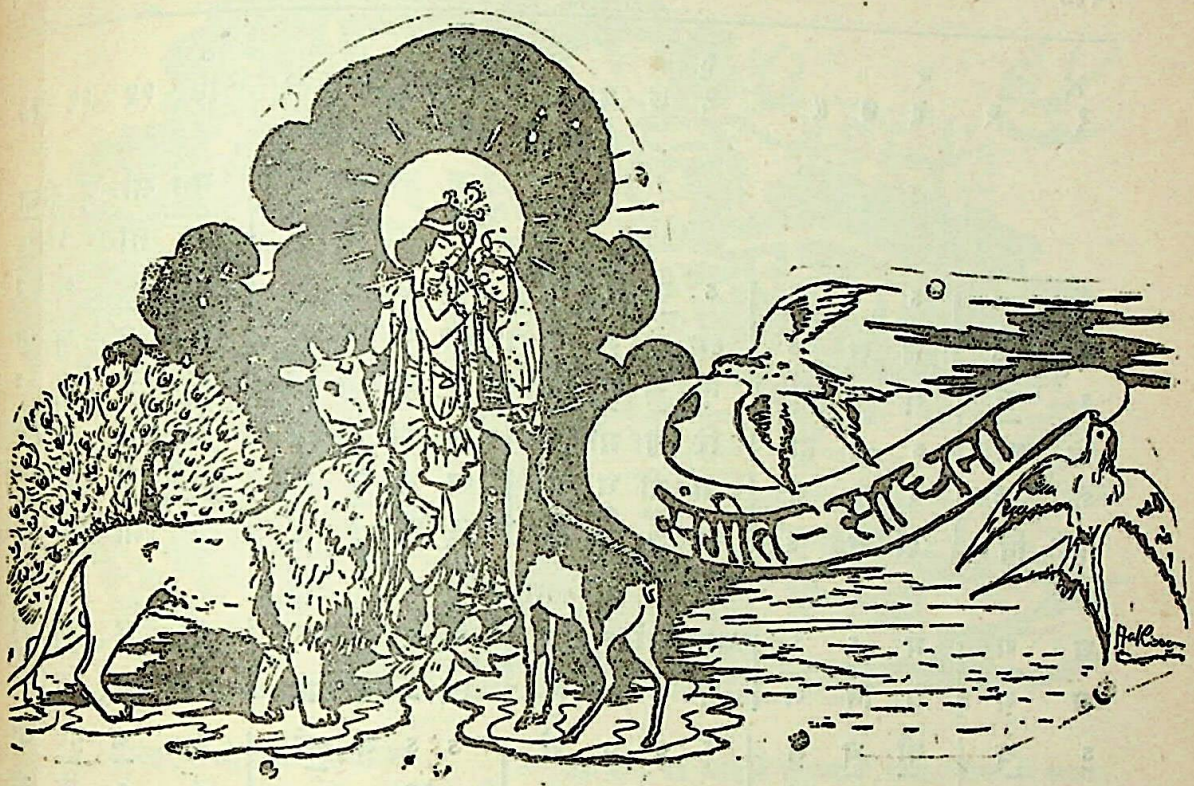

स्वरकार तथा शब्दकार—रायसाहब डॉक्टर भोलादत्त काला, गढ़वाल

ध्रुपद मालकोश—ताल विष्णु, मात्रा १७

ध्यान—आरक्तवर्णो धृत रक्तयष्टि वीरः सुवीरेषु कृतप्रवीरः; वीरैर्वृतो वैरिकपालमाला-माली मतो मालव-कौशिकोऽयम्।

अंशादि—मध्यमांशगृहं न्यासं पंचम वर्जित-स्वरम्; खाडवा जाति विज्ञेया मालकौशिकसंज्ञकः।

उत्पत्ति—मालवाकान्हड़ायुक्ता वार्गीश्वरीसुमिश्रिता; कौशिको जायते यत्र मध्यम मुख्य ईरितः।

विवरण—यह राग हनुमत तथा भरत-मत के ६ मूल रागों में से है। सोमेश्वर और कलानाथ-मतों के ६ रागों में इसका नाम नहीं पाया जाता। इन दोनो मतों में इसको रागिनी-स्वरूप दिया गया है। अर्थात् सोमेश्वर-मत के अनुसार यह मेघ-राग की और कलानाथ-मतानुसार श्रीराग की रागिनी कही गई है। प्राचीन काल में यह मार्ग-रूप में गाया जाता था। किंतु प्रचलित संगीत-पद्धति के अनुसार देशी-रूप में गाते हैं। मार्ग-रूप में इसका रूप संपूर्ण था। देशी प्रणाली में औडव और कोई-कोई संगीतशास्त्री खाडव प्रकार में वर्तते हैं। औडव प्रकार में रि० प० स्वर और खाडव में केवल पंचम स्वर वर्जित माना जाता है। शेष स्वर कोमल लगाए जाते हैं। यह भैरवी-ठाट का राग है। इसका वादी स्वर मध्यम व अनुवादी निषाद है। प्राचीन समय में यह किसी मत से हेमंत और किसी से शिशिर-ऋतु में गाया जाता था। किंतु अब ऋतु का उपयोग केवल मेघ-राग के गाने में किया जाता है। अन्य रागों के लिये ऋतु की उपयोगिता जाती रही है। आजकल यह राग रात्रि में तृतीय प्रहर के बाद गाया जाता है। इस राग की प्रकृति अत्यंत स्थिर है। इस कारण इसमें उपासना-संबंधी भजन ध्रुपद, धमार तथा अन्य गंभीर प्राकृतिक तालों में रचकर गाए जाते हैं। कुशल गायकों को इसमें खूब आलापचारी का अवसर मिलता है। इसकी उत्पत्ति अखिलेश्वरी श्रीपार्वतीजी के कंठ से होनी कही गई है। इसका प्रचलित आरोहावरोह स्वरूप यह है। सा ग म ध नी सां। सां नी ध म ग सा

स्थायी—हे माई स्थूल-सूक्ष्म-रूपिणी तू जगत-जननि ताप-हारिणि मोक्षदायिनि सिंहवाहिनि अंबे अभयकरनि।

अंतरा—अगम निगम रटत सोहि पावत नहिं आदि-अंत, सकल-विश्व-वंदिनी तू शिवे तारनि तरनि। हे०

संचारी—तुही सत्त्व, रज, तममयी सृष्टि-भरनि पोषणि प्रलयकरनि तुही, देवि मोह-तिमिर दूर-करनि।

आभोग—इंदुवदनि दान दीजे तव चरणन अटल भक्ति, माँगत जन आरत दुर्गे तू दुष्ट-दलनि। हे०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

× २ ३ ४ ०
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

स्थायी

										ग	ध	मग	सां	ध़	नीसा
										हे	ऽ	ऽ	मा	ऽ	
म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	म	गं	सा	ऽ	ऽ	ध़	नी	ध़	म़
स्थू	ऽ	ल	सू	ऽ	क्ष्म	रू	ऽ	पि	णि	ऽ	तू	ज	ग	त	ज
ऽ	ग	म़	ध़	म़	नी	ध़	सा	नी	ग	सा	म	ऽ	ग	म	ध़
नि	ता	ऽ	प	हा	रि	णि	मो	ऽ	क्ष	दा	यि	नि	सि	ऽ	ह
ऽ	ऽ	ऽ	म	ध	सा	नी	ध	नी	स	ग	ध	मग	सानी	सा	ध़ नीसा
हि	नि	अं	बे	ऽ	अ	भ	य	क	रि	नि	हे	ऽ	ऽ	मा	ऽ

अंतरा

ध	ग	म	ऽ	ऽ	धनी	सां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सां	नी	ग	सा	ऽ	
अ	ग	म	नि	ग	म	र	ट	त	तो	ऽ	हि	पा	ऽ	व	त	न	
ऽ	ध	नी	ध	म	ऽ	ऽ	ऽ	मं	ऽ	ऽ	गं	सां	ऽ	ध	नी	सां	
हिं	आ	ऽ	दि	अं	ऽ	त	स	क	ल	वि	ऽ	श्व	वं	ऽ	दि	नी	
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नी	गं	सां	ध	नी	सा	ग	ध	मग	सानी	या	ध़	नीसा	
ऽ	तू	शि	वे	ऽ	ता	र	नि	त	र	नि	हे	ऽ	ऽ	मा	ऽ		

संचारी

सा	ध	म	ऽ	ऽ	ऽ	ग	म	ग	सा	ऽ	ऽ	ऽ	धं	नी	स	म	
तु	ही	ऽ	स	ऽ	त्व	र	ज	ऽ	त	ऽ	म	म	थी	ऽ	सूं	ऽ	
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	म	ध	म	नी	ध	सां	नी	गं	सां	
ष्टि	भ	र	नि	पो	ष	णि	प्र	ल	य	क	र	नि	तु	ही	ऽ	ऽ	
ऽ	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गम	धनी	सां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
ऽ	वि	मो	ऽ	ह	ति	मि	र	दू	ऽ	र	क	र	नि	ऽ	ऽ	ऽ	

आभोग

ध	ग	म	ऽ	ऽ	धनी	सां	ट	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नी	गं	सां	ऽ	
इं	ऽ	दु	व	द	नि	दा	ऽ	न	दी	ऽ	जे	त	व	च	र	ऽ	
ऽ	ध	नी	ध	म	ऽ	ऽ	ग	म	ग	सा	ध़	नी	सा	म	ऽ	ऽ	
न	अ	ट	ल	भ	ऽ	क्ति	माँ	ऽ	ग	त	ज	न	आ	ऽ	ऽ	नीसा	
ऽ	ऽ	ग	म	ऽ	मं	गं	सां	नी	सा	ग	ध	मग	सानी	सा	ध़	ऽ	
त	दु	गें	ऽ	तू	दु	ऽ	ष्ट	द	ल	नि	हे	ऽ	ऽ	मा	ऽ		

सांकेतिक चिह्न आचार्य भातखंडे द्वारा रचित प्रणाली के अनुरूप जानने चाहिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

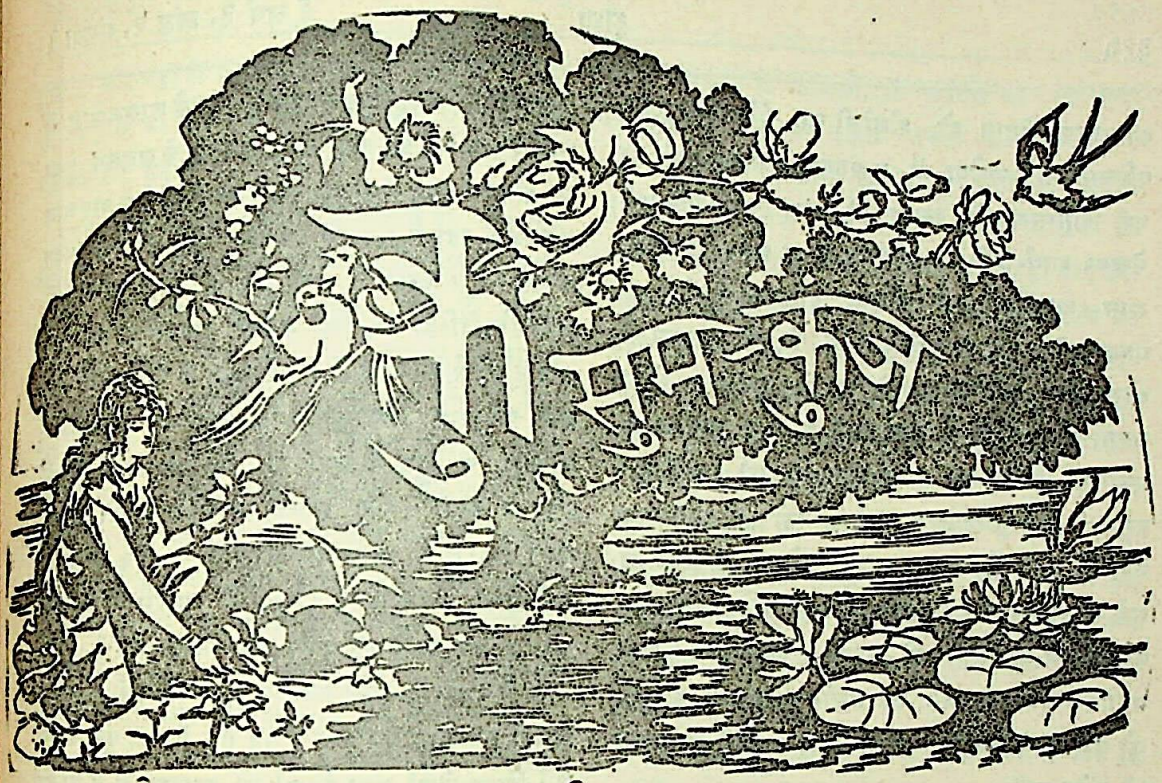

१. जुझार तेजा और इतिहास

इतिहास जाति का जीवन है। ज़िंदा जाति वही है, जो इतिहास द्वारा अपने पूर्वजों के अनुभव से लाभ उठाकर, शतरंज की चाल की तरह, अपने भविष्य का निर्माण करे। हिंदू-जाति का इतिहास करोड़ों वर्षों का इतिहास है, और वह पुराणों के, उपपुराणों के, भारत और रामायण-जैसे अनेक इतिहास-ग्रंथों के रूप में, अब भी मुसलमानों के हम्मामों से बचा-खुचा हमारे सामने है। इतिहास देखा जाता है उसी देश की—उसी ज़माने की आँखों से, जहाँ के लिये और जब वह लिखा गया हो। किंतु आजकल के पश्चिमी शिक्षा से दीक्षित विद्वान्, संस्कृत-महासागर में चंचु-प्रवेश की क्षमता न रखकर, देखते हैं पश्चिमवालों के चश्मे से। बस, इसी का यह फल है कि वर्तमान दूषित शिक्षा-प्रणाली की बदौलत आजकल का बच्चा-बच्चा मानने लगा है (अपने पश्चिमी गुरुओं के अन्वेषण को वेद-वाक्य मानकर) कि आर्य-जाति भारतवर्ष की मूल-निवासी नहीं है। वह आई है तिब्बत से, मध्य-एशिया से अथवा उत्तर ध्रुव से। यहाँ के आदि-निवासी शूद्र हैं—अंत्यज हैं। आर्य-जाति विदेशी होने से भिन्न जातिवाले आदि-निवासियों पर अबतक निरंतर अत्याचार करती चली आई है। यह केवल किया गया है हमारा भारतवर्ष से प्रेम नष्ट करने के लिये, हमको परदेशी बनाने के लिये और हमारे चातुर्वर्ण्य में ही अनुलोम अथवा प्रतिलोम से बनी हुई शूद्र तथा अंत्यज जातियों से हमारा द्वेष बढ़ाने के लिये। इस तरह उन लोगों के साथ मिथ्या सहानुभूति दिखलाकर एक चने की दो दाल करने का, एकता के ढोंग से घर-घर कलह खड़ी करने का, सिर-तोड़ परिश्रम किया जाता है। हिंदू-महासभा के जन्म-दिन से कुछ वर्षों तक भारत का एक बृहत् इतिहास तैयार करना भी उसका एक मंतव्य था; किंतु वह योंही कुछ साल तक सभा के संचालकों के बस्ते में रहकर रद्दी की टोकरी में फेंक दिया गया। समय ने इतना अवश्य पलटा खाया है। केवल पश्चिमी विद्वानों से प्रशंसा सुनकर अब हमारे देशी विद्वानों के दिमाग़ में भी यह बात समाने लगी है कि पुराणों में अनेक ऐतिहासिक तथ्य हैं। देश की आवश्यकता के अनुसार ऐसा इतिहास वही निर्मित कर सकता है, जो संस्कृत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का उत्कृष्ट विद्वान् हो, अँगरेज़ी का पंडित हो और पश्चिमी भूल-भुलैया में न पड़कर सनातन-धर्म पर पूर्ण आस्तिक-बुद्धि रखता हो। वह आर्य-आँखों से देखकर आर्य-जाति का इतिहास तैयार करे। ऐसे पाँच-सात आदमियों की समिति इतिहास-निर्माण का प्रयत्न करे। वह प्रकाशित होने से पूर्व अनुक्रम से थोड़ा-थोड़ा मासिक पत्र के रूप में प्रकाशित होकर जनता की कसौटी में कस जाने के बाद पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाय। आवश्यकता को देखते हुए इसके लिये दो-चार लाख खर्च कर देना कोई बड़ी बात नहीं है यदि हिंदू-महासभा इस उद्योग से कृतकार्य हो सके, सनातन-धर्म की यावत् सभाएँ यदि कमर कस-कर तैयार हो जायँ, तो काशी के प्रस्तावित संस्कृत महाविद्यालय की तरह यह उद्योग आगामी पीढ़ियों को बहँकने से बचाने में समर्थ होगा। इसमें अणु-मात्र भी संदेह नहीं।

इतिहास की सामग्री इकट्ठी करने में केवल शिला-लेखों पर, सिक्कों पर और खँडहरों की शोध पर भरोसा करके रायों—चारणों—के ग्रंथों को—काव्यों को—मिथ्या ठहराना साधारण भूल नहीं है। और न यूनानियों के, चीनियों के दौरे ही विश्वास-पात्र हो सकते हैं। आज-कल के इतिहास लिखनेवाले विद्वानों को भाटों की रचना पर—दंत कथाओं पर—स्वभाव से ही घृणा हो गई है। संभव है, उनमें पीढ़ियों की गणना में अंतर हो—साल-संवत् अशुद्ध हों और उनकी रचना अलंकार-पूर्ण हो; किंतु शिला-लेखों, सिक्कों और खँडहरों की खोज के आधार पर—विदेशी यात्रियों की यात्रा-पुस्तकों के भरोसे अटकल के घोड़े दौड़ाना और अपनी घर की पूँजी को मिथ्या मानना अन्याय है।

शिला-लेखों की सत्यता और सिक्कों की अटकल के भरोसे इतिहास का महल खड़ा करने से आए दिन कितना अनर्थ हो सकता है, इसका नमूना मेरी आँखों के सामने है। एक बूँदी-नरेश रावराना शत्रुशालजी धौलपुर के मैदान में दारा और औरंगज़ेब के युद्ध में दारा की ओर से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। उनका थड़ा यहाँ के सारबाग़ में मौजूद है। दूसरे यहाँ के स्वर्गीय महाराव राजा राजर्षि रामसिंहजी का रामशाही अथवा करारशाही सिक्का, जिसका आरंभ उनके शासन-काल में राज्यारंभ से ४७ वर्ष बाद, संवत् १९१५ के लगभग, हुआ था, संवत् १९४५ में उनका स्वर्गवास हो जाने के बाद आज तक चल रहा है। उसमें अवश्य ही हरसाल संवत् बदलता है। करारी के साथ पीठ की ओर पहले महा-रानी विक्टोरिया का, फिर सम्राट् एडवर्ड का और तब सम्राट् जॉर्ज का नाम है। इस दशा में आनेवाली पीढ़ी यही परिणाम निकालेगी कि रावराजा शत्रुशालजी धौलपुर के युद्ध में नहीं थे। वह राजधानी बूँदी में मृत्यु से मरे हैं। और राजर्षि रामसिंहजी का शासन संवत् १८६८ से आरंभ होकर संवत् १९४५ से समाप्त नहीं हुआ, वरन् संवत् १९१५ से आरंभ होकर संवत् १९८६ तक या इससे आगे तक चलता रहा है। इति-हास में महाराव राजा स्वर्गीय रघुवीरसिंहजी का होना मिथ्या बतलाया जायगा। यह हंडे में का एक चावल है। शिला-लेखों तथा सिक्कों की अटकल से न-मालूम कितने अर्थ के अनर्थ होंगे, सो इस समय नहीं कहा जा सकता?

इतिहास की सामग्री का बहुत-बड़ा ख़ज़ाना दंतकथा है। भारतवर्ष में और हिंदू-जाति के सभी वर्णों में ऐसे लाखों ख़ानदान निकलेंगे, जिनका देश के इतिहास से महत्व-पूर्ण संबंध है। उनमें किसी व्यक्ति ने वीरता में, सत्यनिष्ठा में, धर्म में और आत्म-बलिदान में नाम कमाया है। ऐसा इतिहास उस-उस ख़ानदान में परंपरा से अब तक चला आ रहा है। यदि सार्वजनिक आंदोलन द्वारा उसे संग्रह करके लिपिबद्ध करने का प्रयत्न किया जाय, सत्यता की कसौटी पर कसके उसमें से ग्राह्यांश लिया जाय, तो प्रचुर परिमाण में ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध हो सकती है। वास्तव में इस प्रकार से जो इतिहास का संग्रह होगा, वह देश का सच्चा इतिहास होगा। केवल "झूठी कथा" मानकर घृणा करना मूर्खता है। मैंने इसी सिद्धांत को लक्ष्य में लेकर "जुझार तेजा" की रचना की है। मेरे कितने ही श्रद्धेय मित्रों ने इस बात की प्रशंसा भी की है। यह पोथी कैसी हुई है, सो बतलाना मेरा काम नहीं, क्योंकि कोई भी हलवाई अपनी मिठाई को बुरी नहीं बतलाता। इसका दूसरा संस्करण लखनऊ के "गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय" से प्रकाशित

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुआ है, और वहीं से प्रकाशित "सुधा" मासिक पत्रिका की गत ज्येष्ठ की संख्या में इस पोथी की समालोचना भी प्रकाशित हुई है।

इसके समालोचक श्रीयुत हीरालालजी बी० ए० महाशय हैं। उन्होंने पुस्तक का संक्षेप में दिग्दर्शन करा-कर तेजा की प्रशंसा की है। इसके लिये मैं उनका कृतज्ञ हूँ। केवल नाम के साथ उपाधि देखकर मैं अनुमान नहीं कर सकता कि यह महाशय कौन हैं, किंतु क्या यह वही महानुभाव हैं, जो हिंदी-जनता में इति-हास की खोज के लिये नाम पाए हुए हैं, गवर्नमेंट के लब्धप्रतिष्ठ उच्च कर्मचारी हैं, और देश के नामी विद्वानों में गिने जाते हैं? यदि उक्त समालोचना उन्हीं महाशय की लिखी हुई हो, तो केवल इन पंक्तियों के अकिंचन लेखक को ही नहीं, वरन् "जुझार तेजा" को आद्योपांत पढ़नेवाले महानुभावों को आश्चर्य हुए बिना न रहेगा। आप "सुधा" ही के पृष्ठ ५३३ में फ़र्माते हैं—"शिक्षित लोग इसे अंध-विश्वास कहते हैं; परंतु मेहता लज्जाराम शर्माजी इस विधान की कारगरी पर विशेष ज़ोर देते हैं। जिसे शंका हो, वह साँप से कटवाकर परीक्षा कर ले।" मालूम होता है, आपने या तो पुस्तक पढ़ने के साथ इसके प्रथम संस्करण की भूमिका पढ़ने का परिश्रम ही नहीं किया है, अथवा उसी अंध-विश्वास से चिढ़कर लेखक पर दो छींटे कस दिए हैं। मैंने लिखा है—"इस पुस्तक में कितनी ही बातें असंभव-सी हैं। मेरी आस्तिक बुद्धि भी उन्हें पूर्ण-रूप से ग्रहण नहीं करती है।" मैंने लिखा है कि "मैं चमत्कार का उपासक नहीं; मैं गुणों का उपासक हूँ।" फिर मैं नहीं समझता कि "तेजा" के चमत्कार पर मेरा ज़ोर देना क्योंकर माना गया। हाँ, मैंने लिखा है, और अब भी कहता हूँ कि उसी पर राजपूताने के लाखों आदमियों की श्रद्धा है, और वे लोग इस इलाज को रामबाण समझते हैं। जो महाशय आपके शब्दों में उनका अंधविश्वास मानते हैं, वे उनका अंधविश्वास बतलाने के पूर्व राजपूताना के गाँव-गाँव में सर्पदंश की कोई रामबाण औषधि पहुँचा दें, और तब यहाँ की जनता पर अंधविश्वासी होने का कलंक लगावें, तो उनका कहना मान्य हो सकता है। महाशय, यदि आप इस प्रकार का आक्षेप करने के साथ "सुधा" के कॉलमों में सर्पदंश की कोई ऐसी रामबाण औषधि, जो देहाती जनता के लिये सुलभ और सरल हो, बतलाने का साहस करते, तो अवश्य ही मैं आपका कृतज्ञ होता। देहात के मूक प्राणियों को अंधविश्वासी बताना जितना सहज है, उतना ही उन्हें दवा पहुँचाना कठिन है—असंभव है। केवल 'अंध'-शब्द का कहीं प्रयोग न करने पर भी मैंने इस कार्य पर कहीं विश्वास प्रकट करके ज़ोर नहीं दिया है। हाँ, अब भी कहता हूँ कि योरपियन लोगों के प्रेतों का अस्तित्व मानने पर जैसे आप लोग उसे सत्य मागने लगे हैं, वैसे किसी दिन तेजा का चमत्कार उनकी कसौटी में सच्चा सिद्ध होने पर आप भी इसके क़ायल बन जायँ, तो कुछ आश्चर्य नहीं। अँगरेज़ी के विद्वानों की श्रद्धा उनके पश्चिमी गुरुओं के वाक्यों पर है। विषयांतर हो गया। पाठक क्षमा करें।

इतिहास के विषय में एक ही बात लिखनी शेष रह गई है। वह यह कि देश का धन गया, धर्म जा रहा है, शक्ति गई, यों धीरे-धीरे सब जा चुका, और रहा-सहा इस तरह पश्चिमी शिक्षा की बदौलत जा रहा है। केवल बचे हुए हैं हमारे शास्त्र—हमारे पूर्व-पुरुषों का गौरव। बस, इस स्थिति में यदि इतिहास-लेखन में उनके महत्त्व की रक्षा का यत्न न किया जायगा—हमारा प्राचीन आदर्श भ्रष्ट कर दिया जायगा, तो स्वराज्य की मृगतृष्णा में हम आर्य-हिंदू ऋषि-संतान कहलाने योग्य नहीं रहेंगे। उस दिन हिंदू-नेशन पश्चिम का नक़्क़ाल रहेगा। उनकी यावत् बुरी बातों की नक़ल करके बस, वही दशा होगी "धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का।"

लज्जाराम मेहता

× × ×

२. ओस

किंवा निकले हैं आसमान बीच तारे कई,
किंवा नील मणि-मध्य हीरक सुमन हैं;
किंवा सुरमई पर सलमा-सितारे टँके,
किंवा अंधकार में जुगनुओं के गन हैं।
किंवा चरणों में लसे झलके तपस्विनी के,
किंवा दुःखिनी के लोचनों में नेत्र बन हैं;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किंवा श्याम पाटी पै विशद मोतियों के दाने,
किंवा नील-कंज-कोष पर ओस-कन हैं।
श्रीदामोदरसहाय सिंह एल्-टी० "कविकिंकर"

× × ×

३. यति और यज्ञ

श्रुति में लिखा है कि यज्ञ और ब्रह्म में अणुमात्र भी अंतर नहीं है। इसी से साबित है कि आर्य लोग यज्ञ को कितना अधिक महत्त्व देते थे। प्राचीन यज्ञ-पद्धति धर्म और राजनीति का एक अपूर्व संयोग कहा जा सकता है। यज्ञ को हम एक राष्ट्रीय संस्था कह सकते हैं। इस संस्था से यति-गुसाँईं लोगों का भी संबंध रहा है। ऋग्वेद तैत्तिरीय संहिता, ऐतरेय ब्राह्मण, सामवेद, अथर्ववेद, पंचविंश ब्राह्मण आदि अत्यंत प्राचीन ग्रंथों में यति लोगों का उल्लेख मिलता है, और मैकडानल्ड ने अपने वैदिक इंडेक्स और वैदिक मायथॉलाजी-नामक ग्रंथों में यति लोगों का वर्णन किया है।

ईरान के प्राचीन इतिहास में भी यतियों का उल्लेख पाया जाता है। ईसवी सन् से क़रीब १३०० वर्ष पूर्व यतियों ने अत्यंत पराक्रमी असुरों का संहार किया था। यति लोग अत्यंत शूर थे। यति-वंश का दिग्दर्शन करते हुए एक स्थान पर लिखा है कि "उर और पुर दो भाई थे। उर के लड़के का नाम और्व और पुर के लड़के का नाम मन्युपुरी था। उर के पुत्र अंगिरा ने अंगोरा-नगर बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया। वन (Van) से वन-वंश नाम प्राप्त हुआ। अत्रि-ऋषि का जन्म अरण-वंश में हुआ।"

प्रिफिथ आदि विद्वानों का मत है कि वैदिक वाङ्मय के अनुसार यति-वंश (Race) अति प्राचीन है। अंगिरस और भृगु से भी इनका अति निकट का संबंध रहा है। बृहद्देवत में भृगु, अंगिरा, अत्रि और वैखानस (यति) की जन्मकथा मिलती है। उस पर से पता चलता है कि ये सब एक ही वंश के हैं और बाद में जुदे हुए हैं।

यजुर्वेद और ऐतरेय ब्राह्मण में 'यति याने इंद्र ने आपत्काल में साल वृकों के सिपुर्द किया हुआ संघ' ऐसा उल्लेख पाया जाता है। ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है, "इंद्र ने त्वष्ट्रा के पुत्र विश्वरूप का उपमर्द किया। पवित्र यतियों (Pious men) को भेड़ियों के सामने फेंक दिया। उनकी संपत्ति भृगु को दी, × × × अतएव देवतों ने उसका सोम-पान बंद कर दिया। इंद्र का बहिष्कार किया जाने से क्षत्रियों का भी बहिष्कार हो गया। उनको सोम न मिलने लगा। तब इंद्र ने सोम चुराया।" × × × इस कथा से मालूम होता है कि यति ब्राह्मण थे और ब्राह्मण-देवताओं के पक्षपाती थे। अनुमान होता है कि अति प्राचीन काल से ब्राह्मण और क्षत्रियों में विरोध चला आ रहा था, जिसके कारण यतियों को भेड़ियों का भक्ष्य बनना पड़ा।

यति और इंद्र के झगड़े का वर्णन पंचविंश ब्राह्मण में भी पाया जाता है। इंद्र ने क्रुद्ध होकर यतियों को भेड़ियों को खिला दिया। तीन यति बचे। उन्होंने अपनी रक्षा के लिये ईश्वर से प्रार्थना की। अंत में इंद्र को दया आई और उसने उनको बचा लिया। इन यतियों में से एक का नाम बृहद्गिरी था। इंद्र ने इन यतियों को ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य-विद्याएँ सिखलाईं। इससे स्पष्ट है कि गिरी-नामधारी यति ब्राह्मण-विद्या-पारंगत थे।

प्राचीन काल में यति-शब्द से संन्यासी का बोध नहीं होता था। यति को तापस भी कहते थे। यह शब्द ऋषि-शब्द से भी प्राचीन है। तापस-शब्द का मतलब है शुद्धाचरणी। ऋग्वेद में तप-शब्द तेज के लिये व्यवहृत हुआ है। तप से ही ऋतु और सत्य पैदा हुए हैं। महाभारत में तप को ही सृष्टि का मूल कहा है। और यही कारण है कि आर्य लोग तप को इतना महत्त्व देते रहे हैं। तपाचरण के लिये मनःसंयम की आवश्यकता होती है, और ऐसे संयमी पुरुषों को ही तापस-नाम सार्थक माना जा सकता है। ये तापस होम-हवनादि क्रिया करते थे। यज्ञ के लिये दूध, दही, चावल, शहद आदि द्रव्यों का उपयोग किया जाता था। इन हविर्द्रव्यों के संबंध में अथर्व वेद में लिखा है—

यस्मात्पक्वादमृतं संबभूव यो गायत्र्या अधिपतिर्बभूव।
यस्मिन वेदा निहिता विश्वरूपा स्तेनोदने नातितरामि मृत्युं।

अर्थात् जिस पकाए हुए चावल से अमृत पैदा हुआ, जो भात गायत्री का अधिपति हुआ, जिसमें अनेकाकार से वेद संगृहीत हैं, उस पकाए हुए चावल की सहायता से हम मृत्यु को भी जीत लेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भोजन करने के समय की जानेवाली प्रार्थना का मतलब—"मुझे ओदन और दूध-दही का स्वामी बना। कारण कि ओदन (भात) सभी प्राणियों को उत्कृष्ट सामर्थ्य और संपत्ति देता है।" इन प्रार्थना के मंत्रों से पता चलता है कि उस ज़माने में पशु-यज्ञ प्रचलित न था। ज्यों-ज्यों आर्यों का वैभव बढ़ने लगा, पशु-यज्ञ प्रचार में आने लगा *।

इस विवेचन से साबित है कि वेद-काल में यति का संन्यास से कुछ भी संबंध न था। ऋग्वेद के ज़माने में आश्रम-संस्था अस्तित्व में न थी। इसका जन्म बाद में हुआ। उपनिषत्काल में यह संस्था सुव्यवस्थित होने लगी और स्मृति-काल में वह पूरी तौर से अमल में आ गई। तथापि सभी लोग चतुर्थाश्रम को स्वीकार नहीं करते थे। प्रारंभ में सिर्फ़ दो ही आश्रम थे। ब्रह्मचर्य और गृहस्थाश्रम। इनके बाद वानप्रस्थाश्रम अस्तित्व में आया, और आत्मज्ञानियों के आश्रम की सृष्टि सबसे बाद में हुई। प्रारंभिक काल में वानप्रस्थ और संन्यास में कोई भेद न था। किंतु जब आत्मज्ञानी लोग सर्वश्रेष्ठ माने जाने लगे, तब संन्यासाश्रम का जन्म हुआ। संन्यास का मूल-अर्थ वासना-राहित्य है। इसे आत्मज्ञान से प्राप्त उच्च स्थिति भी कह सकते हैं। किंतु बाद में यह अर्थ बदल गया, कर्म-त्याग ही संन्यास का अर्थ माना जाने लगा। और तब इसे संन्यास-धर्म या परमहंस-धर्म नाम दिया गया। भागवत से पता चलता है कि सनक का शिष्य सांख्यायन ही इस परमहंस-धर्म का प्रवर्तक है।

छांदोग्योपनिषद्-काल में संन्यासी का मतलब ब्रह्मज्ञानी माना जाता रहा था। ब्रह्मज्ञानी के लिये पुत्र-कलत्र का त्याग करना अनिवार्य न था। ब्रह्मज्ञानी अधिकतर गृहस्थ ही थे। गृहस्थ ही इस विद्या के ज्ञाता थे। नारद-जैसे ब्रह्मज्ञानी इसे नहीं जानते थे। नारद ने यह विद्या सनत्कुमार से सीखी। उस ज़माने में उपनिषद् का मतलब 'अग्नि का ज्ञान' लिया जाता था। बाद में यह शब्द ब्रह्मज्ञान—आत्मज्ञान—के अर्थ में प्रयुक्त किया जाने लगा। यह विद्या प्राचीन महाशाल—महागृहस्थ—महाश्रोत्रीय को ही ज्ञात थी, और विशेष महत्त्व की बात तो यह है कि यह विद्या क्षत्रियों को ही अवगत थी। ब्राह्मण लोग इस विद्या से कोरे थे।

बाद में, ब्राह्मणों ने यह विद्या गृहस्थों से सीखी। कर्मयोगी गृहस्थों को ही यह विद्या अवगत थी, और वे संसार त्यागकर शरीर में राख मलकर जंगल में नहीं रहते थे।

धीरे-धीरे ब्रह्मविद्या यज्ञविद्या से श्रेष्ठ मानी जाने लगी। ब्राह्मण लोग भी ब्रह्मविद्या को कनिष्ठ प्रति की मानने लगे, और पशुयज्ञ के प्रचार के कारण लोग उससे घृणा करने लगे। हिंसात्मक यज्ञों का विरोध करनेवालों में यति लोग प्रमुख थे। कात्यायन के ज़माने में इस विरोध का परिमाण स्पष्ट दिखाई देने लगा। पाणिनि के ज़माने में गाय मारकर अतिथि-सत्कार करना बड़प्पन का चिह्न माना जाता था। किंतु पतंजलि के ज़माने में यह सब कुछ बदल गया। हिंसात्मक यज्ञों का स्थान अहिंसात्मक व्रतों ने ले लिया और पशु-यज्ञ के बदले व्रीहि-यज्ञ शुरू हो गए। "अज संज्ञानि बीजानिच्छागं नो हंतुमर्हथ," इस श्रुति-वचन का प्रचार किया गया। इसका अर्थ है, अज का मतलब बकरा नहीं, बीज-धान्य माना जाय, और यज्ञ में वानस्पतिक हविर्भाग अर्पण किए जाया करें। महदाश्चर्य की बात तो यह है कि इस परिवर्तन को करानेवाले यति लोग निरादर की दृष्टि से देखे जाने लगे और कौपीन और काषाय-शब्दों का अर्थ क्रमशः 'पाप' और 'कलुषित हृदय' माना जाने लगा। यति लोग यज्ञ-विरोधी समझे जाने लगे। और यही कारण है कि यति भी यज्ञ का विरोध करने लगे। ज्ञान-निष्ठ और कर्मनिष्ठ लोगों में फूट पड़ गई, और विरोध की आग सुलग उठी। यज्ञ-यागादि करनेवालों से ज्ञानी लोग श्रेष्ठ माने जाने लगे, जिससे नित्यकर्म के प्रति श्रद्धा घटने लगी, और ब्रह्मज्ञान का महत्त्व बढ़ गया। "समः सर्वेषु भूतेषु न लिंगं धर्मकारणम्" इस स्मृति-वचन से लिंग-संन्यास का मतलब संन्यास के बाह्य-चिह्न धारण करना माना जाने लगा और इन्हीं पर ज़ोर दिया जाने लगा। सच्चे संन्यास—आसक्ति-राहित्य का स्थान मुंडन और दंड-कमंडलु ने ले लिया। बाद में भगवान् बुद्ध ने भी संन्यास-मार्ग को सहारा दिया, जिससे यज्ञ-शालाएँ ऊजड़ हो गईं। और धीरे-धीरे क्षात्र-

* मराठी ज्ञान-कोष में यज्ञ का इतिहास देखो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तेज भी नष्ट होने लगा। इसका दुष्परिणाम भारत आज तक भुगत रहा है।

सारांश में, दर्जे-बदर्जे संन्यास तक पहुँचने की प्रथा लोप हो गई और 'यदहरेव विरजेत्तद हरेव प्रव्रजेत' अर्थात् विरक्ति प्राप्त होते ही किसी आश्रम से संन्यास लेने की प्रथा चल पड़ी, और बौद्ध-धर्म ने सबके लिये संन्यास का रास्ता खोल दिया, जिससे भारतवर्ष भिक्षा माँगनेवालों का देश बन गया।

अनेकानेक परिवर्तन हुए, किंतु कई वैदिक यतियों ने यज्ञ-संस्था को जीवित बनाए रक्खा। मैगस्थनीज़ ने अपने प्रवास-वर्णन में लिखा है कि "हिंदू लोगों में सात वर्ग हैं। यति इनमें प्रमुख है। इनको संख्या थोड़ी है। इनकी ख़ूब इज़्ज़त की जाती है। इनको शारीरिक परिश्रम नहीं करना पड़ता है। इनको सरकारी कर भी नहीं देना पड़ता है। देश-हित के लिये यज्ञ करना ही इनका एक-मात्र काम है। यतियों के सिवा दूसरे लोगों को भविष्य का ज्ञान नहीं है। यतियों के सिवा दूसरे लोगों को भूत-भविष्य-कथन करने का अधिकार प्राप्त नहीं है। देश पर आनेवाले संकटों का ही कथन ये लोग करते हैं। खानगी बातों का भविष्य-कथन ये लोग नहीं करते हैं। तीन बार भविष्य-कथन झूठा साबित होने पर यति लोग भविष्य कहना छोड़ देते हैं। ये लोग नंगे रहते हैं। इनका इंद्रिय-दमन प्रशंसनीय है। जवान स्त्रियाँ इनके पास निःशंक रहती हैं। इन यतियों में से कुछ लोग गृहस्थाश्रमी हैं। ये लोगों के यहाँ पुरोहिताई करते हैं। सर्व-साधारण का भविष्य कथन करते हैं। मुफ़्त में औषधोपचार करते हैं और इच्छानुसार संतति होने के उपाय बतलाते हैं।" स्ट्रैबो-नामक इतिहास-लेखक लिखता है कि "गृहस्थ यति रेशमी वस्त्रों को काम में लाते हैं। ये लोग हिरन का चमड़ा दुपट्टे की तरह कंधे पर डालते हैं। ये सब ब्राह्मण हैं।"

कौटिल्य के अर्थ-शास्त्र से पता चलता है कि कई निस्पृह और गृहस्थ यति महाराज चंद्रगुप्त के ख़ुफ़िया पुलीस-विभाग में, ऊँचे ओहदे पर, नियुक्त थे।

ब्रह्मपुराण, विष्णुपुराण, मत्स्यपुराण, आपस्तंबधर्म-सूत्र आदि में गृहस्थ (गृहमेधिन्) और संन्यासी (ऊर्ध्वरेतस्) यतियों का उल्लेख पाया जाता है। स्वैरी और दार-विहारी यतियों का वर्णन करते हुए महाभारत में एक स्थान पर लिखा है कि स्वैरी यति स्वेच्छानुसार भ्रमण करें और दार-विहारी यति शादी करके यज्ञ-यागादि ऋषि-कृत्य करते रहें। हुएंत्सांग के प्रवास-वर्णन में भी यतियों के इन दोनों भेदों का उल्लेख पाया जाता है।

श्रीशंकराचार्य के ज़माने में बौद्ध-संन्यास-धर्म का बोलबाला था। और यही कारण है कि उन्हें संन्यास-मार्ग का ही आश्रय लेना पड़ा। किंतु लिंग-संन्यास को उन्होंने अधिक महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने ब्राह्मणों को ही अपने संप्रदाय में लिया था। उन्होंने क्षत्रियादि अन्य वर्णों के लिये रास्ता बंद कर दिया था। किंतु बाद में धर्म-संन्यास ज़ोर पकड़ने लगा। आचार्य के अनुयायियों ने सभी जाति के लोगों के लिये संन्यास-मार्ग खुला कर दिया, जिससे संत-महंतों की संख्या बेहद बढ़ गई, और ब्रह्मज्ञान 'टके सेर' हो गया।

सभी के साथ यति-गुसाँइयों की भी अवनति हुई। किंतु उन्होंने अपनी प्राचीन संस्था—विरजा होम, अग्यारी, धूनी, अखाड़ा, भाला, त्रिशूलादि को छोड़ा नहीं। आज तक वे उन्हें अपनाए हुए हैं।

ऊपर के विवेचन से यह साबित है कि यति-गुसाँइ साग्निक हैं। अति प्राचीन काल से उनका यज्ञ से संबंध चला आता है। इतना ही नहीं, राष्ट्र-हित के लिये यज्ञ करना उनका जन्म-सिद्ध अधिकार है।*

शंकरराव जोशी

× ×

४. काव्यादर्श

काव्य में हम दो प्रकार की प्रवृत्ति पाते हैं। एक चुने हुए विषय का परिस्फुरण; दूसरे कवि-कौशल। प्रथम प्रकार की प्रवृत्ति को हम कला का व्यापार और दूसरे को प्रकाश-धर्मी कुशलता कह सकते हैं। विषय-निर्वाचन में केवल उसकी विचित्रता और महत्ता से ही काम नहीं चलता। कवि की निजी अनुभूति का विषय

* मराठी 'चित्रमयजगत्' में प्रकाशित श्रीपृथ्वीधर गीर गोसावी के 'यति व यज्ञ' लेख के आधार पर लिखित।—लेखक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी आवश्यक होता है। कवि अपने विषय को कहाँ तक अपना सका है—उसके साथ कहाँ तक एकात्म हो सका है—इसका विशेष विचार करना पड़ता है। यही क्यों, काव्य, चित्र और संगीत आदि कलाओं में तो शिल्पी का स्थान उसकी कार्य-कुशलता ही पर विशेष रूप से निर्भर है।

समझों में कला-विश्लेषण का यही रूप पाया जाता है। आदि-काल से कला का जो रूप अब तक आदृत होता आ रहा है, वह केवल विषय-वैचित्र्य को लेकर नहीं।

बौद्ध-युग के पूर्व-काल में विषय-वैचित्र्य का आभास अधिक नहीं मिलता। उसके बाद भी विशेष नहीं। भगवान् बुद्ध, कृष्ण और गोपियों को लेकर कवि-समाज ने खूब रचनाएँ कीं; परंतु सभी एक ही तरह का चित्र नहीं खींच सके—उनके चित्र में शब्द-कौशल की विभिन्नता है। सभी निजी कुशलता की एक विशेष दिशा से अपनी कला, अपने नैपुण्य का परिचय देते हैं। भिन्न-भिन्न कारीगरों के हाथ से बनी हुई मूर्तियाँ एक भाव को भिन्न प्रकार से प्रकट करती हैं, अथवा भिन्न-भिन्न भाव दर्शाती हैं। आज भी यही बात है। रवि वर्मा और ठाकुर अवनींद्रनाथ के चित्रों में भिन्न-भिन्न अंगों से भिन्न रसों का संचार होगा। बैजू बावरे और तानसेन के गीतों में, भिन्न-कंठों के स्वर-कंपन से, भिन्न रसों का विकास होगा। करुण के गीत भी जीवन-सूत्र को छिन्न और कभी रस-सिक्त करके दृढ़ करेंगे। परंतु जब आलोचना होगी, तो उनमें कला-व्यापार का एक ही रूप मिलेगा। इस विभिन्नता का कारण उनकी निपुणता है। कारण, उनके प्राणों का स्पर्श भाव-सृजन और निपुणता के भीतर से ही प्राप्त होता है।

धारावाही प्राचीन काव्य में विषय-वैचित्र्य को विशेष महत्त्व नहीं दिया गया। आजकल कुछ नवीन रचना के बिना जैसे कवि को कष्ट बोध होता है; उसे लिखने की चेष्टा व्यर्थ जान पड़ती है; इस तरह की भावना ब्रज-साहित्य में नहीं पाई जाती। क्योंकि उस समय का समाज एक तरह के स्थिर और स्थायी विषय के आस्वादन और रस-भोग में प्रसन्न था। एक ही विषय ने कवि-हृदय पर बड़ी गंभीरता से अधिकार जमा रक्खा था, सबका बहाव एक था। एक-एक ही भाव-प्रकाश की चिंतना में हृदय का परिचय देते थे। इस तरह विषय-वैचित्र्य की इतिश्री तो हो गई, उन्हें उस ओर ध्यान देने की ज़रूरत ही नहीं जान पड़ी, फिर भी प्रत्येक सहृदय के कृति-नैपुण्य ने एक ही भाव-सृष्टि को अनुभूति के भीतर से नवीन और विचित्र बना दिया—हृदय के मधुर-स्पर्श में भाव का रूप नया हो गया।

प्रत्येक युग की इसी तरह की एक स्थायी विशेषता होती है। बड़ी विवेचना के बाद किसी भाव का त्याग अथवा ग्रहण करके समाज के कर्णधार साहित्य-निर्माता आगे बढ़ते हैं। व्यक्तिवाद को यदि थोड़ी देर के लिये छोड़ दें, तो उनके भाव-प्रकाश का एक ही ढंग तत्कालीन समाज में पाया जायगा। क्योंकि किसी युग के आभ्यंतरिक रूप का विकास एक ही शैली के भीतर से होता है। मिस्र, चीन और अपने देश की सृजन-शैली के भीतर से ही हम देश की रुचि और सभ्यता का ठीक-ठीक मनन कर सकते हैं। इतिहास, काव्य, दर्शन और चित्र चाहे जिस ओर से विचार करें, हमें एक ही शैली, एक ही भाव-प्रकाश और सृजन-शीलता का परिचय मिलेगा। और यह सब है शैली का महत्त्व। जब तक जातीयता जागृत नहीं होती, एक पवित्र और महान् भाव की सृष्टि नहीं होती, तब तक शैली का रूप नहीं बनता। वीर-गाथा, संत-युग और रीति-काल आदि में जातीय जीवन का विकास यही सिद्ध करता है। सभी जगह कला-नैपुण्य में विचित्र-सृष्टि की लगन पाई जाती है। वास्तव में वैचित्र्य-संचार ही जीवन का प्रधान और मूल-धर्म है। छोटे-छोटे विषयों को भी विचित्रता के कारण ही महत्त्व प्राप्त होता है। मानव-जीवन का विश्लेषण चाहे बुद्धि-तत्त्व से कीजिए, चाहे हृदय-पक्ष से—जीवन में प्रतिक्षण तीव्रता के साथ जिस वैचित्र्य का विकास और आरोप हो रहा है, उसी का परिचय मिलेगा। और, उसे ही कल्पना-प्रसूत नाना रश्मियों से घेरकर स्थायी रूप देने की चेष्टा मिलेगी। परंतु घेरे के भीतर भी अनेकों रंध्रों से किरणों की तरह बहिर्गत और मुक्त होकर वह हृदय की सौंदर्य-प्रियता का प्रकाश दे रही है। पुरातत्त्व-विभाग के अजस्र परिश्रम से प्राप्त प्राचीन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ताम्र और प्रस्तर-मूर्तियों का अपरिष्कार होने पर भी अनादर नहीं होता। वे अतीत की तरह, शायद उससे भी बढ़कर, हृदय को खींचती हैं। जाति के हृदय में उनके लिये अक्षय स्थान है। चीनी शिल्प का आदर संसार में सबसे अधिक है। उनकी प्राचीन कारीगरी के नमूने संसार को कैसा खिंचाव दे रहे हैं, यह आजकल के सभ्य-संसार के दैनिक उत्कर्ष में बिल्कुल स्पष्ट हो गया है।

× × ×

विषय-वैचित्र्य की कल्पना आजकल विशेष ज़ोरों पर है। इसका सूत्रपात कब से हुआ, यह तो ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। परंतु रीति-काल के बाद लोगों में प्रकृति-पर्यवेक्षण की जो लालसा पाश्चात्य-साहित्य-संसर्ग से बढ़ी, जान पड़ता है, उसी समय से इस ओर भी रुचि का झुकाव अधिक हुआ। योरप में भी साहित्य और कला में रिनेसाँ के समय से ही विषय-वैचित्र्य का सूत्रपात पाया जाता है। यद्यपि इस युग में योरप में इसकी रुचि सामान्य थी, फिर भी भाव-वैचित्र्य के संचार की प्रवृत्ति प्रखर हो उठी थी। देवताओं को विषय मानकर चित्र बनाने की प्रथा प्रचलित हुई। ग्रीकों में समाधि-मंदिर, राजमहल और नाट्य-गृहादि की एक-एक प्रस्तर-मूर्ति में जुदे-जुदे भावों की व्यंजना की गई। इनके कथोपकथन के संबंध में एक बार गेटे ने कहा भी था कि इन साधुओं की कल्पना में कोई विशेषता नहीं है। उनके यथार्थ और समान पृथक् चरित-सृष्टि में विशेषत्व का आरोप करना बड़ा कठिन है। ग्रीकों के देव तो लक्षणों और विशेषता के कारण एक दूसरे से भिन्न हैं। ग्रीकों में बारह प्रधान देव हैं, उनके आधार पर ईसाइयों ने बारह साधुओं की सृष्टि की, इसलिये वे काव्य के भीतर सहज ही पहचाने जा सकते हैं। परंतु ईसाइयों के साधुओं को एक समान धर्मी और समान भाव-भंगी के कारण पहचानना बड़ा मुश्किल है। ग्रीक-कला में देवी-पुत्तलिका की गठन में हस्त-कौशल का परिचय मिलता है। जान पड़ता है, उनकी निर्माण-कला किसी एक गति-विधि पर निर्भर थी। क्योंकि प्रत्येक मूर्ति के अंग-सौष्ठव में रस-संचार और भाव-भंगी का रूप भिन्न पाया जाता है। रिनेसाँ के युग में यह सब विचित्रता के लिये कला के आख्यानक रूप से ग्रहण किया गया था। फिर भी युग की सहज-रुचि का झुकाव भाव-द्योतन और रंग भरने की कूर्चिका-संचालन में हुआ, घटना-वैचित्र्य के चुनाव में उतना नहीं। किसी युग की कला में नैपुण्य के कारण ही विचित्रता और रस-संचार अधिक-से-अधिक मात्रा में हुआ है, घटना-वैचित्र्य के चुनाव से नहीं। युग की अंतरात्मा में स्पंदन कला के द्वारा ही होता है।

संत-युग के बाद रीति-काल में, समाज की विलास-प्रकृति का रूप अधिक जागरूक मिलता है। उस समय समाज में गंभीर धर्म-निष्ठा न थी। उधर संतों के विषय-निर्वाचन में भी निपुणता की ही मात्रा अधिक थी। परंतु अंतर्जगत् के व्यापारों के विश्लेषण का क्षेत्र बाह्य जगत् के साथ मिलाने की उत्कट अभिलाषा में, धर्म की पवित्रता के कारण घटनावलियों का साहस नहीं घटा।

पौराणिक युग में देवताओं के रूपों और व्यापारों में आकर्षण का सब से बड़ा कारण उनके जीवन की घटनाएँ और क्रिया-कलाप हैं। संत-युग में उसी की छाया पाई जाती है। गरुड़पुराण का नरक-वर्णन यदि केवल कल्पित होता, यदि अतिशयोक्ति की अतिरंजना में ही लिखा गया होता, तो संभवतः उसे इतना ज़बर्दस्त रूप न मिलता। हृदय के व्यापारों के साथ चित्त-वृत्ति का मेल, घटनावलियों का चुनाव, पाप-पुण्य की मीमांसा, और वैदिक रीतियों का पुनरुद्धार पौराणिक युग में धर्मनिष्ठा से किया गया। धर्म को महान् मानकर सुख-दुःख का चित्र खींचा गया, इसलिये देव और दानव-चरित्र में वैचित्र्यका विश्लेषण करना पड़ा। उनमें घटनावलियों की ही विशेषता है। रीति-काल में कृष्ण के प्रणय-विलास की लीलाओं का ही चित्र खींचना कवियों का प्रधान आधार क्यों हुआ, यह प्रश्न सहज ही उठता है। उत्तर यह है कि एक तो समाज में संत-युग के कारण ही भोग के भीतर से मंगल-प्राप्ति की आशा जागृत हुई थी। रामकृष्ण की बालछवि से लेकर युवावस्था तक भोगी जीवन का ही अंकन हुआ था; समाज को "जा सुख की लालसा लूट सब, सुक सनकादि उदासी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुलसी तेहि सुखसिंधु कौसिला मगन, पै प्रेम-पियासी।" कहकर गृहस्थ-धर्म और भोग-रुचि को ही प्राणप्रतिष्ठा की गई। इसलिये जप, तप, योग, ध्यान छोड़कर लोग भगवान् की इन्हीं साकार लीलाओं के गान में मुक्ति की अभिलाषा करने लगे। अवश्य संत-युग का आदर्श केवल मंगल-साधन का हेतु था। संतों का उद्देश्य योग के भीतर से कल्याण-प्राप्ति था, न कि भोग को ही कल्याण मान लेना। परंतु विलासी शासकों को पाकर देश भी विलासी हो गया। देश की मानसिक वृत्ति कोमल हो गई। सुख-भोग की खालसा में अकर्मण्यता की वृद्धि हुई। विचार-शक्ति का ह्रास भी हुआ। कठिन और गंभीर विषयों की चिंता में कष्ट-बोध होने लगा। लंब-केशी नायिकाओं के वर्णन में उनकी समस्त शक्ति एकाग्र हो गई। उनकी दृष्टि संत-युग के आदर्श से हट गई। वे भोग को ही कल्याण समझ बैठे। अस्तु।

जो लोग रीति-काल में संत-युग का आदर्श खोजते हैं, उन्हें भी स्वीकार करना पड़ेगा कि इस युग में भी संत-युग के आदर्श का बिलकुल लोप नहीं हुआ। धर्म और भाव-परिवर्तन में जीवन के इस युग का आदर्श अवश्य प्राचीनता से भिन्न था; परंतु समाज-नीति, शिक्षा-क्रम, और विधि-विधानों में किसी तरह का फेर-फार नहीं हुआ। विवाह-पद्धति, कुलाचार और अन्य व्यवहारों का वर्णन पूर्ववत् था। मतलब यह कि आदर्श को लेकर रीति-काल संत-युग से जितनी दूर चला गया है, कला और प्रकाश-धर्मी निपुणता को लेकर उतना नहीं। इस युग में प्राचीन आदर्श के स्थान पर कला का नया रूप स्थापित होकर भी आचार और निष्ठा में परिवर्तन नहीं हुआ। सामाजिक नीति और अध्ययन-प्रणाली की रक्षा के लिये ही शिक्षा की नई पद्धति का आविष्कार हुआ। काव्य-शास्त्र की विवेचना में अनेक रीति-ग्रंथ बने। एक पद की जाँच कई तरह से शुरू हुई। नायिका-भेद और अलंकारों में काव्यात्मा की खोज शुरू हुई। निश्चय ही इस तरह की लेखन-प्रणाली में व्यक्तित्व का विकास नहीं हुआ, परंतु पठन-पाठन की शैली परिमार्जित हो गई।

शिवशेखर द्विवेदी

Royal College of Physicians and Surgeons of India (Registered).

Member and Fellowship (M. R. C. P., M. R. C. S., M. R. C. P. & S., F. R. C. P., F., R. C. S., F. R. C. P. & S. Registered) certificate awarded to the medical Practitioners and Students. For Prospectus apply with anna stamp to the Registrar, Dayoganj Road, Dacca, Bengal.

Homeopathic University of India (Registered by the Govt.)

Member and Fellowship certificate granted to the Homeopathic Doctors and Students. Also H.L. M.S., H.M.B., H.M.D. & L.L.D. diploma to Successful Candidates. Apply with anna stamp to the Registrar, 21, Chota Katara, Dacca, Bengal.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

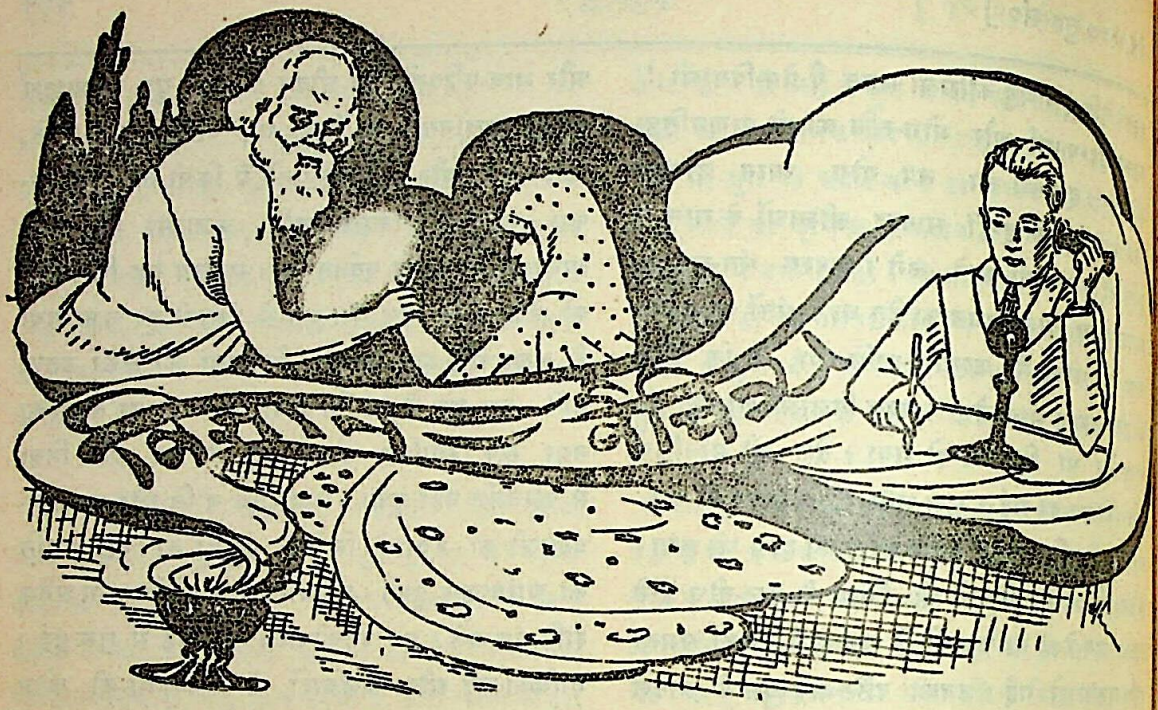

गुडइयर—मिस्टर रबर

आप रबर के जूते पहनते हैं ? नहीं, तब कभी रबर-टायर ताँगा, साइकिल या मोटर पर सवार हुए हैं ? यदि दुर्भाग्य से इनका भी आपने आनंद नहीं उठाया, तो मैं समझता हूँ कि आपने रबर की गेंद से अपना दिल कभी-न-कभी तो बहलाया ही होगा। यदि आप विद्यार्थी हैं, तो रबर का उपयोग किसी ग़लती को सुधारने के लिये करते होंगे। यदि आप धनवान् हैं, तब तो रबर के बूट, रबर का बेल्ट और रबर के कोट का उपयोग आप ज़रूर करते होंगे तथा स्प्रिंगदार रबर के न्यूमेटिक टायरोंवाली मोटर में हवा खाने शाम को जाते ही होंगे। कहने का तात्पर्य यह कि आप चाहे जिस श्रेणी के मनुष्य हों, आप अपने जीवन में एक-न-एक बार श्रीमती रबर महारानी से अवश्य मिल चुके होंगे। हाँ, यदि दुर्भाग्य से आपको नवीन सभ्यता से दूर रहकर केवल खेतों पर काम करने के सिवा कभी शहर में घूमने की भी फ़ुर्सत नहीं मिली हो, फिर तो मुझे कहना पड़ेगा कि अभी आपने दुनिया में कुछ नहीं देखा। रबर के गद्दे पर उचकते ही दीन-दुनिया की ख़बर भूल जाती है। ज़रा उसका हाल हमारे कॉलेजों के बाबुओं से पूछो, और विशेष उस समय जब वे टेनिस के लान पर मेढक-से उछल रहे हों। तब आप भी कह उठेंगे—वाह भाई, रबर है अच्छी चीज़ है, कोमल, रंग-बिरंगी, मायामयी और लाभदायक।

ऐश-आराम में मस्त रहनेवाले लोग कभी अपने वर्तमान अवस्था के पूर्व-इतिहास पर विचार नहीं करते भला रबर पर ही जीवन का आनंद लूटनेवाले, रबर की ही बदौलत लोक और परलोक की समस्या हल करनेवाले कभी स्वप्न में भी सोचते हैं कि इन सांसारिक कठिनाइयों को देखकर किसी का दिल हो उठा था। उसने प्रकृति के भांडार के एक तरु हम लोगों के काम के लिये योग्य साँचे में ढाल दिया था। इतना ही नहीं, उस बेचारे को हमें रबर मज़ा लुटाने के लिये छाता तक गिरवी रख देना

एक दिन वह एक नौकाओं के स्टेशन पर और ऑफ़िसर से कहने लगा—"भाई, मुझे तरह न्यूयार्क पहुँचा दो।"

"टिकट के दाम लाइए।"

"क्या आप इस छाते को ज़मानत के तौर पर कर मुझे टिकट देंगे ?"

ऑफ़िसर ने ऊपर से नीचे तक आगंतुक को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर देखा। आयु लगभग ३५ वर्ष की होगी। बड़े-बड़े बालों से ज्ञात होता था कि इसने नाई से दुश्मनी कर ली है। कपड़े फटे हुए थे, और उनमें से एक प्रकार की गंध आ रही थी; परंतु उसकी आँखों में शारीरिक दुर्बलता के होते हुए भी एक प्रकार का तेज था, मुख पर मधुर मुसकान थी। ज्ञाता को देख-कर ऑफ़िसर ने उसे टिकट देना स्वीकार कर लिया। पाठको, यही हमारे सुख की एक महान् सामग्री का विधाता, ग़रीब, ख़ाली-जेब, उत्साही युवक गुडइयर था, और उक्त घटना १८३६ की है। लोग उसे पागल कहते थे। उसके मित्र उसके सिर को अँगु-लियों से ठोकते थे और ऊपर से हँस दिया करते थे। वह सब सहता था, क्या करे, लक्ष्मी देवी उससे अप्र-सन्न रहती थीं, और वह भी दूसरी देवी का मस्ताना रहता था। उसके मुँह से केवल एक मंत्र निकलता था कि "वह करना पड़ेगा, उसे ज़रूर करना चाहिए, और वह अवश्य हो जायगा।" आपकी दृष्टि में यह 'वह' और 'ज़रूर' का प्रलाप मधुर नहीं मालूम होता होगा; परंतु इसी प्रलाप में एक मनुष्य की वह ईश्वरीय एकाग्रता की इच्छा-शक्ति भरी हुई थी, जिसने आप-त्तियों का फूलों की तरह स्वागत करते हुए संसार के व्यापार में क्रांति उपस्थित कर दी थी, सैकड़ों के सौभाग्य-सूर्य उदय कर दिए थे, पर आपकी दृष्टि में वह बेचारा मूर्ख ही ठहरा।

चार्ल्स गुडइयर व्यापारी का पुत्र था। पिता को आविष्कार करने का बड़ा शौक़ था। यंत्र बनाना, हथि-यार सुधारना आदि कामों में वह लगा रहता था। पुत्र की भी स्वाभाविक प्रवृत्ति बाल्य-काल से ही इस ओर हो गई थी। उन दिनों जहाज़ प्रायः टकराकर डूब जाया करते थे। एक दिन बालक गुडइयर ने कहा—"पिताजी, डूबनेवाले क्या बचाए नहीं जा सकते? कोई युक्ति निकालना चाहिए।"

"हाँ, यदि रबर को किसी तरह से काम में लावें, तो बहुत कुछ हो सकता है; क्योंकि उसपर पानी का असर नहीं होता।"

कितने बे-सिर-पैर की बात थी। गुडइयर सोचने लगा कि यदि जहाज़ रबर का बनाया जाय, या कोई कुप्पा रबर का ऐसा बनाया जाय, जिसमें हवा भरी जा सके, तो उस कुप्पे की सहायता से जीवन बच सकता है। इसके बाद उसने रबर के विषय में पता लगाना शुरू कर दिया। बहुत खोज के बाद उसे मालूम हुआ कि रबर गरम देशों में एक प्रकार के वृक्षों से सफ़ेद रस के रूप में प्राप्त होता है। भूमध्य-रेखा के निकटवर्ती देशों में यह वृक्ष अधिकता से पाया जाता है, और दक्षिण अमेरिका में लोग इसे Hevea कहते हैं। इन स्थानों के मूल-निवासी इस रस को निकालते हैं, और इसे सभ्य-देशों में भेज देते हैं। गुडइयर के जन्म के वर्ष ही अर्थात लगभग १८०० ईसवी में रबर का गोंद अमेरिका के नगरों में आने लगा था।

इतने ही से वह संतुष्ट नहीं हुआ। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि झाड़ों से दूध-सा रस कैसे निकलता होगा? उसकी यह समस्या भी पिता ने एक दिन हल कर दी। पिता ने कहा—"चार्ली, मुझे व्यर्थ की बातों के लिये तंग किया करते हो। अक़्ल भी तो ख़र्च किया करो। भला झाड़ से दूध निकालना कौन-सा हरक्यूलियन काम है। गर्मी की ऋतु में पेड़ की छाल में छेद बना दिया जाता है, और उसमें प्याला लगा देते हैं, (जैसाकि हिंदोस्तान के लोग ताड़ी प्राप्त करने के लिये एक घड़े को ताड़ के वृक्ष में छेदकर बाँध देते हैं)। जब वह प्याला भर जाता है, तब सब रस एक बड़े बर्तन में इकट्ठा कर लिया जाता है।"

गुडइयर की रबर-संबंधी जिज्ञासा इतनी बढ़ गई थी कि उसने रबर के पूर्व-इतिहास को जानने की इच्छा प्रकट की, तब उसे ज्ञात हुआ कि योरप के साहित्य में रबर के गोंद का नाम लगभग १५२५ ई० की एक स्पेन-निवासी-लिखित पुस्तक में पाया जाता है। इसके बाद लगभग २११ वर्ष बाद फ़्रांसीसी वैज्ञानिकों ने अपनी दक्षिण-आफ़्रिका की यात्रा में रबर के वृक्षों पर एक रिपोर्ट लिखी थी। बस, यही उस समय रबर का पूर्व-चरित गुडइयर को ज्ञात हुआ था।

युवा होते ही गुडइयर के हाथ में व्यापार का काम सौंपा गया, परंतु दुर्भाग्य से उसे घाटा हो गया, और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह क़र्ज़ में डूब गया। क़र्ज़ न चुका सकने के कारण १८२० ईसवी में उसे जेल जाना पड़ा। बस, यहीं से उसके रबर-संबंधी आविष्कार आरंभ होते हैं। सब दुनिया-भर की आपत्तियों से छुटकारा पा उसे जेल में शांति से अपनी प्यारी समस्या को हल करने का मौक़ा मिला।

जेल से छुटकारा पाते ही वह अपनी इच्छा-पूर्ति में लग गया। वास्तव में बात यह थी कि रबर के जूते आदि बनाए तो जाने लगे थे परंतु सबसे कठिनाई की बात यह थी कि वे आब-हवा के परिवर्तनों को सह नहीं सकते थे। गुडइयर ने इसी तरह के बहुत-से जूते तैयार किए और उनसे अपनी दूकान को ख़ूब सजाया। ये जूते ठंड के दिनों में बड़ा काम देते थे, परंतु गर्मी के दिनों में पाँव सड़क के दर्शन करने के लिये एकदम निकल पड़ते थे। इतना ही नहीं, गर्मी के दिनों में इनसे इतनी दुर्गंध आती थी कि कोम-लांगियों के सिर में दर्द होने लगता था।

एक और बड़ा मज़ा था। रबर एक नवीन चीज़ थी, अतएव ठंडी ऋतु में सैकड़ों कारख़ाने खुल गए तथा गर्मी की ऋतु में अपना दिवाला निकालकर कारख़ानेवाले यहाँ-वहाँ जीवन-निर्वाह का उपाय ढूँढ़ने लगे। यदि कोई दिवालिया अपनी धुन का पक्का था, तो वह गुडइयर ही था। वह कहा करता था कि मुझे एक बात पर विचार करने में बड़ा उत्साह मिलता है कि जो कुछ छिपा रहस्य है या अज्ञात है वह अवश्य ही मनुष्य को ढूँढ़ने से ज्ञात हो जायगा। हाँ, केवल एक बात की ज़रूरत है अर्थात् मनुष्य लगातार अपने को उसी की खोज में लगाए रहे।

मित्रों ने उसे कुछ रबर लाकर दी। वह उसे रसोई बनाने के चूल्हे पर गर्म करता, भिन्न-भिन्न तरह के मिश्रण तैयार करता और फिर अपनी पत्नी के बालों में लगाने के पिन के द्वारा कपड़ों पर फैलाता था। रात को भी परीक्षाएँ किया करता था। एक परीक्षा की असफलता देख दूसरी परीक्षा करता और आधी रात को अपनी पत्नी को सोते से जगाकर अपने आविष्कारों का वर्णन लिखने के लिये कहता था। द्रव्य उसके पास नहीं था, कोई विज्ञान-शाला का यंत्र उसे प्राप्त नहीं था। रसायन-शास्त्र का वह ज्ञाता नहीं था, इसी कारण उसे सफलता प्राप्त करने में बरसों लग गए। अंत में सफलता हुई। देश के युवको, फिर भी तुम क्यों आव-सियों की तरह सुविधाएँ न होने की शिकायतें किया करते हो?

ठंड की ऋतु में तैयार की हुई वस्तु की परीक्षा करने के लिये उसे गर्मी के दिनों के आने की बाट जोहनी पड़ती थी। रबर को पहले तारपीन में घोलते थे। गुड-इयर ने सोचा कि तारपीन के कारण ही शायद चिप-कने का गुण आ जाता हो, अतएव उसने उस गोंद को अलकोहल (शराब) में घोलना प्रारंभ किया। एक दिन उसके नौकर ने इसी घोल से अपना पायजामा और कोट तर-बतर कर लिए। उसने शायद उनका मोम-जामा बनाना सोचा हो। जब वह उन कपड़ों को पहनकर कुर्सी पर बैठा, तब कुछ देर में रबर के जम जाने से हज़रत के पैर-से-पैर और शरीर से हाथ चिपक गए। कुछ करते-धरते नहीं बनता था। लगा अपने मालिक को पुकारने। गुडइयर ने क़ैंची से कपड़े काटकर बेचारे को आपत्ति से बचाया।

बार-बार गुडइयर के मित्र उसकी मदद करते थे। इससे यह न समझ लेना चाहिए कि उनको आविष्कारों से प्रेम था। वे तो केवल उसके पागलपन और मूर्खता के कारण उसपर दया करते थे। आविष्कारों के कारण उसके घर में रोटियों के लाले पड़ गए थे। उसकी सुयोग्य देवी ने कभी पति को उलहना नहीं दिया। वह पति की हमेशा ही आविष्कारों में मदद किया करती थी। गृहस्थी का काम चलाने के लिये चरख़ा कातती थी। रबर के कपड़े गुडइयर को पहनने के लिये बनाती थी, और जब हमारे चरित्र-नायक शहर की गलियों में सिर से पैर तक रबर के वस्त्रों से सुसज्जित निकलते थे, तो बालकगण 'मिस्टर रबर'-'मिस्टर रबर' कहकर उनके पीछे दौड़ते थे।

एक दिन गुडइयर ने रबर का एक पतला धागा बनाया और उस पर कसकुट का मिश्रण लगाकर उसे रंगीन बना डाला। परंतु धागे का वज़न बढ़ गया, अत-एव उसने तेज़ाब में डालकर कसकुट को दूर कर दिया। गुडइयर ने इसके बाद उस धागे को एक ओर फेंक दिया। कुछ दिनों के उपरांत फिर उसे उठाने पर मालूम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुआ कि अब इसमें गर्मी सहन कर लेने की शक्ति आ गई है। बस क्या था, उसका पेटेंट करवा लिया और अपने विलियर्ड-नामक मित्र से द्रव्य लेकर 'गुडइयर और विलियर्ड' कारख़ाना खोल दिया। थोड़े दिनों में वह कारख़ाना रबर की पतली चद्दरों को तैयार करने लगा। परंतु जब रबर की तह मोटी रहती थी, तब तेज़ाब का असर उसके भीतरी भाग पर बिलकुल नहीं पड़ता था। अतएव फिर भी असफलता ही सामने आई। यही समय था, जब कि गुडइयर ने छाता गिरवी रखकर न्यूयार्क जाने की ठानी थी।

इसके बाद वह सन् १८३७ ई० में न्यू हेवन चला गया। वहाँ भी उसका एक मित्र था। मित्र का नाम था नेथानियल हेवर्ड। बातों-बातों में मित्र ने कहा कि एक दिन मैंने स्वप्न में देखा था कि गंधक और रबर के गोंद का मिश्रण करने से रबर में आब-हवा सहन करने का गुण आ जाता है। उसने परीक्षा की, और उसे सफलता प्राप्त हो गई। परंतु वह क्रिया भी रबर की पतली चीज़ों के लिये ही उपयुक्त सिद्ध हुई।

एक समय की बात है कि मित्रों के साथ आविष्कारक रात्रि में बैठा हुआ था। सब मिस्टर रबर की हँसी उड़ा रहे थे। अचानक मिस्टर रबर के हाथ से छूटकर रबर का एक टुकड़ा जलते हुए स्टोव पर जा पड़ा। थोड़ी देर में उसकी अवस्था परिवर्तित हो गई, और निकालने पर उसमें अजब कड़ापन दृष्टिगोचर होने लगा। बस अब वह इसकी भी परीक्षा बरसों करता रहा। वह लिखता है कि मैंने बड़े ऊँचे ताप-क्रम का गर्मी का उपयोग किया, फिर इंडिया रबर को पिघले हुए गंधक में ऐसी ही गरम अवस्था में डुबो दिया। इससे वह हमेशा जल जाती थी, परतु पिघलता नहीं थी। आँच के सामने भी मेरी परीक्षाओं का यही फल होता था, और जली हुई रबर के बाज़ू में कुछ ऐसी रबर तैयार हो जाती थी जिसमें कि आब-हवा से प्रभावित न होने का गुण आ जाता था।

इसके बाद उसे एक ऐसे कारख़ाने में परीक्षा करने का अवसर प्राप्त हुआ जहाँ कि ऊँचे ताप-क्रम की गर्मी आसानी से प्राप्त हो सकता थी। परिणाम यह हुआ कि अंत में सफलता देवी ने उसे अपना लिया तथा रबर के गोंद, सफ़ेद जस्ता और गंधक को लगभग २७० डिग्री की गर्मी तक गरम करने से एक ऐसा पदार्थ वह तैयार कर सका जो कि आजकल घर-घर में दिखाई देता है। उक्त क्रिया को वलकेनाइज़िंग की क्रिया कहते हैं। यही क्रिया आज तक काम में आती है। ऊपर की विधि से तैयार किए हुए रबर के द्वारा गुडइयर की लड़की ने संसार के इतिहास में सबसे पहला रबर के जूते का जोड़ा पहना।

संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं, जो रबर का स्थान ग्रहण कर सके। लोहा, लकड़ी, पत्थर, चमड़ा, कपास, ऊन आदि कभी रबर का स्थान नहीं ले सकते। थोड़े ही दिनों में गुडइयर ने लगभग ६० आविष्कारों के पेटेंट करवाए, परंतु परिश्रम का फल द्रव्य के रूप में नहीं मिला। जीवन के अंतिम वर्ष 'अपनी चीज़ को अपनी' सिद्ध करने के झगड़े में ही बीत गए। लोगों ने उसकी बतलाई हुई विधि से कारख़ाने खोलकर द्रव्य पैदा किया। ऐश-आराम करनेवालों ने मज़ा लूटा, परंतु वह बेचारा रबर के लिये जीवन दान देनेवाला—रबर के आविष्कार के लिये अपने पुत्र की पाठ्य-पुस्तकों को पाँच डालर पर बेचनेवाला—ग़रीबी में ही, ६० वर्ष की अवस्था में, संसार से विदा हुआ, परंतु उसका जीवन संसार के लोगों को एक संदेश दे रहा है।

नाथूराम शुक्ल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय चित्र-कला के प्राचीन सिद्धांत

भारतीय चित्र-कला का प्रारंभिक इतिहास अभी तक अतीत के गर्भ में है। अनेक योरपियन तथा भारतीय विद्वानों ने उसके निर्माण की चेष्टा की है। उसमें उन्हें कहीं तक सफलता भी प्राप्त हुई, किंतु अभी तक प्रकाशित हुई इस विषय की पुस्तकों में से एक ने भी भारतीय चित्र-कला के आदर्श और नियमों का भारतीय दृष्टिकोण से वर्णन नहीं किया।

भारतीय चित्र-कला का सर्वोत्तम इतिहास पहले पहल डॉ० विंसेंट स्मिथ ने अपने 'ए हिस्ट्री ऑफ़् फ़ाइन आर्ट्स इन इंडिया ऐंड सीलोन'-नामक ग्रंथ में लिखा था। इस ग्रंथ के लिखे जाने के समय तक भारतीय चित्र-कला के विषय में लोगों की जानकारी कुछ भी न थी। स्मिथ के इस ग्रंथ के द्वारा योरप और अमेरिका में भारतीय चित्र-कला की विवेचना के लिये बड़ा उत्साह बढ़ा। कई विद्वानों ने तो भारतीय चित्र-कला को अपने स्वाध्याय का एक विशेष अंग बना डाला। ऐसे ही लोगों में श्री ई० बी० हेवेल की गणना है। हेवेल महोदय ने भारतीय चित्र-कला का न केवल अध्ययन ही किया अपितु उन्होंने उसमें नवजीवन-संचार कर दिया। कलकत्ता आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल की हैसियत से उन्होंने अपने विद्यार्थियों में भारतीय चित्र-कला की ओर अनुराग उत्पन्न करवाया, और श्री डॉ० अवनींद्रनाथ ठाकुर जैसे प्रसिद्ध कलाविद् में ऐसा भारतीय-कला-प्रेम भरा कि तब से आज तक उन-जैसा भारतीय कला का हिमायती दूसरा हुआ ही नहीं। किंतु हेवेल की पुस्तकों में भारतीय कला के आदर्शों का ज़िक्र होने पर भी उसके प्राचीन नियमों का कहीं वर्णन न था। डा० आनंद-कुमार स्वामी-जैसे प्रसिद्ध सिंहली विद्वान् ने भी 'हिस्ट्री ऑफ़् इंडियन ऐंड इंडोनीशियन आर्ट'-नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में इस विषय पर उचित प्रकाश नहीं डाला है। इसीलिये भारतीय चित्र-कला के सिद्धांत और नियम एक प्रकार से अबतक अज्ञात-से ही हैं।

इस अनभिज्ञता का प्रधान कारण है इस विषय की पुस्तकों का अभाव। प्राचीन चित्र-कला के नियमों की विवेचना करनेवाली पुस्तकें अबतक दुर्लभ ही हैं। भरत-नाट्य-शास्त्र, मानसार, शिल्प-रत्न, वात्स्यायन कामसूत्र और विष्णुपुराण को छोड़कर और कहीं भारतीय चित्र-कला के सिद्धांतों का वर्णन नहीं पाया जाता। बौद्ध-ग्रंथों में, विशेषतः महा उम्मग्ग जातक में चित्रों के विषय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

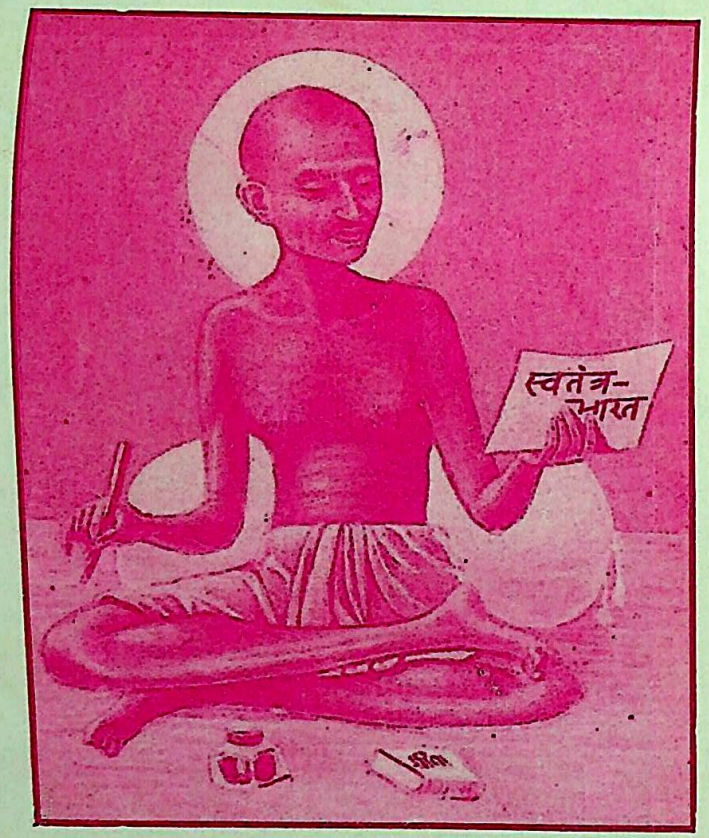

महात्मा गांधी

[सत्याग्रह संग्राम के सैनिक। आपने स्त्रियों को भी सत्याग्रह करने की आज्ञा दी है]

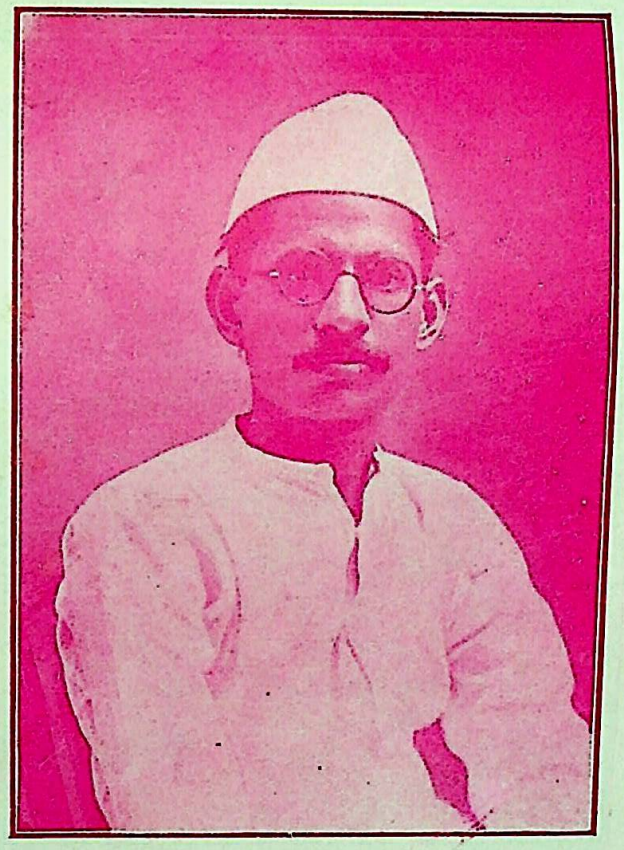

श्रीगणेशशंकर विद्यार्थी

[गोरखपुर- हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

श्रीरुडोल्फ़ वैलंटिनो

[आप योरपियन चित्रपट के सर्व-प्रथम कुशल अभिनेता थे। अपने कला-नैपुण्य से आपने संसार-भर में प्रसिद्धि प्राप्त की थी। मि० डगलस फ़ेयर बैंक्स से पहले आप ही सिनेमा-जगत् के सर्व-प्रिय ऐक्टर थे। ३-४ वर्ष हुए, आपकी मृत्यु हो गई]

श्रीमती पोला नेग्री

[आप भी योरप के चित्रपट की सर्व-श्रेष्ठ अभिनेत्री हैं। आपका जन्म-स्थान पोलैंड है। रुडोल्फ़ वैलंटिनो से आपका अगाध प्रेम था, किंतु दुर्भाग्य-वश विवाह की तिथि से कुछ दिन पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गई]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में उक्तियाँ अवश्य पाई जाती हैं, किंतु कहीं भी शृंखला-बद्ध वर्णन उपलब्ध नहीं होता।

इधर लखनऊ-विश्वविद्यालय में अपने पूज्य गुरु श्री डॉक्टर राधाकुमुद मुकर्जी तथा श्रीचरणदास चटर्जी एम्० ए० महोदय की प्रेरणा से भारतीय चित्र-कला का हमने जो कुछ अध्ययन किया, उससे हमें पता चला कि भारतीय चित्र-कला के विषय में अभी बहुत कुछ नवीन खोज की जा सकती है। अतएव भारतीय चित्र-कला के ऐतिहासिक पहलू पर प्रकाश डालने के बाद * हम अब भारतीय चित्र-कला के सिद्धांतों और नियमों पर भी कुछ लिखने का साहस करते हैं। हमारी यह सामग्री अधिकतर विष्णुपुराण, मानसार, शिल्पतंत्र तथा नाट्य-शास्त्र के आधार पर स्थित है। इन सभी ग्रंथों में चित्र-कला के कुछ नियम पाए जाते हैं, किंतु विष्णुपुराण में इस विषय पर विशेष प्रकाश डाला गया है। उसका वह भाग, जिसमें चित्र-कला और मूर्ति-कला के नियमों का उल्लेख है, 'विष्णु-धर्मोत्तर' कहलाता है। यह भाग हमारी सम्मति में अजंता के सुंदर-चित्रों का समकालीन है। जिस समय उन चित्रों की रचना हो रही थी, उसी समय इस पुस्तक का भी निर्माण हुआ, यह बात पुस्तक के अंतर्गत व्यक्तियों के नाम तथा अजंता-चित्र-प्रणाली के बनाव और विष्णु-धर्मोत्तर में वर्णित नियमों की तुलना से स्पष्ट हो जाती है।

इस दृष्टि से देखने पर विष्णु-धर्मोत्तर का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि तब वह भारतीय चित्र-कला की पहली 'रूल बुक' सिद्ध होता है। अतएव वर्तमान तथा आगे के ३ या ४ लेखों में हम जिन नियमों का वर्णन करेंगे, वे विशेषतः विष्णुधर्मोत्तर के और साधारणतः उपर्युक्त अन्य ग्रंथों के आधार पर होंगे। यदि भारतीय चित्र-कला के प्रेमी लोगों ने इन लेखों का कुछ भी आदर किया, तो भविष्य में हम भारतीय मूर्ति-कला के नियमों को भी लेकर उनके सामने उपस्थित होंगे।

भारतीय चित्र-कला का मूल-सिद्धांत है कि चित्रों का निर्माण केवल धार्मिक उद्देश्य से ही नहीं होना चाहिए अपितु वर्णों और रूप के सम्मिश्रण से बनी हुई वास्तविक और आनुमानिक आकृतियों द्वारा परमात्मा और प्रकृति की इस विकृत लीला—संसार—के रंगमंच पर नाट्य करनेवाले जीवन के सत्य को प्रकट कर, जन-साधारण के मनोरंजन और कल्याण-साधन के उद्देश्य से भी चित्र-कला का अभ्यास करना चाहिए। धर्म का आदि स्रोत परमात्मा इस दृश्य जगत् का निर्माणकर्ता है। उसके द्वारा निर्मित संसार के नियमों की सचाई का इस प्रकार से प्रकट करना कि उससे जन-साधारण का मनोरंजन के साथ-ही-साथ कल्याण भी हो—भारतीय चित्र-कला का प्रधान उद्देश्य रहा है।

चित्र-कला का इतना ऊँचा उद्देश्य किसी भी अन्य देश ने अपने चित्रकारों के सामने नहीं रक्खा। इसी लिये शायद भारतीय चित्रों में आत्मा और परमात्मा से संबंध रखनेवाले जिन भावों का सम्मिश्रण पाया जाता है, वे अन्यत्र नहीं पाए जाते। किंतु इतनी ऊँची उड़ान भरनेवाली भारतीय चित्र कला ने लौकिक अथवा पार्थिव भावों का एकदम बहिष्कार कर दिया हो, सो बात भी नहीं है। बड़े-बड़े नगरों में रहनेवाले शौक़ीन बाबू लोगों—जिन्हें उस समय नागरक कहते थे—के लिये चित्र कला शिक्षा का एक बाध्य विषय बना दी गई थी। अपनी-अपनी शिक्षा के अनुरूप ही लोग चित्र पसंद किया करते थे। अतः आचार्यों ने चित्रकार के सुबीते के लिये लिख रक्खा था कि "चित्र-कला-मर्मज्ञ रेखा-सौष्ठव अर्थात् आकृति का भावानुरूप जीवितसम चित्रण पसंद करते हैं, पारखी लोगों को प्रकाश और छाया का उत्तम सम्मिश्रण—जिसे 'वर्तना' कहते हैं—पसंद आता है, स्त्रियाँ अत्यंत अलंकृत चित्र पसंद करती हैं और साधारण जनता रंगों की शोख़ी।" इसलिये वे कहते हैं कि प्रत्येक चित्रकार को ऐसा अभ्यस्त होना चाहिए कि जिसमें वह इन सबको ही संतुष्ट कर सकने-वाला चित्र चित्रित कर सके।

चित्र भी दो प्रकार का बतलाया गया है, दृष्ट और अदृष्ट। दृष्ट चित्र वह कहलाता है कि जो सांसारिक जीवन का ठीक वैसा ही प्रतिबिंब हो, जैसा हम दर्पण में देखते हैं। अदृष्ट चित्र में चित्रकार अपने दिमाग़ की ऊँची कल्पना को रेखा-बद्ध करता है। दृष्ट चित्र के लिये

* देखिए लेखक का—'भारत-चित्रावली' में—भारतीय चित्र-कला का इतिहास।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सांसारिक जीवन के घटना-क्रम का सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक होता है और काल्पनिक चित्रों के लिये मानसिक शक्ति की प्रौढ़ता ज़रूरी समझी गई है। इस के अतिरिक्त उत्तम चित्रों की उत्पत्ति के लिये नृत्य-कला के नियमों का ज्ञान अत्यंत आवश्यक बतलाया गया है। विष्णुधर्मोत्तर के मतानुसार तो प्रकृति-पर्यवेक्षण तथा नृत्यकलाभिज्ञान के बिना चित्र-कला के नियम समझ में ही नहीं आ सकते। किंतु इसके यह अर्थ नहीं कि चित्रकार बैठा-बैठा नर्तकियों की उत्क्षिप्त टाँगों और निक्षिप्त हाथों, अथवा प्रसारित बाहुवल्लरियों और आकुंचित अँगुली-पुटों की अवस्था विशेष का ही चित्रण किया करे। इसका केवल यही अभिप्राय है कि नृत्य करते समय शरीर के विभिन्न अवयवों के परिचालन के कारण मनुष्य की विविध मांसपेशियों, नाड़ियों तथा अस्थियों की जो परिस्थिति हो जाती है, चित्रकार को उस परिस्थिति का पूरा ज्ञान होना चाहिए कि जिससे जीवन के घटना-प्रवाह में अचानक आ पड़नेवाली परिस्थितियों में मनुष्य-शरीर की वास्तविक अवस्था विशेष को चित्रित करने में वह सफल हो सके, जिससे "उसके चित्र की आकृतियाँ साँस लेती हुई, वायु सनसनाती हुई, अग्नि धधकती हुई और जहाज़ों के पाल फहराते हुए" अनुभव हो सकें। गति, जीवन और चेतना यही तीन वस्तुएँ हैं कि जिनकी प्रत्येक उत्तम चित्र में आवश्यकता होती है। इनके बिना चित्र में भाव-प्रवणता, रस और मुखरता का प्रादुर्भाव हो नहीं हो सकता। कल्पना, पर्यवेक्षण तथा भाव-मुखर नृत्य-लास्य ही चित्र-कला के उद्भव-स्थान हैं। अतएव भारतीय चित्र-कला के आचार्यों ने इन्हीं तीनों बातों पर इतना अधिक ज़ोर दिया है।

सुधींद्र वर्मा बी० ए०

नए वर्ष की ख़ुशी में लूटो !

२॥) रु० में हर रोग का इलाज

यदि अपने घर बैठे ही स्त्री-पुरुषों के नए-पुराने और कड़े रोगों के आवश्यकतानुसार यौगिक, वैज्ञानिक, प्राकृतिक और आध्यात्मिक रोगनाशक विधियों, रीतियों, युक्तियों, रत्न, उपरत्न, धातु, उपधातु, जड़ी-बूटी (औषधि) तथा मिट्टी, जल, वायु, रंग, प्रकाश, भोजन, कंद, मूल, फल, फूल, तरकारी, शाक, खेल, कूद, हँसना, बोलना, गाना, बजाना आदि द्वारा इलाज कराना चाहते हो, तो पूर्ण व्यवस्था-सूचक पत्र हमारे मशविरे की फ़ीस Consultation fee दस रुपए सहित तुरंत भेजो। पत्र-व्यवहार गुप्त रखने की गारंटी है। सब प्रकार निराश हो चुकने पर भी विधि-पूर्वक कार्य करने से हमारी विधियों आदि से अवश्य लाभ होता है। जो एक से अधिक रोगों से पीड़ित हों, दूनी फ़ीस भेजें। नए वर्ष की ख़ुशी में ख़ास रिआयत। इस पत्रिका का हवाला देकर लिखनेवाले उपर्युक्त फ़ीसों की आधी फ़ीस भेजें और विद्यार्थी, क्लर्क, मुनीम और असमर्थ स्त्री-पुरुष यथाक्रम चौथाई। पैकिंग, डाक-महसूल, रजिस्ट्री आदि के लिये सब कोई आठ आना अधिक भेजें। रुपया सहित पत्र प्राप्त होने पर उचित औषधि, विधि, युक्ति आदि भेजी अथवा बताई जायगी। यदि अवश्य ही अपना भला चाहते हो, तो तुरंत रुपया भेजकर लाभ उठाओ, अन्यथा "समय गए पुनि का पछताने।"

डॉक्टर जी० एस्० डी० शर्मन

G. Sc., N. V. (U. S. A.), M. A., D. Sc., Ps. D., M. D. (AYUR.), LL. D.

विद्याभूषण, योगविद्या-महार्णव, आकल्टिस्ट,

२५, सक्सैस हाउस, फ़तहपुर सीकरी (आगरा)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

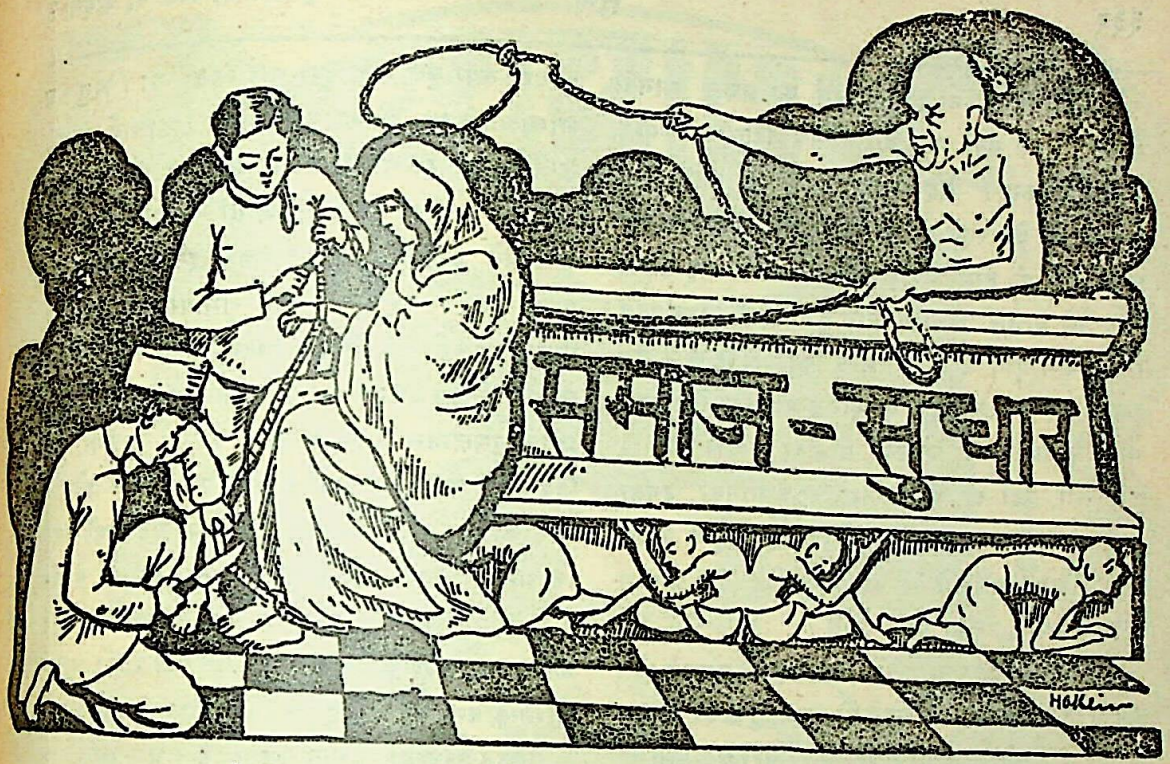

वर्ण-विभाग

(गत अंक से आगे)

प्रश्न—तो क्या तुम्हारे विचार में हिंदू-सभा और हिंदू-संगठन से कुछ लाभ नहीं होने का? क्या मालवीयजी और श्रद्धानंदजी का यह परिश्रम व्यर्थ जायगा?

उत्तर—नहीं। हम इस को व्यर्थ नहीं समझते। हम पहले कह चुके हैं कि इससे जागृति के चिह्न दिखाई पड़ते हैं। और कुछ नहीं, तो यह एक प्रकार का सामाजिक व्यायाम ही हो रहा है। हिंदू-जैसी निरुद्योगी जाति के लिये, जिसने सैकड़ों वर्षों से व्यक्तिगत धर्म को छोड़कर समष्टिगत धर्म की चर्चा तक नहीं की, जो बहुत दिनों से नींद के खुर्राटे ही ले रही है, सामाजिक व्यायाम भी हितकर होगा। परंतु हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक उद्देश्य निश्चित न होगा, जब तक एक निर्धारित पद को प्राप्ति सबका दृष्टिकोण न होगा, उस समय तक हिंदू-संगठन अधिक स्थायी न होगा। आजकल आप जानते हैं कि कौन-सी बात ने हिंदुओं को संगठन करने के लिये तैयार किया है? केवल आत्म-रक्षा ने। चूँकि मुसलमान लोग आजकल बहुत-से अनुचित व्यवहारों से लड़कों और स्त्रियों को मुसलमान बनाने की चेष्टा कर रहे हैं, इसलिये नेताओं को भी आत्म-रक्षा की अपील करने का अवसर मिलता है। परंतु यह तो संगठन के बाह्य कारण हैं। मुसलमान थोड़े शिथिल हो जायँ, तो हिंदू फिर तितर-बितर हो जायँगे। किसी पुस्तक के पन्नों को बाँधने के लिये गोंद की ज़रूरत होती है, केवल भारी पत्थर की शिलाओं के बीच दबा देने से जिल्द नहीं बँध जाती। इसी प्रकार जब तक आंतरिक गोंद नहीं है, उस समय तक बाहर की आपत्तियाँ हिंदू-जाति को बहुत दिनों तक संगठित नहीं रख सकतीं।

प्रश्न—तुम्हारी समझ में क्या उद्देश्य होना चाहिए?

उत्तर—मैं समझता हूँ कि जिसको आजकल हिंदू-धर्म कहा जाता है, उसकी सभी शाखा-प्रशाखाएँ वेद के आधार पर हैं। रामायण भी वेद को अपौरुषेय और ईश्वर का ज्ञान बताता है, महाभारत भी, गीता भी, दर्शन भी, उपनिषदें भी। इसलिये वेद को मानना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और वेदों पर चलना ही हिंदू धर्म का लक्षण मानना ठीक होगा। वेदों की ओर प्रत्येक हिंदू का ध्यान आकर्षित करो। वैदिक धर्म का प्रचार करो, सब हिंदुओं को वेद पढ़ने का अधिकार दो। लोग वेदों का प्रातःकाल ही उसी प्रकार अध्ययन और पाठ किया करें, जैसे बाज़ारों में मुसलमान दूकानदार क़ुरान पढ़ते मिलते हैं। ऐसा करने से समस्त हिंदू परस्पर छोटे भेद रखते हुए भी एक सूत्र में आबद्ध हो जायँगे। जिस समय हिमालय की चोटियों से लेकर कुमारी अंतरीप तक सभी, वेदों को अपनी धर्म-पुस्तक मानकर, उनका मान करेंगे, उस समय देश में एक नई जागृति उत्पन्न होगी। लोग समझेंगे कि हम क्यों हिंदू हैं। प्राचीन वैदिक सभ्यता उनका लक्ष्य होगी।

प्रश्न—तुम आर्यसमाजी हो, सो वेद-वेद पुकारते हो। तुम अपने स्वार्थ की बात कहते हो। तुम्हारा लक्ष्य तो यह है कि सब आर्यसमाजी हो जायँ। भला जहाँ तुम वेदों का नाम लेते हो, वहाँ गोस्वामीजी की रामायण, गीता, पुराण आदि को क्यों छोड़ देते हो? क्या ये धर्म-ग्रंथ नहीं हैं?

उत्तर—हमारा यह लक्ष्य अवश्य है कि सब आर्य हो जायँ और वेदों का अनुसरण करें। परंतु इसमें स्वार्थ कुछ भी नहीं है। जिन गीता पुराण आदि का तुमने नाम लिया, वे सब वेदों का प्रामाण्य मानते हैं। फिर जड़ को न पकड़ के शाखाओं को क्यों पकड़ते हो? याद रक्खो कि जड़ के जाने से समस्त वृक्ष जाता है। माना कि तुम सब आर्यसामाजिक नहीं होना चाहते, क्योंकि तुम्हारा उनका मतभेद है। परंतु अन्य भेदों को जाने दो। 'वेद' के विषय में तो तुम और आर्य-सामाजिक सब एक हैं। देखो मुसलमानों में भी क़ुरान शरीफ़ के अतिरिक्त अन्य बहुत-से धर्मग्रंथ हैं, जिनको मुसलमान पढ़ते हैं। परंतु वह उनको क़ुरान शरीफ़ का स्थान नहीं देते। इसी प्रकार ईसाइयों की इंजील मुख्य है, अन्य धर्म-ग्रंथ गौण हैं। प्राचीन आर्य लोग भी वेदों को मूल या मुख्य ग्रंथ मानते थे और उपनिषद् शास्त्र आदि अन्य धर्म ग्रंथों को गौण मानते थे। इस प्रकार जहाँ नित्य नए धर्म-ग्रंथ रचे जाते थे उन सबकी नींव वेदों पर रक्खी जाती थी। वेदों का प्रचार हमेशा रहता था। इस प्रकार वैदिक सभ्यता-रूपी वृक्ष सदा हरा-भरा रहता था। परंतु इस शाखाओं ने वृक्ष का स्थान ले लिया। शाखाएँ समझने लगीं कि हम हरे-भरे हैं, हमको मूल की क्या आवश्यकता है। इसलिये पहले तो लोगों ने वेदों के स्थान में उपनिषदें रक्खीं, फिर इन सबको हटाकर गीता का प्रभाव हुआ। फिर तुलसीकृत रामायण ने इन सब प्राचीन पुस्तकों को निकाल बाहर किया। इस प्रकार प्राचीन वैदिक सभ्यता लुप्त होती गई। जहाँ प्रायः प्रत्येक मुसलमान के घर में क़ुरान शरीफ़ मिलेगा, वहाँ हिंदुओं के दस हज़ार घरों में भी एक वेद न होगा। पढ़ने की तो कथा ही क्या है? हम यह नहीं कहते कि आप रामायण या गीता न पढ़ें। हमारा तात्पर्य है कि रामायण और गीता का भी आधार जो वेद है उसका ध्यान रक्खें जिससे रामायण और गीता का भी अस्तित्व बना रहे। याद रहे कि धर्म-पुस्तक का समाज के संगठन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। धर्म-पुस्तकों का नित्य-पाठ जीवन को उच्च बनाता है, मनुष्यों में जीवन का संचार करता है, उनको एक सूत्र में बाँधता है। हिंदुओं के संगठित न होने का एक कारण यह भी है कि एक वृक्ष की शाखा होते हुए भी भिन्न-भिन्न धर्मग्रंथों को एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर दिया गया है। वेदांती सांख्यों के शत्रु हैं, और नैयायिक वेदांतियों को बुरा कहते हैं। पुराणों में एक दूसरे से विरोध है। शिव और शक्ति के उपासक आपस में मिल नहीं सकते। इस प्रकार परस्पर भेद-भाव वैमनस्य उत्पन्न कर ही देते हैं। भारतवर्ष में जब मुसलमानों ने पहले आक्रमण किया, तो उन्होंने हिंदुओं की इन सब बातों से पूरा लाभ उठाया। जब जैनियों के मंदिर टूटे, तो शैव और शाक्त प्रसन्न हुए कि अच्छा हुआ, नास्तिकों के मंदिर तोड़ दिए गए। शैव या शाक्त लोगों के मंदिरों पर अत्याचार हुए, तो वैष्णवों ने सोचा कि ये इसी योग्य थे। इस प्रकार एक-एक करके सब को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया। हिंदुओं को इन सब प्राचीन और अर्वाचीन बातों से शिक्षा लेनी चाहिए और अपने को एक सूत्र से बाँधना चाहिए।

(समाप्त)

गंगाप्रसाद उपाध्याय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

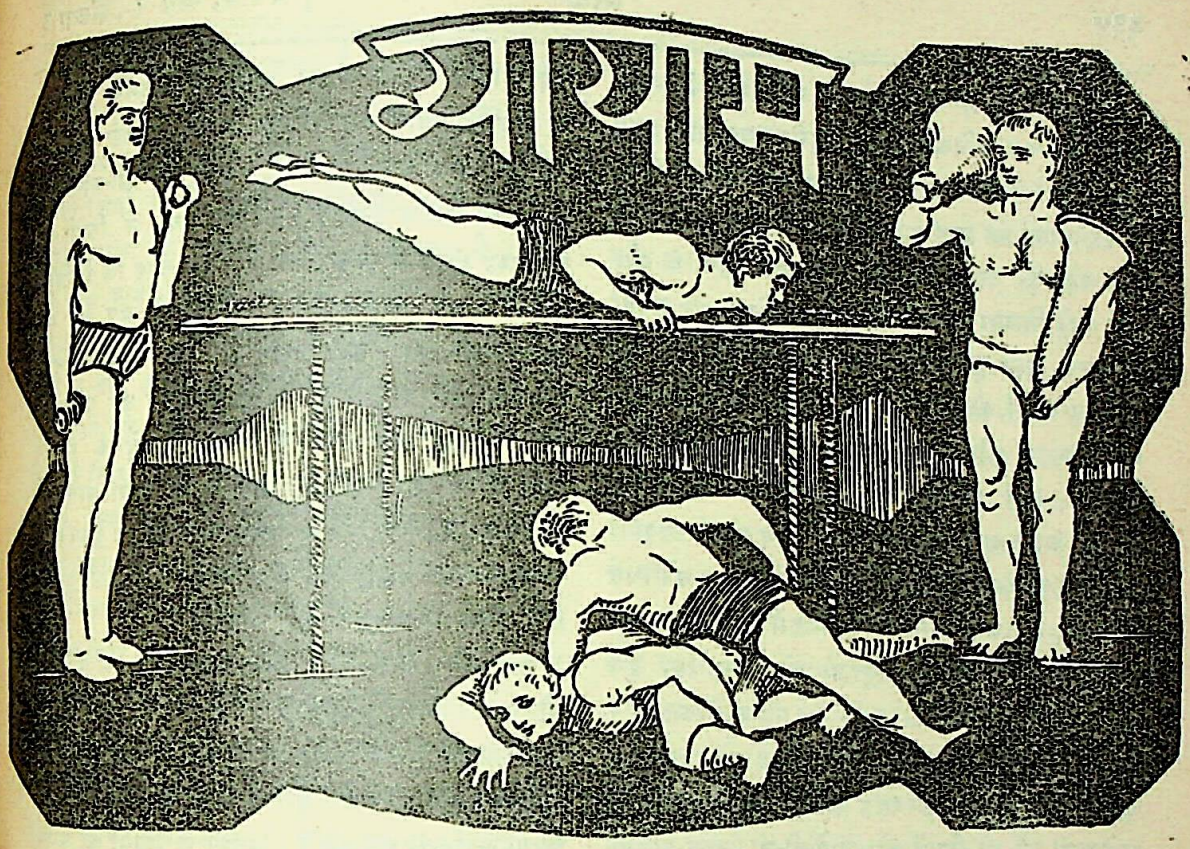

स्त्रियों के व्यायाम

(१)

व्यायाम की आवश्यकता

आजकल देखा जाता है कि हमारा स्त्री-समाज बहुत ही निर्बल और रोगी बन गया है। जिसके गर्भ से मानव-सृष्टि उत्पन्न होती है, वही स्त्री-जाति आजकल कमज़ोर हो गई है। आजकल देखा जाता है कि स्त्रियाँ प्रायः क्षय, प्रसूति और हिस्टीरिया आदि रोगों से घिरी रहती हैं। हमारे भाई, स्त्रियों की इस गिरी दशा पर, बिल्कुल ही ध्यान नहीं देते। वे स्त्रियों की इस नाज़ुक स्थिति पर बड़े ही प्रसन्न होते हैं। ज़रा-सी सर्दी में ज़ुकाम और सिर-दर्द, ज़रा-सी गर्मी में जी घबराना, बेचैनी इत्यादि उत्पातों को देखकर पुरुष उस स्त्री को बहुत ही सुकुमार समझते हैं। यह कैसी वज्र मूर्खता है! सभ्य कहलानेवाले घरों में जाकर देखिए, स्त्रियों की कैसी दुर्दशा है! उनके मुख पीले, विवर्ण और निस्तेज हो गए हैं। शरीर में मांस और रक्त का पता नहीं है। खाल से ढकी हुई सिर्फ़ हड्डियों की ठठरी बाक़ी है। एक शक्ति-हीन रोगी शरीर चटकीले-भड़कीले कपड़े और गहनों से लपेटा हुआ दिखाई पड़ता है।

इतनी निर्बलता होने पर भी एक बच्चा दूध पीना छोड़ने भी नहीं पाता कि दूसरा पैदा हो जाता है। गर्भ रहने के दिन से लगाकर प्रसव के समय तक अनेक प्रकार की दवा-दारू करके उस जर्जर शरीर को नाश होने से बचाया जाता है। ऐसी स्त्रियों से पैदा होनेवाले बालक तो प्रायः मर ही जाते हैं, परंतु साथ ही वे अपनी माता को भी ले जाते हैं। इस तरह आजकल भारतीय स्त्री-समाज अत्यंत दुर्दशा-ग्रस्त है।

स्त्रियों में 'क्षय'-रोग अधिकता से होता है। यह रोग उन स्त्रियों को होता है, जो प्रायः दूषित वायु में ही रहती हैं। ऐसे मकानों और गलियों में, जहाँ शुद्ध वायु का मिलना असंभव है, रहनेवाली स्त्रियाँ क्षय-रोग से पीड़ित पाई जाती हैं। पर्दे की कुप्रथा भी इस रोग के बढ़ाने में पूरी तरह सहायक है। यह रोग फेफड़ों की कमज़ोरी से ही होता है, और शुद्ध वायु के न मिलने ही से फेफड़े ख़राब हो जाया करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छोटे-छोटे ग्रामों की अपेक्षा बड़े-बड़े नगरों में रहनेवालों को क्षय अधिक होता है। इसका एक-मात्र मुख्य कारण यही है कि शहर में रहनेवालों की अपेक्षा गाँवों में रहनेवालों को शुद्ध वायु अधिक परिमाण में मिलती है—बड़े-बड़े नगरों में सिवा बदबूदार हवा के और कुछ नहीं मिलता। गटरों की बदबू, अधिक जन-संख्या के कारण फैली हुई गंदगी, श्वास के द्वारा दूषित वायु, कल-कारख़ानों की चिमनियों का धुआँ, इत्यादि प्राण-घातक कारण बड़े-बड़े शहरों में ही होते हैं; छोटे-छोटे गाँवों में नहीं होते। यदि "फ़िनायल" छिड़ककर पाख़ाने आदि बदबूदार स्थानों की बदबू को न दबाया जाय, तो चौबीस घंटे में ही महानरक का दृश्य उपस्थित हो जाता है। भला ऐसे स्थानों में हमेशा चौबीसो घंटे रहनेवाली स्त्रियों की क्या दुर्दशा होनी चाहिए, इसे एक समझदार आदमी सहज ही में समझ सकता है। मर्द कहलानेवाले लोग तो घरों को छोड़ इधर-उधर घूम-फिरकर वायु का परिवर्तन कर लेते हैं, किंतु घरों में रहनेवाली पर्दे की स्त्रियों को जीते-ही-जी नरक-यातना भोगनी पड़ती है।

हलके व्यायाम में आजकल "वायु-सेवन" के लिये ग्राम के बाहर जंगल अथवा बाग़-बग़ीचो में जाना भी सम्मिलित है। न्यू-फ़ैशन के बाबू लोग भी, जिन्हें अखाड़ों में जाकर अथवा अपने घरों के कमरों में दंड-बैठक लगाना असभ्यता मालूम होती है, "वायु-सेवन" के लिये जाना ठीक समझते हैं। वायु-सेवन एक प्रकार का व्यायाम है, किंतु लोग इसे भी विधिवत् नहीं करते। घर से निकलकर कहीं पर बैठ जाने का नाम ही "वायु-सेवन" हो गया है। यह व्यायाम निर्बल आदमियों के लिये बड़ा ही अच्छा है, किंतु इसे अपनी शक्ति के अनुसार दूर चलकर ही करना चाहिए। कम-से-कम एक-दो मील शुद्ध वायु में, एक-चाल से, बिना किसी से बातचीत किए और नाक से ही साँस लेने तथा छोड़ने पर यह व्यायाम होता है। मोटर, बग्घी, ताँगों में बैठकर वायु-सेवन करने से उसका सोलहवाँ हिस्सा भी लाभ नहीं होता।

हमारे समाज में ये सब सहूलियतें केवल पुरुषों के लिये हैं; स्त्रियों के लिये नहीं। स्त्रियों को तो घरों की चहारदीवारी में बंद रक्खा जाता है—उनके स्वास्थ्य पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता। जबसे देश में पर्दे का रिवाज जारी हुआ है, तभी से स्त्री-जाति का अधःपतन आरंभ हुआ है। पर्दे की प्रथा ने स्त्रियों को इस तरह बंधन में डाल दिया है, जिस तरह कि चिड़ियाँ पिंजड़ों में बंद रक्खी जाती हैं। पिंजड़े में बंद की गई चिड़ियों की तरह उन्हें खाने-पीने का सामान दिया जाता है, और यदि कहीं एक घर से दूसरे घर पहुँचाना हुआ, तो बड़ी ही सावधानी से एक पिंजड़े के समान गाड़ी में, अथवा डोली में, बिठाकर ले जाया जाता है। कहीं बाहर की हवा न लग जाय, इस बात का पुरुष लोग पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं। कैसा अंधेर है? कैसी दुर्दशा है? कितना भयंकर नैतिक पतन है?

इस तरह स्त्री-जाति को दबोचकर रखने में ही पुरुष लोग अपने को बहुत कृतकृत्य समझते हैं। इसी में वे अपनी मर्दानगियत मानते हैं। पुरुषों ने स्त्रियों को न-जाने क्या समझ लिया है? वे उन्हें दबाकर रखना ही अपनी मर्दानगी समझते हैं। पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी ज़र-ख़रीद दासी समझ रक्खा है। उन्हें स्त्रियों के अधिकारों की तनिक भी परवा नहीं है—वे सब तरह स्त्रियों को पैरों से कुचलकर रखना चाहते हैं। स्त्री जाति को दबाकर रखने का नाम ही स्वार्थी पुरुषों ने "इज़्ज़त-आबरू बनाए रखना" मान लिया है। उन्हें ख़याल है कि स्त्रियों को स्वतंत्रता दी गई कि बस, प्रलय हुआ! कैसा भ्रम है? कितनी भूल है? कैसी संकीर्ण-हृदयता—कैसी तंग-ख़याली है?

पर्दे की प्रथा के प्रेमियों से मैं पूछ सकता हूँ कि क्या उन देवियों का, जिनमें पर्दे की प्रथा का नामो-निशान ही नहीं है, संसार में मान नहीं है? क्या उनमें पति-भक्ति-परायणा सती-साध्वी स्त्रियों का अभाव है? क्या वे सभी व्यभिचार को ही पसंद करती हैं? और वे स्त्रियाँ जिन्हें पुरुषों ने पर्दे के भयंकर शिकंजे में दबा रक्खा है, क्या सभी सम्माननीय, सती-साध्वी, पवित्र आचरणवाली और पतिव्रता हैं? मैं समझता हूँ कि इसका उत्तर उनके विचारों के विरुद्ध ही होगा। इस बात की अधिक जाँच करने पर पर्दे में ही अधिक दोष पाए जायँगे। कहने का तात्पर्य यह कि पर्दे की रीति में जितने भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोष हैं, उनमें यह सबसे भयंकर है कि शरीर की उन्नति में उससे भारी रोक हो रही है। पर्दे की कृपा ही से आज हमारा स्त्री-समाज निर्बल और रोगी हो रहा है।

जो स्त्रियाँ पर्दे में दबोचकर रक्खी जाती हैं, उन्हें प्रसूतिका-रोग भी अवश्य होता है। बच्चा पैदा होते वक्त उन्हें अत्यंत कठिन प्रसव-वेदना सहनी होती है। वे बीमार होकर ज़िंदगी से हाथ धो बैठती हैं। दैव-योग से यदि उनका जीवन-दीप बुझने से रह गया, तो वह अपने को धन्य और नए सिरे से जन्मी हुई मानती हैं। जो स्त्रियाँ पर्दों में रहने के कारण व्यायाम नहीं करतीं, उन्हीं की यह दुर्दशा होती है। देखा गया है, जो स्त्रियाँ मेहनत किया करती हैं, उनका प्रसव-काल बिना किसी कष्ट के, आनंद के साथ, निकल जाता है। मज़दूरी-पेशा स्त्रियों के बच्चा पैदा होते वक्त उतनी पीड़ा, तकलीफ़ और चिंता नहीं होती, जितनी कि एक आराम-तलब स्त्री को होती है। यदि हम प्रकृति के नियमों के अनुसार चलनेवाले प्राणियों की ओर दृष्टि डालते हैं, तो देखा जाता है, उन्हें प्रसव-काल में ज़रा भी तकलीफ़ नहीं होती। पक्षियों को तथा जंगली जानवरों को देखिए, चलते-फिरते प्रसव-क्रिया हो जाती है, और थोड़ी ही देर बाद वे घूमते-फिरते अपने तथा अपने बच्चों के भोजन की खोज में मेहनत करते दिखाई पड़ते हैं। क्या इस पर कभी विचार किया गया है?

आजकल स्त्रियों में, जो एक रोग अधिकता से पाया जाता है, उसे "हिस्टीरिया" कहते हैं। यह रोग ज्ञान-तंतुओं की निर्बलता से उत्पन्न होता है। यह रोग स्त्रियों के जीवन को मिट्टी में मिला देता है। ज्ञान-तंतुओं की कमज़ोरी से पैदा होने के कारण यह रोग रोगी के ज्ञान को नष्ट कर देता है, जिससे रोगी इसके दौरे के वक्त बे-सिर-पैर की अंट-संट बातें करने लगता है। कभी-कभी तो रोगी को बेहोशी तक हो जाती है। ऐसी दशा में लोग भूत की लीला समझकर झाड़-फूँक करनेवाले नाउत और ओझा आदि को बुलाकर जादू-टोना, टुटका, गंडा-तावीज़ वग़ैरह कराते हैं। लेकिन वास्तव में देखा जाय, तो यह रोग स्त्रियों को उनकी कमज़ोरी के ही कारण होता है। आज से २५-३० वर्ष पहले इस तरह के रोग स्त्रियों में बहुत ही कम पाए जाते थे। खेद है, आज ऐसे रोगों की दिन-दिन बाढ़ हो रही है।

स्त्री-जाति के इस शारीरिक पतन पर क्या कभी विचार किया गया है? कभी इसके कारण को खोजा गया है? यदि इस ओर ध्यान दिया गया होता, तो आज यह दुर्गति न हुई होती! हमारे विचार से तो इन सब दुर्गतियों का एक-मात्र कारण स्त्रियों में व्यायाम का न होना ही है। आजकल स्त्रियाँ आराम-तलब हो गई हैं। उनके पतिदेव स्त्रियों को ठाली बैठा रखने में ही अपना बड़प्पन समझते हैं। स्त्रियाँ भी आराम को ही पसंद करने लग गई हैं। बड़े कहलानेवाले, पैसेवालों के घरों की गृह-देवियाँ तो आजकल स्नान करके अपनी धोती तक धोने में अपना अपमान समझने लगी हैं। रोटी बनाने, पानी लाने, बरतन माँजने, चौका लगाने और बच्चे खिलाने के लिये नौकर रक्खे जाते हैं।

पुरुषों की यह एक दृढ़ धारणा-सी हो गई है कि "स्त्रियों को बलवान् नहीं होने देना चाहिए, जहाँ तक हो सके, उन्हें कमज़ोर बनाकर ही रखना चाहिए। यदि स्त्रियों को बलवान् होने दिया, तो फिर वे हम लोगों की परवा नहीं करेंगी, हमें तुच्छ समझने लग जायँगी। हम उन्हें दबा न सकेंगे, वे हमारे सिर के बाल उखाड़ेंगी।" इसी तरह के मूर्खता-पूर्ण विचारों ने स्त्री-जाति के लिये अवनति का मार्ग दिखाया है। "स्त्रियों में काम-शक्ति पुरुषों की अपेक्षा आठ-गुणा अधिक होती है"—इस लोकोक्ति से भी पुरुष लोग स्त्रियों से डरते-से रहते हैं। वे सोचते हैं कि बिना खिलाए-पिलाए और व्यायाम के ही जब स्त्री-जाति में काम-शक्ति पुरुषों से आठगुनी अधिक है, तो खिलाने-पिलाने और व्यायाम की आज्ञा देने पर तो न-जाने क्या ग़ज़ब हो जायगा?

हमने देखा है कि जाड़े के दिनों में पुरुष लोग शक्ति बढ़ानेवाले पाक और तरह-तरह की पुष्टई की चीज़ों का सेवन करते हैं, लेकिन स्त्रियों को ये चीज़ें नहीं दी जातीं। वैसे भी घर में प्रतिदिन पुरुष जितने पौष्टिक पदार्थ खाता है, उतने स्त्रियाँ नहीं खातीं। बचपन में माता-पिता लड़कों को जितनी पौष्टिक एवं बल बढ़ाने-वाली चीज़ें खिलाते हैं, उतनी लड़कियों को नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्यायाम तो स्त्री-समाज से बिल्कुल ही भाग गया है। लाख स्त्रियों में एक भी ऐसी नहीं निकलेगी, जो दंड-बैठक या मुद्गर आदि के व्यायाम करती हो। घरेलू व्यायाम जैसे पानी लाना, चक्की पीसना, धान कूटना, गीत गाना इत्यादि का भी दिन-दिन अभाव होता जा रहा है। अलाउद्दीन खिलजी से लड़नेवाली वीर-स्त्री पद्मावती, मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी, मेवाड़ के महाराणा समरसिंह की धर्मपत्नी कर्मदेवी, वीर नारी दुर्गावती, धाय पन्ना, संयुक्ता, ताराबाई, लक्ष्मीबाई आदि वीर-महिलाओं की वीर-गाथाएँ इतिहास में मिलती हैं। वे भी स्त्रियाँ ही थीं। आज भी मिस ताराबाई नाम की एक बज्रवती स्त्री भारत में मौजूद है, जो अपने शरीर के बल के कामों को दिखाकर संसार को अचंभे में डाल रही है। वह बता रही है कि अबला स्त्रियों में इतना महान् बल है कि दुनिया दाँतों-तले अँगुली दबा सकती है।

दूसरे देशों की स्त्रियाँ अब पुरुषों की तरह ही शरीर का श्रम करने लगी हैं। इँगलैंड की स्त्रियाँ अब अखाड़ों में कुश्तियाँ मारने लगी हैं। फ़ौजी तालीम पा रही हैं। मीलों समुद्र तैरती हैं। अफ़ग़ानिस्तान और तुर्किस्तान की स्त्रियाँ कुश्ती लड़ना सीख रही हैं। जापानी स्त्रियों ने तीर-कमान उठाए हैं, और धनुर्विद्या सीख रही हैं। इसी तरह अमेरिका की स्त्रियाँ अस्त्र-शस्त्रों के चलाने में होशियार हो रही हैं। यदि कोई ऐसा देश है, जिसमें रहनेवाली स्त्रियाँ कमज़ोर और गिरी हुई दशा में हैं, तो वह हमारा भारतवर्ष है। विदेशों की स्त्रियाँ मर्दों का काम करने में लगी हुई हैं, तो यहाँ के मर्द ज़नानेपन को अपनाने में लगे हैं। वहाँ की स्त्रियाँ अगर अखाड़ों में जातीं और धनुर्विद्या सीखती हैं, तो यहाँ के मर्द सिर में माँग-पट्टी निकालकर, कपाल पर एक लाल रंग की नज़ाकतदार बिंदी लगाकर, गलियों में घूमते हैं। जब हमारे भारत के पुरुषों की यह दशा है, तो फिर यहाँ की स्त्रियों की क्या होनी चाहिए, इसे विचारवान् मनुष्य सहज ही में समझ सकते हैं।

जबसे हमारी स्त्रियाँ विलासिनी बनीं या बना दी गईं, तभी से उनका पतन आरंभ हुआ, जो आज इस दशा को पहुँच गया है। स्त्रियाँ शरीर की मेहनत को बुरा समझने लगीं, उससे मुँह चुराने लगीं, इसीलिये उनकी कमज़ोरी की जड़ इतनी जम गई कि उनमें स्वयं अपनी रक्षा करने तक की शक्ति नहीं रही। स्त्रियों के मान-मर्यादा की रक्षा का भार पुरुषों पर निर्भर है, यही कारण है कि जहाँ-तहाँ स्त्रियों का अपमान होता है। दुष्ट लोग उन्हें कमज़ोर जानकर उनके साथ मन माना अत्याचार करते हैं। सतीत्व की रक्षा के लिये शरीर में बल होने की ज़रूरत है। पुराने इतिहास को उठाकर देखिए, तो आपको मालूम होगा, जिसमें बल था, वही अपने सत की रक्षा कर सकी थी। पांडवों की स्त्री द्रौपदी यदि बज्रवान् न होती, तो दुर्योधन आदि दुष्ट कौरवों के द्वारा भरी-सभा में साड़ी खींचकर नंगी करने का प्रण अवश्य सफल हो जाता। किंतु दुःशासन के समान महाबली योद्धा के हाथों को भी द्रौपदी के साथ छीना-झपटी में हार खानी पड़ी। उसने अपनी साड़ी को इतनी मज़बूती से पकड़ लिया कि दुःशासन-जैसे वीर को छुड़ा लेना कठिन था। इसी तरह अज्ञात-वास में जब कीचक ने सैरंध्री (द्रौपदी) पर बुरी दृष्टि डाली, तो वहाँ भी वह अपने ही पराक्रम से अपने सतीत्व की रक्षा कर सकी थी। जहाँ देखिए, वहाँ बल की ज़रूरत है।

आजकल देखा जा रहा है कि जहाँ तहाँ गुंडों द्वारा स्त्रियों पर अत्याचार हो रहे हैं, और वे सब निर्बलता के कारण चुपचाप सह लिए जाते हैं। यदि स्त्रियों में बल होता, तो फिर क्या मजाल थी कि कोई उनकी तरफ़ आँख उठाकर भी देख सकता। हमारे नेता स्त्रियों को शस्त्र रखने की सलाह देते हैं, ताकि ज़रूरत के वक़्त उनको चलाकर वे दुष्ट मनुष्यों से अपने धर्म की रक्षा कर सकें। स्त्रियाँ शस्त्र पकड़ने के लिये तैयार हैं। वे चाहते हैं कि वे छुरा अथवा पिस्तौल हमेशा अपने पास रक्खें, परंतु जब शरीर में बल ही न होगा, तो सब कुछ बेकार है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को अपनी रक्षा के लिये बल की अधिक आवश्यकता है, क्योंकि रूप-लावण्य के कारण दुष्टों की पाप-पूर्ण दृष्टि उनपर अधिक होती है। अपने सतीत्व की रक्षा करना प्रत्येक स्त्री का परम धर्म है। फिर स्त्रियाँ ज़ेवर पहनती हैं, इसलिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चोर-डाकुओं से उनकी रक्षा के लिये भी उनमें शारीरिक बल होने की महान् आवश्यकता है।

स्मरण रहे, "संसार निर्बलों के लिये नहीं है।" यहाँ तो वही रह सकता है जिसकी कलाई में बल होगा। हम देख रहे हैं कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस"-वाली कहावत ही चरितार्थ होती है। निर्बल को हमेशा सबल से दबकर रहना पड़ता है। इतिहास के पन्नों को लौट-पौट-कर देख जाइए, ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिल सकता, जहाँ निर्बल ने भी विजय-लक्ष्मी पाई हो। निर्बल शासक अधिक दिन नहीं टिक सकता। निर्बल को शासित, गुलाम तथा परतंत्र बनकर रहना पड़ता है। जो निर्बल है, वह अपनी मान-मर्यादा, धर्म-कर्म या अभिमान किसी की भी रक्षा नहीं कर सकता। इसी-लिये कवि ने कहा है—

सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय;
पवन जगावत आग को, दीपहि देत बुझाय।

निर्बल को सब दबा लेते हैं। यदि हममें अपनी रक्षा के लिये काफ़ी बल है, तो किसी की क्या मजाल जो हमारी ओर देख भी सके। हम निर्बल होने के कारण सब कुछ चुपचाप सह लेते हैं। मैं आँखों देखी एक घटना का यहाँ उल्लेख करता हूँ।

विगत वर्ष की बात है, एक मराठा स्त्री पूना से न-जाने कहाँ के लिये रवाना हुई। वह रेल में स्त्रियों के डिब्बे में बैठ गई। नागदा स्टेशन तक उस डब्बे से और स्त्रियाँ उतर गईं, और वह अकेली ही उसमें रह गई। एक गुंडा, जो पूना से ही उसके पीछे लगा था, उसे अकेली देखकर उसके डिब्बे में चढ़ गया। चलती ट्रेन में उसने उसके ज़ेवरों को छीनने के लिये छीना-झपटी शुरू की। स्त्री बलवान् थी, उसने उस दुष्ट को एक न चलने दी। तब उसने छुरा निकाला और उसकी एक छोटी उम्र की पुत्री को मार डालने की धमकी दी, किंतु वह वीर नारी नहीं घबराई। तब उस दुष्ट ने अपना छुरा पास की ख़ाली सीट पर रख दिया, और लड़की को उसकी गोदी से छीनकर खिड़की में से बाहर फेंक दिया। यह देखकर उस स्त्री को क्रोध आया, और उसने लपककर उसका छुरा उठा लिया, और उस पामर के पेट में भोंककर उसका काम तमाम कर दिया। इसके बाद ज़ंजीर खींचकर उसने ट्रेन को ठहराया, और सारा क़िस्सा कह सुनाया। उसकी लड़की भी उसे जीवित ही मिल गई।

आगे क्या हुआ, मालूम नहीं। किंतु उसके बल ने उसकी रक्षा की, और उसने लोगों में यश भी पाया। महापुरुषों का कथन है—

"नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः।"

अर्थात् जो बल से हीन हैं, उनको यह आत्मा नहीं मिलता। इसलिये बहनो, उठो, विचार करो। अपनी अधोगति पर पश्चात्ताप करो। मेहनत करो, मज़बूत बनो। स्वयं मज़बूत बनकर भारत में बलवान् संतान उत्पन्न करो। वेद कहता है—

"वीरसूर्देवृकामा सत्वयधिषी महि सुमनस्यमाना।"
(अथर्व)

अर्थात् यदि संतान उत्पन्न करो, तो वीर संतान हो। परंतु जब माता ही निर्बल होगी, तो संतान बलवान् कैसे हो सकती है। इसलिये स्त्रियों को चाहिए कि मेहनत से मुँह छिपाकर अपना नाश अपने हाथों न करें। स्त्रियों को व्यायाम-शील बनकर राष्ट्र की उन्नति में सहायक बनना चाहिए। अब हम दूसरे लेख में घरेलू व्यायाम पर प्रकाश डालेंगे।

गणेशदत्त शर्मा गौड 'इंद्र'

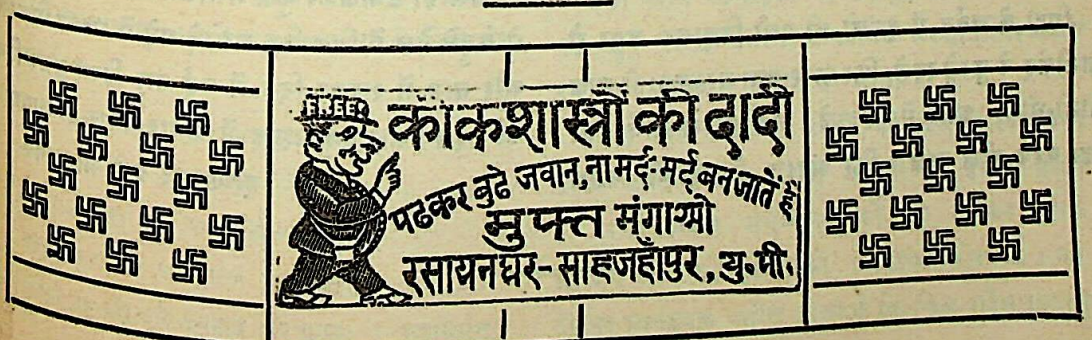

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खरबूज़े का अचार

कच्चे खरबूज़े छोटे-छोटे मँगाकर उनके ऊपर का हरा छिलका छील डाले और आम की तरह बीच से दो टुकड़े करके बीज सब निकाल डाले। फिर कुल मसाला पीसकर अंदाज़ का अमचुर मिलावे, फिर खरबूज़ों में भरकर दोनो टुकड़े आपस में मिलाकर डोरे से बाँध दे और घाम में रख दे। तीन दिन घाम में रखकर सिरका भर दे और ढककर रख दे। एक सप्ताह बाद काम में लावे।

ज़िमीकंद का अचार

मिट्टी के बर्तन में इमली की पत्ती बिछाकर ऊपर से ज़िमीकंद के टुकड़े रक्खे, फिर ऊपर पत्ती भरकर पानी डाल धीमी-धीमी आँच में उबाले। जब उबल जायँ, तो ठंडा करके छील डाले। फिर अंदाज़ से राई और नमक पीसकर मिलावे, और घाम में रख दे। तीन दिन के बाद मिट्टी के बर्तन में कुल मसाला पीसकर तेल में सानकर मिलावे और प्रति दिन घाम में रखकर हिला-डुला दिया करे। एक महीने के बाद काम में लावे।

टेंटी का अचार

टेंटी को लेकर उबाल डाले। उबल जाने पर एक टोकरी में लौट दे। जब उसका पानी सूख जाय, तब कुल मसाला भूनकर खरल में कूटकर अंदाज़ का नमक मिलाकर टेंटी में मिला दे। ऊपर से कड़ुआ तेल डालकर मिट्टी के बर्तन में भरकर रख दे। १५ दिन के बाद अचार खाने लायक़ हो जायगा।

लसोड़े का अचार

लसोड़ा उबालकर कुल मसाला बारीक पीसकर थोड़े से कड़ुवे तेल में मिलाकर, लसोड़े घड़े में भरकर मिला दें, और घाम में रखकर दिन में कई बार हिला-डुला दिया करे। इस प्रकार एक सप्ताह में अचार तैयार हो जायगा।

कृष्णवती देवी श्रीवास्तव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

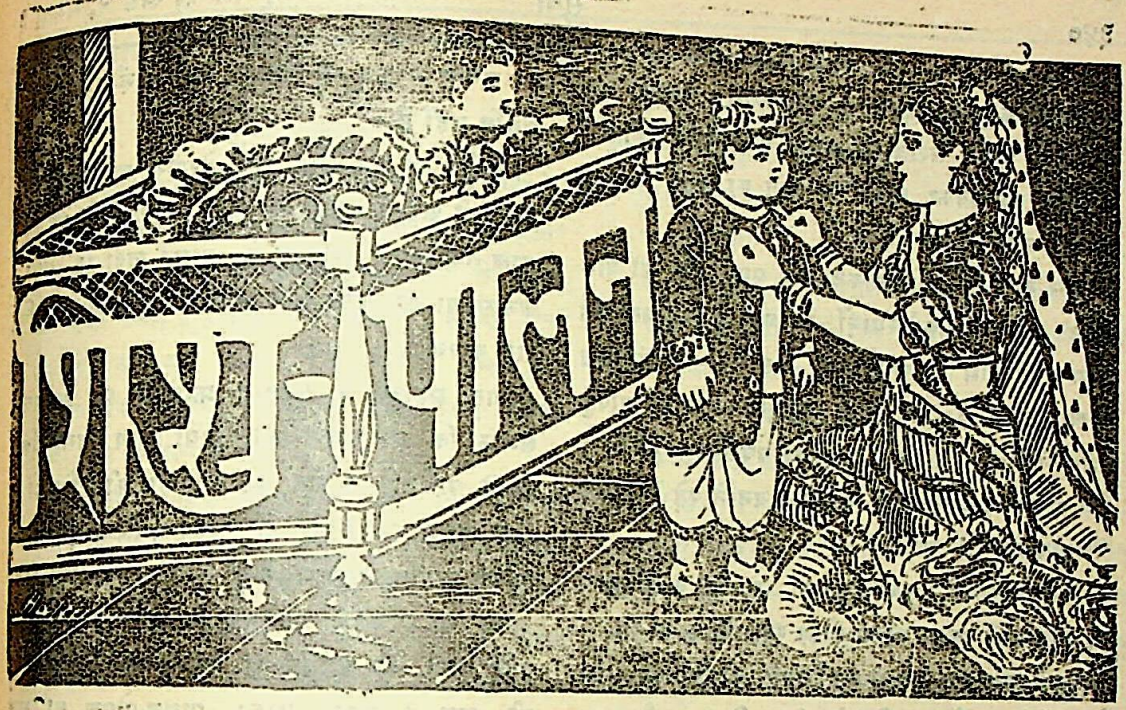

शिशु का महत्त्व

शु या पुत्र की प्राप्ति जितनी कठिन है, उसका पालन उससे भी बढ़कर कहीं कठिन एवं परिश्रम-साध्य है। रुपया कमाना उतना कठिन नहीं, जितना कि उसका संरक्षण करना। प्राचीन साहित्य में पुत्र-को स्वर्ग का देनेवाला कहा है। जिसके पुत्र नहीं, उसका किया हुआ दान, धर्म, यज्ञ, अध्ययन, तप, और जो भी अन्य पवित्र मोक्ष के देनेवाले कर्म हैं, वे सब निष्फल हैं। अतः मोक्ष एवं स्वर्ग के लिये पुत्र का होना आवश्यक है।

जिसकी गोद पुत्र-रत्न से ख़ाली है, उस दंपति के लिये स्वर्ग का द्वार भगवान् व्यास ने सर्वदा के लिये बंद कर दिया है *।

* दृष्टं दत्तमधीतं वा यज्ञाश्च बहुदक्षिणाः ;
सर्वं तदनपत्यस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।
तपोवाऽप्यथवो यज्ञो यच्चान्यत्पावनं महत् ;
तत्सर्वमपरं तात न संतत्या समं मतम् ।
संतानं हि परो धर्म एवमाह पितामहः । महाभारत

पुत्र (पुं नरकात् त्रायते इति पुत्रः) स्वर्ग को देता है, यह विश्वास चिरकाल से आज तक बना हुआ है। विशेषतः हिंदू-समाज में श्राद्ध के समय इसकी सत्यता आँखों से देखी जा सकती है।

यह विश्वास तो पारलौकिक है, परंतु इस लोक में पुत्र से स्वर्ग प्राप्त होता है, इस बात की प्रामाणिकता मध्यकालीन कविसमूह और आर्वाचीन पुरुष-रत्न करते हैं।

जिस प्रकार शिष्य से गुरु की धवल कीर्ति का विस्तार होता है, उसी प्रकार पुत्र से पिता-माता का नाम चमकता है। प्रसिद्ध कवि बाण अपने वंश एवं पिता को, भगवान् कृष्ण वसुदेव को, अर्जुन पांडु को, राम दशरथ को सदा के लिये अजर-अमर बना गए।

इसी कीर्ति का महत्त्व क्षत्रिय-पुत्र अर्जुन के लिये कहे हुए "संभावितस्य चाकीर्तिः मरणादतिरिच्यते" इस कृष्ण-वाक्य से प्रतीत हो जाता है।

जिस प्रकार हीरे या मोती को देखकर स्वभावतः उसके आदि-स्रोत का पता लगाने की इच्छा होती है, उसी प्रकार मनुष्य-रत्न को भी देखकर उसके आदिम स्रोत को जानने की आकांक्षा होती है। यह देखना आवश्यक प्रतीत होता है कि किस सौभाग्यवती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माता की कोख को इसने पवित्र किया। कारण, पुत्र क्या है ? निर्मल सरोवर में आत्मा का प्रतिबिंब ही है। प्रतिबिंब को देखकर वास्तविक वस्तु का पता लगाना आवश्यक प्रतीत होता है *।

इस बात की प्रामाणिकता को एक और भी बात सिद्ध करती है। कई स्थानों में प्रथा है कि पिता का नाम अपने नाम के आदि या अंत में सदा संबधित रक्खा जाता है। यह प्रथा आधुनिक नहीं, अपितु पाणिनि से भी पूर्व की (२ हज़ार वर्ष से भी पूर्व की) है। कारण, उसको इसके लिये सूत्र बनाने पड़े हैं। यथा "आत्रेय गार्ग्यः" आदि।

नेपोलियन को देखकर उसकी उत्पत्ति के इतिहास को जानने की इच्छा उत्पन्न होना स्वाभाविक था।

इसके अतिरिक्त पुत्र से जहाँ दंपति को वैयक्तिक लाभ है, वहाँ देश और जाति को भी अति लाभ है। इस लिये किसी ने कहा है कि शिशु जाति के पिता (Child is the father of nation) होते हैं।

जिस देश में जितने अधिक शिशु होंगे, वह देश उतना ही ऐश्वर्यशाली, शिक्षा में उन्नत, सौभाग्यवान् और शक्तिशाली होगा। कारण,

१. उस देश में अधिक सैन्य-शक्ति प्राप्त हो सकती है।

२. क्षेत्र के विस्तृत होने से उत्तम मस्तिष्क का होना संभव है।

३. जन-संख्या की वृद्धि के कारण वह देश व्यापार में सबसे बढ़ सकता है। वह देश संपत्तिशाली होगा। † इन वाक्यों की सत्यता इटली के राष्ट्रपति, वर्तमान काल के नेपोलियन, "मुसोलिनि" की घोषणा से प्रमाणित है। उसने अविवाहितों पर राजकीय कर लगाते हुए यह स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि "यदि मुझे आवश्यक प्रतीत हुआ कि इटली की जन-संख्या और अधिक बढ़ानी चाहिए, तो मैं उन दंपतियों पर भी राजकीय कर लगाने में कुछ भी विचार नहीं करूँगा जिनके कि संतति नहीं है।"

जर्मनी की जन-संख्या गत योरपीय महायुद्ध में मित्र देशों की अपेक्षा अधिक थी, यही कारण है कि वह चिर काल तक इतनी शक्तियों के सामने खड़ा रह सका। जन-संख्या की वृद्धि सैन्य-शक्ति की वृद्धि में ११ प्रतिशत कारण है।

गत महायुद्ध के पश्चात् फ्रांस ने यह आवश्यक समझा कि जन-संख्या को बढ़ाया जाय। इसके लिये उसने पारितोषिक देने की घोषणा की। विवाहों के लिये सुगमता कर दी। जो पुरुष निश्चित संख्या से अधिक संतान उत्पन्न करते थे, उनको पारितोषिक दिया जाता था। जिसके प्रलोभन से लोगों में जन-संख्या वृद्धि करने की अभिलाषा स्वाभाविक रूप में बढ़ती थी। राष्ट्र ने उनकी शिक्षा, पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लेना स्वीकार किया। मनुष्यों की एक बड़ी समस्या हल हो गई। राष्ट्र में सैन्य-वृद्धि हो गई।

शिशु या पुत्र उत्पन्न न हो, या उत्पन्न होकर नष्ट हो जाय, इस बात की एक ही क़ीमत है। रुपया या आवे या आकर निकल जाय, यह भी एक ही बात है। उद्देश्य की सिद्धि प्राप्त हो, इसके लिये दोनों का अस्तित्व (पालन-संरक्षण) आवश्यक है, जोकि उत्पत्ति से कहीं कठिन है।

यही कारण है कि आर्यों के धर्मशास्त्र में माता का स्थान हज़ारगुणा ऊँचा बतलाया गया है *। उसकी पूजा सबसे ऊँची रक्खी गई है। उसका आसन इतनी ऊँचाई पर रक्खा है, जहाँ कोई पहुँच नहीं सकता।

गर्भाधान के पश्चात् पिता का कार्य एक प्रकार से समाप्त हो जाता है। माता का कार्य बढ़ जाता है। उसे ९ मास तक पेट में रखकर गर्भ का पालन अपने शरीर के भाग से करना पड़ता है। उत्पत्ति के पश्चात् १२ मास अपने स्तन से उसका पोषण करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में शिशु का जीवन माता के ऊपर आश्रित है। शिशु की आयु प्रथम बारह मास माता की मानी गई है। अतः उसकी आयु माता के ऊपर निर्भर

---

* कामाग्निमथुनसंयोगे शुक्रशोणितयोगजः ;
गर्भः संजायते नार्यां स जातो बाल उच्यते ।
शार्ङ्गधर

† इसमें देश की स्वतंत्रता भी अवश्य अपेक्षित है। उदाहरण के लिये भारत और इटली की तुलना की जा सकती है।

* उपाध्यायान्दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता ;
पितृणां सहस्रं माता गौरवेणातिरिच्यते । मनु

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। दो शरीर और एक आत्मा का जीवन व्यतीत होता है।

बाल-मृत्यु

शिशु का बालक नाम या संज्ञा उस समय दी जाती है, जब वह जीवितावस्था में गर्भाशय से पृथक् हो जाता है, जिस समय उसमें रक्त-संचार स्वतंत्र रूप से होना आरंभ हो जाता है। अब यदि किसी भी कारण मृत्यु होती है, तो वह बाल-मृत्यु है। यह समय कुछ विचारक एक वर्ष तक मानते हैं, और दूसरे इसको तीन साल में समाप्त करते हैं *।

साधारणतः मृत्यु-संख्या प्रथम बारह महीनों में ही अधिक होती है। जिस प्रकार गर्भपात या गर्भ-स्राव प्रथम तीन मास में अधिक होते हैं, उसी प्रकार बाल-मृत्युएँ भी उत्पत्ति के प्रथम मास में सबसे अधिक होती हैं। इस मास में मृत्यु होने के मुख्य कारण ये हैं—

१. ६ मास, निश्चित समय से पूर्व प्रसव।
२. पैतृक विकार।
३. वंश-परंपरागत अभिरुचियाँ, मद्यपान।
४. प्रसव के समय अशुद्ध चिकित्सा, नाभिनाल का संस्करण, टैटिनस आदि।
५. उसके पोषण में अशुद्धता।
६. भोजन की त्रुटियाँ।

इनके अतिरिक्त, तथा एक मास की आयु के पश्चात्, मृत्यु होने के कारण—

७. अस्वच्छता।
८. दरिद्रता।
९. माता का अशिक्षिता और अनुभव-शून्य होना।
१०. श्वास-मार्ग के रोग यथा कास, निमोनिया, खपरा, चेचक, अनिसार आदि।

समय से पूर्व प्रसव

साधारणतः प्रसव का समय २८० दिन है। इससे पूर्व प्रसव (७ मास तक का भी) उचित साधनों के द्वारा जीवित रक्खा जा सकता है। परंतु जिस प्रकार अपक्वावस्था में तोड़ा या स्वयं गिरा फल स्वाद और रस में समय पर गिरे या तोड़े फल को नहीं पाता, उसी प्रकार २८० दिन से पूर्व उत्पन्न शिशु भी अपूर्ण, निर्बल और अस्वस्थ रहता है। वह समय पर उत्पन्न शिशु से सदा निर्बल रहता है। वह थोड़े भी परिवर्तन को सहन नहीं कर सकता। सब परिस्थितियाँ उस पर शीघ्र प्रभाव दिखाती हैं। वह सदा रुग्ण रहता है। निमोनिया और कास का सदा भय बना रहता है, और इनमें से कोई रोग आकर उसको माता की गोद से छीन लेता है।

समय से पूर्व प्रसव के कारणों में से १५ आना कारण माता से संबंधित हैं। यथा—(१) बाल-विवाह, (२) थोड़ी आयु में गर्भवती होना, (३) शीघ्र-शीघ्र गर्भवती होना, (४) वस्तिगह्वर का तंग होना, (५) नाज़ुक शरीर, (६) परिश्रम का अभाव, (७) वस्त्रों के दोष।

अत्रिदेव गुप्त

---

* बालक तीन प्रकार के हैं। क्षीर-भोजी, क्षीरान्न-भोजी और अन्न-भोजी। एक साल तक क्षीर-भोजी, दो साल तक क्षीरान्न-भोजी, एवं तीसरे वर्ष में अन्न-भोजी होते हैं। सुश्रुत

संभाषण

[लेखक, सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल भार्गव]

गुरुकुल-काँगड़ी की रजत-जयंती के अवसर पर जो प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन हुआ था, उसी अवसर पर उक्त भार्गवजी ने सभापति की हैसियत से यह भाषण दिया था। हिंदी-भाषा की उन्नति किस तरह हुई, इसका अच्छा विवेचन इसमें है। हिंदी-प्रेमियों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य ।), सजिल्द ॥)

संचालक, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुँहासे

छुहारे की गुठली सिरका में घिसकर मुँह पर लगाकर थोड़ी देर के बाद धोवें, तो मुँह की कीलें सब दूर हो जायँ।

सिर की पीड़ा

मजीठ की गाँठ सिर पर बाँधने से सिर की पीड़ा दूर होती है।

हिचकी

१. नारियल का छिलका हुक्के में रखकर पीने से हिचकी को आराम होता है।

२. नारियल पीसकर और शकर मिलाकर चटावे।

३. सेंधा नमक घी या पानी में पीसकर सूँघने से हिचकी जाती रहती है।

४. पुदीने को चीनी में मिलाकर चबाने से भी हिचकी बंद हो जाती है।

क़ै बंद करने के उपाय

१. सिरके की शिकंजबीन खिलाने से क़ै बंद हो जाती है।

२. छोटी इलायची, पुदीना और सौंफ़ पानी में उबालकर पिलाने से भी लाभ होता है।

३. राई और कपूर को पानी में पीसकर गरम करके कलेजे पर लगाने से क़ै बंद हो जाती है।

स्वप्न अधिक देखना

यदि किसी को स्वप्न बहुत दीखते हों, तो उसके सिरहाने थोड़ी-सी फिटकरी रख दें, तो स्वप्न दीखना बंद हो जायगा।

स्तन नरम न हों

गजफल, असगंद, बच इन सबको ख़ूब कूटकर फिर भैंस के मक्खन में मिलाकर, जो औरत अपनी छातियों पर लगावे, उसकी छातियाँ नरम न हों।

बंद पेशाब जारी करने के उपाय

१. सुपारी पानी में घिसकर पेड़ू पर चढ़ावे।

२. खाने का नमक बारीक पीसकर नाभि में रखकर बूँद-बूँद टपकाने से पेशाब उतर आता है।

३. चूहे की मेंगनी पानी में पीसकर लेप करे।

मूर्च्छा दूर करने के उपाय

१. तिल्ली के तेल में जायफल का सफ़ूफ़ गुनगुना मलने से मूर्च्छा दूर होती है।

२. ख़स, संदल, पीली मिट्टी, धनिया गुलाब-जल में पीसकर पोटली बनाकर सूँघाने से मूर्च्छा दूर होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चेहरा ख़ूबसूरत हो

संबल के काँटे दूध में पीसकर आठ दिन तक मुँह पर लगाकर धोए, तो चेहरा ख़ूबसूरत हो जाय।

बाल कभी न पैदा हों

बिच्छू को जलाकर उसकी ख़ाक जिस जगह पर बाल हों, लगावे, फिर उस जगह बाल कभी न पैदा होंगे।

निद्रा ख़ूब आवे

रात को सोते समय सरसों का ख़ालिस तेल मुँह पर मलने से निद्रा अच्छी आती है, और चेहरा गोरा व ख़ूबसूरत होता है।

बाल काले करना

माजूफल, पीपल, नील के पत्ते, सेंधा नमक काँजी में पीसकर बालों में लगाए, तो बाल काले हो जायँ।

बहरापन दूर हो

मूली का रस, कड़ुवा तैल और शहद बराबर-बराबर लेकर कान में डाले, तो बहरापन दूर हो।

कृष्णवती श्रीवास्तव

साहित्य-मणि-माला

हिंदी में अपने ढंग की सबसे सस्ती और उपयोगी पुस्तक-माला। इसमें कथा, कहानी, उपन्यास, जीवन-चरित्र, नाटक, इतिहास, साहित्य, विज्ञान, ललित कला आदि विषयों की सुंदर और सुपाठ्य पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। छपाई, सफ़ाई और सजावट सभी मनोरम हैं। ८० से २०० पृष्ठ तक की प्रत्येक सजिल्द पुस्तक का मूल्य दस आना। स्थायी ग्राहकों से पोस्टेज नहीं लिया जाता। बारह पुस्तकों के लिये ७॥) रु० पेशगी भेजकर स्थायी ग्राहक बनिए, एवं श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन में हमारा सहयोग कीजिए। प्रकाशित पुस्तकें—

१—झंकार—श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त की अपूर्व गीति-कविताओं का संग्रह।

२—अंकुर—श्रीकृष्णानंदजी गुप्त की तेरह सुंदर और सुपाठ्य कहानियों का संग्रह।

३—स्वप्नवासवदत्ता—महाकवि भास के सुप्रसिद्ध संस्कृत नाटक का हिंदी-रूपांतर। अनुवादक, श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त।

४—स्वास्थ्य-संलाप—सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई स्वास्थ्य-विज्ञान की अनुपम पुस्तक। पढ़ने में कथा-साहित्य का आनंद आता है। लेखक, श्रीकृष्णानंदजी गुप्त।

५—दूर्वा-दल—श्रीसियारामशरण गुप्त-लिखित सुप्रशंसित भाव-पूर्ण कविताओं का संग्रह।

६—शेलकश—रूस के विश्व-विख्यात उपन्यासकार गोर्की के उपन्यास का अनुवाद।

७—पुरातत्त्व-प्रसंग—लेखक, आचार्य श्रीमहावीरप्रसादजी द्विवेद। पुरातत्त्व-विषयक निबंध संग्रह।

और भी एक-से-एक सुंदर ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

हमारे यहाँ के अन्य ग्रंथ—मेघनाद-वध ३॥), गुरुकुल २), हिंदू १), १।), त्रिपथगा १॥), विकट भट =), चित्रांगदा ।=), हेमलता सत्ता ।–), रेणु ॥), विषाद ।–), आर्द्रा १), शक्ति ।), गीता-रहस्य २॥), वीरांगना १), भारत-भारती १), जयद्रथ-वध ।–)

पता—साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. उपन्यास-कहानी

गल्प-गुच्छ—मूल-लेखक, श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, श्रीधन्यकुमारजी जैन; प्रकाशक, 'विशाल-भारत'-कार्यालय, कलकत्ता ; मूल्य १।)

कवि-सम्राट् ठाकुर बाबा संसार के प्रसिद्ध गल्प-लेखकों में गिने जाते हैं। उनकी कहानियों का सभी देशों में बड़ा आदर किया जाता है। हिंदी में तो उनकी कहानियों को जहाँ-तहाँ लोग ले भागने की कोशिश किया करते हैं। रवि बाबू की कहानियों के एक एकत्र संग्रह की बड़ी आवश्यकता थी। कुछ दिन हुए इंडियन-प्रेस से इस प्रकार के दो संग्रह प्रकाशित भी हुए थे, किंतु उन दोनों संग्रहों में संग्रहकर्ता ने अपनी टाँग अड़ाने का प्रयत्न किया था। भाषा, भाव और कहानियों में संग्रह-कर्तृत्व की छाप बैठाकर उन महाशय ने रवि बाबू की मौलिकता में पैबंद लगाया था। यह संग्रह उस दोष से बचा हुआ है। यह उनकी सभी कहानियों का 'ऑथेराइज़्ड' अनुवाद है। धन्य-कुमारजी-जैसे वंग-भाषाभिज्ञ के हाथ में पड़कर रवि बाबू की भाषा का रूपांतर इतना सुंदर और ऐसा श्रुति-प्रिय हुआ है कि पुस्तक छोड़ने को जी नहीं चाहता। अँगरेज़ी, मूल तथा हिंदी में, तीन-तीन बार पढ़ी हुई कहानियाँ भी धन्यकुमारजी की भाषा के कारण [illegible] कर प्रतीत हुईं।

छपाई-सफ़ाई 'विशाल-भारत'-प्रेस-के अनुरूप [illegible] हुई है। ऐसी उत्तम और सुंदर पुस्तक के लिये [illegible] शकों को बधाई।

× × ×

प्राणघातक-माला—बँगला-उपन्यास का अनुवाद; अनुवादक, पं० कृष्णकांत मालवीय; प्रकाशक, अभ्युदय-प्रेस, प्रयाग ; मूल्य ॥=)

यह पुस्तक का द्वितीय संस्करण है। मालूम यही इस प्रकार की सड़ियल बंगाली पुस्तकों का लोग [illegible] अनुवाद किया करते हैं। वंग-भाषा के दो चार उत्तम से-उत्तम ग्रंथों का अनुवाद यदि हिंदी में प्रकाशित हो तो कोई हर्ज नहीं; किंतु जिस किसी निकम्मी पुस्तक को बंगाली लोग 'बेश आचे' कह दें, उसी के अनुवाद पर पिल पड़ना हमें तो नितांत उपहासास्पद प्रतीत होता है। हिंदी-लेखकों की अनुवाद की प्रवृत्ति इतनी बढ़ गई है कि उन्होंने अनुवाद की वेदी पर मौलिकता का बलिदान कर डाला है। अनूदित पुस्तकों की [illegible] मालाएँ, 'सीरीज़', तक लोगों ने निकाल डाली हैं। 'प्राणघातक-माला' बिल्कुल निकम्मी चीज़ है। इसमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा केवल मनोरंजन, वह भी बड़ा मरा हुआ-सा—केवल कालयापनोपयोगी—ही हो सकता है।

सुधींद्र वर्मा

× × ×

'मास्टर साहब'—लेखक, श्रीयुत ऋषभचरण; प्रकाशक, हिंदी-पुस्तक-कार्यालय, कूचा पातीराम, देहली; मूल्य २)

देहली में एक हिंदी-पुस्तक-कार्यालय है, वहाँ से 'विनोद-रत्न-माला' प्रकाशित होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी माला का छठा रत्न है। इस माला के अन्य रत्नों का अवलोकन करने का हमें अवसर नहीं मिला है। परंतु हम यह निस्संकोच कह सकते हैं कि यह छठा रत्न हिंदी-उपन्यास-संसार को अवश्य ही अपनी प्रभा से आलोकित करेगा। आजकल प्रायः उपन्यास-लेखकों की यह शैली हो गई है कि नायक का अंत अवश्य ही दुःखमय हो। उन लोगों का कथन है कि संसार में प्रायः सुख-दुःख दोनों ही समान रूप से वर्तमान हैं, बल्कि बहुत कुछ अंशों में सुख की अपेक्षा दुःख का ही प्राबल्य दृष्टिगोचर होता है। ऐसी स्थिति में सुखांत नाटक अथवा उपन्यास अस्वाभाविक हो जायगा। इसके विपरीत दुःखांत होने से वह यथार्थ संसार का चित्र अंकित करता है। संस्कृत-साहित्यज्ञों की धारणा इससे विपरीत थी। वे मुक्त-कंठ से उद्घोषित करते आए हैं कि काव्य का अंत सुखमय हो। मध्य में चाहे जितने सुख-दुःख आवें, परंतु अंत सुखद न होने से मर्यादा भंग हो जायगी। पाप का परिणाम अवश्य ही पतनकारक होगा, परंतु इसी तरह पुण्य का प्रभाव अभ्युदयकारक होना चाहिए। नायक को पुण्य-पथ का पथिक होना चाहिए, और फिर यदि उसे इस लोक में अपने सुकृत का फल शुभावह न मिलेगा, तो फिर पुण्य-कार्य की ओर प्रवृत्ति और पाप की ओर से निवृत्ति कैसे होगी। यहाँ हमें हर्ष है कि प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ने दिग्गज उपन्यासकारों की शैली का अंध-विश्वास के साथ नहीं अपनाया है, प्रत्युत अपने उपन्यास को सुखांत बनाकर एक अच्छा आदर्श पाठकों के समक्ष उपस्थित किया है। पुस्तक रोचक है। भाषा कहीं-कहीं शिथिल अवश्य है। लेखक उदीयमान हैं, हमें आशा है, शनैः-शनैः ये त्रुटियाँ दूर हो जायँगी और ऋषभचरणजी हिंदी-संसार में एक विशेष स्थान के अधिकारी होंगे।

आद्यादत्त ठाकुर

× × ×

२. इतिहास

अफ़ग़ानिस्थान—लेखक, पं० मातासेवक पाठक; प्रकाशक, श्रीउमादत्त शर्मा, हिंदी-साहित्य मंदिर, २/३ चितरंजन एवन्यू (साउथ), कलकत्ता; मूल्य २)

अफ़ग़ानिस्तान सैकड़ों वर्ष से भारतीय साम्राज्य की एक विकट समस्या रहा है। रूस, ईरान, चीन और हिंदोस्तान के सामांत पर स्थित होने के कारण वह अंतरराष्ट्रीय राजनीति की चालों का केंद्र बना रहता है। अतएव उसका इतिहास, साम्राज्य-लोलुप पश्चिम और आत्म-रक्षा-निरत पूर्व के पारस्परिक संघर्ष का एक मनोरंजक किंतु रोमांचकारी इतिहास है। रूक्ष्य कहलानेवाली जातियों के भीषण अत्याचारों की वह एक करुण कहानी है। मुल्लाओं और अपढ़ पठानों के इस देश में योरप के रुपए ने सदा से जो एक अनवरत गृह-वह्नि प्रज्वलित कर रक्खा है, वह सदियों से जलता रहने पर भी अब तक बुझने नहीं पाई। अमानुल्लाशाह का सुधार-प्रियता, देश-प्रेम तथा आत्मत्याग की बलि लेकर भी उसकी रक्तलोलुप ज्वाला-जिह्वाएँ अभी शांत नहीं हुई हैं। बचासक्का-जैसे ईंधन के पड़ जाने से वह और भी प्रज्वलित हो उठी है। मालूम होता है कि विश्वासघाती, झूठे नादिरख़ाँ के क्षय-क्लांत सड़े हाड़ों की उसे अभी और अपेक्षा है। किंतु तब भी यह निश्चित नहीं कि यह गृह-वह्नि शांत हो जायगी। जब तक अँगरेज़ हिंदोस्तान में और रूस साइबेरिया में डेरा डाले पड़ा है, तबतक अफ़ग़ानिस्तान एशिया का रण क्षेत्र अवश्य ही बना रहेगा। अतएव उसका इतिहास भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विद्यार्थियों के लिये एक महत्त्व का चीज़ रहेगा।

पं० मातासेवकजी ने इसी मनोरंजक इतिहास को लिपिबद्ध करने का प्रयत्न किया है। उस इतिहास के राजनीतिक पहलू पर अधिक दृष्टि न रखकर, घटनाओं के वैज्ञानिक विश्लेषण की ओर अधिक न जाकर, उन्होंने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केवल घटना-क्रम के वर्णन को ही अपना प्रधान लक्ष्य बनाया है, अतएव पुस्तक साधारण जनता के लिये बड़ी उपयोगी हो गई है। किंतु यदि अमानुल्ला के गद्दी पर बैठने से पूर्व के इतिहास पर वे कुछ अधिक लिखते तथा लॉर्ड लारेंस की 'सक्रिय अक्रियता', 'मास्टरली इन् एक्टिविटी'-नीति और लिटन की 'फ़ारवार्ड'-नीति की विवेचना के साथ ही ब्रिटिश-सरकार की इन्हीं दोनो नीतियों पर अवलंबित अफ़ग़ानिस्तान-संबंधी वैदेशिक नीति के विकास पर दो-एक अध्याय लिख डालते, तो पुस्तक राजनीति के विद्यार्थियों के लिये भी अत्यंत उपयोगी हो जाती। ख़ैर, इसके न होने से पुस्तक की उपयोगिता में कुछ भेद नहीं आता। प्रत्येक समाचारपत्र-पाठक को इस पुस्तक का अवश्य अध्ययन करना चाहिए। इससे उसे अफ़ग़ानिस्तान की वर्तमान परिस्थिति से संबंध रखनेवाले समाचारों को समझने में बड़ी सहायता मिलेगी। इसके अतिरिक्त अफ़ग़ानिस्तान के गृह-कलह का इतना सुंदर और सचित्र वर्णन भी उसे और कहीं नहीं मिलेगा।

छपाई चंतव्य, किंतु मूफ़रींडिंग भयानक। मूल्य कुछ अधिक। शायद २४ हाफ़टोन और एक रंगीन चित्र के कारण ही यह अधिक पूजा चढ़वाई गई है।

× × ×

जब अँगरेज़ नहीं आए थे—मूल-लेखक, पितामह दादाभाई नौरोजी; अनुवादक, श्रीशिवचरणलाल शर्मा; प्रकाशक, सस्ता-साहित्य-मंडल, अजमेर; मूल्य ।)

दादाभाई नौरोजी ने अँगरेज़ी में 'पावर्टी ऐंड अन् ब्रिटिश रूल इन् इंडिया'-नामक एक मार्के की किताब लिखी थी। इसके कारण इँगलैंड में हलचल मच गई थी। प्रस्तुत पुस्तक उसी के एक अंश का अनुवाद है। भारतीय इतिहास के अँगरेज़-लेखकों ने ब्रिटिश-साम्राज्य की प्रशंसा के गीत गा-गाकर हमारे हृदयों में जो एक अंधकार उत्पन्न कर रक्खा है, उससे बचने के लिये इस पुस्तक का पढ़ना ज़रूरी है। प्रत्येक हिंदू और मुसलमान बच्चे के हाथ में यह पुस्तक जानी चाहिए, जिससे उसे मालूम तो हो कि हमारे देश का इतिहास लिखते समय अँगरेज़ों ने किस प्रकार के झूठे और नीचता-पूर्ण आक्षेप द्वारा हमारे देश के वीरों की कीर्ति का लोप करना चाहा है। किस प्रकार उन्होंने हमें गुमराह करने का प्रयत्न किया है। देशभक्ति का पहला सबक़ हमें इसी पुस्तक से पढ़ना चाहिए। १०० पृष्ठ की इस उपयोगिनी पुस्तिका के दाम भी चार आने ही हैं। 'मंडल' की इस दाम-संबंधी ईमानदारी के लिये हम उसे हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

सुधींद्र वर्मा

× × ×

राजपूताने का इतिहास (तीसरा खंड)—ग्रंथकर्ता, महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर-हीराचंद ओझा; मुद्रक, वैदिक यंत्रालय, अजमेर; पृष्ठ-संख्या ४००; आकार बड़ा; मूल्य ६)

हिंदी के इतिहास-ज्ञाताओं में ओझाजी का स्थान सबसे ऊँचा समझा जाता है। आप राजपूताने के इतिहास के विशेषज्ञ समझे जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक उदयपुर के महाराना-घराने का इतिहास है। चित्रों के साथ इतिहास की मनोहर भाषा में भारतवर्ष का विगत गौरव पढ़ते ही बनता है। राजपूताने का इतिहास लिखकर आपने हिंदी की जो सेवा की है, उसका मूल्य तो आपको दिया ही नहीं जा सकता, भूरि-भूरि प्रशंसा भी आपके महान् श्रम के सामने लज्जित होती है। हमें विश्वास है, पुस्तकालयवाले तथा हिंदी के प्रेमी सज्जन इस ग्रंथ-रत्न की तरफ़ शीघ्र ही ध्यान देंगे।

"निराला"

× × ×

वेद-काल-निर्णय—मूल-लेखक, लोकमान्य श्रीबाल-गंगाधर तिलक; अनुवादक, पं० केदारनाथ साहित्य-भूषण; प्रकाशक, पं० रामचंद्र शर्मा एम्० ए०, संस्कृत-प्रोफ़ेसर डी० ए० वी० कॉलेज, जालंधर; मूल्य १)

सन् १८९३ ईसवी में लोकमान्य ने 'ओरायन'-नामक ग्रंथ की रचना की थी। ज्योतिष और गणित से वैदिक काल के निर्णय करने की पद्धति का उसमें आविष्कार करके उन्होंने संसार के ऐतिहासिकों को चकित कर दिया था। योरप में लोकमान्य के उस ग्रंथ की बड़ी प्रशंसा हुई थी। वैदिक काल को सदियों पीछे ले जाकर उन्होंने संकीर्ण-हृदय योरपियन विद्वानों का मुँह बंद कर दिया था। उनके उसी उत्कृष्ट ग्रंथ-रत्न का यह हिंदी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुवाद हमारे सामने है। हमने मूल को भी पढ़ा है और इसे भी। किंतु दोनों में काफ़ी भेद पाया है। सारानुवाद करने में शायद साहित्य-भूषणजी ने जल्दी की है। इसीलिये वे मौलिक पुस्तक की सौंदर्य-रक्षा नहीं कर सके।

प्रारंभ में विद्यावाचस्पति श्रीदेवराजजी की विस्तृत और विद्वत्ता-पूर्ण भूमिका है।

पुस्तक इतिहास-प्रेमियों के लिये अत्यंत उपयोगी तथा आवश्यक है। इस प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान और भी अधिक उत्साह के साथ हिंदी में प्रकाशित होना चाहिए।

पुस्तक मिलने का पता—

(१) मैनेजर, पंडित-प्रेस, संघी रोड, जयपुर सिटी

(२) प्रबंधकर्ता, गुरुकुल काँगड़ी, हरद्वार

(३) प्रबंधकर्ता, गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

× × ×

३. विविध

रेणु—गद्यात्मक कवित्व-मय सूक्ति-संग्रह; लेखक, श्रीरामचंद्र टंडन; प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी; मूल्य ।-)

सूक्तियाँ संसार के साहित्य का निचोड़ होती हैं। उनमें कवियों की दार्शनिकता, उनका भविष्य-द्रष्टात्व तथा उनका मानव-प्रकृति का ज्ञान छिपा रहता है। वे अपनी सुंदरता और सुगमता के कारण अनायास ही हृदय पर अंकित हो जाती हैं। अतएव उनका संग्रह, और फिर एक मौलिक रूप में, अवश्य ही आदर की वस्तु है। 'रेणु' के कुछ कण हृदयंगम करने योग्य हैं। जैसे—

'ख्याति कवि की भयभीत भार्या है, कल्पना उसकी दीर्घ सहचरी।'

'घृणा प्रेम का विकृत रूप है।'

'पुरुष के प्रेम में स्त्री की परिपूर्णता है, इसे प्रमाणित करने के लिये किसी-न-किसी समय प्रत्येक स्त्री किसी-न-किसी पुरुष को अपना हृदय दे डालती है।'

'हे दूसरों के उद्यानों को सुरम्य बनाने के प्रयत्न में रत मित्र, क्या तुम्हें इस बात की ख़बर है कि तुम्हारे खेतों में घास उग रही है?'

'वर्षा-काल की संध्या के आकाश में बिजली की चमक उस हँस पड़नेवाले बालक के दाँतों की चमक की भाँति है, जिसके गालों पर अभी आँसू की बूँदें सूखी नहीं हैं।'

'शंका के गर्भ से ज्ञान का जन्म होता है।' इत्यादि। पुस्तक संग्रह-योग्य है।

× × ×

स्वास्थ्य-संलाप—लेखक, श्रीकृष्णानंद गुप्त; प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी; सजिल्द प्रति का मूल्य ॥=)

प्रस्तुत पुस्तक साहित्य-मणि-माला की ४ थी मणि है। सुंदर छपाई, बढ़िया काग़ज़ और अच्छी जिल्द। भूमिका-लेखक हैं, प्रयाग-विश्वविद्यालय के रसायन-विभाग के अध्यक्ष, श्रीयुत डॉक्टर नीलरत्न धर (D. Sc., I. E. S., F. I. C.)। उनके शब्दों में ही पुस्तक की आवश्यकता और उपादेयता अच्छी प्रकार बताई जा सकती है। आप कहते हैं—

"इस स्वास्थ्य-संलाप-नामक छोटी-सी पुस्तिका में लेखक ने बालकों के लिये स्वास्थ्य-संबंधी बातों का उल्लेख किया है। इस विषय की उपयोगिता के विषय में कुछ भी कहना अनावश्यक होगा। भारतवर्ष की जनता इस उपयोगी एवं महत्त्व-पूर्ण विषय की ओर बहुत ही कम ध्यान देती है, जिसका परिणाम इतना भयंकर हो रहा है कि मृत्यु-संख्या बढ़ती जा रही और जीवन-आयु उत्तरोत्तर कम हो रही है। इस देश में जितने बालक अपनी छोटी-सी आयु में मृत्यु के ग्रास हो जाते हैं, उस संख्या को देखकर किस व्यक्ति का हृदय न दहल जायगा। पर इस सबका कारण क्या हैं? केवल यही कि हम या तो ठीक-ठीक स्वास्थ्य-संबंधी नियमों को नहीं जानते या जानकर भी उनका उपयोग नहीं करते।

"स्वास्थ्य-संबंधी वैज्ञानिक आविष्कारों को पाश्चात्य देशों ने अपनाया है, जिसका परिणाम यह हुआ है कि योरप के देशों में टाइफ़ायड, चेचक आदि बीमारियाँ बहुत ही कम पाई जाती हैं। उन देशों के लोग स्वच्छता से रहते हैं, उनके घर, ग्राम और नगरों में इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पर हमारे यहाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस बात का सर्वथा अभाव है। क्या यह खेद की बात नहीं है कि हमारे आचार-व्यवहार और रहन-सहन सब स्वास्थ्य के नियमों के प्रतिकूल जा रहे हैं। यदि हम इस ओर ध्यान देना सीख लें, तो हमारे बहुत-से रोग सहज ही दूर हो सकते हैं।"

हम प्रोफ़ेसर साहब की सम्मति से अक्षरशः सहमत हैं, किंतु हमारा विश्वास है कि जनता इस विषय में जल्दी शिक्षित नहीं की जा सकती। सदियों की भयंकर रूढ़ियों में पला हुआ अशिक्षित भारतीय समाज स्वास्थ्य-संबंधी नियमों का पालन स्वेच्छा से और शीघ्र नहीं कर सकता। और फिर साधारण जनता की शिक्षा के लिये साधन भी नहीं हैं। सरकार की सहायता और सहयोग के बिना यह कार्य एकदम असंभव है। शिक्षा का प्रारंभ भी स्कूलों और पाठशालाओं में पढ़नेवाले सर्वसाधारण बालकों से ही होना चाहिए, क्योंकि बचपन से पड़ी हुई आदतें मुश्किल से दूर हुआ करती हैं। यदि प्रारंभ से ही स्वास्थ्यकर आदतें पड़ेंगी, तो उनका परिणाम भी अवश्य लाभप्रद होगा। परंतु हिंदी और उर्दू में ऐसी उपयोगी पुस्तकों का अभी तक एकांत अभाव है। इसका कारण लेखकों की उदासीनता नहीं अपितु उनकी दरिद्रता है। स्वास्थ्य-संबंधी पुस्तकों की खपत न होने के कारण न तो प्रकाशक इस प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित करते हैं और न लेखक ही लिखते हैं। यदि सरकार कुछ सहायता करने के लिये सामने आवे, तो शीघ्र ही उत्तमोत्तम पुस्तकों से बाज़ार भरा जा सकता है। धन की सहायता न भी देकर यदि सरकार इस विषय की पुस्तकों को कोर्स में ले ले, तो भी बहुत कुछ काम निकल सकता है। स्कूलों में इनकी खपत होने से वे सस्ते दामों और बड़ी संख्या में प्रकाशित हो सकती हैं। हमारी समझ में तो व्यक्तिगत और पंडित स्वास्थ्य का विषय प्रत्येक विद्यालय में आवश्यक विषय बना देना चाहिए। राष्ट्र की उन्नति के लिये यह अत्यंत आवश्यक है।

'स्वास्थ्य-संलाप' देश की इस बड़ी भारी कमी को किसी अंश में पूर्ण करने के लिये ही लिखी गई है। इसमें बड़ी ही सरल और कम पढ़े-लिखे लोगों के भी समझ में आनेवाली भाषा में 'सोना' 'खाना-पीना' 'पोशाक' 'नहाना' 'जल' 'वायु' 'प्रकाश' 'व्यायाम' आदि जीवन की आवश्यक और स्वास्थ्यकर बातों पर, बातचीत के ढंग से, प्रकाश डाला गया है। पुस्तक इतनी मनोरंजक है कि उसमें उपन्यास का-सा मज़ा आता है। हमने कुछ बालकों को यह पुस्तक दी थी। उन्होंने इसे आदि से अंत तक केवल १॥ दिन में ही समाप्त कर डाला और लगातार प्रश्नों की झड़ी-सी लगा दी है। प्रति दिन अब वे एक-न-एक स्वास्थ्य-संबंधी विषय पर बातचीत किया करते हैं। इसी से पुस्तक की बालकोपयोगिता का पता लग सकता है।

हमें पूर्ण आशा है कि समस्त भारत के हिंदी-भाषा-भाषी प्रांतों के शिक्षा-विभागों में 'स्वास्थ्य-संलाप' आदर पाएगा और शीघ्र ही ६ से १८ वर्ष तक की आयुवाले बच्चों के दर्जों में पाठ्य पुस्तक के रूप में अवश्य ही निश्चित किया जायगा। बच्चों के लिये, हमारी समझ में तो, इस विषय पर इतनी सुंदर पुस्तक अब तक लिखी ही नहीं गई। कृष्णानंदजी इस उत्तम पुस्तक के लिये देश के स्वस्थ और रोगी बच्चों के निस हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

× × ×

सूर्य-रश्मि-चिकित्सा—लेखक, श्रीबाँकेबिहारीलाल वैद्य; प्रकाशक, धन्वंतरि कार्यालय, विजयगढ़। मूल्य ॥)

हिंदू-देवताओं में सूर्य का बड़ा स्थान है। वे प्रातर्नमस्कार्य समझे जाते हैं। किंतु उनकी इस प्रतिष्ठा का पंडितों के पास उनके देवत्व के सिवाय और कोई कारण नहीं है। वैदिक ऋषियों ने सबसे पहले उनके इस देवत्व का विश्लेषण किया था। उनकी प्राणदा-शक्ति के कारण ही उन्होंने उन्हें देवता कहा था। उन्हें मालूम था कि सूर्य का प्रकाश विविध रंगों की रश्मियों के सम्मिश्रण का फल है। इसीलिये उन्हें वे सप्ताश्व-रथ पर बैठा हुआ बतलाते थे। सात रंगों की दृश्य किरणों से सूर्य-प्रकाश की उत्पत्ति के कारण ही उनका रथ सप्ताश्व कहलाया। इन सातों दृश्य-किरणों के अतिरिक्त अन्य अदृश्य किरणें भी उस प्रकाश में सम्मिलित हैं। इन सब किरणों द्वारा चिकित्सा की एक प्रणाली आविष्कृत हुई है, जो 'क्रोनो-पैथी' अथवा 'सूर्य-रश्मि-चिकित्सा' कहाती है। आधुनिक चिकित्सा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रणाली पर इस प्रणाली ने अभी हाल में ही एक महान् विजय पाई है। सम्राट् पंचम जॉर्ज को मृत्यु के मुख से निकालकर सूर्य-रश्मियों ने अपनी अनंत प्राणदा-शक्ति का परिचय दिया है। अन्य औषधियों ने जहाँ एकदम जवाब दे दिया था, वहाँ 'रे-थिरेपी' ने ही उन्हें बचाया था।

प्रस्तुत पुस्तक उसी चिकित्सा पर कुछ प्रकाश डालती है। अभी इसमें काफ़ी संशोधन और परिवर्द्धन की आवश्यकता है। फिर भी अन्य पुस्तकों के अभाव में हम इसका स्वागत करते हैं। आशा है, इस विषय को जानने के इच्छुक लोगों में इसका आदर होगा।

× × ×

काश्मीर—लेखक, श्रीश्रीगोपालजी नेवटिया; प्रकाशक, हिंदी-मंदिर, प्रयाग; मूल्य ५)

सुंदर आकर्षक जिल्द, उत्तम छपाई और मनोमोहक सवा सौ के लगभग रंगीन और सादे चित्रों से सुशोभित यह मोटी पोथी कुछ धनिक महाशयों की काश्मीर-यात्रा का विवरण है। पुस्तक में एकदम व्यक्तित्व की छाप नहीं है। उसमें धनिकों के ऐश-आराम के दृश्यों का भी अभाव-सा ही है। यही आनंद की बात है। हमारे देश के नौजवान धनिक लोग काश्मीर का आनंद नहीं, बल्कि काश्मीरिनों का आनंद लूटने के लिये ही उस भू-स्वर्ग में जाया करते हैं। उनकी कृपा से आजकल वहाँ गाँव-गाँव में, घर-घर में, भयानक गुप्त बीमारियाँ फैल गई हैं। अब उसका आभ्यंतर रूप नरक से भी अधिक बीभत्स और कृमिमय है। हाँ, बाह्य-रूप अब भी वैसा ही बना हुआ है। संतोष की बात है कि एक धनिक-समाज तो ऐसा निकला कि जिसका यात्रा-विवरण पवित्र और आनंद-दायक कहा जा सका।

'काश्मीर' गाइड-बुक नहीं है। वह है श्री श्रीगोपालजी के हार्दिक भावों, अनुभवों और कार्यों का एक उत्तम आइना। उसमें कहीं-कहीं जो कवित्व के स्रोत हैं, वे उनके हृदय में छिपी हुई प्रतिभा का परिचय देते हैं। सौंदर्य को सुंदरता प्रदान करने में उन्होंने कहीं-कहीं ख़ूब कुशलता दिखाई है। आदि से अंत तक पुस्तक मनोरंजक और शिक्षाप्रद सामग्री से भरी पड़ी है। हमारी सम्मति में तो प्रत्येक काश्मीर-यात्री को इसकी एक प्रति अवश्य पास रखनी चाहिए। सुंदर चित्रों ने तो पुस्तक के सौंदर्य को चौगुना कर दिया है। उस पर छपाई ने और भी कमाल कर दिया है।

सुधींद्र वर्मा

अग्निसंजीवन

स्वादिष्ठ

मंदाग्नि, अजीर्ण, क़ब्ज़, अफ़रा, दाह इत्यादि पेट-संबंधी सब रोगों की उत्पत्ति, कारण तथा रोगों से बचने के उपाय और स्वास्थ्य-संबंधी अनेक नियमों को जानने के लिये हिंदी और अँगरेज़ी में लिखी

"स्वास्थ्य-संदेश"-नाम की पुस्तक मुफ़्त मँगाइए

पता—अग्नि-संजीवन-कार्यालय, बंबई नं० २

एजेंट— लखनऊ हिमालियन स्टोर अमीनाबाद-पार्क | बनारस जगन्नाथदास-बलभद्रदास चौक | इलाहाबाद दुबे ब्रदर्स चौक | कानपुर रामगुलाम शिवगुलाम नयागंज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुभीते के लिये प्रतिमास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में नीचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) 'साहित्य' (श्रीयुत रवींद्रनाथ ठाकुर)—अनुवादक, पं० वंशीधर विद्यालंकार ; ॥।)

(२) 'मूसरचंद' (७-८ वर्ष की अवस्था के बालकों के लिये)—चित्रकार, पं० गणेशराम मिश्र; मूल्य =)

(३) 'हिंदी-बँगला-शिक्षा'—लेखक, पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी; मूल्य ।॥)

(४) 'प्रेम-चतुर्थी'—लेखक, श्रीप्रेमचंदजी ; मूल्य ॥-)

(५) 'अफ़ग़ानिस्थान' (इतिहास)—लेखक, मातासेवक पाठक; मूल्य २)

(६) 'काने की करतूत' (बालोपयोगी)—लेखक, वैजनाथ केडिया; मूल्य ।=)

(७) 'तीन तिकट महा विकट' (६-१० वर्ष के बालकों के लिये)—लेखक, पं० गणेशरामजी मिश्र ; मूल्य ।)

(८) 'नंदू का झोपड़ा' (७-८ वर्ष के बालकों के लिये)—लेखक, श्रीयुत आत्मारामजी मिश्र ; मूल्य ।)

(९) 'कंकाल' (सामाजिक उपन्यास)—लेखक, जयशंकर 'प्रसाद' ; मूल्य ।)

(१०) 'गृह-चिकित्सा'—लेखक, डॉ० भोलानाथ टंडन एम्० डी० एस्० ; मूल्य ३)

(११) 'हैज़ा या कालरा'—लेखक, भोलानाथ टंडन एम्० डी० एस्० ; मूल्य १॥)

(१२) 'पुरुषेंद्रिय के रोग'—लेखक, भोलानाथ टंडन एम्० डी० एस्० ; मूल्य १॥)

(१३) 'रेल से माल भेजने का क़ायदा' (बाबा गुड्स)—लेखक, र०न० कोल ; मूल्य ३)

(१४) 'हिंदी-शार्गैनन'—डॉ० भोलानाथ टंडन एम्० डी० एस्० ; मूल्य १॥)

(१५) 'कोशोत्सव-स्मारक-संग्रह'—संपादक, महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर-हीराचंद ओझा; मूल्य २)

(१६) 'पुरावृत्त'—लेखक, महावीरप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ॥।=)

(१७) 'कसौटी'—लेखक, श्रीविश्वनाथसिंह शर्मा। मूल्य २)

(१८) 'भारत-महिला-चित्रावली'—चित्रों का संग्रह; मूल्य २॥।)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. लखनऊ-विश्वविद्यालय और हिंदी

युक्त-प्रांत हिंदी-भाषा का केंद्र है। हिंदी ही इस प्रांत की प्रधान भाषा है। गाँवों, देहातों और क़स्बों में रहनेवाली अधिकांश जनता, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान, सब हिंदी को ही अपनी मातृ-भाषा समझती है। इसीलिये इस प्रांत के सभी विश्वविद्यालयों ने हिंदी को अपने पाठ्य-क्रम में स्थान दिया है। "हाई स्कूल और इंटरमिडियट बोर्ड" ने तो उसे शिक्षा का माध्यम तक मान लिया है। न केवल इतना ही, भारत की भावी राष्ट्र-भाषा हिंदी के महत्त्व को अनुभव करके देश के सभी विश्वविद्यालयों में—कलकत्ता, मद्रास, पंजाब, नागपुर तथा पटना-विश्वविद्यालयों में—हिंदी को ऊँचे-से-ऊँचा स्थान दिया गया है। इन विश्व-विद्यालयों में एम्० ए०-क्लास तक हिंदी पढ़ाई जाती है। किंतु अवध के उन्हीं ताल्लुक़ेदारों के—जिनके पूर्वज स्वयं हिंदी-भाषा के प्रसिद्ध कवि थे—रुपए से चलनेवाली लखनऊ-युनिवर्सिटी में हिंदी की अत्यंत उपेक्षा की जा रही है। यहाँ के हिंदी-विभाग में केवल एक ही प्रोफ़ेसर है, उन्हें ही बी० ए० के दोनो क्लास पढ़ाना तथा रिसर्च-क्लास का कार्य करना पड़ता है। एम्० ए०-क्लास में हिंदी के लिये कोई स्थान ही नहीं रक्खा गया है। इस विश्व-विद्यालय से हिंदी लेकर बी० ए० पास करनेवाले बीसों विद्यार्थियों को एम्० ए० में हिंदी पढ़ने की अपनी प्रबल इच्छा को दबाकर अन्य विषयों का अध्ययन करना पड़ता है। जो हिंदी के विशेष प्रेमी होते हैं, उन्हें किसी दूसरे विश्वविद्यालय में जाकर हिंदी में एम्० ए० लेना पड़ता है। किंतु वर्तमान 'रेज़िडेंशियल'-प्रणाली के कारण दूसरे विश्वविद्यालयों में उन्हें अपने लिये अनुकूल वायुमंडल उत्पन्न करने में बड़ी कठिनाइयाँ अनुभव होती हैं। लखनऊ-विश्वविद्यालय में सफलता प्राप्त कर लेने पर भी उन्हें दूसरे विश्वविद्यालयों के अध्यापकों के हृदय पर अधिकार करने के लिये घोर प्रयत्न करना पड़ता है।

यदि लखनऊ-विश्वविद्यालय में हिंदी का एम्० ए० क्लास खुल जाय, तो यहाँ अनेक विद्यार्थियों की बहुत-सी कठिनाइयाँ दूर हो जायँ। बीसों हिंदी-प्रेमी नवयुवकों को अन्य विषयों की पुस्तकों से जूझती न लड़ना पड़े और बहुतेरों को इलाहाबाद और बनारस की गलियों में न भटकना पड़े।

किंतु यह हो कैसे? जब तक लखनऊ-विश्वविद्यालय झूठी अँगरेज़ियत का हिमायती है, जब तक यहाँ विलायत की साधारण डिग्रियों का अपने देश की उत्तम-से-उत्तम डिग्रियों की अपेक्षा अधिक आदर है, जब तक यहाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिखावटी लंबी डींगें हाँकनेवाले लोगों का दब्दबा है, तब तक इस प्रकार के किसी भी सुधार की आशा करना व्यर्थ है। जब-जब हिंदी और उर्दू में एम्० ए०-क्लास खोलने का प्रश्न उठाया गया, तब-तब विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने रुपए की कमी का रोना रोकर अपने आँसुओं की प्रबल धार में उसे बहा डाला है। किंतु वायसराय महोदय के स्वागत में लगाने के लिये, नई सड़कें बनवाने के लिये अथवा ऐसी ही अन्य अनावश्यक बातों में ख़र्च करने के लिये, न-मालूम उसके पास कहाँ से क़ारूँ का ख़ज़ाना आ जाता है। हमारी समझ में तो इस प्रकार के अनर्गल धन-व्यय की अपेक्षा उस धन का शिक्षा की उन्नति में व्यय होना अधिक अच्छा है। हिंदी में एम्० ए०-क्लास खोलने के लिये कोई लाख-दो-लाख रुपए की तो ज़रूरत होगी नहीं, केवल कुछ हज़ार रुपयों की ही प्रतिवर्ष ज़रूरत हो सकती है। हाँ, अगर युनिवर्सिटी हिंदी पढ़ाने के लिये किसी लंदन या पेरिस से किसी और ही विषय में डी० एस्-सी०, डी० लिट् या पी-एच्० डी० पास करके आए हुए किसी नए बाँगड़ू को हज़ार-बारह सौ रुपया देकर नौकर रखने के अपने पुराने ढर्रे को दोहरावे, तो बात दूसरी है। परंतु हमारी समझ में तो वर्तमान स्टाफ़ में एक जूनियर लेक्चरार के बढ़ा देने से ही फ़िलहाल काफ़ी काम निकल सकता है। एम्० ए०-क्लास को पढ़ाने के लिये नए अध्यापकों की भर्ती की ज़रूरत हम ज़रा भी नहीं समझते, क्योंकि जब वर्तमान स्टाफ़ रिसर्च-क्लास का काम सुचारुरूप से चला रहा है, तब उससे एम्० ए०-क्लास का काम तो और भी अच्छी तरह चलाया जा सकता है। प्रयाग-विश्वविद्यालय में भी तो इसी प्रकार एक लेक्चरार और दो जूनियर लेक्चरारों के द्वारा काम चल रहा है। अतएव 'धन' की कमीवाली ब्रिटिश-सरकार की पेटेंट कहावत की लँगड़ी बहानेबाज़ी पेश करना हम नितांत अनुचित समझते हैं। हिंदी-जैसे सर्वप्रिय विषय को विश्वविद्यालय के एम्० ए० के पाठ्यक्रम में शीघ्र-से-शीघ्र स्थान मिलना चाहिए। उसके बिना प्रतिवर्ष १५ या २० विद्यार्थियों को बड़ी हानि उठानी पड़ रही है। जहाँ विश्वविद्यालय अरबी के २ या ३ विद्यार्थियों के लिये स्टाफ़ रखकर मुफ़्त में अपना ख़र्च बढ़ाए हुए है, वहाँ क्यों वह इन १५-२० विद्यार्थियों के लिये कुछ ख़र्च नहीं कर सकता?

हमें विश्वास है कि नए वायस-चांसलर ए० जगदीश नारायण जी—जोकि अपनी निष्पक्ष नीति तथा ईमानदारी के लिये इतने प्रसिद्ध हैं—हिंदी के प्रति इस अन्याय को कभी सहन न कर सकेंगे, और शीघ्र ही विश्वविद्यालय के इस कलंक को दूर करने का प्रयत्न करेंगे।

× × ×

२. प्रसिद्ध भारतीय नाट्याचार्य उदयशंकर

योरप के पत्रों में आजकल उदयशंकर-नामक एक भारतीय नाट्याचार्य की बड़ी प्रसिद्धि हो रही है। कहते हैं कि उन्होंने भारतीय नृत्य तथा नाट्य-कला की ख़ूबियों को दिखा-दिखाकर योरपियन जनता के हृदय पर उसका प्रभाव जमा दिया है। अब वहाँ भारतीय नृत्य कला कला की एक ऊँची वस्तु समझी जाने लगी है। योरप के थिएटरों और नृत्यालयों में श्री उदयशंकर के अभिनयों, नृत्त और नृत्यों का आजकल धूम मची हुई है। उन्होंने केवल आधुनिक भारतीय नृत्य-कला में भावों और अंग-परिचालन की ख़ूबियों द्वारा एक नया जीवन ही नहीं फूँक दिया है, अपितु प्राचीन भारत के नाट्य शास्त्र और भारतीय मूर्तियों के अध्ययन से भरत-मुनि की मृतप्राय नाट्य-कला को भी पुनरुज्जीवित कर दिया है। उन्होंने तांडव, रास आदि जिन नृत्य-विशेषों का नामावशेष हो गया था, उन्हें फिर से रंगमंच पर प्रत्यक्ष कर दिखाया है। इसके अतिरिक्त अब तक नर्तकियों द्वारा दिखाए जाने के कारण जो भारतीय नृत्य अनादर की दृष्टि से देखा जाता था, उसमें कला के सूक्ष्म किंतु महान् गुणों का समावेश करके उन्होंने उस समस्त योरप के उच्च श्रेणी के कलाविदों के आदर का पात्र बना दिया है। उनके इन्हीं गुणों पर मुग्ध होकर आज सारा योरप उनके अभिनयों का आमंत्रण कर रहा है। आज तक जो भारतीय नृत्य-कला योरप में नहीं पनप सकी, अब दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति कर रही है। योरप के बड़े-बड़े थिएटरों के सैकड़ों आमंत्रण आजकल उदयशंकरजी के पास आ रहे हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीउदयशंकर कोई साधारण नर्तक नहीं हैं। वे एक उच्च घराने के सुपुत्र और विलायत की शिक्षा पाए हुए ब्राह्मण युवक हैं। उनके पिता पंडित श्यामशंकरजी पहले उदयपुर में रहते थे, जहाँ जन्म होने के कारण उदयशंकर को यह नाम दिया गया था। उदयशंकर के बाल्य-काल में ही उनके पिता महाराज राना झालावाड़ के यहाँ वैदेशिक मंत्री के पद पर नियुक्त हो चुके थे, अतः उन्होंने अपने पुत्र की शिक्षा का खूब ही उत्तम प्रबंध किया था। इस कार्य में उन्हें महाराज राना साहब से भी खूब सहायता मिली थी। स्वयं पं० श्यामशंकरजी एक प्रसिद्ध कलाविद् हैं। उनके लिखे हुए अभिनय लंदन के थिएटर-घरों में खेले जा चुके हैं। अतएव भारतीय कलाओं के विषय में उन्होंने अपने पुत्र उदयशंकर को बहुत कुछ सिखा दिया। सन् १९२० में महाराज राना साहब ने उदयशंकर को लंदन के रायल कॉलेज ऑफ़् आर्ट्स में भर्ती करा दिया। यहाँ रहकर उदयशंकर ने न केवल संगीत में ही पारंगमता प्राप्त की, अपितु चित्र-कला और अभिनय में भी वे अत्यंत कुशल हो गए। १९२३ ई० में उन्होंने चित्र-कला में रायल कॉलेज का डिप्लोमा भी प्राप्त कर लिया।

इस समय तक यह निश्चित नहीं किया जा सका था कि पढ़ने-लिखने के बाद उदयशंकर के जीवन का क्या मार्ग होगा। अतएव इस विषय पर खूब विचार किया जाने लगा। भाग्य-वश इसी समय अन्ना पाव्लोवा नाम्नी संसार-प्रसिद्ध अभिनेत्री के अनुरोध करने से उदयशंकर ने नृत्य को ही जीवन के उद्देश्य-रूप में अंगीकार किया। मैडम पाव्लोवा के साथ उदयशंकर ने लंदन और अमेरिका में भारतीय नृत्य-कला का प्रदर्शन किया। इन दोनो का राधाकृष्ण का अभिनय तो पश्चिम के सभी देशों में प्रसिद्ध हो उठा। उदयशंकर को नृत्य-कला के कारण मैडम पाव्लोवा के इस राधाकृष्ण-अभिनय की जगह-जगह प्रसिद्धि हो गई।

अमेरिका से वापस आकर सन् १९२४ में उदयशंकर ने पाव्लोवा का साथ छोड़ दिया, और पेरिस में रहकर वे केवल भारतीय नृत्यों का स्वतंत्ररूप से अभिनय करने लगे। किंतु योरप में केवल भारतीय नृत्यों का सफल होना—वह भी तब तक, जब तक कि कोई संसार-प्रसिद्ध नर्तकी उसमें सम्मिलित न हो—बड़ा ही कठिन था। चार वर्ष तक लगातार परिश्रम करते रहकर, अनेक विघ्न-बाधाओं का सामना करते हुए, उदयशंकर ने भारतीय नृत्य-कला की शान क़ायम रक्खी। उन्होंने उसे जन-साधारण के अश्लील मनोरंजन का विषय नहीं बनाया। वे सदा इसी प्रयत्न में रहे कि उनके द्वारा भारतीय नृत्य-कला का योरप के पढ़े-लिखे लोगों में आदर हो। अंततोगत्वा उन्हें इसमें सफलता मिली, और पिछले वर्ष से सिमकी-नामक नर्तकी के साथ उन्होंने भारतीय नृत्यों का जो अभिनय किया, वही उनकी प्रसिद्धि को द्विगुणित करता गया। उन्होंने पेरिस में तो अपने अभिनय दिखलाए ही, जिनेवा, वियना, बुडापेस्ट, बर्लिन, ट्यूरिन-जैसे कला-मर्मज्ञों के केंद्रों में भी उनका प्रदर्शन कर अनंत ख्याति लाभ की। वहाँ के समाचारपत्रों ने उनकी कला की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। हमारी भगवान् से प्रार्थना है कि वे उदयशंकर को चिरजीवी करें, जिसमें भारत-मा का नाम वह और भी उज्ज्वल कर सकें।

× × ×

३. हिंदी की अभिनय-कुशलता

भाषा की प्रसिद्धि बहुत कुछ नाटकों से भी होती है। नाटक सामयिक समाज के यथार्थ चित्र हैं। उनसे समाज की शिक्षा, सभ्यता, आचार-विचार, वस्त्राभूषण आदि तमाम बातों का पता मिल जाता है। मनोरंजन के साथ ही उनके द्वारा जो उपदेश दिए जा सकते हैं, वे शायद और किसी भी तरह से नहीं। आज जिन सुधारों के लिये अस्वाभाविक रीति से गला फाड़-फाड़कर सुधारक लोग विकट चीत्कार करते रहते हैं, वही नाटकों द्वारा आसानी से किए जा सकते हैं। नाटक के पात्रों की विवेचना में भाषा को सार्वभौमिक विस्तार प्राप्त होता है। कारण, हरएक पात्र की भाषा का उसमें विवेचन रहता है। भाषा का सुधार भी स्टेज पर ही होता है। मुहावरों का प्रयोग, उनका चमत्कार, उनकी स्वच्छता तथा सादगी के वहीं प्रमाण मिलते हैं। वहीं उनके रूप बनते-बिगड़ते रहते हैं। नवीन परिच्छदों के आविष्कार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी अभिनय-शालाओं में ही हुआ करते हैं। संगीत की मिश्रित तथा मौलिक रचना का चमत्कार प्रत्यक्ष करने के लिये रंगमंच ही सर्वोत्तम साधन है। सारांश यह कि एक ही जगह कला तथा कौशल के मनोहर चित्र, प्रकृति तथा समय के सुहावने दृश्य देखने को मिलते हैं। जिस जाति के नाटक उन्नत अवस्था को प्राप्त नहीं, वह जाति अपने जातीय अभिमान के बाहरी चिह्न नहीं रखती। योरप के स्टेजों की विचित्रता, नाटकों का अपूर्व रचना-कौशल, परिच्छदों की सहस्रों कोटियाँ, वाद्य-यंत्रों के अनेकानेक आविष्कार, नृत्य के सार्वदेशिक रूप, संगीत की मिश्रित अगणित धाराएँ, आचार-विचारों के साथ भाषा तथा भावों की नवीन ज्योतियाँ पश्चिम की स्वतंत्रता के प्रवाह को दिन-दिन प्रखर करती जा रही हैं। उनके यहाँ नाटकों तथा उपन्यासों में भाषा के भेद बदलते ही रहते हैं। संसार की सभी जातियों का उनके पात्र अनुकरण करने की चेष्टाएँ करते हैं। यहाँ के नाटक भी वहाँ खेले जाते हैं। पर हमारे दैन्य का ठिकाना नहीं। पारसी-कंपनियों का अनुकरण ही हिंदी के नाटकों का जीवन है। उन्हीं की बज़ा-क़ता हिंदी में नक़ल की जाती है, जिससे प्रतिदिन अस्वाभाविकता का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। कोई ऐसा पथ-प्रदर्शक भी नहीं, जो इस तमाम कूड़े को प्रवाह की नवीन नाली में बहा दे। अभी उस दिन तक हिंदी के नाटकों में गानों की ही प्रधानता थी। जिस समय अन्य प्रांतीय नाटक उत्कर्ष की अंतिम सीमा तक पहुँचे हुए हों, उस समय हिंदी के नाटकों में गाने की प्रधानता कितनी लज्जा की बात है! शिक्षा के अभाव ने हिंदी-संसार को चारो तरफ़ से मेट दिया है। मारवाड़ी सज्जन, जिन्हें नाटक आदि देखने का शौक़ है, ज़रा देर के लिये भी इस कमी का अनुभव नहीं करते। उन्हें रुपए झोंककर मनो-रंजन मोल लेने से काम। फिर वह चाहे जिसका हो, और चाहे जिस कोटि का हो। वे केवल अर्थोपार्जन करना जानते हैं, पर उसका सदुपयोग उन्हें बिल्कुल नहीं आता। कलकत्ते-जैसे विशाल नगर में मारवाड़ियों के असंख्य प्रासाद हैं। लाखों रुपए वे लोग अन्यान्य कामों के लिये ख़र्च करते हैं। पर वे लोग एक अपना रंगमंच नहीं तैयार करा सकते। हरद्वार में अपने पिता के नाम तीन धर्मशालाएँ, जहाँ चूहे भर रहे और गीदड़ मौज करते हैं, बनवा दे सकते हैं, इससे उनकी सद्गति हो जाती है; पर वे अपनी भाषा और अपने साहित्य की रक्षा करना नहीं जानते। रंगमंचों में चरित्र के कलुषित होने की, पूर्व-पुरुषों के बदनाम जाने की तथा समाज के अधःपतन की जो भावना इन अशिक्षित धन-कुबेरों में भरी हुई है, उससे और कोई सुधार नहीं हो पाता। राजे-महाराजे भी अनेक हैं। पर जिन्हें कुछ नवीनता से प्रेम है, वे बेचारे नेता बनने के लिये ही मर रहे हैं। जैसे तमाम इन बलीकों के बल पर ही वे स्वतंत्र हो जायँगे। स्वतंत्रता के जो आलंबन हैं, उसके लिये जो मार्जन ज़रूरी है, समाज तथा भाषा और भावों में जो संस्कार आवश्यक है, इन सबको वे एक ही छलाँग में पार कर जाते हैं। इसके बिना ही कल्पना के राज्य में वे सुख-पूर्वक स्वतंत्र विचरण करते हैं। देश की मूर्खमंडली से वाहवाही प्राप्त कर लेना कोई बड़ी बात नहीं। थोड़ा-सा कुछ करने से ही वीरत्व का डंका बजने लगता है। पर ये सब बातें एक दिन में तो होती नहीं। इनके लिये अपार धैर्य आवश्यक है। रंगमंच बनवाना, पश्चिमी कला सीखना, भाषा में मार्जन लाना, नए-नए मिश्रित स्वरों का आविष्कार करना, अभिनेत्रियों की शिक्षा का प्रबंध करना, तमाम संसार की नाटक-कला का ज्ञान रखना कोई एक दिन का काम तो है नहीं, न इसमें बहुत जल्द प्रसिद्धि ही मिल सकती है। मुमकिन है, नहीं, निश्चय है, पहले गालियाँ ही मिलेंगी। इन सब अड़चनों को पारकर साहित्य तथा समाज का यथार्थ उपकार करे, वैसा आदमी भी तो होना चाहिए। घंटे-भर के लेक्चर से स्वतंत्रता प्राप्त कर लेनेवालों में इतना धैर्य कहाँ। हाँ, बुंदेलखंड के एक राजा साहब ने एक बार हिम्मत की थी। उन्होंने शायद दो लाख की लागत से (कलकत्ते का) कोरिंथियन स्टेज ख़रीद भी लिया था। पर यह हिंदी की हित-चिंतना से प्रेरित होकर नहीं, कहते हैं, इसमें कोई गुप्त रहस्य है। ऐसे गुप्त रहस्यों में राजे-महाराजे करोड़ों रुपए लगा सकते हैं। पर इन रहस्यों के सुलझाने और मज़ा लेने से कुछ हिंदी का उपकार तो होता नहीं, न नाटक-कला की ही श्रीवृद्धि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती है। ये सब रहस्य जिस तरह उठते हैं, वैसे ही विलीन हो जाते हैं। मारवाड़ी लोगों में भी धन-व्यय के ऐसे ही मार्ग हैं। ऐसी दशा में क्या आशा की जाय कि हिंदी के नाट्य-संसार का मोह अचिर भविष्य में दूर होगा। काशी की नाटक-मंडली ही ग़नीमत है। भला नक़्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ कौन सुनती रहती है। नाटकों की यह अवस्था बहुत कुछ दर्शकों की रुचि के कारण भी गिरी हुई है। हम कह चुके हैं, स्वतंत्र नाटक समाज की रुचि के नियामक होते हैं; पर पारसी कंपनियों के नाटक साधारण जनों की रुचि के अनुगामी। वहाँ वही ख़याल रहता है, जिससे पैसे मिलें, मौक़े-बेमौक़े कृष्णजी के दर्शन कराए जायँ, ताकि भक्तराज मारवाड़ीगणों की बाछें खिल जायँ। वास्तव में वत्सगणों की बाछें खिल जाती हैं; पर हिंदी की तथा नाटक-कला की जैसी दुर्दशा होती है, वह कलेजा मलकर रह जानेवाले कलाविद् ही समझते हैं। अशिक्षा-काल में बुरा-भला संगीत अच्छा लगता है, और शिक्षित दशा में भाषण-कौशल। संगीत भी, पर कम। पारसी-कंपनियों के जो भारत-प्रसिद्ध नाटककारगण हैं, वे स्टेज के विज्ञापनों में ही प्रसिद्ध हैं। हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं में बहुत कहीं पैठ उनकी नहीं। कारण, साधारण जनता की भूमि में चापलूसी तो चलती नहीं, वहाँ सच्चा विवेचन ही होता है। ये लोग वहाँ नहीं जाते। ये इतना जानते हैं कि अब लोग कुछ समझने लगे हैं। पर समझवाले लोगों के पास उपाय नहीं। अतः किसी स्टेशन पर "राधेश्याम की रामायण" सुनकर ख़रीदनेवालों का मुँह ताककर बेचारे चुप रह जाते हैं। अच्छे नाटकों के लिखने की दूसरे लोगों में रुचि भी कैसे हो? कोई समझे भी, क़द्र करे, तब न? उनके लिये स्टेज करना संभव है नहीं, शहर और देहात के लोगों तक उनका प्रसार हो नहीं सकता। ५ साल में १००० प्रतियों के बिकने-न-बिकने का भय प्रकाशक को भी है। अतएव हिंदी में नाटकों की उपज समाज की ही तरफ़ से रुकी हुई है। कलकत्ता-बंबई-जैसे शहरों में नाटकों के द्वारा रुचि परिवर्तित करने की चेष्टाएँ की जातीं, तो अब तक रास्ता बहुत कुछ साफ़ हो जाता। परंतु इसके लिये दिल्ली अभी बहुत दूर है। यह भी दृढ़ सत्य है कि समाज तथा जाति के उन्नयन के लिये नाट्य-संसार के मार्जन तथा संस्कार अत्यंत आवश्यक हैं। यह कार्य भी हमारे नवयुवकों की ओर अपलक दृष्टि से ताक रहा है। जिन्हें समाज से परित्यक्त होने का भय नहीं, जो हिंदी के उच्चारण की शुद्धता बेहोश हालत में भी रख सकते हैं, वेश्याओं के साथ पार्ट खेलने में जिन्हें शर्म नहीं, जो कला के प्राण हैं, वे ही इस अपावन संसार की शुद्धि कर सकते हैं, तभी उत्तमोत्तम नाटकों की रचना भी होगी। अभी तो 'परिषद्', 'समिति' आदि नाटक की लाश ही ढो रही हैं। पारसी-कंपनी के अनुकरण से नाटक और नाट्य-कला का उद्धार न होगा।

× × ×

४. डॉ० केशवदेवजी की पुण्य-स्मृति में

राजपुर, के स्वास्थ्य-सदन के संस्थापक तथा प्रसिद्ध समाज-सुधारक मित्रवर डॉक्टर केशवदेवजी शास्त्री से सुधा के पाठक भली भाँति परिचित हैं। उनकी असामयिक मृत्यु का शोक-जनक समाचार भी, कुछ दिन हुए, सुधा में प्रकाशित हुआ था। अभी कुछ मास हुए, जब महात्मा गांधी देहरादून गए थे, तब उन्होंने वहाँ डॉक्टर शास्त्री का चित्रोद्घाटन किया था। ठाकुर मानजीतसिंहजी राठौर ने उस समय दिए हुए महात्माजी तथा अन्य सज्जनों के भाषणों का सारांश हमारे पास भेजा है। वह नीचे उद्धृत किया जाता है—

"महाशय, अभी हाल ही में महात्माजी देहरादून पधारे थे और उन्होंने यहाँ अनेक सार्वजनिक कार्य किए, बहुत-सी सार्वजनिक सभाओं और कान्फ्रेंसों में व्याख्यान देने तथा श्रद्धानंद-अनाथालय की आधारशिला स्थापित करने के अतिरिक्त उन्होंने राजपुर-शक्ति-आश्रम के विशाल भवन में स्वर्गवासी शास्त्रीजी के चित्र का भी उद्घाटन किया था। महात्मा गांधी गत १७ ऑक्टोबर को राजपुर पधारे थे। उसी दिन उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से शक्ति-आश्रम का निरीक्षण किया। शक्ति-आश्रम में श्रीमती सुवीरादेवी (डॉ० केशवदेवजी की पत्नी) तथा उनकी बहन श्रीमती सुमित्रादेवी ने माताओं द्वारा महात्माजी की अभ्यर्थना की थी।

"इसी अवसर पर गुरुकुल-विश्वविद्यालय के आचार्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा वाइस चांसलर, प्रिंसिपल रामदेवजी ने स्वर्गगत नेता की सेवाओं और त्यागों का विशद वर्णन किया। उन्होंने बतलाया कि डॉक्टर केशवदेवजी के ही अथक परिश्रम से भारतवर्ष में युवक-संघों (Youth Leagues) की स्थापना प्रारंभ हुई थी। इस सेवा के फल-स्वरूप वह अखिल भारतीय युवक-कांग्रेस के मदरासवाले अधिवेशन के सभापति बनाए गए थे। प्रोफ़ेसर साहब ने कहा—तीस वर्ष से भी अधिक हुए, जब से मैं डॉक्टर शास्त्री से परिचित हूँ। वह केवल आर्य-समाज-संबंधी कार्यों में ही मेरे सहकारी न थे, अपितु बचपन से एक साथ पढ़ने के कारण मेरे भाई से भी बढ़कर थे। डॉक्टर शास्त्री स्वयं अपने बाहुबल और परिश्रम से इतने ऊँचे उठ सके थे।

स्वर्गीय डॉ० केशवदेवजी शास्त्री

"सन् १९१३ में वह मेनियापोलिस-नामक अमेरिका की मिनेसोटा-रियासत के एक नगर में होनेवाले 'अंतरराष्ट्रीय पवित्रता-संघ' में भारत के प्रतिनिधि की हैसियत से आमंत्रित किए गए थे। इसके अतिरिक्त पनामा-पैसिफ़िक इंटरनेशनल एक्सपोज़िशन-नामक संस्था की देख-रेख में हुई बहुत-सी कांग्रेसों और कान्वेंशनों में उन्होंने भाग लिया था। ये सभाएँ सन् १९१५ में सानफ्रांसिस्को नगर में हुई थीं। वहीं डॉक्टर शास्त्री अंतरजातीय धार्मिक सिद्धांतों की कांग्रेस के सभापति भी निर्वाचित हुए थे।

"अपनी अमेरिका-यात्रा में डॉक्टर शास्त्री ने वहाँ की सब रियासतों में भारत-संबंधी धार्मिक, सामाजिक तथा आवश्यक राजनीतिक विषयों पर व्याख्यान दिए थे, और बहुत दिनों तक उन्होंने वंदनीय, स्वर्गवासी लाला लाजपतरायजी के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर होमरूल-लीग की स्थापना के लिये कठिन परिश्रम किया था। अंत में न्यूयार्क-नगर में होमरूल-लीग की स्थापना हुई, और डॉक्टर शास्त्री उसके मंत्री बनाए गए।

"डॉक्टर साहब की योग्य अमेरिकन पत्नी श्रीमती सुवीरादेवी ने सच्ची आर्यदेवी के समान, डॉक्टर साहब के अभिलषित और प्रिय उद्देश्य मातृभूमि-उद्धार तथा आर्य-धर्म की सेवा के लिये अपने आपको निछावर कर दिया है।

"अंत में प्रोफ़ेसर साहब ने कहा—डॉक्टर शास्त्री-जैसे जनता के महान् सेवक का चित्र महात्माजी-जैसे भारत के सर्वमान्य नेता द्वारा उद्घाटित होना ही उचित था। अतएव मैं महात्माजी से प्रार्थना करता हूँ कि वह उद्घाटन-क्रिया प्रारंभ करें।

"चित्र का उद्घाटन करते समय महात्माजी ने शोक प्रकट किया कि ऐसा उपयोगी जीवन भाग्य के शिकंजे में पड़कर असमय में ही समाप्त हो गया। डॉक्टर शास्त्री जैसे आशावादियों की भारत को इस समय अत्यंत आवश्यकता थी। उन्होंने कहा—कुछ समय हुआ, जब मेरा स्वास्थ्य ठीक न था, शास्त्रीजी ने बड़े प्रेम से मुझे राजपुर-स्वास्थ्य-सदन में जल-वायु-परिवर्तन और विश्राम के लिये आमंत्रित किया था। किंतु उस समय मैं उस निमंत्रण को स्वीकार न कर सका। अतएव उनकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वास्थ्य-सदन में आज डॉक्टर शास्त्री के चित्र का उद्घाटन करते हुए मुझे शोक-मिश्रित हर्ष हो रहा है। मुझे आशा है, परम दयालु भगवान् श्रीमती शास्त्री को उद्देश्य-सिद्धि के लिये बल देंगे, जिससे वह और उनकी बहन शास्त्रीजी के प्रिय उद्देश्यों की पूर्ति कर सकें।

"ठाकुर मानजीतसिंह राठौर ने महात्माजी को धन्यवाद दिया, और उनसे प्रार्थना की कि वह शास्त्रीजी की स्मृति में एक बोधि-वृक्ष की स्थापना कर दें। महात्माजी ने बड़ी प्रसन्नता से यह कार्य किया।

"इस अवसर पर पंडित जवाहरलालजी नेहरू, श्रीमती गांधी बा, श्रीमती मीराबाई, बनारस के बाबू श्रीप्रकाशजी, श्रीयुत कृपलानी तथा भारत-पितामह श्रीदादाभाई नौरोजी की प्रपौत्री कुमारी कक्षान भी उपस्थित थीं।"

× × ×

५. मंगलाप्रसाद-पारितोषिक

इस वर्ष का पारितोषिक, 'मौर्य-साम्राज्य का इतिहास'-नामक सर्वोत्तम ऐतिहासिक ग्रंथ लिखने के

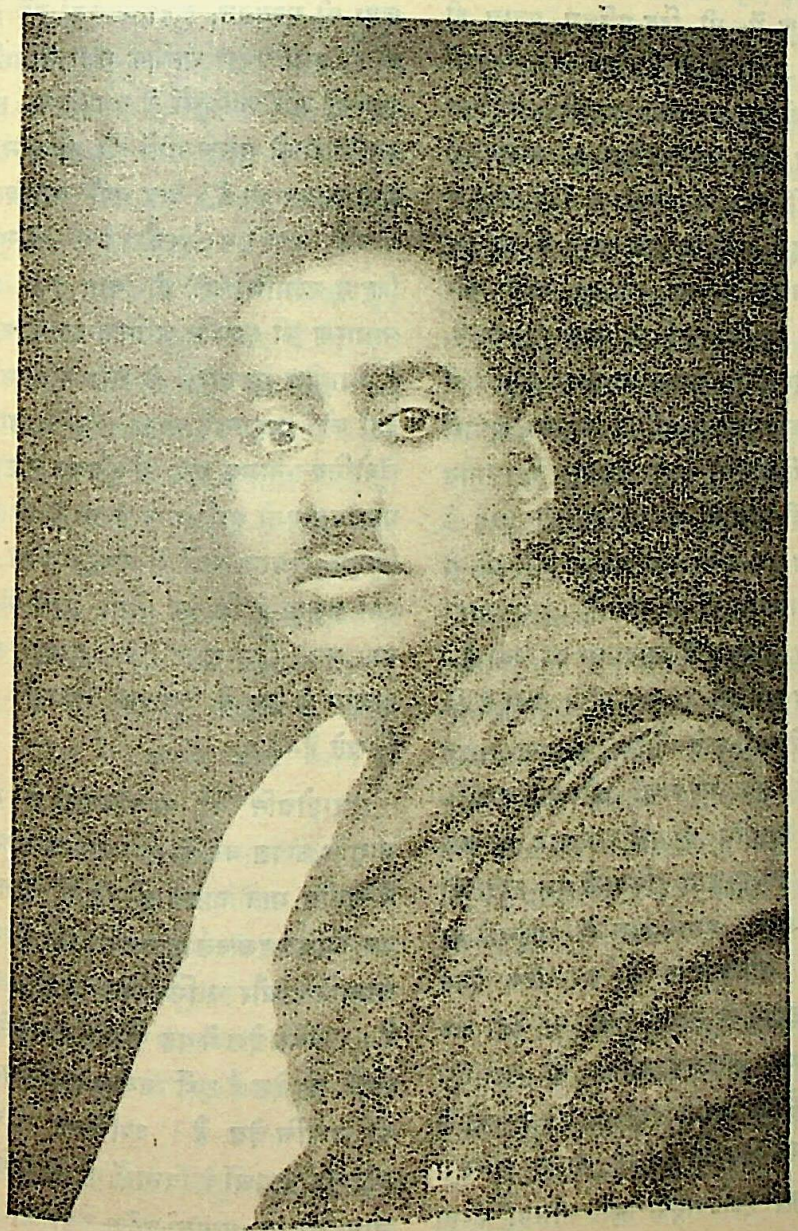

श्रीसत्यकेतु विद्यालंकार

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc. No.....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारण, 'सुधा' के परिचित लेखक और हमारे सुहृद् श्री प्रोफ़ेसर सत्यकेतु विद्यालंकार, गुरुकुल-काँगड़ी को दिया गया है। गुरुकुल की इस दूसरी विजय के लिये बधाई तथा विद्यालंकारजी को हार्दिक साधुवाद।

× × ×

६. जाग्रत इस्लाम

आए दिन हमारे दुर्भाग्य से, देश में हिंदू-मुस्लिम दंगों के समाचार सुनने को मिला करते हैं। राष्ट्रीय भारत के एकीकरण में भी हिंदू-मुस्लिम सवाल ही सबसे पहले विघ्न डाला करता है। जब तक हिंदुओं और मुसलमानों की इस गृह-कलह का कोई निश्चित उपाय नहीं मालूम होता, तब तक देश का भविष्य भी कभी उज्ज्वल नहीं कहा जा सकता। हिंदोस्तान के बड़े-बड़े दिमाग़ इस प्रश्न को हल करने में जुटे हुए हैं, बरसों से पारस्परिक वैमनस्य को दूर करने और हिंदू-मुस्लिम ऐक्य स्थापित करने के प्रयत्न हो रहे हैं, किंतु अभी तक कोई संतोष-जनक सफलता प्राप्त नहीं हो सकी है। इसका कारण है धार्मिक कट्टरता, सुधारों का विरोध और दक़ियानूसी लकीर पीटना। मुसलमान और हिंदू, दोनो ही प्राचीन रूढ़ियों के बुरी तरह से ग़ुलाम हैं। अतएव एक दूसरे को संशय की दृष्टि से देखना उनका स्वभाव-सा ही हो गया है। मुसलमानों में तो यह अवगुण ज़रूरत से ज़्यादा घर कर चुका है। उनकी कट्टरता इस भयानक हद तक पहुँच चुकी है कि उसके कारण बेचारे सीधे-सादे पैग़ंबर मुहम्मद साहब का सीधा-सा धर्म अब मुल्लाओं और शौक़तअली-मुहम्मदअली-जैसे स्वार्थांध कठमुल्लों के हाथ की कठ-पुतली हो रहा है। जो इस्लाम दुनिया में एक ख़ुदा की सल्तनत क़ायम करने, मनुष्य-मात्र में भाईचारे का प्रचार करने और मानव-जाति में पारस्परिक ऐक्य स्थापित करने के उद्देश्य से उत्पन्न हुआ था, वही अब संसार के लिये एक भयानक व्याधि हो उठा है। मुल्लाओं की कृपा से वह अब रूढ़ियों के ऐसे शिकंजे में कस गया है कि उससे निकलने के लिये जाग्रत मुस्लिम युवक-शक्ति को सैकड़ों कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। हिंदोस्तान में अभी इस जागृति के चिह्न भी नहीं दिखाई पड़ते, किंतु टर्की और ईरान में रूढ़ि-निगड़ित इस इस्लाम के विरुद्ध एक भयंकर विद्रोह उठ खड़ा हुआ है। जाग्रत राष्ट्रीय भावों ने मुल्लाओं और हदीसों के जाल में पड़े हुए पवित्र इस्लाम के भक्तों को, युवक मुसलमानों को, एकदम पागल-सा बना दिया है। भयानक राजनीतिक क्रांति के साथ ही-साथ उन्होंने धार्मिक और सामाजिक क्रांति का भी सूत्रपात कर डाला है। जिस प्रकार राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने ख़लीफ़ा सुल्तान और शाहंशाह का नाश करके एक ख़ुदा की सल्तनत, ख़ुदा के बंदों की सल्तनत, क़ायम की है, उसी प्रकार धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में भी मुल्लाओं और क़ाज़ियों के दबदबे का समूलोच्छेद करके उन्होंने सच्चे मुसलमानों की, मुस्लिम जन-समाज की, सत्ता क़ायम की है। अब वहाँ कठमुल्लों की तूती नहीं बोलती, उनकी कर्ण-कर्कश ध्वनि के स्थान पर क़ुरान के विद्वान् उलमाओं की ही बात सुनी जाती है। जन-साधारण की सम्मति धार्मिक प्रश्नों का निपटारा करती है, स्वार्थांध मुल्लाओं के शरारत से भरे फ़तवों की अब वहाँ कोई क़द्र नहीं करता। अभी हाल में ही लुत्फ़े-लेवोनियन-नामक एक योरपियन ने टर्की में और मुंशी महेशप्रसादजी आलिम ने ईरान में जो कुछ देखा, उसका विस्तृत विवरण पत्रों में प्रकाशित हो चुका है। उससे पता चलता है कि इन दोनो देशों में जाग्रत इस्लाम का रूप हिंदोस्तान के सुप्त, कट्टर, मुल्ला-ग्रस्त इस्लाम के रूप से एकदम भिन्न है। मि० लेवोनियन लिखते हैं—

"राष्ट्रोन्नति की आकांक्षाओं ने मुस्लिम जगत् में जागृति उत्पन्न कर दी है। समस्त संसार के मुसलमानों में राष्ट्रीय भाव जाग्रत हो रहे हैं, उनके कारण उनमें एक विचित्र हलचल उत्पन्न हो रही है, उनके राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक भाव एकदम बदलते-से जा रहे हैं। ... जिस देश में यह परिवर्तन सबसे अधिक वेग से हो रहे हैं, वह देश है टर्की। नवीन इस्लामिक विचारों का टर्की ही उत्पत्ति-क्षेत्र है; व्यक्तिगत विचारों को छोड़कर यदि तुर्क-नेताओं के विचारों का सामूहिक अध्ययन किया जाय, तो यह सत्यता-पूर्वक कहा जा सकता है कि तुर्क लोगों की सम्मति में इस्लाम अब राष्ट्रीय जीवन का सर्व-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से मुख्य अंग नहीं रहा है। अब तक इस्लाम ही हर एक प्रकार के क्रिया-कलाप का प्रधान आधार समझा जाता था, (उसके बिना, उसकी शरियत के बिना, किया हुआ कोई भी कार्य नाजायज़ कहा जाता था। सं०) आज राष्ट्रीयता जीवन का प्रधान और इस्लाम अप्रधान अंग समझा जाता है। मुस्लिम-इतिहास के किसी भी युग में इस्लाम और मुहम्मद की इतनी छीछालेदर नहीं हुई, जितनी इन पिछले दस वर्षों में, टर्की में, हुई है।"

प्रसिद्ध टर्किश दैनिक 'तनीन' के संपादक हुसेन जाहिद बे ने लियाँसिटानि की इस्लाम-विषयक एक प्रसिद्ध पुस्तक का तुर्की-भाषा में अनुवाद केवल इसलिये किया कि जिससे इस्लाम और रसूल के विषय में नुक्ताचीनी करने की लोगों की हिम्मत बढ़े—ऐसा उन्होंने अपनी भूमिका में लिखा है।

लोगों में बढ़ती हुई प्रवृत्ति के विषय में लिखते हुए लेवोनियन साहब लिखते हैं—"मुझे याद है कि कुछ वर्ष पहले एशिया माइनर के एक शहर में किस प्रकार एक बड़े जुलूस के साथ मुहम्मद साहब की दाढ़ी के एक बाल की सवारी निकाली गई थी। किंतु आज वहाँ ही मुहम्मद केवल एक पैग़ंबर-मात्र समझे जाते हैं, और वह भी सातवीं सदी के अरबी मरुस्थल के। यह परिवर्तन निश्चय ही आश्चर्य-जनक है। तुर्की मुसलमानों का हृदय इस्लाम के वर्तमान रूप से एकदम असंतुष्ट है। सत्य तो यह है कि उनकी सम्मति में आधुनिक सामाजिक जीवन में उसका कोई स्थान ही नहीं है।

"धर्म को लोग एक ऐसी निरुद्देश्य सामाजिक उपज समझते हैं कि जो परिस्थितियों से प्रभावित और सदा परिवर्तनशील हुआ करती है। 'धर्म में सर्वथा सत्य कुछ भी नहीं, अतएव वह आँख मूँदकर विश्वास करने के योग्य नहीं', ऐसी इन लोगों की सम्मति है।"

इसी प्रकार ईरान के विषय में महेशप्रसादजी कहते हैं कि—

"देश का प्रधा धर्म इस्लाम है, किंतु लोगों में भूत-प्रेत आदि का विश्वास मौजूद है। वे स्वभावतः दयालु होते हैं। वे अपनी दाढ़ियाँ मुड़वाते हैं, और धीरे-धीरे इस्लाम की प्राचीन रूढ़ियों से पिंड छुड़ाते जाते हैं। जीवों पर क्रूरता दंडनीय अपराध समझा जाता है। वसंत में शिकार खेलना भी जुर्म समझा जाता है। धार्मिक स्वतंत्रता सभी को प्राप्त है। ईसाई, पारसी, सिख, हिंदू, यहूदी और आर्मीनियन ईसाई सभी अपने-अपने धार्मिक कृत्यों को मुस्लिम अत्याचारों से निर्भय होकर करते हैं।

"ईरान में बहुतेरे हिंदू-मंदिर और सिख-गुरुद्वारे हैं, जहाँ निर्द्वंद्व रूप से धार्मिक पूजा होती है। एक बार तो कहा जाता है कि गुरुद्वारे के जलसे में मुसलमान भी सम्मिलित हुए और उन्होंने उस समय बाँटी गई मिठाई बड़े प्रेम से खाई। बंदर अब्बास में तो मुझे एक विशाल हिंदू-मंदिर के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।.....मंदिर में शिव, हनुमान् आदि प्रसिद्ध हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और गुरु ग्रंथ साहब की स्थापना हुई है। मंदिर के घटे-घड़ियाल, नौबत और अन्य संगीत-वाद्य यथासमय बजाए जाते हैं, किंतु आज तक किसी भी मुसलमान ने उसका विरोध नहीं किया है। इसके विपरीत उस देश में धार्मिक विवादों और दंगों का कोई नाम भी नहीं जानता। एक बार तो हिंदुओं की देवीजी के जुलूस को देखकर मुसलमान अत्यंत प्रसन्न हुए थे।"

उपरि-लिखित दोनो विवरणों को पढ़कर जाग्रत इस्लाम और हिंदोस्तानी इस्लाम के भेद का काफ़ी ज्ञान हो सकता है। ईरान और टर्की की तरह अगर हिंदोस्तानी मुसलमान भी सुखी होना चाहते हैं, तो उन्हें भी इन्हीं उपायों का अवलंबन करना चाहिए। यदि वे कट्टरता का परित्याग नहीं करेंगे, तो अपने पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान के समान हम हिंदोस्तानी भी सदा दुःखी ही रहेंगे।

× × ×

७. एक सामाजिक व्याधि—हिजड़े

मनुष्य सदा से अपनी वासनाओं की तृप्ति के नए साधन ढूँढ़ा करता है। अपनी वर्तमान परिस्थिति से उसे कभी भी संतोष नहीं होता। वह उस परिस्थिति से निकलकर अपने और अपनी वासनाओं के लिये नई ही परिस्थितियाँ उत्पन्न करने में बड़ी प्रसन्नता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनुभव करता है। इसीलिये उसने अपने चारो ओर अप्राकृतिक साधनों का ऐसा तान-वितान बुन डाला है कि उससे उसकी प्राकृतिक पवित्रता एकदम छिप गई है। वह बिल्कुल परिस्थितियों का दास और कृत्रिम साधनों का पुतला-मात्र हो गया है। अपने दैनिक जीवन में ही उसकी यह प्रवृत्ति इतनी प्रबल हो, सो बात नहीं। सदियों की परंपरागत रूढ़ियों और शृंखलाओं के कारण उसका सामाजिक वायुमंडल ही बड़ा अपवित्र, अप्राकृतिक और अत्यंत उद्वेगजनक हो उठा है। विवाह-जैसे पवित्र और आदर्श सामाजिक नियम में उसने इतने संशोधन कर डाले हैं कि वह अब दुःख और कलह का एक प्रधान कारण-सा हो उठा है। स्त्रियों की वैवाहिक दासता उसने इतनी बढ़ा डाली है कि उन बेचारियों की इच्छाओं और वासनाओं की ओर ज़रा भी दृक्पात किए बिना ही, काम-पिपासा-तृप्ति की एक मशीन के समान, समय-असमय, दिन और रात, जब मन में आया तब, उनका इस्तेमाल करने में वह ज़रा भी नहीं हिचकता। उसे उनके हार्दिक भावों से क्या मतलब, उसकी वासना की तृप्ति होनी चाहिए। किंतु अपनी विवाहिता स्त्री के इस प्रकार के घृणित उपयोग से ही मनुष्य की वासना तृप्त नहीं होती। वह चौराहे पर खड़ा होकर दूसरों की स्त्रियों पर भी नज़र डालता है, ताँगों और इक्कों में परदे के अंदर बैठी हुई बहू-बेटियाँ भी उसकी लोलुप आँखों से बचने नहीं पातीं। यूक्लिड के कोण-संबंधी नियमों में से, अथवा अपने पूर्वज वानर दादा की तरकीबों में से, किसी एक का उपयोग करके वह अपने मचले हुए दिल को किसी-न-किसी प्रकार समझाया करता है। बनारस, मथुरा और प्रयाग के पुण्यतीर्थों में वह अपनी इसी वासना की तृप्ति के लिये, व्यभिचार-धारा में ग़ोते लगाकर पुण्य लाभ करता है। कहाँ तक कहें, जिस प्रकार भी हो सकता है, उस प्रकार वह स्त्री-नामधारी आकृतिविशेष के लिये लालायित हुआ-सा फिरा करता है। उसके लिये वह धन, धर्म, स्वास्थ्य और परलोक तक भी—अगर परलोक कहीं है, तो—निछावर कर देने को तैयार रहता है। उचित-अनुचित का उसे ज़रा भी ख़याल नहीं रहता। वह जूते खाकर, घर फूँककर और मरकर भी अपनी इस व्यभिचार-परायणता को चरितार्थ किया करता है।

काम-वासना-तृप्ति की स्त्री नामधारी मैशीन से भी अब उसका काम चलता नहीं मालूम होता। वह प्रकृति के इस उपाय से शायद ऊब उठा है। इसीलिये उसने अब नए उपायों का आविष्कार किया है। अप्राकृतिक व्यभिचार की जो नई-नई तरकीबें आजकल हमारे स्कूलों और कॉलेजों में सुनाई पड़ती हैं, उनसे पता चलता है कि काम-वासना-तृप्ति के नए साधनों के लिये बड़े-बड़े आविष्कर्ताओं के दिमाग़ काम में लाए जा रहे हैं। आत्म-व्यभिचार, पशु-व्यभिचार, नर-व्यभिचार, वस्तु-व्यभिचार आदि अनेक प्रकार के व्यभिचार के उदाहरण श्रीचतुरसेनजी, उग्रजी, सहगलजी आदि की लेखनी की कृपा से हिंदी-पाठकों के सामने आ ही चुके हैं, किंतु लखनऊ की प्रसिद्ध व्याधि और युक्त-प्रांत के कलंक हिजड़ा-व्यवसाय के विषय में न मालूम व्यभिचार-विषय के इन प्रसिद्ध महारथियों ने क्यों क़लम नहीं उठाई। यह व्याधि दिन-पर-दिन ज़ोर पकड़ती जा रही है, लेकिन न तो सरकार ही इसके विषय में कोई कार्यवाही करती है, और न समाज ही।

दिल्ली, लखनऊ, बाँदा और बलरामपुर इन नपुंसकों के केंद्र हैं। लेकिन रहते यह प्रायः युक्त-प्रांत के सभी ज़िलों में हैं। किसी में इनकी संख्या कम होती है, और किसी में ज़्यादा। प्रतिवर्ष इनकी संख्या में वृद्धि होती जा रही है। ज्यों-ज्यों मनुष्य की अप्राकृतिक व्यभिचार की प्रवृत्ति ज़ोर पकड़ती जा रही है, त्यों-त्यों मानव-ख़बरों की यह नई नस्ल भी बढ़ती जा रही है।

नपुंसक कुछ तो जन्म से ही होते हैं, और कुछ बनाए जाते हैं। जन्म-नपुंसक तो सृष्टि के आदि-काल से ही चले आ रहे हैं। व्यभिचार के लिये उनका उपयोग भी पुराना मालूम होता है, क्योंकि वात्स्यायन काम-सूत्र में इन लोगों के विषय में कुछ नियम निर्धारित किए गए हैं। लेकिन कृत्रिम नपुंसकों की उत्पत्ति अधिकतर मुसलमानी सल्तनत की कृपा से ही हुई। सुल्तानों की सैकड़ों बेगमों और लौंडियों की रक्षा के लिये जिन मनुष्यों की नियुक्ति होती थी, अधिकतर वे नपुंसक बना दिए जाते थे। ज्यों-ज्यों बेगमात की वृद्धि होती गई,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और उनकी व्यभिचार-लीलाओं की संख्या में अधिकता आने लगी, त्यों-त्यों नर्म-सखा नपुंसकों अथवा खोजों की संख्या में भी वृद्धि होती रही। वाजिदअलीशाह, लखनऊ के नवाब वज़ीर के समय में तो हिजड़ों की संख्या बेतरह बढ़ गई थी। कहते हैं, इनकी एक सेना थी और ये लोग एक पूरे मुहल्ले में आबाद थे। नवाबी के नाश के साथ ही कुछ समय के लिये इन लोगों के बुरे दिन आ गए। लेकिन मुग़लों से विरासत में पाई हुई हिंदोस्तान की विलासिता में अँग्रेज़ी-शासन ने चार चाँद लगा दिए। शराब, वेश्या और ऐश के साधन अत्यंत सुलभ हो जाने के कारण सभ्य और असभ्य सभी प्रकार के लोगों में व्यभिचार की वृद्धि हो चली। हिजड़ों के भी इसीलिये दिन फिरे। उनका अप्राकृतिक व्यापार चमक उठा, आमदनी का सिलसिला बँध गया। स्त्रियों का वेश धारण करके ये दुष्ट लोग अपनी व्यभिचार-लीला में प्रवृत्त हो गए। तबसे बराबर उनकी संख्या बढ़ती जा रही है।

लखनऊ, बाँदा और बलरामपुर में इनके मुहल्ले बसे हुए हैं। सामान्य स्त्रियों के समान ये लोग अपना विवाह करते और अपने पति बनाते हैं। पति को इनके ऊपर पूरा अधिकार होता है। उसकी आज्ञा इन्हें पालन करना पड़ती है। स्त्रियों के समान ज़ेवर और लहँगा-दुपट्टा पहनकर, मूँछ और दाढ़ी साफ़ कराकर, ये लोग दो-दो, चार-चार की संख्या में विवाह, पुत्र-जन्मादि उत्सवों में भले आदमियों के घरों पर गाने और नाचने के लिये जा पहुँचते हैं। अत्यंत अश्लील गीत और निहायत असभ्य और गंदे इशारों के साथ घर की स्त्रियों और बच्चों के सामने वे नाचते और बकते हैं। पैसा लेने के लिये ज़बरदस्ती डट जाते और दुष्टतापूर्ण हरकतें करते हैं। यहीं तक नहीं, अप्राकृतिक व्यभिचार के लिये ये रास्ता-चलते गँवार लोगों को बहकाते और तंग करते हैं। कभी-कभी उनसे लिपट पड़ते, उई-उई करते और हाथ नचाते हैं, ढोलक बजाकर उस बेचारे को घेरकर नाचने लगते और उसे ज़लील करते हैं। दिन-भर इस प्रकार बदमाशी से पैसा बटोरकर रात को सरकारी शराब, ताड़ी और इसी प्रकार के अन्य नशों की दूकान के सामने स्त्री-वेश में खड़े होकर लोगों को बहका ले जाते और अप्राकृतिक व्यभिचार द्वारा पैसा कमाते हैं।

व्यभिचारिणी स्त्रियों के लिये सख़्त क़ानून बनानेवाली, उन्हें शहर-बाहर निकालनेवाली म्युनिसिपैलिटियाँ इन बदमाशों के लिये कोई नियम नहीं बनातीं। सरकार की पिनलकोड की धाराएँ न-मालूम इन लोगों पर क्यों लागू नहीं होतीं, देश-भक्तों के पाख़ाने पर भी सदा नज़र गड़ाए रखनेवाली पुलिस के चार-चक्षु इन लोगों के अप्राकृतिक व्यभिचार को न-मालूम क्यों नहीं देख पाते। वेश्याओं के नृत्य को बंद करानेवाली पंचायतें न-मालूम इनके नृत्य को क्यों इतना पसंद करती हैं कि अपने घर की बहू-बेटियों को उसके विनाशकारी प्रभाव से बचाने का प्रयत्न ही नहीं करतीं। क्या हिंदू और क्या मुसलमान, सभी इन लोगों से संपर्क रखने में इतनी अधिक बुराई का अनुभव नहीं करते, जितना वे वेश्याओं के संपर्क में करते हैं। हर प्रकार से हट्टे-कट्टे, मेहनत-मज़दूरी करने के सर्वथा योग्य इन मुस्तख़ोरों का पुलिस न-मालूम चालान क्यों नहीं करती? देश का काम करनेवालों से तो वह पचास बार उनका 'ज़रिया-ए-माश' पूछती फिरती है, लेकिन अपने इन कृपापात्रों से वह एक बार भी इस प्रकार का प्रश्न नहीं करती। इसी कारण यह नई सामाजिक व्याधि दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है। समाज को इसका शीघ्र उपाय करना चाहिए। अन्यथा इसके दुष्परिणाम अत्यंत भयंकर होंगे।

× × ×

८. सत्याग्रह-संग्राम का प्रारंभ

गत मास नमक-कर के विषय में हमने अपने विचार प्रकट किए थे। उस समय हमने नमक-संबंधी क़ानून के विरुद्ध सत्याग्रह करने की नीति का समर्थन किया था। हमें यह देखकर अत्यंत हर्ष हुआ है कि देश ने सत्याग्रह के ही मार्ग को समुचित समझकर अंगीकार कर लिया है।

इस सत्याग्रह-महायज्ञ के पुरोहित देश के पूज्य नेता, संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष, महात्मा गांधी हैं। अहिंसात्मक सत्याग्रह-आंदोलन के प्रबल शस्त्र द्वारा आप भारत की सदियों पुरानी ग़रीबी का नाश करने के लिये उद्यत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुए हैं। सारा देश आपकी ही ओर टकटकी लगाए हुए है। संसार-भर में आपके अपूर्व युद्ध की ही चर्चा हो रही है। भगवान् करे कि देश का सौभाग्य फिर से जाग्रत हो, युवक-शक्ति में एक भयंकर जोश उठे और महात्माजी को युद्ध-यात्रा सफल हो।

× × ×

६. वायसराय को पत्र

सत्याग्रह-यात्रा प्रारंभ करने से पहले महात्माजी ने अंतिम सूचना के तौर पर एक पत्र वायसराय महोदय लॉर्ड इरविन को लिखा था। वह पत्र भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में एक अमर-पत्र है। स्वतंत्र भारत के नव-युवकों के लिये यह ऐतिहासिक पत्र सदा सम्मान की वस्तु रहेगा। अतएव अपने पाठकों की जानकारी के लिये हम उक्त पत्र का अविकल अनुवाद नीचे दे रहे हैं—

सत्याग्रह-आश्रम, साबरमती
२ मार्च, १९३० ई०

प्रिय मित्र,

सविनय क़ानून-भंग शुरू करने, और शुरू करने पर जिस जोखिम को उठाने के लिये मैं इतने वर्षों से हिचकता रहा हूँ, उसे उठाने से पहले मैं इस उम्मेद से यह पत्र आपको लिखने जा रहा हूँ कि अगर समझौते का कोई रास्ता निकल सके, तो उसके लिये कोशिश कर देखूँ।

अहिंसा में मेरा विश्वास तो प्रकट ही है। जान-बूझकर मैं किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं कर सकता, मनुष्य की तो बात ही क्या है। फिर चाहे उस मनुष्य ने मेरा या मेरे हिमायतियों का कितना ही अनिष्ट क्यों न किया हो। अतएव यद्यपि एक ओर मैं अँगरेज़ी राज्य को एक अभिशाप या बला मानता हूँ, तो भी दूसरी ओर मैं यह कभी नहीं चाहता कि मेरे द्वारा किसी भी अँगरेज़ को अथवा उसके भारत में उपार्जित उचित स्वत्वों को ज़रा-सी भी ठेस पहुँचे।

आप मेरे अभिप्राय को अन्यथा न समझें। यह सच है कि मैं भारत में अँगरेज़ी राज्य को एक बला मानता हूँ। किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि मैं अँगरेज़ों को दुनिया के दूसरे लोगों की अपेक्षा अधिक दुष्ट समझता हूँ। बहुतेरे अँगरेज़ों से तो गहरी मित्रता होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त है। यही नहीं, बल्कि अँगरेज़ी-राज्य से हिंदोस्तान को जो नुक़सान पहुँचा है, उसके बारे में बहुत-सी घटनाएँ तो मुझे उन अँगरेज़ों की लिखी हुई पुस्तकों से ही मालूम हुई, जिन्होंने निर्भय होकर सत्य को उसके प्रकृत-रूप में प्रकट किया है। इसके लिये मैं उन सबका हृदय से कृतज्ञ हूँ।

तो फिर मैं किस कारण से अँगरेज़ी राज्य को एक अभिशाप समझता हूँ?

कारण ये हैं—लगातार चूस-चूसकर इस राज्य ने करोड़ों बेज़बान आदमियों को निर्धन कर डाला है। इसकी यह प्रवृत्ति दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। इसका फ़ौजी और दीवानी ख़र्च भी ऐसा विनाशकारी है कि देश उसे कभी बरदाश्त ही नहीं कर सकता।

राजनीतिक दृष्टि से भी इस राज्य ने हमें पूरा ग़ुलाम कर डाला है। इसने हमारी सभ्यता और संस्कृति में ही जड़ खोखली कर डाली है। हमारी मनुष्यता को भी, हमारे शस्त्र छीनकर इसने गहरा धक्का पहुँचाया है। आत्मिक विश्वास-हीनता के कारण, हम निरस्त्र हिंदोस्तानी एकदम बे-बस ग़ुलाम और कायरों की सी परिस्थिति में जा पहुँचे हैं।

अपने दूसरे देश-भाइयों के साथ मैं भी यह आशा लगाए बैठा था कि आपके द्वारा प्रस्तावित गोलमेज़-कान्फ्रेंस से ये सब शिकायतें दूर हो जायँगी। लेकिन जब आपने मुझसे स्पष्ट कह दिया कि आप या ब्रिटिश मंत्रिमंडल, भारत को औपनिवेशिक स्वाधीनता की किसी भी योजना का समर्थन करने की आशा नहीं दे सकते, तो मैंने अनुभव किया कि स्पष्टवादी पढ़े-लिखे हिंदोस्तानी जान-बूझकर, तथा मूक, अजान हिंदोस्तानी बिना जाने-बूझे, जिन दुःखों को मिटाने के लिये तरस रहे हैं, उनका इस गोलमेज़-कान्फ्रेंस द्वारा कोई भी उपचार नहीं हो सकता। यहाँ इस बात के कहने की ज़रूरत ही नहीं कि इस मामले में पार्लामेंट को आख़िरी फ़ैसला करने का जो अधिकार प्राप्त है, उसे छीन लेने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था। ऐसे अनेक उदाहरण उपस्थित किए जा सकते हैं कि जिनमें ब्रिटिश मंत्रि-मंडल ने, इस आशा से कि पीछे से पार्लामेंट की अनुमति ले ली जायगी, पहले से ही अपनी नीति स्थिर कर ली थी। देहली के पारस्परिक वाद-विवाद का जब कोई ठीक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काम न निकला, तब सन् १९२८ में कलकत्ता-कांग्रेस द्वारा स्वीकृत गंभीर प्रस्ताव को कार्य-रूप में परिणत करने के सिवा पंडित मोतीलाल नेहरू के और मेरे सामने दूसरा कोई रास्ता ही नहीं रह गया था ।

आपकी घोषणा में जिस 'डोमीनियन स्टेटस'-शब्द का ज़िक्र है, यदि वह अपने सत्य अर्थ में ही प्रयुक्त होता, तो आज 'पूर्ण स्वतंत्रता' के प्रस्ताव से भड़कने की नौबत ही न आती, क्योंकि 'डोमीनियन स्टेटस' का अर्थ लगभग पूर्ण स्वतंत्रता ही है : इस बात को बहुत-से प्रतिष्ठित ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने स्वयं ही स्वीकार किया है और इससे इनकार भी कौन कर सकता है। लेकिन मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की यह नीयत ही नहीं थी कि भारत को शीघ्र ही 'डोमीनियन स्टेटस' दे दिया जाय।

परंतु ये सब तो बीती हुई बातें हैं। आपकी घोषणा के बाद तो ऐसी अनेक घटनाएँ घट चुकी हैं, जिनसे ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का उद्देश्य साफ़ प्रकट हो जाता है।

यह बात प्रकाश की भाँति स्पष्ट है कि जिन राजनीतिक परिवर्तनों से भारत के साथ इँगलैंड के व्यापार को ज़रा भी धक्का पहुँचने की संभावना हो अथवा जिनके कारण भारत और इँगलैंड के व्यापारिक संबंध में निष्पक्ष जाँच की आवश्यकता पड़े, उन्हें ज़रा भी होने देने की ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की मंशा नहीं है। पर अगर हिंदोस्तान को चूसने की नीति का अंत न किया जायगा, तो यह दिन-ब-दिन बढ़ती ही जायगी। आपके फ़ाइनेंस मेंबर साहब समझते हैं कि १८ पेंस की विनिमय दर एक निश्चित सत्य है। इस तरह क़लम के एक इशारे से ही भारतवर्ष के करोड़ों रुपए बाहर बहा दिए जाते हैं। और जब हम, और ऐसे ही बहुतेरे विधि-विशानों के विरुद्ध सत्याग्रह या सविनय क़ानून-अवज्ञा की आज्ञमाइश करने का गंभीर प्रयत्न प्रारंभ किया जाता है, तो आप भी, और लोगों की तरह, धनवानों और ज़मींदारों से यह अनुरोध किए बिना नहीं रहते कि वे देश में शांति और क़ानून की रक्षा के लिये ऐसे आंदोलनों को कुचलने में आपकी मदद करें। लेकिन आपकी इस शांति और क़ानून-रक्षा के बोझ से भारत बेचारे का कचूमर निकला जा रहा है।

जो लोग राष्ट्र-हित के लिये कार्य कर रहे हैं, वे यदि स्वतंत्रता की लगन के उद्देश्यों को न तो स्वयं ही ठीक-ठीक समझते हों और न उन्हें जनता के सामने रखते ही हों, तो यह भय रहता है कि स्वतंत्रता हमें, और उन करोड़ों बेज़बान हिंदोस्तानियों को, जो दिन-रात एड़ी-चोटी का पसीना एक किया करते हैं, ऐसे विकृत रूप में मिलेगी कि उसका कोई मूल्य ही नहीं रहेगा। इसीलिये इधर कुछ दिनों से मैं जनता को स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ समझाता रहा हूँ।

अब मैं इस संबंध में कुछ विशेष बातें आपके सामने पेश करना चाहता हूँ।

स्वतंत्र भारत में सरकार की मालगुज़ारी-नीति के उस भयंकर भार में, जो उसकी आमदनी का सबसे बड़ा हिस्सा है, काफ़ी परिवर्तन करना पड़ेगा। उस इस्तमरारी बंदोबस्त से भी, जिसकी तारीफ़ों के पुल बाँधे जाते हैं, केवल कुछ मुट्ठी-भर धनी ज़मींदारों को ही फ़ायदा पहुँचता है। जन-साधारण या रैयत को उससे कोई भी लाभ नहीं है। इसीलिये मालगुज़ारी को बहुत कुछ घटाने की आवश्यकता है। यही नहीं, बल्कि रैयत के भले को ही मुख्य ध्येय बनाकर, कर लगाने की सारी नीति को ही बदल डालने और नई नीति स्थापित करने की अत्यंत आवश्यकता है।

परंतु सरकार की नीति से तो यह मालूम होता है कि वह जनता के प्राणों को भी चूस लेना चाहती है। नमक-जैसी रात-दिन की ज़रूरी चीज़ पर भी, जिसके बिना करोड़ों का काम चल ही नहीं सकता, महसूल का बोझ इस तरह लाद दिया गया है कि उसका भार ख़ासकर ग़रीबों पर ही ज़्यादा पड़ता है। कहा जाता है कि यह कर निष्पक्ष होकर वसूल किया जाता है, पर इसकी निष्पक्षता ही तो निर्दयता है। नमक ही एक ऐसी चीज़ है जिसे धनवान् या अमीर व्यक्तियों तथा समुदायों की अपेक्षा ग़रीब लोग अधिक खाते हैं। इस बात का विचार करने से हमें पता चलता है कि ग़रीबों के लिये यह कर कितना भार-रूप है। शराब और दूसरी नशीली चीज़ों से होनेवाली आय का द्वार भी ये ग़रीब ही हैं। ये चीज़ें लोगों के स्वास्थ्य और चरित्र को जड़-मूल से मिटानेवाली हैं। पर व्यक्तिगत स्वातंत्र्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के बहाने, जो कि झूठा बहाना है, इस नीति की रक्षा की जाती है। सच तो यह है कि इनसे जो आमदनी होती है उस आमदनी के लिये ही ये विभाग क़ायम हैं। सन् १९१९ में जो सुधार जारी किए गए, उनके अनुसार इन मदों की आमदनी चतुराई के साथ नाम-धारी निर्वाचित मंत्रियों के ज़िम्मे कर दी गई, जिससे सब तरह की नशीली चीज़ों का व्यवहार बंद करने से होनेवाला अधिक नुक़सान उन्हें ही सहना पड़े, और इस तरह प्रारंभ से ही देश-हित के काम करना उनके लिये असंभव हो जाय। अगर कोई अभागा मंत्री इस आमदनी से हाथ धोना चाहे भी, तो वह ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि उस हालत में उसे शिक्षा-विभाग ही बंद कर देना पड़ता है, और वर्तमान दशा में शराब के बजाय आमदनी का कोई दूसरा मार्ग पैदा करना उसके लिये संभव नहीं है। इस तरह ग़रीबों को इन करों के बोझ के तले पिसने का ही दुःख नहीं है, वे इसलिये भी दुखी हैं कि उनकी आमदनी को बढ़ाने-वाला चर्खे-जैसा गृह-उद्योग नष्ट कर दिया गया है, और इस तरह उन्हें आमदनी के इस ज़रिए से ज़बरदस्ती वंचित किया गया है।

हिंदोस्तान की तबाही का यह दर्द-भरा क़िस्सा अधूरा ही कहा जायगा, जब तक भारत के नाम जो क़र्ज़ा लिया गया है, उसका ज़िक्र इस सिलसिले में न किया जाय। लेकिन इस बारे में इन दिनों अख़बारों में काफ़ी चर्चा हो चुकी है, अतः विस्तार के साथ इसका ज़िक्र करना अनावश्यक है। यह कहना ही काफ़ी होगा कि इस तरह के सभी क़र्ज़ों की पूरी-पूरी जाँच एक निष्पक्ष पंचायत द्वारा कराई जानी चाहिए। इस जाँच के फल-स्वरूप जो क़र्ज़ अन्याय-पूर्ण और अनुचित ठहराया जायगा, उसे देने से इनकार करना ही आज़ाद हिंदोस्तान का सच्चा कर्तव्य होगा।

यह प्रकट है कि वर्तमान विदेशी सरकार दुनिया-भर में ज़्यादा-से-ज़्यादा ख़र्चीली है, और इसे बनाए रखने के उद्देश्य से ही ये सारे पाप किए जा रहे हैं। आप अपने वेतन को ही ले लीजिए। वह माहवार २१,०००) से भी ज़्यादा है। सिवा इसके, उसमें भत्ता और दूसरे सीधे-टेढ़े आमदनी के ज़रिए हैं ही। इँगलैंड के प्रधान मंत्री की तनख़्वाह से इसका मुक़ाबला कीजिए। उन्हें सालाना ५,००० पौंड, याने मौजूदा दर के हिसाब से माहवार ५,४००) से कुछ अधिक मिलता है। जिस देश में हरएक आदमी की औसत रोज़ाना आमदनी दो आने से भी कम है, उस देश में आपको रोज़ाना ७००) से भी अधिक मिलते हैं, तथा इँगलैंड के बाशिंदे की औसत दैनिक आय लगभग १) मानी जाती है और प्रधान मंत्री को रोज़ाना सिर्फ़ १८०) ही मिलते हैं! इस तरह आप अपनी तनख़्वाह के रूप में ५,००० से भी अधिक भारतीयों की औसत कमाई का हिस्सा ले लेते हैं; उधर इँगलैंड के प्रधान मंत्री सिर्फ़ १० अँगरेज़ों की कमाई ही लेते हैं। घुटने टेककर मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस आश्चर्य-जनक विषमता पर ध्यान-पूर्वक थोड़ा विचार कर देखें। एक कठोर, पर सच्ची हक़ीक़त को ठीक-ठीक समझाने के लिये मुझे आपका व्यक्तिगत उदाहरण पेश करना पड़ता है; नहीं तो वैयक्तिक रूप से मेरे दिल में आपके लिये इतनी इज़्ज़त है कि मैं ऐसी कोई बात आपके बारे में नहीं करना चाहूँगा, जिससे आपके दिल को ठेस पहुँचे। मैं जानता हूँ कि आप नहीं चाहते कि आपको इतनी ज़्यादा तनख़्वाह मिले। संभव है, आप अपनी सारी-की-सारी तनख़्वाह दान में दे डालते हों। पर जिस राज्य-प्रणाली ने ऐसी ख़र्चीली व्यवस्था बना रक्खी है, उसे तुरंत तिलांजलि देना ही उचित है। जो युक्ति आपकी तनख़्वाह के लिये ठीक है, वही सारे राज-तंत्र पर भी लागू होती है।

सारांशतः बात यह है कि जब राज्य-प्रबंध के ख़र्च में बहुत ज़्यादा कमी कर दी जायगी, तभी राज्य की आमदनी में भी बहुत कुछ कमी की जा सकेगी। और यह तभी हो सकता है जब कि राज-काज की सारी रीति ही बदल दी जाय। इस तरह का परिवर्तन बिना स्वतंत्रता के हो ही नहीं सकता। मेरी राय में इन्हीं भावों से प्रेरित होकर ता० २६ जनवरी के दिन लाखों ग्राम-वासी स्वातंत्र्य-दिवस मनाने के लिये की गई सभाओं में अपने आप सहज ही सम्मिलित हुए थे। उनके लिये तो स्वाधीनता का मतलब उक्त कुचल डालनेवाले बोझों से छुटकारा पाना है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इँगलैंड जिस तरह इस देश को लूट रहा है, सारा हिंदोस्तान उसका एक स्वर से विरोध कर रहा है, तो भी मैं देखता हूँ कि इँगलैंड का कोई भी बड़ा राजनीतिक दल इस लूट को बंद करने के लिये तैयार नहीं है।

पर भारतीय जनता को जीवित रखने और अन्न की कमी के कारण धीरे-धीरे होनेवाले उसके विनाश को रोकने के लिये शीघ्र ही कोई-न-कोई इलाज तो ढूँढ ही निकालना होगा—सिवा इसके और कोई चारा ही नहीं है। आपके द्वारा प्रस्तावित परिषद् वह इलाज नहीं है। युक्तियों से बुद्धि को विश्वास कराने का अब कोई सवाल ही नहीं रहा है; अब तो सिर्फ़ दो परस्पर-विरोधी शक्तियों की मुठभेड़ का सवाल ही बाक़ी रहता है। उचित हो या अनुचित, इँगलैंड तो अपनी पाशविक शक्ति के बल पर ही भारत के साथ अपने व्यापार को और भारत में रहे हुए अपने स्वार्थों को बनाए रखना चाहता है। इस यम-पाश से छुटकारा पाने के लिये जितनी ताक़त ज़रूरी है, वह ताक़त इकट्ठा करना भारत के लिये आवश्यक हो गया है।

इसमें तो किसी भी पक्ष को संदेह नहीं है कि हिंदोस्तान में जो हिंसक दल है, भले ही आज वह असंगठित और उपेक्षणीय हो, फिर भी दिनोदिन उसका बल बढ़ता जा रहा है और वह प्रभावशाली बन रहा है। उस दल का और मेरा ध्येय तो एक ही है, पर मुझे विश्वास है कि हिंदोस्तान के करोड़ों लोगों को जिस आज़ादी की ज़रूरत है, वह उसके दिलाए नहीं मिल सकती। इसके अतिरिक्त मेरा यह विश्वास दिनोदिन बढ़ता ही जाता है कि शुद्ध अहिंसा के सिवा और किसी भी तरीक़े से ब्रिटिश सरकार की यह संगठित हिंसा अटकाई नहीं जा सकेगी। बहुतेरे लोगों का यह ख़याल है कि अहिंसा में कार्य-साधक शक्ति नहीं होती। जो भी हो, यद्यपि मेरा अनुभव एक ख़ास हद तक ही सीमित रहा है, तो भी मैं यह जानता हूँ कि अहिंसा में ज़बरदस्त कार्य-साधक शक्ति है। ब्रिटिश-सल्तनत की संगठित हिंसा-शक्ति और हिंसक दल की असंगठित हिंसा-शक्ति के मुक़ाबले में इस ज़बरदस्त अहिंसक शक्ति को खड़ी करने का मेरा इरादा है। अगर मैं हाथ-पर-हाथ धरे बैठा रहा, तो इन दोनों हिंसक शक्तियों को निरंकुश होकर खुल खेलने का मौक़ा मिल जायगा। अपनी बुद्धि के अनुसार मुझे अहिंसा की अमोघ शक्ति में निश्शंक और अविचल श्रद्धा है, इतना होते हुए भी अगर मैं इस शक्ति का प्रयोग करने के बजाय चुपचाप बैठा रहूँ, तो मैं समझता हूँ कि मुझे पाप लगेगा।

यह अहिंसा-शक्ति सविनय क़ानून-भंग द्वारा व्यक्त होगी। फ़िलहाल तो सिर्फ़ सत्याग्रह-आश्रम के लोगों द्वारा ही इसकी शुरुआत होगी, लेकिन बाद में तो जो इस नीति की स्पष्ट मर्यादाओं को क़ायम रखेंगे, वे सब इसमें शामिल हो सकेंगे, यही सोचा गया है।

मैं जानता हूँ कि अहिंसात्मक संग्राम शुरू करके मैं पागलों का-सा साहस कर रहा हूँ, वैसी जोखिम उठा रहा हूँ। लेकिन भारी-से-भारी जोखिम उठाए बिना सत्य की कभी जीत नहीं हुई है। जो लोग अपने से ज़्यादा बहु-संख्यक पुराने और अपने समान ही सभ्य, संस्कृत लोगों का जाने-अजाने नाश कर रहे हैं, उन लोगों के हृदय को बदल देने के लिये जितनी जोखिम उठाना पड़े, कम ही है।

'हृदय को बदल देने' की बात मैं जान-बूझकर कह रहा हूँ। क्योंकि मैं अहिंसा द्वारा अँगरेज़ लोगों के हृदय को इस तरह बदलना चाहता हूँ कि जिससे वे यह साफ़-साफ़ देख सकें कि उन्होंने हिंदोस्तान को कितना नुक़सान पहुँचाया है। मैं आपके देश-भाइयों का बुरा नहीं चाहता। अपने देश-भाइयों की तरह ही मैं उनकी भी सेवा करना चाहता हूँ। मैं मानता हूँ कि मैंने हमेशा उनकी सेवा ही की है। सन् १९१९ तक मैंने आँखें बंद करके उनकी सेवा की। लेकिन जब मेरी आँखें खुलीं और मैंने असहयोग की आवाज़ बुलंद की, तब भी मेरा उद्देश्य उनकी सेवा करना ही था। जिस हथियार का मैंने अपने प्रिय-से-प्रिय संबंधी के ख़िलाफ़ नम्रता से, पर कामयाबी के साथ, इस्तेमाल किया है, वही हथियार मैंने सरकार के ख़िलाफ़ भी उठाया है। अगर यह बात सच है कि मैं भारतीयों के समान ही अँगरेज़ों को भी चाहता हूँ, तो यह ज़्यादा देर तक छिपी नहीं रहेगी। बरसों तक मेरी परीक्षा लेने के बाद जैसे मेरे कुनबेवालों ने मेरे प्रेम के दावे को क़बूल किया है, वैसे ही अँगरेज़ भी किसी दिन क़बूल करेंगे। मुझे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उम्मीद है कि इस लड़ाई में आम रिआया मेरा साथ देगी, और अगर उसने साथ दिया तो—सिवा उस हालत के कि अँगरेज़ लोग समय रहते ही समझ जायँ—देश पर आफ़त और दुःख के जो पहाड़ टूट पड़ेंगे उनके कारण वज्र से भी कठोर दिलवालों के दिल पसीज जायँगे।

सविनय क़ानून-भंग द्वारा सत्याग्रह करने की योजना में उक्त अन्यायों का विरोध करना ख़ास बात होगी। ब्रिटिश या अँगरेज़-जनता के साथ का संबंध तोड़ डालने की हमारी इस इच्छा का कारण ऊपर गिनाए गए ये अन्याय ही हैं। इनके मिटाने ही से रास्ता साफ़ होगा और फिर सुलह के लिये दरवाज़े खुल जायँगे। भारत के साथ अँगरेज़ों के व्यापार में से लोभ का पाप धुल जाय, तो हमारी आज़ादी को क़बूल करने में अँगरेज़ों को कोई कठिनाई न हो। मैं आपसे सादर प्रार्थना करता हूँ कि आप इन अन्यायों को स्वीकार करें, इन्हें तत्काल दूर करने का कोई रास्ता निकालें, और इस तरह सारी मानव-जाति के कल्याण के उपायों को ढूँढ़ निकालने की इच्छा से कोई ऐसा तरीक़ा अख़्तियार करें कि जिससे दोनो पक्ष बराबरी के नाते सलाह करने को इकट्ठा हों। ऐसा करने से अपने आप ही दोस्ती बँधेगी और दोनो देश एक दूसरे की मदद के लिये तैयार रहने, तथा दोनो एक दूसरे के अनुकूल हो पड़ें, इस तरह व्यापार करने की नीति ठहरा सकेंगे। बदनसीबी से देश में आज जो क़ौमी झगड़े फैले हुए हैं, उन्हें आपने बिला वजह ज़रूरत से ज़्यादा महत्त्व दिया है। राजनीतिक विधान की किसी भी योजना के बनाने में इन बातों का महत्त्व अवश्य है, लेकिन जो सवाल क़ौमी झगड़ों से परे हैं और जिनके कारण सब क़ौमों को समान रूप से हानि उठानी पड़ती है, उन सवालों का इन झगड़ों से कोई सरोकार ही नहीं है।

लेकिन अगर ऊपर-लिखी बुराइयों को दूर करने का कोई इलाज आप नहीं ढूँढ निकालेंगे और मेरे इस ख़त का आप पर कोई असर न होगा, तो इस महीने की ग्यारहवीं तारीख़ को अपने आश्रम के जितने साथियों को ले जा सकूँगा, उतने साथियों के साथ नमक-संबंधी क़ानून को तोड़ने के लिये क़दम बढ़ाऊँगा। ग़रीबों के दृष्टि-बिंदु से यह क़ानून मुझे सबसे ज़्यादा अन्याय-पूर्ण मालूम हुआ है। आज़ादी की यह लड़ाई ख़ासकर देश के ग़रीब-से-ग़रीब लोगों के लिये है, अतः यह लड़ाई इस अन्याय के विरोध से ही शुरू की जायगी। आश्चर्य तो यह है कि हम इतने सालों तक इस दुष्ट एकाधिकार को मानते रहे। मैं जानता हूँ कि मुझे गिरफ़्तार करके मेरी योजना को निष्फल बना देना आपके हाथ में है। परंतु मुझे उम्मीद है कि मेरे बाद सौ आदमी संगठित होकर इस काम को उठा लेंगे, और नमक-कर के क़ानून को, जो कभी बनना ही न चाहिए था, तोड़कर क़ानून के अनुसार होनेवाली सज़ा को भोगने के लिये तैयार रहेंगे।

अगर संभव होता, तो मैं आपको फ़ुज़ूल ही ज़हमत उलझन में न डालता। मैं आपको किंचित् भी धर्म-संकट में डालना नहीं चाहता। यदि आपको मेरे पत्र में कोई तत्त्व की बात मालूम हो और मुझसे बातचीत करने का-सा महत्त्व आप उसे देना चाहें और इसलिये इस पत्र को छापने से रोकना पसंद करें, तो इस पत्र के मिलते ही तार द्वारा मुझे सूचना दीजिएगा। मैं ख़ुशी से इसे छापना स्थगित रक्खूँगा। किंतु अगर मेरे पत्र की ख़ास-ख़ास बातों को मंज़ूर करना आपको नामुमकिन मालूम होता हो, तो मुझे अपने पथ से लौटाने का प्रयत्न न कीजिएगा, यही प्रार्थना है।

यह ख़त धमकी के लिये नहीं लिखा है, बल्कि सत्याग्रही के सरल और पवित्र धर्म का पालन करने के लिये लिखा है। इसलिये मैं यह पत्र एक अँगरेज़ नवयुवक के हाथों आप तक पहुँचाने का ख़ास तरीक़ा अख़्तियार कर रहा हूँ। यह नवयुवक मित्र भारत की लड़ाई को इंसाफ़ की लड़ाई मानते हैं। अहिंसा में इनकी पूरी श्रद्धा है और मानो ईश्वर ने इस पत्र के लिये ही इन्हें मेरे पास भेज दिया हो, इस तरह ये मेरे पास आ पहुँचे हैं।

आपका सच्चा मित्र—
मोहनदास करमचंद गांधी

× ×

६. महात्माजी की महान् यात्रा

महात्माजी के ऊपर के पत्र का वायसराय महोदय ने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बड़ा ही भद्दा-सा जवाब दिया था। जवाब तो वह क्या था, अच्छी-ख़ासी धमकी थी। इसीलिये १२ मार्च को प्रातःकाल ६॥ बजे महात्माजी ने अपने चुने हुए ७९ स्वयंसेवकों के साथ सत्याग्रह-आश्रम, साबरमती से कूच कर दिया। नमक-क़ानून के विरुद्ध, डांडी-नामक स्थान पर, समुद्र के किनारे, नमक बनाकर, सत्याग्रह प्रारंभ करने। इस महायात्रा के समय स्मरणीय दृश्यों से अहमदाबाद भर-सा गया था। जनता को भय था कि कहीं यात्रा प्रारंभ करते ही महात्माजी गिरफ़्तार न कर लिए जायँ, अतः वह एक बहुत बड़ी संख्या में आश्रम के आस-पास जमा हो गई थी। बहुतेरे लोग तो रात-भर जागते ही रहे। प्रातःकाल होते ही सहस्रों नर-नारियों ने बड़े उत्साह और हर्षोल्लास की ध्वनि के साथ महात्माजी और उनके जत्थे को विदा किया। इटली के सीनर बेनितो मुसोलिनी के काली क़मीज़ोंवाले जत्थे की ऐतिहासिक रोमन-महायात्रा के समान ही महात्माजी के इस खद्दरधारी जत्थे की यह महायात्रा भारतीय इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना रहेगी। किंतु गांधीजी की यह यात्रा मुसोलिनी के रोम-आक्रमण से एकदम भिन्न है। मुसोलिनी तलवार लेकर निकला था, गांधीजी तलवार फेंककर चले। मुसोलिनी एक सड़ियल सरकार से लड़ रहा था, गांधीजी निकले संसार की सबसे बड़ी सरकार से भिड़ने। मुसोलिनी मारने चला था, गांधीजी चले हैं मर मिटने। मुसोलिनी का आदर्श थी तानाशाही, गांधीजी का आदर्श है ग़रीबशाही।

गांधीजी की इस महायात्रा की रीति भी विचित्र ही है। वे अपने जत्थे के साथ गुजरात के कई ज़िलों के गाँवों में से होते हुए डांडी की ओर गए हैं। इस महायात्रा में ३ सप्ताह का समय लगा। गुजरात में आंदोलन तथा प्रचार के लिये गांधीजी की इस यात्रा से बढ़कर दूसरा कोई उपाय नहीं था। यदि सरकार ने निर्दिष्ट स्थान तक पहुँचने से पहले ही महात्माजी को गिरफ़्तार कर लिया होता, तो सत्याग्रह प्रारंभ होने से पहले ही वे इतना काम कर चुकते कि जिसके कारण सरकार के रास्ते में मुश्किलों का पहाड़ आ खड़ा होता। यदि सरकार ने उन्हें अब भी क़ैद कर लिया, तो उसको नेतृत्व-हीन परिस्थिति से देश-भर में ऐसी आग लगेगी कि हिंदोस्तान का बच्चा-बच्चा गांधीजी का स्थान लेने के लिये तैयार हो उठेगा। गुजरात में तो सत्याग्रह की बदौलत ऐसी प्रबलता से उठ खड़ी होगी कि उसके सामने नौकरशाही की सभी चौकड़ी भूल जायगी।

लोग कहते हैं कि नमक बनाकर स्वराज्य कैसे मिलेगा? गांधीजी का यह सत्याग्रह एक पागलपन है, इत्यादि। ऐसे लोगों को पता होना चाहिए कि कोई भी समझदार हिंदोस्तानी नहीं समझता कि बहुत-सा नमक बना लेने से स्वराज्य मिल जायगा। नमक स्वराज्य का छूमंतर नहीं है। सत्याग्रह-संग्राम का उद्देश्य भी नमक बनाना नहीं है। उसका असली उद्देश्य है सरकार की सत्ता को, सरकार के अत्याचारी क़ानूनों को और सरकार के पाशविक दमन को चुनौती देना। यदि नमक-सत्याग्रह से बने हुए नमक को सरकार ने ज़ब्त न किया, तो कुछ ही दिनों में सरकार का नमक-क़ानून एक काग़ज़ का टुकड़ा-मात्र रह जायगा, और यदि उसने नमक ज़ब्त करके सत्याग्रहियों को जेल भेजना प्रारंभ किया, तो उसकी जेलें लाखों सत्याग्रहियों से भर जायँगी। परिणाम दोनो दशाओं में एक ही होगा। देश-भर में एक ऐसी असंतोष और क्षोभ की लहर उठ खड़ी होगी कि जिसके सामने सरकार के अत्याचारी क़ानून तिनके की तरह बह जायँगे। सत्याग्रहियों की सफलता अथवा उनके अपार कष्ट, दोनो ही जनता में सरकार की सत्ता को चुनौती देने का जो भाव उत्पन्न करेंगे, वह भारतीय स्वाधीनता के लिये एक अत्यंत आवश्यक वस्तु होगा। जिस देश में जनता सरकार के अत्याचारी क़ानूनों और दमन की परवा न करके स्वाधीनता की ओर अग्रसर होती है, उसके शुभ दिन आए ही समझने चाहिए। इसी दृष्टि से नमक-सत्याग्रह देश के लिये एक महत्त्व की वस्तु है।

× × ×

१०. सत्याग्रह और मुसलमान

आज जब सारा देश धार्मिक भेद-भाव छोड़कर गांधीजी के सत्याग्रह-संग्राम में सम्मिलित होने के लिये कटिबद्ध हो रहा है, उस समय देश का एक बहुत बड़ा संप्रदाय उसके स्वातंत्र्य-मार्ग में रोड़े अटकाने का प्रयत्न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर रहा है। देश के अधिकांश राजनीतिज्ञ मुसलमान महात्माजी के इस आंदोलन के प्रति उदासीनता या शत्रुता का भाव रखते हैं। एक भी प्रसिद्ध मुस्लिम नेता गांधीजी के साथ नहीं है। अलीभाई तो बरसों से महात्माजी का साथ छोड़ चुके हैं। उन्होंने खुले शब्दों में महात्माजी का बहिष्कार करने के लिये मुसलमानों को उकसाया है। सरदार पटेल की गिरफ़्तारी पर एक भी मुस्लिम नेता ने अफ़सोस नहीं ज़ाहिर किया।

इस बिगड़े दिमाग़ का कारण क्या है? शायद धार्मिक कट्टरता के गहरे रंग, सांप्रदायिक चुनाव के पक्षपात तथा मुल्ला-नेतृत्व के कारण ही देश के मुसलमानों में इस विनाशकारिणी प्रवृत्ति ने स्थान कर लिया है। प्रत्येक प्रश्न पर मुसलमान कोई-न-कोई अड़ंगा खड़ा कर दिया करते हैं। वे सांप्रदायिक पक्षपात के पुराने पचड़े को लेकर सदा अपनी सहानुभूति का नीलाम बोला करते हैं। जो उन्हें सबसे ज़्यादा दाम दे सकता है, वे उसी के हो रहते हैं। उसके तलवे सहलाना उनका कर्तव्य हो जाता है। यदि सरकार उन्हें बड़े-बड़े प्रलोभन दिखाती है, तो सारा मुस्लिम समाज 'गवर्नमेंट बरतानिया' की तारीफ़ों के तराने गाने लगता है, और यदि कहीं गांधीजी ने ख़िलाफ़त और मक्के मदीने के उद्धार की आशा दिला दी, तो फ़ौरन् देश-भर की जमायतुल-उलमाएँ 'सिविल-नाफ़रमानी' गवर्नमेंट के विरुद्ध 'जिहाद' और 'तर्के-मवालात' के फ़तवे दे डालने के लिये तैयार हो उठती हैं। आत्म-प्रतिष्ठा के ऊँचे भाव ही मुस्लिम राजनीति से उठते जा रहे हैं। स्वार्थ और पेट-पूजा ही उसके रंगमंच की प्रधान घटनाएँ हो उठी हैं। सांप्रदायिकता के मुथरे अस्त्र से टकराकर मुस्लिम राजनीति की पैनी धार एक-दम कुंठित-सी हो गई है। क्षुद्रता और विश्वासघात उसके दैनिक अनुभव हैं।

शोक है कि देश के लिये रत्ती-भर भी त्याग किए बिना, राष्ट्रीय युद्ध से कोसों दूर रहकर आज हमारे मुस्लिम भाई राष्ट्रीय नेताओं से 'समझौते की शर्तें' तय करना चाहते हैं। वे कहते हैं "हमारी सहानुभूति का आप क्या दाम देते हैं? हमारी मित्रता के लिये आप क्या रियायतें करेंगे?"

इन मूर्खता-पूर्ण प्रश्नों का केवल एक ही उत्तर हो सकता है कि "हम आपकी इस पतनोन्मुख प्रवृत्ति को व्यर्थ समझौते करके और भी तीव्र नहीं बनाना चाहते, आप चाहे हमारा साथ दें या न दें। हम अपने निर्दिष्ट मार्ग पर अग्रसर होते जायँगे और स्वतंत्र होने पर ही आपसे बात कर सकेंगे।"

इस मुस्लिम मनोवृत्ति के कारण देश की राजनीतिक प्रगति में बाधा अवश्य पड़ेगी, किंतु इसका यह अर्थ नहीं कि देश स्वातंत्र्य-मार्ग पर अग्रसर हो ही न सकेगा। हमारा स्वार्थ-त्याग, हमारे प्रयत्न और हमारी स्वातंत्र्य-प्रियता यदि सच्ची है, यदि हम वास्तव में भारतीयता और राष्ट्रीयता के लिये मर मिटने को तैयार हैं, तो फिर संसार की कोई भी शक्ति हमारे मार्ग में बाधक नहीं हो सकती। सैकड़ों अलीभाई, हज़ारों शफ़ातअहमद और दरजनों शफ़ी, चाहे वे पगड़ी की चट्टानें ही क्यों न हों, हमारे दृढ़-निश्चयी और साहसी पाँवों के नीचे पड़कर धूल हो जायँगे—वह धूल जो हमारे विजयी मस्तकों का शृंगार होगी, हमारे देश की प्यारी रज होगी, और होगी हमारे आहत वीरों की समाधि। तब हम मुसलमानों की इस मनोवृत्ति का स्वार्थपर बदला चुका देंगे। अपने भाइयों की इस भयंकर भूल का, स्वयं अपने अधिकारों का परित्याग करके, हम प्रायश्चित्त करेंगे, और दिखला देंगे कि स्वार्थपरायण ऋषियों की संतान हिंदू जाति आज भी शिवि और दधीचि-जैसा आत्मत्याग प्रदर्शित कर सकती है। तभी हमारे इन तामसिक भाइयों की आँखें खुलेंगी।

× ×

११. पटियाला रंगमंच पर

कुछ दिन हुए हमने महाराजा पटियाला के विषय में कुछ पंक्तियाँ लिखकर जनता का ध्यान उनकी इन हरकतों की ओर आकृष्ट किया था। तब से अब तक उन हरकतों पर दर्जनों विद्युत्-लैंपों का प्रकाश पड़ चुका है। देश-भर के समाचारपत्रों में महाराजा की निर्दिष्ट श्वेत यशःपताका फहरा चुकी है। स्टेट्स-पीपल्स कान्फ़रेंस द्वारा स्थापित पटियाला-पड़ताल-कमीशन ने अपनी जो रिपोर्ट अभी हाल ही में प्रकाशित की है, उससे महाराजा साहब के—नरेंद्र-मंडल के अग्रगण्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चांसलर महाराजा पटियाला के—हिमालय से भी बड़े और सफ़ेद कामों पर काफ़ी प्रकाश पड़ता है। महाराजा की हरकतें ऐसी तेजोमय और दीप्ति-युक्त हैं कि सारे सभ्य-संसार को उनके सामने आश्चर्य से दाँतों-तले उँगली दबा लेनी पड़ी है! लेकिन हमारे विजयी महाराजा—हमारे लज्जा की प्रतिमूर्ति महाराजा—की मूँछ का और शायद पवित्र सिख-धर्म की चिह्न-स्वरूपा—महावीर गुरु गोविंदसिंहजी द्वारा पवित्रिता—दाढ़ी का भी एक बाल तक हिलने नहीं पाया। वे परम विरक्त विदेह के समान अपनी इस यशोगाथा से एकदम उदासीन-से ही हैं। इसी प्रकार अत्याचारी देशी नरेशों की प्रजा-हाज़िम तोंदों को सहलानेवाली ब्रिटिश-सरकार के भी कानों पर जूँ नहीं रेंगी। सरदार वल्लभभाई पटेल की सैकड़ों मील पर होनेवाली हरकतों पर तो उसकी गृध्र-दृष्टि क्षण-भर में जा पड़ी, किंतु पटियाला की परदेनशीन प्रजा पर होनेवाले अमानुषिक अत्याचारों, राक्षसी व्यभिचारों और नारकीय कृत्यों के लिये शायद उसके चार चक्षुओं के लेंसों की 'फ़ोकल लेंग्थ' बिल्कुल ही कम हो गई। ठीक वायसराय की नाक के नीचे सड़नेवाली इस लाश में भी उसे दुर्गंध नहीं मालूम होती। नौकरशाही के स्वार्थ आज दाँव पर हैं, इसीलिये वह अपने सड़े-से-सड़े गुर्गों की भी हिमायत करने के लिये तैयार है। जिन घटनाओं को लेकर अभी थोड़े दिन हुए उसने नाभा, भरतपुर और इंदौर के राज-सिंहासनों को ख़ाली करवा दिया था, उन घटनाओं से सैकड़ोंगुना अधिक भयंकर हरकतों का इस रिपोर्ट में विस्तृत वर्णन होते हुए भी न्याय का ढोंग रचनेवाली भारत-सरकार ने ऐसी चुप्पी साधी है कि जिसकी कोई हद नहीं। कुछ समझ में नहीं आता कि ब्रिटिश-भारत में अमन-चैन और क़ानून का ढोल पीटनेवाली भारत-सरकार क्यों पटियाला-महाराज के ऊपर मुक़द्दमा नहीं चलाती? क्यों उनसे उनकी इन हरकतों का जवाब तलब नहीं करती? और, यदि रिपोर्ट में वर्णित बातें एकदम झूठ हैं, तो प्रिंसेज़ प्रोटेक्शन ऐक्ट के अनुसार कमीशन के मेंबरों पर अभियोग क्यों नहीं लगाती?

रिपोर्ट में वर्णित महाराजा पटियाला के अपराध हैं नर-हत्या, बल-पूर्वक व्यभिचार, स्त्रियों का उड़ाना और जान-बूझकर जनता के नाश के लिये बम तैयार कराना। इन अपराधों का चौथाई हिस्सा भी यदि सत्य हो, तो 'लीडर' के शब्दों में महाराजा पटियाला-जैसा आदमी 'बोरे में बंद करके' ख़बर लेने योग्य है।

× × ×

१२. साहित्य-सम्मेलन, गोरखपुर

जिस साहित्य-सम्मेलन के १९वें अधिवेशन के लिये इतनी अंधाधुंधी मची हुई थी, वह अंततः २री, ३री और ४थी मार्चको गोरखपुर में सानंद समाप्त हो गया। लगभग ५०० प्रतिनिधियों की छोटी-सी भीड़ के कारण कोई बड़ी विघ्न-बाधा नहीं पड़ी। सभापति मित्रवर श्रीगणेशशंकर विद्यार्थीजी थे। आपके सभापतित्व में सम्मेलन के विषाक्त वायुमंडल के कारण किसी को कोई हानि नहीं पहुँची। जिन आपत्तियों और संग्रामों की आशंका थी, उनमें से एक भी वहाँ नहीं दिखाई दिया। विद्यार्थीजी की दृढ़ता और निर्भीकता ही इसका कारण है।

स्वागत का प्रबंध राजा साहब पडरौना—सभापति स्वागतकारिणी समिति—की ओर से किया गया था। परिस्थितियों को देखते हुए सारा प्रबंध संतोष-जनक था।

राजाबहादुर श्रीराजा व्रजेंद्रनारायणराय
पडरौना-नरेश

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजा बहादुर राजा ब्रजेंद्रनारायण राय पडरौना-नरेश का भाषण गोरखपुर के हिंदी-साहित्य-सेवा के इतिहास की दृष्टि से बहुत ही महत्त्व-पूर्ण था। आपने अपने भाषण में गोरखपुर के कई अज्ञात हिंदी-सेवियों का परिचय दिया था।

सभापति श्रीगणेशशंकरजी का भाषण भी बहुत ही स्फूर्तिदायक, ओजस्वी और मार्मिक था। उसमें कई व्यावहारिक समस्याओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया था। हिंदी-भाषा के राजनीतिक महत्त्व पर तो विद्यार्थी-जी के भाषण से बहुत ही अधिक प्रकाश पड़ता है। उनके भाषण का एक-एक शब्द हृदय-स्पर्शी था। कोरे साहित्यिकों को उनके उस भाषण में नायिका-भेद के लक्षण, रसों का विवेचन, छंदोबंध के प्रकार, रहस्यवाद और मायावाद, कायावाद और छायावाद की चों-चों चाहे न मिले—उन्हें उसमें एकदम नीरसता ही दिखाई पड़े—किंतु हमारी समझ में तो वह अत्यंत सुंदर, सामयिक और व्यावहारिक था।

साहित्य-प्रदर्शिनी अवश्य एक देखने की चीज़ थी। कई पुस्तकें तो ४०० वर्ष से भी अधिक पुरानी थीं।

कवि-सम्मेलन एक भड़ौआ था। विविध भाव-भंगी से, भोंड़ी भाँड़-रागिनी में, पढ़ी गईं भद्दी कविताओं ने हिंदी-कवि-सम्मेलन का भंडाफोड़-सा कर दिया था। अजीब ही दृश्य था! जिन्होंने कभी लखनऊ के मंकी-ब्रिज पर होते हुए कपि-सम्मेलनों का दृश्य देखा है, वे ही उपर्युक्त कवि-सम्मेलन की अनुपमता, उपादेयता और उपयोगिता का अनुमान लगा सकते हैं। पूरे कवि-सम्मेलन में हमें तो केवल ४-५ सज्जनों की ही कविताएँ पसंद आईं। चतुर्वेदीजी का छायावाद का ख़ाका भी बस ख़ूब ही था।

देश-भर को कर्तव्य का पाठ पढ़ानेवाले संपादकों का सम्मेलन भी बस देखने योग्य था। ऋष्यमूक पर्वत पर रहनेवाले निर्वासित सुग्रीव की प्रसिद्ध परिषद् के समान—जिसका सीता-हरण के समय दर्शन करने का रावण को सौभाग्य प्राप्त हुआ था—संपादक-सम्मेलन में भी ८ या १० संपादक श्रीपं० लक्ष्मणनारायणजी गर्दे को घेरकर बैठे हुए थे। बेचारे वृद्ध गर्देजी को फँसाकर न-मालूम किन महाशय ने यह मज़ाक़ का मसविदा तैयार किया था। ख़ैर, १०-१५ मिनट में रस्म पूरी हो गई, यही क्या कम था।

अच्छा ही हुआ, जो २ या ३ दिन तक बेमुरा अलाप चुकने के बाद सम्मेलन के प्रतिनिधियों को एक संगीत सुनने को मिला। अपने और विष्णुदिगंबर के संगीत में ज़मीन-आसमान का अंतर एक प्रतिनिधि-गणों के हर्ष की सीमा नहीं रही। संगीत की मधुर मूर्च्छनाओं में पारस्परिक विरोध इस प्रकार भुला देने के लिये विष्णुदिगंबरजी धन्यवादार्ह हैं।

ख़ैर, सम्मेलन निर्विघ्न समाप्त हो गया, यही कम बात है। अनेक लोग तो उसकी अंत्येष्टि का सामान लिए बैठे थे, पर दुर्भाग्य से सम्मेलन मरा ही नहीं। मैं तो अगले साल कलकत्ते की सैर करने जा रहा हूँ—वहाँ उसका निमंत्रण है।

× × ×

१३. इंपीरियल बजट

पिछले कुछ दिनों एसेंबली में बजट पर बहस हो रही है। अगले वर्ष के लिये भारत-सरकार के अर्थ-मंत्री सर जॉर्ज शुस्टर ने जो बजट पेश किया था, उसमें ५ करोड़ रुपए का घाटा दिखाया गया है। इस घाटे की रक़म को पूरा करने के लिये सर जॉर्ज ने कुछ नए कर लगाने की तजवीज़ की है। आय की मदों की वृद्धि करने तथा व्यय को कम करने की तरकीबें बिना ढूँढे ही उन्होंने नए कर लगाने की सरकार की पुरानी नीति का ही अनुसरण किया है। आय की सबसे बड़ी मद रेलवे, किंतु इस साल रेलवे से होनेवाली आय में बहुत बड़ी कमी कूती गई है; यद्यपि इस प्रकार की का कोई कारण मालूम नहीं पड़ता। सरकार ने दर्जे के मुसाफ़िरों के आराम के लिये कुछ भी किया है, न उसने अब तक रेल के भाड़े में ही कोई का परिवर्तन किया है, तब फिर मालूम नहीं कि से होनेवाली इस करोड़ों रुपए की आय में कमी कूती गई है। उधर सरकार के ख़र्चे को देखिए, तो शैतान की आँत की तरह या सुरसा के मुँह की दिन-ब-दिन बढ़ता ही जाता है। फ़ौजी ख़र्च में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इतना चीख़ने-चिल्लाने पर भी कोई कमी नहीं की गई, न सरकार ने अपने प्रबंध-विभाग में किफ़ायतशारी करने का ही इरादा किया है। ख़ून और पसीना एक करके दिन-रात मेहनत करनेवाले किसानों का पैसा वह इस बेदर्दी से बहाती है कि जिसका कोई हदो-हिसाब नहीं। उसकी इस फ़ुज़ूलख़र्ची और मूर्खता का फल भोगना पड़ता है उन ग़रीब किसानों को जिन्हें भर-पेट खाने तक को नहीं मिलता। सरकार के बड़े अफ़सरों पर उसका कोई असर नहीं होता, उनकी जेबों में प्रतिमास उतने ही रुपए पहुँचा दिए जाते हैं, जितने उन्हें पहले मिलते थे, चाहे देश में लाखों आदमी भूखों मरें या जहन्नुम में जायँ। सरकार अपनी इस हृदय-हीनता द्वारा अपने लिये एक ऐसी गहरी क़ब्र खोद रही है कि जिससे वह फिर उठकर न आ सकेगी। उसकी इस विनाशकारिणी अर्थ-नीति तथा प्रति वर्ष घाटा दिखलानेवाले बजट के कारण जनता में भारी असंतोष की मात्रा बढ़ती जा रही है। नमक-कर-जैसे ग़रीबों पर पड़नेवाले टैक्सों के कारण साधारण, अपढ़ हिंदोस्तानियों में भी लोभ और अशांति के लक्षण प्रकट हो चले हैं। ऐसी दशा में क्रांति और विद्रोह के प्रचारकों की बन पड़ती है। वे देश-भर में फैले हुए असंतोष से लाभ उठाकर जनता को सशस्त्र क्रांति के लिये उकसाते हैं, उसकी उत्तेजित प्रकृति को और भी भड़काकर सरकार के विरुद्ध युद्ध करने और ख़ून की नदियाँ बहाने के लिये उसे तैयार कर सकते हैं। फ्रांस की राज्य-क्रांति और रूस की जन-क्रांति का प्रधान कारण सरकार की विनाशकारिणी अर्थ नीति ही थी। लगातार कई वर्षों से घाटेवाले बजटों और बढ़ते हुए टैक्सों से साधारण जनता इतनी तंग आ गई थी कि इस प्रकार की निरंकुश प्रणाली और हृदयहीन सरकार का ख़ात्मा कर देने के सिवा उसके पास और कोई उपाय ही नहीं रह गया था। अतएव उसने बादशाह लुई का सिर काट लिया, और ज़ार को गोली मार दी।

क्या हमारे अर्थ-मंत्री भी अपनी मूर्खता-पूर्ण नीति से भारत-सरकार को उसी भयंकर मार्ग पर नहीं ले जा रहे हैं? क्या भारत-सरकार स्वयं जान-बूझकर क्रांति का आवाहन नहीं कर रही है?

× × ×

१४. इंपीरियल प्रिफ़रेंस

बजट को इस ५ करोड़ की कमी को पूरा करने के लिये हमारे अर्थ-मंत्री ने जहाँ और कर लगाए हैं, वहाँ बाहर से आनेवाले सूती माल पर भी एक विचित्र टैक्स बैठाकर असेंबली में एक नया ही गुल खिला दिया है।

अब तक बाहर से आनेवाले सूती माल पर ११ प्रतिशत आयात-कर लगता था। किंतु अब उसे बढ़ा-कर १५ प्रतिशत कर देने के लिये अर्थ-मंत्री ज़ोर लगा रहे हैं। ब्रिटिश-साम्राज्य के अतिरिक्त अन्य देशों से आनेवाले सूती माल पर तो वे २० प्रतिशत आयात-कर लगाने के पक्ष में हैं। इन दोनो बातों से भारतीय व्यापार को लाभ अवश्य पहुँचेगा। अब तक भारतीय बाज़ार में हिंदोस्तानी कपड़े को विलायती और जापानी कपड़े का मुक़ाबला करना पड़ता था। आयात-कर कम होने के कारण यह विदेशी कपड़ा हिंदोस्तानी कपड़े से सस्ता बिकता था, किंतु अब उसपर कर बढ़ जाने से यह बात असंभव हो जायगी। बंबई की मिलों को तो इससे बहुत सहायता मिलेगी। उनका कारबार उन्नति करेगा, और वे भारतीय बाज़ार में अपना माल आसानी से खपा सकेंगी। इसीलिये बंबई के मिल-मालिक इस संरक्षण-कर को पास कराने में सरकार का साथ दे रहे हैं। सर पुरुषोत्तमदास-ठाकुरदास ने तो खुल्लमखुल्ला इस बात को स्वीकार किया है।

किंतु सरकार की इस भारत-हितैषिता में एक गहरी चाल है। वह भारतीय बाज़ारों से जापान को निकालना चाहती है। लंकाशायर और मांचेस्टर के माल का सब से बड़ा प्रतिद्वंद्वी जापान ही है। वह विलायती कपड़े से भी कम दामों पर अपना कपड़ा देता है। इसलिये लंकाशायर की मिलों में ताले लटकना प्रारंभ हो गए हैं। इधर स्वदेशी के चक्कर ने भी इँगलैंड के व्यापार को गहरे में धकेल दिया है। एशियाई होने के कारण हिंदोस्तानी लोग जापानी माल को उतनी घृणा की दृष्टि से नहीं देखते कि जितना इँगलैंड के माल को। परिणाम यह हुआ कि इँगलैंड का कपड़ा भारतीय बाज़ारों से ठोकर लगाकर निकाल बाहर किया जा रहा है। अतएव भृगुपदाहत विष्णु भगवान् की तरह ब्रिटिश-सरकार भी भारतीय व्यापारियों के चरण चूमने के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिये तैयार हो उठी है। वह चाहती है कि हिंदोस्तान लंकाशायर का माल ख़रीदे, जापान का नहीं। इसी-लिये लंकाशायर के माल पर उसने केवल ४ प्रतिशत आयात-कर बढ़ाने की सिफ़ारिश की है, किंतु जापानी माल पर वह ६ प्रतिशत आयात-कर बढ़ाना चाहती है। ब्रिटिश-सरकार की इस चालबाज़ी से असेंबली में दो दल हो गए हैं। एक दल है बंबई के मिल-मालिकों और उनके हिमायतियों का, और दूसरा दल है नेशन-लिस्टों और भारत के अन्य मिल-मालिकों का। पहले के नेता हैं सर पुरुषोत्तमदास-ठाकुरदास, और दूसरे के नेता हैं मालवीयजी।

बंबई के मिल-मालिक चाहते हैं कि लंकाशायर को नुक़सान न पहुँचाया जाय, केवल जापान को ही हिंदोस्तान से निकाल दिया जाय। इसका कारण यह है कि बंबई की मिलों को लंकाशायर के कपड़े से मुक़ाबला नहीं करना पड़ता, क्योंकि वह बहुत पतले सूत का और ऊँचे क़िस्म का होता है, और बंबई का कपड़ा मोटा और मध्यम श्रेणी का। इन दोनो कपड़ों में इतनी प्रतिद्वंद्विता नहीं कि जितनी बंबई और जापान के कपड़ों में। वे दोनो लगभग एक ही श्रेणी के होते हैं, अतएव बंबई के मिल-मालिक जापान को ही निकालने के पक्ष में हैं, क्योंकि इससे उनकी स्वार्थ-सिद्धि होती है। लंकाशायर उनका कुछ नहीं बिगाड़ता, इसलिये वे उसे बना रहने देना चाहते हैं। किंतु नेशनलिस्ट और अन्य दलों के नेता दोनो विदेशी कपड़ों से एक-सा ही व्यवहार करने के पक्ष में हैं। वे कहते हैं कि यदि लंका-शायर भी हिंदोस्तान से निकाल दिया जायगा, तो बंबई की मिलें बारीक कपड़ा तैयार करने के लिये मज-बूर हो जायँगी, और इस प्रकार देश के आभ्यंतरिक व्यापार की उन्नति होगी। किंतु बंबई के मिल-मालिक कहते हैं कि अभी हम यदि बारीक कपड़ा बनाना प्रारंभ करेंगे, तो हमें बरसों तक नुक़सान उठाना पड़ेगा। उस नुक़सान को उठाने के लिये हम तैयार नहीं। इत्यादि। इसीलिये वे अपने वर्तमान स्वार्थ की रक्षा करने के उद्देश्य से देश-द्रोह करने पर उतारू हो उठे हैं। सरकार ने भी लंकाशायर से चुपके-चुपके षड्यंत्र रचकर समझौता कर लिया है। इस प्रकार ये दोनो भारत-विद्रोही दल ब्रिटेन के माल को तरजीह देने, उसे अधिक पसंद करने, के पक्ष में हैं। एसेंबली के मुसलमान मेंबर भी उनका साथ दे रहे हैं।

शायद उन्हें इस बात का ख़याल नहीं कि उनकी इस नीच हरकत से हिंदोस्तान का जो बुरा होगा, सो तो होगा ही, भारत और जापान के बीच सदा के लिये एक शत्रुता की गाँठ बँध जायगी, जो सदियों तक खुल न सकेगी। जापान हमारा पड़ोसी है। स्वतंत्र भारत के साथ उसका व्यापारिक और अंतरराष्ट्रीय संबंध स्था-पित होगा ही, ऐसी अवस्था में अपने दरवाज़े पर ही शत्रु बना लेना कभी भी बुद्धिमत्ता-पूर्ण नहीं कहा जा सकता। इँगलैंड के साम्राज्यवाद के हाथ में इस प्रकार कठ-पुतली बनकर खेलने से हमारे और जापान के बीच एक गहरी खाई खुद जायगी, और स्वतंत्र भारत के भविष्य में एक और बड़ी कठिनाई आ उपस्थित होगी।

इँगलैंड तो चाहता ही है कि किसी प्रकार जापान का व्यापार नष्ट हो जाय। एशिया में बढ़ते हुए जापान के व्यापार और प्रभाव को वह सहन नहीं कर सकता। उसका सर्वद्वेषी साम्राज्यवाद जापान की उन्नति को देख ही नहीं सकता। इसीलिये वह समय असमय जापान का अनिष्ट चिंतन किया करता है। किंतु हम भारतीय क्यों इँगलैंड के हाथ में नाचें? हम क्यों इँगलैंड के लिये अपने रास्ते में काँटे बोएँ? अगर लंका-शायर भूखों मरता है, तो मरे। उसने हमारे साथ कोई रिआयत नहीं की, बल्कि उसने हमारा रक्त बड़ी बेदर्दी से चूसा है। हमारे व्यापार का समूल नाश उसी ने किया है। तब फिर वह किस मुँह से हमारी सहानुभूति चाहता है? रिआयत चाहने का क्या अधिकार है? सरकार की दुरंगी चाल के विरोध में इसीलिये देश-पूज्य मालवीयजी और उनके ८ साथियों ने एसेंबली से इस्तीफ़ा दे दिया है।

नोट—इस अंक के ३१२ पृष्ठ की तीसरी पंक्ति में पाठक, कृपया 'लंबी' के स्थान पर 'तन्वी' पढ़ें। सं०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. आँखें (कविता)—[लेखक, पं० जगदंबा-प्रसाद मिश्र "हितैषी" ३७३

२. स्वर्गीय पं० श्रीधर पाठक के संस्मरण—[लेखक, श्रीयुत कालिदास कपूर एम्० ए० ३७४

३. अग्नि—[लेखक, श्रीयुत अवधवासी सीताराम ३७७

४. गुरुकुल काँगड़ी का क्रीड़ा-विभाग (सचित्र)—[लेखक, श्रीसर्वमित्रजी, कुल-मंत्री गुरुकुल-विश्वविद्यालय... ... ३८१

५. डाका (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत कृष्णानंद गुप्त ३९०

६. श्रीवियोगी हरि—[लेखक, श्रीयुत सोमनाथ गुप्त बी० ए० ... ... ३९२

७. गीत (कविता)—[लेखक, पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" ३९७

८. नमक—[लेखक, श्रीयुत मोहनलाल बड़जात्या ३९८

रजिस्टर्ड ! भारत-सरकार से !! रजिस्टर्ड !!!

मुरादाबाद-प्रदर्शिनी से उत्तमता के लिये

रजत-पदक से सम्मानित

एक महात्मा द्वारा प्राप्त

सूर्यमार्क

ट्रेड मार्क

जन्मघुटी

बच्चों के हर प्रकार के रोगों में लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा कीजिए और अपने बच्चों को रोगों से बचाइए।

क़ीमत बड़ी शीशी ॥)

,, मँझली शीशी ।-)

,, छोटी शीशी ≡)

पं० मुरारीलाल ऐंड कं० संभल (यू० पी०)

इंजन मार्का की असली रेलवे

"रेग्यूलेटर वाच"

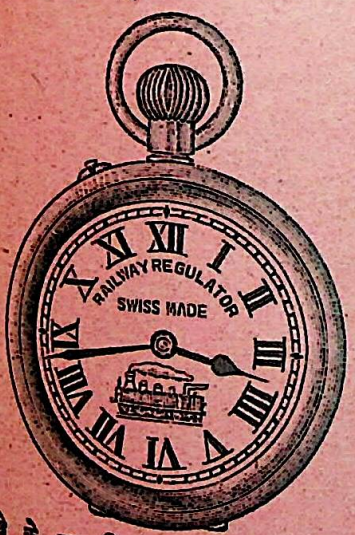

गारंटी आठ साल।

उम्दा क़िस्म।

रेलवे के मुलाज़िम और जेंटिलमैन इसको इसलिये पसंद करते हैं कि यह बहुत ख़ूबसूरत, मज़बूत, पायदार, ठीक वक़्त देनेवाली और बिगड़ने का नाम न लेनेवाली घड़ी है। घड़ी, बक्स और ज़ंजीर-समेत ३।=) तीन रुपया छः आना। वेस्टर्न वाच एजेंसी, लुधियाना, पंजाब।

Western Watch Agency
Ludhiana (Punjab)

हिंदुस्तानी एकेडेमी संयुक्त-प्रांत द्वारा प्रकाशित व्याख्यानमाला

(१) मध्यकालीन भारत की सामाजिक अवस्था

व्याख्यानदाता—अल्लामा अब्दुल्लाह यूसुफ़अली एम्० ए०, एल्-एल्० एम्०, सी० बी० ई०। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १०० पृष्ठों का मूल्य उर्दू अथवा हिंदी केवल १।)

(२) मध्यकालीन भारतीय संस्कृत

व्याख्यानदाता—रायबहादुर महामहोपाध्याय गौरीशंकर-हीराचंद ओझा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के २३० पृष्ठों और २४ हाफ़टोन चित्रों-सहित का मूल्य केवल ३)

(३) कविरहस्य

व्याख्यानदाता—महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगास्वरूप झा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १२० पृष्ठों का मूल्य केवल १।)

मिलने का पता—जनरल सेक्रेटरी हिंदुस्तानी, एकेडेमी यू० पी०, इलाहाबाद।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

९. लोहे का चना (व्यंग्य-चित्र) ... ४०४
१०. जयपुर की जानने योग्य ज़रूरी बातें—[लेखक, पं० हनूमान् शर्मा ... ४०५
११. परिवर्तन (कहानी)—[लेखक, प्रोफ़ेसर बाबूराम सक्सेना एम्० ए० (लंदन से) ... ४१०
१२. ब्रिटिश-पार्लामेंट के सदस्यों की दशा—[लेखक, श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा ... ४१५
१३. प्रभाती (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "गुलाब" ४१८
१४. शिशु-शिक्षा-शैली—[लेखक, साहित्यशास्त्री पं० माहनवल्लभ पंत बी० ए०, विशारद ... ४१९
१५. मारवाड़-नरेश महाराजा अजित-सिंह (२)—[लेखक, साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ ४२५
१६. स्वतंत्रता का स्वागत ! (कविता)—[लेखक, श्रीयुत हरिशंकर शर्मा (आर्यमित्र संपादक) ४३४
१७. नाक की चिंता (व्यंग्य-चित्र) ... ४३५
१८. संगीत-साधना—[संपादिका, कु० गोपाल-

साग, तरकारी, फूल आदि के उत्तम और परीक्षित बीज सदा मिलते हैं। सचित्र सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए। पत्र-व्यवहार अँगरेज़ी में करें।

पता—पैस्टनजी पो० पोचा एंड सन, पोस्टबक्स ५५, पूना।

RAM LAL

DENTIST

27, AMINABAD PARK, LUCKNOW

All Sorts of Dental Works

ARE EXECUTED PROMPTLY

—AT—

Reasonable Rates

रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

अमृतगुटिका (खेरा नं० ३०)

अशक्त स्त्री-पुरुषों के लिये ताक़त की बढ़िया दवा

इसके सेवन से कमर का दर्द, पिंडलियों का दुखना, आँखों की कमज़ोरी, बदन की सुस्ती, काम-काज में दिल न लगना, नया या पुराना प्रमेह, बदन और इंद्रियों की शिथिलता, मुख, बग़ल या पेशाब के रास्ते से वीर्य स्खलित होना, शौच के समय धातु गिरना, मुख ख़ाली पड़ जाना, चेहरा शुष्क इत्यादि बहुत-से रोग दूर करके जवानी का मज़ा लूटने के लिये बदन में ताक़त और ज़ोरदार होता है। हरएक मौसम में उपयोग कर सकता है। दाम ३२ टिकियों की एक ट्यूब का २) डाक-ख़र्च अलग। सूचीपत्र मुफ़्त मँगा देखिए। जगह दवाफ़रोशों के यहाँ भी मिलेगी।

पता—जे० एन्० शेठना,

मु० पो० नडीआद (गुजरात)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवी "हिंदी-प्रभाकर" जालंधर नगर ; स्वरकार, भक्त मंगलरामजी ४३६
११. कुसुम-कुंज—[लेखकगण, श्रीयुत शिवनंदनसहाय, श्रीयुत रत्नांबरदत्त चंदोला, श्रीयुत रामसिंहासनसिंह, श्रीयुत "प्रभात", श्रीयुत उमेशचंद्र पंत, श्रीयुत लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी, श्रीमती सावित्रीदेवी गर्ग और श्रीयुत पद्मकांत मालवीय ४३८
१०. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखक, श्रीयुत नाथूराम शुक्ल ४४७
११. स्त्री-समाज—[लेखिका, कु० गोपालदेवी "हिंदी-प्रभाकर" ४५३
१२. समाज-सुधार—[लेखक, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ... ... ४५६
१३. व्यायाम—[लेखक, श्रीयुत गणेशदत्त शर्मा गौड़ 'इंद्र' ४५९
१४. पाक-शास्त्र—[लेखिका, कुमारी कमलादेवी चतुर्वेदिन ४६६

"श्वेतकुष्ठ एक दिन में – – – – – जड़ से आराम"

नहीं तो कुल क़ीमत वापस। विश्वास न हो, तो प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लें। दाम फ़ी बक्स ३)

"एस्० के० चिकित्मक कार्यालय"

नं० २१, दरभंगा (बिहार)

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय
लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, बेवाची, कस्तूरी, सूँगा आदि से बनाई गई हैं। इसको अलग-अलग या २ से ७-तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है। रक्त साफ़ होता है तथा उसकी चाल अबाध्य होती है। खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और ख़ून को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ २-४ गोलियाँ लीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम २२० गोलियों की डाक का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥), १२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित ५≡)

मिलने का पता—
श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर।

बिलकुल मुफ़्त !

ब्रह्मचर्य, विद्याभ्यास व विवाह-क्रम आदि विषयों की उपयोगिता समझाकर संसार को सुखमय बनाने का रास्ता बतानेवाली वैद्य-विद्या पुस्तक बिना डाक-महसूल बिलकुल मुफ़्त मिलती है, मँगवाइए !

मदनमंजरी फ़ार्मेसी
जामनगर (काठियावाड़)

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र
जगत्-विख्यात

Regis-tered 'कौनटैक्स' रजि-स्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता, जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं वे 'कौनटैक्स' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १॥) रु० डाक-ख़र्च ।=)

पता—आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

२५. शिशु-पालन—[लेखक, श्रीयुत अत्रिदेव गुप्त ४६७

२६. गृह-चिकित्सा—[लेखिका, श्रीमती कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव ४७०

२७. पुस्तक-परीक्षा—[लेखकगण, श्रीयुत "निराला", पं० आद्यादत्त ठाकुर, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा और श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा ४७१

२८. संपादकीय ४७६

पी० के० सेन ऐंड संस का

ड्रग और केमिकल वर्क्स,

हेड ऑफ़िस—चिटागांग।

शाखा—८६ दशाश्वमेध, बनारस।

पी० के० सेन का "चालमूगरा मलहम"—हर प्रकार के चर्मरोग की रामबाण औषधि। दाद में आराम होता है। बड़ी डिब्बी ॥=), छोटी =)

पी० के० सेन का "चालमूगरा साबुन"—औषधि-मिश्रित ख़ुशबूदार, सबसे अच्छा साबुन। रोज़ाना इस्तेमाल से चर्मरोग नहीं होता। मूल्य ॥)

पी० के० सेन का "चालमूगरा तैल"—असली कच्चा चालमूगरा तैल। कोढ़ की सबसे अच्छी दवा। दाम १॥)

पी० के० सेन का "फ्रीव्हरेक्स"—हर क़िस्म के बुख़ार की लाजवाब दवा। मूल्य १) शीशी।

पी० के० सेन की "शक्ति पिल्स"—धातु-दौर्बल्य नामर्दी दूर करता है। मूल्य १॥) शीशी।

पी० के० सेन का "शोराब"—सबसे बढ़िया ख़ुशबूदार तैल। मूल्य ॥=)

To be had of :—

P. K. SEN & SONS.,

MERCHANTS,

Chittagang.

दवाइयों में ख़र्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिये "अनुभूत योगमाला" पाक्षिक पत्रिका का नमूना मुफ़्त मँगाकर देखिए।

पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला

ऑफ़िस, बरालोकपुर, इटावा।

सूज़ाक की हुक्मी दवा

मेह-मर्दन चूर्ण

पेशाब में जलन होना, पेशाब रुक-रुककर आना, पेशाब में रसी का गिरना वग़ैरा प्रमेह-संबंधी तमाम दर्द नाबूद करके पेशाब साफ़ लाता है; फ़ी डिब्बा रु० १)

अंडवृद्धिहर चूर्ण

पोता बढ़ जाने की शर्तिया दवा। फ़ी डिब्बा ३)

राजवैद्य नारायणजी केशवजी

हेड ऑफ़िस—जामनगर (काठियावाड़)

जनरल एजेंट—निगम मेडिकल हॉल, नाला फ़तेगंज

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अखबार जिसमें कि यह विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

श्वेतकुष्ठ की फ़क़ीरी जड़ी

प्रिय पाठकगण, एक रोज़ में सिर्फ़ तीन ही बार के लेप से सफ़ेद दाग़ एकदम आराम न हो, तो दूना मूल्य वापस। जो चाहें, एक आने का टिकट भेजकर प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। मूल्य ३) रु०। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

वैद्यवर पंडित कन्हैया मिश्र

मैनेजर बिहार-औषधालय

नंबर १४, मधुबनी, ज़ि० दरभंगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खुल गया ! खुल गया !! खुल गया !!!

हमारा चित्रकला-विभाग

(Our Fine Art Department)

समाचार-पत्रों, मासिक पत्रों तथा पुस्तक-प्रकाशकों के लिये सब प्रकार के चित्रों, कार्टूनों इत्यादि के डिज़ाइनों का प्रबंध हो गया !

अगर आपको छोटे या लाइफ़-साइज़ में अपनी जीती-जागती तस्वीर बनवानी हो, तो हमारे पास ऑर्डर भेजिए। उचित मूल्य ही लिया जायगा। बुरे से भी बुरा फ़ोटो क्यों न हो, हम उसका रंगीन या सादा इन्लार्जमेंट, हर साइज़ में, तैयार कर देंगे। वाटर-कलर या ऑयल-कलर का काम सिर्फ़ हमीं भारतवर्ष-भर में आपको, ऐरोग्राफ़-मशीन (Airograph Machine) से, बहुत सुंदर रूप में, बनाकर दे सकते हैं।

डिज़ाइन				फ़ोटो इन्लार्जमेंट १० × १५ इंच		
रंगीन चित्र	...	२०) से १००) तक		ऐरोग्राफ़ से तैयार किया हुआ	सापिया या ब्लैक सादा	१०)
सादा एकरंगा चित्र		१०) से २५) „			„ „ „ रंगीन	२०)
लाइन-वर्क	...	६) से २०) „		पांटग ऑयल-कलर	... ...	३०)

पार्ट्रेट

ऑयल-कलर लाइफ़ साइज़	मज़बूत कैनवेस पर	...	...	१०००)
„ „ बस्ट	„ „	...	...	२००)

नोट—बड़े इनलार्जमेंटों को क़ायम असल फ़ोटो देखकर बतलाई जा सकती है।

Manager, The Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

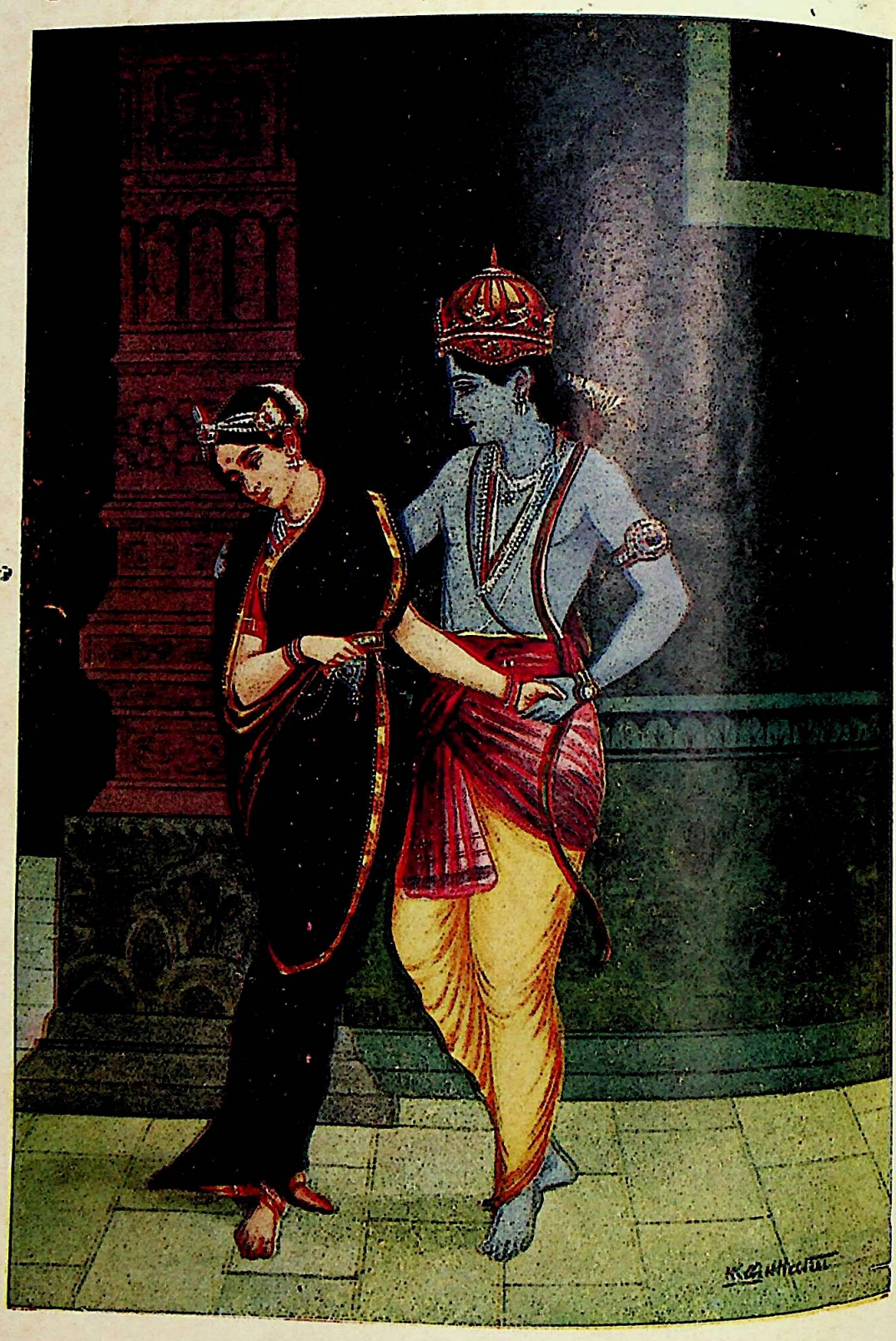

सीता का हठ

[चित्रकार—श्रीकाशिनाथ-गणेश खातू]

देखि दसा रघुपति जिय जाना, हठि राखे नहिं राखिहि प्राना।
कहेउ कृपालु भानु-कुल-नाथा, परिहरि सोच चलहु बन साथा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष ३ खंड २	वैशाख, ३०७ तुलसी-संवत् (१९८७ वि०)— मई, १९३०	संख्या ४ पूर्ण संख्या ३४

आँखें

[पं० जगदंबाप्रसाद मिश्र "हितैषी"]

सिकता, सिता या शरदाभ्र, सुधा, सौध-सो ये,
श्वेतता नहीं है सुरसरि सुखदेनी हैं;
सौदामिनी, शोणित या शुक-चोंच, सिंदुर-सी
लाली नहीं सरस्वति स्वर्ग की निसेनी हैं।
कालकूट, काल, केतु, कोयल या कोयला-सी,
काली नहीं कालिंदी अखिल अघ-छेनी हैं;
आँखें नहीं, प्रेमी तारने को प्रेम-संगम में,
पलक-प्रयाग में तरंगित त्रिवेनी हैं।

इनमें अरुणिमा उषा की राग-रंजित है,
ब्राह्मी-सी विराजी प्रभा लेकर प्रवाल की;
वरुणी बाघंबर पै श्वेता शांभवी-सी बैठी,
विभा माध्याह्निको सूर्य-रश्मियों के जाल की।
है "हितैषी" शोभित इन्हीं में कृष्णा वैष्णवी-सी,
कालिमा कुहू के सांध्य-गगन विशाल की;
आँखें मनोहारिणी हैं या त्रिमूर्तिधारिणी ये,
तारिणी त्रिलोक की त्रिसंध्या हैं त्रिकाल की।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय पं० श्रीधर पाठक के संस्मरण

[श्रीयुत कालिदास कपूर एम्० ए०]

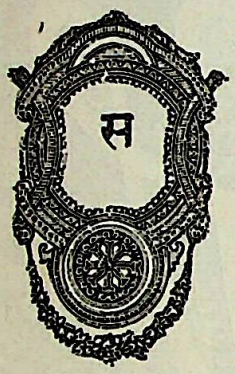

न् १९१४ की बात है : लखनऊ में पंचम हिंदी-साहित्य-सम्मेलन होनेवाला था। उस समय कालीचरण हाई-स्कूल में मैं असिस्टेंट मास्टर था। श्रीयुत श्यामसुंदरदास हेडमास्टर थे। बहुत कुछ वाद-विवाद के पश्चात् स्वागत-कारिणी समिति ने निश्चय किया कि साहित्य-सम्मेलन कालीचरण हाई-स्कूल में ही हो।

सुनने में आया कि पं० श्रीधरजी पाठक इस बार सम्मेलन के सभापति का आसन ग्रहण करेंगे। पाठकजी के विषय में बातचीत होने लगी। श्यामसुंदरदासजी ने एक बार कहा कि पाठकजी अपने वक्तव्य की तैयारी कर रहे हैं, और पूछ रहे हैं कि आपके शब्द-कोष में 'विमल बी० ए० पास' के भी कहीं अर्थ लिखे हैं। मैंने सोचा, ये साहित्य-दिग्गजों की चोटें हैं। मालूम नहीं, बाबू साहब ने कोई उत्तर लिखा भी।

दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पाठकजी उस समय दमे से परेशान थे। स्कूल के पड़ोस ही एक बँगले में ठहराए गए। उस समय चौक में शिक्षित तथा अर्ध-शिक्षित नवयुवक-मंडली की एक सभा थी। नाम था हिंदू-यूनियन-क्लब। इस क्लब के कुछ सदस्य पाठकजी की सेवा के लिये नियत हुए। पाठकजी के साथ उनके दोनो सुपुत्र भी थे। उस समय वे किसी स्कूली कक्षा के विद्यार्थी थे। पाठकजी उनसे अक्सर अँगरेज़ी में बातचीत किया करते थे। यह देखकर हमें आश्चर्य होता था। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति को अँगरेज़ी से इतना प्रेम! हमें अभी पाठकजी से कोई विशेष परिचय प्राप्त न था। जितनी बुद्धि थी, वैसी आलोचना भी थी।

सम्मेलन हुआ। पाठकजी के अस्वस्थ होने के कारण उनका वक्तव्य बा० श्यामसुंदरदास ने पढ़ा। पाठकजी कवि तो थे ही। इसलिये अपना अभिवादन पद्य में ही किया—

अहो विबुध-वर-बृंद,
सुजन, श्रीमत, पूज्य, प्रिय;
भारत-भारती-सुअन,
भुवन जस भनित अद्वितिय।
आरज-गौरव-रूप,
आर्य-जीवन-अनूप-धन;
आर्य-बंस-अनुरूप,
अखिल कृतकार्य आर्यगन।
सब बिधि सुघर सुजान,
विविध विज्ञान-ज्ञान-निधि;
हिंदी-गर्व-गुमान,
प्रान-सर्वस्व, सर्वनिधि।
निज भाषा हित बिहित,
सतत व्रत अमित प्रेमश्रम;
सम्मेलन संगठित सुहृद
संगम हृदयंगम।
कवि कोविद वर सबहिं,
सूर हरिचंद चंद-सम;
करिय सदय स्वीकार
बंधुगन, अभिवंदन मम।

एक तो ललित लेखनी-लिखित वक्तव्य, दूसरे श्यामसुंदरदासजी के पढ़ने का ढंग। उपस्थित जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा। बाबू साहब ने मंच से उतरते ही कहा—"वाह, क्या वक्तव्य था! एक काव्य!" मुझे जो बात खटकी, वह उसमें संस्कृत-शब्दों की बहुलता थी। परंतु आलोचना करने का साहस न था।

अंतिम दिन प्रातःकाल हिंदू-यूनियन-क्लब के सदस्यों के मध्य पाठकजी ने बैठकर फ़ोटो-भी खिंचाया। चित्र इस लेख के साथ दिया जा रहा है। लेखक पाठकजी के पीछे ही खड़ा है। पाठकजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दो दोनो सुपुत्र भी हैं। पाठक इन्हें पहचानने का यत्न करें।

❀ ❀ ❀

११ वर्ष बाद। जून का महीना था। चिरंजीव शंकर को साथ लेकर मंसूरी गया हुआ था। एक दिन लंढौर-बाज़ार में एक महाशय मिले। कोट और ब्रीचेज़ पहने हुए, हाथ में एक लाठी लिए, बहुत धीरे रुक-रुककर चल रहे थे। ध्यान से देखा। पूछा—"आप पाठकजी हैं?" उत्तर मिला। मैंने अपना परिचय दिया। पाठकजी ने पता बताया। मालूम हुआ, पड़ोस ही में मलिंगार-नामक कोठी में आप ठहरे हैं। पूछा कि मिलने की आज्ञा है? पाठकजी ने सहर्ष अनुमति दे दी। मैंने कहा, प्रातःकाल और सायंकाल तो सैर में कटते हैं। दोपहर के समय आपकी सेवा में आया करूँगा।

उस दिन से प्रायः नित्य मिलने जाता था। पाठक-जी वृद्ध होते हुए भी नवीन विचारों के पक्षपाती थे। आपके सामाजिक विचार वर्तमान नवयुवक-मंडली के विचारों से पीछे न थे। यह देखकर मुझे हर्ष और विषाद, दोनो होते थे। हर्ष तो उनकी नवीनता देखकर होता था, और यह अनुमान करते हुए विषाद होता था कि इस आशामय हृदय को सामाजिक संकीर्णता की कितनी चोटें सहनी पड़ी होंगी। पाठकजी उस समय अपनी शिक्षिता लड़की—शायद उस समय तक वह बी० ए० पास हो गई थी—के विवाह की फ़िक्र में थे। इस विवाह के लिये उन्हें कोई योग्य वर नहीं मिल रहा था। सारस्वत ब्राह्मणों के लड़के तो 'जिजमानी' के सहारे रहते हैं। उनके यहाँ शिक्षा कहाँ! फिर यौवनावस्था तक शिक्षा-प्राप्त कुआँरा लड़का क्यों मिलता। परंतु इन दुराशाओं के होते हुए भी वह हताश न हुए थे। उन्हें स्त्री-शिक्षा की ओर उतना ही उत्साह था, जितना कि पहले।

यह पाठकजी के उन्नत विचार ही का परिणाम था कि उन्हें मेरे-ऐसे अपरिपक्व विचार के नवयुवकों के साथ बात-चीत करने में भी आनंद आता था। कभी हिंदी-साहित्य पर चर्चा होती, कभी सामाजिक प्रश्नों पर और कभी उनके स्वास्थ्य पर। पाठकजी थोड़ी-थोड़ी देर बाद एक दवा की शीशी अपनी नाक में यंत्र द्वारा कर लिया करते थे। कहते थे, इससे मेरा दमा दबा रहता है। एक बार हिंदी-साहित्य की चर्चा के सिलसिले में मैंने उनके उस वक्तव्य की आलोचना कर डाली, जो उन्होंने लखनऊ में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति के आसन से दिया था। मैंने कहा, इसमें आपने बेतरह संस्कृत-शब्दों की भरमार कर दी। पाठकजी बोले, ठीक कहते हो। मैं स्वयं क्लिष्ट हिंदी का विरोधी हूँ; परंतु सम्मेलन के आसन से मुझे क्लिष्ट हिंदी ही बोलनी चाहिए थी; क्योंकि साहित्य-संसार में उस समय ऐसी ही हिंदी का मान था।

पाठकजी अपनी कविताएँ भी कभी-कभी सुनाया करते थे। उस समय उनके वृद्ध शरीर में एक विशेष स्फूर्ति आ जाती थी, और उनका मुखारविंद दमकने लगता था। पाठकजी किसी आवेश में आकर कविता नहीं करते थे। काव्य-कला और पांडित्य का निरंतर सम्मिश्रण करते हुए वह बहुत धीरे-धीरे अपनी रचना करते थे। क़हवा पीने के शौक़ीन थे। मैं चाय से भी घबराता था, इसलिये उनके क़हवा-पान में शरीक न हो सकता था। हाँ, उसकी सुगंध का आनंद अवश्य लेता रहता था। पाठकजी क़हवा के विषय में अनेक कहानियाँ सुनाया करते थे। यह नहीं मालूम था कि एक दिन मुझे उनके संस्मरण लिखने पड़ेंगे। नहीं तो वाक्यामृत को संचित करने का प्रयत्न करता।

उन दिनों प्रांतीय लेजिस्लेटिव कौंसिल के वर्तमान सभापति रायबहादुर पं० सीतारामजी स्वास्थ्य-सुधार के लिये मंसूरी आए हुए थे। पंडितजी मुझ पर विशेष कृपा रखते थे। आपके आते ही मुझे सूचना मिल गई, और पाठकजी की कोठी के निकट आपके दर्शन हो गए। मैंने पाठकजी का ज़िक्र किया, कहा—यहीं हैं। तबसे कई बार हम दोनो जाकर पाठकजी से मिले, और वार्तालाप करते रहे।

पंडितजी को पाठकजी की विचार-शैली देखकर बहुत कौतूहल होता था। आपका यह कभी अनुमान न था कि कोई हिंदी-साहित्य का भक्त ब्राह्मण और वृद्ध होकर भी इतने ऊँचे सामाजिक आचार-विचार रख सकता है। करेले को नीम पर चढ़ने से तो और भी कड़वा हो जाना चाहिए था। परंतु पाठकजी में अब भी यौवन की मधुरता और नवीनता है। अँगरेज़ी शिष्टता से परि-चित तो थे ही। एक बार ठंड कुछ अधिक थी, प्रस्ताव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुआ कि कमरे के बाहर निकलकर कुछ देर धूप में बैठें। परंतु पाठकजी ने मना कर दिया; क्योंकि पड़ोस में कुछ ऐंग्लो-इंडियन परिवार रहते हैं। उन्हें असुविधा होगी।

यों मंसूरी में डेढ़ महीना बड़े आनंद से कटा। शुद्ध शीतल जल-वायु और पाठकजी तथा सीतारामजी-जैसे विद्वानों का सत्संग। शारीरिक और मानसिक, दोनो लाभ हुए।

❀ ❀ ❀

पाठकजी के अंतिम दर्शन प्रयाग में उनकी श्रीपद्म-कोट कोठी ही में हुए। रमणीक वाटिका और सुचारु भवन के भीतर प्रत्येक वस्तु नियम से सजी देखकर बड़ा आनंद हुआ। पाठकजी के दर्शन हुए। उन दिनों हिंदोस्तानी एकाडेमी स्थापित हो चुकी थी। एकाडेमी में जिन इने-गिने हिंदी-साहित्य-सेवियों को स्थान दिया गया था, उनमें पाठकजी भी थे। हिंदोस्तानी एकाडेमी क्या-क्या कार्य करेगी, इस पर वार्तालाप होता रहा। सरकार ने देशी साहित्य की रक्षा और उन्नति की ओर ध्यान दिया, यही क्या कम ग़नीमत था। हिंदी-उर्दू का कम-से-कम एकाडेमी में तो मेल होगा ही। देखें, इससे दोनो दलों की संकीर्णता दूर होती है या नहीं। ऐसे ही विषयों पर बातचीत होती रही।

सादर प्रणाम कर विदा हुआ। फिर दर्शन नहीं हुए।

सामाजिक उपन्यास ! सामाजिक उपन्यास !!

रंगभूमि

[लेखक, श्रीयुत प्रेमचंद]

श्री प्रेमचंदजी के अन्य उपन्यासों की तरह इस बृहत् उपन्यास में भी वर्तमान काल की सामाजिक दशाओं का स्वाभाविक चित्र अंकित किया गया है। सेवा-सदन में पतित जीवन की मीमांसा है। प्रेमाश्रम में सम्य स्वार्थपरता की विवेचना की गई है। इस रंगभूमि में लेखक ने यह दिखलाने की सफल चेष्टा की है कि हम संसार में सुखी क्योंकर रह सकते हैं। इसमें राजनीतिक और औद्योगिक प्रसंगों का प्राधान्य है। कर्मक्षेत्र भी बहुत विस्तृत हो गया है। अब तक लेखक के किसी उपन्यास में ईसाइयों ने पदार्पण नहीं किया था। इसमें भारतवर्ष के तीनो प्रधान धर्मों का समावेश है। लेखक ने समाज के किसी अंग को नहीं छोड़ा— ग्रामीण भी हैं, रईस भी हैं, पूँजीपति भी हैं, देश-सेवक भी हैं। सभी अपनी-अपनी महत्त्वाकांक्षा के साथ रंगभूमि में आते और अपना-अपना खेल दिखाकर चले जाते हैं। विद्वान्, धनी, अनुभवी, सभी श्रेणी के खिलाड़ी आपके सामने आते हैं, और सभी सुखी जीवन का रहस्य न जानने के कारण असफल होते हैं, सब ठोकर खाते और गिर पड़ते हैं, कर्तव्य से विचलित हो जाते हैं। केवल एक दीन, हीन, निर्बल, अंधा, दरिद्र प्राणी अंत तक आपको अपनी लीलाओं से मुग्ध करता रहता है, और जब उसकी लीला समाप्त हो जाती है, और वह रंगशाला से जाता है, तो आप अपने मन में कह उठते हैं, यही सफल-जीवन है, यही जीवनमुक्त पुरुष है, यही निपुण खिलाड़ी है, यही जानता है कि जीवन-लीला का रहस्य क्या है। इसकी भाषा सरल और सरस है, वर्णन-शैली अत्यंत हृदयग्राहिणी, भाव-व्यंजना बड़ी मर्मस्पर्शिनी, और चरित्र-चित्रण, जो उपन्यास का सर्वप्रधान अंग माना गया है, इतनी सूक्ष्म दृष्टि से किया गया है कि पढ़कर लेखक के मनोवैज्ञानिक अनुभव का क़ायल होना पड़ता है। यह बृहदाकार उपन्यास दो भाग में है। दोनो भागों का मूल्य ५); सुनहरी रेशमी जिल्दें ६)

संचालक; गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अग्नि

[श्रीयुत अवधवासी सीताराम]

करी के आविष्कार का वर्णन हमने सन् १९२८ के दिसंबर-मास की सरस्वती में छपाया था, अब हम एक परम उपयोगी वस्तु के आविष्कार की कथा सुनाते हैं। वह है अग्नि, और हमारा दृढ़ निश्चय है कि अग्नि के आविष्कार का गौरव भी आर्यों को है, और भारतवासी आर्यों को। एक पाश्चात्य विद्वान् ने अन्य जीव-जंतुओं से मनुष्य की विशेषता यों दिखाई है कि मनुष्य ही अपना भोजन अग्नि से पकाकर खाता है। आप कहेंगे कि मनुष्य ही लेख लिखता, पुस्तकें छापता, रेल चलाता है। परंतु अब तक लाखों जीव ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य कहने में आपको संकोच न होगा। परंतु वे न लिखना जानते हैं, न पढ़ना; परंतु भोजन पकाकर खाते हैं। बुद्धि की विशेषता में मात्रा का भेद है। चींटियाँ अनेक काम बुद्धि से करती हैं, बंदर भी कभी-कभी बड़ी बुद्धिमानी दिखाते हैं; परंतु अग्नि से काम लेना मनुष्य ही का काम है। हम इस लेख में यह विचार करेंगे कि अग्नि का प्रयोग संसार को पहले भारत के आर्यों ने सिखाया।

इस बात के बताने की आवश्यकता नहीं कि जिस प्राचीन जाति ने किसी उपयोगी वस्तु का आविष्कार किया, वही उसको पूजती है। इस विचार से हम यह भी मानते हैं कि एक जंगली जंतु को "कलचर (Culture) करके" गाय बनाना भी हमारे पूर्व-पुरुषों का काम था। इसी से हम उसकी पूजा करते हैं। और जाति के लोग, विशेष करके योरपवासी, गाय पालते, गाय का दूध पीते; पर जब देखते हैं कि गाय दूध न देगी, तो उसे खिला-पिलाकर मोटी करते, और उसे मारकर खा जाते हैं। उनके यहाँ गाय की व्यापारिक उपयोगिता देखी जाती है, जिसे अँगरेज़ी में "कमर्शल वैल्यू (Commercial Value) कहते हैं। यहाँ असाध्य रोग से पीड़ित बछड़े को मारने के लिये गांधीजी का महात्मापन छीना जा रहा है।

गो-जाति ऐसी पवित्र है कि उसके दुःखों की अत्यंत निवृत्ति करना भी पाप है, उसे अपनी मौत मरना चाहिए और जब तक जिए, उसकी सेवा करना हमारा धर्म है। क्यों? हिंदू ऐसी मूर्खता क्यों करते हैं? कारण यही है कि हमारे ही पूर्वजों ने एक वन्य पशु पकड़कर सैकड़ों बरसों के कठिन परिश्रम से ठोंक-पीटकर उसे ऐसा उपयोगी बनाया। और जातियाँ, जो गो-वंश हमसे ले गईं, या हमसे सीखकर उसको उपयोगी बनाया, उनको इससे ऐसा प्रेम कैसे हो सकता है। ऐसे लोग गो-वंश को अपना पुत्र नहीं मानते; अपने भरण-पोषण तथा धन कमाने का एक साधन समझते हैं। परंतु हम अग्नि का आविष्कार लिखते-लिखते कहाँ चले गए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अच्छा लीजिए, अग्नि में दो गुण हैं: एक गर्मी, दूसरा प्रकाश। दोनो सूर्य में भी हैं। परंतु सूर्य की गर्मी से खाना नहीं पक सकता, और रात को जब सूर्य नहीं रहता, तो न गर्मी है न प्रकाश। चाँद से कुछ उजाला हो जाता है। परंतु वह भी घटता-बढ़ता है। पाश्चात्य वैज्ञानिकों का यह सिद्धांत है कि इस भूमंडल में जितना जीवन है—क्या जड़, क्या चेतन—सबका कारण सूर्य है। इसी की गर्मी से यहाँ की सारी गर्मी है। इसी की गर्मी पृथिवी-तल के उद्भिज्जों तक में समा जाती है। पीछे से अनेक उपाय से उसका आविष्कार होता है। हम समझते हैं कि सूर्य का हमारे जीवन का आधार-भूत होना हमारे पूर्वजों को विदित था। इसी से वे सूर्यदेव को सविता (पैदा करनेवाला) कहते थे, और उसकी पूजा करते थे।

सूर्य से उतरकर अग्नि की महिमा है। जब हम अँगरेज़ी पढ़ते थे, तो हमने यह सीखा कि वैदिक आर्य पंच-तत्त्वों के उपासक थे। विशेष-करके अग्नि के। परंतु जब हमने संस्कृत पढ़ी, तो मनुस्मृति में देखा—

एतमेके वदन्त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिम् ;
इंद्रमेके परे प्राणमपरे ब्रह्मशाश्वतम्।

इसी को कुछ लोग अग्नि कहते हैं, कुछ इसे प्रजापति कहकर पुकारते हैं। कुछ इंद्र कहते, कुछ प्राण कहते, और कुछ शाश्वत ब्रह्म कहते हैं।

आगे बढ़े, तो देखा कि श्रुतियों में भी अग्नि ईश्वर का एक नाम है—

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति,
अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।

एक सत् (परमेश्वर) को ब्राह्मण अनेक नामों से पुकारते हैं। इसे कोई अग्नि कहता है, कोई यम और कोई मातरिश्वन्। ऋग्वेद का पहला मंत्र—

"अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं,
होतारं रत्नधातमम्।"

अग्नि को पुरोहित, यज्ञ का देवता, ऋत्विज, होता और रत्नों का धारणवाला बताता है।

यहाँ भी अग्नि परमेश्वर ही है।

इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है कि मनुष्य को ईश्वर का ज्ञान पहले हुआ, और उसने ईश्वर के अनेक नामों में से एक नाम अग्नि भी रक्खा या उसने अग्नि की उपयोगिता का अनुभव करके ईश्वर का भी उसी नाम से पुकारा।

वेदों से विदित होता है कि सूर्यदेव अग्नि से भिन्न हैं। अग्निदेव का जन्म आकाश (बादलों) में हुआ। वहाँ से वह बिजली के रूप में पृथिवी में आकर लुप्त रहे। पीछे मातरिश्वन् ने उन्हें भृगु-वंशियों के पास पहुँचाया। तबसे भृगुवंशी दो लकड़ियाँ आपस में रगड़कर अग्नि को पैदा करने लगे।

अब देखिए कि जो आग इस रीति से उत्पन्न की जाती थी, उसका कैसा आदर किया जाता था। यह आग घर में एक उचित जगह स्थापित कर दी जाती थी और इसे गृहपति (घर का स्वामी) कहते थे। यज्ञ करनेवाले आर्य इसे बुझने न देते थे, और सारे काम भोजन बनाने इत्यादि के इसीसे लेते थे। इसका यही कारण था

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकता है कि लकड़ियाँ रगड़कर आग उत्पन्न करने की रीति भृगुवंशियों ने निकाली।

अब पुरानी बातों को भूलकर यह विचारिए कि इस रीति से आग निकालने की रीति उन्हें किसने सुझाई ? यही देश है, जहाँ गर्मी के दिनों में हवा चलने से वन में पेड़ों की डालियों की रगड़ से आग निकलती है और सारा वन भस्म कर डालती है। मेघदूत में देखिए—

तं चेद् वायौ सरति सरलस्कन्ध संघट्ट जन्मा
..... दवाग्निः ।

हमारा अनुवाद (सबसे पहले १८८३ का छपा हुआ)—

निसरत आगि मित्र, चलत प्रचंड वायु
दाव महँ देवदारु डार रगरन सों,
भस्म करत वन फैलि चहुँ ओर जब.....

'ऋतु-संहार' में इस दवाग्नि का वर्णन अत्यंत सुंदर है। चालीस वर्ष हुए, हमने उसका भी अनुवाद किया था। उसके कुछ छंद उद्धृत किए जाते हैं—

आते खिले फूल कुसुंभ-सम सिंदूर रँग लपटें छईं ;
पुनि चलत प्रबल बयार बाढ़त बेग सों हाँकी गईं।
तट रूख डार लतान जनु घबराय पकरत फिरत है ;
बिन एक माहिं दवाग्नि सन बन भूमि चहुँ दिशि घिरत है।
गिरि खोह भीतर पैठि बमकत प्रबल पवन-झकोर में ;
मृगकुल बिनासत कतहुँ पाय प्रसार सोइ बनछोर में।
कहुँ चरत चटचट करत घुमरत उमड़ि सूखे बाँस में ;
बन माहिं प्रबल दवाग्नि फैलत बाढ़ि चहुँ दिशि घास में।
अनलाग्रहु लागी-सी लगत फल लसत सेम्हल कुंज में ;
आते जोगे लपटत झपटि सूखो डार पातन पुंज में।
तरु कोल फुरफुर करत उछरत बरत सुबरन रंग सो ;
चहुँ ओर नाचत फिरत बन महँ वायु झोंकन संग सो।

इस अनुवाद में "काव्य का चमत्कार" लाने का उद्योग सफल न हुआ हो, परंतु सीधा-सादा वर्णन अवश्य है, और इसको ध्यान से पढ़ने पर वन में आग लगने पर जो उसकी दशा होती है, समझ में आ जायगी। महाकवि कालिदास अपनी आँखों देखी लिख रहे हैं।

अब यह याद रखना चाहिए कि मनुष्य की सृष्टि करके ईश्वर ने उसे केवल चेतना-शक्ति दी थी। यह शक्ति ऐसी बड़ी और ऐसी उपयोगी है कि भगवान् में गीता में

"भूतानामस्मि चेतना"

कहा है। इसी शक्ति से मनुष्य ने अपने भरण-पोषण और अपनी रक्षा की अनेक वस्तुएँ प्रकृति में से निकालीं। यह कोई न मानेगा कि मनुष्य को बनाकर ईश्वर ने उसके लिये बँगले बनवा दिए और कोट-पतलून सिलवा दिए। इन्हीं उपयोगी वस्तुओं में से एक आग है। जब तक नगर नहीं बने थे, मनुष्य लोग वनों में रहते थे। वहाँ वन के कंद-मूल-फल खाते थे। कुछ लोग हिरन आदि जीव मारकर खाते थे। जब वन में आग लगी, तो कंद-मूल-फल कुछ तो भस्म हो गए और कुछ आग में "पक" गए, और ऐसे ही वन्य पशुओं का मांस भी आग में झुलस गया। इनको मनुष्यों ने खाया, तो इनका स्वाद ही कुछ और पाया। ये पकी वस्तु थोड़ी ही देर में पच गई। फिर क्या था, मनुष्यों ने देखा कि आग में पकाने पर साधारण खाने की चीजें कुछ और ही हो जाती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। तब जैसे डालियों की रगड़ से वन की आग निकली थी, वैसे ही आप भी दो लकड़ियाँ रगड़कर आग निकालने का उद्योग करने लगे। निरंतर उद्योग करने पर उन्हें "शमी" नाम की एक ऐसी लकड़ी मिल गई जिसमें से आग जल्द निकल आती है और उसे "अग्निगर्भा शमी" कहने लगे।

इन बातों पर विचार करने से सिद्ध होता है कि

(१) अग्नि का आविष्कार (इससे हमारा अभिप्राय है गृहस्थी के कामों के लिये आग बनाना) भारत में हुआ, क्योंकि यहाँ इतनी गर्मी पड़ती है कि वन की डालियों की रगड़ से आग निकलती है। ठंडे देशों में यह बात असंभव है। और यहीं डालियों की रगड़ से आग निकलती देखकर वैदिक आर्यों ने लकड़ी रगड़कर आग बनाने की रीति निकाली।

(२) इस रीति के निकालनेवाले भार्गव थे।

(३) यहीं अग्नि के प्रयोग के आविष्कार के कारण इसका नाम अग्नि रक्खा गया, जो ईश्वरवाची है, और आदि में इसकी इतनी पूजा होती थी।

अब रहा इसका संसार-भर में प्रचार। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। तंबाकू (तमाखू) तीन सौ वर्ष हुए अमेरिका से सर वाल्टर रैले इँगलिस्तान लाया था। एक दिन वह अपने घर में बैठा बीड़ी पी रहा था। धुआँ निकलता देखकर उसके नौकर समझे कि स्वामी के मुँह में आग लग गई है, और उसके ऊपर बहुत-सा पानी डाल दिया। अब सभ्य जातियों की कौन कहे, कोई असभ्य जाति ऐसी नहीं है, जो तंबाकू न पीती हो। सभ्य देशों में तंबाकू खाते, तंबाकू पीते, और तंबाकू की सुँघनी सूँघते हैं। इसे हमारे देश के एक पंडित ने यों लिखा है—

क्वचिद् हुक्का, क्वचिद् थुक्का, क्वचिन्नास्याप्रवर्तिनी।

एक महाशय ने यहाँ तक लिख डाला कि "किसी ने ब्रह्मा से पूछा कि संसार में सारभूत कौन पदार्थ है?" तो—

चतुर्भिर्मुखैरित्यवोचद् विरंचि-
स्तमाखुस्तमाखुस्तमाखुस्तमाखुः।

जब तमाखू का ऐसा प्रचार हो गया, तो आग के प्रयोग के प्रचार में कितनी देर लगेगी?

कृष्णकुमारी

[अनुवादक, पं० रूपनारायणजी पांडेय]

यह पुस्तक बँगला के सर्वश्रेष्ठ काव्य "मेघनाद-वध" के रचयिता, महाकवि माइकेल मधुसूदनदत्त के सबसे बढ़िया ऐतिहासिक नाटक "कृष्णकुमारी" का अनुवाद है। सुंदर छपाई। काग़ज़ बढ़िया। कई सादे और रंगीन चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य केवल १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुरुकुल काँगड़ी का क्रीड़ा-विभाग

[श्रीसर्वमित्रजी, कुल-मंत्री गुरुकुल-विश्वविद्यालय]

आचार्य श्रद्धानंद की एक-मात्र जीवित स्मृति गुरुकुल ने प्रत्येक क्षेत्र में—चाहे वह मानसिक हो, चाहे बौद्धिक और चाहे शारीरिक—आदर्श सफलता प्राप्त की है। इसके विद्यार्थी, विशद आकाश की स्वाधीनता में पले हुए इसके स्नातक, जहाँ अपनी ऊँची शिक्षा के कारण शिक्षित-समाज के अग्रणी हो रहे हैं, कोई आश्चर्य नहीं, पता लगने पर एक दिन वे शारीरिक दृष्टि से भी अग्रणी का ही काम करें। इस छोटे-से लेख का उद्देश्य गुरुकुल में शारीरिक उन्नति के लिये बरते जानेवाले साधनों का दिग्दर्शन कराना ही है। कहने की आवश्यकता न होगी कि शारीरिक उन्नति के सब साधन "क्रीड़ा-विभाग" के हाथ में हैं, और इसीलिये यह विभाग अपने आप एक बहुत बड़ा विभाग बना हुआ है। सम्यक् रीति से चलाने के लिये इसके कार्यकर्ता भी अनेक हैं।

विभाग के प्रमुख कार्यकर्ता

(१) क्रीड़ाध्यक्ष—क्रीड़ा-विभाग का प्रथम प्रमुख कार्यकर्ता क्रीड़ाध्यक्ष है। इसके नीचे क्रीड़ा-विभाग के उपविभाग, क्रीड़ा-मंत्री तथा मुखिया होते हैं। विभाग की उन्नति तथा अवनति सब क्रीड़ाध्यक्ष के ऊपर ही अवलंबित है। आजकल पं० सत्यव्रतजी सिद्धांतालंकार यह कार्य बड़े मनोयोग से कर रहे हैं। आशा है, आपकी अध्यक्षता में क्रीड़ा-विभाग उत्तरोत्तर उन्नति करता जायगा।

(२) क्रीड़ा-मंत्री—क्रीड़ाध्यक्ष के बाद क्रीड़ा-मंत्री 'क्रीड़ा-विभाग' के एक प्रमुख कार्यकर्ता हैं। यदि इनको क्रीड़ा-विभाग का प्राण भी कहें, तो कोई अत्युक्ति न होगी। उपविभागों की देख-रेख, क्रीड़ा का नया सामान मँगवाना, पुराना सुरक्षित रखना, आदि सब

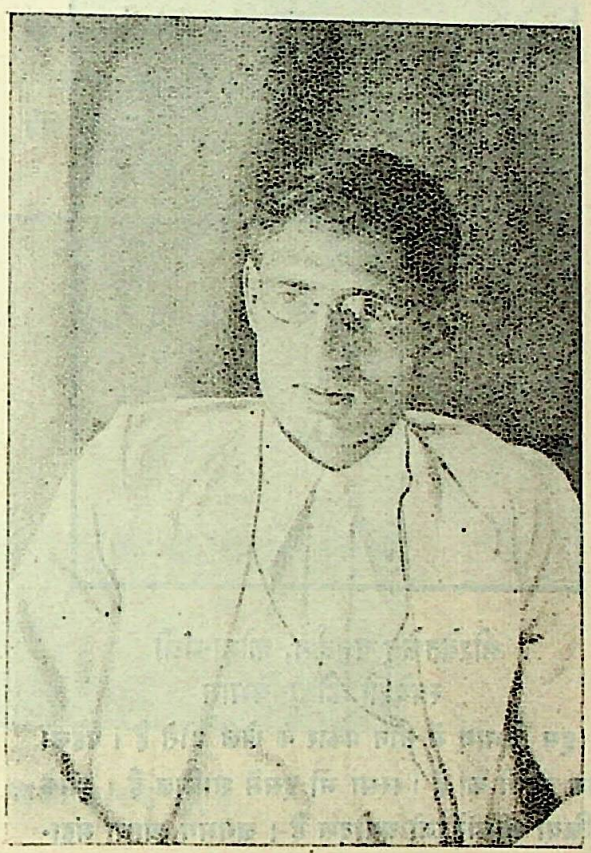

पं० सत्यव्रतजी सिद्धांतालंकार, क्रीड़ाध्यक्ष

कार्य इन्हीं के हैं। कुल के सौभाग्य से 'क्रीड़ा-विभाग' को इस वर्ष एक उत्साही क्रीड़ा-मंत्री मिले हुए हैं। नाम है श्रीश्वेतकेतु चतुर्दश। आपमें उत्साह इतना अधिक है कि संभवतः सत्रांतावकाश से पूर्व कोई भी ऐसा सप्ताह नहीं बीता, जिसमें कोई-न-कोई आकर्षक सान्मुख्य न हुआ हो। क्रीड़ा-विभाग को ऐसे ही व्यक्तियों की अपेक्षा है।

'क्रीड़ा-विभाग' एक बहुत बड़ा विभाग होने के कारण इसके दो उपविभाग कर दिए गए हैं। प्रथम विभाग 'स्वदेशी क्रीड़ा-विभाग' और द्वितीय 'विदेशी क्रीड़ा-विभाग'।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

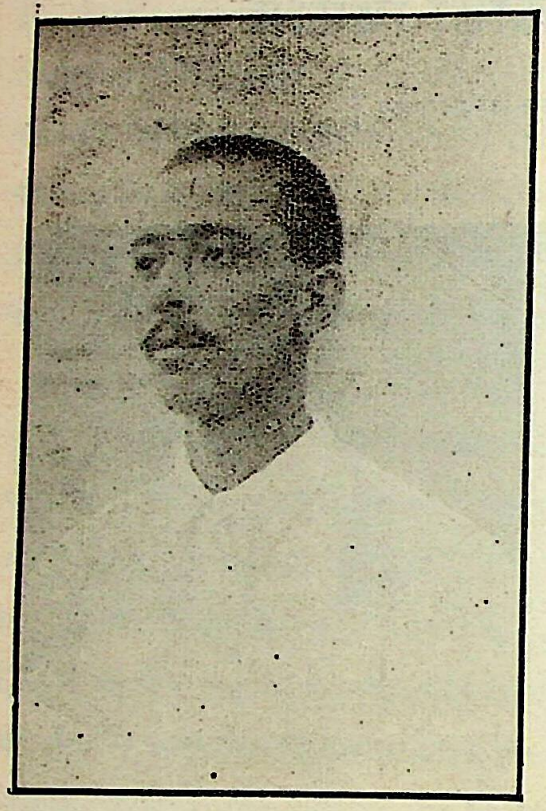

श्रीश्वेतकेतु चतुर्दश, क्रीड़ा-मंत्री
स्वदेशी क्रीड़ा-विभाग

इस विभाग में तीन प्रकार के खेल होते हैं। पहला खेल कुश्ती का है। रस्सा भी इसमें शामिल है। इसके मुखिया श्रीधीरेंद्रजी त्रयोदश हैं। लगभग आधा महाविद्यालय इस खेल में उत्साह से भाग लेता है। दूसरा खेल व्यायामशाला संबंधी है। इसके अंतर्गत दंड-बैठक, जमनास्टिक, तकिया-युद्ध, लंबी कूद, ऊँची कूद, तेज़ दौड़, लंबी दौड़, बाँस-दौड़, कुर्सी-दौड़, बाधा-दौड़ तथा गोला फेंकना आदि हैं। श्रीराजेंद्रजी चतुर्दश इसके मुखिया हैं। आपके सतत परिश्रम से ये खेल अब नियमित रूप से चल पड़े हैं।

इस खेल में जमनास्टिक का महत्व कुछ अधिक है। हॉलैंड-निवासी प्रो० कैरियर—जिनका गुरुकुलीय नाम श्राउपेंद्र है—बड़ी लगन एवं उत्साह से इस खेल को सुबह-शाम सिखाते हैं। आपकी इस लगन का परिणाम यह हुआ कि ब्रह्मचारियों की एक बड़ी भारी संख्या रिंग्स (Rings), हारिज़ंटल बार Horizontal Bar), पैरालेल बार (Parallel Bar), हार्स इक्सरसाइज़ (Horse exercise) और स्टिक जंपिंग (Stick jumping) पर अच्छी फ़ुर्ती दिखा सकती है।

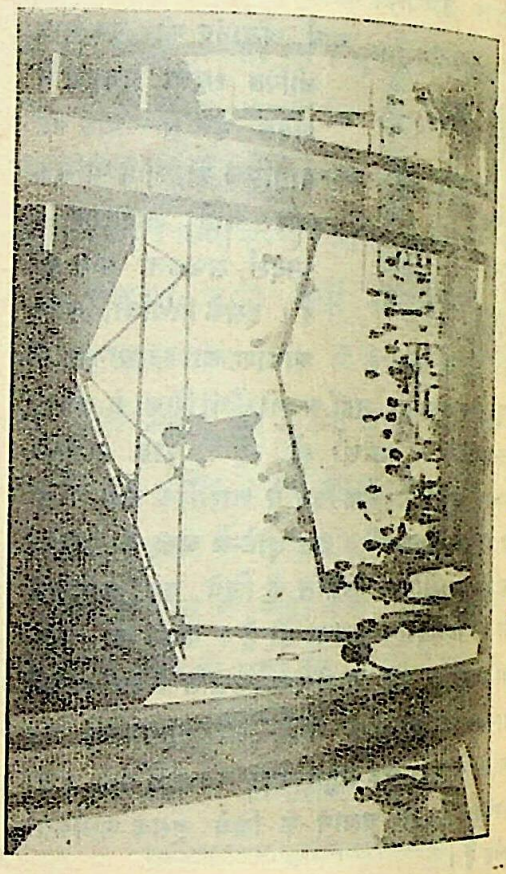

प्रयाग की जमनास्टिक का अखाड़ा

जमनास्टिक के शिक्षक प्रो० उपेंद्रजी

तीसरा खेल धनुर्वेद का है। इस खेल में ज़ंजीर तोड़ना, धनुष-बाण का सीखना, गतका, बनैटी, छुरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और युयुत्सु भी शामिल हैं। खेल के मुखिया हैं श्री-देवदत्त चतुर्दश। आप बड़े परिश्रम से ब्रह्मचारियों को उपर्युक्त खेलों का अभ्यास कराते हैं। समय-समय पर अभ्यास को और अधिक बढ़ाने के लिये प्रसिद्ध धनुर्धारियों को भी बुला लिया जाता है। गत सत्र पं० देशबंधुजी विद्यालंकार यहाँ धनुष-बाण चलाना सिखाते रहे हैं।

गुरुकुल इस प्रकार भारत की पुरातन क्षत्रियोचित धनुर्विद्या को पुनरुज्जीवित करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। पं० देशबंधुजी विद्यालंकार, पं० विवेकानंदजी विद्यालंकार तथा पं० महेंद्रनाथजी विद्यालंकार इसी गुरुकुल-विश्वविद्यालय की उपज हैं। इनके ऊपर प्राचीनता से प्रेम रखनेवाला कोई भी प्रेमी भरपूर अभिमान कर सकता है, कुल के तो ये अभिमान हैं ही।

इनके सिवा तैराई, बोटिंग और भ्रमण के खेल भी होते हैं।

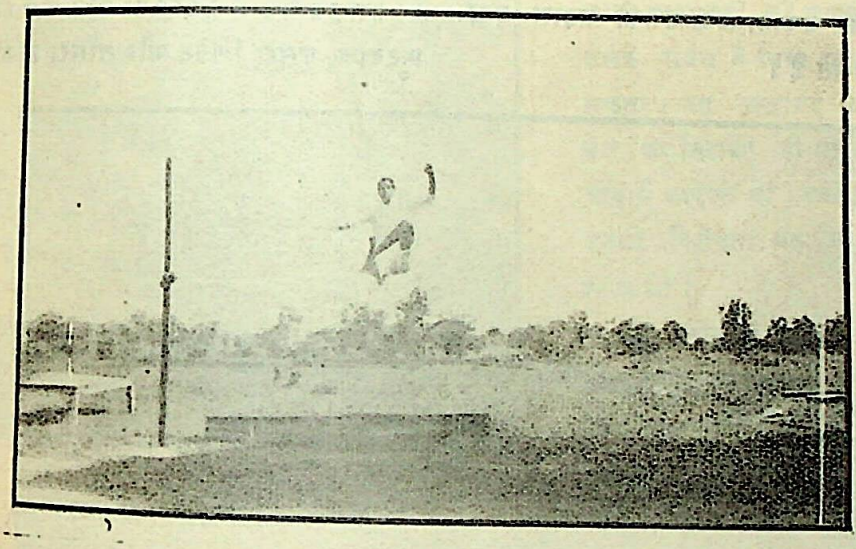

ब्रह्मचारी ऊँची कूद का अभ्यास कर रहे हैं

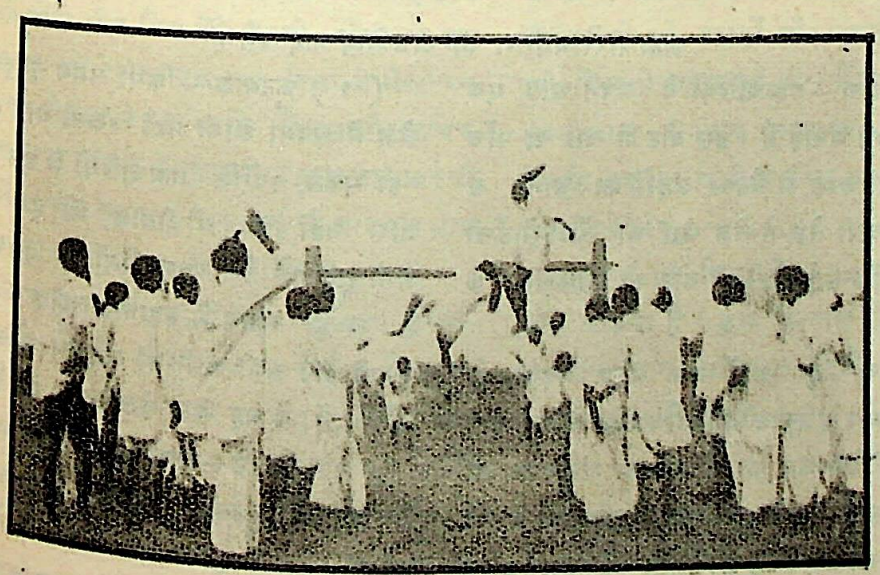

ब्रह्मचारी तकिया-युद्ध कर रहे हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) तैराई—पुण्य-सलिला पावनी भागीरथी की एक धारा कुल के पास से होकर ही बहती है। प्रायः सभी ब्रह्मचारी, बिना किसी अपवाद के, इस धारा की लहरों में उछल-कूद मचा स्वर्गीय आनंद लूटते हैं। आनंद लूटने की यह प्रवृत्ति इतनी बढ़ी हुई है कि विद्यार्थियों को ६ मील भी नहीं के बराबर से ही लगते हैं। कड़ाके की धूप में भी चंडी से सलीपरों का बेड़ा बनाकर लाना एक मनोरंजन गिना जाता है। साथ ही ब्रह्मचारी तैराकी के मुख्य उद्देश्यों को—जल में डूबते हुओं को बचाना तथा उसको सहारा देना इत्यादि—भी सीखते हैं।

विदेशी क्रीड़ा-विभाग

यह विभाग भी स्वदेशी-विभाग की तरह एक उच्च विभाग है। ब्रह्मचारी इस विभाग के खेलों में भी वैसी ही दिलचस्पी से भाग लेते हैं, जैसे स्वदेशी-विभाग के खेलों में। क्रीड़ा-विभाग में यह विभाग भी एक ऐसा विभाग है जिसके द्वारा कुल के ब्रह्मचारी विजयी होकर कुल के नाम को उज्ज्वलतर और उज्ज्वलतम करते हैं। भिन्न-भिन्न स्थानों की विजय उनकी इस प्रकार की शारीरिक उन्नति की उत्तम पहचान है।

इस विभाग में मुख्यतया तीन खेल होते हैं। पहला फ़ुटबाल, दूसरा क्रिकेट और तीसरा हॉकी।

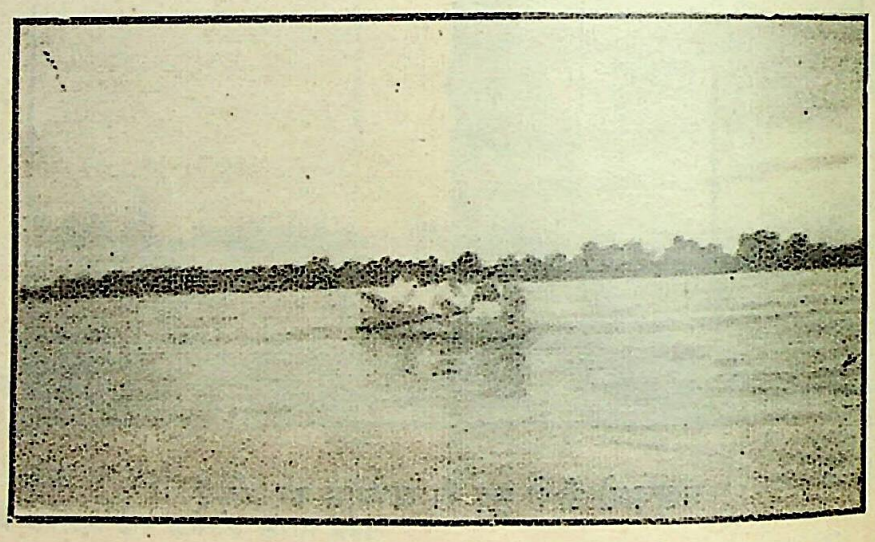

ब्रह्मचारी बोटिंग का अभ्यास कर रहे हैं

(२) बोटिंग—ब्रह्मचारियों ने अपने आप एक छोटी-सी बोट भी बनाई है। इस बोट में चार या पाँच आदमी अच्छी तरह से बैठकर लहरों का आनंद ले सकते हैं। ब्रह्मचारी तेज़-से-तेज़ धार और ऊँची-से-ऊँची लहरों में अपनी बनाई छोटी-सी बोट को सफलता के साथ खे लेते हैं।

(३) भ्रमण—दूर जहाँ तक नज़र पड़ती है, कुल के चारों ओर हरियाली-ही-हरियाली दिखाई देती है। सामने की हिमाचल की शैवालिक श्रृंगमाला तो वृक्षों की हरी साड़ी पहने हर समय हृदय को अपनी ओर खींचती-सी रहती है। प्रकृति के इस हरित साम्राज्य में भ्रमणकर ब्रह्मचारीगण जिस आनंद का अनुभव करते हैं, वह सचमुच शब्दों से परे है।

(१) फ़ुटबाल—किसी समय गुरुकुल फ़ुटबाल के खेल में अपना सानी नहीं रखता था। इस समय का नहीं सकते, क्योंकि ब्रह्मचारियों में इस खेल के लिये जोश नहीं रहा। वौलीबाल भी इस खेल का एक अंगीभूत खेल है। ब्रह्मचारियों को इसका बड़ा शौक है। ख़ाली समय में ब्रह्मचारी खेल के मैदान में ही दीखते हैं। कभी-कभी तो रात को भोजन के बाद भी चाँदनी में, वे यह खेल खेलते पाए गए हैं।

(२) क्रिकेट—दूसरे विभाग का दूसरा खेल क्रिकेट है। यह भी फ़ुटबाल की तरह पुराना हो गया है। तथापि कुल में इस खेल के खेलाड़ियों का अकाल-भाव नहीं है। अब भी अच्छे बोलर तथा प्लेयर विद्यमान हैं। समय आने पर वे अपना हाथ दिखा सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मचारी पर्वत पर प्याल खा रहे हैं

(३) हॉकी—तीसरा खेल हॉकी है। इस खेल में यहाँ के विद्यार्थी ख़ूब सिद्धहस्त हैं। कई मैच तो इन्होंने हँसते-हँसते योंही जीत लिए हैं। इनकी हॉकी की इस अपूर्व कुशलता को देखकर एक बार दिल्ली के सैंट्रोफन कॉलेज के एक प्रोफ़ेसर ने कहा था कि "मैं कुछ और अधिक अभ्यास करवाकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा भारतवर्ष की सारी टीमों को जीत सकता हूँ। हर साल की तरह इस साल भी गुरुकुल की हॉकी-टीम बाहर टूर्नामेंट में जायगी।

इस खेल की इस उन्नति का श्रेय इसके मुखिया श्रीदेवनारायणजी चतुर्दश को है। आप एक उत्तम कोटि के खिलाड़ी हैं। जहाँ कहीं गुरुकुल को बाहर टूर्नामेंट में अपनी टीम भेजनी पड़ी है, वहाँ आप अवश्य ही गए हैं। और अपनी 'फ़ेयर गेम' के कौशल द्वारा दर्शकों और विरोधी पार्टी की प्रशंसा लेकर लौटे हैं। हमारी इच्छा है कि खिलाड़ी मुखिया जाते समय अपने अनुरूप ही कोई खिलाड़ी मुखिया तैयार कर जायँगे।

इस तरह 'क्रीड़ा-विभाग' अपने दोनो उप-विभागों—स्वदेशी क्रीड़ा-विभाग और विदेशी क्रीड़ा-विभाग—में लगातार तेज़ रफ़्तार से तरक़्क़ी करता जा रहा है। इस प्रसंग में हम क्रीड़ा-मंत्रीजी की सराहना किए बिना नहीं रह सकते। आपके दिन-रात एक कर परिश्रम और उत्साह से कार्य करने का ही यह फल है कि 'क्रीड़ा-विभाग' उन्नति-ही-उन्नति करता दिखाई देता है। गत सत्र तो मंत्रीजी ने जिस 'श्रद्धानंद क्रीड़ा-सान्मुख्य' की सफल आयोजना की थी, उसके संबंध में बिना कुछ लिखे नहीं रहा जा सकता। यह 'श्रद्धानंद क्रीड़ा-सान्मुख्य' अपने ढंग का निराला ही था। सान्मुख्य की सारी क्रीड़ाएँ स्वदेशी थीं। स्वदेशी होने के साथ-साथ उनकी विशेषता यह थी कि वे बड़ी मनो-रंजक थीं।

यह सान्मुख्य २७ जुलाई, शनिवार से २९ जुलाई, मंगलवार तक हुआ था। सान्मुख्य का मंगलाचरण 'ग़रीबों की बेबसी की आह वंदे-मातरम्' से हुआ था। साथ में बैंड की आवाज़ भी पुरानेलोगों केकहनेके मुताबिक़ दिग्दिगंत को कंपायमान करती हुई, शेष की जिसके कान भी न आँखों से अंतःस्तल में प्रवेश कर हड़बड़ाहट में ज़मीन को डुलाती हुई, पहाड़ों और जंगलों में निनादित होती हुई, विश्व में व्याप्त हुई थी। बैंड-युक्त इस वंदेमातरम्-मंगलाचरण के बाद सान्मुख्य का आरंभ देश की विभूति महात्मा गांधी के निम्न आशीर्वाद से हुआ था—

"भाई श्वेतकेतु,

तुम्हारा पत्र मिला है। उद्घाटन के कार्य में सफलता चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कि देशी क्रीड़ा का पुनरुद्धार आप लोग कर रहे हैं। इससे स्वामीजी का आत्मा प्रसन्न ही होगा।

मोहनदास का आशीर्वाद"

आशीर्वाद के बाद श्रीआचार्य रामदेवजी का एक छोटा-सा भाषण हुआ। उन्होंने कहा—"संसार की शारीरिक उन्नति करना आर्य-समाज के मुख्य उद्देश्यों में से एक है। गुरुकुल आर्य-समाज की मुख्य संस्था है, इस-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिये इसके मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य शारीरिक उन्नति भी है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को खेल में भाग इसलिये लेना चाहिए कि इससे आज्ञा-पालन की आदत आती है। आज भारत पराधीन है, नवयुवकों की बलि से इसका उद्धार हो सकता है। ब्रह्मचर्य और संयम से ही बलि होना आता है। क्रीड़ा क्षेत्र में खेलनेवाला खिलाड़ी अपनी शरीर की उन्नति के साथ मर मिटने का भी पाठ सीखता है। मुझे खेद से कहना पड़ता है, आज हमें हिंदू-मुसलिम वैमनस्य की दृष्टि से भी यह विषय विचारना पड़ता है। मुसलमान यदि हम पर एक कृपा करेंगे, तो हम दो कृपा करेंगे, और यदि वे हमें एक थप्पड़ मारेंगे, तो हम दो मारेंगे। हम कायर नहीं, पर सच्चे अहिंसक होना चाहते हैं। एक बात और भी है। ब्रिटिश गवर्नमेंट से हमारा पाला पड़ा है। ऐसी शक्तिशाली सरकार शायद ही संसार के तख़्ते पर आई हो। इस वास्ते हमें अपने शरीर लोहे के बनाने होंगे। और यह तभी संभव है, जब हम खेलों की उपेक्षा न करें। यदि गुस्ताख़ी न हो, तो खेलें। आज चर्ख़े से भी अहस्र-पूर्ण हैं।"

आचार्यजी के इस छोटे-से किंतु विचार-पूर्ण भाषण के

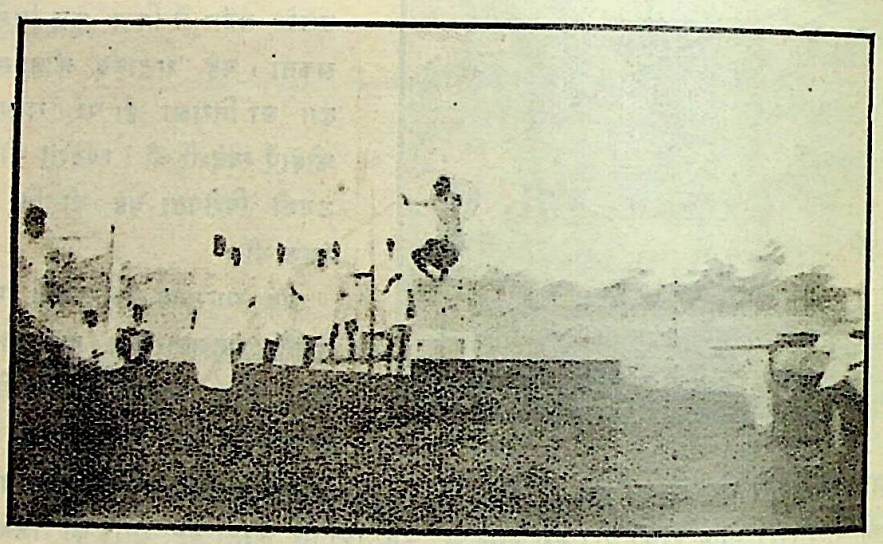

ब्रह्मचारी लंबी कूद का अभ्यास कर रहे हैं

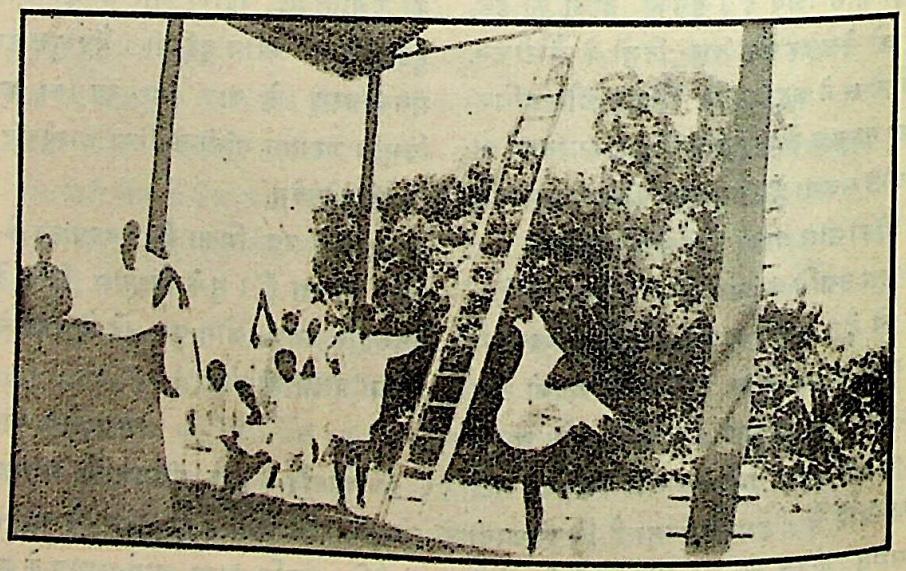

ब्रह्मचारी गोला फेकने का अभ्यास कर रहे हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवंतर सान्मुख्य का प्रारंभ हो गया था। पहले दिन केवल कुश्तियाँ हुई थीं। दूसरे दिन धनुष-बाण (Archery), १०० गज़ की दौड़, लंबी कूद, ऊँची कूद, जमनास्टिक, गोला फेंकना, कुर्सी-दौड़, बाधा-दौड़, रावण-दौड़, सैंडक-दौड़ और तकिया-युद्ध इत्यादि मनोरंजक खेल हुए। तीसरा दिवस जल-संबंधी खेलों का था। इन खेलों में लंबी तैरी, सिंह-तैरी मुख्य हैं।

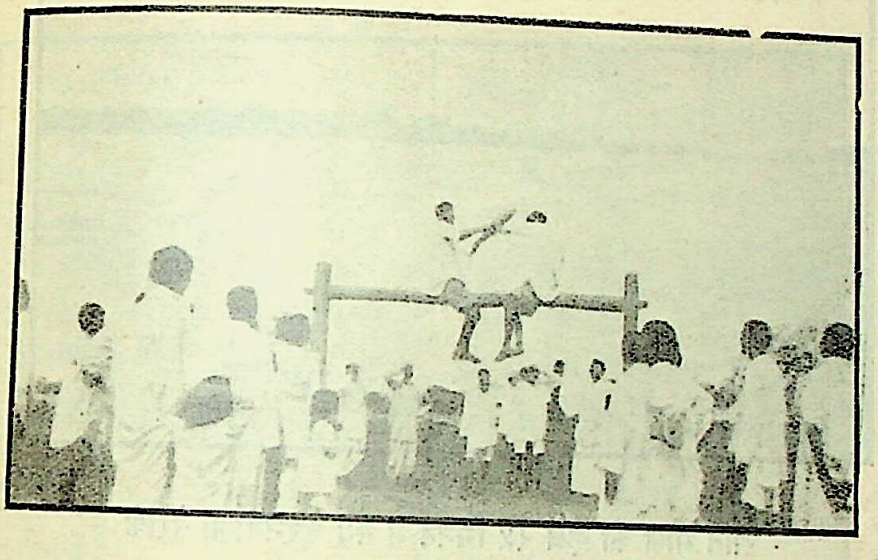

"श्रद्धा क्रीड़ा-सान्मुख्य" में "तकिया-युद्ध" का दृश्य

पारितोषिक-व्यवस्था

सान्मुख्य में विजयी ब्रह्मचारियों के लिये 'क्रीड़ा-विभाग' की ओर से पारितोषिक की व्यवस्था भी की गई थी। यह व्यवस्था सब खेलों के लिये न थी। किंतु जिनमें अधिक साहस और श्रम की आवश्यकता है, उन्हीं के लिये थी।

लंबी तैरी में चंडी से छूटकर थोड़े-से-थोड़े समय में गुरुकुल पहुँचना था। चंडी से गुरुकुल तक के बीच की दूरी ७ मील है। श्रीदेवनाथजी चतुर्दश ने कुल २५ मिनट में यह सब तय कर लिया था। इसलिये पारितोषिक की व्यवस्था के अनुसार प्रथम पारितोषिक

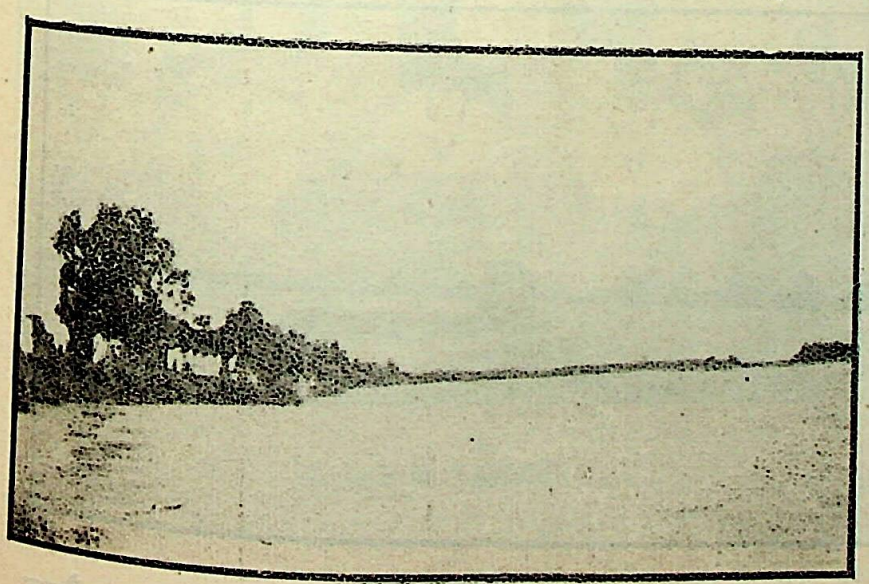

ब्रह्मचारी चंडी से तैरते आ रहे हैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैडल के रूप में आप ही को मिला। दूसरा पारितोषिक ब्र० हरिदेवजी को जिन्होंने २६ मिनट में ७ मील तय कर लिए थे, और तीसरा ब्र० धीरेंद्रनाथजी को जिन्होंने ७ मील की दूरी ३० मिनट में तय कर ली थी, मिला। ब्र० चित्रांगदजी को भी निरीक्षकों ने उनकी तैराकी से प्रसन्न होकर दूसरे नंबर का पारितोषिक दिया।

सिंहतैरी में गंगा की बरसाती २०० गज़ चौड़ी तेज़ धार को यथाशक्ति सीधा चीरकर जल्दी-से-जल्दी किनारे लगना था। ब्र० चित्रांगदजी द्वादश ने यह कार्य केवल २ मिनट में कर दिखाया, इसलिये सिंहतैरी में प्रथम पारितोषक आपको ही मिला। दूसरा पारितोषिक ब्र० देवनाथजी चतुर्दश और आत्मानंदजी द्वादश को मिला।

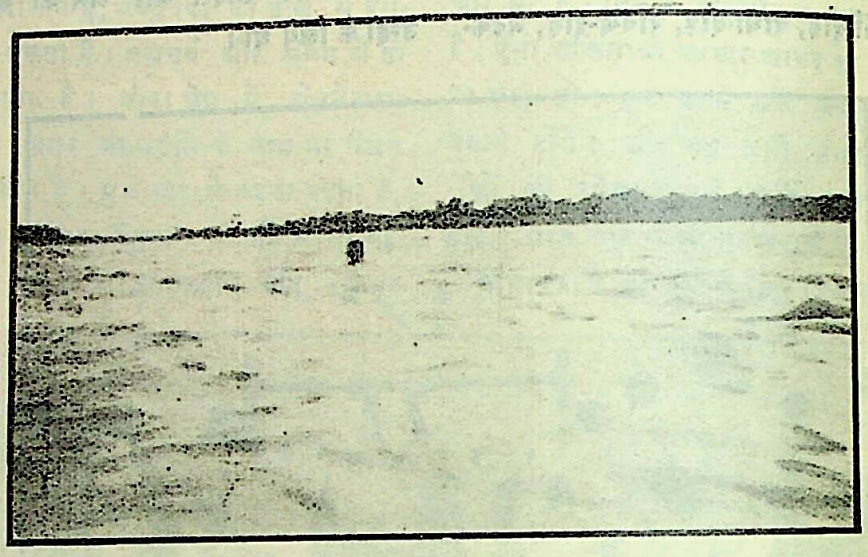

सात मील को कुल २५ मिनट में तय करनेवाला तैराक

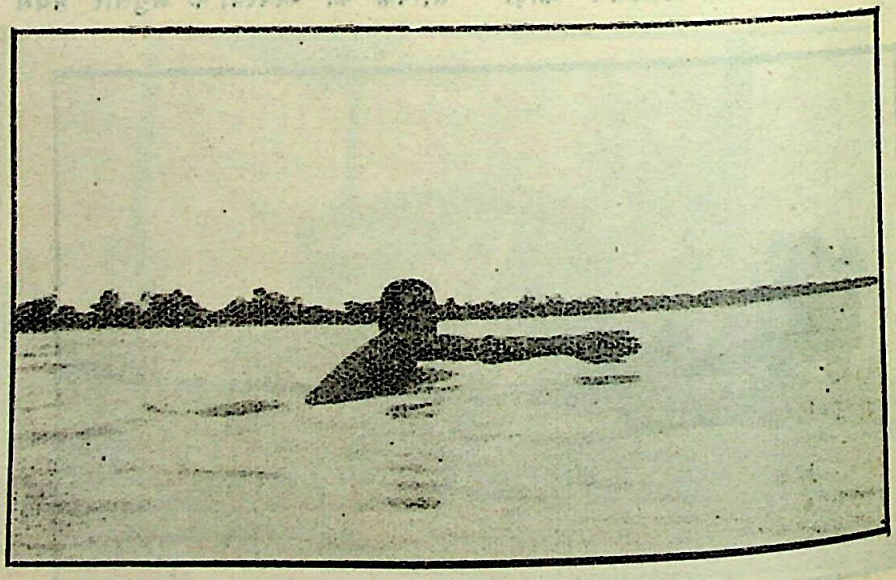

गंगा की २०० गज़ चौड़ी बरसाती धार को २ मिनट में पार करनेवाला तैराक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोनों ही ने प्रथम-पारितोषिक-प्राप्त-ब्रह्मचारी से केवल आधा मिनट अधिक लगाकर २०० गज़ की बरसाती तेज़ धार को पार कर लिया था।

वाद्य-दल

'क्रीड़ा-विभाग' की सबसे बड़ी विशेषता तो रह ही गई। वह विशेषता है, वाद्य-दल। गुरुकुल ने उत्सव आदि समारोहों पर बैंड बजाने की आवश्यकता अनुभव कर एक वाद्य-दल भी बना रक्खा है। इसके सदस्य प्रति दिन सायं ४ से ५ तक बजाने का अभ्यास करते हैं। दल के मुखिया श्रीराजेंद्रजी चतुदर्श हैं।

गुरुकुलीय वाद्य-दल, बैंड बजाते समय

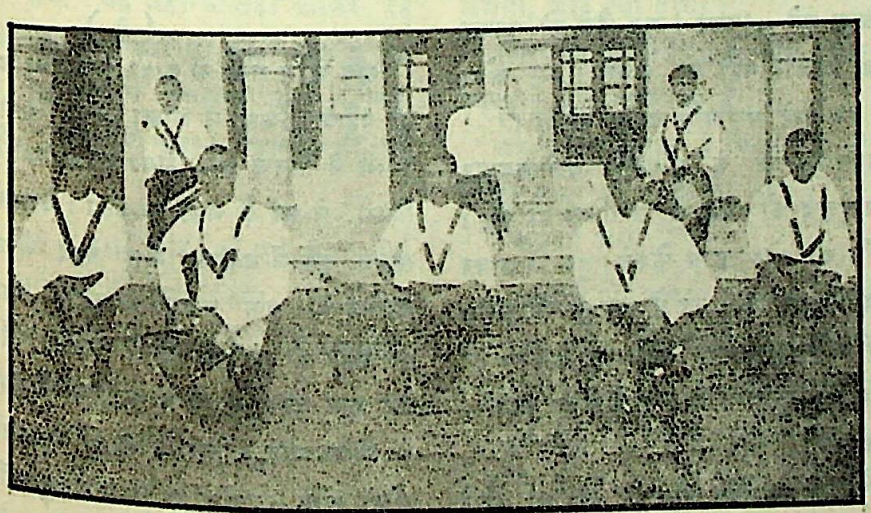

वाद्य-दल के कुछ सदस्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डाका

[श्रीयुत कृष्णानंद गुप्त]

(१)

अगहन का महीना था। रात्रि के आठ बजे होंगे। हम लोग तहसील-कांग्रेस-कमेटी के दफ़्तर में बैठे हुए आगामी वर्ष के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों का चुनाव कर रहे थे। एक सज्जन अपने स्थान पर उछल-उछलकर ज़ोरदार शब्दों में कह रहे थे—"अजी, मेरी बात भी सुनोगे या नहीं। सभापति महाशय, मैं सेठ झवारीलाल को आगामी वर्ष का सभापति चुने जाने का प्रस्ताव पेश करता हूँ।" सभापति महाशय कुछ कहने के लिये मुँह खोलना ही चाहते थे कि झवारी-लालजी बोल उठे—"नहीं भाई, मैं इस लायक़ नहीं। सभापति के लिये तो कोई सच्चरित्र आदमी होना चाहिए। मैं खद्दर नहीं पहनता।" बाज़ार के तीन-चार नवयुवक चिल्ला उठे—"वाह! यह कैसे हो सकता है? तुम हर्गिज़ इनकार नहीं कर सकते। हम लोग जब कह रहे हैं, तब तुम्हें सभापति बनना पड़ेगा।"

पास ही नवयुवक-दल के मुखिया विजयबहादुर बैठे थे। वह इस हुल्लड़ को देखकर उत्तेजित हो गए। उन्होंने सभापति की ओर हाथ फेकते हुए चिल्लाकर कहा—"आप यह क्या कर रहे हैं। सभा में शांति स्थापित कीजिए, और बाक़ायदा काररवाई कीजिए।"

सभापति ने सहसा दोनो हाथ ऊपर उठाकर कहा—"आर्डर! आर्डर!!"

सभा में पूर्ण शांति स्थापित होने जा रही थी, इतने में नीचे से कोई चिल्लाया—"बरौल में डाका पड़ रहा है!....."

सभा-भवन के लोग क्षण-भर के लिये समाहित-से हो गए। फिर आवाज़ें आईं—"ठहरो! क्या है? क्या है? डाका पड़ा है! कहाँ?" साथ ही लोग उठ खड़े हुए। विजयबहादुर ने गला फाड़कर कहा—"अजी, सुनने भी दो! क्या...?" नीचे से फिर आवाज़ आई—"शिवूसाहु के यहाँ डाका पड़ रहा है। सब लोग चलिए!..." सभा-भवन के नवयुवकों ने एक-स्वर से कहा—"चलो, चलो। शीघ्र चलो। सभापति का चुनाव कल सबेरे होगा।" सबके हृदय सेवा-भाव से अनुप्राणित हो गए थे।

जो दो-चार बैठे रह गए थे, उन्होंने कहा—"अरे, इतना घबराते क्यों हो? पुलिस आ जायगी।" मगर उनकी यह आवाज़ विजयबहादुर के उच्च-स्वर में दब गई—"चलो, चलो, पुलिस क्या करेगी। लुटेरों को अभी मारकर भगाते हैं।"

"हाँ, हाँ, चलो, चलो।" जो बैठे थे, वह भी उठ खड़े हुए।

दूसरे क्षण कांग्रेस-कमेटी के दफ़्तर का पुराना ज़ीना साठ-सत्तर आदमियों के पाद-प्रहारों से प्रकंपित और प्रतिध्वनित हुआ, और फिर तुरंत ही नीरव हो गया।

(२)

सब लोग गली से बाहर निकलकर बाज़ार की सड़क पर पहुँचे। किसी ने भाला लिया, किसी ने डंडा लिया, किसी ने किरच ली; मगर बंदूक़-जैसी ख़तरनाक चीज़ किसी के घर में नहीं निकली। बाज़ार के लोग उस समय दूकानें बढ़ाकर कुछ तेज़ी से घरों की तरफ़ जा रहे थे। एक बज़ाज़ ने कहा—"बाबूजी, पुलिस-इंसपेक्टर को तार दे दो!" उसकी बौखलाहट देखकर यह जान पड़ा, मानो डाका उसी के घर पड़ रहा हो।

विजयबहादुर घर के भीतर अपना मिर्ज़ापुरवाला मोटा डंडा खोज रहा था। नवयुवकों की भीड़ ने आवाज़ लगाई—"विजयबहादुर, क्या कर रहे हो? जल्दी चलो।"

"अभी आया।"

मगर भीड़ उतावली हो रही थी। नवयुवकों के दिलों में बहादुरी का समंदर उमड़ रहा था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आख़िर विजयबहादुर बाहर निकला। उसके हाथ में एक सात फ़ीट ऊँचा मोटा लट्ठ था। उसे कंधे पर रखते हुए उसने कहा—"चलो, एक-एक को बिछा न दिया, तो मेरा नाम विजयबहादुर नहीं।"

नवयुवकों का दल सपाटे से चल दिया। विजयबहादुर सबसे आगे था। पीछे से दारोग़ाजी भी आए। वह अपने एक सिपाही के साथ तेज़ी से आगे बढ़ गए। गाँव वहाँ से एक मील था। मार्ग में रेलवे-स्टेशन पड़ता था। स्टेशन-मास्टर ने दूरदर्शिता से काम लेकर अपने बाल-बच्चों को मालगाड़ी के एक डिब्बे में भर दिया था, और स्वयं बंदूक़ लेकर डाकुओं पर फ़ायर करने की प्रतीक्षा में बैठे हुए थे। भीड़ ने नहर के पुल तक साथ चलने को कहा। परंतु वह ड्यूटी पर थे, और स्टेशन नहीं छोड़ सकते थे।

दारोग़ाजी भीड़ में ही रहे या आगे निकल गए, यह किसी ने नहीं देखा। नवयुवकों का दल बढ़ गया था, और उनका जोश भी बढ़ रहा था।

गाँव बिल्कुल क़रीब था। सभी कोई सोच रहे थे—"बस, डाकुओं को अब लिया।"

सामने नहर का पुल आ गया। भीड़ उसके निकट पहुँची ही थी कि एक फ़ायर हुआ। विजयबहादुर पूरा क़दम नहीं उठा सका। वह जहाँ-का-तहाँ थमककर रह गया, और उसके पीछे आदमियों की सारी भीड़ ज़मीन में गड़-सी गई। कई कंठों ने एकसाथ कहा—"क्या है, रुक क्यों गए?" किसी ने कहा—"दारोग़ाजी, ओ दारोग़ाजी!"

विजयबहादुर पुल के दूसरे छोर पर एक छाया देख रहा था। उसने दाएँ-बाएँ दृष्टिपात किया। दोनो ओर नहर का काला जल किसी विशाल चिर-निद्रित अजगर की भाँति दूर तक फैला हुआ था।

इतने में दूसरा फ़ायर हुआ। इस बार भीड़ में सन्नाटा छा गया। विजयबहादुर ने कहा—"ठहरो यार, नहर के उस पार जाने का कोई मार्ग खोजना चाहिए।"

"क्यों खोजना चाहिए?" यह पूछने की ज़रूरत नहीं हुई। पुल पर से आगे बढ़ना सोलहो आने असंभव था, क्योंकि सामने डाकुओं के दल का आदमी मोरचा बाँधे खड़ा था।

विजयबहादुर बाईं ओर को मुड़ा। नवयुवकों का दल उसके पीछे चला। सौ क़दम चलने पर बड़ी मुश्किल से एक जगह नहर में नीचे उतरने का मार्ग नज़र आया। विजयबहादुर ने कहा—"चलो भाई, उतरो।"

"हाँ, हाँ, चलो।" पीछे से सबने ख़ूब अविचलित भाव से उत्तर दिया।

विजयबहादुर नीचे उतरा। नहर के जल को स्पर्श करके उसने कहा—"बाप रे! पानी तो बड़ा ठंडा है!"

"और नहर बहुत गहरी है!"

"रात का वक़्त है।"

"सुनते हैं, एक मगर भी है।"

"ऐसे में उतरना महज़ बेवक़ूफ़ी है।"

नवयुवकों का दल बड़े पशोपेश में पड़ गया। क्या करें, और क्या न करें। उस पार गाँव में एक व्यक्ति लुट रहा था, और वे उसकी रक्षा का उपाय नहीं खोज पा रहे थे।

दो फ़ायर और हुए। फिर सन्नाटा छा गया। आध घंटे की ज़बर्दस्त दौड़-धूप और गंभीर सोच-विचार के बाद नवयुवकों का दल पुनः पुल के पास आया। सबने अंधकार में नेत्र गड़ा-गड़ाकर सामने देखा। पीछे-वालों ने हिम्मत दिखाई। कुछ नवयुवकों ने अपने लट्ठ सँभालकर कहा—"अजी चलो। गोली ही न लगेगी, और क्या होगा।"

विजयबहादुर निराशा से खिन्न होकर बोला—"जान पड़ता है, वह भाग गया है।"

सब लोग एक-स्वर में चिल्ला उठे—"कहाँ? कहाँ? पकड़ो ससुरे को। जायगा कहाँ।"

"चलो! चलो!!"

सब कोई अंधकार में डाकू को पकड़ने के लिये दौड़े। मगर वह नज़र नहीं आया। तब कुछ लोगों ने कहा—"उसके साथी तो होंगे। चलो शिब्माते के यहाँ। जल्दी।"

सब कोई हाँफते हुए घटना-स्थल पर पहुँचे। पता चला कि डाकू बंदूक़ का पहला फ़ायर होते ही भाग गए, और साथ में शिब्माते की तिजोड़ी तोड़कर ढाई हज़ार का माल भी लेते गए। नवयुवकों का दल इस समाचार को सुनकर बहुत दुःखी और निराश हुआ, तथा शिब्माते की पत्नी और उसकी माता को समझा-बुझाकर बस्ती को लौट आया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीवियोगी हरि

[श्रीयुत सोमनाथ गुप्त बी० ए०]

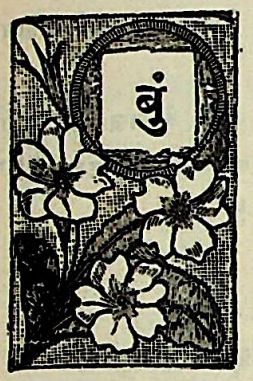

बुंदेलखंड को, बीहड़ होने पर भी, अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण हिंदी के कतिपय प्रसिद्ध कवियों की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। इसी उर्वरा-खंड के अंतर्गत छत्रपुर-राज्य में, चैत्र शुक्ल रामनवमी, सं० १९५३ वि० को, वियोगी हरिजी का जन्म हुआ था। जब

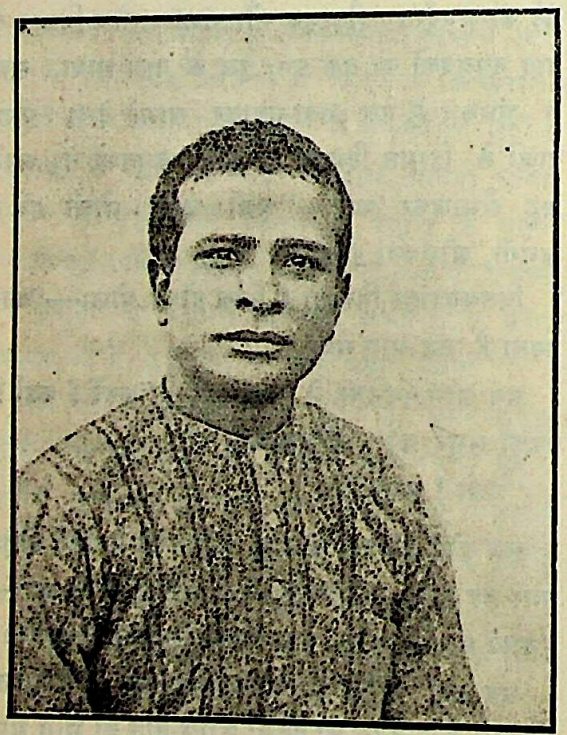

श्रीवियोगी हरि

यह छः मास के थे, तभी इनके पिता का देहांत हो गया। अतएव इनके पालन-पोषण का भार इनके नाना पं० अच्छेलाल तिवारी पर पड़ा। हरिजी पर तिवारीजी का विशेष स्नेह था। इन की शिक्षा घर पर आरंभ हुई। कुछ दिनों पश्चात यह स्थानीय छत्रपुर-हाईस्कूल में प्रविष्ट हुए, और सन् १९१५ में मैट्रीकुलेशन (Matriculation) की परीक्षा पास की। इसके बाद इंटरमीडियेट क्लास (Intermediate class) में पढ़ने लगे; परंतु दर्शन में विशेष रुचि होने के कारण हरिजी ने कुछ मास के अनंतर ही कॉलेज छोड़ दिया, और दर्शन एवं भगवद्भक्ति-संबंधी संस्कृत-ग्रंथों के अध्ययन में लग गए। हिंदी-लेखक बा० गुलाबरायजी इस समय इनके संपर्क में आए। बाबूजी को भी दर्शन से बड़ा प्रेम था। अधिक क्या चाहिए था, दो दीवाने मिल बैठे और खूब घुटने लगी।

हरिजी को बाल्यावस्था से ही भागवत तथा विनय-पत्रिका से विशेष प्रेम था। कई बार इन्होंने इन पुस्तकों को आद्योपांत पढ़ा भी। वियोगीजी का पहले अद्वैतवाद की ओर झुकाव रहा; परंतु आगे चलकर इनके ऊपर एक शक्ति का विशेष प्रभाव पड़ा। यह प्रभाव वर्तमान छत्रपुराधीश की धर्मपत्नी गोलोकवासिनी श्रीमती कमलकुमारी देवी का था। श्रीमतीजी का इन पर बाल्यकाल से ही वात्सल्य स्नेह था। हरिजी लिखते हैं—

"सहसा कहीं से पूर्व-भव का परिचय-प्रवाह रक्त-मूर्च्छना से विकंपित वेणु-रव उठा, जिसने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वर-सामंजस्य में एक अलौकिक दिव्य-शक्ति के दर्शन हुए।"

बस, इस दर्शन के कारण एक अकथनीय आह्लाद का सुभग-स्रोत हरिजी के हृदय में बहने लगा, और हरिजी अद्वैतवाद के झमेलों से निकलकर द्वैतवादी होकर सुरीले स्वर से गाने लगे—

"भगवत्-रूप भागवत्-भावुक भेद न तिनमें मानों ;
चतुर वैष्णव एक हरी के रसिक रँगीले जानों।
संतन के पद-पंकज पूजों, संत-चरित्र बखानों ;
संतन ही में, अहो वियोगी ! नारायण पहिचानों।"

परंतु हरिजी के विचार केवल वैष्णव-संप्रदाय तक ही परिमित नहीं हैं, प्रत्युत आप प्रत्येक धर्म एवं संप्रदाय को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। हरिजी कवि होते हुए भी समाज तथा देश के सेवक हैं। आपके सामाजिक विचार बड़े ही क्रांतिकारी हैं। अभागिनी विधवाओं के प्रति अपनी सहानुभूति एवं सहृदयता का परिचय देते हुए आप लिखते हैं—

"सुर-तरुहू के फरन की मति कीजौ उत आस ;
जाय बाल-विधवा निकसि जित ह्वै भरति उसास।"

अछूतों के लिये भी हरिजी के हृदय में कितना प्रेम है, और उनके प्रति कितनी समवेदना है, इसका पता इस दोहे से लग जाता है—

"अपनावत अजहूँ न जे अपने अंग अछूत ;
क्यों करि ह्वैहैं छूत वै करि कारी करतूत।"

धर्म के पाखंडियों तथा देश-द्रोहियों के लिये इन शब्दों में कैसी भर्त्सना है, सका अनुमान पाठक स्वयं कर सकते हैं।

हरिजी का देश-प्रेम भी उच्च कोटि का है। सत्याग्रह एवं असहयोग के समय हरिजी ने कई ट्रैक्ट लिखकर अपने देश-प्रेम का यथोचित प्रमाण दिया था। देश-प्रेम की धारा में बहकर आपने खद्दर का आलिंगन किया। देशवासियों की करुण-कथा सुनकर और उनकी दयनीय दशा देखकर कवि के हृदय में कोमल भावों पर वीर-रस की स्वाभाविक प्रवृत्ति जाग्रत् हो उठी। इसी के फल-स्वरूप हिंदी-संसार को "वीर-सतसई" के दर्शन हुए।

हरिजी की महात्मा गांधी पर असीम श्रद्धा है। प्रथम साक्षात्कार होने पर आपके हृदय में उस तपस्वी के प्रति जो भाव उत्पन्न हुए थे, वे ये हैं—

"भागवत भूषण ! कौन कहता है कि तू कोरा राजनीतिक पथ-प्रदर्शक है ! तू तो एक शुद्ध भागवत है। तेरी प्रेमानन्यता में गोपिकाओं की, कीर्तन में गौरांगदेव की और भक्ति-विह्वलता में मीरा की प्रतिमूर्ति सामने आ खड़ी होती है। भक्ति की मूर्च्छित लता को आज तू अपने आँसुओं से सींच-सींचकर अनुप्राणित कर रहा है। महात्मन् ! वास्तव में इस युग का तू एक ईश्वरीय रहस्य है। तुझे नमस्कार है। शतशः नमस्कार है।"

ये एक सच्ची आत्मा के हृदय से निकले हुए सच्चे उद्गार हैं। इनमें बनावट की बू भी नहीं पाई जाती।

हरिजी के राष्ट्रीय विचार टंडनजी के साथ रहने के कारण और भी परिमार्जित हो उठे। हरिजी की उच्च प्रतिभा तथा सच्चरित्रता पर टंडनजी मुग्ध थे ही, उधर अनायास ही टंडनजी के सुपुत्र गुरुप्रसाद टंडन पर हरिजी का विशेष स्नेह और अनुग्रह हो गया, जिसके फल-स्वरूप टंडनजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के कुटुंब से आपकी घनिष्ठता अत्यंत बढ़ गई।

हरिजी ने १८ वर्ष की अल्प आयु में ही साहित्य-कानन में प्रवेश किया, और उस समय से आप निरंतर उसी में विचरण कर रहे हैं। सर्वप्रथम इन्होंने "प्रेम-शतक", "प्रेम-पथिक", "प्रेमांजलि" और "प्रेम-परिषद्"-नामक पुस्तकें लिखीं, जो प्रेम-मंदिर, आरा से, स्व० कुमार देवेंद्रप्रसाद जैन ने प्रकाशित की थीं। इसी समय इनके विवाह की चर्चा चली। घरवालों के बहुत आग्रह करने पर भी आपने अपना विवाह नहीं किया, और शाश्वत ब्रह्मचर्य पालन करने का संकल्प कर लिया।

अपने गुरु के साथ, जिनका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं, इन्होंने कई बार भारत के संपूर्ण तीर्थों की यात्रा की। तीर्थ-यात्रा में इन्हें बहुत-सी बातों का अनुभव हुआ, और बहुत-से भगवद्भक्तों के संपर्क में आने के कारण इनको बहुत कुछ आध्यात्मिक शांति भी मिली। इसी तीर्थ-यात्रा के संबंध में यह, सन् १९१९ ई० में, प्रयाग आए। यहाँ सुप्रसिद्ध हिंदी-साहित्य-सेवी तथा देशभक्त श्रीपुरुषोत्तमदासजी टंडन ने इनमें अतुल प्रतिभा का आभास देख इन्हें हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के लिये रोक लिया। सम्मेलन में रहकर हरिजी ने योग्यता-पूर्वक अवैतनिक रूप से 'सम्मेलन-पत्रिका' का संपादन किया, और इस कार्य को वह लगभग तीन-चार वर्षों तक उसी रूप में अदम्य उत्साह एवं तल्लीनता से करते रहे। इसी काल में इनकी 'तरंगिणी' ने 'साहित्योदय, प्रयाग' से निकलकर पाठकों को अपनी ओर खींच लिया। प्रयाग में कुछ दिनों रहने के बाद हरिजी फिर श्रीमतीजी के साथ दक्षिण में तीर्थ-यात्रा करने चले गए। यात्रा से लौटते हुए सहसा चैत्र शुक्ल ७, सं० १९७८ को श्रीमतीजी का टीकमगढ़ में देहावसान हो गया। इस दैवी वज्राघात का हरिजी के जीवन पर बड़ा विचित्र प्रभाव पड़ा। इसने इनके जीवन में एक नया ही युग उपस्थित कर दिया। दर्शन की ओर प्रवृत्ति, एकांत-प्रियता और श्रीमतीजी की आकस्मिक मृत्यु आदि कारणों से उद्विग्न होकर प्रयाग में आकर हरिजी ने संन्यास ग्रहण कर लिया। अपने गुरु के वियोग में सदा के लिये "हरिप्रसाद द्विवेदी" से 'वियोगी हरि' नाम रखकर अपने सर्वस्व के प्रति अपनी असीम गुरु-भक्ति तथा अनुराग का परिचय इन शब्दों में दिया —

"धरायो तबहिं वियोगी नाम,
जा दिन श्रीगुरुचरन-चंद्र-नख अथए ललित ललाम।"

अब हरिजी के समय का अधिक भाग साहित्य-कार्य ही में व्यतीत होने लगा। इसी समय हरिजी ने निम्न-लिखित पुस्तकें संपादित कीं—

१. संक्षिप्त सूर-सागर, २. योगी अरविंद की दिव्य वाणी, ३. छत्रसाल, ४. मीराबाई पद्य-संग्रह, ५. ब्रज-माधुरी-सार, ६. वृत्तचंद्रिका, ७. "विनय-पत्रिका" की एक सुंदर एवं गवेषणा-पूर्ण टीका।

पाँच-छः वर्ष के अल्प-काल में इन्होंने हिंदी में कई उपयोगी मौलिक पुस्तकें लिखीं। यथा—

१. शुकदेव, २. गुरु-पुष्पांजलि, ३. छद्मयोगिनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(नाटिका), ४. साहित्य-विहार, ५. कवि-कीर्तन, ६. अनुराग-वाटिका, ७. अंतर्नाद, ८. प्रबुद्ध यामुन (नाटक), ९. वीर-सतसई।

इनके अतिरिक्त आपने दो पुस्तकें "भावना" और "पगली" अभी हाल में लिखी हैं, जो शीघ्र ही काशी तथा कलकत्ता से प्रकाशित होने-वाली हैं।

हरिजी की प्रतिभा बड़ी ही विचित्र है। आप का गद्य और पद्य, दोनो पर समान अधिकार है। पद्य के लिये आप व्रजभाषा को विशेष उपयुक्त समझते हैं, और कविताएँ प्रायः इसी भाषा में करते हैं। यदि एक ओर 'अनुराग-वाटिका' की छटा प्रदर्शित होती है, तो दूसरी ओर हरिजी की हृदय-वीणा का 'अंतर्नाद' सुनाई पड़ता है। एक ओर 'व्रज-माधुरी-सार' का माधुर्य झलकता है, तो दूसरी ओर 'वीर-सतसई' अपने उच्च स्वर से वीरता का अनुपम राग सुनाती है। कहाँ तक कहें, यदि ये सब बातें देखनी हैं, तो हमारा पाठकों से यही अनुरोध है कि वे हरिजी की पुस्तकों को स्वयं पढ़कर हमारे कथन की सत्यता का प्रमाण ले लें।

हरिजी की मुख्य विशेषता उनका उच्चतम व्यक्तित्व है। आपका स्वभाव अत्यंत सरल तथा उदार है। Plain living and high thinking ही आपके जीवन का लक्ष्य प्रतीत होता है। आप बड़े निरभिमान तथा नम्र हैं। गत छः वर्षों से आप केवल फलाहार कर रहे हैं, और वह भी प्रायः सूक्ष्म मात्रा में। इस पर भी आश्चर्य यह कि आपका स्वास्थ्य बहुत ही अच्छा है। जुकाम की आपको कभी आज तक शिकायत नहीं हुई। ब्रह्मचर्य के कारण आपकी ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा का और भी अधिक विकास हुआ है। अपनी प्रतिभा का हरिजी को अल्प ज्ञान है; इसी कारण आप-की प्रतिभा प्रायः दूसरों के ठेलने से जागा करती है। कभी तो यह देखा गया है कि हरिजी आलस्य की कंदराओं में गुप्त हो जाते हैं, और कभी कुछ ही समय पश्चात् वहाँ एकत्रित की हुई तपस्या का फल एक-दो दिन में लेकर शीघ्र ही प्रकट भी हो जाते हैं। आपकी छद्मयोगिनी (नाटिका) २ दिन में और 'कवि-कीर्तन' केवल ४ दिन में लिखा गया था।

खान-पान तथा वेश-भूषा को आप किंचिन्मात्र भी प्रधानता नहीं देते। आप प्रायः अपने मित्रों से कहा करते हैं कि शरीर की शुद्धि से क्या, आंतरिक शुद्धि करनी चाहिए। इस संबंध में इनकी यह उक्ति कितनी सराहनीय है—

"तुम्हें अपना सौंदर्य ही देखना है, तो उसे आत्मा के निर्मल दर्पण में क्यों नहीं देखते? चले जाओ आत्मा के नीरव अंतस्तल में। वहीं तुम अपने लावण्य और माधुर्य का यथेष्ट चित्रांकण कर सकोगे।"

हरिजी बड़े सीधे और लापरवा हैं। इसी कारण आपकी कई स्वरचित पुस्तकें लुप्तप्राय हो गईं; परंतु आपने उनके भाग्य की तनिक चिंता न की। एक बार तो आपने अपना एक नाटक ही फाड़ डाला।

इसी लापरवाही के कारण आपको अनेकों बार आर्थिक क्षति का भी सामना करना पड़ा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कई बार ऐसा हुआ कि किसी पुस्तक में "नोट" रख दिया, और फिर भूल गए। महीने-दो-महीने बाद यदि पुस्तक उठाई, तो वाह-वाह, नहीं तो "परोपकाराय सतां विभूतयः।"

हरिजी बड़े अच्छे वक्ता हैं; परंतु सभा, समाजों, कवि-सम्मेलनों तथा विद्वन्मंडली के सामने आने में आप बहुत घबराते हैं। आप अधिक मिलना-जुलना पसंद नहीं करते। हाँ, जिससे मिलते हैं, खूब दिल खोलकर मिलते हैं। आपकी गंभीरता में मनोरंजन को पुट मिली होती है। जिस समय कोई मित्र हरिजी से मिलने जाता है, तो आप निस्संकोच जो कुछ फल इत्यादि आपके सामने होता है, उसी से उसका स्वागत करते हैं। उस फलाहार में जो आनंद प्राप्त होता है, उसका केवल वे ही अनुभव कर सकते हैं, जिनको कभी उसका सौभाग्य प्राप्त हुआ हो।

आजकल हरिजी पन्ना-राज्य में रहते हैं। टंडनजी के लाहौर चले जाने पर लगभग दो वर्षों से आप वहीं निवास करते हैं। वर्तमान पन्ना-नरेश आपके स्वभाव तथा योग्यता पर इतने मुग्ध हैं कि वह नहीं चाहते कि हरिजी अपनी जन्म-भूमि बुंदेलखंड, विशेषकर पन्ना-राज्य, छोड़कर कहीं अन्यत्र चले जायँ। आप वहाँ पन्ना-महाराज के आग्रह-वश अतिथि-रूप से ठहरे हुए हैं। हाँ, कभी-कभी अवकाश मिलने पर प्रयाग की मित्र-मंडली को अपने दर्शन अवश्य दे जाते हैं।

भारतीय स्त्रियाँ

[लेखक बाबू रामचंद्र वर्मा]

यह पुस्तक श्रीमती महारानी साहबा बड़ौदा की The Position of Women in Indian Life के आधार पर लिखी गई है। स्त्री-समाज के कतिपय जटिल प्रश्नों का महारानी साहबा ने इसमें कैसा निराकरण किया है, यह पुस्तक पढ़ने से पता लगेगा। इसमें निम्न-लिखित विषयों पर योग्यता, सरलता और सफलता-पूर्वक विचार किया गया है। स्त्रियों का आंदोलन, खेती-बारी, घरों की सजावट, कला और शिल्प, परोपकारिता के कार्य, गृह-प्रबंध, निरीक्षण-कार्य, सहयोग या समवाय-सिद्धांत, महाजनी या लेन-देन, परोपकारिणी संस्थाएँ, मितव्यय, परिश्रम और पारिश्रमिक, उद्धार-कार्य, स्त्रियों के हित और जापान की स्त्रियाँ, गृह तथा देश-संबंधी कार्यों में स्त्रियाँ किस प्रकार और कितना योग दे सकती हैं—फलतः देश में नई जागृति पैदा करने में उनका कितना हाथ है और हो सकता है—आदि बातें भारतवर्ष की प्रत्येक स्त्री को अवश्य जाननी चाहिए। अभी तक हिंदी में ऐसी पुस्तक कोई भी नहीं निकली। इस पुस्तक से एक बड़े अभाव की पूर्ति होती है। प्रत्येक घर में इसकी एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए। इसमें महारानी साहबा का चित्र भी है। पुस्तक के कवर पर भी रंगीन चित्र है। मूल्य केवल १॥), सजिल्द २)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लाटूशरोड, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गीत

[पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"]

नयनों में हेर प्रिये,
मुझे तुमने थे वचन दिए—
"तुम्हीं हृदय के सिंहासन के
महाराज हो तन के, मन के;
मेरे मरण और जीवन के
कारण-जाम पिए ।
"मेरी वीणा के तारों में
बँधे हुए तुम झंकारों में,
उर के हीरों के हारों में
ज्योति अपार लिए ।
"मेरे तप के तुम्हीं अमर वर,
हृदय-कंप के जलद-मंद्र-स्वर,
मेरी तृष्णा के करुणाकर
तृप्ति-प्रेम-सर हे !"

अप्सरा ! अप्सरा !! अप्सरा !!!

छप रही है । शीघ्र निकलेगी !!

हिंदी-साहित्य में कल्पना की मंजुल मूर्ति भाषा की सरस सरिता पर तैरती हुई सौंदर्य के समुद्र से मिली अप्सरा अन्यत्र आपको नहीं मिल सकती। कला-कौशल के कमलों पर प्रतिभा का प्रकाश हँस रहा है। अश्लीलता का कहीं नाम भी नहीं, फिर भी यह सब तरह से अप्सरा है। हिंदी के गले में विजय का हार, भाषा और भावों के बारा में वसन्त यह नृत्य, यह संगीत, यह कल्पना, यह भाषा, यह चित्रण, ऐसी अपूर्व कुशलता अन्यत्र आपको नहीं मिल सकती। हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक, कविवर "निराला" जी की लेखनी का जादू। अभी से ग्राहक बनें, नहीं तो आपको अप्सरा नहीं मिल सकेगी। ऐसे मनोहर दृश्यों के लिये आप तरसेंगे, खरीदकर कोई दूसरे को पढ़ने के लिये भी न देगा। याद रहे, यह अप्सरा है ! मूल्य लगभग १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नमक

[श्रीयुत मोहनलाल बड़जात्या]

नमक की ग़रीब-अमीर, सबको आवश्यकता होती है। ऐसा कौन है, जो इसे नहीं जानता। चाहे तेज़ मिले या सस्ता, अन्य खाद्य पदार्थों के साथ ही इसकी भी आवश्यकता होती है, और इसीलिये यह जीवन के आवश्यकीय पदार्थों में से एक है। नमक बड़ी क़ीमती चीज़ नहीं, पर बड़े महत्व की चीज़ है, यह सब जानते हैं, और इसीलिये अँगरेज़-सरकार ने इसे अपने क़ब्ज़े में किया और उसपर टैक्स लेती है। जब नमक के विना कोई नहीं रह सकता, तो नमक के टैक्स से भी कोई नहीं बच सकता, और यों कहना चाहिए कि यह टैक्स ग़रीब-अमीर, सबको चुकाना पड़ता है। सरकार ने इस पर अपना एकाधिपत्य कैसे जमाया और भारत में इस पदार्थ पर अपना क़ब्ज़ा किस तरह बनाए हुए है, यही इस लेख में दिखाया जायगा।

नमक पर कर वसूल करने का अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी ने मुग़लों से पाया, और बंगाल में, सन् १७६५ में, जब कंपनी ने अधिकार ग्रहण किए, तभी से यह वसूल किया जाने लगा। इसके बाद अन्य प्रांतों में यह कर लगाया गया। इससे सरकार को बहुत बड़ी आमदनी होती है। उसके आय-व्यय के बजट में इस मद का अच्छा आधार है, क्योंकि अपनी आर्थिक परिस्थिति के अनुसार वह इसे घटाती-बढ़ाती रहती है, अर्थात् तंगी के समय वह इसे बढ़ाकर अपनी आवश्यकता की पूर्ति का उपाय कर लेती है। आजकल नमक पर १।) मन का कर है। समूची खपत (१८ लाख टन) का एक चतुर्थांश इंपोर्ट होता अर्थात् बाहर से आता है। सन् १८८८ से १९०३ तक २।) मन का कर लगता था, इसके बाद घटते-घटते सन् १९०७ में १) मन कर दिया गया। सन् १९१६ में १।) मन और १९३३ की पहली मार्च को बढ़ाकर २।) किया गया। आजकल १।) मन लगता है।

सन् १८४३ में देशी रियासतों का बिना कर लगा हुआ बाहरी सस्ता नमक ब्रिटिश-इलाक़ों में आने से रोकने के लिये एक सरहद (Inland customs line) बनाई जाने लगी, जिसका विस्तार सन् १८७० में समूचे ब्रिटिश-इंडिया में हो गया, अर्थात् इंदु नदी के किनारे अटक के उत्तर से लेकर मदरास के किनारे महानदी तक २५०० मील का फ़ासला इस सरहद ने घेर लिया। यह काँटों की झाड़ियों से बनाई गई पत्थर की दीवाल खाइयों से ऐसी सुरक्षित की गई, जिसे कोई मनुष्य, कोई भी भार-वाहक पशु या गाड़ी बिना ख़बर पड़े पार नहीं कर सकता था। सर थॉर्टन ने कहा है कि इसकी तुलना चीन की बड़ी दीवाल के सिवा और किसी से नहीं की जा सकती। यदि इस तरह की लाइन योरप में बनाई जाती, तो यह समझना चाहिए कि सन् १८६६ में उसका विस्तार मैक्सिको से जिब्राल्टर तक होता। इस सरहद की रक्षा एक फ़ौज द्वारा की जाती थी, जिसमें १,२०,००० अफ़सर और फ़ौजी मनुष्य थे। ये सब भिन्न-भिन्न बँटे हुए थे, और रात-दिन चौकीदारी करते और गश्त लगाते रहते थे। इस बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि इस तरह के प्रबंध से व्यापार को कितनी बाधा एवं जन-साधारण को कितना कष्ट और झंझट होता होगा।

यह सब असुविधा मिटाने के लिये भारत-सरकार के पास केवल एक यही उपाय था कि देश में नमक की सब जगहों की पैदावार पर अपना आधिपत्य बनाया जाय। इसी विचार से जिन-जिन देशी रियासतों में नमक पैदा होता था, उनके साथ इस विषय के शर्तनामों की बातचीत होने लगी। राजपूताना में साँभर की झील एवं अन्य नमक के स्थान सरकार ने लीज़ पर ले लिए, और उन सब पर सरकार का एकाधिपत्य हो गया। कई रियासतों में नमक की पैदावार क़तई बंद कर दी गई, और देशी नरेशों द्वारा नमक के ताल नष्ट करवा दिए गए। यहाँ तक कि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क़ुदरती नमक बिना किसी यत्न या विधि के ही पैदा होता था, उसे भी देशी रियासतों की जनता पा न सके, इस तरह का प्रतिबंध कर दिया गया। कई रियासतें नमक पैदा करने के लिये खुली रक्खी गईं, पर वे बाहर चालान देने या ब्रिटिश-भारत में भेजने से रोक दी गईं। दो रियासतें ऐसी भी थीं, जो विदेशों को नमक भेज सकती थीं, पर भारत में किसी जगह नहीं। इस प्रकार जैसे बना, वैसे अँगरेज़-सरकार ने नमक पर अपना क़ब्ज़ा जमाया, और फिर समूचे देश में एक समान कर जारी किया गया।

इस प्रकार सरकार के लिये तो यह 'एक समान कर' की सुविधा हो गई, पर रियासतों को इससे आर्थिक एवं अपनी सत्ता-विषयक बहुत भारी नुक़सान उठाना पड़ा। यहाँ यह कहा जा सकता है कि इसमें सरकार ने ज़ोर-ज़ुल्म क्या किया, क्योंकि शर्तनामे सही कराकर यह काम किया गया। हाँ, शर्तनामे तो अवश्य हुए, पर इससे यह नहीं समझना चाहिए कि रियासतों ने ख़ुशी से इन पर सही कर दी हो या इनसे उनका कुछ नुक़सान न हुआ हो, बात यह है कि वे अपनी कमज़ोरी के कारण सही करने से इनकार न कर सकीं। इस तरह के कई मामलों में सरकार ने भारत की भलाई का बहाना बनाया। रेल बनाने में देशी रियासतों से जो सहायता ली गई और उनसे जो शर्तें की गईं, उनमें से कई अनुचित और न्याय-विहीन होने पर भी रेल से देश में गमनागमन की सुविधा उत्पन्न हुई, और रियासतों को भी इससे लाभ पहुँचा, लेकिन नमक-संबंधी ठहरावों में ऐसी कोई बात नहीं है, प्रत्युत इससे देश और देशी रियासतों को भारी हानि पहुँची है। यद्यपि कई रियासतें अपनी आवश्यकता के लिये नमक पैदा करने के लिये खुली हैं, और कई को अपनी आवश्यकता का कुछ अंश बिना कर के मिलता है, तो भी कहना पड़ेगा कि अधिकांश रियासतों में प्रत्येक नमक ख़रीदनेवाला व्यक्ति सरकारी रेविन्यू में कुछ-न-कुछ भाग पहुँचा रहा है। इसका यह अर्थ है कि रियासतों की उस जनता के, जो सरकार की जनता नहीं है और न जिसे सरकार द्वारा व्यय किए जानेवाली रक़म में किसी तरह का उपयोग मिलता है, मत्थे भी यह कर लगता है। इससे यह नहीं समझना चाहिए कि उन देसी-रियासतों को अपनी जनता पर भी नमक पर कर लगने के सिवा और कुछ हर्ज़-मर्ज़ नहीं उठाना पड़ता है। नहीं, इस बात के सिवा और भी बहुत हानि उठानी पड़ी है, जिसका वर्णन आगे किया जायगा। ये रियासतें तीन भागों में विभाजित की जा सकती हैं—(१) वे जिनके नमक के स्थानों को सरकार ने ले लिया है, (२) जिनमें नमक का पैदा करना बंद कर दिया गया है, और (३) जिनमें नमक पैदा किया जाता है, पर बाहर नहीं भेजा जा सकता।

पहली तरह की रियासतों में एक मुख्य उदाहरण जोधपुर का है। बी० बी० सी० आई० रेलवे के फुलेरा-स्टेशन से मारवाड़ की लाइन जाती है, उससे पहला स्टेशन 'साँभर' का आता है। साँभर एक अच्छा सुंदर क़स्बा है। स्टेशन से आगे बढ़ने पर साँभर के मकान और समस्त क़स्बे का दृश्य बड़ा सुहावना जान पड़ता है; पर लाइन के दोनो ओर नमक की क्यारियों से नमक के सड़ने की बदबू के मारे कभी-कभी खिड़कियाँ बंद करनी पड़ती हैं। इसके साथ ही नमक के छोटे-छोटे पहाड़-सदृश सुफ़ेद टीले एवं पानी की क्यारियों का दृश्य भी देखने योग्य है। यही स्थान साँभर झील (Sambhar Lake) है। साँभर जोधपुर और जयपुर-रियासतों के सम्मिलित अधिकार में है। दोनो रियासतों के हाकिम-हुक्काम यहाँ रहते हैं, और एक शामिलाती कचहरी भी बनी हुई है, जहाँ दोनो रियासतों के हाकिम एकसाथ बैठकर मामलों पर विचार कर अपना निर्णय देते हैं। साँभर दोनो रियासतों के अधिकार में होते हुए भी साँभर-झील पर इनका कोई अधिकार नहीं है। नमक का सब कारख़ाना, जिसमें पहले मज़दूरों से काम होता था, अब बिजली की पावर से चलाया जाता है, और अँगरेज़-सरकार के अधीन है।

साँभर-झील जोधपुर और जयपुर-दरबारों से, सन् १८७६ में, अँगरेज़-सरकार ने लीज़ पर ले ली। यह काम कस्टम-लाइन के तोड़ने का श्रीगणेश था। यह बात नहीं है कि कस्टम-लाइन के तोड़ने से सरकार की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ हानि हुई हो, प्रत्युत इसमें उसका बहुत हित था। राजपूताना के नमक के स्थानों पर अधिकार होने से सरकार को बड़ी भारी आमदनी होती है, यहाँ तक कि गत ३० वर्षों में अकेली साँभर-झील से प्रतिवर्ष औसत १ करोड़ रुपया से अधिक बैठा है। जोधपुर-राज्य के नमक के अन्य स्थान भी अँगरेज़-सरकार के अधीन हैं, पर यहाँ केवल साँभर-झील का थोड़ा-सा वर्णन दिया जायगा।

साँभर की लीज़ से जोधपुर-दरबार को १½ लाख और जयपुर को २¾ लाख रुपया प्रतिवर्ष मिलता है, और नियत परिमाण से अधिक नमक निकालने पर राय-लटी (Royalty) मिलती है। दोनो रियासतों को कुछ नमक भी अँगरेज़-सरकार बिना कर के देती है। इस प्रकार ४ लाख रुपया देकर अँगरेज़-सरकार ने १ करोड़ की आमदनी निकाल रक्खी है। पहले नमक मज़दूरों द्वारा पानी की क्यारियों से निकाला और एकत्र किया जाता था। जगह-जगह पर संचय-स्थान नियत थे, जिन्हें कुड्डा कहते थे। अब सब काम बिजली द्वारा होता है, जिसका निर्माण अभी थोड़े ही समय पहले हुआ है, अब नमक भिन्न-भिन्न स्टोरों में एकत्र किया जाता है। नमक के महकमे का अफ़सर साल्ट-कमिश्नर कहलाता है, जिसका साँभर में दफ़्तर है। यहाँ नमक का व्यापार ख़ूब चलता है, जिसकी बदौलत यहाँ पर सेठ-साहूकारों की दूकानें खुली हुई हैं। ये दूकानदार लोग नमक के लिये दरख़्वास्तें देते रहते हैं, जिनके मंज़ूर हो जाने पर नंबरवार नमक मिलता है। इन दरख़्वास्तों को रवन्ना भरना कहते हैं। इन रवन्नों की रक़म दरख़्वास्त करने के साथ पहले भरनी पड़ती है। दरख़्वास्त गाड़ी (Wagon) पीछे दी जाती है अर्थात् दरख़्वास्त में यह लिखना होता है कि इतनी गाड़ी नमक चाहिए। एक गाड़ी १०७ बोरे की और प्रत्येक बोरे में २॥) मन नमक होता है। इस हिसाब से एक गाड़ी में २६७॥) मन नमक होता है। सरकार दरख़्वास्तें और उनका रुपया पहले भरा लेती है, और रक़म की रसीद दे देती है, फिर बारी-बारी नमक देती रहती है। कभी-कभी आज की दी हुई दरख़्वास्त का नमक १०-१२ महीने बाद तक मिलता है। नमक के संचय-स्थान जो पहले कुड्डे कहलाते थे, अब स्टोर-नंबर से बोले जाते हैं, और ख़बर मिलने पर कि अमुक तारीख़ को अमुक स्टोर से नमक दिया जायगा, ग्राहक अपने बोरे लेकर बताए हुए नंबर के स्टोर पर पहुँच जाता है, जहाँ नमक बोरों में भर दिया जाता है। रेल का डिब्बा (Wagon) वहीं आकर लग जाता है, और बोरे उसमें लाद दिए जाते हैं। रेल की लाइन चारो ओर स्टोरों में चली गई है, जिससे डिब्बे जहाँ चाहे वहाँ लगा दिए जाते हैं। जिस समय नमक की दरख़्वास्तें अर्थात् रवन्ने भरे जाते हैं, उस समय साँभर में रक़म की टान हो जाती है, और ब्याज भी ऊँचा हो जाता है, क्योंकि उस समय इसका कारबार करनेवाले रक़म जुटा-जुटाकर सरकार में भरने की धुन में रहते हैं। इस प्रकार साँभर में रक़म की आवश्यकतानुसार रक़म का ब्याज घटता-बढ़ता रहता है। वहाँ सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की शाखा है, और सराफ़ी लेन-देन हुंडी-चिट्ठी का काम अच्छे परिमाण में होता रहता है। भरे हुए रवन्नों का माल बारी आने पर जैसा भाग्य में बदा हो, अच्छे-बुरे स्टोर से मिलता है। साँभरवाले यह जानते हैं कि अमुक स्टोर का नमक बढ़िया है, अमुक का घटिया। इन रवन्नों की लेवा-बेची चलती रहती है, और इनका भाव नमक की माँग के अनुसार घटता-बढ़ता रहता है। जब दिसावर में नमक की तेज़ी होती है, तब इन रवन्नों का भाव भी चढ़ जाता है, और जिनके पास रवन्ने हैं, उनका भाग्य चमक जाता है। युद्ध के समय जब देश में नमक की बम मच गई थी, उस समय साँभर में भी बड़ी चमक-दमक आ गई थी, और नमक के कारबारियों के वारे-न्यारे हुए थे। उस समय रवन्ने का भाव ऊँचे-से-ऊँचे में ११००) रुपया प्रति रवन्ना तक पहुँच गया था। रवन्ने के भाव से यह अर्थ है कि रवन्ने के पीछे सरकार में जो रक़म भरी गई है, उसके अलावा जितने रुपए का प्रति रवन्ने का भाव होता है, उतना रुपया रवन्ना ख़रीदनेवाला व्यक्ति बेचनेवाले को और अधिक देता और रवन्ना ले लेता है। इस प्रकार इन रवन्नों की आपस में लेवा-बेची चलती है। विचारने की बात है कि महायुद्ध के समय सरकार में भरी हुई रक़म के अतिरिक्त २६७॥) मन नमक पर ११००)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रुपया तक प्रति रवन्ना मुनाफ़ा का भाव हो गया, इससे उस समय नमक की कितनी तेज़ी थी, यह भली भाँति समझ में आ सकता है। उस समय नमक के इन रवन्नों का फाटका साँभर में बड़े ज़ोरों पर चला था, और लोगों ने जैसे-तैसे कहीं से भी रक़म ला-लाकर इन रवन्नों में लगाई। आजकल यह व्यापार साधारण परिस्थिति में है, और वहाँ के व्यापारी दरख़्वास्तों के साथ रुपया भरकर बैठे रहते हैं, और जैसा अवसर हो, वो तो पहले ही बीच में रवन्ने ले लेते और बेच देते हैं या नंबर आने पर नमक भराकर गाड़ियाँ बाहर चालान दे देते हैं। अनुमान ३०,००० गाड़ियाँ अर्थात् प्रति गाड़ी २६७।५ मन के हिसाब से अनुमान ८० लाख मन नमक साँभर-झील से पैदा होता है।

यह नमक कैसे पैदा होता है, यह भी जानने की बात है। साँभर एक झील है, यहाँ वर्षा का पानी एकत्र होता है, और चारो ओर से बहकर आता है। यह सब क्यारियों में जुटता है। यह बात नहीं है कि यहाँ कोई ख़ास नमकवाला पानी बरसता हो या बहकर आता हो, पानी तो वही मेघ का मीठा जल होता है, पर यहाँ की भूमि में ही यह तासीर है कि यहाँ का पानी नमक का रूप हो जाता है। पानी ही क्या, यहाँ तक कहावत है कि "साँभर पड़े सब नमक।" इस भाँति यह साँभर-नमक की झील क्या सरकार के लिये एक 'चाँदी की झील' ही है।

जोधपुर के साथ नमक की संधियों में बहुत-सी बातें न्याय-पूर्ण नहीं हैं। इसका कोई कारण नज़र नहीं आता कि रायलटी नमक की समूची पैदावार पर क्यों न हो, एवं नमक की लागत पर क्यों दी जाय, और कर-सहित रक़म पर क्यों न दो जाय? आजकल नमक की लागत २ से ६ आने प्रति मन रहती है और कर १।) रुपया मन है। अगर सरकार किसी नमक के स्थान को बंद कर दें, जैसा कि जोधपुर के दो नमक के स्थान सरकार ने बंद कर दिए हैं, तो इससे न तो रियासत को रायलटी में घटी के लिये कोई हर्जाना ही दिया जाता है, और न रियासत उन स्थानों से फिरता ही ले सकती है। इसी भाँति किसी स्थान से पूर्ण नमक नहीं निकालने पर या प्रबंध की त्रुटि होने पर भी रायलटी में क्षति पहुँचती है। सबसे अधिक तुर्रा इन नमक की संधियों का यह है कि यदि सरकार को ये शर्तनामे लाभदायक न हों, तो उनमें सुधार किया जा सकता है, यहाँ तक कि लीज़ तोड़ी जा सकती है, पर रियासतों को इन बातों का कोई हक़ नहीं।

अन्य रियासतों के जो छोटे कारख़ाने सरकार ने लिए, उनके बदले में हर्जाने की रक़म उस समय नमक से होनेवाली आय के आधार पर नियत की गई, पर तबसे नमक की खपत एवं सरकार की तत्संबंधी आय में भारी बढ़ती होने पर भी हर्जाने की रक़म में बढ़ती का कोई काम नहीं। नमक की संधियों में अधिकांश सन् १८७० से १८८० के बीच हुईं और तबसे जन-संख्या में वृद्धि के कारण नमक की खपत में वृद्धि हुई है। इतना ही नहीं, प्रत्येक व्यक्ति के पीछे भी नमक की खपत बढ़ी है। सन् १८७१ में नमक का कर ५ करोड़ रुपया और प्रत्येक व्यक्ति पीछे ७ रतल नमक की खपत थी, सन् १९०० में यही कर ८ करोड़ रुपया बैठा और वर्तमान काल में ६ करोड़ रुपया बैठता है, और प्रत्येक व्यक्ति १२ रतल नमक प्रति वर्ष खाता है।

भरतपुर-रियासत में नमक की पैदावार क़तई बंद कर दी गई। वहाँ पहले नमक के बड़े-बड़े स्थान थे, जिन्हें सरकार ने लीज़ पर लेने की इच्छा प्रकट की; पर भरतपुर-दरबार ने अपने यहाँ इस तरह की दस्तंदाज़ी अच्छी न समझकर लीज़ पर देने की अपेक्षा नमक की पैदावार को बंद कर देना अच्छा समझा। तदनुसार सन् १८७९ में शर्तनामा हुआ, जिससे भरतपुर में नमक की पैदावार बिलकुल बंद कर दी गई। भरतपुर-दरबार ने हर्जाने का रुपया लेने से इनकार किया, और उसकी एवज़ में यह बात चाही कि पोलिटिकल एजंट की बैठक भरतपुर से आगरा स्थानांतरित कर दी जाय। कुछ भी हो, सरकार डेढ़ लाख रुपया प्रतिवर्ष हर्जाना के, और कुछ नमक-कर छोड़कर, देती है। इस प्रकार नमक की पैदावार बंद हो जाने से मुख्यतया नमक पैदा करनेवालों एवं भरतपुर-दरबार को, जो उस पर कर लेते थे, हर्जा पहुँचा। सरकार ने पैदा करनेवालों को २,२६,००० रुपया हर्जाने का दिया, और रियासत को भी इसके कर-स्वरूप जो क्षति पहुँची, उसकी कुछ पूर्ति ऊपर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिखे अनुसार की गई ; पर रियासत की जनता को जो भारी क्षति पहुँची, वह विचारणीय है। वह क्षति यह हुई कि एक तो जो वहाँ की जनता का प्रधान उद्यम था, वह बंद हो गया, जिससे इस काम में जो लगे हुए थे, उनको आजीविका का दूसरा उपाय ढँढ़ना पड़ा ; दूसरे रियासत की एक प्राकृतिक संपत्ति व्यवहार-शून्य हो गई। इसके अतिरिक्त नमक निकालना बंद कर देने से नमक के स्थानों में कृषि को कितनी हानि पहुँची है, यह भी विचारणीय है। सन् १९०५ में भरतपुर के एजेंसी सरजन एच्० ई० ब्रुकमैन ने लिखा है—

"रियासत के कुँओं का पानी अधिकांश खारी होना आश्चर्य की बात नहीं जान पड़ती, जब हम यह विचारते हैं कि सरकार ने नमक का ठेका लिया, तब तक नमक की पैदावार रियासत का एक मुख्य उद्यम था। उस समय नमकवाली भूमि से कच्चे कुएँ खोद-कर नमक-पूर्ण पानी निकालकर न-जाने कितने टन खार वहाँ की भूमि से अलग कर दिया जाता था, जो अब नमक की पैदावार बंद हो जाने से वहीं की ज़मीन में ही रहता है, और यही वहाँ के पानी को ख़राब करता है, जिसमें मुख्यतया क्लोराइड ऑफ़ सोडियम भारी परिमाण में मिश्रित रहना ही पानी के खारीपन का प्रधान कारण है।"

सर माइकैल ओ-डाअर ने, जो सन् १८९०-९९०० में भरतपुर के सेटिलमेंट कमिश्नर थे, नमक की पैदावार बंद हो जाने के दुष्परिणाम का वर्णन इस भाँति किया है—

"नमक की पैदावार के स्थानों में जहाँ पहले भारी चहल-पहल रहती थी एवं जो रियासत के प्रधान पैदावार के स्थान थे, वही अब वीरान और सुनसान पड़े हैं, और न-जाने वहाँ की कितनी ज़मीन पानी ख़राब होने के कारण व्यर्थ ही बनजर और जंगली जानवरों के निवास-रूप पड़ी है।"

अन्य रियासतों में भी, जहाँ नमक की पैदावार बंद कर दी गई, इसी तरह की दशा हुई। किशनगढ़-राज्य के स्थानों को, जो एक विशेष क्षति पहुँची, वह यह है कि इस रियासत के बहुत-से भाग में साँभर-झील में आ मिलनेवाली पानी की धाराएँ बहती हैं। किशनगढ़ की तरफ़ से बहकर आनेवाले पानी पर साँभर के नमक के कारख़ाने का बहुत कुछ हित अव-लंबित होने के कारण सरकार यह कब गवारा कर सकती है कि साँभर में बहकर आनेवाले पानी में किसी तरह की बाधा हो, इसीलिये सरकार ने यह प्रतिबंध कर दिया कि यदि किशनगढ़-दरबार अपनी रियासत में किसी तरह की आबपाशी की तदबीर करे, तो उसे पहले नार्थ इंडिया साल्ट रेवेन्यू मुहकमे से पूछना होगा। सन् १९०० में पहले पहल जब यह प्रश्न उठा, सभी नमक के इस मुहकमे ने पानी के नए बंध बनाने की मनाई कर दी एवं गाँववालों के कुओं और छोटे बंधों तक को बंद कर देना चाहा। एक बात और है, किशनगढ़ के लिये यह रुकावट समीपस्थ अज-मेर के सरकारी इलाक़े में बहुत-से कुएँ बना लिए जाने के बाद डाली गई। किशनगढ़ एक ऐसी जगह है, जहाँ वर्षा की कमी रहती है, और इसीलिये वहाँ कुओं पर आबपाशी का बहुत बड़ा आधार है। पर यह होते हुए भी पानी का बड़ा भाग, जो उसके लिये बहुत ज़रूरी है, झील के किनारे के दलदलों में व्यर्थ ही नष्ट किया जाता है, जिसका नमक के काम में भी कुछ उपयोग नहीं होता।

नमक के विभाग की ऐसी पालिसी एवं सरहद पर चौकीदारी के कारण किशनगढ़-रियासत कोई भी आब-पाशी का काम नहीं बना सकती, जिससे उसकी आय में वृद्धि हो और जनता का भी भला हो। इसके कारण वहाँ की भूमि की उपजाऊ-शक्ति में क्षति पहुँची है, जिससे वहाँ की पैदावार में ५० सैकड़ा से भी अधिक घटी हुई है, और जनता की समृद्धि में भी भारी धक्का पहुँचा है।

जहाँ नमक पैदा करना मना नहीं किया गया, पर जहाँ से केवल बाहर भेजना बंद किया गया, ऐसी रियासतों में प्रधान स्थान काठियावाड़ है, जो एक तरह से भारत से भिन्न-सा है, और जो क़रीब-क़रीब समूचा देशी रियासतों के अधीन है। सरकार को वहाँ नमक की पैदावार बंद करने की आवश्यकता नहीं मालूम दी, और केवल यही ज़रूरी समझा गया कि ब्रिटिश-भारत में वहाँ का नमक न आ सके। अतः सरकार ने इसी ग़रज़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के उठाव किए, जिन पर वहाँ की रियासतों को अपनी इच्छा के विरुद्ध सही करनी पड़ी। इन शर्तनामों में यह बात रक्खी गई कि काठियावाड़ का नमक काठियावाड़ में ही खपे, वह न तो ब्रिटिश-भारत को भेजा जा सके और न किसी विदेश को ही।

सरकार के नमक-विभाग के साथ इस प्रकार की सहिष्णुता के फल-स्वरूप रियासतों को न तो किसी प्रकार की सुविधा दी गई और न वहाँ के निर्यात-व्यापार की रोक के बदले में किसी प्रकार का हर्जाना ही चुकाया जाता है। इस प्रकार वहाँ के व्यापार की क्षति के समुचित अंक बताना कठिन है, पर यह बात प्रकट है कि इसके पहले नवानगर-रियासत से नमक मोंबासा, जंजीबार और मेडेगास्कर को जाता था और काठियावाड़ के बंदरों पर जो जहाज़ आते थे, वे नमक भरकर ले जाते थे। इस व्यापार से अँगरेज़-सरकार के नमक के कर में किसी तरह की क्षति की कोई संभावना न थी, पर तब भी शायद यह विचारा गया कि एक बार जो नमक जहाज़ में चढ़ गया, वह कहीं चोरी से भारत में न आ जाय।

नमक का यह कारबार बंद किए जाने पर नवानगर की जनता को जीविका की खोज में बाहर निकल जाना पड़ा है, और बटलर-कमेटी के समक्ष जाम साहब ने बयान किया कि इससे रियासत की प्रजा अनुमान १ लाख की संख्या में बाहर चली गई है, जो यदि नमक एवं अन्य उद्योग बंद न किए जाते, तो अपने घर-ही में निर्वाह कर लेती।

रियासतों में नमक की पैदावार बंद करने या वहाँ से ब्रिटिश-भारत में न आने देने का कारण यह नहीं है कि नमक की आवश्यकता नहीं है। वह बाहर से इंपोर्ट होता है, और कलकत्ते की राह १ करोड़ रुपए से अधिक का आता है। इसका कुछ भाग योरप में तैयार किए हुए नमक का होता है, जो भारतीय नमक के साथ प्रति-द्वंद्विता का कारण नहीं, लेकिन अनुमान ७० लाख रुपए का समुद्री नमक एडन, ईजिप्ट और पूर्व-आफ्रिका से आता है। यदि बंगाल में नमक की पूर्ति काठियावाड़ के नमक से कर दी जाती, तो इससे सरकार को अपने रेवेन्यू में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचती, क्योंकि उस पर इंपोर्ट ड्यूटी वसूल हो सकती थी, और उधर काठियावाड़-रियासतों का भी इससे भला ही होता।

इन सब बातों से यह स्पष्ट है कि सरकार की नमक-संबंधी पालिसी से देशी रियासतों को कितना हर्ज़-मर्ज़ पहुँचा है, और इससे उनको केवल अपने रेवेन्यू में ही नहीं, पर वास्तविक आर्थिक क्षति पहुँची है, जिसका असर केवल उन रियासतों पर ही नहीं, प्रत्युत समस्त भारत पर पड़ा है। किसी रियासत की अँगरेज़-सरकार द्वारा चुकाए गए हर्जाने की रक़म यदि कम है, तो उससे रियासत को जितनी हानि है, उतना सरकार को लाभ हो गया, यही समझ लिया जा सकता है; पर जब एक प्रकृतिदत्त धन का द्वार नष्ट कर दिया जाय या काम में न लाया जाय, या यों कहें कि जहाँ पास ही में नमक के स्थान बिना काम में लाए हुए पड़े हैं, वहाँ बहुत दूर बाहर से नमक मँगाया जाय, इससे बुरा और क्या हो सकता है। इससे केवल वे रियासतें ही अपनी नमक-संबंधी आय से हाथ नहीं धो बैठी हैं, प्रत्युत भारत की भौतिक संपत्ति पर यह एक कुठाराघात किया गया है।

विचित्र वीर

[लेखक, स्वनामधन्य पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी]

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध अँगरेज़ी उपन्यास Don Quixote का, जोकि संसार-भर के १२ सर्वोत्तम उपन्यासों में से एक है, अनुवाद है। हास्य-रसावतार चतुर्वेदीजी ने इसकी रचना की है। अतः इसकी रोचकता के विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। पढ़ते जाइए और हँसते-हँसते लोटते जाइए! इसमें हास, परिहास, व्यंग्य की पूर्ण मात्रा है। मीठी चुटकियों में ज्ञान का भंडार है। अवश्य पढ़िए। ५ चित्र, लगभग १५० पृष्ठ, मूल्य ।।), सजिल्द १।)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोहे का चना

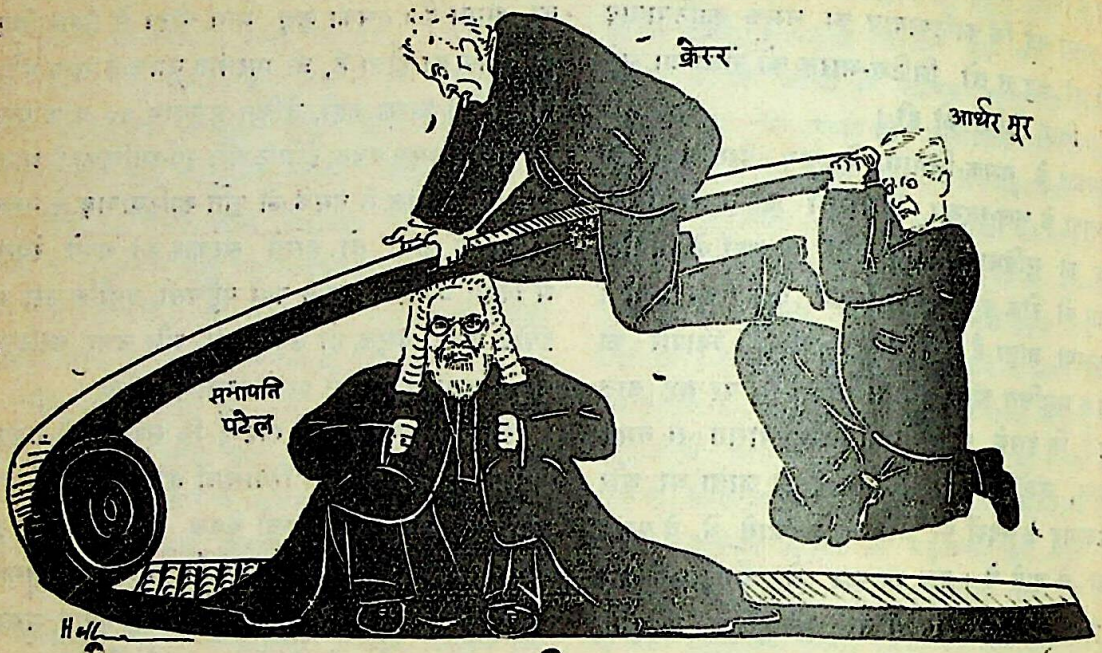

क्रेरर—ए हार्ड नट टु क्रैक ! (यह तो बड़ा मज़बूत चना है)

मूर—वेरी !! (लोहे का है, लोहे का)

अग्निसंजीवन
स्वादिष्ठ

मंदाग्नि, अजीर्ण, क़ब्ज़, अफ़रा, दाह इत्यादि पेट-संबंधी सब रोगों की उत्पत्ति, कारण तथा रोगों से बचने के उपाय और स्वास्थ्य-संबंधी अनेक नियमों को जानने के लिये हिंदी और अँगरेज़ी में लिखी

अग्नि संजीवन AGNI SANJIVAN

"स्वास्थ्य-संदेश"-नाम की पुस्तक मुफ़्त मँगाइए

पता—अग्नि-संजीवन-कार्यालय, बंबई नं० २

एजेंट— लखनऊ हिमालियन स्टोर अमीनाबाद-पार्क | बनारस जगन्नाथदास-बलभद्रदास चौक | इलाहाबाद दुबे-ब्रदर्स चौक | कानपुर रामगुलाम शिवगुलाम नयागंज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर,
नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोष-प्रद होने की गैरंटी!

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गंगा-फ़ाइन आर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

झाँसी की रानी
[श्रीदुलारेलाल भार्गव के चित्र-संग्रह से]

Ganga Fine Art Press, Lucknow
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जयपुर की जानने योग्य ज़रूरी बातें

[पं० हनूमान् शर्मा]

(१)

इन दिनों जयपुर-राज्य के शासन-विभाग में अँगरेज़ विद्वानों का प्राधान्य है। वे मसनद के सहारे आराम से सोते हुए मिसल सुनने और सिर्फ़ दस्तख़त करने-भर के हाकिम नहीं होते। उन सबमें बैठे, बिना बैठे या आते ही खड़े-खड़े कुछ-न-कुछ पूछ-ताछ, जाँच-पड़ताल, पूर्वापर-विचार, परिस्थिति का ज्ञान या ऊहापोह करने की आदत होती है। आमेर कब बसा था, झंडे में पाँच रंग क्यों हैं, अमुक क़िला किसने बनवाया, महल का अमुक नाम क्यों रक्खा गया, अथवा कुर्सियों के बदले गद्दी पर बैठने का रिवाज कब से चला इत्यादि प्रश्न प्रत्येक अँगरेज़ आए-दिन किया ही करता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि सब बातों का उत्तर सभी नहीं दे सकते। अतः उचित प्रतीत होता है कि जयपुर-राज्य की जानने-योग्य ज़रूरी बातें प्रकट की जायँ।

(१) जयपुर के कुछावा और उदयपुर के सीसोदिए अपने को रामचंद्र के पुत्र कुश और लव के वंशज बतलाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रामाणिक इतिहास भी इस धारणा को प्रमाण-सिद्ध मानते हैं। सिर्फ़ एक बात में मतभेद है। वह यह कि उदयपुरवाले तो कहते हैं कि रामचंद्र के पुत्रों में लव बड़ा और कुश छोटा था, लव के वंशज होने से बड़े बाप के बेटे हम हैं। और, जयपुरवाले कहते हैं कि कुश बड़ा और लव छोटा था, अतः बड़े बाप के बेटे हम हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से वाल्मीकीय रामायण के आधार पर विचार किया जाय, तो यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि वास्तव में कुश बड़ा और लव छोटा था। यही बात गाथावतों के इतिहास में भी सिद्ध की गई है।

(२) जयपुरवाले कुछावा हैं। अधिकांश लोग कुछावा को कछवाहा कहना शुद्ध समझते हैं; परंतु शुद्ध नाम को लेकर कुछ बड़ी हैसियत के इतिहासवेत्ता इनको काछवा मारनेवाली जाति बतलाकर अपनी भ्रांति अथवा विद्वेष-बुद्धि का परिचय देते हैं। असल बात यह है कि कुश के वंशज होने अथवा कुशावती से निकलकर इधर आने से ये कुशावहा (कुछावा) कहलाते हैं।

(३) इस वंश में रोहित और नल बड़े नामी राजा हो चुके हैं। रोहित का 'रोहतासगढ़' और नल का 'नरवलगढ़' बड़े विख्यात हैं। किंतु इस नल को दमयंती-पति नल नहीं मानना चाहिए। उनके और इनके बीच तो बड़ा अंतर है। वह नल अत्यंत प्राचीन काल में हुए थे, और यह अभी विक्रम-संवत् के आद्य चतुर्थांश में उत्पन्न हुए हैं। ऐसी भ्रांति-मूलक बातों को लेकर इन दिनों नव-निर्मित इतिहास-ग्रंथों में अनर्थकारी बातों के भी बहुत उल्लेख हो जाते हैं।

(४) जयपुर के राजा रोहतासगढ़, नरवरगढ़, ग्वालियर, दौसा और माचेरी में यथाक्रम राज्य स्थापन करते हुए आमेर आए थे। उनमें सोढ़देव के पुत्र दुलहराय ने मीनों से छीनकर आमेर को अपने अधिकार में किया था। उनके पुत्र काकिल ने वहाँ 'अंबिकेश्वर' की स्थापना करके उसका नाम 'आमेर' रक्खा था। मीना-राजों के ज़माने में आमेर आमेर नहीं था, फूटे-टूटे खँडहर अथवा छोटी-छोटी बस्तियाँ थीं और पहाड़ों पर कई क़िले बने हुए थे। कहा जाता है, उन दिनों मीनों के अधिकार में बावन क़िले थे, जिन पर दुलहराय ने क्रम-क्रम से अधिकार किया था।

(५) आमेर के राजों में पजौनजी बड़े वीर, यशस्वी और विख्यात राजा हुए। उनका राज्य-काल भारत के अंतिम हिंदू-सम्राट् पृथ्वीराज चौहान के समकालीन था। वह पृथ्वीराज के शूर-सामंतों में शिरोमणि और व्यवहार में बहनोई थे। आमेर-राज्य की जड़ उन्होंने ही जमाई थी। उनके पीछे—बारह पीढ़ी बाद—

(६) महाराज पृथ्वीराज दूरदर्शी और उदार राजा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुए। उन्होंने आमेर-राज्य को बारह भागों में विभाजित करके अपने बारह बेटों को उसका संरक्षक तथा संचालक नियत कर दिया, और आप उनकी सम्मति के अनुसार राज्य करनेवाले या (प्रेसीडेंट) नियत हो गए। योग्य राजा को राज्यासन पर बिठाने और अयोग्य को उठा देने का अधिकार भी उनके हाथ में कर दिया गया। यह व्यवस्था सदा-सर्वदा के लिये स्थायी कर दी गई, जो अब तक चली आई थी और बद्ध व्यवस्था के नाम से 'बारह कोटड़ी' विख्यात हो गई। प्रसंग-वश यहाँ उनके नाम दे देना उचित है।

(७) 'बारह कोटड़ीवालों' में (१) चौमूँ-सामोद के 'नाथावत', (२) कालवाड़ के 'कल्याणोत', (३) डिग्गी के 'खाँगारोत', (४) अचरोल के 'बल-भद्रोत', (५) बगरू के 'चतुर्भुजोत', (६) वाटका के 'बनवीर पोते', (७) बाँसखोह के 'कूँभानी', (८) महार के 'कुंभावत', (९) नींदड़ के 'शिवब्रह्म पोते', (१०) साँभरा के 'पंचानोत', (११) कानोते के 'सूरोठ' और नीमैड़ा के 'पूर्णमलोत' उक्त व्यवस्था के प्रमुख अधिकारी हैं। स्मरण रहे कि आरंभ की अपेक्षा इनमें एक-दो ठिकाने इस समय परिवर्तित और एक-दो परिवर्द्धित हो गए हैं।

(८) पूर्वोक्त दो राजों के अतिरिक्त महाराज मान ने इस राज्य को शक्ति, संपत्ति, सम्मान और विस्तृति आदि में अधिक उन्नत किया था। मुग़ल-साम्राज्य को विस्तृत और निरापद् करने में अग्रसर रहकर आमेर-राज्य को भी उन्होंने बहुत बढ़ाया था। भूधराकार क़िले, सात-सात परकोटे और रहस्य-जनक मकानों की योजना उन्हीं की इकट्ठी की हुई अपरिमित संपत्ति के शुभ-फल हैं।

(९) निर्भीक होकर अपने आंतरिक अभिमत सिद्ध करने में महाराज जयसिंह प्रथम और येनकेन प्रकार से कार्य सिद्ध करने में महाराज जयसिंह द्वितीय भी अद्वितीय हुए थे। छत्रपति शिवाजी से वचन-बद्ध होकर अंत तक मित्रता का यथावत् निर्वाह करने में जयसिंह प्रथम और बूँदी के बुधसिंह का विवाह आमेर की अपेक्षा सामोद के क़िले में करने में जयसिंह द्वितीय अद्वितीयता के ही द्योतक हुए हैं।

(१०) प्राचीन की अपेक्षा अर्वाचीन का आदर रखनेवाले महाराज रामसिंह द्वितीय ने भी लोक-हितकर कामों में अधिक मन लगाया था। यह उल्लेख इस राज्य के प्रकाशमान राजों का किंचिन्मात्र दिग्-दर्शन है। इस जगह उन राजों के ज़माने की कुछ ऐतिहासिक बातों, वार्ताओं, वस्तुओं और स्थानों का उल्लेख कर देना भी उचित और आवश्यक प्रतीत होता है।

(२)

यह पहले लिखा जा चुका है कि आरंभ में आमेर आमेर नहीं था, मीनों की बस्ती था। दुर्लभराय के अधिकार में आए-पीछे उनके पुत्र-पौत्रादि ने यथाक्रम उसको महत्त्व-संपन्न और दर्शनीय नगरी के रूप में परिणत किया था।

(१) मीनों का कथन है कि आमेर का प्रधान धनागार मीनों के राजत्व-काल में स्थापित हो गया था। आमेर के क़िले पर जो एक लंबी मीनार है, उसके विषय में यह प्रसिद्ध किया गया है कि पूर्वकाल में मीना लोग धनाशा से कहीं बाहर जाते, तब उक्त मीनार के प्रकाश से आमेर की सुध रखते थे। दूसरे लोगों ने इस बात को दूसरी तरह से विदित किया है। वह आगे लिखी गई है।

(२) आमेर के पश्चिमी पर्वत पर स्वच्छ और गहरे जल का एक जलाशय है। उसके समीप में आने की सबके लिये आज्ञा नहीं है। वह जलाशय मान ने निर्माण कराया था, अतः वह "मान-सरोवर" के नाम से विख्यात है।

(३) आमेर में "जगत्-शिरोमणि" का एक मंदिर है। उसकी कुराई, खुदाई, गढ़ाई और चित्रकला आदि अद्वितीय और दर्शनीय हैं। मान के पुत्र जगत्-सिंह काँगड़ी के युद्ध-स्थल में मारे गए थे, अतः मान ने उनके स्मरणार्थ यह अद्वितीय मंदिर बनवाया था।

(४) पर्वतों के पेट में बसे हुए आमेर के चारों ओर सात-सात परकोटे महाराज मान की संचित धन-राशि के निस्संकोच सद्व्यय से ही निर्माण किए गए थे। 'सम्राट् अकबर' के अवतरणों से भासित होता है कि मान के ज़माने में "गौड़नगर" के जीर्ण-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीर्ष और फूटे तथा ऊजड़ खँडहरों से भी उक्त महाराज को अपरिमित धन-राशि उपलब्ध हुई थी। उसका राज्य-वृद्धि, देश-रक्षा तथा साम्राज्य के हित-साधन में सद्व्यय किया गया था।

(५) आमेर के 'हर्षनाथ,' महलों की 'शीलादेवी,' चाँदपोल के 'बालाजी' और साँगानेर के 'साँगा बाबा' महाराज मान के स्थापित किए हुए हैं। इन मूर्तियों के दर्शनों में कुछ ऐसी आकर्षक शक्ति है कि हज़ारों आदमी उनके समीप नित्य जाते हैं, और अभिलषित कार्यों की सफलता समझते हैं। जिन दिनों बालाजी की स्थापना हुई, उन दिनों चाँदपोल नहीं था, राह-गीरों का एक रास्ता था। वर्तमान जयपुर के कोई चिह्न भी नहीं थे। कोसों तक फैला हुआ बड़ा पीहड़ जंगल था, जिसमें हिंसक जंतु विचरते थे।

(६) किसी दिन आमेर की शीलादेवी और हर्षनाथ भैरव बंगाल के चौबीस परगने से ५ कोस पर 'यशोहर' शहर में विराजमान थे। महाराज मान ने यशोहर के अधिपति केदार कायस्थ को परास्त करके इन मूर्तियों को आमेर में स्थापन किया था।

(७) शीलादेवी के समीप में हीरे अथवा बिल्लौर की एक मूर्ति है। उस पर जिस रंग के पुष्प चढ़ाए जायँ, उसी रंग की वह मूर्ति हो जाती है। टाड साहब के ग्रंथ में लिखा है कि कौरव-पांडव के युद्ध में मरे हुए एक योद्धा का 'कर-कंकण' भीष्म-कुंड में गिर गया था। कालांतर में उसी कंकण के तीन दाने महाराज जयसिंह को और दो दाने अजितसिंह को प्राप्त हुए थे। उक्त मूर्ति उन्हीं दानों में से एक की बनी हुई है।

(८) काशी का 'मान-मंदिर', बंगाल का 'ताजमहल', पटने का विशाल 'शिव-मंदिर', वृंदावन का नौ मंज़िल का 'गोविंद-मंदिर', गोवर्द्धन की 'मानस-गंगा' और आमेर के रास्ते का 'मान-समुद्र' भी महाराज मान के ही स्मृति-चिह्न हैं।

(९) आमेर का 'धनागार' और उसके समीप का 'विजय-स्तंभ' (जिसको मीना अपनी मीनार मानते हैं) मान के ही बनवाए हुए हैं।

(१०) 'मानगढ़', जो अब 'जयगढ़' के नाम से विख्यात है, महाराज मान ने ही बनवाया था। किंतु पीछे जाकर महाराज जयसिंह प्रथम ने उसको परिवर्द्धित करके उसका पुनरुद्धार किया था। इस कारण उसका नाम 'जयगढ़' विख्यात हो गया। उसका संकुचित स्वरूप बढ़ा कर दिया गया।

(११) आमेर का "पंचरंग" झंडा काबुल के पाँच यवन राजों के जुदे-जुदे रंग के पाँच झंडों को छीनकर उनको एक करके नियत किया गया था। यह भी महाराज मान का विजय-चिह्न था।

(१२) "नाहरगढ़" की नींव नरसिंहदेव ने डाली थी। महाराज मान ने उसे ठोस करवाया था। माधवसिंह द्वितीय ने उसमें महल बनवाए थे। अन्यान्य क़िले अन्यान्य राजों ने अपने-अपने नाम और अपने-अपने शासन-काल में बनवाए थे। कुंतिलगढ़ कुंतिल का था।

(१३) भारत के नामी नगरों में तृतीय श्रेणी का और राजपूताना के सराहनीय शहरों में प्रथम श्रेणी का "जयपुर" शहर महाराज जयसिंह द्वितीय ने बसाया था। इसके लिये जगद्विख्यात तारातंबोल-जैसे नामी नगरों के नक़्शे मँगवाकर संवत् १७८४ में इसकी नींव डाली थी। आमेर के बदले इसी में अपनी राजधानी स्थापन की थी।

(१४) शहर-निर्माण के अधिकांश अंग-उपांग—(गली, कूचे, रास्ते, मुहल्ले, चौपड़, चौराहे, महल, मकान और बाज़ार आदि) जिस आकार-प्रकार के बनने चाहिए, उनमें बहुत कुछ महाराज की मौजूदगी में बन गए थे। शेष उनके पीछे बनते रहे थे। संपूर्ण शहर सात पीढ़ी में पूर्ण हो गया था।

(१५) बड़े शहरों में जल-प्राप्ति के लिये नल लगाए जाते हैं। उनके लिये हर जगह एक वाटरवर्क्स (जल चढ़ाने का कारख़ाना) और टोटियाँ आदि की दुविधा-स्वरूप सुविधा की जाती है। महाराज जयसिंह ने अपने शहर को सुमिष्ट जल देने के लिये शहर के बीचोबीच एक बहुत लंबी, मोटी, चौड़ी और छतदार "गुप्त नहर" बनवाई थी। और, शहर के प्रत्येक प्रांत में पानी प्राप्त होता रहने के लिये उसकी अनेकों शाखाएँ भी बनवा दी थीं। इस प्रकार की उत्तम नहर शहर के रास्ते की भूमि के नीचे छिपी हुई थी। उसके ऊपर ढक्कनदार मोहरियाँ थीं, जिनसे सब लोग पानी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भर लेते थे। निम्न भागों में उसी के द्वारा फ़ौवारे भी चला करते थे। उसके लिये पहले तो बाँडी नदी से नहर लाकर पानी पहुँचाने की योजना की थी। किंतु उसमें पानी यथेच्छ नहीं आ सका। तब अमानीशाह के नले में पक्का बाँध बँधवाकर उससे पानी लिया गया था। संवत् १९०४ में वह बाँध टूट गया और शहर में पक्की सड़कें तथा जल-नल लग गए। तब वह नहर मिट्टी के अंदर ही ज्यों-की-त्यों दबी रह गई। अब तक दबी हुई है।

(१६) अद्भुत इमारत "हवामहल" महाराज ईश्वरीसिंहजी के समय में तैयार हुई थी।

(१७) "ईश्वर-लाट", जिसको स्वर्ग-शूली भी कहते हैं, महाराज ईश्वरीसिंह ने बनवाई थी।

(१८) भारत का दुर्भेद्य दुर्ग और आश्चर्य-चकित करनेवाले आयोजनों से परिपूर्ण क़िला "रणथंभोर" संवत् १८१६ में महाराज माधवसिंह प्रथम को प्राप्त हुआ था। इसकी उपलब्धि के लिये कोई १० बार बादशाहों ने और २-३ बार जयपुर के महाराजों ने रक्तपात-पूर्वक प्राणांत प्रयत्न किए थे; किंतु भाग्यशाली माधवसिंह को ही वह प्राप्त हो सका।

(१९) "चंद्रमहल" महाराज जगत्सिंह के ज़माने में आरंभ हुआ और महाराज रामसिंह के ज़माने में जाकर पूर्ण किया गया। अर्धराजेश्वरी चंद्रकला अथवा महारानी चंद्रावली या चंद्रपूर्णिमा (शरद्पूनम) के दरबार के अनुरोध से इसका नाम चंद्रमहल रक्खा गया था।

(२०) "ज्योतिष-यंत्रालय" अथवा वेधशाला या आवज़रवेटरी, जिसमें ज्योतिष (गणित-विभाग) के उपयोगी छोटे-बड़े या जटिल-सरल अनेकों यंत्र और यंत्रराज हैं। महाराज जयसिंह ने उनको बनवाया था। तब से अब तक उनका सुधार और जीर्णोद्धार अन्य राजों ने करवाया। ऐसी वेधशालाएँ काशी, उज्जैन और इंद्रप्रस्थ में भी हैं, और उनका भी सुधार होता रहता है।

(२१) इनके सिवा सड़कें, रोशनी, जल-प्रवाह, रामनिवास, रामप्रकाश, रामबाग़, रामप्रेस, रामविनोद-कौंसिल, ५२ मुहक्मे, राजडाक, महाराजा-कॉलेज, मेयो हास्पिटल, देशी औषधालय, स्कूल, कॉलेज, पाठशालाएँ और प्रजा-हित के अनेकों साधन महाराज रामसिंह द्वितीय ने उपस्थित किए थे।

(३)

यहाँ जयपुर-राज्य के कुछ शिष्टाचार, कुछ शाही दरबार, कुछ आगत-स्वागत और कुछ सवारियों आदि का उल्लेख हो जाना भी प्रासंगिक प्रतीत होता है। परंतु स्थानाभाव के कारण इतना ही लिखा जा सकता है कि किसी अंश में ये सब बादशाही ढंग से संपन्न होते थे। उनमें महाराज जयसिंह ने वाल्मीकीय रामायण के आधार पर राम-राज्य के वेश-भूषा और बर्ताव आदि की योजना करके उनके स्वरूप को विशेष सुंदर बना दिया था, जो किसी भी रूप और अवस्था में अब तक जीवित और प्रस्तुत हैं।

(१) महाराज जयसिंह को शाही सवारियों में स्वर्ण-निर्मित माही मरातिब (एक प्रकार का सर्वोच्च सम्मान-चिह्न) सम्राटों के यहाँ से प्राप्त हुआ था, और सवाई की पदवी मिली थी।

(२) दरबार दिवाली, दशहरा, शरद्, सालगिरह और तीज आदि के नियत हुए थे। जन्म-मरण, युद्धोपकरण तथा स्वागत आदि के विशेष दरबार, विशेष विधि के बनाए थे।

(३) दरबार में उपस्थित होनेवाले प्रायः सभी दरबारियों की वेश-भूषा या पोशाकें साधारण दरबारों में साधारण और विशेष में विशेष निश्चित की थीं।

(४) दीपावली को काली पोशाक, दशहरे को पीली पोशाक, शरद् को सफ़ेद पोशाक, सालगिरह को लाल पोशाक, तीज को कुसुंभी और हरी पोशाक, जन्म की रंग-बिरंगी और मरण की सफ़ेद पोशाक स्थिर की गई थी।

(५) मामूली दरबार में मामूली चुग़ा, पाजामा और पगड़ी रक्खी थी, और विशेष दरबारों में विशेष प्रकार के जामे, पाजामे, पगरखी, कमरबंद और किरण-दार पाग स्थिर की गई थी।

(६) दरबार के अवसर में प्राचीन काल में शूर-सामंतों और सरदार लोगों को ढाल, तलवार, बर्छी, बंदूक़ और कटारा तथा आधुनिक काल में केवल तल-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बार-मात्र लेकर सशस्त्र उपस्थित होने की अनुमति दी गई थी।

(७) शाही दरबारों में प्रधान आसन महाराज का होता है। वह शामियानेदार तख़्त या सोने-चाँदी की कुर्सी अथवा ज़री के काम की गद्दी के रूप में रहता है। यदि कोई बड़े राजा-महाराजा या लाट साहब आए हों, तो वह भी उसी पर महाराज के समीप बैठते हैं। शेष सब उनके दाएँ-बाएँ यथा-क्रम उपस्थित होते हैं।

(८) दरबारी लोगों की उपस्थिति अथवा बैठक उनकी पद-मर्यादा के अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय आदि श्रेणियों की होती है। महाराज के सम्मुख दाहने अंश में महाराजकुमार, या वे न हों, तो सामोद सरदार बैठते हैं। महाराज के पीछे मुसाहब या प्रधान मंत्री उपस्थित होते हैं। महाराज के दाहने बाज़ू में अव्वल दर्जे की बैठक पर चौमूँ सरदार, दूसरी पर सामोद के रावल साहब, तीसरी पर किशनगढ़ के ठाकुर साहब, चौथी पर उनियारे के रावजी और पाँचवीं आदि पर सीकर के रावराजाजी आदि बैठते हैं।

(९) इसी प्रकार महाराज के दाहने बाज़ू में अव्वल दर्जे की बैठक पर डिग्गी के ठाकुर, दूसरी पर मनोहरपुर के रावराजाजी, तीसरी पर खंडेले के राजाजी, और चौथी आदि पर दूनी के रावजी आदि बैठते हैं। यद्यपि प्रत्येक सरदार की दरबारी बैठकें पूर्व-काल से नियत हैं, और अपनी बैठकों पर आप ही बैठ सकते हैं, दूसरे नहीं बैठ सकते। कदाचित् कोई प्रमाद-वश बैठ जाय, तो वे अपमानित या उपद्रव के भागी होते हैं। किंतु महाराजा साहब ने स्वयं किसी की बैठक बदल दी हो, तो उसकी सूचना निमंत्रण के साथ ही सरदारों को दे दी जाती है, और सूचना मिलने पर यदि किसी सरदार को अपनी बैठक नीची उतरी हुई मालूम दे, और वह सम्मान-रक्षा के लिहाज़ से न जाये, तो कोई प्रतिवाद नहीं किया जाता।

(१०) आगत-स्वागत के लिये साधारण सरदारों को चेले-ख़वास आदि लिवा ले जाते हैं। महाराज दृष्टिपात से उनका सत्कार कर देते हैं। बड़े सरदारों के लिये महाराज को कुछ उठकर स्वागत करना पड़ता है, और समकक्ष राजों-महाराजों अथवा लाट साहबों के लिये महाराज को द्वार-देश में या बिछावन के किनारे तक आकर सम्मान-सहित ले जाना पड़ता है। इसी प्रकार किसी के यहाँ महाराज जाते हैं, तो उनका विधि-बद्ध स्वागत किया जाता है।

(११) युद्धादि के विषय में यही लिखा जा सकता है कि किसी दिन स्वयं सम्राट् भी जयपुर-राज्य की कछवाही सेना को विश्वास-पात्र मानते थे, और उन-की वीरता, धीरता एवं दृढ़ धारणा आदि का ध्यान रखते थे। वास्तव में उन दिनों ये बड़े बलशाली थे।

(१२) महाराज जयसिंह के ज़माने में जोधपुर की, माधवसिंह प्रथम के ज़माने में ककोड़ और माँवडा की, ईश्वरीसिंह के ज़माने में कोटा की और लगभग सौ वर्ष पहले टोडा रायसिंह की लड़ाई नामी हुई थी। कोटे की लड़ाई में तो जयपुर का पंचरंग ही पंकरंजित या रक्त-प्लावित हो गया था।

(१३) अंत में यह लिखकर यह लेख समाप्त किया जाता है कि जयपुर के राजों में सबसे ज़्यादा (५६ वर्ष तक) महाराज कल्याण देव ने राज्य किया था और सबसे कम सिर्फ़ दो वर्ष महाराज भीम राजा रहे थे। यों ३०-४० या ५० तक अथवा ५-७ या सिर्फ़ ६ महीने-भर ही अन्य कई राजों ने राज्य किया था। महाराज रामसिंह ३२ और महाराज माधवसिंह ४४ वर्ष तक राज्यारूढ़ रहे थे।

(१४) सबसे ज़्यादा रानी महाराज मान के २२ और जयसिंह के ३१ थीं तथा सबसे ज़्यादा पुत्र महाराज मलेसी के ३२ थे। यों स्वर्गीय महाराज माधवसिंह के अनौरस संतान सवा सौ थीं; किंतु औरस के स्थाना-पन्न वर्तमान महाराज मानसिंह बहादुर हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिवर्तन

[प्रोफ़ेसर बाबूराम सक्सेना एम्० ए०]

लक्ष्मीकांत प्रयाग के नामी वकीलों में थे। उन्होंने ख़ूब रुपया पैदा किया था। अच्छे ठाट-बाट से जॉर्ज-टाउन में रहते थे। उनके केवल दो संतानें थीं, और दोनो कन्याएँ। सुशीला की आयु १८ वर्ष और विमला की १३ के लगभग थी। लक्ष्मीकांत ने अपनी कन्याओं का पालन पुत्र की तरह किया था। वह कन्या और पुत्र में कोई अंतर नहीं समझते थे।

सुशीला का ब्याह दयाशंकर से हुआ। यह बदायूँ के रहनेवाले थे। प्रयाग में रहकर बी० ए० और एल्-एल्० बी० की डिग्रियाँ प्राप्त की थीं। अपनी २५ वर्ष की अवस्था के अंतिम ६ वर्ष इन्होंने प्रयाग के आलीशान होस्टलों में बिताए थे। बदायूँ अब इनको नितांत नीरस मालूम होता था। वहाँ इनके लिये अब कोई 'लाइफ़' ही न थी। इसलिये जब लक्ष्मीकांत ने उनसे प्रयाग में ही वकालत शुरू करने का प्रस्ताव किया, तो इन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। इनके पिता ने अपनी अनुमति देने में कुछ आना-कानी की; किंतु जब उन्होंने दयाशंकर का रुख़ देखा, तो चुप हो गए। मन में समझ लिया कि दयाशंकर अब ससुर के बेटे हो गए।

दयाशंकर अब प्रयाग में रम गए। बड़ी-बड़ी छुट्टियों में भी अब उनको बदायूँ जाने का अवकाश न मिलता। घर से यदि छोटी बहन प्रयाग आवे, तो उसके पास सद्भाव-प्रदर्शन के लिये भले ही बैठ जायँ, परंतु उनका मन अपनी पत्नी और साली से ही बातचीत करने में अधिक लगता था। इस सबका अवश्यंभावी परिणाम यही हुआ कि उनका नाता अपने घरवालों से प्रायः टूट-सा गया। घर से दो-दो, तीन-तीन मास तक चिट्ठी नहीं आती; किंतु इससे दयाशंकर को ज़रा भी विकलता नहीं होती। इधर से यह चार-चार महीने चिट्ठी नहीं भेज पाते। दयाशंकर की मा का स्वर्गवास हुए कई वर्ष हो गए थे। मा ही एक ऐसी प्रेम की मूर्ति है, जिसके सामने संसार का घोर-से-घोर अपराध क्षम्य है। पिता में स्नेह आत्मसम्मान से ढका हुआ होता है। संतान-कृत थोड़ा भी तिरस्कार पिता को असह्य होता है। फिर दयाशंकर के पिता पुरानी चाल के आदमी थे। पुत्र के ससुराल में रहने से वह बहुत चिढ़ गए। उन्होंने उसकी ओर से सदा के लिये आँख फेर ली।

दयाशंकर के मन में आया कि उनके ससुर ही उनके हितेच्छुक हैं। वह ससुराल और भी आने-जाने लगे। सास, ससुर और साली से उनकी अब पूरी घनिष्ठता हो गई। विमला अब वाइनामेकर-स्कूल में पढ़ने जाया करती थी। बा० लक्ष्मीकांत को विमला के आर्य-कन्या-पाठशाला में पढ़ने से संतोष नहीं हुआ, इसी कारण उन्होंने उसे वहाँ से हटाकर वाइनामेकर में भर्ती कराया। घर पर भी एक मिस साहबा अँगरेज़ी पढ़ाने आया करती थीं। धीरे-धीरे विमला शुद्ध अँगरेज़ी बोलने में दक्ष हो चली। साथ-ही-साथ अपनी सहपाठिनियों की चंचलता और उनकी वेश-भूषा भी उसमें आ गई। पहले वह बातचीत करते समय संकोच करती थी। अब वह आँखें नचाकर, मुसकिराकर बोलने लगी। पहले बाहर के बरामदे में बैठे हुए बिरला ही मनुष्य देख पाता था। यदि कोई पुरुष दैव-योग से आ भी जाय, तो वह हड़बड़ाकर अंदर भागती थी। परंतु अब वह बात नहीं थी। यदि बरामदे में बैठी वह दयाशंकर से बातें कर रही हो, तो उसके बाबूजी के मुवक्किल चाहे जितने आवें और चले जायँ, उसको कुछ संकोच न होता था। जिन पुरुषों नौकरानियों को वह पहले चाची-माई कहकर पुकारती थी, उन्हीं को अब नाम ले-लेकर बुलाने लगी। बाहर जाकर आगंतुक पुरुषों के प्रश्नों का उत्तर देकर वह यह साबित करती थी कि स्त्री चहारदीवारी के भीतर में बंद करने के लिये ही नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विमला की वेश-भूषा में भी अब विशेष अंतर हो गया था। पहले धोती का पल्ला उसके मस्तक से खिसका हुआ नहीं देखा गया था ; किंतु अब उसकी केश-वृत्त बिल्कुल खुली रहती थी। पहले वह पूरी आस्तीनों की कुर्ती पहनती थी ; किंतु अब केवल कंधों तक की। सुंदर गोरे-गोरे बाहुओं का दर्शन कराने में उसे विशेष उल्लास होता था। गर्दन भी अब अनाच्छादित ही रहती थी। पाँवों में पहले झाँझें या लच्छे अवश्य रहते थे ; किंतु उनको ख़ाली ही रखना अब उसे पसंद था। हाथ में सोने के भारी कड़े तो दूर, एक-एक चूड़ी भी उसे भारी मालूम होती थी। विमला का रूप इस प्रकार पूर्णतया खुला हुआ रहने लगा। ज्योत्स्ना मेघों के तितर-बितर हो जाने से और भी चमक उठी।

बा० दयाशंकर की आँखें यह सब देखकर चकाचौंधसी हो गईं। विमला को वह सतृष्ण नेत्रों से देखने लगे। वह भी उनका प्रेम देखकर उनसे स्नेह करने लगी। उसे तो स्कूल में मनुष्य-मात्र से स्नेह करना सिखाया ही गया था। पुरुष और स्त्री में भेद भाव रखने की कोई शिक्षा उसे मिली ही न थी। दयाशंकर अब उसे मोटरकार पर बिठाकर घुमाने-फिराने ले जाया करते। पहले कभी-कभी सुशीला को भी साथ ले लेते थे। परंतु घूमने-फिरने से उसकी घर-गृहस्थी में गड़बड़ पड़ती थी, इससे सुशीला उनका साथ न दे सकी। दूसरे, उसे इस प्रकार बायस्कोप, थिएटर में घूमना पसंद भी न था। इसके ऊपर कभी-कभी विमला के रंग-ढंग से वह कुछ चिढ़ भी गई। दयाशंकर उसे बहुधा समझा-बुझा देते थे। किंतु अंधकार तो स्वयं प्रतीत हो जाता है, उसे दीपक लेकर ढूँढने की कोई ज़रूरत नहीं होती। सुशीला के मन में संदेह ने घर कर लिया। उसे वह जलाने लगा। दयाशंकर ने पहले तो उसका मनोविनोद करने का प्रयत्न किया, परंतु बाद को वह भी लापरवा हो गए। विमला के नए रंग-ढंग पर उसकी मा और बाप ने कुछ ध्यान नहीं दिया। मा-बाप को जो अपनी संतान के दोष दिखाई ही नहीं देते। इसलिये, फिर उनके कोई पुत्र नहीं था। जो कुछ थी, विमला थी। उसकी हरएक बात उनको भली जान पड़ती थी। जब कोई उसके विवाह की बात उठाता, तो बा० लक्ष्मीकांत यही कहते कि दयाशंकर-सा कोई सीधा-सादा लड़का मिल जाय, तो संतान-विछोह के दुःख से बचें।

सुशीला के ब्याह के कोई पाँच वर्ष उपरांत उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। दयाशंकर ने प्रसूता के आराम का समुचित प्रबंध कर दिया था; किंतु दैव-वश प्रसूति-गृह में सुशीला को ज्वर आ गया। दस दिन ऐहिक कष्ट भोगकर वह अंतर्द्धान हो गई। दयाशंकर को असह्य दुःख हुआ ; पर करते क्या, मजबूर थे। बच्चे का लालन-पालन करने लगे। उनको एक हृदय-शूल-सा छेदने लगा। वह समझे, सुशीला की असामयिक मृत्यु का कारण वही हैं। इस शोक के कारण वह विमला के पास भी पूर्ववत् न जा सके। विमला समझी, दयाशंकर उसकी अवहेलना करते हैं। वह भी उनसे चिढ़ गई।

पत्नी की मृत्यु के छः-सात मास पश्चात् दयाशंकर का शोक कुछ कम हुआ। विमला के पास वह अब फिर आने-जाने लगे। परंतु विमला अब उनकी अवहेलना करने लगी। इस पर दयाशंकर का प्रेम और भी उमड़ उठा। वह विमला के लिये व्याकुल रहने लगे। विमला के उन्होंने हाथ जोड़े, पैरों पड़े; किंतु सब व्यर्थ। वह इनसे शादी करने को राज़ी न हुई। हताश हो उन्होंने उसके पिता से स्वयं प्रार्थना की। वह सहमत हुए ; किंतु जब उन्होंने विमला की अनिच्छा जानी, तो मना कर दिया।

दयाशकर अब कहीं के न रहे। न घर के, न ससुराल के। ससुरालवालों के इस तिरस्कार से उन्हें बड़ा क्षोभ हुआ। सुशीला को और जो उन्होंने अवहेलना की थी, वह उन्हें अब और भी अखरने लगी। विमला से तो वह बुरी तरह चिढ़ गए। ससुर के घर आना-जाना छोड़ दिया। ससुराल के व्यवहार अब उन्हें ज़हर के समान जान पड़ने लगे। औरतों के घर के बाहर निकलने के वह कट्टर विरोधी हो गए। लड़की को स्कूल भेजना तो अब उन्हें ऐसा जान पड़ने लगा, जैसे उसे यवनों के हाथ सौंप देना। इधर विमला के अनुरोध से वह आर्य-कन्या-पाठशाला के मंत्री हो गए थे। उसमें अब उन्होंने यह कड़ा नियम कर दिया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि सब लड़कियाँ सर्वदा सिर ढककर साड़ी पहनें, माँग बीच से निकालें। हाथों में चूड़ी और पैरों में झाँझ या लच्छे अवश्य पहनें। विवाहिता विद्यार्थिनियों को बिछुए पहनकर पाठशाला आने का कड़ा नियम बन गया। विधवाओं को कड़ी तपस्या का जीवन बिताने का उपदेश होने लगा। एक-एक करके सबने रँगे हुए और रेशमी कपड़े पहनना छोड़ दिया। कन्याओं का बायस्कोप-थिएटर में जाना तो दूर, होस्टलों में खेले जानेवाले नाटकों का देखना भी बंद हो गया। इन सब नियमों को प्रचारित करके दयाशंकर को एक विशेष उल्लास हुआ। संस्कृत-भाषा और धार्मिक साहित्य की ओर अब उनकी खूब रुचि हो गई। सुशीला के पुत्र 'कमल' की देख-रेख अब वह जी-जान से करने लगे।

माता के स्नेह से वंचित कमल पिता से उसके बदले में सौगुना प्रेम पाकर दिन-दिन खिलने लगा। दो वर्ष की अवस्था में वह तीन वर्ष का मालूम होने लगा। उसकी बुद्धि इतनी प्रखर थी कि उससे बात-चीत करके हरएक का चित्त प्रसन्न हो जाता। दया-शंकर उसको सबके यहाँ भेज देते, केवल उसके नाना के यहाँ नहीं। कमल धीरे-धीरे बड़ा हुआ। घर पर पढ़ाने के लिये मास्टर रक्खा गया। संध्या को दयाशंकर उसे स्वयं टहलाने ले जाते। सभा-सोसाइटी में जहाँ जाते, बहुधा कमल उनके साथ रहता। कचहरी में भी जिस दिन उनके दो ही चार मुक़दमे होते, उस रोज़ उसको ले जाकर 'बार-रूम' में बिठा देते, और उससे बातचीत कराकर अपना तथा मित्रों का मन बहलाते।

लक्ष्मीकांत ने विमला की शादी विलायत से लौटे हुए बा० रामचंद्र बैरिस्टर से ठीक की। विमला और रामचंद्र, दोनो ने एक दूसरे को खूब पसंद किया। शादी के सात-आठ दिन पूर्व विमला ने एक छोटा-सा पत्र लिखकर दयाशंकर से अपने अपराधों की क्षमा माँगी, और प्रार्थना की कि कृपया विगत काल की कोई बात उसके पति के पास न पहुँचने दें। दयाशंकर ने उस पत्र को खूब सँभालकर रख लिया, और उत्तर में केवल इतना लिख भेजा कि "मुझे इतना नीच मत समझो।" शादी में न वह स्वयं गए, न कमल को ही भेजा। विमला उनकी इस अवहेलना पर बहुत दुःखित हुई। उसको ऐसा मालूम हुआ, जैसे उसपर तिरस्कार का पहाड़ टूट पड़ा। परंतु अपने पति के प्रेम में रँगकर उसने इस तिरस्कार को धीरे-धीरे भुला-सा दिया।

कमल अब सात वर्ष का हो गया था। अँगरेज़ी की तीसरी किताब अच्छी तरह पढ़ लेता था। अँगरेज़ी में बातचीत करने का भी उसे कुछ अभ्यास हो गया था। अमरकोष के कुछ श्लोक और पाणिनि के कुछ सूत्र भी कंठाग्र हो गए थे। परंतु दयाशंकर के बहुत प्रयत्न करने पर भी उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। अंत में दयाशंकर ने यह समझकर कि शायद पढ़ाई के बोझ के ही कारण वह अस्वस्थ रहता हो, उसका पढ़ना भी बंद करा दिया। भावी को कौन रोक सकता है। तीन-चार मास बीमार रहकर कमल भी दयाशंकर को रुलाकर चल बसा। दयाशंकर पर मानो वज्र गिर पड़ा। ख़बर पाकर बदायूँ से उनके पिता आए। उन्होंने बहुत तसल्ली दी। दयाशंकर का जी प्रयाग से बिलकुल ऊब गया था। पिता ने कहा, बदायूँ चलो। दयाशंकर ने मंज़ूर कर लिया। दो-तीन मास वहाँ रहे, उससे उनकी कुछ तसल्ली हुई।

मनुष्य को परमेश्वर ने स्मरण-शक्ति और विस्मरण-शक्ति दोनो दी हैं। परंतु मनुष्य एक की सदा प्रशंसा किया करता है, और दूसरी की निंदा। किंतु यदि निष्पक्षता से देखा जाय, तो विस्मरण-शक्ति भी कुछ कम काम की नहीं है। इससे हम घोर-से-घोर दुःख भूलकर फिर स्वस्थ हो जाते हैं। दयाशंकर भी धीरे-धीरे कमल को भूलने लगे। कोई एक वर्ष उपरांत उनको यह मालूम हुआ कि इस प्रकार शून्य निराधार जीवन नहीं बिता सकता। अब तक सोचा था 'कमल' है, यह कमला है, यही सब कुछ है; किंतु उसके खुट जाने पर दिखाई निकाले हुए मारवाड़ी की भाँति उन्हें भी नई पूँजी इकट्ठी करने की इच्छा हुई। इधर कई वर्षों से धार्मिक साहित्य की ओर भी समय लगाया करते थे। 'कमल' को देखकर उसे वह नरक से बचानेवाला ही समझा करते थे (पुन्नाम नरकात् त्रायते इति पुत्रः)।

उनकी अवस्था अब ४० के लगभग थी। किंतु अब भी वह चाहते थे कोई योग्य कुमारी कन्या मिले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिये ठीक आयुवाली। बहुत खोज करने पर उनको उन्नाव के एक पटवारी की एक सुंदरी कन्या मिली। पटवारी के लिये हाईकोर्ट में वकालत करनेवाला वकील पास-पड़ोस के ज़िमींदार से कहीं अच्छा होता है। पटवारीजी अपने कुल को मर्यादा के उच्च शिखर पर पहुँचाने का मौक़ा पाकर खोनेवाले न थे। उन्होंने अपनी षोडशवर्षीया गंगा का ब्याह दयाशंकर से निस्संकोच कर दिया।

दयाशंकर गंगा को लाकर फूले नहीं समाए। रूप में कुंदन के समान और स्वभाव में जाजवंती-लता के तुल्य गंगा ने उनके मन पर पूरा क़ाबू कर लिया। कहते हैं, दूसरी बीवी निर्गुण भी बहुत प्यारी होती है, फिर गंगा तो गुण-विभूषिता थी। दयाशंकर उसे स्नेह से रखने लगे। पर्दे के पक्षपाती वह बहुत दिनों से हो गए थे। अब और भी हो गए। गंगा को कभी कहीं नहीं भेजते। दो-एक बार विमला ने उसे देखने की इच्छा प्रकट की; किंतु आपने 'नहीं' लिख भेजा। गंगा के मायके से भी कई बार लोग बुलाने आए; परंतु साफ़ इनकार। बूढ़ा कंजूस अपने रुपयों की थैली अपने सिरहाने रखकर सोता है, और दिन-रात सचेत रहता है कि कहीं चोर उठा न ले जायँ। दयाशंकर भी उसी भाव से प्रेरित होकर अपनी सोने की चिड़िया को पिंजड़े में ही बंद रखने लगे। गंगा इस बरताव से उद्विग्न हो उठी। यह सब धीरे-धीरे उसे असह्य हो चला। पहले तो वह चिड़चिड़ाई, फिर मायके जाना चाहा। वह भी नहीं हो सका। वृद्ध पति के संग में तरुणी पत्नी बहुत दिन सुखी नहीं रह सकती। गंगा को अब दयाशंकर के कठोर नियम असह्य हो गए। उसके हृदय में क्रांति उत्पन्न हो गई। प्रेम का स्थान घोर सद्भाव ने ले लिया।

अभी तक गंगा के घर से जो पत्र आते थे, दयाशंकर उनको बिना खोले हुए ही पत्नी के हाथ में दे देते थे, वह भी पढ़कर इधर-उधर डाल देती थी। किंतु इधर दयाशंकर कभी-कभी उसकी चिट्ठियाँ खोल लेते। गंगा भी अब दयाशंकर से छिपाकर नौकर द्वारा डाक में चिट्ठी रखवाने लगी। दयाशंकर का तो स्वभाव-सा हो गया था कि वह पत्नी की चिट्ठी खोल लेते थे। प्रायः वह गंगा के भाई-बहन के पास से ही आती थीं। किंतु उनके हाथ में एक बार एक विचित्र चिट्ठी आई। वह यह थी—

प्रेयसि,

मैं तो समझी थी, तुम अपने नए सौभाग्य में मुझ-जैसा ग़रीब को बिल्कुल भूल गई होगी, पुरानी स्मृति पर पानी डाल दिया होगा। किंतु इन दो वर्षों के अनंतर तुमने मेरे ऊपर कृपा की। शायद मेरे भाग्य ने पलटा खाया है। मैंने तुम्हारे बिछोह में कितना कष्ट उठाया है, यह तुम एक बार यहाँ आकर देख जाओ। किंतु तुम क्यों आओगी, तुम तो हो निठुर! कभी-कभी मुझे भी याद कर लिया करो। और अधिक क्या लिखूँ, जड़ ही कट गई।

तुम्हारी अभागिनी—
उमा

दयाशंकर को इस चिट्ठी से कुछ संदेह हुआ। अक्षर भी कुछ पुरुष के-से मालूम पड़े। गंगा से पूछा, तो मालूम हुआ, उमा उसकी बाल-सखी है, इतने दिन बाद याद की, इसी से ऐसी ऊटपटाँग चिट्ठी लिखी है। किंतु दयाशंकर को इससे संतोष नहीं हुआ। कोई एक मास उपरांत उमा की एक चिट्ठी और आई। वह इस प्रकार थी—

प्रियतमे,

तुम मुझसे कहती हो, ऐसा ऊटपटाँग पत्र न लिखा करो। मैं कहती हूँ, क्यों नहीं। क्या मुझको तुम्हारे ऊपर कुछ भी अधिकार नहीं है? मैंने तो इसमें कोई आपत्ति नहीं की कि वकील साहब तुमको प्यार करें। फिर वह मेरे बीच में क्यों दख़ल देते हैं। मेरी ओर से उनसे कह देना, क्या एक चीज़ को दो मनुष्य नहीं प्यार कर सकते। पहले मैंने तुमको प्यार किया, इसलिये एक प्रकार से मेरा उनसे अधिक हक़ है। तुम एक बार आकर मुझे देख जाओ, शायद अब तुम मुझे पहचान भी न पाओ। क्या तुम्हारा मुझे देखने को ज़रा भी जी नहीं चाहता। शायद तुम पत्थर हो गई हो।

तुम्हारी वही—
उमा

इसके उपरांत उमा की कोई चिट्ठी नहीं आई। गंगा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ने कहा, तुम नाराज़ होते थे, इससे मैंने उसे चिट्ठी लिखने से मना कर दिया है। अब के तीजों के अवसर पर गंगा ने बड़ी ज़िद की, लेकिन दयाशंकर ने उसे घर नहीं जाने दिया। गंगा ने अब और कड़े अस्त्र निकाले। वह अनशन करने लगी, चारपाई पर पड़ी रहने लगी, घर का काम बिगाड़ने लगी। दयाशंकर खीझ गए। बोले, अच्छा, अबके भ्रातृ-द्वितीया के समय ज़रूर भेज देंगे। अब घर-गृहस्थी का जंजाल उन्हें बड़ा दुःख देने लगा। शरीर पर का मांस सूखने लगा। मिज़ाज बिल्कुल चिड़चिड़ा हो गया। मन खिन्न रहने लगा। इससे बचने के लिये वह चुपके-चुपके थोड़ी-थोड़ी ह्विस्की पीने लगे।

गंगा भ्रातृ-द्वितीया के अवसर पर घर जाकर फूली नहीं समाई। उसको पिंजड़े से छूटे हुए पक्षी की भाँति आनंद हुआ। पति से चार दिन में लौटने का वादा कर गई थी, और उसे लग गए आठ दिन। दयाशंकर रोज़ स्टेशन से ख़ाली लौट आते। नवें दिन वह कचहरी से लौटकर गंगा को घर में पाकर कुछ शांत हुए। उसके पिता उसे पहुँचाने आए थे। उनके साथ एक २०-२२ वर्ष का लड़का भी था। गंगा के पिता ने उसका परिचय दयाशंकर से इस प्रकार कराया—यह हमारे ज़िमींदार बा० भवानीशंकर के सुपुत्र सतीशंकर हैं। इनके पिता मुझे बहुत मानते हैं। यह एंट्रेंस तक पढ़े हैं। इन्हें उच्चाव पसंद नहीं है। यदि यहीं कहीं किसी काम से लग जायँ, तो अच्छा, नहीं तो त्रिवेणी-स्नान कर मेरे साथ लौट जायँगे। दयाशंकर ने कहा, क्या हिंदी-उर्दू अच्छी लिख लेते हैं? सतीशंकर ने दो-एक नमूने लिखकर दिए। उनको देखकर दयाशंकर का मुँह उतर गया।

गंगा के पिता दो-तीन दिन रहकर चले गए। साथ में सती को भी वापस लेते गए। दयाशंकर के हृदय में काँटा-सा छिदा करता। अब वह कचहरी भी बहुत कम जाने लगे। बहुधा घर पर ही रहते। शराब अब खुल्लम-खुल्ला पीने लगे। कभी-कभी गंगा को भी पिलाते। उनके मिज़ाज से गंगा और नौकर सभी परेशान रहते।

एक दिन नौकरों ने देखा, उनके सोने का कमरा दस बजे तक न खुला। न बहू निकलीं, न बाबूजी। किवाड़ खटखटाए गए, भीतर से ज़ंजीर बंद। बहुत आवाज़ें दी गईं, तब अंदर से कुछ कराहने की-सी आवाज़ आई। तब तो किवाड़ तोड़े गए। अंदर भयानक दृश्य। रंग ख़ून में लथपथ और दयाशंकर मृतावस्था में। पुलिस को ख़बर दी गई, वह दौड़ी हुई आई। घर-भर में ताले पड़ गए। गंगा अस्पताल भेजी गई। कई दिन के बाद वह अच्छी हो चली। उसने कहा—"कई दिन से मुझसे बोलते न थे; किंतु उस रात को मुझे प्यार से बुलाने लगे। ख़ुद शराब पी, मुझे भी पीने को दी। जब मैंने नहीं पी, तो कहा—'अच्छा, थोड़ा-सा दूध ही पी लो।' किंतु उनके व्यवहार से मुझे कुछ संदेह हो गया। मैंने दूध भी नहीं पिया। इस पर वह बहुत नाराज़ हुए। दूध का कटोरा दूर फेंककर उन्होंने मेरा गला ज़ोर से दबा दिया। मुझे केवल उनका लाल-लाल क्रोध से भरा मुख और हाथ में छुरा दिखाई दिया।"

दयाशंकर के सेफ़ में से पाँच हज़ार के नोट, एक पासबुक और एक बंद लिफ़ाफ़ा मिला। लिफ़ाफ़े में यह पत्र था—

"मैंने जीवन-पथ पर चलते हुए कई ठोकरें खाईं। देव-तुल्य पिता को छोड़कर ससुर को अपनाया। मीरा पतिव्रता साध्वी की हत्या कर एक चंचला के फेर में पड़ा। उससे छूटा था, तो सोचा, अब शांति-पूर्वक जीवन व्यतीत होगा। किंतु कमल का आधार छूटने से सर्वनाश हो गया। अपावन गंगा स्रोत में बहा। उसी ने मुझे डुबो दिया। उसको भी अपराध देना अनुचित है। वह मुझे कैसे प्यार करती। मेरे पास अब कोई उपाय नहीं है। उसका और अपना, दोनों का काम तमाम कर अब सुख से जा रहा हूँ। मेरी सारी संपत्ति आर्य-कन्या-पाठशाला के लिये ही है। किंतु केवल तब तक, जब तक पाठशाला के आदर्श वही हैं, जो मैंने समय-समय पर प्रचारित किए हैं। ईश्वर हम सबके अपराध क्षमा करे। ओ३म् तत्त्वमसि।"

[लंदन से]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्रिटिश-पार्लामेंट के सदस्यों की दशा

(एक रोमांचकारी उद्घाटन)

[श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा]

ब्रिटिश-पार्लामेंट की कामंस-सभा के सदस्यों का जीवन कितना दयनीय है, यह हमें नहीं मालूम है। ब्रिटिश-साम्राज्य पर हुकूमत करनेवाले ये प्राणी किस ग़रीबी और परेशानी में अपना समय बिताते हैं, इसका हम अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते। यह एप्रिल का महीना है। पार्लामेंट के जीवन में सबसे महत्व-पूर्ण समय बजट का होता है। ऐसे अवसर पर उसके सदस्यों की दशा का वर्णन बड़ा रोचक होगा।

ब्रिटिश-पार्लामेंट से कई प्रभावशाली सदस्य अलग हो रहे हैं। धीरे-धीरे सार्वजनिक जीवन तथा राजनीतिक कार्य-क्षेत्र में पैर रख रहे हैं। हमें लॉर्ड बर्केनहेड, सर आस्टिन चैंबरलेन, श्रीरेजिनाल्ड मैककेना, सर ऑक्लैंड गेडेस, सर रॉबर्ट हार्न तथा सर लेमिंग वर्दिंगटन इवांस (भूतपूर्व समर-सचिव) के अतिरिक्त अन्य कई प्रमुख, प्रभावशाली तथा सुयोग्य वक्ता और नेताओं के नाम लिए जा सकते हैं। इनमें से अधिकांश ने या तो कोई नौकरी कर ली है या अपने घर की जायदाद सँभाल रहे हैं। सार्वजनिक सेवा से हटने का प्रधान कारण यह है कि वहाँ रहकर ये अपना पेट तक तो चला ही नहीं सकते, परिवार की बात कौन कहे! जनता की सेवा एक महान् कार्य है, किंतु इस सेवा के साथ इतना आत्म-त्याग भरा है कि संयुक्त-राज्य अमेरिका को छोड़कर, प्रत्येक देश के राजनीतिक को किसी-न-किसी प्रकार भव-बाधा में ग्रसित और त्रस्त रहना पड़ता है।

कर्नल लेन-फ़ाक्स का पत्र

कर्नल लेन-फ़ाक्स ने, जो कामंस-सभा के बड़े पुराने और प्रभावशाली मेंबर हैं तथा अनुदार-दल में जिनका बड़ा बोलबाला है, अब सभा की मेंबरी छोड़ने का निश्चय किया है। २४ वर्ष लगातार मेंबर रहने के बाद आपने स्थानीय अनुदार-संघ को एक पत्र लिखा है, जिसमें आप लिखते हैं—

"अब तक मुझे बुरी तरह अपने निजी कार्यों की उपेक्षा करनी पड़ी थी। प्रत्येक वर्ष के अधिकांश भाग में मैं अपनी ज़िमींदारी से दूर रहा। मैं अपने परिवार तथा मित्रों को सप्ताह के अंत के अलावा कभी नहीं देख सका—सप्ताह के अंत में भी अधिकांश समय अपने 'निर्वाचन-क्षेत्र' में बिताना पड़ता था।

"इसके अलावा प्रत्येक चुनाव का महान् ख़र्च प्रत्येक अनुदार सदस्य से उम्मेद किए जानेवाले अनेकों चंदे, चाहे वे कम ही क्यों न हों, और लंदन में रहने का ख़र्च इतना ज़्यादा होता है, जो पार्लामेंट की तनख़्वाह से कहीं ज़्यादा होता है, जिसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता...मैं इस्तीफ़ा दूँगा।"

कर्नल लेन-फ़ाक्स ऐसे ज़िमींदार तथा परिश्रमशील आदमी का यह हाल है, तो उनका क्या हाल होगा, जो पार्लामेंट के मेंबर हो जाने के कारण समय तथा नियम के कारण और कहीं नौकरी नहीं कर सकते तथा जिनके पास खाने का और कोई साधन नहीं है, केवल पार्लामेंट की तनख़्वाह, जो लगभग ६,०००) रुपए वार्षिक-मात्र ही होती है!

इतनी थोड़ी रक़म

६,०००) रुपया सालाना हमारे लिये बहुत बड़ी चीज़ है, किंतु लंदन के लिये यह बहुत थोड़ी रक़म है। हमारे कौंसिल के मेंबरों की तरह पार्लामेंट के मेंबरों का जीवन नहीं होता, उन्हें एक स्वतंत्र साम्राज्य का नियंत्रण करना होता है; एक ग़ुलाम देश की 'हाँ हुज़ूरी' नहीं। वहाँ के सदस्य ऐसे नहीं होते कि जिस निर्वाचन-क्षेत्र से वे चुने गए हों, वहाँ के आदमियों ने—उनके चुनने-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वालों ने—उनको सूरत तक न देखी हो और कोरे रुपए के बल पर वे चुन लिए गए हों। अथवा अवध के ताल्लुक़ेदार कौंसिल के मेंबरों की तरह अपने निर्वाचकों के लिये उनके प्रतिनिधि के रूप में उनके 'मा-बाप' हों। इन सदस्यों का सबसे ज़बर्दस्त ख़र्च मकान का होता है।

इन्हें लंदन में रहना पड़ता है। सभा-भवन के निकट सौभाग्य से कोई उस पद के योग्य कमरा मिल गया, तो ईश्वर भला करे। किंतु उसका कम-से-कम किराया ११५) या २००) साल होगा। इस प्रकार इस सदस्य को दो घर रखने पड़े, एक अपना अपने नगर में, दूसरा लंदन में!

भोजन और वस्त्र

इसके बाद भोजन तथा वस्त्र की समस्या आती है। स्वयं कामंस-सभा में जो भोजनालय है, उसमें दिन को भोजन करने का कम-से-कम ५) और रात्रि का ७) लगेगा। होटल में ख़र्च और भी ज़्यादा है। सभा की बैठकों में अच्छे वस्त्र में भी जाना पड़ेगा। वस्त्रों की धुलाई में साधारण रूमाल की धुलाई भी चार आना लगेगी। इस प्रकार भोजन और वस्त्र में ही पूरा ख़र्च बैठता है। इसके अलावा अक्सर उस सदस्य के निर्वाचन-क्षेत्र से कई आदमी लंदन या सभा की बैठक देखने आते हैं। बेचारे मेंबर को इन्हें अपने ख़र्च से नगर घुमाना और सभा की बैठक के बाद चाय पिलाना पड़ेगा, जिसमें कम-से-कम ३॥) या ४) ख़र्च हो जायँगे। यदि वह ऐसा नहीं करता, तो असभ्य समझा जायगा।

प्रतिदिन २० ख़त

इन सदस्यों के पास उनके निर्वाचन-क्षेत्र से अपना-अपना दुःख लिखकर, अपना प्रश्न भेजकर या केवल व्यर्थ में ही पचीसों ख़त रोज़ आते हैं। इनमें से यदि एक का भी जवाब न दिया जाय, तो वह असभ्य तथा 'दिमाग़ लगानेवाला' समझा जायगा। बेचारे को जवाब देना ही पड़ेगा, और इस प्रकार कम-से-कम ३) रोज़ डाक में लग गए। वह बड़े सौभाग्य का दिन होगा, जिस दिन इस मेंबर के पास ८-१० पत्र न आवें।

पत्र-व्यवहार तथा कार्य की अधिकता इतनी होती है कि एक आदमी सब बोझ नहीं सँभाल सकता। उसे एक मंत्री भी रखना ही पड़ता है।

निर्वाचन-क्षेत्र में दौरा

ज़्यादातर मेंबरों को, यदि अपने निर्वाचकों को प्रसन्न रखना है, तो उन्हें अक्सर अपने निर्वाचन-क्षेत्र में दौरा करना चाहिए। यदि उनका मकान निर्वाचन-क्षेत्र में न हुआ, तो उन्हें होटल में टिकना पड़ेगा। सभा की व्यवस्था तथा आत्मविज्ञापन का पूरा ख़र्च देना पड़ेगा। मेंबरों को रेल-सफ़र के लिये तीसरे दर्जे का पास लंदन तथा उनके निर्वाचन-क्षेत्र के बीच के लिये मिलेगा। किंतु यदि कोई साथी जाना चाहे, तो उसका किराया अलग से।

प्राइवेट बिल

हमारे खाने में ब्रिटिश-पार्लामेंट की बहुत-सी बातें नहीं आतीं। इनमें 'प्राइवेट बिल' भी है। नगर-कौंसिलों की ओर से नगर-संबंधी कोई प्रस्ताव कामंस सभा में भेजा जाता है, तो उसे पेश करता है नगर की ओर से निर्वाचित सदस्य। किंतु यह 'बिल' उस सदस्य की जेब ख़ाली कर डालता है। उस नगर के कौंसिल-अध्यक्ष (मेयर), कौंसिल का क्लर्क तथा कभी-कभी दो-एक मेंबर भी उस प्रस्ताव के विषय में सदस्य को पूरा पाठ पढ़ाने के लिये आते हैं। उस समय ये उसी के साथ ठहरते हैं, और भोजन-पानी सब उसी मेंबर के मत्थे होता है। यदि वह मेंबर कहीं भोजन करने या दावत खाने के लिये बुलाया जाय, तो वह इस डर के कारण नहीं जाता कि लोग उसे घूमख़ोर कहेंगे और चुनाव के समय कीचड़ उछालनेवाले कम न मिलेंगे।

इसका परिणाम

इस प्रकार ऐसी हालत में उन १,०००) रुपयों में क्या होगा! लंदन की हवा में ही पैसा खींचने की ताक़त है, तिस पर दिन-रात की मिहमानदारी! जो जितने ही ऊँचे उठता है, उस पर उतना ही ख़र्च बढ़ जाता है। इसी कारण ग़रीब पर अत्यंत अनुभवी, सुयोग्य, चतुर और ईमानदार आदमी पैसे के अभाव के कारण पार्लामेंट के मेंबर नहीं हो सकते! वही मेंबर हो सकते हैं, जिनके पास पैसा हो, चाहे वे मूर्ख ही क्यों न हों। ब्रिटिश-पार्लामेंट में वे ग़रीब उद्धार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा स्वेही सदस्य नहीं पहुँच पाते, जिनका यदि बोल-बाला हो, तो साम्राज्य में जो अत्याचार होते हैं, उनके कारण अँगरेज़ों के सिर लगा कलंक का टीका मिट जाय! वह अमीरों का चिड़ियाख़ाना है।

प्रधान मंत्री को बुरी हालत

प्रधान मंत्री तथा अन्य मंत्रिवर्गों की इससे भी बुरी हालत है। आज के ढाई सौ वर्ष पहले सदस्य तथा प्रधान मंत्री सभी अवैतनिक होते थे। किंतु उस समय यह पद बड़े-बड़े जागीरदार और ज़िमींदारों को मिलता था। किंतु जब एक देश-भक्त इस पद को ग्रहण करेगा, रात-दिन वह इसी में सर मिटेगा, तो वह खाएगा क्या! प्रधान मंत्री को केवल अपने पद के अनुसार अपनी शान-शौक़त का ही नहीं, किंतु संपूर्ण सरकार की शान निभाना होता है। बड़ी-से-बड़ी राजनीतिक बातें दावतों में तय होती हैं। प्रधान मंत्री को इस प्रकार की दावतें अपने ख़र्च से बराबर देनी पड़ती हैं। यदि वह ऐसा नहीं कर सकता, तो उसे अपने कार्य में सफलता ही न मिलेगी, और असफलता के कारण वह निकाला जायगा।

अस्तु, आज से ढाई सौ वर्ष हुए, इनके सभी ख़र्चों का हिसाब लगाकर ७०,०००) रुपए वार्षिक वेतन पर प्रधान मंत्री की नियुक्ति की गई थी। संपूर्ण सरकारी दावतें, अत्यंत ख़र्चीले उत्सव, तार, डाक तथा सरकारी भवन में रहने का व्यय और किराया भी इसमें शामिल है। किंतु उस समय धन की क्रय-शक्ति तिगुनी थी। अब यह वेतन आय-कर की सीमा में शामिल होने के कारण २१,०००) रुपए केवल आय-कर में ही ले लिए जाते हैं। जो बचता है, उसका ख़र्च अंदाज़न् लगाया जा सकता है। काम से अलग होने के बाद पेंशन की गुंजायश नहीं, भले ही भूखे मरें।

संकोच

१९२४ में मज़दूर-दल का जब पतन हुआ तथा ९ महीने बाद ही प्रधान मंत्री श्रीमैकडोनेल्ड को त्यागपत्र देना पड़ा, उन्होंने कहा था कि "मैं जब पद ग्रहण कर रहा था, इस समय से अधिक धनी था।" भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय लॉर्ड ऑक्सफ़ोर्ड (श्रीएस्क्विथ) १२ वर्ष तक इस पद पर रह चुके हैं। उन्होंने इस प्रकार ८,४०,०००) रुपए के क़रीब वेतन में पाया होगा, पर कार्य छोड़ने के समय उनके पास केवल १,१२,०००) रुपए बच गए थे, और उनको अपने भारी ख़र्च के लिये जनता से दान लेना पड़ा था।

किंतु, अपनी विपत्ति के लिये अपने मुँह से कहने में सभी को संकोच मालूम होता है। इसी कारण प्रधान मंत्रिगण अपना दुःख झेल ले जाते थे।

किंतु, अब इस विषय पर इतना आंदोलन हुआ है कि पार्लामेंट ने पहले मंत्रियों के वेतन की जाँच करने के लिये एक कमेटी बैठाने का निश्चय किया है, जो इस विषय में पूरी जाँच करेगी। संभवतः मार्च में यह कमेटी बैठ गई होगी।

१९११ में निर्धारित सदस्यों की वेतन-सूची पर भी कमेटी को ध्यान देना चाहिए, इस प्रकार का आंदोलन विलायत में हो रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ब्रिटिश-शासन-विधान का यह नियम, जिसके अनुसार सुयोग्य आदमी देश-सेवा से वंचित कर दिए जाते हैं, एक कलंक है। अवश्य उनकी देश-सेवा की सच्ची कसौटी की परख हो जाती है।

---

* महिला-मोद *

[लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी]

इस पुस्तक में द्विवेदीजी के उन सारगर्भित लेखों का संग्रह है, जो समय-समय पर आपने स्त्री-जाति के हितार्थ लिखे हैं। लेख सभी पढ़ने योग्य, उपयोगी और मार्के के हैं। स्त्रियों को तो यह पुस्तक अवश्य ही पढ़नी चाहिए। कवर पर एक मनोहर रंगीन चित्र भी है। मूल्य ।=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रभाती

[श्रीयुत "गुलाब"]

सखि ! उठ जाग उषा की बेला,
फूलों पर अलि-दल का मेला,
अभिनंदन-वंदन भर मारुत
झरता उर-आँगन विच झिर-झिर ;
रवि-किरणावलि उलसित तिर-तिर—
कर जाती युग-उज्ज्वल-खेला !
सखि ! उठ जाग उषा की बेला।
जागो मिलन घड़ी शुभ जागो !
चंचल मन-मृग अति अनुरागी।
नयन ललाट चिबुक मुख उन्मद-
लहर-प्रवाह मधुर अति यौवन,
गूँज रहा मधु-मंगल स्वर धन,
नाच रहा भव-सिंधु विरागी।
जागो मिलन घड़ी शुभ जागो !
चुन-चुन अंचल में मृदु कलियाँ,
भर दे प्रिय-प्रियतम को गलियाँ,
नयन-नीर से पद पखार उठ !
निर्मल कर मधु-वांसती दिन,
देख क्षितिज की ओर अरी-क्षिन !
सजीं साँझ की दीपावलियाँ—
चुन-चुन अंचल में मृदु कलियाँ !

नए वर्ष की ख़ुशी में लूटो !

२॥) रु० में हर रोग का इलाज !!

यदि अपने घर बैठे ही स्त्री-पुरुषों के नए-पुराने और कड़े रोगों के आवश्यकतानुसार यौगिक, वैज्ञानिक, प्राकृतिक और आध्यात्मिक रोगनाशक विधियों, रीतियों, युक्तियों, रत्न, उपरत्न, धातु, उपधातु, जड़ी-बूटी (औषधि) तथा मिट्टी, जल, वायु, रंग, प्रकाश, भोजन, कंद, मूल, फल, फूल, तरकारी, शाक, खेल, कूद, हँसना, बोलना, गाना, बजाना आदि द्वारा इलाज कराना चाहते हो, तो पूर्ण व्यवस्था-सूचक पत्र हमारे मशविरे की फ़ीस Consultation fee दस रुपए सहित तुरंत भेजो। पत्र-व्यवहार गुप्त रखने की गारंटी है। सब प्रकार निराश हो चुकने पर भी विधि-पूर्वक कार्य करने से हमारी विधियों आदि से अवश्य लाभ होता है। जो एक से अधिक रोगों से पीड़ित हों, दूनी फ़ीस भेजें। नए वर्ष की ख़ुशी में ख़ास रिआयत। इस पत्रिका का हवाला देकर लिखनेवाले उपर्युक्त फ़ीसों की आधी फ़ीस भेजें और विद्यार्थी, क्लर्क, मुनीम और असमर्थ स्त्री-पुरुष यथाक्रम चौथाई। पैकिंग, डाक-महसूल, रजिस्ट्री आदि के लिये सब कोई आठ आना अधिक भेजें। रुपया-सहित पत्रप्राप्त होने पर उचित औषधि, विधि, युक्ति आदि भेजी अथवा बताई जायगी। यदि अवश्य ही अपना भला चाहते हो, तो तुरंत रुपया भेजकर लाभ उठाओ, अन्यथा "समय गए पुनि का पछताने।"

डॉक्टर जी० एस्० डी० शर्मन

G. Sc., N. V. (U. S. A.), M. A., D. Sc., Ps. D., M. D. (AYUR.), LL. D.
विद्याभूषण, योगविद्या-महार्णव, आकल्टिस्ट,
२५, सक्सैस हाउस, फ़तहपुर सीकरी (आगरा)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिशु-शिक्षा-शैली

[साहित्यशास्त्री पं० मोहनवल्लभ पंत बी० ए०, विशारद]

ता-पिता के हृदय में संतान के प्रति अगाध प्रेम तो होता ही है, पर साथ ही उनके अभ्युदय की अभिलाषा भी किसी अंश में कम नहीं होती। किंतु बच्चों को किस ढंग से शिक्षित किया जा सकता है, इन नियमों का यथोचित परिचय न रहने से प्रायः वे अज्ञान में अपनी संतान के हित के बजाय अनिष्ट ही कर बैठते हैं। जिस शैली का अनुसरण करके वे अपने बालकों को शिक्षा देते हैं, वह अपने वास्तविक प्रयोजन में ही असफल हो जाती हो, केवल यही बात नहीं है; किंतु इसके द्वारा बच्चों के भविष्य-जीवन और सुखाशा का सदा के लिये अंत हो जाता है, जिसका उनके मानस पर चिरस्थायी एवं प्रगाढ़ प्रभाव पड़ जाता है।

अमेरिका के महापुरुष अब्राहम लिंकन ने एक बार कहा था—'जो कुछ मैं वर्तमान समय में हूँ, अथवा जो कुछ मैं भविष्य में होने की आशा रखता हूँ, इसका सब श्रेय मेरी जन्मदात्री तथा शिक्षयित्री माता को ही है।" सच है, संसार के सभी महापुरुषों ने अपने यश का श्रेय अपने माता-पिता को ही दिया है, और यह है भी सर्वथा उचित, परंतु साथ ही हम यह भी स्वीकार किए बिना नहीं रह सकते कि नृशंस, अत्याचारी एवं सब प्रकार से लोक-दृष्टि में हेय जनों के पैदा करने के दोष-भागी भी माता-पिता ही हैं। मनुष्य का बनना-बिगड़ना माता-पिता पर ही निर्भर है; क्योंकि उनका बाल्य जीवन पूर्णतया उन्हीं के संरक्षकत्व में बीतता है। अतएव माता-पिता को इस अवस्था में ज़रा सावधानी के साथ तथा समझ-बूझकर काम लेना उचित होगा। बड़े खेद का विषय तो यह है कि हम लोग बालकों की शिक्षण-शैली के संबंध में वैज्ञानिक सिद्धांतों के विवेचन की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते। 'विज्ञान' शब्द से यहाँ तात्पर्य 'मनो-विज्ञान' तथा 'मानव-विज्ञान' से है। हम उन कारणों की खोज करने का प्रयत्न ही नहीं करते, जो बालकों को असत्य के मार्ग में प्रवृत्त करने के लिये बाध्य करते हैं, जो उनको दुराग्रही एवं हठी बना देते हैं, जिनके कारण वे आज्ञाकारिता से विमुख होते हैं, अथवा जो उनको अन्य किसी दुर्गुण की ओर घसीट ले जाते हैं, और जिनका परिणाम—यदि उचित उपचार न किया जाय, तो—भयंकर तथा महान् अनिष्टकारी होता है। प्रत्युत यदि हम उनमें किसी बुराई को अकस्मात् देख भी पाते हैं, तो उसको आँख बचाकर देखो-अनदेखी कर देते हैं, अथवा तपाक से उनके मुँह में दो-चार चपतें जड़ के—इससे भी यदि मन को तसल्ली न हुई, तो और भी कठोर दंड देकर—अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। इसका प्रतिफल यह होता है कि हम उन बालकों की दृष्टि में हौवा बन जाते हैं, और उनके हितकारी एवं शुभचिंतक होने के बदले अनिष्टकारी सिद्ध होते हैं। करना तो हमको वास्तव में यह चाहिए कि हम सीधे उन दुर्गुणों के उद्गम-स्थान पर ही हमला करें—मूल-हेतुओं को ही समूल नष्ट कर दें—जिससे वे अवगुण पनपने ही न पावें, और उनके अभाव में सद्गुण स्वतः अपना आधिपत्य कर लें। उदाहरणार्थ 'असत्य' को ही लीजिए। बालक बहुधा भय के ही कारण झूठ बोलने को बाध्य होते हैं। यदि उनसे कोई अपराध हो बैठता है, तो वे यह समझकर कि हमको उस अपराध का दंड भोगना पड़ेगा, अपने को दंड से बचाने के निमित्त अपराध को छिपाने का प्रयत्न करते हैं, या साफ़ नाहीं कर जाते हैं। बस, यहीं से सब पापों के मूल झूठ की नींव पड़ती है, और यहीं से धीरे-धीरे उनकी प्रकृति ही झूठ बोलने की हो जाती है। मारना या पीटना अथवा किसी भी अन्य प्रकार का शारीरिक दंड देना उनको झूठ बोलने से नहीं छुड़ा सकता। प्रत्युत इससे तो उनकी यह कुटेव और भी बढ़ती जाती है। बालकों से झूठ छुड़ाने का केवल एक उपाय है। पर वह उपाय है अमोघ। बालकों को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छोटे-मोटे अपराधों पर डरा-धमकाकर त्रस्त कर देना ठीक नहीं। अपराध बड़े-बड़े मनुष्यों से हो जाता है। फिर वे तो अज्ञान बालक ही ठहरे। अतएव अपराध हो जाने पर क्रुद्ध हो जाना बुद्धिमानी नहीं, नादानी है। बालकों को प्रेम से समझा-बुझा देना ही उनके लिये पर्याप्त दंड है। इसमें बिगड़ने या डाँटने-डपटने की कोई बात ही नहीं। जब उनके मन में यह विश्वास जम जायगा कि जो अपराध उनसे हो गया है, उसके लिये वे दंडित न किए जायँगे, किंतु भविष्य में ऐसा न करने के लिये उनको आगाह-भर किया जायगा, तो वे झूठ बोलने की कोई आवश्यकता ही न समझेंगे, और वे झूठ बोलने में लज्जा का अनुभव करेंगे।

बालक प्रेम के भिखारी होते हैं। उनसे दो-चार शब्द प्रेम से बोलिए, वे तुरंत ही आपके बिना दाम के ग़ुलाम हो जायँगे। बस, अब आप उनसे कुछ भी कहें, वे शक्ति-भर उस काम के करने का प्रयत्न करेंगे। बालकों का शासन प्रेम के द्वारा होना चाहिए, भय के द्वारा नहीं। बहुत-से माता-पिता तथा शिक्षकवर्ग मनोविज्ञान के सिद्धांतों से पूर्णतया अनभिज्ञ रहते हैं, और यह भी नहीं जानते कि उन सिद्धांतों का शैशव प्रकृति से क्या संबंध है। वे यह सोचते हैं कि बिना दबाव डाले या बिना भय का संचार किए वे बालकों पर शासन नहीं कर सकते। वे यह सर्वथा भूल जाते हैं कि अपने बालकों की कुटेव के मूल-कारण वे स्वयं ही हैं। उनको ध्यान रखना चाहिए कि "भय बिनु होय न प्रीति" का सिद्धांत अबोध बच्चों के संबंध में लागू नहीं हो सकता। यहाँ कठोर व्यवहार ही बालकों की सद्वृत्तियों की जड़ पर कुठाराघात कर देता है, जब बार-बार कठोरता की अति से बालकों की मनोवृत्तियाँ पूर्णतया नष्ट-भ्रष्ट हो जाती हैं, तो वे अभिभावक इस रोग का एक-मात्र संभाव्य उपचार बालकों को शारीरिक दंड देना ही उपयुक्त समझते हैं। परंतु बालकों की प्रकृति सुधारने का उपाय दूसरा ही है, वह यह है—

जो लोग मातृत्व एवं पितृत्व के अधिकार की रक्षा करना चाहते हैं, अथवा जो संतान को सुशील एवं आचारवान् बनाकर संतति-सुख का वास्तविक लाभ उठाना चाहते हैं, उनको अल्पवयस्क शिशुओं में अपने प्रति श्रद्धा एवं विश्वास उपजाने के लिये आत्म-संयम की महान् आवश्यकता है, इससे उन पर शासन करने में बड़ी आसानी और सुविधा होगी, अथवा यों कहिए कि इससे उन पर ही नहीं, उनकी मानसिक वृत्तियों पर भी राज्य करना सहज काम होगा। इस शैली का अनुकरण करने से जो बालक पहले प्रायः अपने हाथ से बाहर हो गए होंगे, वे भी आज्ञाकारी एवं सुशील बन जायँगे, और उनके झिझक, भय, ईर्ष्या, द्वेष आदि दुर्गुण कपूर की भाँति उड़ जायँगे। इस शैली से केवल इतना ही लाभ नहीं है, किंतु इसका फल और भी गहरा होता है, यह आशा से अधिक काम कर दिखाती है। यह ढंग बालकों के सम्मुख एक उच्च आदर्श स्थापित करता और उनके चरित्र को महान् बनाता है। अपनी संतान को सुशिक्षित करने के संबंध में माता-पिता के उद्योगों का अंतिम ध्येय वास्तव में उनको आदर्श एवं चरित्रवान् बनाना ही होता है, शारीरिक दंड, कठोर एवं परुष वचनों से दी हुई आज्ञाएँ अथवा अन्य ऐसे भद्दे और निर्दय साधन असभ्यों तक ही रहें, तो अच्छा। सभ्य-समाज में तो ऐसे भद्दे साधनों को स्थान देना कदापि युक्तियुक्त नहीं। बच्चों को अपना साथी समझो, ग़ुलाम नहीं। उनको उनके प्रत्येक कार्य में सहायता पहुँचाओ, न कि तनिक-सी भूल पर झिड़क दो, अथवा ताड़न करो। इस नियम से अवश्यमेव इसका परिणाम आश्चर्य-जनक होगा, बालक बड़ी द्रुत गति से उन्नति-पथ-गामी होंगे।

बालकों को सदा प्रसन्न-मुख बनाने की चेष्टा करनी चाहिए। पर यह तभी हो सकता है, जब उन पर किसी प्रकार का दबाव न डाला जाय; चिंता और भय तो उनके पास भी न फटकने पावें। आजकल की पाठ-शालाओं की शिक्षा इसलिये अनुपयोगी है कि इनमें पढ़नेवाले बालकों को स्कूल में मास्टरों के बेंतों का भय, घर पर माता-पिता तथा अन्यान्य गुरुजनों का त्रास एवं मन में येनकेनप्रकारेण परीक्षा में पास होने की चिंता छुटपन से ही दिन-रात दबाए है। अतएव इस सुकुमार अवस्था में बालकों के सिर पर स्कूली पढ़ाई का बोझ न रखकर उन्हें घर पर ही पढ़ाया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपयुक्त है। घर पर भी इस पुराने पंडिताऊ ढर्रे से नहीं कि कठोर निगरानी में रखकर उनको "यस्य ज्ञानदयासिन्धोः", या "अइउण्—ऋलृक्" की आवृत्ति कराई जाय, अथवा आजकल के फ़ैशन से केवल "पून्-ओ नो, नो माने नहीं" का पाठ रटाया जाय। यह सब इस प्रकार होना चाहिए कि बालकों को भी यह न जान पड़े कि अध्ययन करना बड़े कष्ट का काम है, साथ ही शिक्षक भी न ऊबने पावें। ऐसा तभी हो सकता है, जब अध्यापक और अध्ययन-कर्ता, दोनो इसे मनोविनोद समझें। मनोरंजन-पूर्वक शिक्षा देने के कतिपय अत्यंत सुगम उपायों का विवेचन नीचे किया जाता है।

बालक क़िस्से-कहानियों को बड़े चाव से सुनते हैं। अतः कुत्ता-बिल्ली, राजा-रानी, लाल-पीली परियों, भूत-प्रेतों आदि के कपोल-कल्पित निरर्थक क़िस्से और गपें—जिनसे कुतूहल के अतिरिक्त और कुछ लाभ नहीं—न कहकर बड़ी सुंदर एवं रोचक रीति से रामायण, महाभारत तथा अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों से चुन-चुनकर उपदेशमय एवं वीर-रस से पूर्ण कहानियों के द्वारा उनके मन को प्रभावान्वित करके उन्नत एवं उत्साह-पूर्ण बनाया जा सकता है। कहानी कहने में न बच्चे को कुछ कष्ट होता है, न श्रोता को; प्रत्युत दोनो उस समय कहानी के रस में डूब जाते हैं। किसी भी साधारण घटना का वर्णन कहानी के रूप में किया जा सकता है। केवल ढंग चाहिए। बालक कुतूहल के प्रेमी होते हैं। अतएव कहानियों में यथास्थान अद्भुत एवं हास्य-रस पर्याप्त मात्रा में रहना समीचीन होगा; क्योंकि इससे उनका जी नहीं ऊबने पाता। कभी-कभी ऐसी उपदेश-पूर्ण कहानियाँ गढ़कर भी कही जा सकती हैं। पर हाँ, ऐसी कहानियाँ मानव-प्रकृति के बाहर परियों तथा भूतों द्वारा की हुई असंभव घटनाओं से दूर रहें, क्योंकि ऐसी अनर्गल कहानियों के कार्यों को बालक असंभव समझने लगते हैं, और वास्तव में ऐसा करना उनकी शक्ति से बाहर होता भी है। इससे उनके मन पर बुरा असर पड़ जाने का डर रहता है, और उनके विचार परियों, भूतों आदि से भर जाते हैं। कभी-कभी अपनी कही हुई कहानियाँ उनके मुख से सुनते रहने से भी बड़ा लाभ होता है। इससे उनकी स्मरण-शक्ति तथा वाक्-शक्ति का विकास होता है। भाषा-ज्ञान प्राप्त करने का भी यह बड़ा सहज उपाय है। इस प्रकार उनको साहित्य और इतिहास का ज्ञान बड़ी आसानी से कराया जा सकता है।

चित्र-कला द्वारा भी बालकों को मनोरंजन-पूर्वक सम्यक् प्रकार से शिक्षा दी जा सकती है। सुंदर-सुंदर रंग-बिरंगे चित्रों और खिलौनों की ओर बालकों का ध्यान इठात् आकृष्ट हो जाता है। चित्र देखते ही उनके मन में यह उत्सुकता पैदा होती है कि यह चित्र है किसका? अतएव बालकों के सामने ऊँचे-ऊँचे आदर्श स्थापित किए जा सकते हैं। ऐसे समय बालकों की जिज्ञासा दबानी नहीं चाहिए। किंतु जो कुछ भी पूछें, उसका समुचित उत्तर देकर उन्हें संतुष्ट कर देना ही समीचीन है। उस समय बालकों को टोकना क्या है, मानो उनको शिक्षा देने के एक सुअवसर से हाथ धोना है। उनको सच्चरित्र बनाने में चित्रों से बड़ी सहायता मिल सकती है। आदर्श महापुरुषों के चित्र उनके सामने रख दीजिए। वे स्वयं उस चित्र के संबंध में अपनी जिज्ञासा प्रकट करेंगे। बस, आप चित्रित महापुरुष के चरित्र का चित्रण कर, उनके हृत्पट पर उसका उच्चतम आदर्श अंकित करके, बालकों के मन में सच्चरित्रता की भावना जाग्रत् कर सकते हैं। चित्रों के ही द्वारा बालकों को भूगोल, खगोल का ज्ञान भी बड़ी आसानी एवं मनोविनोद-पूर्वक कराया जा सकता है। हमने उनके सामने भारतवर्ष का सुंदर मानचित्र (नक़्शा) रक्खा। वे अवश्य ही कुतूहल-वश पूछेंगे कि यह किसकी तसवीर है। तब उन्हें संक्षेप में बतला देना चाहिए कि यह हमारा देश भारतवर्ष या हिंदुस्तान है। प्रसंग-वश नक़्शे में उन्हें बड़ी-बड़ी नदियों, समुद्रों, पर्वतों, शहरों आदि को दिखाकर क्रमशः इनसे भी परिचित कराया जा सकता है। पर यह ध्यान रहे कि एकदम भूगोल का लंबा-चौड़ा सबक़ ही न दिया जाय। जब तक उनका जी उस विषय में लगा रहे, तब तक दो-चार बातें चमत्कारिक ढंग से समझाकर झट विषय-परिवर्तन कर देना चाहिए; क्योंकि एक ही विषय में भला जी कब तक लग सकता है? इसी प्रकार हम उन-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को प्राकृतिक भूगोल का भी ज्ञान करा सकते हैं। माना कि हमने बालकों के सामने एक धधकते हुए ज्वालामुखी का चित्र रक्खा। चित्र देखते ही वे उससे संबंध रखनेवाली बातें जानने को अवश्य लालायित होंगे। ऐसे समय हमको चाहिए कि हम बड़ी ही रोचक रीति से उनको ज्वालामुखी की उत्पत्ति के कारण, उसके हानि-लाभ तथा प्रसंग-वश भूचाल का भी वर्णन सामान्यतः समझा दें। यह ज्ञान उनको आजन्म न भूलेगा, और इन बातों के सीखने के लिये उनको आठवें दर्जे में पहुँचने की प्रतीक्षा न करनी पड़ेगी। इस तरह भिन्न-भिन्न भाँति के चित्रों द्वारा बड़ी ही सुगमता से धीरे-धीरे उनको विस्तृत ज्ञान प्राप्त हो जायगा। बारंबार चित्रों के देखने से किसी बालक का मन चित्रकला की ओर प्रवृत्त हो जाय, तो सुंदर-सुंदर चित्रों के देखने और प्राकृतिक दृश्यों के निरीक्षण से उसकी प्रतिभा का विकास होगा, और वह क्रमशः उन्नति करते-करते भविष्य में बड़ा नामी चित्रकार भी हो सकेगा। चित्रों और खिलौनों के द्वारा छोटे-छोटे बालकों को अक्षर-बोध भी बड़ी आसानी से कराया जा सकता है।

बालक संगीत से बड़ा प्रेम करते हैं। अतएव संगीत भी मनोरंजन-पूर्वक उनको शिक्षा देने के सर्वोत्तम साधनों में एक है। संगीत जब जड़ पदार्थों, पशु-पक्षियों और वृक्षों को मुग्ध एवं प्रभावान्वित कर सकता है, तो चैतन्य बालकों के विषय में पूछना ही क्या? कोई शिशु यदि रोता हो, तो उसके सामने आप सुमधुर स्वर से कोई बाजा बजा दीजिए, अथवा कलकंठ से कोई गाना ही गा दीजिए, तो वह बड़े प्रेम से सुनने लगता है। तुरंत ही रोना-धोना सब भूलकर चुप हो जाता है, और उसके लक्षित ओठों पर मृदु मुसकान प्रकट हो जाती है, जिससे आप अलौकिक आनंद का अनुभव करने लगते हैं। प्रायः सभी जातियों में माताएँ अपने बच्चों को लोरियाँ गा-गाकर सुलाती हैं। अभागे भारत में आज दिन संगीत-विद्या का प्रायः पतन हो चुका है। अब बड़े लोगों में गाना हेय और नीच कार्य समझा जाता है, जिससे यह अपूर्व विद्या रंडी-भँडुवों के अश्लील गानों तक ही रह गई है, और दिनों-दिन इसका ह्रास होता जा रहा है। यदि यही हालत रही, तो मुझे भय है कि कहीं इस विद्या का—परमात्मा न करे—पूर्णतया लोप हो जाय। कुलीन स्त्रियाँ उत्सवों में गाना गाती तो हैं, पर उनमें न वह मनोमोहक शक्ति रहती है, न स्वर-ताल ही। वह गाना विलकुल बेढंगा और अनोखा होता है। संगीत-शिक्षालय क्या पुरुषों के लिये, क्या स्त्रियों के लिये, भारतवर्ष में नहीं के बराबर हैं। इसका कोई समुचित प्रबंध होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह कला है बड़ी अनुपम। संगीतज्ञ सदा प्रसन्नमुख रहता है और प्रसन्नमुख रहना पूर्णतया स्वस्थ रहने का एक लक्षण है। अँगरेज़ों की पाठशालाओं में और-और शिक्षाओं के साथ-साथ संगीत-शिक्षा भी अनिवार्य होती है। क्या ही अच्छा होता, यदि भारत में संगीत का प्रचार पुनः होता, और माताएँ पुनः वीणापाणि सरस्वती के रूप में अवतीर्ण हो मनोरंजन करती हुई अपनी संतान को सुशिक्षित करने में सफल हो सकतीं। मेरी समझ में बालकों में सजीवता लाने के लिये संगीत-शास्त्र बड़ा ही उपयुक्त साधन है। अतएव प्रत्येक माता-पिता को चाहिए कि और-और शिक्षाओं के साथ थोड़ा-बहुत गाना भी अवश्य सिखलावें।

गाना और हँसना भी एक प्रकार के व्यायाम हैं जिनका प्रभाव मन पर पड़ता है। गाने और हँसने से मन प्रफुल्लित रहता है। पर अशिक्षित माता-पिता बालकों को अच्छी तरह हँसने भी नहीं देते। ज्यों ही वे ज़रा भी हँसने की चेष्टा करते हैं, त्यों ही टोक दिए जाते हैं। यह बहुत ही अनुचित है। इससे बालकों की स्वतंत्रता में बाधा पड़ती है, और उनकी मानसिक वृत्तियों में हानि ही नहीं होती; किंतु उनके विकास में भी बाधा पहुँचती है। वे हँसने तो पाते नहीं। फलतः उनका उदास रहना स्वाभाविक है। इससे उनका चेहरा सुस्त और मुरझाया हुआ-सा जान पड़ता है। सोचिए तो, यह कितना भयंकर पाप है। हमें छोटे-से बालक को हँसने से रोकने का क्या अधिकार है? हँसना कोई असभ्यता नहीं है। बालक जितना हँसते रहें, उतना अच्छा। क्या ही अच्छा हो, यदि उनको प्रसन्न करने के लिये कभी-कभी हँसी के चुटकुले कहे जायँ! किंतु ध्यान रहे कि इन चुटकुलों में गंदे समाज का अश्लील पुट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भद्दा मज़ाक़ न रहने पावे। प्रायः हँसोड़ मनुष्य स्वस्थ ही देखे जाते हैं। हँसता हुआ चेहरा स्वस्थता का सच्चा प्रमाण है। कारण, रोगी व्यक्ति के मुख पर सच्ची प्रसन्नता आ ही नहीं सकती। अतएव हँसना स्वास्थ्य के लिये परम लाभकारी सिद्ध होता है। हँसमुख व्यक्ति जहाँ कहीं जाते हैं, सर्वत्र उनका स्वागत होता है। वे स्वयं तो अपने दुःख-सुख की चिंता ही नहीं करते, साथ ही अपनी अपूर्व प्रतिभा द्वारा दूसरों के दुःख को भी हँसी में भुला देते हैं। हँसना हानिकर नहीं, न बालकों का हँसना अशिष्टता की सीमा के ही अंदर आ सकता है। अतएव यथासंभव बालकों में रोने के बदले हँसने की बान डाली जाय, तो उत्तम हो।

बहुत-से माता-पिता अपने मित्रों के साथ ग़प हाँकने की ओर जितना ध्यान देते हैं, उतना अपने बालकों के साथ विनोद करने में नहीं। यही नहीं, किंतु वे अपने बालकों के साथ हँसी-विनोद करना अपनी मर्यादा के प्रतिकूल एवं अशिष्टता-सूचक समझते हैं। यह उनकी सरासर भूल है। अपनी संतान के साथ या अपने छोटे भाई-बहनों के साथ बातचीत करते हुए जी बहलाना जितना महत्त्व रखता है, और जितना उपयोगी है, उतना अपने यार-दोस्तों में गप्पाष्टक लड़ाना, ताश, पिङ्पौङ्, बिलियर्ड आदि खेलना नहीं। संतान विरले ही सौभाग्यवानों को मिलती है, अतएव माता-पिता के लिये संतान से बढ़कर विनोद का कोई साधन ही नहीं। दिन-भर व्यावसायिक कार्यों से परिश्रांत होने पर अपने बालकों के पास जाइए। उनके प्रसन्न मुख-कमल को देखते ही आपकी सारी थकन पल-भर में काफ़ूर हो जायगी, साथ ही आपका अमूल्य समय भी नष्ट होने से बच जायगा। 'एक पंथ दो काज' इसी को कहते हैं। आपका भी मनोरंजन और बालकों का भी मनोरंजन। साथ में बालकों को जो ज्ञान मिलता है, वह नफ़े का समझिए। अपनी संतान या अपने से छोटों के साथ मनोरंजन करने से किसी की मर्यादा नहीं घटती। अतः अपना समय इधर-उधर व्यर्थ गँवाने की अपेक्षा यही अच्छा है कि अपनी संतान के साथ, अपने छोटे-छोटे भाई-बहनों के साथ, अथवा पास-पड़ोस के छोटे-छोटे लड़कों के साथ उपदेशप्रद मनोरंजन करते हुए समय व्यतीत किया जाय, और स्वार्थ एवं परमार्थ, दोनो सिद्ध किए जायँ। मा-बाप को अपनी संतान के साथ, अथवा बड़े भाई को अपने भाई-बहनों के साथ खेल-कूद या हँसी-विनोद करने में किसी प्रकार की लज्जा या संकोच का अनुभव न करना चाहिए। इसमें लज्जा की बात ही क्या? ऐसा सौभाग्य सब किसी को नहीं मिलता।

बालकों का मन एकांत में नहीं लगता, अतः उनके समवयस्क दो-चार बालक और भी उनके सहपाठी हों, तो अत्युत्तम हो। इससे उनमें प्रतिस्पर्द्धा का भाव जाग्रत् होता है, और वे एक-दूसरे की होड़ करने की चेष्टा करते हैं। ज्योंही वे अपने किसी भी साथी को किसी बात में अपने से बढ़कर पाते हैं, तो वे उससे अधिक उत्कर्ष प्राप्त करने में भरपूर प्रयत्न करते हैं। इसके फल-स्वरूप जिस ज्ञान को वे तीन महीने में पा सकते, उसे एक ही महीने में पा जाते हैं। बालकों को उत्साहित करने के लिये सबसे उत्तम और सबसे पहले काम करनेवाले को पारितोषिक देते रहने का नियम भी बहुत ही अच्छा है। इससे वे दूनी उमंग से कार्य करने लगते हैं। पारितोषिक गुणों के अनुकूल थोड़ा-बहुत सभी को मिलना चाहिए। अन्यथा जिसको कुछ भी पारितोषिक नहीं मिलता, वे उत्साहहीन एवं निराश हो जाते हैं। उनकी गति मंद पड़ जाती है, और वे अपने को बिल्कुल अयोग्य समझकर उद्योग करना छोड़ देते हैं। सबको पारितोषिक देते रहने से यह लाभ होता है कि वे सर्वप्रथम होने की चेष्टा भले ही न करें, किंतु अपने से उत्तर (बढ़े हुए) बालक की प्रतियोगिता अवश्य करेंगे। केवल सर्वप्रथम को ही पारितोषिक देने से वे अपने को उसकी प्रतियोगिता करने में सर्वथा असमर्थ समझकर हताश हो जाते हैं; किंतु थोड़ा-बहुत पारितोषिक प्रत्येक को देने से उनमें प्रतियोगिता का भाव बना रहता है, और वे अपने प्रतियोगी से बढ़कर निकलने में अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं।

सबसे प्रधान विषय तो बालकों को स्वस्थ रखना है। बालक स्वभावतः खिलाड़ी होते हैं। उनको खेलने-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कूदने से कभी न रोकना चाहिए, थक जाने पर वे स्वयं खेलना-कूदना बंद कर देते हैं। खेल-कूद से बढ़कर उनके लिये कोई उपयुक्त व्यायाम नहीं हो सकता। अतः जब तक वे स्वयं थककर खेल-कूद न छोड़ें, तब तक उन्हें इस काम से बरजकर पढ़ने के लिये बाध्य करना बड़ी भारी भूल है। आज्ञा या दबाव में पड़कर बालक कोई भी काम स्वेच्छा से नहीं करते। खेल-कूद से थक जाने पर प्रेम-पूर्वक पूर्वोक्त रीतियों में से किसी एक ढंग से कहानी, चित्र आदि द्वारा उनका मनोरंजन करते हुए उनको पढ़ाइए। तब वे अवश्य आपका पाठ सुनेंगे। अच्छा तो यह हो कि उनको प्रातः-सायं खुली हवा में नदी के तट पर, पहाड़ों अथवा उपवनों में भ्रमण कराया जाय। इससे उनका स्वास्थ्य तो सुधरेगा ही, साथ ही अभिभावकों को उन्हें शिक्षा देने का सुयोग भी प्राप्त होगा। प्रकृति-पर्यवेक्षण से अलौकिक आनंद के साथ-साथ शारीरिक शक्ति एवं मानसिक वृत्तियों का भी विकास होता है। यह बात सर्वमान्य है कि बिना प्रकृति-निरीक्षण किए काव्य-कला तथा चित्रकला की प्रतिभा उद्भावित एवं विकसित हो नहीं सकती। प्रकृति के प्रत्येक दृश्य से बालकों का मन हरा-भरा हो जाता है। खिले हुए फूलों को देखकर बालकों का भी जी खिल उठता है। रमणीय स्थलों—वन-उपवन, नदी-तालाबों—की मंद-सुगंध-शीतल समीर बालकों के मस्तिष्क में नवीन स्फूर्ति पैदा कर देती है। उनके मन में प्राकृतिक दृश्यों के संबंध में कुछ जानने की इच्छा प्रबल हो उठती है। ऐसे समय में आप जो चाहें, उनको सिखा सकते हैं। वे तुरंत सीख लेंगे। यदि उनको प्रत्येक वनस्पति का थोड़ा-बहुत भी परिचय दिया जाय, तो कुछ ही काल के अनंतर उनको वनस्पति-शास्त्र का भी कुछ ज्ञान हो जायगा। यहाँ पर प्रकृति के अध्ययन करने से क्या लाभ होते हैं, उनका वर्णन करना हमें अभिप्रेत नहीं। कहना केवल यही है कि मनोरंजन शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लिये यह सर्वोत्तम साधन है।

इस शैली का अनुसरण करने से शिशु-शिक्षण जैसे एक दुष्कर कर्तव्य-सा पालन करना न समझा जायगा, प्रत्युत सच्चे आनंद का साधन प्रतीत होगा; क्योंकि इस ढंग से माता-पिता संतान के सुख-दुःख के सहभागी होकर उनके श्रद्धा और विश्वास के पात्र होंगे। साथ ही उनकी संतान उनका पूर्ण सम्मान करेगी। इस प्रकार बालकों को सदा अपने संनिकट रखने से वे कुसंगति से दूर रहेंगे, और उनके चरित्र की रक्षा होगी। आधुनिक शिक्षा-पद्धति के अनुसार तो ऐसा सुंदर अवसर आना सर्वथा असंभव है। परंतु इस शैली के अनुसार काम तो तभी हो सकता है, जब माता-पिता दोनो सुशिक्षित हों।

वह कैसे आनंद और गौरव का समय होगा, जब हमारा देश ऐसे बालकों से भरा-पुरा होगा, जिनके कर्तव्य ही उनकी सुशिक्षा एवं सुशीलता के परिचायक होंगे, जब उनमें सभ्यता का पूर्ण विकास होगा, जब उनका बाल्य-जीवन उत्साह-पूर्ण, आनंदमय एवं सुखद होगा, और जब उनके चेहरे विकसित कुसुम की तरह प्रफुल्लित होकर देश की शोभा बढ़ावेंगे।

सुख तथा सफलता

(द्वितीयावृत्ति)

"Foundation Stones to Happiness and Success" का हिंदी-अनुवाद। मूल-लेखक, जेम्स ऐलेन। इनकी पुस्तकों के बारे में लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। अँगरेज़ी में इनकी पुस्तकों के २० और २५ संस्करण तक निकल चुके हैं। फिर भी उनका प्रचार नित्य बढ़ता ही जाता है। पुस्तक का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। सत् सिद्धांत, अच्छे नियम, सत्य कर्म, सत्य भाषण, समचित्तत्व और शुभ फल पर अच्छा विवेचन है। यू० पी० और सी० पी० के शिक्षा-विभाग से लाइब्रेरी और इनाम के लिये स्वीकृत। पृष्ठ-संख्या ४०; मूल्य ।)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लाटूशरोड, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह

[साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रउ]

(२)

सं० १७३८ की चैत्र सुदी ११ (ई० सन् १६८१ की २० मार्च) को इनायतख़ाँ अजमेर का फ़ौजदार बनाया गया, और उसे भी राठौरों को दबाने की आज्ञा ❀ मिली । जब इससे भी राठौर-सरदारों का उपद्रव शांत न हुआ, तब उसने स्वर्गवासी महाराज के बनावटी पुत्र मुहम्मदी-राज को देहली (शाहजहानाबाद) से अपने पास बुलवाया । † परंतु उपद्रव की भयंकरता के कारण वह उसे जोधपुर की गद्दी पर न बिठा सका ।

पहले लिखे-अनुसार राठौरों की सेना भी अकबर को लिए हुए जालोर जा पहुँची । परंतु शाहआलम की सेना ने इसका पीछा न छोड़ा । अतः जैसे ही उक्त सेना जालोर पहुँची, वैसे ही राठौर-वाहिनी ने अचानक उस पर धावा कर दिया, और जो कुछ सामान हाथ लगा, उसे लेकर वह साँचोर चली गई । ❀ जब वहाँ पर भी शाही सेना ने उसका पीछा किया, तो फिर इसने उसका सामना किया, और मार-काट मचाकर (सिवाने होती हुई) सिरोही की तरफ़ चली गई । †

इसके बाद सोनग और दुर्गादास आदि मुख्य-मुख्य सरदारों ने अकबर को अपने साथ-साथ लिए फिरना उचित न समझा । अतः मारवाड़ का भार तो चाँपावत वीर सोनग को सौंपा गया, और दुर्गादास अकबर को लेकर ५०० सैनिकों के साथ राजपीपला के मार्ग से दक्षिण की तरफ़ रवाना हो गया । ‡ यद्यपि बादशाह की आज्ञा से शाही

❀ मआसिरे-आलमगीरी पृ० २०६ । वि० सं० १७४० के पौष (ई० सन् १६८३ के दिसंबर) में इसे जोधपुर के शासन के साथ ही अजमेर की सूबेदारी भी दे दी गई थी । (हिस्ट्री ऑफ़ औरंगज़ेब खं० ५, पृ० २७३ फ़ुटनोट) ।

† मआसिरे-आलमगीरी में इसका वि० सं० १७३८ की वैशाख सुदी १ (ई० सन् १६८१ की ६ एप्रिल) को अजमेर पहुँचना लिखा है । (देखो पृ० २०७)

❀ मआसिरे-आलमगीरी पृ० २०४ ।

† अजितोदय सर्ग ११, श्लो० १६-१८ । उक्त इतिहास में बहादुरख़ाँ द्वारा राठौरों का पीछा किया जाना लिखा है । राजरूपक में लिखा है कि बादशाह की आज्ञा से शाहआलम ने ८ हज़ार सुवर्ण मुद्राएँ भेजकर दुर्गादास को अपनी तरफ़ मिलाना चाहा था । परंतु वीर दुर्गादास ने वे मुहरें लेकर अकबर को ख़र्च के लिये दे दीं, और शरणागत के साथ विश्वासघात करने से साफ़ इनकार कर दिया ।

अजितोदय में शाह आलम द्वारा चार हज़ार मुहरों का भेजा जाना लिखा है । (देखो सर्ग ११, श्लो० २०)

‡ अजितोदय में लिखा है कि राठौर-सैनिक सिरोही से आबू की तरफ़ गए, और अकबर को वहाँ रखकर मारवाड़ की ओर चले आए । इसकी सूचना पाते ही इंद्रसिंह भी जोधपुर आ पहुँचा । परंतु शीघ्र ही बादशाह उससे नाराज़ हो गया, और उसने उसे अपने पास बुलवाकर जोधपुर का प्रबंध इनायतख़ाँ को सौंप दिया । इस पर उस (इनायतख़ाँ) ने भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सेना ने इनका बहुत कुछ पीछा किया, तथापि उसे सफलता नहीं हुई, और ये लोग जेठ सुदी ८ (१५ मई) को बुरहानपुर होकर वि० सं० १७३८ को आषाढ़ बदी १० (ई० सन् १६८१ की १ जून) को शंभाजी के राज्य (पाली) में जा पहुँचे। ❀ इन्हें आया देख यद्यपि शंभाजी पहले तो विचार में पड़ गए, तथापि अंत में कवि कलश के समझाने से उन्होंने इनको बड़े आदर-सत्कार के साथ अपने यहाँ रख लिया। ❀

इसकी सूचना पाने पर बादशाह को भय हुआ कि कहीं शाहज़ादा अकबर उधर भी इधर-जैसा ही उपद्रव न खड़ा कर दे। अतः उसने स्वयं दक्षिण की ओर जाने का इरादा किया। परंतु इधर मारवाड़ में राठौर † और मेवाड़ में सीसोदिए उसको हैरान कर रहे थे। इसलिये अंत में उसने महाराना से संधि कर लेना ही उचित समझा। इसी के अनुसार बादशाह ने मोहम्मद आज़म के द्वारा महाराना को संधि कर लेने को प्रस्तुत किया, और बातचीत तय हो जाने पर जज़िया लेना बंद करके मेवाड़ का इलाक़ा रानाजी को सौंप

अपनी ओर से क़ासिमख़ाँ को वहाँ की देख-भाल सौंप दो।

इसी समय अकबर आबू से लौटकर सिरोही होता हुआ पालनपुर पहुँचा। वहीं पर पहुँचकर राठौर भी उसके शरीक हो गए, और फिर बड़गाँव होते हुए थिराद की तरफ़ चले गए। इसके बाद ये फिर सिवाने होते हुए सिरोही पहुँचे। यहीं पर दुर्गादास ने मारवाड़ का भार तो सोनग को सौंप दिया और स्वयं अकबर के साथ मेवाड़ की तरफ़ चला गया। इसके बाद वहाँ पर रानाजी से द्रव्य की सहायता लेकर (क्योंकि उस समय महाराना जयसिंहजी अकबर को शरण देने में असमर्थ थे) अकबर के साथ वह नर्मदा को पारकर शंभाजी के पास जा पहुँचा। (देखो सर्ग ११, श्लो० २१-२६)

'हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब' में लिखा है कि अकबर साँचोर से चलकर मेवाड़ पहुँचा। यद्यपि महाराना जयसिंह ने उसका अच्छा आदर-सत्कार किया, तथापि वहाँ पर भी शाही सेना के आक्रमण का भय देख दुर्गादास उसे दक्षिण की ओर ले जाने का प्रबंध करने लगा। (देखो भा० ३, पृ० ४१७-४१८)

राजपूताने के इतिहास में लिखा है कि महाराना ने दुर्गादास को पत्र लिखकर अकबर को मेवाड़ में आने से मना कर दिया था। (देखो भा० ३, पृ० ८६७)

कहीं-कहीं इनका मल्लानी के रेतीले भाग की ओर भी जाना लिखा है। वास्तव में दुर्गादास का अकबर को दक्षिण की ओर ले जाने से यही तात्पर्य था कि इससे बादशाह का ध्यान उधर बट जायगा, और मारवाड़ का आक्रमण शिथिल हो जायगा।

❀ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ४, पृ० २४६।

उस इतिहास में यह भी लिखा है कि यद्यपि बादशाह ने सब मार्गों और घाटों का प्रबंध कर रक्खा था, तथापि दुर्गादास बड़ी चालाकी से अपना पीछा करनेवालों को धोके में डालता हुआ, डूँगरपुर से अहमदनगर की तरफ़ चला। परंतु जब उसे इस मार्ग से जाने में सफलता न हुई, तब वह अग्निकोण की ओर लौटकर बाँसवाड़े और दक्षिणी मालवे से होता हुआ ज्येष्ठ बदी ८ (१ मई) के निकट अकबरपुर के पास से नर्मदा के उस पार हो गया, और इसी के १५वें रोज़ बुरहानपुर से कुछ फ़ासले पर तापती के किनारे जा पहुँचा। परंतु यहाँ पर भी शाही अवरोध के मिलने से उसे पश्चिम की ओर मुड़कर ख़ानदेश और बगलाने होते हुए चलना पड़ा। अंत में वह रायगढ़ से शंभाजी के पास पहुँच गया। (देखो भा० ३, पृ० ४१८)

❀ अजितोदय सर्ग ११, श्लोक २७-२६।

† अजित-ग्रंथ में लिखा है कि भाटी वीरों को साथ लेकर आषाढ़ सुदी ६ (१४ जून) को सोनग ने जोधपुर के निकट इनायतख़ाँ से भीषण संग्राम किया। इसके बाद इसने फलोदी पहुँच उसे भी लूटा। (देखो छंद ६४४-६५४)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिया। ❀ परंतु उसके पुर, मांडल और बदनोर के परगने अपने ही अधिकार में रक्खे। इस संधि में एक शर्त यह भी थी कि जिस समय महाराज अजितसिंहजी युवा हो जायँ, उस समय बादशाह की तरफ़ से मारवाड़ का राज्य उनको सौंप दिया जाय। †

इसके बाद सावन सुदी १ (६ जुलाई) को शाहआलम बहादुर (मुहम्मद मुअज़्ज़म) भी, जो राठौरों को दबाने के लिये भेजा गया था, ‡ सोजत और जैतारण की ओर से लौटकर अजमेर आ पहुँचा। §

भादों सुदी ३ (६ अगस्त) को बादशाह को खाँजहाँ बहादुर की अर्ज़ी से सूचना मिली कि शाहज़ादा अकबर इस समय दक्षिण में पाली के क़िले ❀ में ठहरा हुआ है। उसके पास २०० सवार और ८०० पैदल हैं। इन सबके ख़र्च का प्रबंध शंभाजी की ही तरफ़ से होता है। यह हाल जानकर बादशाह ने मुहम्मद आज़म को शाह का ख़िताब देकर दक्षिण की ओर भेजा, † और प्रथम आश्विन सुदी ६ (८ सितंबर) को स्वयं भी उधर कूच किया। ‡ साथ ही अजमेर का प्रबंध शाहज़ादे मुहम्मद अज़ीम के अधिकार में सौंपा गया। § बादशाह के दक्षिण की ओर जाते ही सोनग आदि राठौर-सरदारों ने और भी ज़ोर-शोर से उपद्रव का झंडा खड़ा किया, और लगभग तीन हज़ार सवार एकत्रित कर मेड़ता-प्रांत को विध्वस्त करना प्रारंभ किया। $ इस पर कार्त्तिक सुदी

❀ मआसिरे-आलमगीरी में रानाजी की तरफ़ से संधि का प्रस्ताव होना लिखा है। यह संधि वि० सं० १७३८ की आषाढ़ सुदी ३ (ई० सन् १६८१ की १४ जून) को राजसमंद तालाब पर शाहज़ादे आज़म और राना जयसिंहजी के बीच हुई थी। (देखो पृ० २०८-२०९)

कहीं-कहीं ७ के बदले १७ जमादिउस्सानी मानकर श्रावण बदी ३ (२४ जून) को इस घटना का होना लिखा है।

† ऐलफ़िन्स्टन्स हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया, पृ० ६२७।

‡ राजरूपक में इसी वर्ष की आषाढ़ सुदी ९ को भी महाराज के सरदारों का जोधपुर पर चढ़ाई कर जुद करना लिखा है। (देखो पृ० ७९)

§ मआसिरे-आलमगीरी पृ० २०९। अजित-ग्रंथ में लिखा है कि उसी समय बादशाह ने इंद्रसिंह से नाराज़ होकर जोधपुर ज़ब्त कर लिया। परंतु शाहआलम के कहने से नागौर उसी के पास रहने दिया (देखो छंद ६३१-६३३)। उसी में आगे लिखा है कि बादशाह ने इनायतख़ाँ को जोधपुर का प्रबंध सौंपा। अतः शहामतख़ाँ, जो हाल ही में वहाँ गया था, बिलाड़े चला गया। (देखो छंद ६४०-६४३)

❀ यह क़िला रायगढ़ से २५ मील पर था। कहीं-कहीं अकबर का पादशाहपुर में ठहरना भी लिखा मिलता है। यह पाली के क़िले से ६ मील पूर्व में था।

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० २११।

‡ उस समय मारवाड़ के उत्तर में साँभर और डीडवाने में, ईशानकोण में मेवते में, पूर्व में जैतारण, सोजत, पाली और गाडवाड़ में, पश्चिम में बालोतरा, पचपदरा और सिवाने में तथा दक्षिण में जालोर में बड़े-बड़े शाही थाने मुक़र्रर किए गए थे। (हिस्ट्री ऑफ़ औरंगज़ेब भा० ५, पृ० २७५-२७६)

§ मआसिरे-आलमगीरी पृ० २१२। अजित-ग्रंथ में लिखा है कि बादशाह ने इनायतख़ाँ के बदले क़ासिमख़ाँ को तो जोधपुर भेजा, और असदख़ाँ को शाहआलम के पुत्र अज़ीम के पास अजमेर में रक्खा। (देखो छंद ६८४-६८६)

$ राजरूपक में इनका जोधपुर को घेरना, और बादशाह का घबराकर इनसे संधि करना लिखा है। उक्त इतिहास में यह भी लिखा है कि इस अवसर पर अजितसिंहजी को सात हज़ारी मनसब के साथ ही जोधपुर लौटा देना भी तय हुआ था। परंतु इस घटना के २-१ दिन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१४ (१४ नवंबर) को शाही सेनापति एतक़ादख़ाँ ने इन पर चढ़ाई की। पूँदलोना के पास युद्ध होने पर दोनो तरफ़ के बहुत से वीर मारे गए। इन्हीं में एक प्रसिद्ध वीर सोनग * भी था। अतः उसकी मृत्यु के उपरांत उसका बड़ा भाई चाँपावत अजबसिंह † सेनापति नियत हुआ, और उसने इधर-उधर के गाँवों को लूट डीडवाने पर चढ़ाई की ‡। यह देख वहाँ का शाही हाकिम घबरा गया। परंतु इसी अवसर पर एक शाही सेना उधर आ पहुँची। अतः ये लोग वहाँ से कसूँबी को चले गए, और कुछ वीरों ने जाकर मेड़ते को लूट लिया। शाही सेना भी इनके पीछे लगी चली आती थी। अतः डीगराने में पहुँचते-पहुँचते उसने राठोरों की सेना को पकड़ लिया। मारवाड़ के वीर भी शत्रु का आया देख मुड़कर उस पर टूट पड़े। घोर युद्ध के बाद घोड़े का पैर टूट जाने के कारण वीर अजबसिंह युद्ध-स्थल में मारा गया। †

इसके बाद सरदारों ने चाँपावत धीरसिंह के पुत्र उदयसिंह को अपना सेनापति बनाया। इस पर वह भी सेना को सजाकर जालोर पहुँचा, और उक्त नगर को लूटकर माँडल ‡, सरवाड़पुर और

बाद ही सोनग के मर जाने से यवनों ने यह संधि भंग कर दी।

अजितोदय में अस्तोख़ाँ द्वारा संधि का प्रस्ताव किया जाना लिखा है। (देखो सर्ग ११, श्लो० ३२-३३)

* मआसिरे-आलमगीरी पृ० २१४-२१५।

राजरूपक में १७३८ की आसोज सुदी ७ शनिवार को सोनग का एकाएक मर जाना लिखा है। यथा—

अठत्रीसै आसोज में सित सातम सनबार ;
गौ सोनागिर धाम हरि नाम करे संसार।

द्वितीय आश्विन सुदी ७ को शनिवार था। अतः उस दिन ई० सन् १६८१ की ८ ऑक्टोबर आती है। अजित-ग्रंथ में भी यही तिथि लिखी है। यथा—

सुदि दूजो आसोज वले सातम सनिबारे ;
सुत बीठलगो सुरग सुणे इम ह्वाको सारे। ७२३

अजितोदय में भी इसका एकाएक मरना ही लिखा है। उपर्युक्त ग्रंथों से यह भी पता चलता है कि शाही सेनापतियों ने सोनग की मार से तंग आकर ही संधि करने का निश्चय किया था। परंतु उसके मरते ही अपना वचन भंग कर दिया। (देखो राजरूपक पृ० ८२ और अजितोदय सर्ग ११, श्लो० ३२-३५)

† मआसिरे-आलमगीरी में सोनग के साथ ही अजबसिंह का मरना भी लिखा है। अजित-ग्रंथ से भी इस बात की पुष्टि होती है। (देखो छंद ६६४-७२६)

परंतु अजितोदय में सोनग के बाद अजबसिंह का सेनापति होना लिखा है। (देखो सर्ग ११, श्लो० ३३)

यही बात राजरूपक से भी प्रकट होती है। (देखो पृ० ८३)

---

* अजित-ग्रंथ में मकराने के लूटने का उल्लेख है। (देखो छंद ७४५)

† अजितोदय सर्ग ११, श्लो० ३४-४०। उक्त काव्य में मेड़ते को लूटने की तिथि वि० सं० १७३० की कार्त्तिक बदी १४ (ई० सन् १६८० की ११ ऑक्टोबर) लिखी है। यथा—

संवच्छैलभवाब्धिवारिधिशशांकांकोन्मितेब्दे तथा-
प्यूर्जे कृष्णदले तु शम्भुदिवसे प्रातः समागम्य च।

.....परंतु इसमें एक वर्ष का अंतर प्रतीत होता है। राजरूपक में अजबसिंह का वि० सं० १७३८ की कार्त्तिक सुदी २ को युद्ध में मरना लिखा है। (देखो पृ० ८१) अजित-ग्रंथ में अजबसिंह के मरने की तिथि वि० सं० १७३८ को कार्त्तिक सुदी १ (ई० सन् १६८१ की (१ नवंबर) लिखी है। (देखो छंद ७७६-७८०)

‡ मआसिरे-आलमगीरी से ज्ञात होता है कि वि० सं० १७३८ की फागुन सुदी ११ (ई० सन् १६८२ की ८ फ़रवरी) को बादशाह को ज्ञात हुआ कि राठौर माँडलपुर पर धावा करके बहुत-सा माल-असबाब लूट ले गए हैं। (देखो पृ० २१७ मेवाड़ का यह परगना बादशाह के अधिकार में था)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

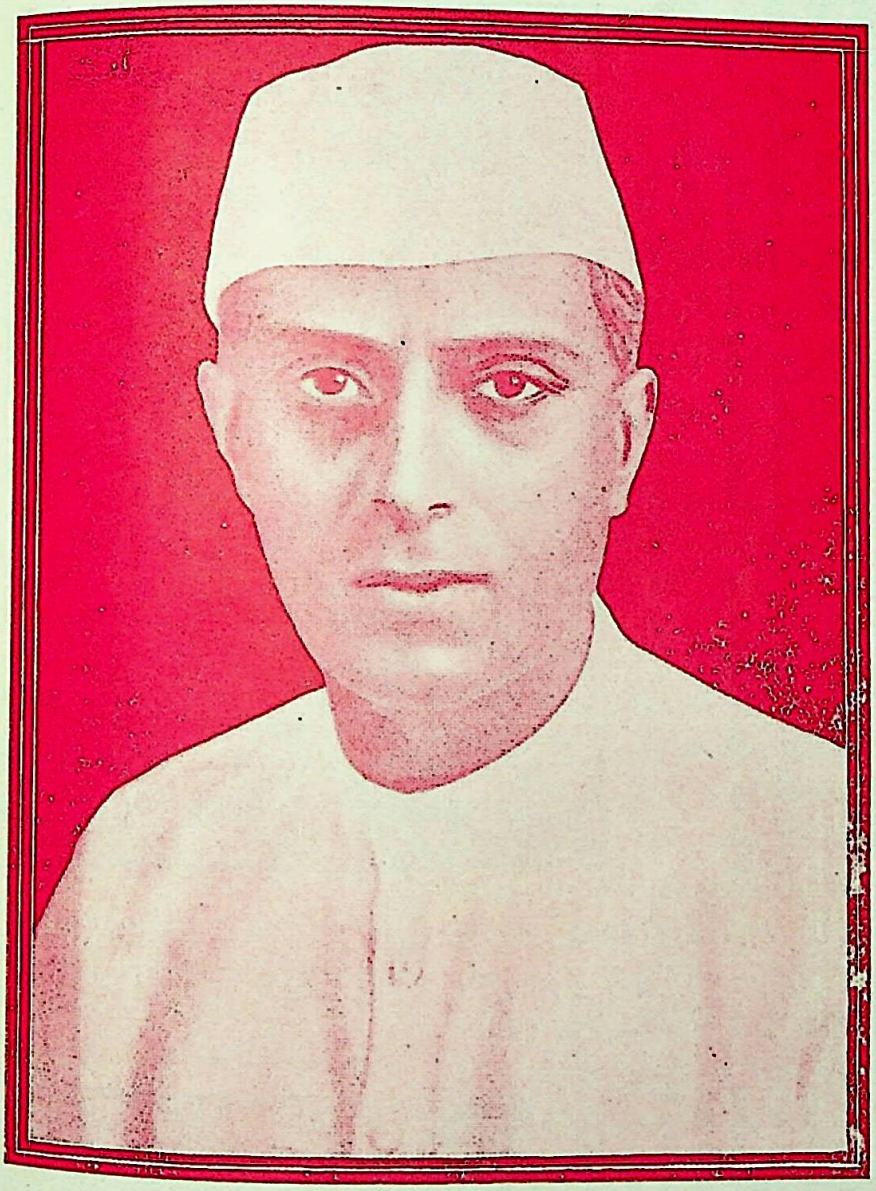

हमारे बन्दी राष्ट्रपति

सत्याग्रह-महाभारत के वीर-श्रेष्ठ अर्जुन, भारतीय युवक राष्ट्र की आत्मा, हिंदोस्तानी-प्रजातन्त्र के राष्ट्रपति, पुरुषसिंह जवाहरलाल नेहरू को नौकरशाही ने नमक-क़ानून भंग करने के अपराध में ६ मास कारावास का दंड दिया है। हेली-शाही ने हमारे राष्ट्रपति को गिरफ़्तार करके अपनी शामत को चुनौती दी है। राष्ट्र का युवक हृदय एक जवाहरलाल की स्थान पूर्ति के लिये सैकड़ों सिरों का बलिदान करने को उत्सुक हो उठा है।

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय पं० श्रीधर पाठक के जीवन का एक दृश्य

बैठे हुए बाईं ओर से—

स्व० बा० केदारनाथ, ला० गणेशप्रसाद कपूर, पं० व्रजनाथ शर्मा, स्व० पं० श्रीधर पाठक, बा० हरिकृष्ण धवन, बा० गुलाबचंद श्रीमाल, डा० पुरुषोत्तमदास कक्कड़, और पं० मनोहरलाल तिवारी।

खड़े हुए—

पं० प्यारेलाल जैतली, पं० श्रीधर पाठक के ज्येष्ठ पुत्र। बा० बद्रीनारायण मेहरोत्र, बा० विश्वनाथ वर्मा, स्व० बा० बद्रीनाथ वर्मा कपूर, पं० राधेलाल त्रिपाठी, बा० शिवनाथसिंह, बा० कालिदास कपूर, पं० महेशनाथ शर्मा, बा० नरोत्तमदास कक्कड़, पं० श्रीधर पाठक के कनिष्ठ पुत्र, पं० राजाराम नागर, बा० विष्णुनारायण, पं० योगेंद्रनाथ शर्मा, बा० नरोत्तमदास मेहरोत्र।

भारतीय नाट्याचार्य श्री उदयशंकर

[आप उदयपुर के एक प्रसिद्ध घराने के रत्न तथा झालावाड़-नरेश के वैदेशिक-मंत्री श्री पं० रामशंकरजी के सुपुत्र हैं। विलायत की यूनिवर्सिटियों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर, आपने भारतीय नृत्य तथा नाट्यकला के उद्धार का बीड़ा उठाया है। आज योरप की समस्त नाट्यशालाएँ आपके कृष्णाभिनय, रास, ताण्डव तथा विव्वोकलास्य से आगुंजित हो उठी हैं। आपकी यशोगाथा योरप के समाचार-पत्रों में प्रतिदिन प्रकाशित होती है। गतमास आपका एक विस्तृत चरित्र 'सुधा' के संपादकीय स्तम्भ में प्रकाशित हो चुका है।]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तोड़ को लूटता हुआ मारवाड़ में लौट आया। इसके बाद इसने जाकर नगर को लूट लिया। ❀ वि० सं० १७३६ (ई० सन् १६८२) में इधर तो ऊदावत जगरामसिंह ने जैतारण में जाकर मार-काट मचाई, † और उधर भाद्राजन पर हमला करने-वाली यवन-वाहिनी को जोधा उदयभान ‡ ने और बालोतरे की तरफ़ आई हुई शाही सेना को बाला अखैराज आदि ने मार भगाया ¶। इस प्रकार ऊदावत, कूँपावत, मेड़तिया आदि राठौरों ने और भाटी, चौहान, सीसोदिया आदि उनके संबंधियों ने मारवाड़ को उजाड़कर देश-भर में गमनागमन के मार्ग ही रोक दिए।

इसी प्रकार चाँपावत उदयसिंह ने सोजत की यवन-वाहिनी को परास्त किया। जोधावतों के एक दल ने मारवाड़ के उत्तरी भाग के मुसलमानों का मार्ग रोका, और दूसरे ने शाही सेना-नायक नूरअली को मार भगाया।

इसके बाद चाँपावत उदयसिंह और मेड़तिये मोहकमसिंह § ने गुजरात की ओर जाकर उपद्रव आरंभ किया। इसकी सूचना पाते ही सैयद मोहम्मद की सेना ने इनका पीछा किया। इस पर ये लोग भी उससे लड़ते-भिड़ते रत्नपुर होकर पाली ❀ पर टूट पड़े। यहाँ के युद्ध में बाला-राठौरों ने अच्छी वीरता दिखाई। इसके बाद मेड़तिये मोहकमसिंह ने सोजत और जैतारण लूट मेड़ते पर अधिकार कर लिया। †

वि० सं० १७४१ (ई० सन् १६८४) में अजमेर के शाही सेना-नायक ने राठौरों पर चढ़ाई की। इसी बीच मौक़ा पाकर भाटियों ने मंडोर पर अधिकार कर लिया; ‡ परंतु कुछ ही दिन बाद

राजरूपक में फागुन सुदी ३ को माँडल का लूटना और चैत्र बदी ८ को सोजत का घेरना लिखा है। (देखो पृ० ८८)

❀ अजितोदय सर्ग ११, श्लो० ४७-४८।

† अजितोदय सर्ग ११, श्लो० ४९-५२। राजरूपक में इस घटना का कार्तिक बदी 12 को होना लिखा है। यह युद्ध एक मास तक चलता रहा था।

‡ अजितोदय सर्ग १२, श्लो० २-७।

¶ अजितोदय सर्ग १२, श्लो० २६-३९। राजरूपक में इस घटना का समय भादों सुदी १३ लिखा है।

§ राजरूपक के अनुसार इसने शाही मनसब छोड़-कर बालक महाराज का पक्ष ग्रहण किया था—

मोहकमसिंह कित्याण तण मेड़तियौ पणबंध;
तज मनसफ सुरतांणरौ भिळियौ फौज कमंध।
(देखो पृ० ८१)

अजित-ग्रंथ से इस घटना का क़रीब एक वर्ष पूर्व सोनग के समय ही होना प्रकट होता है। उसमें यह भी लिखा है कि यह मोहकमसिंह अकबर की बग़ावत के समय तहव्वरख़ाँ के शरीक था। अतः उसके मारे जाते ही अपनी जागीर तोसीणे में चला गया था। जब बादशाह ने इसको मरवाने का विचार किया, तब यह आकर सोनग के साथ हो गया। (देखो छंद ६५४, ६६०, ६७४)

हिस्ट्री ऑफ़ औरंगज़ेब में भी मोहकमसिंह का ई० सन् १६८१ में राठौरों के साथ होना लिखा है। (देखो भा० ५, पृ० २७६)

❀ राजरूपक में पाली के युद्ध का वि० सं० १७४० की पौष सुदी ६ को होना लिखा है। (देखो पृ० ६७)

† अजित-ग्रंथ में लिखा है कि वि० सं० १७४० की सावन बदी १४ (ई० सन् १६८३ की ६ जुलाई) को असदख़ाँ और शाहज़ादा अजमेर से दकन को चले और इनायतख़ाँ को मारवाड़ का भार सौंपा गया। सरदार लोग बराबर उपद्रव करते रहे। (देखो छंद ६१८-१०२२)

‡ राजरूपक में भी इस घटना का वि० सं० १७४१ के प्रारंभ में होना लिखा है। (देखो पृ० १००)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उक्त नगर फिर मुसलमानों के अधिकार में चला गया।

इधर अनूपसिंह ने करभसोतों और कूँपावतों को लेकर लूनी के आस-पास मार-काट मचाई, ❀ और उधर मोहम्मदअली ने मौक़ा पाकर मेड़ता छीन लेने के लिये चढ़ाई की। परंतु जब यवन-सेनापति को सम्मुख युद्ध में विजय की आशा न दिखाई दी, तब उसने मेड़तिया मोहकमसिंह को संधि के बहाने अपने पास बुलवा कर मार डाला। †

इसके बाद कूँपावत, भाटी और चौहान-वीरों ने जोधपुर पर चढाई की। यह देख मुग़ल-सैनिक भी मुक़ाबले में आ डटे। युद्ध होने पर महाराज की तरफ़ के अनेक वीर मारे गए। इस पर संग्रामसिंह ने शाही मनसब की आशा छोड़ अपने वंश-वालों का साथ दिया, और सुरजाँ में मार-काटकर बालोतरे और पचपदरे को लूट लिया। ‡

जोधा उदयभान के उपद्रव से तंग आकर शाही फ़ौज ने भादराजन पर चढ़ाई की। परंतु युद्ध में उदयभान के आगे वह सफल-मनोरथ न हो सकी। ¶

वि० सं० १७४२ (ई० सन् १६८५) के लगते ही कूँपावत-वीरों ने काणाणे में पुरदिलख़ाँ पर हमला कर उसे मार डाला, और चैत्र सुदी ८ (ई० सन् १६८५ की २ एप्रिल) को सिवाने का क़िला भी छीन लिया। ❀

इसी प्रकार अन्य राजपूत-वीर भी अपने बालक महाराज की अनुपस्थिति में अपने-अपने दलों को साथ लेकर इधर-उधर घूमते रहते, और जब जहाँ मौक़ा पाते, तब वहीं यवनों पर आक्रमण कर उनका नाश करते थे। †

इसके बाद अगले वर्ष कुछ चाँपावत, कूँपावत और ऊदावत आदि शाखाओं के सरदारों ने महाराज को देखने और उनको प्रकट कर सरदारों के चित्त में और भी उत्साह बढ़ाने का संकल्प किया। इसी के अनुसार ये लोग खीची मुकुंददास के पास जाकर बालक महाराज के विषय में पूछ-ताछ करने लगे। इसी समय बूँदी से आकर हाडाराव दुर्जनसालजी भी इनके साथ हो गए। ‡ यद्यपि पहले तो मुकुंददास ने इस विषय में अपनी अनभिज्ञता प्रकट कर उन सबको दुर्गादास के दक्षिण से लौट आने तक संतोष रखने की सलाह दी, तथापि अंत में जब सरदारों का अत्यधिक

❀ राजरूपक में वि० सं० १७४१ के वैशाख में इस युद्ध का होना लिखा है। (देखो पृ० १०४)

† राजरूपक में इस घटना का समय १७४१ की आषाढ़ सुदी ६ लिखा है। (देखो पृ० १०५)

‡ राजरूपक पृ० १०५-११०।

¶ राजरूपक में इस युद्ध का वि० सं० १७४१ की माघ सुदी ७ को होना लिखा है। (देखो पृ० १११) अजित-ग्रंथ में भी इस घटना की यही तिथि लिखी है। (देखो छंद १११२)

❀ एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल की छपी मआसिर-आलमगीरी में इस घटना का १२ दिन बाद वैशाख बदी ६ (१४ एप्रिल) को होना लिखा है। (देखो पृ० २५६) अजित-ग्रंथ में लिखा है कि वि० सं० १७४१ के ज्येष्ठ में पुरदिल को सिवाना मिला था, और १० मास बाद फागुन में उसने उस पर अधिकार किया था। (देखो पृ० १९२ की वार्ता और छंद ११३८)

† उस समय मारवाड़ के अनेक सरदार जहाँ-तहाँ यवनों से लोहा लेने में लगे थे। अतः उन सबके लिए युद्धों का अलग-अलग वर्णन करना कठिन होने के कारण ही यहाँ पर केवल मुख्य-मुख्य लड़ाइयों का संक्षिप्त हाल दिया गया है।

‡ राजरूपक में इनका १००० सवारों के साथ आना लिखा है। (देखो पृ० १२१)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आग्रह देखा, तब लाचार हो वि० सं० १७४४ की चैत्र सुदी १५ (ई० सन् १६८७ को १८ मार्च) को बालक महाराज को लाकर सबके सामने उपस्थित कर दिया। ❀ उस समय महाराज की अवस्था लगभग ८ वर्ष की थी। फिर भी सब से पूर्व हाडा दुर्जनसालजी उनसे मिले, † और फिर क्रमशः मारवाड़ के सरदारों ने नज़र और निछावर करके महाराज का अभिनंदन किया।

इसके बाद महाराज अपने उपस्थित सरदारों के साथ आउवा, बगड़ी, रायपुर, बीलाड़ा, बलूँदा, रोयाँ, आसोप, लवेरा, खींवसर, कोलू आदि स्थानों में होते और वहाँ के सरदारों को साथ लेते हुए पोहकरन पहुँचे।

इस समय तक दुर्गादास को दक्षिण में रहते हुए बहुत समय बीत चुका था। अतः उसे भी मारवाड़ के समाचार जानने की उत्कंठा हुई। परंतु दक्षिण के मार्गों पर चारो ओर शाही सेना की चौकियाँ बैठी हुई थीं। इसलिये वह शाहज़ादे अकबर को जल-मार्ग ❀ से फ़ारस की तरफ़ रवाना कर अपने वीरों के साथ शाही सैनिकों की दृष्टि को बचाता हुआ नर्मदा के पार हो गया, और वहाँ से मालवे के प्रदेशों को लूटता हुआ वि० सं० १७४४ के भादों (ई० सन् १६८७ के अगस्त) में मारवाड़ आ पहुँचा।

ख्यातों में लिखा है कि दुर्गादास को सलाह के बिना ही सरदारों के आग्रह से महाराज प्रकट कर दिए गए थे। इसी से यहाँ पहुँचने पर उसके चित्त में कुछ उदासीनता आ गई। अतः जब वह दक्षिण से लौटकर मारवाड़ में आया, तब उसने स्वयं उपस्थित न होकर केवल पत्र द्वारा ही महाराज को

❀ राजरूपक में इस विषय में लिखा है—

बरस तयाँलै चैत सुद पूनम परम उजास।

उक्त काव्य में श्रावण से नया वर्ष माना गया है। अतः इसके अनुसार यह घटना वि० सं० १७४४ के चैत्र में ही हुई थी। (देखो पृ० १२२)

परंतु हमने जहाँ कहीं अन्यत्र राजरूपक से तिथियाँ और संवत् उद्धृत किए हैं, वे उत्तरीय भारत में प्रचलित चैत्र शुक्ल १ से प्रारंभ होनेवाले संवतों में परिवर्तन करके ही किए हैं।

अजित-ग्रंथ में चैत्र सुदी १० को इनका प्रकट होना लिखा है। (देखो छंद १४८२)

† अजित-ग्रंथ में इनका वि० सं० १७४३ में राठौरों के शरीक होना (देखो छंद १४४४) और महाराज अजित के अपने सरदारों के साथ साँडेराव में पहुँचने पर उनसे मिलना लिखा है। (देखो छंद १४६३)

❀ अजितोदय में लिखा है कि अकबर एक बार फिर दुर्गादास के साथ मारवाड़ आने को तैयार हो गया था। परंतु मार्ग में मुग़ल-सैनिकों का सामना हो जाने और युद्ध में मरहटों के पीछे हट जाने से उसने इस विचार को छोड़ दिया। इस युद्ध में दुर्गादास और उसके राजपूत-अनुयायियों ने अच्छी वीरता दिखाई थी। इसके बाद दुर्गादास के मारवाड़ की तरफ़ लौट जाने पर अकबर जल-मार्ग से हबस-देश की तरफ़ चला गया। (देखो सर्ग १३ श्लोक १०) अन्य इतिहासों से उसका ई० सन् १६८६ के ऑक्टोबर के अंत (वि० सं० १७४३ के वैशाख) में पर्शिया के मार्ग से मस्कट की तरफ़ जाना प्रकट होता है।

मआसिरे-आलमगीरी में लिखा है कि हि० सन् १०६४ की १८ सफ़र (वि० सं० १७४०) की फागुन बदी ५ ई० सन् १६८३ की ६ फ़रवरी) को ख़ाँजहाँ-बहादुर ने बादशाह को लिखा कि शाहज़ादा अकबर शंभा के राज्य से निकल जहाज़ द्वारा भाग गया है। (देखो पृ० २२४) परंतु वास्तव में उस समय कवि कलश और दुर्गादास ने उसे कह-सुनकर रोक लिया था। (देखो सरकार-रचित हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ४, पृ० २८५-२८६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपने आगमन की सूचना भेज दी । ❀ यह देख महाराज ने उसे ले आने के लिये अपना आदमी भेजा । परंतु वह कुछ दिन के बाद उपस्थित होने की प्रतिज्ञा कर बात को टाल गया। इस पर महाराज स्वयं जाकर दुर्गादास से मिले, और बाद में उसी की सलाह से गूधरोट के पर्वतों में चले गए । † इसके बाद दुर्गादास ने भी अपने वीरों को एकत्रित कर इधर-उधर के यवन-शासकों को तंग करना शुरू किया । ‡

इस प्रकार महाराज के प्रकट होने से उनके सरदारों का उत्साहित होना देख अजमेर के शाही हाकिम ने शीघ्र ही इस घटना की सूचना बादशाह के पास भेज दी। इससे उसकी चिंता और भी बढ़ गई, और उसने अजमेर के सूबेदार के नाम महाराज को पकड़ लेने की आज्ञा लिख भेजी। यह कार्य कुछ ऐसा सहज नहीं था। अतः बहुत कुछ उद्योग करने पर भी उसे सफलता नहीं मिली। यह देख एक बार फिर बादशाह ने स्वर्गवासी महाराजा जसवंतसिंहजी के बनावटी पुत्र मोहम्मदीराज को जोधपुर का राज्य सौंपने का इरादा किया। परंतु वि० सं० १७४५ (ई० सन् १६८८) में वह भी बीजापुर में प्लेग की बीमारी में मर गया । †

इसके बाद बादशाह ने गुजरात के सूबेदार कारतलबख़ाँ को मारवाड़ का प्रबंध करने के लिये

❀ उस समय महाराज का निवास सिवाने में था। (देखो अजित-ग्रंथ छंद १५०२)

† यहीं से कुछ दिन बाद यह सिवाने के क़िले में चले गए थे।

‡ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में लिखा है कि दुर्गादास और दुर्जनसाल हाडा ने मिलकर मोहन, रोहतक और रिवाड़ी को लूटा। इसमें इनको बहुत-सा माल हाथ लगा। इसका समाचार मिलने पर देहली में भी गड़बड़ मच गई। यह देख वहाँ के प्रबंधकर्त्ताओं ने ४००० सवार इनके मुक़ाबले को भेजे। जब वे सवार इनसे २० मील के फ़ासले पर पहुँच गए, तब ये दोनो सरहिंद होते हुए मारवाड़ में लौट आए । इसके बाद दुर्जनसाल ने पुर और माँडल पर हमला किया। यहाँ पर इनायतख़ाँ और दीनदारख़ाँ (माँडल के फ़ौजदार) की सेना से युद्ध होने पर दुर्जनसाल मारा गया।

परंतु कर्नल टॉड के लेखानुसार राठौरों ने मालपुरे की सेना को नष्ट कर वहाँ से दंड के रुपए वसूल किए। (देखो भा० २, पृ० २७८)

❀ अजितोदय (सर्ग १३, श्लो० २३) और राजरत्न (पृ० १२५) में इस हाकिम का नाम इनायतख़ाँ लिखा है, और उसमें यह भी लिखा है कि उस समय पीठ में फोड़ा हो जाने से वह मर गया था। अतः इस कार्य में सफल न हो सका। बाँबे-गज़ेटियर में लिखा है कि ई० सन् १६८९ में इनायतख़ाँ के मरने की सूचना पाकर कारतलबख़ाँ वहाँ के झगड़े को दबाने के लिये गुजरात से जोधपुर को रवाना हुआ। (देखो भा० १, खंड १, पृ० २८८) परंतु मआसिरे-आलमगीरी में उसके मरने की सूचना का औरंगज़ेब के पास वि० सं० १७३९ की कार्त्तिक सुदी ३ (ई० सन् १६८२ की २३ ऑक्टोबर) को पहुँचना लिखा है। (देखो पृ० २२३)

हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में लिखा है कि वि० सं० १०९९ (वि० सं० १७४४=ई० सन् १६८७) में जोधपुर का फ़ौजदार मर गया। परंतु उस समय वृद्धि से फ़ौज भेजना असंभव था। अतः वहाँ की फ़ौजदारी का भार भी गुजरात के सूबेदार को सौंप दिया गया। (देखो भा० ३, पृ० ४२३ फ़ुटनोट ❀) उसी में यह भी लिखा है कि उसने अगले ही वर्ष राठौरों से यह समझौता किया कि यदि वे व्यापारियों के गमनागमन में बाधा न डालेंगे, तो उनके माल पर के लगान का चौथाई हिस्सा उन्हें दिया जायगा। (देखो भा० ५, पृ० १०१)

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० ३१८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाने की आज्ञा भेजी। परंतु उसके गुजरात से रवाना होते ही वहाँ की सेना में बलवे की सूरत हो गई। अतः उसे मार्ग से ही वापस लौट जाना पड़ा। अंत में जब उसने वहाँ पहुँच उस झगड़े को दबा दिया, तब बादशाह ने प्रसन्न होकर उसका नाम शुजाअतखाँ रख दिया और गुजरात के साथ ही मारवाड़ का प्रबंध भी उसे सौंप दिया। इसके बाद शुजाअतखाँ गुजरात से जोधपुर पहुँचा, और उसने काज़मबेग मोहम्मद अमीन को जोधपुर में अपना प्रतिनिधि नियत किया। * मेड़ता (राव इंद्रसिंह के पुत्र) मोहकमसिंह को सौंपा गया। सोजत और जैतारण में सैयदों का अधिकार रहा। इस प्रकार मारवाड़ का प्रबंध कर वह फिर गुजरात को लौट गया। † [क्रमशः

* बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २८८।
† अजितोदय सर्ग १३, श्लो० २४-२८।

साहित्य-मणि-माला

हिंदी में अपने ढंग की सबसे सस्ती और उपयोगी पुस्तक-माला। इसमें कथा, कहानी, उपन्यास, जीवन-चरित्र, नाटक, इतिहास, साहित्य, विज्ञान, ललित कला आदि विषयों की सुंदर और सुपाठ्य पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। छपाई, सफ़ाई और सजावट सभी मनोरम हैं। ८० से २०० पृष्ठ तक की प्रत्येक सजिल्द पुस्तक का मूल्य दस आना। स्थायी ग्राहकों से पोस्टेज नहीं लिया जाता। बारह पुस्तकों के लिये ७॥) रु० पेशगी भेजकर स्थायी ग्राहक बनिए, एवं श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन में हमारा सहयोग कीजिए। प्रकाशित पुस्तकें—

१—झंकार—श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त की अपूर्व गीति-कविताओं का संग्रह।
२—अंकुर—श्रीकृष्णानंदजी गुप्त की तेरह सुंदर और सुपाठ्य कहानियों का संग्रह।
३—स्वप्नवासवदत्ता—महाकवि भास के सुप्रसिद्ध संस्कृत नाटक का हिंदी-रूपांतर। अनुवादक, श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त।
४—स्वास्थ्य-संलाप—सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई स्वास्थ्य-विज्ञान की अनुपम पुस्तक। पढ़ने में कथा-साहित्य का आनंद आता है। लेखक, श्रीकृष्णानंदजी गुप्त।
५—दूर्वा-दल—श्रीसियारामशरण गुप्त-लिखित सुप्रशंसित भाव-पूर्ण कविताओं का संग्रह।
६—शेलकश—रूस के विश्व-विख्यात उपन्यासकार गोर्की के उपन्यास का अनुवाद।
७—पुरातत्त्व-प्रसंग—लेखक, आचार्य श्रीमहावीरप्रसादजी द्विवेदी। पुरातत्त्व-विषयक निबंध-संग्रह।

और भी एक-से-एक सुंदर ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

हमारे यहाँ के अन्य ग्रंथ—मेघनाद-वध ३॥), गुरुकुल २), हिंदू १), १॥), त्रिपथगा १॥), विकट भट =), चित्रांगदा ।=), हेमलता सत्ता ।-), रेणु ॥), विषाद ।-), आर्द्रा १), शक्ति १), गीता-रहस्य २॥), वीरांगना १), भारत-भारती १), जयद्रथ-वध ।-)

पता—साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वतंत्रता का स्वागत ! ❀

[श्रीयुत हरिशंकर शर्मा]

(१)

पराधीनता-पाश काट दे,
दैन्य-दासता कर दे दूर;
निर्बलता का नाम मिटा दे,
भर दे भद्र-भाव भरपूर।
तेरे विना रहें हम कैसे ?
अब तो रहा न जाता आह !
आ जा, आ जा, स्वतंत्रते ! तू,
"ताक रहे सब तेरी राह।"

(२)

स्वाभिमान-संपन्न हृदय हों,
राष्ट्र-भाव-रंजित हो रक्त;
मातृ-भूमि के पाद-पद्म को,
चूमें चंचरीक अनुरक्त।
सुखदा सुधा-धार बहती हो,
बुझे देश का दारुण दाह;
आ जा, आ जा, स्वतंत्रते ! तू,
"ताक रहे सब तेरी राह।"

(३)

कड़क रही हो बिजली तन में,
फड़क रहे हों भ्रू-भुजदंड;
तड़क रही हो भारत-जननी,
धड़क रहे हों शत्रु प्रचंड।
उड़ें उसंगों के उर पै चढ़,
उछलें भर अपार उत्साह;
आ जा, आ जा, स्वतंत्रते ! तू,
"ताक रहे सब तेरी राह।"

(४)

बने विश्व की विमल विभूती,
भारत-भू सबकी सिरमौर;
आर्यवर्त की विजय-पताका,
फिर से फहरावे सब ठौर।
तेरे आगे मुक्तिदायिनी,
नहीं स्वर्ग की भी कुछ चाह;
आ जा, आ जा, स्वतंत्रते ! तू,
"ताक रहे सब तेरी राह।"

(५)

जब जय-घोष करेंगे तेरा,
गूँजेंगे दिक् और दिगंत;
बस जातीय वाटिका में फिर,
नाच उठेगा वीर वसंत।
रोके से न रुकेगा तब तो
देश-भक्ति का प्रबल प्रवाह;
आ जा, आ जा, स्वतंत्रते ! तू,
"ताक रहे सब तेरी राह।"

❀ गत वसंत-पंचमी को आगरा-कॉलेज के छात्रों ने एक कवि-सम्मेलन किया था, उसी में ये पंक्तियाँ लेखक ने सभा-पति के आसन से पढ़ी थीं। समस्या थी—"ताक रहे सब तेरी राह।"—सुधा-संपादक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाक की चिंता

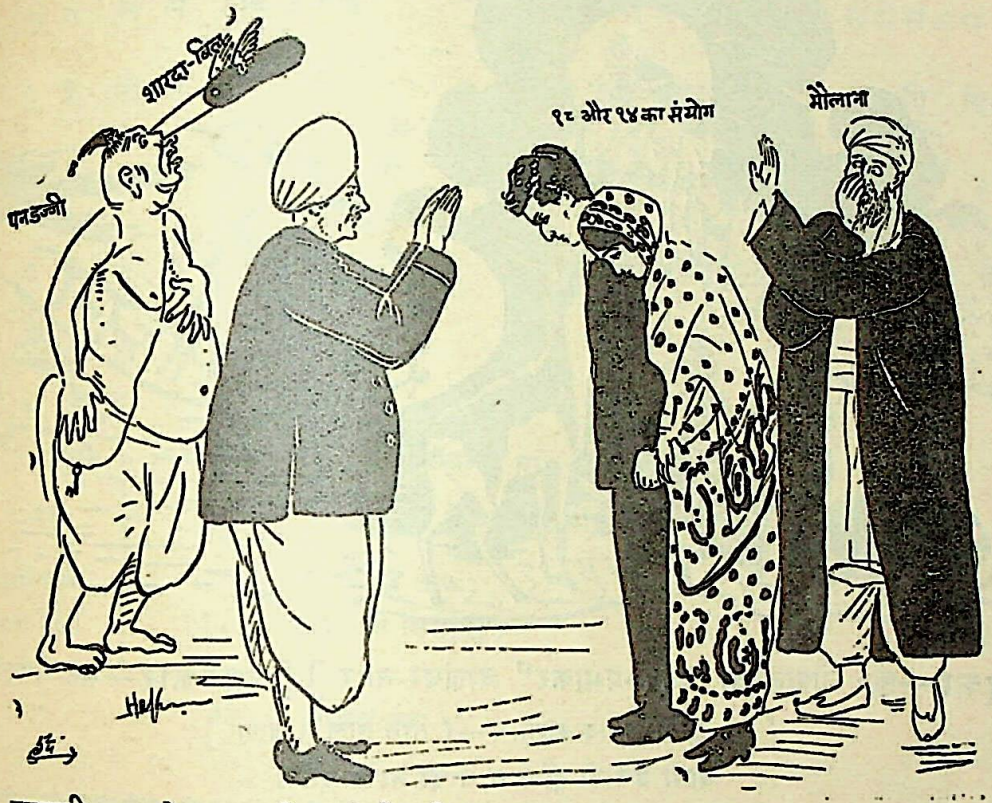

पनडज्जी—हाय रे, नाक कटी जाती है धर्म की।

मौलाना—मुझे बचाकर भाई, मुझे बचाकर।

श्रीशारदा—(दंपति से) भगवान् तुम्हारा मंगल करें। तुम-जैसे योग्य दंपति ही देश और धर्म की रक्षा कर सकते हैं।

Royal College of Physicians and Surgeons of India (Registered). Member and Fellowship (M. R. C. P., M. R. C. S., M. R. C. P. & S., F. R. C. P., F., R. C. S., F. R. C. P. & S. Registered) certificate awarded to the medical Practitioners and Students. For Prospectus apply with anna stamp to the Registrar, Dayoganj Road, Dacca, Bengal.

Homeopathic University of India (Registered by the Govt.) Member and Fellowship certificate granted to the Homeopathic Doctors and Students. Also H.L. M.S., H.M.B., H.M.D. & L.L.D. diploma to Successful Candidates. Apply with anna stamp to the Registrar, 21, Chota Katara, Dacca, Bengal.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

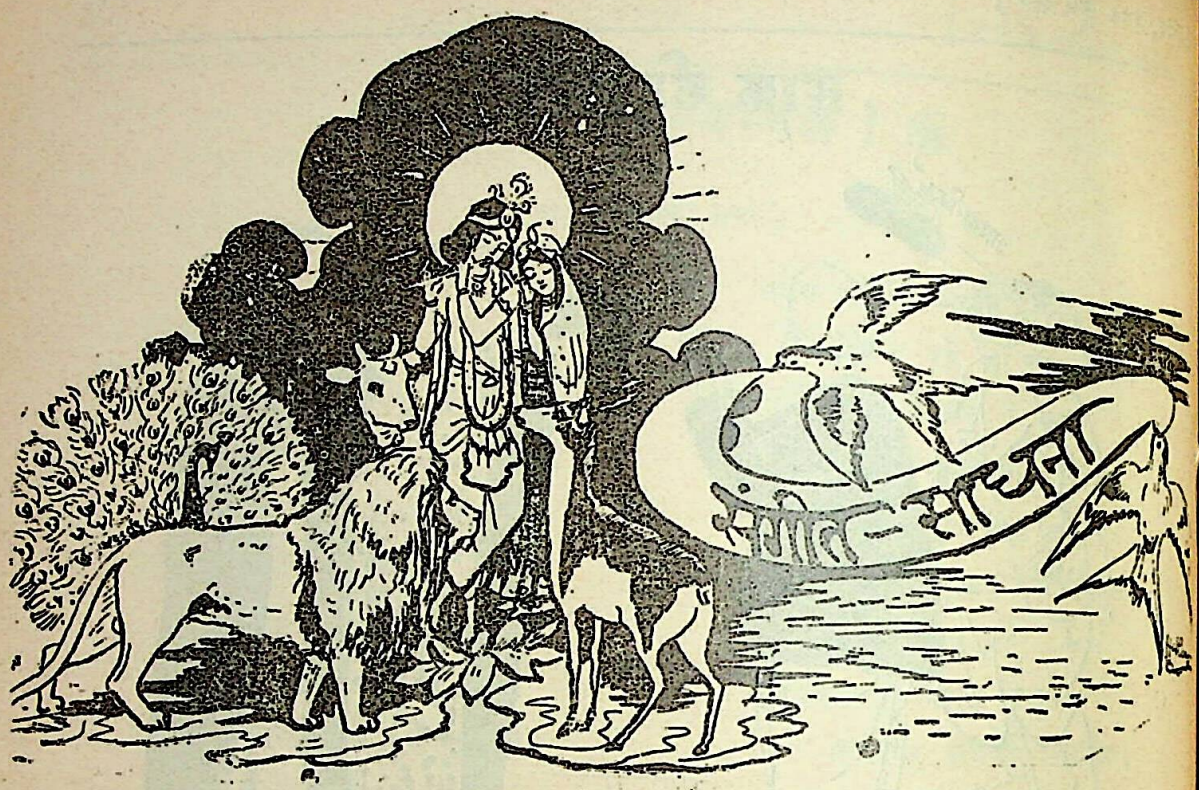

संपादिका—कु० गोपालदेवी "हिंदी-प्रभाकर" जालंधर नगर] [स्वरकार—भक्त मंगलरामजी

[राग छाया लगत्व खम्माच—(तीन ताल) त्राण।]

धानी उधानी दीं त त न देरे ना त दारे।

दीं दीं तों तों त न न न देरे ना, उदानी दीं तत्तन देरे ना तदारे।

अंतरा—न दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर त न न न देरे ना,

दिर दिर दिर दिर दिर दिर त न न धेरे ना त दारे ॥

ठेके	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धि	धा		
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
	×				२				०				३					
स्वर							नी	सां	क नि	ध	प	म		ग	म	प	ध	
गीत							धा	नी	उ	धा	नी	दीं		.	त	त	न	
स्वर	नि	नि	सं	सं	क नि	ध	प	ध	नी	रे	नी	सा		नि	ध	प	म	
गीत	दे	रे	ना	त	दा	.	रे	...	दा	.	नी	.		उ	दा	नी	दीं	
स्वर	नी	नी	सां	सां	.....				.....						नि	नि		
	दे	रे	ना	.	.....				.....						दीं	दीं		
	क	क																
	नि	नि	ध	प	म	म		ग						स	स	ग	म	
	त	न	न	न	दे	रे		ना						उ	दा	नी	दीं	

स्वर																		
गीत																		
स्वर	ग	म	प	ध														
गीत	.	त	त	न														
स्वर		त	सं	तों														
	प	ध	नी	सां														
	.	.	त	त														

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

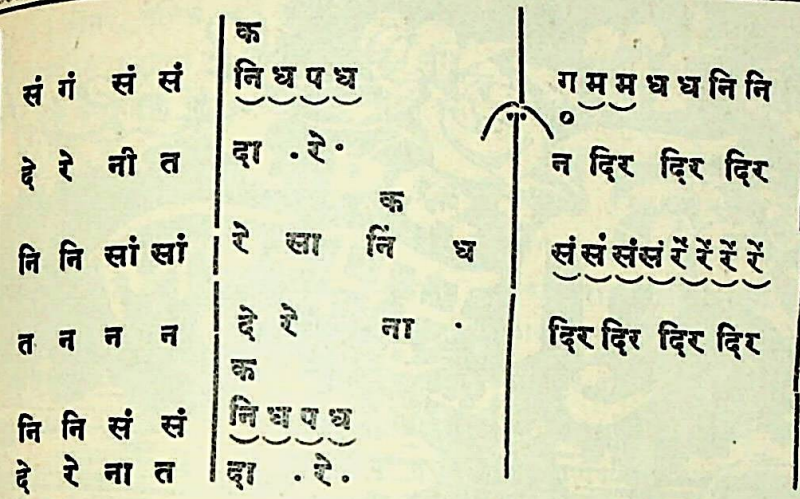

ताल चिह्न स्वर

| सम

१ पहली ताल

२ दूसरी ताल

० खाली

चिह्न रे म प ध एक मात्रा में चार बोले जायँगे।

रेम एक मात्रा में दो स्वर बोले जायँगे।
: :

नि सं ऊपर बिंदु तार।

(।) अंतरे की निशानी।

क
नि कोमल स्वर।

भार्गव-चित्रावली

'सुधा' में जो रंगीन तथा तिरंगे चित्र अब तक प्रकाशित हुए हैं, हिंदी-संसार में उनकी धूम है। हज़ारों पाठक-पाठिकाओं के अनुरोध से हमने इन चित्रों में से छाँटकर उत्कृष्ट चित्रों का संग्रह इस चित्रावली में प्रकाशित किया है। इस चित्रावली में कुल सोलह चित्र हैं। देखने लायक़ चीज है। छपाई-सफ़ाई, जिल्द-बँधाई के संबंध में कुछ कहना वृथा है। शादी-विवाह के अवसर पर बहू-बेटियों को उपहार देने योग्य चीज है। प्रारंभ में भारतीय-चित्रकला का इतिहास भी दे दिया है। मूल्य केवल २) रु०; जिल्ददार २।।) ; डाक-व्यय अलग।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२३-२५, लाटूशरोड, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

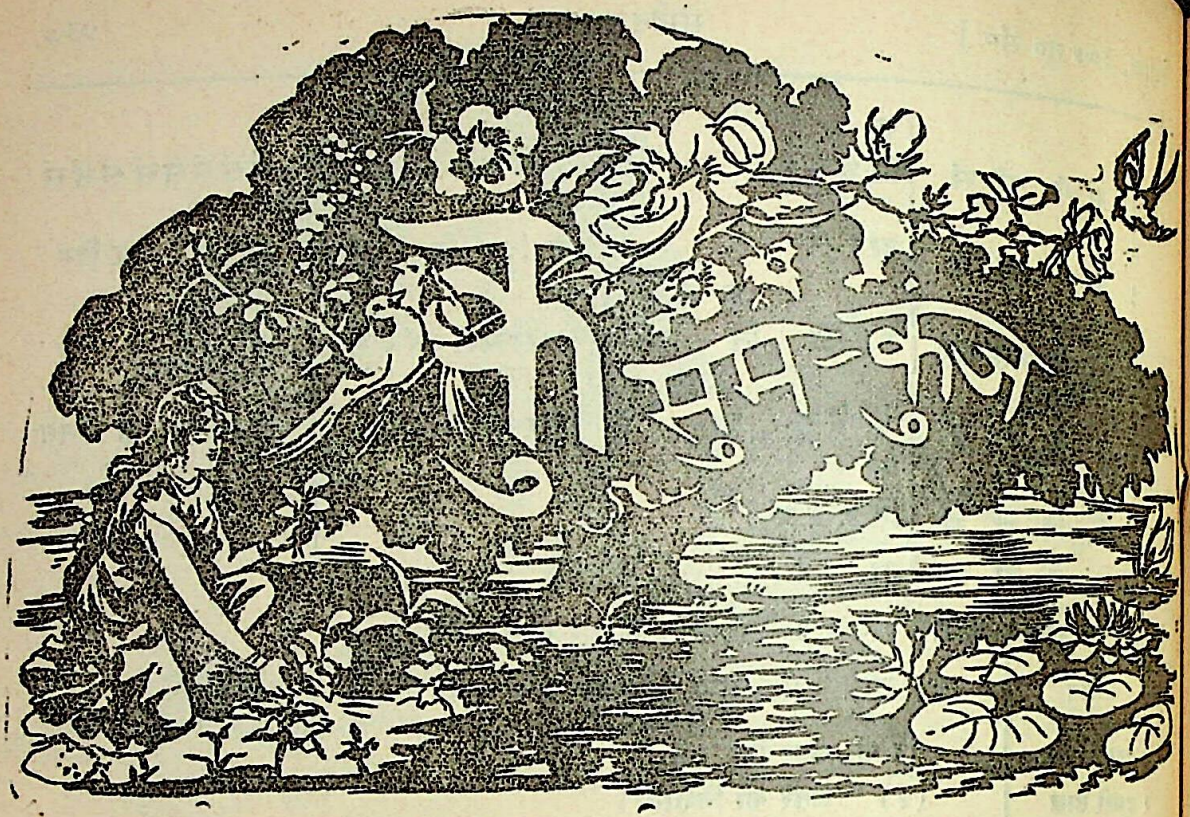

१. महाभारत

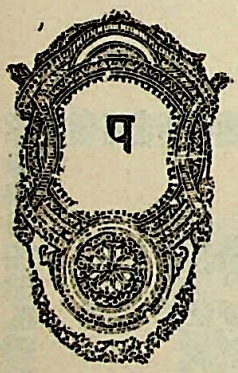

रम पूजनीय प्रातःस्मरणीय महान् विद्वान् ज्ञान-गुण-निधान श्री-भगवान् वेदव्यास की जन्म-कथा के ध्यान से आज-जैसा संकीर्ण-हृदय हिंदू-समाज उन्हें ऐसे आदरणीय ऊँचे आसन पर कदापि आसीन नहीं करता। वह वन-कुसुम के समान विकसित हो कहीं मुरझाकर रह जाते। न उनकी अभूतपूर्व प्रतिभा तथा गुण-गरिमा का संसार ही परिचय पाता, और न वह उनके प्रदर्शन का सुयोग और सुअवसर पाते। परंतु तत्कालीन उदारचेता समाज ने उन्हें सिर और आँखों पर बिठाया; स्नेह-पूर्वक कलेजे से लगाया, उनके पाद-पद्मों में माथा नवाया, और उसका फल भी प्रचुर पाया।

उन्होंने पुराणों की रचना की, भक्ति-रस-प्लावित श्रीमद्भागवत हिंदू-समाज को प्रदान किया, एवं हिंदू-समाज का जीवात्मा-स्वरूप महाभारत प्रस्तुत किया, जो वेदों के समान मान्य तथा पूजनीय माना जाता है, और जिसने पाँचवें वेद का पद प्राप्त किया है।

यह ज्ञान तथा सत् शिक्षा की अघट और अक्षय खान है। इस ग्रंथ के अध्ययन, अनुशीलन और एकाग्र-मन मनन ने न-जाने कितने तत्त्वज्ञ महात्मा, महान् पंडित, वीर-पुंगव और देश-हित-चिंतकों को उत्पन्न किया है। कोई ऐसा आलोच्य तत्त्व नहीं, कोई ऐसा शास्त्रीय तथ्य नहीं, जिसका विवेचन और विस्तरण इसमें न हुआ हो। यह सहस्र-मुखों से हमारे पूर्वजों का यशोगान कर रहा है, एवं उन धीर-धीमान्, वीर-बलवान्, गंभीर-गुणवान्, धर्मज्ञ-तेजवान् और कर्मज्ञ-कीर्तिमान् पुरुषों के चरित्रों से चित्रित है। यह पुरा-काल के ऐश्वर्य, प्रभुत्व प्रभृति का प्रदर्शक है। इसमें ज्ञान-विज्ञान, काव्य-कला, खगोल, भूगोल, इतिहास, दंतकथा, सुंदर अमूल्य राजनीति, सामाजिक आचार-विचार एवं सृष्टि-विस्तार आदि की विशद व्याख्याएँ हैं। आज सारे संसार की विद्वन्मंडली इसे गीता को कोहनूर के तुल्य अमूल्य रत्न समझ रही है, और जो केवल हिंदुओं ही का नहीं, अनगिनित भिन्न विदेशी व्यक्तियों का भी कंठ-हार हो रहा है, यह इसी ग्रंथ के "भीष्म-पर्व" का एक अंश है।

इन्हीं गुणों के कारण यह ग्रंथ जगत् के अन्य जातीय वर्तमान अमर ग्रंथों से बहुत उन्नत-स्थान का अधि-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कारी बना है। होमर, वर्जिल, डैंटे इत्यादि इस बहुज्ञ प्रेक्षावी, महामहिम महात्मा की विशाल बुद्धि और उच्च विचारों की कुछ थोड़ी ही छाया ग्रहण करने को समर्थ हुए हैं।

होमर-कृत "इलियड" वीर-रस-प्रधान काव्य का एक सुंदर नमूना है। होमर शुद्ध शुद्ध-कवि हैं। महाभारत के केवल एक अंश में वास्तविक रण-वर्णन आया है। अतएव कह सकते हैं कि होमर ने महाभारत के प्रणेता के एक भाव की ही छवि दरसाई है।

वर्जिल-प्रणीत "एनीड" (Æneid) रोमन लोगों की वीर-रसात्मक पुस्तक है, जिसमें ट्रॉय के पतन के अनंतर एक भ्रमणकारी योद्धा एनियस (Æneas) के भयानक घटनाओं का सामना करने का वर्णन आया है, और इसी पर इसकी समाप्ति भी है। यह रचना होमर की रचना को नहीं पहुँच सकती, और इस पुस्तक में वर्णित कहानियों और दुर्घटनाओं का सादृश्य हम महाभारत में पाते हैं; किंतु महाभारत की अन्य बातें और भाव संक्षेप में भी उसमें नहीं पाए जाते।

अब इटली देशी के कवि डैंटे और उनकी पुस्तक "दिवाइना कमेडिया" (Divina Commedia) की ओर दृष्टि कीजिए। यह विविध आख्यायिका, वार्तालाप, शिक्षण-नियम, अविरल नरक-दंड, प्रायश्चित्त तथा शरीर-त्याग के पश्चात् अदृश्य लोक के सुखानंद की बातों से भरी हुई है। इसमें प्रमुख तत्त्व दो पाए जाते हैं—एक प्रेम, दूसरा घृणा। ये दोनो बातें और इससे भी बहुत अधिक व्याख्याओं के भूरि-भूरि प्रमाण, उदाहरण हम लोगों को महाभारत में दृष्टिगत होते हैं। "पैराडाइज़ लास्ट" में एक विचित्र प्रभा देदीप्यमान है, जो उक्त कवियों की रचनाओं में नहीं पाई जाती। मिल्टन कुछ अंश में महाभारत के तत्त्व को पहुँचते हैं। परंतु उनके पूरे ग्रंथ में जो कुछ कहा गया है, वह महाभारत के एक परिच्छेद में आ गया है। वेदव्यास के गूढ़ दार्शनिक विचारों और आध्यात्मिक उड़ानों का उनमें सर्वथा अभाव-सा दिखता है। व्यासदेव ने अनेक ऋषियों की छवि चित्रित की है। उनमें से कदाचित् किसी का चित्र भी "आर्क-एंजिल" (arch-angel) अर्थात् देवदूत के चित्र से दबा हुआ नहीं दिखता। पर मिल्टन के ईश्वर व्यासदेव के परब्रह्म से टक्कर नहीं लगा सकते। हमारी बुद्धि यही कहती है, औरों का जो विचार हो।

व्यासदेव इहलोक तथा परलोक के मध्यस्थ सीमा-स्थल पर विराजमान हैं। उनके इस बृहत् ग्रंथ में हम लोग ब्रह्मज्ञान तथा मानव-ज्ञान का सम्मिश्रण पाते हैं। उनकी तीव्र दृष्टि सुविस्तृत नभमंडल तथा भूमंडल के यावत् पदार्थों और विभूतियों के निरीक्षण में समर्थ हुई है, और वह अपनी अलौकिक रचना द्वारा हम लोगों को शिक्षा देते हुए संकेत कर रहे हैं कि "बस, हमारे प्रकाश-पूर्ण पद-चिह्नों का अनुसरण करते उस आलोकमय पवित्र लोक में चले आओ, जहाँ सर्वदा अक्षय आनंद का अनुभव हुआ करता है।"

महाभारत में सब रंग-रेशों के साथ पुरातन आर्य-सभ्यता का चित्र प्रदर्शित किया गया है। इस ग्रंथ की प्रति पंक्ति में कुछ-न-कुछ उच्च भाव का समावेश हुआ है। सत्य तथा आत्मज्ञान तो इसमें सर्वोन्नत शिखर को पहुँच गया है।

देखते हैं, उस समय आर्य-सभ्यता का अंग-अंग हृष्ट-पुष्ट था, और उस सभ्यता का आधारभूत धर्म था। वह धर्म-पोषित सभ्यता थी। वह आज के सामान केवल बाह्य चमक-दमक, मनोहर वेश-विन्यास, खान-पान, छल-कपट, नाच-रंग, विवाह-बंधन, विवाह-विच्छेद, राजनीतिक छलबल तथा कुटिल चालबाज़ियों की सभ्यता नहीं थी। सांसारिक भोग-विलास, इंद्रिय-पोषण, सिनेमा-थिएटर का अवलोकन, निशाकालीन दीर्घव्यापी नृत्य-गान, रौंद-गश्त उस सभ्यता का उद्देश्य नहीं था। उसका उद्देश्य था पवित्र धार्मिक सभ्यता, जहाँ मानव-हृदय में खलबली मचानेवाली इंद्रियों का दमन करने, शांति का अवलंबन लेने और मन को अचंचल भाव से स्ववश में रखने से सर्वोत्तम सुखानंद प्राप्त होता है।

सभ्यता के ऐसे उच्च आदर्श से विमुख होना ही हमारी सब प्रकार की अवनति का कारण है। यदि हम रामायण और महाभारत-जैसे आर्ष सद्ग्रंथ-प्रदर्शित पथ से विचलित न होते, तो ऐसे दुःख के गड्ढे में गिरने की नौबत ही न आती, और न अपना सब पौरुष-पराक्रम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खोकर इस भाँति सर्वथा असमर्थ ही होना पड़ता। यदि हिंदू-जाति को जीवित रखना अभिप्रेत है, यदि हिंदू-संतान होने की कुछ भी ममता है, उसका मान-रक्षण मंजूर है, तो अब भी महाभारत और रामायण की सत् शिक्षाओं तथा उनके जाज्वल्यमान उदाहरणों से बल-संचय कर एवं वर्तमान उन्नति की होड़ में दौड़ लगाने के योग्य अपने को बनाकर लक्ष्य तक पहुँचने का उद्योग करना सबका परम कर्तव्य है।

ये ग्रंथ कब बने, इनके रचयिता वस्तुतः कौन हैं, एक हैं या अनेक, विदेशियों का अनुसरण कर इन बातों का विचार निष्प्रयोजन है। इनकी नित्य आरती-पूजन करना या किसी पंडित से इनकी कथा सुनकर उनका केवल सम्मान करना भी निरर्थक है। जब कि उनकी सुशिक्षाओं को हृदयंगम कर उनके अनुसार कार्य न करें। कोरी इन सब बातों से इस समय काम नहीं चलेगा। काम चलेगा अपने आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक बल-वर्द्धन से। इन्हें पुष्ट और बलिष्ठ बनाने के लिये इन ग्रंथों में प्रचुर सामग्रियाँ हैं। उनका अल्प उल्लेख भी इस क्षुद्र लेख में नहीं हो सकता। ये कई बातें तो केवल इसलिये कह दी गईं, जिसमें उक्त ग्रंथ के अध्ययन की ओर लोगों का चित्त आकर्षित हो, और उससे लाभान्वित होकर लोग सब भारतवासियों के साथ परस्पर मित्र-भाव-संस्थापन द्वारा देश-हित-साधन और निज कर्म-धर्म-पालन में कटिबद्ध रहकर सुख-पूर्वक दिन बितावें।

शिवनंदनसहाय

× × ×

२. उनके प्रति *

(१)

देख उस दिन निज कुटी में आपको,
घाव बचपन का हरा फिर हो गया!
थी पुरानी बात प्रायः हो चुकी,
प्रेम का उत्साह भी था सो गया!
किंतु, सहसा आपने दर्शन दिया,
शुष्क-जीवन में नया रस भर दिया!
हतप्रणय-कवि को मनाने के लिये,
खोलकर इतिहास आगे धर दिया।

(२)

की तपस्या सात वर्षों तक कड़ी,
यातनाएँ भी सहीं क्या-क्या नहीं!
किंतु, फल कुछ भी न पाया अंत में,
लालसाएँ लोभ-सरिता में बहीं!
ठीक है अनुमान होता है किसे,
दूसरों के मानसिक संताप का!
इसलिये निर्णय करेगा कौन अब
दोष मेरा है कि इसमें आपका!

(३)

भाग्य की लीला बड़ी विकराल है,
दोष फिर किसके भला मत्थे मढ़ें!
है वही होता कि जो निर्दिष्ट है,
क्यों न हम फिर पाठ विस्मृति का पढ़ें!
भूल जाने दो, समझ लो स्वप्न था,
और यों ही बालकों का खेल था!
थी सरल आख्यायिका वह प्रेम की
या हुआ दो पागलों का मेल था!!

रत्नांबरदत्त चंदोला

× × ×

३. जीवन का बीमा

वर्तमान युग में धनोपार्जन और धन-संचय करने के लिये विविध उपायों का अवलंबन किया जा रहा है। जीवन का बीमा करना भी धन-संचय करने का एक प्रधान साधन हो रहा है।

मानव-जीवन अनित्य, नश्वर तथा क्षण-भंगुर है। मृत्यु अवश्यंभावी एवं अनिवार्य है। राजा, रंक, फकीर सबको इसका शिकार बनना पड़ता है। बाल, युवा,

* अप्रकाशित 'मधुकोष'-काव्य से।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किशोर वा युवावस्था, समर्थ वा असहाय का कुछ विचार किए बिना ही मृत्यु मनुष्य को अपने फ़ौलादी पंजों में धर दबाती और क्षण-भर में जीवन का अंत कर देती है। मनुष्य में सब कुछ करने की सामर्थ्य है, पर मृत्यु को किसी प्रकार भी नहीं टाल सकता। मृत्यु के आगे सबको सर झुकाना ही पड़ता है। अभी-अभी जो सपरिवार बड़े आनंद से काल-यापन कर रहा था, बड़े-बड़े मनसूबे बाँध रहा था; कितनी उच्च अभिलाषाएँ जिसके हृदय में जाग्रत् हो रही थीं; जिसने अपने भविष्य का एक अत्यंत सुंदर चित्र खींच रक्खा था; तत्क्षण ही वह कराल काल का ग्रास बन जाता है, उसका सारा परिवार शोकावृत हो जाता है, उसकी सारी इच्छाएँ मिट्टी में मिल जाती हैं, उसके मनसूबे काफ़ूर हो जाते हैं, और उसकी विधवा स्त्री और बाल-बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो जाता है। परिवार के प्रधान पुरुष के मरने के पश्चात् भारतवर्ष के मध्य अथवा निम्न-श्रेणी के लोगों की जो हालत होती है, विज्ञ पाठकों से छिपी नहीं है। ऐसी ही संकटमय परिस्थिति से निवारण के निमित्त जीवन-बीमा की आयोजना हुई है।

अब प्रश्न यह होता है कि जीवन का बीमा किस प्रकार होता है? जीवन का बीमा करनेवाली कंपनियाँ होती हैं। हमारे देश में भी ऐसी कितनी बीमा-कंपनियाँ हैं। ये कंपनियाँ लोगों को जीवन-बीमा करने के लिये प्रोत्साहित करती रहती हैं। जीवन-बीमा के तथ्य को समझाती हैं, तथा जीवन-बीमा करानेवालों की खोज में सदा रहा करती हैं। कंपनियाँ तो कलकत्ते, बंबई, मदरास, लाहौर आदि प्रमुख नगरों में स्थापित हैं, पर उनकी शाखाएँ और प्रतिनिधि प्रायः प्रत्येक नगर में पाए जाते हैं, जो बीमा करने का काम करते हैं। पुनः इनके विज्ञापन अँगरेज़ी समाचार-पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। समाचार-पत्र भी यदा-कदा बीमा-कंपनियों की कार्यवाही पर अपनी सम्मति प्रकाशित करते रहते हैं।

यह जीवन-बीमा कई प्रकार का होता है। यहाँ पर मैं आजीवन-बीमा का उल्लेख करूँगा। जो सज्जन जीवन-बीमा कराना चाहते हैं; वे किसी कंपनी वा उसके प्रतिनिधि से बातचीत कर निश्चित करते हैं कि वे कितनी रक़म में अपना जीवन-बीमा कराना चाहते हैं अर्थात् अपनी मृत्यु के पश्चात् वे बीमा-कंपनी से कितनी रक़म अपने उत्तराधिकारी वा किसी अन्य व्यक्ति को दिलवाना चाहते हैं। कोई व्यक्ति ५००) से कम का बीमा नहीं करा सकता है। कंपनी तब उसके स्वास्थ्य की जाँच किसी योग्य डॉक्टर से कराती है और उसके विषय में अन्यान्य प्रकार से जाँच-पड़ताल करती है। यदि डॉक्टर अच्छे स्वास्थ्य का प्रमाण-पत्र देते हैं, तो कंपनी यह निश्चित करती है कि बीमेदार को कितने रुपए का बीमा कंपनी को प्रतिवर्ष देना पड़ेगा। यह वार्षिक रक़म बीमेदार को आजीवन प्रति वर्ष एक बार वा क़िस्त करके देना पड़ता है। बीमा-कंपनी बीमेदार की मृत्यु के पश्चात् बीमा के रुपए उसके अधिकारी को देती है, चाहे बीमेदार की मृत्यु बीमा करने के १ वर्ष के बाद हो वा १० वर्ष के बाद। यह बात एक उदाहरण से स्पष्ट हो जायगी। कोई व्यक्ति जिसकी उम्र २५ वर्ष की है, एक हज़ार रुपयों का जीवन-बीमा कराता है। उसे बीमा-कंपनी को प्रति वर्ष २५) जीवन पर्यंत देना होगा। यदि बीमेदार एक वर्ष के बाद ही केवल पचीस रुपए देकर ही मरे, तो उसकी मृत्यु के बाद ही बीमा-कंपनी उसके उत्तराधिकारी को एक हज़ार रुपया देने को बाध्य होगी।

जन-साधारण को इस बात की आशंका रहती है कि बीमा-कंपनी रुपए नहीं देती। मृत्यु का प्रमाण पाने पर और उत्तराधिकारी निश्चित होने पर कोई कारण नहीं कि बीमा-कंपनी रुपए न दे। इन बातों में कुछ विलंब होता है। जीवन-बीमा का एक सरकारी क़ानून है, जिसे जीवन-बीमा क़ानून (Life Insurance Act) कहते हैं। इस क़ानून की बीमा कंपनियाँ मानने को बाध्य होती हैं। सरकार भी बीमा-कंपनियों की देख-रेख करती है। सरकार के पास भी बीमा-कंपनियों का बहुत-सा धन जमा रहता है। इन सब बातों को विचारकर बीमा-कंपनियों पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं दिखाई पड़ता। फिर भी किस कंपनी से बीमा किया जाय, इसको ख़ूब समझ-बूझकर करना चाहिए। बीमा-कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट उसकी पूँजी की रक़म और उस पर समाचार-पत्रों की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्मति देखकर यह निश्चित करना चाहिए। पहले हमारे देश में इस कार्य को केवल विदेशी कंपनियाँ ही करती थीं। पर अब कुछ देशी-कंपनियाँ भी इस कार्य को बड़ी कुशलता से कर रही हैं। हमें देशी कंपनियों से ही जीवन-बीमा कराना चाहिए ताकि देशी कंपनियों को प्रोत्साहन के साथ-साथ देशी वाणिज्य एवं व्यवसाय की उत्तरोत्तर उन्नति हो।

जीवन-बीमा यदि किसी सहयोग-समिति वा किसी ऐसी ही समिति द्वारा कराया जाय, तो अच्छा है। यह समिति माध्यम का काम करेगी, तथा बीमेदार की मृत्यु के पश्चात् आवश्यक प्रमाण संग्रह कर बीमा के रुपए दिलवा देगी। इस प्रकार अन्यान्य कितने उपायों का अवलंबन किया जा सकता है।

रामसिंहासनसिंह

× × ×

४. कोयल !

कैसा होगा वह कानन !
सजनि ! जहाँ से आती हो तुम
पुलकित-गात, प्रफुल्लित-मन ;
जहाँ सीखती हो गाना तुम
सुंदर गीत परम पावन।
उन सरिताओं का कल गान—
कितना मीठा होगा ? जिनसे
पाती हो तुम मृदु-स्वर-दान ;
कैसे होंगे सुघर-कुसुम वे,
तुम्हें कराते जो मधु-पान।
कल-कंठिनि ! सुकुमारि ! सुजान !
मुझे बता दो उस वन का पथ,
वहाँ पहुँचकर मैं अनजान ;
फूलों के सँग मिलकर खेलूँ
गाऊँ गीत मनोज्ञ महान

"प्रभात"

× × ×

५. मा की क़ब्र में

(१)

"रज़िया ! क्या मा इसी क़ब्र में सोती है ?"

वे दोनो अज्ञान बच्चे थे। उनकी मा मर चुकी थी। उनको अब भी मा की याद ज्यों-की-त्यों थी। उस दिन वे खेलते हुए उस ओर आ निकले, और क़ब्र के पास बैठ गए। उनसे कहा गया था कि उनकी मा इस क़ब्र में आनंद-पूर्वक सोती है। अतएव रज़िया ने कहा—"हाँ मुबारक ! मा इसी में सोती है।"

कुछ देर तक वे दोनो चुपचाप एक दूसरे का मुख देखते रहे। फिर रज़िया ने कहा—"मुबारक ! मा फूल बहुत पसंद करती थी, चलो कुछ फूल तोड़कर यहाँ पर सजा दें।"

"हाँ चलो", मुबारक ने कहा—"जब मा फूल देखेगी, तो बड़ी ख़ुश होगी। बहन, उसकी नींद कब खुलेगी ?"

अज्ञान बालक को मालूम नहीं कि उसकी मा अनंत निद्रा में सोती थी। रज़िया ने कहा—"अब्बा ने कहा है कि मा अब नहीं उठेगी।"

उसकी आँखों में आँसू थे।

"अब नहीं उठेगी ?"

बालक पर मानो वज्र-पात हुआ। उसके हृदय में 'क्यों' का प्रश्न उठा। लेकिन "अब्बा ने कहा है।" यह उसका काफ़ी उत्तर था। बड़ी देर बाद उसने एक लंबी साँस ली, कहा—"रज़िया, अब हम 'मा' किससे कहेंगे ?"

रज़िया ने भी एक लंबी साँस लेकर कहा—"किसी से नहीं !"

दोनो ने चुपचाप फूल तोड़े। उन्होंने उन्हें सजाकर क़ब्र के चारो ओर रख दिया। वे बड़ी देर तक उसी क़ब्र के पास बैठे रहे। संध्या होने पर दोनो ने घरों को प्रस्थान किया। उस समय उनकी आँखें अश्रु-पूर्ण थीं।

(२)

अंगूरी शराब का एक प्याला शेख़ ने अपने मुँह में लगाया। अभी आधा ही पिया था कि उसने प्याला अपनी नव-विवाहिता पत्नी 'बेगम' के मुँह में लगाया। वह उसे झट पी गई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"प्यारी !" झूमते हुए शेख़ ने कहा—"एक प्याला तुम पिलाओ।" उसने आधा प्याला पीकर शेख़ के मुँह में लगाया। वह उसे अमृत की तरह पी गया।

अब शेख़ मस्त हो गया। उसने कहा—"हाँ, ओ बहिश्त की परी! गाना! एक गाना। बस, कुछ, नहीं, केवल एक गाना सुनाओ, प्यारी!"

बेगम कुछ मुसकिराई। फिर उसने सारंगी उठाई, स्वर मिलाया, और गाने लगी—

"चुभा रग-रग में है नश्तर तुम्हारा।"

दूर-दूर तक उसकी स्वर-लहरी फैली। शेख़ उससे प्लावित हो गया। वह मद से लाल आँखों से उसे घूर रहा था, वह मुसकिरा रही थी। इतने में बाहर से आवाज़ आई—"अब्बा! बड़ा जाड़ा है, किवाड़ खोल दो।"

रज़िया और मुबारक दोनो बाहर जाड़े में ठिठुर रहे थे। कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। मुबारक ने वह आवाज़ लगाई थी।

शेख़ ने वे शब्द सुने। मानो किसी ने उससे संसार का सारा वैभव लूट लिया। उसने कड़ककर कहा—"बेईमान! सारा मज़ा ख़ाक कर दिया!! ओ मरदूदो! तुम कहाँ से आ पड़े? जाओ, इधर मत आओ। दो घड़ी भी आराम नहीं करने देते। प्यारी, ओ प्यारी बेगम! एक प्याला और। हाँ, गाओ, गाओ प्यारी।"

बाहर बर्फ़ गिर रही थी। अंदर एक कोने में आग जल रही थी। दोनो बच्चों ने किवाड़ के सूराख़ से उसे ऐसे ही देखा जैसे कोई बहुत दरिद्र धनी के घर में पड़ी लपटों की थैली देखता और लंबी साँस खींचता है।

"अब्बा!" रज़िया ने करुण स्वर से कहा—"मुबारक काँप रहा है। बड़ा जाड़ा हो रहा है! हमें आग के पास बैठा दो।"

शेख़ मधुर तान में मस्त था। वह उठा और बाहर जाकर उसने दो चाँटे मुबारक और रज़िया के रसीद किए। दोनो बच्चे बिलबिला उठे। शेख़ ने किवाड़े बंद किए और पैशाचिक हँसी में ज़ोर से हँसा। उसने फिर एक प्याला पिया। वह भी बेगम के साथ-साथ गुनगुनाने लगा—

"चुभा रग-रग में है नश्तर तुम्हारा।"

(३)

बड़ी देर तक वे दोनो रोते और वे दोनो गाते रहे!

"रज़िया! बड़ा जाड़ा है!" काँपते हुए मुबारक ने कहा।

रज़िया भी काँप रही थी, उसने कहा—"हाँ।" वह रोने लगी। अंदर से अब भी संगीत की मधुर ध्वनि निकल रही थी।

शेख़ प्याले-पर-प्याले पी रहा था।

"मुबारक!" रज़िया ने कहा—"चलो मा के पास चलें!"

मुबारक ने पूछा—"उसी क़ब्र में?"

उत्तर मिला—"हाँ, वहीं।"

वे ठिठुरते हुए उसी ओर चले।

वे दोनो क़ब्र के पास बैठ गए। एक बार मा के समय की सुखद स्मृतियाँ याद कर वे "मा बड़ा जाड़ा है।" कहकर रोने लगे।

"रज़िया!" मुबारक ने कहा।

"मुबारक!" रज़िया बोली।

मुबारक ने कहा—"बड़ा जाड़ा है।"

"आओ मुबारक! दोनो लिपट जावें।" रज़िया ने कहा।

दोनो एक दूसरे से लिपट गए। कुछ गरम हुआ। बर्फ़ ज़ोरों से गिर रही थी। कुछ ही देर बाद उनके शरीर बर्फ़ से ढक गए।

× × ×

आधी रात को रज़िया ने अजाग्रत्-अवस्था में, अस्फुट स्वर से कहा—"मा! मा!! तुम आ गईं? अब हम तुम्हारे ही पास रहेंगे। अब्बा हमसे नाराज़ रहते हैं। मा! वहाँ तो जाड़ा नहीं है?"

कुछ देर बाद मुबारक ने कहा—"अहा! यहाँ तो बड़ा अच्छा है मा! क्या यहाँ भी कोई मारता है? मैं वहाँ कभी नहीं जाऊँगा।"

(४)

सबेरे शेख़ ने खिड़की खोली। उसने देखा—दूर-दूर दृग-गति पर्यंत बर्फ़ गिरी हुई थी। अरुण उषा की छटा उदयाचल में छाई थी। सूर्य भगवान् धीरे-धीरे ऊपर उठ रहे थे। पक्षीगण कलरव गान कर रहे थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वहाँ, अपनी मा की क़ब्र में, मुबारक और रज़िया, बर्फ़ के सुंदर श्वेत बिस्तर में अनंत निद्रा में, शयन कर रहे थे।

उमेशचंद्र पंत

× × ×

६. धन्य बलिदान ❀

(१)

झनाझन हथकड़ियाँ बज उठीं,
छिड़ी तसले पर तीखी तान!
जेल को दीवारों को छोड़
चला बंदी का सुंदर गान!!
स्वयं मिट जाते हैं जब वीर,
न देते मातृभूमि का मान,
दिव्य-शुभ मातृ-यज्ञ में वही
धन्य बलिदान! धन्य बलिदान!

(२)

जिसे करनो माता स्वाधीन,
उसे कब बंधन को पर्वाह?
जिसे जीवित करना है देश,
करेगा फाँसी पर क्यों आह?
बुझाकर अपना जीवन-दीप
जगाना जिसे क्रांति की आग,
भला ऐसा विद्रोही कभी
न समझे मरने को सौभाग?
स्वयं मिट जाते हैं जब वीर,
न देते मातृ-भूमि का मान,
दिव्य-शुभ मातृ-यज्ञ में वही
धन्य बलिदान! धन्य बलिदान!

(३)

कभी होगा जिस दिन यह देश
विदेशी बंधन से आज़ाद,
छोड़ जाएँगे जब मैदान
शत्रु सुन अपना केहरि-नाद,
बहेगी फिर से जिस शुभ दिवस
देश में शुभ-स्वाधीन बयार,
गूँज जाएगी तब सर्वत्र
मातृ-चोणा को यह झंकार!
स्वयं मिट जाते हैं जब वीर,
न देते मातृ-भूमि का मान,
दिव्य-शुभ मातृ-यज्ञ में वही
धन्य बलिदान! धन्य बलिदान!

(४)

मातृ-मंदिर का, रख निज शीश,
रचाते शिलाधार-संस्कार।
लगाकर अपनी मज्जा-अस्थि
उठाते देवालय-दीवार!
सदा रखते हैं जो वर-वीर,
रुधिर-रस का रोशन तैयार।
चकित हो लखे विश्व ने कई
राष्ट्र के मंदिर के मेमार!
स्वयं मिट जाते हैं जब वीर,
न देते मातृ-भूमि का मान,
दिव्य-शुभ मातृ-यज्ञ में वही
धन्य बलिदान! धन्य बलिदान!

लक्ष्मणस्वरूप त्रिपाठी

× × ×

७. बालक की निष्ठुरता

मेरे जीते-जागते खिलौने, तुम कैसी चंचल प्रकृति के हो? कभी तुम्हारी चंचलता नहीं जाती, तुम्हारी चंचलता ही अचल है। जब देखो तब एक-न-एक ऊधम मचाया करते हो? मुझे तुम्हारा खेलना बुरा नहीं लगता, वह तो बड़ा मनोरंजक होता है। किंतु इस के कारण तुम जो अनर्थ कर बैठते, वे मुझे फूल में काँटे की भाँति अखरते हैं।

❀ देहली तथा युक्त-प्रांतीय सप्तम कवि-सम्मेलन (मेरठ) के सभापति पं० दुलारेलाल भार्गव द्वारा स्वर्णपदक से पुरस्कृत।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुम जानते हो, तुम्हारी निष्ठुरता का प्रारंभ कबसे हुआ ? इसकी तुमको याद भी न होगी। तुम बहुत छोटे थे। पावँ-पावँ चलना भी न सीखा था, घुटनों के बल रेंगकर अपना पुरुषार्थ दिखाते थे। बोलने का पाठ आरंभ कर दिया था। उस समय तुम्हारे तोतले मुँह से, जब कभी कोई अधूरा-सा प्यारा शब्द निकल जाता था, वह अमूल्य रत्नों के ढेर से भी हमको अधिक प्यारा लगता था। हाँ, उसी सरलता में तुमने बड़ी कठोरता की। मैं तुमको मिठाई खिला रही थी, तुमने इसकी परवा न करके इतनी ज़ोर से अपने नन्हें-नन्हें चार छोटे दाँतों से काट लिया कि मैं परेशान हो गई। तुम्हारी ओर देखा, तो तुम हँस उठे। तुम्हारी हँसी ने मेरी वेदना को भुला दिया। फिर मैं बड़ी सावधान हो गई, क्योंकि मुझे डर था—तुम्हारे निष्ठुर दाँत मेरी उँगली में बनाए हुए निशानों में फिर न अधिकार जमा लें।

दूध का जला छाछ फूँक-फूँककर पीता है। किंतु तुम ऐसे चतुर हो कि मुझे अपने खेल से लुभाकर सब भुला दिया और फिर अपने दाँतों की तीक्ष्णता का परिचय करा दिया। शायद इसीलिये तुमको ईश्वर ने जल्दी-जल्दी दाँत नहीं दिए। मुझे तुमसे बदला लेने की आवश्यकता न थी, परंतु ईश्वर बिना अपनी न्याय-शीलता दिखाए नहीं रहता, वह अपराध के पूर्व ही दंड दे देता है।

अब तो तुममें तब से बहुत अंतर है। दौड़ना तक सीख गए हो, किंतु अपनी निर्दयता से बाज़ नहीं आते। अब तुमको कौन क्षमा करेगा। आज तुम अपनी छोटी साइकिल के पीछे छोटा-सा मोटर को तागे से बाँधे थे। तुम्हारी साइकिल रेल के एंजिन की भाँति मोटर को अपने पीछे खींचे फिरती थी। यह दृश्य तुमको ही नहीं, वरन् हमको भी रुचिकर हुआ। तुमने अपनी और अपनी साइकिल की वाह-वाह की, मैंने भी तुम्हारे राग में राग मिला दिया। किंतु थोड़ी देर में एक दूसरा ही राग आरंभ हो गया।

एक बेचारी आफ़त की मारी धीमर की लड़की आँगन में होकर जा रही थी, उसका पैर उस डोरे पर पड़ गया जिससे मोटर बँधी थी। वह टूट गया और तुम्हारी मोटर आराम करने लगी। अब क्या था, तुम ज़ोर लगा-लगाकर रोने लगे। सारा खेल बिगड़ गया। स्वयं रोते हुए उस लड़की को भी ख़ूब पीटा। जब तुम्हारी मा ने मना किया, तब भी न माने और एक बड़ा किंतु हलका टोकरा उलटकर लड़की के ऊपर रख दिया और उसके ऊपर तुम बैठ गए। बेचारी लड़की का दम घुटता होगा, इसकी परवा नहीं की। तुम बड़े निर्दयी हो। उसके कान की बाली खिंच जाने से उसे कष्ट हुआ, इस पर भी कुछ ध्यान न दिया। इसकी तुमको क्या सज़ा ; दें यदि तुमको दंड दें, तो तुम रोते-रोते घर भर दोगे।

तुम्हारे खेल तो अभी बनाए देती हूँ, किंतु उस लड़की को कई दिन का कष्ट हो गया। कुसुम-से कोमल होकर कठोर बनना मत सीखो।

सावित्रीदेवी गर्ग

× × ×

द. रुबाइयाते सरमद

अज़ जुर्म फ़ुज़ूँ याफ़्ता अम फ़ज़्ले तुराँ ;
ज़ीं शुद सबबे मासियते बेश मरा।
हरचंद गुनह बेश करम बेशतरस्त ;
दीदम हमाजा आज़मूदम हमाजा।

अपने अपराधों से बढ़कर तेरी दया अधिक पाई ;
इसी हेतु मेरे दोषों की प्रियतम ! नदी उमड़ आई।
अगणित हैं अपराध और छोटी नन्ही-सी यह काया ;
इसके मिले प्रमाण बहुत-से, सभी जगह है अजमाया।

अज़कारे जहाँ उक़्दा कुशूदम हमारा ;
वज़ मेहनती अंदोख़ूबम हमारा।
हक़्दानि व इंसाफ़ न दीदम जै कशे ;
दीदम हमजा ओ आज़मूदम हमारा।

सबका खोला भेद परिश्रम कष्ट सभी कुछ अपनाया ;
तुझसे कुछ भी छिपा नहीं है, क्योंकि सभी तेरी माया।
न्याय न देखा, कहीं न पाया, यह सब भी है ज्ञात तुझे ;
इसके मिले प्रमाण बहुत-से, सभी ठौर हे नाथ, मुझे।

ऐ जलवागरे निहां अयाँ शौबद रा ;
दर फ़िक्रे बजिस्तेम हस्ती कुद रा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख्वाहम कि दरागोशे क़नारत बीरम ;
ता चंद तो दर पर्दा नुमाई ,खुद रा ।

मन हेच न गोयम कि चुना कुन बामा ;
बामा तो चुना कुन कि तुरा मी जैबद ।

छिप-छिपकर दिखलाता वैभव, अब तो बाहर आ जा तू ;
चिंतित होकर खोजा मैंने, अब रहस्य बतला जा तू ।
तू है कहाँ, बता मुझको, है अंक लगाने की बस चाह ;
कब तक परदे के भीतर तू गुप्त रहेगा यों ही आह !

क्षमा-अनुग्रह के भूषण से भूषित है तू हे भगवन्,
मैं कहता कुछ नहीं, लदा है क्योंकि अघों से मेरा तन।
निर्णय निर्भर नाथ, तुझी पर, जैसा चाहे कर व्यवहार ;
छोड़ रहा हूँ निज को तुझ पर, न्यायी-नागर तुझे विचार।

ऐ आँकि तुरा अफ़्गुलों अता मी जैबद ;
मा रा गुनहो जुर्मो ख़ता मी जैबद ।

पद्मकांत मालवीय

हिंदी में नवीन चमत्कार !

सचित्र रत्नाकर-ग्रंथ-माला ।

सैकड़ों रंगीन चित्रों से सुसज्जित । शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत । बालक, बालिकाओं, स्कूल-पाठशालाओं में उपहार में देने के लिये सर्वश्रेष्ठ हिंदी-साहित्य में आज रत्नाकर-सीरीज़ की धूम है ।

क्यों ? इसलिये कि हिंदी में ऐसा सर्वांग-सुंदर और सर्व-सुलभ सचित्र-साहित्य कहीं से भी प्रकाशित नहीं हुआ । सुंदर छपाई, बढ़िया काग़ज़, चित्रों की भरमार और सस्तेपन की परा काष्ठा है । किसी बुकसेलर के यहाँ जाकर देखिए और पसंद कीजिए । आप देखते ही मोहित हो जायँगे । सभी जगह बड़े-बड़े बुकसेलरों के यहाँ मिलती हैं । या हमसे मँगाइए ।

सचित्र रत्नाकर-ग्रंथ-माला ।

१—सावित्री-सत्यवान	॥)	१३—वीर अभिमन्यु	॥=)
२—नल-दमयंती	॥)	१४—लव-कुश	॥=)
३—शैव्या-हरिश्चंद्र	॥)	१५—भीष्म	।)
४—सीता देवी	॥=)	१६—पृथ्वीराज	।)
५—सती पार्वती	॥)	१७—महाराणाप्रताप	।॥)
६—शकुंतला	॥=)	१८—शिवाजी	।॥)
७—देवी द्रौपदी	॥=)	१९—शंकराचार्य	।॥)
८—शर्मिष्ठा-देवयानी	॥)	२०—श्रीकृष्ण	।)
९—सुभद्रा	॥=)	२१—मेवाड़-गौरव	।)
१०—संयुक्ता	॥=)	२२—महाभारत ६०० पृ० ५०चि०	॥)
११—भक्त ध्रुव	॥=)	२३—हिंदी-बँगला-शिक्षा	॥)
१२—भक्त प्रह्लाद	॥=)	२४—हिंदी-अँगरेज़ी-शिक्षा	

मैनेजर, दी पपुलर-ट्रेडिंग कंपनी, ११५ हरीसन रोड, कलकत्ता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

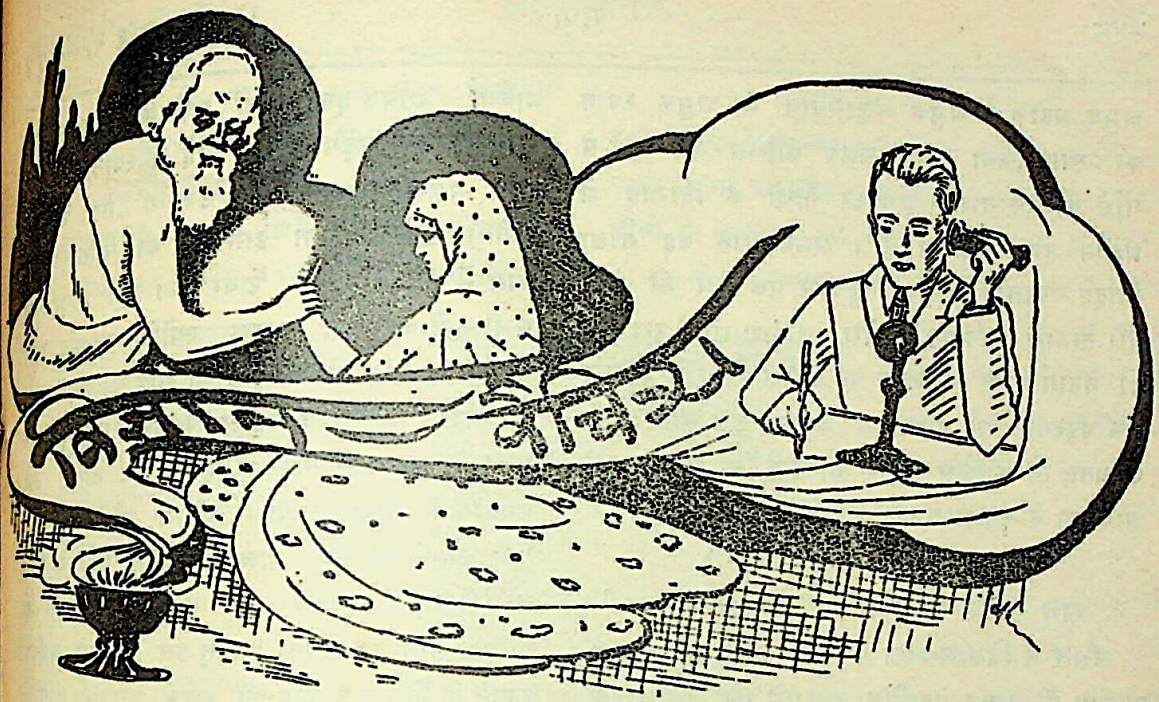

१. युवक की मशीन में जहाज़ों की गतियाँ

अधिक दिन नहीं हुए, मार्शल कालिंस ने अपने युवक दिमाग़ को विज्ञान के क्षेत्र में लगाना चाहा। वह कॉलेज का विद्यार्थी था, अभी आयु केवल १७ वर्ष की थी। परंतु उद्योगी पुरुषों के कार्यों में साधन और आयु बाधक नहीं होते। वह अमेरिका के झील-प्रांत (Lake-District) के नज़दीक रहता था। यहाँ बहुत-सी झीलें हैं, अनेकों जहाज़ रात-दिन चला करते हैं। लाखों रुपए का व्यापार होता है। इन जहाज़ों की गति तथा स्थान जानने के लिये कालिंस ने एक मशीन बना डाली। इस मशीन को नेवीगोमीटर (Navigometer) कहते हैं। इस मशीन में एक नक़्शा लगा है, जिस पर भिन्न-भिन्न जहाज़ों का मार्ग चित्रित है तथा तारों की पंक्तियाँ भी हैं जो घड़ी के सदृश मशीन के द्वारा धीरे-धीरे चलती हैं। इनकी गति लगभग ११ मील प्रति घंटे रहती है। इसी गति से जहाज़ इन झीलों में चलते हैं।

ज्यों ही रेडियो के द्वारा समाचार मिलता है कि

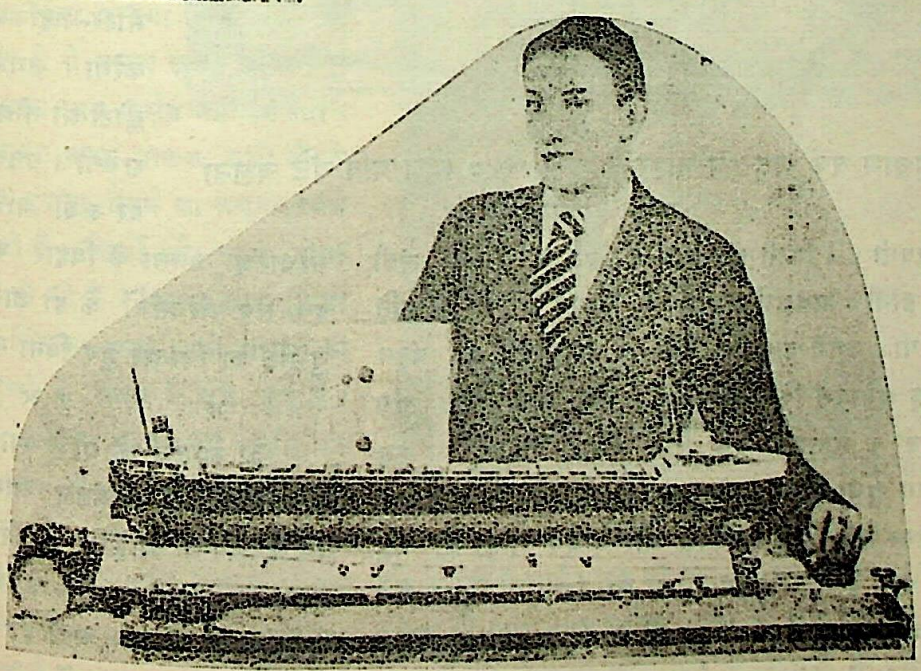

"जहाज़ो ! अपनी गति का हिसाब कालिंस के 'नवोगोमीटर' को देते जाओ ।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमुक जहाज़ ने अमुक बंदर-स्थान से अमुक स्थान को प्रस्थान किया, उसी समय कार्लिस एक छोटे-से गोले को एक तार से लगाकर नक़्शे के बंदरगाह से मशीन द्वारा चलाता है। समयोपरांत यह गोला निर्दिष्ट बंदरगाह के पास पहुँचकर एक तार को छूता है। तत्काल ही विद्युत् का घेरा (Circuit) पूरा होते ही 'नेवीगोमीटर' के नक़्शे पर प्रकाश होता है। यदि उस बंदरगाह पर वास्तविक जहाज़ उस समय नहीं पहुँचता, तो कार्लिस समझ जाता है कि आब-हवा के आक्रमण ने जहाज़ के पथ में रोड़े अटकाए हैं।

× × ×

२. सन् १९७९ ई० में मोटर का क्या होगा ?

संसार के विलास-स्थल की अधिष्ठात्री तथा आवश्यकता की प्रधान सहायिका मोटर में गत पचास वर्षों में अनेकों परिवर्तन हुए और अगले पचास वर्षों में भी अनेकों उलट-फेरों की संभावना है। मोटरों के कला-विशारद भविष्य की मोटरों का धुँधला चित्र खींचने में लगे हुए हैं। सर हेनरी सेग्रेव का संभवनीय स्वप्न है कि सन् ७९ में साधारण मोटर-गाड़ियों की लंबाई बढ़

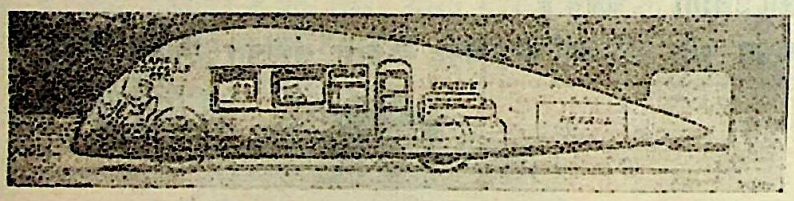

पचास वर्ष बाद इस मोटर के द्वारा १५० मील प्रति घंटे चलना सरल हो जायगा।

जायगी। वे किसी हालत में २०-२५ फ़ुट से कम लंबी न होंगी। अधकटी मछली के समान उनकी आकृति होगी। उनमें वायुयान-विद्या के सिद्धांतों का बहुत कुछ समावेश किया जायगा। लैंप तथा अन्य अंग गाड़ी के भीतर ही ढके रहेंगे, केवल पहियों का कुछ भाग खुला रहेगा। मोटर-वाहक गाड़ी की नाक के पास भीतर बैठा रहेगा। पिट्रोल और एंजिन गाड़ी की पूँछ के पास होंगे। गुरुत्वाकर्षण का खिंचाव ख़ूब नीचे होगा। परंतु शहर के कार्यों के लिये मोटर-गाड़ियों की लंबाई-चौड़ाई बहुत घटा देनी पड़ेगी।

गाड़ी की सामग्री में भी उचित परिवर्तन हो जायगा। शायद इतने दिनों तक काँच का उपयोग तो करना ही पड़ेगा, परंतु लोहे के स्थान में हल्की तथा मज़बूत धातुओं का उपयोग तेज़ी से होने लगेगा। ड्यूरेलूमन तथा इसी तरह की मिश्रित धातुएँ काम में लाई जायँगी। 'टायर' का क्या होगा, यह अभी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वर्तमान टायर ३०० मील प्रति घंटे की गति की रगड़ को सह सकता है। पिट्रोल को शायद रास्ता पकड़ना पड़ेगा, उसके स्थान में चार आने गेलन के हिसाब का 'डीसल तेल' उपयोग में लाया जायगा। आराम और सुविधा के लिये कम-से-कम १५० मील प्रति घंटे की गति से मोटर चलानी पड़ेगी। १०० मील प्रति घंटे की गति तो मामूली गति कहलाएगी। परंतु इस गति से गाड़ियाँ चलाने के लिये नई तरह की सड़कें बनवानी होंगी। सड़कों की साधारण चौड़ाई १०० फ़ुट करनी होगी। क्योंकि वर्तमान काल में ५० फ़ुट चौड़ी सड़कों में ही कठिनता पड़ती है। ये सड़कें विद्युत् के प्रकाश से ख़ूब ही धवलित होंगी। चौरास्तों पर विद्युत् के प्रकाश के सिगनल होंगे। गति के बाधक नियमों को नाश करना पड़ेगा।

धीरे-धीरे लगभग २५ वर्षों में मोटर-साइकिलों का कोई उपयोग न करेगा। लगभग डेढ़ हज़ार रुपयों में छोटी-सी तीव्र गतिवाली मोटर मिल सकेगी। धनवान् व्यक्ति हवाई जहाज़ों पर लंबी यात्रा किया करेंगे। मोटर साधारण जनता के विहार की सामग्री हो जायगी। इन सब परिवर्तनों के हो जाने से अंतरराष्ट्रीय सद्भावना का विस्तार हुए बिना नहीं रहेगा।

× ×

३. सौंदर्य के पीछे साढ़े तीन हज़ार

प्रत्येक का मुखमंडल भाग्य का मूल है। कुछ व्यक्ति अपनी आकृति के कारण घृणास्पद होता है। वस्त्रों से सजाने तथा पाउडर और रँग पोतने पर भी आकृति में परिवर्तन नहीं हो सकता। अतएव विदेशों में सौंदर्य-सुधार-आगारों की बड़ी तेज़ी से वृद्धि हो रही है। सौंदर्य-विद्या का निपुण सर्जन रास्ते से आने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाले प्रत्येक चेहरे को देखता है, उसे अपने विज्ञापनों द्वारा भीतर बुलाता है, और सौंदर्य के पागलों से सैकड़ों रुपए ऐंठ लेता है।

लीजिए, नई नाक के लिये आपको साढ़े सात सौ रुपए ख़र्च करने पड़ेंगे। केवल दस मिनट में आप

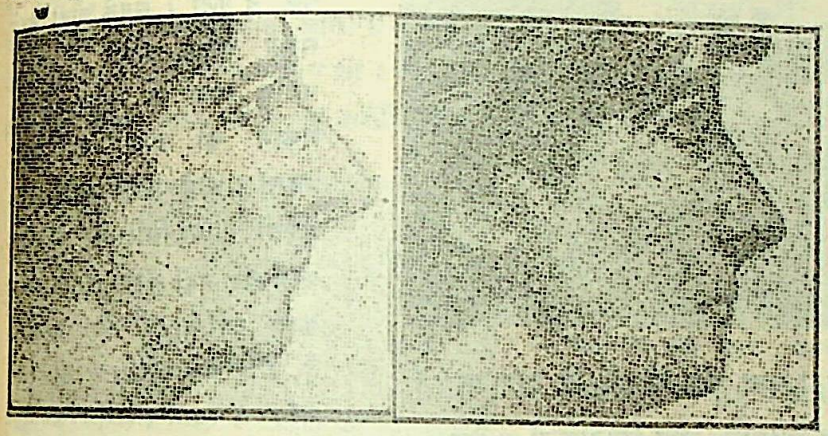

पहले का नाक

की टेढ़ी-भद्दी नाक साँचे-सी ढली सुंदर निकल पड़ेगी। सौ रुपयों में आपके लंबे-लंबे कान सुंदरता की सीमा बन जायँगे। साढ़े सात सौ और ख़र्च करने पर आँखों के नीचे की झुर्रियाँ हवा हो जायँगी। यदि आप और साढ़े सात सौ रुपए ख़र्च करना चाहें, तो चूहे के बिल-सा मुख लंबा बना दिया जायगा।

आज सौंदर्य की दौड़ में ये सज्जन ख़ूब रुपया पैदा कर रहे हैं। सुबह से शाम तक फ़ुर्सत नहीं मिलती। अमीर तथा ग़रीब, युवक तथा बालक, सभी दौड़ते हुए आते हैं। सभी की इच्छा सौंदर्य का नमूना बनने की हो रही है। ठीक भी है। स्त्रियाँ और पुरुष, दोनो ही एक बात के दीवाने हो रहे हैं। विज्ञान की सहायता से प्रकृति के दाग़ों को मिटाकर सभी अपने आदर्श की चरम सीमा पर पहुँचने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। वास्तव में कुरूप व्यक्ति वर्तमान सभ्यता में प्रकृति का एक फोड़ा-मात्र है, जिसका संसार-नाटकालय में रहना केवल घृणा और दुःख का कारण है। हिंदोस्तान को भी चाहिए कि वह पीछे न रहे। कॉलेजों में तो हमारे युवक-युवतियों ने अपने शृंगार से सौंदर्य की प्रतिमा बनना शुरू कर ही दिया है।

×

बाद का भी दीखए ज़रा

×

४. मकान भी चल सकते हैं

अमेरिका में नए-नए सुधारों के कारण लोगों को अपने स्थानों को बदलना पड़ता है। कभी कोई सड़क चौड़ी की जाती है, तो उसके दोनो ओर के मकानों को दूर करने की आवश्यकता आ पड़ती है, और कभी सौंदर्य एवं सुविधा के कारण लोग अपने घरों को दूसरी जगह ले जाना चाहते हैं। सब सामग्री तो आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान को जा सकती थी। यदि कहीं आपत्ति थी, तो वह मकानों के संबंध में। बड़े-बड़े सात-सात मंज़िलों के मकानों को ले जाने की बात भी इंजीनियरों

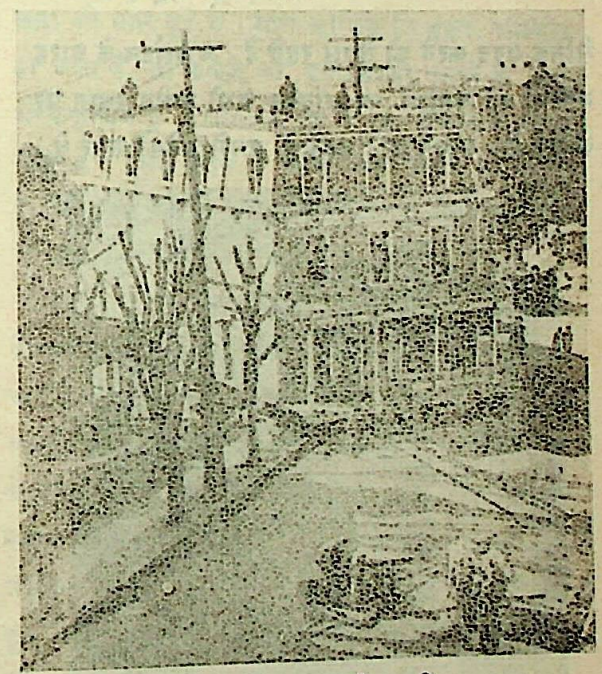

३२ कमरे का मकान आध मील की यात्रा कर यहाँ आया।

के दिमाग़ में आई। अब तो यह कार्य बड़ा सरल हो गया है। हाँ, ख़र्च बहुत अधिक पड़ता है, परंतु फिर भी वह मकान को तुड़वाने और फिर से बनवाने की अपेक्षा लाखवें अंश के बराबर भी नहीं होता। विज्ञान के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

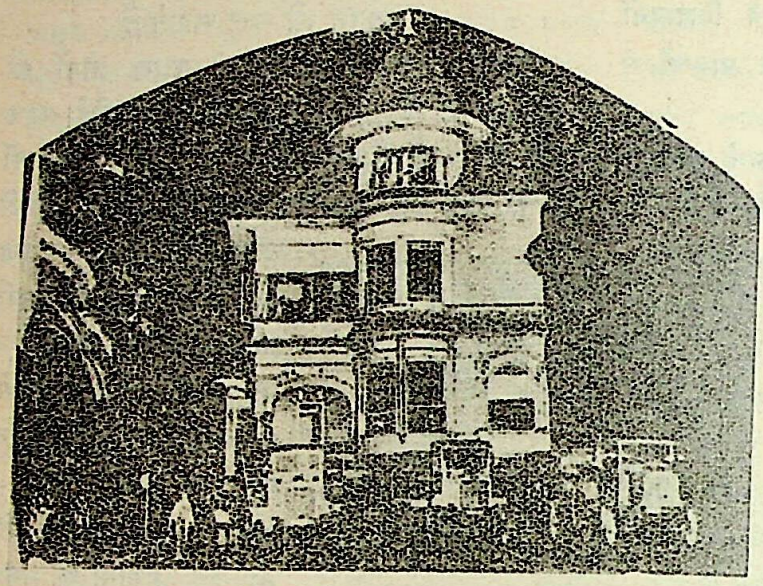

यह मकान दो हिस्सों में काटा गया और मोटरों के द्वारा अपने नवीन स्थान पर पहुँचा। मेहमान लोग खिड़कियों में बैठे आनंद लूट रहे हैं।

लासएंगिल्स (केलीफ़ोर्निया) का एक ८० फ़ुट लंबा मकान भय नींव के बारह मील की दूरी पर हटा दिया गया, और आश्चर्य तो यह है कि उसकी खिड़की का एक काँच तक न फूटा। सड़कें चौड़ी करते समय धनिक लोगों के मकान नवीन स्थलों पर पहुँच जाते हैं। मकान को ख़ाली नहीं करना पड़ता। कोई चीज़ उठानी नहीं पड़ती। घर-गिरिस्ती का कोई कार्य बंद नहीं करना पड़ता। सब काम ज्यों-का-त्यों चलता रहता है, और मकान भी अपनी धीमी गति से स्थान-परिवर्तन कर लेता है। इस सफलता के दो प्रधान कारण हैं। एक तो यह है कि वहाँ के प्रायः समस्त मकान बिल्कुल पक्के रहते हैं, और मज़बूती से बनाए जाते हैं, दूसरे वहाँ बड़े-बड़े इंजीनियर वैज्ञानिक विधियों के द्वारा सहायता करने को तैयार रहते हैं। बड़े-बड़े मकान ही क्यों, छोटे-छोटे मकान सैनिक मदद करने को तैयार रहते हैं। चार्ल्सटन के बारह मकानों को जहाज़ों पर लादकर अभी नवीन स्थान पर ले गए हैं। मकान छोटे नहीं थे, उनमें अनेकों कमरे थे।

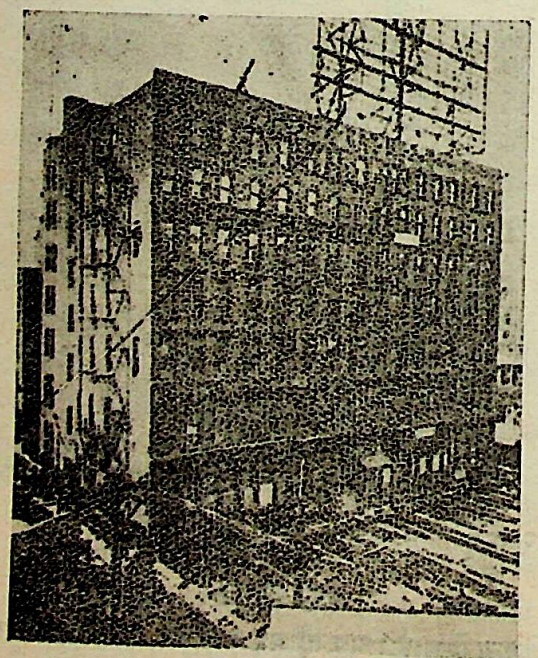

सात मंज़िल की इमारत शिकागो में चलती दृष्टि-गोचर हुई। एक ईंट नहीं हिली, तथा एक काँच नहीं टूटा।

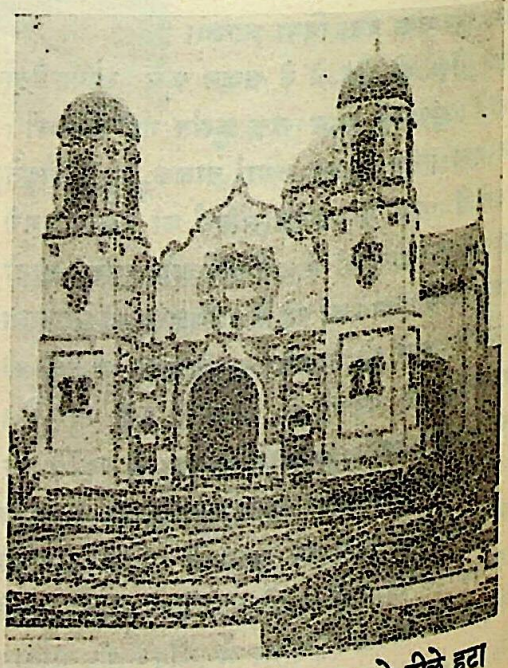

यह गिरजाघर अपने स्थान से पीछे हटा दिया गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी बैलों के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर घसीट-कर ले जाए जाते हैं।

× × ×

५. निमोनिया-रक्षक

निमोनिया कितनी भयंकर बीमारी है, सभी जानते हैं। इसके चुंगल में फँसकर मुक्ति पाना सरलकार्य नहीं है। वह जीवन को लेकर ही जाती है। एक आठ सप्ताह का बच्चा निमोनिया से पीड़ित था। रोग असाध्य अवस्था में पहुँच चुका था। वह टोरेंटो कैनाडा के

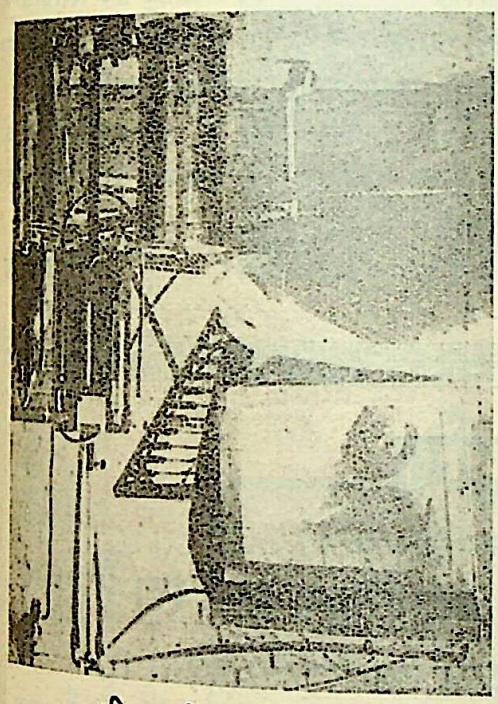

जीवन को बचानेवाला

अस्पताल में लाया गया। वह ओषजन के तंबू में रखकर मरने से बचा लिया गया। बच्चा अपने नेत्रों से उस स्वयं-संचालित यंत्र की ओर देखता था। मृत्यु से बचने के इस साधन के लिये आविष्कारक को मानव-जाति क्या पुरस्कार दे सकती है?

× × ×

६. मरे भी ज़िंदा कहलावेंगे

वैद्यक-विज्ञान ने कई पथों में उन्नति की है। रोगों के कारणों का पता लगाया; उनके नष्ट करने की दवाइयों का आविष्कार किया। अब कुछ वर्षों से मनुष्य-जीवन को बचाने के नए मार्ग की ओर पाश्चात्य-जगत् का ध्यान गया है। मनुष्य-शरीर की लोग मशीन से उपमा तो बहुत दिनों से देते चले आ रहे हैं, बीच-बीच में ईश्वर की कृति के अटल प्रेमी इस उपमा को बहुत ही अनुचित कहकर आँखें दिखाया करते थे, परंतु अब परीक्षाओं से ज्ञात हो चला है कि शरीर की आंतरिक मशीन को मशीन कहना ही उचित है।

एक मोटर के एंजिन का कोई अंग बिगड़ जाता है, तो एंजिन कार्य करना बंद कर देता है, परंतु इतना होने पर कोई एंजिन को कोई फेंक नहीं देता। उसके बिगड़े हुए अंग के स्थान में नया अंग लगा दिया जाता है, और वह पूर्ववत् काम करने लगता है। तब फिर भला शरीर-रूपी एंजिन के किसी भाग के बिगड़ जाने और उसकी अन्य क्रियाओं के बंद हो जाने पर उसे 'मरा' कहकर क्यों फेंक देते हैं? क्या विज्ञान इसमें कुछ मदद नहीं कर सकता?

इस प्रश्न के उत्तर ढूँढने में बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने अपना दिमाग़ लगाया है, और उन्हें आशातीत सफलता भी प्राप्त हुई है। मान लीजिए कि हृदय कमज़ोर हो चला है, तो कलेजे को शक्तिशाली बनाने के लिये अरडेनालिन (Ardenalin) का इंजक्शन दिया जाता है। इससे हृदय में शक्ति का संचार हो जाता है, और कुछ घंटे के बाद संसार को छोड़नेवाला व्यक्ति अधिक समय तक जी सकता है।

परंतु अब तो उन्नति और भी आगे बढ़ गई। वर्तमान वैज्ञानिक हृदय को मोटर के कारबुरेटर के समान ही समझते हैं। और फेफड़े कृत्रिम हवा साफ़ करने के यंत्र ही समझे जाते हैं। कुछ दिन हुए, डलहौसी-विश्वविद्यालय के डॉक्टर ओ० एड गिब्स ने, एक बिल्ली के हृदय के स्थान में रबर का पंप लगाकर उसे बहुत काल तक जीवित रक्खा। हाँ, यदि हृदय का न होना ही मरे हुए की निशानी है, तो अवश्य ही यह बिल्ली मरी हुई थी, परंतु अन्य सब बातों में वह जीवित थी। वह बोलती थी, चलती थी, खाती थी। कृत्रिम हृदय स्वाभाविक हृदय के समान ही कार्य करता था।

अतएव वैज्ञानिक का कथन है कि यदि हृदय एक बार धोका दे सकता है, तो वह सुधर जाने पर फिर भी धोका देगा। इस आपत्ति से बचने के लिये एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कृत्रिम हृदय को लगा लेना अच्छा है। यह आवश्यकता पड़ने पर अलग किया जा सकता है।

हावर्ड-विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर फ़िलिप ड्रूकर और ए० शाह ने भी एक विचित्र यंत्र बनाया है, जो मनुष्यों के लिये साँस लेने में मदद करता है, और समय आने पर ख़ुद उनके लिये साँस लेता है। न्यूयार्क के अस्पताल में इन्हीं वैज्ञानिकों की बनाई हुई मशीन कृत्रिम साँस के द्वारा मनुष्य-जीवन बचाने के काम में आती है, इसके द्वारा विद्युत् के धक्के से, गैस के विष से, धुएँ के असर से, पानी में डूबने से तथा अन्य सैकड़ों प्रकार से होनेवाली मृत्युओं के मुख में पड़नेवाले प्राणी बच जाते हैं।

रोगी एक बिल्कुल बंद नली में रक्खा जाता है। केवल उसका सिर उसके बाहर रहता है। यद्यपि देखने में वह बिना धड़ का प्राणी अवश्य दीखता है, पर वह सब प्रकार से सुखी रहता है। नली के अंदर हवा के दबाव को घटा-बढ़ाकर साँस का संचालन आरंभ कर दिया जाता है।

इसी तरह एक रशियन वैज्ञानिक ने कुत्ते के एक सिर को कृत्रिम हृदय और कृत्रिम ख़ून के द्वारा बहुत काल तक जीवित रक्खा। उस कुत्ते के सिर ने अपनी आँखें खोलीं और सक्खन खा गया। तीन घंटे तक उसने सब प्रकार की परीक्षाओं के द्वारा यह सिद्ध अर्थ बतला दिया कि वह मरा नहीं है।

एक युवती का जीवन भी यंत्र के द्वारा अधिक काल तक जीवित रक्खा जा सका। इन सब परीक्षाओं से एक उज्ज्वल भविष्य का आभास दिखता है। आशा की एक किरण हमारे जीवन को प्रकाशित करती है। अब अधिक काल नहीं है, जब मानव-एंजिन को सुचारु-रूप से रखने में विज्ञान की मशीनें मदद करेंगी।

नाथूराम शुक्ल

योग-दर्पण

[लेखक, लाला कन्नोमल एम्० ए०]

छपकर तैयार हो गया ! हाथोहाथ बिक रहा है !!

शीघ्रता कीजिए, वर्ना दूसरे संस्करण तक ठहरना पड़ेगा।

योग-शास्त्र एक अद्भुत, अमूल्य, अनूठी एवं अनुपम संपत्ति है। इसका प्रचार पहले भारतवर्ष में इतना अधिक था कि इसी के बल पर वह सारे जगत् पर शासन करता था—जगत् का गुरु था। पर जबसे इसके योग-बल का ह्रास हुआ, तबसे वह अपने गौरव-पूर्ण उच्च पद से गिर गया। अस्तु। योग-विद्या, हमारे और हमारी संतान के लिये, नितांत आवश्यक है। इसी अभिप्राय से इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। यह पुस्तक पातंजल योग-सूत्रों, श्रीव्यासभाष्य और वाचस्पति मिश्र की वृत्ति के आधार पर लिखी गई है। पुस्तक की भूमिका में प्रायः उन सभी बातों का समावेश किया गया है, जो योग-दर्शन से संबंध रखती हैं, और जो आधुनिक गवेषणा से मालूम हुई हैं। पुस्तक के अंत में आठ परिशिष्ट लगे हैं, जिनमें योग-सिद्धांत पूर्ण रीति से समझने के लिये पर्याप्त सामग्री है। पुस्तक सर्वांग-पूर्ण है। यदि भू-मंडल की सभ्य जातियों पर अपने गौरव और महत्त्व का सिक्का जमाकर आध्यात्मिक तथा भौतिक स्वराज्य प्राप्त करना है, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। मूल्य १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

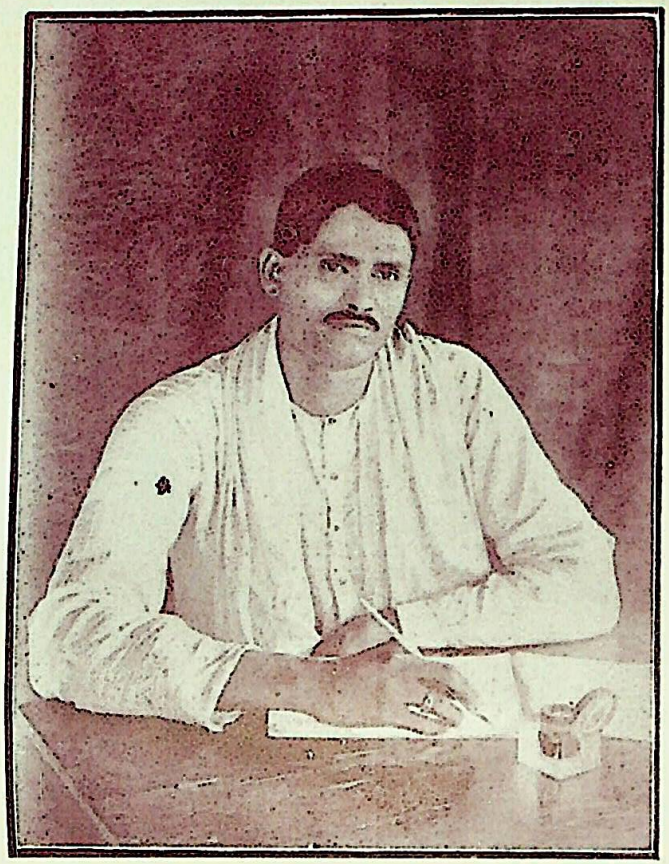

स्वर्गीय श्रीकौशलेंद्रजी राठौर

[आप सुधा के सुपरिचित कवि थे। हाल ही में आपका एक अग्नि-कांड से देहांत हो गया है।]

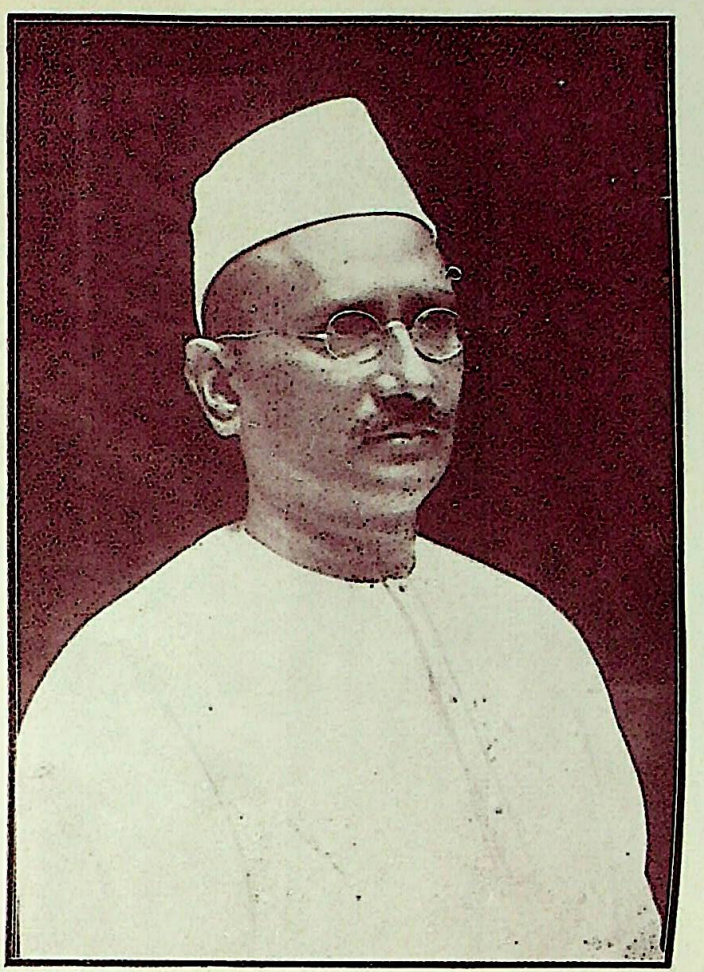

श्रीबैजनाथजी केडिया

[हिंदी के लेखक, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी और वणिक्-प्रेस के मालिक केडियाजी को सत्याग्रह-संग्राम में १ वर्ष की जेल हुई है।]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

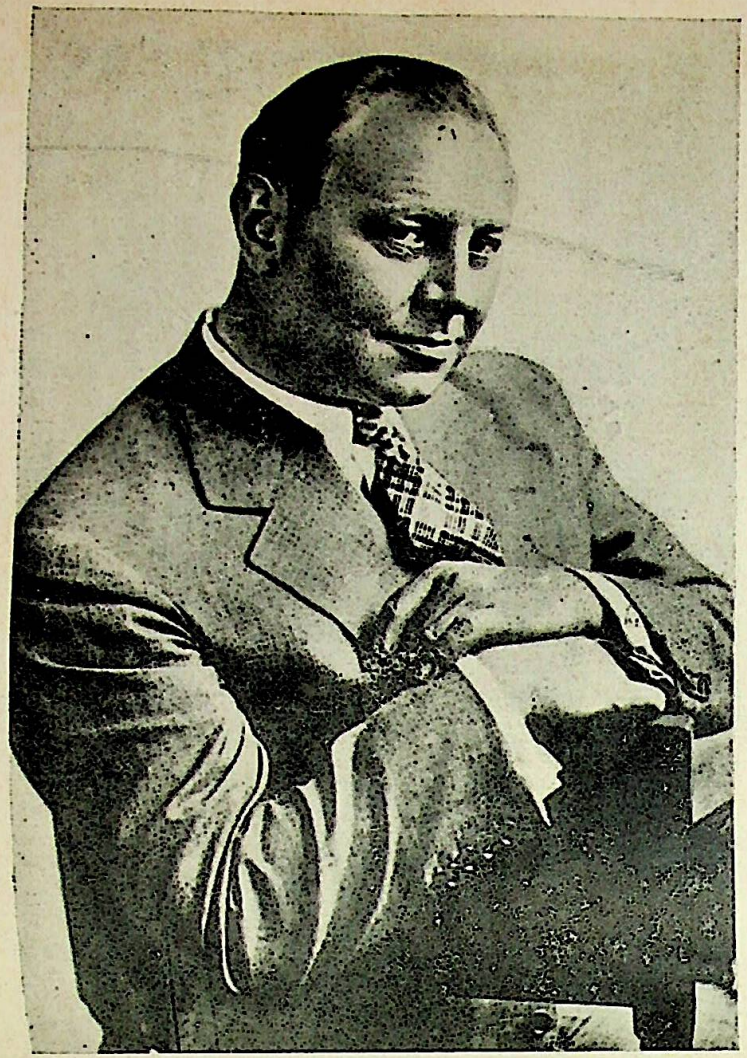

श्रीएमिल जेनिंग्ज

[आप जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता हैं । आप 'वॉडेविले'-नाटक जगत्-प्रसिद्ध छाया-चित्र के कारण ही पहले-पहल सिनेमा-जगत् के सामने आए थे ।]

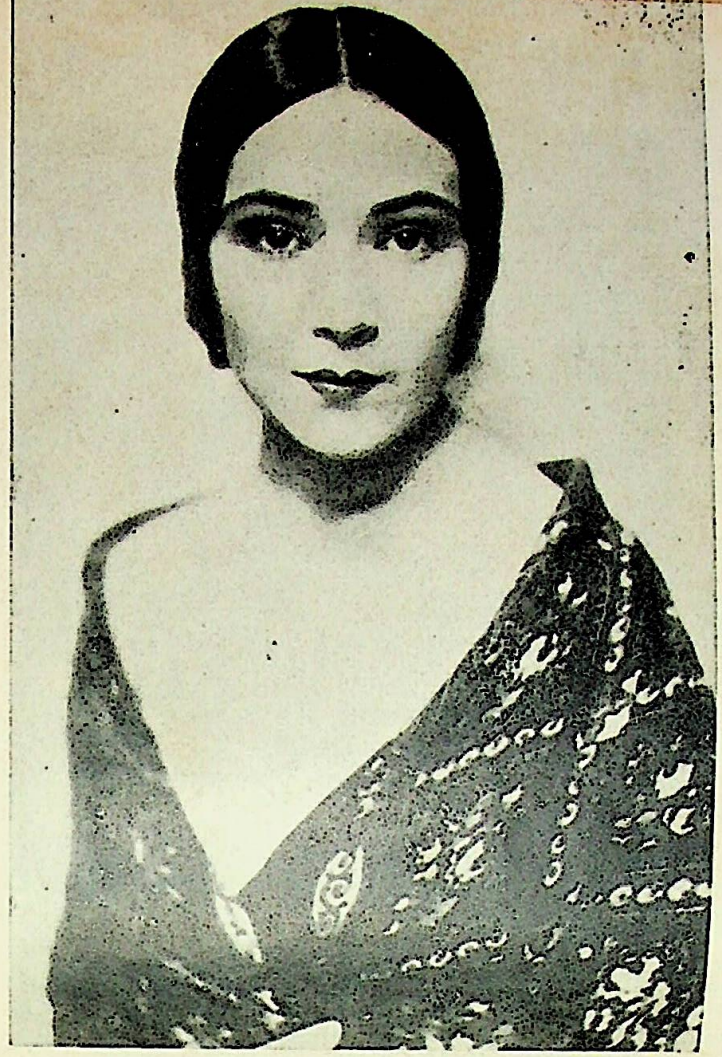

श्रीमती दोलोरेस देल रियो

[आप स्पेन की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री हैं । अनेक सुंदर छाया-चित्रों में अपने सफल अभिनय, शारीरिक गठन की सुंदरता तथा मनमोहक हाव-भाव के कारण आपने योरप तथा अमेरिका में अच्छी ख्याति प्राप्त की है । टॉल्स्टाय की प्रसिद्ध कहानी 'रिसरेक्शन' के अभिनय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

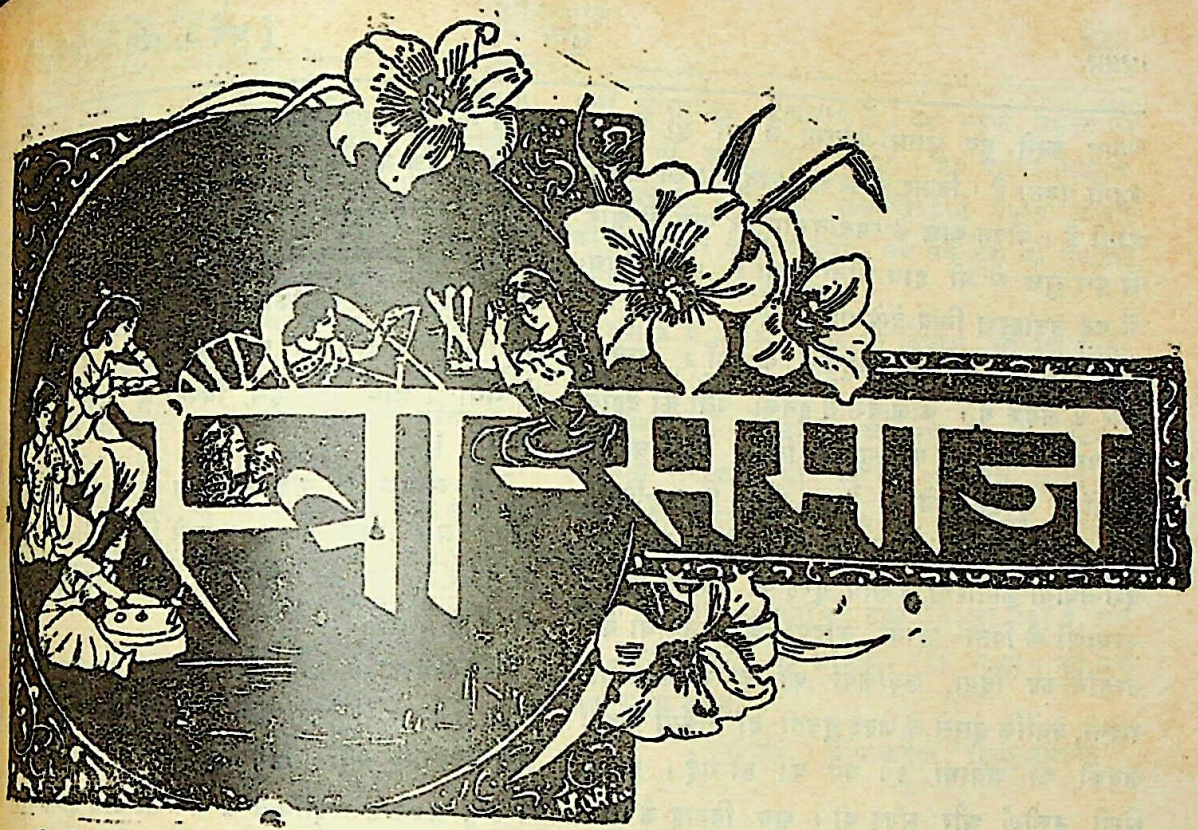

स्त्रियों पर अत्याचार का अंत कब होगा ?

जाति को अनेकों कष्टों का सामना करना पड़ता है। यह कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी कि स्त्री-जाति में जन्म लेना किन्हीं कुकर्मों का फल है। बलवान् जातियाँ निर्बलों को सता रही हैं, पुरुष और स्त्री के संबंध में भी प्रायः यही देखा जाता है।

स्त्री दुःखों को सहन करने के लिये, सेवा में तन-मन न्योछावर करने के लिये, बलवानों की ओर से अत्याचार भोगने के लिये ही पैदा हुई प्रतीत होती है। मनुष्य के लिये खाना, पीना, भोग करना जहाँ स्वाभाविक है, वहाँ वर्तमान समय में स्त्रियों को हर तरह से कुचलना भी स्वाभाविक हो गया है। इन दुःखों का अंत कभी होगा, यह पता नहीं। निरपराधिनी सती सीता गर्भावस्था में घर से निकाल दी गई। किस दोष के लिये ? प्रेम-व्रत निभाएँ, तो स्त्रियाँ ; वैधव्य को भोगें, तो स्त्रियाँ ; पति-सेवा, मातृ-सेवा, पुत्र-सेवा सबके लिये इसी जाति का कर्तव्य है। कर्तव्य-पालन इन्हीं के लिये रह गया है। हाय ! बालपन से लेकर वृद्धावस्था-पर्यंत पराधीनता सहन करते हुए ही व्यतीत हो जाता है। जब राम के समय में यह अवस्था थी, तब २०वीं सदी में जो कुछ हो, कम है।

यह युग स्वार्थ-प्रधान है। सबको आपा-धापी पड़ी हुई है। स्वार्थांधता में पारस्परिक प्रेम-संबंध गौण हो गया है। जहाँ प्रेम न हो, वहाँ जीवन का उत्तरदायित्व निभाना और भी दुस्तर है। स्त्री-जाति इस विषय में तो निरी पराश्रित है। उसे सुख और चैन कहाँ ? यद्यपि वह घर की सेवा करती है, परंतु पति के धन पर अधिकार रखना, उसकी मूर्खता है। उसका परम धर्म सेवा है। वह दासी-मात्र है।

मैं नहीं समझती, इस निरंतर पाशविक अत्याचार का भविष्य में क्या परिणाम होगा। देखने में तो दो ही मार्गों का अवलंबन दिखाई देता है। एक तो घुल-कर मर मिटना, दूसरा परस्पर प्रतिशोध का भाव लेकर स्वच्छंद होना। किस भाव की ओर अधिक झुकाव होगा, कहा नहीं जा सकता। सुधारक स्वयं विचारें। परिणाम छिपा नहीं।

दहेज़ की कुप्रथा और कुछ सभ्यता के प्रभाव ने स्त्रियों पर अत्याचार बहुत बढ़ा दिए हैं। समाज-स्थिति का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान करते हुए कुमारी-अवस्था में यों ही दबकर रहना पड़ता है। विवाह के पश्चात् स्वतंत्रता की आशा होती है। यौवन-काल के व्यतीत होने पर पति की ओर से इस सुख से भी हाथ धोना पड़ता है। इस संबंध में कई उदाहरण नित्य देखे जाते हैं।

वज़ीराबाद में एक साहूकार के यहाँ ५ कन्याएँ और ४ लड़के थे। काल-वशात् इनकी पत्नी का देहांत हो गया। साहूकार की गृहस्थी बिगड़ गई। घर की स्त्रियों ने दूल्हा बनने की प्रेरणा की। विधवा-विवाह पाप ठहरा। बिरादरी में चर्चा होगी। अंत में एक अष्टा-दश-वर्षीया कुमारिका के साथ दूल्हे का विवाह हुआ। कन्याओं के पिता पुरानी रूढ़ियों के अनुयायी थे। उन्होंने कह दिया, लड़कियों को दूध-घी से वंचित रखना, क्योंकि इससे वे जल्द युवती हो जायँगी। बड़ी लड़की की अवस्था १४ वर्ष की हो गई। वह ३ श्रेणी उत्तीर्ण और सुंदर थी। अब विवाह के लिये देख-भाल शुरू हो गई। इतनी लड़कियों के नाम सुनते ही वर-पक्षवाले घबरा जाते। तिस पर सौतेली माता! बहुत खोज के बाद एक ग्रैजुएट तैयार हुए। यह महोदय सौंदर्योपासक थे। माता-पिता को विवाह के लिये राज़ी कर लिया। वाग्दान हो गया। कुछ दिन बाद विवाह भी हो गया। कन्या चाव में थी कि ब्याही जाऊँगी, विपदाओं का अंत हो जायगा। विवाह हुआ। दुलहिन ससुराल आई। वर की माता का मुँह फूल गया। पुत्र ने कुछ दिन परवाह नहीं की। रगड़ते-रगड़ते पत्थर भी घिस जाता है। रोज़ कान भरे जाते थे। भाग्य ने पलटा खाया!

एक दिन दुलहिन रोटी बना रही थी। पकौड़े तलते हुए घी के छींटे मुँह पर आ पड़े। मुँह सदा के लिये दाग़ी हो गया। वर महोदय तो कमान की तरह बाँके रहने लगे। बात-बात पर पत्नी को झिड़कियाँ मिलतीं। यौवन का अंत प्रारंभ हो गया। अब मारने की नौबत पहुँची। ज़रा क़सूर हुआ नहीं कि जान पर आफ़त बन गई।

एक दिन दुलहिन को तेज़ ज्वर हो गया। वर के घर लौटने पर माता ने कहा, तुम्हारी बहू तो सारा दिन कपड़े ओढ़े पड़ी रहती है। बड़ी कामचोर है। तुम्हीं ने सिर पर चढ़ा रक्खा है। इतनी बात के सुनते ही पुत्र ने लिहाफ़ उतारकर फेंक दिया, और कहा—"हरामज़ादी, जब से ब्याही है, घर-भर को सता रक्खा है। उठ, बर्तन माँज।" लाचार जैसे बन पड़ा, वधू ने उठकर बर्तन-चौका किया। फिर बिस्तर पर लेट गई। रात-भर होश न रहा अगले दिन निमोनिया हो गया। चौथे दिन इस विपदा से सदा के लिये छूट गई।

यह समाज की पतित-अवस्था का एक आँखों-देखा नग्न-चित्र है। इस प्रकार न-जाने कितने जीवन नित्य नष्ट होते हैं। इन अत्याचारों को सुनकर किसके रोंगटे नहीं खड़े होते।

हिंदू-समाज ने स्त्रियों के लिये एक ही आदर्श बना रक्खा है। घर में बैठकर बिना किसी उद्देश्य के जीवन व्यतीत करना, और बच्चे पैदा करना। जिनके संबंध में उन्हें अपने उत्तरदायित्व के लेने का बोध होना नहीं सिखाया जाता। फलतः संतान में भी नैतिक अथवा सामाजिक दुर्बलता आ जाती है। पति की आज्ञा मानकर पशु-भावनाओं की ही साधना बनी रहना ही भले-मनसाहत की हद समझी जाती है। इन अत्याचारों के हटाने का प्रयत्न समाज की ओर से बिलकुल ही नहीं हो रहा। गृहस्थी में स्त्री एक कठपुतली-सी बन गई है।

विधवाओं के आँसुओं का प्रवाह प्रति दिन बढ़ता जाता है। घर की छोटी-सी सीमा में बँधी हुई स्त्रियाँ आज अपने अधिकार, अपना गौरव, देश तथा समाज के प्रति अपना कर्तव्य, सब भूली हुई हैं। अनाथ अत्याचारों का प्रतिकार कोई नहीं करता। अनाथ अबलाएँ चुपचाप आँसुओं को पीकर रह जाती हैं। उनका जीवन नीरस और अभिशाप का जीवन बन रहा है। उन्हें शिक्षा ही इस प्रकार की दी जाती है, जिससे वे घर की कूप-मंडूक ही बनी रहें। सामाजिकपुधारों से स्त्रियाँ स्वतंत्रता न प्राप्त कर लें। बतलाइए, ये बातें स्त्री के अंधकार-जीवन में तारकोल पोतने का काम कर रही हैं या नहीं। सिर झुकाए सारे दिन बैठे रहना ही उनका धर्म है। इससे आत्मा का सर्वोत्तम विकास बंद हो जाता है। उनके इस भोलेपन का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाम गुंडे उठाते हैं। राष्ट्र की स्वतंत्रता की उपासना में उनका क्या अधिकार है। बिना स्त्रियों के स्वाधीन हुए जागृति नहीं हो सकती। समाज की नृशंसता स्त्री-जाति की बुद्धि भ्रष्ट कर रही है। भारत सदियों से गुलामी भुगत रहा है। प्रत्येक बलवान् यही चाहता है कि निर्बल को दबाऊँ। ठीक दासों ने दासियाँ ही बना दीं! जो जीवन घर की स्वतंत्रता नहीं प्राप्त कर सकता, वह सार्वभौमिक स्वतंत्रता कब प्राप्त करेगा?

उस जाति के धर्म की साधना भी ढोंग है। सच्चा धर्म इस समय स्त्रियों के सब प्रकार के बंधन ढीले कर देना है। उन्हें शिक्षा की ज्योति से निर्मल कर दीजिए, जिससे देश की सब कामनाओं की सिद्धि हो। स्वतंत्र सुखी जीवन बाह्य स्वतंत्रता से तृप्त होकर संसार का भी कल्याण करेगा।

रूढ़ियाँ कभी धर्म नहीं होतीं। वे एक समय की बनी सामाजिक शृंखलाएँ हैं। वह पहले समाज की मर्यादा थीं, अब ज़ंजीरें हो गईं। अब उनकी बिल्कुल आवश्यकता नहीं। जब तक स्त्रियों में नवीन जीवन की स्फूर्ति भर नहीं जायगी, तब तक देश की गुलामी का नाश नहीं हो सकता।

समाज में प्रत्येक व्यक्ति को विकास की पूर्ण स्वतंत्रता और सुविधा होनी चाहिए। इसी सिद्धांत के अनुसार स्त्रियों को भी पूरे अधिकार मिलने चाहिए। स्वाधीन महिलाएँ ही सदाचार-शासन में समर्थ हो सकती हैं। संसार में जिस प्रकार पुरुष का अस्तित्व या स्थान है, उसी प्रकार स्त्री का भी। क्या उसमें पुरुषों की तरह आत्मा का ठीक विकास नहीं है, तब उसे आत्म-विकास का अधिकार क्यों न हो। वह कब तक ज़ुल्म सहेगी?

(कु०) गोपालदेवी "हिंदी-प्रभाकर"

शीघ्र आवश्यकता है

१—हिंदी की अद्वितीय पत्रिका सुधा तथा गंगा-पुस्तकमाला की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के प्रचार के लिये कुछ ऐसे मिडिल-पास लड़कों की जो १००) की नक़द ज़मानत दे या दिला सकें। १०) मासिक वेतन और हेडक्वार्टर से बाहर होने पर १०) मासिक ख़ूराक और साथ में सफ़र-ख़र्च, जो १०) मासिक से अधिक न हो, दिया जायगा।

२—कुछ ऐसे हिंदी-प्रेमी और उत्साही नवयुवकों की जो ५००) की नक़द ज़मानत दे या दिला सकें। यू० पी०, सी० पी०, बिहार और राजपूताना में से किसी एक प्रांत में इन्हें पुस्तकों के प्रचार का आयोजन करना होगा। २५) मासिक वेतन और हेडक्वार्टर से बाहर होने पर छः आना रोज़ ख़ूराक और साथ में सफ़र-ख़र्च, जो १०) मासिक से अधिक न हो, दिया जायगा।

३—कुछ ऐसी पढ़ी-लिखी स्त्रियों की, जो १००) या ५००) की नक़द ज़मानत दे या दिला सकें। नगरों में घूमकर और घरों में जाकर इन्हें पुस्तकें बेचनी और सुधा के ग्राहक बनाने होंगे। वेतन योग्यतानुसार २०) से ४०) तक दिया जायगा।

ज़मानत के रुपए पर १२) सैकड़ा प्रतिवर्ष सूद दिया जायगा। अपनी जाति, आयु, योग्यता और अनुभव का उल्लेख करते हुए नीचे-लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। सार्टीफ़िकेट कोई हो, तो उसकी नक़ल भी भेजें।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, २३-२५, लाटूशरोड, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

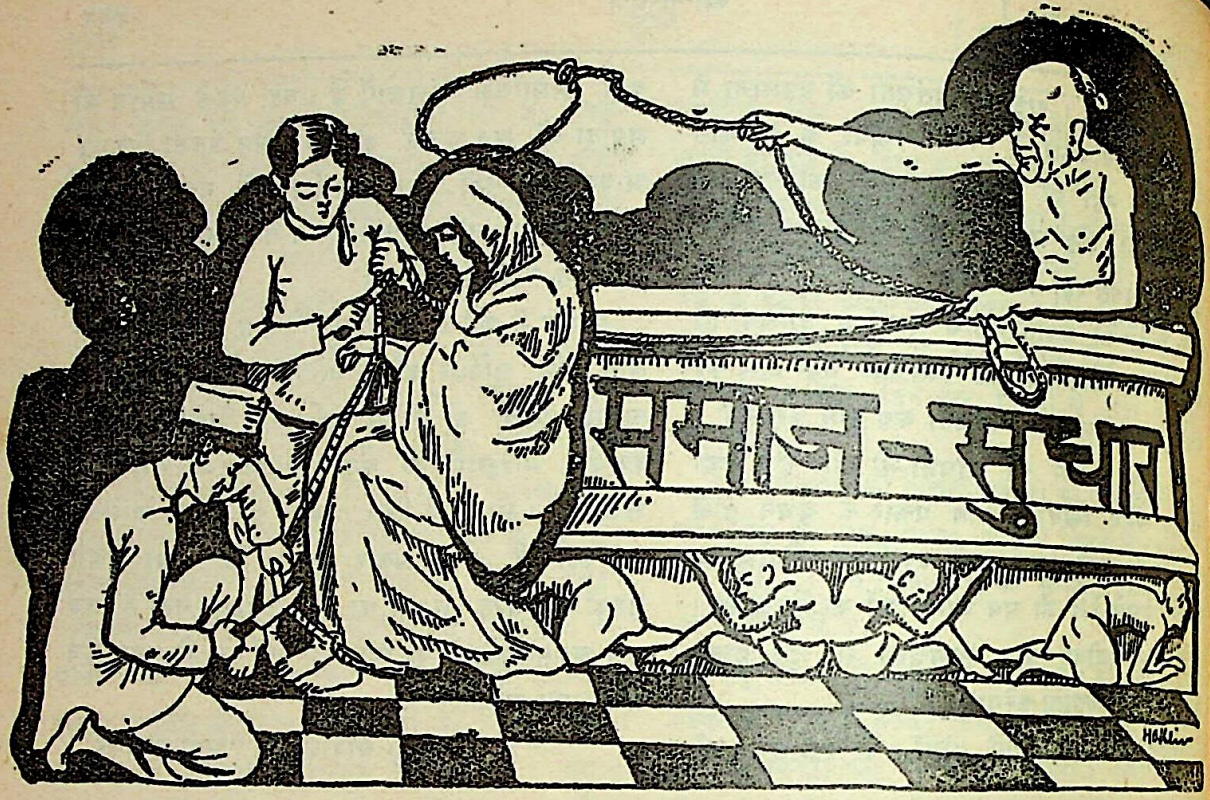

शुद्धि

पिछले लेखों में हम बता चुके हैं कि हिंदू-समाज-रूपी शरीर के भीतर कौन-कौन-से दोष हैं, और उन्हें किस प्रकार दूर किया जा सकता है। परंतु कुछ बाहरी दोष भी हैं, जिनका उल्लेख इस लेख में किया जायगा।

इसमें संदेह नहीं कि भीतरी दोषों के दूर होने से शरीर बहुत कुछ आरोग्य रह सकता है। परंतु स्वस्थ शरीर का संबंध केवल अपने से ही नहीं होता। उसका संबंध संसार की भिन्न-भिन्न वस्तुओं से है। ईश्वर ने संसार में कोई वस्तु भी अकेली नहीं बनाई। सबको एक दूसरे के साथ संबलित कर दिया है। इसका परिणाम यह है कि एक का प्रभाव दूसरे पर पड़ा करता है। पर्वतों का नदियों से, नदियों का सूर्य से, सूर्य का पर्वतों से, पर्वतों का वनस्पति से, वनस्पति का पशुओं से, पशुओं का मनुष्यों से, मनुष्यों का फिर नदियों और पर्वतों से संबंध है। इस प्रकार सभी वस्तुएँ शृंखला में बँधी हुई हैं, और हिंदू-जाति भी उनमें से एक है।

सृष्टि के आरंभ में जब ईश्वर ने इस जाति का निर्माण किया, तो इसको एक विशेष सभ्यता दी, और एक विशेष आदर्श दिया। उस समय इस जाति को आर्य-जाति कहते थे, जिसका वर्णन हम गत अध्याय में कर चुके हैं। अन्य कोई जाति उस समय उपस्थित न थी। आदर्श संसार की भलाई और मोक्ष की प्राप्ति था, और इसका साधन था वैदिक सभ्यता। मोक्ष-प्राप्ति में केवल अपना ही व्यक्तिगत मोक्ष अभीष्ट न था, किंतु प्रत्येक का कर्तव्य था कि वह ऐसी सभ्यता का प्रचार करे जिससे प्रत्येक जीव मोक्ष के मार्ग में उन्नति करे। सभ्यता से गिरनेवालों का नाम दस्यु था, और आर्यों का कर्तव्य था कि दस्युओं को आर्य बनावें। इसके लिये वेदों में अनेक उपदेश हैं, जैसे—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय, चार्याय, च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु। (यजुर्वेद अ० २६। मंत्र २)

ईश्वर उपदेश देता है कि जैसे मैंने तुमको वेद की कल्याणी वाणी का उपदेश दिया है, उसी प्रकार तुम भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अपने-पराए सभी को वेदों का उपदेश करो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या। (अथर्व०)

अर्थात् आर्यों को चाहिए कि दूसरों के साथ ऐसा बर्ताव करें, जैसे गाय अपने नए जने बच्चे के साथ करती है। अर्थात् उसके मल को अपनी जीभ से दूर करती और अपना अमृतमय दूध पिलाती है। इसी प्रकार प्रत्येक को दूसरों के साथ बर्ताव करना चाहिए, अर्थात् पहले तो दूसरों के दोषों को दूर करने का प्रयत्न करें, फिर उनके पालन-पोषण का प्रबंध करें। यह शिक्षा लगभग वही है जो महर्षि दयानंद-निर्मित आर्यसमाज के नीचे-लिखे नियम में दी हुई है—"संसार की भलाई करना इस समाज का मुख्य कर्तव्य है, अर्थात् शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना।"

इस शिक्षा से प्रेरित होकर आर्य-जाति ने संसार-भर का पर्यटन किया। प्रत्येक देश में अपनी बस्तियाँ बसाईं। अपनी "मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्" (सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखो)-नामक उदार सभ्यता का प्रचार किया। मनुष्य-मात्र से ही नहीं, किंतु पशु-पक्षी से भी प्रेम करना सिखाया। गीता का "शुनि चैव श्वपाके च पंडितः समदर्शिनः।" उपदेश इसी शिक्षा का फल था।

उस समय आर्य लोग सभ्यता के संरक्षक थे, और जहाँ-कहीं असभ्यता अपना पग जमाती थी, वहाँ जाकर उसका निराकरण करते थे। ब्राह्मणों का कर्तव्य था कि संसार के किसी कोने में भी अविद्या के अंधकार को न जमने दें। क्षत्रियों का कर्तव्य था कि अपने बल से भले आदमियों की रक्षा करें। वैश्यों का कर्तव्य था कि दरिद्रता को फैलने न दें। आर्यों को 'दस्युता' से घृणा थी, परंतु दस्युओं से घृणा न थी। यदि वह कभी दस्युओं का हनन करते थे, तो उसी समय, जब उनकी दस्युता संक्रामक रोग का रूप धारण कर लेती थी। आर्य-ब्राह्मण देश-देश में चक्कर लगाया करते थे, और वहाँ के मनुष्यों को उनके कर्तव्यों से सचेत करते रहते थे। मनुस्मृति में लिखा है—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

अर्थात् इस सबसे पहले उत्पन्न हुए देश की संतान से संसार के सभी मनुष्य शिक्षा ग्रहण किया करते थे।

एक समय आया कि उस युग का अंत हुआ, और नया युग आया। इस युग के आगमन में भी बहुत काल लगा होगा। इस काल में क्या-क्या परिवर्तन हुए, उन सबका यथोचित कहना तो कठिन है, परंतु वैदिक साहित्य की सब युगों की पुस्तकों के देखने से पता चलता है कि आर्य-जाति आज से कई सहस्र वर्ष पूर्व पतनोन्मुख हो चली थी।

सबसे पहला परिवर्तन यह हुआ कि आलस्य और स्वार्थ के कारण जब आर्य-जाति ने देखा कि किसी विशेष देश के निवासी दस्यु हो गए अर्थात् उन्होंने वैदिक सभ्यता को त्याग दिया, तो आर्य-जाति ने अपना हाथ खींच लिया। उनमें प्रचार न किया। "चलो जाने दो, हमें क्या, जैसा करेंगे, वैसा भरेंगे।" कहकर उनसे उदासीन हो गई। अर्थात् जो घृणा अब तक "दस्युता" से थी, वह "दस्युओं" से हो गई। इस प्रकार उन देशों में जो कुछ आर्य शेष रह गए थे, उनको भी अनार्यों ने बलात्कार अनार्य कर लिया। और आर्यों की घृणा, मिथ्या अभिमान, और उदासीनता, के कारण वह 'अनार्य' या 'अवैदिक' कहलाना ही अपने लिये अच्छा समझने लगे।

परंतु अभी एक अच्छी बात थी। वैदिक सभ्यता का सूर्य संसार-भर से सिमटकर दीपक के रूप में केवल आर्यावर्त की चार-दीवारियों में ही बंद हो चुका था, परंतु इस देश में उसका प्रकाश पूर्ण रूप से था। यहाँ यज्ञ-हवन होते थे। शास्त्रों का अध्ययन होता था, और क्षत्रिय क्षात्र-धर्म का पालन करते थे। विदेश से आनेवाले अनार्यों को असभ्यता के झोंके उसको हानि नहीं पहुँचा सकते थे। परंतु इस अवस्था का अंत होना भी स्वाभाविक था। जब संकुचित भाव आरंभ हो गए, तो उनका रुकना मुश्किल था। भारतवर्ष के रहनेवालों में भी एक दूसरे के प्रति घृणा उत्पन्न हुई। भिन्न-भिन्न वर्णों के आदर्शों में भेद हुआ। आपस में कलह रहने लगी। एक वर्ण की दूसरे वर्ण से खुल्लमखुल्ला लड़ाइयाँ हुईं, जिनका कुछ प्रमाण गाथाओं के रूप में परशुराम और क्षत्रियों के युद्ध की गाथा से मिलता है। यह बताना मुश्किल है कि यह दुर्घटना कब हुई, परंतु प्रतीत होता है कि एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समय था, जब ब्राह्मण और क्षत्रिय अपने-अपने आधिपत्य के लिये युद्ध करते थे। फिर कुछ दिनों पीछे वैश्यों को नीच ठहराया गया, क्योंकि उनमें शारीरिक बल कम हो गया था, और सभ्यता के कम होने से शारीरिक बल की ही अधिक पूछ थी। ब्राह्मण लोग क्षत्रियों को हराते भी थे, तो ब्राह्म-बल से नहीं, किंतु "परशु" अर्थात् शारीरिक बल से। फिर शनैः-शनैः शारीरिक बल का इतना प्रभाव हो गया कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस" हो गई। वैश्यों की बहुत-सी कोटियों को शूद्र समझा जाने लगा। बहुत-से शूद्र अंत्यजता को प्राप्त हो गए। अनेकों स्मृतियों में भिन्न-भिन्न जातियों की ऊँच-नीचता का जो विधान मिलता है, वह इसी अधम युग से संबंध रखता है।

इस उथल-पुथल का एक ही प्रभाव होना था, अर्थात् आर्य-जाति की निर्बलता। पहले तो विदेश अनार्य हुए, परंतु देश आर्य रहा, और अनार्यों के आक्रमणों का निराकरण करता रहा। अब देश में भी अनार्यत्व घुसा। उसने देश के आर्यों को निर्बल कर दिया। नाम के लिये तो यह आर्य थे, परंतु आर्य-जाति संगठित न थी, जैसा कि पृथ्वीराज और जयचंद के समय में। इस समय अनार्यों के जो आक्रमण हुए, उनका आर्य-जाति सामना न कर सकी। और अनार्य लोग भिन्न-भिन्न नामों से देश में आने लगे।

सिकंदर के समय जो विदेशी भारतवर्ष में आए, उन्होंने आर्यों को इतना प्रबल तो न पाया कि विदेशियों का यहाँ प्रवेश ही न होता, परंतु तब भी आजकल की अपेक्षा अच्छे थे। उनमें कुछ-कुछ वैदिक सभ्यता बनी हुई थी। इसलिये जब विदेशी आए, तो यहीं बस गए, और उन्होंने भी इस सभ्यता को ग्रहण कर लिया।

(अपूर्ण)

गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए०

बाल-नीति-कथा

(दो भाग)

यह पुस्तक हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के प्रिंसिपल और प्रो-वाइस चांसलर श्री ए० बी० ध्रुव एम्० ए०, एल्-एल्० बी० की लिखी हुई है। आपने महाराजा साहब बड़ोदा के आज्ञानुसार बड़ोदा-राज्य की पाठशालाओं के लिये इस ग्रंथ की, गुजराती में, रचना की थी। पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०, अध्यापक लखनऊ-युनिवर्सिटी ने इसका हिंदी-अनुवाद किया है। पुस्तक कितनी उच्च कोटि की है, और बालकों के चरित्र पर इसका कितना अच्छा असर पड़ेगा, इसका अनुमान इसी से किया जा सकता है कि विद्वान् लेखक इस विषय के प्रकांड पंडित हैं, और चरित्र-गठन-संबंधी पुस्तकें लिखने के लिये आपसे बड़ा अधिकारी इस देश में मुश्किल से मिलेगा। पुस्तक दो भाग में है। प्रत्येक भाग का मूल्य १।) है। दोनों का मूल्य २॥), सजिल्द ३॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

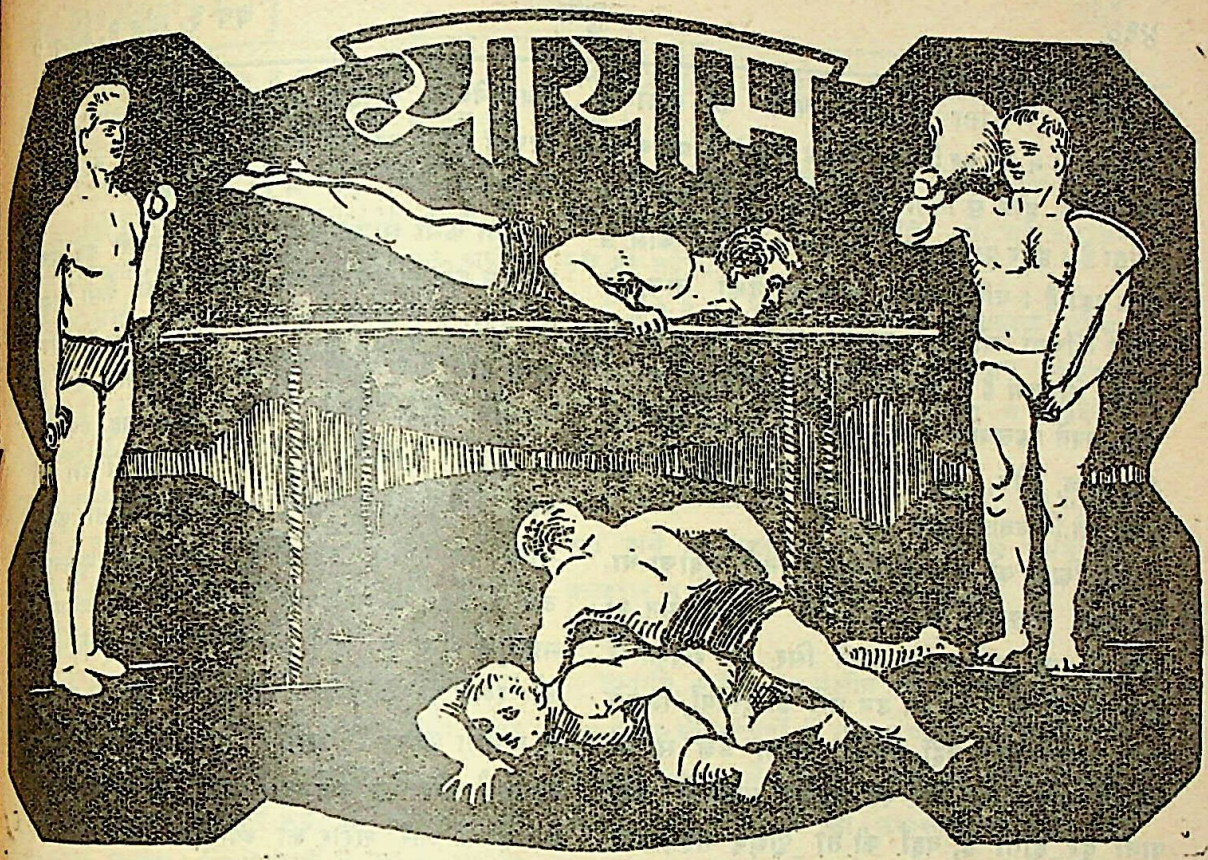

स्त्रियों के व्यायाम

(२)

घरेलू व्यायाम

पानी भरना

"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।"

वेद कहता है—

"देवैर्दत्तेन मणिना जङ्गिडेन मयोभुवा ।
विष्कन्धं सर्वा रक्षांसि व्यायामे सहामहे ।"

(अथर्व २ । ४ । ४)

अर्थ—(देवैः) देवतों द्वारा दिए हुए (मणिना) मणि के समान अतिश्रेष्ठ (मयोभुवा) आनंद देने-वाले (जङ्गिडेन) रोगों के भक्षक (व्यायामे) व्यायाम में (विष्कन्धं) विघ्न और (सर्वा) सब (रक्षांसि) राक्षसों को (सहामहे) हम दबा दें ।

सारांश यह कि व्यायामशील बनकर हमें सब विघ्नों का तथा दुष्ट जनों का बल के साथ सामना करके उन्हें नाश कर देना चाहिए । दुष्टों का नाश और आत्म-रक्षा के लिये व्यायाम एक अत्यंत आवश्यक कार्य है । ऐसे महत्त्व-पूर्ण कार्य की ओर से आज हमारा स्त्री-समाज एकदम उदासीन हो गया है । फ़ालतू व्यायाम का तो ज़िक्र ही क्या है, घरू काम-धंधों को भी छोड़-कर वे बिलकुल अकर्मण्य हो रही हैं । कुएँ, तालाब या नदियों से पानी भरकर लाना, चक्की पीसना, अन्न कूटना, पशुओं की सानी आदि कामों को स्त्रियाँ नीच कर्म समझने लगी हैं । ऐसा समझना नादानी है ! भूल है !!

कुओं से पानी भरकर लाना बुरा और निंदनीय काम नहीं है । घर के लिये पानी भरना स्त्रियों का ही काम है । इसके लिये वेद साक्षी है—

"एमा अगुर्योषितः शुंभमाना उत्तिष्ठ नारि तवसं रभस्व ;
सुपत्नी पत्या प्रजया प्रजावत्यात्वागन् यज्ञः प्रति कुंभं गृभाय ।।"

(अथर्व ११ । १ । १४)

अर्थात्—हे नारी ! उठ, खड़ी हो (तवसं) बल (रभस्व) लाभकर (कुंभं) घड़ा (प्रतिगृभाय) ले, और घर का कार्य कर । इस मंत्र में स्पष्ट झलक रहा है कि जो स्त्रियाँ घर के ख़र्च के लिये कुएँ से या नदी आदि से पानी भरकर लाती हैं, वे बलवान् हो जाती हैं । परंतु स्त्रियों का यह व्यायाम हमारे "वाटर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्क्स" (Water works—पानी की कलों के महकमे) ने नष्ट कर दिया। बड़े-बड़े शहरों के प्रत्येक घर में नल के होने से बिना किसी श्रम के ही जल मिल जाता है। इधर परदानशीनी भी स्त्रियों को इस काम से रोक रही है। यदि विचार के साथ देखा जाय, तो पानी खींचना और उसे उठाकर लाना एक बड़ा ही अच्छा व्यायाम है। स्वर्गीय महाराजा खंडेराव गायकवाड़ अपने पहलवानों से अपने सामने मेहनत लेते थे। दंड, बैठक, दौड़, कुश्ती की तरह वे उनसे कुएँ का पानी भी खिंचवाया करते थे।

जब स्त्रियों को आलस्य-देवता ने नहीं दबोचा था, तब देखा जाता था कि गृह-देवियाँ मन-डेढ़ मन का पानी से भरा हुआ बर्तन अपने सिर पर रखकर ले जाया करती थीं। अब भी उन घरों की देवियाँ, जिनमें पानी भरना बुरा नहीं समझा जाता, जल से भरे बड़े-बड़े पात्र अपने सिर पर रखकर लाती हैं। जहाँ पानी दूर होता है, वहाँ की तो पूछिए नहीं, उन्हें काफ़ी श्रम हो जाता है। आराम-तलब स्त्रियाँ या नए फ़ैशन की कठपुतलियाँ इस तरह के कामों को बुरा समझती हैं। पानी का भरा हुआ बर्तन सिर पर रखकर लाना तो दूर रहा, उनसे टेनिस खेलने के रेकेट्स, जिनमें १३-१४ औंस वज़न होता है, नहीं उठाए जाते। हल्के-हल्के रेकेट लेकर टेनिस खेलने को ही आजकल की "लेडी-फ़ैशन" स्त्रियाँ व्यायाम समझती हैं। परंतु स्मरण रहे, घर के पानी भर लाने से यह टेनिस का व्यायाम कदापि श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता।

हम देखते हैं कि स्त्रियों के लिये टेनिस-क्लबों की स्थापना की जा रही है; किंतु प्रथम तो यह व्यायाम उतना उत्तम नहीं जितना कि जल भरना है; दूसरे सभी स्त्रियाँ न तो टेनिस खेलती ही हैं, और न खेल ही सकती हैं। क्योंकि इस खेल में पैसे का ख़र्च है, जिसका भारत-जैसे दरिद्र देश में प्रचार होना ही भयानक पाप है। इसलिये टेनिस आदि के खेल हमारे देश के लिये घातक हैं। कुएँ से पानी भरकर लाने में कुछ भी ख़र्च नहीं होता। घर का काम हो जाता है और उत्तम व्यायाम भी हो जाता है। टेनिस के लिये रेकेट चाहिए, जाल चाहिए, गेंदें चाहिए, अच्छी भूमि चाहिए, खिलानेवाले चाहिए, इत्यादि अनाप-शनाप ख़र्च भी ख़र्च हैं। इस पर भी इससे उतना श्रम नहीं होता, जितना कि पानी भरने में हो जाता है।

क्या कभी आपने कुओं से पानी भरती हुई स्त्रियों को इस दृष्टि से भी देखा है कि उनको कैसी मेहनत हो जाती है? अगर ध्यान से देखा होगा, तो आपने पाया होगा कि पानी खींचते वक़्त समस्त अंगों की परिचालन-क्रिया होती है। उस समय वह एक तरह का युद्ध-सा होता है। कुएँ में का पानी से भरा हुआ बर्तन रस्सी-सहित पानी भरनेवाले को तो कुएँ के भीतर ले जाना चाहता है, और पानी भरनेवाला उसे खींचकर बाहर लाना चाहता है। एक प्रकार का मल्ल-युद्ध होता है। ज़रा भी शिथिलता आई कि बर्तन और रस्सी कुएँ में! पानी खींचते वक़्त पैरों को मज़बूती से जमाना पड़ता है, रस्सी को हाथों से मज़बूत पकड़ना पड़ता है और फिर वज़नदार बर्तन को खींचना पड़ता है। इससे सारे शरीर को व्यायाम मिल जाता है। हाथों का व्यायाम तो हो ही जाता है, परंतु साथ ही सिर, गर्दन, पेट, छाती, पीठ, नितंब आदि अंगों को भी पूरी थकावट आ जाती है। रस्सा-खिंचाई के व्यायाम से जो-जो लाभ होते हैं, उनसे कहीं अधिक लाभ पानी भरने के काम से होते हैं, मुट्ठियाँ मज़बूत, कलाइयाँ पोढ़ी और बाहें सुडौल बन जाती हैं। जो व्यायाम "डॅम्बल्स" के द्वारा होता है वही पानी खींचने से हो जाता है। छाती और फेफड़ों के लिये इस काम से बहुत फ़ायदा पहुँचता है। सैंडो के "चेस्ट एक्सपांडर्स" के व्यायाम से जो फ़ायदा पहुँचता है, वही लाभ पानी खींचने से होता है। जिन नगरों में "वाटर वर्क्स" की कृपा से नल हो गए हैं, वहाँ तो दूसरे प्रकार के व्यायाम की आवश्यकता है, किंतु जहाँ नल नहीं है वहाँ तो स्त्रियों को चाहिए कि घर का पानी अवश्य अपने हाथों भरना आरंभ कर दें।

चक्की पीसना

देश धीरे-धीरे आराम-पसंद होता जा रहा है। भारतवासियों की धारणा हो चली है कि मेहनत करना ओछा काम है। जो मेहनती है, वह बड़ा आदमी नहीं है। आजकल के ज़माने में बड़ा आदमी वही है, जो खाकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पड़े रहने के सिवा दूसरा काम न करता हो, यहाँ तक कि उनके पाखाने में लोटा भी दूसरा ही मनुष्य रख देता हो। ऐसे बड़े घरों की देवियाँ, सूर्योदय के घंटे-भर बाद शय्या से उठती हैं और उठते ही चाय-देवी की आराधना में लग जाती हैं। इसके बाद शौच-स्नान आदि कार्य में भी उन्हें आलस्य आता है। जैसे-तैसे इस दूसरी काम से निबटकर भोजन करके गुदगुदे गद्दों पर पड़ी रहती हैं। परिणाम यह होता है कि शरीर वायु से फूल जाता है अथवा चर्बी बढ़कर बेडौल बन जाता है। सैंडो का कहना है—"ऐसी स्त्रियों के स्नायु ढीले पड़ जाने के कारण शरीर निर्बल बन जाता है। ऐसी स्त्रियों के लिये योग्य नियमित व्यायाम की अत्यंत आवश्यकता है। परंतु जो हमेशा घर के धंधों में लगी रहती हैं, उन्हें उनके कामों से सारे शरीर को बराबर व्यायाम मिलता है। इसलिये उन्हें अन्य किसी प्रकार के व्यायाम की आवश्यकता नहीं होती।"

व्यायाम के प्रसिद्ध आचार्य सैंडो के इस कथन पर विचार करना चाहिए। स्त्रियों के लिये घरेलू धंधे ही उनका काफ़ी व्यायाम है। परंतु इस ज़माने में प्रत्येक नगर और क़स्बों में आटा पीसने की कलें (Flour Mills) मौजूद हैं। उनमें आटा बारीक पिस जाता है, पिसने में समय भी नहीं लगता और सस्ता भी पिसता है। भला फिर क्यों न मशीन में पिसाया जाय। यह सब कुछ तो है, पर इसके द्वारा होनेवाले नुक़सान की ओर कोई ध्यान ही नहीं देता! मैं यहाँ कुछ दोष दिखाना चाहता हूँ—

(१) आटा बहुत महीन पिस जाने से पचने में भारी हो जाता है।

(२) आयल एंजिन घासलेट के तेल से चलने के कारण उस आटे में घासलेट के परमाणु मिल जाते हैं।

(३) चक्की की रफ़्तार तेज़ होने के कारण पत्थर का चूरा आटे में अधिक मिल जाता है।

(४) मशीन की तेज़ रफ़्तार के कारण गरमी उत्पन्न होकर आटा गरम हो जाता है, जिससे आटे का सत्व जल जाता है, और वह आटा शक्ति-हीन हो जाता है।

(५) मशीन से पिसे हुए आटे से जो पदार्थ बनाए जाते हैं, वे सुस्वादु, सुंदर और पौष्टिक नहीं होते।

(६) बहुत-सी अनाथ और विधवा स्त्रियाँ, जो आटा पीसकर अपना पेट भरा करती थीं, अब बे-रोज़गार हो गई हैं।

(७) वे गृह-देवियाँ जो नित्य प्रातःकाल उठकर चक्की पीसा करती थीं, अब सूर्योदय तक निश्चिंत सोती रहती हैं, और चक्की का व्यायाम न मिलने से निर्बल होती जा रही हैं।

(८) नगरों की गली-गली में चक्की की मशीनें लग जाने से मोहल्ले-भर में घासलेट के जलने का बदबूदार धुआँ फैलकर लोगों के स्वास्थ्य को बर्बाद करता है।

इत्यादि, अनेक दोष मशीन की चक्कियों में हैं। परंतु हमारे घर की चक्कियों में उक्त दोष एक भी नहीं पाया जाता। जब से घरेलू हाथ की चक्की का बहिष्कार किया गया, तभी से स्त्रियों का उषःकाल का उठना छूट गया। प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व ब्राह्म-मुहूर्त में उठना कितना लाभदायक है, इसके विषय में महान् नीतिकार चाणक्य ने कहा है—

"कुचैलिनं दन्तमलोपधारिणं बह्वाशिनं निष्ठुरभाषिणं च ;
सूर्योदये चास्तमिते शयानं विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणिः।"

(अ० १५ । ४)

अर्थात्—मैले कपड़ेवाले, मैले दाँतोंवाले, बहुत खानेवाले, कटुभाषी और सूर्य के उदय तथा अस्त समय तक सोनेवाले को लक्ष्मी छोड़ देती है, फिर भले ही वह विष्णुजी ही क्यों न हों। मनुजी ने भी कहा है—

"ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिंतयेत्।"

अर्थात्—मनुष्य को ब्राह्म-मुहूर्त में शय्या त्याग देनी चाहिए। आगे चलकर कहा है कि यदि सोते हुए सूर्य उदय हो अथवा अस्त हो, तो दिन-भर और रात्रि-भर भोजन न करे। वेद आज्ञा देता है—

"यावन्तो मा सपत्नानामायन्तं प्रतिपश्यथ ;
उद्यन्त्सूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे।"

(अथर्व १७ । १३ । २)

अर्थ—(द्विषताम्) उन वैरियों का (वर्चः) तेज (आददे) मैं लिए लेता हूँ (इव) जैसे (उद्यन्)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदय होता हुआ (सूर्य) सूरज (सुप्तानाम्) सोनेवालों का। अर्थात् सूर्योदय तक सोनेवालों का तेज सूर्य हरण कर लेता है। इस घरू चक्की पीसने के व्यायाम के बंद हो जाने से हमारे स्त्री-समाज को बड़ा भारी नुक़सान यह उठाना पड़ता है कि वे तेज-हीन होती जा रही हैं।

चक्की चलाना एक बड़ा ही अच्छा व्यायाम है। इससे हाथों और छाती को ख़ूब व्यायाम मिलता है। पीठ के स्नायु भी इसके द्वारा शुद्ध हो जाते हैं। जिन स्त्रियों को चक्की चलाने का काम पड़ता है, वे ही इसके लाभ-हानि को जानती हैं। चक्की के साथ गाए जानेवाले गीत अब बहुत कम सुनने में आते हैं। प्रभात में प्रभातियाँ अब सुनाई नहीं देतीं। चक्की एक प्रकार का व्यायाम है, इसे सब जानते हैं, किंतु इस व्यायाम के द्वारा सैकड़ों रोग भी हटाए जा सकते हैं। प्रातः-स्मरणीय महात्मा गांधीजी की "फ्लूरसी"-नामक बीमारी चक्की पीसने से ही दूर हुई थी। स्वर्गीय पढ़ियारजी का कहना है कि "क्षय-रोग का सबसे उत्तम उपाय चक्की पीसने का व्यायाम है।"

हम देखते हैं कि ऐसे उत्तम घरेलू व्यायाम से आज स्त्रियाँ मुँह छिपाने लगी हैं। मशीनों से पिसा हुआ आटा खाकर अपना, अपने पति तथा पुत्रों का स्वास्थ्य नष्ट करना उन्हें स्वीकार है, किंतु घर में स्वास्थ्य-प्रद आटा पीसकर खाना स्वीकार नहीं !!! इससे अधिक दुःखदायी बात और क्या हो सकती है? हम अपनी गृह-लक्ष्मियों का ध्यान चक्की के व्यायाम की ओर आकर्षित करते हैं, और आशा करते हैं कि वे ऐसे उत्तम कार्य को फिर अपने हाथों में लेंगी। इसमें एक पंथ दो काज होता है। "आम-के-आम और गुठलियों के दाम" इसी का नाम है। व्यायाम भी हो जाता है और भोजन बनाने के लिये उत्तम स्वास्थ्य-दायक आटा भी पिस जाता है। बहनो! समझो, सोचो और मशीन से पिसे आटे को त्यागो। ख़ुद चक्की चलाओ, और उससे लाभ उठाओ।

कूटना

चक्की पीसना जिस तरह स्त्रियों के लिये स्वास्थ्य-दायक कार्य है, उसी तरह कूटना भी एक अच्छा व्यायाम है। चावल, जौ, बाजरा आदि अन्न प्रायः कूटकर काम में लाए जाते हैं। ज्वारी वग़ैरह भी कूटी जाती हैं। प्राचीन काल में लोग चावलों को छिलके-सहित घर में रक्खा करते थे, और रींधने से पहले छिलके उन्हें कूट-फटककर तैयार कर लेती थीं। आजकल स्त्रियों को धान कूटने में आलस आता है। जब कभी ज़रूरत पड़ती है, बाज़ार से चावल मँगाकर भात रंध लिया जाता है। ऐसे बाज़ारू चावल निःसत्व और बेस्वाद होते हैं। बाज़ारू चावलों को धोना जरूरी होता है, और चावलों को धोने से उनका मीठास और बलदायक तत्व बर्बाद हो जाता है। जापानी लोग चावलों को कभी नहीं धोते। जब उन्हें भात बनाना होता है, तो वे चावलों को कूटकर उसका छिलका निकाल डालते हैं और बिना धोए रींधकर खाते हैं। इधर भारत में आलस बढ़ रहा है। बाज़ार से चावल लाकर पकाए जाते हैं। स्त्रियों ने कूटना, पीसना बंद-सा कर दिया है। छोटे-छोटे गाँवों की रहनेवाली बहनें तो अभी तक चावल, जौ, बाजरा वग़ैरह कूटी हुई देखी जाती हैं, इसी कारण वे नगर की स्त्रियों से अपेक्षा हृष्ट-पुष्ट, बलवान् और नीरोग होती हैं। बड़े-बड़े शहरों की दशा तो बहुत ही दया के योग्य हो गई है।

स्त्रियों को चाहिए कि कूटने के धंधे को गुण समझें। घर में इस तरह का अन्न यदि न भी आता हो, तो उसे अवश्य मँगावें और अपने हाथों कूटकर साफ़ किया करें। वेद कहता है—

"शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा आपश्चरुमवसर्पन्तु शुभ्राः।
अदुः प्रजां बहुलान् पशून्नः पक्वोदनस्य सुकृतामेतु लोकम्॥"
(अथर्व ११।१।१७)

अर्थ—(शुद्धाः) शुद्ध (पूताः) पवित्र (शुभ्राः) उत्तम वर्णवाली (यज्ञिया) पूज्य (इमाः योषितः) ये स्त्रियाँ (आपः चरुं) अन्न-जल के कार्य में (अवसर्पन्तु) प्राप्त हों। (ओदनस्य पक्वाः) भात आदि पकानेवाले (सुकृतां) उत्तम काम करनेवालों के (लोकं) स्थान को (एतु) प्राप्त हों।

तात्पर्य यह कि अन्न को पकाने योग्य तैयार करना स्त्रियों का काम है। जौ, बाजरा, चावल आदि पहले कूटकर शुद्ध किए जाते हैं। अन्न कूटना कोई ऐसा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काम नहीं है। इसमें खूब मेहनत होती है। जो व्यायाम मुद्गरों द्वारा किया जा सकता है, उसी से मिलता-जुलता व्यायाम मूसलों द्वारा कूटने से हो जाता है। कूटनेवाली स्त्रियों की मुट्ठियाँ, कलाइयाँ, बाँहें और छाती मज़बूत हो जाती हैं। इसलिये अन्न कूटने का काम स्त्रियों को बड़े ही हर्ष के साथ करना चाहिए।

बाँटना

कूटने की तरह एक धंधा और है, वह है "बाँटना"। शाक, भाजी, तरकारी वग़ैरह में डालने के लिये नमक, मिर्च, मसाला नित्य ही पीसा जाना चाहिए। आजकल तो देखा गया है कि स्त्रियाँ नमक, हल्दी, मिर्चें, धनिया वग़ैरह सभी मसाले पीसकर रख छोड़ती हैं और रोज़-रोज़ के बाँटने के झंझट से बच जाती हैं। हल्दी, नमक, धनिया वग़ैरह चक्की से पीसकर रख लेती हैं। इससे बाँटने का व्यायाम, जो नित्य होना चाहिए, नहीं हो पाता। साथ ही मसाला भी उतना सुस्वादु नहीं होता, जितना कि ताज़ा पिसा हुआ होता है। पकौड़ी, मुँगौड़े, सुँगौड़ी, बरी, कचौरी आदि बनाने के लिये मूँग अथवा उड़द की दाल को भिगोकर पीसना पड़ता है। चटनी वग़ैरह भी सिल-बट्टे पर बाँटनी होती है। यह व्यायाम भी छाती और हाथों के लिये बहुत ही लाभदायक होता है। ऐसे कामों से मुँह नहीं चुराना चाहिए, बल्कि अच्छी तरह नित्य करना चाहिए।

कपड़े धोना

कपड़े धोना भी स्त्रियों के लिये एक उत्तम व्यायाम माना गया है। परंतु देखने में आता है कि बड़े घरों की स्त्रियाँ अपनी धोती तक भी नहीं धोतीं। या तो नौकर धोते हैं या धोबी आकर रोज़ ले जाता है, और धोकर दे जाता है। स्त्रियों को चाहिए, अपने कपड़े अपने हाथों ही धोया करें और अपने बच्चों के पहनने के कपड़े भी ख़ुद साफ़ किया करें। अपने पतिदेव की धोती अपने हाथों नित्य धोने में उन्हें अपना परम सौभाग्य समझना चाहिए। स्त्रियों के हाथों में चूड़ियाँ होती हैं, उनके टूट जाने के भय से वे एक छोटी-सी मोगरी द्वारा कपड़ों को कूट-पीटकर साफ़ किया करती हैं। यह मोगरी से धोने का कार्य बहुत अच्छा व्यायाम है। इस व्यायाम द्वारा अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

देव-परिक्रमा

प्राचीन समय में मंदिरों में देव-दर्शन के लिये स्त्रियाँ अधिकता से जाया करती थीं। अब वह बात नहीं है। पहले वे मंदिरों में जाकर देवता की मूर्ति, पीपल, तुलसी या केले के वृक्ष को बीच में लेकर प्रदक्षिणा करती थीं। कम-से-कम १०८ चक्कर तो अवश्य ही देती थीं। यदि मंदिर की परिक्रमा की गोलाई कम-से-कम ३० फ़ुट मान ली जाय, तो १०८ चक्कर में ३२४० फ़ुट की दूरी हो जाती है। देखने में यह कुछ भी बात नहीं है, वहीं-की-वहीं घुमाई हो रही है, किंतु हिसाब लगाने से लगभग पौन मील का चक्कर हो जाता है। नित्य की इतनी घुमाई अर्थात् वार्किंग (walking) एक रफ़्तार से क्या कुछ कम व्यायाम है? स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिये इतना व्यायाम काफ़ी होता है। हमारे पूर्वजों ने ऐसी अच्छी तरकीबें रक्खी थीं, जिनके द्वारा धर्म-कर्म, दोनो की रक्षा हो। परंतु समय के चक्कर में पड़कर सब कुछ जाता रहा।

आजकल भी कुछ फ़ैशनेबुल लेडीज़ चहलक़दमी (Walking) का शौक़ करती हैं, किंतु वे बग्घी-ताँगे में लदकर किसी बाग़-बग़िया में जा बैठती हैं। बस, इतने ही में अपना अहोभाग्य मान लेती हैं। किंतु चहलक़दमी (Walking) के लिये बाग़ीचे में जाना और मंदिर में जाना, दोनो में बहुत अंतर है। बाग़ीचे में सफ़ाई वग़ैरह का उतना ध्यान नहीं रक्खा जाता है, जितना मंदरों में। यद्यपि बाग़ीचों में भी पुष्पों के वृक्ष होते हैं, तथापि मंदिर में पुष्प, तुलसी के पत्ते, बिल्व-पत्र आदि रोग-नाशक सुगंधित वस्तुएँ होती हैं और साथ ही गुग्गुल, धूप आदि सुगंधित द्रव्य सुलगाकर सारे देवालय की वायु शुद्ध एवं सुगंधित कर दी जाती है। इस देव-दर्शन की प्रथा के नष्ट होने का अधिक उत्तरदायित्व देवालय के पुजारियों के सिर पर है। उनके पापाचार से अब स्त्रियों ने मंदिरों में जाना रोक दिया है। जो देवालय किसी समय स्त्रियों के लिये स्वास्थ्य के बढ़ाने तथा मन को पवित्र करनेवाले थे, वे ही आज मूर्खों और पापियों के हाथ में पड़कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनके स्वास्थ्य के नाशक और अपवित्र करनेवाले बन गए हैं ! कैसा घोर पतन है ?

पशुओं का पालन

पशुओं का पालन प्रत्येक गृहस्थ का मुख्य धंधा है। वैद्यक-ग्रंथों में दूध ही मनुष्य का मुख्य आहार माना गया है। प्रतिदिन के भोजन में दूध एक आवश्यक पदार्थ है। परंतु आज हम इसका अभाव देखते हैं। और इसके अभाव से आज हमारा शारीरिक पतन कैसा हुआ है, इसे सभी समझदार लोग भली प्रकार जानते हैं। आज दूध की कमी के कारण हमारे देश में बच्चों की मृत्यु-संख्या बढ़ गई है, और मनुष्य-जाति निर्बल बन गई। इसकी जवाबदेही किस पर है ? यदि ध्यान के साथ देखा जाय, तो इसका दोष हमारी गृह-लक्ष्मियों को ही है। प्राचीन समय में देखा जाता था कि हरएक घर में दुधारू पशु पाले जाते थे, परंतु खेद है कि आजकल की स्त्रियाँ पशुओं के पालन से घृणा करती हैं। गौ आदि दूध देनेवाले पशुओं को पालना ठीक नहीं समझतीं। वे लोग गोबर उठाना, चारा डालना, पशुओं को पुचकारना, पोंछना और दूध निकालना वग़ैरह बुरा धंधा समझती हैं। उन्हें घर का उत्तम, पवित्र और स्वास्थ्य बढ़ानेवाला दूध पीना पसंद नहीं। बाज़ारू ख़राब, पानी-मिला, रोग पैदा करनेवाला दूध ख़रीदना उन्हें अच्छा मालूम होता है। जबसे स्त्रियों ने इस कार्य को घृणा की दृष्टि से देखा, तभी से हमारे देश के दुधारू पशुओं की संख्या दिन-दिन घटती जा रही है। और साथ-ही-साथ कमज़ोरी भी बढ़ती चली जा रही है। पशुओं के पालन पर एक अच्छी मोटी पुस्तक स्वतंत्र-रूप से लिखी जा सकती है, परंतु यह हमारा विषय न होने से हम अधिक नहीं लिख सकते। इस विषय पर प्रकाश डालने के लिये जितना आवश्यक था, उतना ही यहाँ लिखा गया है।

पशु-पालन स्त्रियों का एक बहुत अच्छा व्यायाम है। यह धंधा पुरुषों का नहीं, बल्कि स्त्रियों ही का है। यदि पुरुष लोग पशुओं के पालन के काम में लग जायँ, तो गिरिस्ती के दूसरे ज़रूरी ख़र्चों के लिये धन कौन कमाएगा ? इसलिये पशु-पालन स्त्रियों का ही काम है। वेद में भी इस बात का उल्लेख पाया जाता है। वेद ने स्पष्ट-रूप से यह काम स्त्रियों का बतलाया है। देखिए—

"शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा ;
शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवान इहैधि ।"
(अथर्व ३ । २८ । ३)

अर्थ—(पुरुषेभ्यो) पुरुषों के लिये (गोभ्यो) गौओं के लिये (अश्वेभ्यः) घोड़ों के लिये (शिवा भव) कल्याण करनेवाली हो। इत्यादि।

"अभ्यावर्त्तस्वपशुभिः सहैनां प्रत्यङेनां देवताभि सहैव ;
मात्वा प्रापच्छ्रयथो साभिचारः स्वे क्षेत्रे अनमीवाविराज ।"
(अथर्व ११ । १ । २१)

अर्थ—(पशुभिः सह) पशुओं के साथ (एनां) इसके (अभ्यावर्त्तस्व) चारो ओर घूम। इत्यादि अनेक मंत्र आते हैं।

तात्पर्य यह है कि पशु-पालन स्त्रियों का काम है। इस काम को पुराने समय के राजघरानों में भी करते थे। उनकी रानियाँ गौओं का दूध निकालती, और उनकी सेवा अपने हाथों करती थीं। भारत के प्रसिद्ध सूर्य-वंश और चंद्र-वंश के लोग गो-पालन अपना परम कर्तव्य मानते थे और उनकी पटरानियाँ पशुओं की सेवा करती थीं।

पशुओं का पालन करना मामूली कसरत नहीं है। दूध दुहने से हाथ की अँगुलियाँ और कलाइयाँ मज़बूत होती हैं। पशुओं के लिये करबी या घास की कुट्टी के लिये गँड़ासा चलाते वक़्त जो श्रम होता है, वह स्त्री-जाति के लिये बहुत अच्छी कसरत है। इससे काटने से सारे शरीर को तो व्यायाम मिलता ही है, किंतु साथ ही हाथों के लिये ख़ासा व्यायाम हो जाता है। दूध निकालते वक़्त बछड़े-बछड़ियों को पकड़ना या उन्हें इधर-से-उधर बाँधना साधारण काम नहीं है। कमज़ोरों को तो वे कुछ समझते ही नहीं, उन्हें घसीट ले जाते हैं। यह कुछ कम व्यायाम नहीं है, एक मामूली कुश्ती-सी हो जाती है। दही मथकर उससे मक्खन निकालना कितना, अच्छा व्यायाम है ! जो किसी को मक्खन निकालते हुए देखा हो, तो आप सहज ही अनुमान कर सकते हैं, ख़ूब मेहनत होती है। शरीर का हरएक हिस्सा हिल जाता है। एक ही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के दूध की छाछ बनाने में सौ दंड और सौ बैठक की मेहनत पड़ जाती है। हमारा यह कथन सच है या झूठ, इसके बारे में वे ही कह सकती हैं, जो इस काम को करती हैं। अपने हाथों पशुओं का पालन करनेवाली स्त्रियों का शरीर फुर्तीला, सुडौल, दृढ़, पुष्ट और नीरोग होता है। हम अपनी बहनों से प्रार्थना करते हैं कि यदि आपके घर में पशु-पालन नहीं होता, तो अवश्य ही इसे आरंभ कीजिए। इससे तुम्हारे घर का स्वास्थ्य भी उत्तम हो जायगा और गो-वंश का नाश भी रुक जायगा। इसलिये अपने और पराए कल्याण के लिये पशुओं का पालन अवश्य आरंभ कीजिए।

बहनों, मेहनत करने से मुँह न छिपाओ। जो श्रम को बुरा समझती हैं, वे मानो अमृत को विष की तरह माने बैठी हैं। घर के धंधे जैसे पानी भरना, पीसना, कूटना, धोना, चौका-बरतन, ढोरों का पालन इत्यादि से शरीर के सारे अंगों की कसरत हो जाती है। यही कारण है कि काम-धंधा न करनेवाली औरतों से ग़रीब और मध्यम दर्जे की स्त्रियाँ स्वस्थ, बलवान् और नीरोग होती हैं। उनके अधिक संतान उत्पन्न होने पर भी वे बुढ़ापे तक मज़बूत बनी रहती हैं। मज़दूर स्त्रियों को देखिए, कैसी हृष्ट-पुष्ट और बलवान् होती हैं। अब भी वे स्त्रियाँ, जो पुरानी मरजाद के अनुसार अपने घर के काम अपने आप करती हैं, बलवान् और स्वस्थ रहती हैं। घर के कामों के करने की आदत बचपन से ही डालनी चाहिए। वे माता-पिता, जो अपने बड़प्पन के अहंकार में या प्यार के कारण, अपनी कन्याओं से बचपन में काम-धंधा न कराकर उन्हें आलसी बनाते हैं, उनके जानी दुश्मन हैं। लड़कियों को नाज़ुक नहीं बनाना चाहिए, बल्कि उन्हें हृष्ट-पुष्ट और बलवान् बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। बचपन से ही यदि मेहनत करने की आदत डाल दी जायगी, तो मरते दम तक वे कभी भी आलसी बनकर नहीं रहेंगी।

गणेशदत्त शर्मा गौड़ 'इंद्र'

सुधा पर सम्मतियाँ

श्रीयुत धर्मेंद्रनाथ शास्त्री एम्० ए०, तर्कशिरोमणि—हिंदी की मासिक पत्रिकाओं में सुधा सर्वोच्च स्थान ग्रहण करेगी। इस समय गंगा पुस्तकमाला-कार्यालय हिंदी का सबसे बड़ा प्रकाशन-भवन (Publishing House) है। यह बिलकुल उचित ही है कि ऐसे बड़े साहित्य-केंद्र से हिंदी की एक उच्च श्रेणी की साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित हो। माधुरी को जन्म देकर उच्च पद तक पहुँचाने का श्रेय उपर्युक्त संपादक-युगल को ही है। पत्रिका जहाँ साहित्यिक और कला की दृष्टि से आकर्षक है, वहाँ उसकी एक विशेषता यह है कि उसमें उच्च, उदार, निर्भीक, सामाजिक सुधार के विचारों को स्थान दिया गया है। इसलिये यह पत्रिका न केवल पुरुषों तक, प्रत्युत प्रत्येक गृह-देवी के हाथों में पहुँचने योग्य है।

पं० आद्यादत्त ठाकुर एम्० ए० (संस्कृताध्यापक, लखनऊ-विश्वविद्यालय)—इसमें संदेह नहीं कि इस दिव्य साहित्य-सुधा से सहृदय रसिक असीम आनंद का अनुभव करेंगे। छपाई-सफ़ाई और चित्र तो मनोमोहक हैं ही, लेख-माला भी उच्च कोटि की है। संपादन में भी आपने अपना अच्छा कौशल दिखाया है। यह सर्वथा आपके अनुरूप है। वास्तव में इस पत्रिका से हिंदी का गौरव और बढ़ेगा। हिंदी में तो उच्च कोटि की पत्रिकाएँ अंगुल-परिच्छेद्य ही हैं, बँगला, मराठी और गुजराती-पत्रिकाएँ भी इसे देखकर लज्जावनत हो सकेंगी। इतनी सर्वांग-सुंदर सुधा का प्रकाशन करके आपने यथार्थ में हिंदी-संसार का बड़ा उपकार किया है। इसके लिये हम आपका हृदय से अभिनंदन करते हैं। हमें आशा है, हिंदी-संसार इसे सादर ग्रहण करेगा, और इस सर्वोच्च मासिक पत्रिका का प्रचार भी शीघ्र ही सब पत्रिकाओं से अधिक हो जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कटहल का रायता

ऐसा कटहल तोड़ो जिसमें कोए न हुए हों। छिलका छीलकर टुकड़े कर लो। फिर उन्हें उबाल डालो और सिल-लोढ़े से पीसकर सेर-भर दही में आध सेर पिसा हुआ कटहल डाल दो। फिर उसमें नमक, मिर्च, राई, पीसकर मिला दो। बस, रायता बन गया।

कटहल की पूरी और पकौड़ी

उसी तरह छोटे कटहल को छील-कतरकर उबाल लो। जब कटहल गल जाय, तब उतार लो और पानी निचोड़कर ख़ूब बारीक पीस डालो। फिर घी या तीखुर से छोटी-छोटी पूरी बेलकर आटे की पूरी की भाँति सेंक लो। पकौड़ी बनाना चाहो, तो उसे थोड़ा फेटकर नमक-मिर्च डाल दो। फिर छोटी-छोटी पकौड़ियों को घी में तल लो। मीठी पकौड़ी बनाना चाहो, तो थोड़ी चीनी डालकर उसी तरह तलो।

मूली का अचार

मुलायम मूली को ख़ूब साफ़ करके छोटे-छोटे गोल टुकड़े कर लो। फिर हल्दी, नमक, मिर्च, राई, इन चारों को बारीक पीसकर पानी में घोल लो, और उसी में मूली के टुकड़े डाल दो। थोड़ा-सा सरसों का तेल भी डाल दो। फिर किसी मिट्टी के बरतन में भरकर धूप में रख दो। पानी इतना ही डालो, जितने में मूलियाँ डूबी रहें। तीसरे दिन खाने के लायक़ हो जायगा।

सकरकंदी की खीर

बड़ी-बड़ी सकरकंदी लेकर साफ़ करके छील डालो। फिर कद्दूकस (बिलैया) में रगड़ो, जिसमें महीन-महीन लच्छे उतर आवें। फिर उन लच्छों को साफ़ कर लो और थोड़ा-सा घी पीतल की कड़ाही या बटुए में डालकर लच्छों को थोड़ा भून लो, जिसमें जल न हों। फिर एक पाव भूने लच्छे एक सेर दूध में डालकर चूल्हे पर चढ़ा दो और खीर की भाँति उसे औट डालो। गल जाने पर अंदाज़ की चीनी डालकर उतार लो। फिर छोटी इलायची पीसकर डाल दो।

कमलादेवी चतुर्वेदिन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

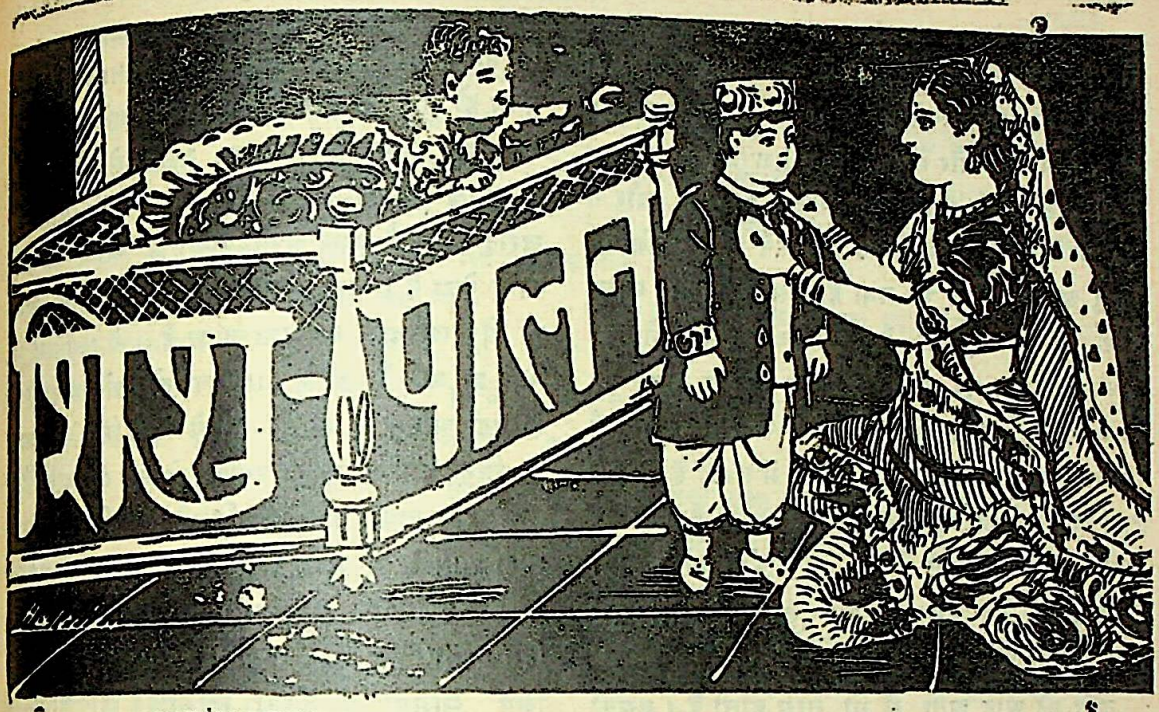

बाल-मृत्यु

(गत अंक से आगे)

बाल-विवाह—प्रायः कम-(१०० में से ३) अवस्थाओं में ऐसा होता है, जब कि पति की आयु पत्नी से कम हो, अन्यथा पति और पत्नी की में आयु में सदा ४ वर्ष से अधिक अंतर होता है। इससे स्पष्ट है कि कन्याओं का विवाह कुमारों की अपेक्षा अधिक होता है। यह विवाह प्रायः कन्याओं में ८ से १२ वर्ष की आयु में, और कुमारों में १४ से १८ वर्ष की आयु में, हो जाता है।

यह आयु न तो कुमार के लिये उत्तम है और न कुमारी कन्या के लिये। जिस प्रकार अपूर्ण रस-वीर्य-वाला वृक्ष उत्तम पूर्ण बीज उत्पन्न नहीं कर सकता, उसी प्रकार अपूर्ण आयु के स्त्री-पुरुष पूर्ण स्वस्थ संतान उत्पन्न नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त—

(१) वस्तिगह्वर के अपूर्ण एवं अविकसित होने तथा गर्भाशय एवं गर्भाशय की आठों पेशियों के निर्बल होने से गर्भाशय ११½ इंच लंबे शिशु को अपने अंदर रखने में असमर्थ होता है, जो कि स्वाभाविक है। कारण, प्रकृति नहीं चाहती कि वह इस समय इतने बोझ को सहे, अतः वह उसे उचित, प्राकृतिक उपायों से बाहर करने का प्रयत्न करती है। यदि वह प्रसव हो गया, तो उत्तम है, और यदि नहीं हुआ, तो घूमता हुआ ऐसी (स्थिति तिर्यक्-स्थिति—Transverse Position) में आ जाता है कि प्रसव के समय बाधा उत्पन्न कर देता है। यह बाधा माता या शिशु के लिये घातक सिद्ध होती है।

(२) स्वास्थ्य गिर जाता है। अपने शरीर की वृद्धि के लिये भोजन चाहिए। कारण, ३० वर्ष तक शरीर की वृद्धि होती है, और २० वर्ष में पूरी जवानी आती है। माता-पिता को जब इसी (अपूर्ण-अधूरी) अवस्था में नई सृष्टि उत्पन्न करने के लिये परिश्रम करना पड़ता है, तो शरीर निर्बल हो जाता है। विशेषतः माता का। जिससे शीघ्र ही चेहरे का गुलाबी रंग पीले रंग में बदल जाता है। आँखों की चमक जाती रहती है, सौंदर्य का स्थान काली रेखा ले लेती है, और जवानी का स्थान बुढ़ापा छीन लेता है।

(३) इस अबोध अवस्था में माता-पिता अपना उत्तरदायित्व नहीं समझते। यही कारण है कि इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समय जो संतति उत्पन्न होती है, वह उत्पन्न की नहीं जाती वरन् स्वयं उत्पन्न हो जाती है, जिस तरह बरसात में मच्छड़ और गेंडुवें (Earthworm)। उनके लिये न तो कोई संतति का महत्त्व होता है और न वह उसके लिये उत्तरदायित्व समझते हैं। चूँकि वह शिशु अब संसार में आ गया है, उसका फ़ोटो एक्स-प्लेट पर आ चुकता है, अतः वह उसे लेने को बाध्य होते हैं। यह प्रतिबिंब केवल प्लेट के तोड़ने पर ही नष्ट हो सकता है। यही कारण है कि माताएँ गर्भपात या गर्भस्राव के उपाय काम में लाती हैं। इसके द्वारा जहाँ उनकी अभिलाषा पूर्ण हो जाती है, वहाँ वह अबोध शिशु भगवान् से यह भी प्रार्थना करता जाता है कि माता को इसका कठोर दंड देना—मेरा पूर्ण न्याय करना।

दीन की आह आग से भी गरम होती है। उसकी साँसों को समुद्र का पानी भी नहीं बुझा सकता। भगवान् उसे सुनते हैं। वे माता को इस प्रकार के रोग दे देते हैं कि तड़प-तड़पकर प्राण देती है। पुत्र की इच्छा होने पर भी वह अब संतति का मुख इस लोक में नहीं देख सकती। उसका घर दवाइयों की दूकान बन जाता है—डॉक्टरों के लिये रुपया कमाने का स्थान हो जाता है। बच जाने पर उसे गर्भाशय-भ्रंश आदि रोग हो जाते हैं, जिससे गर्भस्थिति असंभव हो जाती है, और यदि कभी हो भी गई, तो भगवान् उसे उस रत्न के योग्य न समझकर उसकी इच्छा के बिना ही उससे छीन लेते हैं। अब उसकी आँखें खुलती हैं, वह साधु-संतों की सेवा करती है, दान-पुण्य आरंभ करती है; परंतु सब निष्फल।

यह बात जिस प्रकार स्त्रियों के साथ है, उसी प्रकार पुरुषों के साथ भी पुरुषों का मस्तिष्क स्त्रियों से बड़ा अवश्य होता है। उनमें भूरा पदार्थ (Gray matter) अधिक होता है। उनकी कंचुलियाँ (Convolutions) अधिक गहरी होती हैं। परंतु वह भी २१ वर्ष से पूर्व संपूर्ण नहीं होता। उस समय तक सत्-असत्-विवेक की बुद्धि नहीं उत्पन्न होती। बुद्धि अनिश्चित, अस्थिर, पानी में नौका की भाँति डामाडोल रहती है। यौवन की बढ़ती कला होती है। अतः मनुष्य का गिरना स्वाभाविक हो जाता है। विशेषतः यदि विवाह शीघ्र हो जाय या साथी ऐसे ही मिल जायँ।

मनुष्य बाज़ार से या अन्य स्थान से पैसों-रुपों के बदले औपसर्गिक रोग (Veneral disease) ख़रीद लाता है, और अपनी प्राणों से प्यारी धर्म-पत्नी को दे देता है। बस, थोड़े-से पैसों में वंश के नाश का बीज ख़रीदकर बो दिया जाता है। ये रोग वंश में स्थिर हो जाते हैं। इनके कारण या तो गर्भ-स्थिति होती ही नहीं और यदि हो गई, तो ये रोग स्थिर हो जाते हैं, जिनके कारण शिशु उत्पन्न होकर मर जाता है।

ये रोग प्रायः उन्हीं में मिलते हैं, जिनके विवाह छोटी आयु में हो जाते हैं। कारण, कामेच्छा को बचपन से ही उत्तेजना मिल जाती है, जिससे वह प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है। अतः इच्छा को पूर्ण करने के लिये सामग्री को ढूँढना स्वाभाविक हो जाता है, जिसकी पूर्ति बाज़ार इत्यादि से होती है। इसी समय मद्य-पान आदि और भी व्यसन अपना मार्ग बना लेते हैं।

छोटी आयु में गर्भवती होना या शीघ्र गर्भवती होना, ये दोनों ही अवस्थाएँ अभिप्रेत नहीं। इन दोनों ही अवस्थाओं में गर्भाशय निर्बल हो जाता है। जिस अंग से अधिक और जल्दी काम लिया जाता है, वह अंग निर्बल एवं अंत में (हाइपर ट्रॉफ़ाइह) वृद्धि करके क्षीण होने लगता है। उसी प्रकार यह गर्भाशय अब गर्भ को धारण नहीं कर सकता, यदि धारण भी कर लेता है, तो उसको शीघ्र ही च्युत कर देता है। अतः धर्मशास्त्र के अनुसार १६ और २२ वर्ष की आयु में विवाह-संबंध करके २½ वर्ष के अंतर से गर्भ धारण का विधान है।

वस्तिगह्वर का तंग होना—ऐसी अवस्था में परमात्मा या प्रकृति ने उसे स्वयं ही गर्भ धारण के अयोग्य बनाया है। उस समय गर्भ धारण करना प्रकृति के कार्य में हस्तक्षेप करना है। प्रकृति अत्यंत क्रूर है। वह इस हस्तक्षेप का कठोर दंड देती है। या तो वह माता के प्राण लेती या शिशु के प्राण लेकर शांत होती है। अतः आवश्यक है कि विस्तृत जघनवाली कन्या से विवाह किया जाय।

वस्त्रों के दोष—तंग वस्त्रों के पहनने से (विशे-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वतः कोष्ठ और कटि पर) रक्त-संचार का अवरोध होने और उत्पादक अंगों में रक्त-वृद्धि होने से मैथुन-इच्छा बढ़ती है। उसकी शांति के लिये किया गया संभोग इस समय स्थायी या अस्थायी हानि उत्पन्न कर देता है। प्रकृति नहीं चाहती कि संभोग हो। अतः उसने गर्भाशय-द्वार और ऋतु-धर्म बंद कर दिया। कारण, पशु भी ऋतु-काल में संभोग करते हैं, अतः इस समय संभोग रोग उत्पन्न कर देता है। इसके अतिरिक्त वस्त्रों के तंग होने से गर्भ का पोषण भी उचित रीति से नहीं होता, जिसके कारण शिशु निर्बल रहता है, और जब उत्पन्न होता है, तो निर्बल ही उत्पन्न होता है। अतः आवश्यक है कि वस्त्र ढीले हों, जिससे रक्त-संचार में बाधा न आवे।

व्यायाम का अभाव—जिसने कभी परिश्रम नहीं किया, वह भार से डरता है। जिसमें शक्ति नहीं, वह बोझ को नहीं उठा सकता। ऐसी अवस्था में आवश्यक है कि या तो प्रसव २८० दिन से पूर्व हो, अथवा निर्बल, अस्वस्थ, रोगी शिशु उत्पन्न हो। इस प्रकार का शिशु क्या प्रकृति की आँधी और सर्दी-गर्मी का सामना कर सकता है? माता क्या उसका पोषण करेगी? उसके स्तनों में दूध कहाँ से आएगा? भोजन उसे ही शक्ति देता है, जिसका भोजन पच जाय। व्यायाम के बिना भोजन का पचना असंभव देखकर औषधियों का उपयोग आरंभ होता है। इसका परिणाम यह होता है—

(क) शिशु को कृत्रिम या धात्री का दूध देना पड़ता है।

(ख) शिशु को औषधियों की आदत जन्म से ही पड़ जाती है।

(ग) शिशु थोड़े-से भी भोजन को नहीं पचा सकता।

(घ) बिना स्पष्ट कारण के भार क्षीण हो जाता है, और अंत में माता की गोद सूनी हो जाती है।

अतः आवश्यक है कि व्यायाम जहाँ अपने लिये आवश्यक है, वहाँ वह पुत्र-रत्न के लिये भी आवश्यक है। संक्षेप से बाल-विवाह के कारणों से बचने के लिये आवश्यक है कि

(१) विवाह २५ वर्ष और १६ से पूर्व न किया जाय, (२) तंग वस्तिगह्वरवाली स्त्रियाँ गर्भ धारण न करें, (३) गर्भ-स्थिति में कम-से-कम ३ साल का अंतर चाहिए, (४) वस्त्र ढीले होने चाहिए, और (५) व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

अत्रिदेव गुप्त

हरएक

घर में सर्प और मच्छरों से बचने और मलेरिया के रोगों से सुरक्षित रहने के लिये आप

येमों

पाउडर उपयोग करें। एक पाकिट का दाम केवल अढ़ाई आने। एक दर्जन पाकिट १॥=), पेकिंग और डाक-खर्च अलग। एजेंटों को विशेष लाभ होता है। नियमावली मँगाइए।

लेविस्को इंडिया कंपनी, ग्रीनविला, ग्रांट रोड, बंबई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अजीर्ण की दवा

दिशा जाते समय नित्यप्रति बाएँ पैर पर ज़ोर देकर बैठने से अजीर्ण नहीं होता।

आग से जलने पर

आग से जले हुए स्थान पर शकर या शरबत लगाने या एक रुई का फाया शरबत में भिगोकर रखने से शीघ्र आराम होता है।

अथवा इमली की छाल को जलाकर गौ के घी में मिलाकर लगावे, या चूने के पानी में कड़ुवा तेल डालकर मल दे।

गुहेरी की दवा

पुराना कोयला यानी वह कोयला जो कबी या पुरानी दीवाल में लगा हो, घिसकर गुहेरी पर लगाने से जल्द आराम होता है।

सर्दी से खाँसी व ज़ुकाम होने पर

जायफल को पान में चने के बराबर खाने से सर्दी के कारण खाँसी व ज़ुकाम को आराम पहुँचता है।

पुराना ज़ुकाम

सुबह पलँग पर से उठते ही सात बड़ी-बड़ी कालीमिर्चें खा लें और फिर दिशा जायँ। कुछ दिनों तक ठंडी चीज़ों का सेवन न करें। कैसा ही पुराना ज़ुकाम हो, जाता रहेगा।

घाव

कटहल के पत्ते पर गाय का ताज़ा घी लगाकर घाव पर बाँधने से घाव अच्छा हो जाता है।

दाद

मेंहदी के पत्ते सिरके में बाँटकर लगाने से दाद दूर हो जाता है। अथवा हरी पँवार की पत्तियों का रस लगाने से दाद दूर हो जाता है।

सर्दी का दर्द

यदि सर्दी के कारण दर्द होता हो, तो इलायची और सरसों का तेल ख़ूब मलकर दर्द की जगह पर मालिश करें, या कड़ुए तेल में अफ़ीम मिलाकर गर्म करके मालिश करें।

मुँहासे

जायफल दूध में घिसकर लगाने से मुँहासे दूर होते हैं।

फुटकर

घी खाने की अपेक्षा शरीर पर तेल लगाना अधिक लाभकारी है।

सिर को सदा ठंडा और पैरों को गरम रक्खो। आगे में यदि आग तापो, तो उस समय भी सिर को गरमी लगने से बचाओ।

कृष्णावतीदेवी श्रीवास्तव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. पद्य

भावुक—लेखक, राय कृष्णदास ; छपाई-सफ़ाई उत्तम ; पृष्ठ-संख्या ६० ; सजिल्द ; प्रकाशक, भारती-भंडार, बनारस सिटी; मूल्य ॥)

यह राय कृष्णदासजी की कुछ कविताओं का संग्रह है। पद्य मनोहर भावमय हैं। कुछ संगीतात्मक हैं, जिनकी स्वर-लिपि भी पीछे दी गई है। ये पद्य 'सरस्वती', 'माधुरी', 'प्रतिभा' और 'इंदु' आदि पत्रों में निकल चुके हैं। भाषा पुष्ट तथा शुद्ध, भाव प्रांजल और सरस हैं—

"तव निवास है सीप अतल-तल में सागर के ;
हैं प्रवाल के विपुल जाल भूषक जिस घर के।
पर है तेरा स्नेह दूर गगन-स्थित घन से ;
स्थिति से क्या, वह मिला हुआ है तेरे मन से।
उसके लिये निवास छोड़ देती हूँ अपना ;
ऊपर आती मग्न-भाव-सुख को कर सपना।
अतल-निवासिनि, हृदय खोल जल पर तिरती है;
मारी-मारी तरल तरंगों में फिरती है।
प्रेम-नीर की झड़ी लगा देता नव घन है ;
छक जाता पर एक बूँद से तेरा मन है।
इस सुख से हो मत्त किंतु क्या तू गृह तजती ?
नहीं, नहीं, फिर लौट उसे मोती से सजती।"

कैसी सुंदर भाव-पूर्ण कविता है! हमने शायद 'सरस्वती' में इसे पढ़ा था।

× × ×

काकली—लेखक, कौशलेंद्र राठौर ; सजिल्द ; पृष्ठ-संख्या ५२ ; छपाई-सफ़ाई उत्तम ; प्रकाशक, रामसिंह राठौर, राजसदन, मैनपुरी यू० पी० ; मूल्य ॥) ; शुरू में लेखक का एक चित्र है।

इसकी भूमिका 'माधुरी' के संपादक पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी० ने लिखी है। प्रारंभ में आचार्य द्विवेदीजी का एक हृदयोद्गार दिया गया है, जिसमें आचार्य का कथन है—"आपमें कवित्व का बीज स्पष्ट देख पड़ता है।" अंत में कविवर 'सनेहीजी' की सम्मति है—"काकली रसिक हृदयों में रस-प्लावित कर देती है।" फिर पीछे एक रिसर्च-स्कॉलर की ज्ञान-बीन दी गई है। इस पुस्तिका की बालिका-कली के रूप पर जहाँ तीन-तीन प्रसिद्ध साहित्य-वृद्ध लुब्ध-मुग्ध-लुब्ध हैं, वहाँ दूसरे की गृद्ध्र-दृष्टि क्रुद्ध होकर क्यों पड़े? शायद नज़र लग जाय! एक उदाहरण—

"रक्त जल होकर बहा है आँसुओं के मिस,
सूखा है कलेवर उसासों की बयार से ;
प्राण हुए भार मनोवेदना के भार से हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऊब गया जी है जग-कष्ट-कारागार से।
'कौशलेंद्र' दुख ही बदा है जब भाग्य में तो
होगा न भला किसी के प्रेम-व्यवहार से;
रोना याद आएगा, पिघलने लगेगा मन,
कोई मत देखना हमारी ओर प्यार से।"

"निराला"

× × ×

गुरुकुल—लेखक, श्रीमैथिलीशरण गुप्त; प्रकाशक, साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी); छपाई-सफ़ाई अच्छी; मूल्य ३)

इस पद्य-ग्रंथ के लेखक हैं हिंदी-संसार के सुप्रसिद्ध कवि-शिरोमणि श्रीयुत मैथिलीशरण जी गुप्त। पुस्तक के नाम से भ्रम होता है कि यह किसी गुरुकुल-नाम्नी संस्था का परिचय होगा, परंतु वास्तव में यह है सिक्ख-गुरु लोगों का जीवन-चरित। सिक्ख-गुरु लोगों की दृढ़ता, आत्म-त्याग और धर्म-निष्ठा समस्त भू-मंडल में प्रसिद्ध है। अत्याचारियों के समक्ष नत-मस्तक न होकर प्रसन्न-चित्त से अपना जीवन समर्पण करके गुरु लोगों ने जो हिंदुत्व की रक्षा की है, उससे उनके पार्थिव-शरीर के नष्ट हो जाने पर भी उनका यशःशरीर सदा के लिये अमर हो गया। इन्हीं परम सम्मान्य यशोधन गुरु-कुल के चरित्र का चित्रण सुललित पद्यों में अंकित करके गुप्तजी ने अपनी लेखनी को पवित्र किया है। पद्य में होने के कारण इस चरित्र का भावुक पाठकों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा, और हमारे भारतीय युवक-जन पूज्यपाद गुरु-कुल के दुर्गम पथ का अनुकरण करके अपने चरित्र को दृढ़ बना सकेंगे, और अत्याचार-परंपरा से भी अपना धर्म-मार्ग न छोड़ेंगे। हमें आशा है, प्रस्तुत पुस्तक का ऐसा ही प्रभाव होगा, और तब गुप्तजी का श्रम सार्थक होगा। ऐसे स्तुत्य प्रयास के लिये गुप्तजी को बधाई है।

× × ×

भालूराम-व्यालूराम-संवाद—लेखक, श्रीयुत "प्रेम" कवि (श्रोता और दर्शक); प्रकाशक, बुंदेलखंड-गौरव-ग्रंथ-माला, खनियाधाना-राज्य; छपाई-सफ़ाई अच्छी; मूल्य —)॥

इस पुस्तक में शुद्धि के विषय को लेकर दो विपक्षी प्रचारकों के शास्त्रार्थ का बड़ा मनोरंजक वर्णन किया गया है। पद्य के कारण पुस्तक की रोचकता और भी बढ़ गई है। सामान्यतः जिस प्रकार दोनो दलवाले एक दूसरे को गाली देने में ही अपने पक्ष की पुष्टि समझते हैं, इस स्वभाव का चित्रण बड़ा अच्छा हुआ है। पुस्तक की विशेषता यह है कि लेखक ने अपने को प्रत्यक्ष रूप से किसी एक दल में शामिल नहीं किया है। पुस्तक मज़े की है।

आद्यादत्त ठाकुर

× × ×

२. नाटक

समाज—लेखक, पं० छविनाथ पांडेय बी० ए०, एल्-एल्० बी०; प्रकाशक, साहित्य-सेवक-कार्यालय, ब्रह्मनाल, काशी; पृष्ठ-संख्या ११२; छपाई-सफ़ाई अच्छी; मूल्य ॥=)

भूमिका के दो शब्द बाबू शिवपूजनसहायजी ने लिखे हैं। प्रस्तुत पुस्तक समाज के वर्तमान आधार पर लिखी गई है। हिंदू-कुरीतियों का उल्लेख और सुधार, इस नाटक का मुख्य उद्देश्य है। बहुत दिनों के बाद छविनाथजी की यह कृति देखने को मिली है। हिंदू-समाज की कई समस्याओं पर विचार किया गया है। नेकीराम का पार्ट जगह-जगह बहुत लंबा हो गया है। नाटक अच्छा है।

× × ×

प्रताप-प्रतिज्ञा—लेखक, जगन्नाथप्रसाद "मिलिंद"; प्रकाशक, हिंदी-भवन, अनारकली, लाहौर; मूल्य ॥=)। छपाई-सफ़ाई उत्तम।

महाराणा प्रताप का इतिहास भारत के आबाल-वृद्ध-वनिता का जाना हुआ है। नाटक का यही आधार है। भाषा मार्जित है।

× × ×

विपता—लेखिका, श्रीमती उमा नेहरू; प्रकाशक, हिंदोस्तान-प्रेस, इलाहाबाद; छपाई-सफ़ाई उत्तम। मूल्य नहीं लिखा।

यह नाटक जान मेज़फ़ील्ड के "ट्राजिडी ऑफ़ नैन" का अनुवाद है। विदुषी लेखिका का कहना है कि ईसाइयों की सरल भाषा कहे-अनुरूप ही अनुवाद की भाषा रक्खी गई है। एक सिलेबुल की किताबों की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तरह चूरुहामा की भाषा है, जो यहाँ के ईसाइयों के अनुकूल भी है और रोचक भी। यथा—

डिक—मेरी प्यारी, मैं तुझे अपनाऊँगा। अभी, अभी आज ही रात को—इन सबसे कह दूँगा।

नैन—चाहे जो कुछ हो जाय? चाहे मैं तुम्हें बता भी दूँ—जो मुझे तुमसे कहना है?

डिक—वह कुछ भी हो—अब तो बस आज ही रात को। आज ही। बाजेवाले के आते ही।

नैन—हाय मेरे प्यारे!

डिक—मैं सबके सामने तुम्हें अपनाऊँगा। एक-एक के सामने।

नैन—मुझे अपना लोगे!

डिक—मुझे फिर से प्यार कर ले।

मेरी प्यारी..."मोहे सैयाँ मिलन को आस दरवजवा खड़ी रही" धाँएँ—धाँएँ—धाँएँ (दरवाज़ा पीटते हैं)

× × ×

३. इतिहास

समुद्र पर विजय—लेखक, पं० जगपति चतुर्वेदी विद्या-भूषण, विशारद; प्रकाशक, रायसाहब रामदयाल अग्रवाला, बुकसेलर और पब्लिशर, प्रयाग; सजिल्द; छपाई-सफ़ाई और कागज़ साधारणतः अच्छा, पृष्ठ-संख्या १५२; सचित्र; मूल्य १)

इसमें समुद्र का एक प्रकार इतिहास मिल जाता है। किस तरह जल-यान, जहाज़ आदि की उन्नति हुई और मनुष्य ने समुद्र पर विजय प्राप्त की, इसका सरल भाषा में अच्छा वर्णन किया गया है। यू० पी० के बालकों के लिये उपयोगी पुस्तक है।

× × ×

राजनैतिक इतिहास—लेखक, श्रीवासुदेव लाला हरदयालजी; प्रकाशक, अभ्युदय-प्रेस, प्रयाग; पृष्ठ-संख्या २०० के क़रीब; छपाई-कागज़ साधारण; मूल्य १)

इसमें मोरक्को, चीन, यूनान और पोलैंड का संक्षिप्त इतिहास है। पुस्तक सामयिक है। भाषा सरल और रोचक।

× "निराला" ×

४. वैद्यक

सूर्य-किरण-चिकित्सा—लेखक व प्रकाशक, श्रीगोविंद वापूजी टोंगो; मिलने का पता—पुरुषोत्तम जयराम देशकर, मैनेजर सूर्य-किरण-चिकित्सालय, खँडवा; मूल्य १॥)

पुस्तक राजयोग-ग्रंथमाला का तृतीय पुष्प है। टोंगो महाशय स्वयं एक प्रसिद्ध चिकित्सक हैं। उन्होंने बरसों में जिन अनुभवों को ठीक पाया है, उन्हीं के आधार पर यह पुस्तक लिखी गई है, अतएव पुस्तक की उपयोगिता में कोई संदेह नहीं रह जाता। प्रत्येक सूर्य-रश्मि-चिकित्सक को इस विषय की इस सर्वोत्तम पुस्तक को पढ़ना चाहिए। टोंगो महाशय ने पुस्तक मराठी में न लिखकर हिंदी में लिखने का जो प्रयत्न किया है, उसके लिये हम उन्हें बड़े सम्मान-पूर्वक बधाई देते हैं।

सुधींद्र वर्मा

× × ×

सौंफ़-चिकित्सा—लेखक, बाबू मथुराप्रसाद गुप्त; संपादक तथा प्रकाशक, पंडित हनूमान्प्रसाद शर्मा वैद्य-शास्त्री, महाशक्ति-साहित्य-मंदिर, बुलानाला, बनारस सिटी; मूल्य ।)

इस छोटी-सी पुस्तक में आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा-विधियों में सौंफ़ का कितना महत्त्व-पूर्ण स्थान है, यह दिखलाया गया है। जहाँ हमारे हिंदोस्तानी भाई ऐलोपेथी के चक्कर में पड़कर साधारण रोगों की चिकित्सा में सैकड़ों रुपए ख़र्च कर देते हैं, वहीं पर वे यदि अपने देश की इन साधारण चिकित्साओं का प्रयोग करें, तो कम ख़र्च के साथ उनको यथेष्ट लाभ हो सकता है। सौंफ़ की उपयोगिता को अब पाश्चात्य विद्वान् भी मानने लगे हैं, और कुछ बीमारियों के लिये तो सौंफ़ अमोघ औषधि है। इस पुस्तक में सौंफ़ किन-किन रोगों में और कितनी मात्रा में लाभ पहुँचाती है, इसका वर्णन किया गया है। पुस्तक की उपयोगिता देखते हुए इसका मूल्य बहुत कम है, और साथ ही प्रत्येक गृहस्थ से हमारा अनुरोध है कि वह अपने घर में इस पुस्तक को रक्खे। प्रकाशक महोदय से भी, जो स्वयं एक योग्य तथा अनुभवी वैद्य हैं, हमारी यह प्रार्थना होगी कि इस प्रकार की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्य घरेलू दवाइयों का भी पुस्तकों द्वारा प्रचार करें।

भगवतीचरण वर्मा

× × ×

५. साहित्य

कवि-रहस्य—कर्ता, डॉ० गंगानाथ झा; प्रकाशक, हिंदोस्तानी एकाडेमी, इलाहाबाद; मूल्य १)

प्रस्तुत पुस्तक हिंदोस्तानी एकाडेमी व्याख्यान-माला का ४था पुष्प है। ये व्याख्यान डॉ० गंगानाथ झा ने 'प्राचीन समय में कवि-शिक्षा-प्रणाली'-नामक विषय पर दिए थे। उन्हीं को पुस्तकाकार प्रकाशित करके एकाडेमी ने सुयश कमाया है। आचार्य द्विवेदीजी तथा श्रद्धेय पं० पद्मसिंह शर्मा आदि प्रकांड हिंदी-साहित्य-मर्मज्ञों के रहते हुए भी एकाडेमी ने हिंदी-भाषा में बहुत कम लिखनेवाले डॉक्टर साहब के अमूल्य समय पर न-मालूम यह क्रूर आक्रमण क्यों कर डाला था। प्रयाग-विश्व-विद्यालय का नाता शायद इसका कारण है। एकाडेमी की इस अक़्लमंदी का परिणाम भी वैसा ही हुआ है। 'कवि-रहस्य' प्राचीन संस्कृत-कवियों की शिक्षा-प्रणाली का एक विस्तृत वर्णन-मात्र है। काव्य-मीमांसा तथा कवि कंठाभरण नामक संस्कृत-ग्रंथों को पढ़ने से उसका पर्याप्त ज्ञान हो सकता है। आचार्य द्विवेदीजी के लिखे 'रसज्ञ-रंजन'-नामक ग्रंथ में इन्हीं दोनो आधारों पर इसी विषय की विवेचना की गई है। यद्यपि वह इस पुस्तक से संक्षिप्त है, तथापि आवश्यकता के लिये पर्याप्त है। प्राचीन कवि कैसे बनाए जाते थे, यह विषय उतना आवश्यक नहीं, जितना आधुनिक हिंदी-कविता का निर्माण। सामयिक साहित्यिक विषयों को न लेकर, वर्तमान प्रसिद्ध हिंदी-साहित्य-सेवियों की—उन विद्वानों की जिन्होंने सारा जीवन हिंदी की सेवा में बिता दिया—उपेक्षा करके एकाडेमी न केवल एक अक्षम्य अपराध ही कर रही है, अपितु वह अपने को बिल्कुल निरर्थक और उपहासास्पद सिद्ध कर रही है। 'कवि-रहस्य' उसकी इस अंधाधुंधी का नमूना है। प्राचीन कवियों की शिक्षा-प्रणाली-नामक व्याख्यान-माला में बेचारे हिंदी-कवियों का ज़िक्र ही नहीं है। जिस साहित्य के प्रचार के लिये एकाडेमी का जन्म हुआ, उसी के कवियों को ३ या ४ पेज में टरकाकर 'कवि-रहस्य' छपा डाला गया है। संस्कृत के पुराने कवियों के दक़ियानूसी आदर्श कोई 'अनिर्वचनीय सत्य' तो हैं नहीं, वे कोई शाश्वत नियम भी नहीं कहे जा सकते। उनका महत्व एक ऐतिहासिक महत्व है। अतएव वर्तमान हिंदी-काव्य की प्रगति पर उनका बहुत ही साधारण प्रभाव हो सकता है। आधुनिक हिंदी-कविता-प्रसंग पर जिन बातों का प्रभाव पड़ सकता है, वह हैं पिछली २ शताब्दियों में हुए हिंदी-साहित्य के परिवर्तन तथा वर्तमान संसार-साहित्य की विचार-धाराएँ। उन पर कवि-रहस्य कुछ भी प्रकाश नहीं डालता।

अतएव हमारी सम्मति में तो इन व्याख्यानों का जो दाम दिया गया, वह लाभ को देखते हुए एकदम व्यर्थ ही गया। आशा है, एकाडेमी आगे से इस प्रकार के हिंदी-साहित्य से कोसों दूरवाले व्याख्यान दिलाने की बुद्धिमत्ता न करेगी।

× × ×

प्रेम-योग—लेखक, श्रीवियोगी हरि; प्रकाशक, श्री घनश्यामदासजी, गीता-प्रेस, गोरखपुर; मूल्य १)

प्रेम—काम-वासना-रहित विशुद्ध प्रेम—जो भक्तों और संन्यासियों का आदर्श है, इस पुस्तक का विषय है। अनेक कवियों की प्रेम-संबंधिनी सूक्तियों को लेकर प्रेम तथा प्रेमी की मानसिक दशा, भाव तथा चेष्टा पर इसमें विचार किया गया है। 'प्रेम' का ऊँचा स्वरूप लोगों की समझ में आ सकने के लिये तथा 'आजकल प्रेम के पवित्र नाम पर काम की जो कलंकित होली हो रही है'...उसमें बाधा पहुँचाने के लिये इसका प्रकाशन हुआ है। हमारी समझ में तो इस प्रकार के प्रयत्न, सो भी तब जब कि देश के सामने विकट समस्या उपस्थित हो, समस्त राष्ट्र में अशांति का झंझावात चल रहा हो—एकदम व्यर्थ और असामयिक-से ही हैं। संसार में उपनिषदों-जैसी फ़िलासफ़ी, गीता-जैसे भक्ति-मार्ग तथा संन्यास-जैसे निवृत्ति-प्रधान उपायों के रहते भी जो काम-वासना प्रेम-मार्ग से दूर नहीं हुई, वह इस पुस्तक से दूर हो जायगी, ऐसी आशा करना नितांत उपहासास्पद है। काम-वासना जीवन का एक आवश्यक अंग है। लौकिक प्रेम काम-शून्य हो ही नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकता, और न समस्त संसार परलोकवासी ही बनना चाहता है। आजकल के युग में इस प्रकार की निष्काम प्रेम की बातें प्रलाप-मात्र समझी जाती हैं। उनकी उपयोगिता केवल वृद्धों और भक्तों के लिये ही समझी जाती है। पश्चिम का मायावाद हमारे प्राच्य आदर्शवाद को एकदम। ग्रसे ले रहा है। पहले इस बीमारी को दूर करने की आवश्यकता है। यह दूर होगी ब्रिटिश-छत्रच्छाया के बाहर निकलने से। इसीलिये वीर-रस-पूर्ण पुस्तकों की आजकल आवश्यकता है, प्रेम का पचड़ा फ़ुर्सत के वक्त ही अच्छा मालूम होता है। लड़ाई के समय वैराग्य के भजन---और फिर पुरानी खँडहरी पर—बिल्कुल व्यर्थ और अनावश्यक होते हैं। उन्हें कोई नहीं सुना करता। ख़ैर, ऐसे पुस्तक बड़ी उत्तम है, विद्वत्ता-पूर्ण है और शांति के समय मनन करने योग्य है।

× × ×

साहित्य—मूल-लेखक, महाकवि श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर; अनुवादक, वंशीधर विद्यालंकार; प्रकाशक, हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर सीरीज, गिरगाँव, बंबई; मूल्य ।॥), सजिल्द १।)

रवि बाबू के साहित्य-संबंधी विचारों का यह संग्रह प्रत्येक लेखक के पढ़ने योग्य है। अनुवाद भी उत्तम हुआ है। हाँ, भाषा में कहीं-कहीं शिथिलता है। पुस्तक का गेट-अप मनोहारी है। छपाई और शुद्धता अनिर्वचनीय। प्रत्येक साहित्य-प्रेमी से हमारा अनुरोध है कि वह इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़े।

सुधींद्र वर्मा

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके एक ही रोज़ के तीन बार के लेप से सफ़ेद दाग़ जड़ से न छूटे, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। दाम ३) रु०।

इस जड़ी के प्रशंसापत्रों में से मैं एक को ज्यों-का-त्यों उद्धृत करता हूँ—"वैद्यवर पं० महावीरजी, आपको कोटिशः धन्यवाद। आपकी जड़ी ने जादू का-सा काम किया। रोग काफ़ूर की भाँति उड़ गया। आप-ऐसे महानुभावों को ईश्वर चिरंजीवी करें तथा आपके औषधालय की दिन प्रति दिन उन्नति होती रहे। कृपया खाने की भी दवा शीघ्र ही वी० पी० द्वारा भेजिएगा। आपका रामावतार अवस्थी, कबीरपुर, पो० हरगाम, ज़ि० सीतापुर।"

पता—वैद्यराज पं० महावीर पाठक

नं० ३२, दरभंगा (बिहार)

MATRIMONIAL NOTICE

WANTED–a beautiful, healthy and cultured bride of any Province for a very rich friend of mine, highly educated and well cultured, Khatri by caste, handsome & very healthy. He is a big Businessman and Railway contractor. Photos can be exchanged. Dowry and Caste immaterial. Marriage to be arranged early for continental trip. Correspondence would be kept strictly confindential.

Please write to:—

Box No. 48

CARE SUDHA OFFICE

23-25, La-TouchеRoad

LUCKNOW

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. हमारा स्वातंत्र्य-युद्ध

पिछले अंक में हमने महात्माजी की महान् रण-यात्रा का प्रारंभिक विवरण दिया था। तब से अब तक देश की प्रगति में अनेक परिवर्तन हो चुके हैं। इन सब परिवर्तनों से केवल एक ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है। वह यह कि हमारा वर्तमान स्वातंत्र्य-युद्ध हमारे अन्य इसी प्रकार के पुरातन प्रयत्नों की अपेक्षा अत्यंत विधि-विहित, गंभीर तथा व्यापक है। इस बार का यह आंदोलन प्रस्तावों, अनुमोदनों और समर्थनों का एक बंडल ही नहीं है, वह काग़ज़ पर लिखी रह जानेवाली और समाचार-पत्र-जगत् में सनसनी फैलानीवाली कोरी बंदर-घुड़की ही नहीं है। वह है निराश, भुखमरे, केसरिया बाना पहनकर जौहर-व्रत करनेवाले हिंदोस्तानियों का अंतिम प्राणांत का महायुद्ध। अतएव उसमें एक विचित्र उत्साह, विचित्र संयम और दृढ़ आत्म-विश्वास पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। जेल के कष्टों की परवा न करनेवाली, मृत्यु और फाँसी को सहर्ष आलिंगन करनेवाली वीरोचित विदेहता उसका प्रधान अंग हो उठी है। यही कारण है कि कांग्रेस की नीति पर सदा कटाक्ष-वर्षा करनेवाले, 'माडरेट'-संप्रदाय के महापुरुष भी, आज कांग्रेस के इस आंदोलन से सहानुभूति रखते हैं। हमारे इस आंदोलन की सफलता में जिन लोगों को संदेह था, उनका संदेह भी अब बहुत कुछ दूर हो चला है। १९२१ के असहयोग-आंदोलन की अपेक्षा हमारा यह स्वातंत्र्य-युद्ध निश्चय-पूर्वक श्रेष्ठ और चिर-स्थायी कहा जा सकता है।

१९२१ के असहयोग-आंदोलन में देश के सामने वह महान् लक्ष्य नहीं था, जो आज हमारे सामने है। स्वतंत्रता का जो मोहन-मंत्र आज हमें अपने वश में किए हुए है, वह असहयोग-आंदोलन के समय हमारे सामने न था। उस समय हम एक परिवर्तन के लिये, कुछ सुधारों के लिये, ही लड़ रहे थे। किंतु आज हम आज़ादी के दीवाने हैं, आज तो प्यारे 'बिस्मिल' के शब्दों में 'सर-फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।' हथेली पर सिर रक्खे हुए, जीवन और प्राण की आहुति देने के लिये, सदा प्रस्तुत हमारे देश के नौजवान आज हँस-हँसकर सरकार की दमन-नीति को चुनौती दे रहे हैं।

आंदोलन के इस छोटे-से जीवन में ही देश के नव-युवकों की एक बहुत बड़ी संख्या ने जेल के दरवाज़े

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लटखटा डाले हैं। आज तक १००० से भी अधिक स्वयं-सेवक सरकार के मेहमान हो चुके हैं। जेलों में इन आइयों के साथ सरकार के बहुत-से नृशंस जेलरों ने अमानीच व्यवहार किया है। जेल के बाहर भी पुलिस ने निहत्थे जवानों पर डंडे, घूँसे तथा गोलियों की बौछार करने में कोताही नहीं की है। क़ानून का ढोंग बनानेवाले बहुत-से मजिस्ट्रेटों ने भी अपनी बादशाही आज्ञाओं और तैमूरी दंडों से युवक भारत के हृदय पर आतंक जमाने की कम चेष्टा नहीं की है। किंतु तो भी आंदोलन अबाध गति से अग्रसर होता जा रहा है। सरकार की धमकियाँ, मशीनगनों की पैरेड, बड़े लाट के आर्डिनांस और हेकीशाही अत्याचार भी उसकी प्रगति में बाधा नहीं डाल सके, वह और भी तीव्रतर वेग से चल उठा है।

× × ×

२. दुर्योधन कौन है ?

किंतु इस महान् युद्ध का सूत्रधार कौन है ? सरकार ही इस भयंकर परिस्थिति के लिये उत्तरदायिनी है। देश के नवयुवकों को क़ानून और शांति की उपेक्षा करने के लिये बाध्य करनेवाली सरकार है, महात्मा गांधी नहीं। कांग्रेस भी इस भयावह परिस्थिति के लिये उत्तरदायिनी नहीं ठहराई जा सकती। महात्माजी और कांग्रेस १९२० से ही सरकार को समझौता करने के लिये निमंत्रण देते आए हैं। ३१ दिसंबर, १९२९ की रात्रि के १२ बजे तक सारा देश सरकार से मित्रता-पूर्ण समझौता करने के लिये तैयार था। उसके बाद भी औपनिवेशिक स्वराज्य की गारंटी मिलने पर कांग्रेस सरकार से सहयोग करने के लिये तैयार थी, किंतु अपनी प्रेस्टीज, अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान के झोंक में झूमनेवाली सरकार ने उसकी मित्रता, सहयोग और सहानुभूति को उपेक्षा की दृष्टि से देखा। वह समझती थी कि मशीनगनों के सुहरे सामने आते ही बदमाश हिंदोस्तानियों के मिजाज ठिकाने आ जायँगे। इसीलिये उसने अपने रवैये में, अपनी गति में, ज़रा भी परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं समझी। परिणामतः आज उसे एक ऐसी भयंकर परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है, जो उसकी सारी राजनीतिक चालों को व्यर्थ किए दे रही है।

साइमन-कमीशन से भारतीयों को अलग रखने की बड़ी भारी ग़लती के बाद से अब तक सरकार की नीति में कोई भी ऐसा परिवर्तन नहीं हुआ, जिससे यह समझा जा सकता कि वह भारत के साथ न्याय तथा मित्रता-पूर्ण व्यवहार करना चाहती है; अपितु उसके प्रत्येक कृत्य से उसके हृदय की संदिग्ध अवस्था का ही परिचय मिलता आ रहा है। लॉर्ड इरविन और मि० बेन-जैसे भारत-हितैषी सज्जनों के हाथ में शासन-सूत्र होते हुए भी सारे देश में दमन का दौरदौरा होना, कॉटन टेरिफ़ के प्रश्न का भारत के विरुद्ध निबटारा, बंगाल-आर्डिनांस, प्रेस-आर्डिनांस और लाहौर-ट्रिब्यूनल-आर्डिनांस-जैसे नितांत अनावश्यक नियमों का पास होना, मशीनगनों और बंदूकों द्वारा निहत्थे और अहिंसावादी सत्याग्रहियों पर आक्रमण होना स्पष्टतया इस बात का परिचय देता है कि सरकार भारतवासियों पर प्रेम और सहानुभूति का शासन नहीं करना चाहती, वह चाहती है डरा और धमकाकर, पीटकर और जेल भेजकर, हुकूमत करना। संसार की कोई भी सभ्य जाति इस प्रकार से शासित होना पसंद नहीं करती। अत्याचारों से पीड़ित रहकर, भूखों मरकर तथा सदा डरते रहकर विदेशी शासकों के लिये रुपया पैदा करना किसी भी स्वात्माभिमानी राष्ट्र को पसंद नहीं हो सकता। तब फिर ये बातें उन्निद्र युवक भारत कैसे सहन कर सकता है। यदि सरकार अपनी मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहती, तो भारतीय युवकों को क्या पड़ी है कि वे उसके तलवे सहलाते फिरें। इस प्रकार की हृदय-हीन सरकार से सब प्रकार का संबंध परित्याग कर देने में ही वे अपनी भलाई समझते हैं। उसके उन अत्याचारी क़ानूनों को, जिनमें ब्रिटिश स्वार्थों की रक्षा के कारण सरकार कोई परिवर्तन नहीं करना चाहती, तोड़कर दंड भुगतने में ही वे देश का कल्याण समझते हैं। फल-स्वरूप सरकार को इस भयंकर परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है। यदि सरकार अब भी समझौते के लिये तैयार हो जाय, यदि अब भी वह अपनी हार्दिक कलुषता को दूर करके अपनी मनोवृत्ति में भारतीय आशाओं के प्रति सहानुभूति-पूर्ण परिवर्तन कर ले, और क़ैद किए हुए राज-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नीतिक नेताओं और सिपाहियों को मुक्त कर दे, तो उसकी कठिनाइयों का शीघ्र ही अंत हो जाय। औपनिवेशिक स्वराज्य की गारंटी मिलते ही कांग्रेस गोलमेज़ कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिये तैयार की जा सकती है।

किंतु सरकार की वर्तमान मनोवृत्ति से इस प्रकार के समझौते की कोई भी आशा नहीं की जा सकती। अपने पशु-बल तथा अपनी प्रेस्टीज़ की पुरानी थाती पर बैठी हुई ब्रिटिश सरकार अपने अन्य उपनिवेशों के समान भारतवर्ष को भी अपने लिये एक चिंता की वस्तु बनाए ले रही है। अमेरिका, आयर्लैंड, आफ्रिका तथा आस्ट्रेलिया में प्राप्त किए हुए अपने कटु अनुभवों से वह कोई लाभ नहीं उठाना चाहती। संभव है, वह अमेरिका और आयर्लैंड की तरह भारतवर्ष को भी हाथ से निकल जाने देना चाहती है, शायद इन देशों के समान ही भारतवर्ष से समझौता करने में भी वह 'टू लेट' (Too Late) ही रहना चाहती है। तभी देश की ऐसी भयानक अवस्था हो जाने पर भी वह दमन की धमकी दे रही है। परंतु उसे याद रखना चाहिए कि सदा पैरों से रौंदी जाने-वाली धूल भी जब अधिक ठुकराई जाती है, तो उड़कर लोगों के सिर पर सवार हो जाती है, उनका साँस लेना मुश्किल कर देती है। क्या पद-दलित, अत्याचार-पीड़ित हिंदोस्तानियों को दमन-चक्र के अनवरत प्रहारों से सरकार भी वैसा करने के लिये मजबूर नहीं कर रही है? क्या वह अपनी वर्तमान शासन-नीति से अपने पुराने हितैषियों और मित्रों को भी अपना शत्रु नहीं बना रही है? क्या वह स्वयं अपने लिये कठिनाइयाँ उपस्थित नहीं कर रही है?

× × ×

३. सरकार के तीन प्रधान विरोधी

अपनी विचित्र शासन-नीति से सरकार ने न केवल भारतीय नवयुवकों को ही अपना विरोधी बना लिया है, अपितु उसके पुराने हितैषी भी आज उसके कट्टर प्रतिद्वंद्वी हो उठे हैं। महात्मा गांधी सरकार के प्रथम प्रधान विरोधी हैं। नमक-कर-सत्याग्रह आपने ही प्रारंभ किया है। आप सरकार की कलुषित मनोवृत्ति के सबसे बड़े दुश्मन हैं। किंतु आप सदा से सरकार के विरोधी नहीं थे। परिस्थितियों और सरकार की हृदय-हीन करतूतों ने आपको उसका सबसे बड़ा विरोधी बना दिया है। बोअर-युद्ध में स्ट्रेचर कोर का कर सरकार की सहायता करनेवाले, लोकमान्य तिलक के विरुद्ध सरकार के लिये रँगरूटों की भरती की अपील करनेवाले महात्मा गांधी आज सरकार के क़ानूनों को तोड़ते हैं, सरकार का बहिष्कार करने तथा उसकी उपेक्षा करने के लिये लोगों को उकसाते हैं, केवल इसलिये कि उन्हें विश्वास हो गया है कि सरकार का हृदय शुद्ध नहीं है, वह समझौते का ढोंग रचकर हिंदुस्तानियों को धोखा देना चाहती है। उन्हें पूरा विश्वास है कि उसका १९१९ का शासन-विधान तथा सायमन-कमीशन की जाँच एक निर्जीव खिलौना है। वे पूर्णतः समझ चुके हैं कि पूर्ण स्वायत्त शासन की प्राप्ति ही भारत की वर्तमान दरिद्रता और परायत्त परिस्थिति का एकमात्र उपाय है। अतएव उन्होंने असहयोग, सत्याग्रह तथा क़ानून-भंग-जैसे अंतिम उपायों का अवलंबन किया है।

महात्माजी के बाद सरकार के प्रधान प्रतिद्वंद्वी हैं महामना मालवीयजी। २५ वर्ष से लगातार सरकार की कौंसिलों तथा असेंबली के सदस्य रहकर मालवीयजी ने सरकार और देश का बहुत कुछ हित साधन किया है। समय-समय पर आपने सरकार की बड़ी सहायता की है। सरकार का आप पर बहुत कुछ विश्वास भी रहा है। किंतु अपने इतने वर्षों के सरकारी सहयोग के बाद आपको सरकार की शासन-नीति का जो कटु अनुभव हुआ है, उसके कारण आपने सरकार का सहयोग परित्याग करना ही उचित समझा है। असेंबली से त्यागपत्र देते हुए आपने जो पत्र वायसराय को लिखा है, उसमें आप कहते हैं—

"श्रीमन्! मैं हार्दिक दुःख के साथ असेंबली से त्यागपत्र दे रहा हूँ। कांग्रेस की स्थापना से लेकर अब तक मैं सुधारों का सहायक और भारतीय कौंसिलों से लाभ उठाने का पूरा समर्थक रहा हूँ। ९ वर्ष तक मैं युक्त प्रांतीय कौंसिल का सदस्य रहा हूँ तथा प्रथम असेंबली को छोड़कर १९१९ से अब तक मैं बड़ी धारा-सभा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का भी सदस्य रहा हूँ। मैंने मांटेगू-चेम्सफ़ोर्ड-सुधारों को अपूर्ण और असंतोष-जनक मानते हुए भी स्वीकार किया है। अधिक अधिकार माँगने के लिये मैंने अपने देश-वासियों से अपील भी की थी। लाहौर-कांग्रेस में मैंने कौंसिल-बहिष्कार का विरोध भी किया था। वहाँ कौंसिल-विरोध का प्रस्ताव पास हो जाने पर भी मैंने कौंसिल में बने रहने के लिये लोगों से कहा था। मेरी प्रेरणा से ही कुछ कांग्रेसवाले पुनः असेंबली में आए थे; परंतु आपको आश्चर्य होगा कि मैं स्वयं असेंबली से इस्तीफ़ा दे रहा हूँ। इसका कारण जानने में आपको देर न लगेगी।

"१९२४ में असेंबली का सदस्य चुने जाने के बाद से मैं वर्तमान शासन-विधान की त्रुटियों के विरुद्ध आंदोलन करता रहा हूँ। लेकिन त्रुटि-पूर्ण होते हुए भी यदि सरकार शुद्ध भावना से काम करती, तो इसी शासन-विधान से देश को काफ़ी लाभ पहुँचता। सरकार ने अपने इस उत्तरदायित्व को नहीं समझा। असेंबली का पिछले दस वर्ष का इतिहास साक्षी है कि भारत-सरकार—जो न तो असेंबली के प्रति उत्तरदायी है और न असेंबली की राय मानने के लिये बाध्य है—अपने मनोनीत और पिछलग्गू सदस्यों की सहायता से जो चाहती है, असेंबली से पास करवा लेती है। असेंबली के कार्य-क्रम से स्पष्ट है कि यह सरकार ब्रिटिश-स्वार्थों के लिये पहले की अपेक्षा अब और भी अधिक तत्पर रही है। यह भी अब स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान काल में असेंबली द्वारा कोई भी हित-साधन नहीं हो सकता।

"इन सब बातों से मुझे दुःख हुआ है। सरकार ने ट्रेड-बिल द्वारा दरिद्र भारत पर और बोझ लाद दिया है। यह सब इस प्रचलित शासन की मेहरबानी है। असेंबली से संबंध-परित्याग के बाद ही वर्तमान शासन-प्रणाली का नाश कर इसके स्थान पर एक उत्तम शासन-विधान की स्थापना करने का मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया है।"

मालवीयजी के इन शब्दों से सरकार के निस्सार शासन-विधान, थोथी सहानुभूति तथा कलुषित-हृदयता का पर्याप्त परिचय मिलता है। उसके इसी हृदय-हीन व्यवहार के कारण मालवीयजी-जैसे सरकार के पृष्ठ-पोषक आज उसके प्रबल विरोधियों में सम्मिलित हो गए हैं।

मालवीयजी और गांधीजी के अनुभवों की विभिन्नता—एक का शासन-विधान से संबंद्ध होना और दूसरे का उससे पार्थक्य—एक विशेष महत्व रखती है। गांधीजी का अनुभव बाह्य है, मालवीयजी का अंतरंग। अतएव दोनों का वर्तमान शासन-प्रणाली के विषय में एक-मत होना सिद्ध करता है कि हरएक पहलू से सरकार की यह शासन-भित्ति बड़ी बोदी और कच्ची है। आशाओं का तान-वितान तक इस सवियल दीवार के सहारे नहीं खड़ा किया जा सकता।—प्रेसिडेंट पटेल का त्यागपत्र इस परिणाम की और भी पुष्टि करता है!

श्रीयुत पटेल ने संसार के सभी सभ्य देशों के शासन-विधानों का ख़ूब अध्ययन किया है। वे वर्षों तक असेंबली के सभापति की हैसियत से सरकार की शासन-प्रणाली के एक प्रधान और आवश्यक अंग रहे हैं। सरकारी अफ़सरों की मनोवृत्तियों तथा गवर्नमेंट की शासन-नीति का उन्होंने गहरा और बहुत समीप से अध्ययन किया है। अतएव उनका सरकार से असहयोग करना इस बात का प्रमाण है कि वर्तमान परिस्थिति में कोई भी आत्माभिमानी भारतीय सरकार का साथ देने के लिये तैयार नहीं। असेंबली से निकलते ही श्रीयुत पटेल का सत्याग्रह का पक्ष करना इस बात का साक्षी है कि भारत-सरकार की शासन-नीति की जड़ें अब बिलकुल निस्सार और खोखली हो गई हैं। उनकी झूठी स्थिरता में विश्वास रखकर अब कोई भी बुद्धिमान् तथा समझदार हिंदोस्तानी सरकार का साथ नहीं दे सकता। कांग्रेस द्वारा प्रदर्शित सत्याग्रह का मार्ग ही अब इस परिस्थिति का अंत कर देने के लिये एकमात्र मार्ग रह गया है। इस शासन-विधान का समूलोच्छेद हुए बिना, इसके स्थान पर मित्रता, सहानुभूति तथा न्याय पर अवलंबित नए शासन-विधान की स्थापना हुए बिना इँगलैंड और भारत की संधि नहीं हो सकती। हृदय का मैल बिना मिटे मेल होना एकदम असंभव है।

× × ×

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

४. दो पहलू

वर्तमान आंदोलन के दो पहलू हैं—सत्याग्रह और विदेशी-वस्त्र-बहिस्कार।

सत्याग्रह-आंदोलन के प्रमुख नेता हैं महात्माजी और विदेशी-वस्त्र-बहिस्कार के पुरोहित हैं महामना मालवीयजी। दोनो ही आंदोलन एक दूसरे के पूरक हैं। दोनो के साथ-साथ चलने से ही देश की प्रगति में आकस्मिक परिवर्तन हो सकते हैं। दोनो की सफलता पर ही इस आंदोलन की सफलता निर्भर है।

सत्याग्रह-आंदोलन की सफलता तो अब स्पष्ट है ही। ऐश्वर्य की गोद में पले हुए पं० जवाहरलाल नेहरू-जैसे मनुष्यों का अपनी सभी सांसारिक महत्त्वाकांक्षाओं को लात मारकर देश के लिये अपने आपको निछावर कर देना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि देश की युवक-शक्ति केवल सत्याग्रह को ही देशोद्धार का एकमात्र उपाय समझती है। नमक-कर तथा अन्य ऐसे ही मानव-स्वत्वों का नाश करनेवाले क़ानूनों के विरुद्ध आज देश-भर के नवयुवक सत्याग्रह कर रहे हैं। बड़े-बड़े पढ़े-लिखे बैरिस्टरों, डॉक्टरों और प्रोफ़ेसरों से लेकर मिलों और फ़ैक्टरियों में काम करनेवाले मेहनत-पेशा लोगों तक में सत्याग्रह की सफलता पर दृढ़ विश्वास पाया जाता है। मालवीयजी, केलकर महोदय तथा अन्य ऐसे ही लोगों का सत्याग्रह-आंदोलन में सम्मिलित होना उसकी सफलता का प्रबल प्रमाण है। 'रेस्पोंसिविस्ट' तथा 'नेशनलिस्ट' कहलानेवाले हमारे राजनीतिक नेताओं का इस अवसर पर महात्मा गांधी की विजय-पताका के नीचे आ खड़ा होना स्पष्ट बतला रहा है कि यह आंदोलन शीघ्र दबनेवाला नहीं, वह ख़ूब गहरा, भीषण और व्यापक है। कांग्रेस के दोनो दलों को पुनः संयुक्त कर देनेवाले इस आंदोलन के विषय में सरकार और जनता का एक ही मत है। दोनो उसकी सार्थकता और भीषणता को ख़ूब समझते हैं। पर सरकार अपनी शान में बट्टा न लगने देने की चिंता में उसकी अवहेलना कर रही है। वह मूर्खता-पूर्ण उपायों से उसे दबाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रही है। उसकी बढ़ती हुई भीषणता के कारण सरकार का दमन-चक्र और भी भयंकर वेग से चल निकला है। किंतु ज्यों-ज्यों सरकार के अत्याचारों की वृद्धि होती जा रही है, त्यों-त्यों जनता में सत्याग्रह की सफलता पर और भी विश्वास बढ़ता जा रहा है। सरकार को न्याय और क़ानून का पुतला तथा दूरदर्शिता का सागर समझनेवाले, कांग्रेस की नीति पर सदा ज़हर उगलनेवाले, हमारे माडरेट नेता भी दमन-नीति की इस धमाचौकड़ी में दिन-रात होते हुए न्याय और शांति-रक्षा के ढोंग को देख-देखकर भड़क उठे हैं। वे भी सरकार की शासन-नीति का विरोध कर उठे हैं।

दमन-चक्र के भीषण प्रहारों के होते हुए भी थोड़े दिनों के अंदर ही हज़ारों जवानों का जेल चला जाना स्पष्ट बतला रहा है कि सरकार की जेलों और डंडों का अब उन्हें कोई भय नहीं रह गया है। जेल जाकर कष्ट सहना अब उनके लिये एक आवश्यक कर्तव्य हो गया है। किसी भी आत्माभिमानी भारतीय का जेल के बाहर रह जाना अब अपमान की बात समझी जाती है। यह सत्याग्रह-आंदोलन के प्रबल प्रभाव का पुष्ट प्रमाण है, उसकी सफलता का ज्वलंत निदर्शन है।

विदेशी-वस्त्र-बहिस्कार-आंदोलन भी सफलता की ओर अग्रसर हो रहा है। पं० मदनमोहन मालवीय-जैसे मध्यगामी महापुरुषों का इस आंदोलन का नेतृत्व करना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है। बंबई, अमृतसर, भागलपुर, लखनऊ, प्रयाग तथा अन्य स्थानों के विदेशी-वस्त्र-विक्रेताओं ने एक निश्चित अवधि तक विदेशी माल न मँगाने की शपथ ले ली है। देहली, प्रयाग, लखनऊ, अहमदाबाद आदि स्थानों में हमारी माताओं और बहनों ने जिस वीरता से विदेशी-वस्त्र-बहिस्कार-आंदोलन का नेतृत्व प्रारंभ किया है, उससे पता चलता है कि शीघ्र ही लंकाशायर और मैंचेस्टर की मिलों में ताले लटकने लगेंगे।

विदेशी वस्त्रों के विरुद्ध आज देश में ऐसा विचार वातावरण मंडल उत्पन्न हो गया है कि उसमें पड़कर विदेशी व्यापार अछूता नहीं रह सकता। बंबई के स्टॉक एक्सचेंज के दलालों तक ने अपने दफ़्तरों में यह नियम कर दिया है कि सब लोग गांधी टोपी और खद्दर के कपड़े पहन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर ही आवें, जो इसके विरुद्ध आचरण करेगा, वह निकाल दिया जायगा। देश-भर की अधिकांश म्युनिसिपैलिटियों और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के नौकरों के लिये भी इसी प्रकार के नियम प्रचलित हो गए हैं। स्कूलों और कॉलिजों के फ़ैशनेबल बाबू लोग भी विदेशी वस्त्रों के स्थान पर स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग करने लगे हैं। देश के बहुत-से बार-एसोसियेशनों ने भी अदालत में खद्दर का ही उपयोग करने का निश्चय किया है। गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले और घर-घर में स्वदेशी की ही चर्चा है। प्रत्येक घर की समझदार लड़कियों और बहुओं ने विदेशी वस्त्र न पहनने की प्रतिज्ञा-सी कर ली है। सारा देश ही मानों आज स्वदेशी के रंग में रँग गया है। विदेशी कपड़ों की होली तो अब आए दिन की घटना हो गई है।

स्वराज्य-संग्राम के इन दो पहलुओं की एकांत सफलता इस बात का प्रबल प्रमाण है कि देश आज ठीक मार्ग पर है। वह सरकार की दमन-नीति से अब डरकर बैठनेवाला नहीं। भारतीय जवान अब उसकी बंदरघुड़की से डरनेवाले नहीं रहे। अब तो वे जीवन-मरण के प्रश्न का फ़ैसला करने के लिये बढ़ चुके हैं। अपने देश का शासन-सूत्र अपने हाथ में लिए बिना अब वे चुप न बैठेंगे। स्वतंत्रता की दिव्य ज्योति से आलोकित उनके विशाल विक्रम को जेल की दीवारें सीमित नहीं कर सकतीं। उनके हृदय क़ैद नहीं किए जा सकते। उनकी आत्मा मशीनगनों से मारी नहीं जा सकती, उनके दिमाग़ और उनकी क़लम अब आर्डिनांसों की चक्की में पीसी नहीं जा सकती। वे आज़ादी के दीवाने हैं। वे अमर हैं, वे अजेय हैं, वे मुक्त हैं। स्वतंत्रता का अमृत पानकर, ग़ुलामी की मानव देह परित्यागकर, मातृभूमि की स्वर्गमयी गोद में बैठे हुए वे आज इंद्र को भी कुछ नहीं समझते। उनके लिये अब मृत्यु नहीं है, कष्ट नहीं है, बंधन नहीं है।

ऐसे भयंकर प्रतिद्वंद्वियों से समझौता कर लेने में ही सरकार की भलाई है। हँस-हँसकर जान दे देनेवाले इन अहिंसावादी नौजवानों की अमर आत्मा पर सरकार प्रेम और मित्रता से ही क़ाबू पा सकती है। मशीनगनों की बौछारें इन पागलों पर कोई असर नहीं करतीं। ढेर-के-ढेर शहीदों की लाश पर पाँव रखते हुए ये दीवाने फिर एक अभेद्य दीवार की तरह मर मिटने के लिये आ खड़े होते हैं। मृत्यु भी ऐसे वीरों से डरती है। तब फिर सरकार को उनसे समझौता करने में आना-कानी न करना चाहिए। देश, साम्राज्य तथा शांति की रक्षा के लिये शीघ्र-से-शीघ्र युवक-भारत की शर्तें और कांग्रेस की माँगें स्वीकार करके सरकार को इस आंदोलन का अंत कर देना चाहिए। समझौते के अतिरिक्त अब शांति-रक्षा का दूसरा कोई उपाय नहीं।

× × ×

५. अहिंसा

किंतु इस प्रबल आंदोलन की आत्मा अहिंसा ही होनी चाहिए। यह आंदोलन किसी जाति या व्यक्ति के विरुद्ध नहीं है। सत्याग्रही किसी वाइसराय या किसी गवर्नर अथवा उसके नीचे काम करनेवाले किसी गोरे अथवा काले सरकारी गुर्गे से द्वेष या शत्रुता नहीं रखते। शत्रुता है केवल वर्तमान शासन-पद्धति से। वे उसे एकदम बदल देना चाहते हैं। इस परिवर्तन की स्थापना के लिये वे कष्ट-सहिष्णुता, सत्याग्रह तथा क़ानून-अवज्ञा आदि वैध तथा शांति-पूर्ण उपायों को ही काम में ला रहे हैं। क्रोध और हिंसा के भावों को इस आंदोलन में कोई स्थान नहीं। केवल कष्ट-सहिष्णुता तथा सत्य-निष्ठा के बल पर उन्हें सरकार के पशु-बल का मुक़ाबला करना है। उन्हें विश्वास है कि अंत में धर्म की ही विजय होगी, अतः सरकार की दमन-नीति की वे परवा नहीं करते। वे उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। अपना मन तथा कर्म सदा अहिंसात्मक रखते हुए वे यदि अपनी सत्य-निष्ठा के बल पर सरकार के अत्याचारों का वीरता-पूर्ण सामना करते रहेंगे, तो उन्हें विश्वास है कि शीघ्र ही अपने उद्देश्य में सफल होंगे।

अतएव उन्हें अपने इस आंदोलन को हिंसा की गंध से भी बचाना होगा। हिंसात्मक उपायों का, चाहे वे कितने ही उपयोगी क्यों न हों, वे इस समय प्रयोग नहीं कर सकते। सरकार की अनंत सेना-शक्ति के आगे सदियों से निहत्थे रहने के आदी, दुर्बल और बुभुक्षित हिंदोस्तानी क्षण-भर भी शस्त्र-युद्ध नहीं कर सकते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किंतु सदा से आत्मिक ज्ञान के धनी, आत्मा के अमरत्व में विश्वास रखनेवाले, और आत्मबल को ही सर्वश्रेष्ठ और सर्वविजयी समझनेवाले भारतीय अपनी इसी अक्षय निधि से सरकार के सारे पशु-बल को चुरण कर सकते हैं, सरकार के सारे सैन्य-बल को चुनौती दे सकते हैं।

अहिंसा आत्मबल का प्रथम अंग है। मनु महाराज ने धर्म के लक्षणों में अहिंसा को ही प्रथम स्थान दिया है। (अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यं धृतिः क्षमा इत्यादि) अतएव उसका किसी प्रकार भी त्याग करना इस आंदोलन के लिये एक भीषण घटना होगी। सरकार और पुलीस इस बात को जानती है, इसीलिये वह अपने अत्याचारों और शरारतों से जनता को शांति-भंग करने के लिये, मार-पीट करने के लिये, मजबूर करना चाहती है। अतएव उसका प्रथम कर्तव्य है कि वह सदा शांति बनाए रखने के लिये अपना संपूर्ण बल लगा दे। महात्माजी को शांति-भंग का ही सबसे बड़ा डर है। इसीलिये वे बार-बार अहिंसा के ऊपर ज़ोर दिया करते हैं। सूरत में व्याख्यान देते हुए उन्होंने एक बार कहा था—

"सरकार धीमी चाल से चल रही है। वह बुद्धिमान् और समझदार है। पर यदि लोग आपे से बाहर हो गए और पत्थर फेंकने या गाली देने लगे, तो सरकार तेज़ी से अपना क़दम बढ़ावेगी, और एक जान के पीछे हज़ार जानें लेगी। इसलिये पुलिस को जो चाहे करने दीजिए, पर जनता कोई हिंसा का काम न करे।"

कलकत्ते और करांची आदि के झगड़ों के विषय में अपना मंतव्य प्रकट करते हुए वे लिखते हैं—

"हिंसा होने से हमारी लड़ाई पर धक्का पहुँचता है। सत्याग्रहियों को हिंसावादियों और सरकार की हिंसा का भार तो वहन करना ही पड़ेगा। सत्याग्रह-संग्राम हमारा जारी रहना चाहिए। प्रारंभ से ही मुझे भय था कि जनता में हिंसा न फैल जाय और चूँकि ऐसा हुआ है, मुझे बड़ा दुःख हुआ है; क्योंकि इससे हमारी लड़ाई में हानि होती है। हिंसा को उत्तेजित करने का दोषी मैं सरकार को मानता हूँ। सार्वजनिक सभाओं और जुलूसों को रोकना ही हिंसा को उत्तेजित करना है। अहिंसावादी नेताओं को जान-बूझकर सरकार ने गिरफ़्तार कर लिया है। ऐसी अवस्था में जोशीली जनता में हिंसा का प्रज्वलित न होना एक आश्चर्यजनक बात होती, पर साफ़ बात तो यह है कि सरकार स्वयं शांति नहीं चाहती। उदाहरण के लिये गुजरात को ही ले लीजिए। नमक छीनने में निश्शस्त्र और शांतिमय राष्ट्रीय स्वयंसेवकों से जैसा कुत्सित और निर्दयता-पूर्ण व्यवहार किया गया है, वैसा भारतवर्ष के बाहर किसी भी सभ्य देश में नहीं होता।

"सरकार द्वारा ज़बर्दस्ती नमक छीनने की बात बिलकुल असहनीय है, और अंत में यह जनता के धैर्य का नाश कर सकती है।

"मुझे प्रसन्नता है कि श्रीजयरामदास-दौलतराम को गोली लगी है। समस्त भारत में वे एक बड़े व्यक्ति हैं। भीड़ में वे जनता को हिंसा सिखाने के लिये नहीं, किंतु उसको रोकने के लिये ही गए थे।

"फिर भी मैं कहूँगा कि जो लोग अपने को सँभाल नहीं सकते, वे हमारी इस लड़ाई में दख़ल न दें। अगर वे ऐसा करते हैं, तो वे देश की बढ़ती को रोकते हैं। सत्याग्रह-जैसा भारत-व्यापी आंदोलन मनुष्यों द्वारा नहीं, ईश्वर द्वारा चलाया जा रहा है।"

अतएव जनता का कर्तव्य है कि वह हरएक उपाय से अपने इस आंदोलन को अहिंसात्मक और शांतिमय बनाए रक्खे। सारा संसार इस रक्त-हीन क्रांति के नवीन उपाय, अहिंसात्मक असहयोग और सत्याग्रह की सफलता की ओर टकटकी लगाए देख रहा है। इसकी सफलता संसार के इतिहास की एक अद्वितीय घटना होगी।

× × ×

६. संवाद-पत्र और छापेखानों पर प्रहार

देश के लिये इससे बड़े दुर्भाग्य की बात और क्या होगी कि उसके सच्चे सेवक संवाद-पत्र सरकार के शासन-प्रबंध में अड़ंगा लगानेवाले, विद्रोह की आग भड़कानेवाले क़रार दिए जाते हैं। बड़े लाट लॉर्ड इरविन ने अपने सहकारी विदेशी शासकों तथा श्वेतांग-समाज की बातों में आकर १९१० ई० के पुराने महा कठोर आर्डिनांस को संवाद-पत्रों तथा छापेखानों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर जारी कर दिया है। यह क़ानून १९२२ ई० में रद्द कर दिया गया था। पर अब भारत के बड़े लाट साहब ने अपने विशेषाधिकार द्वारा इस क़ानून को फिर जारी कर दिया है। आपने लिखा है कि भिन्न-भिन्न स्थानों से सरकारी कर्मचारियों ने सूचित किया है कि इस क़ानून के रद्द हो जाने के कारण ही संवाद-पत्रों को बेतरह सर उठाने का मौक़ा मिला और इससे देश की शांति के मेघ कटते-उड़ते रहे, इसके लिये इसको फिर से जिलाना आवश्यक है, इससे संवाद-पत्र क्रांतिकारियों तथा सत्याग्रह-आंदोलन की पृष्ठ-पोषकता न कर सकेंगे। इसी शांति की स्थापना के लिये यह क़ानून २७ एप्रिल १९३० ई० से जारी कर दिया गया।

अकबर बादशाह ने कहा—बीरबल, तेरी दाढ़ी में आग लगे और मेरी दाढ़ी में आग लगे (सरकारी शांति के अस्तित्व की तरह अकबर के भी दाढ़ी थी), तो तू क्या करे? बीरबल ने कहा—ग़रीबपरवर, पहले तो दो झटके अपनी ही दाढ़ी में लगाऊँ। इस प्रेस-आर्डिनांस द्वारा अँगरेज़ी स्वार्थ ने अपनी दाढ़ी में दो झटके पहले लगाए, तो यह कोई बेतुकी नहीं रही। यह तो शासकों का सनातन धर्म है।

स्टेट्समैन अँगरेज़ों का मुख-पत्र है। अँगरेज़ों के स्वार्थ के लिये आप बड़े परेशान रहते हैं। एक जगह अपने बीसों नाख़ूनों का बल लगाते हुए, आप इस तरह गरजे—"कलकत्ते और अलीपुर-जेल-हंगामों के बारे में कलकत्ते के संवाद-पत्रों में दिन-पर-दिन जो ख़बरें निकल रही हैं, उन्हें झूठ जानकर भी संवाद-दाताओं ने प्रकाशित कर दिया, और अत्यंत निकृष्ट और दुश्चरित्र लोगों के लिये जो अलफ़ाज़ काम में लाए जा सकते हैं, उन्हीं से सरकार और सरकारी कर्मचारियों को गालियाँ दी गईं।" इसके साथ ही स्वजातीय संवाद-पत्रों के प्रति स्टेट्समैन ने जैसी राय ज़ाहिर की, वह निस्संदेह ब्रिटिश-जर्नलिज़्म में सत्योक्ति की हद है! गौर वाणी का कुछ भी गौर असर गौर लोगों पर न पड़े! संवाद-पत्रों के छोटे मुँहों की बड़ी बातों ही का यह नतीजा है।

महात्माजी ने इस क़ानून पर लिखा था कि अब चुप या इस क़ानून को मान लेने के दिन नहीं रहे और संवाद-पत्र यदि जनता के सच्चे प्रतिनिधि हैं, तो वे इस क़ानून से नहीं डरेंगे। जब हम अपनी जान देने के लिये तैयार हैं तब हमें अपना माल भी दे देना चाहिए।

इस प्रेस-आर्डिनांस का फल बड़ा भयंकर हो गया। राजधानी दिल्ली देश के मुख्य संवाद-पत्रों से रहित हो गई। प्रताप, विश्वमित्र, आज, अभ्युदय, महावीर, मतवाला, वर्तमान, स्वदेश, पंजाब-केसरी, अर्जुन, कर्मवीर, मज़दूर, देश आदि पत्रों ने अपना प्रकाशन बंद कर दिया। इसपर पटेल-जैसे नेताओं ने यद्यपि अपने ज़ोरदार शब्दों में कहा है कि जो बातें सरकार को आम तौर पर लोग कहते हैं, वही छपने पर घातक समझी जाती हैं। उन्होंने अख़बारवालों को इसलिये अख़बार ही बंद कर देने की सलाह दी है। जनता को इन्हीं पत्रों के द्वारा देश की स्थिति मालूम होती थी। अब वह साधन नहीं रहा। कलकत्ता-जैसा विशाल शहर भी एक तरह अब पत्र-हीन है। इससे सरकार को तो दमन की सुविधा होगी, पर जनता के संगठन में बाधा पड़ेगी, जिससे उसका छत्र-भंग ही होता रहेगा। गुजरात, पूना, नागपुर सब जगह के पत्रों की यही दशा हुई है। यह देश के स्वार्थ का सबसे बड़ा अहित है, और इससे भीषणता की और भी वृद्धि हो सकती है।

× × ×

७. सारदा-बिल का विरोध

सारदा-विवाह-बिल का इधर ज़ोरों से विरोध किया गया। मुसलमान भाइयों की एक पहले हड़ताल हो चुकी थी। पर अब कर्मण्य भी विरोध जारी हो गया है। इसमें पुराने विचारों के पंडित अग्रणी हैं। अभी थोड़े दिन हुए कानपुर में भी पंडितों की एक सभा हुई थी, और ८ वर्ष की बालिका के विवाह से वैकुंठ में अकुंठित गति प्राप्त करनेवाले पंडितों ने ख़ूब खुलकर शास्त्रार्थ किया और सिद्ध भी कर डाला कि बिना ८ साल की लड़की का विवाह किए हिंदू-धर्म की रक्षा हो नहीं सकती। इधर देश की जैसी परिस्थिति है, इससे शायद विधवा-विवाह की ही तरह इस बिल का परिणाम होगा, और हमारा ख़याल है, बड़ी-बड़ी बातों के लिये दबाव कभी कारगर नहीं होता, उससे विपरीत फल की ही प्राप्ति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती है। लोग जिस तरह रूढ़ियों के ग़ुलाम हैं, उन्हें स्वभाव के अनुकूल न चलने देने से उनकी आत्मा एक बड़े-से बोझ के नीचे दब जाती है, जिससे उनकी साँस रुक जाती और उन्हें हृदय की यंत्रणा मिलती है। वे अपने पूर्व-संस्कारों का प्रदक्षिणा करते हुए ही सुखी रहते हैं। उन्हें उन्हीं संस्कारों के भीतर से संस्कारों के बाहर ले जाना है। अवश्य आशुफल की आशा रखने-वाले इतने स्थिरचित्त नहीं होते। हम अनेक बार लिख चुके हैं कि देश के दारिद्र्य तथा निर्बलता का प्रधान कारण बाल-विवाह ही है, नवीन संस्कृति की नींव मज़बूत करने के लिये आवश्यक है कि यह कुप्रथा समाज से शीघ्र दूर कर दी जाय। पर नहीं, मूर्ख जनता पर पंडित और मुल्लाओं का जैसा प्रभाव है, ये धर्म के ठेकेदार कभी देश की मूर्ख-मंडली को सँभल-कर अपनी दशा पर विचार करने नहीं देंगे। इधर हमारे एक पंडित लक्ष्मणजी शास्त्री द्रविड़ ने भी लड़के के विवाह से इस क़ानून का भंग किया है, और सनातन-धर्म की धुरी के सामने आए हैं। गाँवों में इस समय बड़े ज़ोरों से विवाह हो रहे हैं। जिन्हें तीन साल बाद भी कन्या का विवाह करने पर रोहिणी-दान का फल प्राप्त होता, वे गौरी के पिता से भी प्रगति में आगे हो रहे हैं। मारवाड़ियों ने तो पूरे पाँच साल तक के लिये छुट्टी कर ली है। यह तमाशा देखकर देश की मानसिक दयनीय स्थिति पर दुःख होता है। समाज के अंग से यह पंडित-पाप जब तक दूर न होगा, तब तक समाज की शिशुता से यौवन की ज्योति नहीं निकल सकती। लोग इसी तरह पुस्तकों के पन्नों में स्वतंत्रता और धर्म की तलाश करते फिरेंगे, मनुष्य के विचारों और प्रकृति में नहीं।

× × ×

८. शेली और रवींद्रनाथ

रवींद्रनाथ इस समय संसार के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इस समय आप योरप में हैं। अभी पेरिस में आपकी ७०वीं वर्ष-गाँठ का जल्सा बड़े धूमधाम से मनाया गया। आप यौवन के प्रथमोन्मेष में ही शिक्षा के लिये योरप गए थे। तब से अब तक कई बार जा चुके हैं। पूर्व के विद्वानों में रवींद्रनाथ ही एक ऐसे महापुरुष हैं, जिनका पश्चिम के प्रायः सभी शिक्षित समुदाय पर प्रभाव है। उसका कारण बहुत कुछ यह भी है कि रवींद्रनाथ पश्चिम की संस्कृति की आत्मा तक पैठ सके हैं और प्राणों को प्रसन्न करने का बीजमंत्र उन्हें मालूम हो चुका है। वे अपने स्वर के तार को इस प्रकार झंकृत कर सकते हैं, जिसकी एक ही ध्वनि में पूर्व और पश्चिम की महिमा की रागिनी बड़ी ही मधुर बज उठती है। वे ब्राह्मसमाजी हैं। अतएव उनकी कृतियों में ब्रह्म से संबंध रखनेवाले महान् भाव तमाम संकीर्णता के वातावरण को पारकर इस तरह महाकाश में परिव्याप्त हो जाते हैं कि उन्हें अपना कहते हुए किसी को भी संकोच नहीं होता। कारण, आत्मा के रूप से वह सूक्ष्मतम ब्रह्म ही अखिल लोक में व्याप्त है। यह है पूर्व की आत्मा की बात। चित्रण में रवींद्रनाथ अपनी तूलिका को पश्चिमी रँगों की प्यालियों में डुबो लेते हैं। इससे देह पश्चिम की देह की ही तरह मार्जित होती है, और आत्मा पूर्व की तरह। उसमें पूर्व की आत्मा की प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। फिर वह सजीव कृति कितनी सुंदर हो जाती है. रवींद्रनाथ की प्रसिद्धि तथा सफलता ही इसके प्रमाण हैं। हम कह चुके हैं, यौवन के आरंभ में ही रवींद्रनाथ पश्चिम गए थे। उसका प्रभाव उनकी उस समय की प्राथमिक रचना "चित्रांगदा" पर भी पड़ा है। "चित्रांगदा" के शरीर से जो परमाणु निकलते हैं, वे किसी भारतीय स्त्री में नहीं मिल सकते। अब तक किसी भी भारतीय कवि ने अपनी नायिका को इस प्रकार चित्रित नहीं किया। यही कारण है कि रवींद्रनाथ की "चित्रांगदा" के चरित्र की स्वर्गीय सुप्रसिद्ध नाटककार डी० एल्० राय ने बड़ी कड़ी आलोचना की थी। डी० एल्० राय भारतीय स्त्री-चरित्र का बहुत ही ऊँचा आदर्श चित्रित करते थे। वे रवींद्रनाथ की चित्रित की हुई चित्रांगदा की अदम्य काम-वासना को देखकर क्षुब्ध हो गए, और बड़े तीखेपन से इस कृति की आलोचना की। पर इससे कवि को क्या? कवि अपनी रुचि के अनुसार ही चित्र खींचता है। अस्तु। तबसे अब तक प्रेम के सहस्रों लावण्यमय उज्ज्वल चित्र रवींद्रनाथ ने खींचे हैं, और सभी पश्चिम के रंग में रँगे हुए हैं—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"तुमि चेये मोर आँखि परे,
धीरे पात्र लयेछे करे,
हेसे करियाछ पान चुंबन-भरा
सरस बिंबाधरे ।"

मेरी आँखों की ओर हेरकर धीरे से तुमने प्याला हाथ में ले लिया, और चुंबनों से भरे सरस बिंबाधरों से हँसकर उसे पी गए।

यह भारतीय स्त्री नहीं। यह इस नायिका का रात्रि का चित्र है। इसी पद्य में और इसी नायिका का प्रभात का चित्र दिखलाते हुए रवींद्रनाथ लिखते हैं—

"आजि निर्मल वाय शांत ऊषाय
निर्जन नदी-तीरे
स्नान अवसाने शुभ्रवसना
चलियाछ धीरे-धीरे ।
तुमि वाम करे लये साजि
कत तुलेछ पुष्पराजि
दूरे देवालय-तले ऊषार रागिनी
बाँशिते उठेछे बाजि ।
एइ निर्मल वाय शांत ऊषाय
जाह्नवी-तीरे आजि ।
देवी तव सींथिमूले लेखा
नव अरुण सिंदुर रेखा
तव बाम बाहु बेढ़ि शंखवलय
तरुण इंदु लेखा ।
ए की मंगलमयी मूरति विकाशि
प्रभाते दितेछे देखा ।
❀ ❀ ❀
प्राते कखन देवीर वेशे
तुमि सुमुखे उदिले हेसे ।
आमि संभ्रम भरे रयेछि दाँड़ाये
दूरे अवनत शिरे
आजि निर्मल वाय शांत ऊषाय
निर्जन नदी तीरे ।"

आज शांत ऊषःकाल की निर्मल वायु में निर्जन नदी के तट पर स्नान के पश्चात् शुभ्रवसना धीरे-धीरे जा रही हो, बाएँ हाथ में 'सेजी' लिए हुए न-जाने कितने फूल तोड़े। दूर देव-मंदिर में, शहनाई में, ऊषा की रागिनी बजने लगी। देवि, तुम्हारी माँग में नई अरुण सिंदूर-रेखा लिखी हुई है। यह कैसी मंगलमयी मूर्ति विकसित हो, प्रभात में दीख पड़ती है! न-जाने कब (जो तुम रात की थीं) प्रात में देवी के वेश में सामने आ उदित हुईं! मैं सम्मान-पूर्वक दूर पर झुकाए हुए खड़ा हूँ।

यह उसी स्त्री की दूसरी मूर्ति है। इसका रंग पश्चिमी है। पहला तो निर्भीत ही है। दूसरे में पूजा के भावों पर भी पश्चिमी तूलिका चल रही है।

रवींद्रनाथ के योरपीय चरित्र-लेखकों ने उनके जीवन का एक काल ऐसा निश्चित किया है, जिस समय उन पर अँगरेज़ कवि शेली का प्रभाव पड़ा है। रवींद्रनाथ ने स्वयं भी लिखा है कि बंगाल में उनके बाल्यकाल में जितने प्रसिद्ध बंगाली साहित्य-सेवी थे, सब शेक्सपीयर, बायरन, मिल्टन, स्कॉट आदि के नामों से सूचित किए जाते थे, उस समय इनके दिल में भी इस तरह की एक पदवी के ग्रहण करने की लालसा प्रबल हुई। कुछ ही कविताओं के निकलने पर लोग इन्हें बँगला के शेली कहकर पुकारने लगे। बंकिमचंद्र ने स्वयं भी इस शब्द से इनकी संवर्धना की थी, उस समय आर० सी० दत्त भी थे। बंकिमचंद्र ने अपनी माला इन्हें पहना दी थी। यह तरुण रवींद्रनाथ थे। रवींद्रनाथ ने बाद के जीवन में ब्रौनिंग और कालरिज की भी तारीफ़ की है। बहुत-से ऐसे भी रवींद्रनाथ के प्रिय कवि हैं, जिन्हें दूसरे लोग पसंद ही नहीं करते। हमारा अनुमान है, अँगरेज़ी-साहित्य का अध्ययन और अँगरेज़ी-सभ्यता-प्रियता का रवींद्रनाथ की कविता पर बहुत बड़ा असर पड़ा है जिससे भारतीय काव्य-संसार में एक नई संस्कृति देख पड़ी। रवींद्रनाथ एक महाकवि होने के साथ-साथ काव्य-साहित्य के एक पारदर्शी पाठक भी हैं। संस्कृत, बँगला, वैष्णव कवि और अँगरेज़ी में अनुवादित प्रायः सभी देशों के बड़े-बड़े कवियों से रवींद्रनाथ परिचित हैं और अच्छी तरह। उन पर मुसलमान, सूफ़ी कवियों का भी प्रभाव पड़ा है। इस तरह उन्होंने अपने काव्य-संस्कारों को दृढ़ किया। बहुत जगह एक-एक पंक्ति के छोटे-छोटे भावों को लेकर उन्होंने विस्तार-पूर्वक लिखा है, इस तरह कई जगह शेली के भाव मिलते हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और और कवियों से भी उन्होंने ख़ास तत्त्वों का ग्रहण किया है, भाषा के विचार से अँगरेज़ी-साहित्य में शेली की भाषा को जो स्थान प्राप्त है, वही रवींद्रनाथ को बँगला में। हाँ, रवींद्रनाथ के काव्य का परिमाण शेली में नहीं। उसे साहित्य की सेवा के लिये बहुत ही थोड़ा समय मिला था। चमत्कार में दोनो पूर्ण हैं। शेली १८वीं शताब्दि के प्रथम चरण में ही जो चमत्कार दिखा चुका था, रवींद्रनाथ भारत में १९वीं शताब्दि के अंतिम चरण से दिखा रहे हैं।

शेली भारतीय दर्शन नहीं जानता था। उसने रंग द्वारा, अपने जिज्ञासु मन के ही प्राप्त उत्तर द्वारा कविता के प्राणों में चमक पैदा की है, काव्य की आत्मा का तत्त्व हासिल किया है। पर रवींद्रनाथ के लिये ये सब साधन सुलभ थे। चित्रों के खींचने में शेली को अपने पूर्ववर्ती कवियों से थोड़ी-बहुत सहायता मिली होगी, पर नैपुण्य और शैली उसकी अपनी है। रवींद्रनाथ को ये दोनो पथ प्रशस्त मिलते हैं। उस समय के समाज, पार्लामेंट और बड़े-बड़े आदमियों के स्वभावों को जिस तरह शेली अपने शब्दों की शिखाओं से झुलसा देता है, उसी तरह रवींद्रनाथ भी अपनी पराधान जाति को। लंडन की तरह नरक को एक बड़ा-सा शहर बतलाकर शेली ने अकर्मण्य, निर्दय धार्मिकों की जैसी दशा चित्रित की है, बीबियों को जैसा बनाया है, क़ानूनदाँओं, विचारकों की जैसी प्रकृति खींची है, वह सब आज भारतवर्ष में प्रत्यक्ष हो रहा है—

"Hell is a city much like London—
A populous and a smoky city;
There are all sorts of people undone,
There is little or no fun done;
Small justice shown, and still less pity."

लंडन की तरह नरक में भी टैक्स देना पड़ता है। शराब, रोट, मांस, चाय, बीयर और चीज़ पर जिससे राजभक्त लोगों की तोंद मोटी होती है—

Taxes too, on wine and bread,
And meat and Beer and tea, and cheese,
From which those patriots pure are fed."

यहीं की तरह राजनीतिज्ञ, वकील और पुजारी लोग नरक लोक में भी हैं, जो दूसरों का तिरस्कार करने "बदनाम भी होंगे तो क्या नाम न होगा" के लिये, फ़ीस के लिये और जलती आग में परमात्मा के प्यार के लिये—

"Statesmen damn themselves to be
Cursed; and lawyers damn their souls
To the auction of a fee;
Churchmen damn htem selves to see
God's Sweet love in burning coals."

इसी तरह रवींद्रनाथ भी देशवासियों के मानसिक दौर्बल्य पर चोट करते हैं—

'सभापति थाकुन वासाय,
काटान बेला ताशे पाशाय,
नेई वा होलो नाना भाषाय,
अहा, उहू, ओहो।"

महाकवि की कल्पना है कि वे मर गए हैं, इसलिये सभा हुई है; अब कहते हैं, सभापति अपने मकान में बैठे रहें, ताश और पासे में वक्त काटें, तरह-तरह की भाषाओं में "अहा, उहू, ओहो" नहीं हुआ तो क्या।

"माथाय छोट बहरे बड़ बंगाली संतान"—

सिर के छोटे और चौड़ाई के बड़े बंगालियों की संतानों को रवींद्रनाथ ने भी बहुत बनाया है। बंगाल में रवींद्रनाथ के द्वेष का एक यह भी कारण है। अँगरेज़ी के उच्चारण में जो संगीत शेली और कीट्स की कविताओं में मिलता है, वही रवींद्रनाथ की बँगला की कविताओं में है। शेली ने द्वीप में समुद्र-कन्या की कल्पना की है, रवींद्रनाथ ने पृथ्वी में। शेली इस कल्पना को इतने ही पर समाप्त कर देता है, रवींद्रनाथ इसका एक अच्छे पद्य में, ५० से ऊपर पंक्तियों में, वर्णन करते हैं। प्रकाशन-ढंग में तो इतना साम्य है कि किसी को भी यह कहते हुए संकोच न होगा कि शेली को रवींद्रनाथ हृदय से प्यार करते हैं। शेली Sky lark पर प्रासाद की कुमारी की कल्पना करता है, तो रवींद्रनाथ मेघ-माला पर—

"ओगो प्रासादेर शिखरे आजिके
के दिएछे केश एलाये—
कबरी एलाये?"

× × ×

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

९. श्रीकौशलेंद्र राठौर का स्वर्गवास

सुधा के होनहार सुकवि श्रीयुत कौशलेंद्रजी राठौर अब इस संसार में नहीं हैं। आपका अभी एक संग्रह प्रकाशित हुआ था, जिसकी पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी, कविवर पंडित गयाप्रसादजी शुक्ल "सनेही" आदि हिंदी के विद्वानों और कवियों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। कौशलेंद्रजी की भाषा जानदार थी, भाव मार्जित होते थे। आपके शरीरांत की कहानी बड़ी ही करुण है, जिससे जान पड़ता है कि ऐसी दुर्घटना का कारण शत्रुता आदि कुछ होगा। आप संध्या-समय अपने एक मित्र से मिलकर घर आए। रात में जब सो गए, तब मकान में आग लग गई। आपके परिवार के और भी ६-७ आदमी सोए हुए थे। आग के लगने से धुएँ में सबको दिग्भ्रम हो गया और घर से कोई निकल नहीं पाए। सबकी वहीं जीवित अवस्था में ही अग्नि-समाधि हो गई। अब आपके परिवार में रोने के लिये भी कोई नहीं रहा। ऐसी दुर्घटना प्रायः सुनने में नहीं आती। ईश्वर इन मृतात्माओं को सद्गति और उनके कुटुंबियों को धैर्य दे।

× × ×

१०. संपादकीय अधिकार

संपादकों का अधिकार अपरिमित नहीं है। उसकी सीमा होता है। प्राप्त हुए लेखों तथा समाचारों के विषय में तो उन्हें अपने अधिकारों पर बहुत कुछ लगाम लगानी पड़ती है। बिना लेखक की अनुमति के लेख में काट-छाँट अथवा परिवर्तन या परिवर्द्धन करके उसके भावों का ही नाश कर देना संपादकीय कर्तव्य की दृष्टि से एक जघन्य पाप है। ऐसा कुकृत्य करनेवाला संपादक न केवल लेखकों का विश्वास ही खो बैठता है, अपितु अपने पाठकों की श्रद्धा पर भी अत्याचार करता है।

हाल ही में इस प्रकार के अधिकार-दुरुपयोग के दो-एक ऐसे उदाहरणों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया गया है, जिनका उल्लेख करना हम आवश्यक समझते हैं। 'माया' के दूसरे अंक में आकृष्णानंद गुप्त का "कोलों के प्रदेश में"-नामक एक कहानी प्रकाशित हुई थी। "माया" के विचारशील संपादक ने अपने विशेष अधिकारों का उपयोग करके गुप्तजी की अनुमति के बिना उनकी इस कहानी को सुंदरतर बनाने की चेष्टा कर डाली। ऐसा करने में संपादक महोदय ने कहानी में सौंदर्य लाने के बजाय—'फ़िनिश्ड' बनाने की अपेक्षा—उसे नितांत अर्थ-हीन और श्री-विहीन कर डाला है। संपादक महोदय और गुप्तजी में इस विषय पर जो मनोरंजक पत्र-व्यवहार हो चुका है, वह पूरा 'सुधा' में छपने के लिये हमें प्राप्त हुआ है। स्थानाभाव के कारण हम उसे इस अंक में नहीं दे रहे हैं। यदि आवश्यकता हुई, तो किसी आगामी अंक में प्रकाशित करेंगे।

गुप्तजी की मूल-कहानी और संपादकजी का पैबंद हमने देखा है। दोनों के पत्र-व्यवहार को भी हमने ध्यान-पूर्वक पढ़ा है। हमें शोक है कि जंगली जीवन की घटना को चित्रित करनेवाली उस समाज विज्ञान-संबंधिनी (sociological) सुंदर कहानी के अंत में एक छायावादी, अर्थ-हीन पैराग्राफ़ जोड़कर संपादक महोदय ने उसे बिलकुल ही हास्यास्पद बना दिया है। गुप्तजी के यह लिखने पर कि उनकी कहानी में एक अनावश्यक और अनर्थक पैरा जोड़कर संपादक महोदय ने ठीक नहीं किया, उन्हें उत्तर मिला कि कहानी के अंत में जो कुछ जोड़ा गया है, उसे निकाल देने से वह एक हृदय-हीन विशालता पर अवलंबित रह जाती है। संपादक महोदय के इस तर्क को हम नहीं समझ सके। पत्र-व्यवहार को देखने से पता चलता है कि संपादक महोदय गुप्तजी की कहानी के भाव और उद्देश्य को समझने के लिये तैयार नहीं हैं। उन्होंने अपने सब पत्रों में एक ही बात लिखी है—अर्थात् गुप्तजी की कहानी असत् की ओर ले जाती है, इसलिये पैरा जोड़ना आवश्यक था। पर हमें कहानी में असत् की गंध तक नहीं मिली। इसके अतिरिक्त संसार की सभी कहानियाँ सत् और असत् भावनाओं की सृष्टि के लिये नहीं लिखी जातीं। बहुतेरी तो केवल एक सामाजिक चित्र का अथवा किसी वैज्ञानिक सत्य का निदर्शन करने के लिये ही लिखी जाती हैं। कोलों-जैसी जंगली जाति में उच्च सामाजिक भावनाओं के विकास का अध्याहार करके सत् की रक्षा के लिये दौड़ पड़ना एक अत्यंत उपहासास्पद और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बालिश कृत्य मालूम पड़ता है। कम-से-कम वर्माजी-जैसे अनुभवी संपादक तथा गल्प-शताब्दि-लेखक से हमें ऐसी आशा नहीं थी। उन्हें गल्पजी की यह बात तो अवश्य ही मान लेनी चाहिए कि "कहानी का अभीष्ट प्रभाव चरम सीमा तक पहुँचा नहीं कि कहानी ख़त्म हुई। उसके आगे यदि कोई एक शब्द भी लिखे, तो मैं यही कहूँगा कि उसे कहानी-लेखन-कला का ज्ञान नहीं है—फिर वह शब्द चाहे स्वयं वीणा-पाणि की कल्पना से प्रसूत क्यों न हुआ हो।" 'माया' के प्रथम अंक में प्रकाशित किसी कहानी के विषय में भी ऐसी ही बात सुनने में आई थी। उस समय भी 'माया' के संपादकों ने लेखक की इच्छा के विरुद्ध ऐसी ही कोई काट-छाँट कर डाली थी।

संपादकीय कतर-ब्योंत का दूसरा उदाहरण है 'भारत'-संपादकजी का व्यवहार। दैनिक 'लोकमत' में प्रकाशित 'साहित्यिक चोरी के पक्ष में'-नामक पत्र से 'भारत'-संपादक के इस अधिकार-व्यतिक्रम का अच्छा परिचय मिलता है। इस पत्र से पता चलता है कि श्रीकांतजी के साथ कैसा अन्याय किया गया है।

उन्होंने 'भारत' में छपने के लिये एक नोट भेजा था, पर उनके 'लोकमत' में प्रकाशित पत्र से जान पड़ता है कि संपादक महोदय ने उनके नोट में कुछ अनुचित कतर-ब्योंत करके उसका सारा मतलब ही खत्म कर दिया।

हम संपादकीय काट-छाँट के एकदम विरुद्ध नहीं हैं। भावों की रक्षा करते हुए यदि भाषा और व्याकरण की दृष्टि से काट-छाँट की जाती है, तो वह अनुचित नहीं कही जाती। किंतु यदि संपादकों की क़लम लेखक के व्यक्तित्व को ही मार भगाने का प्रयत्न करती है, तो उसका यह अत्याचार असहनीय हो उठता है। लेखक की रचना से उसके व्यक्तित्व, उसके हृदय की बेदख़ली बिलकुल ग़ैर-क़ानूनी और अत्याचार-पूर्ण है। अपने भाव, अपने आशय और अपने उद्देश्य में परिवर्तन का अधिकार केवल और एक-मात्र लेखक को ही है। संपादक को उसकी अनुमति के बिना उसके व्यक्तित्व पर आक्रमण करने का कोई अधिकार नहीं है। यदि लेखक के विचारों से संपादक सहमत नहीं है, यदि वह उसके विचारों के प्रकाशन से अपनी हानि समझता है, तो वह केवल इतना ही कर सकता है कि लेखक की रचना को उसके पास लौटा दे। उसमें अपनी कारीगरी दिखाने की हम ज़रा भी आवश्यकता नहीं समझते। 'माया'-संपादक ने ऐसा न करके संपादकीय अधिकार का दुरुपयोग किया है।

× × ×

११. घटना-चक्र

देश का राजनीतिक वायुमंडल ऐसा भीषण और परिवर्तनशील हो रहा है कि कल के लिये कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। घटना-घटाटोप ऐसा प्रकृति-बहुल है कि आकस्मिक और आशातीत बातों का विघटन ज़रा भी आश्चर्यजनक नहीं कहा जा सकता। सरकार की दमन-नीति का चक्र बड़े प्रबल वेग से देश के एक कोने से दूसरे तक चल रहा है। पेशावर से चटगाँव तक और ऐबटाबाद से मदरास तक शक्तिशालिनी ब्रिटिश-फूट-नीति और सिविल सर्विस के फ़ौलादी पंजे का आतंक छाया हुआ है। चुन-चुनकर देश के कार्यकर्ता, वे नेता, जो शीघ्र ही भड़क उठनेवाली जनता को शांत और संयत रख सकते थे चुन-चुनकर महामहिम सम्राट् के प्रासाद-तुल्य कारागारों के अतिथि बना दिए गए हैं। जगह-जगह देश में पुलिस के डंडों और फ़ौजी बंदूक़ों का राज्य है। पुलिस की गुंडेशाही के कारण निहत्थी जनता का जान-माल ख़तरे में पड़ा हुआ है। ऐसी दशा में शांतिमय सत्याग्रह का जीवन कठिनाई में पड़ गया है। पुलिस के अत्याचारों से तंग आई हुई क्रुद्ध जनता की प्रतिहिंसामयी मनोवृत्ति के कारण शांतिमय सत्याग्रहियों का नाम बदनाम हो जाने की भयानक आशंका बनी रहती है। ज़रा-ज़रा-सी बातों पर बंदूक़ें दाग़कर पुलिस इस परिस्थिति को और भी भयानक बना रही है। ज़िला-अफ़सरों के प्रतिदिन प्रज्ञापनों से जनता का ख़ून उबल उठता है और वह आपे से बाहर हो जाती है। ऐसी परिस्थिति में देश-भर में दंगा हो जाने की प्रबल संभावना रहती है। अतएव जनता और पुलिस की हिंसात्मक वृत्ति के विरुद्ध शांतिमय सत्याग्रह के सिपाहियों का युद्ध और भी कठिन और दुरूह हो उठा है। उन्हें न केवल पुलिस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की मार ही खानी पड़ती है, अपितु जनता, की प्रतिहिंसा शांत करने के लिये भी घोर प्रयत्न करना पड़ता है।

सरकार की भड़कानेवाली हरकतें उनके शांति-रक्षा के प्रयत्नों में सबसे अधिक बाधा डालती हैं। पुलिस द्वारा जनता को उत्तेजित करवाकर, सरासर अपनी आँखों-तले लोगों की दुकानें लुट जाते देखकर, निहत्थी जनता पर पुलिस द्वारा पत्थर फिकवाकर, वह जनता की प्रतिहिंसा को और भी निमंत्रण देती है। वह किसी प्रकार शांति भंग करके, हिंदोस्तानी पुलिस द्वारा हिंदोस्तानी जनता को पिटवाकर सत्याग्रहियों को बदनाम करने पर तुली हुई है। शांति-पूर्ण सत्याग्रह-आंदोलन के कारण जनता से सहानुभूति रखनेवाली पुलिस को अमानुषिक कृत्य करने के लिये मजबूर करके वह जनता और पुलिस के बीच एक कभी न मिटनेवाली शत्रुता क़ायम कर देना चाहती है। उसे भय है कि कहीं इस विचित्र आंदोलन के कारण पुलिस और फ़ौज भी जनता का साथ न देने लगे, अतः वह बार-बार हिंदोस्तानी पुलिस को हिंदोस्तानी जनता पर अत्याचार करने के लिये मजबूर करती है। अतः जनता का कर्तव्य है कि वह शांति-रक्षा का पूरा प्रयत्न करे। व्यर्थ के लिये अपने हिंदोस्तानी ग़ुलाम पुलिस के सिपाहियों से दुश्मनी न रक्खे, और न उन्हें किसी भी प्रकार की शारीरिक तकलीफ़ पहुँचावे। व्यर्थ के मजमे और जमघट लगाकर अपने ऊपर सरकारी डंडों का स्वागत न करे, तथा सत्याग्रहियों के कार्य में अपनी किसी भी बेजा हरकत से बाधा न पहुँचाए। पूर्ण शांति की रक्षा करने के लिये उसे सदा तत्पर रहना चाहिए। सरकार के अत्याचारों को पूर्ण शांति और बिना किसी उत्तेजना के प्रदर्शित करते रहने में ही इस आंदोलन की शान है। सरकार की शरारतों का शरारत-भरा जवाब सत्याग्रह-सिद्धांत के बिलकुल विरुद्ध है।

× × ×

१२. मई-मास की डायरी

मई सन् १९३० भारतीय इतिहास का स्मरणीय मास रहेगा। इस मास में हमारे देश की राष्ट्रीयता और सरकार के पशु-बल का प्रथम वास्तविक सामना हुआ है। इसी मास में भारतीय राष्ट्र की आत्मा, महापुरुष गांधीजी को सरकार ने चोरों की तरह छिपकर रात के १२ बजे गिरफ़्तार किया। उन्हें गिरफ़्तार करने के लिये उसका सारा क़ानून-भंडार बेकार था, अतः अपनी अन्यायशीलता को छिपाने के लिये उसने १८२७ का, १०० वर्ष का पुराना, एक बंबई-रेग्युलेशन-नामक स्थानीय नियम क़ब्र में से खोद निकाला और बिना किसी प्रकार के न्याय के उन्हें एक अनिश्चित काल के लिये जेल में बंद कर दिया। सरकार को—न्याय और क़ानून का ढोल पीटनेवाली सरकार को—यह सबसे बड़ी हार हुई है। उसका सारा न्याय और उसका सारा क़ानूनीपन गधे के सींगों की तरह एकदम ग़ायब हो गया है। वह अपने बीभत्स नग्न रूप में दुनिया के सामने प्रकट हो गई है।

महात्माजी के स्थानापन्न श्रीअब्बासतैयबजी-जैसे ८० वर्ष के वृद्ध वीरात्मा को जेल भेजकर सरकार ने अपनी दूसरी हार स्वीकार की है। वृद्धों पर हाथ उठाकर उसने अपनी महान् कायरता का परिचय दिया है। उसके बाद श्रीमती सरोजिनी नायडू पर हमला करके सरकार ने अपनी नपुंसकता प्रदर्शित की है। इतनी बड़ी शक्तिशालिनी ब्रिटिश सरकार का इस प्रकार का नीचता-पूर्ण कृत्य सचमुच बड़ा ही घृणास्पद और गर्हणीय हुआ है। श्रीमती नायडू के साथ किए गए पुलिस के नृशंस व्यवहार के कारण सारे संसार में ब्रिटिश-सरकार की यशोगाथा उद्घोषित हो गई है। इन गिरफ़्तारियों के अतिरिक्त सरकार के कुकृत्यों की तालिका काफ़ी बड़ी है। पेशावर, बनारस, आगरा, लखनऊ, बंबई, मद्रास, कलकत्ता, अलीपुर जेल आदि स्थानों पर जो-जो नृशंस अत्याचार पुलिस ने किए हैं, वे जनता के स्मृति-पट से बरसों दूर नहीं हो सकते। मई सन् १९३० भारतीय जनता के हृदय-पटल पर ख़ूनी अक्षरों से लिखा रहेगा।

मई सन् १९३० में भारतवर्ष में ब्रिटिश-शासन का अंत हो गया। अनब्रिटिश ब्रिटिश-शासन का दौरदौरा ही इस मास की विशेषता है। देश का शासन सरकार की क़ानूनी किताबों से नहीं, बल्कि वायसराय के आर्डिनेंसों, ज़िला-मजिस्ट्रेटों की तानाशाही और पुलिस के डंडों से चलाया जा रहा है। प्रेस के मुँह पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आर्डिनेंस का नंबरी ताला लटक रहा है, और जनता के मुँह पर १४४ का। नेताओं के लिये जेल के दरवाज़े ख़ूब चौड़े कर दिए गए हैं, और स्वयंसेवकों तथा जनता के लिये पुलिस के डंडे ख़ूब मज़बूत।

× × ×

१३. समझौता ही एक उपाय है

देश की भयंकर परिस्थिति अब ऐसी नाज़ुक हो गई है कि वायसराय और डिप्टी कमिश्नरों के सैकड़ों कम्यूनिकों से भी हिंदोस्तानियों के मन का अविश्वास दूर नहीं हो सकता। जब तक सरकार एक ओर मार-काट का बाज़ार गर्म किए हुए है, जब तक शांतिमय सत्याग्रह को वह कुचलने की फ़िक्र में है, तब तक देश का आंदोलन दबने की बजाय और भी अधिक प्रबल हो सकता है। उसके दबाने का एक-मात्र उपाय है समझौता। समझौते का महत्त्व न केवल हमारी सम्मति में ही इतना अधिक है, अपितु विलायत की मज़दूर-पार्टी के मुख पत्र 'डेली हेरल्ड' की भी यही सम्मति है। अपने पिछले अंक में वह लिखता है—

"मि० गांधी की गिरफ़्तारी प्रत्याशित घटना थी। किंतु उसका प्रकार भारतीय शासन-नीति के एक परिवर्तन को प्रदर्शित करता है। महात्माजी पर कोई अभियोग नहीं लगाया गया है, और उन पर कोई मुक़द्दमा भी नहीं चलाया गया।

"एक शताब्दि पहले बंबई के गवर्नर ने—जो कि उस समय ईस्ट-इंडिया-कंपनी का नौकर था—अपनी शक्ति-वृद्धि के लिये एक क़ानून बनाया था, जिसके द्वारा वह किसी भी दुःखदायी व्यक्ति को राजकीय कारणों के आधार पर बिना किसी न्याय के बंदी बना सकता था। इसी रेग्युलेशन के अनुसार मि० गांधी को अनिश्चित काल के लिये बंदी किया गया है।

"सरकार के इस कार्य से दमन-नीति के पिट्ठू बड़े प्रसन्न होंगे। उनकी सम्मति में ग़ुलाम जातियों के असंतोष के लिये यही एक दवा है।

"किंतु क्या वास्तव में यह ठीक दवा है? इस दवा की परीक्षा बार-बार हो चुकी है। इन परीक्षाओं का परिणाम दमन-नीति के विज्ञापन के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हुआ है।

"आयर्लैंड, अमेरिका, ऑस्ट्रिया, रूस, जिस ओर दृष्टि दौड़ाइए, उसी ओर धमकी और दमन के परिणाम में असफलता ही पाई गई है। समस्त इतिहास-प्रसिद्ध सफलताएँ समझौते से ही प्राप्त हुई हैं।

"गांधीजी जेल में हैं, तो क्या भारत का यह राष्ट्रीय आंदोलन बंद पड़ जायगा? क्या पार्नेल की गिरफ़्तारी और पीयर्स की सरकार द्वारा की गई हत्या से आयर्लैंड का स्वातंत्र्य युद्ध बंद हो गया था?

"गांधीजी जेल में हैं और प्रकट रूप से तब तक जेल में ही रहेंगे, जब तक सरकार उन्हें वहाँ रखना चाहेगी। किंतु क्या इससे भारतीय प्रश्न एक-आध इंच भी निबटारे की ओर अग्रसर हुआ है? क्या इस कार्य से उसका निबटारा और भी असंभव नहीं हो गया? क्या इससे बीमारी अच्छी होने की बजाय और भी अधिक बढ़ नहीं गई?

"ब्रिटिश-सरकार - हाँ, प्रत्येक सरकार—को क़ानून की रक्षा का अधिकार है। मि० गांधी ने यदि कोई क़ानून तोड़ा है, तो उन पर सरकार को मुक़द्दमा चलाना चाहिए—यह भी एक प्रकट सत्य है। किंतु उन पर कोई अभियोग नहीं लगाया गया, उनके साथ न्याय भी नहीं किया गया। क़ानून की रक्षा नहीं की गई। उन्हें केवल 'राजकीय कारणों' के आधार पर ही बंदी कर दिया गया है।

"केवल 'राजकीय कारणों' के आधार पर ही हम यह कहते हैं कि यद्यपि क़ानून की रक्षा आवश्यक है, तो भी धमकी और मनमानी बातों से भारतीय प्रश्न का निबटारा नहीं हो सकता।

"भारतीय अशांति के पीछे राजनीतिक और आर्थिक कारण हैं। अतएव उस देश में शांति की आशा तभी की जा सकती है, जब उन कारणों का अध्ययन शीघ्रता और समझ-बूझ के साथ मुक़ाबला किया जाय।

"गांधीजी जेल में हैं, किंतु गांधीजी की शक्ति और प्रभाव का कारण अब भी वैसा ही मौजूद है। केवल स्पष्ट और विधेयात्मक समझौता ही कठिनाइयों के दूर करने का एक-मात्र उपाय है, धमकी नहीं।"

अतएव सरकार को शीघ्र ही समझौते द्वारा देश की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस अशांतिमय शोचनीय दशा का अंत कर देना चाहिए।

× × ×

१४. समझौते का मार्ग

'इंडियन डेली मेल' के २१ मई के अंक में लंदन के 'डेली हेराल्ड' पत्र के विशिष्ट भारतीय संवाददाता श्रीस्लोकॉंब की महात्माजी से हुई बातचीत प्रकाशित हुई है। उसका सारांश इस प्रकार है—

मि० स्लोकॉंब ने महात्मा गांधी से पूछा कि कैनाडा और दक्षिण-आफ्रिका में जिस प्रकार का स्वराज्य है, क्या वह सब मुख्य बातों में स्वाधीन नहीं है? महात्मा गांधी ने जवाब दिया कि हाँ, ये देश स्वाधीन हैं, पर इतना दर्जा तो हमें नहीं दिया जा रहा है।

महात्माजी से पूछा गया कि कानून-भंग के इस संग्राम से जो-जो अनर्थ हो सकते हैं, उन सबका क्या आपने पूरा विचार किया है? महात्माजी ने जवाब दिया, मैंने तो वह काम उठाया है, जिसे "पागलपन-भरी जोखिम (Mad risk)" कहा गया है, पर यह जोखिम उठाए बिना कोई बड़ा काम नहीं हुआ है।

सोलापुर में जैसी हिंसा हुई बताई जाती है, उससे महात्मा गांधी का चित्त बहुत विचलित हुआ। वहाँ जो पुलिसमैन मारे गए, उससे उन्हें बड़ा क्लेश हुआ, पर उन्होंने अपना यह विश्वास भी ज़ाहिर किया कि सत्याग्रहियों की ओर से हिंसा नहीं हुई।

महात्मा गांधी ने समझौते के संबंध में यह कहा कि आगे चलकर जब कभी हमारी विजय होगी, तब भी समझौते की बातचीत ज़रूरी होगी। महात्मा गांधी ने यह भी कहा कि ख़ून-ख़राबी और दुःख-यातना दूर करने के लिये मैं चाहे जो करने को तैयार हूँ, यदि उससे भारतीय राष्ट्र के मुख्य कार्य की कोई हानि न हो।

मि० स्लोकॉंब कहते हैं—इसके बाद हम लोगों की जो बातचीत हुई, उससे मैंने यह समझा कि इस कठिन समय में भी समझौता हो सकता है, और इसके लिये वे कांग्रेस से सिफ़ारिश करने को तैयार हैं कि कांग्रेस कानून-भंग (सत्याग्रह)-आंदोलन स्थगित करके राउंड टेबल कान्फ्रेंस में योगदान करे, यदि सरकार को नीचे-लिखी शर्तें स्वीकार हों—

(१) राउंड टेबल कान्फ्रेंस में जिन बातों का विचार होगा, उनमें एक बात यह भी रहेगी कि हिंदोस्तान के लिये ऐसा शासन-विधान तैयार किया जाय, जिससे स्वाधीनता का सत्व हिंदोस्तान को मिल जाय।

(२) नमक-कर उठा देने, शराब बंद करने और विदेशी कपड़े का यहाँ आना रोकने के संबंध में महात्मा गांधी की जो माँगें हैं, वे स्वीकार कर ली जायँ।

(३) क़ानून-भंग-आंदोलन और राजनीतिक क़ैदियों का छुटकारा दोनों बातें बिलकुल एक साथ हों।

यदि सरकार ज़रा भी सच्चे दिल से शांति चाहती है, तो उसे महात्माजी की इन शर्तों पर विचार करना चाहिए। ख़ूब सोच-समझकर जनता को भड़कानेवाली अपनी दमन-नीति को बंद करके राउंड टेबल कान्फ्रेंस में महात्माजी और देश के अन्य ज़िम्मेदार नेताओं को निमंत्रित कर शीघ्र ही इस अशांतिमय परिस्थिति का अंत कर डालना चाहिए। किंतु यदि वह ऊपरी मन से, केवल कांग्रेस-वादियों को बदनाम करने की दृष्टि से, झूठमूठ शांति की दुहाई देती है, तो उसे इसी प्रकार की और संभवतः और भी भयंकर परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। महात्माजी और उनके स्वयंसेवक उसे कभी शांति से न बैठने देंगे। यदि अत्यंत क्रूर दमन से क्षण-भर के लिये देश का आंदोलन दब भी गया, तो फिर शीघ्र ही उसके उभर आने की संभावना रहेगी, और फिर इसी प्रकार की शोचनीय ख़ून-ख़राबी के लक्षण प्रकट होंगे। ३ वर्ष की अवधि बीत जाने पर संभव है, क्रांतिकारी दल भी अपना सर उठाए। अतः उस भीषण दिवस के आने से पहले ही सरकार को चेत जाना चाहिए। उसे महात्माजी से समझौता करने में ज़रा भी आनाकानी न करनी चाहिए। यदि वह महात्माजी को अपनी ओर आकर्षित कर लेगी, तो दो दिन में ही उसकी सारी कठिनाइयों का अंत हो जायगा; क्योंकि आज दिन महात्माजी ही देश की राष्ट्रीय आत्मा के अवतार हैं। सारा देश उनके लिये जान देने को तैयार है। तेजबहादुर सप्रू, मुहम्मद अली और जिन्ना-जैसे लोगों की सम्मति की देश रत्ती-भर भी परवाह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं करता। अपना-अपना मतलब गाँठनेवाले लीडर नामधेय माडरेट, मुस्लिम और हिंदू महानुभावों का देश पर नाम को भी प्रभाव नहीं है। उनके साथ किया हुआ समझौता देश के लिये कभी मान्य नहीं हो सकता।

सत्य तो यह है कि आज दिन महात्माजी ही ऐसे नेता हैं कि जिन्हें स्वार्थ की गंध भी स्पर्श नहीं कर सकी। वे केवल देश की भलाई की इच्छा से ही प्रेरित होकर इस आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्हें किसी 'माइनौरिटी' या 'मैजोरिटी' के रगड़े से कोई मतलब नहीं। वे पूरे देश के नेता हैं, वे उसके सभी निवासियों का भला चाहते हैं। वे अली भाइयों के समान द्विजिह्व नहीं हैं, न वे सप्रू के समान द्विकर्मा हैं। मालवीयजी की तरह वे पालिसी से भी नहीं चलते। वे तो सीधे-सादे ऋषि हैं। जो वे सोचते हैं, वही कहते और करते हैं, अतः उनकी सब बातें स्पष्ट और प्रत्यक्ष होती हैं। इन्हीं गुणों के कारण आज वे हिंदोस्तान के हृदय-सम्राट् हैं। उनकी आज्ञा आज सम्राट् की आज्ञा से भी अधिक महत्व रखती है। अतएव सरकार यदि अपना भला चाहती है, यदि वह देश में शांति रखना चाहती है, तो केवल महात्माजी से ही उसे समझौता करने का प्रयत्न करना चाहिए।

महात्माजी की ये शर्तें उसे बहुत पहले से मालूम थीं। यदि उसने ज़रा-सा भी शांति का प्रयत्न किया होता, थोड़ा-सा भी अक्ल से काम लिया होता, तो आज देश में ऐसी अशांति न होती और सरकार उस विश्व-व्यापिनी निंदा से भी बच जाती जो इन पिछले दो महीनों में हुई है।

अब भी समय है। यदि सुबह का भूला शाम को घर लौट आवे, तो भूला नहीं कहा जाता। क्या सरकार इस कहावत को चरितार्थ करेगी?

× × ×

१५. छत्रसाल-जयंती और प्रताप-जयंती

ज्येष्ठ-शुक्ला तृतीया को भारत के इन दोनो राष्ट्रीय वीरों की जयंती बड़े समारोहसे मनाई जायगी। इस विषय में दो सूचनाएँ हमारे पास आई हैं, वे इस प्रकार हैं—

छत्रसाल-जयंती

बुंदेलखंड-केसरी वीर-शिरोमणि महाराज छत्रसाल की पवित्र जयंती का शुभ दिन ज्येष्ठ शुक्ला ३—तारीख़ ३० मई—को सारे देश में बड़े समारोह से मनाया जायगा। यह दिन हमारे प्यारे देश में जातीयता का नूतन संदेश लानेवाला दिन है। इसी दिन प्रातःस्मरणीय मेवाड़-केसरी महाराणा प्रताप की भी जयंती है। महाराज छत्रसाल की स्मृति-आराधना केवल बुंदेलखंड के ही लिये नहीं, बल्कि सारे भारतवर्ष के लिये नूतन जीवन-संचारिणी है। वीर-स्मृति विश्व-मात्र के आराधन की वस्तु है, इसमें प्रांतीयता और सांप्रदायिकता के संकीर्ण भावों के लिये स्थान नहीं है। ऐसे सर्वस्वत्यागी स्वतंत्रताप्रिय महापुरुषों की जयंतियाँ स्वाधीनता का वायुमंडल तैयार किया करती हैं, इसमें संदेह नहीं। गत वर्ष यह जयंती देश में बड़े उत्साह के साथ मनाई गई थी। इस वर्ष भी उत्साह से वीर-पूजा का यह पावन त्यौहार मनाना चाहिए।

वियोगी हरि
संयोजक छत्रसाल-जयंती-समिति
पन्ना (मध्य भारत)

प्रताप-जयंती

३० मई को प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रतापसिंह की जयंती मनाई जायगी। अतः समस्त देशवासियों से प्रार्थना है कि उस दिन वे राष्ट्रवादी महाराणा के गुणानुवाद करें। श्रीप्रताप-सभा, उदयपुर ने निश्चय किया कि प्रताप-गुण-कीर्तन के बाद वह हल्दी घाटी की यात्रा करेगी। अतः जो सज्जन उस पुण्य तीर्थ की यात्रा करना चाहें, वे २ जून से पहले ही उदयपुर पहुँचकर मंत्री प्रताप-सभा उदयपुर को सूचित कर दें।

निवेदक
दिलीपसिंह राठी
प्रधान मंत्री श्रीप्रताप-सभा
उदयपुर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेख-सूची

पृष्ठ

१. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "निराला" ४६३

२. मेरा प्रवास (सचित्र)—[लेखक, श्रीयुत कृपानाथ मिश्र (लंदन से) ४६४

३. सनाथ (कविता)—[लेखक, बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए० ... ... ५०१

४. अमेरिका की कुछ आततायी संस्थाएँ—[लेखक, बाबू वृंदावनदास बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ... ५०२

५. मा (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत "गुलाब" ५०५

६. उनसे (कविता)—[लेखिका, कुमारी लीलावती "सत्य" बी० ए० ... ... ५११

७. मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह (३)—[लेखक, साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ ५१२

८. अलीभाइयों की दुलत्ती (व्यंग्य-चित्र) ५२६

"श्वेतकुष्ठ एक दिन में — — — — — जड़ से आराम"

नहीं तो कुल क़ीमत वापस। विश्वास न हो, तो प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लें। दाम फ़ी बक्स ३)

"एस्० के० चिकित्सक कार्यालय"

नं० २१, दरभंगा (बिहार)

अपूर्व अवसर! जल्दी कीजिए!

वेदांत-पुस्तकें

ब्रह्मनिष्ठ श्रीरामगुरु-कृत

पंचीकरण

तथा

ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीजयकृष्ण-कृत गुजराती टीका जो स्वामी श्रीयुगलानंद द्वारा हिंदी-भाषा में अनुवादित है। मूल्य २)

न्यायसारः श्रीभासर्वज्ञप्रणीत

An ancient work on logic by an eminent scholar of the 9th centur A. D. Edited with notes by VISHVANATH P. VAIDYA. B. A., J. P., M. R. A S. Bar-at- Law. Price Rs. 2/4/- 2nd Edition.

डाक-खर्च अलग—व्यापारी को उत्तम लाभ।

मिलने का पता—मैनेजर वेदधर्मसभा

३१, फ़ोरबेस स्ट्रीट, बंबई

गज्जर का हाज़मा

टिंक्चर

यह एक हिंदुस्तानी अमृत है। इससे शारीरिक शक्ति तो बढ़ती ही है, आँतों और पेट की सब बीमारियाँ भी दूर होकर नई शक्ति प्राप्त होती है। रक्त में स्फूर्ति तथा दिमाग़ में बल उत्पन्न होता है। साधारण निर्बलता तथा ह्रास के लिये तो यह रामबाण है। संग्रहणी, रक्त-राहित्य, अनिद्र-रोग और मानसिक दुर्बलता में इसका प्रयोग किया जाता है। परीक्षा कर देखिए। मूल्य १ बोतल का १॥)

पता—गज्जर्स आयनिक फ़ार्मेसी

गिरगाँव, बंबई

नोट—आर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

९. .....चला हंस की चाल (कहानी)—
[लेखक, श्रीयुत ऋषभचरण... ... ५२७
१०. शकुंतला-नाटक के क़ानूनी आधार—
[लेखक, श्री० प्रो० परमेश्वरीप्रसाद शर्मा एम्० ए०, बी० एल्० ... ... ५३१
११. निराशामय आशा (कविता)—
[लेखिका, कुमारी रामेश्वरी गोयल बी० ए० ५३७
१२. मेस्मेरिज़्म—[लेखक, श्रीयुत मूलचंद्र शुक्ल, मेस्मेरिज़्म-मास्टर ५३८
१३. प्रसादजी की एक कहानी—[लेखक, श्रीयुत कृष्णानंद गुप्त ५४१
१४. बैल (कहानी)—[लेखक, बाबू सियारामशरण गुप्त ५४७
१५. भारतीय रक्त का सदुपयोग (व्यंग्य-चित्र) ५५४
१६. कुसुम-कुंज—[लेखकगण, श्रीयुत सूर्यनारायण व्यास, श्रीयुत कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' और श्रीयुत 'निराला' ... ५५५
१७. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखक, श्रीयुत नाथूराम शुक्ल ५५६

SUMMIT AGUE MIXTURE
FOR ALL KINDS OF FEVERS CAN BE HAD FROM ALL CHEMISTS

PRINT ANY THING PRINT ANY THING PRINT
BY HOME PRINTER
COMPLETE PRINTING OUTFIT
WITH
ENGLISH, HINDI OR BENGALI TYPES
for Private and Commercial use.
Most reliable Teak-wood Press, Set up with Iron and Brass Parts, for PERFECT PRINTING Simple in operation, Fine in impression and durable in Construction Guarantee for 30 lacks fine impression with satisfaction or full money back.

No.	Size of Hand Press	Size of Paper	Accessories	Card Type	Price
0	17" × 12"	Foolscap Half Size	30	1200	Rs. 32
1	12" × 10"	Demy Quarter Size	25	1100	" 27
2	9" × 6"	Letter Paper Size.	17	1000	" 17
3	7" × 4"	Post Card Size	16	700	" 13
4	6" × 3"	Visiting Card Size.	16	500	" 8

N.B.—Order should be made with the name of nearest Rly or Steamer Stn and ½ advance
AGARWAL TRADING CO.
80, Lower Chitpur Road, Burrabazar, Calcutta.

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय
लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, बेवाली, कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इसको अलग-अलग या २ से ७ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है। रक्त साफ़ होता है तथा उसकी चाल अबाध्य होती है। खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ लीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम २२० गोलियों की बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥), २५ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित ५≡)

मिलने का पता—
श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर।

हिंदुस्तानी एकेडेमी संयुक्त-प्रांत द्वारा
प्रकाशित व्याख्यानमाला

(१) मध्यकालीन भारत की सामाजिक अवस्था
व्याख्यानदाता—अल्लामा अब्दुल्लाह यूसुफ़अली एम्० ए०, एल्-एल्० एम्०, सी० बी० ई०। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १०० पृष्ठों का मूल्य उर्दू अथवा हिंदी केवल १।)

(२) मध्यकालीन भारतीय संस्कृति
व्याख्यानदाता—रायबहादुर महामहोपाध्याय गौरीशंकर-हीराचंद ओझा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के २३० पृष्ठों और २४ हाफ़टोन चित्रों-सहित का मूल्य केवल ३)

(३) कविरहस्य
व्याख्यानदाता—महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगास्वरूप झा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १२० पृष्ठों का मूल्य केवल १।)

मिलने का पता—जनरल सेक्रेटरी हिंदुस्तानी, एकेडेमी यू० पी०, इलाहाबाद।

नोट—आर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

१८. ललित कला—[लेखक, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा ५६३

१९. स्त्री-समाज—[लेखिका, श्रीमती कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव ५६७

२०. व्यायाम—[लेखक, श्रीयुत गणेशदत्त गौड़ 'इंद्र' ५६९

२१. पाक-शास्त्र—[लेखिका, श्रीमती कृष्णवती श्रीवास्तव ५७८

२२. शिशु-पालन—[लेखक, श्रीयुत अग्निदेव गुप्त वैद्य ५७९

२३. गृह-चिकित्सा—[लेखिका, श्रीमती कृष्णवती श्रीवास्तव ५८२

२४. पुस्तक-परीक्षा—[लेखकगण, श्रीयुत कालिदास कपूर एम्० ए०, श्रीयुत भगवतीचरण वर्मा और श्रीयुत सुधींद्र वर्मा ५८४

२५. संपादकीय ५९०

RAM LAL

DENTIST

27, AMINABAD PARK, LUCKNOW

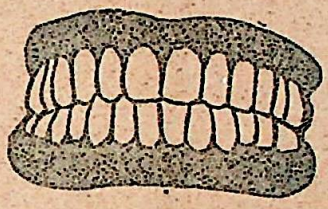

All Sorts of Dental Works

ARE EXECUTED PROMPTLY

—AT—

Reasonable Rates

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र

जगत्-विख्यात

Regis-tered ☞ 'कौनटैक्स' ☜ रजि-स्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता, जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं वे 'कौनटैक्स' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १॥) रु० डाक-ख़र्च ।=)

पता—आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

श्वेतकुष्ठ की फ़क़ीरी जड़ी

प्रिय पाठकगण, एक रोज़ में सिर्फ़ तीन ही बार के लेप से सफ़ेद दाग़ एकदम आराम न हो, तो दूना मूल्य वापस। जो चाहें, एक आने का टिकट भेजकर प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। मूल्य ३) रु०। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

वैद्यवर पंडित कन्हैया मिश्र

मैनेजर बिहार-औषधालय

नंबर १४, मधुबनी, ज़ि० दरभंगा

सुज़ाक की शर्तिया दवा

फ़ायदा न हो जीवन-सुधा तो दाम वापस

४८ घंटे में सुज़ाक को जड़ से आराम करती है।

मूल्य फ़ी शीशी २॥)

मैनेजर भारत जीवन कंपनी

पो० नं० ११, अलीगढ़

नोट—आर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्र-सूची

पृष्ठ

(क) रंगीन

१. मुरली की मादकता—[चित्रकार, श्रीराधेश्याम भटनागर ४६३

२. प्रेम-प्याला—[चित्रकार, श्रीअजितकुमार घोष ५२५

३. महात्माजी के दर्शन ५४०

४. श्री० बेनितो मुसोलिनि ५४१

५. मुसोलिनि के पुत्र ५४१

६. गढ़-कुंडार ५७२

७. महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ५७३

८. श्री० बाबा राघवदास ५७३

(ख) व्यंग्य

१. अलीभाइयों की दुलत्ती ५२६

२. भारतीय रक्त का स ; ग ५५४

(ग) सादे

१. ग़रीबों के बच्चे ४६४

२. सिनेमा-ऐक्टर चार्ल्स चैपजिन । बहुतों ने

साग, तरकारी, फूल आदि के उत्तम और परीक्षित बीज सदा मिलते हैं। सचित्र सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए। पत्र-व्यवहार अँगरेज़ी में करें।

पता—पेस्टनजी पो० पोचा एंड सन, पोस्टबक्स ५५, पूना।

दवाइयों में खर्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिये "अनुभूत योगमाला" पाक्षिक पत्रिका का नमूना मुफ़्त मँगाकर देखिए।

पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला ऑफ़िस, बरालोकपुर, इटावा।

"संसार में एक नया तेल"

"सफ़ेद बाल एक हफ़्ता में जड़ से काला"

हज़ारों का बाल काला हो गया। यदि इस ख़िज़ाब विलास ख़ुशबूदार तेल से सफ़ेद बाल जड़ से एकदम काला न हो जाय, तो कुल क़ीमत वापस। जो चाहें शर्त लिखा लें। क़ी० ४) रु०

शंकर-कार्यालय, नं० ८०

दरभंगा सिटी

शक्ति का ख़ज़ाना यानी पृथ्वी पर का अमृत

मदनमंजरी

यह दिव्य गोलियाँ दस्त साफ़ लाती है, वीर्य-विकार संबंधी तमाम शिकायतें नष्ट करती हैं और मांस, स्निग्ध शारीरिक प्रत्येक प्रकार की कमज़ोरी को दूर करके नया जीवन देती हैं। क़ी० गोली ४० की डिब्बी १ का ७

बंबई ब्रांच:—३६३ कालबा देवी

राजवैद्य नारायणजी-केशवजी। हेड-ऑफ़िस जामनगर, (काठियावाड़) लखनऊ एजेंट:—निगम मेडिकल हॉल

मँगाया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

इनका वास्तविक चेहरा न देखा होगा।
इनकी मूर्ख बनावटी हैं। ४६६
३. रात में एंबैंकमेंट का पुल ४६७
४. रात के समय एंबैंकमेंट। बहुतेरे ग़रीब-मज़दूर यहीं, इसी के आस-पास, रात व्यतीत करते हैं। ४६७
५. टेम्स एंबैंकमेंट के पास बैठकर 'फ़ुटपाथ' पर चित्र अंकित करनेवाले निर्धन चित्रकार। ४६८
६. रात में एडमिरेल्टी आर्च—द्वारावगार स्क्वेयर। ४६६
७. सुरीले रागवाली ४७६
८. डॉ० मिलिकान (नोबल-पुरस्कार के विजेता) ४६०
९-११. इन्फ़्ल्युएंज़ा के कीटाणुओं की क्रमानुसार वृद्धि की क़दमें ४६१
१२. शरीर-निर्माण-कला ४६१
१३. नवीन पेंसिल ४६२
१४. मोटर-गति-सूचक ४६२

१४ सोने और चाँदी के तमग़े इनाम में मिला हुआ—

डायमंड सोप कंपनी, बंबई नं० ४.

(१) ख़ुशबूदार साबुन—मनोहर ख़स, गुलाब वग़ैरह।

(२) दवाइयाना साबुन—खुजली वग़ैरह के वास्ते कारबालिक मिला हुआ।

(३) कपड़े धोने का साबुन—डायमंड वाशर का डबल बट्टा।

(४) कपड़े रँगने का साबुन—गुलाबी, पीला, लाल वग़ैरह ११ पक्का रंग में बना हुआ।

हमारी कंपनी का प्रसिद्ध ख़ालिस स्वदेशी साबुन इस्तेमाल करके खातरी कीजिए और परदेशी वस्तु का इस्तेमाल छोड़ स्वदेशी माल का गौरव बढ़ाइए। यह साबुन हरएक जगह दूकान पर मिल सकता है।

स्त्री-पुरुषों के लिये स्वर्ण-योग—(रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क शंख)

कविराज, डाक्टर्स आर० जी० मिश्र राजवैद्य, ऐंड एम्-एल्; गुप्त वैद्यराज, गोंदिया

की

अचूक गुणकारी प्रसिद्ध चंद दवाइयाँ

१. अबला-संजीवन—स्त्रियों के प्रदर, प्रसूत, सोमरोग, हिस्टेरिया की रामबाण दवा क़ी० १)
२. तरुण सुधा—पुरुषों को होनेवाले, शीघ्रपतन, नपुंसकता, वीर्य-क्षरण, स्वप्न-दोष, शुक्र-क्षय आदि रोग की अचूक दवा २॥)
३. मिश्र-मोहनांजन पेनबाम—सरदर्द, गठिया, कमर-दर्द, चोट, मोच आदि पर शर्तिया दवा क़ी० ॥=)
४. मिश्रमोहनराज्यूमिक्चर—जूदी बुख़ार, मलेरियाज्वर की अनफ़ेल, शर्तिया दवा क़ी० बड़ी बोतल ।॥=), छो०॥=)
५. मिश्रमोहन बाल-सुधा—छोटे बच्चों के सुखौड़ी, जीर्ण बुख़ार, पिलिया, दाहरोग क़ी अचूक दवा क़ी० ॥)
६. मिश्रमोहन द्राक्षासव—क्षय, खाँसी, हृदयगत उष्णता, जीर्णज्वर, पिलिया-नाशक, रक्त बर्धक क़ी० ॥)
७. महानारायण तैल—जगत-प्रसिद्ध बाल-नाशक तैल क़ी० २)
८. ब्राह्मी तैल—जगत्-विख्यात, मस्तिष्क-विकार-नाशक, सृगी, उन्माद को खोनेवाला प्रसिद्ध तैल क़ी० १)
९. महाविषगर्भ तैल—वातरोग पर विख्यात अचूक गुणकारी तैल क़ी० बड़ी बोतल २) रु० छो० १) रु०
१०. आमला हेअर आइल—कच्चे आँवलों से बना परम विशुद्ध, मनोहर सुगंधिवाला तैल क़ी० १) रु०
११. पंकजपुष्प तैल १) रु०, मोहनमल्लिका तैल १) रु०, तिल-तैल १) रु०, पुष्पराज-प्रसारणी वात-नाशक तैल १॥) रु०, दाद का मलहम १)

इसके अतिरिक्त कार्यालय में आयुर्वैदिक चूर्ण, गुटी, वटी, आसव, अरिष्ट, तैल, घृत, भस्म, खल्वटी औषधियाँ, कुपिस्थ औषधियाँ, मोदक, पाक सदा तैयार मिलते हैं—रोग लक्षण-सहित पत्र-व्यवहार करें—हर जगह एजेंट चाहिए—

हमारे सोल एजेंट—दी पेरोडाइज परफ़्यूमरी हाउस नं० ७५ कोलूटोला स्ट्रीट, कलकत्ता।

नोट—आर्डर देते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सर्व रोग को दूर करनेवाला

(भारत-सरकार से रजिस्टर्ड)

जीवनधारा

रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क "जेनस" नं० ३०२

हर समय अपने पास रखिए। यह पेट-संबंधी विकार, हैज़ा या दाढ़ का दर्द, सर्दी, सूजन, घाव, कमज़ोरी, प्रदर, प्रमेह, हर तरह का बुख़ार, संधिवात, सिरदर्द, बवासीर, जड़री डंक, हाथ, पाँव और बदन का दुखना आदि बहुत-से दर्द को शर्तिया आराम करता है। दाम बड़ी शीशी १॥) रु०, आधी शीशी १) रु०, छोटी शीशी ॥) महसूल अलग। सूचीपत्र मुफ़्त मिलेगा। देखिए, यह "जीवनधारा" सब जगह मिलता है।

पता—जे० एन० सेठना, मु० पो०

नड़ियाद [गुजरात]

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके एक ही रोज़ के तीन बार के लेप से सफ़ेद दाग़ जड़ से न छूटे, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। दाम ३) रु०।

इस जड़ी के प्रशंसापत्रों में से मैं एक को ज्यों-का-त्यों उद्धृत करता हूँ—"वैद्यवर पं० महावीरजी, आपको कोटिशः धन्यवाद। आपकी जड़ी ने जादू का-सा काम किया। रोग काफ़ूर की भाँति उड़ गया। आप-ऐसे महानुभावों को ईश्वर चिरंजीवी करें तथा आपके औषधालय की दिन प्रति दिन उन्नति होती रहे। कृपया खाने की भी दवा शीघ्र ही वी० पी० द्वारा भेजिएगा। आपका शुभचिन्तक अवस्थी, कबीरपुर, पो० हरगाम, ज़ि० सीतापुर।"

पता—वैद्यराज पं० महावीर पाठक

नं० ३२, दरभंगा (बिहार)

❀ ऐसा कौन है जिसे फ़ायदा नहीं हुआ ❀

तत्काल गुण दिखानेवाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ सब दुकानदारों के पास मिलती हैं

सुधासिन्धु

कफ, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेटदर्द, क़ै, दस्त, जाड़े का बुख़ार (इन्फ़्लूयेंज़ा), बालकों के हरे-पीले दस्त और ऐसे ही पाकाशय की गड़-बड़ से उत्पन्न होनेवाले रोगों की एकमात्र दवा। इसके सेवन में किसी अनुपान की ज़रूरत न होने से मुसाफ़िरी में लोग इसे ही साथ रखते हैं। क़ीमत ॥) आना।

बालसुधा

बच्चों को बलवान्, सुंदर और सुखी बनाने के लिये सुख संचारक कंपनी मथुरा का मीठा "बालसुधा" पिलाइए। क़ीमत ॥) आना।

दद्रुगजकेशरी

यदि संसार में बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को जड़ से खोनेवाली कोई दवा है तो वह यह है। दाद चाहे पुराना हो या नया, मामूली हो या पक्के वाला इसके लगाने से अच्छा होता है। क़ीमत १)

सुधासव

शरीर में तत्काल बल बढ़ानेवाली, ज़ख़्म, बदहज़मी, कमज़ोरी, खाँसी और नींद न आना दूर करता है। बुढ़ापे के कारण होनेवाले सभी कष्टों से बचाता है। पीने में मीठा स्वादिष्ट है। क़ीमत तीन पाव की बोतल २), छोटी १) रु०, डाक-ख़र्च जुदा।

मिलने का पता—सुख संचारक कंपनी, मथुरा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—आर्डर देते समय यह पत्र देखकर माल मँगाया है।

खुल गया ! खुल गया !! खुल गया !!!

हमारा चित्रकला-विभाग

(Our Fine Art Department)

समाचार-पत्रों, मासिक पत्रों तथा पुस्तक-प्रकाशकों के लिये सब प्रकार के चित्रों, कार्टूनों इत्यादि के डिज़ाइनों का प्रबंध हो गया !

अगर आपको छोटे या लाइफ़-साइज़ में अपनी जीती-जागती तस्वीर बनवानी हो, तो हमारे पास ऑर्डर भेजिए। उचित मूल्य ही लिया जायगा। बुरे से भी बुरा फ़ोटो क्यों न हो, हम उसका रंगीन या सादा इन्लार्जमेंट, हर साइज़ में, तैयार कर देंगे। वाटर-कलर या ऑयल-कलर का काम सिर्फ़ हमीं भारतवर्ष-भर में आपको, ऐरोग्राफ़-मशीन (Airograph Machine) से, बहुत सुंदर रूप में, बनाकर दे सकते हैं।

डिज़ाइन		फ़ोटो इन्लार्जमेंट १०×१२ इंच	
रंगीन चित्र ...	३०) से १००) तक	ऐरोग्राफ़ से तैयार किया हुआ	सोपिया या ब्लैक सादा १०)
सादा एकरंगा चित्र	१०) से २५) „		„ „ „ रंगीन २०)
लाइन-वर्क ...	६) से २०) „	पोर्टग ऑयल-कलर	३०)

पोर्ट्रेट

ऑयल-कलर लाइफ़-साइज़	मज़बूत कैनवेस पर	...	...	१०००)
„ „ बस्ट	„ „ „	...	...	५००)

नोट—बड़े इन्लार्जमेंटों की क़ीमत असल फ़ोटो देखकर बतलाई जा सकती है।

Manager, The Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुरली की मादकता
[चित्रकार—श्रीराधेश्याम भटनागर]

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष ३ खंड २ | ज्येष्ठ, ३०७ तुलसी-संवत् (१९८७ वि०)— जून, १९३० | संख्या ५ पूर्ण संख्या ३५

गीत

[श्रीयुत "निराला"]

कल्पना के कानन की रानी,
आओ आओ मृदुपद, मेरे
मानस की कुसुमित वाणी!—
कानन की रानी!
सिहर उठें पल्लव के दल, नव अंग;
बहे सुप्त परिमल की मृदुल तरंग;
जागे जीवन की नव ज्योति अमंद;
हिले वसंत-समीर-स्पर्श से
वसन तुम्हारा धानी—
मेरे कानन की रानी!
आओ मनोहर हो मेरे जीवन का;
खुल जाए पथ रूँधा कंटक-वन का;
धुल जाए मल मेरे तन का, मन का;
देख तुम्हारी मूर्ति मनोहर
रहें ताकते ज्ञानी—
मेरे मानस की वाणी!
मेरे प्राणों के प्याले को भर दो;
प्रिये, दृगों के मद से मादक कर दो;
मेरी अखिल-पुरातन-प्रियता हर दो;
मुझको एक अमर वर दो
मैंने जिसकी हठ ठानी—
मेरे कानन की रानी!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेरा प्रवास

[श्रीयुत कृपानाथ मिश्र (लंदन से)]

(४)

लंदन का रहस्य

(क) ग़रीबों का लंदन

शाल अट्टालिका के पास झोपड़ी को देखकर आश्चर्य होता है ; फिर भी झोपड़ी अट्टालिका के पास पाई जाती ही है। रॉयल-एक्सचेंज के निकट ग़रीबों का होना अस्वाभाविक जान पड़ता है ; फिर भी रॉयल-एक्सचेंज के निकट ग़रीब पाए जाते ही हैं।

लंदन केवल महलों की ही राशि नहीं, झोपड़ियों का भी आश्रय है। असंख्य भोजनालयों के रहते हुए भी यहाँ के कुछ लोग भूखे ही रहते हैं। चारो ओर होटल, मकानों और महलों का जगमगाता हुआ आलोक उन लोगों की दरिद्रता पर हँसता है, जिनका घर टेम्स के किसी भी पुल के नीचे या सड़क पर, एक कपड़े की छावनी के भीतर, है। जीवन के इसी वैपरीत्य से रहस्य की उत्पत्ति होती है। लंदन रहस्य से भरा है।

सेंट पाल के गिरजाघर से सीधे पूरब जाने पर, सिटी के बाहर, आप ग़रीबों के स्थान में पहुँचेंगे। ये घर के भीतर चूहों की तरह रहते हैं, एक-एक घर में सात, आठ, नौ, दस। इनके बाल-बच्चे बड़े ही प्रसन्न, बड़े ही सुंदर हुआ करते हैं। और ये ? ये जीवन के उस भाव के प्रतीक हैं, जिसका नाम उमंग है। इनके लिये

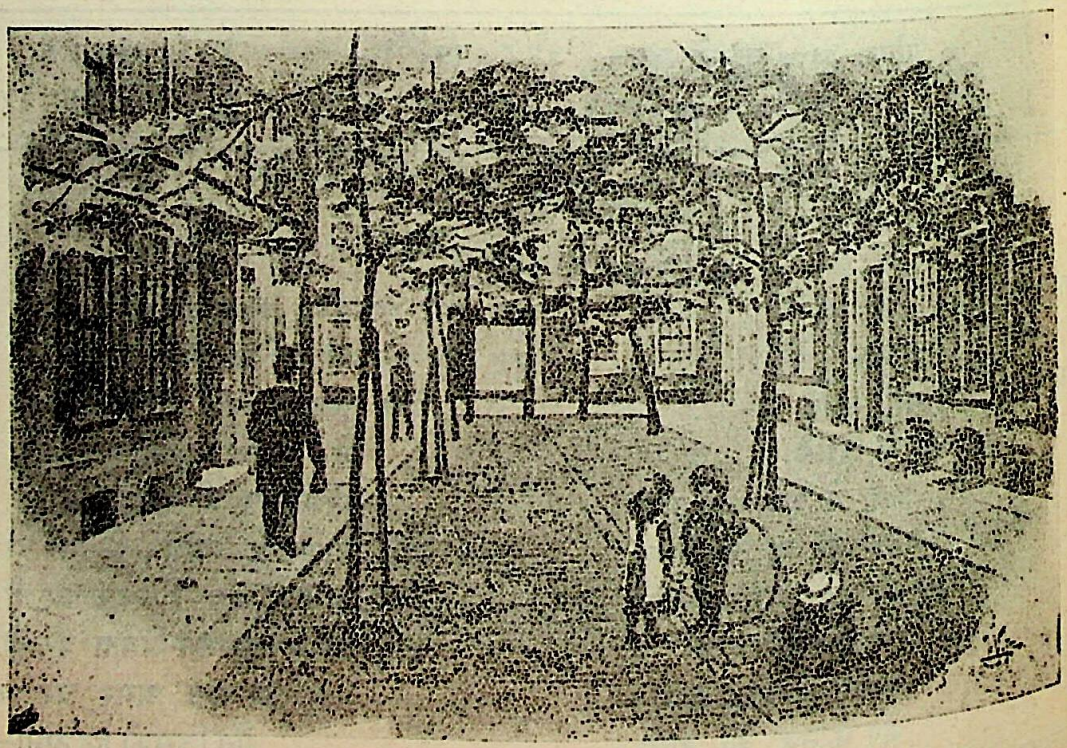

ग़रीबों के बच्चे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धर्म कोई चीज़ नहीं। पाप-पुण्य का लेखा ये स्वयं ही करते हैं। ये सभी अपने-अपने जगत् के स्रष्टा हैं। यदि केवल सुंदर वस्तुओं को ही नहीं, वरन् असुंदर के साथ सुंदर की वा सुंदर के साथ असुंदर की सृष्टि हो, तो ये सभी कवि हैं। लाइम-हाउसस वा स्टेपनीस ग़रीबों का स्थान नहीं, कवियों का साम्राज्य है।

मैंने स्वयं इन स्थानों को देखा है। अँगरेज़ लोग बड़े साहसी होते हैं, पर लाइम-हाउस ये नहीं जाते। आप जिस किसी भी लंदन के रहनेवाले से पूछिए कि "लाइम-हाउस किस ओर है?" वह पहले आपके वस्त्र पर ध्यान देगा और तब नम्रता-पूर्वक कहेगा—"महाशय, क्षमा करें। पर लाइम-हाउस जाना ख़तरनाक है!" मैंने जब यही उत्तर तीन व्यक्तियों से पाया, तो मैंने एक पुलिसमैन से कारण पूछा। उसने मुझे समझाया—"लाइम-हाउस में भद्र पुरुष नहीं रहते। वहाँ ग़रीब, अपढ़, मज़दूर, शराबी, चंडूख़ोर रहा करते हैं।" मैंने जब पूछा—"वहाँ जाना ख़तरनाक है या नहीं?" तो उसने कहा—"नहीं।"

लाइम-हाउस में चीनी लोग रहते हैं, कुछ अँगरेज़ भी। बहुतेरे भारतवर्षीय कुली भी यहीं ठहरते हैं। भारतीय मल्लाहों के लिये एक ख़ास घर है, जो बहुत बड़ा, सुंदर और साफ़ है। इसके भीतर जाकर मैंने कई मल्लाहों से बातें कीं। ये प्रसन्न दीख पड़ते हैं। एक मल्लाह से मैंने अँगरेज़ी में कुछ पूछा। वह चुप रहा। फिर मैंने उससे अँगरेज़ी में पूछा—"क्या आप अँगरेज़ी नहीं जानते?" उसने एक ही शब्द कहा—"आमि बांगाली।" उस समय न-जाने मेरा भेद-भाव कहाँ चला गया। मैंने उससे बँगला में बातें शुरू कर दीं। जाते समय उसने मुझे एक सिगरेट देना चाहा। मैंने धन्यवाद देते हुए उसे अस्वीकार किया। उसको मेरे आचरण से बहुत दुःख हुआ। उसने कहा—"मैं छोटा व्यक्ति, अपढ़, मूर्ख, दरिद्र हूँ, इसी से आपने मेरे सिगरेट का तिरस्कार किया!" मेरे हृदय में चोट पहुँची। आज तक मैंने न कभी सिगरेट पिया है, न पीने की इच्छा ही है। पर मुझे सिगरेट ले लेना चाहिए था, कम-से-कम भ्रातृ-भाव की स्वीकृति के चिह्न-स्वरूप। मुझसे भूल हो गई। जीवन की बहुत-सी भूलें सदा के लिये दुःख की स्मृति जगाती हैं।

लाइम-हाउस एक विचित्र स्थान है। कवियों की कल्पना यहाँ के झरोखों में अपनी माया रचती है। यहाँ के लोगों की धीमी आवाज़ में उसी लुप्त संगीत की अंतिम ध्वनि सुन पड़ती है। इँगलैंड के कई प्रसिद्ध लेखकों ने इन ग़रीबों के संबंध में किताबें लिखी हैं; इनके झरोखे और साधारण अंधकारमय घरों को लेकर नहीं, इनके विचित्र जीवन को लेकर। मुझे सबसे अच्छा प्रसिद्ध सिनेमा-ऐक्टर चार्ल्स चैपलिन का वर्णन अच्छा लगा। उसे ही यहाँ उद्धृत किए देता हूँ—

"Behind each of those garret windows lurks life—life in its most elemental Costume. There is no time, thought, or preparation for anything but the elemental passions. Here is a little slice of God's fashioning, where love runs hand in hand with death, where poetry sings in withered Mongolian hearts, even as knives are buried in snow-white breasts and swarthy necks. Here, hearts are broken Casually; but there comes, at the same time, just as often to this lotus-land; the pity terror and wonder of first love. And who shall say, which is predominant?"*

टॉमस बर्क नामक एक अँगरेज़-लेखक ने लिखा है—"लंदन मेरी प्रणयिनी है। इसकी एक नहीं, अनेक आत्माएँ हैं और प्रत्येक आत्मा का प्रकाश नवीन, सुंदर और गंभीर रूप में हुआ करता है।"

मेरी दृष्टि में लंदन का रूप इतना कवित्व-पूर्ण नहीं, फिर भी इसके रूप में गंभीरता की मात्रा रहस्य के साथ इस प्रकार मिली हुई है कि भावुकों के लिये यह मरीचिका के सदृश अवास्तविक अनंत का रूप धारण कर लेता है। मैं लंदन को एक अष्ट राग समझता हूँ।

---

§ यहाँ ये ग़रीब मज़दूर रहते हैं।

* My wonderful Visit, p. 134.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिनेमा-ऐक्टर चार्ल्स-चैपलिन। बहुतों ने इनका वास्तविक चेहरा न देखा होगा। इनकी मूछें बनावटी हैं।

इसके भीतर से जितने स्वर निकलते हैं, सभी अस्पष्ट हैं। भूखे हुए व्यक्ति की तरह—शिशु की तरह नहीं—यह घबराया हुआ जान पड़ता है। फिर भी यह अपने बल का हिमायती है, इसी से गंभीरता के नीचे घबराहट को छिपा डालता है। पेरिस के भीतर उल्लास-पूर्ण, प्राणमय जीवन की जो छवि दीख पड़ती है, उससे संन्यास की दीक्षा हो रही है। पेरिस सचमुच भोग के अभ्यंतर त्याग की मूर्ति है। योग ही उसका ध्येय है, भोग है केवल प्रकरण। पर बात अभी लंदन की हो रही है, और मेरा काम वर्णन करना है। लेक्चर देना नहीं!

रात के समय एंबैंकमेंट-नामक पुल ग़रीबों की लीला-भूमि हो जाता है। यहीं किशोर अपनी प्रणयिनी के लिये छोटी-सी भेंट लेकर, चंचल हो उपेक्षा करता है। यहीं दिन-भर के थके-माँदे, बूढ़े मज़दूर रह पार के फड़कते हुए आलोक-विज्ञापन को देखते-देखते सो जाते हैं। यहीं कर्तव्य-विमुख पिता मातृ-हीन, बूढ़े बच्चों की बातें भूलकर, घर न जा, नशे में चूर हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

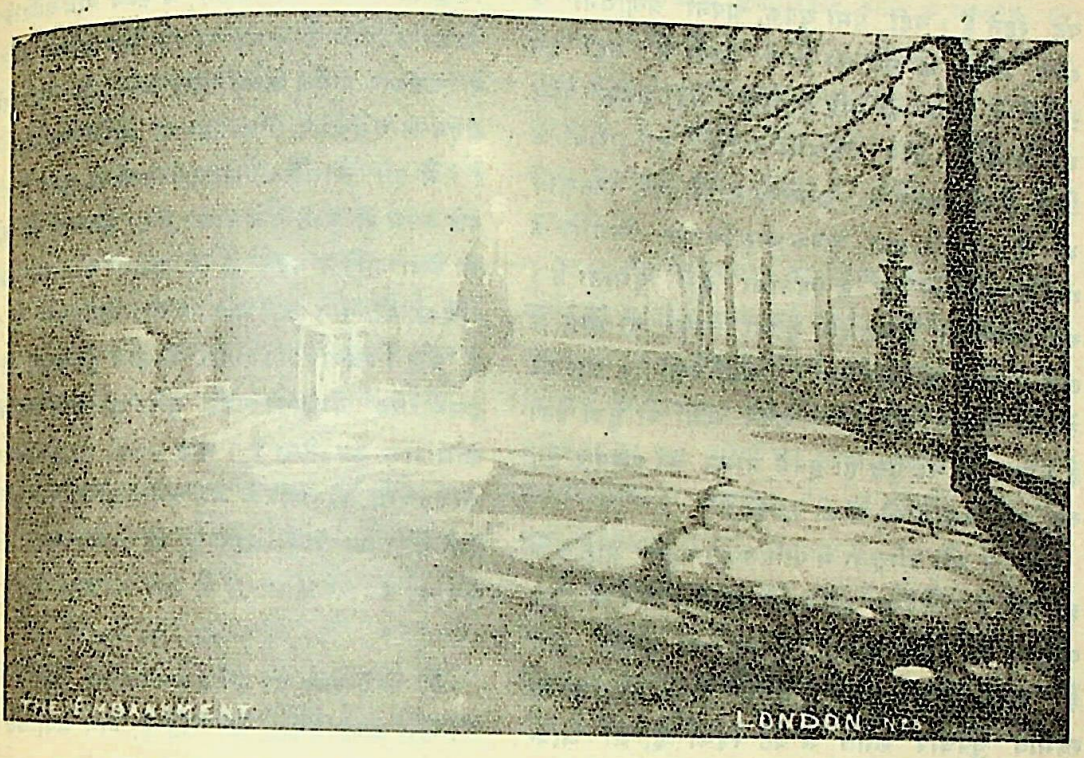

रात में एंबैंकमेंट का पुल

रात के समय एंबैंकमेंट। बहुतेरे ग़रीब-मज़दूर यहीं, इसी के आस-पास, रात व्यतीत करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पड़े रहते हैं। यहीं प्रेमी युवक, अपनी प्रणयिनी के साथ, भविष्य के 'घर' की चिंता करता है। यहीं इन ग़रीबों के स्वप्नों की सृष्टि होती है, यहीं उनका नाश भी होता है। टेम्स एंबैंकमेंट सचमुच इन ग़रीबों के लिये इनके आनंद का जन्म-स्थान ही नहीं, श्मशान भी है। क्योंकि यहीं अनेक बार किशोर किशोरी के गले में फूलों का हार न पहनाकर छुरी चुभाता है। यहीं प्रणय की भिखारिनी युवती निराश हो हेम्स के जल में अपने को बहा देती है। यहीं बच्चों के कष्ट को देखकर घबराई हुई माता अपने बच्चों को डुबा देती है। टेम्स का यह पुल ही इनके जीवन का रखवार है। वही इनके रहस्य की चाभी रखता है।

अभाव और दरिद्रता से पीड़ित हो बहुतेरे भाई कवि हो जाते हैं। दिन-भर इस रास्ते से उस रास्ते के एक कोने में खड़े होकर कविता सुनाना ही इनका काम है। मनचले पथिक कुछ दे ही देते हैं। पर जिनका स्वभाव चुपचाप शांति से बैठे रहना है, जो आवश्यकता और अभाव के कारण भी कला की उपासना चिल्लाकर करना नहीं चाहते, वे टेम्स एंबैंकमेंट के पास बैठकर फ़ुटपाथ के पत्थर पर ही चित्र अंकित करते हैं। ये चित्रकार प्रत्येक जगह दीख पड़ते हैं—पर रात में लंदन के एंबैंकमेंट में ही इनका दर्शन अधिक होता है। मैं इन लोगों की सहनशीलता से मुग्ध हूँ। चार बजे शाम से आठ बजे रात तक चुपचाप ये छवियों की रेखा अंकित करते हैं। हठात् नौ बजे रात के पथिकों की भीड़ आरंभ होते ही, थोड़ी वृष्टि हो जाती है, और चित्रकार की चेष्टा विलीन हो जाती है। पर इससे वह अघराता नहीं, वृष्टि बंद होते ही फिर भी काम शुरू कर देता है। यदि इनकी सहनशीलता और अध्यवसाय सरस्वती के उन उपासकों में हो, जो कला-प्रेमी होने का दम भरते हैं, तो शायद कला का सचमुच ही उपकार हो। पर मैं फिर भी भटक रहा हूँ!

(ख) रात का लंदन

मेरे लिये रात का लंदन इन ग़रीबों का ही लंदन है। दिन वास्तविकता का चिह्न है, रात अपार्थिव स्वप्नों का। रात में ही इन ग़रीबों की आत्मा कल्पना के

टेम्स एंबैंकमेंट के पास बैठकर 'फ़ुटपाथ' पर चित्र अंकित करनेवाले निर्धन चित्रकार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साम्राज्य में अबाध विचरण करती है। फिर ये प्रेम, घृणा, क्रोध, द्वेष, छिपाने की चेष्टा नहीं करते। मायापुरी के निवासियों की तरह स्वप्न से विभोर हो ये जो कुछ कर बैठते हैं, दिन होते ही वह मधुर वा भयंकर वा कुत्सित दीखता है। पर यदि हम लोगों को इनकी भीतरी बातों से परिचित होने का अवसर मिले, यदि हम इनके मन का परिचय उस समय पाएँ, जिस समय संसार के बंधन को तोड़कर इनकी असफल आकांक्षाएँ नए स्वप्न-जगत् की सृष्टि करती हैं, तो शायद इनके कुत्सित जघन्य कर्मों में भी कुछ उद्देश्य दीख पड़ेगा। पर मैं फिर...

वेस्ट एंड अथवा पश्चिमांत-विभाग का लंदन रात में उतना सुंदर नहीं दीख पड़ता, जितना कि पेरिस। प्रायः प्रतिदिन कुछ-न-कुछ वृष्टि होती है, चाहे रात में वा दिन में। कुहासा का जाना भी लंदन का एक स्वाभाविक अंग है। फिर भी रात का लंदन किसी-किसी स्थान से सुंदर ज्ञात होता है। लीएस्टर स्क्वेयर के आलोक, एडमिरेल्टी आर्च के आलोक दूर से मनोहर दीख पड़ते हैं। ट्राफ़ाल्गार स्क्वयर जन-शून्य होने के कारण सुंदर जान पड़ता है। पार्लियामेंट टेम्स के किनारे मौन योगी की भाँति काला वस्त्र पहनकर खड़ा रहता है, उसमें आलोक नहीं चमकते।

शहर रात में श्मशान की भाँति जन-शून्य, जीवन-शून्य हो जाता है। जो कई व्यक्ति उसमें मकानों का रखवाली के लिये रहते हैं, वे मकानों की ही तरह विशाल पर निष्प्राण होते हैं। रात में शहर का वैभव दरिद्रता का रूप धारण कर मानो चिल्लाता है—"मुझे इस निर्जनता से बचाओ।" पर उसका पुकार कोई नहीं सुनता।

मैं यहाँ उस जगह की बातें न लिखूँगा, जिसका नाम मे-फ़ेयर (May-fair) है। यह लंदन का सबसे धना और फ़ैशनेबुल भाग है। यहाँ के लोग दिन में सोते और रात में जागते, हँसते, खेलते, नाचते

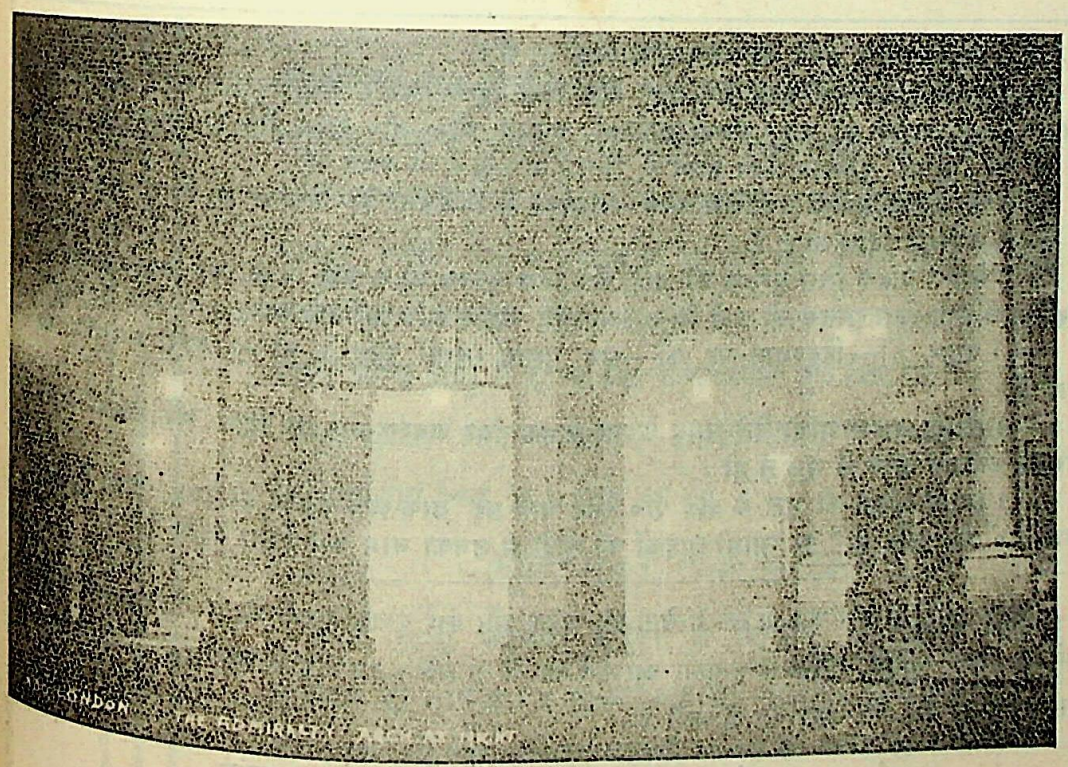

रात में एडमिरेल्टी आर्च—ट्राफ़ाल्गार स्क्वेयर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। इनमें से बहुतों ने साहित्यिक सभाएँ स्थापित की हैं। कई चित्रकारों ने पेरिस की नक़ल कर रात के लिये विशेष चित्र-गृहों (Studio) का आयोजन किया है। मुझे एक स्टूडियो में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसका वर्णन मैं तब करूँगा, जब मैं पेरिस के चित्रकारों के संबंध में लिखूँगा। मे-फ़ेयर के रात के नृत्य-गान आदि का भी संक्षिप्त वर्णन पेरिस के नैश जीवन के संबंध में लिखने के समय करूँगा।

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक-माला

गंगा-पुस्तकमाला

के

स्थायी ग्राहक

बनने से माला की पुस्तकों पर २५) सैकड़ा और हिंदुस्थान-भर की पुस्तकों पर एक आना रुपया कमीशन मिलेगा।

नियम नीचे पढ़िए

ग्राहक बनने से आप न केवल पुस्तकों से लाभ उठावेंगे, बल्कि मातृभाषा के प्रचार में हमारा हाथ भी बटाएँगे।

॥) प्रवेश-फ़ीस देकर आज ही ग्राहक बन जाइए

(१) स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फ़ीस सिर्फ़ ॥) है।

(२) पुस्तकें, प्रकाशित होते ही—१५ दिन पहले मूल्य आदि का "सूचना-पत्र" * भेज देने के बाद—स्थायी ग्राहकों को, २५) सैकड़ा कमीशन काटकर, वी० पी० द्वारा, भेज दी जाती हैं। ५-६ रुपए की कई पुस्तकें एकसाथ भेजी जाती हैं, जिसमें डाक-ख़र्च में बचत रहे।

(३) जो पुस्तकें हमारी प्रकाशित अन्य मालाओं में निकलती हैं, उन पर भी स्थायी ग्राहकों को २५) सैकड़ा कमीशन दिया जाता है।

(४) स्थायी ग्राहक जिस पुस्तक को चाहें, लें; जिस पुस्तक को न चाहें, न लें; यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। वे चाहे जिस पुस्तक की चाहे जितनी प्रतियाँ, चाहे जब, ऊपर-लिखे कमीशन पर मँगा सकते हैं।

(५) बाहर की—हिंदुस्थान-भर की—सब पुस्तकें स्थायी ग्राहकों को -) रुपया कमीशन पर मिलती हैं।

(६) स्थायी ग्राहक ऑर्डर देते समय अपना ग्राहक-नंबर अवश्य नोट कर दिया करें, जिसमें उनके ऑर्डर पर कमीशन कटने में भूल न हो।

(७) स्थायी ग्राहक की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक-ख़र्च उनको ही देना पड़ता है, और दो बार वी० पी० लौट आने पर स्थायी ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

* नई पुस्तकों में से यदि कोई या सब न लेनी हों, अथवा और कोई पुस्तक मँगानी हो, तो 'सूचना-पत्र' मिलते ही हमें पत्र लिखना चाहिए, जिसमें इच्छानुसार काररवाई कर दी जा सके। १५ दिन के अंदर कोई सूचना न मिलने पर सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सनाथ

[बाबू जगन्नाथदास "रत्नाकर" बी० ए०]

परि-परि प्रबल प्रपंच माहिं पंचनि के
नाच्यौ हौं जितेक नाच तेतिक नचैया को ?
कहै रत्नाकर पै औरै खाँच खाँचो अब
तुम बिन ताके पर साँच को सँचैया को ?
जो हम अनाथ औ न माथ पै हमारे कोऊ,
तौ अब हमारौ कर-अकर-जँचैया को ?
जो पुनि सनाथ हैं, तौ तुम हीं बतावा नाथ,
हम-से सनाथ कौं अनाथ-लौं तँचैया को ?

भारतीय कांग्रेस के प्रथम साम्यवादी प्रेसिडेंट
तथा नवयुवकों के प्यारे सम्राट्

पं० जवाहिरलालजी नेहरू

की जीवनी तथा जोशीले लेख और भाषण पढ़िए। उनकी अनुपम योग्यता, अदम्य वीरता, दृढ़ संकल्प, सत्य-निष्ठा एवं बच्चों की-सी सरलता के आप क़ायल हो जायँगे। आपको मालूम हो जायगा कि किस कारण उन्होंने देश के नवयुवकों का मन मुट्ठी में कर लिया है, किस प्रकार वह किसानों और मज़दूरों के प्यारे नेता हुए, और क्यों इतनी अल्प आयु में ही कांग्रेस के सभापति चुन लिए गए!

पृष्ठ-संख्या १३६। काग़ज़ बढ़िया ऐंटिक! छपाई सुंदर!! ३-४ दर्शनीय चित्र!!! इतने पर भी

मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

अगर अभी आपका ऑर्डर न आएगा, तो पुस्तक मिलना मुश्किल हो जायगा। ५ प्रतियाँ एकसाथ लेने पर सादी प्रतियाँ ३=) की जगह २) में और सजिल्द प्रतियाँ ५॥=) की जगह ४) में मिलेंगी।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमेरिका की कुछ आततायी संस्थाएँ

(कू-क्लक्स-क्लान)

[बाबू वृंदावनदास बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

जा का स्वातंत्र्य, शासन एवं सुव्यवस्था का संस्थापन, अल्पसंख्यक जातियों का संरक्षण, कार्य-क्षेत्र, वाणी, एवं धर्म की स्वाधीनता आदि सभ्य-शासन के मुख्य अंग हैं। स्वाधीनता और प्रजा-सत्ता (Sovereignty of the people) प्रजातंत्र के प्रधान स्तंभ हैं। साधारणतया यह विश्वास किया जाता है कि अमेरिका संसार का सबसे बड़ा प्रजातंत्र-प्रधान देश है। परंतु (अमेरिकन) कांग्रेस के अनुसंधानों से पता चला है कि दुनिया के किसी अन्य देश में शासन की इतनी अवज्ञा नहीं की जाती है, स्वाधीनता को इतना नहीं कुचला जाता है, शासन, व्यवस्था, जान-माल की रक्षा के नियमों का इतना उल्लंघन नहीं किया जाता है जितना कि अमेरिका में।

इन अनुसंधानों से पता चला है कि संयुक्त-राज्यों (United States) में आततायी संस्थाओं का साम्राज्य है। जनता में दल-दियाँ हो गई हैं। प्रत्येक दल अपने संगठन एवं शक्ति के अनुसार अपना आतंक स्थापित करता है। परिणाम यह होता है कि जनता को एक सुदृढ़ शासन के नीचे रहने के बजाय विभिन्न दलों की निरंकुशता के अधीन रहना पड़ता है।

इस विषय में अमेरिका की मुख्य संस्था 'कू-क्लक्स-क्लान' विशेष उल्लेखनीय है। इस संस्था के लोग एक प्रकार का सफ़ेद लबादा पहनते हैं। इन लोगों का ध्येय श्वेतांग-जाति के प्रभुत्व को, आतंक द्वारा, स्थिर रखना है। इस संस्था के सदस्य स्त्री-पुरुषों को चुरा ले जाते हैं, अलग ले जाकर उन्हें पीटते हैं, उनके शरीर पर कोलटार मलते हैं, उन्हें गोली से मार डालते तथा फाँसी पर लटका देते हैं। इस गुप्त-संस्था को १८६६ ई० में कुछ युवकों ने जारी किया था। कुछ काल शांत रहने के बाद सन् १९१५ में कर्नल विलियम जोम्स साइमन ने इस संस्था को जागृत किया। पिछले दिनों समाचार-पत्रों से ज्ञात हुआ कि इसकी अग्निनेत्री एक महिला है, जिसका नाम एलिज़ाबेथ टाइलर है। यह इस संस्था की 'महारानी' कहलाती है। इसकी अध्यक्षता में ही सब निष्ठुर कर्म किए जाते हैं। संस्था में अमेरिका के ऊँचे-से-ऊँचे पदाधिकारी गुपचुप सम्मिलित हैं। ५ लाख के लगभग इस संस्था के सदस्य हैं, जिनमें डेढ़ लाख के क़रीब स्त्रियाँ हैं।

'कू-क्लक्स-क्लान' तीन घृणाओं पर अवलंबित है। (१) रोमन कैथलिक से घृणा, क्योंकि यह पोप की सत्ता स्वीकार करता है। (२) ज्यू (यहूदी) से घृणा, क्योंकि यह अमेरिका का आर्थिक स्वामी समझा जाता है। (३) प्रदेशी अथवा नीग्रो से घृणा, क्योंकि इससे संयुक्त-राज्यों में श्वेतांगों के एकच्छत्र आधिपत्य को धक्का लगने की संभावना है। क्लान के लोग रात्रि के समय भयावह, जघन्य एवं रौरव दुष्कृत्य किया करते हैं। उनके आतंक का सबसे अच्छा प्रमाण इस बात से पाया जाता है कि एक दफ़ा लुसिआना के शासक को क्लान के भीषण ज़ुल्मों से परित्राणार्थ सहायता लेने को वाशिंगटन जाना पड़ा था। यूनाइटेड स्टेट्स की इंडियाना स्टेट किसी ज़माने में क्लान के आतंक के कारण राजनैतिक भ्रष्टता का ज्वलंत उदाहरण थी।

बहुत-से राज्यों में क्लान के लोगों द्वारा कोड़े लगाए जाने की प्रथा बड़ी भयंकर थी। न केवल नीग्रो लोगों को बरन् श्वेतांग-स्त्रियों को कोड़े लगाकर बेहोश किया गया, और वे उसी तरह अचेतन अवस्था में मरने को छोड़ दी गईं। एक छोकड़े को पेड़ की टहनी से ऐसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मार दी गई कि उसकी पीठ सचमुच 'मांस का लोथड़ा' बन गई। एक नीग्रो को पेड़ से बाँधकर कोड़े लगाए गए और उसी तरह बँधा हुआ चौड़े मैदान में छोड़ दिया गया। मैदान में पड़े-पड़े सिसकने से उसे निमोनिया हो गया और वह मर गया। एक नीग्रो ने, जिसको कि कोड़े लगाए गए थे, अपनी ज़मीन को एक श्वेतांग के हाथ भूमि के वास्तविक मूल्य के बजाय उसके अंश पर ही बेच दिया। ❀

कू-क्लक्स-क्लान द्वारा लोगों को जीते जी जला देने की प्रथा बड़ी भयावह है। ऐसी पाशविक बर्बरता संसार के शायद ही किसी अन्य भाग में हो। यह प्रथा 'Lynching' के नाम से कहलाती है। सन् १९२५ तक ४० वर्षों में ४००० मनुष्य अग्निसात् किए गए, जिनमें ३००० कृष्णांग और १००० श्वेतांग थे, अर्थात् लगभग १०० हत्याएँ प्रतिवर्ष इस प्रकार की गईं।

यहाँ पर अमेरिकन बर्बरता के कुछ उदाहरण दिए जाते हैं। सन् १९२३ की एक रात्रि में मुँह-ढपे हुए मनुष्यों के एक समूह ने एक भ्रमणशील विक्रेता बरलेनसन को चुरा लिया। वे लोग उसे जंगलों में ले गए और वहाँ उसको रस्से से बाँधकर इतना पीटा कि वह बेहोश हो गया।.....फिर उसके घावों पर नमक छिड़ककर उसे वहीं मरने को छोड़ दिया। (New Age, March, 1928).

ओटोमैन ओकला में एक कृष्णांगी स्त्री को उसके चतुर्वर्षीय बालक के साथ एक जन-समूह उठा ले गया और उन दोनो को पुल से लटकाकर फाँसी दे दी। कोटेसविल पा में एक मनुष्य को अस्पताल से चारपाई पर से उठाकर ले गए, और उसको जीते-जी अग्निसात् कर दिया। उन सब लोगों को जोकि इस "तमाशे" के संबंध में पकड़े गए थे, फ़ौरन् ही छोड़ दिया गया। (New Age, March, 1928)

चेटनूगा शहर के डेली टाइम्स (१३ फ़रवरी, १९१८) में से 'कू-क्लक्स-क्लान' के सदस्यों द्वारा जीवित-दाह का वर्णन कितना दिल दहलानेवाला है। जिस मैकलहार्न नीग्रो को लबादा पहने हुए लोगों ने सता-सताकर जला दिया। हज़ारों स्त्री-पुरुष-बच्चे दृश्य देख रहे थे। नीग्रो का ख़ून लेने की आवाज़ें आसमान को फाड़ रही थीं। नीग्रो को एक वृक्ष से बाँध दिया गया और उसके समीप एक अग्नि की ढेरी तयार की गई। प्रज्वलित अग्नि में लोहे की शलाका गर्म होने को डाल दी गई। जब यह जलकर लाल हो गई, तो जन-समूह में से एक ने उसे उठाकर नीग्रो के शरीर में घुसेड़ दिया। वह नीग्रो भय से विक्षिप्त हो गया। उसने शलाका को अपने हाथ से स्पर्श कर लिया। वह उसके हाथ को पार कर गई।.....लोहे की गर्म शलाका शरीर के कई भागों पर लगाई गई। कई मिनटों तक यह कांड करने के बाद एक ने उसके कपड़ों पर तेल डाल दिया और आग लगा दी। लपटों में हब्शी जलने लगा। उसने बुलंद आवाज़ से कहा—"मुझे इस यातना की अपेक्षा गोली से उड़ा हो"। परंतु इसपर तिरस्कारपूर्ण परिहास ही सुनाई दिया। निर्दय अग्नि-शिखाओं ने उसे भस्म करके ही छोड़ा। (Modern Review, Feb., 1926)

क्लाक्सडेल, मिसीसिपी में एक काले आदमी की अदालत द्वारा मुक्ति पर रोष प्रकट करते हुए एक निरंकुश जन-समूह ने उस मनुष्य को, जो निर्दोष सिद्ध होकर मुक्त कर दिया गया था, अदालत से ले जाकर वध कर दिया।

२५ जनवरी, १९२१ ई० को नोडेना, आर्केन्सास में हैनरी लारी को जीते-जी जला दिया गया। समाचार-पत्रों ने निरंकुश जन-समूह (Lynching Mob) द्वारा उसके क़ैदियों पर की गई जघन्य नृशंसताओं का रोमांचकारी वर्णन किया है। एक वर्णन इस प्रकार है—"एक-एक इंच करके हब्शी के संपूर्ण शरीर को अग्निसात् कर दिया गया। एक नीग्रो ने यह कोशिश की कि थोड़ी-सी अग्नि उठाकर अपने मुँह में रख ले, जिससे शीघ्र प्राण-पखेरू उड़ जायँ। परंतु प्रत्येक बार मनुष्यों ने उसको गर्म राख लेने से रोक दिया।"

इस भीषण हत्याकांड की हम 'मनुष्य-आखेट' के अतिरिक्त और क्या संज्ञा दे सकते हैं। ओह! उन मनुष्यों की, जो इन भीषण अत्याचारों को मनोविनोद-मात्र समझते हैं, अथवा जो इन जघन्य कृत्यों को बग़ैर

❀ न्यू एज (New Age, March, 1928)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनमें करुण-भाव जाग्रत् हुए देखते हैं, पाशविकता को हम क्या कहें ?

ऐसे अत्याचार-पूर्ण बर्बर कृत्यों में समाज के गण्य-मान्य महानुभावों, उच्च पदाधिकारियों और न्यायाधीशों का भी हाथ है। एक अमेरिकन विद्वान् का कथन है कि "विनम्र, साफ़-सुथरा भद्र पुरुष, जिससे कि आप बातें कर रहे हैं, संभवतः एक हत्याकारी है, जोकि रात्रि के समय जंगलों में एक आदमी की हत्या करने के लिये सैकड़ों-हज़ारों मनुष्यों के साथ गया था और उन मनुष्यों में बहुत-से आपके मित्र होंगे।"

बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि इन जन-समूहों (Mobs) की निरंकुशता के आगे न्याय-विभाग के अधिकारी-वर्ग की असमर्थता कई बार इन थोड़े वर्षों में ही प्रकाश में आ चुकी है। २५ जून १९१९ ई० में 'न्यू ओरलींस स्टेट्स' (समाचार-पत्र) ने पहले पृष्ठ पर मोटे अक्षरों में लिखा था "तीन हज़ार मनुष्य एक नीग्रो को जलाएँगे।" 'जैकसन मिसीसिपी डेली न्यूज़' ने उसी रोज़ घोषित किया—"एलिसविल का उच्छृंखल जन-समूह जॉन हार्टफ़ील्ड को संध्या के पाँच बजे अग्निसात् करेगा।" उसी पत्र के उसी पृष्ठ की दूसरी लाइन में लिखा था—"गवर्नर बिल्वो कहता है कि वह इसको रोकने में असमर्थ है। हज़ारों मनुष्य इस दृश्य को देखने को एलिसविल में एकत्रित हो रहे हैं। शैरिफ़ और अधिकारी-वर्ग इसको रोकने में असमर्थ हैं।"

इस लोमहर्षण मनुष्य-वध के पक्ष में श्वेतांग लोग यह कहते हैं कि इसकी अमेरिकन-महिला-समाज के सम्मान-रक्षार्थ आवश्यकता है। परंतु यह बात बिल्कुल निर्मूल है जैसा कि स्वयं स्त्रियों के प्रस्तावों से, जो उन्होंने इस प्रथा के विरुद्ध पास किए हैं, विदित होता है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि इस बर्बर-प्रथा की स्त्रियों के सम्मान-रक्षार्थ कोई आवश्यकता नहीं है, इससे तो शासन की ही बदनामी होती है।

दूसरा बहाना श्वेतांग-जाति का यह है कि "बलात्कार व्यभिचार को रोकने के लिये अभियुक्तों को इसी प्रकार का दंड देना चाहिए।" परंतु फिर स्त्रियों को ऐसी भीषण सज़ा देने का क्या कारण है ? सन् १९१९ ई० एक महीने में दो स्त्रियाँ अग्निसात् की गईं। वस्तुतः ९२ स्त्रियाँ संयुक्त-राज्यों में ४० वर्ष में जीते-जी जलाई गई हैं।

हमारी सम्मति में इस दुष्ट प्रथा का मुख्य कारण है वहाँ का जाति-प्रश्न (Race-problem)। इसका प्रमाण यह है कि ४००० मनुष्यों में, जो संयुक्त-राज्यों में अब तक अग्निसात् किए गए हैं, बहुत अधिकांश भाग हब्शियों का ही है।

यदि हम अमेरिका के सामाजिक (Social) प्रश्न को विशेष रूप से समझने की चेष्टा करें, तो हमको सहज में ही पता चल जायगा कि श्वेतांग दुर्दमनीय जन-समूह कृष्ण-वर्ण मनुष्यों पर क्यों अत्याचार करते हैं। अमेरिका के दक्षिणी प्रदेशों में यदि कोई कृष्ण-वर्ण मनुष्य फ़ोर्ड के अतिरिक्त दूसरी मोटर रखता है, तो श्वेतांग इसमें अपना अपमान समझते हैं। सामाजिक क़ायदे के यह बात विरुद्ध समझी जाती है कि कोई काला आदमी अपनी मोटर श्वेतांग की मोटर के पास होकर गुज़ारे। ऐसी दशा में काले आदमी को अपनी मोटर कुछ क़दम पीछे हटानी चाहिए। अलिखित क़ानून (Unwritten law) के इन नियमों का उल्लंघन करने पर बहुत-से हब्शियों ने मृत्यु-दंड पाया है। एक हब्शी एक श्वेतांगी महिला के मकान के दरवाज़े पर, बग़ैर इस बात को जाने हुए कि यह मकान श्वेतांग का है, कोई वस्तु माँगने गया। नीग्रो को दरवाज़े पर आया देखकर वह स्त्री, जिसको वातोन्माद का रोग था, यह चिल्लाकर भाग खड़ी हुई—"यह नीग्रो मुझ पर आक्रमण करना चाहता है।" बस, इसी बात पर निरपराध नीग्रो को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े।

वस्तुतः कू-क्लक्स-क्लान की कार्यवाहियाँ अमेरिकन लोगों की सफ़ेद चादर पर काले धब्बे हैं। अमेरिकन प्रजातंत्र (Democracy) की विफलता का इससे बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मा

[श्रीयुत "गुलाब"]

(१)

अंधकार का तांडव-नृत्य ! घरों के दीपक बुझ गए हैं। अर्द्धरात्रि की बेला—समस्त ग्राम निद्रा-देवी की गोद में निस्तब्ध सो रहा है। तूफ़ान का ज़ोर, मूसलाधार वृष्टि ! प्रफुल्ल की मा जागती है। वह चिंता-ग्रसित काँप रही है। बरसाती ठंड के कारण उसका संपूर्ण शरीर ठिठुरकर टेढ़ा पड़ गया है। वह रह-रहकर बंद दरवाज़े की ओर ताक लेती है, जैसे कोई आने ही चाहता हो ! वह उत्सुकता से पागल हो रही है। उसकी प्रतीक्षा बेचैनी से भरी है। उसकी उजाड़ झोपड़ी में एक छोटा-सा दीपक टिमटिमा रहा है। आह, उसकी ज्योति बड़ी ही उदास, बड़ी ही करुणा-पूर्ण है। वह हवा की सनसनाहट में लुढ़ककर मन-ही-मन व्याकुल हो रही है, तड़फड़ा रही है। कैसा अभागा है वह दीपक ! आधी रात बीत गई, अब तक उसे इस संसार से छुट्टी नहीं मिली। कड़ी मेहनत है !

सहसा किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। बुढ़िया बाघिन की तरह दरवाज़े पर टूट पड़ी। उसने झटपट दरवाज़ा खोला—आशंकाओं से उसका दिल दहल उठा। आनेवाला और कोई नहीं, एक जर्जर वृद्ध था। वह सिर से पैर तक एक भीगा कंबल ओढ़े है, जिससे टपाटप पानी चू रहा है। बुढ़िया ने दरवाज़ा बंद कर लिया। वृद्ध भीतर चला आया। वह थरथरा रहा था !

प्रफुल्ल की मा ने काँपती हुई आवाज़ में पूछा—"कैसी ख़बर है, भैया ?" उसका कलेजा उछलने लगा। वह सनसना उठी।

वृद्ध ने कहा—"बहुत बुरी ! वह कल फाँसी पर लटका दिया जायगा। हाकिम ने फ़ैसला सुना दिया है।"

प्रफुल्ल की मा पर जैसे वज्रपात हो गया हो। उसका मस्तिष्क घूमने लगा। आँखें नाचने लगीं। अँधेरी झोपड़ी चक्र की तरह घूम उठी। उसने थरथराते हाथों से एक चीथड़ा लेकर वृद्ध की देह पोंछी; सूखे कपड़े पहनाए। कपड़े क्या थे, फ़क़ीर के चीथड़े ! उनमें जगह-जगह रंग-बिरंगी तालियाँ लगी थीं। वृद्ध टूटी चारपाई पर पड़ रहा। वह भयंकर विपत्ति का शिकार हो रहा था। कल उसके लड़के को फाँसी होगी ! उसने उत्तेजित स्वर में वृद्धा से कहा—"तू मेरी बहन नहीं, हत्यारिनी है ! दुष्टा और चुड़ैल। तू पैदा होते ही मर क्यों नहीं गई ?"

वृद्ध हाहाकार कर उठा। वह वृद्धा का सगा भाई था। उसके अथाह दुःख पर वृद्धा की आँखों में आँसू भर आए। उसने काँपते स्वर में कहा—"भाई, मैं सचमुच हत्यारिनी हूँ। मेरे कलंकी पुत्र ने तुम्हारा सत्यानास कर डाला। तुम कहीं के न रह गए। अच्छा हो, तुम कुल्हाड़ी लेकर मुझे काट डालो। मेरे शरीर के सौ-सौ खंड हो जायँ। मैं कलंकमय आपत्ति लेकर इस संसार में और नहीं रहना चाहती।" उसकी आँखों से आँसुओं की नदी बह चली। वह सिर थामकर बैठ गई।

"क्या यह मेरी वही बहन है, जिसे मैं प्राणों से अधिक प्यार करता था ! इसके लिये मा-बाप तक से लड़ बैठता था ! हाँ, यह मेरी वही बहन है। संसार ने हम दोनो ही को तबाह कर डाला। हम दोनो ही अभागे निकले। यह अनाथिनी हो गई, प्लेग मेरा परिवार चाट गया ! हम दोनो ही धन-जन से शून्य हो गए। एक पुत्र-भर बच रहा था, उसे भी कल फाँसी हो जायगी। आह ! मेरी बहन, तू कितनी अभागिनी निकली। तूने प्रफुल्ल-जैसे चांडाल पुत्र को जन्म देकर मेरा सर्वनाश कर डाला। अब मैं क्या करूँ ? मैं तो सब तरह से बरबाद हो गया—उजड़ गया ! क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होकर प्रफुल्ल मुख़बिर बन गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसनें अदालत में भयानक भंडाफोड़ कर डाला ! मजिस्ट्रेट की हत्या मेरे लड़के ने ही की है। सब साबित हो गया। हाँ, सब साबित हो गया ! अब कल सत्यानासी घड़ी में मेरा लल्ला—मेरा प्राण—फाँसी पर लटका दिया जायगा। आह ! धिक्कार है उन पापात्माओं को ! जो देश-भक्ति के ढोंग रचकर गुप्त षड्यंत्रों में शामिल हो जाते हैं, हत्या करते हैं—डाके डालते हैं और पीछे मुख़बिर बनकर समिति के सभी सदस्यों का सर्वनाश करते हैं। धिक्कार है, धिक्कार ! इन नरक के कीड़ों के नाम पर मैं थूकता हूँ। लानत भेजता हूँ।" वृद्ध उत्तेजित होकर बड़बड़ा उठा। उसने कई बार प्रफुल्ल का नाम लेकर ज़मीन पर थूका। उसकी कल्पना अत्यंत प्रचंड हो रही थी। आँखों के सामने उसका प्रिय पुत्र फाँसी पर झूल रहा है। उसके प्राण अभी तक नहीं निकले। वह तड़फड़ाता है। आह ! कैसा हृदय-विदारक चित्र है ! वृद्ध का कलेजा टूट गया। उसके शरीर के लत्ते-लत्ते उड़ गए। वह चिल्ला उठा—"लल्ला को फाँसी हो गई—हाँ फाँसी !—सचमुच फाँसी ! उसकी फाँसी का कारण और कोई नहीं, प्रफुल्ल है ! बेईमान, विश्वास-घाती और हत्यारा !"

वृद्धा अश्रु-भरी आँखों से उसकी ओर ताकने लगी।

वृद्ध उठ बैठा। वह और भी उत्तेजित हो उठा। उसने कहा—"अन्याय से कोई भी ख़ुश नहीं हो सकता। दुष्ट आत्माएँ भी अन्याय का अनुमोदन नहीं कर सकतीं। हम ग़ुलाम हैं, ग़ुलाम देश के पुत्र हैं। इसी ग़ुलामी से मुक्ति पाने के लिये विद्रोही लल्ला ने मजिस्ट्रेट की हत्या की ! किंतु वह पागल और अभागा था। अपने कार्य में सफल न हो सका—ज्यों-का-त्यों ग़ुलाम बना रहा। पकड़ लिया गया—उसे फाँसी की सज़ा हो गई। प्रफुल्ल ने उसे बरबाद कर डाला, पीस डाला, नोच डाला। आह ! प्रफुल्ल—प्रफुल्ल ने विधाता की सृष्टि पर स्याही पोत दी। वह क़साई है। मैं उस पर लानत भेजता हूँ। उसे फटकारता हूँ।"—वृद्ध ने पुनः प्रफुल्ल का नाम लेकर बड़ी घृणा के साथ ज़मीन पर थूका।

वृद्धा ने कहा—"भाई ! मुझे मार डालो। मैं प्रफुल्ल की मा हूँ। उसके अपराधों का पाप मैं अपने सिर पर लेती हूँ। मुझे मार डालो। मैं अपराधिनी हूँ—हाँ, मैं अपराधिनी हूँ।"

वृद्ध क्रोध से पागल हो गया। उसने कहा—"तेरे पुत्र के अपराधी पाप का बदला मैं तुझसे चुकाऊँ—असंभव है ! तूने इस पाप के लिये प्रफुल्ल को उत्तेजना नहीं दी। तू निर्दोष है। दोषों से भरा है—देश-द्रोही कुलांगार तेरा प्रिय पुत्र ! जिसे तूने इस पृथ्वी पर जन्म देकर बड़े प्यार से पाला-पोसा है। धिक्कार है, तुझ-जैसी मा पर—तेरे मातृत्व पर !!"

वृद्धा की अश्रु-भरी आँखें नीचे झुक गईं। लज्जा से उसने अपना मुख फटे आँचल में छिपा लिया। वह मौन थी।

वृद्ध ने पुनः कहा—"आजकल के छोकरे हिंसा पर विश्वास कर मातृ-भूमि की रक्षा करना चाहते हैं। कैसे पागल हैं वे ! क्या इतनी बड़ी सरकार के सामने—जिसके पास करोड़ों सैनिक, हवाई जहाज़, बम, तोपें और बंदूकें हैं—हम ठहर सकते हैं। कदापि नहीं। हमारी हिंसा हमें बरबाद कर देनेवाली है। हममें तो आत्म-बल की आवश्यकता है, अहिंसा की आवश्यकता है। किंतु पागलों को कौन समझाए ? लड़के बिगड़ रहे हैं—स्वतंत्रता के लिये दीवाने हो रहे हैं।"

क्षण-भर के लिये वृद्ध फाँसी की बात भूल गया। वह वृद्धा को अहिंसा-नीति का उपदेश देने लगा। सरकार की शक्तियाँ समझाने लगा। किंतु वृद्धा—वृद्धा इस समय बहरी थी। गूँगी थी। वह केवल 'हूँ-हूँ' करती रही।

अकस्मात् वृद्ध ने फाँसी की बात चला दी। इस बार वह बिलकुल शांत था। उसकी उत्तेजना काफ़ूर हो गई थी। कुछ सोचकर उसने पुनः कहा—"बहन, मैं बहुत भीग गया हूँ। बड़ी ठंड लग रही है। कई दिनों से नींद भी नहीं आई। आज जी-भरकर सोने की इच्छा है। किंतु नींद पड़ेगी या नहीं, इसमें संदेह है। चेष्टा अवश्य करूँगा, जिसमें नींद आ जाय। मेरे पास थोड़ी-सी अफ़ीम है, उसे खाऊँगा। सर्दी भी कम हो जायगी, और मज़े में पैर पसारकर सोऊँगा भी। फिर जैसा होगा, देखा जायगा। परमात्मा की मर्ज़ी ! थोड़ा-सा पानी ले आ, अफ़ीम गले के नीचे उतार दूँ।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वृद्धा उठी और पानी लेने चली गई। वृद्ध ने फौरन् टॅट से अफ़ीम की पुड़िया निकाली, इतनी अफ़ीम उसकी जान लेने के लिये काफ़ी है। उसने एक बार शून्य-दृष्टि से झोपड़ी के चारो ओर देखा, फिर चुपके-से अफ़ीम निगल गया! वृद्धा पानी ले आई। उसने पानी भी पिया।

वृद्ध ने कहा—"बहन, अब चिंता की बात नहीं है। मैं लल्ला को भूल गया हूँ। सो रह, मैं भी सोऊँगा। वह मेरा कोई नहीं था। संसार में एक दिन सभी को मरना है। मैंने अपना कलेजा पत्थर का बना लिया है। जीवन में बड़ी-बड़ी आपदाएँ सहता आया हूँ—यह भी वज्र सह लूँगा।"

वृद्धा की आँखें आँसुओं से तर हो गईं। वह भाई की पीठ पर प्यार का हाथ फेरनी लगी।

आह! वह प्यार कितना मधुर, कितना सुंदर था। कोई भी उसकी व्याख्या नहीं कर सकता!

एकाएक वृद्ध चिल्ला उठा—"मैं लल्ला को फाँसी पर चढ़ते देखूँगा। उसे फाँसी होगी—हाँ, फाँसी होगी! बहन, खोल दरवाज़ा—मैं लल्ला के पास जाऊँगा। उसे एक बार—सिर्फ़ एक बार—गले लगा लेने की इच्छा है। बुढ़ापे में यह सुख भी भोग लूँ—फाँसी पर लटकते हुए पुत्र का मुख चूम लूँ!"

वह उचककर उठ बैठा। उसने कंबल फेंक दिया। शरीर के चीथड़े फेंक दिए—धोती फाड़ डाली। वह नंगा हो गया। क्रोध से होठ चबाने लगा!

वृद्धा आश्चर्य से उसे देखने लगी।

वह खाट से उठा और पुत्र-प्रेम में पागल न-मालूम क्या अनाप-शनाप बकता हुआ, दरवाज़ा खोलकर झोपड़ी के बाहर हो गया! बिलकुल नंग-धड़ंग—शून्य—विच्छिन्न!!

उसका सिर घूम रहा था। ज़मीन घूम रही थी। आसमान घूम रहा था! अफ़ीम तेज़ थी!

वृद्धा उसके पीछे दौड़ी। किंतु वह जी-छोड़कर बड़े ज़ोर से तूफ़ान की तरह भाग चला! क्षण-भर में ही घर वृक्षों के सघन अंधकार में प्रेत की तरह ग़ायब हो गया!

किसी ने भी उसे नहीं रोका। पानी बरसकर निकल गया था। आकाश में चंद्रदेव उदय होकर उसकी खिल्ली उड़ा रहे थे। वृद्धा अवाक् रह गई—अब क्या होगा?

दूसरे दिन पुल के नीचे—नदी के किनारे—वृद्ध की लाश पानी में पड़ी थी। उसका सिर फट गया था। उसकी मोटी रक्त-धार पर सूर्य की किरणें नाच रही थीं, तैर रही थीं।

उसी दिन लल्ला को भी फाँसी हो गई! देश-भक्तों ने उसकी आत्मा की शांति के लिये दिन-भर उपवास किया। वह पागल देश-भक्त था!

(२)

यही तो संसार है!

वृद्धा डर गई। चिड़ियों की विनोद-भरी चहचहाहट उसके प्राणों में प्रचंड पीड़ा उत्पन्न करने लगी। उसे ऐसा मालूम होने लगा, जैसे चारो तरफ़ के पेड़ पत्तों में आग लगी हो। हरे-भरे खेत जल गए हैं। भयंकर धुआँ उठ रहा है। संपूर्ण ग्राम जल-भुनकर राख का ढेर बन गया है। वह श्मशान-वासिनी है!

हाँ, श्मशान-वासिनी!—वह चारो तरफ़ श्मशान का दृश्य देखती है। पर्वत-श्रेणियाँ उदास हैं। आकाश रक्त-वर्ण!—समस्त प्रकृति चिता में धायँ-धायँकर जल रही है। वह अकेली है। इस संसार में उसका कोई भी अपना नहीं है। रात्रि के समय उजड़े घरों में दीपक तक नहीं जलते। केवल कुत्ते भूँकते हैं—सियार हुहुआते हैं।

आह! अभागिनी वृद्धा डर गई। प्रफुल्ल ने संसार का सर्वनाश कर डाला! उसकी जन्मभूमि विधवा हो गई! उसका निराकार, मौन और उदास हाहाकार समस्त वायु-मंडल में गूँज रहा है! कहाँ है प्रफुल्ल? मेरा हृदय-सिंहासन, मेरा लाल, मेरा सर्वस्व!

वृद्धा विलाप करने लगी। लल्ला के ख़ून से मानो उसकी मातृभूमि तर है। वह अपनी झोपड़ी में अकेली बैठी है। उसका सिर झुका हुआ है।

सूर्यास्त हो गया! उसने चारो तरफ़ रक्तपात का दृश्य और अंधकार देखा। उसकी आँखें रक्त-वर्ण हो उठीं। आकाश में तारे झिलमिला उठे! समस्त ग्राम शिथिल हो गया। किंतु वृद्धा का विराट् रोदन नहीं रुका!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हाँ, नहीं रुका। वह रो रही मौन और उदास थी!

सहसा किसी ने झोपड़ी का दरवाज़ा खटखटाया। उसने काँपते हाथों से दरवाज़ा खोला। एक सुंदर नव-युवक-मूर्ति अंदर चली आई। वृद्धा ने चौंककर उसे पहचाना—वह उसी का पुत्र प्रफुल्ल है! उसकी पोशाक अँगरेज़ी-जैसी है। वह हाथ में चमड़े की चमचमाती हुई बैग लिए है।

प्रफुल्ल ने बैग खाट पर रख दी। वह अदब के साथ मा के चरणों पर गिर पड़ा। वृद्धा ने उसे उठाया—मातृ-हृदय उमड़ पड़ा। यही तो है मेरा प्रिय प्रफुल्ल! उसने प्रफुल्ल को छाती से लगा लिया। प्रफुल्ल के बचपन की सुकुमार स्मृतियाँ उसके हृदय-देश पर लहरा उठीं। उसकी झोपड़ी में उजाला फैल गया। वह मुसकिराने लगी। दोनो ही अपूर्व मिलन-सुख में उन्मत्त हो गए।

प्रफुल्ल ने मा की पीठ पर हाथ थपथपाकर कहा—"मा! लो, मैं आ गया। ज़ोरों की भूख लगी है। कुछ खिलाओगी नहीं? क्या बना है?"

मा ने कहा—"कुछ भी नहीं। सिर्फ़ सूखी रोटियाँ और गुड़ है। तूने पहले ही से अपने आने की ख़बर क्यों नहीं दी? अच्छे-अच्छे पकवान बना रखती! बेटा, जो कुछ है, वही खा ले। सबेरे जी-खोलकर तेरी ख़ातिर करूँगी।" उसका हृदय पुत्र-गौरव से भर गया!

प्रफुल्ल डटकर बैठ गया। उसने पेट भरकर गुड़ के साथ सूखी रोटियाँ खाईं। वृद्धा की प्यार-भरी बातें बंद न होती थीं। इस समय उसे आनंद था। वह मा थी!

बड़ी रात बीते वह पुत्र को छाती से चिपटाकर सो गई। आज उसके स्वप्न भी सुनहरे थे। रंगीन और फूलते-फलते हुए!

दूसरे दिन दोपहर के समय मा-बेटे की नींद खुली। उसने प्रफुल्ल की ख़ूब ख़ातिर की। उसे नहला-धुलाकर बड़ा अच्छा खाना खिलाया। वह मा थी!

प्रफुल्ल बैग उठा लाया—उसे खोला। वह क़ारूँ का ख़ज़ाना था। उसमें नोटों के बंडल थे। रुपए और गिन्नियाँ भरी थीं। प्रफुल्ल ने उन्हें मा के सामने उँडेल दिया।

"मा! पूरे दो लाख हैं। सरकार की तरफ़ से मुझे इनाम मिला है।" प्रफुल्ल ने आनंद-भरे स्वर में कहा—"न मैं मुख़बिर बनता, न मुझे इतनी गहरी रक़म मिलती! मैं बादशाह हूँ।"

वृद्धा चौंक पड़ी। क्या यह वही प्रफुल्ल है?—लल्ला के पिता की, लल्ला की फाँसी की, समस्त दुर्घटनाएँ उसके सामने हाहाकार कर तांडव-नृत्य करने लगीं। उसके सामने सोने-चाँदी का ढेर लगा था। वह एकटक उसे देख रही थी। गिन्नियाँ बिच्छू के रूप में रेंग रही हैं। रुपए और नोटों के बंडल भयंकर काल-सर्प के रूप में!

वह भय से चौंककर पीछे सरक गई। उसे ऐसा जान पड़ा—मानो यह सहस्र-सहस्र विषैले जीव एकसाथ ही उस पर आक्रमण कर देना चाहते हैं। वह काँपती हुई आवाज़ में चिल्ला उठी—"प्रफुल्ल! मुझे बचा। साँप और बिच्छू एकसाथ ही मेरे प्राण ले लेंगे।"

किंतु प्रफुल्ल क़हक़हा मारकर हँस पड़ा। उसने कहा—'क्या कहती हो मा!"

मा ने वे ही शब्द पुनः दुहराए। इस बार उसके शब्दों में भयानक उत्तेजना—भीषण ज्वाला थी।

प्रफुल्ल का अट्टहास झोपड़ी में गूँज गया। उसने कहा—"मा, पूरे दो लाख रुपए हैं। इस रक़म से मैं संसार ख़रीद सकता हूँ। यह सरकार की ही दया है, जो मैं कंगाल से एकाएक पूँजीपति बन गया। अब मैं बादशाह हूँ।" उसने सब रक़म बटोरकर हैंड-बैग में भर दी।

वृद्धा ने कहा—"प्रफुल्ल! तुम बादशाह नहीं, हत्यारे हो। इस रक़म में तुम्हारा देश-द्रोह, लल्ला तथा उसके वृद्ध पिता का ताज़ा ख़ून छिपा है। तुमने मातृभूमि की हत्या की है। मैं तुम्हारी रक़म देखकर थरथराती हूँ। मूर्ख! उस उजाड़ झोपड़ी में यह रक्तमय नरक क्यों उठा लाए?"

"मौज उड़ाने के लिये!" प्रफुल्ल ने बड़ी ज़ोर से क़हक़हा लगाकर कहा—"मा! अब मैं अपने आगे दुनिया को भी कंगाल समझता हूँ। तुम जानती क्या हो!"

वृद्धा आँखें तरेरकर रह गई। किंतु प्रफुल्ल की आनंद-भरी वाक्य-धारा नहीं रुकी। वह ऐसी चटपटी बातें करने लगा, जिनमें लोभ छलछला रहा था। उसके शब्द मधुर और चमकीले थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बात ठीक है। जब मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, वह बेहोश होकर उन्माद की सृष्टि करता है। उसकी बातों में असाधारण ओज रहता है। मा ने कहा—"चुप रहो हत्यारे! तुम देश-द्रोही हो। कुल-कलंक! क्या लल्ला तुम्हारा कोई नहीं था?"

"कोई भी नहीं। संसार में कौन किसका होता है!"

"क्या तुम मनुष्य-मात्र से घृणा करते हो?"

"हर्गिज़ नहीं। मनुष्यों के न रहने से मेरी कीर्ति-कहानियाँ कौन गायगा? किंतु जो मेरे सिद्धांत को झूठा बताते हैं, वे अवश्य नरक-कीट हैं, घृणा के पात्र हैं!"

"और मातृभूमि?"

"वह क्या?—कौन-सी मातृभूमि?"

"जिसकी मिट्टी पर तुम खेल-कूदकर इतने बड़े हुए हो!"

"वह तो पृथ्वी है!—वही क्यों? समस्त भू-मंडल मेरा देश है, समस्त पृथ्वी मेरी मातृभूमि है। यहाँ मैंने जन्म लिया है—केवल सत्य-कीर्ति फैलाने के लिये। जो कुछ मेरे द्वारा हुआ है और भविष्य में होगा—सिर्फ सत्य-कीर्ति के लिये—समझीं?"

"हाँ, समझ गई। तुम्हारी पाप-कहानी ख़ूब लंबी-चौड़ी है—तुम्हारे पाप का प्रायश्चित्त करोड़ जन्मों में भी नहीं हो सकता।"

"मैं पवित्र आत्मा हूँ। मैंने संसार के सामने सत्य की पूजा की है। तुम चाहे जो कहो, किंतु मैं सरकार की ही दृष्टि में नहीं, संसार की दृष्टि में ऊँचा हूँ, महान् हूँ।"

यह जवानी का नशा है। मनुष्य यौवन-मद में भूल-कर सद्विचार और चिंता को तिलांजलि दे डालता है। युवक भी नवयुवक है। उसमें भी जवानी का नशा है। वह इस समय अंधा हो रहा है। मा के सामने अपनी घृणित जवानी का नशा उँडेल रहा है। अभागा यह नहीं जानता कि संसार की सबसे बड़ी शक्ति मातृ-शक्ति है। मातृ-हृदय जितना ही सरल, स्वाभाविक और सुंदर हो सकता है, उतना ही भयंकर भी! हाँ, उतना ही भयंकर भी—प्रलयंकर भी!!!

(३)

अँधेरी रात्रि है। संसार साएँ-साएँ कर रहा है। मानो काल-सर्प भूखा होकर फुफकारें छोड़ता है। उसकी आहें अग्निमयी हैं। कोई भी नहीं जागता। किंतु मा जाग रही है—उसकी आँखों में संद्रा का भी अभाव है।

वह चुपके से खाट से उठी। प्रफुल्ल सो रहा है। उसके मुख पर मुसकान की लहरें हिलोरें मार रही हैं। वह किसी सुंदर स्वप्न में आशाओं के सुनहरे पुल बाँध रहा है। कितना सुंदर है वह!

हाँ, बड़ा सुंदर है वह! वृद्धा ने जी-भरकर उसे देखा। कलंकित चंद्रमा अपना पाप-मुख खोलकर निद्रा की सुकुमार गोद में निस्तब्ध मुसकिरा रहा है! उसे बड़ी घृणा हुई। कितना कलंकित है यह जीवन! उसने चुपके से उसके सिरहाने से हैंडबैग उठाया और बड़ी घृणा के साथ उसे कुएँ में फेंक दिया। एक बार छप्प से आवाज़ हुई—फिर सब समाप्त हो गया!

किंतु मा शांत नहीं हुई। उसके हृदय में प्रचंड भावों के घात-प्रतिघात होने लगे। वह अपनी उत्तेजना-भरी पीड़ा लेकर प्रफुल्ल के पास चली आई।

वह सो रहा है।

उसका चेहरा गुलाब के फूल की तरह खिला है। उदास दीपक की सुनहरी ज्योति, उस मुख पर, सहस्र-गुने सौंदर्य से चमक रही है।

वह सो रहा है।

वृद्धा ने उसे देखा। जी-भरकर देखा।—वह सो रहा है। मातृ-हृदय उमड़ पड़ा—अहा, प्रफुल्ल उसका सर्वस्व है, प्यार-भरा जादू है। वह पुत्र-प्रेम में मत-वाली हो गई!

किंतु सामने की खिड़की खुली थी। उसने देखा—चारो ओर भयानक अंधकार है। ग़ज़ब का सन्नाटा! झींगुर तक नहीं बोलते। मनुष्यों की कौन कहे, छोटे-छोटे जीव तक प्राण छोड़ बैठे हैं। कहीं कोई नहीं है। मातृभूमि श्मशान हो रही है। जिसके एक कोने पर लल्ला और उसके वृद्ध पिता की भयंकरी चिता जल रही है! मा डर गई। उसने बिजली की तरह लपककर खिड़की बंद कर दी। उसकी आँखें नाचने लगीं। ज़मीन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सरकने लगी। वह सनसना उठी। उसने नज़र घुमाकर देखा—उसकी उजाड़ झोपड़ी में हत्यारा प्रफुल्ल सो रहा है। वह काँप उठी। उसका दिल बड़ी ज़ोर से धड़कने लगा। वह उत्तेजित हो उठी। उसने जल्दी से कमर से चमचमाता हुआ छुरा निकाला और प्रफुल्ल की छाती में घुसेड़ दिया!

प्रफुल्ल तनिक काँपा—तनिक छटपटाया, फिर उसके प्राण निकल गए। उसके ख़ून से सफ़ेद बिछौना लाल हो गया। मानो प्रलयंकरी शक्ति ने जी-भरकर अभागे के साथ होली खेली है!

हाँ, होली खेली है!

वह काँपी। उसने फ़ौरन् वह छुरा प्रफुल्ल की छाती से निकाल लिया!

दीपक की टिमटिमाती ज्योति में उसने उसे ऊपर उठाकर देखा, उसकी रक्त-पिपासा अभी नहीं मिटी! वह कृतार्थ हो गया है सही, किंतु कृतज्ञ नहीं हुआ!

मा मुसकिराई। उसने मन-ही-मन कहा—"मैं प्रफुल्ल की मा हूँ, आनंदमयी। किंतु कुल-कलंक लेकर अभागिनी हूँ। अब मैं इस संसार में कलंकमय जीवन नहीं व्यतीत करना चाहती। संसार मिट गया—प्रफुल्ल मिट गया। मैं भी अपना अस्तित्व मिटा देना चाहती हूँ। अफ़सोस! मेरे द्वारा देश का तनिक भी उपकार नहीं हो सका। कैसी अभागिनी हूँ मैं!"

उसने एक बार प्रफुल्ल की रक्त-रंजित लाश की ओर देखा, फिर अपनी ओर! मैं कलंकिनी हूँ। कायर पुत्र की मा हूँ!—उसने फ़ौरन् वह रक्त-रंजित छुरा अपनी छाती में घुसेड़ लिया। उसी समय हवा का एक प्रचंड झोंका आया। खिड़की खुल गई, और उस दरिद्र झोपड़ी का टिमटिमाता हुआ दीपक भी बुझ गया। एक-दो दिन के लिये नहीं, सदैव के लिये!

हाँ, सदैव के लिये!

दूसरे दिन दोपहर के बाद ग्राम-वासियों ने दरवाज़ा तोड़कर देखा—उजाड़ झोपड़ी लहू-लुहान हो रही है। पुत्र की रक्त-रंजित लाश पर छाती में छुरा घुसेड़े मा पड़ी है। उसकी आँखें आकाश की ओर ताक रही हैं, जिसमें क्षमा और विनय के भाव भरे हैं!

हाँ, क्षमा और विनय के भाव भरे हैं!

उस समय प्रत्येक व्यक्ति की वेदना मूक हो गई! बड़े-बूढ़ों की आँखों से टपाटप आँसू चूने लगे। किंतु नवजवान!

नवजवान मुसकिरा उठे!

वह मा थी!—हाँ, मा थी!!!

भिखारी से भगवान्

अनुवादक, श्रीबाबूनंदनसिंह। जेम्स ऐलेन की From Poverty to Power का हिंदी-अनुवाद। जेम्स ऐलेन की सभी पुस्तकों का हिंदी-साहित्य में काफ़ी आदर हुआ है। उनकी उत्तमोत्तम पुस्तकों का अभी तक हिंदी में अनुवाद छपा ही नहीं है। इसी कमी को दूर करने का हमने विचार किया है, और उनकी पुस्तकों का सुंदर संस्करण छपवाकर प्रकाशित कर रहे हैं। इसमें बुराइयों से शिक्षा, संसार अपनी ही मानसिक दशा का प्रतिबिंब है, अनिष्ट दशाओं से छुटकारापाने का उपाय, स्वास्थ्य, सफलता, स्वार्थ तथा सत्य, शक्ति और परमानंद का रहस्य, आध्यात्मिक शक्ति का उपार्जन आदि-आदि विषयों का विशद वर्णन है! स्त्री-पुरुष सभी के पढ़ने योग्य है। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनसे

[कुमारी लीलावती "सत्य" बी० ए०]

प्राणों के दीप जलाए
कब से पथ हेर रही हूँ ;
भावों के सुमन मनोहर
सब आज बिखेर रही हूँ ।
श्वासों की धूप बनाकर
जीवन नैवेद्य बनाया ;
तव चरणों को पूजा को
मैंने है साज सजाया ।
आओ, चिर-संचित मेरी
यह साध पूर्ण होने दो ;
निज पद-रज में हे प्रियतम !
अपनापन खो लेने दो ।

योग-दर्शन

[लेखक—श्रीलाला कन्नोमल एम्० ए०]

योगशास्त्र एक अद्भुत, अमूल्य, अनूठी एवं अनुपम संपत्ति है । इसका प्रचार पहले भारतवर्ष में इतना अधिक था कि इसी के बल पर वह सारे जगत् पर शासन करता था—जगत् का गुरु था । पर जब से इसके योग-बल का ह्रास हुआ, तब से वह अपने गौरव-पूर्ण उच्च पद से गिर गया । अस्तु । योगविद्या, हमारे और हमारी संतानों के लिये, नितांत आवश्यक है । इसी अभिप्राय से इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है । यह पुस्तक पातंजल योग-सूत्रों, श्रीव्यासभाष्य और वाचस्पति मिश्र की वृत्ति के अधार पर लिखी गई है । पुस्तक की भूमिका में प्रायः उन सभी बातों का समावेश किया गया है, जो योग-दर्शन से संबंध रखती हैं, और जो आधुनिक गवेषणा से मालूम हुई हैं । पुस्तक के अंत में आठ परिशिष्ट लगे हैं, जिनमें योग-सिद्धांत पूर्ण रीति से समझने के लिये पर्याप्त सामग्री है । पुस्तक सर्वांग-पूर्ण है । यदि भू-मंडल की सभ्य जातियों पर अपने गौरव और महत्त्व का सिक्का जमाकर आध्यात्मिक तथा भौतिक स्वराज प्राप्त करना है, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए । मूल्य १), सजिल्द १॥)

योगशास्त्र-संबंधी नीचे-लिखी पुस्तकें भी पढ़ने योग्य हैं । हिंदी-संसार ने इनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है ।

योग-शास्त्रांतर्गत धर्म—अनुवादक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥), १)
योगत्रयी—अनुवादक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥), १)
राजयोग—अनुवादक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; १॥), २)
हठयोग—अनुवादक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य १।=), १॥=)
कर्मयोग—अनुवादक, श्रीसंतराम बी० ए० ; मूल्य ॥), १)
जीवन-मरण-रहस्य—लेखक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ।=)
प्राणायाम—अनुवादक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥=), १।=)
योग की कुछ विभूतियाँ—अनुवादक, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए० ; मूल्य ॥), १)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह

[साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ]

(३)

यह देख मारवाड़ के सरदारों ने फिर से मार-काट शुरू कर दी। इसी समय इनायतख़ाँ का पुत्र मुहम्मदअली अपने कुटुंब को लेकर मेड़ते से देहली को रवाना हुआ। यह बड़ा ही धूर्त था। अतः इसकी सूचना पाते ही चाँदावत जुझारसिंह, सूरजमल और जोधा हरनाथ ने उसका पीछा किया। मार्ग में युद्ध होने पर मुहम्मद तो अपने कुटुंब को छोड़कर भाग खड़ा हुआ, और उसका साज़-सामान राठौरों के हाथ लगा। *

वि० सं० १७४६ (ई० सन् १६८९) में चाँपावत मुकुंददास और दुर्गादास आदि ने मिलकर जोधपुर के रक्षक काज़मबेग और अजमेर के सेनापति शफ़ीख़ाँ को तंग करना शुरू किया। * इसकी सूचना पाते ही बादशाह ने उसे उसकी शिथिलता के लिये बहुत कुछ उलाहना लिख भेजा। इस पर शफ़ीख़ाँ ने और भी दृढ़ता के साथ राठौरों का पीछा शुरू किया। †

वि० सं० १७४७ के मँगसिर (ई० सन् १६९० के नवंबर) में अजमेर के शाही सेनापति शफ़ीख़ाँ ‡ ने महाराज को धोका देकर पकड़ लेने का इरादा किया, और इसी के अनुसार उसने इन्हें अजमेर आकर मारवाड़ के शासन का बादशाही फ़रमान ले जाने की सूचना दी। महाराज भी शफ़ीख़ाँ का पत्र पाकर अपने दल-बल-सहित सिवाने से अजमेर की तरफ़ चले। यद्यपि इनके दल-बल को देख उसकी हिम्मत इनके पकड़ने की न हुई, तथापि इनके इधर चले आने से यवनों ने सिवाने पर अधिकार

---

* अजितोदय सर्ग १४, श्लो० १, १९-३७, राजरूपक पृ० १३३-१३४ और अजित-ग्रंथ छंद १५८४-१५९८। राजरूपक में इस घटना का वि० सं० १७४६ में होना लिखा है। अजितोदय से ज्ञात होता है कि शुजाअतख़ाँ ने मेड़ते का प्रबंध भी इंद्रसिंह के पुत्र मोहकमसिंह को सौंप दिया था। इसी से मुहम्मदअली वहाँ से देहली को रवाना हुआ था। (देखो सर्ग १३, श्लो० २९)।

इस मुहम्मदअली ने कोसाने के ठाकुर चाँदावत पृथ्वीसिंह को दोहा के ठाकुर चाँदावत जैतसिंह को और मेड़तिया मोहकमसिंह को धोके से मारा था। (अजितोदय सर्ग १४, श्लो० ३-१८)

* अजित-ग्रंथ में इस घटना का वि० सं० १७४७ में होना लिखा है। (देखो छंद १६०० और १६०४-१६०६)

† अजित-ग्रंथ में वि० सं० १७४७ (ई० सन् १६९०) में शुजाअतख़ाँ का गुजरात से मारवाड़ में आना और बादशाह का अपने पदाधिकारियों द्वारा मारवाड़ में महाराज के सरदारों को चौथ (आमदनी का चौथा हिस्सा) देने का हाल सुन दक्षिण से उसके नाम उलाहना लिख भेजना लिखा है। (देखो छं० १६५०-१७१४)

‡ अजित-ग्रंथ में वि० सं० १७५१ की जेठ सुदी में अजमेर के फ़ौजदार शफ़ीख़ाँ का मरना लिखा है। (देखो पृ० ३९५) उसमें यह भी लिखा है कि इसके बाद इसका काम हामिदख़ाँ को सौंपा गया। (देखो पृ० ३१०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर उसे जोधा मुजानसिंह * को सौंप दिया। जैसे ही महाराज को इस कपट का पता चला, वैसे ही वह सुमेल के पहाड़ों में चले गए। †

वि० सं० १७४८ (ई० सन् १६९१) में महाराना जयसिंहजी के ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंहजी ने पिता से राज्य छीन लेने का विचार किया। इस पर महाराना तत्काल कुंभलगढ़ चले आए, और वहाँ से उन्होंने मेड़तिये गोपीनाथ की सलाह के अनुसार महाराज अजितसिंहजी के पास आदमी भेजकर उनसे सहायता की प्रार्थना की। इस पर महाराज की तरफ़ से चाँपावत उदयसिंह और दुर्गादास उनकी मदद में भेजे गए। इन्होंने भी वहाँ पहुँच साम, दान और भय द्वारा राजकुमार को शांत कर दिया। इस प्रकार पिता-पुत्र के बीच संधि हो जाने पर रानाजी तो उदयपुर चले गए और महाराजकुमार राजसमंद-तालाब पर रहने लगे। इसके बाद दुर्गादास आदि राठौर-सरदार लौटकर मारवाड़ में चले आए। ‡

वि० सं० १७४९ (ई० सन् १६९२) में औरंगज़ेब ने शाहज़ादे मुहम्मद अकबर की कन्या * को दुर्गादास से वापस लेने की कोशिश शुरू की। परंतु इसका कुछ भी नतीजा न हुआ। उलटे राठौर-सरदारों का उपद्रव और भी बढ़ गया। इस पर शुजाअतख़ाँ ख़ुद जोधपुर आया, और उसने कुछ बड़े-बड़े सरदारों को उनकी जागीरें लौटाकर अपनी तरफ़ मिला लेने की चेष्टा की। उसी की आज्ञा से काज़िमबेग ने भी दुर्गादास पर चढ़ाई कर उसके दल को बिखेर दिया। परंतु पूरी सफलता न होने के कारण पहले के समान ही मोहकमसिंह को मेड़ते में छोड़ शुजाअतख़ाँ गुजरात को लौट गया। †

ख्यातों में लिखा है कि यद्यपि महाराज दुर्गादास से बिना पूछे ही अजमेर की तरफ़ चले गए थे, तथापि सिवाने के इस प्रकार हाथ से निकल जाने के कारण दुर्गादास को बहुत दुःख हुआ, और वह फिर उदासीन होकर घर बैठ रहा। इस पर महाराज भी वि० सं० १७५० (ई० सन् १६९३) में फिर उससे मिलने के लिये भीमरलाई पहुँचे। इसकी सूचना पाते ही दुर्गादास ने आगे आ महाराज की अभ्यर्थना की, परंतु पीछे से आने का वादा कर महाराज के साथ चलने से इनकार कर दिया। यह बात महाराज को बुरी लगी,

---

* ये पिशांगण का था। राजरूपक में सिवाना लेने का कुछ भी उल्लेख नहीं है। (हस्त-लिखित कॉपी पृ० १३२-१३३)

† अजित-ग्रंथ में इस घटना का वि० सं० १७४९ के आश्विन में होना लिखा है। (देखो पृ० ३१५ और ३१९) हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में ई० सन् १६९० में दुर्गादास द्वारा अजमेर में शफ़ीख़ाँ का हराया जाना लिखा है। उसमें यह भी लिखा है कि इस घटना की सूचना पाकर शुजाअतख़ाँ को मारवाड़ में आना पड़ा और इसी समय उसने व्यापारियों के माल के लगान का चौथा हिस्सा राठौरों को देना तय किया। (देखो भा० ५, पृ० २७८-२७९)

‡ अजितोदय सर्ग १५, श्लो० १-१७। वीर-विनोद में प्रकाशित मारवाड़ के इतिहास में इस घटना का समय वि० सं० १७४९ (ई० सन् १६९२) लिखा है।

* मआसिरे-आलमगीरी में पुत्र लिखा है। (देखो पृ० ३९५)

† बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २८९। उसी में यह भी लिखा है कि शुजाअतख़ाँ साल में ६ महीने जोधपुर में रहकर यहाँ के उपद्रव को दबाने में लगा रहता था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और वह कुछ असंतुष्ट होकर कुंडल की तरफ़ लौट गए। ❀

वि० सं० १७५० (ई० सन् १६९३) में मुसलमानों की सम्मिलित सेनाओं ने मोकलसर के बाला अखैसिंह पर चढ़ाई की। परंतु बाला राठौरों ने भी बड़ी वीरता से इनका सामना किया। इसी प्रकार और भी कई जगह शाही और महाराज की सेनाओं के बीच मुठभेड़ें हुईं। इस वर्ष भी शुजाअत को राठौरों के उपद्रव के कारण दो बार मारवाड़ में आना पड़ा। †

वि० सं० १७५१ (ई० सन् १६९४) में राठौरों ने और भी ज़ोर पकड़ा। अतः बहुत-से शाही हाकिम इनको अपने-अपने प्रदेशों की आमदनी का एक भाग देकर अपना बचाव करने लगे।

कुछ दिन बाद शुजाअतख़ाँ ने काज़िमख़ाँ को अपने पास गुजरात में बुला लिया। इस पर वह सोजत के लश्करीख़ाँ को जोधपुर का प्रबंध सौंप वहाँ चला गया। महाराज तो उस समय पीपलोद के पहाड़ों में थे, अतः चाँपावत उदयसिंह आदि ने लश्करीख़ाँ को गोड़वाड़ के युद्ध में मार भगाया। इसकी सूचना पाते ही शुजाअतख़ाँ ने काज़िम को फिर जोधपुर भेज दिया। ‡

ख्यातों में लिखा है कि इसी वर्ष महाराज ने फिर से मुकुंददास आदि को दुर्गादास के पास भेजा। ये लोग भी उसे समझाकर महाराज के पास ले आए। इसके बाद सरदारों ने फिर से इधर-उधर के यवन-शासकों को दबाकर दंड के रुपए वसूल करने शुरू किए ❀

वि० सं० १७५२ (ई० सन् १६९५) में महाराज के वीरों और मुग़ल-सेनापतियों के बीच किरमाल की घाटी के पास युद्ध हुआ। इसमें भी राठौरों ने पर्वत का सहारा पा अच्छी वीरता दिखाई। इसके बाद महाराज बीजापुर की तरफ़ चले गए। इसी बीच बादशाह ने शाहज़ादे मुहम्मद अकबर के बालकों को लौटाने के लिये शुजाअतख़ाँ के द्वारा दुर्गादास से फिर बातचीत प्रारंभ † की, और उसे मनसब देने का भी वादा किया। परंतु दुर्गादास ने महाराज को मनसब मिलने के पहले स्वयं उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

इसी वर्ष लोगों के सिखलाने से मेवाड़ के महाराजकुमार अमरसिंहजी ने फिर से पिता के साथ विरोध करने का विचार किया। ‡ यह देख महाराना जयसिंहजी ने अपने भाई गजसिंह की कन्या से महाराज का विवाह निश्चित कर इन्हें शीघ्र उदयपुर आने का लिखा। इस पर महाराज भी तत्काल अपने वीरों को लेकर वहाँ जा पहुँचे। यह

❀ यह बात राजरूपक और अजितोदय में नहीं लिखी है।

† बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २८९

‡ अजितोदय सर्ग १५, श्लो० १९-२७। इस काव्य में पीछे से महाराज का भी युद्ध-स्थल में आ जाना लिखा है। अजित-ग्रंथ में इसी वर्ष की फागुन वदी १० को काज़िमबेग का मरना और हामिदख़ाँ को उसका पद मिलना लिखा है। (देखो पृ० ४१४)

❀ अजित-ग्रंथ पृ० ४०५-४०८।

† राजरूपक में दुर्गादास का अकबर के पुत्र को अपने पास रखकर बेगम को बादशाह के पास भेज देना लिखा है। (देखो पृ० १४१)

‡ इसकी पुष्टि राजपूताने के इतिहास से भी होती है। उसके तीसरे भाग के पृ० ९०२ पर लिखा है कि "इस प्रकार वि० सं० १७४८ (ई० सन् १६९१) के अंत के आस-पास इस गृह-कलह की समाप्ति हुई। परंतु दोनो के दिल साफ़ न हुए, इत्यादि।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देख महाराजकुमार को शांत हो जाना पड़ा। ❀ इसके बाद वि० सं० १७५३ (ई० सन् १६९६) में विवाह हो जाने पर महाराज लौटकर पीपलोद के पहाड़ों में चले आए।

इन्हीं दिनों शुजाअतख़ाँ फिर जोधपुर आया और यहाँ के उपद्रव के कारण कुछ मास तक उसे यहीं रहना पड़ा। † इसी बीच उसने दुर्गादास से संधि की शर्तें तय कर लीं। अतः दुर्गादास ने पहले तो बादशाह की पोती को उसके पास भेज दिया और फिर स्वयं दक्षिण में पहुँच उसके पोते को भी उसे सौंप दिया। इसकी एवज़ में बादशाह ने भी उसे पहले तो मेड़ता और बाद में धंधुका ‡ तथा गुजरात के अन्य कई परगने जागीर में दिए। वि० सं० १७५५ (ई० सन् १६९८) में इत्तमादख़ाँ मर गया, और उसका बेटा मुहम्मदमुशीन दीवान बनाया गया। इस पर बादशाह ने उसे दुर्गादास को मेड़ता सौंप देने की आज्ञा दी, और मुम्हमदमुनीम को जोधपुर का क़िलेदार बनाया। लगातार दो वर्षों से वर्षा न होने के कारण इस वर्ष मारवाड़ में बड़ा अकाल पड़ा। वि० सं० १७५६ (ई० सन् १६९९) में दुर्गादास के कहने से बादशाह ने महाराज को कुछ परगनों के साथ ही जालोर ❀ और साँचोर का शासन † सौंप दिया। इसके बाद वि० सं० १७५७ (ई० सन् १७००) में उसने इन्हें अपने पास आने को लिखा। ‡

[राजरूपक में लिखा है कि वि० सं० १७५३ (ई० सन् १६९६) के अंत में दुर्गादास ने अकबर की बेगम और कन्या को, जो शाहज़ादे के दक्षिण जाने के समय से ही मारवाड़ में थीं, बादशाह के पास भेज दिया, और वि० सं० १७५४ (ई० सन् १६९७) में वह स्वयं शाहज़ादे के पुत्र को लेकर बादशाह के

❀ यह घटना अजितोदय (सर्ग १५, श्लो० २९-३१) और राजरूपक (पृ० १४१) से ली गई है। अजित-ग्रंथ में पिता-पुत्र में फिर झगड़ा होने का उल्लेख नहीं है। (देखो पृ० ४२१)

वीर-विनोद में प्रकाशित मारवाड़ के इतिहास में इस घटना का समय वि० सं० १७५३ (ई० सन् १६९६) दिया है।

† बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २८९

‡ दुर्गादास ने वहाँ के प्रबंध के लिये अपना प्रतिनिधि भेज दिया था। हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में ई० सन् १११२ से ही दुबारा इस विषय को बातचीत का शुरू होना लिखा है। (देखो भा० ५, पृ० ३८१)

❀ अजितोदय सर्ग १५, श्लो० ५१

† मुज़ाहिदख़ाँ जालोरी को, जो पहले वहाँ का शासक था, इनकी एवज़ में पालनपुर और डीसे में जागीर दी गई थी। हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में ई० सन् १६९८ में बादशाह द्वारा महाराज को जालोर, साँचोर और सिवाना देना लिखा है। (देखो भा० ५, पृ० २८४)

राजरूपक में महाराज का वि० सं० १७५५ की आषाढ़ सुदी ५ को जालोर पहुँचना लिखा है। उसमें यह भी लिखा है कि वि० सं० १७५४ (ई० सन् १६९८) में महाराज कुछ दिन जोधपुर जाकर रहे थे, और उस अवसर पर शाहज़ादे (अज़ीम) ने इनकी बड़ी ख़ातिर की। इसके बाद यह जालोर लौट गए। परंतु ये सब कवि-कल्पना ही प्रतीत होती है।

ख्यातों में लिखा है कि वि० सं० १७५७ के पौष (ई० सन् १७०० की जनवरी) में महाराज अजितसिंहजी ने शाही सेना को भगाकर जोधपुर पर अधिकार कर लिया था। परंतु वि० सं० १७५९ (ई० सन् १७०२) में शाहज़ादे मुहम्मद मुअज़्ज़म ने उसे वापिस छीन लिया। यह भी ठीक प्रतीत नहीं होता। अजितोदय में भी इसका उल्लेख नहीं है।

‡ बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २०९-२११

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पास दक्षिण में पहुँचा। ❀ इस समय महाराज अपने वीरों के साथ कुंडल के पहाड़ों में ठहरे हुए थे। इसके बाद अगले वर्ष जालोर पर महाराज का अधिकार हो गया। †

मआसिरे-आलमगीरी में लिखा है कि अहमदाबाद के नाज़िम शुजाअतख़ाँ के समझाने से वि० सं० १७५५ की द्वितीय ज्येष्ठ बदी ५ (ई० सन् १६९८ की २० मई) को दुर्गादास ने अकबर के पुत्र बुलंदअख़्तर को, जो उसके भागने के समय मारवाड़ में पैदा हुआ था, ले जाकर बादशाह को सौंप दिया। ❀ इस पर बादशाह ने प्रसन्न होकर दुर्गादास को जड़ाऊ ख़िलत, ३ हज़ारी ज़ात और ढाई हज़ार सवारों का मनसब दिया। †

वि० सं० १७५५ की पौष सुदी १३ (ई० सन् १६९९ की ३ जनवरी) को बादशाह ने दुर्गादास के नाम एक फ़रमान लिखा। उसमें उसे सेवस्तान की तरफ़ जाकर शाहज़ादे अकबर को ले आने की आज्ञा थी।]

वि० सं० १७५७ के द्वितीय श्रावण (ई० सन् १७०० के ऑक्टोबर) में अजितसिंहजी ने ४००० सवार लेकर शाही दरबार में उपस्थित होने की इच्छा प्रकट की। परंतु इसके साथ ही इन्होंने ख़र्च के लिये कुछ रुपए नक़द और कुछ परगने दिए जाने को भी लिखा। बादशाह ने रुपयों के देने के लिये तो अजमेर के ख़ज़ाने पर आज्ञा भेज दी, परंतु जागीर के बाबत महाराज के दरबार में उपस्थित होने पर दिए जाने का वादा किया। ‡

इसके बाद बादशाह ने महाराज को कई बार बुलवाया। पर ये उसके पास नहीं गए। §

वि० सं० १७५९ की मँगसिर बदी १४ (ई० सन् १७०२ को ७ नवंबर) को महाराज की चौहान-वंश की रानी के गर्भ से महाराजकुमार

❀ मीरातें-अहमदी में लिखा है कि हि० सन् ११०७ (वि० सं० १७५३=ई० सन् १६९६) में ईश्वरदास और शुजाअतख़ाँ की लिखा-पढ़ी से मामला तय हो जाने पर दुर्गादास ने शाहज़ादे अकबर की कन्या सफ़ीयतुन्निसाँ बेगम को बादशाह के पास भेज दिया। दुर्गादास ने एक पढ़ी-लिखी औरत को रख उक्त बेगम को क़ुरान याद करवा दिया था। बादशाह को बेगम के द्वारा यह बात ज्ञात होने पर बड़ी प्रसन्नता हुई, और उसने शुजाअतख़ाँ को लिखा कि जैसे हो, वैसे वह बड़ी इज़्ज़त के साथ दुर्गादास को दरबार में भेज दे। इसी के साथ उसने यह भी आज्ञा दी कि दुर्गादास को (जोधपुर पहुँचने पर ५०,००० और अहमदाबाद पहुँचने पर ५०,००० कुल) १,००,००० रुपए दिए जायँ, और मेड़ता उसकी जागीर में कर दिया जाय। इस पर दुर्गादास भी अकबर के पुत्र (बुलंदअख़्तर) को लेकर अगले वर्ष बादशाह के पास दक्षिण में जा पहुँचा। बादशाह की तरफ़ से उसके अमीरों ने दुर्गादास की पेशवाई में उपस्थित हो उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। (देखो भा० १, पृ० ३४९-३५०) जब दुर्गादास ने बादशाह की आज्ञानुसार शस्त्र खोलकर दरबार में जाना अंगीकार न किया, और बहुत दबाने पर तलवार पर हाथ रक्खा, तब उसे शस्त्र लेकर ही उपस्थित होने की आज्ञा दी गई। (पृ० २८६)

† राजरूपक पृ० १४३-१४६

❀ उस समय बादशाह भीमा नदी पर स्थित इसलामपुर में था। (हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ५, पृ० २८५-२८६)

† मआसिरे-आलमगीरी पृ० ३९५। हिस्ट्री ऑफ़् औरंज़ेब में जड़ाऊ ख़ंजर, सोने का पदक, मोतियों की माला और १,००,००० रुपए देना लिखा है। (देखो भा० ५, पृ० २८६)

‡ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ५, पृ० २८८

§ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ५, पृ० २८७

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अभयसिंहजी का जन्म हुआ। * उस समय महाराज जालोर में थे, और चाँपावत उदयसिंह इनका प्रधान था। †

वि० सं० १७६० (ई० सन् १७०३) में शुजाअतखाँ के ‡ मरने पर शाहज़ादा मुहम्मद आज़म गुजरात का सूबेदार हुआ। उसने काज़म के पुत्र जाफ़रकुली को जोधपुर का और दुर्गादास को पाटन का फ़ौजदार बनाया। ¶

इसके कुछ दिन बाद ही बादशाह की आज्ञा से शाहज़ादे आज़म ने दुर्गादास को अहमदाबाद के अपने दरबार में बुलाकर मार डालने का इरादा किया। परंतु उसकी जल्दबाजी से दुर्गादास को संदेह हो गया, और इसी से वह बचकर निकल गया। § यद्यपि आज़म की आज्ञा से सफ़दरखाँ बाबी ने उसका पीछा भी किया, तथापि दुर्गादास के पौत्र द्वारा मार्ग में ही रोक लिए जाने से उसे सफलता नहीं हुई। यहीं पर दुर्गादास का उक्त पौत्र मारा गया। * परंतु दुर्गादास अपने कुटुंबियों के साथ मारवाड़ में पहुँच महाराज अजितसिंहजी के दल में मिल गया। †

वि० सं० १७६२ (ई० सन् १७०५) में ज़बरदस्तखाँ अजमेर और जोधपुर का हाकिम नियत हुआ। उसी समय बादशाह ने दुर्गादास का मारवाड़ में अधिक रहना हानिकारक समझ इधर तो उसे गुजरात जाने के लिये लिख भेजा, और उधर गुजरात के नायब अब्दुलहमीद को उसकी पुरानी जागीर उसे लौटा देने की आज्ञा दी। ‡ इसी

---

* अजितोदय सर्ग १६, श्लो० १४-१५।

† अजितोदय सर्ग १५, श्लो० ५२।

‡ हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में शुजाअत का वि० सं० १७५८ की श्रावण बदी १ (ई० सन् १७०१ की ३ जुलाई) को मरना लिखा है। (देखो भा० ५, पृ० २८७)

¶ बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६१, शाहआलम में वि० सं० १७५७ (ई० सन् १७००) में शुजाअत का मरना और आज़म का गुजरात का सूबेदार होना लिखा है। उसके अनुसार वि० सं० १७६१ में जाफ़र का मारवाड़ में आना प्रकट होता है। (देखो पृ० १६०)

§ शाहज़ादे की आज्ञा से दुर्गादास पाटन से होकर अहमदाबाद के पास करिज़ में ठहरा था। उस दिन दादशी का दिन होने से वह एकादशी के व्रत का पारण कर दरबार में उपस्थित होना चाहता था। परंतु उधर शाहज़ादे ने शिकार को जाने के बहाने पहले से ही सेना और मनसबदारों को तैयार कर यथास्थान भेज दिया था। दुर्गादास के मारने का काम सफ़दरखाँ बाबी को सौंपा गया था। परंतु दुर्गादास के आने में देर होती देख शाहज़ादे ने उसको बुलाने के लिये बार-बार हलकारे भेजने शुरू किए। इससे उसको संदेह हो गया, और वह पारण किए बिना ही अपने कैंप को जलाकर मारवाड़ की तरफ़ चल दिया। (हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ५, पृ० २८७-२८८)

* यह युद्ध पाटन के मार्ग में हुआ था। इसमें सफ़दर का पुत्र और मुहम्मद अशरफ़ गुरनी जख़्मी हुए।

इतने में दुर्गादास ६० मील पर के ऊंझा-उनौवा में पहुँच गया, और वहाँ से पाटन पहुँच अपने कुटुंब के साथ थिराद चला आया। यहाँ पर वि० सं० १७१६ (ई० सन् १७०२ में महाराज के साथ होकर इसने फिर मुग़ल-सैनिकों पर आक्रमण शुरू कर दिए। परंतु इनमें विशेष सफलता नहीं हुई। (हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ५, पृ० २८८-२८६)

उक्त इतिहास में इसी वर्ष महाराज के और दुर्गादास के बीच मनोमालिन्य होना भी लिखा है। (देखो भा० ५, पृ० २८६-२१०)

† बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६१। २६२

‡ बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६३।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष गुजरात के शासक शाहज़ादे मुहम्मद बेदार-बख्त * ने फिर से महाराजा अजितसिंहजी के उपद्रवों को दबाने का प्रयत्न प्रारंभ किया। परंतु उस समय गुजरात में मरहठों के कारण बड़ी गड़बड़ मची हुई थी। अतः दुर्गादास † की सलाह से महाराज ने थिराद पर चढ़ाई कर दी। परंतु अंत में यवन-वाहिनी के वहाँ पहुँच जाने से इनको जालोर लौट आना पड़ा।

इसी समय राव इंद्रसिंह के पुत्र मोहकमसिंह ने बगड़ी ठाकुर दुर्जनसिंह के द्वारा, महाराज के मंत्री उदयसिंह को अपनी तरफ़ मिला लिया, और वि० सं० १७६२ के माघ (ई० सन् १७०६ की जनवरी) में उसने यवन-वाहिनी को लेकर चुपचाप जालोर पर चढ़ाई कर दी। जैसे ही चाँपावत तेजसिंह द्वारा इसकी सूचना महाराज को मिली, वैसे ही वह भी युद्ध के लिये तैयार हो गए। परंतु वहाँ का रंग-ढंग देख तेजसिंह ने कुछ समय के लिये महाराज के इस विचार को रोक दिया। इस पर महाराज तो अपने कुटुंब के साथ क़िले से निकलकर (५ कोस पर) अगवारी-नामक गाँव में चले गए, और जालोर पर मोहकमसिंह का अधिकार हो गया। इसके बाद इधर तो चाँदारूण का ठाकुर मेड़तिया कुशलसिंह और बलूँदे का चाँपावत विजयसिंह इस चढ़ाई की सूचना पाते ही अपने-अपने स्थानों से तत्काल रवाना हो महाराज के पास आ पहुँचे, और उधर वीर जगरामसिंह और भाद्राजण का ठाकुर जोधा बिहारीसिंह भी अपनी-अपनी सेनाओं के साथ वहाँ आ गए। बिहारीसिंह की सेना में राजपूतों के साथ ही बहुत-से भील भी थे।

इस प्रकार बल संग्रह हो जाने पर महाराज ने जालोर पर हमला कर दिया। ‡ यह देख मोहकम-

---

* यह वि० सं० १७६२ (ई० सन् १७०५) में गुजरात का सूबेदार नियत किया गया था।

हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में लिखा है कि इसी वर्ष शाहज़ादे आज़म के द्वारा दुर्गादास ने बादशाह से फिर मेल कर लिया। इसी से वह अपने पुराने मनसब और पाटन की फ़ौजदारी के पद पर नियत किया गया। (देखो भा० ५, पृ० २६१)

† बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६४-२६५, उसमें यह भी लिखा है कि अंत में अजितसिंह ने कुँवर मोहकमसिंह को हराकर जोधपुर पर चढ़ाई की, और उक्त नगर को क़ाज़मबेग के पुत्र ज़ाफ़रक़ुली से छीन लिया। इसी बीच दुर्गादास जाकर सूरत के दक्षिण में रहनेवाले कोलियों के साथ छिप गया था। इससे मौक़ा पाकर उसने नायब होकर पाटन को जाते हुए क़ाज़म के पुत्र शाहक़ुली को, मार्ग में ही मार डाला, और इसके बाद चनियार में बोरमगाँव के हाकिम मासुमक़ुली की सेना का भी नाश कर दिया। मासुमक़ुली स्वयं बड़ी कठिनता से बचकर भाग सका। इस पर सफ़दरख़ाँ बाबी ने पाटन की हुकूमत पाने की आशा से दुर्गादास को मारने या पकड़ लेने का ज़िम्मा लिया। परंतु इसके बाद दुर्गादास का कुछ पता नहीं चलता। अतः संभव है, सफ़दर अपने कार्य में सफल हो गया हो। (देखो भा० १, खंड १, पृ० २६५) परंतु दुर्गादास वि० सं० १७७४ (ई० सन् १७१७) तक जीवित था। इससे उपर्युक्त गज़ेटियर के लेखक का यह अनुमान ठीक नहीं प्रतीत होता।

हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में लिखा है कि ई० सन् १७०४ की मई में औरंगज़ेब ने दुर्गादास के भाई खेमकरण और भतीजे देवकरण और दलकरण को अपनी नौकरी से हटा दिया। साथ ही उसने दुर्गादास को अहमदाबाद से दरबार में पकड़ लाने का भी हुक्म दिया। परंतु अगले ही महीने यह हुक्म रद्द कर दिया गया। (हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ५, पृ० २६१ फ़ुटनोट)

‡ राजरूपक में इस युद्ध का माघ सुदी १३ को होना लिखा है। (देखो पृ० १६६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिंह और उदयसिंह क़िला छोड़कर समदड़ी की तरफ़ चले गए। जब महाराज ने वहाँ भी उनका पीछा किया, तब वे अपना साज-सामान छोड़ दुनाड़े * होते हुए मेड़ते की तरफ़ भाग गए। परंतु इस घटना की सूचना पाते ही जोधपुर के हाकिम जाफ़रख़ाँ ने मोहकमसिंह से मेड़ते की हुकूमत छीन ली। † अतः लाचार होकर वह नागौर चला गया। ‡

वि० सं० १७६३ की भादों बदी ७ (ई० सन् १७०६ की १६ अगस्त) को महाराज के द्वितीय पुत्र बख़्तसिंहजी का जन्म हुआ। ¶ इसके बाद महाराज ने रोहीचे पर चढ़ाई कर वहाँ के चौहानों को हराया। §

वि० सं० १७६३ की फागुन बदी १४ (ई० सन् १७०७ की २० फ़रवरी ‖) को दक्षिण में अहमद नगर के पास बादशाह औरंगज़ेब का देहांत हो गया। इसकी सूचना पाते ही महाराज ने अपनी सेना को एकत्रित कर जोधपुर पर चढ़ाई कर दी। वहाँ के क़िलेदार जाफ़रक़ुली ने भी पहले तो इनका सामना किया, परंतु अंत में वह रठौर-वाहिनी के वेग को रोकने में असमर्थ हो क़िला छोड़कर भाग गया। † इस पर वि० सं० १७६३ की चैत्र वदी ५ (ई० सन् १७०७ की १२ मार्च) को, २८ वर्ष की अवस्था में, महाराज ने अपनी राजधानी जोधपुर-नगर में प्रवेश किया। ‡ इसके दूसरे दिन ही (माधोदासोत) मेड़तिये कुशलसिंह ने शाही सैनिकों से मेड़ता भी छीन लिया। इसी प्रकार कुछ ही दिनों में मारवाड़ के अन्य प्रदेशों पर भी महाराज का अधिकार हो गया। §

इस पर मुसलमानों और बगड़ीवालों ने मिलकर एक बनावटी दलथंभन को सोजत का मालिक बना दिया। इसकी सूचना पाते ही महाराज भी

---

* यहाँ पर दोनो सेनाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ था।

† हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में (ई० सन् १७०४ में) औरंगज़ेब का महाराज को मेड़ते का अधिकार देना लिखा है। परंतु उसमें यह भी लिखा है कि महाराज ने वहाँ का प्रबंध कुशलसिंह को सौंप दिया। इससे (नागौर के स्वामी इंद्रसिंह का पुत्र) मोहकमसिंह, जो अजितसिंहजी की बाल्यावस्था में इनकी तरफ़ से बादशाह से बराबर लड़ता रहा था, नाराज़ होकर (ई० सन् १७०५) में बादशाह की तरफ़ हो गया। (देखो भा० ५, पृ० २६०-२६१) परंतु इंद्रसिंह का पुत्र मोहकम प्रारंभ से ही महाराज के विरुद्ध था। शाही मनसब छोड़कर महाराज की तरफ़ से यवनों से लड़नेवाला मेड़तिया मोहकमसिंह उससे भिन्न था।

‡ अजितोदय सर्ग १६, श्लो० २०-४२। राजरूपक में अजितसिंहजी के जोधपुर पर अधिकार कर लेने पर मोहकम का मेड़ता छोड़ नागौर जाना लिखा है। (देखो पृ० १६८)

¶ अजितोदय सर्ग १७, श्लो० २-३।

§ अजितोदय सर्ग १७, श्लो० ४-६।

‖ क्रानो लॉजी ऑफ़् माडर्न इंडिया में उस दिन (हि० सन् १११८ की २८ ज़ीक़ाद को) ३ मार्च का होना लिखा है। यह ठीक प्रतीत नहीं होता। (देखो पृ० १४६)

कहीं-कहीं फागुन बदी (३० ता० २१ फ़रवरी) भी लिखी मिलती है।

† बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६५। अजितोदय सर्ग १७ श्लो० ४-७।

‡ अजितोदय सर्ग १७, श्लो० ११। राजरूपक में भी महाराज के जोधपुर-प्रवेश की यही तिथि लिखी है। परंतु उसमें क़िले पर जाने की तिथि चैत्र बदी १३ दी है। (देखो पृ० १७०)

§ अजितोदय सर्ग १७, श्लो० १२। क़िले का प्रत्येक स्थान गंगाजल और तुलसी-दल से पवित्र किया गया था। (हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब भा० ५, पृ० २६१)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सेना-सहित वहाँ जा पहुँचे। छः दिन के भीषण युद्ध के बाद शत्रु तो हारकर भाग गया, * और सोजत पर महाराज का अधिकार हो गया। इसके बाद कुछ दिनों में वहाँ का प्रबंध ठीककर यह फिर जोधपुर लौट आए। †

महाराज अजितसिंहजी ने औरंज़ेब के कारण २८ वर्षों तक बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें उठाई थीं। यदि मारवाड़ के सरदार उस समय देश-काल के अनुसार बुद्धिमानी, दृढ़ता और वीरता से अपना धर्म न निभाते, तो इनके प्राणों तक का बचना कठिन था। इसके अलावा इन २८ वर्षों में धर्मांध यवनों ने तमाम मारवाड़ के—ख़ासकर जोधपुर के—मंदिरों को नष्ट कर उनके स्थानों पर मसजिदें बनवा दी थीं। इसी से चारो तरफ़ ब्राह्मणों के घंटा और शंखनाद की एवज़ में मुल्लाओं की बाँग सुनाई देती थी। हिंदुओं का धन, धर्म, इज्ज़त और प्राण तक संकट में पड़ गए थे। परंतु महाराज ने राज्य पर अधिकार करते ही इन सब बातों को उलट दिया। चारो तरफ़ मसजिदों के स्थान पर मंदिर दिखाई देने लगे। ‡ बाँग की आवाज़ों का स्थान फिर से घंटा और शंखनाद ने ले लिया। बहुत-से यवन तो मारे गए या इधर-उधर भाग गए। परंतु जो बच रहे, उन्होंने दाढ़ी मुँडवाकर अपने वेश को ही बदल लिया। इन कार्यों से निपटकर महाराज ने अपने पक्षवालों को उनकी सेवाओं के अनुसार ही जागीरें आदि देकर संतुष्ट किया, और विपक्षियों को यथासाध्य दंड देने का भी प्रबंध कर दिया।

जब इन बातों की सूचना औरंगज़ेब के उत्तराधिकारी (मुहम्मद मुअज़्ज़म) बहादुरशाह को मिली, तब वि० सं० १७६४ की कार्तिक सुदी ८ (ई० सन् १७०७ की २३ ऑक्टोबर) को वह महाराज से बदला लेने के लिये अजमेर की तरफ़ रवाना हुआ। † इस यात्रा में अंबेर-महाराज सवाई जयसिंहजी भी बादशाह के साथ थे। ‡

उसके आगमन का समाचार पा महाराज भी क़िले का साज-सामान ठीककर युद्ध की तैयारी करने

---

* अजितोदय में वहीं पर दलथंभन का मारा जाना लिखा है। (देखो सर्ग १७, श्लो० १४-१७) परंतु अन्य इतिहासों में इस घटना का उल्लेख नहीं मिलता।

† अजितोदय सर्ग १७, श्लो० १४-१८।

‡ मुंतख़िबुल्लुबाब भा० २, पृ० ६०५-६०६।

* यह वि० सं० १७६४ की आषाढ़ बदी ४ (ई० सन् १७०७ की ८ जून) को अपने भाई शाहज़ादे आज़म को मारकर बादशाह हुआ था। मआसिरुल-उमरा में लिखा है कि मुहम्मद मुअज़्ज़म ने अपने भाई आज़मशाह पर चढ़ाई करने के समय महाराज को अपनी सहायता के लिये बुलवाया था। परंतु इन्होंने उसकी प्रार्थना पर ध्यान ही नहीं दिया। इसी से आज़म को परास्त करने के बाद उसने इन पर चढ़ाई करने का प्रबंध किया, और फ़ौजमाँ को सेना देकर आगे भेजा। इसके बाद संधि हो जाने पर महाराज को ३००० सवारों का मनसब दिया गया। (देखो पृ० ७५६)

† मुंतख़िबुल्लुबाब भा० २, पृ० ६०५-६०६।

‡ मुंतख़िबुल्लुबाब भा० २, पृ० ६०६।

लेटर मुग़ल्स में लिखा है कि मार्ग में मुक़ाबला पड़ते ही उसने फ़ौजदार मेहराबख़ाँ को जोधपुर पर अधिकार करने के लिये भेज दिया। इसके बाद जयपुर का अधिकार विजयसिंह को देकर जब वह अजमेर के क़रीब पहुँचा, तब उसने स्वयं जोधपुर पर चढ़ाई करने का इरादा प्रकट किया। इस पर महाराज के वकील मुकुंदसिंह और बख़्तसिंह उसे समझा-बुझाकर शांत करने की चेष्टा करने लगे। (देखो भा० १, पृ० ४७)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगे, और उनके अनेक सरदार भी प्राणों को बलि देकर क़िले की रक्षा करने को आ उपस्थित हुए।

बादशाह ने मार्ग से ही (पौष = दिसंबर में) शाहज़ादे अज़ीमुश्शान की सेना के साथ * कुछ अमीरों को जोधपुर की तरफ़ रवाना किया। † अतः वे लोग मारवाड़ के गाँवों को लूटते हुए पीपाड़ तक आ पहुँचे। परंतु इसी बीच बादशाह को दक्षिण में कामबख़्श के स्वाधीन हो जाने की सूचना मिली। इस पर यद्यपि ऊपर से तो वह अजमेर पहुँच जोधपुर पर चढ़ाई करने का विचार प्रकट करता रहा, तथापि मन-ही-मन उसने शीघ्र ही इधर का झगड़ा शांत कर दक्षिण की तरफ़ जाने का निश्चय कर लिया। इतने में उसे महरावखाँ और महाराज के बीच पीपाड़ में युद्ध होने की सूचना मिली। इस पर वि० सं० १७६४ को फागुन बदी ३ (ई० सन् १७०८ की २६ जनवरी) को ‡ उसने संधि करने के लिये दुर्गादास के नाम एक फ़रमान भेज दिया।

इस प्रकार जब आपस की लिखा-पढ़ी के बाद संधि की बातें तय हो गईं, तब उसने ख़ाँजहाँ, हाडा बुद्धसिंह और निज़ाबतख़ाँ आदि अमीरों को महाराज से मिलने के लिये रवाना किया, और वि० सं० १७६४ की फागुन सुदी १२ (ई० सन् १७०८ को २१ फ़रवरी) को स्वयं भी मेड़ते आ पहुँचा। इस पर महाराज भी चौथे दिन वहाँ पहुँच उससे मिले। इस अवसर पर बादशाह ने अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ उपहार में देकर इनका आदर-सत्कार किया। इसके बाद चैत्र बदी १४ और (वि० सं० १७६५ की) वैशाख सुदी १५ (१० मार्च और २३ एप्रिल) को बादशाह ने आम दरबार कर इनको 'महाराजा' की पदवी के साथ ही ३,५०० ज़ात और ३,००० सवारों का मनसब (जिसमें १,००० सवार दुअस्पा थे) दिया। *

इस प्रकार इधर के झगड़े को शांत कर जब बादशाह अजमेर का लौटा, तब महाराज भी दुर्गादास को लेकर उसके साथ हो लिए। इसके बाद बहादुरशाह ने कामबख़्श को दबाने के लिये, मेवाड़ की तरफ़ होते हुए, दक्षिण पर चढ़ाई की। इस यात्रा में भी महाराजा अजितसिंहजी, दुर्गादास और आँबेर-नरेश जयसिंहजी, ये तीनो उसके साथ थे।

यद्यपि ऊपर से तो बादशाह महाराज के साथ ख़ूब प्रेम दिखलाता था, तथापि उसने प्रबंध की देख-भाल करने के बहाने काज़मख़ाँ और

---

* मुंतख़िबुल्लुबाब भा० २, पृ० ६०६।

† यह तारीख़ असली फ़रमान से ली गई है। लेटर मुग़ल्स में उस दिन १२ फ़रवरी का होना लिखा है। (देखो भा० १, पृ० ४७-४८)

‡ अजितोदय में लिखा है कि पीपाड़ से मेहराबों का पत्र पाकर पहले तो बादशाह ने मद्दावतों को उसकी मदद पर भेजा, पर पीछे शीघ्र ही संधि कर ली। उसमें पीपाड़ के युद्ध का उल्लेख नहीं है। (देखो सर्ग १७, श्लो० ३०-३१)

* इसी समय बादशाह ने इन्हें निशान और नक़्क़ारा भी दिया था। साथ ही उसने इनके महाराजकुमार अभयसिंहजी का मनसब १,५०० ज़ात और ३०० सवारों का तथा बख़्तसिंहजी का ७०० ज़ात और २०० सवारों का कर दिया था। (मि० विलियम इरविन ने अपने लेटर मुग़ल्स-नामक इतिहास (के प्रथम भाग के ४८ वें पृष्ठ) में उपर्युक्त बातों का उल्लेख करते हुए बख़्तसिंह के स्थान पर राखीसिंह लिख दिया है।)

इसी प्रकार बादशाह की तरफ़ से महाराज के तृतीय और चतुर्थ महाराजकुमारों को भी ५०० ज़ात और १०० सवारों का मनसब दिया गया था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेहराबख़ाँ ❀ आदि अमीरों को भेजकर जोधपुर पर चुपचाप अपना अधिकार † कर लिया। इसकी सूचना मिलने पर महाराज को क्रोध तो बहुत आया; परंतु मौक़ा देख यह चुप हो रहे। इसके बाद जब शाही लश्कर नर्मदा के पार उतरने लगा, तब यह आँबेर-नरेश जयसिंहजी और दुर्गादास के साथ वापस लौट चले ‡ और मार्ग में महाराना अमरसिंहजी से मिलकर ¶ मेवाड़ से गोडवाड़ होते हुए जोधपुर चले आए।

वि० सं० १७६५ की सावन सुदी (१३ ई० सन् १७०८ की १६ जुलाई) को महाराज ने मेहराबख़ाँ को भगाकर जोधपुर के क़िले पर फिर से अधिकार कर लिया, § और इसके कुछ दिन बाद यह आँबेर-नरेश जयसिंहजी ❀ को साथलेकर अजमेर को लूटते हुए साँभर जा पहुँचे। यह देख वहाँ का हाकिम सैयद अलीअहमद युद्ध के लिये तैयार हुआ। नारनौल के सैयद भी उसकी सहायता को आ गए। कुछ दिनों तक दोनों पक्षों के बीच विकट युद्ध होने के बाद यवन तो भाग चले, और साँभर पर महाराज का अधिकार हो गया। † इसी बीच महाराज

❀ अजितोदय सर्ग १७, श्लो० ३३।

† लेटर मुग़ल्स में लिखा है कि वि० सं० १७६४ की चैत्र बदी ४ (ई० सन् १७०८ की २८ फ़रवरी) को बहादुरशाह ने क़ाज़ीख़ाँ और मुहम्मद ग़ौस मुफ़्ती को जोधपुर में फिर से नमाज़ आदि के प्रचार के लिये भेज दिया। (देखो भा० १, पृ० ४८)।

‡ अजितोदय (सर्ग १७, श्लो० ३४) में खाफ़ीख़ाँ से और बहादुरशाहनामे (के पृ० ११०) में मालवे के मंडेश्वर-नामक स्थान से इनका लौटना लिखा है। पिछले इतिहास के अनुसार यह घटना वि० सं० १७६५ की ज्येष्ठ बदी ६ (ई० सन् १७०८ की ३० एप्रिल) को हुई थी।

¶ महाराना अमरसिंहजी (द्वितीय) गाडवा-नामक गाँव तक इनका पेशवाई में आए थे।

§ अजितोदयसर्ग १७, श्लो० ३४-३५। लेटर मुग़ल्स में लिखा है कि महाराज ने ३० हज़ार सवारों से जोधपुर को घेरकर विजय किया था, और दुर्गादास राठौर के बीच में पड़ने से ही जोधपुर के फ़ौजदार मेहराबख़ाँ को निकल जाने का मौक़ा दिया था। (देखो भा० १, पृ० ६७)

❀ यह महाराज के साथ आकर जोधपुर में सूरसागर के बग़ीचे में, ठहरे थे।

† अजितोदय सर्ग १७, श्लो० ३६-५०। राजरूपक में इस घटना का कार्त्तिक सुदी १ को होना और इसके अगले मास में दोनों नरेशों का आँबेर पर अधिकार कर लेना लिखा है। ख्यातों में लिखा है कि यहाँ पर महाराज किसी बात पर दुर्गादास से कुछ अप्रसन्न हो गए। यह देख दुर्गादास ने महाराज से निवेदन किया कि नर्मदा से लौटते हुए आप कुछ दिन उदयपुर में ठहरे थे, और महाराना ने आपका अच्छी तरह से स्वागत किया था। अतः यदि आज्ञा हो, तो मैं जाकर महाराना को कुछ दिन के लिये यहाँ ले आऊँ; जिससे आप भी उनका वैसा ही सम्मान कर आपस की प्रीति को बढ़ावें। महाराज ने इस बात को अंगीकार कर लिया। अतः यह महाराना को ले आने के बहाने से उदयपुर चले गए। वि० सं० १६६६ में सफरा नदी के किनारे इनका स्वर्गवास हो गया। परंतु वास्तव में दुर्गादास का देहांत वि० सं० १७७५ के क़रीब हुआ था। अतः ख्यातों का यह लेख ठीक नहीं है।

ख्यातों में यह भी लिखा मिलता है कि साँभर में दुर्गादास ने (अपने को बादशाही मनसबदार समझ) अपना डेरा महाराज की सेना से अलग किया था, इस-से महाराज उससे नाराज़ हो गए थे। यह भी संभव है कि जोधपुर और जयपुर के नरेशों को साँभर का विभाग करते देख दुर्गादास ने भी हिस्सा माँगा हो, और यही महाराज की अप्रसन्नता का कारण हुआ हो। वि० सं० १७६५ की कार्त्तिक सुदी १५ के, साँभर से लिखे, भंडारी बिट्ठलदास के बीलाड़े के चौधरी भगवान-दास के नाम के, पत्र से ज्ञात होता है कि कार्त्तिक बदी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अजितसिंहजी और जयसिंहजी को सम्मिलित सेनाओं ने आँबेर पर भी अधिकार कर लिया था। *

१६ को महाराज की सेना साँभर पहुँची। वहाँ पर युद्ध होने पर अली अहमद हारा, और उसने एक लाख तीस हज़ार रुपए देने का वादा कर संधि कर ली। इसके बाद कार्तिक सुदी १ को नारनौल, मथुरा और आँबेर के सूबेदार ? (फ़ौजदार) ५-६ हज़ार सेना लेकर वहाँ पहुँचे। परंतु तीसरे पहर के युद्ध में वे तीनो सय तीन हज़ार सैनिकों के मारे गए। उनकी सेना के बहुत-से हाथी, घोड़े, ऊँट, सुखपाल आदि महाराज की सेना के हाथ लगे।

* लेटर मुग़ल्स में लिखा है कि बादशाह को दोनो नरेशों के आँबेर पर सम्मिलित आक्रमण करने की सूचना ई० सन् १७०८ की १६ जून को मिली थी, और इसके एक सप्ताह बाद यह भी ज्ञात हुआ कि इन दोनो नरेशों ने हिंदौन और बयाना के फ़ौजदार को भी हरा दिया है। (ये दोनो प्रांत आगरे से क्रमशः ७० और ४० मील नैर्ऋत्य-कोण पर थे।) इस पर उसने ज़फ़रख़ाँ को सेना एकत्रित कर उधर जाने की आज्ञा दी। इसके कुछ दिन बाद ही उसे अजमेर के सूबेदार मुज़ाहतख़ाँ बाराह का पत्र मिला। उसमें लिखा था कि दोनो नरेशों ने मिलकर अपने सेनापति रामचंद्र और सांवलदास की अधीनता में २,००० सवार और १५,००० पैदल आँबेर पर आक्रमण करने के लिये भेजे थे। परंतु वहाँ के सूबेदार ने उन्हें सफल न होने दिया। इस झूठी सूचना को सच्चा समझ बादशाह ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। इसी बीच बादशाह ने असद-ख़ाँ—नकीले मुतलक़ को देहली से आगरे पहुँच कर वहाँ के उपद्रव को दबाने की आज्ञा भेजी। इसी प्रकार अवध के सूबेदारख़ाँ दौराँ, इलाहाबाद के सूबेदार दिलेरख़ाँ और मुरादाबाद के फ़ौजदार मुहम्मद अमीन-ख़ाँ को भी आज्ञा दी गई कि वे अपनी आधी-आधी सेनाओं को लेकर असदख़ाँ की मदद पर जायँ। इसी प्रकार मेवात के फ़ौजदार ने भी देहली के सूबेदार को सेना बढ़ाने के लिये तीन लाख रुपए की मदद माँगी। परंतु उसने यह पत्र असदख़ाँ के पास भेज दिया। इस पर असदख़ाँ ने १,००,००० रुपए नक़द भेजकर अपनी सेना को वहाँ भेजने की आज्ञा दे दी। परंतु २१ अगस्त (आश्विन बदी १) को उपर्युक्त झूठी सूचना का भेद खुल गया, और बादशाह को ज्ञात हो गया कि राजा जयसिंहजी ने २०,००० सैनिकों के साथ नैश आक्रमण कर आँबेर के क़िले पर अधिकार कर लिया है।

अतः जयसिंहजी तो लौटकर अपनी राजधानी को चले गए, और महाराज

इसके बाद बरसात के समाप्त होते ही राजपूत-वीरों ने मेड़ते होते हुए अजमेर पर हमला किया, और वहाँ से आगे बढ़ साँभर पर चढ़ाई की। इस पर मेवात, मेड़ता और नारनौल के फ़ौजदार भी तत्काल इनके मुक़ाबले को आ पहुँचे। यद्यपि युद्ध में एक बार तो राजपूत-सेना के पैर उखड़ गए, तथापि कुछ देर बाद ही उसे हुसेन-ख़ाँ के मारे जाने की सूचना मिल गई। अतः मैदान दोनो नरेशों के ही हाथ रहा। इसके अगले वर्ष महा-राना के सेनापति सांवलदास ने पुर और माँडल के फ़ौजदार को भगाकर युद्ध में वीर-गति प्राप्त की।

मआसिरे आलमगीरी (भा० २, पृ० ५००) में लिखा है कि जब आँबेर के फ़ौजदार सैयद हुसेनख़ाँ को महाराजा-अजितसिंहजी और राजा जयसिंहजी के युद्ध से हट जाने और आँबेर पर आक्रमण करने के विचार की सूचना मिली, तब उसने वहाँ के क़िले की रक्षा का पूरा-पूरा प्रबंध किया। परंतु राजपूत-सैनिकों के पहुँचते ही उसकी नई भरती की हुई सेना घबराकर भाग गई। इस पर ख़ाँ ने बचे हुए सैनिकों के साथ क़िले से निकलकर राठौर दुर्गादास का सामना किया। यद्यपि राजपूत पूरी तौर से सफल न हो सके, तथापि ख़ाँ का डेरा लूट लिया गया, और उसका पुत्र, जो शिविर की रक्षा के लिये नियत था, मार डाला गया। दूसरे दिन ख़ाँ भी बड़ी गड़बड़ के साथ भागकर नारनौल पहुँचा। परंतु वहाँ से सैनिक इकट्ठे कर फिर एक बार लौट चला। साँभर के पास पहुँचते-पहुँचते उसका राजा जयसिंहजी की सेना से सामना हो गया। यद्यपि पहलेपहल ख़ाँ की सेना कुछ सफल होती हुई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साँभर * से नागौर की तरफ़ चले। इनके आगमन की सूचना पा मोहकमसिंह लाडणू की तरफ़ भाग गया, और राव इंद्रसिंह को क़िले का आश्रय लेना पड़ा। जब उक्त प्रांत के गाँवों को लूटते हुए महाराज मूँडवे पहुँचे, तब इंद्रसिंह की माता अपने पौत्र को लेकर इनसे मिलने आई, और उसने कह-सुनकर इन्हें लौट जाने पर राजी कर लिया। इसलिये यह लौटकर जोधपुर चले आए। *

कुछ दिन बाद महाराज ने फिर अजमेर पर चढ़ाई कर वहाँ के शाही हाकिम को तंग करना शुरू किया। यह देख उसने बहुत-सा द्रव्य देकर इनसे संधि करली। † इस पर यह भी देवलिए होते हुए जोधपुर चले आए। ‡

इसी प्रकार महाराज के पराक्रम के सामने साँभर और डीडवाने के शाही अधिकारियों को भी सिर झुकाना पड़ा था। ¶

दिखाई दी, तथापि शीघ्र ही ख़ाँ और उसके सरदार रेत के टीले के पीछे छिपे हुए २-३ हज़ार बंदूक़-धारी राजपूत-योद्धाओं के बीच घिरकर मारे गए। (देखो लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ६८-७०)

उसी में बहादुरशाहनामे के आधार पर यह भी लिखा है कि इसके बाद बादशाह ने नर्मी से काम लिया, और शाहज़ादे अज़ीमुश्शान को बीच में डालकर ६ ऑक्टोबर १७०८ (वि० सं० १७६५ की कार्त्तिक सुदी ४ को राजा जयसिंहजी और महाराजा अजितसिंहजी को मनसब दिए गए। परंतु जोधपुर और मेड़ते के क़िले बाराह के सैयद अब्दुल्लाख़ाँ के अधिकार में रक्खे गए। (लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ७१)

हदीक़तुल अक़ालीम-नामक इतिहास में लिखा है कि आँबेर और जोधपुर के राजों के मालवे से ही अपने-अपने देशों को लौट जाने पर बादशाह ने असदख़ाँ को लिखा कि शाहजहानाबाद (देहली) से अकबराबाद (आगरे) जाकर राजपूतों को तसल्ली दे। इसके बाद नर्मदा से पार उतरने पर उसे ख़बर मिली कि राना की मिलावट से कछवाहा और राठौर-नरेशों के अपने-अपने देशों पर फ़ौजें भेजने पर आँबेर के फ़ौजदार हुसेनख़ाँ तो मारे गए, जानवर की तरह शत्रुओं के मुक़ाबले में हाथ-पाँव पटककर, और मेहराबख़ाँ लड़ाई से मुँह मोड़कर जोधपुर से भाग गए हैं। इससे राजपूत और भी दृढ़ हो गए हैं, और राना के बहकाने से अधिक उपद्रव करना चाहते हैं। यह देख उसने असदख़ाँ को उन्हें दंड देने को लिखा। (देखो पृ० १२८)

* कहीं-कहीं महाराज अजितसिंहजी का भी जयसिंहजी के साथ आँबेर जाना और कुछ दिन वहाँ रहकर लौटना लिखा मिलता है।

---

* अजितोदय सर्ग १८, श्लो० १-६ तथा ६६-१०६।

† वीर-विनोद में मुद्रित, शाहपुरे के राजा भारतसिंहजी के, वि० सं० १७६५ की भादों सुदी ६ (ई० सन् १७०६ की १७ जनवरी) के पत्र से और उनके मुत्सद्दियों के वि० सं० १७६५ की चैत्र बदी ३ (ई० सन् १७०६ की १७ फ़रवरी) के पत्र से जो उदयपुर पंचोली के बिहारीदास के नाम लिखे गए थे, प्रकट होता है कि भारतसिंहजी के बादशाह के साथ दक्षिण में होने और अजितसिंहजी के अजमेरवालों से दृढ़ बंदोबस्त करने से उत्साहित होकर अजमेर-प्रांत के राठौर-सरदारों ने शाहपुरेवालों को तंग करना शुरू किया था। अतः लाचार हो, उन्होंने सहायता के लिये ये पत्र उदयपुरवालों को लिखे थे।

‡ अजितोदय सर्ग १६, श्लो० ६-१४

¶ अजितोदय सर्ग १६, श्लो० १७-१८। वीर-विनोद में प्रकाशित नवाब असदख़ाँ के हि० सन् ११२१ की ११ सफ़र (वि० सं० १७६६ की प्रथम वैशाख सुदी १२ = ई० सन् १७०६ की २१ एप्रिल) के पत्र से, जो अजमेर के सूबेदार शुजाअतख़ाँ के नाम लिखा गया था, प्रकट होता है कि असदख़ाँ की पूर्ण इच्छा थी कि मारवाड़ और मेवाड़ के नरेशों को समझा-बुझाकर अपनी तरफ़ कर लिया जाय।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर,
नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोष-प्रद होने की गैरंटी!

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं!

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गगन-फाइन आर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

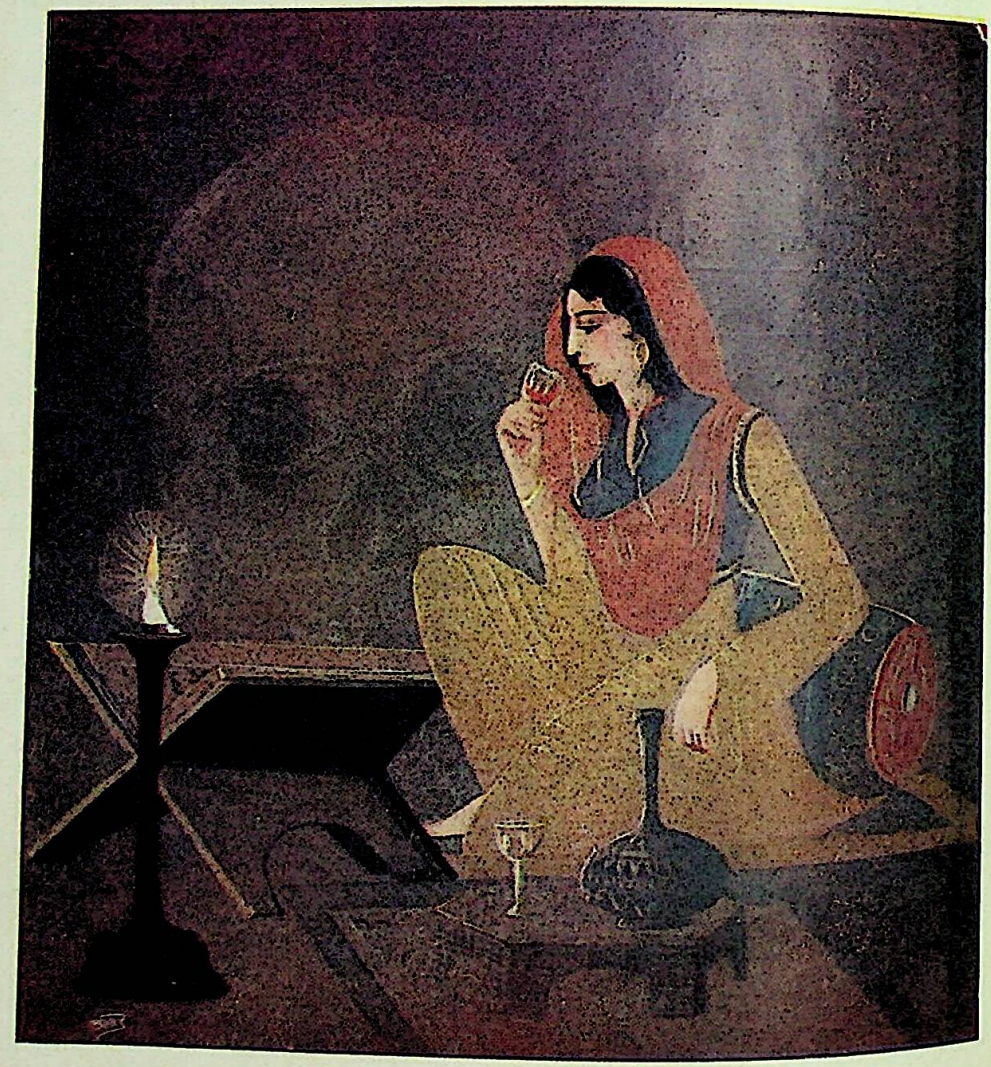

प्रेम-ज्वाला

[चित्रकार—श्री० अजितकुमार घोष]

Ganga Fine Art Press, Lucknow
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसकी सूचना पाकर बादशाह इनसे और भी नाराज हो गया। दक्षिण में अपने भाई कामबख्श * के मारे जाने से निश्चिंत होकर अजमेर को तरफ़ लौटा। जब उसके नर्मदा से इस पार आने की सूचना मिली, तब महाराज ने राव इंद्रसिंह को अपनी सेना लेकर जोधपुर में उपस्थित होने की आज्ञा भेजी। परंतु उसने अपने को शाही मनसब-दार बतलाकर महाराज की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। इस पर महाराज ने पहले उसी को दंड देने का विचार कर मँगसिर में फिर से नागौर पर चढ़ाई कर दी। यह देख इंद्रसिंह का सुख-स्वप्न टूट गया। बादशाह अब तक यहाँ से बहुत दूर था, और उससे किसी प्रकार की सहायता की आशा नहीं की जा सकती थी। अतः लाचार हो उसे फिर महाराज की ही शरण लेनी पड़ी। * महाराज ने भी उसे अपना भतीजा जान क्षमा कर दिया। (क्रमशः)

* मि० विलियम इरविन ने अपने लेटर मुग़ल्स-नामक इतिहास में कामबख़्श का ई० सन् १७०९ की जनवरी में मरना लिखा है। (देखो भा० १ पृ० ६२-६३) इसके अनुसार वि० सं० १७६५ के फागुन में यह घटना हुई थी। परंतु ओरियंटल बायोग्राफ़िकल डिक्शनरी में इस घटना का हि० सन् १११९ की ज़िलहिज (ई० सन् १७०८ की फ़रवरी या मार्च) में होना लिखा है। इसके अनुसार इसका समय क़रीब ११ मास पूर्व आता है। (देखो पृ० २०८) यह ठीक प्रतीत नहीं होता।

* महाराज के सिकदार दयालदास के नाम लिखे वि० सं० १७६६ की माघ सुदी १ के पत्र से ज्ञात होता है कि इस बार इंद्रसिंह ने दो लाख रुपए नक़द और समय पर सेना लेकर फ़ौज में उपस्थित होने का वादा किया था। इसके बाद इंद्रसिंह के उपस्थित होने पर एक लाख रुपए माफ़ कर दिए गए, और महाराज उसको साथ लेकर लौटे।

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर, संतोष-प्रद और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

वादे पर काम देने की गैरंटी !

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं !

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस

लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अलीभाइयों की दुलत्ती

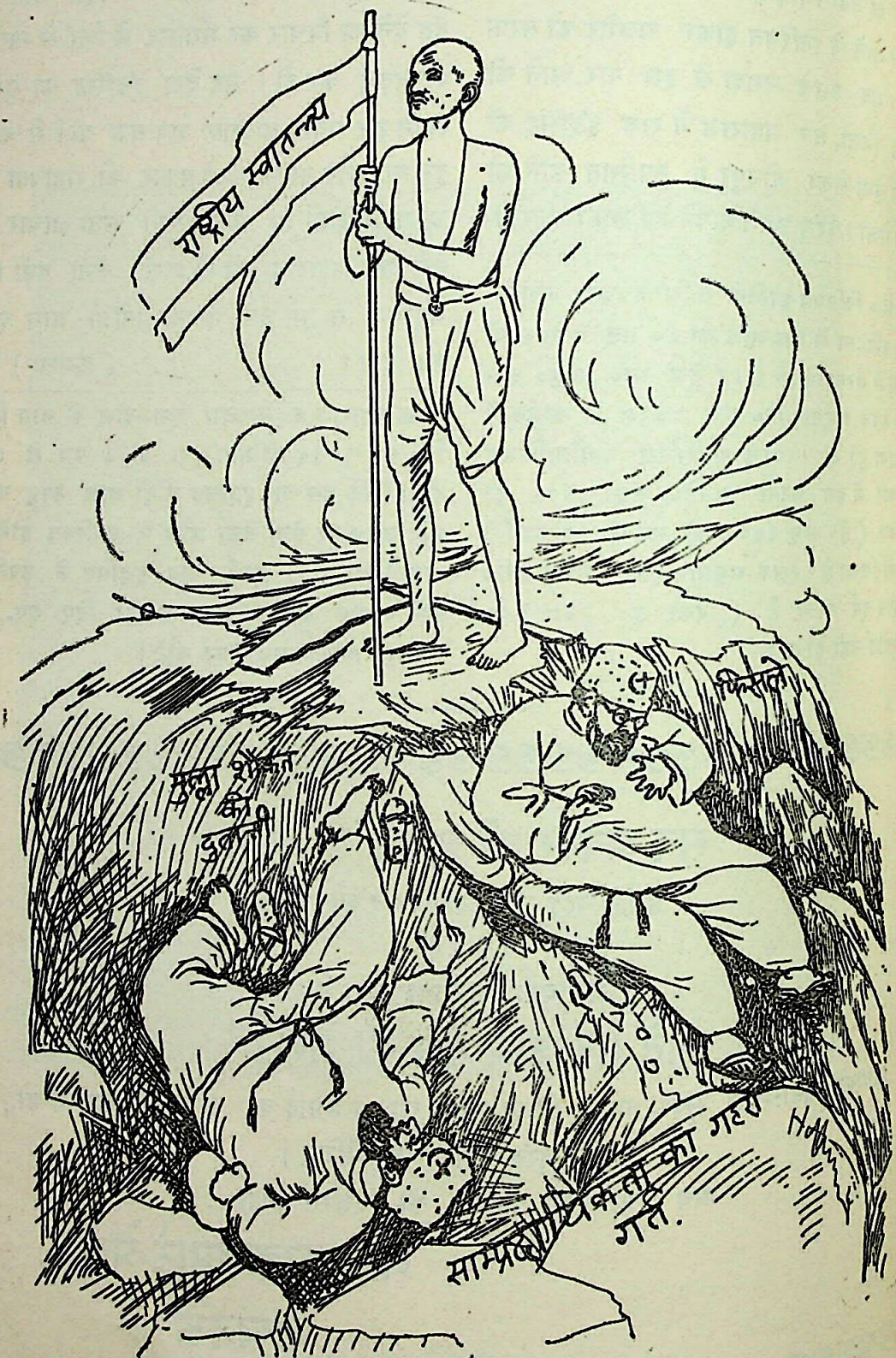

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

.....चला हंस की चाल

[श्रीयुत ऋषभचरण]

(१)

शीला सलीम नया बादशाह हुआ है। वाह ! उसके आनंद का क्या ठिकाना ! काबुल से कर्नाटक तक बाप की कमी-कमाई सल्तनत, राज्य में शांति, शासन में सुव्यवस्था, प्रजा में संतोष या यों कहो, जुता-जुताया खेत मिल गया। मेहरुन्निसाँ को भी भूल गया है, और ऐश्वर्य तथा सुखोपभोग को भी भूल गया है, खाना-पीना भी भूल ही गया समझो ; 'जहाँगीर' नाम रक्खा है। दिन-रात लाल चेहरा बनाए उत्साह से नाचा-नाचा उस नाम को सार्थक करने में लगा रहता है। खिलत, इनाम, मुआफ़ी, संधि—ओफ़् ! बेचारे जवान को कितना काम करना पड़ता है।

पर उत्साह की वह गुदगुदी, जो चौबीस घंटे उसके मन में उठती रहती है और कभी उसे थकने नहीं देती, उसे अकबर से आगे बढ़ जाने की प्रेरणा करती है। और, इस 'आगे बढ़ने' में जिस पॉलिसी की ज़रूरत है, उसे इसने पूरी तरह समझ लिया है। अकबर ने भोले राजपूतों को दोस्त बनाया था, इसने लाया मुरब्बी। चतुर बाप का चतुर बेटा राजनीति की और चालें भी जल्दी-जल्दी सीखता जा रहा है।

इतने बड़े राज्य पर, इतनी अधिक प्रजा पर, शासन करना है, इसके लिये भी बहुत कुछ सीखने और जानने की ज़रूरत है।

ख़लीफ़ा हारूँरशीद का जीवन-चरित्र आज बादशाह के हाथ में है। बड़े मनोयोग से पढ़ा जा रहा है। पढ़ना ही चाहिए। ऐसे प्रजा-प्रेमी महात्मा बादशाह का जीवन-आदर्श वास्तव में उसके लिये श्रेयस्कर सिद्ध हो सकता है। कम-से-कम हम भगवान् से यही चाहते हैं।

(२)

रात के ग्यारह बजे हम एक भिखारी को आगरे के सुनसान बाज़ार में से गुज़रता देख रहे हैं। कपड़े फटे, कमर झुकी, हाथ में लाठी, मुँह पर दाढ़ी, सिर पर पगड़ी, ऐसा ही सब कुछ वेश...।

भिखारी है तो अकेला, मगर ध्यान से देखें, तो कुछ फ़ासले पर चार सशस्त्र आदमी छुपते-छुपाते उसके पीछे चलते नज़र आएँगे।

हा ! हा ! समझे आप ? शाहंशाह जलालुद्दीन अकबर के बेटे, नए बादशाह सलीमुद्दीन जहाँगीर, भिखारी के वेश में, प्रजा की अवस्था देखने चले हैं। हज़रत ने ख़लीफ़ा हारूँरशीद की नक़ल की है।

क़िस्सा मुख़्तसिर कि भिखारी के वेश में जहाँगीर लकड़ी टेकते-टेकते एक ग़रीबों के मुहल्ले में जा पहुँचे। उस मुहल्ले की गंदगी या ख़ूबसूरती का बखान करके क्यों विस्तार बढ़ाऊँ ? बस, इसी से अनुमान कर लीजिए कि ख़लीफ़ा हारूँरशीद की पूरी नक़ल उतारने का इरादा करके चलने पर भी जहाँगीर उन फटे कपड़ों में से एक रेशमी रूमाल निकालकर, नाक से लगाकर, घबराकर ज़ोर-ज़ोर से साँस खींचने लगे, और फिर इस गली को प्रजा को राम-भरोसे छोड़कर नए शौक़ीन बादशाह पुनः बाज़ार में पहुँचने के उद्देश्य से एक सँकरी गली में घुसे।

हाँ, यहाँ बदबू वग़ैरा बहुत कम थी।

एक छोटा साफ़ घर, जो छप्पर से छाया हुआ था, और जिसमें भीतर किसी के रोने की आवाज़ आ रही थी, जहाँगीर उसके पास पहुँचकर रुक गए।

लकड़ी के साधारण किवाड़ोंवाला दरवाज़ा बंद था। उसमें लंबी-मोटी कई संधें थीं। जहाँगीर ने वहीं ठहरकर एक संध में से देखना शुरू किया।

ओफ़् ! भीतर बड़ा भयंकर दृश्य था ! एक पीतल का दीपक तेज़ जल रहा था। धरती पर एक मुर्दा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पड़ा था, जिस पर एक फटी और मैली चादर पड़ी हुई थी। पास ही दो मुसलमान-स्त्रियाँ बैठी थीं। एक थी कोई पैंतीस वर्ष की आधी बुढ़िया, मैली और सिकुड़ी हुई, दूसरी थी एक सत्रह वर्ष की कुंदन की तरह दमकती हुई, मैला कपड़ा पहने हुए, गठी-भरी सुंदरी युवती। दोनो रो रही थीं। युवती ने रोते-रोते एक बार मुँह ऊपर उठाया, और दीपक का प्रकाश उसके रोते हुए सुर्ख़ चेहरे पर पड़ा, तो सम्राट् जहाँगीर इस दरिद्रा का सौंदर्य देखकर एक बार आश्चर्य में आ गए।

मगर ख़ैर, क्योंकि परिस्थिति कुछ और थी, और बनना था ख़लीफ़ा हारूँरशीद, इसलिये जहाँगीर ने उधर से नज़र हटा ली।

अधेड़ स्त्री ने रोते-रोते कहा—"या ख़ुदा! अभी और कौन-से गुनाह का बदला देना है! सब कुछ लिया—बेटा लिया, मालिक लिया और दौलत ली, इज़्ज़त ली, आराम लिया, ख़ुशी ली—अब क्या मुर्दे को कफ़न बग़ैर सड़ाना तुझे मंज़ूर है?..."

युवती ने आँखें पोंछकर महीन, मगर बे-क़रार आवाज़ में कहा—"मा, धीरज धरो, सुबह 'वह' ज़रूर आ जायँगे....."

जहाँगीर ने 'वह' सुनकर चमककर समझा, लड़की विवाहिता है। अरे ख़ुदा!

अधेड़ स्त्री ने कहा—"बेटी, वह आता, तो अब तक ज़रूर आ लेता। ख़ुदा उसका भला करे। आह! उसने मुझे डुबो दिया! आज मुझे कोई क़ाबिल दामाद मिला होता, तो यह हालत क्यों होती? हाय! यह तेरा कड़ी-सा बाप क्यों मरता .....?" कहते-कहते उसने दाँत पीसे। "बदमाश! पाजी कुत्ता!! मुझे बर्बाद कर दिया!!!"

दीपक के तेज़ प्रकाश में जहाँगीर ने लड़की के चेहरे के बदलते हुए भाव साफ़ देखे। पहले पीलापन, फिर सुर्ख़ी, फिर स्याही और फिर न-मालूम क्यों तिलमिलाकर आँसू-भरे नेत्रों से सिर झुका लिया।

अधेड़ स्त्री ने पुनः कहा—"या ख़ुदा!...मदद कर...!" कहकर वह पुनः रोने लगी।

जहाँगीर का हृदय बाँसों तो ख़ैर नहीं, शरीर में जितनी गुंजायश है, उतना उछलने लगा। क्यों? जिस उद्देश्य से निकला था, वह पूरा हुआ। एक दुखी का दुःख वह अब दूर करेगा। ओफ़्! अब तो वह ख़लीफ़ा हारूँरशीद ज़रूर बन जायगा।

मगर ओ मेरी कहानी पढ़नेवाले पाठक! मुझसे पूछो, ख़लीफ़ा हारूँरशीद और इस अनुभव-शून्य छोकरे में क्या भेद था? ख़लीफ़ा हारूँरशीद जिस रात में किसी को दुखी न देखते थे, अत्यंत प्रसन्न होते थे, और परमात्मा को धन्यवाद देते थे; परंतु इसको अगर आज कोई दुखी न मिलता, तो वह ज़रूर उदास और उत्साह-हीन होता, और फिर इसका मन अहंकार से भर जाता। अब समझे आप भेद!

ख़ैर, मतलब यह कि जहाँगीर वहाँ से लौटकर जल्दी-जल्दी राजमहल को लौटे, और अपने साथ जानेवाले चारो हथियार-बंद आदमियों में से क़ासिम को तख़लिए में तलब किया।

क़ासिम जहाँगीर का मित्र था सहचर या ग़ुलाम! कह दूँ?...बहरहाल था मुँहलगा और ढीठ।

जहाँगीर ने क़ासिम को उस मकान का पता बताया और एक पर्चे पर कुछ लिखकर उसे दिया, और कहा—"ख़ज़ाने से लेकर इसी वक़्त दे आओ।"

आप समझ ही गए होंगे, रुक़्क़ा अशर्फ़ियों के लिये था।

क़ासिम झुक-झुककर सलामें करता जाता था कि जहाँगीर ने पुकारा—"देखो—"

"जी?"

"उसके एक लड़की है।"

"जी?"

"अ...अ...अ.....देखो, पता लगाकर आना। उन लोगों की ऐसी हालत क्यों हुई?.....इस बातें...!"

धूर्त क़ासिम ने नए बादशाह के दिल का पाप पढ़ लिया। आँखों में कर्तव्य-पालन—या चापलूसी—की गंभीरता भरकर और ओठों से भिंचे हुए दाँतों में हँसकर वह चल पड़ा।

(३)

क़ासिम ने लौटकर सब बात सुनाई। उस अभागे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्त्री की या उसके स्वामी की आर्थिक अवस्था आज से कुछ समय पूर्व बहुत अच्छी थी। सहसा बुरे दिन आए। जवान बेटा मरा, घर में चोरी हो गई, व्यापार में घाटा पड़ गया, निर्धनता आ गई। एक लड़की थी, उसका ब्याह कुपात्र से हो गया; स्त्री छोड़कर जाने किधर चल दिया! बेचारा बूढ़ा इन सब तकलीफ़ों को बर्दाश्त न कर सका, और आख़िर तड़प-तड़पकर मर गया।

क़ासिम ने कहा—"मैंने बुढ़िया को बताया, बादशाह सलामत ख़ुद रात को आकर तुम्हारी मुसीबत देख गए हैं, और यह इमदाद भेजी है। जहाँपनाह, कुछ न पूछिए, बेचारी के मुँह से बोल न निकला, उसके रोम-रोम से आपकी शुभ कामना प्रकट होने लगी।"

जहाँगीर ने अपनी स्थिति के अनुकूल गंभीर बनकर कहा—"और—?"

"और जहाँपनाह" धूर्त क़ासिम ने जान-बूझकर वह बात न कही—"मैं कुछ सरकारी आदमियों को मुर्दे की तहजीज़-तकफ़ीन (क्रिया-कर्म) के लिये वहाँ छोड़ आया हूँ।"

मगर जहाँगीर तो यह नहीं पूछते हैं। जो वे पूछना चाहते हैं, क़ासिम वह समझता है, मगर बेवक़ूफ़ बनकर जहाँगीर को ज़्यादा बे-हया बनाना चाहता है, या इस तरह जहाँगीर का ज़्यादा राज़दार बनना चाहता है।

पर जहाँगीर चाहे उसकी धूर्तता न ताड़ सके हों, बहरहाल हैं तो नए बादशाह, और इस स्थिति में यह पहला पाप उनके मन में आया है। आप ही बताइए, भला कैसे वह साफ़-साफ़ पूछें? हारकर बेचारे खिसियाने-से चुप·····।

आख़िर क़ासिम ज़्यादा देर स्वामी को लटकाए रखकर उनको संदेह-पूर्ण होने देने का साहस न कर सका। सहसा बोला—"और हाँ, देखिए, वह लड़की!—"

"·····?"

"देखिए, इन लोगों की मदद जहाँपनाह को ज़रूर करनी चाहिए।"

"मदद?—और क्या मदद?"

"देखिए, बुढ़िया तो बेचारी ख़ैर कुछ कर नहीं सकती, मगर उसकी लड़की·····!"

जहाँगीर के चेहरे पर एक रंग आता था, एक जाता था। "देखिए, जहाँपनाह," क़ासिम ने कहा—"ग़ुलाम का मतलब है, क्यों न उस लड़की को बेगम-महल की बाँदी बना दिया जाय, जिससे मा-बेटियों की सारी उम्र आराम के साथ कट सके?"

"हाँ·····मगर·····देखो·····" जहाँगीर कहते-कहते रुक गए।

"जी!—इरशाद?"

"देखो·····कुछ एतराज़·····!"

"एतराज़?" क़ासिम ने नक़ली हँसी हँसकर कहा—"हुज़ूर की क़दम-बोसी करने में वह लौंडी अपना फ़ख़्र समझेगी।"

जहाँगीर ने हिचककर, डरकर, नए पापी की तरह ज़र्द आँखें खोलकर कहा—"अच्छा·····मगर·····देखो·····कुछ ज़बरदस्ती न·····"

(४)

दूसरे दिन शाम को क़ासिम इस तरह आकर खड़ा हो गया, जैसे मुर्दा फूँककर लौटा हो।

जहाँगीर का संकेत पाकर बोला—"जहाँपनाह, कहते ज़बान रुकती है।"

"क्या?"

"ओफ़्!" क़ासिम बोला—"जहाँपनाह, लड़की बड़ी बदज़ात और नाशुक्रगुज़ार है···"

"·····?"

"मेरी बात सुनकर वह जाहिल लड़की" क़ासिम कहता रहा—"इस तरह तड़पी, गोया जलते अंगारे पर हाथ पड़ गया।...और जहाँपनाह, ग़ुलाम क्या अर्ज़ करे·····उस नाचीज़ लौंडी ने आपकी शान में निहायत·····बस क्या कहूँ·····अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए!"

जहाँगीर पीला पड़ गया। होने को बादशाह था—मगर पाप तो पहला था।

चालाक क़ासिम ने बादशाह का भाव समझा, और यह पीलापन दूर करने का प्रयत्न किया—"जहाँपनाह, लड़की बड़ी ज़बाँदराज़ वाक़े हुई है। आपकी शान में वे अल्फ़ाज़!—ओफ़्!—नाक़ाबिल बर्दाश्त...।"

"आख़िर तुमने कहा क्या था?" बादशाह ने रूँधे गले से पूछा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"जहाँपनाह ! जहाँपनाह !" क़ासिम ने जैसे कष्ट से बिलखकर कहा—"मुझसे न पूछिए ! न-मालूम मेरी ज़बान से वे नापाक अल्फ़ाज़ फिर निकल जायँ...!"

जहाँगीर बड़े शशपंज में पड़े । आख़िर किया क्या जाय ?

"हुज़ूर ! आलीजाह !!" क़ासिम ने भक्ति और श्रद्धा से गद्‌गद् होकर कहा—"उस नाचीज़ बदज़बान लौंडी को उसके क़ुसूर की सज़ा देना आपका बादशाही फ़र्ज़ है ।...ओफ़् ! हरामज़ादी ! बेहया !....."

"सज़ा ?" जहाँगीर ने किं-कर्तव्य-विमूढ़ता के संशय में पड़कर कहा—"तो आख़िर क्या सज़ा दूँ...?"

"बस, हुज़ूर ज़बान हिला दें", क़ासिम विनीत भाव से बोला—"बाक़ी सब मैं देख लूँगा ।"

"मगर आख़िर.....?"

"बस, आप इजाज़त दे दें । आज रात में लौंडी आपके क़दमों में पेश कर दी जायगी !"

"हैं.....?" जहाँगीर का चेहरा ज़र्द हो गया, कलेजा ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा ।

"जी हाँ, क़ुसूर तो उसने बहुत बड़ा किया है, मगर कम-से-कम सज़ा यही है ।"

"हैं.....?—नहीं, कभी नहीं ।"

"आला हज़रत, ग़ुलाम क्या अर्ज़ करे ! हुज़ूर की इज़्ज़त ! शान ! लड़की मुँहफट है ; न-मालूम बात कहाँ-की-कहाँ पहुँचे । ख़ैर, जैसा जहाँपनाह का हुक्म ।"

क़ासिम ने यह कहकर जैसे बात समाप्त कर चुका सिर झुका लिया ।

चाल कारगर हुई । कुछ वह पहली पाशविक भावना—कुछ यह इज़्ज़त के सवाल का नया सहारा.....जहाँगीर गिरते-गिरते सँभल गए, या यह भी कह सकते हैं कि सँभलते-सँभलते गिर गए । स्थिर दृष्टि से क़ासिम को ताककर बोले—"लेकिन इस तरह.....ज़बरदस्ती... यह तो मुनासिब नहीं.....उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़...!"

क़ासिम ने ओठ मोड़कर मुसकिराहट दिखाने की चेष्टा की, और कहा—"जहाँपनाह, जब तक वह लौंडी महल में नहीं आती, ग़ैर-मर्ज़ी या ज़बरदस्ती तो तभी तक की है ! अभी तो नादान ही है न.....?"

जहाँगीर के शरीर में जैसे किसी ने गुदगुदी कर दी। इस गुदगुदी का मज़ा लूटकर, एक क्षण ठहरकर, बोले—"अच्छा, अगर कोई देख ले.....?"

"कैसे ?"

"आख़िर ज़बरदस्ती लाओगे ; अगर किसी की नज़र पड़ जाय.....?"

क़ासिम ने छाती पर हाथ मारकर कहा—"यह इस नाचीज़ ग़ुलाम का ज़िम्मा... !" फिर क़रीब सिर धरती तक झुकाकर, नम्रता के समुद्र में डूबकर, कहा—"हज़रत, ग़ुलाम जाने की इजाज़त माँगता है !"

(५)

रोती हुई अँधेरी रात में चार नक़ाबपोश एक औरत का मुँह बाँधे, उसे उठाए, लिए जा रहे थे ।

देखा ?—ख़लीफ़ा हारूँरशीद की नक़ल.....!

—कौवा चला हंस की चाल.....

तीस दिन में हिंदी

[HINDI IN THIRTY DAYS]

लेखक, प्रो० रामस्वरूप कौशल एम्० ए०, एम्० आर० ए० एस्० । अगर आप तीस दिन ही के स्वल्प समय में अँगरेज़ी द्वारा हिंदी पढ़-लिख लेने की अच्छी योग्यता प्राप्त करना चाहते हैं, तो इस छोटी-सी पुस्तक को मँगाकर शीघ्र शुरू कर दीजिए । प्रायः सभी प्रांतों के गवर्नरों ने इसको हिंदी सीखने का सर्वोत्तम साधन बनाया है । मूल्य भी केवल ।॥), सजिल्द १।)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शकुंतला-नाटक के क़ानूनी आधार

[श्री० प्रो० परमेश्वरीप्रसाद शर्मा एम्० ए०, बी० एल्०]

महाकवि कालिदास एवं गोस्वामी तुलसीदासजी की रचनाएँ भारतीय साहित्य के ऐसे अनूठे रत्न हैं कि पाठक जितना ही इन्हें उलटें, उतनी ही भिन्न-भिन्न प्रकार की आभाएँ इनसे छिटककर मन को आलोकित करती हैं। आप इन्हें जिस दृष्टि से देखें, ये अनोखी ही जचेंगी। इस छोटे-से लेख में पाठकों के सम्मुख शकुंतला-नाटक को क़ानूनी नज़र से देखने की चंद दलीलें पेश की जाती हैं। शायद इससे हमारे प्राचीन साहित्य के सौंदर्य-विकास में कुछ सहायता हो।

राजा दुष्यंत शिकार खेलते-खेलते महर्षि कण्व के आश्रम में जाते और वहाँ उनकी पालिता पुत्री शकुंतला के अलौकिक सौंदर्य को देखते ही वह मंत्र-मुग्ध-से हो जाते हैं। कुछ काल उपरांत जब होश सँभालते हैं, तो उसे अपनाने की धुन उनके सिर पर सवार हो जाती है, पर यह बात विचारते ही कि 'यह तो ऋषि की कन्या है, अतएव जाति की ब्राह्मणी' उनके ख़याली पुलाव का सारा मज़ा किरकिरा हो जाता है, आशा पर पानी फिर जाता है, दिल में उदासी छा जाती है। किंतु थोड़ी ही देर बाद जब अपने दिल को रह-रहकर शकुंतला की ओर दौड़ता देख उसका परिचय लेते हैं, तब उनका मुरझाया हृदय खिल उठता है, वह मन-ही-मन कहते हैं—

"निश्चय ही यह क्षत्रिय के ब्याहने योग्य है, तभी तो मेरा आर्य-मन इसे पाने को चाहता है। अजी, संदेह-स्थल में भले आदमियों के मन की प्रवृत्ति ही पथ-प्रदर्शक का काम करती है।" (१ अं०, १० श्लोक) फिर भी जब सारी बातें उन्हें मालूम हो जाती हैं, जब उन्हें यह पता लग जाता है कि यह राजर्षि विश्वामित्रजी की अप्सरा मेनका के संबंध से जनी हुई पुत्री है, और इसके पालक पिता ब्रह्मर्षि कण्व भी इसे योग्य वर के हाथ सौंपना चाहते हैं, तब तो उनका हृदय नाचने लगता और मुँह में पानी भर आता है। वे इस तरह अपने को समझाने लगते हैं—

"भव हृदय ! साभिलाषं सम्प्रति संदेहनिर्णयो जातः;
आशंकसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्।"

श० १ अ०

"रे हृदय ! अब इसे पाने की अभिलाषा कर। सब संदेह अब दूर हो गया। जिसे तू जला देनेवाली आग समझता था, वह आग नहीं, बल्कि हाथ से छूने लायक़ बढ़िया रत्न !"

पहले उसे ब्राह्मण-कन्या जानकर बेचारे छूने से भी डरते थे कि कहीं यह आग मेरे ही साथ-साथ मेरे सारे वंश को जलाकर राख न कर डाले, पर अब उसे क्षत्रिय-कन्या जानकर उनके दिल में दहल बँध जाता है। अब यहाँ पर विचारणीय बात यह है कि महाराज दुष्यंत को ब्राह्मण की कन्या से विवाह करने से इतना डर क्यों था, जो उसे आग समझकर छूने से भी डरते थे। क्या उन्हें महर्षि कण्व की अप्रसन्नता का डर था ? या प्रतिलोम विवाह तब प्रचलित नहीं था ? क्या क्षत्रिय, वैश्य, यहाँ तक कि शूद्र भी, ब्राह्मण-कन्या से प्राचीन काल में विवाह नहीं करते थे ? यदि करते थे, तो इस भारत-सम्राट् चंद्रवंशीय क्षत्रिय को ब्राह्मण-कन्या के साथ विवाह करने में इतना भय क्यों ?

स्मृतियों के अध्ययन से तो साफ़-साफ़ पता चलता है कि प्राचीन भारत में अंतरजातीय विवाह ख़ूब प्रचलित था। आजकल के हिंदू-समाज की ऐसी उस समय संकीर्णता न थी। अनुलोम और प्रतिलोम विवाह विधि-विहित थे, क्षत्रिय वारेयांम ब्राह्मण की कन्या से विवाह कर सकते थे—

"ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतो वैश्याद्वैदेहकस्तथा;
शूद्राज्जातस्तु चाण्डालः सर्वधर्मबहिष्कृतः।"

(याज्ञ० १, ९३)

"ब्राह्मणी के साथ यदि क्षत्रिय विवाह करे, तो लड़का 'सूत' होवे, और यदि वैश्य, तो वैदेहिक और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यदि शूद्र, तो चांडाल, जो सब धर्मों से बहिष्कृत कर दिया जाय।"

अब रही बात महर्षि कण्वजी की अप्रसन्नता की। इससे तो राजा भयभीत नहीं दिखाई पड़ते। कारण, गांधर्व विवाह, वर-कन्या की सम्मति से होनेवाला उतना अप्रशस्त उस समय था ही नहीं, तो सम्राट् ऋषि से इतना डरने क्यों चले? देखिए, वे आप ही शकुंतला को पिता की अप्रसन्नता से नहीं डरने को कैसे समझाते हैं—भीरु! अलं गुरुजनभयेन। दृष्ट्वा ते विदितधर्मा तत्र भवान् नात्र दोषं ग्रहीष्यति कुलपतिः, अपि च—

गान्धर्वेण विवाहेन बद्धः राजर्षिकन्यकाः ;
श्रूयन्ते परिणीतास्ताः पितृभिश्चाभिनन्दितः।

हे भीरु! बड़ों का डर मत कर, महर्षि कण्व धर्मशास्त्र को जानते हैं, इसके लिये तुझ पर नाराज़ न होंगे इत्यादि। तो फिर बात क्या थी, जो दुष्यंत इतना फूँक-फूँक-कर पाँव रखते हैं। इसमें कुछ रहस्य अवश्य है। बात कुछ गूढ़ है, समस्या बड़ी ही जटिल है। दुष्यंत यौवन का आनंद ख़ूब लूट चुके हैं। उनकी एक नहीं, अनेक धर्मपत्नियाँ हैं। शकुंतला को छोड़ कम-से-कम दो का तो नाम, वसुमती और हंसपदिका का, आगे चलकर षष्ठ अंक में मिलता है। भारत का एकच्छत्र साम्राज्य! घर में एक नहीं, अनेक युवती भार्याएँ! अवस्था भी अभी एकदम ढली नहीं! फिर इन्हें कमी थी, तो किस बात की? हाँ, देखा, उन्हें अब वंश-वृद्धि की सूझी है। कवि उन्हें 'धीरोदात्त नायक' बनाना चाहते हैं। वे यह नहीं दिखलाना चाहते कि राजा दुष्यंत इंद्रिय-लोलुपता के वश में आकर भौंरे के-जैसेएक फूल से दूसरे पर कुदकते हैं। ख़ाली रस ही चखते चलते हैं। अवस्था इनकी अब कुछ प्रौढ़ हो चली है। सांसारिक आनंदों का मज़ा लूटते-लूटते (विदूषक—यार! पिंडखजूर खाते-खाते मुँह ऊब गया, अब चटनी चाहिए) अब ऊब-से गए हैं। आँखें कुछ खुली हैं। देखते हैं, जवानी तो ढल चली, पर अभी तक हस्तिनापुर की गद्दी सुशोभित करने के लिये कोई पुत्र-रत्न उन्हें प्राप्त नहीं हुआ। कवि को भी इस बात की चिंता है। वे भी येनकेनप्रकारेण महाराज दुष्यंत की अभिलाषा पूरी कर दिखाना चाहते हैं। इसलिये इस बार दुष्यंत का विवाह किसी स्वस्थ एवं प्रकृति की गोद में पली हुई कन्या से कराना चाहते हैं, जिससे उन्हें पुत्र-मुख-दर्शन की कुछ उम्मीद रहे। इसी बीच में राजा साहब का भी स्वास्थ्य ठीक कर देने के ख़याल से कवि उनको हस्तिनापुर के राजप्रासाद के आमोद-प्रमोदों से हटाकर वन में शिकार खिलाते-खिलाते, खुली हवा में अंग-संचालन करवा, एकदम सुदृढ़ बना देते हैं। अब वह मोटे धोधीले नहीं। घोड़े पर चढ़ते-चढ़ते, शिकार के पीछे दौड़ते-दौड़ते तथा जंगल के हवा-पानी को सहते-सहते उनका शरीर ऐसा सुडौल, सुगठित एवं सबल हो चला है कि सेनापति उनको देखते ही वाह! वाह!! कह उठते हैं। (अं० १,)

हमारे कवि का इन दोनो को पहले स्वस्थ और रोग-विहीन बना लेने में भी कोई उद्देश्य है। उनका विचार है कि आख़िर दुष्यंत ऋषियों की आँखों में धूल झोंककर कण्वाश्रम में महीनों डेरा डाल शकुंतला के गर्भ में अपना तेज रख नहीं सकते। शकुंतला से मुलाक़ात थोड़ी ही देर की होगी, इसलिये दोनो के स्वस्थ रहने पर थोड़ी देर के संयोग से भी गर्भाधान की संभावना हो सकती है, जिससे बुरे दिलवाले चुटकीबाज़ों को यह कहने का अवसर न मिले कि "भाई! अबतक महाराज के कई पत्नियों के रहते हुए, इतने वर्षों में भी, पुत्र-दर्शन का सौभाग्य प्राप्त न हुआ, तो अब की शकुंतला से थोड़ी ही देर की भेंट में उनसे पुत्र-उत्पादन की आशा कैसे की जा सकती है? इत्यादि। इन्हीं सब बातों को दृष्टि में रखकर कवि आरंभ ही में नायक और नायिका को प्रकृति-देवी की गोद में विहार करता हुआ स्वस्थ एवं नीरोग बना रंग-मंच पर लाते हैं, ताकि अल्प-कालीन समागम का भी फल मीठा ही हो, और किसी आलोचक की उँगली उन पर न उठे।

यह तो मार्ग-व्यतिक्रम हो गया। हाँ, तो फिर मुख्य विषय की ओर ध्यान दें। राजा दुष्यंत यदि ब्राह्मण-कन्या से विवाह करते, तो इस प्रतिलोम विवाह से जो 'सूत'-जातीय संतान होती, उसका स्थान हिंदू-समाज में, धर्म-शास्त्र के अनुसार, क्या होता? क्या वह राज्य का उत्तराधिकारी विना विघ्न-बाधाओं के हो सकता? यही बात क़ानूनी नज़र से पहले विचारणीय है। अब स्मृति देखें—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"सजातिजानन्तरजाः षट्सुता द्विजधर्मिणः ;
शूद्राणान्तु सधर्माणः सर्वेऽपध्वंसजाः स्मृताः ।"
(मनु० १०, ४१)

अर्थात् तीनो द्विजों के तीन सवर्ण पुत्र और ब्राह्मण के क्षत्रिया और वैश्या से उत्पन्न क्रमशः मूर्धावषिक्त और अंबष्ठ एवं क्षत्रिय का वैश्य-लड़की से उत्पन्न माहिष्य, ये ही छः द्विज-धर्मवाले अर्थात् द्विजों के-ऐसे संस्कार के अधिकारी हैं । शेष जितने प्रतिलोम-विवाह के पुत्र हैं, सब शूद्र-तुल्य हैं । इनका संस्कार द्विजों के-ऐसा नहीं हो सकता । देवल-स्मृति में तो यहाँ तक लिखा है कि उनका कोई वर्ण ही नहीं । वे लोग वर्ण-व्यवस्था के बाहर हैं, जाति-पतित हैं । अब सूत-जातियों के पेशे के ऊपर विचार करना चाहिए । उशनस-स्मृति में लिखा है, 'सूत' क्षत्रियत्व से हीन होते हैं, क्षत्रिय के-ऐसे लड़-भिड़ सकते हैं, पर उनका ख़ास पेशा हाथी, घोड़ा तथा रथ हाँकना है। वे वेद नहीं पढ़ सकते, ऐसी राय उनके विषय में कूर्म-पुराण की है । वायु-पुराण ने इन लोगों का विशद वर्णन किया है । उसमें लिखा है, सूत लोग पुराण पढ़ और बाँच सकते हैं, पर यह उनका जन्म-सिद्ध अधिकार नहीं । वेदाध्ययन का उन्हें कभी अधिकार नहीं । ये लोग राजा के मंत्री हो सकते हैं । हाथी, घोड़ा और रथ हाँक सकते हैं । ये ही इनके जन्म-सिद्ध अधिकार हैं । भगवान् मनु ने भी यही कहा है—

"सूतानामश्वसारथ्यमम्बष्ठानां चिकित्सितम्" (म०१०,४७)

"सूतों का काम घोड़सानी करना और रथ हाँकना, अंबष्ठों का दवा करना ।" स्मृतियों को मथ डालने पर एक और नया गुत्थ खिलता है। सबों ने असवर्ण पुत्र का ज़िक्र किया है, पर इन प्रतिलोमजों का अधिकार बपौती संपत्ति में क्या है, इस पर सब चुप हैं । मालूम होता है, शायद इनको "शूद्रधर्माणः" कहकर ही इनका काम समाप्त हो गया है । याज्ञवल्क्यजी ने भिन्न जातीय पुत्रों की हिस्सेदारी का उल्लेख किया है, पर वहाँ भी बेचारे प्रतिलोम-विवाह से उत्पन्न बच्चों की कुछ भी ख़बर नहीं ली गई है । फिर भी औरस पुत्र के जन्म लेने पर और सब पुत्रों को केवल 'खोराकी' ही मिलने का विधान किया गया है, जैसा कात्यायन ने कहा है—

"उत्पन्ने त्वौरसे पुत्रे चतुर्थांशहरा सुताः ;
सवर्णाः असवर्णास्तु ग्रासाच्छादनभाजनाः ।"

अर्थात् "यदि औरस पुत्र जन्म ले, तो और सब सवर्ण पुत्र चार आने के हक़दार हों और बाक़ी असवर्ण (भिन्नजातीय) पुत्र केवल खाने और पहनने-भर के ही अधिकारी हैं ।" फिर भी बौधायन ने कहा है कि औरस पुत्र वही कहलाता है, जो सवर्ण मा-बाप द्वारा विधि-विहित विवाह होने पर पैदा होता है । याज्ञवल्क्य की भी यही राय मालूम पड़ती है—"औरसो धर्मपत्नीजः" । फिर इस धर्मपत्नी-शब्द को मिताक्षरा साफ़ कर देती है—"सवर्णा धर्मविवाहैषा धर्मपत्नी ।" (या० २, १२८)

अब इन सब बातों पर विचार करने से पता लगता है कि यदि बेचारे दुष्यंत ब्राह्मण-कन्या से शादी करते, तो उनकी संतान, सूत होने की वजह से, घोड़ा, हाथी या रथ हाँकती, पुराण बाँचती या मंत्री का काम करती, हस्तिनापुर की गद्दी को शायद सुशोभित नहीं कर सकती । इसका प्रमाण भी है ही । सुमंत्र और संजय मंत्री और सारथि का ही काम करते थे । इसी से राजा दुष्यंत इतना आगा-पीछा करते हैं । फिर शकुंतला को क्षत्रिय-कन्या जानकर उनका हृदय एक बार ही खिल उठता है । कालक्रमेण प्रियतम और प्रेयसी का गांधर्व विवाह हो गया । थोड़ी देर तक प्रियंवदा और अनसूया ने दोनो को एकांत में छोड़ दिया । शकुंतला को गर्भाधान हुआ । दुष्यंत भेंट के थोड़ी ही देर बाद अपनी नामांकित अँगूठी शकुंतला को देकर हस्तिनापुर वापस आए । इसी बीच में कण्वजी तीर्थाटन से आकर शकुंतला को गर्भवती जान पति के निकट अपने दो शिष्यों तथा बूढ़ी गौतमी के साथ भेज देते हैं । प्रियंवदा और अनसूया, जो विवाह की गवाह थीं, वहीं रख ली गईं । साथ गए वे लोग, जिन्होंने अपनी आँखों कुछ भी न देखा था, और न किसी विश्वस्त आदमी से कुछ विवाह के बारे में सुना ही था । हाँ, विवाह की या यों कहें कि इस प्रेम-चर्चा की बात एक और आदमी को मालूम थी, और सो भी राजा साहब ही के मुँह से । वह व्यक्ति था विदूषक माढव्य । पर वह भी शकुंतला के मामले के समय कचहरी से ग़ायब था । ऐसी परिस्थिति में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शकुंतला को लेकर ऋषि-कुमार आए, और राजा से कण्व-संदेश सुनाकर शकुंतला को पत्नी-रूप में अंगीकार करने को कहा। उनकी पहली ही प्रार्थना संशयोत्पादक थी—"आप दोनो में जो गांधर्व विवाह संपादित हुआ, वह मुझे मंज़ूर है, आप कृपा कर इस गर्भवती पत्नी को धर्म-कर्म के लिये अंगीकार करें।" इसके बाद गौतमी आगे बढ़कर कुछ कहना चाहत है, पर कुछ कह नहीं सकती; क्योंकि यह प्रेम तो उन लोगों ने एकांत में किया था। बेचारी गौतमी इसके बारे में कुछ जानती थोड़े ही थी, जो कुछ कहती। राजा सुनकर हक्का-बक्का हो गए। चिल्ला उठे—"बाबा रे बाबा! यह क्या गुल खिलना चाहता है!" आगे चलकर ऋषि-कुमार के यह कहने पर कि "देखो, स्त्रियों को बहुत दिन तक पति से अलग न रहना चाहिए।", राजा साहब बोल उठे—"महाराज! क्या मैंने इससे शादी की है?" ऋषि-कुमार बलबला उठे, उन्हें खरी-खोटी सुनाने लगे। गौतमी ने शकुंतला का घूँघट हटा दिया, पर तो भी राजा साहब को, चंद्रवदन देखने पर भी, स्मरण न हुआ। उन्होंने साफ़ लफ़्ज़ों में कह दिया—"मुझे याद करने पर भी याद नहीं आता।" शार्ङ्गरव राजा साहब को 'दस्यु' 'परकन्यापहारी' इत्यादि गाली भी उन्हीं के घर में दे डालते, हैं पर इससे क्या? शारद्वत-नामक दूसरे ऋषि-कुमार ने मामले को बढ़ता देख, शार्ङ्गरव को चुप करके, शकुंतला से कहा—"बहन! हम लोग तो कह चुके, अब तू इन्हें विश्वास दिला।" शकुंतला ने, सकपकाती हुई, केवल इतना ही कहा—"गौरव! मुझ भोली-भाली को वहाँ उस तरह ठगकर अब छोड़ देना आपको शोभा नहीं देता।" राजा दुष्यंत यह सुनते ही अपने दोनो कान बंद कर लेते और कहते हैं—"अरी! तू व्यर्थ ही क्यों अपने वंश को और मुझे भी क्यों पतित करना चाहती है?" अब शकुंतला तमककर बोल उठी—"अच्छा, यदि दूसरे की स्त्री जान आप मुझे अपनाने से हिचकते हैं, तो लीजिए, मैं आपको ठोस प्रमाण देती हूँ।" यह कह वह लगी उँगली टटोलने, पर वहाँ अँगूठी हो तब न। बेचारी अवाक् हो गई। गौतमी उसका चेहरा फीका पड़ता देख तुरंत सिखाए-पढ़ाए सुग्गे की नाईं बोल उठी—"तेरी अँगूठी तो शची-तीर्थ में गिर पड़ी।"

राजा दुष्यंत यह सुनते ही हँस पड़े, और बोले—"इसी को स्त्रियों की हाज़िर-जवाबी कहते हैं।" फिर शकुंतला ने दुष्यंत को मृग-छौने को पानी पिलाते समय के हँसी-मज़ाक़ की बात याद दिलाई; पर भला जो असल प्रेम को ही भूल गया, वह उसके विषय में क्या याद रख सकता है। इस तरह प्रमाण के अभाव में शकुंतला को दुष्यंत ने त्याग दिया। अब यहाँ पर विचारणीय बात यह है कि शकुंतला का परित्याग क़ानून की नज़र में न्याय-संगत है या नहीं? जवाब मिलता है—"हाँ, है। यदि दुष्यंत इस समय न्याय नहीं करते और शकुंतला को अपने यहाँ रख लेते, तो लोग उनको 'न्यायी राजा' नहीं, बल्कि 'कामुक व्यक्ति' कहकर उनकी दिल्लगी उड़ाते एवं बेचारे भरत के कपाल में सदा के लिये वर्ण-संकरता का टीका लग जाता।"

अब मुझे यहाँ यह दिखलाना है कि शकुंतला का मुक़द्दमा एकदम प्रमाण-विहीन था। उसके पास कोई सबूत न था, जिससे वह साबित कर सकती कि राजा साहब ने उसे ब्याहा था। पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि विवाह-समय का न कोई देखनेवाला ही कचहरी में आया है, और न कोई काग़ज़ी सबूत ही पास है। याज्ञवल्क्य, मनु तथा अन्यान्य स्मृतिकार जो जो प्रमाण 'वाद' को प्रमाणित करने के लिये उचित बतलाते हैं, उनमें से एक भी यहाँ उपस्थित नहीं—

"प्रमाणं लिखितं भुक्तिः साक्षिणश्चेति कीर्तितम्।"
(या० २, २२)

अर्थात् प्रमाण तीन प्रकार के होते हैं—(१) "काग़ज़ी सबूत (लिखा हुआ), (२) दख़लकब्ज़ा या किसी वस्तु का भोगना और (३) गवाह। इस लोगों का वर्तमान शासन का 'प्रमाण-विधान' (Evidence Act) भी क़रीब-क़रीब यही चाहता है। इसके अनुसार प्रमाण दो तरह के होते हैं—मुख्य (Primary) और गौण (Secondary)। मुख्य प्रमाण में चश्मदीद गवाह (Eyewitness), और काग़ज़ी सबूत (Documentary evidence) प्रधान समझे जाते हैं। काग़ज़ी सबूत में असल काग़ज़ ही मुख्य प्रमाण कहला सकता है। उसकी नक़ल गौण प्रमाण के अंतर्गत है। फिर आगे बढ़कर मुख्य प्रमाण के अभाव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ये गौण प्रमाण भी कुछ काम का होता है। उसी गौण प्रमाण के अंतर्गत सुनी हुई बात (Hearsay) और अवस्थानुगत बात (Circumstancial evidence) आ जाती हैं। पहला ही सिद्धांत हमारे अर्वाचीन धर्म-शास्त्र (Jurisprudence) का यह है कि कोई मुक़द्दमा (case) बिना प्रमाण (proof) दिए तय नहीं सकता। इस नज़र से देखने से भी शकुंतला यदि आधुनिक न्यायालय में भी अपना मुक़द्दमा दायर करती, तो भी वह उल्टा मुँह की खाती। उसके पास तो किसी भी प्रकार के प्रमाण नहीं हैं। हम स्त्रीजों की नज़र से देखें, कौन-कौन प्रमाण की कमी रहने के कारण चीफ़ जस्टिस महाराज दुष्यंत ने शकुंतला का मुक़द्दमा ख़ारिज कर दिया। साक्षी दो तरह के कहे गए हैं—(१) आँख से देखनेवाला और (२) कानसे सुनी सुनेवाला; जैसा मनु ने कहा है—"समक्षदर्शनात्साक्ष्यं श्रवणाच्चैव सिद्ध्यति।" (८-७४)। शकुंतला के गांधर्व विवाह को अनसूया और प्रियंवदा ही ने देखा था, अतः वे ही दोनो चश्मदीद गवाह थीं। वे दोनो मुक़द्दमे में बुलाई ही न गईं। फिर भी माढव्य विदूषक से दुष्यंत ने आप ही शकुंतला के प्रति अपने प्रेम की बात कही थी। वह भी मुक़द्दमे के समय कहीं अन्यत्र रँगरेलियाँ कर रहा था, इसलिये देखते हैं कि यहाँ श्रुत-साक्षी का भी पूरा अभाव है। इस तरह दृष्ट-साक्षी और श्रुत-साक्षी के अभाव में बेचारी शकुंतला को 'लिखित' प्रमाण देने की सूझी। वह प्रमाण होता तो बड़ा ज़ोरदार, क्योंकि राजा दुष्यंत ने अँगूठी अपने मन से ही उतारकर, अपने प्रेम के चिह्न-स्वरूप, उसे दी थी। पर वह रहती तब तो, वह भी नदारद! कात्यायन ने लिखित प्रमाण के जो लक्षण दिए हैं, वे सब अँगूठी में विद्यमान थे—

"अर्थिना स्वयमानीतो यो लेख्ये सन्निवेश्यते।"

पर शकुंतला के भाग्य के फेर से वह काग़ज़ी सबूत की असल प्रति भी ग़ायब! नक़ल का तो होना ही यहाँ असंभव। अब बात रही युक्ति प्रमाण की। वह भी बहुत कमज़ोर। शकुंतला कहती—"आप विवाह-सूत्र में पद हो इस प्रकार हँसी-मज़ाक़ करते थे, क्या आपको स्मरण नहीं?" भला इससे राजा साहब को भूली बात क्यों स्मरण हो आती? और, कुछ अवस्थानुगत प्रमाण (Circumstancial Evidence) मिला ही नहीं। बस बेचारी शकुंतला अपने दावे को प्रमाणित कैसे कर सकती थी, और दुष्यंत प्रमाण के अभाव में शकुंतला को अपना ही कैसे सकते थे?

शकुंतला के साथियों में से गौतमी आगे आई, तो कुछ कह ही न सकी—यह कहकर चली गई कि "यह बात तो आप और शकुंतला ही जानें, तीसरा व्यक्ति क्या जाने?" शार्ङ्गरव सोंटे के बल से पट्टे को रद्द कराना चाहते थे। भला न्यायालय में प्रमाण का मूल्य होता है कि कड़ी बातों का? इसने तो मामले को एकदम ही ख़राब कर डाला। फल यह हुआ कि शकुंतला बेचारी पति से अस्वीकृत हो, गर्भावस्था की चिंता से रोने लगी। अब यहाँ तक तो हम दुष्यंत को न्याय-प्रिय राजा के रूप में देखते हैं, लेकिन क्या इस न्याय-प्रियता से उनका पतित्व अक्षुण्ण रहा? हाँ, उनके पति-चरित्र की रक्षा ही के ख़याल से कालिदास ने शाप के प्रभाव से दुष्यंत से प्रेम भुलवाया, नहीं तो इतने थोड़े ही दिनों में अपनी करनी को भूल जाना अस्वाभाविक प्रतीत होता। थोड़ी देर के लिये यदि यह भी मान लिया जाय कि शापोपाख्यान कवि-कृत है, इसके प्रभाव से राजा न भूले होंगे, तो भी दुष्यंत की न्याय-प्रियता या पतित्व ज्यों-का-त्यों बना रहता है। शकुंतला को देखते ही दुष्यंत का मन विचलित हो चला, पर गर्भ पर नज़र पड़ते ही उसे अपनाने में संकोच हुआ—जानकर 'जीती माछी कौन खाय?' दुष्यंत को शकुंतला का प्रेम स्मरण भले ही रहा हो, पर गर्भ पर कैसे विश्वास होता कि उन्हीं का है? अब तक बेचारे इतने वीर्यशाली नहीं थे। अब तुरंत ही थोड़ी ही देर की भेंट में, उनमें गर्भाधान करने की शक्ति आ गई, इसका विश्वास उनको कैसे होता? अगर अँगूठी वहाँ रहती या प्रियंवदा, अनसूया अथवा विदूषक तीनो में से कोई वहाँ उपस्थित रहता, तो राजा दुष्यंत को झख मारकर, अपनी शक्ति पर विश्वास न रहने पर भी, विवाह स्वीकृत करना ही पड़ता। फिर उस विवाह का फल 'गर्भ' तो आप-ही-आप उपसाध्य (Corollary) के-जैसा अंगीकृत ही रहता। किंतु महाराज दुष्यंत का तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिल भी साथ नहीं दे रहा है, तब बेचारे सब प्रकार के प्रमाण के अभाव में, दिल के भी साथ न देने पर, शकुंतला को कैसे स्वीकार करते? भगवान् मनु ने "आत्मतुष्टिरेव प्रमाणम्" अर्थात् अपना मन जब किसी से संतुष्ट हो, तो वह भी अच्छा ही काम है, ऐसा कहा है, और इसी पर विश्वास करके दुष्यंत ने भी शकुंतला को जब पहलेपहल देखा था, तब उसको क्षत्रिय के विवाहने योग्य समझा था। "सतां हि संदेहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमंतःकरणप्रवृत्तयः" उन्हीं का सिद्धांत था। पर इस बार तो उनका अंतःकरण भी 'गर्भ' को देखकर संदेह करने लगता है। आख़िर बेचारे को शकुंतला का परित्याग ही करना पड़ा।

पाठकवृंद! आप ऐसा न समझें कि मैंने खींच-तानकर इस सरस कथा की ऐसी व्याख्या की है। आप ज़रा षष्ठ अंक ग़ौर से पढ़ें, तो आपको इस बात का पता चल जायगा कि कवि-कुल-गुरु कालिदासजी का उद्देश्य इस नाटक में कुछ क़ानूनी बातों को भी घुसेड़ने का था। देखिए, अंक के आरंभ ही में फ़ौजदारी क़ानून की कुछ झलक दिखलाई पड़ती है। बेचारे मछुओं को अँगूठी चुराने के झूठे शक पर प्राण-दंड की सज़ा मिलने को थी। कैसा कठोर दंड-विधान! और, सो भी किसी काफ़ी सबूत के न रहने पर! केवल माल उसके पास बरामद हुआ। उसने चोरी की या नहीं, इसका पूरा प्रमाण नहीं; तो भी बेचारे को सूली पर झुलाने के लिये चांडाल इतने उत्सुक हो रहे हैं कि उसके लिये 'मृत्यु-माला' गूँथने लगे। इससे एक बात साफ़ झलकती है कि फ़ौजदारी क़ानून का विकास उस समय तक न हुआ था। दंड का उद्देश्य दोषी को सुधारना नहीं था, वरन् दोष को रोकना; चाहे वह दोषी के प्राण लेने से हो अथवा अंग-भंग करने से।

फिर आगे चलकर हिंदू-लॉ के दूसरे सिद्धांत का ज़िक्र किया गया है। लावारिस प्रजा की संपत्ति का अधिकारी कौन है? इसकी झलक दिखाई गई है। एक निस्संतान सौदागर धनमित्र जहाज़ के डूबने से मर गया। उसकी संपत्ति राजसात् होनेवाली है। मंत्री ने महाराज की आज्ञा माँगी है कि 'Law of escheat' के अनुसार फ़रमान जारी किया जाय, पर राजा साहब ने जाँच करने का आदेश दिया। वह सौदागर बड़ा धनी था, तब तो उसकी कई पत्नियाँ होंगी, इसलिये पहले इसका निश्चय कर लिया जाय कि उसकी भार्याओं में से कहीं कोई गर्भवती तो नहीं। यदि कोई गर्भवती हो, तब तो "गर्भः पित्र्यं रिक्थं अर्हति"—गर्भवाली संतान पैत्रिक संपत्ति की अधिकारी है। जाँच करने पर बात भी ऐसी ही निकली। वेत्रवती को मालूम था—शायद सौदागर की पत्नी के पैरवीकारों ने उसे कुछ दे-लेकर अपने पक्ष में कर लिया था—कि साकेत-नगर के सौदागर की बेटी का विवाह इसी धनमित्र से हुआ था, और उसका सीमंतोत्सव हाल ही में मनाया गया है। फिर क्या था? राजा साहब ने तुरंत आज्ञा दी कि "गर्भ को धन मिलना चाहिए।" वाह! कैसा अच्छा न्याय! कैसा दूध-का-दूध और पानी-का-पानी अलग कर दिया गया। हिंदू-क़ानून में गर्भस्थ संतान का स्थान उतना ही ऊँचा है, जितना जन्मे हुए का। हाँ, झगड़ा मचता है गर्भ को जायज़ गर्भ प्रमाणित करने में। सो भी यहाँ बड़ी आसानी से हल कर दिया गया है। वाह! इसे ही न्याय कहते हैं!!

उपर्युक्त वर्णनों को पढ़कर पाठकों के मन में यह विचार अवश्य ही जम गया होगा कि महाकवि कालिदास ने अपने भुवन-विख्यात नाटक अभिज्ञानशाकुंतल में अपने समय की मुख्य-मुख्य क़ानूनी बातों को ख़ूबी के साथ रक्खा है। शकुंतला-नाटक काव्य की दृष्टि से जैसा मनोहर है, क़ानूनी नज़र से इससे कम नहीं। हाँ, क़ानून को प्रधानता नहीं दी गई है, पर आधार संपूर्ण नाटक का है क़ानून ही।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निराशामय आशा

[कुमारी रामेश्वरी गोयल बी० ए०]

अभागे की आशा-उच्छ्वास
पिघलते ओसों के-से बिंदु ;
न कर उपहास निठुर ! उद्भ्रांत
प्यार ही तो मम जीवन-इंदु !
निराशा की विकसित मुसकान !
न कर झूठी आशा का अंत ;
कि स्मृति ही जीवन का आधार,
रुदन करता विश्राम अनंत।
निराशामय आशा की ज्योति
देखने को तेरी ही रेख
छिपा ली है मानस के बीच
वीचि में लुप्त न होना देख !

हिंदी में नवीन चमत्कार !

सचित्र रत्नाकर-ग्रंथ-माला।

सैकड़ों रंगीन चित्रों से सुसज्जित। शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत। बालक, बालिकाओं, स्कूल-पाठशालाओं में उपहार में देने के लिये सर्वश्रेष्ठ हिंदी-साहित्य में आज रत्नाकर-सीरीज़ की धूम है।

क्यों ? इसलिये कि हिंदी में ऐसा सर्वांग-सुंदर और सर्व-सुलभ सचित्र-साहित्य कहीं से भी प्रकाशित नहीं हुआ। सुंदर छपाई, बढ़िया काग़ज़, चित्रों की भरमार और सस्तेपन की परा काष्ठा है। किसी बुकसेलर के यहाँ जाकर देखिए और पसंद कीजिए। आप देखते ही मोहित हो जायँगे। सभी जगह बड़े-बड़े बुकसेलरों के यहाँ मिलती हैं। या हमसे मँगाइए।

सचित्र रत्नाकर-ग्रंथ-माला।

१—सावित्री-सत्यवान	।।)	९—सुभद्रा	।।=)	१७—महाराणाप्रताप	१)
२—नल-दमयंती	।।)	१०—संयुक्ता	।।=)	१८—शिवाजी	१।)
३—शैव्या-हरिश्चंद्र	।।)	११—भक्त ध्रुव	।।=)	१९—शंकराचार्य	१।)
४—सीता देवी	।।=)	१२—भक्त प्रह्लाद	।।=)	२०—श्रीकृष्ण	१।)
५—सती पार्वती	।।)	१३—वीर अभिमन्यु	।।=)	२१—मेवाड़-गौरव	१)
६—शकुंतला	।।=)	१४—लव-कुश	।।=)	२२—महाभारत ६०० पृ० ५० चि०	३)
७—देवी द्रौपदी	।।=)	१५—भीष्म	।।=)	२३—हिंदी-बँगला-शिक्षा	।।।)
८—शर्मिष्ठा-देवयानी	।।)	१६—पृथ्वीराज	१)	२४—हिंदी-अँगरेज़ी-शिक्षा	।।।)

मैनेजर, दी पपुलर-ट्रेडिंग कंपनी, ११५ हरीसन रोड, कलकत्ता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेस्मेरिज़्म

[श्रीयुत मूलचंद्र शुक्ल, मेस्मेरिज़्म-मास्टर]

ठकगण! गत लेख * से आपको यह विदित हो गया होगा कि मेस्मेरिज्म सीखकर मैंने कौन-कौन-से लाभ उठाए, और कौन-कौन-सी शारीरिक हानियाँ उठाईं।

अच्छा, अब मैं मृतक आत्माओं से बातचीत करने के नियम लिखूँगा या यों कहिए कि तीन पाए की टेबिल (Table) में भरी हुई शक्ति से खटकों द्वारा वार्तालाप करने के नियम दूँगा।

आपको ज्ञात हो चुका है कि इच्छा-शक्ति प्रत्येक स्थान पर अपना कार्य किया करती है। असंभव को संभव बनाना इच्छा-शक्ति ही का कार्य है। इच्छा-शक्ति का विषय बहुत पुराना है। मूर्ति-पूजा करके फल वही प्राप्त कर सकता है, जिसकी इच्छा-शक्ति दृढ़ है। हमारे पूर्वज मूर्ति-पूजक थे। वे इच्छा-शक्ति के महत्त्व को भले प्रकार समझते थे। एक भद्दी-सी कहावत है कि "गधे वैशाख में ही मोटे होते हैं।" क्यों? केवल इच्छा-शक्ति से। धोबी गधे के पैर बाँधकर मैदान में चरने के लिये छोड़ देता है। गधा चरता हुआ धीरे-धीरे दूर निकल जाता है। इस समय घास की कमी रहती है, और उसका पेट भले प्रकार नहीं भरता। परंतु जब वह पीछे की ओर मुड़कर देखता है, तो मालूम करता है कि वह कहाँ से चला था, और चरते-चरते कहाँ पहुँच गया। अब उसके हृदय में यह विचार उत्पन्न होता है कि वह बहुत चर चुका। उसे संतोष हो जाता है। इस प्रकार वह अपने पेट के भरे होने की कल्पना रता है, जिससे उसका पेट सचमुच ही भर जाता है, और वह दिन-दिन मोटा होता चला जाता है। इसके विपरीत जब वह वर्षा-ऋतु में चरने के लिये जाता है, तो थोड़ी ही दूर चरकर अपना पेट भर लेता है, और ज्यादा नहीं खाया जाता। परंतु उसके हृदय में यह विचार उत्पन्न होता है कि "मैंने अभी कुछ भी नहीं खाया।" पर वह करे क्या? पेट में स्थान हो, तो खावे। इसी कारण जब अन्य ऋतुओं में घास बड़ी-बड़ी होती है, उसकी शारीरिक दशा कभी ठीक नहीं होती।

इस दृष्टांत से मेरा यह तात्पर्य है कि आप एक मूख पशु की भाँति अपनी इच्छा-शक्ति को स्थिर रखिए। आप यदि किसी विषय की कल्पना कीजिए, तो उसे सत्य ही समझते रहिए। असत्यता का विचार अपने हृदय में एक क्षण के लिये भी न आने दीजिए। तभी आप असंभव का संभव करके दिखा सकते हैं।

महाशय! स्मरण रहे कि जब तक आप सीढ़ी के पहले डंडे पर पैर न रक्खेंगे, तब तक दूसरे या तीसरे डंडे पर पैर रखने से हानि के सिवा लाभ नहीं होगा। मेरे एक मित्र ने दूर रक्खे हुए मिट्टी के घड़े को इच्छा-शक्ति द्वारा उठाने के प्रयोग को सिद्ध किया। अभ्यास की सिद्धि हो गई, परंतु उसी प्रकार से जैसे एक छोटे दर्जे के विद्यार्थी ने

* यह लेख सुधा वर्ष ३ खंड १ संख्या ३ पूर्ण संख्या २७ में छपा था।—सुधा-संपादक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किसी ऊँचे दर्जे की किताब रट ली हो। जितनी अच्छाई के साथ वह अभ्यासी, जिसने प्रारंभ से अभ्यास किया है, इसे करके दिखा सकता है, उतनी अच्छाई के साथ वह नहीं दिखा सकता, जिसने केवल इसी अभ्यास की सिद्धि प्राप्त की है।

अब टेबिल (table) का विषय उठाता हूँ। परंतु ध्यान रहे, यह विषय उसी प्रकार का है, जैसे एक छोटे दर्जे के विद्यार्थी को उच्च कक्षा की पुस्तक का भावार्थ समझाना, परंतु इसकी सिद्धि अन्य अभ्यासों की भाँति कठिन नहीं है।

सबसे प्रथम आपको एक टेबिल (table) बनवाने की आवश्यकता होगी। तेरह या चौदह इंच व्यास को एक हलकी-सी पतली गोल लकड़ी की तख्ती लो। उसमें तीन लकड़ी के हलके पाए लगवाकर टेबिल(Table)नुमा बनवा लो। उस पर किसी प्रकार का रोग़न न लगाना चाहिए। पाए लगाते समय ध्यान रहे कि कोई लोहे की कील द्वारा न लगाए जावें। यदि कील लगाने की आवश्यकता हो, तो लकड़ी की ही लगाई जाय। इस टेबिल (Table) की उँचाई लगभग $1\frac{1}{4}$ ft सवा फुट हो।

पाँच मनुष्य ऐसे चुनो, जो पवित्र विचार-वाले तथा साधन पर विश्वास करनेवाले हों, और उन्हें इस बात का पूर्ण विश्वास हो कि हमारे प्रश्न का उत्तर इस टेबिल (Table) द्वारा ठीक-ठीक मिलेगा। इन पाँच आदमियों में से एक को अपना प्रधान मान लो, जो प्रश्न करे और शेष चुपचाप अपने कार्य पर लगे रहें।

अब उस टेबिल (Table) को लेकर अपनी प्रयोगशाला की किसी पवित्र सम भूमि पर रक्खो। सब मंडली तथा प्रधान एक-एक बिछौना बिछाकर मेज़ के चारो ओर बैठ जायँ। बैठते समय ध्यान रहे कि एक दूसरे का शरीर न स्पर्श होने पावे। यहाँ तक कि अपने कपड़े भी समेटकर बैठना चाहिए। प्रधान के लिये दक्षिण-दिशा में बैठना ठीक है।

प्रत्येक मनुष्य अपने दोनो हाथों की उँगलियों को इस प्रकार रक्खे कि हथेली मेज़ (Table) से अलग और उसके धरातल से कुछ ऊपर की ओर उठी हुई हो।

प्रधान और सब मंडली के लोग मेज़ (Table) की ओर ध्यान से देखते रहें, और ध्यान ही में मग्न रहें। किसी प्रकार की ध्वनि या शब्द की ओर अपने ध्यान को न जाने दें। यदि आपकी प्रयोगशाला में कोई घड़ी रक्खी हो, तो उसे भी हटा दो या बंद कर दो।

अब सब लोग इसी प्रतीक्षा में रहें कि आत्मा आ रही है। लगभग २५ मिनट के बाद आपको यह विदित होगा कि हमारी उँगलियों में एक प्रकार की गर्मी पैदा हो रही है, और मेज़ (Table) हिलने लगेगी। यदि २५ मिनट के साधन से पहले दिन कोई फल न निकले, तो ३० या ४० मिनट करना चाहिए। नित्यप्रति उसी समय पर तीन-चार दिन अभ्यास करने के पश्चात् आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

लकड़ी की मेज़ से बातचीत करना तो असंभव-सा प्रतीत होता है, परंतु खटकों द्वारा प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिया जा सकता है। जब यह भले प्रकार आपको विदित हो जाय कि आत्मा आ गई है, तो आपके प्रधान को उचित है कि ऐसा प्रश्न करे, जिससे इस बात का पूर्ण निश्चय हो जाय कि आत्मा आ गई है। जैसे प्रधान ने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह प्रश्न किया कि यदि आत्मा आ गई हो, तो एक पाया ऊपर को उठे। यदि ऐसा कहते ही पाया ऊपर को उठ जाय, तो समझ लेना चाहिए कि इसी प्रकार अन्य प्रश्नों का भी उत्तर प्राप्त किया जा सकता है। स्मरण रहे, प्रधान के सिवा किसी के मुख से किसी प्रकार का शब्द न निकले।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि टेबिल एक बड़ी भारी शक्ति से हिलने लगता है, और यहाँ तक भी हो जाता है कि मंडली के लोगों को उनके स्थान से खिसका देता है। ऐसा होने पर डरना न चाहिए, बरन् अपनी इच्छा-शक्ति से उसे शांत कर देना चाहिए।

जब साधन समाप्त करना हो, तो मंडली इस बात की कल्पना करे कि अब हम अपने कार्य को समाप्त करते हैं, आई हुई आत्मा पुनः अपने स्थान को वापस जाय, और अपने हाथों को उठा ले। बस, टेबिल का हिलना बंद हो जायगा, क्योंकि वह चुंबकीय (Magnetic) शक्ति, जो कि सब मनुष्यों के हाथों से निकलकर लकड़ी की तख्ती पर एकत्र हुई थी, फिर अलग हो गई।

अब मेरी प्रार्थना यह है कि यदि आप इसे पढ़कर भले प्रकार समझ गए हैं, तो परीक्षा अवश्य कीजिए। उसके साथ-ही-साथ ऐसी कठिनाइयों को दूर करने के लिये, जो आपकी समझ में नहीं आतीं, मैं यथाशक्ति उद्योग करूँगा; क्योंकि प्रत्येक कार्य में कोई-न-कोई कठिनाई अवश्य ही कार्य का बाधक बनती है। हमारे देशवासी कठिनाइयों के पड़ने पर शांत हो जाया करते हैं। आप ऐसा न कीजिए। इसकी परीक्षा अवश्य कीजिए। गत लेख के पाठकों से मुझे कई पत्र प्राप्त हुए हैं, जिनके पढ़ने से ज्ञात होता है कि वे सब-के-सब जड़ छोड़कर चोटी पकड़ने की धुन में हैं। आप इस धुन में मत पड़ें। उन चोटी पकड़नेवाले मेस्मेरिज्म-प्रेमियों के लिये मैंने प्रारंभ की कुछ क्रियाएँ बताकर उनकी कठिनाइयाँ दूर करने की प्रतिज्ञा की है।

पाठक ! इस थोड़े-से समय में मुझे जो अनुभव प्राप्त हुए हैं, आप लोगों पर पूर्ण रूप से विदित करने के लिये यथाशक्ति उद्योग करूँगा। किसी विद्या को छिपाना मेरा ध्येय नहीं है, बरन् उस विद्या को सब पर विदित करना।

करामात तैल

कान बहने, कम सुनने, निपट बहरेपन, परदों की कमज़ोरी, शब्द होने व कान के सर्व रोगों की रामबाण अनुभवी दवा है। मूल्य फ़ी शीशी १।) रु०, तीन शीशी एकसाथ मँगाने पर डाक-व्यय की छूट।

कर्ण-बिंदु—कान के घाव को साफ़ करने की दवा। मूल्य फ़ी शीशी ।।)

वल्लभ ऐंड संस, पीलीभीत (यू० पी०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महात्माजी के दर्शन

[अपनी युक्त-प्रांत-यात्रा में महात्माजी प्रयाग भी पधारे थे। उसी समय का यह चित्र है।]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

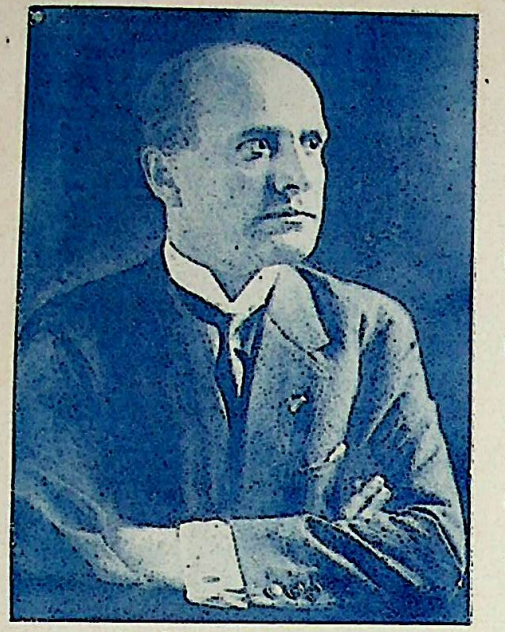

श्री० वेनितो मुसोलिनि

[फ़ेसिस्ट-दल के नेता, इटली के विधाता तथा वर्तमान युग के महापुरुषत्रय में से तृतीय, प्रधान मंत्री बेनितो मुसोलिनि से सारा संसार परिचित है। असहयोग, बोल्शेविज़्म और फ़ेसिज़्म, ये तीन क्रांति के प्रकार क्रमशः महात्मा गांधी, श्री० लेनिन और श्रीमुसोलिनि से उत्पन्न हुए हैं। इन्हीं तीन प्रकार की क्रांतियों ने संसार के ढोंगी सम्राटों के आसन हिला दिए हैं। बेनितो मुसोलिनि उपन्यास-लेखक भी हैं। आपका लिखा 'कार्डिनल्स मिस्ट्रेस'-नामक उपन्यास जगत्-प्रसिद्ध है।]

मुसोलिनि के पुत्र

[इटली के डिक्टेटर के आप पुत्र हैं। आप अभी पढ़ रहे हैं। किंतु अभी से आप अपने पिता के समान ही साहसी और दृढ़-निश्चयी हैं। अभी हाल में ही आपकी बड़ी बहन एडना का एक पत्र-संपादक से पाणिग्रहण हुआ है। श्रीमती एडना अभी कुछ दिन हुए भारत-यात्रा के लिये आई थीं। आपने महात्माजी के बड़ी श्रद्धापूर्वक दर्शन किए थे।]

प्रसादजी की एक कहानी

[श्रीयुत कृष्णानंद गुप्त]

प्रसादजी की प्रतिभा बहुमुखी है। वे कवि हैं, नाटककार हैं, और कहानी-लेखक भी हैं। पर मुझे केवल कहानी-लेखक प्रसादजी से प्रयोजन है।

हिंदी-साहित्य-जगत् की दृष्टि में प्रसादजी इतने ऊँचे दर्जे के कहानी-लेखक हैं कि मेरे लिये उनकी प्रशंसा में कुछ लिखना और चमन का चंद्रमा दोनों बराबर हैं। अतः उनके संबंध में उनके विद्वान् समालोचकों और प्रशंसकों की जो सम्मति है, उसे ही दुहरा देना ठीक होगा। उनका कहना है—

"प्रसादजी हिंदी के एक श्रेष्ठ कहानी-लेखक हैं। हिंदी के नए स्कूल के लेखकों में उनका स्थान सर्वोच्च है। वे कहानी-लेखन-कला के आचार्य हैं। एक ऊँचे दर्जे के कलाकार हैं। उनकी कहानियाँ विश्व-साहित्य की चीज़ें हैं। उन्हें दो सौ वर्षों के बाद पढ़ने पर उतना ही मज़ा आएगा, जितना आज आता है। इत्यादि।"

यह बहुत ऊँची प्रशंसा है। इतनी ऊँची कि इसे सच करके संसार के किसी भी श्रेष्ठ कहानी-लेखक की रचनाएँ अपने जीवन के अनिश्चित स्थायित्व को चिर-स्थायी समझ सकती हैं। हिंदी के ऐसे महान् लेखक की महान् कृतियाँ मुझे पढ़ने को नहीं मिलीं, अथवा यों मिलीं भी, उनको मैंने कभी ध्यान-पूर्वक पढ़ने की चेष्टा नहीं की, इसे मैं अपना दुर्भाग्य ही मानता हूँ। मनुष्य कितना पढ़े, और क्या पढ़े? मुद्रण-कला के इस आधुनिक युग में इतनी अधिक और विविध प्रकार की 'नई रचनाएँ' प्रकाशित हो रही हैं कि हमारे लिये उन सबका पढ़ना कठिन हो गया है। मैं यद्यपि प्रसादजी की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं को नहीं पढ़ सका, पर उनकी प्रतिभा के विषय में मुझे कभी संदेह नहीं हुआ। मैं उन्हें एक सामर्थ्यवान् कलाकार समझता आया हूँ और अवसर पड़ने पर दूसरों से भी यही कहने को तैयार था। इसे आप मेरी कमज़ोरी समझ सकते हैं। पर आपको मालूम नहीं, लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक की रचना को परीक्षा की कसौटी पर कसने की ज़रूरत नहीं समझी जाती। उसे तो हम किसी बहुमूल्य धरोहर की भाँति बिना देखे ही दूसरों को सौंप देते हैं, जिस प्रकार कि वह हमें सौंपी जाती है। प्रसादजी के संबंध में भी मैं यही करता। हिंदी के विद्वान् समालोचकों ने उनके संबंध की जो धरोहर मुझे सौंपी थी, उसे मैं बड़े यत्न से रक्खे था। उसे मैंने कभी खोलने या टटोलने की ज़रूरत नहीं समझी। पर वह बड़ी कच्ची और नाज़ुक निकली। एक दिन अकस्मात् हाथ लगते ही उसके बंधन खुल गए। यह क्या! मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मैं तो समझता था कि उसमें अनमोल हीरे होंगे! परंतु ये तो काँच के धुँधले और निर्जीव टुकड़े हैं! तब मुझे ज्ञात हुआ कि मुझे धोखा दिया गया है। समालोचकों ने इस धरोहर को वास्तव में बिना देखे ही बहुमूल्य बताकर मुझे सौंप दिया है। मुझे इसके लिये उन पर क्रोध नहीं है। बहुत-से लोग काँच के टुकड़ों को भी रत्न समझ सकते हैं। यह उनकी अज्ञानता है, और अज्ञानता हमारे मन में क्रोध नहीं, वरन् दया का उद्रेक करती है।

मैं इस पहेली को सुलझा दूँ। हिंदी की एक प्रसिद्ध मासिक पत्रिका में मुझसे कहा गया है कि 'माधुरी' के दूसरे अंक में जयशंकरप्रसादजी की जो रचना प्रकाशित हुई है, वह कहानी और गद्य-काव्य के बीच एक अनोखी ही चीज़ है। मैंने सदा की भाँति इस प्रशंसा को स्वीकार कर लिया, और प्रसादजी की इस अभूत-पूर्व रचना को पढ़ लेना अपना कर्तव्य समझा। एक दिन अवकाश के समय उसे पढ़ने बैठा। पढ़ते-पढ़ते मेरी अजब हालत हो गई। उस समय मेरे मन में जो भाव उठे, उन्हें यदि मैं यथावत् प्रकट कर दूँ, तो आप उन्हें असत्य और अतिरंजित समझेंगे। आप उन पर विश्वास नहीं करेंगे। और, संभव है, क्रोधावेश में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे शब्दों के साथ मेरे नाम का संबंध स्थापित करने लगें, जिनकी मुझे रत्ती-भर भी परवा नहीं है। कहानी समाप्त करने के बाद मेरे मुँह से यही निकला—"क्या यह प्रसादजी की लिखी हुई कहानी है, जो कहानी-लेखन-कला के आचार्य माने जाते हैं? क्या यह उन्हीं की कृति है? क्या वह ऐसा ही लिखते हैं? क्या यही उनकी कला है? यही उनकी निपुणता है? यही उनकी कारीगरी है? यही विश्व-साहित्य की चीज़ है? कला का स्वरूप ऐसा ही है? तब तो वह निस्संदेह कोई अत्यंत कुत्सित, कदर्य और घिनौनी वस्तु है।"

पत्रिका में प्रसादजी की कहानी की आध्यात्मिक व्याख्या की गई है। उसे मैं बिलकुल नहीं समझा। यह मेरा दोष हो सकता है। नए स्कूल के कवि और लेखक पाठक को समझने का अवकाश नहीं देते। उनकी रचना निगूढ़ और रहस्यमयी होती है। कुछ लोग इसे छायावाद कहते हैं। इस छायावाद का सबसे बड़ा दोष यह है कि अनंत में लीन हुए बिना आप इसे समझ नहीं सकते। मैं हँसी नहीं कर रहा हूँ। छायावादी लेखक ऐसी वस्तुएँ देखते हैं, जो हमारे लिये अगोचर हैं। उनके आलोचकों का भी यही हाल है। वे अपने लेखक की रचना में ऐसी वस्तु देखते हैं, जिसे स्वयं लेखक नहीं देख पाता। कुछ लोगों के लिये शब्द वर्णों का रूप धारण कर लेते हैं। वे 'आ' को काला और 'ओ' को नीला देखते हैं। वे जैसा देखते हैं, जैसा अनुभव करते हैं, वैसा ही व्यक्त करते हैं। इसमें उनका कोई दोष नहीं। ध्वनि को वर्ण के रूप में देखना एक प्रकार का रोग है, और जो रोगी है, वह सदैव चम्य है, और उसकी अनुभूति का स्वस्थ व्यक्तियों के लिये कोई मूल्य नहीं।

प्रसादजी की रचना को मैं केवल एक कहानी के रूप में देखूँगा। मैं उसका आध्यात्मिक रूप नहीं देख सकता। आलोचक की राय में यह एक श्रेष्ठ रचना है। यह मेरे लिये सुबीते की बात है। क्योंकि कलाकार की किसी साधारण कृति की परीक्षा करके उसके संबंध में अपनी राय क़ायम करना उसके साथ अन्याय करना है। मैं इस कहानी को समझना और समझाना चाहता हूँ। मैं इसकी परीक्षा करना चाहता हूँ। परीक्षा कोई बुरी वस्तु नहीं। खरा सोना आग में तपकर कुंदन बन जाता है, और खोटा मलिन होकर भोले व्यक्तियों के प्रवंचित होने की संभावना को कम कर देता है। यही एक भावना है, जिसकी ओट में बैठकर मैं अपना यह निबंध लिख रहा हूँ।

किसी कहानी के संबंध में सबसे पहला प्रश्न यह उठता है कि उसमें ख़ूबी किस बात की है? कथानक की? अथवा चरित्र-चित्रण की? अथवा भाव-गांभीर्य की? अथवा वर्णन की?

प्रसादजी की कहानी का कथानक इस प्रकार है—

नंदन नाम का एक भाट है। उसके एक विधवा कन्या है। नाम है रोहिणी। वह अपने पिता के आश्रयदाता ठाकुर जीवनसिंह पर आसक्त है, और उसके प्रेम में पागल हो जाती है। एक दिन ठाकुर साहब का एक मित्र उनसे मिलने जाता है। वार्तालाप के समय उसके कान में किसी के गाने की भनक पड़ती है। वह रोहिणी है। उसके गीत पर मुग्ध होकर ठाकुर साहब का मित्र उनसे गायिका को बुलाने का अनुरोध करता है। ठाकुर साहब उसे बताते हैं कि वह पगली है, और उसके जीवन का इतिवृत्त सुनाते हैं। उसी समय रोहिणी भी वहाँ आ जाती है। ठाकुर साहब का एक सिपाही उसे डाँटकर भगाना चाहता है। ठाकुर साहब रोकने की आवश्यकता नहीं समझते। रोहिणी भय-भीत होकर पीछे हटती है, और अपने इस प्रयत्न में छत से नीचे, गंगा के जल में, गिर पड़ती है। उसे गिरते देखकर ठाकुर साहब के मित्र को होश आता है। वह झूठे प्रेम के मोहन माया-जाल में इस सच्चे प्रेम की भूखी भारतीय बालिका को फँसाकर उसका जीवन नष्ट कर देनेवाले (या न कर देनेवाले?) जीवनसिंह को एक धक्का देता है, और छत से नीचे गिरकर वह भी गंगा के पवित्र प्रवाह में बह जाता है।

क्या इस कथानक में कोई सौंदर्य है? कोई चमत्कार है? कोई विशेषता है? कोई नवीनता है? इन प्रश्नों का उत्तर प्रसादजी के आलोचक ही दे सकते हैं। पर साधारण पाठकों के लिये इसमें जो प्रबल विरोधाभास और हास्यास्पद अतार्किकता है, उसे समझने के लिये विशेष बुद्धि की आवश्यकता नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस कथानक को लेकर प्रसादजी ने जीवन के कौन-से सत्य को व्यक्त किया है, यह हमारी समझ में नहीं आया। 'कला कला के लिये', इस सिद्धांत का पिष्ट-पेषण करनेवाले कलाकार चाहे जो कहते रहें, परंतु कहानी में कोई उच्च भाव, कोई उच्चादर्श, कोई उच्च लक्ष्य तो होना ही चाहिए, अन्यथा वह साहित्य नहीं है। मैं तो मनोरंजन को भी कहानी का लक्ष्य मानने को तैयार हूँ। परंतु प्रसादजी-जैसे कलाकारों के संबंध में मैं यह बात नहीं कह सकता। उनके लिये तो मनोरंजन पाठक की उच्च भावनाओं को जाग्रत् करने का साधन-मात्र होना चाहिए, अंतिम लक्ष्य नहीं।

परंतु क्या प्रसादजी की कहानी रोचक भी है? कहानी की रोचकता एक सापेक्ष वस्तु है। वह साधारण पाठकों की मानसिक संकीर्णता अथवा विशालता के अनुसार घट-बढ़ सकती है। इसलिये इस संबंध में हम अपना कोई फ़ैसला नहीं दे सकते। संभव है, कुछ श्रेणी के पाठकों को यह कहानी बहुत सरस जान पड़ी हो, परंतु उसका स्वरूप और उसकी शैली हमें इसका विश्वास नहीं दिलाती।

अब चरित्र-चित्रण को लीजिए। कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं—रोहिणी, ठाकुर जीवनसिंह और उनका मित्र। इनमें प्रधान कौन है? रोहिणी? या ठाकुर साहब? या उनका मित्र? कहानी के शीर्षक से जान पड़ता है कि लेखक ने रोहिणी को प्रधानता दी है, परंतु कथानक पर दृष्टिपात करने से ठाकुर साहब का मित्र प्रधान जान पड़ता है, क्योंकि इसी की वजह से कहानी में एक घटना-वैचित्र्य उत्पन्न होता है, एक अप्रत्याशित परिस्थिति उपस्थित होती है, और आगे चलकर इसी के चरित्र में एक आकस्मिक परिवर्तन भी होता है। अतएव देखना चाहिए कि इसके चरित्र का विकास कैसे हुआ है।

ठाकुर साहब का यह मित्र सौंदर्योपासक जान पड़ता है, क्योंकि वह प्रकृति के सौंदर्य को देखने में तन्मय हो रहा है। आगे चलकर वह प्रकृति की शोभा का वर्णन करता है। परंतु इससे वह स्वयं प्रभावित नहीं होता। अथवा यदि होता है, तो उसकी अनुभूति सच्ची नहीं है। वह अपने मित्र से यह कहने के बजाय कि "देखो, यह नक्षत्र (जिसके नाम से वह परिचित है) कैसा चमकीला और कैसा सुंदर है!" पूछता है—"तुम बता सकते हो, यह कौन नक्षत्र है?" मनोविज्ञान की दृष्टि से उसका यह प्रश्न अत्यंत तर्क-हीन और असंगत है। हम जब किसी वस्तु के सौंदर्य को देखकर विस्मय-विमुग्ध होते हैं, तब हमारे मुँह से यही निकलता है—"कैसी सुंदर वस्तु है!", न कि यह, "यह कौन वस्तु है?" अतएव ठाकुर साहब के मित्र का प्रकृति-वर्णन असत्य है, और उसकी तन्मयता झूठी है। इसके अतिरिक्त उसकी वर्णन-शैली रूढ़ है, और कथा-वस्तु की अनुकूलता से उसका कोई संबंध नहीं।

ठाकुर साहब के इस मित्र में गंभीरता का अभाव है। रोहिणी का संगीत सुनकर उसके हृदय में तुरंत पीड़ा होने लगती है। साथ ही हँसी भी सद्य हो जाती है। इससे जान पड़ता है, उसका हृदय बहुत कोमल है, और संस्कार बहुत उच्च।

इसके बाद ही उसके लिये रोहिणी के संगीत की दूसरी कड़ी किसी भूली हुई सुंदर कहानी में परिवर्तित हो जाती है। उसके मन में उत्कंठा होती है, कसक होती है, कुतूहल होता है। फिर उसका हृदय चंचल बालक-सा मचलने लगता है। उसे वेदना होती है। परंतु किसी दूसरे प्रकार की। वह किसी कामातुर प्रणयी की भाँति अधीर होकर कहता है—"ठाकुर, इसका गाना सुनवा दो, बुलवाओगे?" यह प्रश्न उसके हृदय की क्षुद्रता व्यक्त करता है। वह गीत सुनने के लिये केवल इसलिये उत्कंठित हो उठा है कि वह किसी बालिका के कोमल कंठ से निःसृत हो रहा है।

वह हठी है। व्यर्थ की ज़िद करता है। वह उजड्ड भी है। ठाकुर साहब के यह कहने पर कि "वह बात सुनकर क्या करोगे?" वह उत्तर देता है—"सुनूँगा—अवश्य सुनूँगा। यह न समझना कि मैं तुम्हारी ज़मींदारी में इस समय बैठा हूँ। इसलिये डर जाऊँगा।" यह एक अजीब हठ है, और अजीब उलझन है। फिर ज़मींदार ने तो कोई ऐसा 'ज़मींदारपन' प्रकट किया नहीं, जिसके कारण उसके मित्र को ज़बर्दस्ती अपनी दृढ़ता और निर्भीकता प्रदर्शित करने की ज़रूरत पड़ जाय!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अंत में रोहिणी के निकट आने पर वह कहता है—"जीवन, उसे बुलाओ, मैं इस प्रेम-योगिनी का दर्शन कर लूँ।"

यह या तो कठोर व्यंग्य है, और ऐसी अवस्था में किसी गुंडे के कलुषित हृदय का घिनौना प्रतिबिंब है। अथवा यदि ठाकुर साहब का मित्र रोहिणी के उज्ज्वल चरित्र की महत्ता को अनुभव करके वास्तव में उसके प्रति आकृष्ट हुआ है, और उसके दर्शन करके कृतार्थ होना चाहता है, तो हमें देखना चाहिए कि रोहिणी कितनी ऊँची है, जो एक साधारण व्यक्ति के हृदय में दर्शन की लालसा उत्पन्न कर रही है। परंतु अभी ठाकुर साहब के मित्र का चित्र अधूरा ही है।

रोहिणी के आने पर वह उसकी ओर नज़र उठाकर भी नहीं देखता। क्या उसकी आँखें चकचौंधिया जाती हैं? अथवा उसे देखने का मौक़ा नहीं मिलता? रोहिणी जब गंगा में गिर पड़ती है, तब सहसा उसे होश आता है। अर्थात् ज्ञानोदय होता है! ईश्वर न करे, कभी किसी को इस प्रकार का ज्ञानोदय हो! जानते हैं आप, उसने क्या किया? अपने मित्र जीवनसिंह को एक धक्का दिया, और जीवित जल-समाधि देकर उसे सीधा स्वर्गलोक भेज दिया। यहाँ कहानी समाप्त हो जाती है, और साथ ही जीवनसिंह के मित्र का चित्र भी।

क्या उसकी कोई मूर्ति आपके सामने आई? क्या आप उसे भूलकर भी सजीव समझ सकते हैं? क्या आपने किसी व्यक्ति के चरित्र में एक साथ ही इतनी असंबद्ध और असंगत बातें देखी हैं? देखिए, यह है मानसिक विश्लेषण के सूक्ष्म सत्यों का अनोखा अभिव्यक्तीकरण, जो कि कथा-साहित्य की एक प्रमुख कला है, और जिसके प्रसादजी आचार्य हैं। उनकी यह सृष्टि यदि किसी से मिलती है, तो इतिहास-प्रसिद्ध एक उस बादशाह से, जिसके संबंध में इतिहासकार स्मिथ की राय है—"वह प्रतिकूलताओं का समुच्चय था।" जीवनसिंह का मित्र भी ऐसा ही है। वह विकार-ग्रस्त जान पड़ता है, और जीवनसिंह को यह बात पहले से जाननी चाहिए थी। रही पाठकों के जानने की बात, सो यदि कहानी का शीर्षक 'पगली' के स्थान पर 'पगला' होता, तो काम चल जाता।

रोहिणी प्रेम-योगिनी है। वह प्रेम की भूखी 'भारतीय बालिका' है। कामा के भीतर जो शब्द हैं, उनका अवश्य कोई आशय है। रोहिणी सीता है या सावित्री? पद्मिनी है या कृष्णकुमारी? चिंतामणि है या और कोई? परंतु यह देखकर मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है कि वह इनमें से कोई भी नहीं। वह हिंदू-विधवा है। अपने उच्चादर्श से पतित और प्रेम-लिप्सा से कलुषित। कलुषित इसलिये कि ठाकुर जीवनसिंह उसके जीवन को नष्ट कर देनेवाला बताया गया है। निस्संदेह वह पतित होकर भी उच्च बनी रह सकती थी। वह अपने प्रेम की अग्नि में आप ही तिल-तिल करके जलकर अपने पाप का प्रायश्चित्त कर सकती थी। उस समय कोई भी व्यक्ति उसके चरणों की रज माथे से लगाकर अपने को धन्य समझ सकता था। परंतु वह ऐसा भी नहीं करती। वह निर्लज्ज है, चरित्र-भ्रष्ट है। उसे प्रेम-योगिनी कहना हृदय-हीन उपहास है। और, वह 'भारतीय बालिका" तो कदापि नहीं है।

परंतु हमें उसके पतन का भी तो चित्र नहीं मिलता। वह जीवनसिंह को अपने घर में आया देखकर कोई ऐसा नाट्य नहीं करती, कोई ऐसा भाव-प्रदर्शन नहीं करती, ऐसी बात नहीं कहती, जिससे यह प्रकट हो कि वह उस पर अनुरक्त है। केवल एक दिन यव की पत्तियाँ देने जाती है, और उस स्थल पर उसके प्रेम की अपेक्षा उसकी निर्लज्जता ही अधिक प्रदर्शित हुई है। रोहिणी, जो कि एक हिंदू-विधवा है, निस्संकोच भाव से जीवनसिंह के कान पर यव की पत्तियाँ रख देती है। यह निर्लज्जता कहाँ से आई? हमें रोहिणी का प्रथम परिचय इस प्रकार मिलता है—

"उसकी झुकी हुई पलकों से काली बरौनियाँ छिपती रही थीं, और अदृश्य रूप से उन बरौनियों से कैसे करुणा की सरस्वती कितनी ही धाराओं में बह रही थी।"

यह मूर्ति करुण है, सौम्य है, और निर्लज्जता अथवा चंचलता का इसमें किंचित् आभास नहीं है। फिर ऐसी बालिका बाज़ारू औरतों की तरह इतनी मुँहफट कैसे हो गई कि सबके सामने कहती है—"तो इसमें तुम लोगों का क्या? मैं मरती हूँ, प्यार करती हूँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें, तो तुम्हारी बला से !" यह बात सुनकर उसके माता-पिता को विष खाकर मर जाना चाहिए था। और, यदि रोहिणी ऐसी ही निर्लज्ज है, तो उसका जीवन नष्ट करने में जीवनसिंह का किंचित् अपराध नहीं। उसने स्वयं रोहिणी को फँसाने के लिये कोई प्रेम-जाल नहीं फैलाया। वह निर्दोष है, और उसकी हत्या करने-वाला व्यक्ति सत्य-जगत् में और उपन्यास-जगत् में, दोनों जगह फाँसी के कठोर दंड का भागी।

और, यदि रोहिणी वास्तव में प्रेम-योगिनी है, तो भी बेचारा जीवनसिंह हमारी दया का पात्र है। फिर क्या वह उस बालिका का जीवन नष्ट न करने के लिये गंगा के जल में ढकेला गया? प्रसादजी की दृष्टि में भी वह निरपराध है। उसने शायद रोहिणी के प्रेम का प्रत्या-ख्यान किया है, और यदि नहीं किया है, तो रोहिणी के पागल हो जाने की सार्थकता कहाँ रहती है?

मैं इस बात को मानता हूँ—और यह सत्य है कि मनुष्य के बाहर के व्यवहार और भीतर के विचारों में बड़ा प्रभेद रहता है। परंतु यह चर्म-चक्षुओं की दृष्टि से देखना है। कहानी-लेखक के यदि दिव्य दृष्टि न हो, तो वह अपनी रचना में सुसामंजस्य की सृष्टि कदापि नहीं कर सकता। मनुष्य अत्यंत दुःख के समय भी हँसता है, अत्यंत प्रिय को भी छोड़कर चला जाता है, अत्यंत अस्पृश्य चांडाल को भी लाकर रखता है, देवता को भी घर से निकाल देता है। किंतु वह ऐसा क्यों करता है, जिसके अंतर्दृष्टि है, वही समझ सकता है, और दूसरों को भी समझने की चाबी दे सकता है। संसार ठीक यंत्र की तरह नहीं चलता, यह भी सत्य है। किंतु इसी से क्या कोई व्यक्ति बैठे-बैठे सहसा अपने मित्र के कलेजे में छुरी भोंक सकता है, अथवा अकारण उसे नदी के जल में ढकेल सकता है? प्रसाद-जी की कहानी इसी प्रकार की हास्यास्पद असंगतियों से परिपूर्ण है। उसमें कार्य-कारण का संबंध नहीं। वह अस्वाभाविक है, अप्रतीतिकर है, विरोधी भावों की खिचड़ी है। पाठक को चौंका देना कहानी के प्लाट का कभी-कभी एक लक्ष्य होता है। इसके लिये चमत्कार लाने की आवश्यकता होती है। परंतु वह चमत्कार यदि बिना मेघ के वज्रपात की भाँति आविर्भूत हुआ, तो पाठक उससे प्रसन्न नहीं होते। मेघ आदि से अंत तक मौजूद रहना चाहिए, फिर यदि वज्राघात के अवश्-यं भावी कारण की भाँति वह चमत्कार हठात् पाठक के सम्मुख उपस्थित किया जाय, तो उसमें कुछ कला और कारीगरी भी है। मैं प्रसादजी से ही पूछता हूँ, क्या जीवनसिंह का मित्र इतना संस्कारशील, सुशिक्षित, भाव-प्रवण, कोमल-स्वभाव और कोमल-वृत्तिवाला है कि वह एक विधवा बालिका के जीवन को नष्ट करने-वाले व्यक्ति पर—जो कि उसका मित्र है—इतना कुपित और उत्तेजित हो उठे कि उसे नदी में ढकेल देने के क्षमा का पात्र समझा जाय?

अब मुझे कथोपकथन पर और विचार करना है। प्रसादजी ने अपनी कहानी उत्तम पुरुष में कही है, अर्थात् स्वयं न कहकर एक पात्र के मुँह से कहलवाई है। अतएव पाठकों को जान लेना चाहिए कि उनका क्षेत्र बहुत संकुचित है। वे कहानी कहते समय दूसरे के मनोभावों का केवल अंदाज़ लगा सकते हैं, उनके संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते।

शुरू ही में जीवन का मित्र पूछता है—"तुम बता सकते हो, यह कौन नक्षत्र है?" इस प्रश्न की असंगति पर हम पहले प्रकाश डाल चुके हैं। हमें अब इस पर दूसरी दृष्टि से विचार करना है। कहानी में कथोप-कथन के तीन मुख्य उद्देश्य होते हैं—(१) चरित्र-चित्रण, (२) वातावरण की परिपुष्टि और (३) कहानी की गति को बढ़ाना या तीव्रतर करना। जीवन के मित्र ने जो प्रश्न किया है, उससे भी किसी एक उद्देश्य की सिद्धि होनी चाहिए। क्योंकि कहानी में व्यर्थ-वाद को स्थान नहीं।

इस प्रश्न से चरित्र-विकास नहीं होता। यदि होता है, तो केवल इतना कि प्रश्नकर्ता की मानसिक गठन कुछ विलक्षण है। वह देख कुछ रहा है, अनुभव कुछ कर रहा है, और पूछ कुछ और रहा है। यदि प्रश्न सार्थक है, तो अब उससे कहानी की गति के आगे बढ़ने में कुछ सहायता मिलनी चाहिए। मैं और गहराई में जाने की कोशिश करूँगा।

मैटरलिंक के कुछ नाटक ऐसे हैं, जिनके पात्रों का कथोपकथन आभास-इंगित से परिपूर्ण रहता है। संभव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, जीवनसिंह के मित्र के इस प्रश्न में भी वैसी ही कोई गूढ़ व्यंजना छिपी हो। कहानी की पात्री का नाम रोहिणी है, और प्रसादजी ने रोहिणी-नक्षत्र की अवतारणा व्यर्थ न की होगी। जीवनसिंह का मित्र रोहिणी-नक्षत्र की ओर इशारा करके जीवनसिंह की प्रेमिका रोहिणी बालिका की ओर तो संकेत नहीं कर रहा है? परंतु यह असंभव है। क्योंकि जीवनसिंह का मित्र अभी बालिका के नाम से अपरिचित है, और जब ऐसी बात है, तब उसके उक्त प्रश्न में कुछ रस ही नहीं रह जाता, और न ठाकुर साहब के उत्तर में ही कोई जान रहती है। क्योंकि उनका मित्र उनके अनुमान करने के ढंग पर हँस भले ही दे, परंतु इस हँसी से पाठकों के मन में कोई गुदगुदी पैदा नहीं हो सकती।

प्रसादजी के कथोपकथन की शैली का यह एक नमूना है। इसमें न सार्थकता है, न उपयोगिता; न सौंदर्य और न भाव-व्यंजना। उनके पात्र रूढ़ और किताबी भाषा में बातचीत करते हैं। इस कारण उनमें स्वाभाविकता और सजीवता का अभाव रहता है। उनकी वर्णन-शैली का भी यही हाल है। जहाँ एक सीधे और सुंदर शब्द से काम चल सकता है, वहाँ वे एक कठिन शब्द का प्रयोग करेंगे। वे पाठकों को सदैव यह बताने का प्रयत्न करते हैं कि उनके भाव बहुत ऊँची उड़ान लेते हैं, और विचार बहुत गहरे में प्रविष्ट होते हैं। यह एक ऐसा दोष है, जिससे कहानी-लेखक को सदैव बचना चाहिए—फिर चाहे वह उच्च कोटि के विचारशील पाठकों के लिये ही क्यों न लिखता हो।

'पगली' की आलोचना करते-करते मैं बहक गया हूँ। परंतु यह मेरा दोष, नहीं। 'पगली' "बहकानेवाली चीज़ है।" मैंने उसे कई बार पढ़ा, और प्रत्येक बार पढ़ना समाप्त करने के उपरांत ऐसा जान पड़ा कि कुनाइन-मिक्श्चर पिया है। पर मैंने यथासंभव अपने लेख में इसका आभास नहीं आने दिया। यदि प्रसादजी फिर भी मुझ पर असंतुष्ट हों, तो लाचारी है। वे मेरे परिचित हैं। मित्र हैं। उन पर मेरी श्रद्धा है। मैं उनकी कवित्व-शक्ति का क़ायल हूँ, और क़ायल हूँ उनके बौद्ध-कालीन ज्ञान और अध्ययन का। मुझे इस बात का आंतरिक खेद है कि मुझे आज यह बताने की आवश्यकता पड़ी कि उनके प्रशंसक और आलोचकगण उनकी जिस वस्तु को इतना श्रेष्ठ बता रहे हैं, वह वास्तव में वैसी नहीं। उनकी अन्य अधिकांश कहानियों के संबंध में भी मेरी यही राय है *। उनमें कहानी के आर्ट की बड़ी भारी कमी है। वे कहानियाँ नहीं हैं, और कुछ भले ही हों। उनमें कथोपकथन और वर्णन की स्वाभाविकता नहीं। वाक्-संयम नहीं। घटना-चमत्कार नहीं। सरसता नहीं। "उनमें यदि कुछ है, तो वह उनके अंत में 'जयशंकरप्रसादजी' का शुभ नाम है।" यह मेरे एक श्रद्धेय साहित्यिक मित्र की राय है, और तौल में मेरे इस लंबे लेख से कहीं अधिक भारी है।

* इस निबंध को लिखते समय मैंने उनकी सब श्रेष्ठ कहानियाँ पढ़ ली हैं।—लेखक

सुंदर, सस्ती और मज़बूत
रबर की मुहरें
पीतल की सील, मुहरें
और चपरास
हमसे बनवाइए। काम देखकर आप ज़रूर खुश होंगे। सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।
भोलानाथ कंपनी, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बैल

[बाबू सियारामशरण गुप्त]

ई साल से फ़सलें बिगड़ रही थीं। बादल समय पर पानी नहीं देते थे। खेती के पौधे, भारत के बालकों की तरह, अकाल-वृद्ध होकर असमय ही मुरझा जाते थे। परंतु महाजनों की फ़सल का हाल ऐसा न था। बादल जैसे-जैसे खिंचते, उनकी खेती में नए-नए अंकुर निकलते थे।

श्रीमान् ज्वालाप्रसाद इन्हीं महाजनों में से थे। विधाता के वर से उनका धन अक्षय था। जिस किसान के पास पहुँच जाता, जीवन-भर उसका साथ न छोड़ता। अपने स्वामी की तिजोरी में निरंतर जाकर भी दरिद्र की झोपड़ी उससे छोड़ी न जाती थी!

मोहन बरसों से ज्वालाप्रसाद का ऋण चुकाने की चेष्टा में था। परंतु चेष्टा हमेशा सफल ही नहीं होती। मोहन का ऋण दरिद्र के वंश की तरह दिन-पर-दिन बढ़ता ही जाता था। इधर कुछ दिन से ज्वालाप्रसाद भी कुछ अधीर-से हो उठे थे। रुपए अदा करने के लिये वे मोहन के यहाँ आदमी-पर-आदमी भेज रहे थे।

समय की खराबी और महाजन की अधीरता के साथ मोहन को एक चिंता और थी। वह थी जवान लड़के शिवू की निश्चिंतता। उसे घर के काम-काज से सरोकार न था। बिलकुल ही न था, यह नहीं कहा जा सकता। भोजन करने के लिये यथासमय उसे घर आना ही पड़ता था। बाप मजूरी के पैसे लाकर किस जगह रखता है, इसके ऊपर दृष्टि रखनी पड़ती थी। पता मिल जाने पर बीच-बीच में उन्हें सफ़ाई के हाथ से उड़ाना भी पड़ता था। ऐसे ही और बहुत काम थे। दो-चार बार उसे बैल-गाड़ी किराए के लिये चलानी पड़ी थी। संभव है, यह बेगार आगे चलकर और अधिक करनी पड़ती। परंतु यह संभावना भी अब असंभव हो गई है। अचानक एक दिन दो-चार घंटे की बीमारी में उसका एक बैल, हाल में ही, चल बसा था। इस प्रकार ईश्वर ने उसके स्वच्छंद विचरण के पथ में एक सुविधा और कर रक्खी थी। घरवालों के साथ उसका वही संबंध जान पड़ता था, जो खेती के साथ उन बादलों का होता है, जिनके दर्शन ही नहीं होते। यदि कभी होते भी हैं, तो आए हुए धान्य को खेत में ही सड़ा देने-भर के लिये।

परंतु बादल चाहे जैसी शत्रुता रक्खें, खेती के लिये उनसे प्यारी वस्तु और कोई नहीं होती। मोहन भी शिवू का विचार इसी दृष्टि से करता था। सोचता, अभी बच्चा है, हमेशा ऐसा ही थोड़े रहेगा। जब वह शिवू की कोई बात आई-गई कर जाता, तब उसे अपने मृत पिता की याद आ जाती। उसने भी अपने पिता को कम नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खिझाया था। पिता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का सबसे बड़ा साधन कदाचित् बच्चे को प्यार करना ही है! शिवू का यथेच्छाचार क्षमा करते समय प्रायः मोहन का हृदय गद्‌गद हो उठता था।

उस दिन कलेवा करके शिवू बाहर निकल रहा था। मोहन ने पीछे से कहा—"लल्लू, आज मुझे एक जगह काम पर जाना है। बैल की सार साफ़ करके तुम उसे पानी पिला देना।"

शिवू ने बाप की ओर मुड़कर कहा—"मुझसे यह बेगार न होगी। मुझे भी एक जगह जाना है।"

मोहन जानता था कि काँच की तरह सीधी गरमी दिखाकर इसे झुकाने की इच्छा रखना मूर्खता है। बिनती के स्वर में बोला—"बेटा, मुझे काम है। नहीं तो तुझसे क्यों कहता? कौन बहुत देर का काम है।"

शिवू उसी तरह अविचल कंठ से बोला—"थोड़ी देर का काम हो या बहुत देर का; मुझे बाहियात कामों को फुर्सत नहीं।"

मोहन झुँझला पड़ा। क्रुद्ध होकर बोला—"कैसा है रे! बैल को पानी पिलाना बाहियात काम बताता है। किसानी न करेगा, तो क्या बाबू बनकर डाकखाने में टिकट बेचेगा?"

"ठीक तो कहता हूँ। नाराज क्यों होते हो? कितनी बार कहा—इसे बेच दो, अकेला बँधा-बँधा खा रहा है। सार साफ करो, पानी पिलाओ, भूसा डालो। इधर से उधर बाँधो, उधर से इधर। मुझे यह अच्छा नहीं लगता। किसी काम आता हो, तो बात भी है।"

"चुप रह! घर में जोड़ी न होती, तो इतनी बातें बनाना न आता। बैल किसान के हाथ-पैर होते हैं। एक हाथ टूट जाने पर कोई दूसरा भी कटा नहीं देता। मैं इसका जोड़ मिलाने की फिक्र में हूँ। तू कहता है—बेच दो। दूर हो, जहाँ जाना हो, चला जा। मैं सब कर लूँगा।"

"जा तो रहा ही हूँ। मैं कुछ ऐसा दबैल नहीं हूँ।" हँसकर कहता हुआ शिवू घर के बाहर हो गया। मोहन कुछ देर ज्यों-का-त्यों बैठा रहकर, बड़बड़ाता हुआ उठा और जाकर बैल को थपथपाने लगा। शिवू ने उसको जो अवज्ञा की थी, मानो उसकी क्षति-पूर्ति करने के लिये अपने हृदय का समस्त प्यार ढालने लगा।

उस दिन मोहन ने सार को सफ़ाई और अच्छी तरह की। बैल को पानी पिलाने ले गया, तो सोचा, इसे नहला दूँ। उजड्ड लड़के ने बैल का जो अपमान किया था, उसे वह उसके अंतस्तल तक से धो देना चाहता था। नहला चुकने पर अपने अँगौछे से पानी अँगौछा। बाँधने की रस्सी को भी पानी से धोना न भूला। सार में बाँधकर भूसा डाला। तब भी मन की ग्लानि दूर न हुई, तो भीतर जाकर रोटी ले आया, और टुकड़े-टुकड़े करके उसे खिलाने लगा। वह कहा करता था कि जानवर अपनी बात समझा नहीं सकते, परंतु बहुत-सी बातें आदमियों से अधिक समझते हैं। इसलिये वह अनुभव कर रहा था कि बैल उसके प्रेम को अच्छी तरह हृदयंगम कर रहा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस तरह आज इतना समय लग गया, जितना लगना न चाहिए था। यह बात उसे उस समय मालूम हुई, जब ज्वालाप्रसाद के आदमी ने आकर बाहर से पुकारा—"मोहन है ?"

मोहन सुनकर सन्न-सा खड़ा रह गया। उसे शिवू पर गुस्सा आया। अगर वह पाजी बैल का शिकार कर देता, तो वह इस आदमी को घर थोड़े मिलता। शंकित मन से बाहर निकलकर बोला—"कौन, रामधन भैया ! आओ, तमाखू पी लो।"

रामधन ने रुखाई से कहा—"हमें फुर्सत नहीं है। इसी दम चलो। तुम-जैसे छँटे हुए आसामी से भी किसी का पाला न पड़ा होगा। पीछे फिरते-फिरते पैरों में छाले पड़ गए, परंतु मालिक साहब के दर्शन ही नहीं होते।"

सचमुच रामधन के पैरों में छाले पड़े हुए थे। इसी से उसका मिज़ाज ठीक न था। परंतु छाले पड़ने का कारण मोहन के पीछे फिरना नहीं था। एक चमार आसामी ने मुफ़्त में जूते बनाकर कुछ दिन के लिये उससे छुट्टी पाने का वचन लिया था। उन जूतों ने रामधन को चलने-फिरने से ही कुछ दिन के लिये छुट्टी देकर अपने निर्माता का लेन-देन बराबर कर देना चाहा। रामधन इस समय उसी चमार को नए-नए शब्दों में याद करता आ रहा था। मोहन ने देखते ही समझ लिया, मामला ठीक नहीं है। चुपचाप भीतर से जाकर अँगोछा कंधे पर डाला, और उसके पीछे हो लिया।

रास्ते में मोहन ने फ़सल ख़राब होने की बात शुरू की। किसानों का गुज़ारा किस तरह हो रहा है, इस बात की ओर संकेत किया। एक पैसे का सुबीता नहीं है, यह भी स्पष्टतः कहा। रामधन मुँह भारी किए हुए सुनता रहा। मानो उसके मुँह में भी छाले पड़ गए थे। जब उत्तर देना नितांत आवश्यक हो गया, तब संक्षेप में कह दिया—"मालिक से कहना।"

मोहन ने कहा—"हमारे मालिक तो—"

"चुप रह बदमाश !"—रामधन ने कहा। कहने का अभिप्राय यह था—मालिक मैं नहीं हूँ। उच्चारण-भंगी का अभिप्राय था—मालिक हूँ तो मैं।—"बड़ी देर से बक-बक लगाए है। चुका नहीं सकता, तो कर्ज़ा लिया ही किसलिये था ?"

रामधन के साथ वह ज्वालाप्रसाद की कोठी पर जा पहुँचा।

ज्वालाप्रसाद ने अपने स्वर में संसार की समस्त प्रभुता भरकर कहा—"वादे बहुत हो चुके। अब हमारे रुपए अदा कर दो। नहीं तो अच्छा न होगा।"

मोहन ने कहा—"मालिक की बातें ! खाने को मिलता नहीं, रुपए कहाँ से आएँ ?"

बातों-ही-बातों में ज्वालाप्रसाद की जीभ की ज्वाला बेहद बढ़ उठी। 'नमकहराम', 'सुअर' आदि जितनी उपाधियों से एकदम वह निरीह मंडित हो उठा, उस सबके लिखने की यहाँ आवश्यकता नहीं।

मोहन घर न जा सका। रुपए अदा कर दो और चले जाओ, बस इतनी ही बात थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिवू ने तीसरे पहर घर आकर देखा—दद्दा नहीं हैं। मालूम हुआ—सबेरे ज्वालाप्रसाद के आदमी के साथ गए थे। दोपहर को रोटी खाने भी नहीं आए।

शिवू झपाटे के साथ घर से निकलकर ज्वालाप्रसाद के यहाँ पहुँचा। बाप को मुँह सुखाए, पसीने-पसीने एक जगह बैठे देखा। बोला—"चलो। आज रोटी नहीं खानी है?"

आवाज़ सुनकर दूर से ज्वालाप्रसाद ने कहा—"कौन है, शिवुआ? दाम लाया या यों ही लिवाने आ गया?"

शिवू ने अपने कर्कश कंठ को और भी कर्कश करके कहा—"तुम अपनी रुपट्टी लोगे या किसी की जान? अरे कुछ तो दया होती। बूढ़े ने सबेरे से पानी तक नहीं पिया। तुम कम-से-कम चार दफे भोजन ठूँस चुके होगे।"

मोहन लड़के का ढंग देखकर घबरा उठा। बोला—"अरे हरामजादे, कुछ तो समझ की बात कर। किससे किस तरह बोलना चाहिए, आज तक तुझे यह शऊर भी नहीं आया।"

"न आने दो। चलो, उठो। मैं तुम्हें यहाँ कसाई की गाय की तरह न मरने दूँगा। रामपुर की हाट में सोमवार को बैल बेचकर उनकी कौड़ी-पाई चुका दूँगा।" कहकर शिवू ने बाप का हाथ पकड़ा, और उसे झझकोरता हुआ साथ ले गया।

ज्वालाप्रसाद हत-बुद्धि होकर ज्यों-के-त्यों बैठे रहे। उन्होंने शिवू के-जैसा निर्भय आदमी न देखा था। उनके मुँह पर ही उन्हें क़साई बना गया! क्रोध की अपेक्षा उन्हें डर ही अधिक मालूम हुआ। वे भी उसी हाट में रामपुर जा रहे थे। आजकल डाकुओं का बड़ा ज़ोर था। यह शिवुआ भी तो डाकुओं में नहीं है? कैसा ऊँचा-पूरा हृष्ट-पुष्ट पट्ठा है! बोलने में किसी का डर नहीं; चलने में किसी का बंधन नहीं। दिन-भर फिर किसी काम में ज्वालाप्रसाद का मन नहीं लगा। बार-बार उसका तेज-दृप्त चेहरा उन्हें याद आता रहा।

दो दिन में ही ऐसा जान पड़ने लगा, मानो मोहन बहुत दिन का बीमार हो। दिन-भर वह बैल के विषय में ही सोचा करता। रात को उठकर कई बार बैल के पास जाता। दिन में और लोगों के सामने अपना प्रेम पूर्ण रूप से प्रकट करते हुए उसे संकोच होता था। रात के एकांत में उसे अवसर मिलता। बैल के गले से लिपटकर प्रायः वह आँसू बहाने लगता। यदि कभी शिवू उसका यह आचरण देख लेता, तो उसे ऐसा जान पड़ता, मानो वह कोई अपराध कर रहा हो।

हाट जाने के एक दिन पहले उसने शिवू से कहा—"एक बात बेटा, मेरी मानना। बैल किसी भले आदमी को देना, जो उसे अच्छी तरह रक्खे। दो-चार रुपए कम मिलें, तो ख्याल न करना।"

शिवू बिगड़कर बोला—"तुम्हारी तो बुद्धि बिगड़ गई है। जब देखो, 'बैल-बैल' की रट लगाए रहते हो। मैं मर जाऊँ, तो भी शायद तुम्हें बैल के जितना रंज न हो। बैल जिए, या भाड़ में जाय, मुझे कोई मतलब नहीं। जो ज्यादा दाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देगा, मैं उसी को बैल दूँगा। हमारा ख्याल कौन रखता है? मैं भी किसी का न रक्खूँगा। उस कसाई के रुपए उसके मत्थे मार दूँ, मैं तो यही चाहता हूँ। बस।"

मोहन चुपचाप सुनता रहा। थोड़ी देर बाद एक गहरी साँस लेकर वहाँ से हट गया।

जिस समय बैल की रस्सी खोलकर शिवू हाट के लिये जा रहा था, वहाँ मोहन न था। किसी काम के लिये जाने की बात कहकर वह पहले ही बाहर चला गया था।

× × ×

बैल बेचकर शिवू घर लौटा आ रहा था। रुपए उसकी अंटी में थे। तो भी आज उसकी चाल में वह तेजी नहीं थी, जो जाते समय थी। न-जाने कितनी बातें उसके भीतर आ-जा रही थीं। बैल के बिना उसे सूना-सूना मालूम हो रहा था। आज के पहले वह यह बात किसी तरह न मानता कि उसके मन में भी उस क्षुद्र प्राणी के लिये प्रेम था। मनुष्य अपने आपके विषय में जितना अज्ञान है, कदाचित् उतना और किसी विषय में नहीं। बार-बार उसे बैल की सूरत याद आती। उसके ध्यान में आता, मानो बिदा होते समय बैल भी उदास हो गया था। उसकी आँखों में आँसू छलक आए थे। बैल का विचार दूर होता, तो बाप का सूखा हुआ चेहरा सामने आ जाता। बैल और बाप मानो एक ही चित्र के दो रूप थे। लौट-फिरकर एक के बाद दूसरा उसके सामने आ-आ जाता था। आह! उसका बाप इस बैल को कितना प्यार करता था! उसे अनुभव होने लगा कि वह बैल उसका भाई ही था। एक ही पिता के वात्सल्य-रस से दोनो पुष्ट हुए थे। जो बाप जानवर के लिये इतना प्रेमातुर हो सकता है, वह उसके लिये न-जाने क्या करेगा? सोचते-सोचते उसका हृदय पिता के लिये आर्द्र हो उठा। हाय! वह अब तक ऐसे स्नेहशील पिता को भी न पहचान सका। उसका औद्धत्य आज अपने आप पराजित हो गया था।

घने वन की छाती पर पत्थर की पक्की सड़क, दोनो ओर के वृक्षों की छाया का उपभोग करती हुई, निर्जन और बस्ती की परवा न करके, बहुत दूर तक चली गई थी। दूर-दूर तक आदमी का चिह्न तक दिखाई न देता था। बीच-बीच में दो-एक हिरन छलाँगें मारते हुए निकल जाते थे। अचानक शिवू ने देखा—एक जगह बहुत-सी बैल-गाड़ियाँ ढिली हुई हैं। एक ओर की निर्धनता के आधार पर ही दूसरी ओर की सधनता अवलंबित है, मानो यही दिखाने के लिये ऊँची सड़क के दोनो ओर लगातार नीची खंदकें चली गई थीं। दो-तीन सौ आदमी उन खंदियों में चुपचाप दूर तक श्रेणी-बद्ध बैठे हुए थे। शिवू ने समझा, सड़क पर पुलिस के आदमी हैं। कुछ वसूल कर लेने के लिये इन आदमियों को परेशान कर रहे हैं। पुलिस का विचार आते ही उसका गर्वित हृदय विद्रोही हो उठा। विचारों की शृंखला छिन्न-भिन्न हो गई। वह तेजी से चलने लगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"कौन है, खबरदार, खड़ा रह !"

शिवू ने देखा—पुलिस के सिपाहियों की पोशाक में बंदूकें लिए हुए पाँच आदमी हैं। मुँह कपड़े से इस तरह बाँधे हुए हैं कि सूरत दिखाई न दे सके। बीच सड़क पर एक कपड़ा बिछा हुआ है। उस पर रुपए, पैसे और गहनों का ढेर लगा है। शिवू को समझने में देर नहीं लगी—डाकू हैं, सिपाही नहीं। दिन-दहाड़े लूट हो रही है। सड़क के नीचे खंदियों में जो लोग बैठे हैं, वे लुट चुके हैं। डाकुओं ने धन के साथ मानो उनकी गति और वाणी भी अपहृत कर ली है।

एक डाकू कड़ककर बोला—"कौन है; चला ही आ रहा है ? खड़ा हो जा। रख दे जो कुछ तेरे पास हो।"

शिवू ने देखा, अब रुपए जाते हैं। उसे रुपयों का मोह कभी न था। रुपया-पैसा उड़ाना ही उसका काम था। परंतु ये रुपए—ये रुपए किस तरह आए हैं, यह बात वह अभी-अभी अनुभव करता आ रहा था। एक क्षण के एक हिस्से में उसे बाप का सूखा हुआ चेहरा याद आया, और दूसरे क्षण उस महाजन का, जिसने रुपए चुकाने के लिये उन्हें तीसरे पहर तक भूखा-प्यासा रक्खा था। ज्यादा विचार करने का अवसर न था। वह छाती तानकर खड़ा हो गया। बोला—"मैं रुपए नहीं दूँगा।"

बोलनेवाला डाकू शिवू का सुदृढ़ कंठ-स्वर सुनकर स्तंभित हो गया। इतने आदमी अभी-अभी लूटे गए हैं, इस तरह तो कोई नहीं कह सका।

दूसरा डाकू बंदूक़ का कुंदा मारने के लिये उस पर झपटा। शिवू ने बंदूक़ के कुंदे को इस तरह पकड़ लिया, जिस तरह सँपेरे साँप का फन पकड़ लेते हैं। अपने को आगे ठेलता हुआ वह बोला—"तुम मुझे मार सकते हो, परंतु रुपए नहीं छीन सकते। ये रुपए मेरे बाप के कलेजे के खून में तर हैं। मेरे जीते-जी महाजन के सिवा इन्हें कोई नहीं ले सकता।" यह कहकर शिवू ने अपने पूरे वेग के साथ निकल जाना चाहा। तब तक पाँचो डाकुओं ने घेरकर उसे पकड़ लिया। वह उच्च कंठ से फिर चीत्कार कर उठा—"छोड़ दो। मैं रुपया नहीं दूँगा।"

शिवू का चीत्कार सुनकर लुटे हुए लोग खंदियों में उठकर खड़े हो गए। देखने लगे—कौन है, जो प्रत्यक्ष मौत का सामना कर रहा है।

डाकुओं ने एकदम देखा—वे केवल पाँच हैं, और दो-तीन सौ आदमी उनके विपक्ष में जा खड़े हुए हैं। उन्हें विस्मय करने का भी समय नहीं मिला कि उन्होंने बंदूक़ के बल पर एक-एक, दो-दो करके इतने आदमी कैसे लूट लिए हैं। यदि ये इसी उजड्डु की तरह बिगड़ खड़े हों, तो कौन इनका सामना कर सकता है ? भय और साहस संक्रामक वस्तुएँ हैं। शिवू का साहस देखकर उधर लुटे हुए लोगों का भय भी दूर हो रहा था। देखने तक का समय न था, परंतु डाकुओं ने स्पष्ट देख लिया—एक साथ सब लोगों के भाव बदल गए हैं। उन लोगों में से कुछ खंदियों पार करके सड़क तक भी नहीं आ सके कि अब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बंदूकें हाथ में लिए हुए द्रुत गति से सड़क के नीचे उतर गए। लूट का माल उठाने में समय नष्ट करने की अपेक्षा अपने प्राण लेकर भागना ही उन्हें अधिक मूल्यवान् प्रतीत हुआ। थोड़ी ही देर में वे लोग आँखों से ओझल हो गए।

लोगों ने आकर शिवू को चारो ओर से घेर लिया। अधिकांश स्त्री-बच्चे और पुरुष अब तक भय के मारे काँप रहे थे। रोग की तरह दूर हो जाने पर भी भय शरीर को कुछ समय के लिये निःशक्त-सा कर रखता है। स्त्रियाँ शिवू को आशीर्वाद दे रही थीं—"बेटा, तेरी हजारो उम्र हो!" परंतु शिवू इस समय भी अपने आपे में न था। वह सोच रहा था—इनमें अधिकांश ऐसे आदमी हैं, जो रुपए के लिये बुरे-से-बुरा काम कर सकते हैं। रुपया ही इनका सब कुछ है। उसी रुपए को इन्होंने इस प्रकार कैसे लुट जाने दिया?

भीड़ में से एक आदमी निकलकर शिवू के पास आया। बोला—"कौन हैं, शिवू माते? तुमने आज इतने आदमियों को—"

शिवू ने देखा—ज्वालाप्रसाद हैं। शरीर पर धोती के सिवा और कोई वस्त्र नहीं। डाकुओं ने रुपए-पैसे के साथ उनके कपड़े भी उतरवा लिए थे। उन्हें देखते ही उसका मुँह घृणा से विकृत हो उठा। अंटी से रुपए निकालकर उसने कहा—"बड़ी बात, 'शिवू माते' तुम्हें आज यहीं मिल गए। लो, अपने रुपए चुकते कर लो। अब लुट जायँ, तो मैं जिम्मेदार नहीं।"

विवाह-विज्ञापन

[लेखक, लखनऊ-युनिवर्सिटी के हिंदी-लेक्चरार पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०]

भट्टजी हास्य-रस के सिद्धहस्त लेखक हैं। आप ही की कुशल लेखनी का यह चमत्कार है। पढ़ते-पढ़ते आप लोट-पोट हो जायँगे। पुस्तक में दो तिरंगे और ४ सादे चित्र भी हैं। लेखक और चित्रकार, दोनो की कारीगरी एक साथ इस पुस्तक में देखने को मिलती है। पुस्तक को एक बार अवश्य देखिए, हँसी का खज़ाना है। एक विवाह-लोलुप की उछल-कूद देखने ही लायक़ है। मूल्य १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय रक्त का सदुपयोग

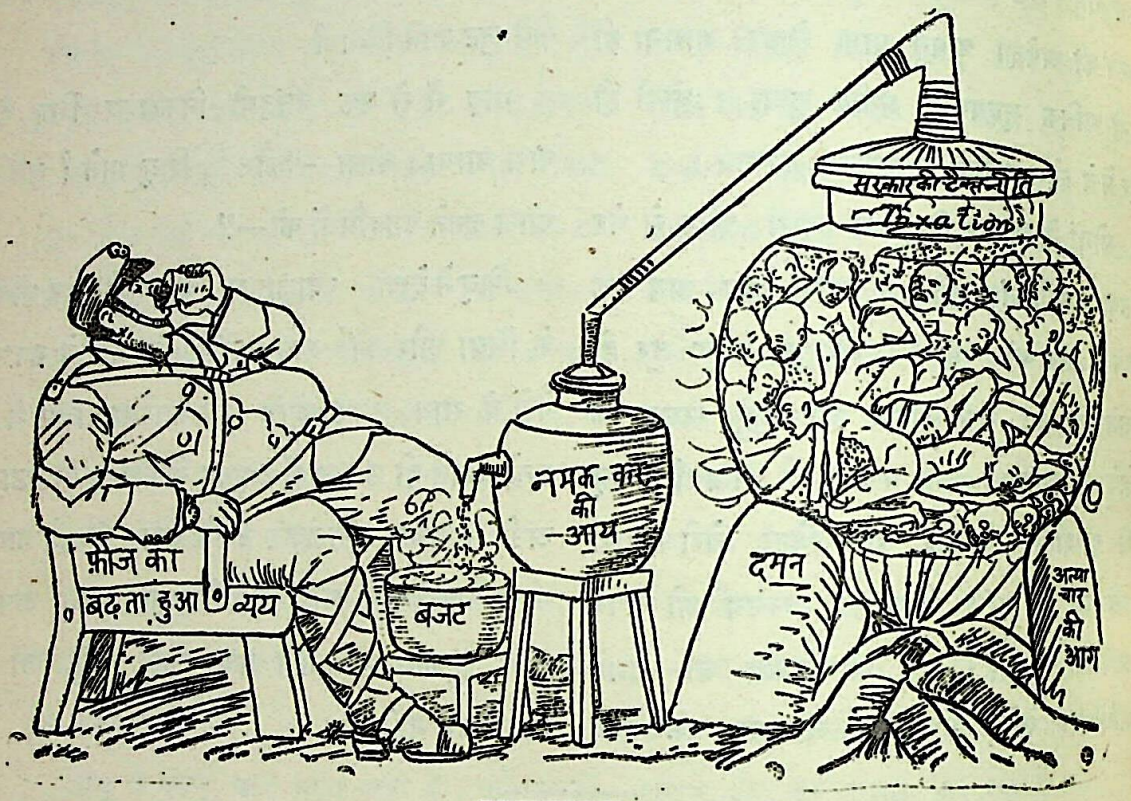

अग्निसंजीवन

स्वादिष्ट

मंदाग्नि, अजीर्ण, क़ब्ज़, अफ़रा, दाह इत्यादि पेट-संबंधी सब रोगों की उत्पत्ति, कारण तथा रोगों से बचने के उपाय और स्वास्थ्य-संबंधी अनेक नियमों को जानने के लिये हिंदी और अँगरेज़ी में लिखी

"स्वास्थ्य-संदेश"-नाम की पुस्तक मुफ़्त मँगाइए

पता—अग्नि-संजीवन-कार्यालय, बंबई नं० २

एजेंट— लखनऊ हिमालियन स्टोर अमीनाबाद-पार्क | बनारस जगन्नाथदास-बलभद्रदास चौक | इलाहाबाद दुबे-ब्रदर्स चौक | कानपुर रामगुलाम शिवगुलाम नयागंज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. भारत का पुराना अंग-राज्य

उत्तर-भारत के पुरातन-कालीन ऐतिहासिक राज्यों में 'अंग-राज्य' का महत्व-पूर्ण स्थान है। अथर्ववेद के इस मंत्र में अंग-राज्य का स्पष्ट उल्लेख है—

"गंधारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः।"

(५।२२।१४)

महाभारत और रामायण में भी अंग-राज्य के विषय में अनेक कथाएँ आई हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि इस देश में ययाति के पुत्र 'पुरु' राजा के वंश का ग्यारहवाँ व्यक्ति 'बलि'-नामक राजा राज्य करता था। बलि का समकालीन वैदिक ऋषि दीर्घतमा-नामक है। बलि का एक पुत्र अंग नाम का था। कहा जाता है, इसी 'अंग' के राजपुत्र होने के कारण देश का नाम अंग पड़ गया है। किंतु इस तर्क पर हमारा विश्वास नहीं होता। किसी देश के राजा के लड़के के नाम-मात्र से ही देश का नाम रख दिया जाय, यह मानने योग्य नहीं। इस तर्क की अपेक्षा रामायण की कथा को हम अधिक महत्व दे सकते हैं। कथा इस प्रकार है—

कामदेव ने पुष्प-धन्वा का प्रयोग भूतभावन भगवान् रुद्र पर जिस समय किया, तो शिव ने क्रुद्ध होकर तृतीय नेत्रोद्घाटन करके उसे भस्म कर अनंग बना दिया। उस अनंग को सरयू और भागीरथी के मध्य भू-भाग में पुनः 'अंग'-लाभ हुआ, अतएव इस देश का नाम 'अंग-देश' है। इस देश को 'कामाश्रय' भी कहते हैं। यह नाम भी ऊपर की कथा का समर्थन करता है। अस्तु।

पहले अंग-राज्य के दो प्रमुख नगर थे—'मालिनी' और 'चंपा'। कुछ लोग कहते हैं कि 'मालिनी' का ही दूसरा नाम 'चंपा' था। किंतु 'त्रिकांड-शेष'-नामक ग्रंथ में इसका एक और नाम मिलता है। वह नाम 'पुष्पवति' है। चंपा-नगरी का नाम महाभारत और भागवत में भी मिलता है। इससे पता चलता है कि प्राचीन काल में यह नगरी हिंदुओं के पवित्र तीर्थ में मानी जाती थी। आगे चलकर इसे जैनों ने अपना केंद्र बना लिया था। जैन-ग्रंथों में मिलता है कि इस नगरी का प्रतिष्ठापक किसी श्रेणिक राजा का पुत्र कोणिक (कोणिक?) था। हरिवंश-पुराण में लिखा है कि इस अंग-देश में—अंग, दधिवाहन, दिविरथ, दशरथ, लोमपाद, चतुरंग, पृथुलाक्ष, चंप, हर्यंग, भद्ररथ,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बृहत्कर्मा, बृहद्धर्म, बृहन्मल, जयद्रथ, दृढ़रथ, विश्वजित् और कर्ण इत्यादि अठारह राजा हुए हैं, परंतु ऐसा मालूम होता है कि इनमें से कुछ नाम रह गए हैं। 'पौरव' अंग-देश में बड़ा दानी और पराक्रमी राजा हो गया है। कथा में आता है कि पौरव ने एक अश्वमेध किया था। उस समय १ लाख अश्व, १ हज़ार गज, १ हज़ार गऊ और एक लाख सुवर्ण-माला का दान किया था। हरिवंश की इस नामावली और जैन-ग्रंथों में दी हुई नामावली में बड़ा अंतर है। जैन-ग्रंथ में किसी 'श्रीपाल' राजा का वर्णन आया है। पौराणिक नामावली में जिस 'चंप'-नामक राजा का नाम आया है, उसके प्रपौत्र बृहन्मल का एक 'विजय'-नामक लड़का था, उसको 'ब्रह्मक्षत्रोत्तर' की उपाधि थी। यह राजा भी बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। इस विजय उर्फ़ ब्रह्मक्षत्रोत्तर के प्रपौत्र का पुत्र 'अधिरथ' था। इस अधिरथ ने सूत-वृत्ति स्वीकार कर ली थी, इसलिये क्षत्रिय-समाज से बहिष्कृत कर दिया गया था। कुंति-पुत्र कर्ण की इसी 'अधिरथ' ने रक्षा की थी—लालन-पालन किया था, अतएव वेणी-संहार करते समय अश्वत्थामा ने कर्ण को सूत-पुत्र कहकर ताना मारा था। अंग-राज्य कौरवों के राज्य का ही एक अंश था। दुर्योधन ने कर्ण को इसे देकर उसका सम्मान बढ़ाया था, परंतु कर्ण अपने अंग-राज्य में कम रहता था, अधिकतर वह हस्तिनापुर में रहकर पांडवों के विरुद्ध कौरवों की मदद किया करता था। महाभारत में कहा है कि कर्ण के 'वृषसेन' और 'वृषकेतु'-नामक दो पुत्र थे। महाभारत-संग्राम में ये दोनो काम आ गए। इनके अतिरिक्त और भी पुत्र थे। वे महाभारत समाप्त हो जाने पर, अंग-देश पर, कुछ समय तक, शासन करते रहे हैं। महाभारत के 'कर्ण-पर्व' के अवसर पर कर्ण एवं शल्य के संवाद में शल्य के मुँह से अंग-देश की जनता के आचार एवं व्यवहार के विषय में निंदा-व्यंजक भाव निकले हैं। इससे ज्ञात होता है कि उस समय अंग-देश की प्रजा के आचारादि आर्य-जनता के समान न थे।

पौराणिक काल से निगाह उठाकर इधर अर्वाचीन काल में देखा जाय, तो सर्वप्रथम बुद्ध-कालीन इतिहास में हमें 'अंग-राज्य' का उल्लेख मिलता है। महर्षि गौतम बुद्ध के समय आर्यावर्त में अंग, मगध, काशि, कौसल, वज्जि, मल्ल, चेदि, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अश्वक, अवंती, गांधार और कांबोज आदि १६ राज्य थे। बुद्ध के समय अंग-देश का शासक ब्रह्मदत्त था। 'महापरिनिब्बाण सुत्त' में लिखा है कि "वह ब्रह्मदत्त बुद्ध लोगों को उपदेश करता हुआ चंपानगरी के निकट 'भद्द' (भद्र ?)-नामक गाँव में गया था।"

'अंग-राज' ने बौद्ध परिव्राजकों के लिये एक आश्रम भी बनवा दिया था। इस आश्रम में भिक्षु लोग चातुर्मास्य निवास करते थे। इस आश्रम की साहित्य-क्षेत्र में भी पर्याप्त प्रसिद्धि थी। दशकुमारचरित और कादंबरी आदि बुद्धेतर ग्रंथों में भी इसका वर्णन मिलता है। जैनों के बारहवें तीर्थंकर वसुपूज्य इसी चंपानगरी में पैदा हुए थे। इसी नगर के निवासी एक ब्राह्मण की कन्या 'सुभद्रांगी' थी, जिसकी कोख से सम्राट् अशोक का जन्म हुआ है। 'लंकावतार सूत्र' का प्रसिद्ध निर्माता बौद्ध पंडित 'जिन' महाशय की जन्म-भूमि 'चंपानगरी' थी। सुविख्यात स्मृतिकार कात्यायन का उत्पत्ति-स्थान यही नगरी है। बुद्ध-जातक-कथा से ज्ञात होता है कि चंपानगरी बौद्ध-कालीन भारत की प्रधान व्यापार-नगरी थी।

मगध-देश और अंग-देश के राजों में परस्पर घोर वैमनस्य, अनेक पीढ़ियों तक, चलता आ रहा था। अंत में मगध के विख्यात वीर महाराज अजातशत्रु ने अंग-देश को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। शताब्दियों की चली आनेवाली अंग-राज्य की स्वतंत्रता आख़िर नष्ट होकर रही। बहुत समय तक वह फिर भी मांडलिक राज्य के नाम से नाम-शेष रही। सम्राट् स्कंदगुप्त विक्रमादित्य के समय अंग-देश में कर्णसेन-नामक राजा शासन कर रहा था (स्कंदगुप्त वि० दि० का समय ई० स० ४५० से ४८८ समझा जाता है)। कर्णसेन का स्कंदगुप्त से स्नेह-संबंध था। इसके बाद मालूम होता है कि गुप्त-साम्राज्य नष्ट कर देने के अनंतर हूणों ने अंग-देश पर चढ़ाई की होगी।

वामन-पुराण में उल्लेख है कि चंपानगरी में 'नऊ नागों' ने राज्य किया है। कुछ ऐतिहासिक मानते हैं कि ये नऊनागनऊ हूण होंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह कहना असंगत न होगा कि ईसा की पाँचवीं सदी में अंग-राज्य नाम-शेष हो गया। इस समय के बाद वहाँ किसी राजा के होने का पता नहीं चलता, न किसी ग्रंथ की ही उपलब्धि होती है।

आज तक अंग-देश के विषय में जितनी उपलब्ध सामग्री है, उसके आधार पर "गौड़-राजमाला"-नामक ग्रंथ प्रकाशित हुआ है। हमारे इन विचारों का आधार भी यही ग्रंथ है। अस्तु।

सूर्यनारायण व्यास

× × ×

२. कामना

धन-वैभव की चाह नहीं है,
एक यही है मुझे जनूँ !
मातृ-भक्त जिस पथ में जावें,
मैं उस पथ की धूल बनूँ !!

राज्य-लाभ की चाह नहीं है,
नहीं अमर-पद का है ध्यान !
हों स्वदेश-हित अर्पण तन, मन,
मेरे जीवन, मेरे प्राण !!

देश-व्यथा पर रोनेवाली,
आँखों का मैं नीर बनूँ !
देश-भक्त वीरों का पालक,
वीर-जननि का क्षीर बनूँ !!

चाह नहीं 'रागों' की मुझको,
स्वयं बनूँ मैं ऐसा राग !
देश-भक्त गायन कर जिसको
खेलें शोणित-रँग से फाग !!

कोमलता की चाह नहीं है,
बनूँ आग की चिनगारी !
'उथल-पुथल' सहसा हो जाए,
भारत-मा बिहँसे प्यारी !!

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

× × ×

३. जेनरल प्राइमो डी रिवेरा

पेरिस में स्पेन के नायक जेनरल प्राइमो डी रिवेरा १६ मार्च को अकस्मात् परलोकवासी हो गए। मृत्यु के समय आपकी उम्र ५९ साल की हुई थी। महीने के लगभग हुआ होगा, आपने स्पेन-सरकार के प्रधान पद से अवकाश ग्रहण कर लिया था। आपके पद-त्याग की चर्चा उस समय संसार के प्रसिद्ध सब संवाद-पत्रों में हुई थी। राष्ट्रीय संसार में "डिक्टेटर" प्राइमो डी रिवेरा एक प्रसिद्ध व्यक्ति थे। आप इटली के डिक्टेटर मुसोलिनी की तरह अकेले ही स्पेन के सब तरह के शासन-कार्य बड़ी कुशलता तथा कठोरता से चला रहे थे। तमाम उम्र आप विरोधों के प्रतिकूल लड़ते रहे। आपके अंतिम जीवन को शायद आपकी व्यर्थता ही निस्तैल दीपक की तरह मृत्यु के अंधकार की ओर आकर्षित कर ले गई। इसीलिये शायद फ़्रांस की राजधानी में विश्राम करने के उद्देश्य से जाकर अकस्मात् मृत्यु की गोद में ही आपको चिरकालिक विश्राम करना पड़ा।

जेनरल प्राइमो डी रिवेरा का जन्म १८७१ ई० में हुआ था। मोरक्को में रिफ़ों के ख़िलाफ़ स्पेन-सरकार की तरफ़ से एक दूसरे सेनापति की हैसियत से आप लड़े थे, और तभी से आप देश में परिचित भी हुए। १९१७ ई० से स्पेन के जितने लोगों ने राजसिंहासन की आड़ में रहकर अपना प्रभाव फैलाया था, उनमें जेनरल डी रिवेरा विशेष रूप से उल्लेख-योग्य हैं। १९१७ से १९२० तक आप सिनेट के सदस्य थे। आप मोरक्को की लड़ाई के छोड़ने के पक्ष में थे। योरप के महासमर के समय आपने निष्पक्ष रीति का ग्रहण किया था। १९२३ में, स्पेन में, एक फ़ौजी लड़ाई छेड़कर इटली के मुसोलिनी की तरह आपने पार्लामेंटरी शासन का अंत कर दिया, और ख़ुद ही गवर्नमेंट के कर्णधार बन गए। स्पेन को पूरे तौर से संगठित कर लेना ही आपका मतलब था। इसी विचार से आपने कितने ही फ़ौजी क़ानूनों में परिवर्तन भी किया।

आपकी शासन-नीति का यह उद्देश्य था कि जिन अफ़सरों की सरकार को ज़रूरत नहीं, वे अलग कर दिए जायँ। आलस्य और नैतिक पतन से कर्मचारियों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का उद्धार किया जाय। सरकार की आर्थिक शक्ति बढ़ाई जाय। रेल-मार्गों का विस्तार तथा उसमें तरक़्क़ी की जाय। श्रमिकों के समझौते के लिये अदालत में दोनो तरफ़ के लोग रहें, शिक्षा की नीति में संस्कार किया जाय। राजनीति और नैतिक पतन से विचार-विभाग को मुक्ति दी जाय, विभिन्न प्रांतों की सांप्रदायिकता हटा दी जाय और निर्वाचन-नीति के तमाम दोषों का मूलोच्छेद कर दिया जाय।

इस तरह की ऊँची अभिलाषा से भरी हुई एक विशाल स्कीम लेकर आपने शासन-कार्य का श्रीगणेश किया था। परंतु इसमें आपको सफलता नहीं मिली। मोरक्को में स्पेनवालों की तरफ़ से जो वाहिनी आप भेज रहे थे, उसे भी १९२६ के पहले समाप्त नहीं कर सके और इसमें भी फ्रांस के साथ आपको सहयोग करना पड़ा था।

१९२४ ई० में मोरक्को की चढ़ाई का कुल भार आपने अपने कंधों पर ले लिया। उस समय किसी-किसी विषय पर आपके सहकारियों के साथ आपका मतभेद भी हुआ। उसी साल, नवंबर के महीने में, कैटालोनिया में राजद्रोह के बादल छा गए। विद्रोही लोग चाहते थे कि राजतंत्र की जगह साधारण-तंत्र की स्थापना हो, परंतु इस विद्रोह का दमन कर दिया गया। १९२५ ई० में फ्रांसीसियों की सहायता से आप बड़े उत्साह से मोरक्को में रिफ़ों के विरुद्ध लड़ाइयाँ लड़ते रहे और बहुत कुछ सफल भी हुए। इसी लड़ाई में गर्मियों के दिनों में, आपने आजिर दख़ल कर लिया, और इसके फल-स्वरूप स्वयं "ड्यूक ऑफ़् आजिर" हो गए।

प्राइमो डी रिवेरा ने स्पेन में इटली के फ़ैसिस्टों की तरह के क़ानून चलाए। कप्तान जेनरल वेलर ने आपकी शिकायतें की थीं, जिनका फल यह हुआ कि आपके द्वारा वे पदच्युत किए गए यद्यपि स्पेन के राजा एलफ़ोनसो ने स्वयं उनके लिये आपसे प्रार्थना की थी। इस तरह प्राइमो डी रिवेरा शासन-कार्य में अद्वितीय हो गए। जिस मंत्रि-सभा का आप संगठन करते थे, उसमें स्वयं ही अपनी पसंद के अनुसार जेनरलों को चुनते थे। क्रमशः उनके एकच्छत्र शासन से लोगों में असंतोष फैलने लगा। १९२१ ई० के नवंबर-महीने में नौ और सामरिक विभाग के लोगों ने आपकी आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। आपने इन लोगों को क़ैद कर लिया। परंतु इटली के मुसोलिनी की पीठ देखनेवाली जिस तरह एक बड़ी लोक-शक्ति है, आपके पीछे वैसी कोई शक्ति नहीं थी। आपने एक संगठन तो किया था, परंतु वह सफल नहीं हो सका।

१९२६ से फिर संपूर्ण देश आपकी तरफ़ से असंतुष्ट हो गया। आपकी सार्वभौमिक प्रभुता के फल-स्वरूप सेना, नौ-विभाग तथा साधारण जन भी उग्र हो उठे। आपकी हत्या के लिये अनेक जगहों में षड्यंत्र होने लगे। एक दफ़ा जंगी क़ानून जारी कर आपने १५०० अफ़सरों को पकड़कर पदच्युत किया। समय-समय पर राजा एलफ़ोनसो के साथ भी आपका वाद-विवाद होता रहा। समस्त देश-व्यापी इस पुंजीभूत असंतोष के कारण अंत में आपको शासन-कार्य से अलग हो जाना पड़ा। आपके कठोर हाथों से मुक्ति प्राप्त करने भी इस समय जिन्हें जेनरल वेरेंगार के पद पर राजा ने प्रतिष्ठित किया है, उनसे नौजवान तथा साधारण जनता ख़ुश नहीं है। सच बात यह है कि स्पेन का सामरिक दबाव सह नहीं सकता। उसके साधारण लोग शासन के गुरु भार से दबे जा रहे हैं। इसकी प्रतिक्रिया के फल-स्वरूप वहाँ के नौजवानों में विद्रोह के लक्षण दीखने लगे हैं। वे लोग वर्तमान राजा का भी उच्छेद कर देना चाहते हैं। इसके भीतर ही "राजतंत्र का नाश हो", "साधारण-तंत्र की विजय हो" के नारे बुलंद हो रहे हैं।

अब डी रिवेरा विवाद के विष से दूर एक दूसरे लोक को चले गए हैं, परंतु ऐसा नहीं देख पड़ता कि उनकी मृत्यु के बाद देश में शांति की स्थापना हो। स्पेन की वर्तमान राजनीति जिस शासन-तंत्र पर प्रतिष्ठित है, उसका कुछ सुधार हुए बिना साधारण लोगों को संतोष न होगा। इसलिये स्पेन के बादशाह के ख़िलाफ़ भी आंदोलन ज़ोर पकड़ता जा रहा है।

'निराला'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

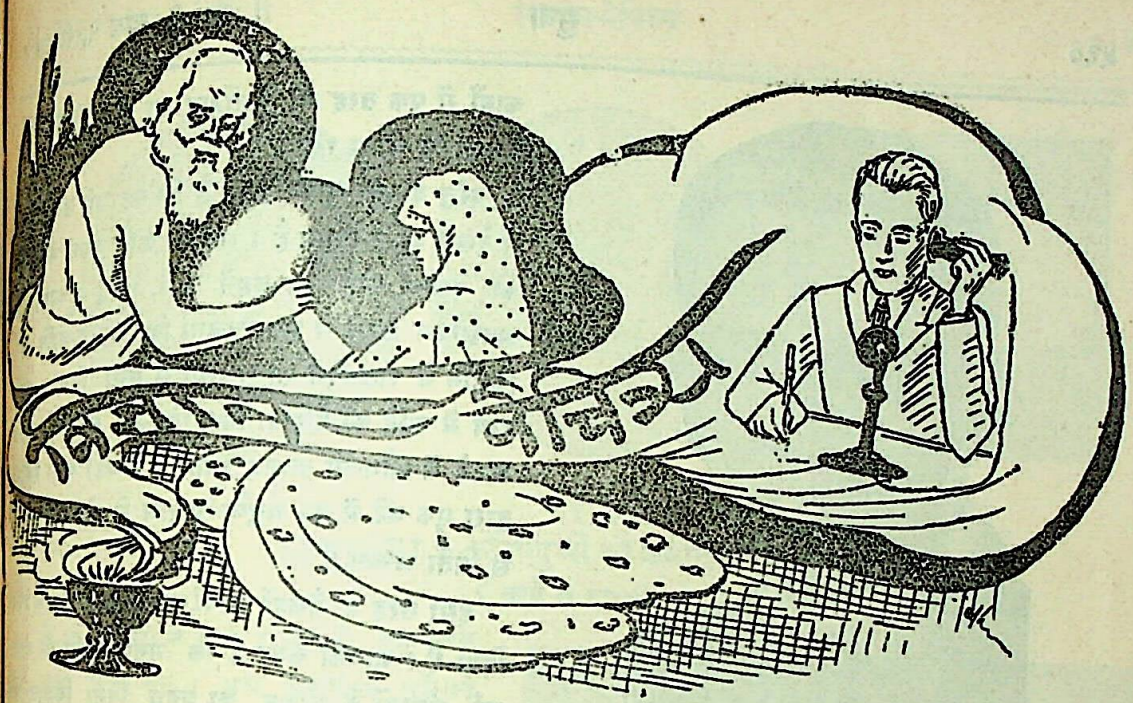

१. गायन-घड़ी

प्रातःकाल उठने के लिये आजकल पढ़े-लिखे लोग प्रायः अलार्म घड़ियों का उपयोग करते हैं। पुराने समय में राजाओं के यहाँ युवतियाँ अपने सुरीले राग के द्वारा निद्रा को भंग कर राजा को उठाती थीं। अलार्म घड़ी है तो बड़ी ही अच्छी चीज़, परंतु जब वह

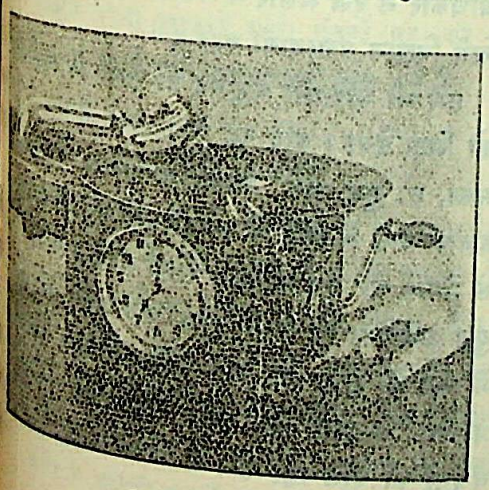

सुरीले रागवाली

कानों के कान फोड़नेवाली कर्कश आवाज़ से सबेरे 'टन-टन' करने लगती है, तब तो बड़ा ही बुरा मालूम होता है, और घड़ी को उठाकर फेंक देने की तबीयत होती है। परंतु विज्ञान ने एक नवीन प्रकार की 'अलार्म' घड़ी बनाई है। जितने समय आपको जागना हो, उतने समय पर आप अलार्म के काँटे को कर दीजिए। नियत समय पर घड़ी सुरीला राग छेड़ देगी और मधुर-मधुर संगीत के द्वारा आपकी निद्रा को शीघ्र दूर कर देगी। इस घड़ी में ग्रामोफ़ोन का रिकार्ड लगा रहता है।

× × ×

२. "विज्ञान मानव-जाति को युद्ध से बचावेगा।"

—डॉक्टर मिलिकान

यह डॉक्टर मिलिकान की भविष्य-वाणी है। यदि किसी अन्य व्यक्ति के मुख से ये शब्द निकले होते, तो हमें विश्वास न होता। हमने विज्ञान के विघातक यंत्रों की करतूतों को ख़ूब सुना और देखा है। परंतु डॉ० मिलिकान संसार का एक बड़ा प्रतिभाशाली वैज्ञानिक है। उसे भौतिक विज्ञान-संबंधी 'नोबल-पुरस्कार' मिला है।

इस नोबल-पुरस्कार के विजेता का कथन है कि गोले-बारूद के पदार्थों और भूमि को उपजाऊ बनाने की वस्तुएँ एक ही-सी हैं। जिन वस्तुओं से मनुष्य-जीवन नष्ट होता है, उन्हीं से कई गुना फ़ायदा भी होता है। जनता की विचार-प्रणाली बड़ी ही विचित्र है। यदि कोई आदमी बारूद से उड़ा दिया जाता है, तो सारे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डॉ० मिलिकान (नोबल-पुरस्कार के विजेता)

नगर में सन्नाटा हो जाता है, परंतु धीरे-धीरे मृत्यु के मुख में जानेवाले हज़ारों आदमियों के नाश को देखकर भी लोग उस ओर ध्यान नहीं देते।

इसमें संदेह नहीं कि फ़ौलाद से बंदूकें बनती हैं, परंतु क्या इसी फ़ौलाद से हमारे खेत जोतने के हल, यात्रा करने के लिये मोटरें, सीने के लिये मशीनें आदि हज़ारों चीज़ें नहीं बनतीं? फिर विज्ञान के सिर कलंक का टीका क्यों लगाया जाता है?

डॉक्टर साहब का कहना है कि मेरी राय में अब संसार से युद्ध शीघ्र ही विदा हो जायगा। युद्ध अभी तक वेदांत, आचार-व्यवहार तथा धार्मिक नियमों के होने पर भी लोगों पर आतंक जमाए रहा, परंतु अब उसका भीषण शत्रु विज्ञान पैदा हो गया है। यह इसका नाश किए बिना न छोड़ेगा।

युद्ध उसी समय बंद हो सकता है, जब कि उसके उत्पन्न करनेवाली बातें दूर हो जायँ और इस काम को विज्ञान तन्मय होकर कर रहा है। वह संसार में ऐसी परिस्थितियों को उत्पन्न कर रहा है, जिनसे सब लोग एक ही घर के कुटुंबी हो जायँगे। बे-तार के तार, वायुयान आदि पूर्व और पश्चिम की दूरी को मिटा रहे हैं।

लोग कहते हैं, विज्ञान ने अपने यंत्रों के द्वारा कार्यों में एक तरह की निर्जीवता ला दी। इससे जीवन का आनंद जाता रहा।

परंतु डॉक्टर साहब कहते हैं कि यह भी उपरी दृष्टि से देखने का परिणाम है। भले ही फ़ोर्ड कंपनी के कार्य को देखकर कोई यह कहने लगे, परंतु सूक्ष्मता से अवलोकन करने से पता चलेगा कि मनुष्य-जाति को विज्ञान ने दास-दिन की गुलामी से बचा दिया। भला हाथ में लोहे का हँसिया लिए दिन-भर खेत का अनाज काटने में कौन-सा आनंद आता है? वही काम मशीन द्वारा एक घंटे में कर मनुष्य आराम से शेष घंटे आनंद से बिता सकता है।

इसी तरह के सैकड़ों प्रश्नों का डॉक्टर साहब ने उत्तर दिया है। आपका कथन है कि मनुष्य-जाति की बढ़ती हुई संतानों के भोजन का प्रबंध बिना विज्ञान की सहायता के नहीं हो सकता, और यह बात वास्तव में सत्य भी है। हमारे देश के समस्त अकालों का नाश केवल एक वर्ष में हो सकता है, यदि हम वैज्ञानिक तरीक़ों से खेती की उन्नति की ओर ध्यान दें।

सबसे बड़ी बात यह है कि विज्ञान मनुष्य को शांत चित्त से निष्पक्षपात होकर सोचना सिखाता है। विज्ञान की वर्तमान उन्नति इसी प्रकार की विचार-परंपरा पर निर्भर है। परंतु साधारण मनुष्य अपने दिमाग़ पर अधिकार न रख संसार में विप्लव मचा देते हैं। इसके लिये विज्ञान उत्तरदायी नहीं है।

हमें भी धीरे-धीरे अनुभव हो चला कि विज्ञान युद्ध को मिटा देगा। यदि वह ऐसा करने में सफल न हो सका, तो युद्ध स्वयं उसका सत्यानास कर देगा और हज़ारों वर्षों के प्रयत्न से तथा सैकड़ों मनुष्यों के बलिदान से तैयार की हुई सभ्यता मिट्टी में मिल जायगी। एक युद्ध अमेरिका की सारी सुख और शांति को चण-भर में स्वप्न के तुल्य कर देगा। विज्ञान अपने सार्वभौमिक प्रभावों के द्वारा प्रेम और पारस्परिक निर्भरता के बंधनों को बाँध रहा है। ये बंधन अवश्य ही युद्ध को दूर कर सकेंगे।

× ×

३. इन्फ़्लुएंज़ा के कीटाणु

अधिक समय नहीं हुआ, जब कि सन् १९१८-१९

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

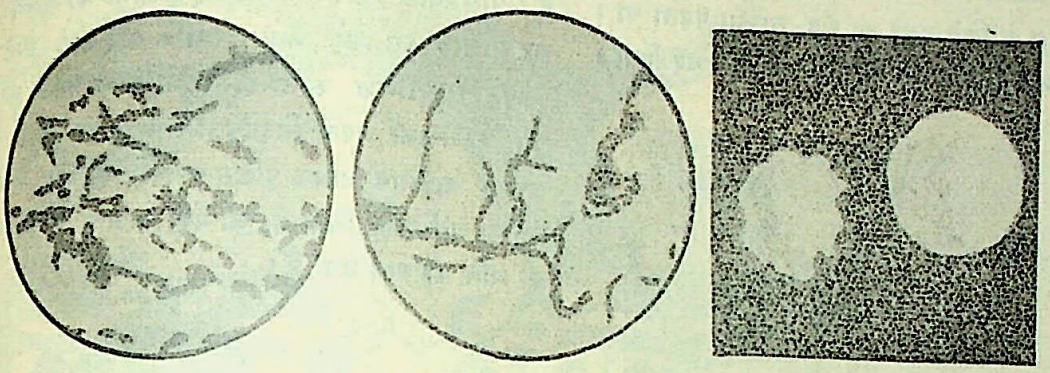

(३) (२) (१)

इन्फ्लुएंज़ा के कीटाणुओं की क्रमानुसार वृद्धि की क़दमें
(बाएँ से दाहनी ओर)

में इस बीमारी ने सारे संसार में महाप्रलय मचा दिया था। उस समय से बड़े-बड़े डॉक्टर इसके मूल कारणों को जानने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। अभी हाल ही में शिकागो के प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर आई० एस्० फ़ाक (I. S. Folk) ने इस बीमारी के कीटाणुओं का पता लगा लिया। उन्होंने उनके बहुत-से फ़ोटो लिए हैं। प्रोफ़ेसर साहब का कथन है कि अब हम शीघ्र ही एक ऐसी दवा को ढूँढ लेंगे, जिसका टीका लगा देने से फिर यह बीमारी न हो सकेगी। उन्होंने अपनी परीक्षाएँ अभी बंदरों पर की हैं, और उसमें उन्हें सफलता भी ख़ूब हुई है।

× × ×

४. मुर्दों के बीच

जरमनी के एक सानबर्ग (Sonneberg)-नामक नगर में एक दूकान है। इस दूकान में मुर्दों के अस्थि-पंजरों का नवीन जीवन होता है। बड़े-बड़े चतुर कारीगर मिट्टी आदि से मनुष्य-शरीर का भीतरी ढाँचा तैयार करते हैं। यही ढाँचे फिर संसार-भर के विद्यालयों में जाते हैं। इनकी सहायता से विद्यार्थीगण शरीर के भीतरी भागों का अध्ययन करते हैं।

यह काम बड़ी बारीकी का है। शरीर के किसी-किसी भाग का आकार मानव-शरीर के समान ही रक्खा जाता है। जैसे कि हाथ-पाँव आदि का, परंतु कई

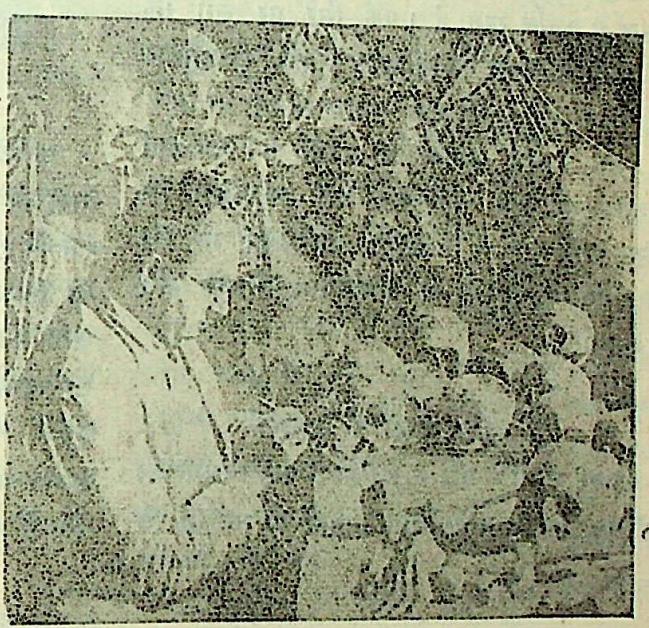

शरार-नमाण-कला

अंगों को कई गुना बड़ा कर देते हैं। आँखों के भीतरी अंगों को कभी-कभी आठगुना बड़ा करके बनाते हैं। हमारे यहाँ के अजुएट यदि इस ओर ध्यान दें, तो बहुत कुछ फ़ायदा हो सकता है।

× × ×

५. काग़ज़वाली पेंसिल

जरमनी पेंसिलों की उन्नति में एक क़दम आगे बढ़ गया। अभी तक पेंसिलों से केवल लिखने का काम लिया जाता था, परंतु कभी-कभी मनुष्य के पास पेंसिल तो होती थी, परंतु किसी बात को नोट करने के लिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसे काग़ज़ के लिये दूसरे का मुँह ताकना पड़ता था। इस नवीन पेंसिल ने इस मुसीबत को दूर कर दिया।

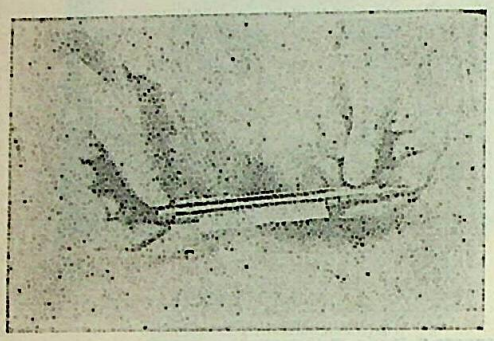

नवीन पेंसिल

पेंसिल में काग़ज़ रहता है। एक सिरे पर लगे स्क्रू को घुमाने से काग़ज़ निकल पड़ता है और इच्छानुसार कट भी जाता है। यदि सब काग़ज़ समाप्त हो जाय, तो दूसरा काग़ज़ लगाया जा सकता है। क्या कोई भारतीय एक ऐसा आविष्कार नहीं कर सकता कि पेंसिल अपने साथ में लिफ़ाफ़ा और टिकट भी रख सके। तब तो पेंसिलों की उपयोगिता में बड़ी वृद्धि हो जायगी।

× × ×

६. मोटरवालों की आफ़त

बड़े-बड़े शहरों में मोटरवाले तेज़ी से गाड़ी चलाते हैं। यहाँ तक कि वे गति-संबंधी नियमों को भंग कर देते हैं। पुलिसवाले बड़े हैरान थे कि इन लोगों को पकड़कर चालान कैसे किया जाय; क्योंकि यदि कोई उन्हें पकड़ने की कोशिश करता है, तो वे अपनी मोटर की गति को घटाकर अपनी निर्दोषिता साबित कर देते हैं। अतएव 'वाल्टमन'-नामक पुलिस-इंस्पेक्टर ने एक ऐसे यंत्र का आविष्कार किया है, जो बड़ी सरलता से मोटर की गति को बता देता है।

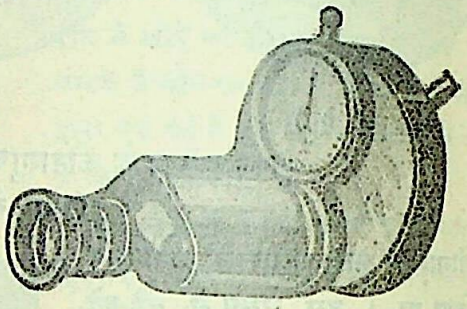

मोटर-गति-सूचक

यह यंत्र दूरबीन के समान है। पुलिसवाला इसके द्वारा गाड़ी की ओर देखता है। वह एक बटन के द्वारा इस यंत्र की एक घड़ी का संचालन करता है और फिर चित्रों को देखकर मोटर की गति, चौड़ाई आदि का हिसाब लगा लेता है। इस यंत्र में तीन विशेषताएँ हैं। पहली तो यह है कि इसमें किसी प्रकार की भूल नहीं होती। दूसरी यह कि इसे मोटर चलानेवाला देख नहीं सकता और तीसरी यह कि यह अँधेरे में भी काम देता है।

संभाषण

[लेखक, सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल भार्गव]

गुरुकुल-काँगड़ी की रजत-जयंती के अवसर पर जो प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन हुआ था, उसी अवसर पर उक्त भार्गवजी ने यह भाषण दिया था। स्थायी साहित्य का मज़ा इसके पढ़ने से मिलता है। हिंदी-भाषा की उन्नति किस तरह हुई, इसका अच्छा विवेचन इसमें है। ४० पौंड का सुंदर ऐंटिक और आर्ट-पेपर और नेत्र-रंजक जिल्द। मूल्य ।), सजिल्द ॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय चित्रकला के प्राचीन सिद्धांत

पिछले लेख में हम बता चुके हैं कि किस प्रकार प्राचीन भारतीय चित्रकार जनता की शिक्षा तथा मनोरंजन के लिये दृष्ट अथवा अदृष्ट चित्रों की रचना किया करते थे। इस लेख में हम उन चित्रों के प्रदर्शन और उपयोग के विषय में कुछ लिखेंगे।

चित्र बनाते समय प्रत्येक प्रकार के मनुष्यों की अभिरुचि का ध्यान रखना प्रत्येक चित्रकार का धर्म समझा जाता था। जो चित्रकार केवल किसी विशिष्ट-वर्ग की अभिरुचि की दृष्टि से चित्र की रचना करता था, वह एकदेशी चित्रकार होने के कारण जनता की प्रशंसा का पात्र नहीं होता था। केवल वे ही चित्र जनता द्वारा पसंद किए जाते थे, जिनमें सामयिक समस्याओं के हल करने में कुछ सहायता मिल सके, अथवा जो उसके भवतापोत्तप्त मन को क्षण-भर भी शांति प्रदान कर सकते थे। इन चित्रों के प्रदर्शन के लिये यद्यपि आजकल की-सी चित्र-गैलरियाँ नहीं थीं, तथापि बड़े-बड़े चित्रागारों का अस्तित्व उस सुदूर काल में भी पाया जाता है। महाउम्मगजातक (पार्ली टेक्स्ट सोसाइटी एडिशन, जातक, भाग ६, पृष्ठ १२६, २२३) में बोधिसत्व द्वारा निर्मित एक महान् चित्रागार का वर्णन पाया जाता है। उस चित्रागार में बहुत-से सुंदर चित्रों का तथा शाक्यों के वैभव, सुमेरु पर्वत, समुद्र और महासागर, चारो भूखंडों, हिमालय, अनुत्तप्त सरोवर, सिंदूरगिरि, रवि-शशि, महाराजाओं के स्वर्ग, तथा षड्विध स्वर्लोक आदि के भित्ति-चित्रों का होना सिद्ध करता है कि प्राचीन काल में भी बड़े-बड़े चित्र-प्रदर्शन तथा चित्र-भवन मौजूद थे।

इसी प्रकार विनय-पिटक में कोसल देश के महाराज प्रसेनजित् के क्रीड़ोपवन में बने हुए एक ऐसे चित्रागार अथवा पिक्चर-गैलरी का वर्णन है, जिसे देखने के लिये सहस्रों मनुष्य प्रतिदिन जाया करते थे। इन दर्शकों में भिक्षुणियों की संख्या भी पर्याप्त होती थी। बौद्ध-धर्म के नेताओं ने भिक्षुणियों के इस चित्र-दर्शन पर बड़ा ही कठोर बंधन लगा दिया था। उन्हें किसी भी चित्रागार में जाने की आज्ञा नहीं थी। उनकी इस आज्ञा से पता चलता है कि उस समय के चित्रागारों के चित्र केवल धार्मिक ही नहीं होते थे। सांसारिक सुखों, प्रेमालापों तथा अन्य ऐसे ही कामोद्दीपक तथा कामनोद्दीपक विषयों के चित्रों का उनमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर्याप्त समावेश रहता था। अतएव उस समय के बौद्ध-नेताओं ने इन 'वासलेटी' चित्रों का भिक्षुणियों के लिये बहिष्कार कर रक्खा था।

इसी प्रकार रत्नावली, रघुवंश, शकुंतला तथा उत्तर-राम-चरित आदि नाटकों से पता चलता है कि उस समय के लोगों में चित्रकला के प्रति एक विशेष अभिरुचि थी। प्रत्येक शिक्षित पुरुष चित्रकला में प्रायः अभ्यस्त-सा ही होता था। नौकरी पेशा और मध्यम श्रेणी के लोगों में भी चित्रों का पर्याप्त आदर था। उत्तर-राम-चरित में तो एक विशेष प्रकार के चित्रपट का बड़ा ही हृदयग्राही वर्णन पाया जाता है। ऐसे चित्रपट आजकल के उन्नत कहानेवाले दिनों में भी दुर्लभ-से ही हैं। यह चित्रपट जनता के मनोरंजन के लिये तथा प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओं को जीवित रखने के लिये उपयोग में लाए जाते थे, ऐसा प्रतीत होता है। इन्हें चित्रित करने तथा प्रदर्शित करनेवाले लोग एक ख़ास पेशे के लोग समझे जाते थे। राजाओं और महाराजाओं के सभा-भवन तक में उनकी अबाध गति थी। असूर्यंपश्या अंतःपुर-वासिनी महारानियाँ तक उन्हें देखकर चित्र-लिखित, मुग्ध और मूर्च्छित हो जाती थीं। चित्रकला के आह्लादकारी, इंद्रजाल-तुल्य, इंद्रिय-गम्य आनंद के लिये जनता लालायित-सी रहा करती थी। उत्सवों और मेलों के समय तो चित्रकला ही आनंद और आकर्षण का प्रधान साधन हुआ करती थी। ऐसे अवसरों पर धनी लोग "अपने-अपने प्रासाद-तुल्य सौधों से लेकर पुर-द्वार तक और पुर-द्वार से राजप्रासाद तक के मार्ग के दोनो ओर बाँस की खपच्चों की सुंदर झिझरियाँ तैयार कराते और उन्हें मढ़वाकर उन पर बड़े सुंदर-सुंदर दृश्यों के चित्र चित्रित करवाते थे। मार्ग-भर में नाना रंगों के पुष्पों के पाँवड़े बिछा दिए जाते और आकाश में ध्वजाओं और पताकाओं का सुंदर वितान तान दिया जाता था।" (महाउम्मग्गजातक, पृ० २१२)

चित्रागार प्रायः लकड़ी अथवा ईंट के बनाए जाते थे। दीवारों पर चूने का बहुत ही उत्तम पलस्तर लगाकर उन्हें चित्रोपयोगी बनाया जाता था। तब फिर पच्चीकारी अथवा रंगकारी द्वारा उन पर जीवों अथवा वस्तुओं की आकृतियाँ या आलंकारिक डिज़ाइन बनाए जाते थे। जिन आगारों में डिज़ाइनों की अपेक्षा आकृतियों की प्रधानता होती थी, वे चित्रागार या 'पिक्चर-गैलरी' कहलाते थे।

इन भित्ति-चित्रों के अतिरिक्त लकड़ी के श्लक्ष्ण पट्टों पर अथवा किरमिच के मोटे टुकड़ों पर भी चित्रों की रचना होती थी। किरमिच के लंबे थानों पर भी कई लगातार होनेवाली घटनाओं का एकत्र चित्रण प्रचलित था। ऐसे चित्रपट लपेटकर रख लिए जाते और उचित समय पर आवश्यकतानुसार प्रदर्शित किए जाते थे। मुद्राराक्षस-नाटक के प्रथम अंक में चाणक्य के एक गुप्तचर द्वारा चंदनदास के घर में ऐसे ही एक चित्रपट के संगीतानुगत प्रदर्शन का वर्णन है। हर्ष-चरित के पंचम उच्छ्वास में भी इसी प्रकार के एक लंबे चित्रपट का ज़िक्र आया है। उत्तर-राम-चरित में भी इसी प्रकार के लपेटे जानेवाले चित्रपटों का प्रदर्शन पाया जाता है। इससे प्रकट होता है कि उस समय चित्र-प्रदर्शन के लिये इस विधि का बहुत कुछ सहारा लिया जाता था।

'संयुक्त निकाय'-नामक बौद्ध-धर्म के प्रायः सर्वप्राचीन ग्रंथ के तृतीय अध्याय, पृष्ठ १५२ पर स्त्रियों और पुरुषों के ऐसे चित्रों का वर्णन पाया जाता है, जो श्लक्ष्ण दारुफलक (चिकने लकड़ी के तख़्तों), कौशेय (उत्तम वस्त्र) तथा भित्तियों पर बनाए गए थे। पहनने के कपड़ों पर भी लोग चित्र बना लिया करते थे। विनय भिक्खु पचित्या के २६वें अध्याय की टीका में इस प्रकार के वस्त्र-चित्रों के विषय में एक मनोहर कथा लिखी हुई है। "महात्मा बुद्ध ने वस्त्र-चित्रों के विषय में एक बार बड़ा एतराज़ किया। लोगों के कारण पूछने पर उन्होंने मेर लालुदायी-नामक व्यक्ति के वस्त्रों की ओर इशारा कर दिया। लालुदायी के काषाय वस्त्रों पर संभोग-क्रिया में लिप्त स्त्री-पुरुषों के कामुक चित्रों की एक लंबी-चौड़ी 'प्रदर्शनी-सी थी।" संभव है, मसुलिपटम के प्रसिद्ध वस्त्र-चित्रों का इन्हीं प्राचीन वस्त्र-चित्रों से आविर्भाव हुआ हो। कपड़ों को रँगकर उन पर चित्र बनाकर पहनने की प्रथा का भी ज़िक्र इस टीका में पाया जाता है। बौद्ध-भिक्षुणियों को चित्रागार-प्रवेश-निषेध की बौद्ध-कालीन आज्ञा का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संभव है, यह वस्त्र-चित्रों के प्रति भगवान् बुद्ध का पक्षपात ही शायद आदिम कारण रहा हो।

कभी-कभी विविध प्रकार के चर्मों पर मिट्टी का लेप करके भी चित्रों की रचना की जाती थी। ऐसे चित्र प्रायः नाटक, अभिनय तथा अन्य प्रेक्षणकों के समय रंगमंच पर प्रदर्शित किए जाने के लिये ही बनाए जाते थे।

यह चित्र, चाहे वे स्थायी अथवा अस्थायी रूप में हों, चाहे वे भित्ति पर बनाए गए हों अथवा कृत्रिम पट, चाहे वे धनी लोगों के विशाल भवन की छतों में बने हों, या राजप्रासाद और देव-मंदिर की—सभी प्रकार से और सभी रूप में प्रायः जनता की मानसिक शिक्षा तथा हार्दिक आह्लाद की दृष्टि से ही बनाए जाते थे। धर्म-प्रचार में भी इनका विशेष उपयोग किया जाता था, क्योंकि इनके द्वारा बिना पढ़े-लिखे लोगों और बालकों को भी शिक्षा दी जा सकती थी, समझाया जा सकता था। 'नख'-नामक वैदिक धर्म के प्रचारकों के विषय में 'सारस्थ-एकासिनी'-नामक स्याम देश की पुस्तक में लिखा है कि वे एक ऐसा यात्रा-सुलभ ढाँचा तैयार करते थे, जिस पर पाप और पुण्य के परिणाम प्रदर्शित करनेवाले चित्र सुगमता-पूर्वक चित्रित किए जा सकते थे। इन चित्रों के नीचे लिखा रहता था—"ऐसा करने से मनुष्य को यह फल मिलता है, और वैसा करने से वैसा।" इस प्रकार पाप और पुण्य, इहलोक और परलोक के परिणामों का प्रदर्शन करते हुए वह धर्म-प्रचारक एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते-आते रहते थे।

घरों में अपने ही हाथ के बनाए हुए चित्रों के सजाने अथवा टाँगने का प्रचार न था। ऐसा करना अशिष्टता समझा जाता था। इसके अतिरिक्त घरों में किस प्रकार के चित्र ही टाँगे जाते थे। प्रेम, आमोद, प्रीति तथा लौकिक सुखोपभोग-संबंधी चित्र ही लोगों के घर की शोभा बढ़ाया करते थे। जीवन के तथा संसार के लोकोत्तर और बीभत्स-भयानक दृश्यों के प्रदर्शन का उपयुक्त स्थान देव-मंदिर अथवा राजों की सभा-भवन ही समझा जाता था।

घरों और मंदिरों आदि में टाँगने के लिये उन्हें 'फ्रेम' करने का भी फ़ैशन था। किंतु यह 'फ्रेम' एक विशिष्ट नियम के अनुसार ही हुआ करता था। विष्णु-धर्मोत्तर के तृतीय भाग के ४१वें अध्याय में 'फ्रेम' की दृष्टि से चित्रों के चार विभाग किए गए हैं। वे हैं—सत्य, वैणिक, नागर और मिश्र।

'सत्य' चित्र वह कहलाता है, जो मानव-जीवन की किसी घटना का सच्चा प्रतिरूप हो। ऐसे चित्र में अंगों और वस्तुओं के सत्य अनुपात, उँचाई आदि का औचित्य तथा सुंदर मांसल और वर्तुलाकार शरीरादि का चित्रण अत्यंत आवश्यक है। ऐसे 'रीयलिस्टिक' चित्र का फ्रेम आयताकार होना चाहिए।

'वैणिक' चित्र वंदी और चारणों के वर्णनों (जो संभवतः वीणा के ऊपर गाए जाते थे) के अनुसार बनाए गए चित्र को कहते थे। दूसरे के वर्णन के अनुसार ऐतिहासिक व्यक्ति विशेषों का चित्रण कभी 'रीयल' नहीं हो सकता, 'सत्य' नहीं हो सकता, उसमें कुछ-न-कुछ आनुमानिक पुट रहता ही है। किंतु हाव, अनुपात तथा नाट्य आदि का ध्यान उसमें खूब रक्खा जा सकता है। ऐसे 'वैणिक' चित्र का 'फ्रेम' वर्गाकार होना चाहिए। चित्रण-कौशल का इसमें खूब प्रदर्शन होना चाहिए।

'नागर' चित्र शहरी लोगों की वासनाभिरुचि की तृप्ति के लिये बने हुए चित्रों का नाम है। इनमें स्त्रियों के वर्तुल कुचों तथा सघन नितंबों तथा पुरुषों की मांसल भुजाओं और कपाट-विस्तृत छातियों के काठिन्य तथा वर्तुलता पर ही अधिक ध्यान दिया जाता था। मालाओं और आभूषणों का आधिक्य इन चित्रों में ग्राम्यता का सूचक समझा जाता था। ऐसे फ़ैशनेबल चित्रों का फ्रेम एकदम गोलाकार होना चाहिए।

इन तीनो प्रकार के चित्रों के थोड़े-बहुत गुणों को लेकर बनाया हुआ चित्र 'मिश्र' चित्र कहाता है। इसका फ्रेम भी ऐसा ही खिचड़ी फ्रेम होना चाहिए। वह अठपहलू, छःपहलू या तिनपहलू भी हो सकता है।

इस प्रकार से फ्रेम किए हुए चित्रों से ही 'नागरिकों' के शयनकक्ष, कार्यगृह तथा आपानकों की शोभा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समझी जाती थी। प्रेयसियों के प्रणयन, आलिंगन और चुंबन में इन चित्रों द्वारा बड़ी उत्तेजना मिलती थी। कभी-कभी, युद्ध-यात्रा के समय, चित्रों द्वारा ही साहस का उद्रेक कराया जाता था। जीवन की अतीत स्मृतियों को जाग्रत् रखने के लिये भी चित्रों का उपयोग होता था। उस समय चित्रकला जातीय जीवन का एक प्रधान और आवश्यक अंग थी।

सुधींद्र वर्मा

मगाओ मुफ्त मगाओ

अगर आप पान खाने के शौकीन हैं तो हमारा मुखबिलास मसाला व ताम्बूल अम्बरी टेबिलेट पान में जरूर खाइये खुशबूदार व खुश-जायका है ॥

(मुखबिलास मसाला)

कीमत मुखबिलास मसाला छोटी डि० फ़ी दरजन १॥=) बड़ी डि० फ़ी दरजन ३॥) कीमत ताम्बूल अम्बरी टेबिलेट छोटी डि० फ़ी दरजन २) बड़ी डिब्बी फ़ी दरजन ४॥) फ़ैन्सी पुड़िया ॥)॥ सैकड़ा

[नोट] ज्यादा हाल जानने के लिये नमूना कैलेन्डर और नोटिस मुफ्त मंगाइये ॥

पता— पं० प्यारेलाल शुक्ल

प्यारे लाल शुक्ल स्ट्रीट कानपुर ॥

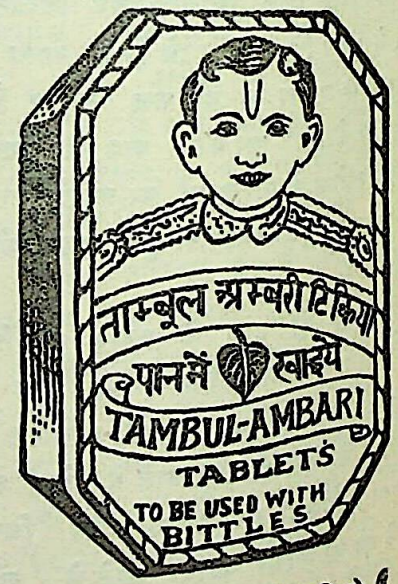

(ताम्बूल अम्बरी टेबिलेट)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

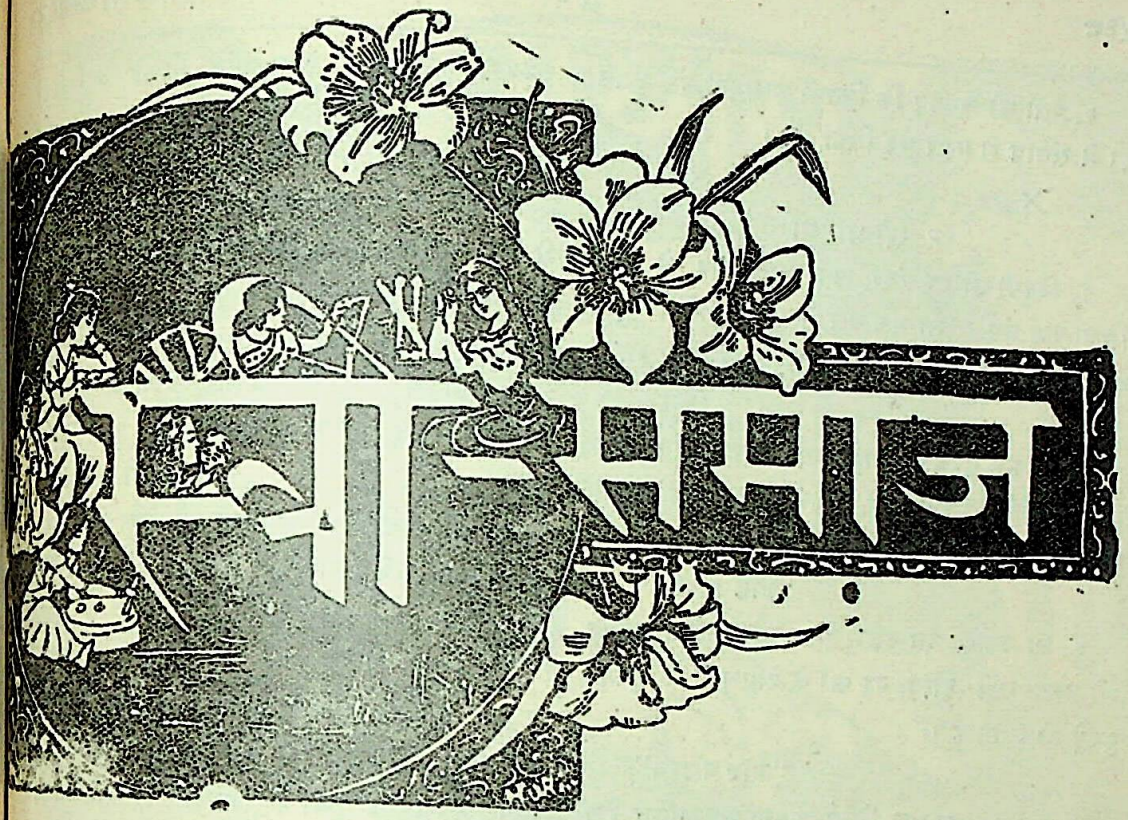

१. पति-पत्नी में सच्चा मेल रहने के उपाय

ह करते समय ही ध्यान रखना चाहिए कि किसी दबाव, मुरव्वत, लोभ या भ्रम के वश होकर कम अवस्था में ही, केवल जन्म-पत्रियों के मिल जाने पर ही, विवाह न कर डालना चाहिए। ब्याह की वही प्रथा ठीक है, जो अपने-अपने कुल की मर्यादा को न तोड़ती हुई दंपति में सम की हो।

२. ब्याह के बाद पति-पत्नी को चाहिए कि वे इस बात का सदैव ध्यान रक्खें कि इन दोनों का संबंध केवल आशा पर अवलंबित है। वे एक दूसरे के स्वभाव से परिचित नहीं होते। अड़चन पड़ने का मुख्य कारण यही है।

३. पति को यह बात ध्यान से उतार देनी चाहिए कि वह उसके भाग्य का विधाता है, और वह मेरी अन्नदाता। स्त्री जो पति को प्राणनाथ, जीवनाधार, स्वामी इत्यादि कहती है, वह अपनी इच्छा ही से।

४. पत्नी को चाहिए कि वह अपने को पति-रूपी राजा का अवैतनिक मंत्री जाने, और जब पति का दबाव पत्नी की आत्मा का अपहरण करने पर उतारू हो जाय, तो वह सविनय उस आज्ञा का अनौचित्य जता दे।

५. पत्नी को चाहिए कि बच्चों की ममता में फँसकर या दूसरी स्त्रियों के अच्छे वस्त्र या गहने देखकर पति को कष्ट न दिया करे। ऐसा करने से या तो कलह बढ़ती है, या पति रिशवतख़ोरी, चोरी या ठगी करने लगता है। अंत में उसका फल बुरा ही होता है।

६. पति को चाहिए कि वह पत्नी को यह विश्वास दिलावे कि वह वीर है। कोई भी वीर भीतर या बाहर वह काम नहीं करता, जिसे करने की हिम्मत उसे स्त्री के सामने नहीं पड़ती।

७. पति को चाहिए कि स्त्री को गृहस्थी के काम से समय बचाकर कुछ घंटे रोज़ कुछ पढ़ाया-लिखाया या उपदेश दिया करे।

८. पत्नी को चाहिए कि वह शारीरिक प्रेम ही को ऊँचा स्थान न दे, क्योंकि यदि ऐसा होगा, तो पति के बाहर जाने या बहुत दिनों के लिये बीमार पड़ जाने पर स्त्री का मन चंचल हो उठेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

६. पत्नी को चाहिए कि जितनी आमदनी हो, उतने ही में संतोष से गुज़र कर लिया करे।

× × ×

२. स्त्री-महिमा

१. विदुषी स्त्री का सुंदर मुख-मंडल पुरुष के लिये शिक्षा-पूर्ण ग्रंथ है, जो एक बार सम्मुख होते ही कुछ देर के लिये अपना प्रभाव बिना लाए नहीं रहता।

"मूर"

२. पुरुष के हृदय का प्रकाश-भाव जिस प्रकार शीघ्रता के साथ स्त्री जान सकती है, पुरुष नहीं। यह उसके प्राकृतिक गुणवान् होने का प्रमाण है।

"लॉर्ड बाइरन"

३. जो कठोर हृदय हज़ार दमन और आघात सहकर भी सरल नहीं होता, वह स्त्री के प्रेमाश्रुओं से टुकड़े-टुकड़े हो जाता है।

"लॉर्ड बाइरन"

४. अपना दुख-सुख स्त्रियाँ जितना अप्रकाशित रख सकती हैं, पुरुष उतना नहीं। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में कष्ट-सहन और त्याग-भाव की मात्रा अधिक है।

"मि० रेक्टर"

५. स्त्री का शारीरिक सौंदर्य जितना प्यारा मालूम होता है, उससे भी कहीं प्यारा और आकर्षक उसका सुंदर व्यवहार और मधुर भाषण होता है।

"मिल्टन"

६. सुंदरता स्त्री की प्राकृतिक संपत्ति है। लौकिक सभ्यता में रहनेवाली पुरुष-जाति में वह कहाँ से हो सकती है?

"रवींद्र"

७. इस असार संसार में और सब पदार्थ तो परिश्रम से मिल जाते हैं, परंतु सुलक्षणा स्त्री केवल ईश्वर की कृपा से ही मिल सकती है।

"पोप"

८. स्त्री की आँख से एक बार लज्जा का पानी गिर जाने से उसका हाथ आना कठिन है।

"सरोजिनी नायडू"

९. स्त्री बच्चे की प्रथम शिक्षक है, और उसके चरित्र का संगठन करनेवाली है। इस दृष्टि से स्त्री राष्ट्र की माता है।

"महात्मा गांधी"

१०. सारे संसार का राज्य मिल जाय, परंतु यदि स्त्री न हो, तो पुरुष भिक्षुक से भी बुरा है। इससे तो वह कंगाल लाखगुना सुखी है, जो सारे दिन परिश्रम करके संध्या-समय स्त्री का मुख देखकर सारा दुःख भूल जाता है।

"कूपर"

११. यदि तुम पत्थर हो, तो पारस पत्थर बनो, यदि वृक्ष हो, तो लाजवंती का पौधा बनो, और यदि मनुष्य हो, तो स्त्री का आदर करो।

"विक्टर ह्यूगो"

कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव

Royal College of Physicians and Surgeons of India (Registered).
Member and Fellowship (M. R. C. P., M. R. C. S., M. R. C. P. & S., F. R. C. P., F., R. C. S., F. R. C. P. & S. Registered) certificate awarded to the medical Practitioners and Students. For Prospectus apply with anna stamp to the Registrar, Dayoganj Road, Dacca, Bengal.

Homeopathic University of India (Registered by the Govt.)
Member and Fellowship certificate granted to the Homeopathic Doctors and Students. Also H.L. M.S., H.M.B., H.M.D. & L.L.D. diploma to Successful Candidates. Apply with anna stamp to the Registrar, 21, Chota Katara, Dacca, Bengal.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

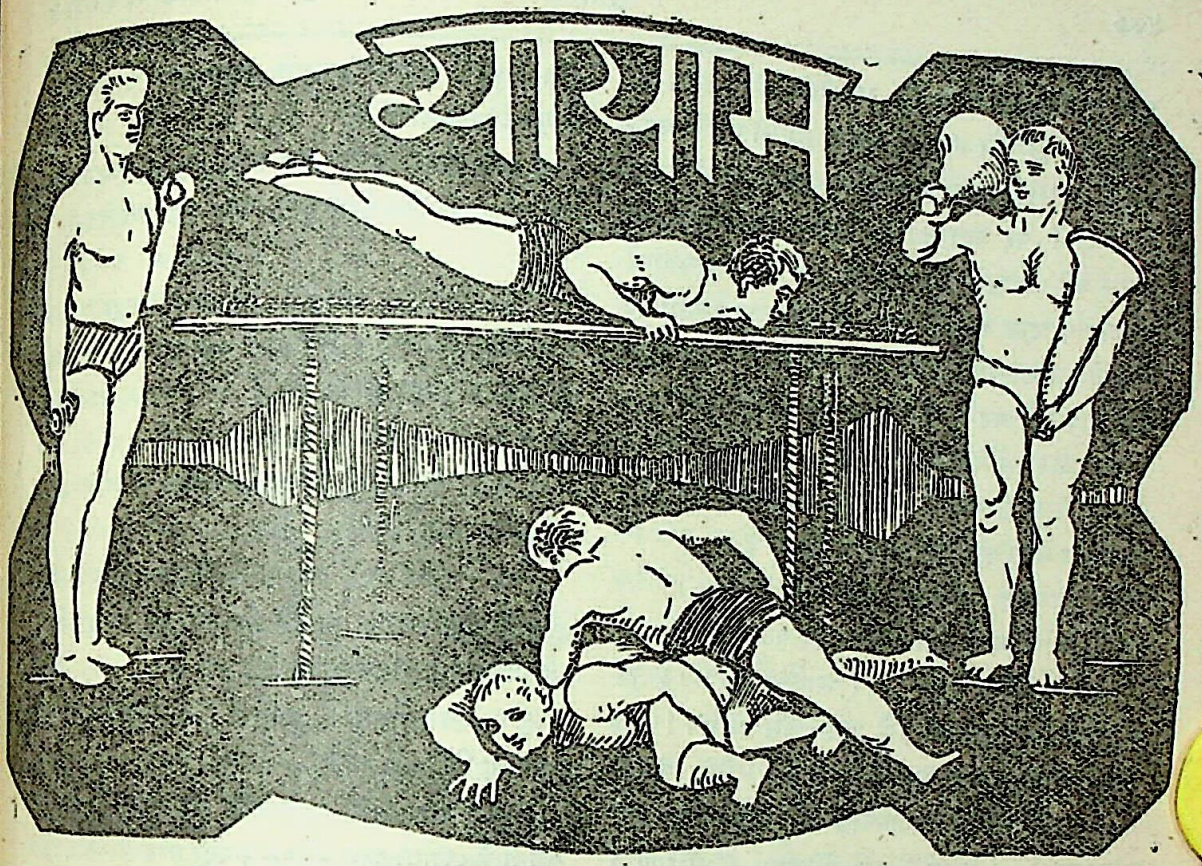

स्त्रियों के व्यायाम

(३)

प्राणायाम

डॉ० कमेंट का कथन है कि—

"कन्या-पाठशालाओं में तथा बोर्डिंगों में स्त्रियों की शारीरिक वृद्धि के साधनों का अभाव एक महान् त्रुटि है, और इस त्रुटि के हटाने के प्रयत्नों का न होना तो इससे भी भयानक भूल है। वास्तव में देखा जाय, तो मानसिक शिक्षा की अपेक्षा शारीरिक शिक्षा का महत्व अधिक है। नियमित व्यायाम के अभाव में नसें बेपरवाह और मनोबल-शून्य बन जाती हैं। कमज़ोरी, कमर का झुक जाना और रक्त-हीन शरीर इत्यादि बातें शारीरिक क्रियाओं की अव्यवस्था के ही परिणाम-रूप होती हैं। शरीर को सुदृढ़ रखने से मस्तिष्क भी बलवान् होता है, और दोनो तरह से लाभ होता है।"

ऊपर-लिखे कथन से यह बात साफ़ हो जाती है कि स्त्रियों के कसरत करने की बेहद ज़रूरत है। पुराने समय में स्त्रियाँ बलवान् होती थीं। इतिहास के देखने से मालूम होता है कि प्राचीन काल में कई वीर स्त्रियों ने लड़ाई के मैदान में जाकर दुश्मनों के दाँत खट्टे किए हैं। महाराजा दशरथजी के साथ कैकेयी का रण-भूमि में जाना बहुत पुरानी बात है, परंतु कुछ सदी पहले ही कई वीर नारियाँ इस भारतवर्ष में अपना नाम कर गई हैं। मेवाड़ की वीर-भूमि के इतिहास में अपने पति के साथ समर-भूमि में उतरनेवाली अनेक वीर-माताओं के नाम इतिहास में सोने के अक्षरों से लिखे हैं।

रण-भूमि बच्चों का खेल नहीं है। उस जगह बड़े-बड़े वीर पुरुषों के कलेजे हिल जाते हैं। भेरियों का भैरव तुमुल शब्द कानों के पर्दों को फाड़ता है। शस्त्रों की झंकार हृदय को कंपित करती है। रक्त की नदियाँ और ख़ून-खच्चर आँखों को डराता है। ऐसे मैदानों में भूखे सिंह की तरह शस्त्र उठाए वीर नारियों की वीरता के वर्णन को पढ़कर किसे उनके इस बल पर गर्व न होता होगा। किंतु जब आजकल की चूहे और बिल्लियों से डरकर भागनेवाली स्त्रियों की दुर्दशा पर ध्यान जाता है, तो अपार दुःख होता है। हमारे देश की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सभी तरह से अधोगति हो रही है। भावी प्रजा को विना बलवान् और सहिष्णु बनाए हमारी उन्नति असंभव है, इसलिये स्त्रियों को चाहिए, अब हमारे बताए हुए उपायों पर चलकर अपना तथा अपने देश का उद्धार करें। पिछले अध्याय में हम घरू काम-धंधों पर प्रकाश डाल आए हैं। अब यहाँ हम प्राणायाम पर लिखेंगे। प्राणायाम स्त्रियों के लिये अत्यंत लाभप्रद क्रिया है। आशा है, बहनें इससे अवश्य लाभ उठावेंगी।

"प्राणायामैरेव सर्वे प्रशुष्यंति मला इति।"

अर्थ—प्राणायाम-क्रिया के द्वारा समस्त शारीरिक मलों का नाश होता है। वेद का वचन है—

"प्रविशतं प्राणापानावनड्वाहाविव व्रजम्।
अयं जरिम्णः शेवधिररिष्ट इह वर्द्धताम्॥"

(अथर्व ७। ५३। ५)

अर्थ—(प्राणापानौ) हे प्राण और अपान! तुम (प्रविशतम्) प्रवेश करते रहो, (इव) जैसे (अनड्वाहौ) रथ को ले चलनेवाले दो बैल (व्रजम्) गोशाला में। (अयम्) यह जीवात्मा (जरिम्णः) स्तुति का (शेवधिः) पात्र (अरिष्टः) दुःख-रहित होकर (इह) यहाँ (वर्द्धताम्) वृद्धि पावे।

प्राण, अपान आदि वायु के द्वारा शरीर दुःख-रहित होकर वृद्धि पाता है। हिंदू-शास्त्रों में प्राणायाम की बहुत ही प्रशंसा है। योगाभ्यास के आठ अंगों में से यह चौथा अंग है। इसके गुणों पर मोहित होकर हमारे पूर्वाचार्यों ने इसे संध्योपासना में सम्मिलित कर दिया है। इसे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति का मुख्य साधन माना है। पूर्व इसके कि हम प्राणायाम की क्रिया बतावें, हमें इसके लाभ पाठिकाओं के सम्मुख रखना उचित जान पड़ता है—

(१) प्राणायाम स्वास्थ्य-प्रद और क्षय-रोग का शत्रु है—

(२) प्राणायाम द्वारा यक्ष्मा (राजरोग) दूर हो जाता है। वेद कहता है—

"आ ते प्राणं सुवामसि परा यक्ष्मं सुवामि ते।"

(अथर्व ७। ५३। ६)

अर्थ—हे मनुष्य! (ते प्राणम्) तेरे प्राण को (आसुवामसि) हम अच्छे प्रकार आगे बढ़ाते हैं। (ते) तेरे (यक्ष्मम्) यक्ष्मा-रोग को (परासुवामि) मैं दूर निकालता हूँ।

(३) प्राणायाम से उम्र बढ़ती है। वेद कहता है—

"आयुर्यत्ते अतिहितं पराचैरपानः प्राणः पुनरातावितां।"

(अथर्व ७। ५३। ३)

अर्थ—(यत्) जो (ते) तेरा (आयुः) उम्र (पराचैः) पराङ्मुख होकर (अतिहितम्) घट गई है, (तौ) वे दोनों (प्राणः) प्राण और (अपानः) अपान (पुनः) फिर (आइताम्) आवें।

(४) फेफड़ों को प्राणायाम द्वारा नवजीवन तथा शक्ति प्राप्त होती है।

(५) मानसिक अथवा शारीरिक अधिक श्रम द्वारा जिनका स्वास्थ्य ख़राब हो गया हो, उनके लिये भी प्राणायाम जीवन-दाता है।

(६) बद्धकोष्ठता (क़ब्ज़) के लिये भी प्राणायाम रामबाण क्रिया है।

(७) प्राणायाम करनेवाले को भूख भी खुलकर लगती है। खाया हुआ भोजन अच्छी तरह पच जाता है।

(८) प्राणायाम करनेवाले का सीना उठा हुआ और चौड़ा हो जाता है।

(९) चर्म-रोगों के लिये प्राणायाम अक्सीर है।

(१०) प्राणायाम के द्वारा आलस्य का नाश होकर शरीर में फुर्ती आ जाती है।

(११) प्राणायाम के द्वारा शरीर का वज़न भी बढ़ जाता है। महाशय एस्० ओ० का कथन है कि "मानसिक परिश्रम के कारण मुझे क्षय हो गया, और मृत्यु के निकट पहुँच चुका था, किंतु प्राणायाम ने मुझे पुनः जीवन-दान किया। २ अगस्त, १९०५ से मैंने प्राणायाम आरंभ किया। उस वक्त मेरा वज़न ७ स्टोन ५ पौंड था, किंतु १९०७ की १८ जुलाई को जब मैंने अपने को तोला, तो मुझमें ८ स्टोन ११ पौंड और ६ औंस वज़न निकला।" इसी तरह एक जापानी लोगोरो-नामक सज्जन ने भी लिखा है कि "मैंने २२ सितंबर, १९०७ से प्राणायाम आरंभ किया। उस समय मुझमें ७ स्टोन और ६ पौंड वज़न था। जब १ मई, १९०९ को तोला, तो ५५७ दिन में पहले से ४ स्टोन १ पौंड और ८ औंस वज़न बढ़ गया।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) प्राणायाम से हृदय भी मज़बूत हो जाता है।

(१३) प्राणायाम से बुद्धि का विकास होता है।

(१४) प्राणायाम द्वारा इंद्रियाँ वश में आ जाती हैं।

इत्यादि अनेक लाभ प्राणायाम के हैं। इसीलिये योग-साधन के समस्त अंगों में प्राणायाम एक मुख्य अंग है। प्राणायाम के विना योग-साधन वैसा ही है, जैसा कि प्राण के विना शरीर। प्राणायाम करनेवाले की संतान भी उत्तम होती है। इसके अतिरिक्त मन की स्थिरता, ध्यान की सिद्धि और समाधि की प्राप्ति भी इसी के द्वारा होती है।

प्राणायाम की विधियाँ सैकड़ों ही हैं। जैसा जिसके जी में आया, वह वैसा ही करने लगा। आपने देखा होगा कि संध्योपासना के समय उपासक अपनी आँखें मूँदकर नाक पकड़ लेता है। यही प्राणायाम की क्रिया है। परंतु अधिकांश लोग प्राणायाम की विधि को भली भाँति नहीं जानते और नाक पकड़ने की लकीर को पीटा करते हैं। कभी-कभी तो देखा गया है कि घुटनों में पेट दबाए हुए बैठे हैं और नाक पकड़कर दो-तीन सेकेंड के बाद छोड़ दिया गया है। बस, उनकी प्राणायाम-विधि हो गई। इसका नाम प्राणायाम नहीं।

प्राणायाम की क्रिया आधुनिक नहीं है। भारतवर्ष में यह लाखों वर्षों से प्रचलित है। यही कारण है कि प्राणायाम की विधि न आते हुए भी लोग उसकी लकीर पीटते ही जा रहे हैं। परंतु इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक है। पुरुष तो फिर भी संध्योपासना के वक्त थोड़ा-बहुत प्राणायाम कर ही लेते हैं, किंतु स्त्रियाँ तो जानती ही नहीं कि प्राणायाम क्या है? क्योंकि उन्हें वेद के मंत्रों के सुनने तक का अधिकार नहीं! जब से स्त्रियों के लिये ऐसे मन-गढ़ंत श्लोक बनाकर उनके अधिकारों की हत्या की गई, तभी से नारी-समाज का घोर पतन आरंभ हो गया। जब तक स्त्रियाँ वेद-पाठी रहीं, और संध्योपासना आदि कार्यों से वर्जित नहीं की गईं, तब तक वे उन्नति के उच्चतम शिखर पर विराजमान थीं। वैदिक कार्यों में स्त्रियों को वर्जित करने का विधान स्वार्थ-पूर्ण विधान है *। जिन्होंने कौशल्या और सीतादेवी के संध्योपासना तथा अग्निहोत्र के वर्णन वाल्मीकि रामायण में पढ़े हैं, वे जान सकते हैं कि स्त्रियों को वैदिक कर्म का पुरुषों की भाँति समान अधिकार है।

भक्त और धर्मात्मा लोग अनेक प्रकार के स्तोत्रों का पाठ करते हैं। उस समय उनका दम भर आता है, और एक प्रकार का प्राणायाम हो जाता है। वेद-पाठी मनुष्यों को सहज ही में उत्तम प्राणायाम हो जाता है। परंतु आज द्विजों के घरों में वेद-ध्वनि सुनाई नहीं देती। स्त्रियों को तो इस लाभ से वंचित किए आज हज़ारों वर्ष बीत गए! पहले-पहल प्राणायाम की विधि भारतवासियों ने निकाली। इसके बाद ज़ेज़न (Zazan) में और फिर योरप, चीन, जापान आदि में उसी से मिलती-जुलती कुछ विधियाँ निर्माण हुईं। आज से लगभग ५०० वर्ष पूर्व वेकम (Wakum)-नामक एक जापानी सज्जन ने भी इस विधि को खोज निकाला था। किंतु उसका यह ख़याल था कि "इस क्रिया का प्रभाव केवल मन की शक्ति पर ही पड़ता है।"

आर्य-समाज की कृपा से अब लोग स्त्री-सुधार की ओर ध्यान देने लगे हैं। शास्त्रों को खोजकर स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा की जा रही है। शास्त्रों से यह सिद्ध हो चुका है कि स्त्रियाँ भी "उपनयन"-संस्कार की अधिकारिणी हैं। उपनयन के बाद संध्योपासना एक आवश्यक कृत्य हो जाता है, और संध्योपासना में प्राणायाम एक मुख्य विधि है। अतएव जो स्त्रियाँ संध्योपासना आदि वैदिक कार्य कर रही हैं, वे तो प्राणायाम द्वारा लाभ उठाती ही हैं, किंतु जिन बहनों का जनेऊ-संस्कार नहीं हुआ है, और न अब होने की आशा ही है, उन्हें चाहिए कि वे प्राणायाम अवश्य आरंभ कर दें। इस क्रिया में इस बात की क़ैद नहीं कि जनेऊ-धारी ही प्राणायाम का अधिकारी है। नहीं, प्राणायाम का मनुष्य-मात्र अधिकारी है, चाहे वह वैदिक हो या अवैदिक, आर्य हो अथवा अनार्य।

अब हम यहाँ अपनी विधि लिखने के पहले दूसरे

---

* मेरी लिखी हुई "वेदों में स्त्रियाँ"-नामक पुस्तक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय से मँगाकर अवश्य पढ़ लीजिए।—लेखक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोगों की विधियों का उल्लेख करेंगे, और सबके अंत में अपनी अनुभूत विधि लिखेंगे—

(१) ब्राह्मण-काल में प्राणायाम की यह विधि थी कि अपने दाहने हाथ की चार अँगुलियों से नाक का दाहना नथुना दबाकर बाएँ नथुने से साँस खींचते और छोड़ते थे, और इसी प्रकार बाएँ हाथ की अँगुलियों से बायाँ नथुना दबाकर साँस लेते थे। सायं-प्रातः दोनों समय शुद्ध वायु में इस प्रकार प्राणायाम किया जाता था।

(२) Zazan (ज़ेज़न)-विधि में चटाई बिछाकर बैठना पड़ता है, और कूल्हों के नीचे तकिया लगाया जाता है। फिर दाहना पैर बाएँ पाँव की जाँघ पर और बायाँ पैर दाहने पाँव की जंघा पर रक्खा जाता है। अर्थात् पद्मासन से बैठते हैं। दाहने हाथ की हथेली को नाभि के सामने चित रक्खो, और उस पर बाएँ हाथ की हथेली को चित रक्खो। हाथों के अँगूठे एक दूसरे के आमने-सामने रहें। आँखें खुली रक्खो, और धीरे-धीरे श्वासोच्छ्वास की क्रिया करो।

(३) Shozaburo Otabe की विधि इस प्रकार है कि "नित्य प्रातःकाल छः बजे उठो, और खुली हुई खिड़की के सामने १० से १५ मिनिट तक गंभीरता-पूर्वक श्वासोच्छ्वास की क्रिया करो। फिर २० मिनिट तक खेतों में घूमो, और फिर थोड़ा-सा कलेऊ करो। दिन में ३ वक़्त भोजन करना चाहिए। बीच में कुछ भी नहीं खाना चाहिए। दोपहर के बाद फिर दस से पंद्रह मिनिट तक प्राणायाम करना चाहिए। रात्रि को सोने से पहले भी १०-१५ मिनिट तक प्राणायाम करना चाहिए।"

(४) प्रसिद्ध जापानी विद्वान् हिराता (Hirata) की विधि के अनुसार "सोते वक़्त चित लेटो, और अपने पावों को जितना अधिक फैला सको, ख़ूब फैलाओ। फैलाने में जल्दी नहीं होनी चाहिए। अब इस प्रकार गंभीरता-पूर्वक साँस लो कि जिससे पेट की नसों पर पूरा-पूरा ज़ोर पड़े। साँस को रोककर हाथ की अँगुलियों के पोरवों पर १०० तक गिनती गिनो, इसके बाद पावों को बिलकुल ढीला कर दो, यहाँ तक कि वे अपनी साधारण दशा में आ जायँ। अब धीरे-धीरे साँस छोड़ दो।"

(५) सीधी खड़ी हो जाओ। हाथों को जाँघ पर रक्खो। दाहना हाथ दाहनी जंघा पर और बायाँ बाईं जंघा पर। मुँह को बंद करो, और नाक से गंभीर साँस लो। साँस लेते समय दोनो हाथों को ऊपर की ओर ले जाओ, दोनो हाथ कंधों की सीध में हों। यहाँ हाथों को ३ सेकेंड तक ठहराओ, और फिर साँस छोड़ते वक़्त हाथों को नीचे की ओर ले लाओ, अर्थात् पूर्व स्थिति में आ जाओ। साँस लेने की अपेक्षा निकालने में शीघ्रता होनी चाहिए।

(६) सीधी खड़ी हो जाओ। दोनो हाथों को जाँघों पर रक्खो। अब धीरे-धीरे साँस लो, और हाथों को ऊपर ले जाओ। यहाँ तक कि हथेलियाँ सिर के ऊपर मिल जायँ। अर्थात् आकाश की ओर हाथ जुड़े हुए हों। साथ ही अपने शरीर को पैरों के अँगूठों के बल उठाओ। तीन सेकेंड तक इसी दशा में रहकर साँस छोड़ना आरंभ करो, और पहले के ढंग में आ जाओ।

(७) अपने दाहने-बाएँ सीधे हाथ फैलाकर खड़ी हो जाओ। मानो तैरने के लिये खड़ी हो। फिर उन्हें धीरे-धीरे लाकर सामने इस तरह से मिलाओ कि दोनो हाथों की हथेलियाँ आपस में मिल जायँ, और जब साँस लेना आरंभ करो, सब हाथों को धीरे-धीरे अलग करते हुए पीठ की तरफ़ यहाँ तक ले जाओ कि कमर के नीचे दोनो हथेलियाँ आपस में मिल जायँ। तीन सेकेंड तक इसी दशा में रहकर साँस छोड़ना आरंभ करो, और पहले की स्थिति में आ जाओ।

इस प्रकार प्राणायाम की अनेक तरकीबें हैं, परंतु हमें ये विधियाँ पसंद नहीं, और ख़ास करके स्त्रियों के लिये इस प्रकार का प्राणायाम ठीक नहीं। अब स्त्रियों के करने योग्य प्राणायाम की आधुनिक भारतीय विधि बतलाते हैं। इसके पहले निम्न-लिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए—

(१) गंदे, बंद, बदबूदार, दलदलवाले, मैले, खँडहर, भयप्रद स्थानों में प्राणायाम नहीं करना चाहिए।

(२) पेट भरे हुए प्राणायाम करना भी अनुचित है।

(३) अत्यंत भूखे और अत्यंत प्यासे भी प्राणायाम नहीं करना चाहिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

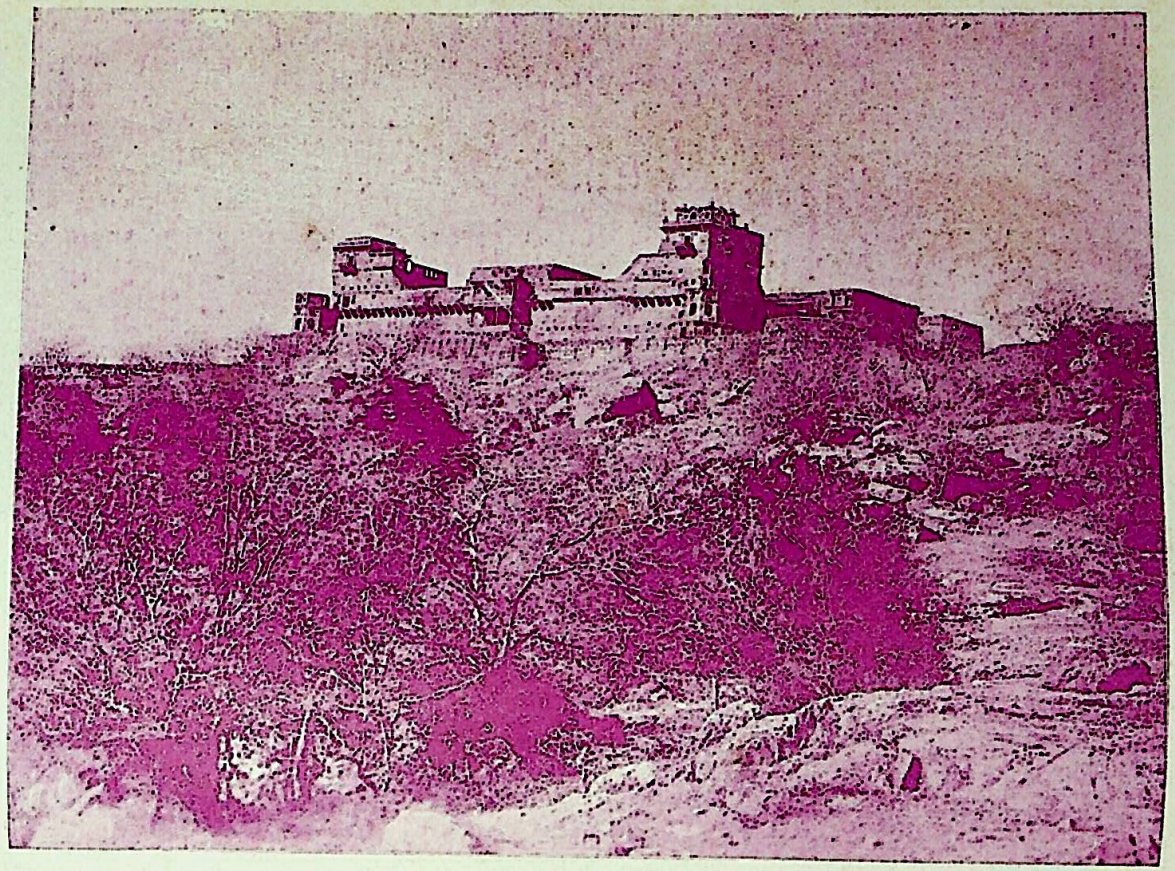

गढ़-कुंडार

[यह बुंदेलखंड के एक इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन क़िले का फ़ोटो है। जुझौति के अंतिम स्वतंत्र राजा खँगारों के राजत्व-काल में यह बुंदेलखंड की राजधानी था। गंगा-पुस्तकमाला के 'गढ़-कुंडार'-नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास में इसका सविस्तर वर्णन है।]

(फ़ोटो झाँसी की प्रसिद्ध 'जी० पाणेनर कं० द्वारा)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

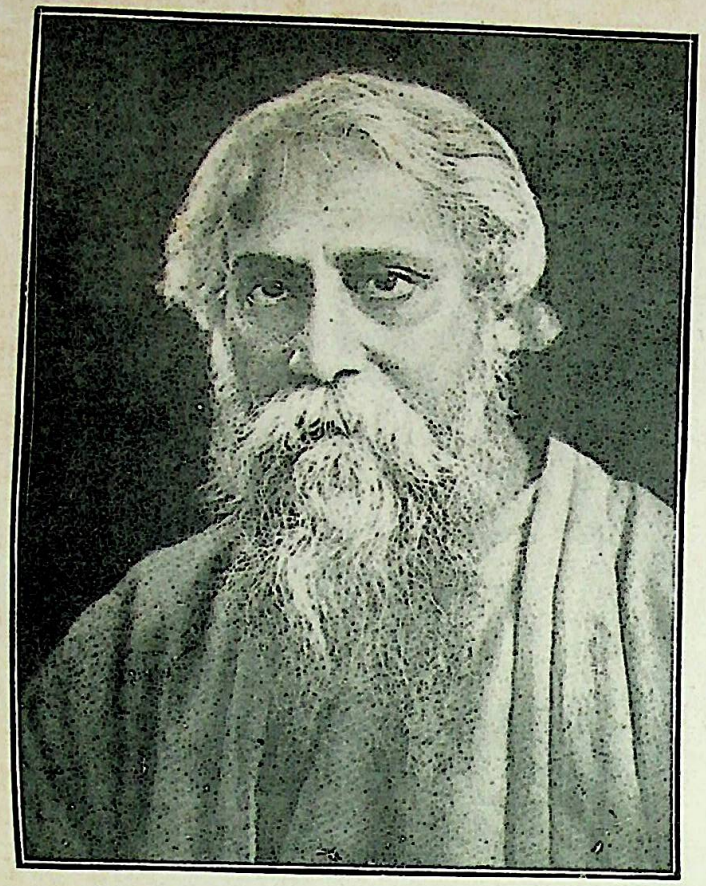

महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर

[आप भारत के दो सर्वश्रेष्ठ महापुरुषों में से हैं। आपके जगत्प्रसिद्ध विश्वप्रेमी सिद्धांतों के कारण आक्सफ़ोर्ड-विश्व-विद्यालय ने आपको 'संसार के धर्म'-नामक विषय पर एक व्याख्यान-माला देने के लिये, अभी कुछ दिन हुए, आमंत्रित किया था।]

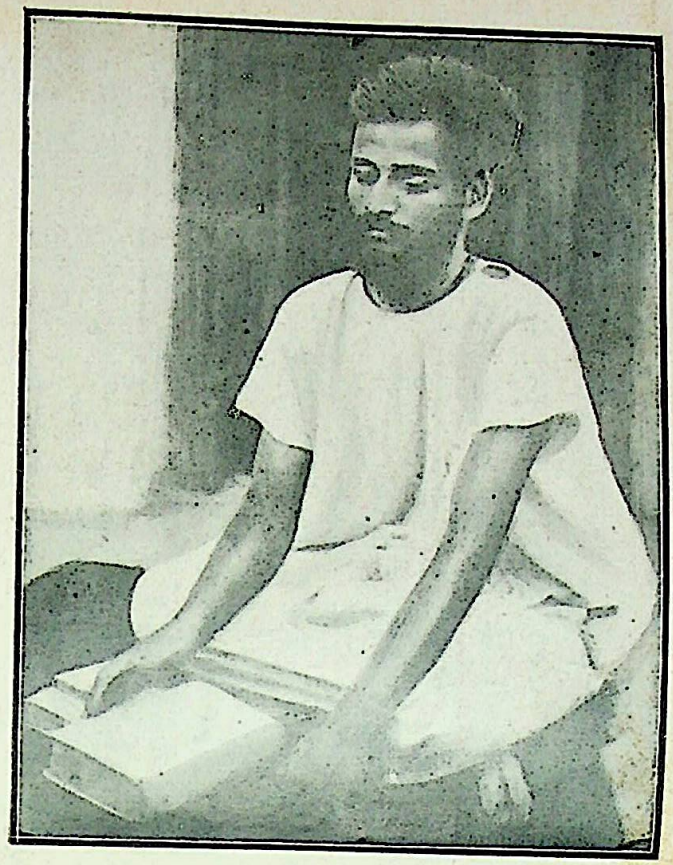

श्री० बाबा राघवदासजी

[हिंदी के अनन्य प्रेमी, गोरखपुर-प्रदेश के राष्ट्रीय आंदोलन के प्राण बाबाजी को सरकार ने अभी कुछ दिन हुए अपना अतिथि बनाया है। आप गोरखपुर के गत हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के एक प्रधान कार्यकर्ता थे। आप कल्याण (मासिक पत्रिका) के यशस्वी संपादक भी हैं।]

(४) जिसके शरीर की गरमी १०० डिग्री से अधिक हो, उसे प्राणायाम हानि-प्रद है।

(५) प्राणायाम करनेवाले को नाक और मुँह बहुत शुद्ध रखने चाहिए।

(६) तंबाकू, गाँजा, शराब आदि मादक पदार्थों के सेवन करनेवाले को प्राणायाम से लाभ नहीं हो सकता।

(७) आरंभ में अधिक देर तक प्राणायाम नहीं करना चाहिए।

(८) प्राणायाम करनेवाले को चाहिए कि सदा नाक से ही श्वासोच्छ्वास की क्रिया किया करे, मुँह से नहीं।

स्वच्छ भूमि पर एक पट्टा अथवा चौकी रक्खो। उस पर कुशासन बिछाकर उसके ऊपर कृष्ण मृग-चर्म रक्खो। इस मृग-चर्म पर तीन अंगुल ऊँचा ऊनी आसन बिछाओ, और इस ऊनी आसन पर एक अंगुल मोटा सूत का आसन रक्खो। ध्यान रहे कि आसन न तो बहुत गुदगुदा ही हो, और न अत्यंत कठोर ही। ऐसे उत्तम आसन पर आलस त्याग कर प्रसन्न मन से प्राणायाम करने के लिये बैठो। स्वधर्मानुसार ईश्वर का स्मरण करो, और पद्मासन लगाकर बैठ जाओ। अब प्राणायाम करने के पूर्व कुछ देर तक "भस्त्रिका" करो। भस्त्रिका की विधि इस प्रकार है—

सीधी खड़ी रहो, या बैठ जाओ। किंतु इस बात का ध्यान रक्खो कि तुम्हारी कमर झुकी न रह जाय। प्राणायाम के वक्त सिर और पीठ बिलकुल सीधे रहने चाहिए। इसके लिये यदि सीधी दीवार के सहारे भी बैठा जाय, तो कोई हानि नहीं। पीठ की रीढ़ टेढ़ी रहने से बीमारियाँ तो उत्पन्न होती ही हैं, अपितु बुद्धि की धारणा-शक्ति भी निर्बल पड़ जाती है। इसीलिये भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि

"समं कायशिरोग्रीवं"

शरीर, सिर और गर्दन को सम-सूत्र में रखकर ही प्राणायाम करना चाहिए। प्राणायाम के समय ही नहीं, प्रत्युत सर्वदा इस नियम का पालन करने से मनुष्य दीर्घायु एवं बुद्धिमान् हो जाता है। जो लोग कमर को कमान बनाकर बैठते-उठते अथवा संध्या-प्राणायाम आदि करते हैं, उन्हें बहुत हानि होती है।

अब दाहने हाथ के अँगूठे से अपना दाहना नथुना दबाओ, और बाएँ नथुने से साँस खींचो। फिर मध्यमा और अनामिका अँगुली से बायाँ नथुना बंद करके दाहना खोल दो। अब दाहने नथुने से साँस लो, और अँगूठे से बंद करके बायाँ नथुना खोल दो। अर्थात् एक नथुने से साँस लो, दूसरे से छोड़ो; फिर छोड़े हुए नथुने से साँस खींचो और दूसरे से छोड़ो। इस प्रकार २५-५० बार करो। अथवा इससे भी अधिक बार कर सकते हो। पहले दिन कम करना चाहिए, और फिर धीरे-धीरे बढ़ाते जाना चाहिए। इसे "भस्त्रिका" प्राणायाम कहते हैं। "भस्त्रिका" लोहार की धौंकनी को कहते हैं। इस प्राणायाम के समय प्राण-वायु की गति धौंकनी की तरह होती है, इसलिये इसका नाम "भस्त्रिका" है।

भस्त्रिका से फेफड़ों की शुद्धि होती है। शक्ति से अधिक करने से सिर में चक्कर-सा आ जाता है। दौड़ने में या किसी प्रकार के श्रम में भस्त्रिका आप-ही-आप होने लगता है। प्राणायाम के पहले इसे कर लेने से नासिका आदि की शुद्धि हो जाती है। इसीलिये हमने पहले भस्त्रिका करने की सलाह अपनी पाठिकाओं को दी है।

'प्राणायाम'-शब्द प्राण और आयाम इन दो शब्दों से बना है।

"प्राणः स्वदेहजो वायुरायामस्तन्निरोधनम्।"

प्राणवायु के निरोध को प्राणायाम कहते हैं। प्राणायाम-क्रिया में प्राणों का आयाम करना आवश्यक होता है। नियमन और विस्तार को आयाम कहते हैं। संपूर्ण प्राण-शक्ति का नियमन करना, उस शक्ति को अपने अधीन करने का प्रयत्न करना और उसका विस्तार करना प्राणायाम का मुख्य उद्देश्य है। अपनी छाती में जो फेफड़े हैं, उनमें प्राण का मुख्य स्थान है। फेफड़ों में विश्वव्यापिनी प्राण-शक्ति वायु के साथ नासिका द्वारा जाकर रुधिर में मिल जाती है, और रुधिर के साथ सारे शरीर में पहुँचती है। प्राण ही हमारी जीवन-कला है, इसके बिना जीवन ही नहीं।

प्राणों का निवास फेफड़ों में है। जितने बड़े फेफड़े होंगे, और जितनी उनमें धारणा-शक्ति होगी, उतना ही प्राण हमारे शरीर में प्रवेश हो सकेगा। जिनकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छाती सिकुड़ी हुई, कम चौड़ी होती है, उनके फेफड़ों में प्राण कम पहुँचता है। यही कारण है, सिकुड़ी हुई छातीवाले मनुष्य को प्रायः क्षय आदि भीषण रोग हो जाते हैं। प्राणायाम के अभ्यास से फेफड़े बलवान् हो जाते हैं, जिससे किसी तरह की बीमारी का भय नहीं रहता। स्त्रियों को प्राणायाम द्वारा मर्दों की अपेक्षा अधिक बड़े और शुद्ध फेफड़े बनाने की आवश्यकता है। क्योंकि जब स्त्रियाँ दौहद (गर्भवती) होती हैं, तब उन्हें अपने ही फेफड़ों से उस गर्भस्थ प्राणी को भी हवा पहुँचानी पड़ती है। इसलिये स्त्रियों को चाहिए कि प्राणायाम द्वारा अपने फेफड़ों को सर्वदा शुद्ध बनाए रक्खें।

बहनो, लोहार की धौंकनी को हवा देते हुए तुमने कई बार देखा होगा। धौंकनी द्वारा जब हवा अग्नि को प्रदीप्त करती है, तब उससे लोहा तक भी पिघलकर भस्म हो जाता है। इसी प्रकार शारीरिक अग्नि को प्रदीप्त रखने के लिये ईश्वर ने हमारे शरीर में फेफड़े की धौंकनी बनाई है। फेफड़ों के द्वारा प्राण-मिश्रित वायु का प्रवाह ज्यों-ज्यों शरीर की अग्नि पर पहुँचता है, त्यों-त्यों वह प्रदीप्त होता है। शारीरिक अग्नि के प्रदीप्त होने से शरीर की कांति और तेज बढ़ता है, और भूख भी बढ़ जाती है। इस प्रकार का प्राणायाम एक उत्तम प्रकार का व्यायाम है।

माता-पिता को चाहिए कि अपने आठ वर्ष के लड़के-लड़कियों को प्राणायाम की क्रिया सिखा दें। धीरे-धीरे बढ़ाकर दस-बारह वर्ष की उम्र तक उन्हें अच्छी सिद्धि प्राप्त करा देना आवश्यक है। प्राणायाम को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए। यद्यपि प्राणायाम करनेवाले की प्रवृत्ति ऐसी होती है कि मैं बहुत अभ्यास बढ़ा लूँ, तथापि शक्ति से अधिक प्राणायाम करने से हानि ही होती है। प्राणायाम करनेवाले को दो वर्ष तक जल्दी नहीं करनी चाहिए अन्यथा हानि होना संभव है। जिस प्रकार अधिक व्यायाम से लाभ की जगह हानि होने लगती है, उसी प्रकार अधिक प्राणायाम से भी नुक़सान पहुँचता है। जैसे शारीरिक व्यायाम के बहुत करने से शरीर में दर्द होने लगता है, परंतु थोड़ा-थोड़ा व्यायाम प्रतिदिन करने और धीरे-धीरे बढ़ाने से बहुत व्यायाम करने पर भी शरीर नहीं दुखता। इसी तरह प्राणायाम का व्यायाम करने से फेफड़े और आस-पास के स्नायु आरंभ में खट्टे हो जाते हैं। क्योंकि बाहर के अंगों की अपेक्षा अंदर के अंग बड़े ही कोमल होते हैं। यदि आरंभ में ही अधिक प्राणायाम किया जायगा, तो अंदर के स्नायु क्षीण हो जायँगे। दो वर्ष के नियम-पूर्वक अभ्यास के बाद ही प्राणायाम में अधिकता करनी चाहिए।

साँस के निकालने से छाती सिकुड़ जाती है, और साँस के अंदर लेने से छाती बढ़ जाती है। छाती के चारो ओर रस्सी लगाकर संकुचित छाती को नाप लो, और फिर साँस भरकर अपनी छाती नापो। दोनों में चौबीस अंगुल का अंतर होना चाहिए। यदि साँस भरने पर छाती चौबीस अंगुल फैल जाय, तो उत्तम। जो लोग प्राणायाम नहीं करते, उनकी छाती का फैलाव साँस रोकने पर ४-५ अंगुल ही होता है। छाती का विस्तार ही आयु का विस्तार है और उसका तंग होना ही मृत्यु है। साँस भरने पर जिसकी छाती २१ अंगुल फैल जाती हो, उसे मृत्यु का भय नहीं रहता। इसीलिये प्राणायाम को महा-मृत्युंजय कहते हैं। जिनकी छाती कम चौड़ी होती है, प्रायः वे ही जवानी में मरते हैं। चौड़ी छातीवाले मनुष्य १०० पीछे पाँच भी जवानी में नहीं मरते। यदि कन्याओं को आठ वर्ष की उम्र से प्राणायाम की क्रिया सिखा दी जाय, तो वे अवश्य पूर्ण आयु प्राप्त करेंगी। प्राणायाम के अतिरिक्त भी श्वासोच्छ्वास की क्रिया दीर्घ होनी चाहिए। लंबी साँस लेनेवाले अल्पायु नहीं होते। साँप के दीर्घजीवी होने का एक कारण यह भी है कि वह दीर्घ साँस लेता है। जो लोग सर्प की भाँति लंबी साँस लेने के अभ्यासी हैं, वे अवश्य चिरजीवी हैं।

साधारण लोग जैसी साँस लेते हैं, उससे फेफड़ों का आधा भाग ही काम में आता है, और आधा कमज़ोर हो जाता है। इसलिये हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि साँस में गंभीरता अवश्य हो। स्त्रियाँ प्रायः गीत गाती हैं। गीत गाते वक्त प्राणवायु का निरोध होता है। इससे फेफड़ों को बहुत लाभ होता है। गानेवाले को छाती के रोग कदापि नहीं होते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गायन से फेफड़ों को ख़ूब व्यायाम मिलता है। परंतु एक छोटी-सी तंग कोठरी में बहुत-सी स्त्रियों का एक साथ बैठकर गीत गाना अत्यंत ही हानिकारी है। क्योंकि वहाँ उन प्राणियों के योग्य यथेष्ट परिमाण में शुद्ध वायु नहीं मिलता। प्राणायाम के व्यायाम द्वारा श्री सैकड़ा ५० रोग नष्ट किए जा सकते हैं, इसलिये स्त्रियों को चाहिए कि नियम-पूर्वक विधि के अनुसार प्रतिदिन एक बार तो अवश्य ही प्राणायाम कर लिया करें। वे बहनें जो बड़े-बड़े नगरों की बदबूदार तंग गलियों में और जन-संकीर्ण मकानों में रहती हैं, हमारे बताए हुए प्राणायाम के लिये तरसेंगी, क्योंकि शुद्ध वायु में किया हुआ प्राणायाम ही लाभकारी होता है। हाँ, इतना अवश्य हो सकता है कि वे अपने मकान की सबसे ऊँची मंज़िल पर जाकर प्राणायाम कर सकती हैं, यदि वहाँ की वायु शुद्ध हो तो।

प्राणायाम तीन प्रकार का होता है—

"प्राणायामस्त्रिधा प्रोक्तः पूरकुंभकरेचकैः।"

(१) पूरक, (२) कुंभक और (३) रेचक।

"बाह्यादापूरणं वायोरुदरे पूरको हि सः।"

बाहरी हवा को नाक के द्वारा पेट में ले जाने का नाम पूरक है।

"संपूर्णकुंभवद्वायोर्धारणं कुंभको भवेत्।"

हवा को पेट के अंदर ज्यों-का-त्यों धारण किए रहने का नाम कुंभक है। जिस प्रकार जल-पूर्ण घड़ा होता है, उसी तरह वायु-पूर्ण पेट रहता है, इसीलिये इसका नाम कुंभक है।

"बहिर्यद्रेचनं वायोरुदराद्रेचकः स्मृतः।"

पेट में की हवा को नासिका मार्ग द्वारा बाहर निकाल देने का नाम रेचक है।

पूरक, कुंभक और रेचक इन तीनो क्रियाओं द्वारा एक प्राणायाम होता है। पहले बताए हुए आसन पर सुखासन से बैठकर पहले 'भस्त्रिका' प्राणायाम करो, और तत्पश्चात् पूरक आरंभ करो। पूरक करने के लिये दाहिना नथुना बंद करो। यदि दाहना बंद करो, तो बायाँ खुला रहने दो; और बायाँ बंद करो, तो दाहना खुला रहने दो। अब जो नथुना खुला हुआ है, उससे धीरे-धीरे हवा को भीतर की ओर साँस खींचो। यह पूरक हुआ।

इस पूरक के वक्त एक क्रिया और करनी चाहिए कि गुदा का संकोचन करके ऊपर की ओर खींचना चाहिए। इस क्रिया को यौगिक भाषा में "मूल-बंध" कहते हैं।

जब पूरक हो जाय, तब "कुंभक" करना चाहिए। इस वक्त दोनो नासा-रंध्र बंद कर देने चाहिए, और पेट के अंदर हवा को रोक रखना चाहिए। हवा को उतनी ही देर तक रोके रखना चाहिए, जब तक कि वह आसानी से रह सके। हवा को रोकने के लिये ज़बर्दस्ती नहीं करना चाहिए। बल-पूर्वक कुंभक करने से हानि होती है, मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

कुंभक के समय "उड्डियान-बंध" भी करना चाहिए। अपने पेट को बल-पूर्वक अंदर की ओर धकेलकर रहने का नाम 'उड्डियान-बंध' है। इसको बिना कुंभक के भी करते रहने से बहुत लाभ होता है।

कुंभक के बाद रेचक का नंबर है। पूरक के समय जिस नथुने को दबाकर रक्खा था, अब उसे छोड़कर रेचक करना चाहिए, अर्थात् उससे धीरे-धीरे साँस छोड़ना चाहिए। साँस एकदम छोड़ने से हानि होती है। बहुत सँभालकर धीरे-धीरे ही साँस त्यागना चाहिए।

इस वक्त "जालंधर-बंध" करना चाहिए। जालंधर-बंध में साँस छोड़ते वक्त गले के आस-पासवाली नलियों का संकोचन किया जाता है। इसमें पहले-पहल कठिनता होती है, परंतु अभ्यास से फिर सरल हो जाता है।

योग-शास्त्रों में लिखा है—

"युक्तं युक्तं त्यजेद्वायुं युक्तं युक्तं च पूरयेत्;
युक्तं युक्तं च बध्नीयादेवं सिद्धिमवाप्नुयात्।"

अर्थात् पूरक, कुंभक और रेचक तीनो को युक्ति-पूर्वक, विधि के साथ, धीरे-धीरे करने से ही प्राणायाम में सफलता मिलती है।

"प्राणायामेन युक्तेन सर्वरोगक्षयो भवेत्;
अयुक्ताभ्यासयोगेन सर्वरोगसमुद्भवः।"

अर्थात् विधि-पूर्वक प्राणायाम करने से ही समस्त शारीरिक दोषों का नाश होता है, और विधि-रहित करने से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आजकल के लोगों ने प्राणायाम को एक हौवा मान लिया है, और उसे करने से ऐसे डरा करते हैं, मानो प्राणायाम से मृत्यु ही हो जाती हो। प्राणायाम कोई भयावह क्रिया नहीं। हाँ, विधि-पूर्वक न करने से तो प्रत्येक कार्य घातक हो जाता है। जैसे भोजन शरीर की रक्षा के लिये किया जाता है, किंतु वही यदि असावधानी से किया जाय, तो प्राणघातक बन जाता है। सारांश यह कि प्राणायाम से डरने की कोई आवश्यकता नहीं। यह एक परम पवित्र और सर्वोत्तम क्रिया है। प्रत्येक स्त्री को चाहिए कि वह बिला नाग़ा नित्य नियम-पूर्वक प्राणायाम करे। गर्भवती होने पर भी यह क्रिया घातक नहीं है।

अब यहाँ यह देखना है कि प्राणायाम में कितना वक्त लगाना चाहिए? कई आचार्यों का मत है कि जितना वक्त पूरक में हो, उससे दुगुना समय रेचक में और रेचक से दुगुना वक्त कुंभक में लगाया जाय। मान लो कि एक दो से गिनती गिनते हुए १५ तक पूरक किया, तो फिर एक दो से गिनकर ६० तक कुंभक और फिर एक दो से गिनकर तीस तक रेचक किया जाय। इसी विधि को प्रायः सबों ने श्रेष्ठ माना है। परंतु हमारे विचार से आरंभ में इस उलझन में पड़ना ठीक नहीं। पहलेपहल जितना भी सध सके, करना चाहिए, और फिर धीरे-धीरे इस परिमाण पर आ जाना चाहिए। पहले दिन प्रातःकाल एक मिनिट से अधिक अभ्यास नहीं करना चाहिए, और इस एक मिनिट में भी सिर्फ़ तीन प्राणायाम करने चाहिए। उसी दिन सायंकाल को दो मिनिट और दूसरे दिन ३-४ मिनिट, इस प्रकार पाँच दिन में ८-१० मिनिट तक प्राणायाम किया जा सकता है। पहलेपहल एक प्राणायाम में १० सेकंड लगाने चाहिए, पूरक में ४ सेकंड, कुंभक में ३ सेकंड और रेचक में ८ सेकंड लगाकर २० सेकंड में एक प्राणायाम करना चाहिए। यह आरंभिक अभ्यास के लिये ठीक है। बाद में ऊपर लिखे अनुसार ही अभ्यास लाभदायक होगा। स्मरण रहे कि आरंभ में अधिक गंभीर साँस लेने या देर तक अभ्यास करने से मस्तक बिगड़ जाता है, इसलिये किसी भी बात में जल्दी नहीं करनी चाहिए।

लोग प्रायः प्रश्न किया करते हैं कि प्राणायाम के समय हाथ की किन-किन उँगुलियों से नाक पकड़नी चाहिए? इसका उत्तर घेरंड-संहिता से इस प्रकार है—

"कनिष्ठानामिकांगुष्ठैस्तर्जनीमध्यमां विना।"

मध्यमा और तर्जनी अँगुली को नाक से छुआना भी नहीं चाहिए। अंगुष्ठ, अनामिका और कनिष्ठिका से ही काम लेना चाहिए। अँगूठे से दाहना नथुना और अनामिका तथा कनिष्ठिका से बायाँ दबाना चाहिए। परंतु हमारे विचार से इस झंझट में पड़ना आवश्यक नहीं है।

अब एक प्रश्न और है कि प्राणायाम किस वक्त करने से लाभ होता है? इसका उत्तर यही है कि प्रातःकाल में सूर्योदय के पूर्व एक प्रहर से लगाकर सूर्योदय के १½ घंटे बाद तक, मध्याह्न में ११ बजे से १२½ एक बजे तक, और सायंकाल को सूर्यास्त के समय। क्या रात्रि में भी प्राणायाम किया जा सकता है? लोगों का कहना है कि रात में कार्बोनिक एसिड गैस के अधिक हो जाने से हवा बिगड़ जाती है। परंतु यह केवल बाल की खाल निकालना है। साधारणतः इस गैस का हवा पर प्रभाव कम ही होता है। इसके अतिरिक्त रात्रि के वक़्त हवा दिन की अपेक्षा अधिक स्वच्छ एवं शीतल होती है। इसलिये यदि रात में भी प्राणायाम किया जाय, तो कोई हानि नहीं।

क्या व्यायाम के साथ प्राणायाम करना ठीक है? नहीं, व्यायाम के समय प्राणायाम करना हानिकारक है। क्योंकि व्यायाम करते समय आक्सीजन का संग्रह अधिक होता है, और वह शरीरस्थ भोजन से मिलकर कार्बोनिक एसिड गैस को अधिक बनाता है। ऐसी दशा में कार्बोनिक एसिड गैस अधिक निकलनी चाहिए। किंतु प्राणायाम से वह साधारण साँस की अपेक्षा कम निकलती है। इसलिये यदि कार्बोनिक एसिड गैस का संग्रह अधिक हो गया, तो वह शरीर के लिये हानि अवश्य करेगी। प्राणायाम और व्यायाम अलग-अलग होने चाहिए। प्राणायाम के द्वारा दम बढ़ाना चाहिए, और उससे व्यायाम में लाभ उठाना चाहिए। प्राणायाम और व्यायाम के सम्मेलन से "सोना और सुगंध" की कहावत चरितार्थ हो जायगी। व्यायाम करते समय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज़बर्दस्ती साँस रोकने से हानि होती है। हाँ, गंभीरता-पूर्वक साँस लेना ज़रूरी है। प्रोफ़ेसर राममूर्ति के आश्चर्यजनक खेल सभी प्राणायाम और व्यायाम के सम्मेलन के फल हैं। इसलिये प्राणायाम और शारीरिक व्यायाम को अलग-अलग रखना ही ठीक है। व्यायाम के साथ प्राणायाम विधि-पूर्वक किया जाना भी कठिन है। अतएव दोनो का अलग-अलग अभ्यास करना चाहिए।

प्राणायाम के विषय में कई लोगों का विचार है कि "केवल साँस को अंदर रोके रखने ही का नाम प्राणायाम है।" परंतु ऐसा समझ बैठना भारी भूल है। वायु को अंदर खींचकर उसे रोकना और फिर उसे बाहर निकालने की क्रिया को प्राणायाम कहते हैं। केवल वायु ही हमारा प्राण है, ऐसा समझनेवाले ग़लती पर हैं। "परम पिता परमात्मा की वह विश्वव्यापिनी दिव्यशक्ति सूर्य के द्वारा वायु में स्थिर की जाती है, जिसे अपने शरीर में धारण करना ही प्राणायाम है।" जो इस बात को नहीं मानते, वे ग़लती पर हैं। उन्हें प्राणायाम करने से उतना लाभ नहीं हो सकता, जितना कि होना चाहिए। प्राणायाम करते समय हृदय में यह दृढ़ भावना होनी चाहिए—

"मैं एक विश्वव्यापिनी महान् शक्ति को अपने में भर रहा हूँ। वह पूर्ण रूप से मुझमें भरी हुई है, और मैं उसके बीच में हूँ। मेरे शरीर के सारे अंगों में प्राण-शक्ति का संचार हो रहा है, जिससे मुझमें नवजीवन का संचार हो रहा है। इस प्राणायाम-क्रिया के द्वारा मेरा बल, तेज, साहस, बुद्धि, आयु, शौर्य इत्यादि बढ़ रहा है, और मेरी पवित्रता हो रही है।" इत्यादि।

इस तरह की ऊँची भावना को लेकर किया हुआ प्राणायाम बड़ा लाभदायक होता है। श्वास, उसका निरोध और उच्छ्वास, ये तीन प्राणायाम के भाग हैं। प्राण का स्थान नासिका है, अतएव श्वासोच्छ्वास नासिका से करना नहीं भूलना चाहिए। मुख के द्वारा श्वासोच्छ्वास की क्रिया करना मानो रोगों और मृत्यु को निमंत्रण देना है। कारण विशेष से किए गए प्राणायामों को छोड़कर नाक से ही साँस लेना और छोड़ना चाहिए। सीत्कारी, शीतली आदि प्राणायामों में मुख से ही साँस लिया जाता है।

प्राणायाम-विषय पर एक बड़ी-सी पोथी तैयार हो सकती है, किंतु हमने आवश्यकीय सभी बातें, जिनका प्राणायाम से संबंध रहता है, यहाँ संक्षेप में समझाने के लिये लिख दी हैं। आशा है, पाठिकाएँ इससे अवश्य लाभ उठावेंगी।

प्राणायाम

अनु०, ठाकुर प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०। यह पुस्तक स्वामी रामचारक-लिखित 'साइंस ऑफ़् ब्रेथ' का हिंदी-रूपांतर है। प्राणायाम-जैसी कठिन क्रिया बड़ी सरल भाषा में समझाई गई है। साधारण-से-साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार पढ़कर प्राणायाम का अभ्यास कर सकता है। योगी तथा गृहस्थ सभी इससे लाभ उठा सकते हैं। मूल्य केवल ।॥=), सजिल्द १।=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पिस्ते का रायता

ही १ सेर । नमक २ तोले। दालचीनी ४ माशे। लौंग और इलायची ६ माशे। कालीमिर्च ६ माशे। ज़ीरा स्याह और सफ़ेद ४ माशे। पिस्ता आध पाव।

पहले पिस्ते को जल देकर थोड़ी आँच में उबाले और सब चीज़ों को दही में मिला दे। रायता तैयार हो जायगा।

किशमिश का रायता

किशमिश पाव-भर। दही १ सेर। नमक २ तोले। राई ५ तोले। दालचीनी ४ माशे। लौंग और इलायची ६ माशे। मिर्च १० माशे। ज़ीरा सफ़ेद और स्याह ६ माशे। पहले किशमिश को पानी में ख़ूब भिगोकर धो डाले। फिर दही में ऊपर का मसाला डालकर किशमिश भी मिला दे। बस, रायता बन जायगा। अगर मीठा करना हो, तो आध सेर शकर और मिला दे।

नमक की चटनी

सेंधा नमक को थूहर के दूध में भिगो दे। १ घंटे के बाद नमक के टुकड़ों को पानी से धोकर अदरक नाना में पीसकर अंदाज़ से ज़ीरा, हींग, मिर्च, घी में भूनकर डाल दे। अंत में नमक अवश्य डाले।

सोंठ

खटाई को उबाल लो। जब उबल जाय, तो ख़ूब मलकर छान लो। बहुत पतली न होने पावे। फिर उसमें छुहारे, किशमिश, अदरक, नमक, शकर, मिर्च इत्यादि डालकर रख दो। फिर काम में लाओ।

नौरतन चटनी

आमों को छीलकर गूदा उतार ले, और निम्न-लिखित मसाला डालकर चटनी पीस ले—

नमक, धनिया, बड़ी इलायची, लौंग, जायफल, जावित्री, दालचीनी, पोदीना, अदरक, बादाम, पिस्ता, घी में भुनी हुई किशमिश, छुहारे। इन सबको शकर की चाशनी करके ख़ूब मिलावे, और अमृतबान में रक्खे।

कृष्णवती श्रीवास्तव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिशु-पालन

बाल-मृत्यु के कारण

(गतांक से आगे)

पैतृक विकार—कई माताओं में गर्भपात की अभिरुचि होती है। इसका कारण वंश-परंपरागत अथवा कोई जन्म की निर्बलता या विकार होता है। उसी निर्बलता या विकार के कारण शिशु भी पूर्व प्रसव हो सकता है अथवा उस निर्बलता के साथ उत्पन्न हो सकता है। यह निर्बलता रोग-जन्य भी हो सकती है। उदाहरण के लिये शिशु के जन्मदाता माता-पिता दोनों को अथवा एक को यदि श्वास-प्रणालिका एवं फुफ्फुस का रोग है, तो उत्पन्न शिशु के भी ये अवयव रुग्ण एवं निर्बल उत्पन्न होंगे। कारण, वीर्य और रज में इनका प्रतिनिधि रुग्णावस्था में जाकर मिला है, जिससे यह रुग्ण उत्पन्न होता है। अब यदि शहर की अशुद्ध वायु एवं अस्वच्छता, तथा सर्दी का लगना या गर्मी का आक्रमण हो जाता है, तो शिशु शीघ्र ही (निर्बल होने के कारण) आक्रांत होकर माता-पिता को रोता हुआ छोड़कर चला जाता है। अथवा कई जन्म के रोग शिशु के उत्पन्न होने पर प्रबल होकर उसकी मृत्यु का कारण बन जाते हैं। यथा उपदंश, कामला (जौयंडीस) आदि। जिस पिता को मृगी का रोग होता है, शिशु में भी यही रोग अवश्य आवेगा।

वंश-परंपरागत अभिरुचियाँ—यदि किसी शिशु के माता या पिता किसी व्यसन में फँसे हैं, तो वे ही इसके व्यसन शिशु में भी आवेंगे। साथ ही ये पिता से भी शीघ्र उसमें आरंभ हो जायँगे। अर्थात् यदि पिता या माता १६ वर्ष की आयु में मद्य का पान करने लगे हैं, तो शिशु १६ वर्ष से पूर्व ही शराब की दूकान का मुख देखने लगेगा। वह शुरू से ही जाम का आनंद अनुभव करने लगता है*।

जहाँ पर ये अभिरुचियाँ आती हैं, वहाँ पर इन अभिरुचियों के दुष्परिणाम भी अवश्य आते हैं। यथा

---

*.....दशैतानि कुलानि वर्जयेत् ;
क्षय्यापव्यामपस्मारो खिन्नो कुष्ठकुलानि च। मनुः

Avoid marrying, if possible, a woman of an hysterical Temperament.

I pray you avoid marrying a woman with a small waist

देखिए, साइंस ऑफ् लाइफ, मद्य के लिये, पृष्ठ ५३।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मद्यपान के कारण यकृत-रोग, उन्माद (मस्तिष्क-विकार), अपस्मार आदि। इन रोगों में से कोई एक बढ़कर घातक हो जाता है।

प्रसव के समय की अशुद्धता—शिशु खिलता हुआ फूल होता है। उसके अंदर प्रतिरोध की शक्ति बहुत निर्बल होती है। ऐसी अवस्था में यदि कोई रोग या विष आक्रमण कर जाय, तो उससे बचना उसके लिये असंभव है।

भारत में प्रसव-क्रिया बड़ी अशुद्धता के साथ की जाती है। धात्री अपने मैले हाथों, मैले वस्त्रों तथा मैले उपकरणों का उपयोग करती है। यही नहीं, सूतिका-गृह इतना गरम तथा अशुद्ध वायु-पूर्ण होता है कि उसमें रहने से एक पूर्ण स्वस्थ युवा भी बीमार हो जाय, उस नवजात कलिका का तो कहना ही क्या!

इसके कारण जहाँ माता को संक्रमण (septicæmia) एवं प्रसूति-ज्वर (Puerperal Fever) होता है, वहाँ शिशु में भी दम घुटना (Asphyxia), नाभिनाल का पकना आदि रोग हो जाते हैं, जिसके कारण आधे शिशुओं की मृत्यु इसी सूतिका-गृह में हो जाती है। उनके जीवन की लीला यहीं से आरंभ हुई थी, और यहीं समाप्त हो जाती है।

यह दृश्य विशेष रूप से दर्शनीय एवं करुणाजनक बंबई तथा कलकत्ते में होता है, जहाँ कि घर गृहस्थी का भी काम देता है, और दूकान का भी अथवा जहाँ छोटी-सी काल-कोठरी में एक गृहस्थी की सेना रहती है। उस समय यदि कोई नया सिपाही सेना में भरती होने को आ रहा होता है, तो उसके आगमन के लिये किया गया गृह-परिष्कार देखने योग्य होता है। उसी काल-कोठरी में परदा टाँग दिया जाता है, जिससे कि उसके दो भाग हो जाते हैं। प्रसूता को अंदर रखकर दर्वाज़े को परदे द्वारा अथवा वैसे ही बंद कर देते हैं, जिससे कहीं वायु और सूर्य देवता उसके ऊपर नज़र न मार सकें। कमरे में कोयलों की अँगीठी जला दी जाती है। पुराने कपड़ों का ढेर लगा दिया जाता है। ६० वर्ष की धात्री, जिसके हाथों में बल नहीं होता, हाथ काँप रहे होते हैं, आँखों से दिखाई नहीं देता, उसमें उस नवागत सिपाही की अभ्यर्थना के लिये बिठा दी जाती है। वह अपने मलिन उपकरणों का उपयोग करती है, जिससे कि शत्रु को घर में घुसने का अवसर मिल जाता है। जीवाणुओं (जिनके अशुद्ध वायु, अँधेरा सहायक होते हैं) की शक्ति बढ़ जाती है। वह माता और शिशु पर ज़ोरों के साथ आक्रमण करते हैं। इन आक्रमणों के सहने की शक्ति न माता में होती है, न शिशु में। कारण, दोनो ही निर्बल अवस्था में होते हैं। बस दोनो ही रुग्ण होकर सदा के लिये पास-पास सो जाते हैं अथवा सदा के लिये रुग्ण, निर्बल हो जाते हैं। इस समय उत्पन्न हुए रोगों की चिकित्सा कठिन हो जाती है। प्रसव-काल में आधी मृत्यु का प्रायः यही कारण होता है। कोयलों से उत्पन्न कोल-गैस एवं कार्बन-डाय-आक्साइड-गैस स्वस्थ और युवा व्यक्ति के लिये भी तात्क्षणिक घातक होती हैं। फिर उस अवस्था में माता और शिशु के लिये क्या कहा जाय!

इसके अतिरिक्त टैटिनस (धनुष्टंकार) आदि के जीवाणु (स्टैप्टोकॉकाई, स्टैफ्लोकॉकाई) भी इस समय आक्रमण करने से नहीं चूकते। मार्ग के चारो ओर से घिरे होने के कारण कहीं भी बचने का रास्ता नहीं होता। यदि कुछ शक्ति होती है, तो कुछ समय बाद, अन्यथा शीघ्र ही, उसी समय आत्मसमर्पण करना पड़ता है। इसके सिवा और कोई मार्ग नहीं।

पोषण की अशुद्धता—भगवान् की दया से यदि शिशु अचानक काल-कोठरी से बच गया, तो पोषण की अशुद्धियों के कारण ही शिशु की मृत्यु हो जाती हैं। ये अशुद्धियाँ प्रायः निम्न प्रकार की होती हैं—

(क) रात को माता और शिशु का मिलकर सोना, जिससे सोते-सोते माता की बाँह, टाँग अथवा अन्य भाग शिशु की ग्रीवा पर आकर मृत्यु का कारण बनता है। अतः आवश्यक है कि या तो पृथक् ही शय्या बनाई जाय अथवा दोनो के बीच में एक तकिया रख लेना चाहिए।

(ख) अशुद्ध वायु या बंद कमरे में सोना।

(ग) उचित भोजन, उचित मात्रा में, उचित समय पर न मिलना।

(घ) माता का बाहर पुतली घरों में या अन्यत्र काम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर जाना, जिससे समय पर उचित सहायता शिशु को न मिल सके।

(ङ) शिशु के वस्त्र आदि की त्रुटियाँ, जिससे सर्दी लाकर निमोनिया हो जाता है।

भोजन की त्रुटियाँ—जिस प्रकार युवा व्यक्ति के लिये उत्तम, उचित, परिमित, नियमित समय पर भोजन की आवश्यकता है, उसी प्रकार तत्काल उत्पन्न हुए बच्चे के लिये भी है *।

(क) उत्तम भोजन—विकृत, दोष-पूर्ण दूध शिशु में रोग उत्पन्न कर सकता है। यदि दूध में वसा की मात्रा अधिक है, तो उसके कारण उसको अतिसार होना संभव है। यदि वसा कम है, तो मलबंध हो जायगा। यदि माता का अथवा अन्य प्रकार का दूध, जो कि यक्ष्मा के कीटाणु से संक्रांत है, शिशु में यक्ष्मा उत्पन्न करने में समर्थ है †। दूध से टायफ़ायड बहुत अधिक फैलता है।

(ख) उचित भोजन—जमा हुआ दूध या वह दूध, जिसमें स्टार्च (निशास्ता) का भाग है, शिशु के लिये हानिकारक है। भोजन-दूध को यथासंभव स्तन्य दूध के रूप में ही दिया जाना चाहिए। यदि कृत्रिम दूध देना आवश्यक हो, तो निश्चित अनुपात में उसे हलका करके एवं सब कृमियों से बचाते हुए देना चाहिए।

(ग) परिमित भोजन—अधिक या न्यून मात्रा में दिया गया भोजन हानिकारक है। अधिक भोजन के कारण वमन, शूल (उदर), अजीर्ण, दूध का फेकना आदि उपद्रव जहाँ होते हैं, वहाँ हीन मात्रा में दे देने से शिशु का भार नहीं बढ़ता। वह पतला, निर्बल, सूखा रहता है।

(घ) नियमित भोजन—शिशु के भोजन का समय निश्चित रखना अत्यंत आवश्यक है। जिस प्रकार अनियमित समय पर भोजन करने से युवा व्यक्ति की पाचन-क्रिया विकृत हो जाती है, उसी प्रकार शिशु को भी वमन, अतिसार, शूल आदि रोग इसके कारण होने लगते हैं। शिशु इन रोगों के कष्ट के कारण चिल्लाता है। माता उसे चुप करने के लिये स्तन पिला देती है। शिशु कुछ क्षणों के लिये चुप हो जाता है। परंतु वह फिर चिल्लाना आरंभ करता है। फिर स्तन दिया जाता है। इस प्रकार चक्कर बन जाता है, जिससे अजीर्ण, शूल बढ़ता जाता है। कारण को न जानकर चिकित्सा करना निष्फल है। धीरे-धीरे यह रोग स्थायी हो जाता है। इसका उत्तम उदाहरण यौवनावस्था में मलबंध (Constipation) है, जो सब रोगों की भूमि है।

अतः आवश्यक है कि भोजन को इन सब त्रुटियों से बचाकर दिया जाय।

अस्वच्छता—तंग, बुरे वातायनवाले एवं धूम तथा धूल से भरपूर वायु-मंडलवाले घरों में जीवन व्यतीत करना, माता और शिशु, दोनो के लिये हानिकारक है। धूल में खेलते या रहते हुए अनेक रोगों के कीटाणु कोमल, निर्बल शरीर पर अपना अधिकार कर लेते हैं। निमोनिया, यक्ष्मा, इन्फ़्लुएंज़ा रोग शीघ्र आ घेरते हैं। प्रत्येक रोग घातक प्रभाव रखता है। यदि इसके बीच में प्रकृति बाधक न बने, तो इनमें से कोई एक रोग शिशु का प्राण ले लेता है।

प्रायः ये रोग श्वास-प्रणाली के रोग होते हैं। यथा निमोनिया, ब्रांको निमोनिया, कास, कुक्कर-कास आदि। यक्ष्मा प्रायः इसी अस्वच्छता के कारण फैलता है। शिशु कृश होता हुआ अंत में सदा के लिये आँखें मूँद लेता है।

अत्रिदेव गुप्त

---

* अन्नं वृत्तिकराणां श्रेष्ठम्। त्रयो विष्टाणः—आहारस्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति। (आत्रेय)

† दुग्धकः क्षीरदोषः शिशूनामक्षिवर्त्मनी। (सुश्रुत)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिमाग़ की कमज़ोरी की दवा

पैर धोने से पहले यदि मुख धो लिया जाय, तो दिमाग़ कभी कमज़ोर नहीं होता।

दस्त साफ़ होना

नीबू के रस में जायफल घिसकर चाटने से दस्त साफ़ होता है, और पेट का अफरा भी मिट जाता है।

स्वास्थ्य-रक्षा

स्वास्थ्य-रक्षा के लिये नित्य चारपाई से उठकर जल पीना, थोड़ी कसरत करना, अधिक बार भोजन न करना, शराब न पीना, अधिक कड़वी व खट्टी चीज़ न खाना आवश्यक है।

पैर फटना

प्रायः पानी में चलते रहने के कारण स्त्रियों के पैर फट जाते हैं। रात को सोते समय पैरों पर कड़वा तेल लगाकर यदि पिसी हुई हल्दी भुरभुरा दी जाय, तो दो-चार दिन में ठीक हो जाते हैं।

मुँह का खारापन

कारबोनेट ऑफ़् सोडा से मुँह धोने से मुँह का खारापन दूर हो जाता है।

लू लगना

प्याज़ का अर्क़ निकालकर दोनो कनपटी और कलेजे पर मालिश करने से लू का असर जाता रहता है।

बच्चा जल्दी पैदा हो

काले धतूरे की जड़ कमर में बाँधने से बच्चा जल्दी होता है।

निद्रा आना

जायफल को घी में घिसकर पलकों पर लगाने से नींद आ जाती है।

पसली का दर्द

ज़रा-सा सेंदुर शहद में मिलाकर साफ़ कपड़े पर लगावे, फिर उस दर्द के स्थान पर लगाकर दूर की आँच से सेकने से पसली का दर्द जाता रहता है।

रतौंधी

गाय के ताज़े गोबर के रस में लेंड़ी पीपर घिसकर आँख में अंजन लगाने से रतौंधी को आराम होता है।

बाल उगना

काले धमरा के पत्तों का स्वरस १०-१५ दिन लगाने से बाल जल्द उग आते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बवासीर

गोजिया का पंचांग १ तोला, काली मिर्च सात मिलाकर पीसकर १ छटाँक जल में घोलकर सुबह-शाम २१ दिन पीने से सर्व प्रकार की बवासीर नष्ट हो जाती है।

छाजन

सरसों का नरुसानर का तैल और उससे चौथाई गृहधूम डालकर मिला दे। प्रति दिन दो-तीन बार लगाने से पुराने-से-पुरानी छाजन भी दूर हो जाती है।

कृष्णवती श्रीवास्तव

साहित्य-मणि-माला

हिंदी में अपने ढंग की सबसे सस्ती और उपयोगी पुस्तक-माला। इसमें कथा, कहानी, उपन्यास, जीवन-चरित्र, नाटक, इतिहास, साहित्य, विज्ञान, ललित कला आदि विषयों की सुंदर और सुपाठ्य पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। छपाई, सफ़ाई और सजावट सभी मनोरम हैं। ८० से २०० पृष्ठ तक की प्रत्येक सजिल्द पुस्तक का मूल्य दस आना। स्थायी ग्राहकों से पोस्टेज नहीं लिया जाता। बारह पुस्तकों के लिये ७॥) रु० पेशगी भेजकर स्थायी ग्राहक बनिए, एवं श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन में हमारा सहयोग कीजिए। प्रकाशित पुस्तकें—

१—झंकार—श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त की अपूर्व गीति-कविताओं का संग्रह।
२—अंकुर—श्रीकृष्णानंदजी गुप्त की तेरह सुंदर और सुपाठ्य कहानियों का संग्रह।
३—स्वप्नवासवदत्ता—महाकवि भास के सुप्रसिद्ध संस्कृत-नाटक का हिंदी-रूपांतर। अनुवादक, श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त।
४—स्वास्थ्य-संलाप—सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई स्वास्थ्य-विज्ञान की अनुपम पुस्तक। पढ़ने में कथा-साहित्य का आनंद आता है। लेखक, श्रीकृष्णानंदजी गुप्त।
५—दूर्वा-दल—श्रीसियारामशरण गुप्त-लिखित सुप्रशंसित भाव-पूर्ण कविताओं का संग्रह।
६—शेलकश—रूस के विश्व-विख्यात उपन्यासकार गोर्की के उपन्यास का अनुवाद।
७—पुरातत्त्व-प्रसंग—लेखक, आचार्य श्रीमहावीरप्रसादजी द्विवेदी। पुरातत्त्व-विषयक निबंध-संग्रह।

और भी एक-से-एक सुंदर ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

हमारे यहाँ के अन्य ग्रंथ—मेघनाद-वध ३॥), गुरुकुल २), हिंदू १), १।), त्रिपथगा १॥), विकट भट ८), चित्रांगदा ।=), हेमलता सत्ता ।-), रेणु ॥), विषाद ।-), आर्द्रा १), शक्ति १), गीता-रहस्य २॥), वीरांगना १), भारत-भारती १), जयद्रथ-वध ।-)

पता—साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. पद्य-संग्रह

हिंदी-सुमन-संग्रह—संगृहीता, श्रीशुकदेव तिवारी बी० टी०, सिटी हाई स्कूल, गाजीपुर। संगृहीता महाशय से प्राप्य। पृष्ठ-संख्या १०८। मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक में चुने हुए गद्य के अंशों पर अभ्यासार्थ प्रश्न दिए गए हैं। पद्य-संग्रह भी है। यदि गद्य-संग्रह ही रहता, तो पाठकों के लिये अधिक उपयोगी होता। गद्य-पद्य की खिचड़ी यहाँ मेल खाती नहीं मालूम होती।

× × ×

पद्य-कुसुमावली—संकलनकर्ता, श्रीशिवमंगलसिंह बी० ए०, राजेश्वरी हाई इँगलिश स्कूल, सूर्यपुरा, शाहाबाद। प्रकाशक, राजराजेश्वरी-पुस्तकालय, कचहरी-रोड, गया। पृष्ठ-संख्या १३२। मूल्य लिखा नहीं।

यह पद्य-संग्रह स्कूली विद्यार्थियों के लिये प्रकाशित किया गया मालूम होता है। संग्रह में कोई सूची नहीं है। संकलन अच्छा है। अच्छे-अच्छे कवियों की फुटकर कविताओं के रत्न एकत्र किए गए हैं। संग्रह में साधारण जनता के मनोरंजन की भी अच्छी सामग्री है। प्रायः सभी बड़े कवियों से थोड़ा-बहुत परिचय मिल जाता है। पुस्तक का मूल्य लिख देना चाहिए था।

× × ×

२. नाटक

प्रताप-प्रतिज्ञा—लेखक, श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद 'मिलिंद'। प्रकाशक, हिंदी-भवन, अनारकली, लाहौर। पृष्ठ-संख्या १०० । मूल्य ॥≡)

प्रातःस्मरणीय प्रताप की पूज्य स्मृति को नाट्य-साहित्य में जीवित रखने के लिये कई नाटक लिखे जा चुके हैं। सबसे पहले इस विषय पर स्वर्गीय राधाकृष्ण-दासजी की कृति के दर्शन हुए। इसके पश्चात् प्रसिद्ध नाट्यकार द्विजेंद्रलाल राय ने बँगला-रंगमंच पर मेवाड़ की पुण्य-भूमि का यशोगान किया। अब मिलिंद-जी की कृति के दर्शन हुए हैं। यदि तुलना कर देखिए, तो एक ही विषय पर तीन नाटकों पर अपने-अपने समय की अलग-अलग छाप है। राधाकृष्णदासजी के समय तक हिंदुत्व सांप्रदायिकता के अंधकार में पड़ा था, जातीयता की जागृति विशेष रूप से नहीं हो पाई थी। द्विजेंद्रलालजी का समय देशी कला के पुनरुत्थान का समय था। उसमें जातीयता के साथ अंतर्देशीय उदारता का सम्मिश्रण था। अब दूसरा समय है। राष्ट्रीय भावों का समुद्र उमड़ रहा है, और देश का यौवन उसमें उमंगें ले रहा है।

फलतः राधाकृष्णदासजी ने सांप्रदायिकता के घेरे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में प्रताप और मानसिंह के मिलन की घटना पर हिंदुत्व की प्रचलित संकीर्णता की छाप लगाई, और द्विजेंद्रजी ने दार्शनिक चरित्रों और आदर्श-चरित्र मुसलमानों की रचना द्वारा अपने विश्व-प्रेम का परिचय दिया। प्रताप के आधुनिक संस्करण पर मिलिंदजी ने भी अपने समय की छाप दी है। मिलिंदजी की प्रताप-प्रतिज्ञा स्वतंत्रता के मद से भरे हुए भारत के एक आधुनिक युवक की प्रतिज्ञा है। अतएव इस नाटक में जातीयता और स्वाधीनता के भावों का प्रकाश-ही-प्रकाश है। छाया और प्रकाश का सम्मिश्रण नहीं। इस नवीन नाटक में नाट्य-कला की प्रौढ़ता का तो परिचय चाहे न मिले, परंतु इसकी भाषा और इसके वीर-चरित्रों के भाव लेखक के हृदय से निकले हैं, इसलिये नाटक की भाषा में जीवन-प्राण ही नहीं, जीवन-मद भी है। मिलिंदजी को अपनी इस कृति के लिये बहुत गर्व नहीं है। आप यह समझते हैं कि कला के नियम न पालन करने पर आप पर समालोचक-समुदाय बाण-वर्षा करेंगे। कोई करें, परंतु हम तो आप पर पुष्प-वर्षा करते हैं, आपको बधाई देते हैं। ईश्वर करे, आप ऐसे ही जीवित साहित्य की सृष्टि किया करें।

× × ×

३. इतिहास

बुंदेलखंड का इतिहास—लेखक, दीवान प्रतिपालसिंह। प्रकाशक, कुँवर पृथ्वीसिंह, छतरपुर (सी० आई०)। संपादक, ला० भगवानदीन। पृष्ठ-संख्या ३८०। मूल्य ३)

प्रस्तुत पुस्तक में बुंदेलखंड की ऐतिहासिक भूमि की चर्चा की गई है। बुंदेलखंड राजपूताना की भाँति वीरत्व, पहाड़ी और नैसर्गिक दृश्यों से परिपूर्ण होने के कारण चिरकाल से वीरों की जन्मभूमि रहा है। पाठक इसकी सीमा से भी परिचय प्राप्त कर लें। यह भूमि यमुना से नर्मदा तक और कालीसिंध तथा चंबल नदी से सोन तक है। इस भूमि द्वारा मातःस्मरणीय राम की वन-यात्रा हुई। इसके मध्य आल्हा-ऊदल-ऐसे वीर हुए, और दुर्गावती तथा लक्ष्मीबाई-जैसी वीरांगनाओं की जीवन-लीला समाप्त हुई। गंगा-यमुना से भागे हुए स्वतंत्र जीवन के इच्छुक अनार्य जाति के वीरों ने आर्यों की विजय के सामने इस पहाड़ी भूमि की ही शरण ली, और मुसलमान-काल में उत्तरीय भारत पर मुसलमानों के पूर्ण प्रभुत्व होने पर भी इस भूमि के निवासी प्रायः स्वतंत्र ही रहे। फलतः हिंदी के कई बड़े-बड़े कवियों ने यहीं जन्म ग्रहण किया था, इसी भूमि के किसी तीर्थ में बैठकर अपनी काव्य-रचना की थी। इसलिये लेखक महाशय ने इस भूमि का इतिहास लिखने का भार लेकर हिंदी-साहित्य का बहुत उपकार किया है।

प्रस्तुत पुस्तक दो खंडों में प्रकाशित की जानेवाली है। पहला खंड हमारे सामने है। इसमें बुंदेलखंड का भौगोलिक वर्णन है। चित्रों द्वारा इस वर्णन का मनोरंजन बढ़ाया गया है। आगे बढ़कर देश के पूर्वेतिहासिक काल का विवरण है। दूसरे खंड में इसके ऐतिहासिक काल का विवरण होगा।

प्रथम खंड में लेखक महाशय ने कवियों की तालिका देकर ही संतोष कर लिया है। आशा है, दूसरे खंड में आप बुंदेलखंड के राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक इतिहास की विवेचना करेंगे। वहाँ भी तालिकाओं की पद्धति न रहेगी। लेखक तथा प्रकाशक दोनो को हम उनके इस पुस्तक-विषयक उत्साह के लिये बधाई देते हैं। आशा है, आप इस पुस्तक के दूसरे खंड को भी सुचारु रूप में निकालने में समर्थ होंगे।

× × ×

४. वेदांत

ज्ञान-रत्नाकर—प्रणेता तथा प्रकाशक, श्रीसूर्यमल मिसाणी। संशोधक, पं० शिवनारायण झा। ११३, मनोहरदास का कटरा के पते से प्राप्य। पृष्ठ-संख्या २८६। मूल्य दिया नहीं।

प्रस्तुत पुस्तक में शंकर-वेदांत की व्याख्या की गई है। हमने न कभी तर्क-शास्त्र पढ़ा है, न शंकर-वेदांत। इसलिये इस विषय पर अपनी राय देना कठिन है। पुस्तक में आचार्य आनंदशंकर ध्रुव तथा महामहोपाध्याय श्रीफणिभूषण तर्क-वागीश के सर्टीफ़िकेट दिए हुए हैं। इनके पढ़ने पर हमारे-ऐसे साधारण बुद्धि के लोग लेखक के प्रति श्रद्धा अवश्य करने लगते हैं, उनकी रचना से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हम अपनी ज्ञान-वृद्धि करने का लाभ उठाएँ या न उठाएँ। पुस्तक की छपाई और जिल्द-बंदी आकर्षक हैं। नियमानुसार एक लंबा शुद्धाशुद्धि-पत्र भी सम्मिलित है। श्रीकृष्ण तथा प्रणेता महाशय के चित्र पुस्तक की शोभा और भी बढ़ाते हैं।

× × ×

५. शिक्षा

भाषा-शिक्षण-पद्धति—लेखक, रायबहादुर पं० लज्जाशंकर झा बी० ए०, आई० ई० एस० (रिटायर्ड)। प्रकाशक, मिश्र-बंधु-कार्यालय, जबलपुर। पृष्ठ-संख्या २३४। मूल्य १॥)

लज्जाशंकरजी को शिक्षा-पद्धति का बहुत कुछ अनुभव प्राप्त है। आप जबलपुर-ट्रेनिंग कॉलेज में शिक्षण-पद्धति के अध्यापक रह चुके हैं, और अब आप काशी-विश्व-विद्यालय के ट्रेनिंग कॉलेज के प्रधानाध्यापक हैं। इस-लिये आप जो कुछ शिक्षा-पद्धति के विषय में शिक्षा दें, उस पर विशेष ध्यान देने की बात है।

अभी तक हिंदी-साहित्य में शिक्षा-पद्धति-विषयक ग्रंथों की बहुत कमी है। हिंदी-शिक्षा पर तो कोई पुस्तक ही न थी। झा महोदय ने प्रस्तुत पुस्तक में हिंदी-शिक्षा पर अपने विचार प्रकट कर हिंदी-अध्यापकों का बड़ा उपकार किया है। पुस्तक अध्यापकों के दिन-प्रति-दिन की शिक्षा-संबंधी कठिनाइयों को हल करने के विचार से ही लिखी गई है। इसलिये इसमें हिंदी की लेखन-शैली तथा शब्द-भेदों के विषय में विचार करने की जगह न थी। आपने प्रचलित शैलियों तथा शब्द-भेदों को मानते हुए हिंदी-शिक्षा के जो ढंग बताए हैं, उन पर विवाद नहीं हो सकता। हाँ, कुछ प्रकरण विचारणीय अवश्य हैं। यदि पंचम वर्ण के बदले अनुस्वार-पद्धति का ही प्रयोग हो, तो ञ, ङ अक्षरों के बताने की कोई आवश्यकता नहीं मालूम होती। ऋ, ज्ञ और त्र की शिक्षा संयुक्ताक्षरों के साथ होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त मन में पढ़नेवाली पुस्तकों के विषय में जो लेखक महोदय ने विचार प्रकट किए हैं, उनसे सहमत होते हुए एक यह ढंग भी हो सकता है कि बालक वर्ष में केवल एक ही ऐसी पुस्तक न पढ़े। उनकी कक्षा में ही छोटे-छोटे पुस्तक-संग्रह हों। उनमें एक-एक उनके योग्य पुस्तक की तीन या चार प्रतियाँ हों। बालक जितनी अधिक पुस्तकें पढ़ सकेंगे, उतनी ही उनकी योग्यता बढ़ेगी।

भाषा के साथ व्याकरण पढ़ाने के विरुद्ध लेखक महोदय ने जो विचार प्रकट किए हैं, वे प्रचलित पद्धति के प्रतिकूल मालूम होते हैं। परंतु यदि ध्यान देकर देखा जाय, तो हमें सहमत होना पड़ेगा कि भाषा के साथ व्याकरण की शिक्षा देने से बालकों का ध्यान एक ओर से दूसरी ओर भटकता है—न वे भाषा सीख पाते हैं, न व्याकरण। इसलिये दोनो का अलग-अलग समय रखना ठीक है।

आजकल पाठशालाओं में हिंदी-व्याकरण पर कुछ अधिक ज़ोर दिया जा रहा है। हिंदी हमारी मातृ-भाषा है। इसलिये इसके व्याकरण पर अधिक ज़ोर देने की कोई आवश्यकता नहीं मालूम होती। ऊँची कक्षाओं में भाषा-विज्ञान के नाते व्याकरण का पढ़ाना लाभकारी हो सकता है। परंतु नीची कक्षाओं में इस विषय के पढ़ाने से बालकों का समय ही नष्ट होता है। लेखक महोदय ने इस संबंध में जो विचार प्रकट किए हैं, उनसे हम पूर्णतया सहमत हैं।

व्याकरण न पढ़ाकर यदि हम समय-समय पर बालकों से साहित्यिक रचनाओं की आलोचना का अभ्यास कराएँ, तो उनकी भाषा तथा शैली बहुत उन्नत हो सकती है। जिन प्रकरणों में लेखक महोदय ने आलोचना के नमूने दिए हैं, उनसे हम लेखकों को भी लाभ उठाना चाहिए। क्या ही अच्छा हो, यदि लेखक महोदय साहित्य-सम्राटों के गद्य के कुछ अंग लेकर उनकी विस्तृत आलोचना के नमूने हमारे सामने रक्खें। परंतु यह तभी हो सकता है, जब हम इस छिद्रान्वेषण से बुरा न मानें।

× ×

६. विविध

शिक्षावली—लेखक, प्रोफ़ेसर दयाशंकर पाठक बी० ए० बी० टी०, जयपुर। लेखक से ही प्राप्य। पृष्ठ-संख्या ११६। मूल्य ॥=)

प्रस्तुत पुस्तक में जीवन-मार्ग को सुलभ बनाने के लिये उसकी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है, और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शांति का उपदेश है। पुस्तक मनन करने योग्य है। कठिनाई यही है कि ऐसे विषय नीरस होते हैं, और लेखक महाशय ने मनोरंजक शैली में उस पर विचार करने की चेष्टा नहीं की है।

कालिदास कपूर (एम्० ए०)

× × ×

सफलता का रहस्य—मूल-लेखक, मिस्टर वर्नार डेकफेडन। अनुवादक, श्री० ठाकुर शिवनाथसिंह। प्रकाशक, पंडित हनूमानप्रसादजी शर्मा वैद्य-शास्त्री, महाशक्ति-साहित्य-मंदिर, बुलानाला, बनारस सिटी। पृष्ठ-संख्या १७१। मूल्य १)

पुस्तक के मूल-लेखक के शब्दों के अनुसार यह पुस्तक उन लोगों के लिये लिखी गई है, जो जीवन की कठिनाइयों से अधीर हो उठे हैं, और निरंतर असफलता पाने से निरुत्साह तथा निराश हो गए हैं। आदि से अंत तक इस पुस्तक का अवलोकन करने से मेरी यह धारणा हुई है कि पुस्तक लिखने में मूल-लेखक महोदय ने काफ़ी सफलता प्राप्त की है। प्रत्येक मनुष्य के सामने कठिनाइयाँ आती हैं, पर कुछ उन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं, और अधिकांश पर कठिनाइयाँ ही विजय पाती हैं। प्रत्येक व्यक्ति में एक शक्ति विद्यमान रहती है, जिसके उचित प्रयोग से वह उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर सकता है; पर प्रायः मनुष्य अपनी उस शक्ति से अनभिज्ञ रहता है, और इसीलिये वह उसका उचित प्रयोग नहीं कर सकता। इस पुस्तक में उसी आत्म-शक्ति का दिग्दर्शन तथा विश्लेषण किया गया है, और उसका उचित प्रयोग बतलाया गया है। पुस्तक की भाषा में क्लिष्टता नहीं है, और अनुवादक महोदय ने अपनी ओर से इस और भी बातें जोड़कर पुस्तक का महत्त्व बढ़ा दिया है। यह पुस्तक अधिकांश जन-समुदाय के बड़े काम की है, और जीवन में अधीर व्यक्ति के लिये बड़ी सहायता की चीज़ है। इसके साथ-साथ हम प्रकाशक महोदय को बधाई दिए नहीं रह सकते, जिन्होंने इस उपयोगी पुस्तक को साधारण कोटि की जनता के सामने रख दिया है। साथ ही इस पुस्तक का मूल्य भी उतना ही रक्खा है, जितना होना चाहिए था। हम अन्य प्रकाशकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि वे उपयोगी पुस्तकों का मूल्य कम रक्खा करें, ताकि साधारण कोटि के मनुष्य उनको ख़रीदकर उनसे लाभ उठा सकें।

भगवतीचरण वर्मा

× × ×

७. मासिक पत्र-पत्रिकाएँ

सहेली—स्त्रियों की सचित्र मासिक पत्रिका। संपादिका, श्रीमती रूपकुमारी वांचू और श्रीमती दया दर। छमाही मूल्य २॥); इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस से प्राप्य।

'सहेली' स्त्रियों द्वारा संपादित, स्त्रियों के लिये विशेष उपयोगी सचित्र मासिक पत्रिका है। उसका दूसरा अंक हमारे सामने है। पत्रिका का आकार-प्रकार बड़ा सुंदर और मनोमोहक है। छपाई भी बड़ी उत्तम जान पड़ती है। लेखों की दृष्टि से अभी स्टैंडर्ड और ऊँचा बनाने की ज़रूरत है। इसके अतिरिक्त भाषा के मुहावरेदार होने की भी आवश्यकता मालूम होती है। 'सहेली' की हिंदी से साफ़ मालूम होता है कि वह अभी काफ़ी ठीक की जा सकती है। आशादेवीजी चौहान का लेख ही पूरी पत्रिका में ऊँचे स्टैंडर्ड का कहा जा सकता है। संपादकीय नोटों में स्त्री-समाज-संबंधी समस्याओं पर काफ़ी प्रकाश पड़ना चाहिए। 'चाँद'-जैसी वाहियात पत्रिका के सामने 'सहेली' का आदर प्रत्येक स्त्री को करना चाहिए। 'सहेली' की ग्राहक-संख्या में, आशा है, उसके गुणों के कारण शीघ्र ही वृद्धि होगी।

× × ×

वीणा—मध्य-भारतीय हिंदी-साहित्य-समिति, इंदौर की मासिक मुख-पत्रिका। संपादक, श्रीकालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'। वार्षिक मूल्य ४), प्रति संख्या ।=), इस अंक का ॥)

'वीणा' एक अच्छी पत्रिका है। यद्यपि इसका बहिरंग उतना सुंदर नहीं, छपाई में भी अभी काफ़ी उन्नति की आवश्यकता है, तथापि लेखों आदि की दृष्टि से यह एक दूसरी श्रेणी की पत्रिका है। इसका होलिकांक हमारे सामने है। इस अंक के लेखों का चुनाव बहुत ही उत्तम हुआ है। श्री० वासुदेवशरणजी का लेख काफ़ी अच्छा है। किंतु होलिकांक में होली के विषय में बहुत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कम सामग्री है। हम हृदय से पत्रिका की उन्नति चाहते हैं।

× × ×

रत्नाकर—वैद्यक-संबंधी मासिक पत्र। संपादक-चतुष्टय, श्रीछोटेलाल जैन वैद्य आयुर्वेदाचार्य, पं० लज्जाराम शर्मा, श्रीहज़ारीलाल 'प्रेमी' और पं० गोविंदहयारण साहित्य-भूषण। वार्षिक मूल्य २); प्रकाशक, श्रीज्ञानचंद्र जैन वैद्य-भूषण, इटावा।

वैद्यक-संबंधी लेखों से ओत-प्रोत अनेक नुसख़ों और दवाइयों का ज्ञान देनेवाले तथा उपयोगी मासिक पत्र का हम हृदय से स्वागत करते हैं।

× × ×

रेलवे-समाचार—रेलवे-संबंधी एकमात्र हिंदी-अँगरेज़ी मासिक पत्र। संपादक, भँवरलाल बाकलीवाल कँवरलाल बाकलीवाल। वार्षिक मूल्य ४), एक प्रति ।=), पी० एल्० बाकलीवाल ऐंड संस, २२८, हरीसन रोड, कलकत्ता से प्राप्य।

रेलवे-संबंधी ज्ञान प्राप्त करने के लिये हिंदी में बहुत कम पुस्तकें हैं। पत्र तो अब तक एक भी न था। इस मासिक पत्र से आशा है, जनता को पर्याप्त लाभ होगा। प्रत्येक व्यापारी के लाभ की बातें इस पत्र में प्रतिमास प्रकाशित होती हैं। हम हृदय से इसकी उन्नति चाहते हैं।

× × ×

बालक—संपादक, श्री० शिवपूजनसहाय। वार्षिक मूल्य ३), एक प्रति का ।-), हिंदी-पुस्तक-भंडार, लहेरिया-सराय से प्रकाशित।

पाँच वर्ष से 'बालक' देश के छोटे-छोटे बालकों का भला कर रहा है। इसकी भाषा, लेख तथा पद्यादि सब नन्हे-नन्हे बच्चों के लिये उपयोगी तथा समझने योग्य हुआ करते हैं। अपने ढंग का यह एक बड़ा ही अच्छा पत्र है। प्रत्येक घर में हम इसका प्रचार चाहते हैं। प्रत्येक हिंदोस्तानी माता-पिता को अपने बच्चों के लिये इस उपयोगी पत्र का संग्रह करना चाहिए।

× × ×

उपन्यास-कुसुम—मासिक पत्र। संपादक, श्रीदुलारेलाल श्रीवास्तव। वार्षिक मूल्य २), एक प्रति का ।)

उक्त पत्र 'उपन्यासों का एक-मात्र सचित्र मासिक पत्र' कहा गया है। प्रतिमास गहमरी स्टाइल के या लहरी टाइप के थर्ड क्लास उपन्यासों का संग्रह रहता है। 'चंद्रकांता-संतति' के चाहनेवालों को यह पत्र बहुत अधिक मनोरंजक और चित्ताकर्षक प्रतीत होगा। आशा है, साधारण जनता इसको अपनाकर प्रकाशकों का उत्साह बढ़ावेगी। मैनेजर 'उपन्यास-कुसुम', चंपा से प्राप्य।

× × ×

नवयुग—साप्ताहिक पत्र। संपादक, श्रीसत्यदेव विद्यालंकार। वार्षिक मूल्य २॥), नवयुग-कार्यालय, ३६, सीतानाथ रोड, कलकत्ता से प्रकाशित।

राष्ट्रीय भावों का प्रचारक संग्रहणीय उच्च कोटि का पत्र।

× × ×

हंस—मासिक पत्र। संपादक, श्रीप्रेमचंद। प्रकाशक, सरस्वती-प्रेस, बनारस। वार्षिक मूल्य ३॥), एक प्रति का ।=)

'हंस' की प्रतीक्षा महीनों से थी। उसे सामने पाकर प्रसन्नता अवश्य हुई, किंतु हमें जिस सर्वांग-सुंदर पत्र की प्रेमचंदजी से आशा थी, वह न दिखाई दिया। 'हंस' का बहिरंग जैसा सुंदर है, वैसा ही सुंदर अंतरंग भी है। जिस प्रकार बाह्य-चित्र में सफ़ाई और सादगी है, उसी प्रकार अंतरंग पाठ्य-विषय में भी शुद्ध और सुंदर छपाई मौजूद है। किंतु जिस प्रकार मुखचित्र कला-विहीन है, उसी प्रकार अंतरंग में भी दो-एक कहानियाँ कला-हीन हैं। प्रेमचंदजी-जैसे गल्प-सम्राट् कहलानेवाले कला-मर्मज्ञ की सूक्ष्मावेक्षिणी प्रज्ञा की पैनी धार के नीचे से इन कहानियों का बच निकलना ज़रा खटकता है। ज़रा-से परिवर्तन से ही वे कहानियाँ बड़ी उच्च कोटि की और सर्वांग-सुंदर हो सकती थीं। किंतु संभव है, लेखक महोदयों की अप्रसन्नता के भय से उन्होंने उसमें कोई परिवर्तन न किया हो। अस्तु।

पत्र 'विविध विषय-संपन्न कहानियों का सचित्र मासिक पत्र' है। ब्लाक बनकर न आ सकने के कारण शायद इस बार कोई चित्र नहीं दिया जा सका। अगली बार से अवश्य सुंदर चित्र निकला करेंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'हंस' की प्रथम कहानी है 'मधुआ'। लेखक हैं श्री-जयशंकर 'प्रसाद'। 'प्रसाद'जी की कहानियों के सम-झने के लिये 'अनंत की ओर' जानेवाला दिमाग़ सदा से आवश्यक रहा है, किंतु इस बार मालूम होता है कि 'अंतस्तल' प्रणाली के दिमाग़ के लिये ही आपने यह कहानी लिखी है। एक पतित शराबी के 'अंतस्तल' की सुप्त भावनाओं को आपने काम पकड़कर बाहर ला खड़ा किया है। अतएव आपकी यह कहानी गोर्की तर्जनीव और शेखाम के रूसी दरिद्र-चित्रणों के समान अत्यंत मनोरंजक हो उठी है। रूसी शैली पर और ख़ासकर शेखाम और गोर्की-शैली पर लिखी हुई आपकी यह कहानी और भी अधिक सफल होती, यदि आप बाल-मनोवृत्ति पर ज़रा अधिक ध्यान देने का कष्ट स्वीकार करते। किंतु इस कहानी का आधार तथा बहुत कुछ प्रति-रूप हमें विक्टर ह्यूगो के 'लॉस्टिंग मैन' में मिलता है।

विनोदशंकरजी की कहानी (?) बड़ी मनोरंजक है, किंतु नोट में दी हुई पहेली कहानी से भी मनोरंजक है।

'कौशिक'जी की 'विचित्र कुली'-नामक कहानी अच्छी है, किंतु उनकी अन्य कहानियों के समान प्रौढ़ नहीं।

प्रेमचंदजी का लेख 'उपन्यास का विषय' अत्यंत सुंदर, गंभीर और विचार-पूर्ण है। अच्छा हो कि हमारे नए और पुराने उपन्यासकार—उपन्यास-सम्राट् कहाने-वाले भी—प्रेमचंदजी द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर क्रियात्मक रूप से चलने लगें।

'अमीना' पुराने ढर्रे की साधारण कहानी है। हाँ, श्रीजैनेंद्रकुमारजी की कहानी में उदीयमान प्रतिभा के लक्षण मौजूद हैं। उत्तम कहानी में घटना-क्रम की विचित्रता, भावावेश के समय ही विचार-धारा का आकस्मिक परिवर्तन तथा मानसिक या हार्दिक ऊहापोह का सुंदर शब्द-चित्रण आदि बातें आधुनिक गल्प-लेखन-कला की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक समझी जाती हैं। यही बातें उसे उपन्यास से विशिष्ट बनाती हैं। यदि इनमें से एक भी किसी कहानी में न पाया जाय, तो वह कहानी कहानी ही नहीं रह जाती, वह तो घटना-क्रम का वर्णन-मात्र रह जाता है। हम मानते हैं कि कई घटनाओं में घटना-क्रम ही बड़ा मनोरंजक होता है। कहानी से भी अधिक। किंतु आधुनिक कहानी में—जिसे कलाविद् 'गल्प' कहते हैं—कोरी घटनाओं को अब स्थान नहीं दिया जाता।

श्रीजैनेंद्रकुमारजी की कहानी में घटना-परिवर्तन या 'टर्न ऑफ़् एवेंट्स' बड़ा ही सुंदर हुआ है। विचार-स्रोत उस स्थान पर आकर एकदम नई ही दिशा में प्रस्रवित हो उठा है। 'फ़ोटोग्राफ़ी' का नायक झूठ-मूठ तसवीर खींचकर एक विचित्र मुसीबत में फँस जाता है। इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न करके आज तक किसी भी हिंदी-गल्प-लेखक ने अपनी कहानी को सुंदर नहीं बनाया है। यह नवीनता ही जैनेंद्रजी की विशेषता है। कहानी गल्प कहलाने के लिहाज़ से ज़्यादा और ज़रूरत से ज़्यादा लंबी है। उसका अंत भी अस्वाभाविक है। उसमें कृत्रिमता अधिक है। रामेश्वर का चरित्र भी एकदम 'बना हुआ'-सा हो गया है। इन थोड़े-से अवगुणों को ज़रा-से इशारे से ही दूर किया जा सकता था।

प्रेमचंदजी तो सिद्ध-हस्त कहानी-लेखक हैं ही। उनका 'जुलूस' भी सिद्ध-हस्तता के ठप्पे से ठप्पित है। वह एक सुंदर कहानी है। मनोभावों के चित्रण में आप काफ़ी सफल हुए हैं।

'दवाफ़रोश की पत्नी' प्रसिद्ध रूसी गल्प-लेखक शेखाम की एक उत्तम 'मनोविज्ञान'-संबंधी कहानी का अनुवाद है। वह एक उच्च कोटि की कहानी है।

कहानियों के अतिरिक्त दो-एक साधारणतः अच्छे लेख भी हैं। 'मुक्ता-मंजूषा' में विविध पत्रों के उद्धरण संगृहीत हैं। 'नीर-क्षीर-विवेक' में पुस्तक-समालोचना तथा 'हंस-वाणी' में संपादकीय विचार छापे गए हैं।

समवाय-रूप से पत्र उत्तम है। सस्ता तथा गल्प-प्रधान होने के कारण वह साधारण जनता के लिये बड़ा ही अच्छा पत्र है। अच्छी गल्पों के प्रति जन-संमति बनाने तथा स्त्रियों की अभिरुचि शिक्षित करने में वह सफल होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। हम उसका हार्दिक स्वागत करते हैं, और समस्त हिंदी-प्रेमियों से अनुरोध करते हैं कि वे इस निराले ढंग के सस्ते और उपादेय पत्र के अवश्य ग्राहक बनें।

सुधींद्र वर्मा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. देश की स्थिति और सरकार

देश की स्थिति उत्तरोत्तर भयंकर हो रही है। सरकार की तरफ़ से देशवासियों का असंतोष बढ़ता जा रहा है। जो सरकार आतंक द्वारा, कठोर शासन के प्रभाव से, मनुष्यों की आत्मा को पराधीन कर रखना चाहती है, वह कहाँ तक बुद्धिमान् है, इसका निर्णय दूसरे ही करेंगे। सभ्य कहलानेवाली सरकार यह करेगी, यह विश्वास हमारा जाता रहा। इस दमन की पूर्व-सूचना लखनऊ-दरबार के समय बड़े लाट साहब इरविन बहादुर ने दी थी। पर उस समय देशवासियों का ध्यान शासन की इतनी कठोरता तक नहीं पहुँचा था। नेता लोग यही समझते थे कि सविनय क़ानून-भंग करनेवालों को सरकार क़ानून के दायरे की ही सज़ा देगी। पर पीछे दमन में जैसी कठोरता तथा असभ्यता दिखलाई गई, महात्मा गांधी भी उससे विचलित हो गए। बड़े लाट साहब को लिखी हुई अपनी दूसरी चिट्ठी में उन्होंने उसका उल्लेख भी कुछ किया है। आज दो महीने से कलकत्ता, बंबई, मदरास, पटना, लखनऊ, पेशावर, शोलापुर, धरसना आदि देश के सैकड़ों स्थानों में पुलिस ने जैसे अमानुषिक अत्याचार निहत्थी जनता पर किए हैं, उससे देशवासियों ने ब्रिटिश जाति की सभ्य शासन-कला अच्छी तरह प्रत्यक्ष कर ली। सरकार जानती है, आंदोलनकारी किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करेंगे, वे निरशस्त्र हैं, इससे सरकार की फ़ौज निर्भय होकर उन पर आक्रमण करती है। पशु-बल का आज तक पशु-बल के द्वारा ही दूसरे-दूसरे देशों में जवाब मिलता रहा है; जहाँ उसका अभाव रहता है, वहाँ उसके नग्न तांडव का रूप ऐसा ही भयंकर हो जाया करता है। स्त्रियों और बच्चों के अंगों पर डंडों की मारकर घावों से बहती हुई रक्त-धाराओं को देखकर अपने शासन के सुदर्शन रूप पर इतरानेवाली अँगरेज़ सरकार के लिये उपयुक्त शब्द हमारे कोश में अभी नहीं; मुमकिन है, पीछे गढ़ लिया जाय। सरकार सब तरफ़ से हिंदोस्तानियों पर आतंक जमाना चाहती है, और इस आतंक के अंधकार में डालकर अभी बहुत दिन अँधेरे में भटकाते रहना ही सरकार का उद्देश्य जान पड़ता है। उधर गोल-मेज़-बैठक की चर्चा भी बड़े लाट साहब कर रहे हैं। यह सब देखकर जान पड़ता है कि यहाँ के आंदोलन को दबा लेने के बाद सरकार की इच्छा है कि अपनी मर्ज़ी के अनुसार ही इस देश के नालायक़ आदमियों को कुछ हक़ वह दे दे, अन्यथा अगर यहाँ की माँग पूरी करनी पड़ी, तो ब्रिटेन का बहुत बड़ा स्वार्थ बरबाद होगा। इसी दृष्टि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को रखकर पुलिस के कार्यों की तारीफ़ की गई है। शायद इस महकमे की तनख़्वाह भी बढ़ा दी जाय। सरकारी नौकरों को बहिष्कार से बचाने के लिये आर्डिनेंस पास कर बड़े लाट साहब ने एक उपाय भी निकाल दिया है। इधर भू-स्वामी ज़मींदार, ताल्लुक़दार, राजा, महाराजाओं से भी सरकार बहुत बड़ी मदद की आशा रखती है। इस तरह अपना गरोह सँभालकर सरकार समझती है कि वह इने-गिने आंदोलनकारियों को जेल में भरकर और जनता को बंदूक़ें और मशीनगनें दिखला, उस पर आतंक जमाकर पिछले दिनों के आंदोलन की तरह इसे भी दबा देगी।

अब के भारत में जैसा सार्वभौमिक दमन हो रहा है, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। प्रेस-आर्डिनेंस के द्वारा कांग्रेस के समर्थक जनता के जितने भी मुखपत्र थे, सब दबा दिए गए। उनका प्रकाशन विवश होकर ग़रीब प्रकाशकों ने बंद कर दिया, जिससे सरकार को दमन करने में और सुविधा हुई, और जनता की हानि। कारण, जो संवाद उस तक पहुँचते थे और जिनकी छान-बीन और सत्यता पर उसे विश्वास था, उनका पहुँचना बंद हो गया। तार सरकार के हाथ में है, अतएव ख़बरें भी सरकार की मर्ज़ी के अनुसार ही आने-जाने लगीं। जनता चाहे उन ख़बरों पर विश्वास करे, चाहे कपोल-कल्पना करती रहे। किसी सच्ची ख़बर का तमाम देशों में, समान रूप से, एक ही समय, फैलने का जो सूत्र था—देश के अपने संवाद-पत्र, वह तार कट गया, और इससे विशृंखला पैदा हो गई। सरकार की विशृंखला से ही शासन की सुविधा है। देश का जो सर्वमान्य महापुरुष है, उसके विचार मस्तिष्क के विकार क़रार दिए गए। इससे जनता के प्रतिनिधि की इज़्ज़त भारत के राज-प्रतिनिधि वाइसराय के मस्तिष्क में कितनी है, यह सूचित कर दिया गया। पर मेधावी मि० बेन साहब एक मुँह से स्त्रियों और बच्चों पर डंडे चलानेवाली पुलिस की कार्रवाइयों की तारीफ़ कर, दूसरे शब्दों में दो बड़े देशों को आंतरिक तार दूरकर मित्र-भाव से मिलने की सलाह देते हुए किस मस्तिष्क का परिचय देते हैं, यह समझाने के पहले ही समझ में आ जाता है। महाकवि रवींद्रनाथ ने खद्दर की गांधी-टोपी पहननेवालों को सताने, पकड़ने, बेइज़्ज़त करने की ख़बर पा सरकार की बहुत बड़ी निंदा की है। शोलापुर ही नहीं, लखनऊ में भी खद्दर की टोपी पहननेवाले पकड़े गए। सरकारी अदालतों में खद्दर का बहिष्कार किया गया। इस तरह सीधी राह पर चलनेवालों पर भी सरकार का टेढ़ा बर्ताव रहा, यह शायद ब्रिटेन का सभ्य शासन है, और अधिकारियों के परिष्कृत मस्तिष्क की उपज। गोलियों का चलना बंद नहीं हुआ। नए-नए आर्डिनेंस निकलते जा रहे हैं। १४४ की धूम है। जहाँ हत्याकांड होता है, वहाँ जाने से देश के प्रतिनिधि नेता रोक लिए जाते हैं। इच्छानुसार सरकारी जाँच प्रकाशित की जाती है। अख़बार सच बात कहते हैं, तो उनका गला घोट दिया जाता है। आँख के सामने जो घटना होती है, वह कही नहीं जा सकती। तरह-तरह की ग़लतफ़हमी फैलती और फैलाई जा रही है। हिंदू-मुसलमानों के जिस भेद के कारण यहाँ शासन की बुनियाद सुदृढ़ है, उसे तरह-तरह की कार्रवाइयों तथा वाक्-पटुता से पुष्ट करने की कोशिशें जारी हैं। कितने ही महोदयों ने दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की मुद्रा से आंदोलन को एकदेशीय क़रार देने के लिये कहा है कि मुसलमान इस आंदोलन से अलग हैं। पर सबसे बड़ा हत्याकांड जहाँ हुआ, उस पेशावर में अधिक संख्या मुसलमानों की ही है, और वही लोग अधिक संख्या में शहीद हुए हैं, यह उनके लिये आंदोलन में मुसलमानों का साथ है ही नहीं। कितने ही मुसलमान नेता जेल में भर दिए गए, पर मुसलमानों को आंदोलन से अलग ही बताया गया। इन सब बातों से हिंदोस्तानी समझ गए हैं कि सरकार के कारगुज़ार कर्मचारियों में सत्य का अंश कितना है! महात्माजी ने बड़े लाट को जो दूसरा पत्र लिखा है, उसमें उन्होंने इस सत्य को ख़ुलासा कर दिया है—"Officials, I regret to have to say, have not hesitated to publish falsehoods to the people even during the last five weeks." धरना और कर न देने के आंदोलन के विरुद्ध जो आर्डिनेंस निकाला गया है, इससे वाणिज्य तथा शासन दोनों की पुष्टि की ओर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सरकार की कुल शक्ति लगी हुई देख पड़ती है। किसी-किसी का अनुमान है कि यदि इससे भी सरकार को सफलता नहीं मिली, तो आश्चर्य नहीं कि सरकार कांग्रेस को ही एक अवैध संस्था क़रार दे दे। महात्माजी ने जिन दीन शब्दों में, अपने देश के दुखी भाइयों के लिये, बड़े लाट साहब से, अपने पहले पत्र में, प्रार्थना की है, उनका कुछ भी असर लाट साहब पर नहीं पड़ा। उल्टे स्वाती के जल के प्यासे चातकों पर इस प्रकार आर्डिनेंस-पर-आर्डिनेंस जारी करके वज्र-प्रहार किया गया।

विलायत के पत्रों से जैसे समाचार मिल रहे हैं, वहाँ के व्यापारियों के पेट में भी चूहे अभी ही से डंड पेलने लगे हैं, और वे सरकार को शीघ्र समझौता कर लेने की सलाह दे रहे हैं। यहाँ के कर्मचारी अँगरेज़ लोगों की भी जड़ हिल गई है। वे लोग बाहर तो बड़े मुस्तैद देख पड़ते हैं, पर भीतर से, जैसा कि बड़े लाट साहब को श्रीयुत पटेल ने लिखा था, उनका दिल हाथों बैठ गया है। कपड़े की एक ऐसी समस्या है, जिसके बहिष्कार से अँगरेज़ व्यापारी पागल हो जायँगे। कलकत्ते के मारवाड़ी वणिक्-मंडल ने कुछ समय तक कपड़े न मँगाने की महामना मालवीयजी से प्रतिज्ञा की है, और बंबई-वाले भी इस पर दृढ़ हैं। तब तक अगर घर-घर चर्ख़े का प्रचार हो गया, और देश को वस्त्रों के लिये विदेश की राह न देखनी पड़ी, देश ही के खद्दर से काम चल गया, तो फिर और ही गुल खिलेगा। इसी की शंका से अँगरेज़ी शासन के सूत्रधारों की रात में आँख नहीं लगती। और, यह व्यवसायियों की रक्षा के लिये धरने पर आर्डिनेंस लगाकर इसी उद्देश्य की सिद्धि का विचार किया गया जान पड़ता है। सबसे मज़ेदार बात है, फ़ौज, पुलिस और सरकारी कर्मचारियों को समाज से बहिष्कृत न होने देने के उपाय की उद्भावना करते हुए आर्डिनेंस जारी करना (ये तीनो नए आर्डिनेंस अभी बंबई-प्रांत में जारी किए गए हैं, ज़रूरत पड़ने पर सरकार अन्य प्रांतों में भी जारी कर सकती है)। कम सोचने की बात नहीं कि अब तक सामाजिक मामलों में सरकार का हाथ न था, पर अब हाथ ही नहीं, अपने नौकरों के साथ सामाजिक मामलों में सरकार पूरा साथ भी देगी। समाज के दोषों का दंड समाज ही देता रहा है। महात्माजी ने गिरफ़्तार होने से पहले सरकारी कर्मचारियों का—कांस्टेबल, चौकीदार, जमादार, मुखिया, पटवारी, फ़ौज के सिपाही और सूबेदार तक तथा सरकारी दफ़्तर के नौकरों का, चाहे वे डिप्टी कमिश्नर ही क्यों न हों—बहिष्कार करने की आज्ञा लिखी थी, यानी समाज के लोग इनके साथ सामाजिक बहिष्कार करें। पता नहीं, इन हुक्का-पानी-अलग-दुखों को सरकार किस तरीक़े से समाज में मिलाएगी। क्या अब आगे सरकार ऐसा भी होगा कि जो लोग इनका बहिष्कार करेंगे, वे सरकार के फ़ौजदारी दफ़्तरों की किसी धारा में ही बहाए जायँगे? अथवा काला पहाड़ की तरह सरकार की इन मानस-पुत्रियों के साथ एक साथ ही बैठकर उन्हें खाना खाना होगा?

× × ×

२. महात्माजी की गिरफ़्तारी और सरकार

यह सभी लोग जानते हैं कि आधी रात के बाद, बड़ी सावधानी के साथ, अहिंसा के अवतार वृद्ध कर्मवीर महात्मा गांधी को सरकार के कर्मचारियों ने गिरफ़्तार किया। उस समय महात्माजी सो रहे थे। वह कोई चोर या डाकू नहीं थे। उन्हें नींद से जगाकर गिरफ़्तार किया गया। कर्मचारियों का यह तरीक़ा देखकर उनकी दिली धड़कन में शासन की उदारता और कार्य की जगह हमें शृगाल-नीति ही दिखलाई पड़ती है, जिससे किसी तरह भी उनके प्रति हमारी श्रद्धा का उद्रेक नहीं होता। वे लोग यह कार्य दिन में भी कर सकते थे, जैसे कि प्रायः अन्यत्र और-और कार्यकर्ताओं को गिरफ़्तार किया है। यदि उन्हें उस समय भीड़ बढ़ने की शंका थी, तो इससे कोई हानि अवश्य न होती। कारण, अहिंसा के देवता ही उनके साथ थे, और जिस तरह मोटर और मोटर-लारियों पर गिरफ़्तार हुए लोगों को सरकार के कर्मचारी ले जाते हैं, उसी तरह महात्माजी को भी वे लोग ले गए थे, अतः उन्हें सोच लेना था कि आदमियों की दौड़ से मोटर की रफ़्तार कितनी अधिक है। हर जगह मोटर के घिरने की भी कोई शंका नहीं थी कि दर्शनाभिलाषियों के लिये सरकारी कर्मचारियों को मोटर रोकनी पड़ती; कर्मचारी लोग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवश्य ही मोटर पर महात्माजी की गिरफ़्तारी का डंका बजाते हुए नहीं जा रहे थे।

महात्माजी सन् १८२७ के रेग्युलेशन नं० २५ के अनुसार गिरफ़्तार किए गए हैं। 'प्रवासी' ने लिखा है, एक सौ तीन साल पहले लड़ाई में जिन अस्त्रों का उपयोग होता था, अब कोई भी सभ्य जाति उस तरह की तोप-बंदूकें, बारूद और गोले-गोलियों से लड़ाई नहीं करती; आदमी मारने के नए-नए अस्त्र और नए-नए उपायों का निर्माण और उद्भावना की गई है। लेकिन महात्माजी ने जिस अहिंसात्मक स्वाधीनता की लड़ाई छेड़ी है, उसके विरुद्ध ब्रिटिश-सरकार को १०३ साल के पुराने जंग-लगे अस्त्र को, ब्रह्मास्त्र के तौर पर, काम में लाना पड़ा। राजनीति-कुशल ब्रिटिश-जाति की उपजाऊ शक्ति यहाँ किसी भी नए उपाय का आविष्कार नहीं कर सकी। इसका अर्थ यह है कि १०३ साल पहले भारतवर्ष की किसी-किसी अवस्था में ईस्ट-इंडिया-कंपनी जिस उपाय का आश्रय लेती थी, आज १०३ साल के बाद भी कंपनी की उत्तराधिकारी ब्रिटिश-सरकार के मत से भारतवर्ष की अवस्था के वैसे ही कुछ होने की वजह से इस पुराने उपाय का सहारा लिया गया है। इसे देखते हुए कहना चाहिए कि अँगरेज़ों के १०३ साल की अविराम और अविश्राम भारत-हितैषणा और हित-प्रयत्न करते रहने पर भी भारतवर्ष १८२७ ई० में जैसा था, १९३० ई० में भी राष्ट्रीय मामलों में मुख़्तः वैसा ही बना हुआ है। शताब्दी के बाद भी यदि भारतवर्ष संतुष्ट, शांत और ठंढा न हुआ हो, तो उसकी चिकित्सा के लिये ब्रिटिश-जाति अपने ज्ञान और बुद्धि के मुआफ़िक़ औषध-प्रयोग अवश्य ही करेगी। किंतु। देश को वह तर-ब-ताज़ा-दिमाग़ नहीं कर सकी, क्या यह अकृतकार्यता ब्रिटेन के लोगों को भी स्वीकृत होगी?

महात्माजी-जैसे एक विशाल व्यक्तित्व के महापुरुष को पकड़ने के पश्चात् बंबई की सरकार ने एक कैफ़ियत भी दी है, पर सरकार ने अपने हमेशा के अभ्यास की तरह जनता की रुचि की उसमें ज़रा भी परवा नहीं की। या तो सरकार समझती है कि जनता का विशेषत्व कुछ है ही नहीं, और वह जो कुछ भी कह देगी, उस पर जनता विश्वास कर लेगी अथवा आतंक में आकर प्रभावित हो जायगी; अथवा वह जो कुछ कहती है, वह सिर्फ़ ब्रिटेन के आदमियों को सूचना देने के लिये। जनता की आवाज़ आज तक सरकार को अपने रास्ते पर नहीं ला सकी। अतएव टीका-टिप्पणियों का कोई फल-विशेष नहीं हो सकता। अस्तु, बंबई-सरकार ने कहा है कि जिस सविनय अवज्ञा की लड़ाई में मिस्टर गांधी प्रमुख नेता रहे हैं, उससे व्यापक रूप से क़ानून और शृंखला का भंग हुआ और भारत के प्रत्येक प्रदेश में जनता की शांति में बड़ा उपद्रव रहा। क़ानून को तोड़ना तो सत्य ही है। पर शांति में उपद्रव सरकार की पुलिस और फ़ौज ने ही विशेष रूप से किया है। संवाद-पत्रों में जहाँ कहीं से संवाद मिले हैं, पुलिस और फ़ौज के ही अत्याचारों का उल्लेख रहा है। सविनय क़ानून-भंग करनेवाले बराबर मार खाते रहे हैं, पर उन लोगों ने हाथ नहीं उठाया। कहीं-कहीं जनता ने कुछ छेड़-छाड़ ज़रूर की है। पर वे आंदोलनकारी नहीं थे। इन सब उपद्रवों के कारण गांधीजी कदापि नहीं हो सकते। यदि यह आंदोलन न भी होता, तो भी उपद्रव होते रहते। देश में सविनय क़ानून-भंग करनेवालों के अलावा ऐसे भी दल हैं, जो सशस्त्र विरोध के पक्षपाती हैं। उनका प्रशमन अगर किसी ने किया है, तो एकमात्र गांधीजी ने। लाहौर-कांग्रेस के समय जब बड़े लाट की गाड़ी को बम से उड़ा देने की प्रचेष्टा पर खेद-प्रकाश हो रहा था, उस समय बहुत-से लोग उसके प्रतिकूलपंथी थे। ऐसी हालत में यह अशांति का दोष गांधीजी पर मढ़कर बंबई-सरकार ने एक मौलिक-उद्भावना-शक्ति का परिचय दे डाला। अभी-ही-अभी विदेशवाले भी कोई-कोई कह गए हैं कि यदि हिंदोस्तान स्वतंत्र हो जाय, तो उस समय ब्रिटिश-जाति का यदि कोई मित्र भारत में मिलेगा, तो वह एकमात्र मिस्टर गांधी होंगे।

महात्माजी की गिरफ़्तारी के और भी कई कारण दिखलाए गए हैं। कहा गया है, गुजरात में उनका बहुत ज़्यादा प्रभाव है। अहमदाबाद से डंडी तक पैदल जाने में उनकी इस लड़ाई के प्रभाव का काफ़ी अनुमान किया गया। इस अंश में ख़ास तौर से कुछ ताल्लुक़ों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में उनके अनुयायियों ने कठोर सामाजिक बहिष्कार का संगठन कर लिया है। साथ-ही-साथ वे जाति-च्युत कर देने का भय-प्रदर्शन करते हैं, यहाँ तक कि भोजन-पान का प्रबंध तोड़ देना चाहते हैं। काफ़ी तादाद में मुखियों को इस्तीफ़ा देने में मजबूर किया है। इस तरह राज-कार्य के संचालन में काफ़ी असुविधा डाल रहे हैं। इसके बाद एक बात बंबई-सरकार ने यह भी कही है कि पिछले दिनों नमक-क़ानून तोड़ने, शराब की दूकानों में धरना देने और विदेशी वस्त्र का बहिष्कार करने पर भी जब मिस्टर गांधी को विशेष फल मिलता हुआ न देख पड़ा, तब उन्होंने किसानों को लगान न देने के लिये उकसाया।

बंबई-सरकार ने महात्माजी पर जो लांछन लगाए हैं, अभी वे किसी मूल्य के नहीं ठहराए जा सकते। कारण, उनका विचार किसी खुली अदालत में नहीं किया गया। उन्हें पकड़कर चुपचाप जेल में बंद कर दिया गया है। इस तरह उनकी ज़बान बंद कर दी गई, और अब उनके अनुयायियों पर लांछन लगाए जा रहे हैं। यह कदापि न्यायानुकूल नहीं कहा जा सकता। सरकार दंड दे सकती है, देगी; पर जिसे दंड दिया जाता है, उसे अभियोग के उत्तर देने का मौक़ा भी दिया जाता है।

बायकाट पर पटेल ने बड़े लाट को लिखा है कि भारत-सरकार के कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से उनका बहिष्कार किया था। बड़े लाट साहब ने इस बात का कोई भी उत्तर नहीं दिया। श्रीयुत पटेल का बायकाट करने के कारण बिना विचार के कोई क़ैद कर लिया गया हो, ऐसा सुनने में नहीं आया। सामाजिक बायकाट में समाज का ही अधिकार रहा है, और रहना चाहिए। एक समाज के लोग किसके साथ भोजन-पान करेंगे, किसके साथ नहीं, किसे सौजन्य दिखलावेंगे, कहाँ वैवाहिक संबंध करेंगे, किसे वस्तु बेचेंगे, यह समाज की स्वतंत्रता है। आज भी दूसरे समाजों के, दूसरी जातियों के हाथ का पानी हिंदू नहीं पीते; मसलन मुसलमानों के हाथ का पानी हिंदू नहीं पीते थे, पर उनके शासन-काल में भी इसके लिये उन पर कोई दबाव नहीं पड़ा। अब अगर वे मुसलमानों के हाथ का पानी पिएँ, और अँगरेज़ों की छाँह पड़ने पर नहाएँ, तो इसके लिये सरकार किसी सभ्य क़ानून के अनुसार उन्हें रोक नहीं सकती। समाज के साथ उन लोगों का कोई संबंध नहीं रह सकता, जो उस समाज के नहीं। भारतीय समाज को जब रेल के डब्बे में "फ़ार योरपियन्स्" लिखकर बिलकुल बहिष्कृत किया जाता है, यद्यपि वे भी उतना ही किराया देते हैं, तब सरकार रेल के किसी भी अधिकारी को इसके जुर्म में नहीं पकड़ती। बल्कि कहना चाहिए कि यह रेल-बायकाट सरकार ख़ुद करती है, जब कि उसी की मातहत गाड़ियों का यह हाल रहता है। बायकाट शब्द ही विदेशी, आयर्लैंड का और सभ्य प्रयोगों में आनेवाला जब कि बतलाया जाता है, तब भारतीयों ही के लिये वह किसी जुर्म का कारण कैसे बन सकता है, यह समझ में नहीं आता। हाँ, बकरेवाली कहावत समझ में आ जाती है—एक बकरा किसी की बकरी से प्रेम करता था। प्रेम से बकरी भले ही ख़ुश होती हो, पर बकरी के मालिक बड़े नाराज़ रहते थे। एक दिन ज़्यादा क़ीमत पर उस बकरे को उन्होंने ख़रीद लिया। फिर मकान के सामने ही पूँछ की तरफ़ से उसे काटने लगे। लोगों ने देखा, तो पूछा, भई वाह, यह भी कोई ज़िबह करने का तरीक़ा है? उन्होंने कहा, बस चले जाइए, बकरा हमारा है, हम इसे पूँछ ही की तरफ़ से काटेंगे! अब सरकार ने भी भारत के समाज के बकरे की पूँछ पकड़ी है। देखिए, क्या होता है?

धरने से कोई फल नहीं हो रहा, यह सरकार को कैसे मालूम हुआ? और, धरने से कोई फल नहीं हुआ, इस कारण ही गांधीजी किसानों को लगान न देने के लिये उकसाते हैं, यह भी बंबई-सरकार को कैसे मालूम हो गया? हम नहीं जानते थे कि बंबई-सरकार ने दिल की बात समझने (Thought reading) का ऐसा उत्तम अभ्यास कर लिया है। किसी टैक्स के देने-न-देने में निष्क्रिय प्रतिरोध करना सभ्य संसार में अवैध नहीं माना गया। हमारे देश में प्रजातंत्र नहीं है, दूसरे देश के लोगों को टैक्स न देकर अपनी माँगों की तरफ़ दृष्टि आकर्षित करने की रीति ग्रहण करने के लिये भारतीय अनधिकारी हैं, यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वीकार नहीं किया जा सकता। भारतीयों में बहुत लोग ऐसे हैं, जो टैक्स न देकर उसके लिये दुःख उठाने को तैयार हैं, पर प्रतिकार के लिये टैक्स न देना कोई अपराध है, यह भी स्वीकार नहीं कर सकते। गुजरात के खेड़ा ज़िले में बारडोली और जशोहर ज़िले के बंदविला में टैक्स न देने के कारण लोगों ने दुःख झेले हैं, परंतु उनके कोई नेता इसलिये विना विचार के क़ैद नहीं कर लिए गए!

धरसना और धारवाड़ा के नमक के कारख़ानों पर आक्रमण करने का एक और अपराध गांधीजी पर लगाया गया है। आक्रमण शब्द की सार्थकता कभी सशस्त्र सिपाहियों के सामने निश्शस्त्र की नहीं होती। आक्रमण करने का जो भयावह दृश्य सरकार की आँखों में आया है, वह काल्पनिक हो सकता है, पर सत्य कदापि नहीं। नमक के कारख़ाने में जाने का गांधीजी का अभिप्राय था साधारण-जनों की तरफ़ से जाकर रक्षित नमक के स्वत्व पर दख़ल करना, जिससे लोगों के एक बड़े दुःख का निवारण हो। उनके मत से नमक पर सरकार का एकाधिकार अन्याय है। उन्होंने बड़े लाट साहब को लिखते हुए अपने पत्र में लिखा भी है कि वे अपने साथियों के साथ धरसना जाकर नमक के कारख़ाने का दख़ल चाहेंगे। गांधीजी बल-प्रयोग के द्वारा, धक्के-मुक्कियों के सहारे या लट्ठबाज़ी का भरोसा लेकर नमक के कारख़ाने पर दख़ल करना नहीं चाहते थे। अपने साथियों के साथ उनके अधिकार माँगने के समय पुलिस उन्हें गिरफ़्तार कर लेती, वे अवश्य उस समय निरस्त हो जाते, उनकी तरफ़ से कोई दंगा-फ़साद न होता, फिर आक्रमण के क्या मानी?

बंबई-सरकार ने गांधीजी की ग़ैर-क़ानूनी कार्रवाइयों में निहायत संयम प्रदर्शित किया है, इसका उल्लेख भी आया है। कहा गया है कि घटनाओं ने ज़ाहिर कर दिया है कि प्रकृति के नियम कठोर और अमननीय हैं, यदि मि० गांधी के उद्यम को विना रोक-टोक के चलने दिया जाय, तो पहले के असहयोग के प्रयत्न की तरह यह और आग के संसर्ग से मिले हुए इतिहास की पुनरावृत्ति होगी।

ख़ून और आग की आवृत्ति की अधिकतर संभावना जहाँ से थी, जहाँ वह अधिक मात्रा में मौजूद है, इधर दो महीने के इतिहास ने दिखाया कि वहीं से उसका प्रस्फोट हुआ। इसके लिये ज़्यादा उत्तरदायी सरकार है या महात्मा गांधी?

× × ×

३. लखनऊ में गोली और पुलिस की डंडेबाज़ी

लखनऊ में जो प्रकांड तांडव नौकरशाही ने किया है, उसकी अनेक जाँचें हो रही हैं। एक रिपोर्ट कमिश्नर साहब की निकल चुकी है। दूसरी नागरिकों द्वारा नियुक्त की हुई एक कमेटी की जाँच निकली है। कांग्रेस के स्थानापन्न सभापति पं० मोतीलाल नेहरू और श्रीयुत पुरुषोत्तमदास टंडन, जो युक्त-प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी के स्थानापन्न सभापति हैं, गत २ जून को लखनऊ आए थे, पर अभी तक उनकी जाँच प्रकाशित नहीं हुई। एक जाँच सरकार की तरफ़ से भी हो रही है।

गत २५ मई को साढ़े पाँच बजे के क़रीब १५० से ऊपर स्वयंसेवकों का एक जुलूस कौंसिल-चेंबर के रास्ते से होकर हज़रतगंज जाना चाहता था। इस जुलूस का श्रीमती मित्रा नेतृत्व कर रही थीं। दो दर्जन महिलाएँ जुलूस के साथ थीं। जब जुलूस रायल होटल के पास पहुँचा, तब उसने देखा कि घुड़सवारों तथा पुलिस के सिपाहियों से रास्ता रुका हुआ है। इसी जगह पुलिस-सुपरिंटेंडेंट तथा डिप्टी-कमिश्नर भी मौजूद थे।

पहले यहाँ श्रीमती मित्रा गिरफ़्तार की गईं। फिर महिलाओं को लारी पर चढ़ा पुलिस आलमबाग़ ले गई, और वहाँ दो घंटे तक रोक रक्खा।

इसके बाद एक सीटी बजी। बस पुलिस जुलूस पर डंडे बरसाने लगी। स्वयंसेवक ज़ख़्मी हो-होकर गिरने और तितर-बितर होने लगे। उनके कप्तान ने उन्हें वहीं लेट जाने की आज्ञा दे दी थी। स्वयं-सेवकों ने इस आज्ञा का "आज़ादी या मौत" के नारे के साथ उचित पालन किया। इससे उन पर और भी भयंकरता तथा बेरहमी के साथ पुलिस के डंडे बरसे। पर स्वयंसेवकों ने अपनी जगह नहीं छोड़ी, न किसी ने बदले के लिये हाथ उठाया! पुलिस की लाठियों के अविचलित-अनर्गल प्रहार से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सैकड़ों स्वयंसेवक ज़ख़्मी हो गए—किसी का हाथ टूटा, किसी के पैर में चोट आई, किसी का सिर फट गया!

जो दर्शक रास्तों, मकानों, अहातों में खड़े हुए यह दृश्य देख रहे थे, उन पर भी पुलिस के डंडे पड़े, यहाँ तक कि दर्शक स्त्रियाँ तथा बच्चे भी इस कार्य से नहीं बचे। जुलूस से दूर खड़ी श्रीमती बख़्शी यह कोई नग्न तांडव देख रही थीं, इस जुलूस के साथ उनका कोई ताल्लुक़ न था। जब उन्होंने अपने भाई पं० हरिहरनाथ किचलू को, जो चीफ़ कोर्ट के वकील हैं, पुलिस के हाथों से मार खाते हुए देखा, तब उनसे रहा नहीं गया, और अपने भाई की सेवा के लिये दौड़ पड़ीं, उन पर भी पुलिस के क्रूर प्रहार होने लगे। इलाहाबाद की श्रीमती जे सुशरीन एबट हाल के सहन में अपने १६ वर्ष के बच्चे के साथ खड़ी थीं। उन्हें एक अँगरेज़ ने बुरी तरह पीटा। फिर एक सवार ने उन्हें डंडे मारे। उनकी कनपटी और हाथों में चोट आई। उनके बच्चे का सर फट गया। छोटे-छोटे दस-दस बारह-बारह साल के कई बच्चे डंडों की मार से घायल हुए, उनकी हड्डियाँ टूट गईं। कांग्रेस के दफ़्तर से अब तक २१६ आदमियों के घायल होने की सूचना निकली है, और कमिश्नर की विज्ञप्ति में ३० घायल होने और ४ मरने की। श्रीमती मित्रा को ६ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी गई।

उसी रोज़ रात दस बजे फिर जुलूस निकाला गया, और निर्भयता से घूमता रहा। इसके बाद २६ मई को अमीनुद्दौला-पार्क में, जैसा कि कांग्रेस-कमेटी ने घोषित किया था, एक विराट् सभा का समावेश हुआ। पहले जुलूस निकाला गया। इस जुलूस के निकलने के कुछ समय पहले पुलिस के २०० सिपाही आ गए, और तमाम नाके बंद करके खड़े हो गए; आदमियों और ट्रैफ़िक की आमद-रफ़्त बंद कर दी। तरह-तरह की बातें जुलूस के संबंध में हो रही थीं। २०० गोरों की एक पलटन आ गई, और उसने पार्क को अपने चार्ज में ले लिया। सिपाहियों की इतनी भीड़ देखकर लोगों में भय तथा कौतुक का संचार होने लगा, और रास्तों पर धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती गई। फ़ौज के एक अफ़सर ने अमीनुद्दौला-पार्क में फहरा रहे राष्ट्रीय झंडे को उखाड़कर ज़मीन पर फेंक दिया। जुलूस उसी तरह जय-घोष के साथ घूमता-फिरता कांग्रेस-कमेटी के दफ़्तर पहुँचा। इस समय पार्क से फ़ौज हटा ली गई, और गिराए हुए जातीय झंडे को लोगों ने भीतर घुसकर फिर खड़ा कर दिया। फिर उधर पुलिस की चौकी के पास जनता और पुलिस में कुछ छेड़-छाड़ होने लगी। पुलिस ने गोलियाँ चलाईं। कितने मरे, इसका यथार्थ हाल नहीं मालूम। हाँ, शहरवालों का दिल इस बात को जानता है कि गोलियाँ कितनी भयंकरता से चलीं। इस पर जाँच के पश्चात् ही कुछ लिखना ठीक होगा। सरकार की ओर से एक जज पूरी जाँच करने के लिये मुक़र्रर हुए हैं।

इसके बाद से अमीनाबाद और अमीनुद्दौला-पार्क में अब तक फ़ौज और पुलिस का राज्य है। कोई हवाख़ोरी के लिये पार्क के भीतर नहीं जा सकता। फ़ुटपाथ पर घोड़े लीद करते हैं।

उधर गांधी-टोपीवाले पकड़े जाते थे और मोटर-लारियों द्वारा दूर ले जाकर छोड़ दिए जाते थे। फिर पथिकों की छड़ियाँ और डंडे छीनने की धूम रही। अभी करफ़्यू ऑर्डर जारी है। १५ दिन के लिये था, अब १५ दिन के लिये और बढ़ा दिया गया है। दो रोज़ मोहर्रम के वक़्त ऑर्डर उठा लिया गया था। छः-छः स्वयंसेवकों का जत्था इस ऑर्डर को भंग करने के लिये रोज़ निकलता और गिरफ़्तार होता है। मोहर्रम के दो रोज़ जत्थे का निकलना बंद था। इधर जत्थे के साथ जय बोलनेवाले साधारण लोग भी गिरफ़्तार कर लिए जाते हैं। कालाकाँकर-नरेश के छोटे भाई कुँअर सुरेशसिंहजी भी अपना जत्था निकालकर गिरफ़्तार हो गए हैं। उनके साथ कुँअर शालिवाहनसिंह तथा कुँअर नरेंद्रसिंह भी गिरफ़्तार हुए हैं। ६ आदमियों के जत्थे के साथ ११ दर्शक गिरफ़्तार किए गए। आदमियों की आमद-रफ़्त बहुत कम होती है। बाज़ार की दशा निहायत शोचनीय है—बिक्री बहुत कम होती है।

× × ×

४. नौकरशाही का महिलाओं पर हमला

आज तक सभ्य-संसार में स्त्रियों की जैसी इज़्ज़त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की गई है, शायद अँगरेज़ सरकार इसके लिये सबसे बाहर अपना दावा पेश करेगी। स्त्रियाँ अपने देश की हों या विदेश की, विशेषतः निस्सहाय अवस्था में वे शत्रुओं के निकट भी सुरक्षा की अधिकारिणी हैं। पर अपनी शिक्षित और सभ्य महिलाओं पर गर्व करनेवाली अँगरेज़ सरकार दूसरी जाति की स्त्रियों को किस दृष्टि से देखती और उनका कैसा सम्मान करती है, इसका इससे बढ़कर और दूसरा कौन-सा उदाहरण होगा कि लखनऊ की सत्याग्रही महिलाओं को शहर से बाहर आलमबाग़ ले जाकर वहाँ दो घंटे तक रोक रखने के पश्चात् रात्रि के समय उन्हें भटकते फिरने, हैरान होने और असहाय अवस्था में गुंडों से अपनी आत्म-रक्षा करने के लिये छोड़ दिया गया! जो महिलाएँ कभी पर्दे के बाहर नहीं हुईं (और इस प्रांत की प्रचलित पर्दा-प्रथा को अर्द्धाधिक शताब्दि से पूर्ण शासन करनेवाली सरकार अब कि जानती थी, ऐसी हालत में), उनके प्रति यह व्यवहार क्या सरकार के कर्मचारियों द्वारा किया हुआ उनका अपमान नहीं। आलमबाग़ में किसी राजनीतिक उद्देश्य से महिलाओं को सरकार के लोग नहीं ले गए; वहाँ उनसे कोई ज़बान-बंदी नहीं ली गई; वहाँ किसी हवालात या पुलिस-स्टेशन में उन्हें नहीं रक्खा था; अगर भीड़ हटाना ही एक बहुत बड़ा राजनीतिक उद्देश्य था, तो वे महिलाएँ शहर में ही रोक रक्खी जा सकती थीं, और वहाँ से भी लारियों में लाकर शहर में छोड़ दी जा सकती थीं, और जब कि ऐसा नहीं किया गया, तब इसके समझने में किसी को कोई दिक़्क़त नहीं पड़ती कि भारतीय स्त्रीत्व की सरकार के लोग कितनी इज़्ज़त करते हैं।

बंगाल की महिलाओं के साथ जो दुर्व्यवहार सरकार के पोष्य पुत्रों ने किया है, उसका उल्लेख संवाद-पत्रों के पाठक पढ़ चुके हैं। हम यहाँ एक उद्धरण 'अमृतबाज़ार-पत्रिका' से लिया हुआ 'माडर्नरिव्यू' का पेश करते हैं—

"The following is a list of Satyagrahis who are said to have been beaten and insulted by the police on Tuesday, the 6th of may, 1930, at kholakhali, a village near the town of contai, whilst they were protecting the National Flag. I was sent there by the Bangiya Ain Amanya Parishad on the 10th of May, 1930 to investigate and give a medical report of the wounds received by those women."

(1. Padmavati—aged 40)

A bruise just under the right clavicle 4 in. by 3 in. It is said to have been caused by the tread of a booted policeman as she fell down.

(2. Durga Dasi—aged 30)

Swelling and tenderness of right wrist. Said to have been caused by a "lathi" blow.

(3. Rajeswari—aged 25)

A lacerated wound at upper part of forehead near the midline about ½ square inch in area and 1/8 in. deep. Said to have been caused by the pointed end of a 'dao'.

(4. Kurani Dasi—aged 50)

Two abrasions on the dorsum of the right foot each about I Square inch in area. An abrasion on the medial side of the big toe of left foot 1/4 square inch in area. All three abrasions are said to have been caused by the tread of booted policeman. A bruise on the calf muscles on the right leg 5 in. by 3 in.

A bruise on the left buttock 3 inches long and 1/4 inch broad. said to have been caused by a whip.

(5. Biraja Dasi—aged 30.)

Three linear bruises running trans-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

versely each about 2 in. long and 1/4 in. broad on the anterior aspect of the right thigh. Said to have been caused by a whip.

(Sd.) MAITREYEE BASU,
M. B., Contai,
The 10th May, 1930.

इसमें जो पाँच महिलाएँ—पद्मावती, दुर्गादासी, राजेश्वरी, करनीदासी और विरजादासी—आई हैं, ये सब खोलाखाली (बंगाल) में जातीय झंडे की रक्षा कर रही थीं। उसी समय उन पर पुलिस का हमला हुआ, और पाँचो पुलिस की मार और गुंडेशाही से घायल होकर कांथी के अस्पताल में ले जाई गईं। किसी को बूट-समेत पुलिस के नौकरों ने रौंदा, किसी को लाठी मारी, और किसी को चाबुक से पीटा, जिसका उल्लेख घावों के साथ कांथी की डॉक्टर मैत्रेयी वसु एम्० बी० ने किया है।

यह पुलिस के कृत्यों का जीता-जागता चित्र है, और नौकरशाही भारतीय स्त्रीत्व को किस दृष्टि से देखती है, उसका ज्वलंत प्रमाण। इधर श्रीमती मुशरीन ने लखनऊ के मामले पर सरकारी जाँच में जो बयान दिया है, वह भी देखने लायक़ है—"... ... हुसेनगंज के चौराहे पर बहुत-से पुलिस कांस्टेबुलों ने ताँगे को रोक लिया। तब हम लोग ऐबट रोड के किनारे ऐबट हाल के सामने फ़ुटपाथ पर खड़े हो गए। वहाँ बहुत आदमी नहीं थे। रायल होटल के चौराहे पर पुलिस के कई सिपाही थे। मैंने बहुत-सी लाल पगड़ियाँ रायल होटल में भी देखीं। पुलिस ने रायल होटल के पास जुलूस को रोक लिया। ... ... उस समय ऐबट हाल के मैदान के फाटक खुल गए थे, और हम उसी हाते में चले गए। अब एक सीटी की आवाज़ सुनाई दी, और रायल होटल से बहुत-से लट्ठबंद सिपाही आते हुए दिखाई दिए तथा लाठियों की वर्षा शुरू हो गई। इस समय वालंटियर 'शांति-शांति' कह रहे थे, और पब्लिक 'शेम-शेम' चिल्ला रही थी।

"उस पर दर्शकों का भी पीटना शुरू हुआ, और लोग भागने लगे। पुलिस उनका पीछा कर रही और उन्हें पीट रही थी। ... ... सत्याग्रही कह रहे थे—'आज़ादी या मौत!' उनके कपड़ों पर ख़ून दिखाई दे रहा था। इसके बाद पुलिस ने उनके हाथ या टाँग पकड़कर, घसीटते हुए, पास कच्ची नाली में डाल दिया। इस समय मैं हाते में एक ज़ख़्मी आदमी को देख रही थी। मुझे किसी ने पीछे से धक्का दिया। पीछे घूमने पर देखा, १५-२० पुलिस के सिपाही आदमियों को पीट रहे थे। ... ... घूमकर मैंने देखा, एक पुलिस अफ़सर हाथ में डंडा लिए हुए खड़ा था। मैंने उससे पूछा कि मैं कहाँ जाऊँ। इसके उत्तर में उसने मेरे सिर पर एक डंडा मारा। इस मार से मैं चौंधिया गई। मैंने अपना चेहरा अपने हाथों से थाम लिया। इस पर भी उसने मेरे हाथ पर एक डंडा मारा। फिर मेरी पीठ पर एक डंडा पड़ा, और मुझे धक्का दिया गया। जब मैंने अपने चेहरे पर से हाथ उठाया, तो देखा, पुलिस के सिपाही लोगों को पीट रहे थे। मेरे भाई किचलू को (यह चीफ़कोर्ट के वकील हैं।—सं०) भी मारा गया, और वह गिर पड़ा। तिस पर भी तीन-चार सिपाही मेरे भाई को डंडों से मार रहे थे। मैं बरामदे में चली गई। वहाँ भी पुलिसवालों ने मुझे डंडे मारे तथा एक सिपाही ने मुझे नीचे गिरा दिया। नीचे आकर मैंने देखा कि मेरा सोलह साल का पुत्र ज़मीन पर पड़ा हुआ है, और उसके सिर से ख़ून निकल रहा है। मैं चिल्लाई कि लड़के को लोग क्यों मार रहे हैं। इससे मुझ पर फिर डंडे पड़े। मैं जिधर गई, उधर मुझ पर मार पड़ी। पुलिसवाले गाली भी बक रहे थे। थोड़ी देर बाद पुलिसवाले चले गए। मेरी बहन की बहुत बुरी हालत थी। वह बेतरह पीटी गई थी। मेरे भाई भी बुरी तरह पीटे गए थे।

"मैं अपनी बहन के लड़के को ढूँढ़ने बाहर गई। फाटक पर बहुत-से सिपाही थे, जो मुझ पर झपटे। पर फिर लौट गए। ... ... मेरे आठ घाव थे, श्रीमती बख़्शीजी के सात, मेरे लड़के के सात तथा मेरे भाई के बहुत-से ज़ख़्म थे। डॉक्टर ताराचंद मेरे भाई के पास रात-भर रहे थे, क्योंकि उनकी हालत बहुत ही ख़राब थी। जनता बहुत शांत थी, और मारने से पहले कोई चेतावनी नहीं दी गई।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह ब्रिटिश सरकार के रक्षण में भारत की स्त्रियों का हाल है!

× × ×

५. समाज और मनुष्य

हमारे देश के किसी-किसी नेता ने कहा है कि समाज में जो कमज़ोरियाँ हैं, उन्हें दूर करने के उपाय स्वराज्य-प्राप्ति के पश्चात् सोचे जायँगे। स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती महाशय भी इसी विचार के मनुष्य थे। शासन जब तक अपने हाथों में नहीं, तब तक समाज की बुराइयों को दूर कर उसे आधुनिक युग के अनुकूल करना बहुत कठिन है, यह उन्हीं की दृष्टि में सत्य है, जो समाज को अपनी ही कल्पना से देखते हैं, और उसे किसी मशीन की तरह अपनी ही इच्छा के अनुसार चलाना चाहते हैं। हमारे विचार से बाह्य स्वतंत्रता की प्राप्ति अपने ही भीतर के विचार तथा उद्यम से होती है। अतः यहाँ स्वतंत्रता के बीज हमें मनुष्यों के हृदय में ही मिलते हैं। जो लोग अपनी उच्च शिक्षा, अपार उद्यम, यथेष्ट त्याग और अलंघ्य साहस के बल पर जन-नायकत्व प्राप्त कर इस प्रकार की बातें करते हैं, वे अपनी अबाध शक्ति से लक्ष्य तक पहुँचकर साथ ही कुछ अकर्मण्य मनुष्यों को भी अपने साथ ही खींच ले जाते हैं, उनकी योग्यता और अयोग्यता, शक्ति और दुर्बलता का विचार नहीं करते। इस तरह प्रायः ऐसा होता है कि समाज कुछ दूर चलकर फिर उनका साथ नहीं देता और यह उनकी मानसिक स्थिति को देखते हुए स्वाभाविक भी कहा जा सकता है। नेता लोग स्वयं जितने योग्य हैं, समाज को उस योग्यता की कल्पना तक करने के क़ाबिल नहीं कर लेते। फल यह होता है कि वे आगे खींचते हैं, और कुछ दूर उठकर, सामर्थ्य के न रहने के कारण, आगे बढ़ने से घबराया हुआ समाज, प्रतिक्रिया के रूप से, फिर अपने पूर्व स्थान को पहुँचना चाहता है, जिससे नेताओं के आगे खींचने और समाज के पीछे हटने के विरोधी गुणों से शक्ति का व्यर्थ ही नाश होता है।

मनुष्य यंत्र नहीं। उससे कुछ कराया नहीं जा सकता। वह कोई काम तभी कर सकता है, जब उसका तात्पर्य वह स्वयं अच्छी तरह समझे। इन तमाम बातों के समझने के लिये नेताओं में जितनी शिक्षा सन्निवेशित है, उसका शतांश भी समाज के लोगों में नहीं, और यंत्र भी वे नहीं हैं। यही कारण है कि जब किसी महान् लक्ष्य पर पहुँचना होता है, और समाज को अपने पूर्वाधिकृत गुण और कर्म छोड़ने पड़ते हैं, तब कुछ काल के लिये वह छोड़ भले ही दे, पर जब किसी कठिन समस्या का सामना उसे करना पड़ता है, तब अपने विचारों की असमर्थता के कारण वह अपना पूर्व-मूषिकत्व ही पसंद करता है; वह यंत्र की तरह फिर एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ना चाहता। इसका कारण यही कि वह स्वयं एक विचार करनेवाला मनुष्य है। अब तक वह प्रेरित होकर इतनी दूर तक आया था, अब उस प्रेरणा पर वह स्वयं विचार करने लगा, और जिस कठिनाई का उसे सामना करना पड़ा है, उसे वह अपनी इस प्रगति के कारण ही होते हुए समझने लगा, इसलिये लौट गया। मनुष्य-जाति को एक संस्कार को छोड़कर दूसरे की तरफ़ तभी बढ़ाया जा सकता है, जब उसमें संस्कारों के बदलने की शिक्षा डाल दी जाय; उसमें इतना मार्जन हो कि स्वयं अपनी परिस्थिति पर विचार कर सके। अनभ्यस्त मार्ग पर चलने में पढ़े-लिखे लोगों को भी जहाँ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, और बड़े दुःख से ही वे अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं, वहाँ साधारण मनुष्य के लिये, जिन्हें दूर तक कल्पना करने की आदत नहीं, अभ्यास के चक्र की ही प्रदक्षिणा जो करते रहे हैं, उनके लिये पुरुषानुक्रमिक उस आदत को बदलना और मृत्यु का सामना करना एक ही बात होती है—वास्तविक मृत्यु उनके लिये होती है। कारण, चिरकालिक एक संस्कार को बदलकर दूसरे पर क़दम रखते समय पहले का मनुष्य मर जाता है, फिर जो जीवन उस संस्कार से गठित होता है, वह दूसरा ही जीवन है, और इतना बड़ा साहस, जिससे मृत्यु का मुक़ाबला हो, मस्तिष्क-रहित समाज के लोग नहीं कर सकते। यही कारण है, शारदा-विवाह-ऐक्ट की इस साल ज़रा भी परवा नहीं की गई। पंडितों ने भी अपने प्राचीन संस्कारों के अनुसार आठ-आठ और नौ-नौ साल की बालिकाओं का विवाह कर गौरी और रोहिणी के दृष्टांत देखे-दिखाए। वे इतना भी नहीं सोच सके कि यह उक्ति बहुत आधुनिक और मुसलमान-शासन-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काल में प्रचलित हुई है। इस वैवाहिक रीति को सनातन तथा अनादि और अनंत काल से चली आती हुई ही उन्होंने माना।

जाति के इस ग़ुलाम मस्तिष्क पर हम अनेक बार लिख चुके हैं, और हमारा विश्वास है कि ग़ुलामी की इज़्ज़त जिस जाति में इतनी बड़ी लगी हुई है, वह राजनीतिक कार्यों में त्याग की परा काष्ठा तक पहुँचकर ध्येय को प्राप्त करने में उसी तरह प्रेरणा के द्वारा कुछ आगे बढ़कर अपने पूर्व स्थान को लौट सकती है। दूसरे देश, जहाँ राजनीतिक ध्येय प्राप्त हुए हैं, अपनी सामाजिक दशा में इतने पिछड़े हुए नहीं थे। वे नवीन भावना तथा नवीन कार्य-क्रम को पहचानते थे। इसलिये भीतर से उनकी सहानुभूति थी। यहाँ देहात के लोग, जहाँ किसी-किसी गाँव में शुद्ध हिंदी लिखनेवाला भी नहीं निकलता, राजनीति के ध्येय को प्राप्त कर अपने सुधारों के करने की कल्पना भी नहीं कर सकते, वे जानते भी नहीं कि हमारा राजनीति का ध्येय क्या है। सरकार के प्रति उनका हार्दिक असंतोष अवश्य है, पुलिस का यथेच्छ दबाव उन्हें अखरता है, पर वे अपने विचारों के अनुसार ही राजनीतिक मामलों में टीका-टिप्पणियाँ करते हैं, जो निराशाजनक तथा वर्तमान समर के उत्तम भेद को न जानने की ही सूचना दे जाती हैं। इससे राजनीतिक आंदोलनों को जितना बल मिलना चाहिए, नहीं मिलता। मनुष्य अपने छोटे-छोटे स्वार्थों को तभी छोड़ सकता है, जब वह अपने सामने कोई बड़ा स्वार्थ रख लेता है, और उसे समझता हुआ उसकी तरफ़ अग्रसर होता है। यहाँ यू० पी० की जनता विचारों की इस हद तक नहीं पहुँच सकती। शिक्षा की कमी तथा रूढ़ियों का प्राबल्य होने के कारण वह अपने क्षुद्रतम स्वार्थ में ही पड़ी हुई है। जब छोटे त्याग द्वारा बड़े फल की प्राप्ति का दृश्य उसे दिखलाया जाता है, तब वह अपने छोटे त्याग को अपनी हानि और बड़े फल की प्राप्ति को मरीचिका समझकर निरस्त हो जाती है। देश की यह बहुत ही दयनीय दशा है। सरकार बेचारी भारतवर्ष की रक्षा के लिये सामरिक ख़र्च-भर का रुपया भी नहीं पाती, फिर देश के लिये शिक्षा को अनिवार्य करने का ख़र्च वह कहाँ से लाए? समाज तैयार नहीं हो पाता और ग़ुलामी के नए-नए बोझ जो उस पर लदते रहते हैं, चुपचाप ढोता चला जा रहा है। मनुष्य को हर प्रकार की परतंत्रता से मुक्ति तभी मिल सकती है, जब वह अपनी परतंत्रता के स्वरूप को पहचाने। यदि मूर्ति ही समाज के मस्तिष्क में चरम-इष्ट-प्राप्ति रही, तो उनके फूटने पर हिंदू-मुसलमानों का लड़ना भी चिरस्थायी रहेगा, और तब विघ्नरक के रूप से किसी सरकार का रहना भी दार्शनिक सत्य की नींव मज़बूत करेगा। पर यदि मूर्ति इष्ट-प्राप्ति का साधन रहेगी, तो साधन का नष्ट होना दूसरी वस्तुओं की नश्वरता की तरह ही अवश्यंभावी समझा जायगा, और एक साधन के नष्ट होने पर दूसरे के उद्भव की तरह, मूर्ति की जगह दूसरी मूर्ति बन या स्थापित हो जाया करेगी, और कभी वैमनस्य या हत्याकांड की ज्वाला प्रचंड रूप धारण नहीं कर सकेगी। हिंदू-मुसलमानों का सौहार्द्य भी दृढ़ रहेगा, और फिर जनाब जान साहब के फ़ैसले की भी किसी को आवश्यकता नहीं रहेगी। यह है धार्मिक विचारों की पहली सीढ़ी। फिर अगर समाज के लोगों की उपासना और पूजा के लिये अपने मन को स्थिर करने के सिवा दूसरा बाहरी साधन ही न रह जाय, तो किसी बाह्य विक्षेप या बाहरी उपद्रव से शांति-भंग की कोई शंका भी न रहे। रही मन की बात। सो मन को स्थिर कर शांति की साधना की आदत डाल ही ली गई है। वहाँ उत्तेजना के लिये जगह कहाँ? पर जब शांति का रूप कहीं बाहर होगा, तब उसके नष्ट होने पर शांति का भी नाश समझिए, और फिर अशांत चित्त जो कुछ भी करे, थोड़ा है। जब अपने ही अंदर शांति का रूप मिल जाता है, तब लड़ाई और कमज़ोरियों के बीज भी अपने ही अंदर मिल जाते हैं, और उनका सुधार भी शांति की स्थापना द्वारा हो जाता है, और तब बाहर के सर्वस्व तक के लिये मनुष्य को किसी प्रकार का संकोच या भय नहीं होता। अंतर के सुधार से बाहर का भी तमाम वातावरण शुद्ध हो जाता है। तब मनुष्य समझकर ही कुल काम करता है। इसलिये कि उसके अंदर समझ की प्रतिष्ठा हो जाती है।

देश के स्वाधीन काल के मनुष्यों को जब हम देखते हैं, तब उन्हें इसी तरह के विचारवाले पाते हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और स्थितप्रज्ञ समाज के एक ही केंद्र से सहस्रों धाराएँ फूटकर अनेक प्रकार के प्राकृतिक आविष्कार, सत्य, चमत्कार, काव्य, कला, शिल्प, वाणिज्य, राष्ट्र-नीति, समाज-नीति आदि के रूप में अपनी स्वतंत्र दिशाओं से, स्वतंत्र मार्ग से, बहती हुई पूर्णता के एक ही समुद्र से मिलती हैं। पर यदि एक ही धारा से तमाम धाराएँ तैयार करने की कोशिश की गई, तो वे सब नहरें होंगी, प्राकृतिक प्रवाह नहीं। फिर उस एक धारा में इतना पानी भी नहीं निकल सकता, जो तमाम नहरों को भरता रहे। हमें पहले समाज के पूर्ण मनुष्यों की आवश्यकता है, नियम जिनके बनाए हुए हैं, जो नियमों के बनाए हुए नहीं।

× × ×

६. राष्ट्र-भाषा का प्रश्न

राष्ट्रीयता की भावना के उदय होते ही राष्ट्र-भाषा का प्रश्न आप-से-आप उठ खड़ा होता है। इस देश में ही नहीं, अन्य अनेक देशों में राष्ट्र-भाषा का प्रश्न उठ चुका है, और परिस्थितियों के अनुसार अनेक रूपों में वह प्रश्न हल भी किया गया है। योरपीय इतिहास में रोमन साम्राज्य का एक विशेष महत्त्व-पूर्ण युग गुज़र चुका है। यूनान के पतन के उपरांत जब रोम की उन्नति हुई, और जब सारी योरपीय सभ्यता का केंद्र एथेंस से हटकर रोम में आया, तब वहाँ की लेटिन-भाषा की जैसी उन्नति हुई, इतिहास में उसका पूरा-पूरा उल्लेख है। सारे सभ्य योरप का झुकाव उसकी ओर हुआ, और पीढ़े से बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में उसका प्रवेश भी हुआ। प्रवेश हुआ, यह नहीं कहना चाहिए; कहना चाहिए कि बड़े-बड़े विश्वविद्यालय उसे प्रवेश देकर गौरव-संपन्न हुए। गौरव-संपन्न हुए, यह यदि न कहें, तो इतना तो अवश्य कहेंगे कि उन्होंने उसे प्रवेश देकर अपने को गौरव-संपन्न समझा। जो देश सभ्यता की दौड़ में जितना आगे रहता है, जिस देश का आध्यात्मिक, आर्थिक आदि जितना अधिक उत्थान होता है, उस देश की भाषा का भी उतना ही अधिक विस्तार, सम्मान आदि होता है। यूनान की भाषा की तुलना में रोम की लेटिन-भाषा का विकास अधिक विस्तृत हुआ था, क्योंकि अन्य बातों के अतिरिक्त रोमन लोगों में साम्राज्य-विजय की भावना प्रबल थी। रोमन जहाँ-जहाँ गए, अपनी सभ्यता, अपने क़ानून-क़ायदे (Law and Order) के साथ अपनी भाषा भी ले गए। रोमन साम्राज्य के विकास-युग में लेटिन भाषा योरप के सारे सभ्य जन-समाज की बोल-चाल की भाषा कहलाने लगी। भावों और विचारों के सुगम विनिमय के लिये लेटिन की आवश्यकता थी, यह ठीक है; पर सभ्य कहलाने के लिये उसकी जितनी आवश्यकता थी, उतनी और किसीलिये नहीं। लेटिन के विकास के मूल में यही है—सभ्य रोम की सभ्य भाषा का सार्वदेशिक ग्रहण।

परंतु सभ्यता की नाप-जोख बदलती रहती है। रोमन साम्राज्य के पतन के उपरांत यद्यपि रोम की सभ्यता की धाक योरप में वैसी ही बनी रही, और लेटिन-भाषा के अभ्यासी सभ्य लोगों की संख्या में कमी नहीं आई; परंतु जब योरप के जन-समाज में प्रजातंत्र के भाव उदय हुए और जब योरपीय देशों में राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ (संयोग-वश उन्नीसवीं शताब्दि में ये दोनो ही बातें साथ-साथ हुईं), तब लेटिन की रौनक़ कम हुई, और अनेक राष्ट्र-भाषाओं का उदय हुआ। स्वयं इटली ने लेटिन को छोड़कर इटालियन-भाषा की श्री-वृद्धि की। राष्ट्र-संघटन के लिये एक भाषा का होना परम आवश्यक और उपयोगी समझा गया, इसी कारण अँगरेज़ी, फ्रेंच, जर्मन आदि अनेक भाषाएँ लेटिन की स्पर्द्धा में उठ खड़ी हुईं। यह नहीं कहा जाता कि योरप के सामान्य जन-समाज की बोल-चाल की भाषा किसी समय लेटिन हुई थी। हाँ, एक समय था, जब लेटिन की ओर सभ्यता-प्रिय पढ़े-लिखे लोगों का झुकाव अत्यधिक था, और शिक्षा के बड़े-बड़े केंद्रों का ध्येय अधिक-से-अधिक संख्या में लेटिन के विद्यार्थी तैयार करना था। आक्सफ़ोर्ड और केंब्रिज की अँगरेज़ी-युनिवर्सिटियाँ इस ओर विशेष दत्तचित्त थीं। लंदन-युनिवर्सिटी की स्थापना के उपरांत इँगलैंड के विश्वविद्यालयों में अँगरेज़ी की भी ख़ातिर होने लगी।

एक उदाहरण और अँगरेज़ों की साम्राज्य-वृद्धि के युग का लीजिए। उनका प्राथमिक उद्देश्य व्यापार था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अँगरेज़ व्यापार करने की ग़रज़ से संसार के कोने-कोने में फैले, और धीरे-धीरे विशाल अँगरेज़ी सल्तनत का जन्म हुआ। व्यापार के लिये एक देश के लोग दूसरे देश की भाषा भी सीख लें, यह न तो आवश्यक ही है, और न ऐसा कहीं हुआ ही है। प्राचीन भारत संसार के अनेक प्रदेशों से घनिष्ठ व्यापारिक संसर्ग रखता था, पर उसने कभी भी सामूहिक रूप में कहीं की भाषा नहीं ग्रहण की। कुछ थोड़े शब्दों के परिचय-मात्र से व्यापार का काम चल सकता है, चलता है। पर अँगरेज़ों ने जहाँ-जहाँ अपना व्यापार फैलाया, वहाँ-वहाँ अपना राज्य, अपना धर्म और अपनी भाषा भी फैलाई। योरप इँगलैंड के चकमे में नहीं आया। यद्यपि धर्मतः दोनो क्रिश्चियन थे, और व्यापारिक संपर्क भी दोनो में घनिष्ठ था; पर इँगलैंड की भाषा योरप को कम स्वीकार हुई। उतनी ही स्वीकार हुई, जितनी व्यापार के लिये आवश्यकता थी। पर अँगरेज़ी कूट-नीति का चक्र एशिया और आफ्रिका आदि में ख़ूब चला। स्वयं भारतवर्ष में अँगरेज़ों की कुटिल नीति फैली, और ऐसी फैली कि अब सुनकर आश्चर्य होता है! भारतवर्ष अँगरेज़ों की साम्राज्य-लालसा का सर्व-प्रधान ध्येय रहा है। यहाँ की सभ्यता और संस्कृति अँगरेज़ों की सभ्यता और संस्कृति से बहुत कम मेल खाती थी, पर सात समुद्र पार से आकर इतने विस्तृत और इतने सभ्य देश में राज्य करना जिन अँगरेज़ों को अभीष्ट था, वे विना अपनी कूट-नीति का प्रयोग किए कैसे रह सकते थे? अँगरेज़ों की नीति हुई—भारत के इतिहास को विकृत कर दो, और हो सके, तो उसकी भाषा को मिटा दो। चेष्टाएँ की जाने लगीं। भारतीय सभ्यता और संस्कृति तुलना में नीची दिखाई जाने लगी। हमारी भाषाएँ गँवारू, असाहित्यिक और अविकसित बताई जाने लगीं। हमारा प्राचीन इतिहास अंधकार में डाल दिया गया। बाक़ायदा अँगरेज़ी की पढ़ाई होने लगी। इस देश का शताब्दियों से अंधकार में पड़ा हुआ जन-समाज समझने लगा कि जो कुछ है, अँगरेज़ी सभ्यता है, अँगरेज़ी साहित्य है, और अँगरेज़ हैं।

कुछ समय के बाद हममें प्रकाश फैला। हम सँभले। बंगाल के राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर आदि कुछ ऐसे अंतर्दृष्टि-संपन्न विद्वान् हुए, जिन्होंने वस्तुस्थिति का अन्वेषण किया, और उसे समझा। स्वामी दयानंद का कार्य इस क्षेत्र में उत्तर-भारत के लिये सबसे अधिक महत्त्व-पूर्ण समझा जायगा। अँगरेज़ कहते थे कि चूँकि भारतवर्ष कोई एक देश नहीं है, अनेक देशों का समुदाय है, यहाँ न एक भाषा है और न एक प्रकार का समाज, अनेक छोटी-बड़ी भाषाओं के रहते भारतवर्ष उन्नति नहीं कर सकता, इसलिये सबको अँगरेज़ी पढ़नी चाहिए। अँगरेज़ो के हिमायती अब तक कुछ ऐसी ही दलील पेश करते रहते हैं। आश्चर्य तो यह है कि इनमें कुछ तो इसी देश के निवासी भारतीय हैं। हमें उनकी बात पर हँसी भी आती है, और कष्ट भी होता है। भारतवर्ष एक देश नहीं है, अनेक देशों का समुदाय है, यह वे ही कह सकते हैं, जिन्हें यहाँ के इतिहास का कुछ पता नहीं, और जिन्हें यहाँ की सभ्यता और संस्कृति की नींव का ज्ञान नहीं। परंतु जो यह जानते हैं कि प्राचीन भारत ने एक सूत्र में गुँथकर अपना सर्वतोमुखी विकास किया है, जिन्हें यह मालूम है कि इस देश ने सुख और दुःख की परिस्थितियों में एक साथ रहकर काम किया है, विजय की है तो एक साथ, हारे हैं तो एक साथ; जिनको इसका पता है, राम, कृष्ण, बुद्ध, रामानुज, कबीर, तुलसी आदि सैकड़ों महापुरुष और वैष्णव, शैव, शाक्त आदि अनेक संप्रदाय प्रादेशिक सीमा से ऊपर समस्त देश में, वायु की भाँति, एकरस फैले हैं, वे ऐसे भ्रम में कदापि नहीं पड़ सकते। योरप के जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि देशों में यदि एकता है, तो भारत में उससे एक इंच भी कम नहीं। यदि विभिन्न जातियों (races) के होते हुए भी वे देश एक राष्ट्र की दृढ़ता पा सकते हैं, तो हिंदुओं, मुसलमानों (दोनो ही आर्य और अनार्य भी हैं) के इस देश में भी वही राष्ट्रीयता स्थापित हो सकती है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं। यदि इस देश को अपना पूर्व गौरव पहचानकर अपना अस्तित्व बनाए रखना है, यदि इसे अन्य सभ्यताओं के मुक़ाबले खड़े होकर अपना मस्तक नत नहीं करना है, और यदि राजनीतिक, आर्थिक आदि विषयों में इसे विदेशियों का ग़ुलाम नहीं होना है, सारांश यह कि यदि इसे संसार के इति-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हास में कुछ अपना व्यक्तित्व बनाए रखना है, तो भारत-वर्ष को राष्ट्रीयता के एक पाश में अवश्य बँधना पड़ेगा। बिना एक राष्ट्र-भाषा के राष्ट्रीयता का विकास नहीं हो सकता। यह बात राममोहन राय, दयानंद आदि ने समझी थी, और इस युग की सब महान् आत्माएँ इसका समर्थन करती हैं।

× × ×

७. भारत की राष्ट्र-भाषा

यह प्रश्न अब काफ़ी पुराना हो चुका है कि भारत की राष्ट्र-भाषा क्या हो? प्रश्न पुराना है, पर नए-नए उत्तर अब तक बराबर दिए जा रहे हैं। एक समय था, जब यहाँ के पढ़े-लिखे लोगों के दिमाग़ में अँगरेज़ी की महिमा समाई हुई थी, और उठते-बैठते ही नहीं, सोते-जागते भी उसके व्यवहार की धुन सवार थी। जब कोई देश अपने को भूल जाता है, तब ऐसी ही अवस्था होती है। समय बदला। धीरे से वह ज़माना आया, जब मातृ-भाषा संस्कृत की ओर झुकाव हुआ। कहा जाने लगा, संस्कृत ही सारे भारत की भाषा हो सकती है। इस कथन में व्यावहारिकता का ध्यान नहीं रक्खा गया। अँगरेज़ी के विरुद्ध जो प्रतिघात हुआ, उसी की झोंक में ऐसी बात कह दी गई। संस्कृत कभी इस देश के जन-समाज की बोल-चाल की भाषा रही है, इसमें संदेह है। कुछ विद्वान् इसे केवल साहित्य की भाषा स्वीकार करते हैं, और कुछ इसे किसी काल की प्रादेशिक भाषा बतलाते हैं। इसका प्रयोग शिष्ट जन ही करते थे। वह संस्कृत अब हमारे घरों में बोली जाय, इस बात में प्राचीन-प्रियता, स्वदेश-प्रेम आदि चाहे जितना हो, पर भाषाशास्त्र के व्यावहारिक नियमों के सामने यह ठहर नहीं सकती। संस्कृत हमारे पूज्य पूर्वजों की पवित्र वाणी रही हो, इस दृष्टि से हमारे लिये वह शिरोधार्य है। वह देववाणी है, हम मनुष्य उसकी पूजा करेंगे, पर इससे अधिक हम शायद कुछ न कर सकेंगे। शास्त्रों के अध्ययन से हम अपने 'हिय के विमल विलोचन' खोलेंगे, हम अपने देश के सुधा-स्रावी अमर साहित्य के रसास्वाद से परम तृप्ति लाभ करेंगे, पर संस्कृत को घरेलू भाषा बनाकर अपमाने की बात व्यर्थ है। हम उसे इतना नीचा नहीं गिरा सकते, न वह इतने नीचे गिर ही सकती है।

तब क्या हो? कुछ विद्वानों का मत है कि भारत-वर्ष के विविध प्रांतों का विभाजन प्रचलित अनेक भाषाओं के अनुसार हो, और अलग-अलग प्रांतों की अलग-अलग भाषाएँ अपना-अपना विकास करें। हिंदी के क्षेत्र में मित्रवर अध्यापक धीरेंद्र वर्मा ने ऐसी ही एक स्कीम * पेश की है। प्रांतों का विभाजन केवल भाषा के आधार पर हो, हम यह नहीं मानते, और इसे बहुत कुछ अव्यवहार्य भी समझते हैं। पर यहाँ हमको इस मतभेद से कोई मतलब नहीं। यह तो भविष्य की राजनीतिक परिस्थिति पर निर्भर है। क्या होगा, अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। पर प्रांतों के संकीर्ण घेरे में भाषाओं को बाँट देने से राष्ट्र-भाषा का प्रश्न हल नहीं होता। यह ठीक है कि साहित्यिक विकास के लिये भाषाओं को प्रांतबद्ध होने में कुछ सुविधा रहेगी। विभिन्न प्रांतों के विश्वविद्यालय अपने यहाँ की भाषा की ओर ध्यान देंगे, वहाँ के साहित्यिक उसकी श्री-वृद्धि प्रतियोगिता की भावना के साथ करेंगे, पर यह बात दूसरी है। साहित्यिक उत्कर्ष के साथ ही भावों के सार्वदेशिक सुगम विनिमय का ध्यान भी रखना पड़ेगा, और यही राष्ट्र-भाषा का प्रश्न है। भरतपुर के हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा था कि हिंदी को यदि राष्ट्र-भाषा बनाना हो, तो उसके साहित्य की श्री-वृद्धि करो, उसे आकर्षक और सर्वग्राही बनाओ। रवि बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ कवि और साहित्यिक हैं, इसलिये उन्होंने राष्ट्र-भाषा के प्रश्न को भी साहित्यिक दृष्टि से देखा, तो आश्चर्य नहीं। पर जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, साहित्य और भाषा का प्रश्न बहुत कुछ एक होते हुए भी बहुत कुछ अलग भी है। बँगला का आधुनिक साहित्य बहुत उच्च कोटि का बतलाया जाता है, पर बंग-भाषा-भाषियों की संख्या में इस कारण कुछ विशेष वृद्धि हो गई हो, यह बात शायद नहीं है। साहित्यिक उत्कर्ष की ओर थोड़े-से विद्वानों का ही ध्यान रहता है, भाषा के सामूहिक

* देखिए, सुधा की गत माघ-मास की संख्या का अग्र लेख।—संपादक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रचार में वह कम ही सहायक होता है। संसार के संस्कृत, लेटिन, यूनानी आदि उन्नत साहित्य इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। साहित्य का उत्कर्षापकर्ष कृत्रिम और मानवीय साधनों पर अवलंबित है, भाषा का स्वाभाविक विकास होता है।

महात्मा गांधी ने राष्ट्र-भाषा के प्रश्न को जिस तरह हल किया है, आज उससे प्रायः सभी निष्पक्ष विवेकशील व्यक्ति सहमत हैं, और उसे व्यावहारिक रूप देकर महात्मा गांधी ने उसे सफल भी सिद्ध कर दिया है। उनका मत है कि हिंदी राष्ट्र-भाषा हो, और प्रत्येक प्रांत के निवासी उसे सीखें, और उससे परिचित हों। हिंदी बोलनेवालों की संख्या सबसे अधिक है। अधिकांश मुसलमान थोड़े से परिवर्तित रूप में हिंदी ही बोलते हैं। उच्चारण-सौकर्य और सरलता के कारण वह प्रायः सर्वत्र बोली और समझी जाती है—नहीं समझी जाती, तो थोड़े ही प्रयास से समझी जा सकती है। महात्माजी के प्रयत्न से हिंदी का आशातीत अखिलभारतीय प्रचार हुआ है, और देश की सर्वमान्य संस्था राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यवाही भी हिंदी में होने लगी है। महात्माजी अपने अधिकांश व्याख्यान हिंदी में देते हैं, अतएव उनके असंख्य अनुयायी हिंदी पढ़ने और समझने का प्रयत्न करने लगे हैं। तामिल और दक्षिणतम प्रदेशों में भी हिंदी समझी जाने लगी है। महात्माजी के इस कार्य के लिये समस्त भारतीय जनता उनकी चिरकृतज्ञ हुई है। सर पी० सी० राय, श्रीसुभासचंद्र, सेठ जमनालाल बजाज आदि अन्य बड़े-बड़े व्यक्ति भी हिंदी को राष्ट्र-भाषा मानकर उसके प्रचार की चेष्टा कर रहे हैं।

हिंदी राष्ट्र-भाषा हो, जहाँ इस मत के समर्थक महात्मा गांधी-जैसे महापुरुष हैं, वहाँ इसके विरोधी भी कम नहीं। प्रांतों की संकीर्ण सीमा में बँधे हुए अनेक व्यक्ति तथा हिंदू-मुस्लिम-विभेद के कट्टर हिमायती कुछ लोग हिंदी के प्रतिकूल कहते सुने जाते हैं। हिंदी-उर्दू का विवाद यद्यपि अब तक बंद नहीं हो गया है, पर समझदार लोग यह समझने लगे हैं कि इनमें कोई विशेष विभेद नहीं—कम-से-कम बोल-चाल की दृष्टि से हम दोनो को एक मान सकते हैं। यह प्रश्न तो यों हल हो जाता है, पर प्रांतीय भाषाओं के कुछ समर्थकों—विशेषकर बंगालियों—के विरोध का प्रश्न रह जाता है। बंगालियों ने सबसे पहले अँगरेज़ी पढ़ी, सबसे पहले वे सभ्य बने। वे अपने को बंगाली और शेष समस्त भारत को 'हिंदोस्तानी' कहने में संकोच नहीं करते। बंगाल की समता कोई कर ही नहीं सकता, यह उनकी दृढ़ धारणा है। उनमें प्रांतीय संकीर्णता कूट-कूटकर भरी है। सभी बंगाली नहीं, पर अर्द्ध-शिक्षित अधिकांश बंगाली बँगला-भाषा को ही राष्ट्र-भाषा मानते होंगे। उनकी चले तो वे बँगला को संसार-भर की भाषा बना दें। इसमें संदेह नहीं कि बंगाल भी भारतवर्ष का एक अंग है, और उसकी उन्नति पर सारे भारतवर्ष को हर्ष और गर्व है, पर राष्ट्रीय प्रश्न—विशेषकर राष्ट्र-भाषा—के संबंध में बंगाली जिस सापेक्ष अथवा विरोधी बुद्धि का परिचय देते देखे जाते हैं, वह कदापि बंगाल के गौरव के अनुकूल नहीं। पर सब बंगाली ऐसे नहीं। राष्ट्र-भाषा के प्रश्न को लेकर स्वामी माधवानंद ने हाल में प्रबुद्ध भारत में जो लिखा है, बंगाली उदारता का वह एक उदाहरण है। यद्यपि सर्वांश में हम उससे सहमत नहीं, पर प्रांतीय भावनाओं के पक्षपाती बंगालियों के लिये विद्वान् स्वामी माधवानंद का उपर्युक्त लेख कुछ काम का सिद्ध होगा। हम सामान्यतः सभी राष्ट्र-भाषा-प्रेमियों और विशेषतः कट्टर बंगालियों से स्वामीजी के लेख को पढ़ने का अनुरोध करते हैं। नीचे हम उनकी कुछ पंक्तियों का आशय देते हैं—

"हम राष्ट्र-भाषा के लिये उसी भाषा को चुनें, जो सरलता से सीखी जा सके, सहज में जिसका उच्चारण किया जा सके, जिसका अधिक प्रचार और प्रचलन हो, जिसे इच्छानुसार प्रयोग कर सकें, और जिसका साहित्य संपन्न हो। यदि हम इन पाँचो दृष्टियों से देखें, तो हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हिंदी ही राष्ट्र-भाषा बनने की सबसे अधिक अधिकारिणी है।

"संस्कृत से सीधा संपर्क रखने के कारण भारतीय सभ्यता और संस्कारों की जैसी अभिव्यक्ति हिंदी करती है और कर सकेगी, वैसी और कोई भाषा नहीं।"

× ×

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

८. साइमन-कमीशन की रिपोर्ट

साइमन-कमीशन को हमारे देश के लोग भूले नहीं होंगे। ये सात आदमी, जिनमें सर जॉन साइमन प्रमुख थे, विलायत से चुने जाकर, हमारे देश में, हमारी हर तरह की स्थिति तथा योग्यता की जाँच करने के लिये आए थे, इसलिये कि हम लोग जिन अधिकारों के लिये आवाज़ उठा रहे हैं, उन्हें प्राप्त करने की हममें कहाँ तक योग्यता है। पर चूँकि इस कमीशन में हिंदुस्थान के लोगों को रखना पसंद नहीं किया गया, ये ठेठ विलायत के लोगों से ही चुने जाकर यहाँ आए थे, इसीलिये इनका यहाँ विरोध किया गया। ये जहाँ-जहाँ भी गए, वहीं-वहीं लोगों ने काले झंडों से इनका बहिष्कार किया। यहाँ की सभी पार्टियाँ—नैशनलिस्ट, स्वराजिस्ट और लिबरल—इस कमीशन के खिलाफ़ थीं। लखनऊ में राष्ट्रपति पं० जवाहरलालजी के साथ, इसी कमीशन का बहिष्कार करते समय, पुलिस की छेड़-छाड़ हुई थी, और पं० जवाहरलालजी को इससे चोट आ गई थी। फिर तअल्लुक़दारों ने जब इन्हें निमंत्रित किया था, तब क़ैसरबाग़ में चारो तरफ़ से पुलिस का कड़ा पहरा रहने पर भी कनकौओं में "साइमन, लौट जाओ" आदि बातें लिखकर, छत पर से लोगों ने उड़ाया था और कनकौए लड़ाकर काटे थे, जिससे इस कमीशन के न्यौता खाने के समय, टेबिल के नज़दीक ही, वे उड़-उड़कर गिरे थे। फिर लाहौर में भी इसका इसी तरह बहिष्कार किया गया, जिससे पुलिस के डंडे से भारत के सर्वमान्य नेता लाला लाजपतरायजी को सख़्त चोट आई, और उनका प्राणांत हो गया। इधर महात्माजी के इस आंदोलन को ज़ोर पकड़ते हुए देखकर विलायत तथा हिंदुस्थान की सरकार रिपोर्ट के शीघ्र प्रकाशित होने की आवाज़ उठाने लगीं। अस्तु। वह रिपोर्ट १० जून को प्रकाशित हो गई। पर कुल नहीं, यह उसका पहला हिस्सा ही अभी निकला है। इसका दूसरा हिस्सा इस महीने के अंतिम सप्ताह तक प्रकाशित हो जायगा।

इस पहले भाग में सात अध्याय हैं—(१) समस्या का रूप, (२) वर्तमान शासन-पद्धति, (३) संशोधित शासन, (४) वर्तमान शासन-प्रणाली, (५) अर्थ-प्रणाली, (६) शिक्षा, (७) भारत में लोकमत की स्थिति।

प्रथम अध्याय में यहाँ की भिन्न-भिन्न क़ौमों तथा धर्मों का उल्लेख किया गया है। अपना उल्लू सीधा करने का पहले ही प्रयत्न! उसमें जो यह कहा गया है कि यहाँ के लोगों को एक सूत्र में बाँधने में अँगरेज़ी शिक्षा तथा अँगरेज़ी शासन को ही महत्त्व प्राप्त है, और इनके कारण ही यहाँ के लोगों में अपना लक्ष्य तथा उचित स्थान, संसार के लोगों के मुक़ाबले में, प्राप्त करने की चाह पैदा हुई है, कितना सत्य है, यह ब्रिटेन के लोगों को जानने में अभी कुछ दिन भले ही और लगें, पर हिंदुस्थान के लोग इस बात को अच्छी तरह जानते हैं; गोया अँगरेज़ों के आने के पहले न यहाँ राज्य था, न शासन-शृंखला थी, न प्रबंध था, और न एकता में बँधने का दृढ़ सूत्र। देहात और क़स्बों में जो अंतर बतलाया गया है, इसमें कमीशन ने काफ़ी पृष्ठ घेरे हैं। हिंदू, मुसलमान, जैन, ईसाई, सिख आदि पर प्रकाश डालते हुए लिखा गया है कि हिंदू और मुसलमानों के झगड़े का कारण यह है कि दोनो अलग जातियाँ हैं, और दोनो के धर्म तथा सामाजिक बर्ताव भी अलग-अलग हैं, और चूँकि खाना-पीना और वैवाहिक संबंध में ये दोनो जातियाँ एक दूसरे से सम्मिलित नहीं, इसलिये इनका विवाद और भी बढ़ जाता है, और कभी-कभी ज़रा-सी बात पर बड़ी उग्र परिस्थिति ग्रहण कर लेता है। कमीशन कहता है कि प्रांतीय कौंसिलों के लिये इस तरह की स्कीम ठीक होगी—जिस प्रांत में मुसलमानों की ज़्यादा संख्या है, वहाँ मुसलमानों का ही बहुमत रहे, और जहाँ कम है, वहाँ उनकी विशेष रूप से रक्षा की जाय। भेद पैदा करनेवाली अँगरेज़ी मस्तिष्क की उपजाऊ बुद्धि इस तरह श्रीगणेश से ही शुरू हुई है, और जब बहिष्कार से हिंदुओं और मुसलमानों को कमीशन ने संबद्ध होते हुए देख लिया, तो एक को फोड़कर मिलाने की यह तरकीब सोची। कहा गया है, हिंदुओं की संख्या अधिक है, वे धनी और शिक्षित भी हैं, और इसी आधार पर वे अपना दावा तथा अधिकार पेश करते हैं, और इन्हीं कारणों से मुसलमान अपनी विशेष रक्षा के लिये यह याद करते हुए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माँग पेश करते हैं कि वे भारतवर्ष की शासक-जाति की संतान हैं। यह ठीक है, पर उनकी माँग सरकार द्वारा पूरी की जा सकती है, इसमें किसी मुसलमान को संदेह हुए बिना नहीं रह सकता। वर्तमान राष्ट्रीय आंदोलन में अपने बड़े हक़ को समझनेवाले मुसलमानों की काफ़ी बड़ी संख्या है। ये लोग अपना वही अधिकार चाहते हैं, जो उनके हाथों से अँगरेज़ों ने ले लिया है। क्या अँगरेज़ सरकार उनकी वह माँग उन्हें देकर प्रसन्न कर सकती है? पंजाब के सिक्खों के लिये भी विशेष अधिकारों की बात कमीशन ने छेड़ी है, और अंत्यज, योरपियनों तथा ऐंग्लो-इंडियनों के लिये भी जगह है। मतलब यह जान पड़ता है, हिंदू हैं भी बहुत, अतः देने से बहुत ख़र्च हो जायगा, कोई पीठ बचानेवाला रखना ही चाहिए, अतः जो लोग संख्या में कम हैं, उन्हें कुछ देकर प्रसन्न करना चाहिए। इस तरह जिन्हें स्वयं ही शिक्षा के मैदान में आगे बढ़ा हुआ क़रार देते हैं, उन्हें घपले में डाल उनकी शिक्षा की क़द्र कर रहे हैं! फिर बीच में रहनेवाली भी तो कोई क़ौम चाहिए, जो कुछ पिसे, और यह भी हो कि उसके पास धन भी ज़्यादा हो। अतः साइमनों ने अपने ज्ञान में धोखा बिलकुल नहीं खाया। रिपोर्ट में भारत और ब्रह्मदेश के अंतर का भी उल्लेख किया गया है। देशी नरेशों के पूर्ण मतैक्य के साथ उनकी भी समस्या हल करने का उपाय सोचा गया है। भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देने में सबसे बड़ी अड़चन यह बतलाई गई है कि सब प्रांतों में सैनिक भाव बराबर तौर पर नहीं है। आप लोगों ने समझाया भी है कि तरक़्क़ी तो धीरे-धीरे ही होगी। जब कि भारतवर्ष पारस्परिक संबंध में दृढ़ नहीं है, और जब कि हर प्रांत अपनी सैनिक शक्ति के अभाव से अपनी रक्षा करने में सक्षम नहीं, यदि ब्रिटिश-जाति का आधिपत्य, उसकी सैनिक शक्ति हट जायगी, तो फल यह होगा कि और-और प्रांतों की सैनिक जातियाँ अपना अधिकार जमाने की कोशिश करेंगी, जिससे देश में भयंकर स्थिति हो जायगी। इनका संगठन केवल ब्रिटिश आधिपत्य की छत्रच्छाया में रहने के कारण है। हिंदुस्थानी फ़ौज हिंदुस्थानी अफ़सरों के मातहत काम नहीं कर सकती, शायद हिंदुस्थानी अफ़सरों में नियंत्रण की शक्ति का सर्वथा अभाव है। और, फ़ौजी विभाग को यदि किसी उत्तरदायी मंत्रिमंडल के हाथ एक सहायक परिषद् बनाकर दिया जाय, तो भी ख़तरा है। है ही, यदि मंडल भस्मासुर की तरह भस्म कर देनेवाले वर की परीक्षा वरदाता पर ही पहले कर बैठे! प्रेसिडेंट पटेल पर भी आक्षेप हैं कि वह अपने अधिकार का अनुचित प्रयोग करते हैं, और जिन मामलों में पार्लामेंट के स्पीकर भी हस्तक्षेप नहीं करते, उन पर भी यह हमला कर बैठते हैं। म्युनिसिपैलिटी के संबंध में कहा गया है कि जो कुछ लोगों को दिया गया है, उसका निर्वाह तथा संचालन न कर ये राजनीतिक मामलों में पड़े रहते हैं, और यह इसलिये कि अगले निर्वाचन में भी इन्हें ही सफलता मिले। कृषकों के संबंध में कहा है कि यद्यपि सभी देशों के किसान राजनीतिक मामलों में नहीं रहते, पर भारत के किसान तो ख़ास तौर से नहीं, वे सांप्रदायिक संकीर्णता में पड़े हुए हैं। इस प्रकार जैसी अग्र सूचना दी गई है, अब हमें आगे की बातें बहुत कुछ सूझने लगी हैं।

× × ×

६. वर्तमान आंदोलन में महिलाएँ

वर्तमान आंदोलन को जीवित कर रखने में हमारी महिलाओं ने देश की जो सेवा की और करती जा रही हैं, वह अनमोल है। असहयोग-आंदोलन के समय स्वर्गीय देशबंधुदास की स्त्री की तरह राजनीतिक मैदान में बहुत थोड़ी स्त्रियाँ थीं, जिन्होंने काम किया। इस बार हर प्रांत और बड़े शहर में देवियों ने देश की सेवा के लिये पुरुषों का हाथ बटाया है, जिससे देश में एक नई ही जागृति फैल गई है। संवाद-पत्रों में पुलिस के द्वारा किए गए अत्याचारों की कथाएँ हम लोग पढ़ चुके हैं, पर कहीं से भी उनकी स्फूर्ति के घटने के समाचार नहीं मिले। पहले भी जब राजपूत वीरांगनाओं के जौहर का युग था, एक बार राजपूतों के तंबुओं के लिये डोरियों का अभाव होने पर राजपूत रमणियों ने डोरियाँ बनाने के लिये अपने सर के बाल काट दिए थे, और इस तरह अपने देश को एक समागत संकट से बचाया था, जिसका उल्लेख करते हुए एक बंगाली कवि ने लिखा है—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"सुकेशिनी सिर-शोभा केशेर छेदने
वृथा नाहिं यदि ताहे होय उपकार।"

उसी तरह आज भी गृह का प्रांगण, सुख की मृदुल सेज छोड़कर अंतःपुरचारिणियों को बाहर खुले हुए मैदान में आना पड़ा है। लखनऊ, जहाँ हिंदू और मुसलमानों की पर्दा-प्रथा का राज्य है, महिलाओं के, खुले वातावरण में, सभाओं और जुलूसों में, अधिक-से-अधिक संख्या में, उपस्थित होने का दृश्य देख चुका, और इससे उनके आंतरिक भावों का सुंदर परिचय मिल जाता है। बंबई, मद्रास, बंगाल और पंजाब-सिंध की महिलाओं की तो बात ही क्या? श्रीमती रुक्मिणीलक्ष्मीपति बी० ए०, जो मद्रास-युनिवर्सिटी-सिनेट की सदस्या, मद्रास के युवक-संघ की प्रेसिडेंट हैं, इस आंदोलन में गिरफ़्तार होनेवाली सबसे पहली महिला हुईं। फिर संसार-प्रसिद्ध श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती मित्रा, श्रीमती सरस्वती आदि भारत की ज्योतिस्वरूपा देवियों ने आंदोलन की बुनियाद मज़बूत करने के इरादे से हँसते-हँसते कारागार के कठोर कष्टों को स्वीकार कर लिया। कलकत्ते की देवियाँ पिकेटिंग में अविचल भाव से काम कर रही हैं, यद्यपि कहीं-कहीं कापुरुष नर-पिशाचों के हाथों उनका घोर अपमान होता है। डॉक्टर मुथूलक्ष्मी रेड्डी ब्रिटिश-इंडिया में लेजिस्लेटिव कौंसिल की पहली स्त्री-सदस्य हैं। उन्होंने महात्मा गांधी के कारागार तथा सरकार की दमन-नीति के विरोध-स्वरूप अपने पद से रस्तीफ़ा दे दिया। लखनऊ की श्रीमती अवस्थी झंडा-जुलूस में १४४ तोड़कर हँसते-हँसते जेल * चली गईं, और अपने प्रिय पति के मार्ग का अनुसरण कर सच्ची सहधर्मिणी का नमूना खींच दिया। वीरवर पं० जवाहर-लाल नेहरू की वीर भगिनी कुमारी कृष्णा, वीर पत्नी श्रीमती कमला और वीर माता श्रीमती स्वरूपरानी भी, इस सभी धूप में, कष्ट की कुछ भी परवा न करती हुई, प्रयाग में विलायती कपड़ों की दूकानों पर पिकेटिंग करती हुई देखी गई हैं। इस तरह देश के कोने-कोने से महिलाओं के अपार उद्यम तथा अविचल धैर्य के संवाद प्रतिदिन मिलते रहते हैं। यह निस्संदेह देश के मंगल की सूचना है। मातृशक्ति के पुनरुद्बोधन के द्वारा भारत के महान् उद्देश्य की सिद्धि अवश्य होगी—

"या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता;
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।"

× × ×

१०. सामाजिक व्यवस्था

आजकल हमारे देश में जो सामाजिक व्यवस्थाएँ प्राचीन प्रणालियों की रक्षा के लिये प्रचलित हैं, उनसे समाज को फलतः कोई लाभ नहीं होता, बल्कि नुक़सान ही अधिक उठाना पड़ता है। समाज वही जीवित है, जो आवश्यकतानुसार अपना रूप बदल सकता है, न कि वह जो कुछ पुरानी लकीरों का फ़क़ीर हो। नवीन युग के आगमन के साथ, भारत में भिन्न-भिन्न अनेक जातियों के स्थायी रूप से बस जाने के कारण, भारत के ही अनेक लोगों के अलग-अलग धर्म ग्रहण कर लेने के कारण, अब भारत के आदिम निवासी हिंदुओं के लिये बहुत बड़ी आवश्यकता आ पड़ी है कि अपने समाज का केवल कुछ सुधार ही नहीं, किंतु आमूल परिवर्तन करें। समाज में यह शक्ति न रहने से समाज के शासन का यथार्थ अधिकार उसके हाथ में नहीं रह जाता, और समाज के लोग पहले के किसी मनुष्य के बनाए हुए एक ख़ास नियम को पकड़-कर चलते हुए अंत तक यंत्र बन जाते हैं। हमारी इस समय यही दशा हुई है। सामाजिक दुर्बलता के कारण ही हिंदू-समाज की अनेक जातियाँ स्वयं संघबद्ध होकर, अपनी उच्चता का ब्राह्मण-आदर्श ही अपने सामने रखकर ब्राह्मण और क्षत्रियों के अनेक रूपों में बदल गई हैं। यह एक प्रकार समाज के शीर्ष स्थानीय ब्राह्मण और क्षत्रियों के अधिकारों के साथ स्पर्द्धा-सी की गई है। पर यह एक तरह स्पर्द्धा का स्पर्द्धा के द्वारा जवाब देना ही ठहरा, न कि ब्राह्मण और क्षत्रिय बनना।

इस समय देश की जैसी स्थिति है, देश में शूद्र के सिवा दूसरी और कोई जाति नहीं। प्रकृति ने इस हिंदू-समाज को जैसी मार, उसके दर्प की प्रतिक्रिया के रूप से, दी है, उससे अब सब लोग बराबर ज़मीन पर आ गए हैं। एक शूद्र से एक ब्राह्मण का कर्म से कोई फ़र्क़

* जेल में सरकार की वह एक ही दिन मेहमान रह सकीं, फिर छोड़ दी गईं।—संपादक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं रह गया, और शासकों की निगाह में भी इस समय का प्रचलित भेद गुणजन्य कोई महत्व नहीं रखता। सिर्फ़ अकड़ने के लिये ब्राह्मण और क्षत्रियों के अनेक प्रकार रह गए हैं, जिनमें सामाजिक शृंखला कोई नहीं रह गई, सब लोग एक ही प्रकार के व्यवसाय और जीवनोपाय उठा लेते हैं; पर आज तक जिन्हें वे जाति में अपने से छोटा समझते आए हैं, उनके प्रति वैसी ही घृणा का बर्ताव करते रहते हैं। इसी के फल-स्वरूप दूसरी जातियाँ क्षत्रिय और ब्राह्मण बन-बनकर पहले के ब्राह्मण और क्षत्रियों से बदला चुकाने पर तुल गई हैं, उनके मुक़ाबले सर उठाकर चलने लगी हैं, जिससे सुधार के बदले व्यापक रूप से कुसंस्कारों की ही जड़ मज़बूत होती जा रही है। और तो क्या, एक ही जाति के ब्राह्मणों की उच्च-नीच श्रेणियों में घृणा के भाव भरे पड़े हैं, और वैवाहिक संबंध तो क्या, कुलीन समझे जानेवाले ब्राह्मण अपनी ही साधारण श्रेणीवाले ब्राह्मणों के यहाँ पानी भी नहीं पीते, चाहे कल का पानी पिएँ, हाड़ों से साफ़ की हुई शक्कर खायँ, और उबाली हुई मुर्ग़ियों का अर्क़ अस्पताल की दवाओं में पी जायँ। यह कोई सामाजिक शृंखला नहीं। इस प्राकृतिक स्थिति को कि उसने तमाम भारतवासियों को लाकर एक ही ज़मीन पर खड़ा कर दिया है, उनके भेद-भाव को दूर कर दिया है, न समझनेवाले लोग कट्टरता की ही बुनियाद मज़बूत करते हैं, न कि बुद्धि की; और चूँकि इस तरह का प्रचलन हिंदू-समाज में है, इसलिये हिंदू-समाज किसी बुद्धि तथा विवेक के आश्रय पर इस समय नहीं खड़ा, किंतु कट्टरता ही उसके इस विभिन्न अस्तित्व का एक-मात्र आधार है। यदि वे लोग समाज को विवेक के अनुसार क़ायम रक्खें, तो कुल उलझनें सुधर जायँ, और बराबर ज़मीन पर रहकर अपने-अपने गुणों तथा कर्मों के अनुसार एक बार सब लोगों को तरक़्क़ी करने के समान अधिकार प्राप्त हों, समाज का आमूल संस्कार हो जाय।

हिंदू और मुसलमानों की समस्या इस देश की पराधीनता की सबसे बड़ी समस्या है। वर्तमान समाज का जो रूप है, इसके भीतर से इस नवीन रूप के निकले बिना, उस समस्या की उलझन भी नहीं मिट सकती। पहले जब मुसलमान यहाँ आए थे, तब अज्ञात-कुल-शील होने के कारण उस समय उनके साथ जो असहयोग तमाम धार्मिक और सामाजिक कार्यों में किया गया, वह ठीक था। पर अब वह असहयोग समाज के लिये सदा ही हानिकर होता रहेगा। अब वे इसी देश के मनुष्य हैं। हिंदुओं का सर्वोच्च वेदांत-धर्म वैयक्तिक नहीं। इसलिये हिंदू-धर्म को किसी ख़ास परिभाषा के द्वारा सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता। उसमें जो सामाजिक आचार-विचार समयानुसार बनते, चलते तथा बदलते रहे हैं, वे सनातन नहीं, वे समय के अनुसार आवश्यकता की पूर्ति तथा जाति की रक्षा के लिये तैयार किए गए हैं। मुसलमान तथा अन्य-अन्य जो जातियाँ हिंदुस्थान में बसी हुई हैं, उनसे यदि हिंदुओं का सामाजिक व्यवहार न रहे, तो सदा ही उनसे तकरार होती रहेगी, जिससे नुक़सान के सिवा फ़ायदा कभी नहीं हो सकता। रही बात यह कि शुद्धि के प्रचलन से मुसलमानों को हिंदू बनाओ, यह नितांत भ्रमोत्पादक उक्ति है। हिंदू अगर मुसलमानों को हिंदू बना सकते हैं, तो मुसलमान भी तबलीग़ जानते हैं, और इससे स्पर्द्धा के सिवा कभी मैत्री की स्थापना नहीं हो सकती। पर अगर मुसलमानों के साथ पान-पानी आदि प्राथमिक साधारण व्यवहार जारी हो जाय, तो इससे हिंदुओं की ज़बानी मैत्री वास्तव में कुछ काम कर दिखा सकती है, और हमेशा की यह मार-काट बंद हो जायगी। धर्म के नाम पर जो यह इतना बड़ा हत्याकांड हो जाया करता है, न होगा। समाज की यह प्रगति उसी शिक्षा के द्वारा हो सकती है, जिसमें वर्तमान देश, काल तथा पात्र के समझने की शक्ति है। केवल मनुस्मृति को रटकर रख देने से अथवा त्रिकाल-संध्या की विधियों का बाक़ायदा निर्वाह करने से केवल कुछ "हं, लं, वं" के द्वारा निरर्थक जीवन पार कर देना ही होगा, इससे शिक्षा का यथार्थ तत्व मस्तिष्क के अंदर नहीं पैठ सकता। रही बात इस भय की कि हिंदू मुसलमानों में हज़म हो जायँगे, तो यह भय तो पं० नत्थाराम को ही हो सकता है, किसी समझदार को नहीं, जो अपने मुसलमान भाई के यहाँ भोजन करके भी अपने इष्ट, देश, जाति तथा धर्म की दृष्टि में पवित्र ही रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हम जानते हैं, हमारी ये बातें अधिकांश लोगों को अरुचिकर मालूम होंगी, पर जिन्हें ऐसा होगा और होता रहता है, उनकी बुद्धि का अंदाज़ा हमने पहले ही से लगा लिया है। महात्माजी ने जो समाज के लिये नई सलाह दी है, वह भी समाज में कम खलबली नहीं पैदा करेगी, कम-से-कम यू० पी० के समाज में। सरकार के साथ जो लोग पुलिस, फ़ौज तथा अदालतों में रहकर सहयोग करते हैं, वे अपने ही देश के भाइयों की प्रगति के बाधक समझे जाते हैं। महात्माजी ने हर तरह से उनके सामाजिक बहिष्कार की आज्ञा दी है, और वर्तमान वायु-मंडल को देखकर हमारा विश्वास दृढ़ हो गया है कि अनेक प्रांतों के लोग ऐसा करेंगे भी। वहाँ भी ब्राह्मण हैं, क्षत्रिय हैं, वैश्य हैं। उनका अगर सरकार से सहयोग करने के कारण सामाजिक बहिष्कार किया गया, तो अवश्य ही समाज में एक नया और बड़ा ज़ोरदार आंदोलन पैदा होगा। अपने आदमियों की रक्षा के लिये सरकार ने नए आर्डिनेंस जारी कर दिए हैं, जिनका हमने अन्यत्र उल्लेख किया है। पर अगर हमारे यू० पी० में भी कहीं अपर प्रांतों का यही प्रसंग छिड़ गया, तो सोचिए कि बाबा मनु फिर किस ताक़ पर रह जायँगे। यदि वाजपेयीजी कहीं पुलिस या फ़ौज में नौकर हुए, और उन्होंने नौकरी न छोड़ी, और उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया, तो सरकार चाहे उनके विरोधियों में से अधिकांश को सनद-से-सनद सज़ा क्यों न कर दे और यदि किसी ने उनके बेटे से अपनी लड़की की शादी न की, तो बहुत प्रसन्न होकर विलायत की ही किसी मिस से विवाह करा देने के लिये तुल जाय, पर वाजपेयीजी की त्रिकाल-संध्या तो समाज द्वारा बेगार ही ठहराई गई न? मुसलमानों की मैत्रीवाला विचार भी उसी तरह का है। सब प्रणालियाँ मनुष्यों ने ही सोचकर समय-समय पर अपनी भलाई के लिये समाज में चलाई हैं। यदि हम उन्हें पकड़कर उन्हें ही अपना धर्म मान बैठें, तो हम धोखा खायँगे। कारण, हम एक तरीक़े को धर्म समझ लेंगे। धर्म कभी कोई क़ानून, कोई रीति नहीं हो सकता। इसलिये हमें अपने समाज को हर वक़्त इस प्रकार तैयार रखना चाहिए कि फ़ौज के सिपाहियों की तरह, इच्छानुसार, जब जैसी ज़रूरत पड़े, हम समाज को उसी तरह, उसी रूप में, उसी राह से निकाल ले जायँ। यह है समाज के सभ्य शासन, नियंत्रण और संचालन की बात। पर जब एक ही रूढ़ि को, एक ही आदत को अज्ञात भाव से हम मानते जायँगे, तब उस आदत की तरह हम भी जड़ बन जायँगे। किसी गाड़ी को एक ही राह से चलाने का कोई क़ायदा नहीं, वह राह पहले भले ही बहुत अच्छी रही हो। यदि उस राह पर कोई पहाड़ टूटकर गिर गया हो और वह रुक गई हो, तो समझदार चलानेवाला रास्ता काटकर ही गाड़ी निकालेगा। यदि दूसरा रास्ता न हो, तो तैयार करके निकलेगा। पर पहाड़ उठाकर गाड़ी निकालने की मूर्खता कोई नहीं कर सकता। हमारे समाज की राह पर इस समय अड़चनों का पहाड़ टूट पड़ा है, और हम लोग न तो दूसरे ही रास्ते से गाड़ी निकाल रहे हैं, और न स्वयं रास्ता तैयार कर रहे हैं, बल्कि बेहोश हुए बराबर उसी पहाड़ से टकरा रहे हैं, और हमारी अक़्लमंदी पर दूसरे समाज के लोग इशारेबाज़ियाँ तथा मज़ाक़ कर रहे हैं!

× × ×

११. साहित्य की वर्तमान स्थिति

एक समय था, जब देवतों के चित्र ही चित्रशाला की शोभा बढ़ाने के लिये हमारे देश में अधिक उपयोगी समझे जाते थे। पहले देवतों के चित्र चित्रकला में भी दिव्य थे, इस पर हमें कोई संशय नहीं। पर उसका यह परिणाम तो अपनी आँखों ही हमने देख लिया कि पुरी के जगन्नाथजी के कटे हाथों और अनेक वर्णों की बिंदियों से सज्जित गोल आँखोंवाले चित्रों के सामने इस देश के लोग माइकेल एंजेलो की मूर्तियों के फ़ोटो और अवनींद्रनाथ की तस्वीरों को किसी मूल्य का भी नहीं समझते! इससे देव-चित्रों की दशा तथा अंधविश्वास के प्रत्यक्ष उदाहरण हमारी दृष्टि के सामने आ जाते हैं। हम देव-चित्र उसे ही मानते हैं, जिसके खींचने में, सौष्ठव और भावों में, देव-कला का विकास हुआ हो, न कि उसे, जिसे रात को एकाएक देखकर बालक डर जायँ। जिस चित्र के प्रति अपने ही आप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धा नहीं होती, वहाँ क्रियात्मक रूप से श्रद्धा लाने का फल यह होता है कि एक दिन शैतान को भी मनुष्य देवता समझकर मस्तक झुका देता है। बालकों के भविष्य-निर्माण की जो दोहाई इस तरह के चित्रों के प्रदर्शन से दी जाती है, हमारा विश्वास है, उससे उल्टा ही परिणाम प्राप्त होता है। बालकों का सौंदर्य-ज्ञान जड़-समेत नष्ट हो जाता है; फिर चित्र में बदशक्ल तस्वीरों के रहने के कारण उनके द्वारा जो सृष्टि होती है, वह बदसूरत हुआ करती है।

ऐसा ही हाल हमारे साहित्य का इस परवर्ती काल में हो गया था, और बहुत अंशों में अब भी है। चित्रों में जिस तरह अब कला का प्रदर्शन ही मुख्य है, और उसके प्रसार में जीव-जंतु भी आ गए हैं, और यथार्थ चित्रण में अपने परिचय के साथ वे मनुष्यों की सहानुभूति के अधिकारी हैं, उसी तरह साहित्य में भी अब सार्वभौमिक प्रसार है, और नगण्य जीवों में भी प्राप्त करने लायक़ बहुत कुछ सामग्री साहित्यिकों को मिलती देख पड़ती है। पहले यह बात थी ही नहीं, यह हम नहीं कहते, पर यह ज़रूर है कि पहले जितनी उदारता थी, इधर उतनी ही अनुदारता का साहित्य में साम्राज्य था, और है। हिंदी की साहित्यिक सीमा बहुत ही छोटी है, और कॉलेजों के अधिकांश अध्यापक साहित्य के मुक्त आकाश में उड़ने की शिक्षा विद्यार्थियों को नहीं देते, वे घोंसले में ही उन्हें बैठा हुआ देखना चाहते हैं, जिस तरह कि स्वयं बैठे हैं। जिस साहित्य का संबंध सार्वभौमिक नहीं, एक दायरे में बँधा हुआ जो अपनी ही पुरानी तान छेड़ता रहता है, अपने ही वाद्य के स्वर में मुग्ध रहता है, और दूसरे देशों से पैदा हुए स्वरों और वाद्यों से सहयोग नहीं करता, उससे कुछ लेने लायक़ और उसे भी कुछ देने लायक़ अपने साहित्य में कुछ है या नहीं, इसकी छान-बीन नहीं करता, वह संसार की साहित्यिक मंडली में बैठने का अधिकारी नहीं। हिंदी में अभी यह बात बहुत थोड़ी है। प्राचीन रूढ़ियाँ जिस तरह भारत के अन्यान्य देशों के साथ सम्मिश्रण की बाधक हैं, उसी तरह हमारा साहित्यिक ज्ञान भी है। प्रायः अधिकांश अध्यापक पुरानी लकीर के फ़क़ीर हैं, और जो कुछ नए हैं भी, वे नवीन संस्कृति के अनुकूल नहीं। नवीन सभ्यता में सभी अवगुण नहीं, उसमें गुण भी बहुत हैं। उसके मार्जन में एक ब्राह्म झलक है, जिससे मनुष्य की आत्मा प्रातःकाल के शिशिर से धुले हुए फूल की तरह निर्मल हो जाती है, पर हमारे अध्यापक उसके चित्र से अनभिज्ञ हैं। इसीलिये उनके पढ़ाए जो विद्यार्थी निकलते हैं, उनके मस्तिष्क में प्राचीन संकीर्णता की शिक्षा भरी रहती है। वे हिंदी के मैदान में बहुत बड़ा साहित्यिक उद्देश्य, बहुत बड़ी नवीन मौलिक प्रतिभा लेकर नहीं आते। उन्हीं नायिकाभेदों और अलंकारों के कोठों में चक्कर काटकर रह जाते हैं। पर तेली के बैल की तरह आँखों में जो पट्टी बाँध दी जाती है, वह ज़िंदगी-भर नहीं खुलती, और वे अपने पूर्व संस्कारों के चक्र के चारो ओर चक्कर काटकर अपनी साहित्य-सेवा समाप्त कर देनेवाले होते हैं। इस पढ़ाई के दोष के कारण उनकी हिंदी भी उतनी मार्जित नहीं होती, जितनी भाषा के क्रम-विकास के विचार से होनी चाहिए, और काव्य की शिक्षा में हिंदी के वर्तमान अधिकारियों की सूक्ष्म के कारण वे भी व्रजभाषा की मधुरता का स्वाद लेते-लेते ऐसे उद्भट कवि हो-होकर निकलते हैं कि उनकी रचनाएँ देखकर दया आती है। यदि ऐसा न होता, तो अब तक हिंदी के प्रकांड अध्यापकों के विद्यार्थी हिंदी में कुछ काम भी कर दिखाते। पर काम करनेवाले जितने हैं, उन्हें सौभाग्य से कॉलेजों में अध्यापकों के हाथ से तैयार होने का दुर्योग नहीं मिला। यह हिंदी के अध्यापकों के लिये कम लज्जा की बात नहीं। जिन नायिकाओं के भेद सदियों पहले निर्मित हुए थे, अब संसार की प्रगति में पड़कर उनसे दूसरी-ही-दूसरी तरह की नायिकाएँ दृष्टिगोचर होने लगी हैं। पर हमारे साहित्य में अब भी उन्हीं पहली नायिकाओं की छान-बीन हो रही है। अभी तक बिहारी और देव की लड़ाई का वह क्रम एक प्रकार जारी ही है, और वह पार्टीबंदी भी ज्यों-की-त्यों ही चली आ रही है। इसके मानी यह हैं कि इन भलेमानसों को इसके अतिरिक्त और कुछ आता ही नहीं, ये साहित्य को इससे बड़ी विभूति कुछ दे ही नहीं सकते। अलंकारों के न्यास में जो नए-नए तरीक़े रख-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर साहित्य में अलंकारों की नई प्रभा दिखलाई जा सकती है, उसकी तरफ़ कितने अध्यापक ध्यान देते हैं, और खंजन-नयनों में किसने वहाँ रूप की आग भर दी और यौवन का वसंत ला दिया ? फल यह हुआ है कि अलंकारों का पिष्टपेषण करते-करते उनकी रही-सही चमक भी अब के प्राचीन परिपाटी के साहित्य-महारथियों ने ग़ायब कर दी। नवीन युग के तरुण प्रभात के स्वागत के लिये कोई भी तैयार नहीं देख पड़ता। सबकी आँखों में पुराने मोह का आलस्य भरा हुआ है, नवीन जागृति की किरणें नहीं। हिंदी की दुर्दशा पर तमाम प्रांतों के लोग मखौज उड़ाते हैं, पर इनके कान में जूँ नहीं रेंगती। हाँ, हिंदी को राष्ट्र-भाषा बनाने की आवाज़ उठाने के लिये कहिए, तो ये सबसे ज़्यादा चिल्लाने के लिये तैयार हैं, राष्ट्र-भाषा की योग्यता लाने के लिये कहिए, कलेजा तीन हाथ बैठ जायगा, जैसे कोई ग़मी हो गई हो। लिखते-लिखते लिखते भी हैं, तो पद्माकर और मतिराम की मध्या-धीरा में कौन ज़्यादा धीरा और विशेष रूप से पतिपरायणा मध्या है। किसी-किसी पत्रिका में तो चार सौ वर्ष के अज्ञात कवि के छंद को मुख-पृष्ठ पर छापकर 'यू० पी०-पन' की रक्षा की जाती है, और उसके संपादक इस 'यू० पी०-पन' के प्रचार करने में संकोच भी नहीं करते, जैसे उस चार सौ वर्ष की पुरानी यू० पी० को भविष्य के और चार सौ वर्ष तक क़ायम रखकर हिंदी का कोई बड़ा उपकार करना चाहते हों। सच्ची बात जो इस तथ्य के भीतर झलक जाती है, उसे छिपा रखना चाहते हैं। कुछ दिन हुए, महात्माजी ने यू० पी० के हिंदी लिखनेवालों की निंदा की थी; उन्हें शुद्ध भाषा लिखने का ज्ञान नहीं, ऐसा लांछन लगाया था। पर हमारे यू० पी०वालों को इससे शर्म नहीं आई। किसी पत्र ने आज तक उस पर कोई टीका-टिप्पणी नहीं की, और करें भी कैसे ? पहले तो, हिम्मत का सर्वथा अभाव; दूसरे, किस दृष्टि से महात्माजी ने ऐसा लिखा, उसका ज्ञान नहीं; तीसरे 'यू० पी०-पन' की रक्षा भी तो करनी है। अब इतनी बातों का असंभव उत्तर बेचारे दे भी कैसे सकते हैं; मँह में पुरानी परिपाटी के चने भरकर नई शहनाई का बजाना कुछ आसान तो है नहीं, बेचारे पुराने चने ही भरे हुए रह गए। अभी राष्ट्र-भाषा के प्रश्न पर निकला है—Why should we not choose Bengali, which is as easy to learn as Hindi, and much richer in literature.' इस वाक्य को हमारे विद्वान् साहित्यिक लोग ज़रा आँखें फाड़कर देखें, और इस प्रकार के साहित्यिक अपकर्ष के कारण की भी तलाश करें। क्या इन सब लांछनों के लगाने की जड़ में हमारे साहित्यिकों की ही अधम मनोवृत्ति नहीं, जिसके कारण साहित्य नवीन प्रकाश की ओर नहीं अग्रसर हो पाता, और जनता को साहित्य का नवीन, मार्जित, परिष्कृत और उज्ज्वल चित्र देखने को नहीं मिलता ?

× × ×

१२. 'स्टेट्समैन' की राजनीतिज्ञता

श्रीऐनीबेसेंट ने भारत को शीघ्र ही स्वराज्य देने के लिये कहा था। वह भारत में दीर्घकाल से रह रही हैं, और भारत की परिस्थिति से अच्छी तरह परिचित हैं। इधर जब गोल-मेज़-बैठक के लिये उनके पास निमंत्रण गया, तब उन्होंने अपने पूर्व विचारों के अनुकूल यह प्रश्न किया है कि भारत को स्वराज्य दिया जायगा या नहीं। यदि स्वराज्य से किसी अल्पांश के द्वारा ही भारत को संतुष्ट किया जा रहा हो, तो वह उस सभा में सम्मिलित नहीं होंगी। मालवीयजी ने स्पष्ट घोषणा कर दी है कि गोल-मेज़-बैठक में किसी भी भारतीय को सम्मिलित नहीं होना चाहिए। और-और नेता पहले ही पूर्ण स्वतंत्रता के संबंध में अनेकानेक उक्तियाँ कर चुके हैं। इससे भारत के अधिक जन-समूह की मनोवृत्ति का अच्छी तरह पता लग जाता है। महासमर के प्रारंभ से लेकर आज तक विलायत की सरकार ने बराबर भारतवासियों को धोखा दिया है, और अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति नहीं की। यह अँगरेज़ पत्रकार भी जानते हैं। पर उनके हृदय का ज़हर भारत-वासियों के प्रति कभी-कभी बड़ी तीव्रता से प्रकट हो जाता है, और जिस भेद-नीति के आश्रय से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारत में अँगरेज़ी सरकार टिकी हुई है, वह किसी-न-किसी तरह से निकल ही पड़ता है। गत ८ जून का 'स्टेट्समैन' श्रीमती ऐनीबेसेंट की उक्ति पर लिखता है—

"So long as democratic principles remain what they are now understood to be and the balance of power is ascertained by a counting of individuals, self government in India, whether it be called dominion status or anything else, means that the country will be governed by the majority and as circumstances are in India to-day that means it will be governed by the Hindus."

हिंदुओं की संख्या अधिक समझकर 'स्टेट्समैन' को व्यर्थ ही इतनी चिंता है। और, अगर इस तरह हिंदुस्थान की छाती पर रहकर वह यह राजनीतिज्ञता बघारता हो, तो उसे हिंदुओं की राजनीति का कुछ ज्ञान प्राप्त कर लेना था, और यह स्वराज्य हिंदुओं का स्वराज्य होगा, कहने के तात्पर्य में हिंदू-मुसलमानों की बढ़ती हुई मित्रता की ही उसने सूचना दी है। उसे मालूम हो जाना चाहिए कि हिंदू और मुसलमान अब दग़ाबाज़ों को ख़ूब समझ गए हैं। अब वे दिन गए, जब आप लोग फ़ाक़ड़ा उड़ाते थे; अब वे दिन आ रहे हैं, जब आप लोगों को भी बोरिया-बँधना समेटना होगा।

एक नई ख़बर

एक नई पुस्तक "हारमोनियम, तबला ऐंड बाँसुरी-मास्टर" प्रकाशित हुई है। इसमें बहुत-से नई-नई तर्ज़ों के गायनों को सरगमों व नंबरों द्वारा एक नए क़ायदे से समझाकर राग-रागिनी का वर्णन ख़ूब किया है। इसके ज़रिए बिना उस्ताद के हारमोनियम, तबला और बाँसुरी बजाना न आवे, तो मूल्य वापस देने की गारंटी है। पहला संस्करण ख़त्म हो चुका है। पब्लिक ने पुस्तक ख़ूब पसंद की है। मूल्य केवल १), डा० ।–)

पता—गर्ग ऐंड शर्मा कंपनी, हाथरस

आवश्यकता है

एक सहकारी संपादक की। वह हिंदी और संस्कृत का पर्याप्त ज्ञान रखता हो और भाषा-संशोधन और प्रूफ़रीडिंग का उसे अच्छा अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार ८०) तक।

अध्यक्ष सुधा, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेख-सूची

		पृष्ठ
१.	आत्मानुभूति (कविता)—[लेखक, स्वर्गीय श्रीकौशलेंद्रजी राठौर	... ६१३
२.	पहेली (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "वीरबाला"	... ... ६१३
३.	फटा पत्र (कहानी)—[लेखक, श्री० पं० गोविंदवल्लभ पंत	... ... ६१५
४.	निवेदन (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "गुलाब"	... . ६२७
५.	हिंदी में अतुकांत कविता—[लेखक, श्रीयुत पं० शांतिप्रिय द्विवेदी	... ६२८
६.	मोम का पत्थर (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत ऋषभचरण	... ... ६३३
७.	मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह(४)—[लेखक, साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ	६३८
८.	वारंट या निमंत्रण ? (व्यंग्य-चित्र)...	६५२
९.	समालोचना—[लेखक, पं० मीनाराम रंगा विशारद, बीकानेर	... ... ६५३

दरभंगा के प्रसिद्ध आम और लीचियों के फल और क़लम।

लँगड़ा सुर्ख़ फ़ी सैकड़ा ६) गुलाबी फजरी हरएक दाना आध सेर से डेढ़ सेर तक फ़ी सैकड़ा २०) भदैया लँगड़ा फ़ी सैकड़ा ७) महसूल इत्यादि अलग पेशगी अत्यावश्यक। हर प्रकार के आम और लीचियों तथा दूसरे फलों के पौधे या क़लमों के लिये सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

सुपरिंटेंडेंट स्टेट गार्डेन नंबर ७

दरभंगा [बिहार]

इंजन मार्का की असली रेलवे "रेग्यूलेटर वाच"

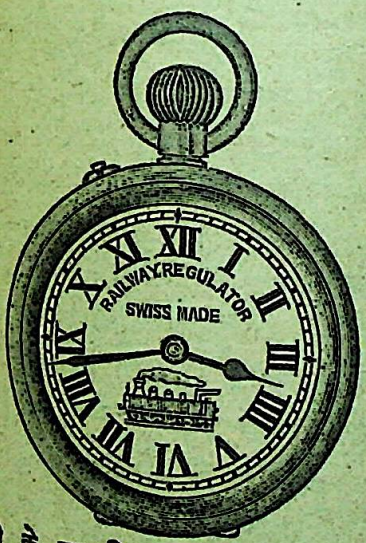

रेलवे के मुलाज़िम और जेंटिलमैन इसको इसलिये पसंद करते हैं कि यह बहुत ख़ूबसूरत, मज़बूत, पायदार, ठीक वक़्त देनेवाली और बिगड़ने का नाम न लेनेवाली घड़ी है। घड़ी, बक्स और ज़ंजीर-समेत ३।=) तीन रुपया छः आना। वेस्टर्न वाच एजेंसी, लुधियाना, पंजाब।

Western Watch Agency
Ludhiana (Punjab)

चूहा-घूस-नाशक दवाई

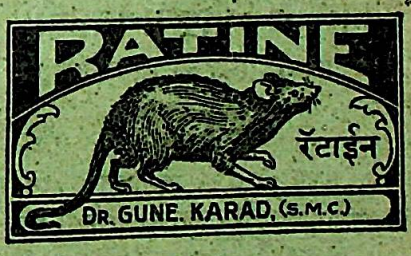

इससे चूहे और घूस मर जाते हैं और बाक़ी बचे हुए सब भाग जाते हैं। खेत, बग़ीचे और मकान में सर्वत्र इसका व्यवहार किया जा सकता है। मूल्य प्रति पुड़िया =), १२ का १), ४० का ३) १२ पैकेट से कम का वी० पी० नहीं भेजा जाता। पोस्टेज ४० पैकेट तक का ।) ११३

डॉ० गुने, पो० कराड, ज़ि० सतारा

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि आपने विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१०. इटली की सैनिक प्यास—[लेखक, श्रीयुत परिपूर्णानंद वर्मा ६६०
११. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "निराला" ६६४
१२. सहकारिता का सिद्धांत और इसकी व्यापकता—[लेखक, श्रीयुत युगलकिशोर-सिंह ६६५
१३. दुर्भाग्य ! (कहानी)—[लेखक, श्रीयुत "गुलाब" ६७४
१४. क्षय-रोगी की व्यवस्था—[लेखक, श्रीयुत वैद्यराज ६८१
१५. महारानी लक्ष्मीबाई (कविता)—[लेखक, श्रीयुत द्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र' ... ६८७
१६. विनय (कविता)—[लेखिका, कुमारी कौशल्यादेवी स्नातिका ६८७
१७. ज़ोर-आज़माई (व्यंग्य-चित्र) ... ६८८
१८. कुसुम-कुंज—[लेखकगण, श्रीयुत शांति-प्रसाद वर्मा, पं० रामनारायण मिश्र एम्० एस्-सी०, श्रीयुत रसिकरंजन रतूड़ी, एम्० ए०, श्रीयुत मुंशी ज़हूरबख़्श, श्रीबाबूलाल भार्गव "कीर्ति" बी० ए० और श्रीकेदारनाथ मिश्र 'प्रभात' विद्यालंकार ६८९

RAM LAL
DENTIST
27, AMINABAD PARK, LUCKNOW

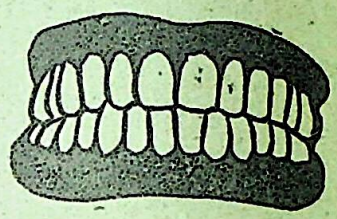

All Sorts of Dental Works
ARE EXECUTED PROMPTLY
—AT—
Reasonable Rates

हिंदुस्तानी एकेडेमी संयुक्त-प्रांत द्वारा प्रकाशित व्याख्यानमाला

(१) मध्यकालीन भारत की सामाजिक अवस्था

व्याख्यानदाता—अल्लामा अब्दुल्लाह यूसुफ़अली एम्० ए०, एल्-एल्० एम्०, सी० बी० ई०। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १०० पृष्ठों का मूल्य उर्दू अथवा हिंदी केवल १।)

(२) मध्यकालीन भारतीय संस्कृति

व्याख्यानदाता—रायबहादुर महामहोपाध्याय गौरी-शंकर-हीराचंद ओझा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के २३० पृष्ठों और २४ हाफ़टोन चित्रों-सहित का मूल्य केवल ३)

(३) कविरहस्य

व्याख्यानदाता—महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगास्वरूप भटनागर। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १२० पृष्ठों का मूल्य केवल १।)

मिलने का पता—जनरल सेक्रेटरी हिंदुस्तानी एकेडेमी यू० पी०, इलाहाबाद

५००) इनाम

महात्मा-प्रदत्त विषनाशक जड़ी। विश्वास तब तक नहीं होगा, जब तक इसके चमत्कार को नहीं देखे। न इस जड़ी को लगाना पड़ता, न छूना पड़ता, न सूँघना पड़ता है, सिर्फ़ इसे दिखाने से ही भयानक-से-भयानक बिच्छू, मधुमक्खी, हड्डा का विष तुरंत आराम हो जाता है। लाखों को आराम कीजिए, सैकड़ों वर्ष पड़ी रहे, पर गुण में ज़रा भी कमी नहीं आती, मूल्य १) बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम।

२। १०। २७ के 'लीडर' में श्रीयुत रामाज्ञा द्विवेदी "समीर" एम्० ए० लिखते हैं—इस आश्चर्यकारक जड़ी को मैंने बहुत गुणकारी पाया, एक जड़ी सैकड़ों आदमियों को आराम कर सकती है।

अखिलकिशोरराम
नं० ५८, कतरीसराय
गया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ

१९. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखक, श्रीयुत नाथूराम शुक्ल ६९६

२०. व्यंग्य-विनोद—[लेखक, श्रीयुत "अभ्र दूत" ७०२

२१. स्त्री-समाज—[लेखिका, कुमारी मनोरमा मेहता एम्० ए० ... ... ७०४

२२. समाज-सुधार—[लेखक, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ... ... ७०७

२३. पाक-शास्त्र—[लेखिका, श्रीमती कृष्णवती-देवी श्रीवास्तव... ... ... ७१०

२४. शिशु-पालन—[लेखक, वैद्यवर श्रीयुत अत्रिदेव गुप्त ७११

२५. गृह-चिकित्सा—[लेखिका, श्रीमती कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव ७१४

२६. पुस्तक-परीक्षा—[लेखकगण, श्रीयुत "निराला" और श्रीयुत अचलेश्वरनाथ व्यास ७१५

२७. साहित्य-सूची... ... ... ७२०

२८. संपादकीय ७२१

रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

अमृतगुटिका

"जेनस" नं० ३०२

अशक्त स्त्री-पुरुषों के लिये ताक़त की बढ़िया दवा

इसके सेवन से कमर का दर्द, पिंडलियों का दुखना, आँखों की कमज़ोरी, बदन की सुस्ती, काम-काज में दिल न लगना, नया या पुराना प्रमेह, बदन और इंद्रियों की शिथिलता, मुख, बग़ल या पेशाब के रास्ते से धातु स्खलित होना, शौच के समय धातु गिरना, मग़ज़ ख़ाली पड़ जाना, चेहरा शुष्क इत्यादि बहुत-से दर्द को दूर करके जवानी का मज़ा लूटने के लिये बदन मोटा और ज़ोरदार होता है। हरएक मौसम में उपयोग हो सकता है। दाम ३२ टिकियों की एक ट्यूब का २) रु० डाक-ख़र्च अलग। सूचीपत्र मुफ़्त मँगा देखिए। हर जगह दवाफ़रोशों के यहाँ भी मिलेगी।

पता—जे० एन्० शेठना

मु० पो० नडीआद (गुजरात)

पं० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय

लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इसको अलग-अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है। रक्त साफ़ होता है तथा उसकी चाल अबाध्य होता है। खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ २-३ गोलियाँ लीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का ।) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का १॥), १२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥-)

" " ५=)

मिलने का पता—

श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

दवाइयों में ख़र्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिये "अनुभूत योगमाला" पाक्षिक पत्रिका का नमूना मुफ़्त मँगाकर देखिए।

पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला

ऑफ़िस, बरालोकपुर, इटावा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्र-सूची

(क) रंगीन — पृष्ठ

१. उषा-स्वप्न—[चित्रकार, श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खातू ६१३

२. सुख-तरंग—[चित्रकार, श्रीयुत पी० एस्० मुलगाँवकर ६५३

३. मज़ार—[चित्रकार, श्रीकामिल लखनवी ७०६

(ख) व्यंग्य

१. वारंट या निमंत्रण ? ६५२

२. ज़ोर-आज़माई... ... ... ६८८

(ग) सादे

१. प्रोफ़ेसर ए० एम्० ला ६६६

२. सठिया जानेवाली जर्मन घड़ी ... ६६८

३. आप ही बुझ जानेवाला लैंप ... ६६८

४. मंगल-ग्रह के प्राणी (एच्० जी० वेल्स की कल्पना) ६६६

५. मंगल-ग्रह के पौधे (एच्० जी० वेल्स की कल्पना) ६६६

६. मंगल-ग्रह ७००

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र

जगत्-विख्यात

Regis-tered ☞ 'कौनटैक्स' रजि-स्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता, जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं वे 'कौनटैक्स' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १॥) रु० डाक-ख़र्च ।=)

पता—आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

शक्ति का ख़ज़ाना यानी पृथ्वी पर का अमृत

मदनमंजरी

यह दिव्य गोलियाँ दस्त साफ़ लाती हैं, वीर्य-विकार-संबंधी तमाम शिकायतें नष्ट करती हैं और मानसिक व शारीरिक प्रत्येक प्रकार की कमज़ोरी को दूर करके नया जीवन देती हैं। क़ी० गोली ४० की डिब्बी १ का १)

बंबई ब्रांचः— ३६३ कालवा देवी — राजवैद्य नारायणजी-केशवजी। हेड-ऑफ़िस जामनगर, (काठियावाड़) लखनऊ एजेंटः—निगम मेडिकल हॉल

में यदि आज तक आपने अपना विज्ञापन नहीं छपाया है, तो अब ट्रायल ऑर्डर के तौर पर तीन मास तक छपाकर देख लीजिए कि कितना अधिक लाभ होता है। आप अवश्य संतुष्ट होंगे।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

१४ सोने और चाँदी के तमग़े इनाम में मिला हुआ—

डायमंड सोप कंपनी, बंबई नं० ४.

(१) ख़ुशबूदार साबुन—मनोहर ख़स, गुलाब वग़ैरह।

(२) दवाइयाना साबुन—खुजली वग़ैरह के वास्ते कारबोलिक मिला हुआ।

(३) कपड़े धोने का साबुन—डायमंड वाशर का डबल बट्टा।

(४) कपड़े रँगने का साबुन—गुलाबी, पीला, लाल वग़ैरह ११ पक्का रंग में बना हुआ।

हमारी कंपनी का प्रसिद्ध ख़ालिस स्वदेशी साबुन इस्तेमाल करके खातरी कीजिए और परदेशी वस्तु का इस्तेमाल छोड़ स्वदेशी माल का गौरव बढ़ाइए। यह साबुन हरएक जगह दूकान पर मिल सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तूलिका

एक-से-एक बढ़िया कहानियों का सुंदर संग्रह

लेखक—

हिंदी के उदीयमान कहानी-ले० श्रीविनोदशंकर व्यास

अठारह कहानियों के इस संग्रह में कुछ ऐसी जान डालनेवाली शक्ति है कि पढ़नेवालों के दिल और दिमाग़ दोनों पर असर हो जाता है। सच तो यह है कि व्यासजी दिल फड़का देनेवाली कहानियाँ लिखते हैं। तूलिका आप ही की प्रतिभा-पूर्ण कहानियों का संग्रह है। एक ख़ास बात इन कहानियों में यह है कि लेखक सीपी में समुद्र भर देता है।

नौ सुंदर चित्रों से समलंकृत

मूल्य १)
सुंदर जिल्द १॥)

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ

अकिंचन

विलंब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

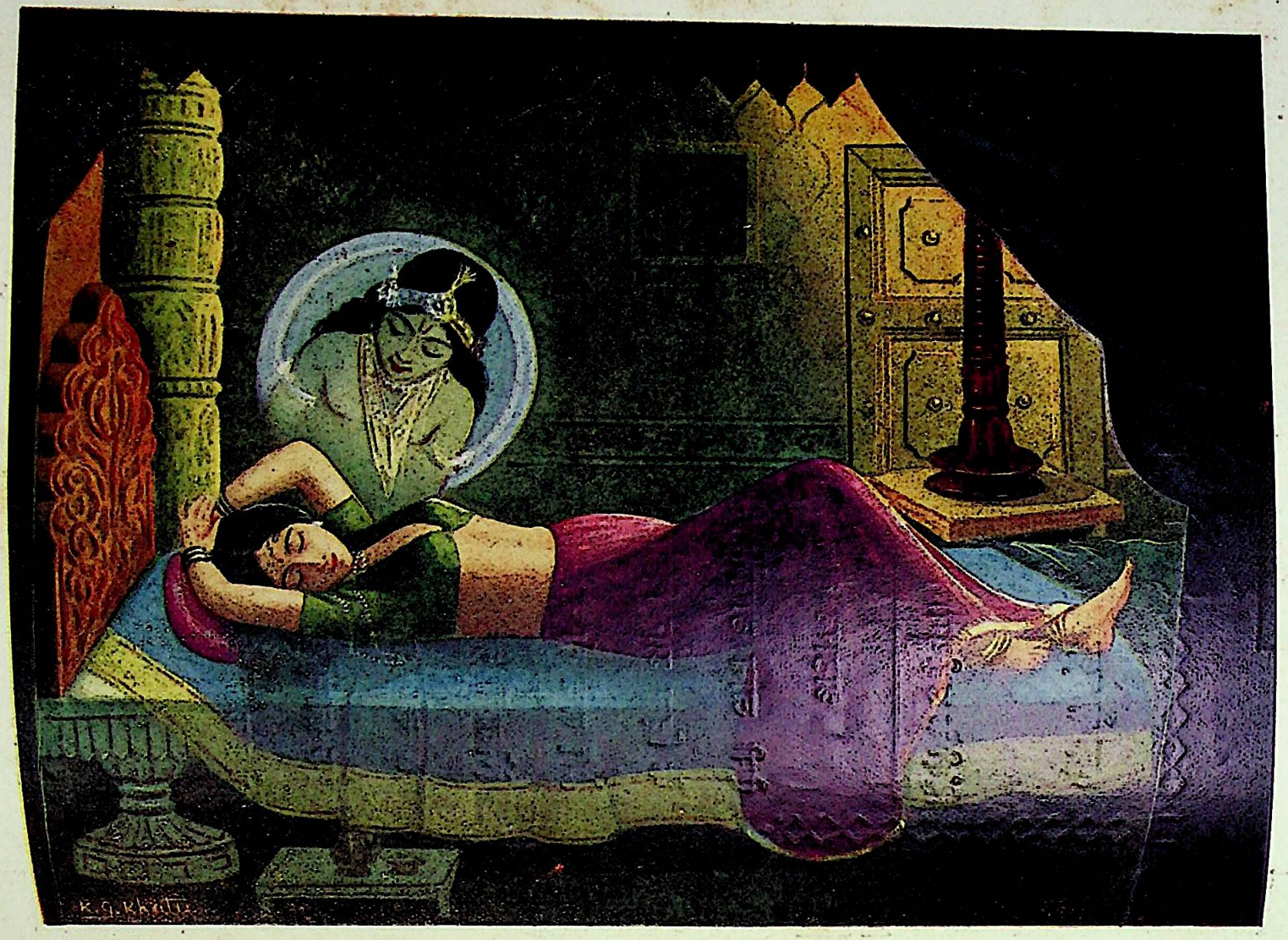

उषा-स्वप्न

[चित्रकार—श्रीयुत काशिनाथ-गणेश खात्]

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष ३ खंड २ | आषाढ़, ३०७ तुलसी-संवत् (१९८७ वि०)— जुलाई, १९३० | संख्या ६ पूर्ण संख्या ३६

आत्मानुभूति

[स्वर्गीय श्रीकौशलेंद्रजी राठौर]

यद्यपि सुमन में ही सदन सुगंध का है,
तो भी है ठहरती न वह फूल-गन में;
होती है उपज धूम-धार की अनल ही में,
रुकती नहीं है किंतु वह हुताशन में।
'कौशलेंद्र' वाणी का निलय मौन ही है, किंतु
वह भी न टिकती है अपने भवन में;
कैसे तब रह सकते हैं हम जगती में
और कैसे रुक सकती है साँस तन में।

पहेली

[श्रीयुत "वीरात्मा"]

रूप-राशि! तेरी ज्वाला की
लपटें क्यों मादक हैं?
उनमें जलकर अमर शक्ति
जीवन की मिलती; सच है?
सुलझ न पाई कभी पहेली
मेरे इस जीवन की—
मरुस्थली में सुरभित 'तेरे'
सुंदर नंदन-वन की।
आह, वह कंचन-सी कमनीय,
तोलती किन हीरों का मोल?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फटा पत्र

[श्री० पं० गोविंदवल्लभ पंत]

जापति और मास्टरों के घंटों में इतनी शरारत नहीं करता था, जितनी पंडित आनंदरत्न साहित्य-शास्त्री-जी के घंटे में। वे जब लड़कों की कापियाँ शुद्ध करते थे, तब लड़के उनकी मेज को चारो ओर से घेर लेते थे। वे जब सिर कुछ नीचा कर अपनी क़लम चलाते थे, तब उस समय प्रजापति उनके सिर के ऊपर अपने दोनो हाथों से भाँति-भाँति की शकलें बनाया करता था। लड़के दाँतों को मिलाकर हँसी रोक लेते थे; जो नहीं रोक सकता था, वही पिटता था। प्रजापति कभी-कभी उनकी टोपी से बाहर आई हुई चोटी के सिरे को भी खींच लेता था। उस दिन वह अपना क्रोध नहीं सँभाल सकते थे, और जो सामने पड़ा, उसी पर डंडा जमा देते थे। उस समय प्रजापति सबसे सीधे लड़के का मुँह लेकर हिंदी की किताब खोलता था, और कोई कठिन शब्द या वाक्य खोजकर पंडितजी से उसका अर्थ पूछता था। पंडितजी खिन्न होकर कहते थे—"जाओ, जाओ, इस समय अपनी जगह पर बैठो, पढ़ते समय बताऊँगा। ख़बरदार! कोई अपनी जगह से उठा, तो फिर वही डंडा। एक-एक कर मैं जिसका नाम पुकारूँ, वही आवे।" उस दिन फिर यही क्रम चलता था।

प्रजापति दरजे की अंतिम पंक्ति में बैठता था। कभी जब कोई मास्टर उसके आगे के विद्यार्थी से प्रश्न पूछता था, तब प्रजापति बड़ी सफ़ाई से अपने डेस्क के नीचे से पैर बढ़ाकर उसका स्टूल पीछे खींच लेता था। क्या मजाल कि ज़रा भी शब्द हो जाय। बैठते समय वह विद्यार्थी गिर पड़ता और सारा दरजा एक साथ हँस उठता था। मास्टर साहब बहुत गंभीर हुए, तो हँसी को खाँसी में लीन कर लेते थे, नहीं तो लड़कों के साथ हँसकर कहते—"जगह देखकर बैठो जी, क्या हो गया तुम्हें?"

छुट्टी होने से पहले कभी वह किसी का कोट डस्टर से स्टूल पर बाँध देता था। कापी का पेज इस तरकीब से फाड़ता था कि उसमें एक लंबी धारी निकल आती थी। आलपीन की मदद से उसे किसी लड़के के वस्त्र में जड़कर पूँछ-सी बना देता था या कभी-कभी काग़ज पर "भाड़े के लिये" अथवा "विक्रयार्थ" लिखकर गोंद से लड़कों की पीठ पर चिपका देता था। छुट्टी होने पर वह लड़का आगे-आगे जाता था, और उसके पीछे-पीछे तालियाँ पीटते हुए, शोर मचाते हुए और लड़कों का दल।

वह बड़े-बड़े मास्टरों के आने पर भी स्कूल से डेढ़-दो इंच ऊँचा उठता था। पंडित आनंदरत्नजी का आना-जाना उसके लिये एक सामान्य बात थी, वह उस ओर दृष्टिपात भी नहीं करता था।

समस्त दरजे के लड़के उससे डरते थे। जो उसकी चुगली खाता, स्कूल के बाद उसी की ख़बर ली जाती। उसका तमाम होम-टास्क उसके दरजे के लड़कों को ही करना पड़ता था। जब मास्टर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दरजे में उससे प्रश्न करता था, तब सारा दरजा काना-फूसी कर उसे उत्तर बताता था। उसके दाहनी और बाईं ओर जो लड़के बैठते थे, उनका तो यह विशेष कर्तव्य ही था।

प्रजापति हर घंटे में बाहर जाने की छुट्टी माँगता था। शास्त्रीजी के घंटे में तो उसे बिना पूछे ही कहीं चले जाने का लाइसेंस मिला हुआ था। इस छुट्टी का उपयोग वह हेडमास्टर साहब की स्थिति से अवगत होने, दफ़्तर की घड़ी में समय देखने तथा चौकीदार के झोपड़े की ओट में जाकर सिगरेट पीने में करता था। सिगरेट पीकर वह लौंग चबाता और उसकी दुर्गंधि दबाकर दरजे में चला आता था। इसी अवसर में छिपकर वह कभी-कभी बाज़ार तक हो आता था।

हेडमास्टर का कौन घंटा कहाँ है, यह उसे खूब याद था। नया समय-विभाग बनने पर वह सबसे पहले यही देखता था कि हेडमास्टर साहब के कौन-कौन-से घंटे ख़ाली हैं। उन घंटों में वह बड़ा सावधान रहता था; क्योंकि उन घंटों में हेडमास्टर साहब को, बिल्ली के पैर लेकर, खिड़कियों से दरजों में झाँकने की भी आदत थी।

प्रजापति के पिता नगर के सुप्रसिद्ध व्यापारी थे। रुपया-पैसा पर्याप्त था। लड़के को इंट्रेंस पास कराने की उन्हें ज़रा भी चिंता न थी। प्रजापति को साल के अंत में किसी प्रकार प्रोमोशन मिल ही जाता था। स्कूल में कोई भी मास्टर ऐसा न था, जो प्रजापति का प्राइवेट ट्यूटर न रह चुका हो।

पंडित आनंदरत्न शास्त्रीजी किसी को गुरु-भक्ति का उपदेश देकर, किसी को परीक्षा की असफलता का भय दिखाकर, किसी को धमकाकर और किसी को अपने डंडे से क़ाबू में किए रहते थे; पर प्रजापति पर उनका कोई भी मंत्र नहीं चलता था। वह उनके धमकाने पर हँस देता था, उनके मारते वक़्त बेत पकड़ लेता था। पंडितजी गंभीर होकर कहने लगते—"तुम्हें कुछ भी तो शर्म नहीं प्रजापति! तुम्हारे पिता के पास बहुत धन है। कुछ पढ़ लेते, तो व्यर्थ नहीं जाता। नहीं पढ़ना है, तो न सही। दूसरे सहपाठियों के सामने क्यों बुरा नमूना रखते हो? क्यों उनका समय नष्ट करते हो?" पर यह उपदेश गरम तवे के ऊपर का जल-बिंदु था, जो उसमें गिरते ही नष्ट हो जाता था। यह कमल-पत्र के ऊपर का जल-बिंदु था, जिसका उस पर गिरकर भी कुछ असर ही नहीं होता था।

पंडित आनंदरत्नजी प्रजापति के ऊपर अपना प्रभाव खो बैठे थे; इसके कई कारण थे। उन्हें प्रजापति के घर से पेट-भर निमंत्रण मिलते थे, मुट्ठी-भर दक्षिणा मिलती थी, यह एक कारण था। शास्त्रीजी को खैनी खाने की आदत थी। स्कूल में जब कभी उनका तंबाकू या चूना या दोनो बीत जाते थे, तब प्रजापति हेडमास्टर की नज़र बचा-कर चुटकियों में वह सब कुछ बाज़ार जाकर ले आता था, यह दूसरा कारण था।

मिस्टर सी० पी० सनलाइट साहब उस मिडिल स्कूल के हेडमास्टर थे। चमड़ा गेहुँए रंग का। सन् १९१२ में इंट्रेंस में फ़ेल हुए, फिर पढ़ा नहीं; पर प्राइवेट परीक्षा पास करने की आशा कर उसी स्कूल में असिस्टेंट मास्टर हो गए। कुछ महीने बाद विवाह किया, और कुछ वर्ष बाद अपने गुण को बदौलत हेडमास्टरी का भार सिर पर रखने को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिल गया। अँगरेज़ पादरियों के साथ संबंध होने के कारण खूब अच्छी अँगरेज़ी लिखते और बोलते थे। वेश और भोजन भी वैसा ही था। तवे पर सिंकी रोटियाँ और दाल उनके पिताजी ही छोड़ चुके थे।

वह सिर की माँग, पतलून की क्रीच और बूट की पालिश पर विशेष ध्यान रखते थे। कोट के रंग की टाई पहनते थे। उनके चश्मे का नंबर शून्य था, और वह अपने सौभाग्य की संख्या सत्रह बताते थे।

उनकी बैठक में बैठने के लिये कुर्सियाँ थीं। बैठक के सामने की दीवाल में राफेल की 'शिशु और माता' की अच्छी बड़ी तसवीर लटकती थी। यह उन्हें स्वदेश लौटते समय एक पादरी साहब उपहार दे गए थे। इसके अतिरिक्त और भी कई छोटे-बड़े आकृति और प्रकृति के चित्र उनके यहाँ थे। मेज़ के पास रिवॉल्विंग बुकशेल्फ़ था। उसमें बाइबिल, शेक्सपियर, मिल्टन, स्काट के अतिरिक्त शिक्षा-शास्त्र और स्कूल-प्रबंध पर भी अनेक पुस्तकें थीं। भोजन और शयन के कमरे भी अलग-अलग सुसज्जित थे।

मिस्टर सनलाइट साहब पढ़ाने में प्रवीण, प्रबंध में दक्ष और शासन में चतुर थे। स्कूल ठीक समय पर आते-जाते थे, और हिसाब-किताब अप-टू-डेट रखते थे।

स्कूल के सात घंटों में वह पहले चार घंटे पढ़ाते थे। एक घंटा आफ़िस का काम देखते थे, एक घंटा स्कूल के निरीक्षण का था, और एक घंटा उनके अवकाश का था। आफ़िस में उन्हें एक क्लर्क भी मिला हुआ था। उनके अंतिम तीन घंटे प्रायः दफ़्तर में ही बीतते थे। उस समय वह हिसाब-किताब की जाँच करते थे, टाइप-राइटर खटखटाकर स्कूल का पत्र-व्यवहार करते थे। निजी पत्र भी वह वहीं लिखते थे, और उनका दैनिक पत्र भी वहीं खुलता था।

सालाना परीक्षा निकट थी। बीच में एक सोमवार था, दूसरे सोमवार से आरंभ थी।

वह सनीचर का दिन था। प्रजापति के दरजे में शास्त्रीजी थे। स्कूल का अंतिम घंटा था। शास्त्रीजी उसमें हिंदी पढ़ाते थे। आज श्रुत-लेख की बारी थी। शास्त्रीजी ने उसे लिखाकर एक बार फिर दुहराया। इसके बाद तमाम लड़के कापियाँ लेकर भड़-भड़ करते हुए उठे, और उनके सामने मेज़ पर उनका ढेर लगा, उन्हें घेरकर खड़े हो गए। प्रजापति के कुछ वाक्य छूट गए थे। उसने अपने पास के एक लड़के की कापी रोक ली, और उसमें से नक़ल करने लगा। उसने नक़ल कर दोनों कापियाँ उठाईं, और शास्त्रीजी की मेज़ की ओर चला। वहाँ पहुँचकर उसने अपनी दृष्टि शास्त्रीजी की ओर स्थिर की। कापियों के ढेर के बीचोबीच अपना हाथ डालकर कुछ कापियाँ ऊपर को उठाईं, और चुपचाप बीच में वे दोनों कापियाँ खिसका दीं।

इसके बाद वह सबसे अगली पंक्ति के बीच के डेस्क पर बैठ गया, और जेब से विलायती मिठाई निकाल-निकालकर खाने लगा। पंडितजी के चारों ओर लड़कों का परदा था। हेडमास्टर को मैनेजर साहब के बँगले की ओर जाते हुए उसने देख लिया था।

कई तरह की गोलियाँ, जो मुँह में घुलते-घुलते

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रंग बदलती थीं, औरेंज-लेमन-ड्राप्स आदि कई प्रकार की मिठाइयों से वह जेब भर लाता था। वह बीच-बीच में उन्हें खाता और खिलाता रहता था। वह एक तरह की पिपरमिंट की टिकियाँ भी लाता था। उनके बीच में अँगरेज़ी-वर्णमाला का एक-एक अक्षर भी अंकित होता था। शास्त्रीजी के सामने वह बेधड़क उन्हें मुँह में डालता जाता था। वह जब उसे खाने से मना करते थे, तो उनसे कहता था—"पंडितजी, यह विलायती मिठाई है, जलेबी नहीं है, क्या आप देखते नहीं, इसके बीच में अक्षर छपे हैं। यह खाते वक्त, पढ़ी जाती है, और पढ़ते समय खाई जाती है।" वह एक टिकिया उनके सामने रखकर कहता—"लीजिए, आप भी इसे पढ़िए और चखिए। इसमें है क्या, चीनी और पिपरमिंट। इससे धर्म न जायगा। यह गले को साफ़ करती है कि पढ़ने में उच्चारण स्पष्ट हो। इससे साँस और हवा सुगंधित होती है कि आस-पास के लड़कों का भी मन पढ़ने में लगा रहे।"

वह मिठाई खाते-खाते इधर-उधर मित्रों की ओर भी फेंकने लगा। वे उसे हाथों से चूम-चूमकर मुख में रखने लगे। कई लड़कों का ध्यान उसकी ओर बँट गया। वे पंडितजी की ओर से आँखें फेर-फेरकर उससे मिठाई माँगने लगे।

लोचन उससे मिठाई माँगता-माँगता थक गया था, पर उसने उसे एक टुकड़ा भी नहीं दिया था। एक बार "ले" कहकर उसने उसकी ओर मिठाई फेंकने की कृति प्रकट की थी। लेकिन उसके हाथ पसारने पर झट दूसरे की ओर फेंक दी। इसी प्रकार एक बार और उसने लोचन को ठगा। फिर लोचन ने उसकी ओर नहीं देखा, और पंडितजी की तरफ़ अटल ध्यान लगाया।

प्रजापति ने कई बार उसे मिठाई का प्रलोभन दिया, पर लोचन ने न उसकी ओर अपनी दृष्टि की, न हाथ ही बढ़ाया। प्रजापति ने अंतिम बार लोचन से कहा—"विद्या की शपथ, इस बार ज़रूर दूँगा। ले लोचन! सालाना परीक्षा में मेरे आस-पास तेरी सीट हुई, तो बतावेगा न?"

लोचन ने मानो सुना ही नहीं। उसकी कापी शुद्ध हो चुकी थी, उसमें एक भी ग़लती नहीं मिली थी। प्रजापति ने फिर कहा—"ले, लेता क्यों नहीं? इस बार धोखा दूँ, तो कभी विश्वास ही न करना।"

लोचन ने अपने दोनों कानों में अपने दोनों हाथों की तर्जनियाँ कोच लीं। उसके प्रजापति की ओर के हाथ में उसकी कापी भी थी। प्रजापति को यह अवहेलना अच्छी न लगी। उसने "अरे ले" कहकर एक मिठाई की गोली खींचकर उसके हाथ में मारी।

लोचन के उसी हाथ में अँगूठे के पास हॉकी की स्टिक लगी थी। वह घाव अभी बिल्कुल पूरा नहीं हुआ था, पर लोचन ने पट्टी खोल दी थी। उसी घाव पर प्रजापति का निशाना लगा।

लोचन ने चीत्कार छोड़ी—"दैया रे दैया!" उसके हाथ से उसकी कापी मेज़ की दिशा में गिर पड़ी। उसने कान के पास हाथ को कई बार झटककर दूसरे हाथ से उसकी कलाई दबाई।

उसके हाथ से जब कापी छूट रही थी, उसी समय दरजे का मॉनीटर पंडितजी के लिखने के लिये दूसरी दावात मेज़ पर रख रहा था। कापी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी के हाथ पर गिरी और उसके हाथ की दावात उस खुले हुए हाज़िरी के रजिस्टर पर पड़ी, जिसका टोटल जोड़ते हुए शास्त्रीजी ने दरजे में प्रवेश किया था। उनका टोटल मिला नहीं था। इसी से वह रजिस्टर उन्होंने खुला हुआ ही मेज़ के एक ओर रख दिया था।

मॉनीटर ने रजिस्टर को बचाने के मतलब से उठाया। दावात कुर्सी की ओर बल खाती हुई शास्त्रीजी की गोद में गिर पड़ी। दावात से बिखरी हुई रोशनाई ने शास्त्रीजी के रजिस्टर में भी छाया-चित्र बनाया, और उनके सफ़ेद कोट, कुरते और धोती में भी बेल-बूटे काढ़े।

सबसे पहले उन्हें रजिस्टर की चिंता करनी पड़ी। क्योंकि महीने के अंत में उन्हें हेडमास्टर साहब की ओर से हर काट-कूट पर धमकियाँ और हर दाग़-धब्बे पर फटकारें मिलती थीं। उन्होंने उसी क्षण रजिस्टर पर पड़ी रोशनाई के ऊपर खड़िया की बत्ती फेर दी, और उसे बंद कर दिया। फिर क्रुद्ध हो डंडा हाथ में लेकर घुमाया, और सबसे बैठ जाने को कहा। सब लड़के कूदते और शोर मचाते हुए अपनी-अपनी जगह चले गए। प्रजापति सबसे पहले पहुँच चुका था।

इसके बाद शास्त्रीजी ने बोर्ड की खूँटी पर से झाड़न निकाला। उससे मेज़ पर गिरी रोशनाई पोछ डाली। कपड़ों पर के धब्बे सूख चुके थे। मॉनीटर लोचन के पास खड़ा उसे धीरज दे रहा था। उसने अपने रूमाल से उसके आँसू पोछ डाले थे। घाव केवल दुख गया था, उससे रक्त नहीं निकला था।

अब शास्त्रीजी ने मेज़ पर डंडा पटककर कहा—"बोलो, यह शरारत किसने की?"

सब लड़कों से पहले बड़ी आवाज़ में प्रजापति ने कहा—"हम नहीं जानते।"

फिर सब लड़कों ने उसी का अनुकरण किया। लोचन भी प्रजापति के डर से इस प्रकार चुप खड़ा था, मानो उत्पाती लड़के को जानता ही न था।

शास्त्रीजी ने फिर पूछा—"मॉनीटर, तुम बताओ, इसका हाथ किसने दुखाया, दावात किसने गिराई?"

मॉनीटर ने कुछ लज्जित होकर कहा—"पंडितजी, दावात तो गिरी मेरे हाथ से है, पर उसे मैंने नहीं गिराया। किसी ने मेरे हाथ के ऊपर कापी फेंक दी, जिससे वह रजिस्टर पर गिर पड़ी।"

शास्त्रीजी को फिर रजिस्टर की याद आई, और फिर उन्हें सनलाइट साहब की धमकियों का ख़याल हुआ। उन्होंने ज्वालामय होकर कहा—"अच्छा, नहीं बताओगे तुम? कापी किसने फेंकी?"

प्रजापति मन-ही-मन कह रहा था—"वाह, क्या निशाना मारा है। लोचन का हाथ, फिर उस हाथ की कापी, दावात, रजिस्टर, मेज़ और पंडितजी के कपड़े।" वह इस गड़बड़ में अनुपम आनंद ले रहा था, और ईश्वर से बार-बार यही मनाता था कि हे परमेश्वर! हेडमास्टर साहब आज अब स्कूल में न आवें। उसके हिसाब से स्कूल की आख़िरी घंटी अब तक बज जानी चाहिए थी, पर उसे समय बड़ा लंबा मालूम देने लगा।

लोचन ने कहा—"पंडितजी, कापी मेरे हाथ से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गिरी। उसे मैं अपने चोट लगे हुए हाथ में थाँभे था। हाथ के दुखने पर कापी अपने आप उससे गिर पड़ी। मेरा उस पर बस ही नहीं रहा।"

हेडमास्टर साहब बड़ी देर हुई तभी लौटकर आ गए थे, वह आकर कुर्सी पर बैठे-बैठे "स्टेट्स-मैन" के पत्रों पर ऊँघ रहे थे। उनका क्लर्क इंस्पेक्टर साहब की किसी पूछ-ताँछ का उत्तर मशीन पर खटखटा रहा था।

"दैया रे! दैया!" की चीत्कार सुनकर हेडमास्टर साहब का दिवा-स्वप्न भंग हुआ। वह अख़बार दूर रखकर उठे, और बेत हाथ में लिया।

दरजे में अपना पाठ न सुनानेवाले लड़के को हेडमास्टर साहब इतना बुरा न समझते थे, जितना उसमें अनियम और अशांति फैलानेवाले को गिनते थे। ऐसे अवसर पर वह उसे ख़ूब पीटने में ज़रा भी संकोच न करते थे। फिर भी इसकी सीमा थी। प्रजापति उस सीमा के बाहर था। प्रजापति के ऊपर वह सोच-समझकर ही बेत छोड़ते थे, उसकी आई हुई शिकायतों को यों ही टाल जाते थे।

उन्होंने कुछ देर तक आफ़िस से ही शास्त्रीजी के दरजे की घटना सुनी। जब उन्होंने मामले को गंभीर और शास्त्रीजी को दोषी का पता लगाने में अक्षम समझा, तब वह उस दरजे की ओर चले। प्रवेश-द्वार पर पहुँचते ही उन्होंने उसमें लगातार जल्दी-जल्दी बेत की चोटें मारकर तीव्र स्वर में कहा—"ऑर्डर, ऑर्डर, ख़ामोश, क्या मामला है?"

सब लड़के स्तब्ध हो गए। उन्होंने दरजे में प्रवेश किया, और लड़कों ने चुपचाप उठकर उनका सम्मान किया। मॉनीटर अपनी जगह पर बैठ चुका था, और लोचन शांत होकर अपनी जगह जाने लगा था।

हेडमास्टर साहब ने कहा—"कहाँ जाते हो? यहीं पर खड़े रहो।"

लोचन वहीं खड़ा रह गया। हेडमास्टर साहब शास्त्रीजी के कपड़ों पर होली खिली हुई देखकर मन-ही-मन हँसने लगे। उन्होंने प्रजापति की ओर देखा, और उसे अपराध से अपरिचित, गंभीर भाव से पुस्तक के पत्र उलटते हुए पाया। वे उसे इस शरारत में शामिल न समझ, कुछ कठोर होकर अपराधी के अनुसंधान में लगे। कापी लोचन के हाथ से गिरी, यहाँ तक उन्होंने ऑफ़िस से सुना था। उन्होंने लोचन को ही अपराधी समझा, और गरजकर उससे पूछा—"तुमने क्यों मॉनीटर के हाथ पर कापी गिराई?"

लोचन—मैंने जान-बूझकर कापी नहीं गिराई। किसी ने मेरे चोट लगे हुए हाथ को दुखा दिया, इसी से कापी गिर गई।

हेडमास्टर साहब अब ज़रा शंकित हुए। वह अभी तक प्रजापति को उस षड्यंत्र में शामिल न देखकर आश्चर्य कर रहे थे। उस दरजे की अशांति और गड़बड़ के साथ प्रजापति का नाम जुड़ा हुआ था, हेडमास्टर साहब इस बात को ख़ूब जानते थे। वह सारी शरारत की जड़ पर अब पहुँचे, और निश्चय करने लगे, लोचन का हाथ दुखाने में ज़रूर प्रजापति ही का हाथ है। इस कारण उन्होंने कुछ नरम पड़कर कहा—"तुम्हारा हाथ किसने दुखाया?"

प्रजापति ने तीक्ष्ण दृष्टि से लोचन की ओर देखा। उसने उसकी सारी त्रुटि पूरी कर देने का

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नीरव संदेश पहुँचाया। लोचन ने हेडमास्टर साहब को उत्तर देना आरंभ किया, नहीं, वह उससे भी पहले रुक गया था।

हेडमास्टर साहब को अब पूरा निश्चय हो गया कि ज़रूर प्रजापति ही अपराधी है। उसे सज़ा देने में हेडमास्टर साहब डरते थे। कदाचित् यह उसके पिता की इकट्ठी की हुई संपत्ति का प्रभाव हो।

हेडमास्टर साहब ने साधारण रीति से फिर पूछा—"डरते क्यों हो लोचन! कहो, तुम्हारा हाथ किसने दुखाया?"

लोचन ने हाथ की पीड़ा का फिर अनुभव कर कहा—"मुझे नहीं मालूम, मैंने नहीं देखा। मेरा ध्यान पंडितजी की ओर था।"

हेडमास्टर साहब ने सारे दरजे से पूछा, किसी ने नहीं बताया। वे यही चाहते भी थे कि प्रजापति अपराधी न प्रमाणित हो। अंत में उन्होंने प्रजापति से हँसकर कहा—"क्यों प्रजापति, तुमने इसका हाथ दुखाया?"

प्रजापति उनकी दुर्बलता को पकड़कर शांत-भाव से उठा, और बोला—"नहीं साहब, मैं तो बड़ी देर से पुस्तक देख रहा हूँ।"

अंत में हेडमास्टर साहब ने सारा दोष शास्त्रीजी के सिर पर रखते हुए कहा—"शास्त्रीजी, मैं कई बार आपसे कह चुका हूँ, लड़कों को इस तरह अपनी मेज़ के चारो ओर खड़ाकर कापियाँ शुद्ध न किया कीजिए। इस तरह आधा दरजा काम करता है, और आधा आपकी दृष्टि की ओट में उत्पातों में नियुक्त होता है। भविष्य में हरएक की सीटों पर जाकर ही कापियाँ शुद्ध की जावें।"

शास्त्रीजी बोले—"मुझे आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। मुझे हरएक की सीट पर जाने में कुछ भी आलस्य नहीं। पर एक निवेदन है, विद्यार्थी अपनी ग़लती के सुधार से भी सीखता है, और दूसरे की भूल देखकर भी ठोकर से बचता है। सब लड़कों को मेज़ के चारो ओर इकट्ठा करने से मेरा मतलब है, वे सब अपनी-अपनी भूलों को देखने के साथ-ही-साथ आपस में एक दूसरे के दोषों पर भी ध्यान देकर अपना सुधार करें।"

स्कूल की अंतिम घंटी बजी। और दिन सब लड़के सबक़ चाहे पूरा हो या न हो, घंटी बजते ही शास्त्रीजी से पहले उठकर ऊधम मचाते हुए भाग जाते थे। पर आज हेडमास्टर साहब और उनके डंडे के कारण सब मूक और स्थिर थे। हेडमास्टर साहब ने सब लड़कों को जाने का संकेत दिया। वे बड़े विनय, शील और धीरता के साथ अपना-अपना बस्ता बग़ल में दाबकर विदा हुए।

सब लड़कों के चले जाने के बाद उन्होंने शास्त्रीजी से कहा—"आपकी बात में तत्त्व ज़रूर है, पर हमें करना तो वही है, जो इंस्पेक्टर साहब को पसंद है। उन्होंने अपनी पिछली रिपोर्ट में भी इस प्रथा को बहुत निकम्मी और गंदी बतलाया है। शिक्षा की नवीन प्रणाली भी इसे अनुमोदित नहीं करती।"

शास्त्रीजी ने निस्तेज होकर कहा—"जैसी आप की आज्ञा हो।"

हेडमास्टर साहब आफ़िस में से अपना टोप और चश्मा पहनकर घर को बिदा हुए। शास्त्रीजी ने रजिस्टर उठाकर आफ़िस में रख दिया, और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी स्कूली पाठ्य पुस्तकों का बंडल सँभाल, कपड़ों पर के धब्बों को किसी तरह छिपाकर घर चले। यह पुस्तकों का भार हेडमास्टर को छोड़कर और प्रायः सभी मास्टरों को, हर स्कूल के दिन, घर से स्कूल और स्कूल से घर तक, ढोना पड़ता था। यह इस बात को साक्षी थी कि वे दरजे में पाठ पढ़ाने से पहले घर से स्वयं उसका अनुशीलन करके आए हैं।

उस दिन प्रजापति ने लोचन को अपने घर ले जाकर भरपेट मिठाई खिलाई।

दूसरा सनीचर आया। बीच में इतवार और तीसरे दिन से परीक्षा का आरंभ था। परीक्षा का समय-विभाग नोटिस-बोर्ड में चिपका दिया गया। आज लड़कों के रोल-नंबर भी प्रकाशित किए गए। हॉल में परीक्षार्थियों की सीटें लगा देने के उद्देश्य से उस दिन स्कूल में सब लड़कों की हाजिरी ले लेने के बाद ही छुट्टी दे दी गई। प्रजापति भी समय-विभाग और अपने रोल-नंबर को कापी में लिखकर परीक्षा की चिंता करता हुआ घर लौट गया।

आज उसे एक क्षण-भर की भी फ़ुरसत न थी। उसने किताबों के "ज़रूरी" पाठों और पंक्तियों में लाल, नीली और काली पेंसिलों के चिह्न और रेखाएँ बना रक्खी थीं। अब उसकी दो दिन की चिंता यही थी कि वह सब 'ज़रूरी' किस माध्यम से स्कूल के अंदर, परीक्षा-भवन में, भेजा जाय।

कुछ उसने अपनी स्मृति पर छोड़ दिया, कुछ पास बैठनेवाले लड़कों के सहायता-वचन के सिपुर्द किया, कुछ हिस्सा संक्षिप्त कर उसने परचों पर लिखा, जो कुछ नहीं लिखा गया, उन पुस्तकों के पेज ही फाड़कर उसने संग्रह किए और कुछ पुस्तकें ही उसने जेब में रखकर परीक्षा-भवन में ले जाना निश्चित किया।

उस दिन सबके स्टूल और डेस्क लगा दिए गए। स्कूल के हॉल में सब परीक्षार्थियों के बैठने की जगह न थी, इससे कुछ सीटें हाल से संलग्न एक और दरजे में भी रख दी गईं। उस दरजे में हेडमास्टर साहब ने स्वयं गार्ड बनकर चौकसी करना निश्चित किया। स्कूल के तमाम परीक्षा में चोरी करनेवाले लड़कों की सीटें वहीं रक्खी गईं। प्रजापति को यह भेद किसी प्रकार मिल गया था।

इतवार के दिन सब लड़कों के डेस्कों पर लड़कों के रोल-नंबर, नाम और दरजे की चिटें चिपका दी गईं।

प्रजापति ने कुछ अँधेरा होने दिया। वह कई दिन से खेलने और टहलने नहीं गया था। स्कूल की ओर चला। स्कूल के बाहर, सदर फाटक के पास, फ़ील्ड में, अभी तक दो-चार लड़के खेल ही रहे थे। उसने दूसरा रास्ता लिया, और स्कूल के पीछे पहुँच गया। वहाँ स्कूल की लोहे के काँटों से जड़ी दीवाल के बाहर एक इमली का पेड़ था। वहाँ पर वह ठहर गया, और एक परिचित चाटवाले की नज़र बचाकर पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ की एक शाखा स्कूल की सीमा के भीतर फैली हुई थी। प्रजापति उसकी सहायता से स्कूल की हद में कूद गया।

दूर एक कोने में चौकीदार की झोपड़ी थी। उसने वहाँ जाकर देखा, वह रोटी सेंकने में तल्लीन था। उसने उसके सामने के आटे पर दृष्टि की,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह पर्याप्त था। पंद्रह-बीस मिनट से पहले वह उसकी रोटियाँ नहीं बना सकता था। प्रजापति भागकर सदर रास्ते की ओर आया। फ़ील्ड ख़ाली हो गया था, स्कूल का पथ शून्य था।

इसके बाद उसी तीव्र गति से प्रजापति फिर स्कूल के पीछे की ओर चला गया। उधर ही उसका दरजा था। वहाँ बिल्कुल ही सन्नाटा था। तीस गज़ की दूरी पर बिजली के तार के खंभे में जो बल्ब जलता था, उसकी क्षीण ज्योति स्कूल के अंदर के वृक्षों ने रोक ली थी। प्रजापति के दरजे के द्वार पर और सामने अँधेरा था।

वह अपने दरजे के दरवाज़े पर गया और धीरे-धीरे उसे खटखटाने लगा। इस दरवाज़े का भेद चौकीदार और प्रजापति के सिवा और शायद ही किसी को मालूम हो। बात यह थी, द्वारों के ऐंठ जाने के कारण उसके नीचे की चिटकनी कभी लगती ही न थी। चौकीदार ने उस पर परिश्रम करना छोड़ दिया था। वह केवल उसके ऊपर की चिटकनी बंद करके चल देता था।

एक दिन की बात है। प्रजापति खेल से तृप्त होकर किसी विचार को लिए, अपने दरजे के उसी दरवाज़े पर बैठा हुआ था। बैठे-बैठे वह वहाँ पर गुनगुनाने लगा। गाते-गाते अपने सिर से दरवाज़े पर ताल भी देने लगा। कुछ देर में ऐसा हुआ कि ऊपर की चिटकनी खुल गई, और वह द्वारों के साथ स्कूल के अंदर जा पहुँचा। वह सँभल गया, उसे ठेस भी नहीं लगी। बंद स्कूल के भीतर एक रास्ता पाकर वह मन-ही-मन प्रसन्न हुआ, और विचारने लगा, किसी दिन ज़रूर इसका उपयोग किया जायगा। वह किसी प्रकार द्वार को अटकाकर अपने घर चला आया। उसने यह बात किसी पर भी प्रकट न की।

आज उसके उपयोग की बारी आ गई थी। उसने फिर खटखटाया। बीच-बीच में दरवाज़े को अपनी ओर भी खींचता जाता था। एक बार उसका परिश्रम सफल हुआ, और दरवाज़ा खट से खुल गया। दरवाज़ा वैसे ही छोड़कर वह एक बार फिर चौकीदार और स्कूल के सामने अपनी दृष्टि दौड़ाकर भाग आया।

उसने दरजे के भीतर प्रवेश कर दरवाज़ा बंद कर लिया। इसके बाद उसने मोमबत्ती जलाकर उसकी मदद से हॉल में अपने एक मित्र का डेस्क और उससे संलग्न कमरे में अपना डेस्क खोज लिया। उसने पहचान के लिये अपने मित्र के डेस्क के ऊपर अपनी टोपी और अपने डेस्क के ऊपर दियासलाई की डिबिया रख दी। इसके बाद उसने मोमबत्ती बुझा दी, और अँधेरे में हेडमास्टर साहब के प्रबंध में संशोधन करने लगा।

वह सावधानी से हॉल के पिछले कोने में गया। वहाँ पर जो डेस्क लगा था, उसने उसे अपने सिर पर उठाकर एक अलग जगह मे रक्खा, उसकी जगह मे अपना वह दियासलाईवाला डेस्क उठाकर रख दिया, और उस डेस्क को अपने डेस्क के स्थान में ले गया। इसके बाद उसने अपने समीप का एक दूसरा डेस्क उठाया, और उसके और उस टोपीवाले डेस्क के स्थानों का आपस में परिवर्तन कर दिया। उसने एक बार फिर दियासलाई जलाकर देख लिया कि कहीं कोई भूल तो नहीं रह गई।

इसके बाद वह बाहर आया, और उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुले दरवाज़े को पत्थरों की मदद से अटका दिया कि कहीं हवा लगने से खुल न जायँ।

वह ज्यों ही वहाँ से जाना चाहता था कि उसे सामने से दो लड़के उसी ओर आते दिखाई दिए। वह दबे पैर झपटकर दफ़्तर की ओर बढ़ा, और नोटिस-बोर्ड के सामने दियासलाई जलाकर टाइम-टेबिल पढ़ने लगा।

वे दोनो आनेवाले वहीं पर आ पहुँचे। उनमें से एक ने प्रजापति को पहचानकर कहा—"कौन, प्रजापति! क्या टाइम-टेबिल देख रहे हो? तुम्हें दिन-भर पढ़ने से फ़ुरसत नहीं मिली, क्यों?"

प्रजापति ने दूसरी दियासलाई जलाते हुए कहा—"और अपनी तो कहो, तुम्हें क्यों यही वक़्त पसंद हुआ?"

आगंतुक ने जेब में से मोमबत्ती निकाली, और प्रजापति की जलती हुई दियासलाई से उसकी शिखा मिलाते हुए बोला—"हम दोनो छुट्टी लेकर गाँव गए थे न? पाँच रोज़ बाद आज अभी वापस आए हैं।"

उसकी मोमबत्ती जलने लगी थी, प्रजापति ने दियासलाई फेंक दी। इसके बाद उस विद्यार्थी ने मोमबत्ती टाइम-टेबिल की ओर बढ़ाई और प्रजापति से कहने लगा—"लो, अब आराम से देखो।"

प्रजापति ने जाने का उपक्रम कर कहा—"मैं देख चुका हूँ, टाइम-टेबिल तो मैं सनीचर के दिन ही उतार ले गया था। कुछ ग़लती रह गई थी, उसे ठीक करने आया था। अब कोई जरूरत नहीं है।"

दूसरा विद्यार्थी पेंसिल से एक काग़ज़ पर टाइम-टेबिल की नक़ल करने लगा। प्रजापति उन्हें छोड़कर आगे बढ़ा। उसने देखा, चौकीदार रोटी सेंक चुका था, और मुँह पर का पसीना पोंछता हुआ "जय-जय-जय गिरिराज-किशोरी" गा रहा था।

दूसरे दिन सुबह आठ ही बजे खा-पीकर प्रजापति परीक्षा देने के लिये स्कूल चला। आज उसका अँगरेज़ी का परचा था। अँगरेज़ी की किताब की 'की' उसके कोट की भीतरी जेब में थी। एक ज़रूरी कहानी का अँगरेज़ी में संक्षिप्त सार उसके एक जूते के अंदर था। एक ज़रूरी कविता का गद्य-रूप उसके दूसरे जूते में था। कुछ नोट्स उसकी हथेलियों में लिखे थे। कुछ किताब से फाड़े हुए पत्र उसके कुरते की जेब और टोपी में थे। अँगरेज़ी की क़लम सँभालकर वह चला। एक अलग निब भी उसने रख ली थी।

वह स्कूल पहुँच गया। पर अभी स्कूल नहीं खुला था। उसने स्कूल के पिछले भाग में जाकर देखा, वह द्वार उसी प्रकार बंद था।

उसके कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद जब चौकीदार ने स्कूल खोला, तो प्रजापति उसके साथ ही अंदर प्रविष्ट हुआ। चौकीदार इधर-उधर के दरवाज़ों को खोलने लगा। प्रजापति ने अपने दरजे में जाकर वह खुला द्वार बंद कर दिया। इसके बाद प्रजापति हॉल में आया, और चौकीदार के सामने अपनी सीट खोजने का बहाना किया। उसे पाया और उसमें बैठ गया।

कुछ याद आते ही चौकीदार उसे खोजता हुआ वहाँ पर आ पहुँचा था, कहने लगा—"आपने तो सुबह भी नहीं होने दी। अभी से यहाँ पर बैठकर क्या करोगे? चलिए, बाहर चलिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हेडमास्टर साहब कल जाते वक्त, मुझसे कह गए थे कि मास्टरों के आने तक हॉल में किसी भी विद्यार्थी को न जाने देना।"

प्रजापति उठते हुए कहने लगा—"तुम्हारे हेड-मास्टर साहब के हुक्मों की बड़ी मार है, ये जीने न देंगे क्या ?"

चौकीदार और प्रजापति दोनो बाहर चले। मार्ग में चौकीदार बोला—"बाबू, सिगरेट न पिलाओगे ?" इसके बाद वह उसकी जेब की ओर हाथ बढ़ाने लगा।

प्रजापति ने जल्दी से बाहर की ओर भागकर कहा—"चल मूर्ख ! मैं कहीं सिगरेट पीता हूँ क्या ?"

चौकीदार कहने लगा—"कल कहाँ से दी थी ? अच्छा, जेब दिखाओ।"

प्रजापति की जेब में पुस्तक थी। वह फ़ील्ड की ओर भागते हुए कहने लगा—"बोलो मत, आज परीक्षा का दिन है, फिर ले लेना।"

चौकीदार घंटा बजाने लगा। क्रमशः लड़के, मास्टर और हेडमास्टर आए। कापियाँ दो गईं, परचे बँटे, परीक्षा आरंभ हुई।

सात दिन उसे परीक्षा में सम्मिलित होना पड़ा। वह बड़े आनंद से पुस्तकें और परचे अपने साथ लाता और उस कोने में बैठकर नक़ल करता था। आस-पास के लड़कों से काना-फूसी कर उत्तर मालूम करता था। उसकी चोरी कदाचित् मास्टरों में से किसी को भी मालूम नहीं हुई। हेडमास्टर साहब को यह भी सुधि नहीं रही कि प्रजापति की सीट कहाँ-से-कहाँ चली गई।

परीक्षा समाप्त हुई, पर अभी परीक्षा-फल नहीं निकला था। मास्टर लोग कापियों को शुद्ध कर नंबर देने में जुटे हुए थे।

इसी बीच में प्रजापति के पिता को रेल-विभाग में कहीं बाहर एक बहुत बड़ा ठेका मिल जाता है। वह वहाँ अपने एक ख़ास आदमी का सदैव रहना जरूरी समझने लगे। वह स्वयं वहाँ सदा नहीं रह सकते थे। उन्होंने एक दिन यह भार प्रजापति के सिर पर रख देना निश्चित किया। उनकी समझ में प्रजापति काफ़ी बड़ा हो गया और पढ़-लिख भी गया था। प्रजापति भी उसी क्षण तैयार हो गया। वह पुस्तक, पढ़ाई और परीक्षा से पूर्ण तृप्त हो चुका था। उसके पिता ने हेडमास्टर साहब से ये सब बातें जाकर कह दीं।

हेडमास्टर साहब ने उत्तर दिया—"अच्छी बात है, पर जल्दी क्या है। पाँच-सात दिन ठहर जाइए, परीक्षा-फल निकलने दीजिए। तभी सार्टि-फ़िकेट दूँगा। तब तक आप लड़के को स्कूल से छुड़ा लेने की एक अर्ज़ी मेरे पास भेज दीजिएगा।"

प्रजापति के पिता उस पर राज़ी हो गए। दूसरे दिन तमाम स्कूल के लड़कों और मास्टरों पर यह विदित हो गया कि प्रजापति अब पाँच-सात रोज़ स्कूल में और रहेगा, फिर चला जायगा। इस कारण उसके प्रति सबको प्रीति बढ़ चली। इस चिर-विछोह की कल्पना कर प्रजापति के मनोराज्य में बड़ा अद्भुत परिवर्तन हो गया। अब दरजे में वह धीर और शांत रहने लगा।

शास्त्रीजी घर पर प्रजापति के दरजे की परीक्षा की कापियाँ शुद्ध कर रहे थे। प्रजापति की कापी सामने आई। कुछ पेज देखने के बाद अचानक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनको उस कापी के बीच में, हिंदी की किताब का, एक फटा पत्र मिलता है। प्रजापति ने उस पत्र से कुछ नक़ल किया होगा, पर जल्दी में वह उस पेज को उसी के अंदर भूल गया। शास्त्रीजी ने कुछ सोचकर उस पत्र को मोड़ा, और अपनी जेब में रख लिया। शायद हेडमास्टर साहब को उस चोरी का पता देने के लिये नहीं। शास्त्रीजी ने उसके शेष उत्तर देखकर नंबर जोड़े। उनका योग बारह हुआ। पूर्णांक पचास थे, वह फ़ेल हो गया!

उन्होंने अचानक स्कूल से सदा के लिये प्रजापति की विदाई का ध्यान किया। उन्होंने उस पर दया की, चार नंबर और बढ़ाकर उसे पास कर दिया।

सब मास्टरों के मन में अलग-अलग यही भाव उपजा। सबने उसके प्रति वही कृपा दिखाई। दो-एक विषयों में नक़ल करके वह पास भी हो गया था।

परीक्षा-फल की सूची तैयार हुई। प्रजापति को प्रत्येक विषय में उत्तीर्ण देखकर हेडमास्टर साहब को शक होता है। वह उसकी परीक्षा की सब उत्तर-कापियाँ इकट्ठा करके शाम को अपने घर ले गए। उन्होंने बारीकी के साथ उनकी फिर जाँच की, और परीक्षकों को उसे नंबर देने में हद से ज्यादा उदार पाया।

इंस्पेक्टर साहब बड़े पुराने अनुभवी थे। स्कूल अपनी दुर्बलताओं को जहाँ पर ढक रखता था, उनकी स्कूल में आकर सबसे पहले वहीं पर दृष्टि पड़ती और वह तुरंत ही उसे प्रकट कर देते थे। हेडमास्टर साहब ने विचार किया, अब की बार इंस्पेक्टर साहब आकर इसी दरजे की कापियाँ माँगेंगे, और जिन कापियों की जाँच करेंगे, उनमें एक यह भी होगी। उन्होंने फिर कुछ भी नहीं सोचा। बावर्चीख़ाने में अँगीठी सुलग गई थी। उन्होंने एक-एक कर वे सब कापियाँ उसमें जला दीं।

दूसरे दिन परीक्षा-फल प्रकट हुआ, और प्रजापति सब विषयों में सफल घोषित हुआ।

तीसरे दिन प्रजापति हेडमास्टर साहब से अपना सार्टिफ़िकेट लेकर बिदा हुआ। उसने एक-एक कर सभी मास्टरों से बिदा ली। वह शास्त्रीजी के पास भी गया।

शास्त्रीजी ने उसे देखा, और दरजा छोड़कर बाहर आए। बाहर आकर उन्होंने कहा—"मैं स्वयं तुमसे मिलना चाहता था। तुमसे मुझे कुछ कहना है।"

प्रजापति चकित और स्तब्ध खड़ा रहा।

शास्त्रीजी ने अपनी जेब से वह फटा पत्र निकाला। प्रजापति ने उसे देखकर अपना माथा नीचा कर लिया।

शास्त्रीजी ने स्नेह-भरे स्वर में कहा—"नहीं प्रजापति, लज्जित होने की कोई बात नहीं। यह विद्यार्थी-जीवन की भूल है, भविष्य-जीवन के लिये इससे उपदेश ले सकते हो। जाओ, संसार में प्रवेश करो, पर यह याद रखना, पत्र फाड़कर इस तरह चोरी करोगे, तो तुम्हारे जीवन की पुस्तक खंडित हो जायगी। कितनी सुंदर यह कविता है, तुम इसे फाड़कर फेक दोगे क्या?"

कविता का शीर्षक था—"जीवन का गीत।" किसी अँगरेज़ी कविता का अनुवाद था।

प्रजापति चुप रहा, शास्त्रीजी ने कहा—"लो'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस फटे पत्र को उसी पुस्तक में चिपका देना। इससे किसी निर्धन विद्यार्थी का काम चल जायगा।"

प्रजापति ने उनके हाथ से वह पत्र लेते हुए कहा—"नहीं, मैं इसका लोभ करूँगा। मैं इसे सोने के चौखटे में लगाकर सदैव अपनी आँखों के सामने रक्खूँगा। परमेश्वर करे, जब मेरे हृदय में चोरी का भाव उठे, इसके दर्शन से वह नष्ट हो जाय, और मैं कभी किसी चीज़ की चोरी न करूँ।"

शास्त्रीजी ने कहा—"अगर ऐसा कर सको, तो तुम्हारी पुस्तक का यह फटा पत्र तुम्हारे लिये सबसे बड़ी परीक्षा का सार्टीफ़िकेट है। कदाचित् संसार का कोई भी विश्वविद्यालय इसे न दे सकता हो।"

प्रजापति ने उस फटे पत्र को सयत्न सँभाला, और शास्त्रीजी को प्रणाम कर विदा हुआ।

शास्त्रीजी चकित होकर उसे देखते ही रहे, ऐसा नटखट लड़का कितनी जल्दी शांत और गंभीर हो गया! प्रजापति ने जाते-जाते अधीर होकर स्कूल की ओर दृष्टि की, अब वह उस जीवन में कभी पुस्तक लेकर वहाँ न जायगा। उसकी आँखें छल-छला उठीं, वह अपने को बिल्कुल परिवर्तित देखने लगा।

अग्निसंजीवन
स्वादिष्ठ

मंदाग्नि, अजीर्ण, क़ब्ज़, अफरा, दाह इत्यादि पेट-संबंधी सब रोगों की उत्पत्ति, कारण तथा रोगों से बचने के उपाय और स्वास्थ्य-संबंधी अनेक नियमों को जानने के लिये हिंदी और अँगरेज़ी में लिखी

"स्वास्थ्य-संदेश"-नाम की पुस्तक मुफ़्त मँगाइए

पता—अग्नि-संजीवन-कार्यालय, बंबई नं० २

एजेंट— लखनऊ हिमालियन स्टोर अमीनाबाद-पार्क | बनारस जगन्नाथदास-बलभद्रदास चौक | इलाहाबाद दुबे-ब्रदर्स चौक | कानपुर रामगुलाम शिवगुलाम नयागंज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निवेदन

[श्रीयुत "गुलाब"]

(१)

रात्रि का अंधकार हर मौन !
मुक्त कर स्वप्न शयन-संसार ;
तुम्हारा अति उज्ज्वल आलोक ,
गगन-खिड़की से झाँक उदार ।
बिखर तरु-पातों पर चुपचाप ,
फूल-सा फैले चारो ओर !
देख लूँ मधुवन का मधु-हास ,
भरूँ फल-फूलों से उर-पात्र ।
जान लूँ भृंग-भीड़ का अर्थ ,
न जाए मेरा जीवन व्यर्थ !

(२)

डोलने लगे मधुर वातास ,
मुक्त फैला अति कोमल पंख ;
लगे लहराने मदिर स्वभाव ,
सलोनी लतिकाओं के संग ।
इधर हों मेघ, उधर घनश्याम ,
प्राण-चातकिनी उठे पुकार ।
एक नन्ही-सी करुणा-बूँद ,
चू पड़े मरु-मानस में भूल ,
तरंगें उठें हज़ार-हज़ार ,
उमंगों की बढ़ चले बहार !

(३)

सजग हो निद्रित मानस-प्रेम ,
मिलन-बेला की करके याद ;
मिले वह शांति-भरा सुख-मार्ग ,
गूँजता जहाँ तुम्हारा गान ।
करों से मोहिनि वीणा छोड़—
भारती झूम रही हो मुग्ध !
अनोखे ताल-स्वरों के साथ ,
नृत्य वह होता हो नटराज !
जहाँ बिछते हों मेरे प्राण ,
वेदनाओं से पाकर त्राण ।

Royal College of Physicians and Surgeons of India (Registered).
Member and Fellowship (M. R. C. P., M. R. C. S., M. R. C. P. & S., F. R. C. P., F., R. C. S., F. R. C. P. & S. Registered) certificate awarded to the medical Practitioners and Students. For Prospectus apply with anna stamp to the Registrar, Dayoganj Road, Dacca, Bengal.

Homeopathic University of India (Registered by the Govt.)
Member and Fellowship certificate granted to the Homeopathic Doctors and Students. Also H.L M.S., H.M.B., H.M.D. & L.L.D. diploma to Successful Candidates. Apply with anna stamp to the Registrar, 21, Chota Katara, Dacca, Bengal.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी में अतुकांत कविता

[श्रीयुत पं० शांतिप्रिय द्विवेदी]

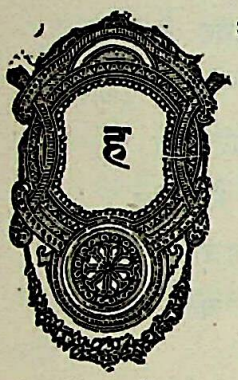

मारा जीवन भावनाओं से परिपूर्ण है। प्रत्येक क्षण—चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-जागते, शत-शत भावनाएँ हमारे हृदय में उठती-गिरती रहती हैं। कवि इन भावनाओं को छंदों में अमर कर देता है, कलावंत अपने सितार के तारों में उन्हें गुंजरित कर वायु-मंडल में बिखेर देता है। किंतु क्या सभी भावनाएँ गेय ही होती हैं? नहीं, हम अपने जीवन में प्रत्येक क्षण गुनगुनाते ही नहीं रहते—प्रायः मौन रहते हैं अथवा कभी स्वगत, अर्द्धस्वगत कुछ सोचते रहते हैं या एकाएक भावनाओं के अधिक घात-प्रतिघात में चिल्लाकर उछल जाते हैं। यही तो जीवन का अभिनय है। संसार के साहित्य-शिल्पियों ने इस कवित्व-पूर्ण अभिनय को नाटक और गीतिनाट्य का स्वरूप दिया है। मेरी समझ में तो अतुकांत कविता का उपयोग नाटकों और गीतिनाट्यों में ही होना चाहिए।

अतुकांत कविता सभी उन्नत भाषाओं में विद्यमान है। कुछ लोगों का मत है कि इसके आदि-आविष्कार या उपज का श्रेय देव-वाणी संस्कृत को ही प्राप्त है। समस्त आर्य-भाषाओं की जननी संस्कृत के समस्त काव्य-ग्रंथ अनुप्रास-हीन छंदों में लिखे गए हैं। इस तरह की कविता पहले-पहल संस्कृत-साहित्य में ही लिखी गई है। अँगरेज़ी भाषा के आदि कवियों ने भी यह ढंग संस्कृत से ही सीखा है। अँगरेज़ी के अनुकरण पर बँगला में भी अतुकांत आरंभ हुआ, और अब हिंदी ने भी इधर अपना पैर बढ़ाया है, गोकि उसे इस क्षेत्र में शताब्दियों पूर्व आ जाना चाहिए था, क्योंकि वह देव-वाणी की ज्येष्ठा कन्या है।

अस्तु, जिस प्रकार आज भी हिंदी में अतुकांत कविता के विरोधी और समर्थक हैं, उसी प्रकार दूसरी भाषाओं में भी कभी थे, किंतु वहाँ का विरोध अतुकांत कविता की प्रखर धारा में शिला-खंड की तरह बह गया।

हिंदी में तो अभी नए ढंग की सानुप्रास कविताएँ भी चम्य नहीं हैं, फिर अतुकांत की क्या गति! इस प्रसंग में यहाँ दो सम्मतियाँ उपस्थित की जाती हैं—

हिंदी के एक विद्वान् ने लिखा है कि जिन लोगों को अनुप्रास का प्रतिबंध बाधा देता है, उन्हें पद्य लिखने का साहस ही क्यों करना चाहिए? वे गद्य ही क्यों न लिखें? अर्थ और भाव को बिगाड़ना तो दूर, अनुप्रास उलटा उसे बनाते हैं, और नई सूझ पैदा करते हैं।

दूसरी सम्मति, 'उषा *'-नामक अतुकांत काव्य के रचयिता स्वर्गीय शिवदास गुप्त 'कुसुम' की, यह है—अंत्यानुप्रास-हीन कविता में तुक या क़ाफ़िए का बंधन न रहने से कविता करने में बड़ी सुविधा रहती है। तुक के बंधन के कारण कवि अपने मनोगत भावों को खोलकर ठीक उसी रूप में, जिस रूप में हृदय में भावों का उदय होता है, रखने में असमर्थ सिद्ध होता है। वह क़ाफ़िए क़ैद के कारण या तो महज़ क़ाफ़िएबंदी ही करता है या फिर तुक के फेर में बैठे-बैठे घंटों सिर खुजलाता रहता है, और जब कुछ नहीं चलती, तो कुछ ऊटपटाँग तुक जोड़कर काम चलाता है। किसी कवि के विषय में ऐसा प्रसिद्ध है कि वह लगा 'घुग्घू' का तुक मिलाने, जब घंटों सोचने पर अक्ल ने कुछ काम न किया, तो झट 'रग्घू' लिखकर छुट्टी पाई।

किंतु इस तरह की सम्मतियों से साहित्य का सदुद्देश्य नहीं पूर्ण हो सकता। मेरी तुच्छ बुद्धि में तुकों के इस प्रकार के समर्थक और विरोधी अतुकांत कविता के मूल सिद्धांत को नहीं जान पाए हैं, वे उसके मर्म को नहीं समझ पाए हैं। अतुकांत कविता तो वस्तुतः कथात्मक काव्य लिखने के लिये है। कथात्मक काव्यों में कथनोपकथन अधिक होने के कारण अतुकांत छंद

* गंगा-पुस्तकमाला का इक्यावनवाँ पुष्प।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिक फबते हैं, क्योंकि वे हमारी स्वाभाविकता के बहुत निकट रहते हैं। जो लोग मुक्तक भावों को भी अतुकांत छंद में लिखने का प्रयत्न करते हैं, उनका समर्थन मैं भी नहीं कर सकता। मुक्तक भाव, जिनमें न कोई कथा रहती है, न कोई वार्तालाप, कुछ मीठे स्वर चाहते हैं, जिन्हें हम अपने दुख-सुख की साँसों में गुनगुना सकें। अतुकांत कविता गाई जाने के लिये नहीं, केवल पढ़ी जाने के लिये है, क्योंकि बिना तुक के स्वर कैसा! हाँ, अतुकांत कविता की कला उसके पढ़ने के ढंग से प्रकट होती है।

कथात्मक अतुकांत कविताओं की उपादेयता रंग-मंच पर जान पड़ती है। जिस समय वक्ता इसे बोलने लगते हैं, जान पड़ता है, हमारा जीवन-प्रवाह ही बह चला हो। किंतु उसकी सफलता तभी संभव है, जब हम उसके अनुकूल छंद चुन सकें एवं उनकी यति-गति का ठीक-ठीक ध्यान रख सकें।

हिंदी में अतुकांत कविता का श्रीगणेश दो कवि-मित्रों के परस्पर वार्तालाप का परिणाम है। आज से कई वर्ष पूर्व हिंदी के सम्मानित कवि, कहानी-लेखक और नाटककार श्री० जयशंकर 'प्रसाद'जी और सुप्रसिद्ध कलाविद् श्री० राय कृष्णदास महोदय ने अतुकांत पद्य लिखे जाने का विचार किया था। उस समय अतुकांत हिंदी-कविता जिस रूप में प्रसूत हुई, उसकी आकृति संवत् १९९९ में प्रकाशित 'प्रसाद'जी के 'करुणालय'-नामक गीतिनाट्य तथा सन् १९१३ में प्रकाशित राय महोदय के 'उपवन'-नामक कविता-पुस्तक में देखी जा सकती है। दोनो की कुछ झलक यहाँ देखिए—

'करुणालय', पृष्ठ ९

(कानन में रोहित—)

आकाश की ओर देखकर—

अरे! कौन यह? छाया-सी है इंद्र की!
कायरता का अरि, प्रतिमा पुरुषार्थ की।
बड़ी कृपा आकाश-विहारी देव की—
हुई, दीन करता प्रणाम है भक्ति से।
देव! आप यदि हैं प्रसन्न, तो भाग्य है;
प्रभो! सदा आदेश आपका ध्यान से
पालन करता रहे दास, वर दीजिए—
'रुके कर्म-पथ में न कभी यह भीत हो।'

❀ ❀ ❀

'उपवन', पृष्ठ २७

घनश्याम के प्रति—

आ गया रमणीय पावस-काल अति,
जुट गए घन गगन में घनश्याम-से।
वर्ण वैसा ही सुखद था चक्षु को,
पीतपट सी बिज्जु-लतिका सोहती।
थी वकाली मोतियों का हार ज्यों,
चाप सुरवर का मुकुट-सा राजता।
उधर वंशी-ध्वनि, इधर भी घोष था।
देख इसको विरह-विधुरा गोपिका
एक—जो थी लीन हरि में ही सदा—
इसे आया उन्हीं को बस जान के,
प्रेम-पूरित ये वचन कहने लगी—
"आ गए घनश्याम प्यारे आ गए!
व्यर्थ क्यों की शीघ्रता इतनी, कहो?
यहाँ आते बिता के कुछ काल औ,
जब न कोई अहो रह जाता यहाँ
उलहना देके दुखाने को तुम्हें।"

❀ ❀ ❀

'प्रसाद'जी की उद्धृत पंक्तियाँ अरिल्ल-छंद में हैं, और राय महोदय की × × × में। किंतु ये लोग अतुकांत कविता के लिये कोई निश्चित छंद नहीं निर्धारित कर पाए थे, उन्होंने अन्य छंदों में भी इसी तरह अतुकांत लिखा है। सं० १९७० में प्रकाशित 'प्रसाद'जी के 'प्रेमपथिक'-नामक काव्य में यह छंद है—

पथिक! प्रेम की राह अनोखी, भूल-भूलकर चलना है।
घनी छाँह है जो ऊपर, तो नीचे काँटे बिछे हुए!
प्रेम-यज्ञ में स्वार्थ और कामना हवन करना होगा,
तब तुम प्रियतम, स्वर्ग-विहारी होने का फल पाओगे।

× × ×

इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिक रहना,
किंतु पहुँचना उस सीमा पर, जिसके आगे राह नहीं।

❀ ❀ ❀ ❀

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

'करुणालय' का छंद बहुत कुछ उसके गीतिनाट्य के अनुकूल है, पढ़ने में कथोपकथन की स्वाभाविकता-सी जान पड़ती है। किंतु 'प्रेम-पथिक' को 'प्रसाद'जी यदि सानुप्रास ही लिखते, तो उसका सौंदर्य और भी खिल पड़ता, क्योंकि वह भाव-प्रधान है। भाव-प्रधान कविताएँ कुछ झंकार चाहती हैं, जिसके लिये तुक अनिवार्य है। अतुकांत तो कथा एवं नाट्य-प्रधान कविताओं के लिये ही उपयुक्त है, जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ। हम प्रत्येक क्षण गुनगुनाते ही नहीं रहते। हमारी बहुत-सी कवित्व-पूर्ण भावनाएँ राग न चाहकर बोल-चाल की गति चाहती हैं। अतुकांत से उनकी यह आवश्यकता बहुत कुछ पूरी होती है।

'प्रसाद'जी के 'करुणालय' के अनुकरण पर श्री० पं० रूपनारायण पांडेय, पं० लोचनप्रसाद पांडेय और स्वर्गीय बाबू शिवदास गुप्त 'कुसुम' ने भी अपने-अपने काव्य लिखे हैं, किंतु इस अनुकरण में कोई विशेषता नहीं।

प्रसादजी से पूर्व पूज्य उपाध्यायजी के 'प्रिय-प्रवास' द्वारा अतुकांत कविता का एक रूप गणवृत्तों द्वारा हमारे सामने आ चुका था। किंतु प्रसादजी के 'प्रेम-पथिक' की तरह 'प्रिय-प्रवास' के लिये भी मेरा अपना ख़याल है कि यदि वह भी सानुप्रास होता, तो उसकी मधुरिमा कुछ और भी बढ़ जाती, क्योंकि वह गीतिनाट्य की तरह कथा-प्रधान न होकर भाव-प्रधान है।

'करुणालय' की भूमिका में श्री० राय कृष्णदास महोदय ने लिखा है—"प्रसादजी हिंदी में छायावाद के विधाता तो हैं ही, अतुकांत कविता के आरंभ-कर्ता भी वे ही हैं। निस्संदेह हिंदी में गणवृत्तों में उनके लिखने के बहुत पहले भी अमित्राक्षर कविता लिखी गई है, किंतु मात्रिक वृत्तों में उसका प्रयोग तथा भावों और वाक्यों की—चरणों के बंधन में न पड़कर—स्वतंत्र गति का आरंभ और अवसान 'प्रसाद'जी की ही सृष्टि है। वृत्तों में ऐसी स्वतंत्रता पाकर भाषा में एक विलक्षण प्रवाह और रस आ जाता है, जो बहुत ही आनंददायक होता है।" इस वक्तव्य द्वारा राय महोदय ने सचमुच एक साहित्यिक तथ्य का उद्घाटन किया है, साथ ही उन्होंने अतुकांत कविता के रंग-रूप को भी बहुत ठीक दरसाया है। किंतु खेद है, मुझे तो अरिल्ल छंद या और किसी ऐसे ही छंद में अतुकांत कविता के अनुकूल भावों और वाक्यों की स्वतंत्र गति नहीं मिलती। इसमें वह प्रवाह ही नहीं मिलता, जो हमारे जीवन की निर्झरिणी के साथ वेग से बह सके। उसका महत्त्व इतना ही है कि वह अतुकांत हिंदी-कविता के बाल उषा की प्रथम झलक है।

मेरे प्रिय आराध्य कवि, हिंदी-कविता के सुकुमार हृदय, श्री० सुमित्रानंदनजी पंत ने अंत्यानुप्रास-हीन कविता के लिये 'रोला' छंद को अधिक उपयुक्त बतलाया है। उनके अतुकांत का भी एक उदाहरण 'ग्रंथि'-नामक प्रेम-काव्य से लीजिए—

शैवलिनि! जाओ मिलो तुम सिंधु से,
अनिल! आलिंगन करो तुम गगन को।
चंद्रिके! चूमो तरंगों के अधर,
उडुगणो! गाओ पवन-वीणा बजा!
पर हृदय! सब भाँति तू कंगाल है,
उठ किसी निर्जन विपिन में बैठकर
अश्रुओं की बाढ़ में—अपनी बिकी,
भग्न भावी को डुबा दे आँख-सी!
देख, रोता है चकोर इधर; वहाँ
तरसता है तृषित चातक वारि को;
वह मधुप बिंधकर तड़फता है, यही
नियम है संसार का, रो हृदय! रो।

❀ ❀ ❀

किंतु, मेरी समझ में, अतुकांत के लिये यह छंद भी उपयुक्त नहीं। अतुकांत कविता के उद्देश्य की इससे रक्षा नहीं होती। इस छंद में जो मलयानिल की-सी मधुरिमा है, वही सूचित करती है कि इसे तुक चाहिए। पंतजी की 'ग्रंथि'-नामक कविता भाव-प्रधान है। यह हिंदी-कविता का परम सौभाग्य होता, यदि वे इसे भी अपने आँसू, उच्छ्वास और परिवर्तन इत्यादि कविताओं की भाँति सानुप्रास ही लिखते। 'ग्रंथि' के मृदुल-मधुर भाव तुकों द्वारा झनकार चाहते हैं।

सच बात तो यह है कि रोला, अरिल्ल अथवा अन्य किसी ऐसे ही छंदों से अतुकांत कविता का गठन नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो सकता, क्योंकि ऐसे छंदों का निर्माण ही स्वरों को ध्यान में रखकर किया गया है, बिना तुक के स्वर प्राण-हीन हैं। केवल तुक हटाकर नियमित छंद ज्यों-का-त्यों रख देने से उसका स्वरूप मुझे तो 'जगन्नाथजी'-जैसा जान पड़ता है। इसमें कोई विशेष कला नहीं है। इन छंदों में तुकों का बहिष्कार केवल इसलिये हुआ कि तुक का बंधन रहने के कारण अपने भावों को खोलकर ठीक उसी रूप में, जिस रूप में वे हृदय में उदय होते हैं, कवि रखने में असमर्थ होता है, यह तर्क उचित नहीं जान पड़ता। हमारे हृदय के भाव क्या छंद-रूप में ही उत्पन्न होते हैं? तुक से पहले तो छंद का बंधन मिलते ही वे अपना मौलिक रंग-रूप बदल देते हैं।

अतुकांत कविता के लिये तो एक ऐसे छंद की आवश्यकता थी, जो राय कृष्णदास महोदय के शब्दों में--चरणों के बंधन में न पड़कर भावों और वाक्यों की स्वतंत्र गति का आरंभ और अवसान करता। इस दृष्टि से मेरा विश्वास है कि हिंदी में अतुकांत कविता कवित्त-छंद के आधार पर ही सफल हो सकती है। किंतु 'पल्लव' के कवि पंतजी का कथन है कि कवित्त-छंद हिंदी का औरसजात पुत्र नहीं। वे अपने इस कथन में पूर्ण निर्दोष हैं। कारण, इस छंद की यति-गति सूचित करती है कि यह चिर-साहित्यिक छंद न होकर हमारे बोल-चाल का साथी है, हम इसे इसी रूप में पहचान सकते हैं। खैर, वह औरसजात पुत्र भले ही न हो, यह शुद्धि का ज़माना है, हम इसे अपने मनोनुकूल शोधकर शुद्ध कर लें, तो यह बोल-चाल का छंद हमारी अतुकांत कविता का स्वाभाविक जीवन बन सकता है। आदरणीय कवि श्री० सू० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' महोदय के इस कथन से मैं पूर्ण सहमत हूँ कि नाटकों (गीतिनाट्यों) में सबसे अधिक रोचकता इसी कवित्त-छंद की बुनियाद पर लिखे गए स्वच्छंद छंद द्वारा आ सकती है। इस छंद में 'आर्ट ऑफ़् रीडिंग' का आनंद मिलता है (अतुकांत कविता के लिये यही चाहिए भी)। इसी-लिये इसकी उपयोगिता रंग-मंच पर सिद्ध होती है। अपनी समझ से मैं कह सकता हूँ कि इस तरह के छंद में भावों और विचारों को वस्तुतः स्वतंत्र, स्वाभाविक गति मिलती है।

कवित्त-छंद के ही आधार पर निर्मित अतुकांत कविता के दो स्वरूप आपके सामने हैं—एक निरालाजी का मुक्त छंद, दूसरा श्रद्धेय बा० मैथिलीशरणजी गुप्त द्वारा 'मेघनाद-वध' के अनुवाद में व्यवहृत १५-१५ वर्णों का छंद। उदाहरण लीजिए—

अपनी 'पंचवटी-प्रसंग'-नामक कविता में निरालाजी ने रंग-मंच को ध्यान में रखकर मुक्त छंद को जो अतुकांत प्रगति दी है, उसमें एक स्वाभाविक प्रवाह मिलता है। जिस तरह नदी में छोटी-बड़ी तरंगें उठती-गिरती आगे बढ़ती हैं, वैसा ही इसका प्रवाह है। पंचवटी में सूर्पनखा सोचती है—

देव-दानवों ने मिल
मथकर समंदर को निकाले थे चौदह रत्न;
सुनती हूँ,—
रंभा और रमा ये दो नारियाँ भी निकली थीं,
कहते लोग सुंदरी हैं;
किंतु मुझे जान पड़ता,—
सृष्टि-भर की सुंदर प्रकृति का सौंदर्य-भाग
खींचकर विधाता ने भरा है इस अंग मे।
रानी हूँ,
प्रकृति मेरी अनुचरी है;
प्रकृति की सारी सौंदर्य-राशि लज्जा से
सिर झुका लेती, जब देखती है मेरा रूप,—
वायु के झकोरे से वन की लताएँ सब
झुक जातीं,—नज़र बचाती हैं,—
अंचल से मानो हैं छिपाती मुख
देख यह अनुपम स्वरूप मेरा।

❀ ❀ ❀

इस मुक्त छंद का हिंदी में बड़ा विरोध है। किंतु यदि हम ज़रा सहृदयता से इस पर विचार करेंगे, तो इसकी विशेषता स्पष्ट हो जायगी। पंतजी ने 'पल्लव' में मुक्त छंद के लिये लिखा है—इसमें भाव और भाषा का सामंजस्य पूर्ण रूप से निभाया जा सकता है।.....

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसमें चरण इसलिये घटाए-बढ़ाए जाते हैं कि काव्य संबद्ध, संयमित रहे।

निरालाजी यदि अपने इस अतुकांत छंद को सर्वत्र ऐसी ही प्रगति देते रहें, तो अतुकांत कविता के लिये यह अत्यंत उपयुक्त हो सकता है।

गुप्तजी द्वारा अनुवादित 'मेघनाद-वध' का प्रवाह यह है—

सम्मुख समर में, अकाल में निहंत हो,
शूर शिरोरत्न वीरबाहु, यमपुर को—
गया जब, कहो तब देवि, सुधाभाषिणी!
किस वरवीर को निशाचर-नरेंद्र ने,
करके वरण निज सेनापति-पद पै
भेजा रण में था उस राघव के वैरी ने?

❀ ❀ ❀

कहने की ज़रूरत नहीं कि गुप्तजी का यह छंद भी कवित्त की बुनियाद पर खड़ा है। इसका प्रवाह भी अत्यंत ओजस्वी है, अतुकांत के लिये यह बहुत ही नपा-तुला उपयुक्त छंद है। इस छंद के दोनो छोर सीमित हैं, और मुक्त छंद की सीमाएँ निर्बंध। किंतु दोनो की प्रगति में भाई-बहन का साथ है।

अतुकांत सीमित छंद में कोई-कोई वाक्य जब एक पंक्ति में पूर्ण नहीं हो पाते, तब वे दो वा अधिक पंक्तियों तक चले जाते हैं। वाक्यों का यह स्वतंत्र अधिकार—वामन भगवान् की तरह उनका यह पद-विस्तार—बतलाता है कि वे घेरे में नहीं रहना चाहते। अगर हम उन्हें घेरे से बाहर कर दें, तो उनका वही रूप होगा, जो निरालाजी के पूर्व उद्धृत छंद में है।

अनभ्यास के कारण इस तरह के अतुकांत छंद पढ़ने में प्रारंभ में दिक्कत अवश्य पड़ती है, किंतु इसके लिये 'मेघनाद-वध' के लेखक के शब्दों में मुझे यही आश्वासन देना है—"जो इसे हृदयंगम करना चाहें, वे बार-बार पढ़ें।.....जहाँ-जहाँ अर्थ की पूर्णता और श्वास का पतन हो, वहीं-वहीं इनकी यति समझनी चाहिए।.....इनकी आवृत्ति ही सब बातें बता देगी।"

हर्ष है, गुप्तजी और निरालाजी, दोनो ही सज्जनों की अतुकांत-प्रणाली समर्थन पा गई है। आदरणीय साहित्य-शिल्पी श्री० राय कृष्णदास महोदय 'मेघनाद-वध' के छंद में अपना 'शाल्व'-नामक पौराणिक काव्य लिख रहे हैं, यह बात उस छंद की हृदय-ग्राहिता प्रमाणित करती है। दूसरी तरफ़ श्रद्धेय बा० जयशंकर 'प्रसाद'-जी ने, 'महारथी' के पिछले 'प्रताप-अंक' में, 'पेशोला की प्रतिध्वनि'-नामक कविता अतुकांत मुक्त छंद में लिखकर, श्री० निरालाजी के भी प्रयास को सफल किया है। अतुकांत क्षेत्र में यह एक अपूर्व शोभामय कवि-सम्मेलन है।

पाली-प्रबोध

[लेखक, पं० आद्यादत्तजी ठाकुर एम्० ए०, काव्यतीर्थ]

भारतवर्ष में पाली के पठन-पाठन का पुनरुद्धार हो रहा है। विश्व-विद्यालयों की परीक्षाओं में तो पाली पाठ्य विषयों में से एक है। परंतु पाली-व्याकरण की कोई भी पुस्तक हिंदी में नहीं थी। पुस्तक के अंत में शब्द-कोष भी दे दिया गया है, जिससे पढ़नेवालों को और भी सुबीता हो गया है। अगर आप बहुत थोड़े समय में पाली-भाषा के संबंध में भली भाँति जानना चाहते हैं, तो इस पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़िए। मूल्य सादी १), सजिल्द १॥)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मोम का पत्थर

[श्रीयुत ऋषभचरण]

(१)

कवियों ने जो कच्चे नारियल की उपमा दी है, यहाँ वह भी हल्की रहेगी। अगर कोई ऐसा फल हो, जिसका छिलका फ़ौलाद का हो, और जिसके भीतर दुग्ध-फेन से भी कोमल गूदा हो, तो उसकी तुलना हरदेई के स्वभाव से की जा सकती है।

ओह! उसकी कठोरता का कैसे बखान करूँ? इसी से समझ लीजिए कि जब पति-देवता छोड़कर चल बसे, तो उसका चेहरा दो दिन से ज़्यादा उदास न रहा।.... रोना?—अजी, वह बहुत दूर की बात है।

हाँ, जब इकलौता, जवान, अविवाहित और सुंदर, मधुर, हँसता-खेलता बेटा अचानक स्वर्ग-लोक में खेलने चला गया, तो एक बार—केवल एक बार—उसकी लंबी, हृष्ट-पुष्ट, मटमैली-ज़र्द लाश देखकर उसकी आँखों से दो मोटे-मोटे आँसू बे-ख़बरी में ढलक पड़े थे। मानो ये आँसू उसकी सारी वेदना से निचुड़कर, उसका कलेजा फाड़कर, निकले थे।.....वे आँसू उसने पोंछे भी नहीं थे। गालों पर ढलके ही सूख गए थे, और उसके गंभीर और कठोर मुख पर सदा के लिये उदासी का लेप कर गए थे!

बेटा मरा, तो बस, एक बेटी रह गई।

इस बेटी के बचपन के नाम तो ख़ैर कई थे, मगर अब सब उसे फूल, फूलो या फूलवती कहा करते थे। जब भाई जब मरा, तो वह तीन वर्ष की नंगी-फिरती, ज़रा-सी बच्ची थी।

माँ ने बड़ी सतर्कता से उसे पाला, और बड़ा किया। रुपए-पैसे की तंगी न थी; कोई कष्ट न हुआ। पर धन चाहे कितना ही था, और सतर्कता चाहे कितनी ही बरती—अनुचित लाड़-प्यार करके अथवा अपनी स्वाभाविक शुष्कता या कठोरता में अंतर डालकर माँ ने उसे बिगड़ने न देने की ख़ूब चेष्टा की। ख़ुद विदुषी थी—उसे भी वैसी ही बनाने का प्रयत्न किया। पर माँ का प्रयत्न सफल हुआ या नहीं, यह अभी नहीं कहूँगा।

पढ़ी-लिखी, समझदार, विदुषी फूलवती बढ़कर सोलह वर्ष की हुई, और माँ ने गौरव-पूर्ण नेत्रों से बेटी की पूर्णता निरखकर, कठिन परिश्रम से तैयार किया हुआ वह खेत किसी योग्य पात्र को सौंप देने की कोशिश शुरू की।

उसकी एक सजातीय, अधेड़ सहेली दालान में बैठी इसी संबंध में उससे बातचीत कर रही है।

सहेली बोली—'आख़िर तुम्हारे जी में क्या है बहन?"

"क्यों?"

"लड़की इतनी बड़ी हो गई। क्या उसकी तरफ़ तुम्हारा ध्यान नहीं जायगा?"

हरदेई ने कुछ उत्तर न दिया। सहेली की तरफ़ देखकर बस ज़रा-सा हँस दिया। सहेली ने कहा—"तुम्हारा चौथापन शुरू होने को है। ज़िंदगी का क्या भरोसा?.....और यह काम तो करना ही है.....।"

हरदेई ने धीरे से सिर हिला दिया।

"हाँ, देखो तो—लड़की तो पराया धन है; थाती है—क्यों इस थाती को ज़्यादा दिन पास रखकर....."

सहेली की बात समझकर हरदेई ने पुनः सिर हिला दिया।

"तुम्हारी उम्र गृहस्थी में फँसे रहने की नहीं, भगवद्भजन करने की है; लड़की के ऋण से छुटकारा पाने की कोशिश क्यों नहीं करती हो?.....और फिर जवान लड़की है, एक तुम्हारा अकेला दम, घर में कोई मर्द-मानस तक नहीं!.....मर्द-मानस होते, तो तुम्हें चिंता किस बात की थी.....।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहते-कहते सखी ने ठंडी साँस भरी, और उसकी आँखें डबडबा आईं।

पर हरदेई सखी की करुणा-पूर्ण सहानुभूति से प्रभावित न हुई। साधारण भाव से बोली—"बीबी, मुझे सब सूझता है। लड़के की खोज में हूँ। शीघ्र ही कन्या के ऋण से मुक्त होना चाहती हूँ।"

"कोई लड़का देखा भी है?"

"एक नहीं कई! पर मन-लायक़ संबंध अभी नज़र नहीं आया।"

"मुझे तो बताओ, कौन-कौन देखा है!"

हरदेई देखे हुए लड़कों का परिचय देने लगी, और सहेली प्रत्येक में भाँति-भाँति के दोष निकालने लगी। हरदेई चूँकि ख़ुद इन रिश्तों से असंतुष्ट थी, इसलिये सहेली के निकाले हुए दोषों में उसे कुछ आपत्ति न हुई।

तब सहेली इस प्रकार बोली—मानो वार्तालाप का उपसंहार है—"एक लड़का तो मेरी निगाह में है।"

"कौन?"

"सर्व-गुण-संपन्न है। अगर रिश्ता हो जाय, तो बड़ा अच्छा हो।"

हरदेई ने अपने प्रश्न को दोहराया नहीं, और गंभीर होकर सहेली के उपसंहार या भूमिका के समाप्त होने की बात देखने लगी।

सखी ने जब देखा हरदेई की जिज्ञासा प्रज्वलित नहीं हुई, तो बोली—"भरतपुर के पंडित विहारीलाल का पुत्र है। उनके पूर्वज सैकड़ों वर्ष तक राज-पंडित रह चुके हैं। घर भी ख़ान्दानी और खाता-पीता है..... ।"

इसके बाद लड़के के गुणों के संबंध में दो-चार अतिशयोक्तियाँ थीं।

अब हरदेई ने कहा—"तुम्हारा उनसे क्या संबंध है?"

सहेली ने कोई दूर का रिश्ता बताया, और यह भी कहा कि वे लोग उसे बहुत ज़्यादा मानते हैं।

हरदेई बोली—'उम्र क्या है?"

"उम्र?—यही कोई इक्कीस-बाईस वर्ष।"

लड़के की शिक्षा-दीक्षा के संबंध में कुछ बातें पूछकर हरदेई बोली—"लड़के को देख भी सकती हूँ?"

"अवश्य!" सहेली ने बड़ी मुस्तैदी से कहा—"जब चाहो तब।"

"अच्छा!" हरदेई बोली—"क्या भरतपुर चलना होगा?"

"नहीं" सहेली ने कहा—"आठ-दस दिन से लड़का मेरे घर आया हुआ है। अगर तुम चाहो, तो चलकर देख सकती हो।.....या कहो, तो किसी दिन यहीं ही लाऊँ!"

हरदेई ने रुखाई से कहा—"नहीं, यहाँ लाने की ज़रूरत नहीं है। जब तक मैं उसे देखकर पसंद न कर लूँ, तब तक उस पर मेरी इच्छा प्रकट भी नहीं होनी चाहिए।"

सहेली कुछ खिसियानी-सी होकर बोली—"हाँ, ठीक है।.....ख़ैर, जैसी तुम्हारी इच्छा; मुझे इस-में कुछ उज़र नहीं।"

"बस, तो किसी दिन आऊँगी।" हरदेई ने कहा—"अभी तो ठहरेगा न?"

सहेली बोली—"बात यह है कि मौजी आदमी है। ठहरे, आठ दिन और ठहर जाय; न ठहरे, आज ही चल दे।.....भागवान आदमी हैं, जो जी में आता है, कर सकते हैं; कोई रोक-टोक है नहीं, पैसे की कमी नहीं.....।"

हरदेई ने बात काटकर कहा—"पर यह मौज या लापरवाही तो जवान आदमियों में अच्छी नहीं।"

सहेली जल्दी से बोली—"वाह! इसका मतलब यह थोड़े ही है कि हरएक काम में ला-परवाही करते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य....."

हरदेई ने अनुमान से उसका तात्पर्य समझकर कहा—"ठीक है, ठीक है। अच्छा, तो फिर कब आऊँ?"

"मुझसे पूछती हो?" सहेली ने कहा—"तुम्हारा घर है; आज ही चलो। 'काल करे सो आज कर, आज करे.....।"

हरदेई ने क्षण-भर कुछ सोचा, और सहसा कहा—"अच्छा, चलो, चलती हूँ।"

सहेली ने सोत्साह कहा—"ठीक। शुभ काम जितना जल्दी हो, अच्छा है।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२)

असल में सहेली बेवक़ूफ़ थी। लड़के की सिफ़ारिश उसने जिस ढंग से की, उससे हरदेई को संदेह हुआ, लड़का अयोग्य है। परंतु जब ख़ुद जाकर उसने देखा, तो ख़ुश हो गई। लड़का वास्तव में सर्व-गुण-संपन्न था। विद्वान्, धर्मात्मा, सुंदर; किसी तरह कम न था।

लड़के ने मिलते ही उसे प्रणाम किया, और अत्यंत नम्र-भाव से बोला—"मा, मैं पच्चीस वर्ष का हूँ, और अखंड ब्रह्मचारी हूँ। मैंने अठारह वर्ष तक विभिन्न विद्याओं का अध्ययन किया है। अब पिताजी ने मुझे विवाह करने की आज्ञा दी है। मैं तुम्हारी पुत्री की प्रशंसा सुनकर यहाँ आया, और गुप्त रूप से उसे देखा। मैंने उसे परम विदुषी पाया। अब आप मुझे आज्ञा दें, मैं उसका पाणि-ग्रहण कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करूँ।"

हरदेई युवक की स्पष्टवादिता और तेजस्विता से बहुत प्रभावित हुई। उसने बड़े प्रेम-भाव से युवक के मस्तक पर हाथ फेरा, और अत्यंत स्नेह-सिक्त स्वर में उसे आशीर्वाद दिया।

युवक ने अवनत होकर पूछा—"मा, क्या मेरी प्रार्थना स्वीकृत हुई?"

हरदेई अपनी स्वभाव-सिद्ध कठोरता और गंभीरता को भूल, स-हास्य-मुख कह उठी—"पुत्र! तुम्हारी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।"

युवक ने आगे बढ़कर हरदेई के चरण छुए, और गद्गद कंठ से कहा—"मा, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।"

हरदेई प्रसन्न-मुख घर लौटी।

हे भगवान्! तेरा कोटि-कोटि धन्यवाद है! तूने मेरी चिर-अभिलाषा पूरी की।

मेरी परम विदुषी पुत्री के साथ एक परम विद्वान् का विवाह भी परम आदर्श होगा।.....

ये ही कल्पनाएँ करती हरदेई घर की तरफ़ बढ़ रही थी।

(३)

घर के बाहर एक बाग़ था। उसी में होकर घर में घुसना पड़ता था। हरदेई धीरे-धीरे बाग़ में घुसी। संध्या हो चुकी थी, अँधेरा दौड़ा आता था। सहसा उसके कान में किसी के सिसकी लेकर धीरे-धीरे रोने की आवाज़ पड़ी।

सहसा ठहरकर वह खड़ी हो गई, थोड़ी देर कुछ सोचती रही, और तब धीरे-धीरे उस तरफ़ चल पड़ी।

सामने छोटे-छोटे पेड़ों का झुंड था—ऐसा कि छोटी दीवार-सी मालूम पड़ती थी। आवाज़ इसी झुंड के परे से आ रही थी। हरदेई आशंका और आश्चर्य से, बेआवाज़, एक-एक पग धरती हुई इस सब्ज़ दीवार के पास पहुँच गई।

आह! यह क्या?—हरदेई की आँखों के आगे एक बार अंधकार छा गया! हैं! यह मैं क्या देख रही हूँ! असंभव...! पर नहीं, सामने ही तो दिखाई दे रहा है!

उसकी मानसिक अवस्था का चित्रण कैसे करूँ? मानो उसका सारा ज्ञान एकबारगी लुप्त हो गया। शरीर का रक्त मानो बर्फ़ की तरह जम गया। साँस चलनी मानो एकदम बंद हो गई।

पाठक, उसने क्या देखा, आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? मेरा विश्वास है, नहीं।

उसने देखा, उसकी परम विदुषी, चरित्रवान्, पंडिता पुत्री, गले में ताज़े फूलों की माला डाले, सूर्यसिंह की गोद में पड़ी, सिसक-सिसककर रो रही है।

सूर्यसिंह उसी गाँव का एक सुंदर राजपूत युवक था। शरीर का सुंदर और मा-बाप से विहीन था।

अब सोचिए आप, हरदेई के मन की अवस्था क्या हुई होगी?

उसने इस भयंकर दृश्य की ताब न लाकर, एक बार मुँह फेर लिया, और वहाँ से चले जाने की चेष्टा की। परंतु साहब, इसे कोई जादू कहूँ—या मूर्च्छा कहूँ—या क्या कहूँ?—कि उसके पैर उठ न सके।

सूर्यसिंह की आँखें भी आँसुओं से भरी थीं। उसने फूलवती का चुंबन कर, गद्गद कंठ से कहा—"प्रिये, रुदन से लाभ नहीं। अगर हमारा प्रेम सच्चा है, तो परमात्मा अवश्य सहायता करेंगे।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फूलवती ने रोते हुए कहा—"हाय ! मैं मर क्यों नहीं जाती !"

"शांत हो, प्रिये !" सूर्यसिंह ने कहा—"अभी कुछ नहीं बिगड़ा है । अभी से ऐसी निराश क्यों होती हो ?"

फूलवती ने कहा—"प्यारे, मा उसे अवश्य पसंद कर लेंगी, इसका मुझे निश्चय है !"

"पर देखो ।" सूर्यसिंह ने आशा दिलाई—"क्यों न सब बात स्पष्ट अपनी मा से कह देती हो ?"

"आह !" उसने सिसककर कहा—"मैं मा के सामने यह बात कहने के पूर्व मर जाऊँ, तो अच्छा है । ...नहीं ! नहीं...!"

"अच्छा तो फिर ।" सूर्यसिंह ने निराश होकर कहा—"मैं अपने स्वार्थ के लिये तुम्हें कर्तव्य-च्युत नहीं करना चाहता । तुम जिस प्रकार सुखी रहो, मुझे उसमें ही सुख है ।"

"नहीं, प्यारे," फूलवती ने अपने गले की माला सूर्यसिंह के गले में डालकर कहा—"यह शरीर इस जन्म में आपका हो चुका । इस जीवन में मैं किसी पर-पुरुष की ओर देखूँ, तो महापापिनी हूँ ।...नहीं प्यारे, यह असंभव है, ऐसा न कहो ।"

सूर्यसिंह क्षण-भर फूलवती का मुँह ताकता रहा, और तब उसे कठिन आलिंगन में आबद्ध कर, गंभीर प्रेम-भरे स्वर में बोला—"प्यारी, प्राण दे दूँगा, पर तुम्हें न छोड़ूँगा ।"

यह आवाज़ मानो उसके अंतस्तल से निकल रही थी !

(४)

ओफ़् ! अरे ! घोर अधर्म ! नहीं, कभी नहीं, ऐसा नहीं हो सकता; हम कभी ऐसा न होने देंगे । ब्राह्मण की लड़की राजपूत को ब्याही जाय ? कभी नहीं, कभी नहीं ! बुढ़िया की बुद्धि मारी गई है ! ब्राह्मणत्व पर ऐसा घोर कलंक ! धर्म पर ऐसा भयंकर आघात ! चलो, उस बुढ़िया का गला घोट दें ! हरामज़ादी ! बदमाश ! ऐसी निरंकुशता ! ऐसा दुस्साहस !

उस खलबली का शाब्दिक रूप यह था, जो हरदेई का निश्चय सुनकर गाँव के ब्राह्मणों में मची । और मचती भी क्यों न ? भला आप ही सोचिए, एक उच्च कुल की ब्राह्मण-कन्या राजपूत से ब्याही जाय ! भला कोई बात है ? एकदम अनहोनी घटना !

सामाजिक बहिष्कार तो ख़ैर एक मामूली बात थी । उन लोगों ने हरदेई पर हर प्रकार का ज़ोर डालकर यह शादी मंसूख़ कराने का इरादा किया ।

जब पंडितों का क्रोधोन्मत्त गिरोह हरदेई के मकान की तरफ़ जा रहा था, तो पंडित दीनानाथ बोले—"सच कहते हैं. औरत की मति गुद्दी के पीछे होती है। कैसी पंडिता बनी फिरती थी.....।"

एक और पंडित महाशय ने मुँह बनाकर कहा—"अरे ख़ाक पड़ी ऐसे सुसरे पांडित्य में...!"

हरस्वरूप बोले—"धिक् ! कैसी कुबुद्धि है ! ब्राह्मण की बेटी राजपूत के घर...! उफ़् ! रोंगटे खड़े हो जाते हैं !"

बूढ़े जगन्नाथ ने हाथ की लाठी ज़मीन पर जमाकर कहा—"मेरे जोते-जी यह अनाचार नहीं हो सकता !"

बहुतों ने कहा—"...नहीं हो सकता ! नहीं हो सकता !!"

जब सब चुप हुए, तो अधेड़ रामनाथ गंभीरता-पूर्वक बोले—"इसमें कुछ अपराध हम लोगों का भी है ।"

"कैसे ?"

"देखिए, लड़की सोलह-सत्तरह बरस की हुई, मगर अब तक उसका विवाह न हो सका । अगर उस विधवा ने कोई कुलीन और योग्य पात्र नहीं पाया, तो क्या हम लोगों का कर्तव्य नहीं था कि उसके लिये कोई लड़का तलाश कर देते ?"

कुछ क्षण के लिये सब चुप ! फिर सहसा कई आवाज़ें एक साथ निकलीं—"ठीक है, था क्यों नहीं ! ज़रूर था ।"

रामनाथ बोले—"ज़रा उस बेचारी की मजबूरी पर भी तो ग़ौर कीजिए ! वह और करती क्या ? लड़की को सारी उम्र कुँवारी तो रख नहीं सकती थी ?"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हरस्वरूप ने कहा—"हाँ, ठीक है। ऐसा कैसे हो सकता था?"

"कुएँ में डुबो देती!" सहसा किसी ने सक्रोध कहा—"आपको पता नहीं, सारा अपराध उस लड़की का है।"

"कैसे?"

"एक अत्यंत विद्वान् ब्राह्मण युवक", उक्त महाशय, जो हरदेई की सहेली के पति थे, बोले—"उससे विवाह करना चाहता था, और हरदेई राज़ी भी हो गई थी.....।"

"परंतु.....?"—अनेक कंठों से एक साथ निकला।

"परंतु वह लड़की उस बदमाश सूर्यसिंह से गुप्त प्रेम करती थी। सुनते हैं, उसने अपनी मा से कह दिया—'मैं विवाह करूँगी, तो इसके साथ; नहीं ज़हर खाकर मर जाऊँगी।' लाचार होकर बेचारी को करना पड़ा।"

लोग इस नई ख़बर पर आश्चर्य भी प्रकट न कर पाए थे कि और एक महाशय बोले—"नहीं जी, अपराध उस बुढ़िया हरदेई का है। लड़की ने कुछ नहीं कहा। कहते हैं, उसने सूर्यसिंह के साथ लड़की को बात करते देख लिया, बस, उसी के साथ शादी कर देने का निश्चय कर लिया। यह जवानी तो भाई ग्राहय, दीवानी होती है। उस आँखों की अंधी को यह पट्टा छिपाकर लड़की को डाँट देना चाहिए था, न कि.....।"

अब सब इनके पक्ष में "ठीक है! ठीक है!" कहने लगे।

बूढ़े जगन्नाथ ने फिर अपनी लाठी ज़मीन पर जमाई, और कठोर स्वर में कहा—"कुछ भी हो, हम यह विवाह न होने देंगे, चाहे दो-चार की हत्या हो जाय! देखें, कौन भाई का लाल ब्याह कराता है?"

इतने में पाँच-सात पंडितों का गिरोह सामने से आता दिखाई पड़ा। दोनों गिरोह मिले। नवागंतुक गिरोह में से एक पंडित महाशय बोले—"भाई, ब्याह रुक नहीं सकेगा। हम लोग सब कुछ करके हार गए।"

"क्यों?"

"हरदेई कहती है—'आप लोग मेरा बहिष्कार कर सकते हैं, और कोई अधिकार आपको नहीं है, मेरे मन में जो आवेगा, करूँगी।' बताइए, इससे ज़्यादा क्या किया जा सकता है?"

जगन्नाथ ने कड़ककर कहा, "यह नहीं कहा, हम तेरा सिर फोड़ डालेंगे?"

उन महाशय ने कहा—"भला यह कहा जा सकता है? कैसी बात करते हैं आप?"

"कहा नहीं, किया जायगा!" जगन्नाथ ने लाठी ज़मीन पर मारकर कहा—"इस लाठी से उस बुढ़िया का सिर फोड़ूँगा!"

"मगर अपना सिर बचाकर", वह पंडित महाशय बोले—"वह बदमाश सूर्यसिंह बंदूक़ लिए बैठा है।"

जगन्नाथ ने शायद इसका उत्तर देना ज़रूरी न समझा, या जाने क्या हुआ, बहरहाल वह चुप रह गए।

अब पंडित हरस्वरूप ने, एक छोटी-सी निस्तब्धता के बाद, कहा—"अच्छा, विवाह-संस्कार कौन करावेगा?"

वह महाशय बोले—"भरतपुर के विद्वान् युवक.....।"

लोगों के मुँह से एक आश्चर्य की चीख़ निकल गई!

हरदेई की सहेली के पति महाशय ने पूछा—"वह?—उन्होंने कैसे स्वीकार किया? वह तो ख़ुद इस लड़की से विवाह.....।"

"हाँ, मगर सूर्यसिंह से लड़की के प्रेम का हाल सुनकर वह इस काम के लिये सहर्ष तैयार हो गए। क्या कहें भाई, बड़े-बड़े विद्वानों की बुद्धि भी कभी-कभी भ्रष्ट हो जाती है!"

चलो भाई, हमारी तरफ़ से कोई चूल्हे में जाय, हमें क्या मतलब?

(५)

ब्याह तो ख़ैर हो ही गया, पर ब्याह की ख़बर से गाँव में जितनी खलबली मची थी, उससे दुगनी, चौगुनी और दसगुनी खलबली तब मची, जब कि अगले दिन सुना गया कि हरदेई ने नव-विवाहिता बेटी के नाम एक पत्र लिखकर रात में संखिया खाकर जान दे दी!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह

[साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ]

(४)

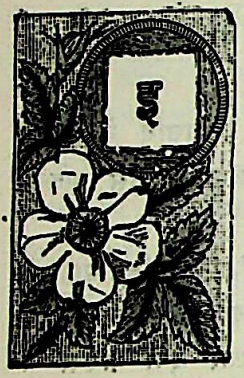

सके बाद मार्ग में इंद्रसिंह ने बीमारी के कारण अपना साथ में चलना कष्टकर बतलाकर महाराज से अपने पुत्र को साथ ले जाने की प्रार्थना की। इसी के अनुसार यह डीडवाने से उसके पुत्र को लेकर साँभर * होते हुए मारोठ पहुँचे और वहाँ पर अधिकार कर बहादुरशाह के मुक़ाबले को चले †।

इसी बीच पंजाब में सिक्खों का उपद्रव उठ खड़ा हुआ ‡। अतः बहादुरशाह ने राजपूताने में फिर से झगड़ा उत्पन्न करना उचित न समझा, और वि० सं० १७६७ के आषाढ़ (ई० सन् १७१० के जून) में अजमेर पहुँच, महाबतख़ाँ की मारफ़त महाराज से संधि कर ली ※। इसके अनुसार जोधपुर पर भी महाराज का स्वत्व स्वीकार कर लिया गया †।

---

* वि० सं० १७६६ की चैत्र-सुदी १५ के, साँभर से, महाराज के लिखे, दयालदास के नाम के पत्र में, लिखा है कि तू किसी बात की फ़िक्र न करना। बादशाह ऐसा करेंगे कि वह बहुत दिन तक याद करेगा। हाँ, अगर वह मेल करेगा, तो उसे हमारी इच्छा के अनुसार शर्तें माननी होंगी।

† अजितोदय सर्ग १६, श्लो० १६-३०।

‡ खेटर मुग़ल्स में पहले-पहल बादशाह को इसकी सूचना का ई० सन् १७१० की ३० मई को अजमेर के निकट पहुँचने पर मिलना लिखा है। (देखो भा० १, पृ० १०४) परंतु अन्य गणितज्ञों के अनुसार उस दिन हि० सन् ११२२ की २ रबिउल आख़ीर को ६ जून (वि० सं० १७६७ की आषाढ़-बदी ६) आती है।

※ वि०सं० १७६६ (चैत्रादि १७६७) की आषाढ़-बदी ११ के, महाराज के, दयालदास के नाम लिखे पत्र में लिखा है कि शाहज़ादे अज़ीम और महाबतख़ाँ ने आदमी भेजकर कहलाया कि अपने भरोसे के पुरुष भेज दो, ताकि आपके इच्छानुसार संधि करवा दी जाय। इस पर राठौड़ भगवानदास आदि ५ आदमी वहाँ भेजे गए। सब बातें बादशाह ने स्वीकार कर हमें बुलवाया। इस पर हम भी उससे मिलने चले। यह देख उसने ख़ानख़ाना मुहब्बतख़ाँ और बुंदेला चतुरसाल को हमारी पेशवाई में भेजा। आषाढ़-बदी ११ को उधर से तो हमने डूमाड़े से सवारी की, और उधर बादशाह राजोसी से चला। शाहज़ादा अज़ीम भी साथ था। पास आने पर शाहज़ादा पालकी से उतर घोड़े पर सवार हुआ, और हमें साथ ले जाकर बादशाह से मिलाया। उसने भी हमें जोधपुर का अधिकार, १६ हज़ारी ज़ात और १४ हज़ार सवारों का मंसब, घोड़ा, हाथी, ख़िलअत, दुगदुगी, तलवार, जड़ाऊ सरपेच आदि दिए।

† इसी समय आँबेर पर भी महाराज जयसिंहजी का स्वत्व मान लिया गया। इसके बाद ये दोनों नरेश बादशाह से मिलकर अपने-अपने देशों को लौट गए, और बादशाह भी पंजाब की तरफ़ के उपद्रव को शांत करने के लिये वि० सं० १७६७ की आषाढ़-सुदी २ (१७ जून) को अजमेर से पंजाब की तरफ़ चल दिया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसी वर्ष महाराज ने तीर्थ-यात्रा का विचार किया *। अतः यह जोधपुर से चलकर राजगढ़, पाटन और देहली होते हुए कुरुक्षेत्र पहुँचे, और वहाँ से अन्य तीर्थों में स्नान करते हुए साढोर होकर

ऐलफ़िन्स्टन ने अपने हिंदोस्तान के इतिहास में लिखा है कि बादशाह ने अपने पुत्र के द्वारा संधि की थी। उस समय उसने जयपुर और जोधपुर के नरेशों की सारी शर्तें स्वीकार कर इनकी स्वाधीनता भी उदयपुर के राना के समान ही मान ली। (देखो पृ० ६६२)

अजितोदय से भी शाहज़ादे अज़ीमुश्शान के द्वारा संधि का होना प्रकट होता है। (देखो सर्ग १६, श्लो० ३१-३८)

हिस्ट्री ऑफ़् औरंगज़ेब में लिखा है कि ई० सन् १७०६ के अगस्त में अजितसिंह ने अंतिम बार दल-बल-सहित जोधपुर में प्रवेश किया, और बादशाह ने भी उसका स्वत्व पूरी तौर से स्वीकार कर लिया। (देखो भा० ३, पृ० ४२४)

लेटर मुग़ल्स में लिखा है कि जिस समय बहादुरशाह का शिविर बनास के तट पर था, उस समय हाँसी का नाहरख़ाँ और यारमुहम्मद, जो राजस्थान के नरेशों को दबाने के लिये भेजे गए थे, उनके मंत्रियों को लेकर हाज़िर हुए। ई० सन् १७१० की २२ मई (वि० सं० १७६७ की ज्येष्ठ-सुदी ५) को शाहज़ादे अज़ीमुश्शान के द्वारा उक्त नरेशों के पत्र बादशाह के सामने पेश किए गए। साथ ही शाहज़ादे की प्रार्थना पर उनके क़ुसूर माफ़ कर दिए गए, और उसी (शाहज़ादे) के द्वारा उनके मंत्रियों को भी ख़िलअत दिए गए। इसके पाँचवें दिन जब बादशाह का डेरा टोडे के पास हुआ, तब उसने १८ ख़िलअत राना अमरसिंह, महाराजा अजितसिंह और राजा जयसिंह के आदमियों को दिए। साथ ही १ ख़िलअत राठौड़ दुर्गादास का पत्र लानेवाले को भी दिया गया। इसी बीच बादशाह को सरहिंद के उत्तर में (बंदा की अधिनायकता में) सिक्खों के उपद्रव उठाने की सूचना मिली। अतः उसने महाबत-ख़ाँ को उपर्युक्त नरेशों को समझाकर अपने पास ले आने के लिये भेजा। इसके बाद जब उन्होंने संधि करना स्वीकार कर लिया, तब बादशाह ने अपने वज़ीर असदख़ाँ को उनकी अगवानी को रवाना किया। इस पर २१ जून को जोधपुर और जयपुर के नरेश उससे आकर मिले, और प्रत्येक ने २०० मुहरें और २००० रुपए उसकी भेट किए। बादशाह ने भी उन्हें ख़िलअत, जड़ाऊ तलवारें, कटार, पट्टे, हाथी और फ़ारस के घोड़े देकर अपनी-अपनी राजधानियों को लौट जाने की आज्ञा दी। इसी के अनुसार पुष्कर तक तो दोनो राजा एक साथ लौटे, परंतु वहाँ से जयसिंहजी तो जयपुर की तरफ़ रवाना हो गए और महाराज जुलाई (आषाढ़) के अंतिम भाग में जोधपुर चले आए। बादशाह भी २२ जून (आषाढ़-सुदी ७) को अजमेर जा पहुँचा।

उसी इतिहास में कमवरख़ाँ के लेख के आधार पर यह भी लिखा है कि जिस समय दोनो राजा बादशाह से मिलने आए, उस समय कमवर ने देखा कि शाही कैंप के चारो ओर की पहाड़ियाँ और मैदान राजपूतों से भरे हैं। उस समय कई हज़ार शुतर-सवार पहाड़ों के दर्रों में छिपे थे, और प्रत्येक ऊँट पर बंदूक़ों या तीर-कमानों से सजे हुए दो-दो या तीन-तीन योद्धा बैठे थे। उनका उद्देश्य यह था कि यदि बादशाह की तरफ़ से किसी प्रकार का धोका हो, तो अपने प्राण देकर भी अपने स्वामियों की रक्षा करें। (देखो भा० १, पृ० ७१-७३)

महाराज के रामपुर से लिखे वि० सं० १७६६ (चैत्रादि १७६७) के वैशाख-बदी १३ के दयालदास के नाम के पत्र से बादशाह का महाराज को जोधपुर और जयसिंहजी को आँबेर देने का वादा करना प्रकट होता है।

* कर्नल टॉड ने लिखा है कि वि० सं० १७६८ में बादशाह की तरफ़ से महाराज ने नाहन (सिरमूर = पंजाब) के राजा पर चढ़ाई की, और उसे हराकर वहाँ से लौटते हुए यह तीर्थ-यात्रा की गए। (क्रुक-संपादित टॉड का राजस्थान का इतिहास भा० २, पृ० १०२०) राजरूपक में भी नाहन-विजय का उल्लेख है। (देखो पृ० १८७)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हरिद्वार गए। यहीं पर इन्हें राव इंद्रसिंह का भेजा हुआ एक पत्र मिला। उसमें महाराज की अनुपस्थिति में तहव्वुरअली द्वारा मारवाड़ में किए जानेवाले उपद्रवों का वर्णन था ❀। इस पत्र को पढ़ते ही महाराज वहाँ से मारवाड़ को लौट चले, और कुछ ही दिनों में मारोठ आ पहुँचे। इनके आगमन का समाचार सुनते ही तहव्वुरअली गोठ माँगलोद से भागकर अजमेर चला गया। अतः महाराज पुष्कर स्नान कर मेड़ते होते हुए जोधपुर को चले। मार्ग में ही इन्हें बहादुरशाह के लाहौर में मरने की सूचना मिली †।

इसके बाद उसके चारो पुत्रों के बीच बादशाहत के लिये झगड़ा उठ खड़ा हुआ। यह देख महाराज ने भी आस-पास के यवन शासकों का नाश करना शुरू कर दिया।

इसके बाद अपने भाइयों को मारकर चैत्र-बदी ८ (१६ मार्च) को बहादुरशाह का पुत्र मोइज़ुद्दीन जहाँदारशाह तख़्त पर बैठा ‡।

विपक्ष का साथ देने के कारण ❀ यह किशनगढ़-नरेश राजसिंहजी से नाराज़ हो गया था। इसलिये वे लाहौर से लौटकर रूपनगर चले आए, और उन्होंने महाराज को पत्र लिखकर समय पड़ने पर सहायता करने की प्रार्थना की। इस पर इन्होंने भी उन्हें अपना भतीजा समझ यह बात स्वीकार कर ली †। इसके कुछ दिन बाद महाराज ने आस-पास के प्रदेशों पर अधिकार करने का विचार कर किशनगढ़-नरेश राजसिंहजी को भी सेना लेकर उपस्थित होने को लिखा, परंतु उन्होंने इसकी कुछ भी परवा न की। यह देख महाराज बाँदरवाड़ा, भिणाय और विजयगढ़ को विजय करते हुए देवगढ़ पहुँचे ‡। जिस समय इनका

❀ राजरूपक में इस घटना का उल्लेख नहीं है।

† अजितोदय सर्ग १६, श्लो० ७०-६०।

बहादुरशाह वि० सं० १७६८ की फागुन-बदी ५ (ई० सन् १७१२ की १६ फ़रवरी) को मरा था। क्रौनोलॉजी ऑफ़् मॉडर्न इंडिया में २८ फ़रवरी लिखी है। (देखो पृ० १५३) परंतु लेटर मुग़ल्स में २७ फ़रवरी १७१२ की रात को उसका मरना लिखा है। (देखो भा० १, पृ० १३५)

‡ लेटर मुग़ल्स में उस दिन (हि० सन् १२२४ की २१ सफ़र को) २१ मार्च का होना लिखा है। (देखो भा० १, पृ० १८६) और क्रौनोलॉजी ऑफ़् मॉडर्न इंडिया में उस दिन २० एप्रिल लिखी है। (देखो पृ० १५४)

राजरूपक में लिखा है कि उसने महाराज को गुजरात की सूबेदारी दी थी। परंतु महाराज के उधर जाने के पूर्व ही वह मर गया, और फ़र्रुख़सियर देहली के तख़्त पर बैठा। (हस्त-लिखित पुस्तक पृ० १८८)

जहाँदारशाह का जलूसी सन् १४ रबीउल अव्वल हि० सन् ११२४ (वि० सं० १७६६ की चैत्र-सुदी १५ = ई० सन् १७१२ की १० एप्रिल) से माना गया था।

❀ इन्होंने शायद लाहौर के युद्ध में अज़ीमुश्शान का पक्ष लिया था। इसी से मोइज़ुद्दीन जहाँदारशाह इनसे नाराज़ था।

† इसकी पुष्टि किशनगढ़-नरेश के वि० सं० १७६८ की माघ-सुदी ८ के महाराज के नाम के पत्र से भी होती है।

‡ वि० सं० १७६६ (चैत्रादि संवत् १७७०) के, महाराज के लिखे, पँचोली बालकृष्ण के नाम के पत्रों से ज्ञात होता है कि महाराज ने उसे जूनिया, मसूदा, तोड़ा, बाँदरवाड़ा और शक्तावतों के आश्रित प्रदेशों को विजय करने के लिये भेजा था, और उसने वे प्रदेश विजय कर लिए थे।

ऐसा ज्ञात होता है कि महाराज के उधर से लौट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निवास उक्त स्थान पर था, उस समय फिर इन्होंने पत्र लिखकर राजसिंहजी को अपने पास बुलवाया। परंतु जब इस बार भी उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया, तब वि० सं० १७६६ (ई० सन् १७१२) में इन्होंने किशनगढ़ पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया, और उसके बाद ही रूपनगर को भी घेर लिया। पहले तो राजसिंहजी ने भी बड़ी वीरता से इनका सामना किया। परंतु अंत में उन्हें महाराज की बात मान लेनी पड़ी। यहाँ से राजसिंहजी को साथ लेकर यह साँभर पहुँचे *। इसकी सूचना पाते ही आँबेर-नरेश जयसिंहजो राजा उदयसिंहजी और राव मनोहरदास शेखावत वहाँ आकर इनसे मिले**। इसी समय बादशाह मोइज़ुद्दीन भी लाहौर से देहली की तरफ़ चला आया था। परंतु शीघ्र ही उसे हाजीपुर से शाहज़ादे (अज़ीमुश्शान के पुत्र) फ़र्रुख़सियर की चढ़ाई का समाचार मिल जाने से उसने महाराज से छेड़-छाड़ करना उचित न समझा। महाराज भी आँबेर-नरेश जयसिंहजी आदि के लौट जाने पर जोधपुर चले आए †।

कुछ दिन बाद जब मोइज़ुद्दीन जहाँदारशाह को क़ैदकर फ़र्रुख़सियर बादशाही त.ख्त पर बैठा ‡, तब राव इंद्रसिंह का पुत्र मोहकमसिंह, बगड़ी के ठाकुर दुर्जनसिंह को साथ लेकर, देहली चला गया, और वहाँ पर महाराज के विरुद्ध बादशाह के कान भरने लगा। यह बात महाराज को बहुत बुरी लगी। अतः इन्होंने भाटी अमरसिंह को भेज

जोधपुर आने पर उपर्युक्त लोगों ने फिर कहीं-कहीं सिर उठाया होगा। अतः पं० बालकृष्ण ने कुछ को फिर से जीता।

* महाराज के, दयालदास के नाम लिखे, एक पत्र में (इसका नीचे का भाग फटा हुआ है) लिखा है कि राजसिंहजी को बुलाने पर उन्होंने आप न आकर अपने तीनो लड़कों को भेजने को लिखा। इस पर किशनगढ़ आदि पर अधिकार कर रूपनगर को भी हमने घेर लिया। जब क़िला फ़तह हो जाने की सूरत हुई, तो राजसिंहजी ने अपना क़ुसूर मानकर माफ़ी माँग ली और आश्विन-बदी १ को हमारे पास चले आए। साथ ही हाथी और तोपें भी नज़र कीं। वि० सं० १७६६ (चैत्रादि संवत् १७७०) की वैशाख-बदी ६ के महाराज के लिखे अपने फ़ौज-बख़्शी पं० बालकृष्ण के नाम के पत्र से उस समय मारवाड़ आदि पर महाराज का क़ब्ज़ा होना प्रकट होता है।

महाराज के वि० सं० १७६६ की मँगसिर-बदी १० के लिखे, दयालदास के नाम के पत्र में लिखा है कि आज राय रघुनाथ का पत्र आया। उससे ज्ञात हुआ कि हमारे कहे अनुसार बादशाह ने सब बातें मान लीं। अहमदाबाद का सूबा और सोरठ, ईडर, पट्टन का दरोबस्त हमको दिया। उज्जैन का सूबा और मंदसोर आदि का दरोबस्त राजा जयसिंहजी को दिलवाया है। साथ ही इंद्रसिंहजी और राजसिंहजी को क्रमशः नागौर और किशनगढ़ तथा रूपनगर दिलवाया है। जिन-जिन लोगों ने हमारी सेवा की उन सबके काम ठीक तौर से करवा दिए हैं।

** राजरूपक में इन घटनाओं का उल्लेख नहीं है। वीर-विनोद में प्रकाशित मारवाड़ के इतिहास में किशनगढ़ की चढ़ाई का वि० सं० १७६८ के भादों (ई० सन् १७११ के सितंबर) में होना लिखा है।

† अजितोदय सर्ग २०, श्लो० १-२१। उक्त काव्य में यह भी लिखा है कि जयपुर और जोधपुर के नरेशों का साँभर में एकत्रित होना सुनकर ही बादशाह ने लाहौर से लौटने में शीघ्रता की थी।

‡ फ़र्रुख़सियर वि० सं० १७६६ की माघ-बदी १० (ई० सन् १७१३ की १० जनवरी) को बादशाह हुआ था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मोहकमसिंह को मारवा डाला ❀। इस पर दुर्जनसिंह भागकर दक्षिण में चला गया।

इसके बाद महाराज ५ महीने तक मेड़ते में रहे, और वहीं से फिर इन्होंने राव इंद्रसिंह को अपने पास आने को लिखा। परंतु वह इनके पास न आकर कुछ दिन के लिये सैयदों के पास देहली चला गया। इसी प्रकार किशनगढ़-नरेश राजसिंहजी भी देहली पहुँच बादशाह के पास रहने लगे †।

ये लोग महाराज के विरुद्ध फ़र्रुख़सियर को भड़काते रहते थे। अतः उसने भी इनके कथनानुसार पहले तो पत्र लिखकर महाराज-कुमार अभयसिंहजी को दरबार में बुलाने की कोशिश की। परंतु जब महाराज ने इस पर कुछ ध्यान न दिया, तब वि० सं० १७७० (ई० सन् १७१३) में उसने सैयद हुसैनअलीख़ाँ (अमीरुल उमरा) को जोधपुर पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी ❀। इसकी सूचना पाते ही महाराज ने खींवसी को तो हुसैनअली से मिलकर बातचीत तय करने के लिये भेज दिया, और स्वयं सेना सजाकर नगर से बाहर राई के बाग़ के पास डेरा लगाया। खींवसी ने मेड़ते के पास (बूँध्यावास में) पहुँच † शाही सेना-नायक से संधि कर ली ‡। अतः वह

❀ अजितोदय सर्ग २०, श्लो० २४-२६। लेटर मुग़ल्स (भा० १, पृ० २८५ का फ़ुटनोट) में मोहकम के स्थान पर मुकंद (और मुक्कन) लिखा है। वीर-विनोद में प्रकाशित मारवाड़ के इतिहास में इस घटना का वि० सं० १७७० की भादों-सुदी ५ (ई० सन् १७१३ की २७ अगस्त ?) को होना लिखा है। सेहरुल मुताख़रीन में जिस राजा मोहकमसिंह का हि० सन् ११२३ की १३ मुहर्रम (वि० सं० १७७७ की कार्त्तिक-सुदी १५ = ई० सन् १७१० की ३ नवंबर) को बादशाह मुहम्मदशाह की सेना को छोड़कर अब्दुल्लाख़ाँ से मिल जाना, और युद्ध होने पर दूसरे दिन रात को उसकी सेना से भी भाग जाना लिखा है, वह इस मोहकम से भिन्न था; क्योंकि उसके नाम के आगे राव न लगा होकर राजा की उपाधि लगी है। (देखो भा० २, पृ० ४४०) साथ ही मआसिरुल उमरा में उसे खत्री लिखा है। (देखो भा० २, पृ० ३३०)

† अजितोदय सर्ग २०, श्लो० ३६-३६

❀ मि० इरविन ने अपने लेटर मुग़ल्स-नामक इतिहास के पृ० २८५-२९० में लिखा है कि बहादुरशाह महाराज अजितसिंहजी को दबाने में कृतकार्य न हो सका, और उसके मरते ही शाही तख़्त के लिये झगड़ा उठ खड़ा हुआ। यह देख महाराज ने भी मारवाड़ के आस-पास गो-वध बंदकर [मुसलमानी धर्म के प्रचार को रोक दिया। इसके बाद अजमेर पर भी इन्होंने अपना अधिकार कर लिया। उसी इतिहास में कमवरख़ाँ के लेख के आधार पर यह भी लिखा है कि इधर तो बादशाह ने हुसेन कुली को जोधपुर पर चढ़ाई करने के लिये भेजा और उधर अनेक प्रलोभनों से पूर्ण पत्र लिखकर महाराज से उसे मार डालने का आग्रह किया। (देखो लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० २८६)

† फ़ारसी-इतिहासों में हुसैनअली का मारवाड़ के गाँवों को लूटते हुए मेड़ते पहुँचना लिखा है।

‡ कहीं-कहीं ऐसा भी लिखा मिलता है कि मीर-जुमला ने ही दोनो सैयद-भ्राताओं को एक स्थान से हटाने के लिये बादशाह से कहकर हुसैनअली को जोधपुर पर चढ़ाई करने के लिये भिजवाया था। साथ ही उसने एक फ़र्मान महाराज के नाम भी भिजवाया था। उसमें इनसे हुसैनअली को मार डालने का आग्रह किया गया था। इसके बाद उधर बादशाह ने अब्दुल्लाख़ाँ को पकड़ने की कोशिश शुरू की। परंतु इस बात के प्रकट हो जाने से उसने अपने भाई (हुसैनअली) को शीघ्र लौट आने के लिये लिख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाराज-कुमार अभयसिंहजी * को लेकर देहली लौट गया। वहाँ पर वि० सं० १७७१ की सावन-बदी ४ (ई० सन् १७१४ की १६ जुलाई) को बादशाह ने महाराज-कुमार से मिलकर उनका बड़ा आदर-सत्कार किया।

बांबे गज़ेटियर में लिखा है कि इसी अवसर पर बादशाह ने महाराज-कुमार को सोरठ की हुकूमत (फ़ौजदारी) दी थी। अतः महाराज-कुमार स्वयं तो बादशाह के पास ही रहे, परंतु उन्होंने कायस्थ फ़तहसिंह को अपना नायब बनाकर वहाँ का प्रबंध करने के लिये जूनागढ़ भेज दिया *। इसके बाद वि० सं० १७७२ के ज्येष्ठ (ई० सन् १७१५ की मई) में महाराज-कुमार लौटकर जोधपुर चले आए।

इसी वर्ष (वि० सं० १७७२=ई० सन् १७१५) महाराज को गुजरात की सूबेदारी और ५,००० सवारों का मंसब मिला †। इस पर यह जालोर ‡ होते हुए भीनमाल पहुँचे और वहाँ से व्यास दीपचंद की सलाह से चाँपावत हरिसिंह और भाटी खेतसी को जैतावत दुर्जनसिंह और बनावटी दलथंभन के पीछे रवाना किया। इनको आज्ञा दी गई थी कि वे उक्त दुर्जनसिंह और दलथंभन का पता लगाकर उन्हें मार डालें। (इसी के साथ मेड़ते के शासक पेमसी को भी नागौर पर चढ़ाई करने की आज्ञा भेजी गई।) इसके बाद महाराज बड़गाँव की तरफ़ होते हुए आबू के पास पहुँचे और वहाँ के देवड़ा शक्तिसिंह को हराकर पालनपुर की तरफ़ चले। इन्हें आया देख वहाँ के यवन-शासक (फ़ीरोज़ख़ाँ) ने और बावड़ी के पंचायण ने इनसे संधि कर ली। इसके बाद ये कोली बाड़े से कर लेते हुए पाटन पहुँचे। यहाँ से महाराज ने अपनी सेना के एक भाग को तो मालगढ़ पर चढ़ाई करने को आज्ञा दी, और दूसरे भाग के साथ स्वयं अहमदाबाद की तरफ़ चले। महाराज की आज्ञा के अनुसार सेना का वह भाग भी कोलियों के उपद्रव को शांत कर

भेजा, और इधर महाराज ने हुसैनअली को उसके मारने के लिये आया हुआ शाही फ़र्मान दिखला दिया। इस पर वह भी महाराज से संधि कर तत्काल लौट गया।

मुंतख़िबुल्लुबाब से भी इस बात की बहुत कुछ पुष्टि होती है। (देखो भा० २, पृ० ७३८)

अजितोदय में लिखा है कि जब बादशाह के कहने से हुसैनअली मारवाड़ की तरफ़ चला आया, तब पीछे से देहली में मीर जुमला के बहकाने से बादशाह ने उसके बड़े भाई को मार डालने का प्रबंध किया। परंतु इसमें उसे सफलता नहीं हुई। इसकी सूचना पाते ही हुसैनअली महाराज से संधि कर देहली लौट गया। (देखो सर्ग ११, श्लो० १-३८) उक्त काव्य में इस चढ़ाई के कारणों में मोहकमसिंह का देहली में मारा जाना भी एक कारण माना गया है। परंतु कुछ भी हो, इतना तो मानना ही पड़ता है कि इस बार की संधि में मारवाड़ के वीरों का वह पूर्व का-सा पौरुष प्रकट न हो सका।

* वि० सं० १७७० (चैत्रादि १७७१) की ज्येष्ठ-बदी १४ के, महाराज के, खींवसी के नाम लिखे पत्र से प्रकट होता है कि इसके एक दिन पूर्व हुसैनअली के तीन अमीर आकर अभयसिंहजी से मिले और उन्हें हाथी पर चढ़ाकर नवाब के पास ले गए। वहाँ पर उसने इनका बड़ा सत्कार किया, और १ हाथी तथा १ कलँगी भेंट में दी।

* बांबे गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६७

† बांबे गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६६ और लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० २६० का फ़ुटनोट

‡ राजरूपक में भादों के अंत तक महाराज का जालोर में निवास करना लिखा है। (देखो पृ० १६८)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मार्ग में महाराज से आ मिला। इसके बाद यह अहमदाबाद पहुँच वहाँ के सूबे का प्रबंध करने में लग गए *।

बांबे गज़ेटियर में लिखा है कि अहमदाबाद पहुँचकर महाराज ने ग़ज़नीख़ाँ जालोरी को पालनपुर और जवाँमर्दख़ाँ बाबी को राधनपुर का हाकिम (फ़ौजदार) बनाया था †।

मोराते अहमदी से ज्ञात होता है कि उसी वर्ष महाराज को प्रसन्न करने के लिये कोल्हापुर के कोतवाल ने ईद के त्योहार पर गाय की क़ुरबानी रोक दी। इससे वहाँ के सारे मुसलमान भड़क उठे ‡।

पहले लिखा जा चुका है कि महाराज ने पेमसो को नागौर-विजय की आज्ञा दी थी। उसी के अनुसार उसने नागौर को घेरकर युद्ध छेड़ दिया। इसी अवसर पर इंद्रसिंह के बहुत-से सरदार भी लालच में पड़कर महाराज के पक्ष में चले आए। अतः जब नगर पर महाराज का अधिकार हो गया, तब राव इंद्रसिंह क़िला छोड़कर § अपने परिवार के साथ कासली-नामक गाँव में जा रहा। परंतु उसका पीछा करता हुआ जोधा दुर्जनसिंह रात्रि में वहाँ जा पहुँचा, और उसने उसके द्वितीय पुत्र मोहनसिंह को भी मार डाला। यह देख इंद्रसिंह भागकर देहली में बादशाह के पास चला गया, और फिर से महाराज के विरुद्ध उसके कान भरने लगा। परंतु इस बार उसे विशेष सफलता नहीं हुई *। यह घटना वि० सं० १७७३ के श्रावण सन् १७१६ की जुलाई) की है।

इसी वर्ष बादशाह ने हैदर कुली को सोरठ का फ़ौजदार बनाया। उस समय वहाँ का प्रबंध महाराज-कुमार अभयसिंहजी के अधिकार में होने से पहले तो उसे हस्तगत करने की उसकी हिम्मत ही न हुई, परंतु अंत में किसी तरह वहाँ पर उसका अधिकार हो गया †।

अगले वर्ष महाराज ने गुजरात में दौरा करते समय द्वारका की यात्रा की, और मार्ग में हलवद के झाला ‡ की कूटनीति से क्रुद्ध हो उसे दंड दिया। इसके बाद यह अहमदाबाद लौट आए। इसी बीच हरिसिंह ने भी कर्माखेड़ी की गढ़ी पर आक्रमण कर दलथंभन और दुर्जनसिंह को मार डाला §।

---

* अजितोदय सर्ग २२, श्लो० ७-३१। उक्त काव्य में दलथंभन का उल्लेख नहीं है, क्योंकि उसके लेखानुसार वह सोझत के युद्ध में ही मारा गया था।

† बांबे गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६६

‡ बांबे गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६६, फ़ुटनोट ३

§ राजरूपक में इस घटना की तिथि सावन-सुदी ३ लिखी है।

* अजितोदय सर्ग २३, श्लो० २-१३, और राजरूपक पृ० २०१-२०५ वि० सं० १७७३ की सावन-सुदी ७ के एक पत्र से भी इसी वर्ष नागौर पर महाराज का अधिकार होना सिद्ध होता है।

† बांबे गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० २६६-३००

‡ अजितोदय सर्ग २३, श्लो० २४-३५। वहीं पर यह भी लिखा है कि हलवद पहुँचने पर महाराज की सेना के साथ जो व्यापारी थे उनके ऊँट रात्रि में चुरा लिए गए। इस पर जब वहाँ के झाला-वंशी शासक से शिकायत की गई, तब उसने इस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इसी से महाराज को उससे युद्ध करना पड़ा। अंत में झाला भागकर नवानगरवालों की शरण में चला गया। अतः पहले तो नवानगरवालों ने भी झाला का पक्ष लेकर महाराज का सामना किया। परंतु अंत में उन्होंने दंड के रुपए देकर महाराज से संधि कर ली।

§ अजितोदय सर्ग २४, श्लो० ३४-३६ और राजरूपक पृ० २०१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुसलमानों के स्वेच्छाचार से नफ़रत होने के कारण महाराज अपने शासन में उनकी स्वच्छंदताओं को दबाए रखते थे। इसी से वि० सं० १७७४ (ई० सन् १७१७) में इस प्रकार की शिकायतों से नाराज होकर बादशाह ने गुजरात का सूबा शम्सामुद्दौला ख़ाँदौराँ नसरतजंग को सौंप दिया। अतः महाराज लौटकर जोधपुर चले आए *।

इसके बाद यह मंडोर, नागोर और मेड़ते का दौरा करते हुए पुष्कर पहुँचे। इसी बीच बादशाह फ़र्रुखसियर और सैयदों के बीच के मनोमालिन्य ने उग्र रूप धारण कर लिया। यह देख बादशाह ने कुतुबुल्मुल्क को धोके से पकड़कर मारना चाहा। परंतु चालाक सैयद को इस बात का पता लग जाने से वह सचेत हो गया। इस पर बादशाह ने नाहरख़ाँ के द्वारा महाराज को अपनी सहायता के लिये बुलवाया †। परंतु नाहरख़ाँ स्वयं भी गुप्त रूप से सैयदों से मिला हुआ था। अतः उसने बादशाह की अव्यवस्थितचित्तता का वर्णन कर महाराज का चित्त भी उसकी तरफ़ से फिरा दिया ‡।

वि० सं० १७७५ को भादों-सुदी ६ (ई० सन् १७१८ की २० अगस्त) को जब महाराज देहली के पास पहुँचे, तब बादशाह ने इनके लिये एतक़ादख़ाँ * के साथ एक कटार भेजी, और इनकी अगवानी के लिये शम्सामुद्दौला को नियत कर उसे आज्ञा दी कि वह महाराज के सामने जाकर जहाँ तक हो, ख़ुशामद आदि से उन्हें अपनी तरफ़ मिलाने का प्रयत्न करे। परंतु महाराज बादशाह की अस्थिरता † और शाही दरबार की हालत से परिचित हो चुके थे। अतः इन्होंने कुतुबुल्मुल्क के साथ जाकर ही बादशाह से मिलना उचित समझा। इसी के अनुसार जब ये दूसरे दिन मंत्री के साथ जाकर बादशाह से मिले, तब ऊपर से तो उसने ख़िलअत आदि देकर इनका सम्मान किया ‡, परंतु इनके मंत्री के साथ आकर मिलने के कारण वह

---

* बांबे गज़ेटियर, भा० १, खंड १, पृ० ३०० और अजितोदय सर्ग २४, श्लो० ५०

† अजितोदय सर्ग २५, श्लो० ४-२३। परंतु उक्त ग्रन्थ में इनका जयपुर-नरेश जयसिंहजी की सलाह से बुलाया जाना और यह देख सैयद भ्राताओं का इनसे मेल कर लेना लिखा है। मुंतख़िबुल्लुबाब में बादशाह का महाराज को अहमदाबाद से बुलवाना और 'महाराजा' के ख़िताब के साथ ही अन्य तरह से भी पद और मान में वृद्धि कर इन्हें अपनी तरफ़ मिलाने की चेष्टा करना लिखा है। (देखो भा० २, पृ० ७६२)

‡ लेटर मुग़ल्स, भा० १, पृ० ३४८

* अजितोदय सर्ग २६, श्लो० ३ और राजरूपक पृ० २०६

† मुंतख़िबुल्लुबाब में फ़र्रुख़सियर की अव्यवस्थितचित्तता के बारे में ये शब्द लिखे हैं—"इज़्मोराय बादशाह बरयक हाल करारन मे गिरिफ़्त" (देखो भा० २, पृ० ७६४)

‡ अजितोदय सर्ग २६, श्लो० ३६-४७

वि० सं० १७७५ की भादों-सुदी ८ के देहली से महाराज के लिखे दयालदास के नाम के पत्र में लिखा है कि भादों-सुदी ७ को हम बादशाह से मिले। बादशाह भी बड़े आदर के साथ बाँह फैलाकर मिला और अपनी दाहनी तरफ़ सबसे ऊपर को खड़ाकर हमको राजराजेश्वर का ख़िताब, ख़िलअत, घोड़ा, हाथी, माही मरातब, मोतियों की माला, जड़ाऊ कटार, जड़ाऊ सरपेच, १,००० सवर दुअस्पा का इज़ाफ़ा और १ करोड़ दाम दिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मन-ही-मन इनसे नाराज़ हो गया ❀ । यह देख इन्होंने भी बादशाही दरबार में जाना छोड़ दिया। परंतु आश्विन-बदी १३ (११ सितंबर) को बादशाह ने मेल करने की इच्छा से इन्हें ख़ाँदौराँ और सरबलंदख़ाँ को भेजकर फिर अपने पास बुलवाया † । इस पर महाराज और कुतुबुल्मुल्क अब्दुल्लाख़ाँ, दोनो एक ही हाथी पर सवार होकर ‡ बादशाह के पास पहुँचे । बादशाह ने भी ऊपर से बड़ी प्रीति दिखलाई ¶ और वज़ीर की सलाह से बीकानेर का अधिकार भी महाराज को दे दिया § । परंतु भीतर-ही-भीतर वह निज़ामुल्मुल्क, मीर जुमला और एतक़ादख़ाँ आदि अनेक अमीरों को मिलाकर इनके मारने का षड्यंत्र रचने लगा। यह देख इधर कुतुबुल्मुल्क ने अपने भाई को, जो उस समय दक्षिण में था, सारा हाल लिख भेजा । और, उधर बादशाह भी, जो सैयदों से पूरा-पूरा द्वेष रखता था, इनके विरुद्ध बराबर षड्यंत्र करने लगा । एक-दो बार तो उसने महाराज के मार डालने या पकड़ लेने की कोशिश भी की ❀, परंतु इसमें उसे सफलता नहीं हुई † ।

अंत में (अब्दुल्लाख़ाँ) कुतुबुल्मुल्क के समझाने से पौष-सुदी ३ (१३ दिसंबर) को स्वयं बादशाह उसे साथ लेकर महाराज के डेरे पर

❀ अजितोदय में लिखा है कि महाराज क़िले से लौटते हुए मार्ग में कुतुबुल्मुल्क के मकान पर ठहरे थे। (देखो सर्ग २६, श्लो० ४६) परंतु किसी ने इसकी सूचना बादशाह को दे दी । इससे बादशाह इनसे और भी अप्रसन्न हो गया । (देखो सर्ग २७, श्लो० २)

† किसी-किसी तवारीख़ में बादशाह का महाराज के द्वारा वज़ीर से मेल करने की इच्छा प्रकट करना भी लिखा है ।

‡ इस प्रकार महाराज को अकेले अब्दुल्लाख़ाँ के हाथी पर सवार होते देख नींबाज़ का ठाकुर अमरसिंह भी उनके पीछे चढ़ बैठा । उसी दिन से सरदार लोग महाराज के पीछे बैठने लगे हैं ।

¶ महाराज के, सिकदार दयालदास के नाम लिखे, वि० सं० १७७५ की पौष-बदी ४ के पत्र में लिखा है कि बादशाह ने इन्हें ख़िलअत, मोतियों की माला, जड़ाऊ कलँगी और एक करोड़ दाम देकर एक हज़ार सवार दुअस्पा की वृद्धि की । इसके अलावा अहमदाबाद का सूबा देने का भी हुक्म दिया ।

§ लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ३४८-३५१

❀ एक बार बादशाह ने सोचा कि शिकार से लौटते हुए वज़ीर के मकान के पास पहुँचने पर जिस समय महाराज (जिनका पड़ाव उसी के मकान के पास था) अपने ख़ेमे से निकलकर उसके सत्कार के लिये सामने आवें, उस समय उन्हें पकड़ लिया जाय । परंतु यह बात प्रकट हो जाने से महाराज हुसैनअली के मकान पर जाकर खड़े हो गए । इससे बादशाह की उधर आने की हिम्मत ही न हुई ।

इसी प्रकार स्वयं महाराज द्वारा अपने विश्वासपात्र सरदारों को लिखे गए उस समय के पत्रों में भी बादशाह की तरफ़ से इनके विरुद्ध किए गए षड्यंत्रों का उल्लेख मिलता है । उन पत्रों में महाराज ने जयपुर-नरेश जयसिंहजी का भी अपने विरुद्ध बादशाह को भड़काना सूचित किया है ।

अजितोदय में भी महाराज को मारने के लिये बादशाह द्वारा षड्यंत्रों के रचे जाने का उल्लेख मिलता है। (देखो सर्ग २७, श्लो० ६-५)

† लेटर मुग़ल्स में लिखा है कि पौष-बदी १४ (६ दिसंबर) को महाराजा अजितसिंहजी और शाही तोपख़ाने के नायक (बीका हज़ारी) के बीच लड़ाई छिड़ गई । यह लड़ाई तीन घंटे तक जारी रही । और, इसमें दोनो तरफ़ के बहुत-से योद्धा मारे गए । रात हो जाने पर जब झगड़ा शांत हुआ, तब बादशाह ने ज़फ़रख़ाँ को महाराज के पास भेजकर इस ग़लती के लिये क्षमा चाही । (देखो भा० १, पृ० ३६३)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आया, और घंटे-भर से भी अधिक समय तक मेल-मिलाप की बातें करता रहा। इस पर दूसरे दिन महाराज भी दरबार में उपस्थित हुए। इस प्रकार एक बार फिर इनका आपस में मेल हो गया *। इसके बाद माघ-बदी २ (२८ दिसंबर) को बादशाह ने इन्हें राजराजेश्वर की उपाधि देकर गुजरात की सूबेदारी दी †।

कुतुबुल्मुल्क का खयाल था कि आँबेर-नरेश राजा जयसिंहजी भी उसके विरुद्ध बादशाह को भड़काते रहते हैं। अतः उसने फ़र्रुख़सियर पर दबाव डालकर उन्हें अपने देश को लौट जाने की आज्ञा दिलवा दी ‡।

इसी बीच सैयद हुसैनअलीख़ाँ (अमीरुल्उमरा) भी अपनी सेना लेकर दक्षिण से देहली आ पहुँचा। अतः ¶ इन लोगों ने स्थायी संधि कर लेने के लिये फिर एक बार बादशाह से बातचीत शुरू की। परंतु अंत में फ़र्रुख़सियर की अव्यवस्थितचित्तता से सैयदों का और महाराज का विश्वास उस पर से बिलकुल ही उठ गया। इसलिये फागुन-सुदी ६ (ई० सन् १७१६ की १७ फ़रवरी) * को इन्होंने क़िले पर अधिकार कर लिया †। यह देख फ़र्रुख़सियर ज़नाने में घुस गया। यद्यपि इन लोगों ने उसे बाहर आकर मामला तय कर लेने के लिये कई बार कहलाया, तथापि उसने इनकी बात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इससे क्रुद्ध होकर इन लोगों ने दूसरे ही दिन रफ़ीउद्दरजात ‡ को क़ैद से निकालकर तख़्त पर बिठा दिया ¶ और फ़र्रुख़सियर को ज़नाने में से पकड़वाकर क़ैद कर दिया §।

---

* अजितोदय सर्ग २७, श्लो० ७-११ और राजरूपक पृ० २१२

† लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ३६३-३६४। परंतु ऊपर उद्धृत किए भादों-सुदी ८ के स्वयं महाराज के पत्र में ही इन बातों का उल्लेख मिलता है।

अजितोदय में लिखा है कि इसके बाद एक दिन बादशाह ने राजराजेश्वर महाराजा अजितसिंहजी को और कुतुबुल्मुल्क को क़िले में बुलवाकर मार डालने का प्रबंध किया। इसके लिये पहले से ही सशस्त्र सिपाही महल में छिपाकर बिठा दिए गए थे। परंतु इसका भेद खुल जाने से ये दोनो वहाँ से सकुशल निकल आए। (देखो सर्ग २७, श्लो० १२-१३)

लेटर मुग़ल्स में इस घटना का संबंध केवल कुतुबुल्मुल्क से ही बतलाया है। (देखो भा० १, पृ० ३५४-३५५)

‡ लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ३७६ और अजितोदय सर्ग २७, श्लो० ३७ और ४०

¶ अजितोदय सर्ग २७, श्लो० १६

* हदीकतुल्अकालीम में ८ रबीउल् आख़ीर के बदले ८ रबीउल्अव्वल लिखा है। (देखो पृ० १३४) यह ठीक नहीं है।

† अजितोदय सर्ग २७, श्लो० ४१-४७

‡ अजितोदय सर्ग २७, श्लो० ४८ और ५१। यह बहादुरशाह का पौत्र और रफ़ीउश्शान का पुत्र था।

अजितोदय में लिखा है कि मुग़ल गाज़िउद्दीन ने एक बार फ़र्रुख़सियर को छुड़वाने की चेष्टा भी की थी। परंतु हुसैनअलीख़ाँ ने उसे नगर के पूर्वी द्वार के पास हराकर भगा दिया। (देखो सर्ग २७, श्लो० ४६-५०) इसकी पुष्टि लेटर मुग़ल्स से भी होती है। (देखो भा० १, पृ० ३८६)

¶ रफ़ीउद्दरजात को तख़्त पर बिठाते समय उसका एक हाथ तो कुतुबुल्मुल्क ने और दूसरा महाराज अजितसिंहजी ने पकड़ा था। (देखो लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ३८६)

§ वि० सं० १७७५ (चैत्रादि १७७६) की ज्येष्ठ-बदी ११ के महाराज के दयालदास के नाम के पत्र में लिखा है —

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके बाद महाराज के कहने से नए बादशाह ने अपने पहले ही दरबार में जज़िया उठा देने की आज्ञा दे दी * ।

इस प्रकार देहली के झगड़े से निपटकर वि० सं० १७७६ की ज्येष्ठ-बदी ४ (ई० सन् १७१६ की २६ एप्रिल) को महाराज ने देहली से गुजरात की तरफ़ जाने का विचार किया। परंतु रफ़ीउद्दरजात के गद्दी पर बैठने का समाचार फैलते ही आगरे की मुग़ल-सेना ने बग़ावत का झंडा खड़ाकर वि० सं० १७७६ को ज्येष्ठ-बदी ३० (ई० सन् १७१६ की ८ मई) को शाहज़ादे मुहम्मद अकबर के पुत्र निकोसियर को तिमूर सानी के नाम से बादशाह घोषित कर दिया † । इससे इन्हें अपना विचार स्थगित करना पड़ा।

बादशाह फ़र्रुख़सियर ने हमें अपनी सहायता के लिये यहाँ बुलवाया था। परंतु हमारे यहाँ पहुँचने पर जयसिंहजी के कहने-सुनने से वह नाराज़ हो गया। इस पर हमने और नवाब अब्दुल्लाख़ाँ ने सोचकर हसनअली को दक्षिण से यहाँ बुलवा लिया। उसके (१७७५ की) फागुन-बदी १४ को देहली पहुँचने पर फागुन-सुदी २ को क़िले को घेर लिया, फागुन-सुदी १० बुधवार को फ़र्रुख़सियर को क़ैद कर दिया, और रफ़ीउद्दरजात को गद्दी पर बिठा दिया। साथ ही उससे कहकर हमने जज़िया माफ़ करवा दिया, और तीर्थों पर की रुकावट भी दूर करवा दी।

इसके बाद वैशाख-सुदी १० को फ़र्रुख़सियर के गले में तसमा डलवाकर मरवा डाला। फिर ज्येष्ठ-बदी ११ रविवार को हमने बादशाह से मारवाड़ में आने की आज्ञा माँगी। इस पर बादशाह ने ख़िलअत, जड़ाऊ साज़ का घोड़ा, कानों में पहनने के लिये क़ीमती मोती, जड़ाऊ सरपेच जड़ाऊ तलवार, हाथी, हथनी, तुमनतोग (बड़ा मरातब) आदि दिए।

पहले जब हम फ़र्रुख़सियर से मिले, तो उसने जयसिंहजी से सलाहकर हमको मरवाना चाहा। दूसरी दफ़े फिर घातकों को भीतर छिपाकर हमें बुलवाया। इसी प्रकार तीसरी बार शिकार में बुलाकर धोका देने का विचार किया। चौथी दफ़े पास बिठाकर मरवाना चाहा। इसी प्रकार एक बार बाग़ में बारूद बिछाकर और आग लगानेवालों को पास में खड़े कर हमको वहाँ बुलवाया। परंतु उसे इनमें सफलता नहीं हुई। हम चाहते, तो जयसिंहजी को मारकर जयपुर की गद्दी पर किसी दूसरे को बिठा देते। परंतु हमने उसे बचा दिया। पहले तो उसके वहीं पर (देहली में ही) मारने का इरादा किया गया। इसके बाद जब वह जयपुर की तरफ़ चला, तो उसके पीछे फ़ौज रवाना की गई। परंतु हमने नवाब को समझाकर फ़ौज की चढ़ाई रुकवा दी। फिर उसे (जयसिंहजी) आँबेर मनसब में दिलवाकर वहाँ (आँबेर) से

---

७०० कोस पर के दक्षिण में के बीदर की फ़ौजदारी दिलवाई। इसलिये अब वह वहाँ जायगा। हम उसे एक बार पहले भी आँबेर की गद्दी दिलवा चुके हैं।

लेटर मुग़ल्स में लिखा है कि वि० सं० १७७६ की वैशाख-सुदी ६ (ई० सन् १७१६ की १७ एप्रिल) की रात को फ़र्रुख़सियर मार डाला गया। (देखो भा० १, पृ० ३७६-३६३)

* मुंतख़िबुल्लुबाब, भा० २, पृ० ८१७। यद्यपि फ़र्रुख़सियर ने भी पहले अपने राज्य के प्रथम वर्ष (वि० सं० १७७० = ई० सन् १७१३) में ही जज़िया उठा दिया था, तथापि बाद में इनायतउल्लाख़ाँ के कहने से अपने राज्य के छठे वर्ष (वि० सं० १७७४ = ई० सन् १७१८) में इसे फिर से जारी कर दिया। (देखो लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ३३८ और मुंतख़िबुल्लुबाब भा० २, पृ० ७७५) कहीं-कहीं यह भी लिखा मिलता है कि इनायतउल्लाख़ाँ ने मक्के से लौटकर फ़र्रुख़सियर के सामने वहाँ के शरीफ़ की एक अर्ज़ी पेश की थी। उसमें मुसलमानेतर धर्मवालों पर जज़िया लगाने की प्रार्थना थी। इसी के अनुसार बादशाह ने उक्त कर को फिर से प्रचलित कर दिया।

† मुंतख़िबुल्लुबाब भा० २, पृ० ८२५

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके कुछ दिन बाद ही रफ़ीउद्दरजात ❀ भी सख्त बीमार हो गया। अतः महाराज अजितसिंहजी ने और सैयद-भ्राताओं ने मिलकर आषाढ़-बदी ३ (२५ मई) को उसे तो ज़नाने में भेज † दिया और उसकी इच्छानुसार ‡ उसके बड़े भाई रफ़ीउद्दौला को आषाढ़-बदी ५ (२७ मई) के दिन शाहजहाँ सानी के नाम से गद्दी पर बिठा दिया ¶। इसके बाद ही इन्हें शाइस्ताखाँ और आँबेर-नरेश जयसिंहजी के मिलकर आगरे में उपद्रव करने के विचार की सूचना मिली। अतः वहाँ पर अधिकार करने के लिये पहले तो सैयद हुसैनअली भेजा गया, और इसके कुछ ही दिनों बाद रफ़ीउद्दौला को लेकर कुतुबुल्मुल्क (अब्दुल्लाखाँ) और महाराज ने भी उधर प्रयाण किया §। अब्दुल्लाखाँ का विचार मार्ग से ही आँबेर पर चढ़ाई कर राजा जयसिंहजी को दंड देने का था, परंतु महाराजा अजितसिंहजी ने कह-सुन कर उसे उधर जाने से रोक लिया +। इसके बाद वि० सं० १७७६ की भादों-बदी ५ (ई० सन् १७१६ की २५ मई) को महाराज तो कोरी के मुक़ाम से मथुरा स्नान के लिये चले गए, और कुतुबुल्मुल्क बादशाह को लेकर फ़तेहपुर-सीकरी की तरफ़ मुड़

❀ वि० सं० १७७६ को आषाढ़-बदी १० (ई० सन् १७१६ की १ जून) को रफ़ीउद्दरजात राजयक्ष्मा की बीमारी से मर गया। (देखो लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ४१८) इसने केवल ३ महीने के क़रीब राज्य किया था।

† लेटर मुग़ल्स में रफ़ीउद्दरजात का गद्दी से उतारा जाकर ज़नाने में भेजा जाना लिखा है। (देखो भा० १, पृ० ४१८)

‡ मुंतख़िबुल्लुबाब भा० १, पृ० ८२६

¶ अजितोदय सर्ग २७, श्लो० ५३ और लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ४२०

§ मुंतख़िबुल्लुबाब भा० १, पृ० ८३३

+ यह बात महाराज द्वारा अपने एक सरदार के नाम लिखे उस समय के पत्र से भी प्रकट होती है। उसमें लिखा है कि अपने पर होनेवाली सैयदों की चढ़ाई की सूचना पाते ही आँबेर-नरेश जयसिंहजी ने अपने सरदारों को भेज हमसे सहायता की प्रार्थना की थी। इसी से हमने सैयदों से कह-सुनकर उक्त चढ़ाई रुकवा दी।

अजितोदय से भी इस बात की पुष्टि होती है। परंतु उसमें एक तो आगरे पर की चढ़ाई का रफ़ीउद्दौला की मृत्यु के बाद मुहम्मद शाह के समय होना लिखा है, और दूसरा निकोसियर के पकड़े जाने के बाद महाराज का आगरे से मथुरा जाना और वहाँ से लौटने पर सैयद-भ्राताओं को आँबेर पर चढ़ाई करने से रोकना लिखा है। (देखो सर्ग २७, श्लो० ५३-५७ और सर्ग २८, श्लो० १-२६) और (राजरूपक पृ० २१६-२१७) महाराज के दयालदास के नाम लिखे एक पत्र में (पत्र का कुछ हिस्सा फट जाने से तिथि आदि नहीं मिली है।) लिखा है कि आगरे के क़िले में अकबर के बेटे क़ैद थे। उन्होंने जयसिंह आदि के कहने से बग़ावत की। इस पर हम और हसनअलीख़ाँ वहाँ भेजे गए। हमने बादशाह को भी चढ़ाई करने को तैयार किया। इससे भादों-बदी ३० को आगरे का क़िला फ़तेह हुआ। निकोसियर दोनो भतीजों-सहित पकड़ा जाकर क़ैद किया गया। इसके बाद जयसिंह पर चारो तरफ़ से फ़ौजों की चढ़ाई हुई। इससे उसके मुल्क के हाथ से निकल जाने की नौबत पहुँची। यह देख उसने अपने ५ आदमी हमारे पास भेजे, और आजिज़ी करवाई। हमारी हर आज्ञा के पालन का वादा किया। इस पर हमने उसे साढ़े तीन हज़ारी मनसब दिलवाकर आँबेर को बचाया, और सोरठ की फ़ौजदारी दिलवाकर अपने पास नियत किया। साथ ही उस पर गई हुई फ़ौजों को भी पीछा बुलवा लिया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गया। भादों-बदी १२ (२ अगस्त) को आगरे के क़िले पर सैयदों का अधिकार हो गया, और निकोसियर क़ैद कर लिया गया। इसकी सूचना पाते ही अब्दुल्लाख़ाँ अपनी चाल तेज़कर भादों-सुदी १३ (१६ अगस्त) को 'ओल' के मुक़ाम पर पहुँचा। यहीं पर महाराज भी मथुरा की यात्रा से लौटकर उससे आ मिले। इतने ही में हुसैनअली भी लौटकर इनके पास आ गया। अतः ये सब लोग मिलकर देहली को लौट चले ❀। विद्यापुर में † पहुँचने पर प्रथम आश्विन-सुदी ५ या ६ (७ या ८ सितंबर) को रफ़ीउद्दौला भी बीमार होकर मर गया। परंतु कुतुबुल्मुल्क ने दूसरे शाहज़ादे के देहली से आने तक इस बात को गुप्त ही रक्खा ‡। इसके बाद शाहज़ादे रौशनअख़्तर ¶ के देहली से वहाँ पहुँच जाने पर रफ़ीउद्दौला की मृत्यु प्रकट की गई, और इसके दो दिन बाद ही द्वितीय आश्विन-बदी १ (१८ सितंबर) को रौशनअख़्तर नासिरुद्दीन मोहम्मदशाह के नाम से गद्दी पर बिठा दिया गया ❀।

इसके बाद महाराज जोधपुर की तरफ़ रवाना हुए, और मार्ग से जयसिंहजी को साथ लेकर मनोहरपुर होते हुए जोधपुर चले आए †। यहाँ पर जयसिंहजी का बड़ा आदर-सत्कार किया गया। वह भी कुछ दिनों तक यहाँ रहकर अपने देश को लौट गए ‡

इसके बाद उसकी इच्छा के अनुसार हमने अपने ४ आदमी भेजकर उसकी तसल्ली करवाई। अनंतर शीघ्र ही शाहजहाँ (सानी) भी बीमार होने के कारण मर गया। इस पर हमने जहाँशाह के बेटे रौशनअख़्तर को दिल्ली से बुलवाकर आश्विन-बदी २ को हाथ पकड़कर शाही तख़्त पर बिठा दिया, और उसका नाम मोहम्मदशाह ग़ाज़ी रक्खा। इसके बाद हमारे देश को लौटने का इरादा करने पर बादशाह ने ख़िलअत, जड़ाऊ साज़ का घोड़ा, हाथी, मोतियों की माला, जड़ाऊ सरपेच और जड़ाऊ कटार भेट किए। साथ ही अजमेर का.....(यहीं से पत्र खंडित है)

❀ लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ४२२-४३०। परंतु इसमें कोसी के मुक़ाम पर अब्दुल्लाख़ाँ का स्वयं ही आँबेर जाने का विचार स्थगित करना लिखा है।

† विद्यापुर फ़तेहपुर-सीकरी से ३ कोस उत्तर में है।

‡ लेटर मुग़ल्स भा० १, पृ० ४३१

¶ यह बहादुरशाह के चौथे पुत्र ख़ुजिस्ताअख़्तर का पुत्र था।

❀ लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० १-२

† अजितोदय सर्ग २८, श्लो० ३०-३१। लेटर मुग़ल्स में लिखा है कि महाराजा अजितसिंहजी के बीच में पड़ने पर भी अब तक जयसिंहजी ने शत्रुता नहीं छोड़ी थी। इसलिये सैयदों का विचार उन पर चढ़ाई करने का था। (देखो भा० २, पृ० ३) परंतु महाराज अजितसिंहजी ने जोधपुर जाते हुए मार्ग में जयसिंहजी को समझाकर शांत करने का वादा कर लिया। इससे यह चढ़ाई रोक दी गई। इसके बाद द्वितीय आश्विन-सुदी ३ (५ ऑक्टोबर) को जयसिंहजी के टोडे से वापस आँबेर लौट जाने की सूचना मिल गई। अतः यह झगड़ा शांत हो गया। (देखो भा० २, पृ० ४) राजरूपक में महाराज का मँगसिर में जोधपुर आना लिखा है। उसके अनुसार बूँदी-नरेश बुधसिंहजी भी इनके साथ थे। (देखो पृ० २१८)।

‡ अजितोदय सर्ग २९ श्लो० १-३५। परंतु उक्त काव्य में सैयद-भ्राताओं में से एक के मारे और दूसरे के क़ैद किए जाने पर जयसिंहजी का जोधपुर से लौटना लिखा है।

इसी के आगे उसमें महाराज का ८ महीनों के लिये मेड़ते जाकर रहना और फिर अजमेर पर चढ़ाई करना भी लिखा है। (देखो सर्ग २९, श्लो० १-६६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसी बीच बादशाह ने सोरठ का सूबा तो जयसिंहजी को दे दिया, परंतु बाक़ी के ❀ अहमदाबाद-सूबे का प्रबंध महाराज के ही अधिकार में रक्खा। इसके साथ ही उसने अजमेर की सूबेदारी भी महाराज को सौंप दी ❀। उस समय मरहटों का प्रभाव बहुत बढ़ा हुआ था। साथ ही महाराज भी अत्याचारी मुसलमानों से हार्दिक घृणा रखते थे, इसी से यह गुप्त रूप से मरहटों को प्रोत्साहन देते रहते थे, और मौक़ा पाकर इन्होंने मारवाड़ की सरहद से मिलते हुए गुजरात के प्रदेशों को भी अपने राज्य में मिला लिया था। यद्यपि बाद में इनको वापस हस्तगत करने के लिये सर बुलंद-ख़ाँ ने बहुत कुछ उद्योग किया, तथापि वह कृत-कार्य न हो सका †। (अगामी संख्या में समाप्त)

राजरूपक में भी जयसिंहजी का एक सैयद के मारे जाने पर जोधपुर से जाना लिखा है। इसके बाद वि० सं० १७७७ की कार्त्तिक-बदी १२ को महाराज का मेहते पहुँचना और इसके बाद अजमेर पर अधिकार कर लेना भी उससे प्रकट होता है। (देखो पृ० २२०)

❀ बांबे-गज़ेटियर में लिखा है कि उस समय देहली के पास सबसे प्रतापी नरेश महाराजा अजितसिंह ही थे, इसी से इनको प्रसन्न रखने के लिये ई० सन् १७१६ में सैयदों ने गुजरात की सूबेदारी इन्हें दे दी थी। यह सूबेदारी ई० सन् १७२१ तक इन्हीं के अधिकार में रही। (देखो भा० १, खंड १, पृ० ३०१)

❀ लेटर मुग़ल्स भा० २, पृ० ४

† बांबे-गज़ेटियर भा० १, खंड १, पृ० ३०१

पवित्र पापी

सुप्रसिद्ध रूसी उपन्यास-लेखक डॉसटाय फ़िस्की के लोक-प्रिय उपन्यास 'Crime and Punishment' का हिंदी-अनुवाद। अनुवादक, पं० व्रजकृष्ण गुर्टू बी० ए०, एल्-एल्० बी० और कविराज विद्याधर विद्यालंकार। जिज्ञासु ज्ञान-पिपासा शांत करने को क्या नहीं कर सकता, हत्यारे के सिर पर हत्या किस प्रकार सवार होकर बोलती है, पुलिस की तहक़ीक़ात में सत्य की मात्रा कितनी होती है, सशंक मनुष्य कौन-सा अनर्थ ऐसा है, जो नहीं कर सकता—आदि बातें ऐसी सुंदर, सरल और मनोरंजक भाषा में लिखी गई हैं कि उपन्यास पढ़ते ही बनता है। रूस की दरिद्रता, वहाँ की राजनीतिक अवस्था, पुलिस की तहक़ीक़ात का ढंग, साइबेरिया के जेल की दशा, शराबख़ाने का दृश्य, सच्ची मित्रता का अनुपम चित्र और स्वार्थी मनुष्य का प्रेम देखते ही बनता है। एक बार पुस्तक खोलिए, फिर बिना समाप्त किए रखने की इच्छा ही नहीं होती। अपने ढंग के इस नए और निराले सचित्र उपन्यास का मूल्य ३), सजिल्द ३॥)

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वारंट या निमंत्रण ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुल गया ! खुल गया !! खुल गया !!!

हमारा चित्रकला-विभाग

(Our Fine Art Department)

समाचार-पत्रों, मासिक पत्रों तथा पुस्तक-प्रकाशकों के लिये सब प्रकार के चित्रों, कार्टूनों इत्यादि के डिज़ाइनों का प्रबंध हो गया !

अगर आपको छोटे या लाइफ़-साइज़ में अपनी जीती-जागती तस्वीर बनवानी हो, तो हमारे पास ऑर्डर भेजिए। उचित मूल्य ही लिया जायगा। बुरे से भी बुरा फ़ोटो क्यों न हो, हम उसका रंगीन या सादा इन्लार्जमेंट, हर साइज़ में, तैयार कर देंगे। वाटर-कलर या ऑयल-कलर का काम सिर्फ़ हमीं भारतवर्ष-भर में आपको, ऐरोग्राफ़-मशीन (Airograph Machine) से, बहुत सुंदर रूप में, बनाकर दे सकते हैं।

डिज़ाइन				फ़ोटो इन्लार्जमेंट १०×१२ इंच		
रंगीन चित्र	...	३०) से १००) तक		ऐरोग्राफ़ से तैयार किया हुआ	सीपिया या ब्लैक सादा	१०)
सादा एकरंगा चित्र		१०) से २५) „			„ „ „ रंगीन	२०)
लाइन-वर्क	...	६) से २०) „		पेंटिंग ऑयल-कलर	... ...	३०)

पोर्टरेट

ऑयल-कलर लाइफ़-साइज़	मज़बूत कैनवेस पर	... ...	१०००)
„ „ बस्ट „	„ „	... ...	५००)

नोट—बड़े इन्लार्जमेंटों की क़ीमत असल फ़ोटो देखकर बतलाई जा सकती है।

Manager, The Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुख-तरंग

[चित्रकार—श्रीयुत पी० एस्० मुलगाँवकर]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Ganga Fine Art Press, Lucknow

समालोचना *

[पं० मोनाराम रंगा विशारद, बीकानेर]

Criticism is a disinterested endeavour to learn and propagate the best that is known and thought in the world.

—Matthew Arnold.

मनुष्य सौंदर्योपासक प्राणी है। लावण्यमय पदार्थ के संपर्क ही से मानवीय गुण संभूत होते हैं। सौंदर्य स्थान-विशेष से असंबद्ध है। भावुक जन की दृष्टि प्रावृट् के विद्युत्-संचार-युक्त मेघाच्छन्न आकाश में एवं ग्रीष्म-ऋतु के प्रचंड भास्कर के प्रखर रश्मि-निकर से संतप्त नभस्तल में सौंदर्य की नृत्यमान् मूर्ति का साक्षात्कार करती है। वह समदृष्टित्व के कारण ही परिदृश्यमान् जगत् के प्रत्येक पदार्थ में सार्थकता एवं उपादेयता की गवेषणा में अहर्निश बद्ध-परिकर रहता है। अभीष्ट कार्य-संधान में साफल्य-संयुक्त होने पर उसके हृद्गत भावों की अभिव्यक्ति प्रकृति-जन्य है।

भाव-प्राधान्य सर्वप्रकारेण परिगृहीत है। भावोत्कर्ष ही राष्ट्र की वास्तविक संपत्ति है एवं यही मानवीय मस्तिष्क की उर्वरता का द्योतक है। शब्द उसके उद्बोधक हैं। उनकी सार्थकता सुसंगठित वाक्यों में यथास्थान प्रयुक्ति पर अवलंबित है। वाक्यायोजन ही से भाव-विकास निष्पन्न होता है। विश्लेषणात्मक भावों की अभिव्यक्ति से कवि के अंतरात्मा के दिव्य संदेश की अवगतता मानव-समाज के लिये श्रेयस्कर होती है। अतएव सिद्ध-हस्त कवियों की कृतियों में संश्लेषणात्मक भावाभिव्यंजन की प्राकृतिक मनोरमा पाठक के शिरीष-कुसुम-कोमल-कलेवर में आनंद-मंदाकिनी का अजस्र स्रोत प्रवाहित करती है।

कवि राष्ट्र को अपनी कृतियों से समस्त-सुर-मौलि-माला-लालित पद पर प्रतिष्ठित करने की क्षमता धारण करता है। वह नीरसता में सरसता संन्यस्त करने ही के कारण प्रातिभाव्य-पूर्ण पद पर अधिष्ठित रह सकता है। उसकी रचनाओं में मनीषीगण संगीत के माधुर्य, शिल्प-कार के नैपुण्य, चित्रकार के आलेखन-चातुर्य प्रभृति विशिष्ट गुणों का प्रत्यक्षीकरण करते हैं। उनमें उसकी अंतर्वृत्तियाँ एवं उसके अनुभूत कार्य समष्टि-रूप से केंद्रीभूत रहते हैं। वह उनमें अपने परिपक्व भावों को संकलित कर अनित्य देहावसानोपरांत भी यशःकायेन कर्मभूमि पर परिभ्रमण करता हुआ भविष्य-संतति के हृदयों में नूतन स्फूर्ति उत्पादित कर उन्हें कार्य-क्षेत्र में कर्मवीर के सदृश अवतीर्ण होने के लिये प्रोत्साहित करता है। उसके सद्भावों से प्रेरित होकर जिन पुरुषों का हृदय कोमलता को प्रश्रय प्रदान करता है, जिनके प्रत्येक अवयव में नूतन रक्त की अनवरत उष्ण धाराएँ प्रवाहित होती हैं, जिनकी मानसिक प्रवृत्तियाँ विकास की ओर द्रुत गति से प्रधावित होती हैं, जिनकी अंतरात्मा अनंत सौख्य की सजीव मूर्ति की उपलब्धि की ओर अग्रसर होती हैं, वे ही पुरुष प्रकर्ष पथ के पथिक बनते हैं। किंतु स्वार्थपरता के युग में कवि के काव्य में भी उपयोगिता की जिज्ञासा समारंभ की जाती है। कविता मनुष्य के दैनिक जीवन की सहचरी है। वह उच्चादर्श संस्थापित कर मानव-चरित्र-गठन में साहाय्य प्रदान करती है। अतः मानव-जीवन को समुन्नत पद पर अवस्थित करनेवाली काव्य-कला-कोविद की कृतियों के अंतस्थ भाव-गांभीर्य को हृदयंगम करानेवाली एवं मानव-सुलभ-समुत्थित भावों को सम्यक्तया अभिव्यंजन करने

* यह लेख १९वें हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर जोधपुर पठनार्थ भेजा गया था। —लेखक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की क्षमता प्रदान करनेवाली कला ही समालोचना नाम से अभिहित होती है। *

साहित्य-मंदिर में समालोचना सर्वोच्च आसन पर समासीन है। इसकी महत्ता के समक्ष सभी नत-मस्तक हैं। इसकी अनभिज्ञता से मानवीय मानसिक वृत्तियाँ सुचारु रूप से विकसित होने में अक्षम प्रमाणित होती हैं। इसके आलंबन से ही पाठक कवि की अंतरात्मा के विशुद्ध स्वरूप का प्रदर्शन कर सकता है। भाव ही उसकी प्रतिकृति है। भावाभिव्यंजन शब्द-प्रयोग पर निर्भर है। शब्द-ज्ञान ही उसे (पाठक को) उसके अंतस्थ-भाव-गांभीर्य में सन्निविष्ट कर अंतर्निहित सूक्तोक्ति को हृत्पटल पर अंकित करने की सामर्थ्य प्रदान करता है। इसके व्यतिरिक्त उसके सम्यक् ज्ञान ही से अतीत सभ्यता का उद्बोधन होता है। उसकी रचनाओं में निरर्थक शब्द-प्रयुक्ति का दृष्टिगत होना सुदुर्लभ है। वह सार्थक शब्दों के साहाय्य से ही भावाभिव्यक्ति में साफल्य-संयुक्त होता है एवं वे भी उससे प्रयुक्त होकर अपने को कृतकृत्य मानते हैं। इनका पारस्परिक संबंध अविच्छिन्न है। वह साधारण शब्दों में असाधारणतः समुत्पन्न करता है। अतः उनकी अलौकिकता के रहस्योद्घाटन ही से कवि के काव्य की मर्मज्ञता उपलब्ध होती है। इस भाँति साहित्य-मर्मज्ञता में शब्द-ज्ञान की प्रमुखता निर्विवाद संसिद्ध होती है। पाश्चात्य एवं पौर्वात्य भाषा-तत्वज्ञों की दृष्टि में शब्द के ज्ञान के साथ-साथ उसके व्युत्पत्ति-ज्ञान की विद्यमानता स्वर्ण में सुगंध के समावेश के सदृश है। इनके परिज्ञान ही से अर्थ-वैभिन्य हृदयंगम होकर संदिग्धता को परिष्कृत करता है। इसका अपरिमार्जन पाठक को पथ-प्रचलित कर उसकी अंतर्वृत्तियों को सुविकसित होने के सुअवसर से वंचित कर देता है। अतएव व्युत्पत्ति-ज्ञान-सहित शब्द-ज्ञान ही के बल पर कवि की सौष्ठवौदार्यशालिनी भाषा हृदयंगम होती है।

भाषा साधन है और भाव साध्य। रस, अलंकार प्रभृति कवि के भावाभिव्यंजन में आलंबन-मात्र हैं। साध्य एवं साधन के सम्यक् ज्ञान ही से नैसर्गिक आह्लाद का उद्रेक होता है, किंतु मनोरंजन-मात्र ही कविता का उद्देश्य नहीं है। समालोचना-प्रवर मैथ्यू आरनल्ड उसे 'मनुष्य-जीवन की आलोचना'—(Criticism of life) के नाम से संबोधित करते हैं। कवि के काव्य में उसके जीवन की अनुभूत कार्य-प्रणाली एवं आध्यात्मिक शक्ति के क्रम-विकास का समावेश रहता है। अतः रचना की क्रमागत आलोचना में कवि के समकालीन इतिवृत्त से अवगत होना वांछनीय है। तत्कालीन घटना-क्रम के पृथक्करण से उसकी रचना का महत्व समुचित आसन पर आसीन होने में अशक्य प्रमाणित होता है। कवि अपने समय की प्रतिमूर्ति होता है। उसका समकालीन घटना-क्रम के आवर्तन से वियुक्त रहना प्राकृतिक नियमानुकूल प्रतीत नहीं होता। उसकी रचनाएँ केवल तत्कालीन भावापन्न ही नहीं होतीं, अपितु वे पूर्वकालीन भावों से भी प्रभावान्वित रहती हैं, क्योंकि वह पूर्ववर्ती भावों को साथ लेकर ही अवनी-तल पर पदार्पण करता है। इस भाँति भूतकालीन भावों का सहयोग भी उसके श्रेष्ठत्व-प्रतिपादन में कम नहीं रहता। अतः साधारण-प्रज्ञा-संपन्न कवि की कृतियों का स्वकालीन भाव-लहरी से वंचित रहना असंभव है। वह काल-प्रवाह में प्रवाहित होकर उसी के आलाप की प्रतिध्वनि को निनादित करता है, किंतु असाधारण कवि अपने समय की महत्व-पूर्ण घटनाओं का प्रवर्तक होता है। इसलिये सामयिक वृत्त के साथ-साथ जीवन-चरित्र के कार्यों का भी प्रभुत्व उसकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है। कवि भी मनुष्य-योनि में जन्म धारण करता है। अतः उसका मानव-सुलभ वृत्तियों की अवज्ञा करना उसकी शक्ति के बाहर है। जीवन-काल में विभिन्न परिस्थितियों के अतिक्रमण से एवं सौख्य-सौम्य के अनुभव से उसकी मानसिक वृत्तियों के विषे

---

* Criticism is the study of the art by which the poet presents the emotional aspects of things so as to communicate his own feelings to others.

– E. A. Greening Lamborn

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

असाम्यता का साक्षात्कार प्रकृति-सिद्ध है । भिन्न-भिन्न कालोत्थित भावों का संकलन भी उसकी रचनाओं में दृष्टि-पथ पर सुव्यवस्थित होता है । इसी कारण कवि के काव्य-ज्ञान-प्राप्ति-काल में पाठक पुरातत्त्वानुसंधान में प्रवृत्त पुरुष को भी अविदित तत्कालीन ज्ञातव्य घटना-क्रम का परिचय प्राप्त कर लेता है । इस भाँति कवि का काव्य भी इतिवृत्त के संकलित करने में प्रचुरता से सुविधा समुत्पन्न करता है । अतः काव्य की आलोचना में उल्लिखित प्रणाली का अनुसरण ही अधिक श्रेयस्कर रहता है। उसकी आलोचना में उसके समकालीन पूर्ववर्ती एवं परवर्ती कवियों की रचनाओं का भी आलोचनात्मक अध्ययन नितांत आवश्यक है । तुलनात्मक अध्ययन से उनकी साम्य एवं वैषम्य भावाभिव्यंजना शक्ति का परिज्ञान प्राप्त होता है । अभिव्यक्त करने की प्रणाली ही उनके विशेषत्व को संस्थापित करती है । उनके अंतःकरण के अभिव्यक्त भावों के विश्लेषण ही से उनकी आत्मा का वास्तविक स्वरूप परिदृष्ट होता है । उनके कवित्व का श्रेष्ठत्व पाठक की मनोवृत्तियों को काव्याध्ययन की ओर प्रवृत्त करने में एवं उसके प्रति उसके हृदय में प्रगाढ़ अनुराग समुत्पन्न करने ही में परिमित है । काव्य-रसास्वादन ही से उसकी उत्पादिका शक्ति संवर्द्धित होती है । तदनंतर वह पूर्वकालीन कवियों को आदर्श मानकर काव्य-रचना में प्रवृत्त होता है ।

काव्य-निर्माण-चातुर्य की उपलब्धि जनसाधारण के लिये दुष्कर है । कवित्व-शक्ति ईश्वर-प्रदत्त होती है । कवि उसे जन्म-काल से ही प्राप्त कर जगती-तल पर संभूत होता है । वह एतत्संबंधिनी शिक्षा से संयुक्त होकर ही काव्य-रचना में सफलता पाने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है । काव्य-शब्द साहित्य-शब्द (Literature) के समानार्थ में व्यवहृत होता है । काव्य, नाटक, उपन्यास, निबंध प्रभृति साहित्य के अंतर्गत हैं । अतः समाहित चित्त होकर पूर्वकालीन साहित्यिक ग्रंथों के समीचीन समीक्षोपरांत ही उसकी मुकुलित-भाव-कलिका प्रस्फुटित होती है । भाव-ग्राहिकता-शक्ति के परिपुष्ट होने पर अधीत ग्रंथों के गुणावगुण-विवेचन-शक्ति प्रादुर्भूत होती है । इसके विवर्द्धित होने पर पाठक कवि के भावों की व्याख्या करने एवं उनके विषय में निष्पक्ष दृष्टि से मत स्थिर करने में संलग्न होता है । उसका इस भाँति का कार्य समालोचना नाम से संबोधित किया जाता है ।

समालोचना साहित्य की परिपोषिका है । यदि मौलिक साहित्य जीवन की आलोचना की व्याख्या है, तो समालोचना शास्त्र उस व्याख्या की एवं उसकी वर्णन-शैली की व्याख्या है । इससे साहित्य को समुन्नत बनने में साहाय्य प्राप्त होता है,। परंतु "भिन्नरुचिर्हि लोकः" के सिद्धांतानुसार समालोचना के विषय में मत-वैभिन्य की समुपस्थिति अनिवार्य है । कुछ लोगों की दृष्टि में समालोचना का कार्य साहित्य-वृद्धि का अवरोधक होने के कारण गर्हित एवं त्याज्य है । उनकी सम्मति में कार्यकारिणी शक्ति (creative activity) अवनत होकर पर-छिद्रान्वेषण की कुत्सित प्रवृत्ति को प्रश्रय प्रदान करती है । इनके व्यतिरिक्त समालोचना के विषय में यह दोषारोपण किया जाता है कि ग्रंथकर्ता के ग्रंथ को न पढ़कर उसकी व्याख्या करनेवाले ग्रंथों का अध्ययन करने में समय का दुरुपयोग क्यों किया जाय ? उपर्युक्त कल्पना निराधार एवं अग्राह्य है । रुचि-वैचित्र्य के कारण प्रत्येक पुरुष की कार्यकारिणी शक्ति एक ही पथ का अनुगमन नहीं करती है । मौलिक साहित्य के निर्माणांतर ही समालोचना की प्रवृत्ति होती है । पाश्चात्य उन्नत भाषाओं के अनुशीलन से परिज्ञात होता है कि मौलिक ग्रंथ-लेखकों के बहुसंख्यक होने पर भी सत्समालोचक अल्पसंख्यक ही परिगणित किए जाते हैं । निष्पक्ष भाव से आलोचना करने के कारण समालोचक के कार्य की दुरूहता स्वयमेव संसिद्ध होती है । समालोचक-कृत व्याख्या की अवहेलना करने से ग्रंथकर्ता के अंतस्तल में अनायास ही प्रविष्ट होना दुस्तर है, किंतु उसके मत को वेद-वाक्य मानकर ग्रंथकर्ता के अनंत जल-राशि-तुल्य भाव-गांभीर्य के संस्तरण में सन्नद्ध न होना ही भविष्योत्कर्ष को स्थगित करना है । वह ग्रंथकार की प्रणीत पुस्तक की समालोचना कर पाठक को स्वाध्ययन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की परिपाटी का प्रदर्शन कराता है। उससे प्रोत्साहन-प्रदान का कार्य संपादित होता है, न कि उपदेष्टा का। प्रोत्साहित कार्यकारिणी शक्ति आलोचन एवं लेखन-कार्य की दक्षता का सान्निध्य प्राप्त करती है। इस भाँति उपर्युक्त दोनो कार्य दुरूहता में समकक्ष पर स्थित हैं।

समालोचना के सदृश समालोचक की ओर भी कुछ लोग संकीर्ण दृष्टि-कोण से दृष्टि-पात करते हैं। उनकी दृष्टि में वह साहित्यिक निर्माण में अनुत्तीर्ण व्यक्ति है। उनकी धारणा भ्रांति-पूर्ण होने के कारण तिरस्करणीय है। उसके लिये पूर्ण विद्वत्ता, विवेकपरायणता, सरलता, सहृदयता, शिष्टता, सूक्ष्मदृष्टित्व प्रभृति विशिष्ट गुण सापेक्षिक हैं। भाषा-ज्ञान एवं साहित्य-ज्ञान की पूर्ण विद्यमानता से ही वह लेखक के स्थूल गुणों से संतुष्ट न होकर उसके उत्कृष्ट गुणों से परिचय प्राप्त करता है। प्रकांड-पांडित्य-प्रपन्न होने पर भी उसमें विवेकपरायणता के समावेश से ही क्षीर-नीर-विवेचन-शक्ति समुत्पन्न होती है। विवेचनत्व के साथ-साथ सहृदयता के सन्निवेश ही से वह लेखक के आलोच्य विषय के अनुसार भावापन्न होकर उसके अंतस्थ भावों की अभिज्ञता प्राप्त करने की क्षमता धारण कर सकता है। समालोचक के कर्तव्य का निर्देश करते हुए आंगल भाषा के विज्ञ लेखक और समालोचक वाल्टर पेटर (Walter Pater) कहते हैं—"To feel the virtue of the poet, to disengage it, to set it forth these are the three stages of the critics duty". अर्थात् समालोचक का कर्तव्य कवि के भावों को हृदयंगम करने, पृथक्करण करने एवं अभिव्यक्त करने ही में परिमित है। उसे अपने कर्तव्य-पथ पर अनुगमन करने के लिये उपर्युक्त गुणों पर ही अवलंबित रहना पड़ता है। तदुपरांत वह पथ-भ्रष्ट लेखक को कुपथ से निवृत्त कर परिष्कृत भूमि के सत्पथ का शिष्टता-पूर्ण भाषा में प्रदर्शन कराता है। इस नीति के आलंबन से समालोच्य लेख का लेखक भूल-संशोधन में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं मानता और सत्साहित्य भी परिवर्द्धित होता है। उल्लिखित गुण-संपन्न होने पर भी समालोचक का पक्षपात-शून्य होना नितांत आवश्यक है। पक्षपात के कारण वह अपने कर्तव्य का पूर्णतया निर्वाह करने में अशक्त प्रमाणित होता है। वह न्यायाधीश के सदृश न्यायासन पर अधिष्ठित होकर विवेचन-शक्ति के आधार पर गुणावगुण का विवेचन कर स्वमत स्थिर करता है। समालोचना में उसके व्यक्तित्व का प्रतिबिंब निर्बाध रूप से झलकता है। जिस भाँति कालिदास की भाषा पर माघ का आधिपत्य न होने से वह उसी की संपत्ति रहती है, उसी भाँति समालोचक की समालोचना में उसका व्यक्तित्व सर्वतः परिदृष्ट होता है। राग-द्वेष के वशीभूत होने पर उसका व्यक्तित्व कलुषित हो जाता एवं उसकी समालोचना भी कम महत्व की हो जाती है। वैयक्तिक वैमनस्य-पूर्ण आलोचना सद्भावों का निराकरण कर असद्भावों का मानवीय हृदय में संस्थापन करती है, जिनकी विद्यमानता सर्वप्रकारेण अवांछनीय है। अतः निर्लिप्त भाव से आलोचित विषय ही सत्समालोचना के नाम से विहित होता है। सत्-समालोचक कुत्सित साहित्य का नियंत्रण करता है, किंतु वह उसके निर्माण का अवरोध नहीं कर सकता। उसका कार्य-क्रम कुशल कृषक की मनोवृत्ति के पथ का अनुसरण करता है। जिस भाँति वर्षाकाल में शस्य-परिपूर्ण क्षेत्र में कंटकमय तृण उद्भूत होकर धान्य की वृद्धि को स्थगित कर देता और कालांतर में उसके विनाश का कारण बन जाता है, किंतु कृषि-कला-विशारद कृषीवल से उसके उन्मूलित होने पर शस्य सुरक्षित रह जाता है, उसी भाँति सत्समालोचक पाठक की अभिरुचि को असत्साहित्य से निवृत्त कर उसे सत्साहित्य की ओर प्रवृत्त कर देता है। असत्साहित्य-प्रणयन-प्रवृत्ति का निरोध करना उसके कर्तव्य कर्म में सम्मिलित नहीं है। सदसत् साहित्य का निरूपण भी दुरूहता से रिक्त नहीं है। मत-वैभिन्न्य के कारण कुछ व्यक्ति अव्यवस्थित दृष्टि-कोण से सामाजिक नग्नावस्था के चित्रण ही को मानव-समाज के लिये कल्याणकर मानते हैं, किंतु कुछ व्यक्तियों की दृष्टि में वही उसके लिये अधिकतर अकल्याणकर है। सत्समालोचक की दृष्टि में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मानव-प्रकृति को उन्नत पद पर प्रतिष्ठित करने की क्षमता प्रदान करनेवाला साहित्य ही सत्साहित्य कहलाता है। वह पुस्तक के स्थायित्व एवं अस्थायित्व गुणों के अनुसंधान में संलग्न रहकर उसके विषय में स्वमत संस्थापित करता है। उसका मत केवल पाठक के लिये पथ-प्रदर्शक के कार्य को संपादित करता है। वह उसके मतस्थैर्य से कवि-संबंधिनी प्रारंभिक विज्ञप्ति से विज्ञापित किया जाता है। उसे ध्रुव सिद्धांत के सदृश ग्राह्य मानकर कवि के अंतस्तल-निहित भावों से परिचय प्राप्त करने में सयत्न न होने से उसके लिये हित की अपेक्षा अहित ही अधिकतर संसिद्ध होता है। अतएव पाठक को सचेष्ट होकर एवं उसके मत को समादरणीय मानकर कवि के भाव-साम्राज्य में प्रवेश करने के लिये ही प्रयत्नशील होना चाहिए।

समालोचक का मत विशेष महत्त्व का है। वह आलोच्य पुस्तक की विषयानुक्रमणिका के अनुकूल ही उसकी आलोचना करता है या आवश्यकतानुसार लेखक की अन्य प्रणीत पुस्तकों के प्रसंग पर दृष्टि रखकर उसके भावों की विशद व्याख्या करने में भी सयत्न रहता है। इनके व्यतिरिक्त वह तुलनात्मक दृष्टि से अन्य ग्रंथकारों के भावाभिव्यंजन के साम्य एवं वैषम्य की प्रणाली से उसके भावों पर प्रकाश डालता है। अर्वाचीन काल में इस प्रकार की समालोचना विशेष रूप से समादृत है। तुलनात्मक आलोचना के बल से ही वह ऐतिहासिक सिद्धांतों के अन्वेषण के दुस्तर कार्य में संलग्न होता है, किंतु प्रत्येक परिस्थिति में उसका ध्येय पुस्तक-प्रणेता के भावों को हृदयंगम करने एवं पाठकों को उनसे परिचित करने ही में परिमित है। वह स्वेच्छा से या अन्य आलोचकों के मत से प्रेरित होकर उसके विषय में अपनी निश्चयात्मक सम्मति प्रदान नहीं करता, किंतु वह उसके विषय में अपने बुद्धि-बल से ही स्वमत स्थिर करता है। इस दृष्टि से उसका कार्य लेखक के लिये उन्नति-विधायक है। उसका सब भाँति से समादर करने ही में उसका कल्याण है, क्योंकि जातीय-तत्त्व पर भारवि के "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" शब्दों में हितकारक और प्रिय शब्दों की विद्यमानता का नितांत अभाव ही रहता है। इसके व्यतिरिक्त निंदक की सम्मति का भी समुचित रूप से आदर करने में मानव-जीवन का हित-साधन होता है। इस विषय में कबीरदासजी की उक्ति "निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय" विशेष रूप से ग्राह्य एवं माननीय है। निंदक के द्वारा सांकेतिक अवगुणों के निराकरण से ही मनुष्य में समुन्नतिकारक गुणों का सन्निवेश होता है। अतएव समालोचन कार्य प्रत्येक जातीय साहित्य को सुसमृद्ध करनेवाला है।

जातीय साहित्य के निर्माण के पश्चात् समालोचना की सृष्टि स्वयमेव संसिद्ध है। भारतीय साहित्य की रचना अतीत काल में हुई, और उसके रचनात्मक कार्य के साथ-साथ आलोचनात्मक कार्य का समारंभ हुआ। भारतवासी कलकलनिनादिनी सलिला के तटस्थ प्रगाढ़ शीतलच्छाया-समन्वित वृक्ष के समीपस्थ पर्ण-कुटी में सर्व-शास्त्र-निष्णात दैवज्ञ गुरु के मुखारविंद-निस्सृत उपदेशामृत-पान से पूतात्मा बनने में प्रयत्नशील होते थे। उनके शांति-निकेतन में सर्वत्र विश्व-प्रेम का साम्राज्य दृष्टि-पथ पर सुव्यवस्थित होता था। उनके अध्ययन-कार्य में प्रकृति-सुंदरी स्वयं अभिनेतृत्व पद को ग्रहण करती थी। वे भी अकर्मण्यता की वश्यता को अवहेलना की दृष्टि से देखते हुए अध्ययन, मनन एवं निदिध्यासन के प्रकृत नियमों का प्रतिपालन कर "सत्यं शिवं सुंदरम्" के अन्वेषण, विश्लेषण एवं अभिव्यंजन में संलग्न रहते थे। उनकी दृष्टि में प्रकृति-सुंदरी का प्रत्येक अवयव नंदन-वन के मनोहारी सौंदर्य के समकक्ष पर अवस्थित होने की क्षमता धारण करता था। समदृष्टित्व के कारण ही उनके प्रस्तुत साहित्य में कर्णेंद्रिज्ञान-मात्र से ही पाठक के मन-कुरंग को मुग्ध करनेवाले नैसर्गिक गुण का समावेश है। उनके हृद्गत भावों के अभिव्यंजन से सुसमृद्ध संस्कृत-साहित्य सभ्य-समाज के सम्मानित आसन पर समासीन होकर उनकी कीर्ति-कौमुदी को समस्त भूमंडल पर प्रसारित कर रहा है। काल के व्यवधान से अशिक्षितांधकार से अपरिष्कृत मानवादर्श पर उसके विशुद्ध प्रतिबिंब के न झलकने से प्राकृतिक नामधेय भाषा आविर्भूत हुई। भाषा-विज्ञान-विशारद की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टि में यही हिंदी-साहित्य की जननी है, किंतु क्रमागत साहित्यानुशीलन से संस्कृत-साहित्य ही भारतीय प्रांतिक भाषाओं का उद्गम स्थान अवगत होता है। "आत्मा वै जायते पुत्रः" के सिद्धांतानुसार हिंदी में संस्कृत-साहित्य के सभी गुण विद्यमान हैं। इनके अतिरिक्त हिंदी-साहित्य की स्थिति संस्कृत-साहित्य की भित्ति पर अवस्थित है। उसके साहित्य का निर्माण संस्कृत-साहित्य के आधार पर ही हुआ है। उसके "सत्यं शिवं सुंदरम्" का सिद्धांत कवि-कुल-चूड़ामणि तुलसीदासजी की "संत-हंस गुण गहहि पय, परिहरि वारि-विकार"-वाली उक्ति में परिलक्षित होता है। अतः समालोचना का कार्य हिंदी-साहित्य में एतद्देशीय सनातन साहित्य के ही कारण हुआ है न कि सांप्रतिक पाश्चात्य भाव-लहरी के कारण। पौर्वात्य और पाश्चात्य समालोचनाओं की परिभाषाओं में विभेद समुपस्थित है। अँगरेज़ी साहित्य का सुविज्ञ समालोचक वाल्टर पेटर (Walter Pater) ने समालोचना की व्याख्या इस प्रकार की है—"To peep beauty, to detach beauty and to expres beauty is true criticism." अर्थात् सौंदर्य का निरीक्षण, उसका पृथक्करण तथा उसका अभिव्यंजन ही सच्ची समालोचना है। सौंदर्य शब्द की विशद व्याख्या करते हुए सौंदर्योपासक कवि कीट्स (Keets) कहता है—"Beauty is truth, and truth is beauty." अर्थात् सौंदर्य ही सत्य है और सत्य ही सौंदर्य है। उल्लिखित उक्तियों के सम्मिश्रण में "शिवम्" शब्द के आयोजित होने पर ही वे हमारे साहित्य में परिगृहीत हो सकती हैं, अन्यथा नहीं। अतः हमारे प्राचीन दर्शन-शास्त्र-वेत्ताओं के "सत्यं शिवं सुंदरम्" को व्यवहृत करने ही से हमारे साहित्य की अमित वृद्धि संभाव्य है।

हिंदी-साहित्य के सामयिक पत्रों में समालोचना-विषयक अभिलेखों का संकलन रहता है। उनके अधिकांश लेखक समालोचना की वास्तविक परिभाषा के दर्शन से परिचित विदित नहीं होते हैं। वे राग-द्वेष से प्रेरित होकर ही समालोचन-कार्य को हस्तगत करते हैं। इस भाँति के कार्य में तामसिक भावों का उद्रेक रहता है। उनके प्राबल्य के कारण वे अपने उत्तरदायित्व-पूर्ण पद का निर्वाह करने में असमर्थ रहते हैं। वे अशिष्टता-पूर्ण भाषा का प्रयोग करते हैं; जिसकी ओर दृक्पात करने से समालोच्य पुस्तक के लेखक में प्रतीकार-बुद्धि प्रादुर्भूत होती है एवं पाठक के हृदय में क्षोभ उत्पन्न होता है। कभी-कभी आलोच्य पुस्तक-प्रणेता पर व्यक्तिगत आक्षेप किए जाते हैं जो सर्व-प्रकारेण अग्राह्य हैं। पुस्तक-निर्माता का प्रणीत पुस्तक से पृथक्करण असंभव है, क्योंकि उसकी अंतरात्मा की प्रतिमूर्ति उसके संकलित भावों ही में परिदृष्ट होती है। अतः भावों की आलोचना ही उसकी आलोचना है। इतना होने पर भी यदि लेखक के व्यक्तिगत बौद्धिक ज्ञान पर दोषारोपण किया जाता है, तो सभ्य-समाज के सम्मान्य समालोचक उस कार्य को कुत्सित मानते हैं। इस भाँति समालोचना से दूषित साहित्य का अंकुरोद्भव हो जाता है, जो सर्व-प्रकारेण त्याज्य माना जाता है। इसके व्यतिरिक्त आधुनिक काल में साहित्य-महारथियों की रचनाओं को तिरस्कृत कर उनसे अपने आपको उच्च कोटि के आसन पर प्रतिष्ठित करने की लालसा से प्रेरित होकर ही कुछ मनुष्य समालोचन-कार्य में प्रयत्नशील होते हुए परिदृष्ट होते हैं। इस भाँति के असद्भाव से संचालित व्यक्ति समालोचना के उत्तरदायित्व-पूर्ण कार्य के निर्वाह में "प्रांशु लभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः" के तुल्य उपहासास्पद को ही प्राप्त होते हैं। उनकी नीति देश, जाति व साहित्य को रसातल की ओर ले जानेवाली होती है। अतः निष्पक्ष भाव से की जानेवाली समालोचना ही दलबंदियों (Party feelings) को सुसंगठित होने का अवसर प्रदान नहीं करती है। अर्वाचीन काल में हिंदी-साहित्य-जगत् में दलबंदियाँ प्रचुरता से परिलक्षित होती हैं, परंतु शिक्षा-प्रचार के साथ-साथ सत्समालोचना का अंकुर युवकों के हृदय में अंकुरित हो रहा है, जिसके कारण राग-द्वेषात्मक समालोचना के कार्य का अवसान होकर तुलनात्मक समालोचनाओं का उद्भव होगा।

तुलनात्मक समालोचना के विषय में उल्लेख करने के पूर्व हिंदी-साहित्य के लेखकों के हृदय में समा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोचना के प्रति भावों की जिज्ञासा का समारंभ किया जाता है। वे पुस्तक के प्रकाशित होने पर अपनी रचनाओं को समालोचनार्थ पत्र-संपादकों के पास प्रेषित कर देते हैं। उन कृतियों की समालोचना केवल उनके प्रकाशन के विज्ञापन का कार्य करती हैं। इस भाँति की समालोचना का पत्रों में स्थान पाना समुन्नतिशील हिंदी-साहित्य के लिये लज्जाजनक है। परंतु कुछ पत्रों का समालोचना-विभाग संस्थापित हो गया है। उस विभाग के संचालकों की ओर से सत्समालोचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं, जिनके कार्य का अनुसरण-करना प्रत्येक पत्र-प्रकाशक का कर्तव्य है। सत्समालोचना के समाहृत होने पर तुलनात्मक समालोचना की ओर पाठकों में अभिरुचि समुत्पन्न होती है। हिंदी-साहित्य में तुलनात्मक समालोचना की ओर पाठकों की प्रवृत्ति विद्यमान है, किंतु सत्समालोचकों के सदृश तुलनात्मक समालोचनाओं के कर्ता भी अल्पसंख्यक परिदृष्ट होते हैं। अधुना तुलनात्मक समालोचना भी संकीर्ण विचारों की शृंखला में आबद्ध है। उसका ध्येय केवल कवियों में श्रेष्ठत्व एवं हीनत्व संस्थापित करने ही में परिमित है। इस भाँति भावान्वित होकर कार्य को हस्तगत करना कवि की आत्मा की अवज्ञा करना है। वे भिन्न-भिन्न समय एवं परिस्थितियों में परिपालित होकर ही उत्थित भावों के अभिव्यंजन में बद्ध-परिकर हुए हैं। अतः तुलनात्मक आलोचना में भी उनके युग एवं उनकी जीवन-घटनाओं की ओर भी दृक्पात करना आवश्यक है। उनकी रचनाओं के आलोचन में हमें केवल ग्रामीण एवं विद्वज्जन को समान रूप से आह्लादित करनेवाली भाव-लहरी के अभिव्यंजन-शैली के अन्वेषण ही में संलग्न होना चाहिए। इसके व्यतिरिक्त तुलनात्मक आलोचना में परवर्ती कवियों पर पूर्ववर्ती कवियों के भावापहरण का दोषारोपण किया जाता है। इसी भाँति परवर्ती कवियों का पूर्ववर्ती कवियों से एवं पूर्ववर्ती कवियों का परवर्ती कवियों से श्रेष्ठत्व संस्थापन किया जाता है। हमारी दृष्टि में भावापहरण का दोषारोपण अनुचित है, क्योंकि भाव-साम्य की विद्यमानता अकृत्रिम नहीं है। यदि भाव-साम्य के होते हुए भी उनके अभिव्यंजन में वैषम्य समुपस्थित है और उनकी अभिव्यक्ति में सत्य का निर्वाह किया गया है, तो भावापहरण के आक्षेप का स्वयमेव विदूरीकरण हो जाता है। अतः भावाभिव्यक्ति ही में कवि की मौलिकता निहित है। इसी प्रकार कवियों की पारस्परिक तुलना में उनकी रचनाओं की लोकप्रियता को प्राधान्य दिया जाता है। केवल लोकप्रियता ही कविता की कसौटी नहीं है, किंतु उनका विद्वज्जन-समाहृत होना भी आवश्यक है। अतएव कवि के काव्य की आलोचना में सभी वांछनीय विषयों पर ध्यानावस्थित होने से ही समालोचक की आलोचना सत्समालोचना के रूप में परिणत होकर अभिनंदनीय होती है। अब हमारा हिंदी-साहित्य भी उन्नति-शिखरारूढ़ होने के लिये द्रुत गति से अग्रसर हो रहा है। विश्वविद्यालयों की बी० ए०, एम्० ए० परीक्षाओं के विषयों में भी निर्वाचित होने का इसे सौभाग्य समागत है। अतः समालोचना-संबंधिनी शिक्षा-सुधा से अभिसिंचित होकर सत्समालोचनाओं द्वारा हिंदी-साहित्य की अभिवृद्धि के लिये अग्रसर होने ही में हमारे जीवन की कृतकृत्यता सन्निहित है।

देवी द्रौपदी

[लेखक, कविवर पं० रामचरित उपाध्याय]

यह पुस्तक देवी द्रौपदी का जीवन-चरित है। आख्यायिका के ढंग पर लिखी गई है, जिससे इसके पाठ से उपन्यास, प्राचीन इतिहास और जीवन-चरित तीनों के पढ़ने का आनंद आता है। यों तो यह पुस्तक समान रूप से सबके लिये शिक्षा-प्रद है, पर स्त्रियों के लिये यह पुस्तक अमूल्य रत्न है। इस नवीन संस्करण में कई रंगीन चित्र भी दिए गए हैं, और मूल्य कम कर दिया गया है। अब मूल्य ।=) है।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इटली की सैनिक प्यास

[श्रीयुत] परिपूर्णानंद वर्मा

असफलता का अभियोग

कुछ समय के लिये संसार में सबसे महत्व-पूर्ण घटना लंदन का नौ-सैनिक सम्मेलन थी। यद्यपि सम्मेलन के प्रारंभ के ही समय प्रमुख राजनीतिज्ञों ने यह धारणा बना ली थी कि वास्तविक परिणाम कुछ न निकलेगा, किंतु लंदन के प्रसिद्ध "पंच" के अनुसार इसने एक काम किया—मज़दूर-मंत्रि-मंडल और मज़दूर-सरकार को आत्म-विज्ञापन का थोड़ा-सा अवसर देकर उसके शत्रुओं के हाथ से इतना साहस छीन लिया कि इतने बड़े सम्मेलन को नष्ट कराने का कलंक अपने सर लेने के लिये वह मज़दूर-सरकार का पतन करावे। इस सम्मेलन में क्या निर्णय हुए हैं, ये सभी समाचार-पत्रों में छप चुके हैं, अतः उन्हें बतलाने की ज़रूरत नहीं। यह पाठक जानते हैं कि यद्यपि नौ सैनिक निरस्त्रीकरण की संधि प्रमुखतः ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, जापान तथा इटली में हुई है, पर वास्तविक सुलह ब्रिटेन, अमेरिका तथा जापान की है।

ब्रिटेन, अमेरिका तथा जापान ने फिर से नए जंगी जहाज़ों को न बनाने, जापान ने अमेरिका के जंगी जहाज़ों की शक्ति के ७० प्रतिशत जहाज़ रखने तथा क्रमशः निरस्त्रीकरण का निर्णय किया है। फ्रांस तथा इटली में समझौता न हो सका। इटली चाहता है, उसकी जहाज़ी ताक़त उतनी ही हो, जितनी फ्रांस की। फ्रांस की ज़िद है कि वह इटली से ढाई लाख टन वज़न में ज़्यादा जहाज़ रक्खेगा। इसी कारण समझौता न हो सका, और इन दो शक्तियों ने केवल वाशिंगटन के निर्णय के अनुसार ही जहाज़ बनाने का निश्चय किया है। पाँचो शक्तियों ने मिलकर १९३६ में एक ऐसा सम्मेलन करने का निश्चय किया, जिसमें पूर्ण निरस्त्रीकरण की बात सोची जायगी। इन गोल शर्तों का अर्थ जब स्वयं लेखक नहीं समझ सका है, तो पाठकों को क्या समझावे। किंतु इन निश्चयों का वास्तविक तथ्य मैंचेस्टर के प्रसिद्ध लिबरल पत्र "मैंचेस्टर-गार्जियन" के शब्दों में इस प्रकार है—

"यह असफलता एक सीमा निर्धारित कर देती है, जहाँ तक अमेरिका, ब्रिटेन तथा जापान अपना निरस्त्री-करण कर सकते हैं, अवश्य यह "त्रि-शक्ति" समझौता यह अधिकार सुरक्षित रखता है कि यदि फ्रांस और इटली ने अपने मौजूदा सैनिक कार्य-क्रम को कार्य-रूप में परिणत किया, तो ये अपना शस्त्रीकरण भी बढ़ावेंगे। यह प्रश्न इतना दुस्तर नहीं कि ये तीनो शक्तियाँ १९३६ में अपना निरस्त्रीकरण कितना करेंगी, जितना यह प्रश्न कि भू-मध्य-सागर में बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा के कारण उन्हें कितना पीछे हटना पड़ेगा।"

इस कथन के साथ ही पाठकों को समाचार-पत्रों में प्रकाशित इस समाचार का स्मरण करना चाहिए कि "एक ओर नौ-शक्ति-सम्मेलन की संधि हुई, दूसरी ओर इटली ने पाँच नए जंगी जहाज़ पानी में उतारे। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस प्रकार दूसरे राष्ट्र को सशक्त होते देख कर अपना शस्त्रीकरण प्रत्येक राष्ट्र के लिये स्वाभाविक है। इस विषय में हम पुनः मैंचेस्टर-गार्जियन के उदारता-पूर्ण विचारों की ओर ध्यान आकर्षित करेंगे—

"शस्त्री-निरस्त्रीकरण के पचड़े से बचने के लिये सबसे अच्छी बात अपने पड़ोसी राष्ट्र के प्रति ऐसी भावना उत्पन्न करनी चाहिए, जिसमें नौ-सेना से जीवन-मरण का भय न रहे। त्रि-शक्ति-समझौता केवल ब्रिटेन की, अमेरिका की नौ-सेना के नियमन के प्रति उपेक्षा के कारण संभव हो सका। फ्रांस और इटली एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे का विश्वास नहीं करते, इसी कारण पंच-शक्ति-समझौता न हो सका।"

अस्तु, चाहे दोष जिसका हो, सम्मेलन असफल रहा, और संसार में शांति एक पग भी आगे नहीं बढ़ी। यदि कुछ लोग इस सम्मेलन से इस कारण नाराज़ हैं कि इसमें तथ्य की बातें तय न हो सकीं, तो कुछ लोग इस कारण रुष्ट हैं कि इसमें तथ्य की बातें तय हो गई हैं। इनमें उदाहरणार्थ वाइकौंट ब्रिजमैन (Viscount Bridgeman) का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आप इँगलैंड के एक प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ हैं। मि० बाल्डविन के भूतपूर्व मंत्रि-मंडल में नौ-सेना के प्रथम लार्ड (First Lord of Admirality) रह चुके हैं। २ मई (१९३०) को वेमाउथ की एक वृहत् सभा में भाषण देते हुए आपने इस त्रिशक्ति की ख़ूब भर्त्सना की, और मज़दूर-सरकार को दूसरों के हितके लिये इँगलैंड का बलिदान करनेवाला बतलाया। आपने कहा—

"लंदन के समझौते ने ख़र्च में किसी प्रकार की कमी नहीं की है। हमारे बेड़े का अधिकांश भाग तोड़ दिया गया है, पर बदले में हमको कुछ नहीं मिला! यदि हम देश के सभी विशेषज्ञों की सलाह के विरुद्ध इतना महान् दान कर रहे हैं, और यदि देश में ख़र्च की कमी के लिये तथा हित-रक्षा के लिये यह ज़रूरी है, तो हमको भी अपने त्याग के बराबर ही दूसरे देशों से त्याग कराना चाहिए था। (ज़ोरदार हर्ष-ध्वनि)।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि यह समझौता हर प्रकार से किसी को संतुष्ट नहीं कर सका है। इसका असली कारण इटली तथा फ्रांस की ज़िद है। यदि फ्रांस और इटली इस समझौते में शामिल होते, यदि इटली इतना हठी न होता कि फ्रौरन्, सम्मेलन समाप्त होते ही, नए जहाज़ पानी में डाल देता, तो अशांति इतनी प्रबल न होती। फ्रांस इटली से संशंकित रहता है। लंदन तथा न्यूयार्क की दोस्ती के कारण ब्रिटिश दोस्ती पर उसे विश्वास नहीं है। योरप में उसे इटली के साथ की ज़रूरत थी। जर्मनी से वह कितना भयभीत है, यह हाल में ही प्रकाशित होनेवाली भूतपूर्व फ्रेंच-मंत्री (तथा संसार के सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञों में से एक) स्वर्गीय मोशिए क्लेमेंशा (Clemencau) की "युद्ध की शान और पीड़ा" (Grandeur and Misery of War) से ही मालूम हो जायगा। रूस से सदा का भय है! इस कारण यदि पड़ोसी इटली ही इतना बलशाली हो जायगा, तो फ्रांस जायगा कहाँ? इसी-लिये वह इतने ख़र्चे बर्दाश्त करते हुए भी, किसी प्रकार अपना दरिद्र बजट खींचकर, इटली से बराबरी लेना चाहता है। यह है फ्रांस की ज़िद का कारण। इस समय यदि कोई मद-भरा, मतवाला तथा गर्वीला हो रहा है, और संसार की किसी शक्ति या समझौते के प्रति, जिसके हृदय में आदर नहीं है, तो वह है इटली—और इटली की इस निरंकुशता के अनेक रूप हैं।

हवाई जहाज़ का प्रश्न

लंदन—ग्रेट ब्रिटेन फ्रांस से यदि किसी कारण डरता है, तो उसकी वायु-सेना के कारण। फ्रांस अधिकतर एक भू-शक्ति है, जिसको जल से अधिक स्थल पर भय रहता है। हवाई जहाज़ लड़ाई में कितने उपयोगी हैं, यह लिखने की ज़रूरत नहीं। इसी कारण इस समय संसार में सबसे ज़बर्दस्त वायु-सेना फ्रांस की है। फ्रांस के पास अच्छे हवाई जहाज़ १,३५० हैं। फ्रांस के बाद दूसरा नंबर इटली का है। इसके पास १,००० हैं। इटली फ्रांस के समान अपनी वायु-सेना करना चाहता है। इसी भय-वश फ्रांस इटली से अधिक जल-सेना चाहता है।

इटली वायु-सेना बढ़ाने के लिये कितना उत्सुक है, यह इटालियन पत्रों में प्रकाशित तथा अँगरेज़ी में अनूदित संवादों से ज्ञात हो जाता है। इटली की "पार्लामेंट" या "चैंबर आव डेपुटीज़" के सभापति मि० गैराती (Guirati) ने एक बार कहा था [रोम के ट्रिब्यूना (Tribuna) के अनुसार]—

"आजकल के संग्राम में ज़हरीले गैस या माइक्रोब व्यर्थ की चीज़ें प्रमाणित हो चुकी हैं। (गैस का बचाव नक़ाब से हो जाता है)। जो हो, यदि शत्रु इन दोनो घातक पदार्थों को हवाई जहाज़ों पर ले आवे, तो इनसे बचने के हमारे लिये दो ही रास्ते हैं। अपने सीमांत प्रदेश को हवाई जहाज़ों से इस क़दर सुरक्षित

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रखना कि शत्रु के हवाई जहाज़ों के लिये वे अभेद्य हो जावें अथवा देश में स्थान-स्थान पर हवाई जहाज़ों के जंगी अड्डे बनाए जायँ।

"प्रथम उपाय संभव नहीं, इसलिये लड़ाई के भिन्न केंद्रों की रक्षा ही संभव है। इसका अर्थ यह है कि उन जहाज़ों पर हमला करना, जो नगर पर आक्रमण करने ही वाले हैं, यद्यपि यह कठिन कार्य है।

"इसलिये हममें साहस होना चाहिए कि हवाई जहाज़ों के विरुद्ध बननेवाली तोपों के लिये रक़में नामंजूर कर दें, क्योंकि ये बेकाम साबित हुई हैं। ये रक़में वायु-यानों के लिये दे देना चाहिए।"

इटली की मनोवृत्ति का परिचय इस एक कथन से मिल जाता है। पर हम दो-एक उदाहरण और देंगे। इसी सभा के एक प्रमुख प्रतिनिधि—फ़ासिस्ट दल के शक्तिशाली नेता और मुसोलिनी के दाएँ हाथ मोशिए सिरेनो (M. Sereno) ने मिलन के प्रमुख पत्र "कोरी देला सेरा" में जो प्रकाशित कराया है, उसके अँगरेज़ी अनुवाद से आपके ये विचार ज्ञात होते हैं—

"भावी युद्धों में वायु-सेना ही प्रथम आक्रमण प्रारंभ करेगी। यह सभी जानते हैं कि एक सेना को कमज़ोर करने के लिये और उसे पराजित करने के लिये उसके लौटने या आगे बढ़ने, दोनों को असंभव कर देना है।

"इसका एक-मात्र उपाय पीछे से सेना पर हमला कर उसकी रसद बर्बाद करना है, उसके वायु-यानों को नष्ट करना है, उसके आंतरिक बचाव के रास्तों को नष्ट करना है—यह कार्य केवल वायु-यान कर सकते हैं।"

केवल मि० सेरेनो ही नहीं, दूसरे सदस्य मोशिए ग्रे (Gray) ने इसी मिलन (इटली) के पत्र में लिखा है—

"कल का युद्ध जंगी बेड़ों और हवाई जहाज़ों का युद्ध होगा। ये दुश्मन के देश में फैल जावेंगे, और शत्रु-सेना के एकत्रित होते ही उस पर चढ़ बैठेंगे।..... इस प्रकार २०० हवाई जहाज़ों की साधारण सेना से ही बड़ी फ़ुर्ती के साथ सीमांत प्रदेश का चक्कर लगाना संभव होगा। ये हवाई जहाज़ नक़ली (वैज्ञानिक) बादलों में छिपे हुए लाखों बम गिराते रहेंगे।"

यही नहीं कि ये जहाज़ साधारण या कम घातक होंगे। इटली के वायु-यान-विभाग के उप-मंत्री मोशिये बाल्बो (His Excellency Monsieur Balbo) के अनुसार इन हवाई जहाज़ों में पीछे की ओर बम फेकने का तेज़ यंत्र रखना ज़रूरी है। "संसार के सभी वायु-यानों की रचना देखने से पता चलता है कि वे इस सत्य को जानते हैं।"

इस प्रकार खुले शब्दों में भावी महासमर और उसके प्रति तैयारी की बातें सोची जा रही हैं। ऐसी स्थिति में फ्रांस का भयभीत होना स्वाभाविक है। इटली के सैनिक बजट में वायु-सेना के लिये १,००,००,००,००० लिरा (इटलियन लिरा, जो २½ अमेरिकन सेंट के बराबर होता है) ख़र्च किया जायगा। यही स्थिति देखकर शांतिप्रिय पत्र लंदन-नौ-सैनिक सम्मेलन की खिल्ली उड़ाते हैं। वे इसे "उस स्थान की शांति की बातें, जहाँ शांति नहीं है" समझते हैं।

यह भी निर्विवाद है कि अकेले इटली ही वायु-सेना में काफ़ी ध्यान नहीं लगा रहा है। जार्ज बर्नर्ड शा (George Bernerd Shaw) के शब्दों में "आज नौ-सेना का ज़िक्र हो रहा है, पर वायु-सेना की प्रबलता इससे भी अधिक अनियंत्रित है।" लंदन के अनुदार दल के पत्र "डेली टेलीग्राफ़" (Daily Telegraph) के अनुसार इस समय प्रमुख राष्ट्रों की वायु-सेना इस प्रकार है—

संयुक्त-राज्य अमेरिका—प्रथम श्रेणी के वायु-यान				१,०००
फ्रांस	—	,,	,,	१,३५०
इटली	—	,,	,,	१,०००
जापान (लगभग)		,,	,,	५००
ग्रेट ब्रिटेन	—	,,	,,	७७२

संयुक्त-राज्य अमेरिका में शिक्षक वायु-यान तथा स्थल और जल-सेना के वायु-यान मिलाने पर संख्या २,२०० हो जाती है!

किंतु यह स्पष्ट है कि इन सबमें सर्वतोमुखी शस्त्रीकरण इटली का है!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निरर्थक आशा

१९२४ के जेनेवा-कन्वेंशन (Protocol of Geneva) के अनुसार राष्ट्र-परिषद् के सभी सदस्यों की सेना परिषद् की है, और परिषद् उनसे अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ काम ले सकता है। इसी आधार पर फ्रांस इस नौ-सैनिक सम्मेलन में ग्रेट-ब्रिटेन से यह शर्त कराना चाहता था कि यदि भू-मध्य सागर में दो दलों में झगड़ा खड़ा हो, तो वह (ग्रेट-ब्रिटेन) राष्ट्र-परिषद् द्वारा निर्णीत पक्ष की ओर से सशस्त्र हस्तक्षेप करे। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह व्यर्थ की दलील थी। यदि ब्रिटेन हस्तक्षेप स्वीकार भी करता, तो परिषद् के सदस्य न होने के कारण अमेरिका तथा रूस उसके कार्यों से असहमत भी हो सकते थे, और भारी विरोध खड़ा हो सकता था।

फ्रांस ब्रिटेन को अपनी रक्षा के लिये प्रतिज्ञा-बद्ध कराना चाहता था! यह आशा सफल न हो सकी—फ्रांस और भी रुष्ट है। फ्रांस की इस निराशा का, सम्मेलन की असफलता का—इन सबका पूरा श्रेय इटली को है! अतः इटली के लिये यह स्थायी कलंक की बात है। मुसोलिनी जिस भयंकर समर के लिये, रूस के प्रति जिस विग्रह के लिये तथा प्राचीन "रोमन-साम्राज्य" की जिस स्थापना के लिये भीषण तैयारी कर रहे हैं, वह केवल इटली के लिये ही नहीं, संसार-मात्र के लिये घातक सिद्ध होगी, इसमें कोई संदेह नहीं!

ख़ाँजहाँ

(तृतीय सचित्र आवृत्ति)

[लेखक, पं० रूपनारायण पांडेय 'कविरत्न']

ख़ाँजहाँ ऐतिहासिक नाटक है। बँगला के प्रसिद्ध नाटक-लेखक बाबू क्षीरोदप्रसाद विद्याविनोद के नाटक के आधार पर इसकी रचना हुई है। इसमें दिल्ली के सम्राट् शाहजहाँ के साथ मालवे के वीर और मनस्वी नवाब ख़ाँजहाँ लोदी के युद्ध का, उनकी अलौकिक वीरता का, आत्माभिमान और बहादुरी का अपूर्व चित्र खींचा गया है। इसे जितनी बार पढ़िए—ध्यान देकर इस पर विचार कीजिए, जी नहीं भरेगा। यह नाटक अनेक जगह अनेक बार खेला भी जा चुका है। इसके करुण-रस के दृश्योंको देखकर लोगों के आँसू तक निकल आते हैं। इस तृतीयावृत्ति में सुंदर-सुंदर सादे और रंगीन चित्र भी दिए गए हैं। मूल्य १=), सजिल्द १॥=)

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गीत

[श्रीयुत "निराला"]

स्पर्श से लाज लगी।
अलक-पलक में छिपी छलक
उर से नव-राग-जगी।
चुंबन-चकित चतुर्दिक् चंचल
हेर, फेर मुख, कर बहु सुख-छल,
कभी हास, फिर त्रास, साँस-बल
उर-सरिता-उमगी।

प्रेम-चयन के उठा नयन नव,
विधु-चितवन, मन में मधु-कलरव;
मौन पान करती अधरासव,
कंठ लगी उरगी।
मधुर स्नेह के मेह प्रखरतर
बरस गए रस-निर्झर झर-झर,
उगा अमर-अंकुर उर-भीतर,
संसृति-भीति भगी।

निबंध-निचय

लेखक, हास्य-रसावतार पंडित जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी। साहित्य-सेवियों में ऐसा विरला ही कोई होगा, जो चतुर्वेदीजी की लेखनी से अपरिचित हो। उनके विनोद-पूर्ण लेखों को बार-बार पढ़ने पर भी लोग नहीं अघाते। उनका एक-एक वाक्य हास्य-रस से रंजित और विनोद से विकसित रहता है। हास्य-रस के वह मूर्तिमान् अवतार माने जाते हैं। उन्हीं के लेखों और भाषणों का यह अपूर्व संग्रह है। एक बार पुस्तक खोलिए, फिर क्या मजाल कि आप चतुर्वेदीजी की क़लम की करामात के क़ायल न हों और उसे विना समाप्त किए छोड़ दें। विचारणीय विषय, हिंदी की वर्तमान अवस्था, अनुप्रास का अन्वेषण, हमारी शिक्षा किस भाषा में हो, सिंहावलोकन, हिंदी-लिंग-विचार, भाषण और अभिभाषण पर समय-समय पर उनके लिखे ललित लेखों और भाव-पूर्ण भाषणों का यह सुंदर संग्रह है। सुंदर ऐंटिक काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य १), सुंदर रेशमी जिल्द १॥); स्थायी ग्राहकों को पौने मूल्य अर्थात् क्रमशः ॥=) और १।-) में

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सहकारिता का सिद्धांत और इसकी व्यापकता

[श्रीयुत युगलकिशोर सिंह]

र्थ-शास्त्र के अनुसार सहकारिता का अर्थ है एक पेशेवाले अथवा एक विशेष स्थान के जन-समुदाय का एक होकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने का उद्योग करना। यह एक नया और आधुनिक आंदोलन है। इसे उत्पन्न हुए अभी लगभग सौ-डेढ़ सौ वर्ष ही हुए हैं। इतने थोड़े दिनों की आयु में आर्थिक संसार में इसने एक युगांतर पैदा कर दिया है। वर्तमान आर्थिक संघर्ष में इतने थोड़े दिनों में इसने जो कुछ कर दिखाया, वह वस्तुतः आश्चर्य-जनक है। इस आंदोलन की प्रगति अनुदिन तीव्रता से बढ़ती जा रही है। इसकी उत्तरोत्तर प्रगति और वृद्धि को देखते हुए फ्रांस के कृषि-विभाग के कारगल-नामक एक विद्वान् ने एक अवसर पर कहा था कि "बीसवीं सदी सहकारिता की सदी होगी।" (The twentieth century will prove the century of co-operation.) उनकी यह भविष्य-वाणी सत्य होती दीख पड़ती है। समस्त संसार सहकार के समुन्नत और सर्वोत्कृष्ट भाव से आंदोलित हो उठा है। आज इस दुनिया के अमूमन् हर हिस्से में सहकारिता का निनाद सुनते हैं। इतना ही नहीं, इन दिनों यह अर्थ-शास्त्र का एक गंभीर विषय हो गया है। पाश्चात्य देशों के विश्वविद्यालयों में इसके अध्ययन का विशेष प्रकार से प्रबंध किया गया है। पाश्चात्य देश ही सहकार-आंदोलन की जन्मभूमि है। वहाँवालों ने इसे कार्यान्वित कर इसकी महिमा को बहुत अच्छे प्रकार समझ लिया है। उन्हें इसका प्रत्यक्ष फल भी प्राप्त हुआ है। आधुनिक आर्थिक संघर्ष—जिसने संसार के अंदर बेतरह अशांति मचा रक्खी है—को मिटाने के लिये सहकारिता एक रामबाण दवा है। पाश्चात्य देशों के विश्वविद्यालयों ने अर्थ-शास्त्र में इस व्यावहारिक विषय की शिक्षा को प्रमुख स्थान देकर निस्संदेह अपने देश का बड़ा हित-साधन किया है।

सहकारिता का क्षेत्र बहुत ही विशाल और व्यापक है। यह मानव-जीवन के हरएक अंग में, चाहे वह सामाजिक हो, व्यावसायिक हो या राजनीतिक हो, लागू हो सकता है। हम तो नित्यप्रति अपनी आँखों के सामने देखते हैं कि संसार में जितने काम हो रहे हैं, वे सब सहकारिता के बल पर ही। फ्रास-कर आधुनिक समय में सहकारिता ही एक सबसे बड़ी शक्ति है, जिसके सहारे संसार में बड़े-बड़े कार्य किए जा सकते हैं। सहकारिता एक ऐसी शक्ति है, जिससे मानव-जीवन का हरएक अंग संचालित होता है। हर अंग की परिपुष्टि करने में इसकी आवश्यकता होती है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। पारस्परिक सहकारिता उसका एक स्वाभाविक एवं आंतरिक गुण है, जो हमेशा से उसके अंदर पाया जाता है। मानव-जाति की संस्कृति और स्वभाव ही आतृमय है। हम तो नित्य-प्रति देखते हैं कि पारस्परिक सहयोग एवं सहायता के बिना पारिवारिक जीवन का सुचारु रूप से चलना भी असंभव है। शासक और शासित में बिना सहयोग की भावना उत्पन्न हुए राज्य ठीक प्रकार उन्नति नहीं कर सकता। शासन के भिन्न-भिन्न अंगोपांग बिना सह-योग के ठीक प्रकार विकसित नहीं हो सकते। कार्य विभाग बहुत आवश्यक है, लेकिन इससे भी अधिक आवश्यक है कार्य करनेवालों के बीच सहकारिता के भाव का होना। व्यावसायिक क्षेत्र में भी शांति एवं आर्थिक उन्नति के लिये पूँजी और श्रम में सामीप्य तथा पूँजीपति और श्रमी एवं मज़दूर में सहकारिता का होना बहुत ही आवश्यक है। अध्यापक और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अध्येता में भी विना पारस्परिक घनिष्ठ संबंध तथा सहयोग हुए शिक्षा एवं बौद्धिक उन्नति नहीं हो सकती। थोड़े में यह कहना अतिरेक न होगा कि मनुष्य एक 'सहकारी प्राणी है' या इसे यों भी कह सकते हैं कि मानव-जीवन ही सहकारमय है। सहकार का अभाव ही मानव-जाति के अंदर अशांति, अराजकता तथा विरोध-भाव का प्रधान कारण है। मानव-जीवन को सुव्यवस्थित बनाए रखने के लिये सहकारिता का होना नितांत आवश्यक है। विना इसके सुख, शांति और स्वाधीनता स्वप्न है।

मानव-समाज के अंदर इसी सहकारिता के प्रेम-भाव को उत्पन्न करने के वास्ते मानव-जाति में सुख, शांति, स्वाधीनता और मनुष्यत्व संचालित करने और उसके अंदर इस उदात्त भाव के तत्व को भरने के लिये अनेक आचार्यों का भिन्न-भिन्न सिद्धांत लेकर समय-समय पर आविर्भाव हुआ। भगवान् बुद्ध, ईसा, महम्मद आदि नर-पुंगवों का भी प्रधान उद्देश्य यही था। इनका अहिंसा, प्रेम, समानता, भ्रातृभाव आदि का प्रचार करने का महान् उद्देश्य मानव-समाज में सुख, शांति और सुव्यवस्था क़ायम करना ही था। सहकारिता के जितने आदि आचार्य हो गए हैं, और जो इस समय मौजूद हैं, उनका महान् उद्देश्य भी यही है। धार्मिक आचार्यों और सहकारिता के आचार्यों का यही परम लक्ष्य रहा है। हाँ, दोनो का साध्य एक है, पर साधन एवं प्रणाली में भिन्नता है। यह स्थिति का परिणाम है। भिन्न-भिन्न स्थिति के अनुसार सुधार के भिन्न-भिन्न पहलू हुआ करते हैं। समय और स्थिति मनुष्य का एक विश्वस्त परिचालक है। मनुष्यों को अपने विचार और उसके अनुसार कार्य अपने समय और स्थिति के अनुसार करने होते हैं। यह आवश्यक और उचित भी है। समय और स्थिति का विचार कर जो कार्य किया जाता है, उसी में सफलता भी मिलती है। भगवान् बुद्ध ने निर्वाण की प्राप्ति का जो साधन अपनी कठोर साधना एवं तपश्चर्या से ढूँढ़ निकाला था, वह उस समय के लिये बहुत ही आवश्यक था, जब कि लोग 'आत्मवत्सर्वभूतेषु' के उच्चतम भाव को भुलाकर 'जीवो जीवस्य भक्षणम्' की उक्ति चरितार्थ कर रहे थे। योरप में जिस समय धर्म के नाम पर अशांति मच रही थी, अनेकों अनाचार हो रहे थे, धर्म के नाम पर गला घोट देना एक मामूली-सी बात हो गई थी, उस समय उनमें प्रेम और भ्रातृभाव उत्पन्न करने की आवश्यकता थी। इसीलिये भगवान् ईसा ने समय की आवश्यकता को समझ वहाँ के लोगों में 'प्रेम ही परमेश्वर है' का समयोचित उपदेश दिया, और इसी को परमसाध्य की प्राप्ति का मार्ग बतलाया। अरब के अशांति-काल में, जिस समय वहाँ असभ्यता का साम्राज्य था, लोगों में पाशविक प्रकृतियाँ प्रमुख हो रही थीं, महम्मद ने आकर उनमें समायोचित सभ्यता का प्रचार किया। वहाँ के सार्वजनिक जीवन को शुद्ध, सुसभ्य एवं सुसंस्कृत बनाया। वहाँ के लोगों में मूर्ति-पूजा के भाव का प्राबल्य हो रहा था, जितने आदमी, उतने ही देवता और उतनी ही मूर्तियाँ हो गई थीं, जिससे मनुष्यों में परस्पर भेद-भाव बहुत ही बढ़ गया था। जहाँ भेद-भाव का प्राबल्य होता है, वहाँ अशांति और अनाचार अवश्यंभावी है। इसी दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिये महम्मद ने उनमें एकेश्वरवाद के धर्म का प्रचार किया, और वहाँ के लोगों में परस्पर सद्भाव पैदा किया। कहने का तात्पर्य यह कि समय और स्थिति के अनुसार सुधार के भिन्न-भिन्न साधन हुआ करते हैं। भिन्न-भिन्न बीमारी के उसके निदान के अनुसार भिन्न-भिन्न उपचार हुआ करते हैं। आधुनिक काल की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक संघर्ष है। इसमें सामंजस्य उत्पन्न करने के लिये सहकारिता ही एक समयोचित उपयोगी साधन है।

१६वीं सदी से विज्ञान का युग प्रारंभ होता है। दूसरे शब्दों में इस युग को यंत्र-युग अथवा वैश्य-युग भी कह सकते हैं। इस युग में विज्ञान ने आश्चर्य-जनक उन्नति कर ली है। इसने आर्थिक संसार को उत्पत्ति के नए-नए साधन तथा यंत्र दिए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इससे व्यवसाय में बड़ी उन्नति हुई है। व्यावसायिक संसार में उथल-पुथल मच गई है। पर जहाँ एक तरफ़ इससे लाभ हुआ है, वहाँ दूसरी तरफ़ इससे हानि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी कम नहीं हुई है। गंभीरता-पूर्वक विचार करने से तो यही पता चलेगा कि लाभ के मुक़ाबले हानि का पलड़ा ही अधिक भारी है। इस युग ने मानव-जीवन में बड़ी विषमताएँ उत्पन्न कर दी हैं। सबसे बड़ी हानि जो इस यंत्र-युग से हुई है, वह है मानव-जीवन का कृत्रिम एवं अस्वाभाविक हो जाना। प्राचीन समय में, जिस समय कि इन यंत्रों का आविष्कार नहीं हुआ था, लोगों का जीवन बहुत ही सरल और सादा था। वे प्रकृति के साथ मिलकर रहते और प्रकृति के साथ ही काम भी करते थे। इसलिये उनका जीवन बहुत ही स्वस्थ और सुखमय था। अपनी साधारण इच्छा और आवश्यकता की पूर्ति के लिये वे स्वयं अपने हाथ से काम करते और आत्म-निर्भर रहते थे। उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में एंजिन आदि यंत्रों की ईजाद हुई। इन यंत्रों के आविष्कार और वृद्धि के साथ-ही-साथ मनुष्य का जीवन कृत्रिम एवं अस्वाभाविक होने लगा। एक तरह से वे भी इस यंत्र के कल-पुर्जे हो गए। उनकी आत्म-निर्भरता जाती रही। वे परावलंबी हो गए, और उनके सरल, सादा तथा प्राकृतिक जीवन में महान् परिवर्तन हो गया। उनके जीवन में बहुत-सी जटिलताएँ (complications) उपस्थित हो गईं। एंजिन और यंत्रों की उत्पत्ति ने व्यवसाय में तीन मुख्य विशेषताएँ उत्पन्न कर दीं—(१) प्रतियोगिता (Competition), (२) एकांगी ज्ञान (specialization) और (३) पूँजीकरण (centralization या capitalization)। इन्हीं तीनों बातों पर आधुनिक व्यवसाय का संगठन है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इससे व्यवसाय की बड़ी उन्नति हुई है। बड़ी मात्रा की उत्पत्ति (Large scale production) होने लगी है। इससे लोगों में लाभ उठाने के मनोभाव में उत्तरोत्तर वृद्धि हो गई है। उत्पत्ति के ख़र्च कम हो गए हैं। लोगों की कार्यक्षमता आदि बढ़ गई और चीज़ें कुछ सस्ती हो गई हैं। पर इन लाभों के साथ ही हानियाँ और बुराइयाँ भी बहुत ही बढ़ गई हैं। प्रतियोगिता से कमज़ोरों की कठिनाई बहुत ज़्यादा बढ़ गई है। उनके विकास और उन्नति का मार्ग एक तरह से रुक-सा गया है। स्पर्द्धा अथवा प्रतियोगिता बढ़ जाने से छोटे-छोटे उत्पादकों और ख़ासकर किसानों की अवस्था बहुत ही शोचनीय हो गई है। एकांगी ज्ञान (specialization) से भी लोगों की कम हानियाँ नहीं हुईं। इससे लोग एक तरह के यंत्र-से हो गए हैं। जिस काम में उन्होंने विशेषता या एकांगी ज्ञान प्राप्त किया है, उसके अलावा वे और किसी काम के नहीं रह जाते। अगर उनके उस काम की ज़रूरत न रह जाय, तो उनका जीवन व्यर्थ हो जाय। पूँजीकरण (capitalization) से पूँजी थोड़े से लोगों के हाथ में इकट्ठी हो गई है। यंत्रों के उत्पन्न होने से बेकारी बहुत बढ़ गई है। पूँजीकरण से कारख़ानों की उत्पत्ति हुई है। इससे बहुत-सी असुविधाएँ और बुराइयाँ पैदा हो गई हैं। अगर देखा जाय, तो जब से यंत्र-युग शुरू हुआ है, तभी से पूँजी और श्रम तथा उत्पत्ति और उपभोग में विरोध शुरू हो गया है। यहीं से पूँजीपति और श्रमी में झगड़ा और उत्पादक और उपभोगी में पृथक्करण प्रारंभ होना शुरू हुआ। इसी समय से आर्थिक क्षेत्र में अशांति और असंतोष की मात्रा अनुदिन बढ़ने लगी। जिस समय उत्पादक और उपभोगी एक दूसरे से अलग होने लगे, उसी समय उनके बीच साहूकारों (middleman) की उत्पत्ति हुई, जो उत्पत्ति और उपभोग दोनों का नियंत्रण करने लगे, और दोनों से लाभ उठाने लगे। जो लाभ उपभोगी और उत्पादक को उनके सीधे अथवा प्रत्यक्ष व्यवसाय से होता, वह लाभ अब उस मध्यस्थ अथवा साहूकार के पास जाने लगा। आधुनिक व्यवसायवाद में ये ही मुख्य बुराइयाँ घुस गई हैं, जिससे आज आर्थिक जगत् में घोर अशांति और असंतोष फैला हुआ है।

कृषक भी इस व्यावसायिक युग के आर्थिक प्रभाव से, जिसकी उत्पत्ति यंत्रों और प्रतियोगिता से हुई, से बच न सके। उन पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। बेचारे किसान व्यावसायिक शक्ति के साथ प्रतियोगिता में असमर्थ होने के कारण असहाय हो गए। महाजन, व्यापारी, कारख़ाने के मालिक आदि मिलकर काश्तकारों को निचोड़ने लगे। ऐसी भीषण स्थिति में इस आर्थिक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संघर्ष को मिटाने, पूँजीपति और श्रमी तथा उत्पादक और उपभोगी में परस्पर सामीप्य लाने के लिये सहकारिता-रूपी शस्त्र का आविष्कार किया गया। १६वीं और २० वीं सदी के समय और आवश्यकता के अनुकूल मानव-जीवन को सुखी बनाने के लिये सहकारिता ही उपयुक्त और उपयोगी साधन समझा गया।

मनुष्य-समाज के अंदर दो प्रतिस्पर्धी विचार हमेशा काम किया करते हैं। एक व्यक्तिगत, जो मनुष्य को स्वार्थ और प्रतियोगिता की ओर ले जाता है। इस स्वार्थ और प्रतियोगिता से असमानता और अन्याय का उदय होता है। दूसरा सामाजिक (socialistic), जो व्यक्तिगत स्वार्थ और प्रतियोगिता का समन कर मनुष्य-मात्र को समानता और तदुत्पन्न परस्पर प्रेम की ओर ले जाता है। दोनो विचार अपनी-अपनी पराकाष्ठा पर हैं। इनमें परस्पर सामंजस्य के लिये सहकारिता ही उपयुक्त साधन है। रोमियां रौलां-नामक फ्रांस के एक प्रसिद्ध दार्शनिक ने अपनी 'जोन क्रिस्टोफर'(John Christopher)-नामक मनोरंजक पुस्तक में सहकारिता के बारे में बहुत सत्य कहा है कि "co-operation is the two-edged axe which strikes at the same time at the dead abstractions of the socialistic state and at the sterility of individualism, that corrosion ofenergy, that disperson of collective forec in individual frailties." इसका भाव यह है कि सहकारिता व्यक्तिवाद और साम्यवाद में एक दूसरे का समुचित नियंत्रण करते हुए परस्पर संबंध स्थापित कर सकती है। वास्तव में सहकारिता ने बहुत से देशों के भाग्य को बदल दिया है। समाज में नया जीवन पैदा कर दिया है। वहाँ के किसान और मज़दूर, जो आर्थिक संकट से बहुत ही पीड़ित थे, इसके सहारे बहुत सुखी हो गए हैं। सहकारिता को अपनाने के कारण ही डेनमार्क, फ़िनलैंड और आयर्लैंड का भाग्य बदल गया है। वे बहुत ही सुखी, सम्पन्न और समृद्ध देश हो गए हैं। फ़िनलैंड के मो० जेवहाडे ने लिखा है कि "सहकारिता दुधारी तलवार है। डेनमार्क, फ़िनलैंड और आयर्लैंड में सहकारिता ने जाति-की-जाति को समृद्धि के शिखर पर पहुँचा दिया है।" सहयोग-समितियों की कारवाई और परिणाम को देखकर ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मंत्री मि० ग्लैडस्टन ने यहाँ तक कहा था कि "उन्नीसवीं सदी के सामाजिक जीवन में सहकारिता से अधिक आश्चर्य-जनक कोई घटना नहीं है।" (In the domain of social life in the nineteenth century there was nothing so marvellous as co-operation.) सहकारिता के गुण और प्रभाव को देखकर इसे व्यापारिक जगत् का सर्वसाधारण का जन-तंत्र राज्य (co-operative commonwealth) तक कह दिया है। क्योंकि इसकी सहायता से उद्योग-धंधे और व्यापार इने-गिने पूँजीवालों की संपत्ति और बढ़ाने के लिये नहीं, बरन् सारे समाज के हित-साधन के लिये चलाए जाते हैं।

संहकारिता परिस्थिति का परिणाम है। इसी कारण इसकी परिभाषा भिन्न-भिन्न आचार्यों ने अपने-अपने देश की स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार से की है। पर, परिभाषा में अंतर होते हुए भी, उनके आंतरिक अथवा मूल सिद्धांत (underlying principle) एक ही हैं। श्रीहेरिक साहब इसकी परिभाषा करते हुए कहते हैं कि सहकार-परिषद (co-operative society) उन आदमियों के समूह का नाम है, जो अपनी शक्तियों, धन और प्रबंध करने की योग्यता को अपनी इच्छा से सबके नफ़े और नुक़सान के लिये एक जगह शामिल करें। श्रीसी० आर० फे (C. R. Fay) सहकार की परिभाषा करते हुए कहते हैं कि सहकार उन आदमियों के समूह को कहते हैं, जो अपनी निर्बलता से उत्पन्न स्वार्थ को छोड़कर ऐसी शर्तों पर काम करने को राज़ी हों कि हर आदमी अपने समूह से अपनी मिहनत के अनुसार लाभ उठा सके। श्रीहोलिओक (Holyoake) इसकी परिभाषा में कहते हैं कि सहकार उन आदमियों के समूह का नाम है, जो अपनी इच्छा से इस बात पर तैयार हों कि जो काम करें, उसमें सबके परिश्रम और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रबंध का बराबर हिस्सा हो। श्रीकेलबर्ट (calbert) साहब लिखते हैं कि सहकार उन आदमियों की संस्था को कहते हैं, जो मनुष्य की हैसियत से बराबरी के दर्जे पर अपनी आर्थिक दशा सुधारने के लिये शरीक हों। श्रीएच्० डब्ल्यू० उल्फ (H. W. Wolf) साहब कहते हैं कि सहकार अपनी मिहनत का गिरों और ईमानदारी की रक़म खड़ी करने (Capitalization of honesty) का नाम है। सहकार-क़ानून (Co-operative society Act) में सहकार का इस तरह वर्णन किया गया है कि वह उन आदमियों के समाज का नाम है, जो अपने आर्थिक लाभ के लिये सहकारी सिद्धांतों की पाबंदी करने के वास्ते सम्मिलित हों। 'मेकलेगन कमेटी' की रिपोर्ट में इसकी परिभाषा यों है कि सहकार उन आदमियों के समूह का नाम है, जो क़ानूनी तौर पर अपने व्यापार, अपनी खेती और अपने जीवन को अच्छा बनाने के लिये शामिल हों। उपर्युक्त परिभाषाओं से यह बात स्पष्ट है कि सहकारिता ईमानदारी और आत्म-निर्भरता के साथ आर्थिक उन्नति के लिये एक प्रकार का संगठन है। अर्थ-शास्त्र में सहकारिता का यही मुख्य अर्थ है। इसका मुख्य आधार है 'हरएक सबके लिये और सब हरएक के लिये' (each for all and all for each).

अब हमें विचार करना है कि सहकारिता का मुख्य उद्देश्य क्या है? सहकारिता का प्रथम उद्देश्य है कमज़ोर, असहाय, ग़रीब तथा वर्तमान आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा में नहीं ठहर सकनेवालों में संयुक्त साख (Joint credit) उत्पन्न कर उनमें शक्ति पैदा करना अथवा उन्हें समर्थ बनाना। दूसरा उद्देश्य सार्वजनिक जीवन को संयम, सदाचार, मितव्ययी आदि सद्गुणों द्वारा सुखी, स्वस्थ और सत्यमय बनाना। संक्षेप में, इसका मुख्य लक्ष्य अच्छे आदमियों का पैदा करना है। (The production of fine human beings.) इसके सिद्धांत एवं उद्देश्य को भले प्रकार समझने के लिये यह आवश्यक है कि सहकारिता को इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं से मिलाकर देखें।

पहले हम सहकारिता और मित्र-समिति (Friendly society) पर विचार करें। मित्र-समिति का उद्देश्य व्यापार करने का न था। यह सिर्फ़ लोगों की आर्थिक अवस्था सुधारने के लिये क़ायम की गई थी। इसका काम अपने मेंबरों के लाभ को बचाकर उनके असाधारण समय में, जैसे मृत्यु, बीमारी, वृद्धावस्था आदि में, मदद करना था। संक्षेप में, यह समिति बहुत कुछ सहकारिता से साम्य रखती है।

मित्र-समिति की नाईं व्यवसाय-संघ (Trade Union) का कार्य भी व्यापार करने का नहीं है। इसका मुख्य काम पूँजीपतियों के विरुद्ध श्रमी के हित की रक्षा के लिये उनका उचित प्रकार संगठन करते हुए उनकी व्यावसायिक दशा सुधारना है। इसका उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उलझनों को सुलझाते हुए श्रमियों के हित की रक्षा करना है। इसमें लाभ (Friendly benefit) लिए जाते हैं। यह होते हुए भी यह व्यवसाय-संघ व्यवसाय का काम नहीं करता, अन्य सब बातें एक-सी होते हुए भी व्यवसाय-संघ का उद्देश्य व्यापार करना नहीं है, और सहकार-समिति का उद्देश्य व्यापार करना भी है।

सहकार-समिति और मिश्रित पूँजीवाली कंपनी (Joint stock company) में बड़ा भारी अंतर है। सहकार-समिति मनुष्यों का संघ (Union of persons) है, और मिश्रित पूँजीवाली कंपनी पूँजियों का संग्रह (Union of capital) है। सहकार-समिति में इसके मेंबर ही काम करनेवाले और हिस्सेदार होते हैं। मिश्रित पूँजीवाली कंपनी में इसके हिस्सेदार काम करनेवाले नहीं होते, हिस्सेदार सिर्फ़ पूँजी लगाते हैं, और इससे निश्चित वेतन पर काम करनेवाले को नियुक्त करते हैं। उत्पादक सहयोग-समिति में पूँजी पर जो निश्चित सूद लगता है, उसे देकर जो बचत होती है, उसे समिति में काम करनेवालों में पुरस्कार-स्वरूप बाँट दिया जाता है। मिश्रित पूँजीवाली कंपनी में कार्य करनेवालों का वेतन देकर जो बचत होती है, वह पूँजीपतियों को पुरस्कृत होती है। इस प्रकार सहकार-समिति में काम करनेवाले स्वतः अपनी पूँजी लगाते और व्यवसाय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की लाभ-हानि स्वतः उठाते हैं। पूँजीवाद की प्रणाली में यानी मिश्रित पूँजीवाली कंपनी में पूँजीपति अमियों को नियुक्त करते और लाभहानि पूँजीपतियों को ही उठानी पड़ती है। इसके अलावा मिश्रित पूँजीवाली कंपनी में लाभ (benefit) हिस्सेदारों की पूँजी के अनुसार बाँटा जाता है, और कार्य-संचालन में हिस्से के अनुसार ही उनका अधिकार भी रहता है अथवा उनके जितने हिस्से होते हैं, उतने ही मत देने का अधिकार भी उन्हें प्राप्त होता है। लेकिन सहकार-समिति में ऐसा नहीं होता। इसमें पूँजी सिर्फ़ उत्पत्ति के साधन के तौर पर लगाई जाती है। संचालन का अधिकार हर सदस्य को बराबर रहता है। हरएक मेंबर को, चाहे उसके कितने ही अधिक हिस्से लगे हों, एक ही मत देने का अधिकार रहता है। संक्षेप में, दोनों प्रकार की संस्थाओं में सहकार-समिति और मिश्रित पूँजीवाली कंपनी में दो प्रधान भेद हैं। एक का लक्ष्य (सहकार-समिति का) ऊँचा है—सार्वजनिक भलाई पर आधारित है, और दूसरे का लक्ष्य (मिश्रित पूँजीवाली कंपनी का) सिर्फ़ निवारण करना है, और इसका आधार शुद्ध व्यवसाय पर टिका हुआ है। मिश्रित पूँजीवाली कंपनी में नियंत्रण और संचालन का अधिकार हिस्सेदारों के हाथ में उसके हिस्से के अनुपात से रहता है। अगर १ आदमी के १० हिस्से हैं, तो उसे १० मत देने का अधिकार प्राप्त होता है। इस कारण इसमें पूँजी का ही बोलबाला रहता है। पूँजी ही सारे कार्य को संचालित करती है। इधर सहकार-समिति के संचालन का आधार 'एक आदमी एक मत' (one man one vote) पर आधारित है। एक आदमी के चाहे कितने ही हिस्से क्यों न लगे हों, पर उसको एक ही मताधिकार प्राप्त रहता है। इसी कारण ग़रीब और अमीर, दोनो इसमें समान हैं। दूसरी मुख्य बात यह है कि मिश्रित पूँजीवाली कंपनी का मुख्य उद्देश्य लाभ उठाना है। "अधिक-से-अधिक लाभ" ही इसका प्रमाण-वाक्य है, और जो लाभ होते हैं, वे हिस्से के अनुपात पर बाँट दिए जाते हैं। संक्षेप में, यह एक शुद्ध व्यावसायिक संस्था है, जो पूँजी पर लाभ (divident) बाँटने के उद्देश्य से अपना व्यवसाय चलाती है। सहयोग-समिति का आदर्श और उद्देश्य बहुत ऊँचा है। इसका प्रधान उद्देश्य अच्छे आदमियों को पैदा करना है, और इसी कारण इसका सबसे मुख्य साधन सेवा है। इसका उद्देश्य लाभ उठाना क़तई नहीं। यह जन-तंत्र-सिद्धांत (democratic principle) पर आधारित है, और इसीलिये इसका प्रमाण-वाक्य "हर-एक सबके लिये और सब हरएक के लिये" है। यही अन्य संस्थाओं और सहकार-समिति में मौलिक अंतर है। अन्य संस्थाओं के सिद्धांत और उद्देश्य संकुचित हैं—सिर्फ़ व्यवसाय करना और लाभ उठाना। सहकारिता का सिद्धांत बहुत ही व्यापक, विशाल एवं प्रशस्त है—मानव-जाति का आर्थिक उन्नति के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक सुधार और उन्नति करना। मेल बढ़ाना और सार्वजनिक नैतिक आचार एवं चरित्र को ऊँचा उठाना तो सहकारिता का स्वाभाविक गुण है। यही मुख्य कारण है कि इसे संसार ने बहुत ही जल्द अपनाया, और अनुदिन अपनाता जा रहा है। इसके इन्हीं स्वाभाविक गुणों को देखकर जर्मनी के प्रसिद्ध अर्थ-शास्त्र-वेत्ता श्योमर ने कहा था कि—

"In other spheres of business life we see a struggle for existence, among men joined together by co-operation its emoval and even more—we see true, fair reciprocity and honesty, on the one hand we see egoism and on the other fellowfeeling, on the one hand oppression of the weak, on the other maintenance and development."

अर्थात् कर्म-जीवन के अन्य व्यापारिक क्षेत्रों में हम जीवन-संग्राम पाते हैं, परंतु सहयोग द्वारा मिले हुए लोगों में इसका अभाव बल्कि इस अभाव, से भी उनमें कुछ ज़्यादा विशेषता है। हम उनमें वास्तविक, निष्पक्ष पारस्परिक सहायता और ईमानदारी पाते हैं। एक ओर अभिमान एवं अहंकार का राज्य है, दूसरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और भ्रातृ-भाव । एक ओर दुर्बलों का पीड़न और दमन है, दूसरी ओर उनका पालन-पोषण और उनकी उन्नति का प्रयत्न ।"

किसी भी प्रकार की सहकार-समिति को देखें, उसमें हम ईमानदारी, भ्रातृत्व और मैत्री का सुंदर गुण तथा प्रतियोगिता को दूर करने का भाव समाया हुआ पावेंगे। सहकारिता का यही मूल-तत्व एवं विशेषता है, जो दूसरी असहकार संस्थाओं (Non-co-operative societies) को इससे अलग करता है। सहकारिता प्रेम और त्याग के आध्यात्मिक तत्व पर खड़ी की गई है यह परस्पर-विरोधी भौतिक स्वार्थों का सामंजस्य कर लोगों को संकुचित भौतिक क्षेत्र से उठाकर व्यापक आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर अग्रसर करती है। ज्योंही आध्यात्मिक तत्व—जो सहकार को अनुप्राणित करता रहता है—इससे अलग किया जाता है, और संकुचित भौतिक क्षेत्र में परिमित कर दिया जाता है, त्योंही विरोधाभाव का उदय होता है, और पारस्परिक स्वार्थ आपस में टकराने लगते हैं। यह आध्यात्मिक तत्व ही है, जो सहकार को सभी मत-मतांतरों, जात-पाँत, रंग-भेद, दल-बंदी आदि संकुचित विचारों से ऊँचा उठाते हुए लोगों को एक प्रेम-सूत्र में बाँधे रहता है। यह अध्यात्म-तत्व का ही प्रभाव है कि लोग सहकार-समिति में सम्मिलित होते ही 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उदात्त भावों और विचारों से प्रेरित होने लगते हैं। सहकार के इस पहलू को आयर्लैंड के एक नामी सहकार के पक्षपाती श्रीजार्ज रशेल ने बहुत ही सुंदर तरीक़े से वर्णन किया है, जो जानने लायक़ है। वह लिखते हैं कि "आर्थिक क्षेत्र में आध्यात्मिक विचार-वाले लोगों पर प्रभाव डालने के लिये सिवा सहकारिता के, जो व्यक्तिगत भाव को समन करती है, और कोई अन्य अधिक आशाजनक साधन नहीं।" आप आयर्लैंड के बारे में कहते हैं कि "सहकार-आंदोलन ने आयर्लैंड में व्यक्तिगत ख़रीद-बिक्री और पक्का माल तैयार करना (manufacture) बहुत कम कर इसको अधिकाधिक सामूहिक पेशा बनाते हुए उनके आर्थिक स्वार्थों को एक सूत्र में बाँध दिया है।" इससे इस व्यावहारिक सत्य का पता चलता है कि मनुष्य के व्यक्तिगत और आर्थिक स्वार्थ की पूर्ति भी एक साथ काम करने से हो सकती है। इससे मनुष्य अपने हित को राष्ट्रीय हित के साथ एक कर सकता है। श्रीरशेल साहब अपना विश्वास प्रकट करते हुए कहते हैं कि आयर्लैंड में इस समय जिस किसी भी आंदोलन का क्षणिक प्रभाव हो, पर अंत में सहकार आंदोलन का—जैसी प्रगति कि इसकी वहाँ के लोगों के दैनिक जीवन में हो रही है—आयर्लैंड के राष्ट्रीय चरित्र पर अन्य आंदोलनों के प्रभाव के बनिस्बत अधिक प्रभाव पड़ेगा। इसके अंदर स्वतः की एक शक्ति है, जिसके कारण मनुष्य चाहे जिस किसी सरकार के मातहत हो, चाहे जिस धर्म को मानता हो, उसकी सभ्यता और संस्कृति जो भी हो, वह सहकार की छत्रच्छाया में अवश्य काम कर सकता है। इसके संगठन का सिद्धांत इतना व्यापक और इसका कार्य इतना स्थायी है कि इसका प्रभाव आयर्लैंड के राष्ट्रीय चरित्र पर पड़े बिना नहीं रह सकता। जार्ज रशेल महाशय आयर्लैंड के १९१७ के अशांति-काल का ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि यहाँ पर (आयर्लैंड में) कोई भी सरकार स्थापित हो, पर यहाँ के अधिकांश लोग अपने भविष्य के लिये बहुत निराश और असंतुष्ट हैं। उन्होंने (जार्ज रशेल ने) इस असंतोष और निराशा को दूर करने के लिये सहकारिता के मार्ग को ही उत्तम बतलाया। आज वहाँ सहकारिता की वृद्धि इतनी तेज़ी के साथ हो रही है कि आयर्लैंड का आज कोई भी प्रांत ऐसा नहीं रह गया, जहाँ पर सहकारिता के हज़ारों अनुयायी न हों। महाशय जार्ज रशेल का विश्वास है कि दूसरी पीढ़ी आने के पूर्व ही यह आंदोलन अपने अपूर्व चमत्कार और गुण से समस्त आयर्लैंड-निवासियों के ऊपर पूर्ण विजय प्राप्त कर लेगा। आपका कहना है कि सहकार-समिति का सदस्य होना ही अर्थशास्त्र की एक सच्ची और व्यावहारिक शिक्षा है, जो मनुष्य को सर्वसाधारण की सेवा के योग्य बना देती है, और अपने सिद्धांत से यह नागरिकता के भाव की पुष्टि करती है। आपकी धारणा है कि जब आयर्लैंड की इस समय की भयावनी उत्तेजना का उफान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूर हो जायगा, तो यह आंदोलन अपने सच्चे रूप में प्रकट होगा, और सेवा, सहनशीलता, तथा परस्पर प्रेम द्वारा यहाँ के राष्ट्रीय जीवन को संचालित करने का एक प्रधान साधन बन जायगा।

सहकार-आंदोलन का स्थायी और व्यापक प्रभाव रूस से बढ़कर इस समय कहीं भी देखने में नहीं आया, जहाँ कि ज़ारवाद और बोल्शेविक-वाद, एक के बाद दूसरे ने वहाँ की सीधी-सादी कृषक-जनता के शांतिमय जीवन को असह्य बना दिया है। जार की ज़्यादती और लाल क्रांति के होते हुए भी सरकार ने वहाँ अपनी शक्ति और प्रभाव का परिचय दे दिया है। रूस को सहकारिता से एक बड़ी शक्ति प्राप्त हो गई है। लड़ाई (गत महा-समर) के समय से रूस के सहकार-आंदोलन को देश के जीवन का एक प्रधान आर्थिक साधन स्वीकार कर लिया गया है। इस समय रूस के विभिन्न लोगों—आर्मिनियंस, जौर्जियंस, तारतरी, किरगिज आदि—में सहकार-समिति की स्थापना पाई जाती है। मास्को (रूस) के विश्वविद्यालय ने सहकार के सिद्धांत और विचार का प्रचार करने में बहुत बड़ा भाग लिया है। बड़े-बड़े वैज्ञानिकों द्वारा सहकार पर बहुत अच्छे-अच्छे विद्वत्ता-पूर्ण व्याख्यान दिए गए, जिन्होंने रूस के असंख्य लोगों का ध्यान इस ओर खींच लिया। रूस की अखिल-रूस-सहकार-महासभा (All Russian co-operative congress) सहकार-आंदोलन का केंद्र समझी जाती है, और इसी के द्वारा वहाँ सहकार-आंदोलन का संपूर्ण संगठन और संचालन होता है। अविराम एवं अथक प्रचार और शिक्षण-कार्य का परिणाम यह हुआ है कि समस्त रूस में सब क़िस्म के सहकारी संघ (co-operative Unions) बहुत ही तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। इनमें मास्को की थोक बेचनेवाली समिति (wholesale co-operative society) बहुत प्रसिद्ध है। इसका व्यापारिक संबंध इँगलैंड और स्कॉटलैंड से है। रूस की सहकार-समिति का कार्य इस समय समस्त संसार में फैल गया है। ये समितियाँ इँगलैंड, स्कॉटलैंड, हॉलैंड तथा अन्य दूसरे-दूसरे देशों के साथ अपना गेहूँ, इँगलैंड और डेनमार्क के साथ अपना मक्खन, आयर्लैंड, स्कॉटलैंड, जापान और अमेरिका के साथ अपना सन् (flax) बेचती हैं। रूस ने अन्य देशों की अपेक्षा विशेष रूप से अंतर-राष्ट्रीय विनिमय-सहकार-समिति (International co-operative exchange) की संभावना को—जिसकी एक काल्पनिक मनुष्य की कपोल-कल्पना एवं अव्यवहार्य समझकर उपेक्षा कर दी गई थी—बिलकुल व्यवहार्य और संभव सिद्ध कर दिखलाया है। सहकार भेद-भावों से परे है। इसीलिये रूस का सहकार-आंदोलन भी भेद-भाव और दलगत भावों से परे रहा और है। रूस का सहकार-आंदोलन इतना उपयोगी और व्यापक साबित हुआ है कि उसने राष्ट्रीय क्षेत्र को पारकर अंतर-राष्ट्रीय रूप की विशालता धारण कर ली है। इस समय रूस में सहकार-संघ द्वारा १५-१६ करोड़ पौंड से अधिक का व्यापार हर साल होता है। ५५ हज़ार से भी अधिक सहकार-समितियाँ—जिसमें क़रीब १७ हज़ार से ऊपर केवल साख-समितियाँ हैं—वहाँ सफलता से काम कर रही हैं। इसमें संदेह नहीं कि रूस के सहकार-आंदोलन का उत्थान इस समय की एक महान् आश्चर्य में डालनेवाली आर्थिक क्रांति है। सहकारिता के स्वाभाविक उन्नतिशील गुणों के कारण संसार के हर हिस्से में इसका सहर्ष स्वागत किया जा रहा है। यहाँ तक कि पिछड़े हुए कहलानेवाले देशों—एशिया, अफ़्रीका, उत्तर-दक्षिण अमेरिका और आस्ट्रेलिया में भी, जहाँ के लोग सहकारिता से बिलकुल अनभिज्ञ थे, ज़ोरों से सहकार-आंदोलन का प्रचार और संगठन हो रहा है।

सहकारिता के उपयोगी गुणों से ही प्रभावित होकर फ्रांस की सरकार ने नए जीते हुए प्रदेशों में सहकार को संगठित करने के लिये १० मिलियंस फ्रैंक से भी अधिक की स्वीकृति दी थी, और साथ ही दो मिलियंस फ्रैंक फ्रांस की सर्वसाधारण सहकार-समिति को संगठित करने के लिये स्वीकृत किए। उक्त महाशय ने सहकारिता के गुणों को बतलाते हुए कहा है कि इँगलैंड में पारिवारिक जीवन का भाव उत्पन्न करने और शिक्षा-प्रचार आदि का अधिक श्रेय वहाँ के सहकार-आंदोलन को ही है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वास्तव में सहकारिता एक जीवन-शक्ति है। यह विधायक (creative) है। इसका पुरस्कार स्वतः इसके अंदर समाया हुआ है। इसमें उत्पन्न करने की विचित्र शक्ति (creative power) है। जितना ही यह उत्पन्न करती है, उतना ही उत्पन्न करने की इसकी क्षमता और शक्ति बढ़ जाती है। इसीलिये शायद ही कोई ऐसा आर्थिक काम है. जिसमें यह लागू न हो सके। इसकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि इसकी उन्नति के साथ-साथ इसके सदस्यों की शिक्षा की भी उन्नति होती जाती है। विभिन्न क्षेत्रों में विकसित होकर इसका समय राज्य-शासन में प्रवेश करने को आता है, और अंत में इसका लक्ष्य सहकारी राज्य(co-operative state) स्थापित कर सहकारी राज्यों के संघ (league of co-operative nations) तक—जो भविष्य में सच्चा राष्ट्र-संघ होगा—पहुँचने का है।

सहकारिता-आंदोलन का इतिहास इस बात का द्योतक है कि यह परिस्थिति का परिणाम है, अर्थात् जिस देश में जैसी स्थिति रही, उस देश में उसी रूप में इसका जन्म और विकास हुआ। भिन्न-भिन्न देशों ने अपनी आर्थिक समस्या हल करने के लिये सहकारिता का सिद्धांत अपनाया। इसकी उपयोगिता और सफलता देखकर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में इस सिद्धांत का प्रयोग किया गया। इस तरह एक छोटे बीज से इसने आज एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लिया है, और समस्त संसार इसकी छत्रच्छाया में है। एक बार भी जब लोग इसके गुण से परिचित हो जाते हैं, तो अपने आप यह (सहकारी आंदोलन) फैलने लगता है। इँगलैंड में ओवन, उनके अनुयायी और रोशडेल वहाँ के श्रमियों की अवस्था सुधारने और उन्नत करने के लिये बड़े चिंतित और उत्सुक थे। इसके लिये उन्होंने बाज़ार के चलते भाव से सामान बेचकर लाभ को ख़रीदनेवालों में ख़रीद के अनुपात से बाँटने का उपाय सोचा। उसी समय से वहाँ भंडार-समिति(co-operative stores) ने आश्चर्य-जनक उन्नति कर ली है। इसके साथ ही अन्य क़िस्म की सहकार-समितियाँ भी वहाँ खुलीं। उत्पत्ति करने तथा घर बनाने आदि दूसरे-दूसरे क्षेत्रों में सहकार-सिद्धांत से काम लिया जाने लगा। आयर्लैंड, डेनमार्क, हॉलैंड, और स्विटज़र्लैंड में भी सहकार के सिद्धांत को खेती की अवस्था सुधारने (better farming), पशुओं की अवस्था सुधारने (improvement of cattle) और खेती की उत्पत्ति को बेचने के काम में लाया गया। साख-समिति (credit society) के जन्मदाता रेफ़सन और सूएज ने सहकार के सिद्धांत को दिहात और नगर के कृषकों और छोटे-छोटे साहूकारों—जिनकी अवस्था शोचनीय हो रही थी—के सुधार में लगाया। उसी समय से जर्मनी के लोग तो हर क़िस्म की समस्या हल करने के लिये हर क्षेत्र में सहकार-सिद्धांत का प्रयोग करते हैं। इटली में जर्मनी की तरह लज़ेटी और ओलमबर्ग ने दिहात और नगर में कृषकों और मज़दूरों की अवस्था सुधारने में सहकारिता-सिद्धांत का अवलंबन किया। फ्रांस में सेंडीकेट के साथ-साथ सहकार-समिति का क्रमिक विकास हुआ।

भारत में यह आंदोलन अभी थोड़े दिन का है। पर थोड़े ही दिनों में इसकी पर्याप्त उन्नति हुई है। यहाँ की अवस्था के अनुकूल यहाँ साख-समिति को ही अधिक सफलता मिली है।

ऊपर मैंने संक्षेप में सहकारिता के सिद्धांत तथा उद्देश्य बतलाने की कोशिश की है। आगे एक स्वतंत्र लेख में मैं इसके व्यावहारिक पहलू पर प्रकाश डालने की कोशिश करूँगा, जिसमें विभिन्न देशों में, ख़ासकर भारतवर्ष में, सहकारिता-आंदोलन का जन्म, विकास और वर्तमान स्थिति पर विचार किया जायगा।

सूचना—पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना नंबर ज़रूर लिखना चाहिए।
—सुधा-संचालक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दुर्भाग्य !

[श्रीयुत "गुलाब"]

(१)

मैं चल रहा था—

कोई निश्चित मार्ग नहीं—ऊबड़-खाबड़ रास्ता, टेढ़ी-मेढ़ी भूमि, काँटों से भरे वृक्ष—तिस पर चारो ओर अंधकार ! एक भयानक काला पहाड़ मानो सामने मुँह बाए खड़ा है। कैसी विपत्ति है ! आगे बढ़कर मैं उससे टकरा जाऊँगा। मेरा मस्तक फट जायगा—ख़ून का पनाला बह चलेगा ! हाँ, ख़ून का पनाला !! बीहड़ मार्ग के धूलि-कणों में एक दरिद्र की रक्त-धारें सन जायँगी, किंतु उन अभागिनी धारों की ओर कौन देखेगा ? उन्हें पहचानेगा कौन ? कितने ही जीव-जंतु उन्हें अपने पैरों से रौंदते हुए इधर-उधर उछलते-कूदते चक्कर काटेंगे, और शिकार की खोज में आगे बढ़ जायँगे। बादलों की बूँदें उस धार को धो डालेंगी। सूर्य की तपती हुई किरणें उन धारों को सोख लेंगी। यही तो होगा मेरे रक्त का आदर और बेहूदा मूल्य !

हाँ, रक्त का आदर और बेहूदा मूल्य !

मुझमें प्रचंड कल्पनाओं का अंधड़ बहने लगा। मैं सनसना उठा। किंतु मेरी गति मंद नहीं हुई। मैं चौगुने उत्साह के साथ आगे बढ़ने लगा। मेरे मज़बूत पैरों में काफ़ी ताक़त थी। अंधकार के साम्राज्य में कभी जुगनू चमक उठते, तो कभी भेड़िया ग़ुर्रा उठता। दो-एक जंगली कुत्ते भी भूँक उठते। इसके सिवा और कोई कौतूहल का मसाला नहीं था। कोयल और बुलबुल की कौन कहे, उल्लू तक नहीं बोलते थे। वह देश बड़ा ही नीरस था। किंतु मुझे इससे क्या ?

मैं चल रहा था !

अकस्मात् आकाश में चंद्रमा चमक उठा। चारो ओर उजेली फैल गई। मैंने देखा, सामनेवाला काला पहाड़ धुएँ की तरह मेरे सामने से उड़ गया है ! वह कुहासे की ढेरी-मात्र था। अहा ! अब तो मेरा मार्ग बड़ा ही सुंदर और लुभावना बन रहा है। मेरे आस-पास हरे-भरे खेत लहरा रहे हैं, और मैं एक छोटी-सी पगडंडी पार कर रहा हूँ !

मैं मन-ही-मन खिलखिला उठा। गर्व से मेरी छाती फूल गई। बारंबार साहस की प्रशंसा करने लगा। किंतु अकस्मात् थोड़ी दूर चलकर मैं सूख गया ! मेरे संपूर्ण शरीर में जैसे बिजली का करंट घूम गया हो। मानो मुझमें जीवन है ही नहीं। मैंने एक भयंकर हाहाकार-ध्वनि सुनी !

ओह, वह हाहाकार-ध्वनि क्या थी, मुझे बर्बाद कर देनेवाली आँधी थी। अपने स्वभाव के अनुसार मैं उस आँधी की ओर चल पड़ा !

क़रीब दो सौ क़दम बढ़ने के बाद मुझे एक फूस की झोपड़ी दिखाई दी। मैं बिना कुछ सोचे-विचारे तूफ़ान की तरह उस झोपड़ी के अंदर घुस गया। उसके कपाट खुले थे। अंदर पैर रखते ही पनाले की गंदगी से मैं घबरा उठा ! किंतु ऊबा नहीं, वहाँ मैंने क्या देखा !—

यही कि एक छोटी-सी झोपड़ी है। कोने में मिट्टी का चिराग़ जल रहा है। पश्चिम दालान की तरफ़ चीथड़े की एक कथरी अस्त-व्यस्त रूप से बिछी है। उस पर एक अधेड़—अत्यंत दुर्बल—बीमार औरत पड़ी है। मौत के पंजों ने उसे धर दबोचा है। पास ही एक बारह-तेरह बरस की लड़की चिचिया-चिचियाकर सर पटक रही है। यही वह हाहाकार-ध्वनि थी, यही वह आँधी थी, जो मुझे बर्बाद कर डालने में समर्थ हुई। आह, उसका यह हाहाकार सुनकर पाषाण भी पिघल रहे थे। लड़की उल्टी-पल्टी पछाड़ें खा रही थी। उसके बदन में एक गंदा चिरकुट लिपटा था, जिसे देखकर मुझे बड़ी घृणा हुई। गंदगी से नाक फटने लगी। मैंने प्राणायाम साधा—साथ ही दहल भी उठा भया-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नक रूप से ! मेरा कलेजा धड़कने लगा। तेज़ी के साथ लड़की की बाँह झकझोरकर पूछ बैठा—"तू रो क्यों रही है री ! तुझ पर कौन-सा विपत्ति का पहाड़ टूटा है ?"

वह सन्न रह गई। एक साथ ही उसका प्रचंड हाहाकार, नहीं मालूम, कहाँ ग़ायब हो गया। वह भयभीत दृष्टि से अपनी बड़ी-बड़ी अश्रु-सिक्त आँखें मेरी ओर घुमाकर बोली—"यह मेरी मा है। मर रही है। तुम.....तुम.....कौन हो ?"

मैंने लापरवाही के साथ उत्तर दिया—"मैं तुम्हारा सहायक हूँ। जैसी चाहो, मुझसे सहायता ले सकती हो। मैं प्राण देकर तुम्हारी तकलीफ़ दूर करूँगा।"

लड़की कृतज्ञता से भर गई। किंतु वह मुझे देखने लगी बड़े आश्चर्य से ! इतने ही में मा ने करवट बदली। मैंने देखा, वह सूखकर काँटा हो गई है। हड्डियों की ठठरी-मात्र है ! उसके शरीर का रंग पतझड़ की पत्ती-जैसा हो रहा है। गाल पिचक और आँखें गड्ढे में धँस गई हैं। देखकर डर मालूम होता है—जैसे पिशाचिनी हो !

किंतु वह मेरी बातें ध्यान से सुन चुकी थी। उसने बड़ी विचित्र तरह से मुँह बाकर पूछा—"क्या यह सच है ? क्या तुम मेरी सहायता करोगे ?"

मैंने कहा—"क़सम खाकर कहता हूँ, प्राण देकर तुम्हारी तकलीफ़ दूर करूँगा। तुम मुझसे सब तरह की सहायता ले सकती हो।"

वह आँखें फाड़-फाड़कर मेरी ओर देखने लगी। उसका ललाट सिकुड़ रहा था, और उदास मुख परचढ़ाव-उतार के अत्यंत कमज़ोर भाव दृष्टि-गोचर हो रहे थे।

वह बड़े कष्ट से बोली—"तुम भगवान् हो। तुम यहाँ आ गए, मेरी सारी तकलीफ़ें दूर हो गईं। अब मैं सुख से मरूँगी।

"हाँ, एक प्रार्थना है।

"यह मेरी लड़की है—अभागिनी और दरिद्र ! इसे तुम्हें सौंपती हूँ। यदि तुम इसकी जीवन-नैया पार लगा दोगे, तो बड़ी कृपा होगी। सहज ही में मुझे मुक्ति मिल जायगी, और मैं वैकुंठलोक को चली जाऊँगी। और किसी तरह की नहीं, मैं तुमसे सिर्फ़ यही सहायता माँगती हूँ !"

वह हाँफने लगी। उपर्युक्त बातें एक साथ ही कहकर उसने अपनी संपूर्ण शक्ति ख़र्च कर डाली थी। मैंने हाथ जोड़कर उसके सामने घुटने टेक दिए। मेरी आँखें बंद हो गईं। वह मेरी पीठ पर प्यार का हाथ फेरने लगी।

इसके बाद क्या हुआ ? मैंने उस लड़की का भार अपने मज़बूत कंधों पर लाद लिया। मा की ज्योति-हीन आँखों में कृतज्ञता के आँसू भर आए। वह हाँफ-हाँफकर ऊर्द्ध्व साँसें लेने लगी। क्रमशः वह संपूर्ण रूप से शिथिल हो गई। उसकी आँखें मिच गईं, और वह सदैव के लिये इस संसार से कूच कर गई !

मैं घबरा उठा। लड़की चिल्लाकर उसकी लाश पर गिर पड़ी। वह बहुत बेचैन हो रही थी। उसका भयानक हाहाकार पुनः चारो ओर तड़पने लगा। और मैं—

मैं पत्र की तरह काँपने लगा। कहाँ की आफ़त मैंने मोल ली। किंतु बुद्धि भी तो कोई वस्तु है। मैंने धैर्य से काम लिया।

अतः उसी दिन चटपट मैंने मा का अंतिम संस्कार कर डाला, और लड़की को लेकर अपने घर नहीं—क्रांतिकारी संस्था में आ पहुँचा। जनाब ! मैं क्रांतिकारी दल का एक प्रभावशाली सदस्य था। मेरी संस्था बड़ी ही भयानक थी। हम लोगों का व्रत था—देशोद्धार ! हम लोग भीषण षड्यंत्रकारी थे।

हाँ—भीषण षड्यंत्रकारी थे !

तो, मैं उस लड़की को लेकर क्रांतिकारी संस्था में आ पहुँचा। कैप्टन साहब उसे देखते ही आग-बबूला हो गए, किंतु जब मैंने उस अनाथिनी की संपूर्ण रामकहानी कह सुनाई, तो वे करुणा-सागर बन गए। उन्होंने मेरी पीठ ठोंकी—ख़ुश होकर बोले—"शेरदिल, यह देवी है। इसी के हाथों हमारे देश का उद्धार होगा।"

मैं संतोष की साँस खींचकर कैप्टन साहब के चरणों पर झुक गया। उसी दिन से वह उसके भक्त बन गए। मा कहकर पुकारने लगे—बहन की तरह प्यार और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इज़्ज़त-आदर करने लगे—देवी की तरह श्रद्धा, भक्ति और पूजा !

अहा, वे कितने उदार और सरल थे ! मैं अपनी सफलता पर मुसकिरा उठा—

क्रांतिकारी संस्था की जय हो !

(२)

यों ही—

धीरे-धीरे सात सौ तीस दिन बीत गए। एक दिन मैंने अमावस्या को, अर्द्ध रात्रि के समय, मशाल की रोशनी के उजाले में देखा, उसकी दीक्षा समाप्त हो गई है, और वह नंगी तलवार लेकर बड़े गर्व से प्रतिज्ञा कर रही है—"मैं देश का उद्धार करूँगी। अपने उद्देश्यों पर दृढ़ रहूँगी। किसी तरह के प्रलोभन, अत्याचार और दंड मुझे अपने पथ से विचलित न कर पावेंगे। मैं कोटि-कोटि मानव-संतानों की रक्षा कर मातृभूमि को बंधन-मुक्त करूँगी। देश के लिये जिऊँगी, देश के लिये मरूँगी। मेरी प्रतिज्ञा हिमालय की तरह अटल रहेगी। मैं इस संस्था में रण-चंडी की तरह कार्य करूँगी। करालिका बनकर रहूँगी !" कहकर वह शेरनी की तरह तड़पी और फ़ौरन् कमर से छुरी निकालकर दाहने हाथ में भोंक ली। ख़ून का फ़व्वारा छूट पड़ा ! उसने ख़ून से प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर किए—उसे चूमा—आँखों से लगाया, और बिजली की तरह लपककर उसे कैप्टन के हाथों में दे दिया। तालियों की गड़गड़ाहट मच गई। हम लोगों में एक नवीन जोश, नवीन तबीयत और नवीन स्फूर्ति आ गई। कैप्टन साहब ने उसका नाम रक्खा लक्ष्मीबाई ! झाँसी की लक्ष्मीबाई नहीं, क्रांतिकारी संस्था की लक्ष्मीबाई !!

सभी ने उसे झुक-झुककर प्रणाम किया !

वह थी भी ऐसी ही ! हमारे दल पर उसका पूरा आतंक जम चुका था। आज गहरा रंग जम गया। सभी की निगाह में वह ऊँची उठ गई। और क्रांतिकारी संस्था के प्रत्येक सदस्य—कैप्टन तक—उसकी श्रद्धा-भक्ति करने लगे !

आह, वे दिन कितने मधुर, कितने सुंदर थे !

प्रकृति के सुंदर ज्ञान द्वारा वह गरीयसी बन गई। उस दिन की दरिद्र बालिका—आज हमारे दल की नायिका—यौवनोन्मुखी लक्ष्मीबाई थी। इस समय उसके प्रत्येक अंग से लावण्य फूट रहा था। वह अत्यंत रूपवती युवती बन रही थी। आह, उसकी लुनाई, उसका मतवालापन, उसका मुलायम प्रकाश—मतवाली सुधा से सराबोर हो गया। वह सौंदर्यमयी थी—शरच्चंद्रिका थी। उसके हृदय में देशोद्धार की ज्वाला थी। मुख पर चंद्रमा का अत्यंत सुंदर आकर्षण भरा प्रकाश ! आह, मैं उस रूप पर एक बार ही मुग्ध हो गया। तन-मन से न्यौछावर ! मधुर मादकता से परिपूर्ण !!

वह नवयुवती बन गई थी न ?—संकोच और लज्जा से लबालब !—मुझसे नज़र बचाकर चलने लगी। यदि दैवात् उसकी मेरी चार आँख हो जातीं, तो वह बुरी तरह से झेंप जाती ! शर्म से गर्दन नीची कर लेती। ज़मीन में गड़ जाती या भाग जाती। मुझे उसे छकाने में बड़ा मज़ा आता। मैं सोचता और हृदय के इन सुकुमार भावों को हृदय में ही छिपाकर देशोद्धार की स्कीमें बनाता रहता। क्रांतिकारी कार्यों में तल्लीन होकर विजयी बनने की चेष्टा किया करता, किंतु दिल—

दिल भी तो कोई वस्तु है न ?

वह लक्ष्मीबाई के सौंदर्य-जाल में फँस गया ! मैं खाते-पीते, उठते-बैठते लक्ष्मीबाई का ही सौंदर्य-भक्त बना रहता। उसका सौंदर्य, उसका रूप, मेरी आँखों के सामने, आठो पहर नाचता रहता। मैंने बहुत सोच-विचारकर देखा, यह आफ़त मुझ पर ही नहीं बीत रही है, लक्ष्मीबाई ने भी उसे ख़रीद लिया है। वह नहीं मालूम, क्या-से-क्या हुई जा रही है। वह हमेशा मुझसे लुक-छिपकर चलती है सही, किंतु दिन में दो-चार बार किसी-न-किसी बहाने वह मुझे देख लेती है अवश्य। उसे मैंने कई बार यह मधुर लीला करते देखा। वह ऐसा क्यों करती है ? क्या मुझे चाहती है—प्यार करती है ? मैं कल्पनाओं का तूफ़ान बन गया—भावों का महासागर ! अंत में मैंने उर-समुद्र-मंथन कर यही-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथ्य निकाला, वह भी मुझे चाहती है, जी-जान से मुझ पर निछावर है !

मैंने मन-ही-मन प्रतिज्ञा की, सर्व प्रथम मैं लक्ष्मीबाई से विवाह करूँगा, पीछे देशोद्धार !

किंतु किसी अज्ञात शक्ति ने मुझे फटकार डाला—क्या करते हो ? इस घृणा-कीट को क्रांतिकारी हृदय में स्थान न दो। देश-सेवा करो। ग़ुलामी की बेड़ियाँ काटो ! किंतु मैं तो पागल हो रहा था। मैंने इस फटकार को हँसी में उड़ा दिया—उसकी उपेक्षा की और उसके सुनहरे उपदेशों को ठुकराया !

आह, उन दिनों की जब याद करता हूँ, तो पैरों के नीचे से ज़मीन सरकती नज़र आती है। रोंगटे खड़े हो जाते हैं। नहीं मालूम, कैसे-कैसे तबीयत होने लगती है। सौ-पचास बोतलों का-सा नशा चढ़ जाता है। आँखें मदांध हो जाती हैं, और हृदय मतवाला ! मैं बहक जाता हूँ। लक्ष्मीबाई के सौंदर्य के सामने, सचमुच, आज भी, मुझे दीन-दुनिया भूल जाती है। मैं बेहोश हो जाता हूँ, और अपने को महाशून्य में तड़पता हुआ पाता हूँ !

महाशून्य में, हाँ, महाशून्य में तड़पता हुआ पाता हूँ !

(३)

उस दिन संध्या के सन्नाटे में वह बग़ीचे में फूल तोड़ रही थी। और, मैं एक वृक्ष की आड़ में छिपा हुआ उस सौंदर्य-सुधा का पान कर रहा था। ज्यों-ज्यों मैं उसे पीता, मेरी प्यास अधिक बढ़ती जाती। आख़िरकार मैं भाव-मग्न हो गया। मुझसे रहाइस न हो सकी। मंत्र-मुग्ध की तरह चल पड़ा, और पीछे से जाकर उसकी आँखें मींच लीं।

ओह ! इस सौंदर्य-स्पर्श में कितना नशा, कितना उन्माद, मोह और जादू था—मैं क्या बताऊँ ? भुक्तभोगी ही इस आनंद का अनुभव कर सकते हैं।

वह चौंक पड़ी। मेरा हाथ झिटककर, फ़ौरन्, दूर जा खड़ी हुई। उसने मुझे घूमकर देखा—चार आँखें होते ही वह शर्मा गई।

"क्या तुम हो ?"—उसकी आवाज़ में कुछ गर्मी थी। उसने कुछ जोश के साथ पूछा—"तुम किस लिये यहाँ आए हो ?"

मैंने कवित्व-पूर्ण शब्दों में कहा—"रसिक भौंरा वासंती सुमन का पता लगा ही लेता है। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। तुम्हें अपना प्रेम-परिचय देने आया हूँ। क्या तुम मुझे पहचानती हो ?"

किंतु वह कुछ नहीं बोली। पाषाण-मूर्ति की तरह ज्यों-की-त्यों नीरव खड़ी रही। मैं विकल होकर उसे देखने लगा। उस समय मेरी हृदय-शक्ति खो गई थी, और मैं किसी अज्ञात भावना में उछल रहा था। झट आगे बढ़कर उसका कोमल हाथ दाहने हाथ में दबा लिया ! उफ़्, मेरे हृदय में बिजली-सी दौड़ गई !!

उस समय वह सचमुच शर्म से काँप रही थी। उसके पैर जैसे लड़खड़ा रहे हों। एकाएक उसने प्रेम-भरी दृष्टि से मेरी ओर निहारा—उफ़् ! कलेजे में बर्छी-सी चुभ गई—ग़ज़ब की थी उसकी नज़र ! उसने झुककर, लड़खड़ाकर, विकल होकर अपना मस्तक मेरी छाती में छिपा लिया। मैंने उसके कोमल कपोल चूमे, और उसे आलिंगन-पाश में बद्ध कर लिया !

आह, वह आलिंगन कितना मधुर, कितना सुखमय था ? उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। वह कल्पना के बाहर की बात है !

तत्पश्चात् वह अपनी स्वाभाविक दुर्बलता में विलीन हो गई। अर्थात् मुझसे छिटककर अलग जा खड़ी हुई। मैंने उसे देखा, वह थरथरा रही है। उसकी आँखें अंगारे की तरह लाल हो रही हैं !

मैंने आश्चर्यान्वित होकर कहा—"लक्ष्मीबाई, यह क्या बात है ?"

वह बोली—"प्रियतम ! यह भयानक अपराध है !! घृणित प्रेम-पाप का दूषित नाटक है। माया का बंधन और सर्वनाशी मोह का तमाशा है ! ओह, यह देश के लिये कलंक है—संपूर्ण रूप से घातक है !"

मुझे हँसी आ गई। मैंने हँसते हुए कहा—"श्रीमतीजी, देश के लिये आज सैकड़ों, हज़ारों नवयुवक कटिबद्ध हैं—अनोखे बलिदान के लिये उत्सुक हैं। यदि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हम-तुम इस क्रांति-ज्वाला से अलग ही हो जायँगे, तो मैं नहीं समझता, इसमें देश के लिये कौन-सा अपराध या कलंक होगा। बग़ीचे के यदि दो फूल मुरझाकर गिर ही पड़ें, तो इससे क्या हुआ—बग़ीचे की शोभा नष्ट नहीं होती। आओ, प्रिये! पुनः मुझसे लिपट जाओ—अनंत तृप्ति प्रदान करो!"

किंतु लक्ष्मीबाई ने मुझे अत्यंत घृणा की दृष्टि से देखकर कहा—"जीवित रहते ही मैं इस नरक-कुंड की ज्वाला में नहीं जलना चाहती। मैंने देशोद्धार के लिये त्याग और बलिदान की प्रतिज्ञा की है। व्यक्तिगत स्वार्थों को तिलांजलि दी है। मैं क्षणिक उन्माद में मत्त होकर अपना सुवर्ण-जीवन धूलि में नहीं मिला देना चाहती। स्मरण रक्खो, यह घृणित प्रेम सर्वनाश की ओर खींच ले जानेवाला ज़हर है। क्या हमारा-तुम्हारा इतिहास घृणा का इतिहास होगा? क्या उसे पढ़कर लोग गालियाँ देंगे? देशवासी घृणा से थूकेंगे? नहीं, हर्गिज़ नहीं, तुम मुझसे दूर रहो। मैं तुम्हें नहीं चाहती!"

मैं अवाक् रह गया! उसकी बातों में अपमान और ज्वाला का हलाहल अधिक था—फिर भी मैं मुसकिरा उठा। कोमलता के साथ आगे बढ़ा, और एक भावुक प्रेमी की तरह पुनः प्रेयसी के गले से लिपट गया। वह कुछ बोली नहीं। आँखें बंदकर शायद वह भी आनंद-सागर की उत्ताल तरंग बन गई। वह दूने उत्साह के साथ मुझसे लिपट गई—आलिंगन-पाश में बद्ध हो गई। हम दोनो ही क्षण-भर के लिये प्रेम के नशे में मतवाले होकर झूमने लगे—संसार की सुध-बुध भूल गए!

हाँ, संसार की सुध-बुध भूल गए!

एकाएक पिस्तौल की भीषण आवाज़ हुई। मैं चौंक पड़ा—कलेजा धक्-धक् करने लगा। मैंने देखा, लक्ष्मीबाई—मेरी प्रेयसी—मेरी आनंद-ज्योति—ख़ून से लथपथ हो रही है। उसे गोली लग गई है, और उसका रक्त-रंजित शरीर मुझसे अलग होकर कटी मछली-जैसा ज़मीन पर तड़फड़ा रहा है। मुझे ऐसा मालूम हुआ, मानो भयानक भूकंप आ गया है, और समस्त पृथ्वी काँप रही है। मुझ पर जैसे वज्र टूट पड़ा हो! संपूर्ण शरीर सनसना उठा। आँखों के आगे अँधेरी छा गई! भगवान् यह कैसी विपत्ति है?

किंतु हा!

क्षण-भर में ही उस बेचारी के प्राण-पखेरू उड़ गए! उसकी दोनो आँखें निकल आईं। वह जैसे नेत्र विस्फारित कर मेरी ओर ताक रही है। आह, उसकी चितवन में प्रेम की चाह है। हृदय का आनंद है, और मेरे प्रति प्यार की भाषा का आनंद-स्रोत है। मैं चिल्ला उठा। पागल होकर सर के बाल नोचने लगा। मेरी आँखें बंद हो गईं।

हाँ, मेरी आँखें बंद हो गईं।

सहसा किसी ने बुरी तरह से मुझे ज़मीन पर दे पटका, और शेर की तरह छाती पर चढ़ बैठा। मैंने घबराकर देखा, स्वयं कैप्टन साहब ख़ूनी पोशाक में, साक्षात् यमराज की तरह, मेरी छाती पर चढ़े बैठे हैं। उनकी रक्त-रंजित आँखों से आग की चिनगारियाँ निकल रही हैं। क्रोध से मुख तमतमा रहा है। वे जल्लाद बन रहे हैं—जल्लाद!

बड़े ज़ोरों से उन्होंने मेरे दोनो हाथ अपनी मोटी जाँघों के नीचे धर दबाए, और खोपड़ी पर पिस्तौल तानते हुए बाघ की तरह ख़ूनी आवाज़ में बोले—"नर-पिशाच! नीच! राक्षस! तू बच गया। मैंने गोली मारी थी तुझे, किंतु निशाने का शिकार बन गई लक्ष्मीबाई! ख़ैर, कोई हर्ज नहीं। तू भी मरेगा—मेरे ही द्वारा मारा जायगा। तेरे पापों का प्रायश्चित्त और कुछ नहीं, इस पिस्तौल की ज़हरीली गोली है!"

आह, उस समय—

उस समय मैं मर रहा था। बोलने में असमर्थ! फिर भी संपूर्ण शक्ति संचय कर साहस के साथ बोला—"कैप्टन साहब, क्या किसी से प्रेम करना पाप है?"

कैप्टन ने ख़ूँख़्वार स्वर में कहा—"भयानक पाप है। क्रांतिकारी नवयुवकों के लिये किसी नवयुवती से प्रेम करना भयानक पाप है। अभागे कुत्ते! इस पाप का यदि संसार में कोई प्रायश्चित्त है, तो वह मेरे पिस्तौल की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गोली है। क्या तूने दीक्षा लेते समय इस बात की क़सम नहीं खाई थी, मैं भूलकर भी किसी स्त्री से प्रेम नहीं करूँगा। सौंदर्य-जाल से मुक्त—दूर—रहूँगा। स्त्री-मात्र को अपनी मा-बहन समझूँगा ?"

मैंने कहा—"मुझे वह प्रतिज्ञा याद नहीं है भगवन् ! सौंदर्य ईश्वरीय प्रतिभा का सबसे बड़ा दान है। मैं उसे देखकर पागल हो गया ! यदि आपके शब्दों में यह अपराध है, तो मैं आपसे क्षमा-प्रदान की भिक्षा माँगता हूँ।"

"क्षमा" कैप्टन साहब ने दाँत पीसकर कहा—"क्षमा कायरों के लिये है, अपराधियों के लिये नहीं।" वह बड़ी बेरहमी के साथ मेरा गला घोटने लगे। उन्होंने निर्दयता के साथ मेरे ऊपर पिस्तौल तान ली। आह, मेरा मस्तिष्क भन्ना उठा। मैंने देखा, 'मौत' मेरे सामने तांडव-नृत्य कर रही है ! उसका रूप बहुत ही भयंकर—अत्यंत डरावना है। मेरी आँखों के आगे अंधकार बरसने लगा। भयभीत होकर मैं बेहोश हो गया।

हाँ, भयभीत होकर मैं बेहोश हो गया, जैसे मेरे प्राण निकल गए हों, और मैं शून्य रूप में किसी भीषण सन्नाटे में सनसना उठा होऊँ !

सचमुच वह घड़ी मेरे लिये बड़ी आफ़त की घड़ी थी !

(४)

होश आने पर मैंने चकित होकर देखा, मैं काशी के मणिकर्णिका घाट पर मुर्दे की तरह पड़ा हूँ। मेरे संपूर्ण शरीर में भयानक पीड़ा हो रही है। सामने पतित-पावनी भागीरथी मंद गति से बही चली जा रही हैं। क्या मैं इतना पतित हूँ ? गंगाजी की पवित्र लहरें भी मेरे प्रति घृणा की दृष्टि फैला रही हैं। क्या ज़मीन और क्या आसमान, मैंने देखा, संपूर्ण प्रकृति मुझसे घृणा कर रही है। मनुष्य भी मुझे घृणित भावों से ताक रहे हैं। पक्षी भी मुझसे घृणा कर दूर उड़े जा रहे हैं। आह, मैं महापतित—महानीच हूँ !

मैंने चारो तरफ़ से अपने को घृणा के संसार में घिरा पाया। किंतु लक्ष्मीबाई को न भूल सका ! मुझे ऐसा जान पड़ा, मानो मेरी बग़ल में ही उस अभागिनी की लाश पड़ी है। इस समय भी वह बड़ी-बड़ी आँखों से मेरी ओर ताक रही है—उन आँखों में प्रेम-भरी भाषा है। चाह है। प्यार है !

मैंने आलिंगन के लिये दोनो हाथ पसार दिए। किंतु यह क्या ? शून्य—महाशून्य ! वहाँ कहीं कुछ भी नहीं है। पतित-पावनी भागीरथी के तट पर सिर्फ़ मैं अकेला पड़ा हूँ। मेरे गले में ज़ोरों का दर्द हो रहा है। बेहूदे कैप्टन ने उसे बुरी तरह से घोट डाला है।

मैंने आँखें फाड़-फाड़कर देखा, मैं मरा नहीं हूँ। परीक्षा के लिये मैंने अपना शरीर टटोलकर देखा—आह, मैं सचमुच नहीं मरा। घाट पर मुर्दे ढोए चले आ रहे हैं। 'राम-नाम सत्य है' की तूफ़ानी ध्वनि से मेरे कानों में दर्द होने लगा। मैं पीड़ाओं का पुतला बन रहा हूँ।

मैंने पुनः अपने को इस संसार में पाकर परमात्मा को धन्यवाद दे डाला। सहसा मेरी निगाह दाहने हाथ के बाज़ू पर चली गई। उसमें तावीज़-जैसा एक लाल पर्चा बँधा था। जल्दी-जल्दी, किंतु बड़ी मुश्किल से मैंने वह लाल पर्चा खोला। वह एक चिट्ठी थी ! उसमें लिखा था—

"नराधम !

तुम हत्या के ही योग्य थे। किंतु तुमने अपने गत जीवन में देश-सेवा के अनेकों प्रशंसनीय कार्य किए हैं। तुम्हीं ने क्रांतिकारी संस्था को जन्म दिया था, जो आज फूल-फल रही है।

किंतु नर-पिशाच ! तुम बड़े अभागे निकले ! तुमने अपनी बर्बादी के साथ-ही-साथ अभागिनी लक्ष्मीबाई को भी बर्बाद कर डाला। वह अचानक इस संसार से कूच कर गई !

देश-द्रोही ! तुम कितने बड़े स्वदेश-घातक निकले ! तुम्हारा दंड तुम्हारी हत्या थी।

किंतु नहीं, क्रांतिकारी सदस्यों के विशेष अनुरोध से मैं तुम्हें प्राण-दान देता हूँ। तुम अब यहाँ तक आने की चेष्टा मत करना। हम लोग अब और इस अपवित्र जगह में नहीं रहना चाहते। सुदूर पर्वत-कंदराओं में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुनः अपनी संस्था क़ायम कर देश का काम करेंगे। हम सबकी प्रतिज्ञाएँ अटल हैं। हम लोग प्राण देकर देश की रक्षा करेंगे। कोटि-कोटि मृत आत्माओं को जीवन-दान देंगे। हमारे कार्य अद्भुत और साहसिक होंगे।

ख़बरदार! हम लोगों के ढूँढ़ने की बेजा हरकत मत करना। इस बार फ़ौरन् खोपड़ी उड़ा दी जायगी।

सावधान! होशियार!

—कैप्टन"

पत्र समाप्त कर मैंने एक दीर्घ साँस खींची। हृदय के अंदर सहस्रों आघात होने लगे। लोहे के मज़बूत हथौड़े से जैसे कोई मेरा हृदय कुचल रहा हो। मैंने खड़े होने की चेष्टा की। किंतु सब व्यर्थ! खड़ा न हो सका। काँपकर गिर पड़ा। संपूर्ण शक्ति खो गई। मैं बहुत कमज़ोर हो गया था।

हाँ, बहुत कमज़ोर हो गया था!

यह बात नई नहीं, बहुत पुरानी है। इस घटना को बीते हुए आज दस-ग्यारह वर्ष हो गए। मैंने गेरुए वस्त्र धारण कर इसी स्थान को अब अपना घर बना लिया है। देशोद्धार और क्रांतिकारी कार्यों को तो मैं स्वप्न की तरह भूल गया हूँ। किंतु लक्ष्मीबाई को अब तक नहीं भूला। जब तक जीवन है, भूल भी नहीं सकूँगा। उसकी स्मृति की भयंकरी चिता रात-दिन धू-धूकर मेरे हृदय में जला करती है। इस समय भी धायँ-धायँ कर जल रही है। वह चिता इतनी भयंकरी, इतनी ख़तरनाक है, जिसका कोई ठिकाना नहीं! गत दस-ग्यारह वर्षों से बहता हुआ आँखों का भीषण जल-प्रपात भी उसे नहीं बुझा सका। और शायद—शायद मृत्यु-पर्यंत बुझा भी नहीं सकेगा।

वह चिता बड़ी ही प्रलयंकरी है!

उसे कौन बुझा सकेगा—जीवन या मृत्यु? क्या कोई इस प्रश्न का समुचित उत्तर दे सकता है? मैं अत्यंत कृतज्ञ होऊँगा!

प्रेम-परीक्षा

[लेखक, श्रीयुत पशुपाल वर्मा]

यह पुस्तक इँगलैंड की सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका मेरी करेली के 'दि ट्रेजर ऑफ़् हेवन' नामक उपन्यास का अनुवाद है। इसमें बतलाया गया है कि जो लोग धनसत्ता के मद में डूबे हुए हैं, वे प्रायः धन के द्वारा अपनी पत्नी के हार्दिक प्रेम को प्राप्त नहीं कर सकते। हार्दिक प्रेम के अधिकारी तो विशेषकर ग़रीब लोग ही होते हैं, और शुद्ध प्रेम का स्रोत ग़रीबों की झोपड़ियों में ही प्रवाहित होता है। एक सुशिक्षित लड़की धन के लोभ में किस प्रकार एक वृद्ध धनिक के साथ कृत्रिम प्रेम प्रकट कर उसके साथ विवाह करने को तैयार हो जाती है, और वह किस प्रकार असफल होती है। धनिक वृद्ध हार्दिक प्रेम की तलाश में वन-वन घूमता है, और अंत में उसे एक ग़रीब लड़की के द्वारा हार्दिक प्रेम किस प्रकार प्राप्त होता है, इन सब बातों का जीता-जागता चित्र देखना चाहते हों, तो एक बार इस पुस्तक को अवश्य मँगाकर पढ़िए। मूल्य ।।।=) सजिल्द १।=) स्थायी ग्राहकों से क्रमशः ।।=)।। और १)।। ही लिया जायगा।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षय रोगी की व्यवस्था

[श्रीयुत वैद्यराज]

क्या रोगी को रोग का हाल बताना चाहिए ?

क्षय-रोग का निश्चय हो जाने पर एक प्रश्न उठता है। वह यह कि क्या रोगी से कह देना चाहिए कि उसे क्षय हो गया है ? इस प्रश्न के उत्तर के संबंध में विशेषज्ञों में परस्पर कुछ मत-भेद है। बहुत-से चिकित्सक रोगी को रोग का हाल बताना उचित नहीं समझते। वे उसके रोग को खाँसी, बिगड़ा हुआ ज़ुकाम इत्यादि बताकर टाल देते हैं। प्रायः रोगी के कुटुंबी-जन, जो साथ रहते हैं, चिकित्सक से पहले ही से कह देते हैं कि यदि रोगी को क्षय-रोग हो, तो वह उसे न बतलावे। परंतु ऐसा करना बड़ी भूल है, क्योंकि इस-से कई प्रकार की हानियाँ होती हैं। यह प्रथा चिकित्सक के हित के लिये भी हानिकर है। कारण यह कि शीघ्र या देर में रोगी को अपनी वास्तविक दशा का अवश्य पता चल जाता है, और उस समय वह चिकित्सक पर धोखा देने या अज्ञानता का दोषारोपण करने लगता है। वह कहता है, यदि उसे अपनी वास्तविक अवस्था का पहले ही पता लग जाता, तो वह अधिक सावधानी से अपनी चिकित्सा की व्यवस्था करता। रोगी की दशा छिपाने से चिकित्सक के अतिरिक्त स्वयं रोगी तथा अन्य लोगों का भी अहित होता है। क्षय-रोग एक संक्रामक रोग है। इसकी छूत शिशुओं और बालकों को बड़ी आसानी से लगती है। इसलिये रोगी को इसका गुरुत्व समझाना अत्यंत आवश्यक है; परंतु यह तभी हो सकता है, जब रोगी को अपनी दशा का ज्ञान हो, और रोग से बचने के उपायों का बोध हो। इसके अतिरिक्त प्रत्येक रोगी अब इतनी जानकारी अवश्य रखता है कि रोग जितना ही बढ़ता जाता है, उतनी ही उसके अच्छे होने की संभावना कम होती जाती है। इसलिये रोग के प्रारंभ में रोगी को उसका हाल न बताने से बड़ी हानि हो सकती है।

क्षय-रोग कोई शीघ्र अच्छा होनेवाला रोग तो है नहीं। इसके निवारण में बहुत समय लगता और रोगी के सहयोग की अत्यंत आवश्यकता होती है। यह सहयोग तभी मिल सकता है, जब रोगी को अपनी वास्तविक दशा का ज्ञान हो। इसलिये हमारी समझ में यही उत्तम प्रतीत होता है कि रोगी को उस-की वास्तविक दशा से अवश्य सूचित कर दिया जाय। उसे बतला देना चाहिए कि उसे क्षय हो गया है। प्रारंभिक क्षय में रोगी से रोग का हाल क्रमशः कई बार में थोड़ा-थोड़ा बताया जा सकता है, क्योंकि प्रारंभिक क्षय का निश्चय करने में कुछ समय लगता है।

जब निश्चित रूप से रोग का अस्तित्व रोगी से प्रकट किया जाय, तो उसी के साथ उसको प्रोत्साहित करते हुए यह आश्वासन भी देना चाहिए कि उसका रोग अभी उपक्रांत अवस्था में है, और निस्संदेह अच्छा हो सकता है, परंतु अच्छा होने के लिये उसके पूर्ण सहयोग की अत्यंत आवश्यकता है। समझदार रोगी को रोग का कुछ विवरण बता देना चाहिए, और भले प्रकार समझा देना चाहिए कि रोग-निवारण में औषधि और जल-वायु इत्यादि की अपेक्षा चिकित्सक के आदेशानुसार चलना उसके लिये अधिक आवश्यक है। आश्चर्य की बात है कि बहुत-से अधीर और निर्बल प्रकृति के रोगी, जिनके लिये उनके संबंधियों को यह आशंका रहती है कि रोग बता देने से घबरा जायँगे, बड़ी सहन-शीलता से ऐसी सूचना को ग्रहण करते हैं, और अपने को भाग्य पर न छोड़कर वीरों की भाँति साहस से काम लेते हैं।

डॉ० लथाम का कहना है कि जब तक रोगी को रोग की गंभीरता का पूरा विश्वास नहीं होता, तब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तक वह पूर्ण रूप से कठोर नियमों का पालन नहीं कर सकता, जो कि रोग-निवारण के लिये अत्यावश्यक है। रोगी से केवल इतना कह देना बड़ी भूल है कि तुम्हारा फेफड़ा अमुक स्थान पर कमज़ोर है। चिकित्सक का कर्तव्य है कि वह रोगी को साफ़-साफ़ उसकी वास्तविक दशा बतला दे, और उसे अच्छी तरह समझा दे कि उसके आदेशानुसार न चलने से क्या-क्या हानि होने की संभावना है, रोगी में विश्वास उत्पन्न करने से उसका पूर्ण सहयोग प्राप्त हो सकता है, जो कि रोग-निवारण के लिये बड़ी बात है। परंतु जहाँ विश्वास उत्पन्न नहीं होता, वहाँ यह आशा नहीं की जा सकती कि रोगी ठीक-ठीक आदेशानुसार चलेगा, जिससे उसे लाभ हो सके। इस विषय में डॉ० पैंजोल्ट का जो कुछ मत है, उसका सारांश यह है कि रोगी की बीमारी की स्पष्ट या अस्पष्ट सूचना रोग की दशा के हलकेपन या गंभीरता के अनुसार देनी चाहिए। रोग की उपक्रांत अवस्था में स्पष्ट सूचना अच्छी होती है, परंतु जैसे-जैसे रोग अच्छा होने की संभावना कम होती जाती है, रोग का हाल भी उतना ही सोच-समझकर कम बताने की आवश्यकता होती है। कुछ प्रारंभिक रोगियों से चेतावनी के तौर पर यह कहा जा सकता है कि यदि वे असावधानी करेंगे, तो क्षय हो जायगा। परंतु जब रोग बहुत बढ़ जाय, और रोगी के बचने की आशा कम हो, तो उस दशा में उससे कुछ कहना उसे व्यर्थ कष्ट देना है। इस दशा में उसके संबंधियों ही से कहना उचित है। इसी प्रकार उग्र तथा वर्द्धमान क्षय में, जब उपद्रव भी मौजूद हों, रोगी को क्षय कहकर घबरा देने की अपेक्षा उसे धीरज देना और प्रोत्साहित करना लाभदायक होता है।

चिकित्सक और रोगी का संबंध

क्षयोपचार में वैद्य और रोगी के पारस्परिक संबंध के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है। एक लेखक का कहना है कि सफलता प्राप्त करने के लिये चिकित्सक में प्रबल व्यक्तित्व और इच्छा-शक्ति का होना आवश्यक है, जिससे वह रोगियों पर अपना प्रभाव डाल सके। इसके साथ ही उसके अंदर रोगी को समझाने की योग्यता, कार्य-तत्परता और रोगी के हित में अनुरागादि गुण होने चाहिए।

इलाज की सफलता के लिये चिकित्सक के प्रति रोगी के हृदय में श्रद्धा और भक्ति का होना अत्यावश्यक है। इलाज के प्रारंभ में रोगी के हृदय में श्रद्धा उत्पन्न करना तो कोई कठिन काम नहीं, परंतु क्षय-जैसे रोग में, जो वर्षों तक चलता है, बीच-बीच में स्वयं घटता-बढ़ता रहता है, और जिसमें कफ, रक्त आदि उपद्रव कभी-कभी स्वयं प्रकट हो जाते हैं, अंत तक श्रद्धा का रखना बड़ा कठिन है।

उन चिकित्सकों के लिये यह बात अवश्य कठिन नहीं है, जो विचार और चातुर्य से काम लेते हैं, रोगी के प्रति सहानुभूति रखते और उससे समझा-बुझाकर नियमों का पालन करा सकते हैं। परंतु दूसरी ओर, जो चिकित्सक धमकाकर और भय-प्रदर्शन द्वारा रोगी से अपने आदेशों का पालन कराना चाहते हैं, जैसा कि प्रायः सार्वजनिक आरोग्यशालाओं में होता है, वे कभी कृतकार्य नहीं हो सकते।

रोगी की आर्थिक तथा सामाजिक अवस्था

क्षय-रोग के इलाज की व्यवस्था करते समय रोगी की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। अल्प आयवाले रोगी को किसी ऐसी स्वास्थ्यशाला या श्रेष्ठ जल-वायु के स्थान में जाने का आदेश करना सर्वथा अनुचित है, जहाँ पर पहुँचना या जाकर रहना अत्यधिक व्यय-साध्य हो। ऐसा करने से उसे मानसिक वेदना होती है, क्योंकि वह सोचता है कि निर्धन होने के कारण ही वह एक ऐसे स्थान पर नहीं जा सकता, जहाँ जाना उसके रोग-निवारण के लिये आवश्यक है। जब कि उसे उतना ही लाभ घर पर रहकर हो सकता है, उसे बाहर जाने की सलाह देकर दुःखित करना कदापि उचित नहीं।

धनी रोगियों को क्षय का संदेह होने पर भी किसी उत्तम जल-वायु के स्थान अथवा आरोग्यशाला में भेजना उचित है। क्योंकि घर से बाहर जाकर ऐसे स्थान में आराम करने से लाभ होता है। बहुधा ऐसे मनुष्यों को आराम की आवश्यकता भी होती है। अल्प आय के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्यों को बहुमूल्य इलाज की सलाह तभी देनी चाहिए, जब क्षय-रोग का पूर्ण निश्चय हो जाय, और वह इलाज रोग-निवारण के लिये अनिवार्य हो।

रोगी की जीवनचर्या

सबसे पहले तो रोगी को उसके रहन-सहन के संबंध में शिक्षा देनी चाहिए। सर्वोत्तम विधि यह है कि कोई भी उपदेश देने से पहले रोगी की पूर्व-जीवनचर्या का हाल उससे पूछा जाय, क्योंकि क्षय-रोगी की जीवन-चर्या प्रायः दोष-पूर्ण होती है। यदि ऐसा न हो, तो उसे क्षय-रोग ही क्यों होता। चिकित्सा में सफलता प्राप्त करने के लिये रोगी के जीवन की प्रत्येक छोटी-छोटी बात का भी ध्यान रखना चाहिए। जो बातें स्वास्थ्य-संबंधी-नियमों के विरुद्ध होती हैं, उनको त्यागने के अतिरिक्त क्षय-रोगी के लिये यह भी परमावश्यक है कि वह अपने जीवन को नियमित बनावे। रोग-निवारण में औषधियों की अपेक्षा नियमित जीवन का अधिक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि क्षय-रोग बहुधा अनियमित जीवन का ही फल होता है। इस विषय में ब्रह्मचर्य का सबसे अधिक महत्व है। अधिक मैथुन का क्षय-रोग के विकास से घनिष्ट संबंध होता है। इसलिये रोग-निवारण में ब्रह्मचर्य-व्रत का धारण करना और रोगी का संयम-पूर्वक रहना नितांत आवश्यक होता है।

रोगी की शारीरिक, आर्थिक तथा अन्य स्थितियों पर विचार कर यह निर्णय करना चाहिए कि रोगी को किसी स्वास्थ्यशाला में भेजा जाय, या घर ही पर रखकर इलाज किया जाय। यदि यह निश्चय हो कि घर ही पर इलाज होगा, तो उसके घर की और विशेषकर उसके सोने के कमरे की परीक्षा करनी चाहिए, और देखना चाहिए कि यथेष्ट शुद्ध वायु आदि का प्रबंध है या नहीं। यदि उसके रहने के लिये खुली हवादार जगह न हो, तो जहाँ तक संभव हो, शहर के बाहर देहात में उसके रहने की व्यवस्था करनी चाहिए।

सबसे बड़ी कठिनाई रोगी की दिनचर्या और रहन-सहन की पद्धति को सुधारकर उसे रोग-निवारण के अनुकूल नियमित बनाने में होती है। विशेषकर उस दशा में, जब रोगी से तो यह कहा जाय कि वह अपना काम-काज छोड़कर आराम करे, और वह स्वयं अपने को इतना बीमार न समझे कि सब काम-काज छोड़ दे। साधारणतः इन रोगियों को यह विश्वास होता है कि काम करने से कोई हानि नहीं होती। जो निर्धन होते हैं, वे तो अपने और परिवार के निर्वाह के लिये काम करने की आवश्यकता बतलाते ही हैं, परंतु इस संबंध में धनवान् रोगी और भी अधिक अविधायी होते हैं। उनकी दलील यह होती है कि वे अपने काम को अधूरा कैसे छोड़ सकते हैं। जो व्यवसाय जारी है या काम हो रहा है, उसे पूरा करना या जो पढ़ रहे हैं, उनका परीक्षा में बैठना अत्यावश्यक है, इत्यादि-इत्यादि। परंतु कुशल चिकित्सक पर इन बातों का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वह स्पष्ट कह देता है कि चूँकि रोगी की दशा अभी अच्छी है, इसी कारण अच्छे होने की संभावना है, और यदि रोगी काम करता रहेगा, तो कुछ दिनों में रोग बढ़कर असाध्य हो जायगा। इसलिये चाहे वह आरोग्यशालाओं में रहे या घर पर, उसे आराम करने की बड़ी आवश्यकता है।

स्नान

बहुत-से लोग सरदी से बहुत डरते हैं, और क्षय-रोग होने पर उनका डर और भी अधिक हो जाता है। इसलिये वे स्नान करना बिलकुल बंद कर देते हैं। इसके अतिरिक्त लोग समझते हैं कि ज्वर और खाँसी में नहाना हानिकर है। परंतु क्षय-रोग में ऐसा समझना बड़ी भूल है। क्षय-रोग में रात में पसीना बहुत आता है, और प्रायः सेहुआँ (एक प्रकार का चर्म-रोग) हो जाता है। स्नान करने से और शरीर को स्वच्छ रखने से इन दोनो बातों को लाभ होता है। यदि नित्य-प्रति नहीं, तो दूसरे-तीसरे दिन तो क्षय-रोगी को अवश्य नहाना चाहिए। स्नान करने से रक्त-संचालन अच्छा, त्वचा का कार्य उत्तम और रोगी में शक्ति का संचार होता है।

ठंडे जल से नहाने के संबंध में कुछ मत-भेद है। कुछ आरोग्यशालाओं में ठंडे जल का प्रयोग किया जाता है। परंतु हरएक क्षयी ठंडे जल को सहन नहीं कर सकता। जिन रोगियों को ठंडे जल से स्नान करने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से प्रसन्नता नहीं होती, प्रत्युत उनके हाथ-पैर ठंडे और शिथिल पड़ जाते हैं, और प्रसन्नता के बदले बुरा मालूम होता है, उन्हें गरम जल से ही स्नान करना चाहिए।

वस्त्र

रोगी को वस्त्र भी सोच-विचारकर पहनाने चाहिए। कपड़े शीत से बचने के लिये गरम अवश्य हों, परंतु अधिक गरम भी न होने चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि सरदी के भय से क्षय-रोगी कपड़े अधिक पहनते हैं। बनियाइन, क़मीज़, वास्कट, स्वैटर, कोट और सबके ऊपर ओवरकोट। इनके बोझ से रोगी दब-सा जाता है। क्षय-रोगी के कपड़े गरम, हलके, ढीले और ऋतु के अनुसार न्यूनाधिक होने चाहिए। अधिक कपड़े पहनने से त्वचा निर्बल हो जाती है। सबसे भीतर का कपड़ा (बनियाइन इत्यादि) नित्यप्रति बदलना चाहिए।

तंबाकू पीना

कभी-कभी चिकित्सकों के सामने यह कठिन प्रश्न उपस्थित होता है कि क्षय-रोगियों को तंबाकू (हुक्क़ा या सिगरेट इत्यादि) पीना चाहिए या नहीं। कुछ लोग क्षय-रोग में तंबाकू पीना निषिद्ध समझते और अपने रोगियों को तंबाकू पीने से रोक देते हैं। परंतु इस कार्य में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होती। जिस रोगी को वर्षों से तंबाकू पीने की आदत पड़ गई है, वह सहज ही एकदम कैसे छूट सकती है, और जो रोगी एकदम छोड़ भी देता है, तो उसका स्वास्थ्य पर अहितकर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। सच तो यह है कि तंबाकू पीने का फेफड़ों के क्षय पर कोई हानिकारक प्रभाव नहीं होता। अतएव रोगी पर एक और भार डालने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता। हाँ, तंबाकू खाना अवश्य हानिकर है। कुछ लोगों का कहना है कि तंबाकू पीने से क्षय-ग्रहणशीलता बढ़ती और इस तरह रोग-वृद्धि होती है। परंतु अभी तक इस बात का कोई अकाट्य प्रमाण नहीं मिला। डॉ० वैब ने इस विषय में खोज की थी। अमेरिका की सेना में जाँच करने पर तंबाकू न पीनेवाले सैनिकों की अपेक्षा पीनेवालों में उन्हें अधिक क्षय नहीं मिला था। इस खोज के परिणाम से भी इस बात का समर्थन होता है कि तंबाकू पीने से क्षय-ग्रहणशीलता नहीं बढ़ती। उपर्युक्त खोज से डॉ० वैब इस सिद्धांत पर अवश्य पहुँचे कि तंबाकू न पीनेवालों की अपेक्षा पीनेवालों में कास-रोग की अधिकता होती है। डॉ० डयूबो के मतानुसार तंबाकू पीनेवाले रोगियों में स्वर-यंत्र का क्षय तथा कंठ के अन्य उपद्रव अधिक नहीं होते हैं। स्वर-यंत्र का क्षय स्त्रियों में उतना ही पाया जाता है, जितना पुरुषों में; यद्यपि स्त्रियाँ तंबाकू नहीं पीतीं। यह अवश्य है कि जिन रोगियों के स्वर-यंत्र में रोग हो या जिनको कोई कंठ-विकार हो, उन्हें तंबाकू नहीं पीना चाहिए।

इस विषय में डॉ० पैटरोल्फ़ का मत उत्तम प्रतीत होता है। उनकी राय है कि यदि रोगी को तंबाकू की प्रबल इच्छा हो, तो उसे खुले स्थान में, और कम-से-कम चार इंच लंबी नली में लगाकर सिगरेट पीनी चाहिए। जहाँ तक हो सके, धुएँ को अंदर न खींचना चाहिए, और न नाक से उसे बाहर निकालना चाहिए। अधिकता के अतिरिक्त तंबाकू पीने का मुख्य दोष सूखी गरमी और धूल होती है, जो धुएँ के साथ अंदर प्रवेश करती है। डॉ० पैटरोल्फ़ की राय में उपर्युक्त पूर्व-विधान के साथ सिगरेट पीने से कोई विशेष हानि नहीं होती। परंतु स्वयं तंबाकू न पीनेवाले रोगी के कमरे में अन्य पुरुषों के तंबाकू पीने से रोगी के खुली जगह में तंबाकू पीने की अपेक्षा अधिक हानि होती है।

जीविका की समस्या

क्षय-रोगी के लिये कौन-कौन-से व्यवसाय उपयुक्त हैं, इस विषय पर बहुत कुछ लिखा गया है। यह प्रश्न सवेग रोग से ग्रसित रोगियों के संबंध में नहीं उठता। ऐसे रोगियों को तो कुछ नहीं करना चाहिए। उनके लिये सब कारोबार छोड़कर आराम करना ही सर्वोत्तम है। परंतु जो रोगी क्षय-निवृत्त हो रहे हैं या हो चुके हैं, उनके लिये यह एक जटिल समस्या है।

रोग-निवृत्त मनुष्यों को उनके भावी कारोबार के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संबंध में सलाह देना बड़ा कठिन कार्य है। धनी मनुष्यों के संबंध में इस कार्य में अधिक कठिनता प्रतीत नहीं होती। वह अपना पूर्व कार्य फिर कर सकते हैं। उनको केवल अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। सावधानी और रोग-संबंधी नियमों का पालन करने से रोग के प्रत्यागमन से बच सकते हैं। इसी प्रकार जो रोगी किसी व्यवसाय-विशेष में कुशल होते हैं, रोग-निवृत्त होने पर वे भी अपने पूर्व व्यवसाय को फिर से ग्रहण कर सकते हैं। परंतु जो लोग शिल्पकार या श्रम-जीवी होते हैं, और जिनको विषम परिस्थितियों में काम करना पड़ता है, उनके लिये उपयुक्त सलाह देना बड़ा कठिन है। किसी रोगी को जीविका बदलने की सलाह दे देना तो सहज है, परंतु यह निर्णय करना बड़ा कठिन होता है कि उसके लिये अपने पूर्व व्यवसाय को, जिसमें कुशल होने के कारण उसकी आय अधिक होती है, और जीविका भले प्रकार चलती है, फिर से आरंभ करना अधिक हानिकर सिद्ध होगा या उसे छोड़कर किसी नवीन जीविका का ग्रहण करना, जो कम श्रमसाध्य हो, परंतु जिसमें उसका निर्वाह कठिनता से होता हो।

इसके अतिरिक्त जीविका का बदलना अधिकांश लोगों के संबंध में, विशेषकर उन शिल्पकारों के लिये, जो केवल एक ही कार्य में कुशल हैं, साध्य भी नहीं हो सकता। लोग अपनी पूर्व जीविका को, जिसमें उन्हें अधिक वेतन मिलता है, छोड़कर कम वेतनवाले व्यवसाय को कठिनता से स्वीकार करते हैं। एक बात और, जिसे प्रायः चिकित्सक भूल जाते हैं। वह यह कि लगातार एक ही काम करते रहने से शिल्पकार की इंद्रियाँ उसी काम के विशेष योग्य होती हैं। इसके अतिरिक्त उसका चित्त उसी काम में लगता है, जिसमें उसकी रुचि होती है, और जिसमें उसे पहले सफलता प्राप्त हो चुकी है। इसलिये ऐसे रोगी मना करने पर भी बहुधा उसी काम को करने लगते हैं, जिसके वे आदी होते हैं, और जो उनको प्रिय होता है।

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट है कि अधिकांश क्षय-रोगियों को अपना पुराना व्यवसाय छोड़ने की सलाह देना व्यर्थ होता है। हाँ, जिन लोगों को श्रम-साध्य और कठिन कार्य छोड़कर उतनी ही आमदनी का हलका और अच्छा कार्य मिल सकता है, उन्हें अवश्य अपना व्यवसाय बदल लेना चाहिए। क्षय-रोगी चाहे अपने पूर्व व्यवसाय को न छोड़ें, पर उनके लिये यह अत्यावश्यक है कि वे अधिक परिश्रम से बचें, क्योंकि अधिक परिश्रम से रोग फिर लौट पड़ता है। कार्य प्रारंभ करने से कुछ मास तक उनको किसी चिकित्सक के निरीक्षण में रहना चाहिए, और जैसे ही रोग-प्रत्यागमन के कोई चिह्न प्रकट हों, तुरंत काम-काज बंद कर देना चाहिए। क्षय-निवृत्त रोगी को धूलवाले सब कामों, जैसे मिट्टी के बर्तनों का काम, रेती बनाने का काम, काँच, लोहा, ताँबा, पत्थर आदि का काम, कपड़ा बुनना, सिगरेट बनाना इत्यादि से बचना चाहिए। क्योंकि धूल से विरत क्षयाघात पुनः उत्तेजित हो जाते हैं।

क्षय-रोगी के लिये घर के बाहर, खुली जगह में, रहना हितकर होता है। इसलिये कुछ लोग क्षय-रोगी के लिये खेती का पेशा अच्छा बताते हैं। परंतु यह स्मरण रखना चाहिए कि क्षय-रोगी के लिये कृषि-व्यवसाय ही एक-मात्र बाहरी काम नहीं है, और न वह बाहरी कामों में सर्वोत्तम ही है। किसान और मज़दूरों को परिश्रम अधिक करना पड़ता है, मज़दूरी कम मिलती है, पौष्टिक भोजन नहीं मिलता, और विश्राम के समय मनोरंजन की कोई सामग्री भी उपलब्ध नहीं होती। इसके अतिरिक्त ग्रीष्म-ऋतु की कठोरताओं से बचना उनके लिये असंभव-सा होता है। ऐसे रोगियों के लिये शहरों में अनेक उपयुक्त काम होते हैं, जिनसे आमदनी भी अधिक होती है।

रोगी के व्यवसाय-परिवर्तन के संबंध में एक और महत्व-पूर्ण और स्मरण रखने योग्य बात यह है कि जो रोगी अच्छे होने पर अपना पूर्व कार्य करने के योग्य नहीं होते, उन्हें रोग से पूर्ण रूप से निवृत्त नहीं समझना चाहिए, और न वे अंत में अच्छे ही हो सकते हैं। चाहे वे अनिश्चित समय तक काम छोड़कर बैठे रहें।

स्पष्ट है कि उपर्युक्त सब बातों पर विचार करके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही रोगी को अपना पूर्व व्यवसाय छोड़ने का परामर्श देना चाहिए। विना सोचे-समझे सलाह देने से लाभ की अपेक्षा हानि होने की अधिक संभावना होती है। यहाँ पर यह लिखना अनुचित न होगा कि अभी तक इस बात का ठीक-ठीक पता भी नहीं लगा है कि कौन-कौन-से व्यवसाय रोगी के लिये अहितकर होते हैं। केवल इतना कहा जा सकता है कि कुछ धूलवाले काम क्षय-रोगी के लिये अवश्य हानिकर होते हैं।

हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक-माला

गंगा-पुस्तकमाला

के

स्थायी ग्राहक

बनने से माला की पुस्तकों पर २५) सैकड़ा और हिंदुस्थान-भर की पुस्तकों पर एक आना रुपया कमीशन मिलेगा।

ग्राहक बनने से आप न केवल पुस्तकों से लाभ उठावेंगे, वरन् मातृभाषा के प्रचार में हमारा हाथ भी बटाएँगे।

स्थायी ग्राहक बनने के नियम

(१) स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फ़ीस सिर्फ़ ॥) है।

(२) पुस्तकें, प्रकाशित होते ही—१५ दिन पहले मूल्य आदि का "सूचना-पत्र" * भेज देने के बाद—स्थायी ग्राहकों को, २५) सैकड़ा कमीशन काटकर, वी० पी० द्वारा, भेज दी जाती हैं। ५-६ रुपए की कई पुस्तकें एकसाथ भेजी जाती हैं, जिसमें डाक-ख़र्च में बचत रहे।

(३) जो पुस्तकें हमारी प्रकाशित अन्य मालाओं में निकलती हैं, उन पर भी स्थायी ग्राहकों को २५) सैकड़ा कमीशन दिया जाता है।

(४) स्थायी ग्राहक जिस पुस्तक को चाहें, लें; जिस पुस्तक को न चाहें, न लें; यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। वे चाहे जिस पुस्तक की चाहे जितनी प्रतियाँ, चाहे जब, ऊपर-लिखे कमीशन पर मँगा सकते हैं।

(५) बाहर की—हिंदुस्थान-भर की—सब पुस्तकें स्थायी ग्राहकों को ⁄) रुपया कमीशन पर मिलती हैं।

(६) स्थायी ग्राहक ऑर्डर देते समय अपना ग्राहक-नंबर अवश्य नोट कर दिया करें, जिसमें उनके ऑर्डर पर कमीशन कटने में भूल न हो।

(७) स्थायी ग्राहक की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक-ख़र्च उनको ही देना पड़ता है, और दो बार वी० पी० लौट आने पर स्थायी ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

---

* नई पुस्तकों में से यदि कोई या सब न लेनी हों, अथवा और कोई पुस्तक मँगानी हो, तो 'सूचना-पत्र' मिलते ही हमें पत्र लिखना चाहिए, जिसमें इच्छानुसार काररवाई कर दी जा सके। १५ दिन के अंदर कोई सूचना न मिलने पर सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं।

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महारानी लक्ष्मीबाई

[श्रीयुत द्वारकाप्रसाद गुप्त 'रसिकेंद्र']

(१)

अमर सुयश करने को, स्वत्व-समर में—
कसके कमर कूदने की टेक ठानी थी;
'रसिकेंद्र' वदन में स्फूर्ति थी विचित्र भरी;
वीरता की मूर्ति और बल की निशानी थी।
लेने को स्वतंत्रता के रत्न यत्न करती थी;
शक्ति कर साहस के सिंधु में समानी थी;
कीर्ति की कहानी घर-घर में बखानी गई—
खूब लड़ी रानी झाँसीवाली, मरदानी थी।

(२)

भारत की राज्य-लक्ष्मी होके छवि छाई दिव्य;
चतुराई-भरी वीर-बाई 'लक्ष्मीबाई' थी;
बालक का देख के भविष्य अंधकार-पूर्ण—
तलवार अधिकार-रक्षा को उठाई थी।
देखके लड़ाई खाई मुँह की मुँछाड़ियों ने;
वीरों के समान मौत समर में पाई थी;
आत्म-दान करना विचार गंगाधरजी को—
धार अवतार गिरिराज-सुता आई थी।

विनय

[कुमारी कौशल्यादेवी स्नातिका]

(१)

डाली बन झुकने दे माली,
आशा की इस धवल धरा पर;
भौंरा बनकर उड़ लेने दे
फिर इस सरस सुमन पर सुंदर।

(२)

रस लेने दे नहीं, और बस
व्यथा तनिक बढ़ जाने दे;
'मतवाली' कर दे फिर भोले,
विस्मृति में बह जाने दे।

(३)

श्वासों के मृदु-मंद पवन में
इच्छाएँ उड़ जाने दे;
क्षुब्ध हृदय को, अश्रु-रूप बन,
मूक व्यथा बतलाने दे।

(४)

पीड़ा से क्रीड़ा करने दे,
कठिन परीक्षा होने दे;
मिटने दे उस रूप-राशि में,
मम-तव-भाव न रहने दे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

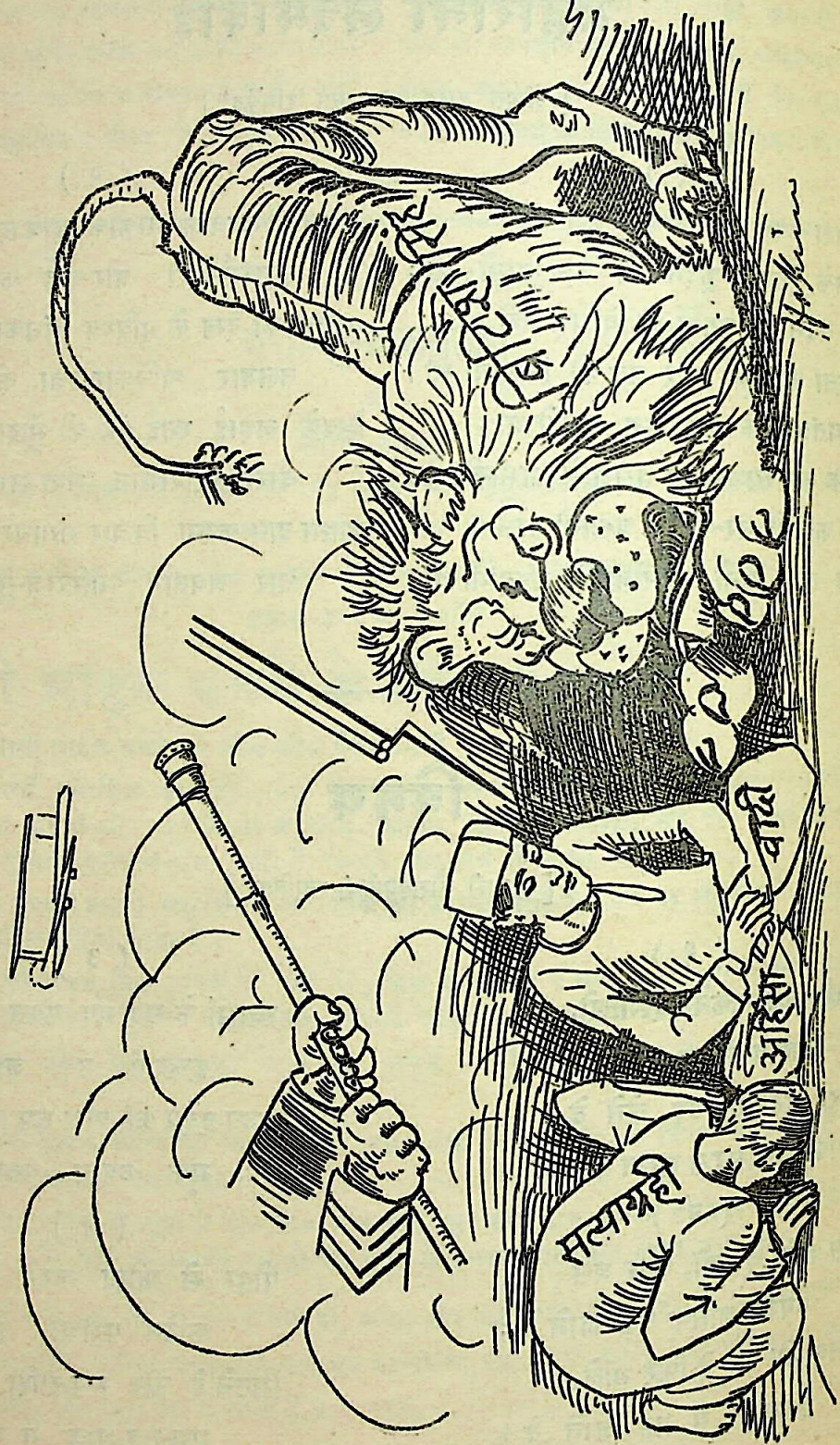

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. दो आँखें

यतम, इन दो आँखों में तुमने अपनी सारी मदिरा उँडेल दी ! तुम्हारे रूप की सुधा का पान करने के लिये हृदय सिमिटकर इन दो आँखों में आ बैठा है। तुम्हारे सौंदर्य का संगीत सुनने के लिये कान खिसककर आँखों के अंतस्तल में आ छिपे हैं। नेत्र-वंचित ये दोनो पलक तुम्हारे अनंत लावण्य का केवल अनुभव कर बेसुध पड़े हैं।

यदि आँखों को बंद करता हूँ, तो तुम्हारे खो जाने का भय हो जाता है। यदि आँखों को खुला रहने देता हूँ, तो अपने खो जाने का भय हो जाता है। विकराल वासनाएँ पिघलकर इन दो आँखों में आ बसी हैं। आज इनमें कामना की ज्वाला धधक रही है।

प्रियतम, प्रतीक्षा की चिर-जागृति से प्रज्वलित इन दो आँखों में तुम आ बैठो, तो मैं अपनी भीगी पलकों को बंद कर चिर-निद्रा की विश्रांति में सो जाऊँ !

शांतिप्रसाद वर्मा

× × ×

२. सद्गुरु-स्वरूप

जब गुरुदेव दयालु दया कर,
क्षण-भर अंतर्गृह में आकर
अपनी छवि दिखलाते हैं,
रोम-रोम दर्शनोल्लास से
तब हर्षित हो जाते हैं ॥ १ ॥

जब गुरु-चरण-सरोज विमल में,
खिले हुए-से मानस-जल में
दृग भौंरे बन जाते हैं,
उस निमेष में मधु-स्वरूप वे
निज जीवन-फल पाते हैं ॥ २ ॥

उर-नभ में पुण्यों-सा संचित
जब गुरु-मुख-शशि होता समुदित,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तब विलोचनों के द्वारों से
उमड़-उमड़कर स्नेह-सिंधु है
बह जाता अटूट धारों से ॥ ३ ॥
जब सौभाग्य फलित होता है,
हृदय वियोग-व्यथित रोता है,
फैले आँखों के अंचल में
परम-अर्थ का धन उँडेलने
सद्गुरु-मुख आता है पल में। ४ ॥
साधन-पोत विश्व-सागर में
भटक तमोमय ऊर्मि-निकर में
जब हताश हो जाता है,
द्युति-स्तंभ-सा जन-दृक्पथ में
गुरु स्वरूप तब आता है ॥ ५ ॥

(सवैया)

छवि-धाम-सा भ्राजता भाल जहाँ,
अलकावली शांति-लता-सी लसी;
जिसमें दया-स्रोत-से हैं दृग दो,
अघनाशिका नासिका है शर-सी;
जहाँ नव्य-खिले-कमलों-से कपोलों में
नृत्य किया करती है हँसी;
है पियूष जहाँ रसना में, रहें उसी
सद्गुरु-रूप में आँखें फँसी ॥ ६ ॥

रामनारायण मिश्र (एम्० एस्-सी०)

× × ×

३. चरित्र-चित्रण पर एक दृष्टि

नाटकों, उपन्यासों और कविताओं में मानव-जीवन की स्फूर्ति देखी जाती है। जो विकास मिलता है, वह सभी व्यापक और संभव कल्पना है। यदि चरित्र-चित्रण में कहीं घटना-चक्र से असंभव और कल्पनातीत बातों का वर्णन आता है, तो उसे परलोक में निवास करनेवाले देव अथवा अन्य लोक के दैत्य-दानवों का चरित्र कहकर लेखक अपने बचाव की गुंजाइश पैदा कर लेता है। समाज से शास्त्र-विशेष-शासित जिस जन-समूह का बोध होता है, उसमें ऐसे अनेक चरित्र होते हैं, जो कहीं-कहीं पर देव-चरित के साथ में देख पड़ते हैं। वे चरित आदर्श माने जाते हैं। उन चरित्रों का उपयोग समाज के लिये हितकर और उत्थान का कारण होता है।

साहित्य-सृष्टि की यही विशेषता है। इसी विचार के कुछ लोग साहित्य को criticism of life कहते हैं। परंतु हमारे वर्तमान साहित्य में दैवी-दानवी और राक्षसों के चरितों के चित्रण आघात-प्रतिघातों से नहीं होते, और न उन रचनाओं में प्राकृतिक छटा की आभा देख पड़ती है। जिस काव्य में मानव-जीवन के गंभीर सत्य-ज्ञान का परिचय है, वही उत्कृष्ट एवं यथार्थ काव्य है। कारण, यदि कवि की कल्पना ऊर्ध्व-दृष्टि-संपन्न है, उसकी सृष्टि मूल्य में जगच्छाया का आभास भी नहीं है, तो वह निश्चय ही कल्पना-मात्र है। किंतु जो लोग मांसल-सौंदर्य के उपासक हैं, जो वासना-जन्य मोह को प्रेम का रूप देकर नियति-चक्र के फेर में उछल-कूद को सार्थक सिद्ध करने की इच्छा रखते हैं, उन्हें मानव-जीवन की गंभीर विवेचना का सूत्रपात काव्य में सह्य नहीं। वे काव्य को नियति-यंत्र के भरोसे पर ही गतिशील मानने को तैयार हैं।

संस्कृत के साहित्य-युग में अलंकारों की सृष्टि और रस-विश्लेषण से जो अनेक खाने बने, उनमें यदि उन-के रीत्यनुसार चित्रण न हो, तो न तो अलंकार ही का पता लगता है, और न रस का! उन शास्त्रीय ज्ञान-संपन्न पंडितों के रीत्यनुसार उन नायिकाओं और रच-नाओं का, जो अपने ही ओज से ओजस्वी, अपने ही रस से स्निग्ध और अपनी ही ज्योति से आलोकित हैं, कोई मूल्य ही नहीं रहता। वे व्यतिरेक-प्रतीप के ओछे में विभाव-अनुभाव के साथ जब तक व्यभिचार लेकर उपस्थित न होंगी, तब तक उनके अक्षय रूप-यौवन का कोई मूल्य नहीं।

जीवन में संयम की आवश्यकता केवल बुद्धि-विकास के पूर्व तक ही होती है, वहीं तक उसकी सार्थकता है। उसके बाद संयम नहीं होता। और यदि हो, तो निश्चय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही मानना पड़ेगा कि बुद्धि का विकास नहीं हुआ। इसलिये जिन लोगों के चर्म-चक्षु सौंदर्य का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें सौंदर्य के बिना तृप्ति नहीं होती। वे रस के अंगोपांगों से, व्यूह में, न तो पथ-भ्रष्ट होते हैं, और न उस तरह की लाम-रचना से जंग जीतने की आशा ही करते हैं।

अस्तु, संस्कृत-युग का यह दोष इस समय हिंदी के एक प्रधान अंग पर अब तक अपनी छाप के साथ है। आश्चर्य तो यह है कि उनमें अनेक ग्रैजुएट हैं। वे न तो रस-परिपाक कर पाते हैं, और न वैसी रचनाओं का आदर ही करते हैं। भाषा के शृंगार की दोहाई देकर वे वास्तव में एक प्रकार के असत्साहित्य की सृष्टि करते हैं।

इधर जिन लोगों में नया-पुराना कुछ भी नहीं है, वे उन दोनों के बीच में, ब्याह के बंदर की तरह, सारे समाज में वैषम्य की मेंड़ बाँध रहे हैं। उनकी रचना-विदग्धता से न जाने किस प्रकार के दिमाग़ तैयार होंगे! न तो कहीं चित्र है, और न सौंदर्य!

इनके अतिरिक्त एक दल है। वह हिंदी में काम करता है। उसकी रचनाओं में सौंदर्य-बोध, प्रशस्त विचार है। जीवन की गंभीर विवेचना, प्रकृतिच्छटा और अंतर प्रेम के चित्र हैं। परंतु आजकल चुने हुए विशेषणों से लांछित हैं।

रसिक रंजन रतूड़ी

× × ×

४. बिहारीलाल

मध्यप्रांत का सागर ज़िला बहुत दिनों से साहित्याभिरुचि के लिये प्रसिद्ध रहा है। इस ज़िले में कभी साहित्य-प्रेमी विद्वानों, सुकवियों और सुलेखकों का अभाव नहीं रहा। यदि काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा इस ज़िले में भी हिंदी-पुस्तकों की खोज कराती, तो उसे अच्छी सहायता मिलती। यह ज़िला आरंभ से ही बहुत-से छोटे-बड़े राज्यों के उत्थान और पतन का केंद्र रहा है, अतः यहाँ स्वभावतः ही विद्वानों और कवियों का प्राचुर्य रहा है। यदि उनकी समस्त रचनाएँ आज प्राप्त होतीं, तो निस्संदेह हमारे पास गर्व करने के लिये अच्छी सामग्री रहती। परंतु उपेक्षा की ओट में वे विद्वान् छिप गए, वे कवि छिप गए और छिप गईं उनकी जगमगाती हुई कृतियाँ। ऊपर हमने जिस महानुभाव का नाम अंकित किया है, उसे हुए अभी बहुत दिन नहीं हुए। पर वह भी—और उसकी रचनाएँ भी उपेक्षा की ओट में छिपती जा रही थीं कि सहसा श्रद्धेय श्री० रामबालजी बड़ौनिया बी० ए०, डिपुटी-इंस्पेक्टर ऑफ़ स्कूल्स ने उस पर्दे को हटा दिया। आपकी चेष्टा से ही उक्त महानुभाव का नाम तथा उसकी कृति सूर्य के प्रकाश को देखने का सौभाग्य प्राप्त कर सकी है। अस्तु।

इस लेख के नायक बिहारीलालजी हिंदी-भाषा के एक अच्छे कवि थे। आपको सतसई के रचयिता महाकवि बिहारी से भिन्न समझना चाहिए। यह महाशय जाति के कायस्थ थे। इनका जन्म कार्तिक-बदी अष्टमी, संवत् १८७६ में खुरई-नामक नगर में हुआ था। यह नगर सागर ज़िले की खुरई तहसील का केंद्र-स्थल है।

बिहारीलालजी के पूर्वज लगभग साढ़े पाँच सौ वर्ष पूर्व दिल्लीश्वर की ओर से गढ़ौला जागीर (तहसील खुरई) में क़ानूनगोई करते थे। किसी पिछले बादशाह के समय में गढ़ौला की प्रजा ने विद्रोह किया था। उसने बिहारीलालजी के पूर्वजों के मकान को भी अग्नि-अर्पण कर दिया था, जिससे आवश्यक पत्र तथा सनदें स्वाहा हो गईं। अतः बिहारीलालजी के पूर्वजों का कोई विश्वस्त इतिहास अब प्राप्त नहीं होता; हाँ, पिछली चार पीढ़ियों का वर्णन पूर्णतया प्राप्त है। उससे विदित होता है कि बिहारीलालजी के पूर्वज इस ज़िले के सुप्रसिद्ध और सुप्रतिष्ठित लोगों में से थे। अस्तु।

चतुर्भुजराय क़ानूनगो के पश्चात् उनके पुत्र सुवंशराय क़ानूनगो हुए। कहते हैं, इनके समय में, सागर ज़िले के पड़रई-नामक ग्राम के राव खानचंद या खेमचंद ने बादशाह की आज्ञा से लोहागढ़ विजय किया था, जिससे सम्राट् ने प्रसन्न होकर उसे गढ़ौला की जागीर, जिसमें १६१ गाँव थे, प्रदान की थी। "सागर-सरोज"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से यह तो पता चलता है कि खेमचंद को बादशाह ने गढ़ौले की जागीर प्रदान की थी, पर वह लोहागढ़ विजय करने के ही कारण प्रदान की थी या अन्य किसी कारण से, इसका पता नहीं चलता। हमें तो खेमचंद का लोहागढ़ विजय करना एक प्रवाद-सा ही मालूम होता है, क्योंकि वह दुर्ग अत्यंत दृढ़ था, और सम्राट् की सेनाओं का परिश्रम अनेक प्रकार से व्यर्थ कर चुका था। तब सम्राट् बहादुरशाह की आज्ञा से महाराज छत्रसाल ने उसे विजय किया था। लाल कवि के 'छत्र-प्रकाश', 'मिश्रबंधु-विनोद', 'महाराज छत्रसाल', 'इति-हास गढ़ाकोटा' आदि कई ग्रंथों में इसके विस्तृत प्रमाण पाए जाते हैं। जो हो, सुवंशरायजी ने ही राव खेमचंद को गढ़ौले की जागीर का अधिकार सौंपा था।

सुवंशरायजी बड़े प्रतापी क़ानूनगो थे। उन्होंने एक अनाथ बालक और बालिका का पालन किया था। जब आपने उनके विवाह किए, तब शतशः बारातियों के पैर घी से धुलवाए, और उनके सामने चाँदी की कटोरियों में कुछ व्यंजन परोसे गए थे। सुवंशरायजी ने बारातियों को सूचना कर दी थी कि भोजनोपरांत वे कटोरियाँ अपने साथ ही लेते जायँ। बाराती जो कटोरियाँ नहीं ले गए, वे पत्तलों के साथ भंगियों को दे दी गईं। इन सुवंशराय के पुत्र बुलाखीदास भी बड़े प्रतापी हुए। उन्हें बादशाह ने ६३० बीघे भूमि सनद द्वारा माफ़ी में प्रदान की थी। अस्तु।

गढ़ौला जी० आई० पी० आर० की बीना-कटनी-शाखा पर जरुवाखेड़ा-नामक स्टेशन से पाँच मील उत्तर की ओर है। पहले यहाँ की बस्ती तालाब के उत्तर की ओर थी, जहाँ अब सीताफल और खिरनी के संख्यातीत वृक्ष लगे हुए हैं। कोई ३०० वर्ष हुए, बिहारीलालजी के पूर्वजों ने बस्ती, वहाँ से हटाकर तालाब के पश्चिम की ओर, जहाँ उसका बहाव है, बसाई, और किनारे पर बहाव की ओर कोई १०० हाथ चौड़ा पत्थरों का पटाव करवाकर अपने महल बनवाए, जिनके खँडहर अभी तक विद्यमान हैं। गढ़ौला से पूर्व की ओर, कोई आधे मील की दूरी पर, बिहारी-लालजी के किसी पूर्व-पुरुष की पत्नी का एक 'सती-मठ' है, जहाँ उनके वंशज अब तक समय-समय पर पूजा करने के लिये आते रहते हैं।

बिहारीलालजी अपने वंश के सपूत थे। कविता पर उनकी बड़ी रुचि थी; स्वयं कविता रचते थे और ख़ूब रचते थे। आपने जितनी कविता लिखी है, वह सब भक्ति-भाव-पूर्ण है। आपकी कविता पर बुँदेलखंडी भाषा की गहरी छाप लगी हुई है। पर भाषा मँजी हुई, बामुहाविरा, सरल, सरस और प्रसाद-गुण-पूर्ण है। बिहारीलालजी गणेशजी के बड़े भक्त थे, वे आजीवन गणेशजी की झाँकी बड़े साज-बाज और भक्ति-पूर्वक बनाते रहे। आपने 'गणेशजी का नख-शिख-ध्यान' भी रचा था। 'राधा-शतक' भी आपकी एक अच्छी रचना है। इनके सिवा उनकी स्फुट कविता भी बहुत कुछ प्राप्य है।

परंतु आपकी रचनाओं में 'सुदामा-प्रबंध' का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। श्रीकृष्ण और सुदामा की अपूर्व मैत्री का आख्यान ही इस ग्रंथ का मुख्य विषय है। समग्र प्रबंध लगभग ३५० छंदों में समाप्त हुआ है। 'सवैया'-छंद को प्रधानता दी गई है। यत्र-तत्र दोहों, सोरठों और पदों पर भी कृपा की गई है। संपूर्ण ग्रंथ देखने के पश्चात् यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि कवि को कथा-वर्णन में सफलता प्राप्त हुई है, भावों का प्रस्फुटन भी वह भली भाँति कर सका है। पाठकों के विनोदार्थ नीचे इस ग्रंथ के कुछ छंद दिए जाते हैं।

दीन सुदामा का परिचय सुनिए—

"बिप्र सुदामा रहो पुर एक,
लगे तन दुःख-दरिद्र घनेरे;
दुर्बल, संपति सों नहिं भेंट,
बिना पट कंपत गात सबेरे।
अन्न कहूँ, बिन अन्न कहूँ,
कबहूँ भखि साग रहैं दुख-प्रेरे;
पै निज धर्म न छाँड़हिं दंपति,
हैं हरि के पद-पंकज-चेरे।
शील, सुलच्छन, सुंदर रूप,
सलज्ज, सुबुद्धि सबै गुन-रूरी;
सेवन-पूजन में पति के नित,
चित्त रहै, न चहै द्विज दूरी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाम गोविंद सदा मन में,
सुधरै सिर पै पद-पंकज-धूरी ;
मानत सुक्ख सदा दुख में,
द्विज की प्रिय नारि पतिव्रत पूरी।"

उक्त छंदों में कवि ने दीन ब्राह्मण तथा उसकी पत्नी की दरिद्रता के साथ ही उनकी धर्म-भावना का भी परिचय देने की चेष्टा की है।

धनवान् नगर में भाँति-भाँति के आमोद-प्रमोद होते हैं। पर बेचारे ब्राह्मण-दंपति तीन-तीन दिन का उपास करते हैं। तब ब्राह्मण-पत्नी पति को धन की महिमा बतलाती हुई उसे धनोपार्जन के निमित्त उत्तेजित करती है। परंतु सुदामा केवल गोविंद की भक्ति में ही संतुष्ट है। इस दृश्य को कवि ने इस तरह अंकित किया है—

"नग्र बसैं धनवान सबै,
तिनके घर आनँद होत घनेरे ;
औरन को कन देत सबै, इनकों लखि
दूराहें तें घर फेरे ।
तीन उपास भए द्विज कों,
लखि नारि कहै, सुनिए पति मेरे ;
हद्द भई अब तो करिए,
सुकछू धन हेतु उपाय सवेरे।
पूजन-सेवन है धन सों,
धन सों निशि-वासर आनँद होई;
यज्ञ-विधान सबै धन सों,
धन सों नर-धर्म करैं सब कोई।
या जग में जिनके धन है,
धन हैं धन हैं पति वे नर सोई ;
याचहु ता हित मित्र गोविंदहिं,
लै धन देहु दरिद्रहिं खोई।
बैन प्रिया सुन विप्र कह्यौ,
तिय, देत कहा धन के हित शिक्षा?
जे परिपूरन भक्त सदा,
सुन संपति की तिनकों नाहिं इच्छा।
औरन को धन चाहिए नारि,
सुदामहिं संपति गोविंद-रक्षा ;
साँच बड़ो धन है द्विज कें पुनि
दूसरि संपति केवल भिक्षा।"

अंतिम दो पंक्तियों का भाव बड़ा ही मार्मिक है।

सुदामा ज्यों-त्यों करके द्वारका पहुँच ही गया और श्रीकृष्ण के सामने जा पहुँचा। तब कवि उन दो आदर्श मित्रों की भेंट इस प्रकार कराता है—

"ताहि समय प्रभु लोचन कोर,
परी द्विज ओर चले तज फेंटो ;
लोचन पूर भरे जल सों,
भरि दौरत काँटहिं पेंच लपेटो।
भूल गई तन की, मन की सुधि,
दौरि द्विजै भर अंक समेटो ;
कंध सों कंध लगा उर सों,
करुना करिके करुनानिधि भेंटो।"

अब भगवान् श्रीकृष्ण के हृदय की सरलता देखिए, सुदामाजी से किस भोलेपन से उनकी पत्नी का कुशल-समाचार पूछते हैं—

"भावज की कुशलात कहो,
द्विज-नारि पतिव्रत भक्तिमई है ;
मो पर प्रेम करैं अतिशय,
शिशुतापन में दए भोज कई है।
पै नहिं जानि परै अब कें,
केहि कारन मो सुधि भूलि गई है ;
का अपराध बनो हमसों,
तेहिं तें न कछू धर भेंट दई है।"

इसके पश्चात् भगवान् की दृष्टि सुदामा की बग़ल में दबी हुई तंदुल-पोटली पर पड़ गई। बस आप झपटकर उसे छीन लेते और तंदुल-कण चबाते हुए आनंद-विभोर हो उनकी प्रशंसा करने लगते हैं—

"ता छिन झोंक दियो प्रभु ने,
बहु भाँतिन भाँति बखान करे हैं ;
स्वाद अनेक चखे हमने,
इनके सम और न जान परे हैं।
भावज मोहि नबेरि-नबेरि कें,
तंदुल स्वाद सुधादि धरे हैं ;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाबत जात, सराहत स्वाद,
बखानत जात प्रमोद-भरे हैं।"

श्रीकृष्णजी की असीम अनुकंपा और माया से सुदामा की टूटी-फूटी झोपड़ी राजभवन के रूप में परिवर्तित हो गई, उसमें देवताओं को भी दुर्लभ ऐश्वर्य विलास करने लगा। इसके पश्चात् ही ब्राह्मण-पत्नी की आँख खुल जाती है। उस असीम ऐश्वर्य की छटा देख वह आश्चर्य-चकित रह जाती है। इसी समय उसे भगवान् के दर्शन होते हैं। कवि ने यह वर्णन इस प्रकार किया है—

"चौंकि जगी, चितवै चहुँधा,
चक-चौंध रही, मुख बात न आवै;
देखत मंदिर की रचना,
तन की द्युति-भूषन देखि भ्रमावै।
हौं कि नहीं, कित हौं, घर काँ,
सपनो कि सही, मन बोध न पावै;
देखि अचंभि रही थकि-सी,
जकसी चकसी न कछू कहि आवै।
ता छिन दृष्टि परे प्रभु चौभुज,
ज्यौं रवि कोटि छटा दरसी है;
आनन कोटि मयंक लजैं,
लखि अद्भुत रूप रही डर-सी है।
नाथ कह्यो, मैं गुविंद हौं भावज,
या सुनि आनँद में सरसी है;
त्यों सुधि भूल गई तन की,
उठि के पद-पंकज कों परसी है।"

अब श्रीकृष्णजी की नम्रता देखिए, कैसे संकोच के साथ वह ब्राह्मण-पत्नी को अपने आगमन का कारण बतलाते हैं—

"यों प्रिय बैन सुनो तिय को,
अति प्रेम-भरो प्रभु के मन भायो;
कारन आवन को सुनु भावज,
भौ श्रम द्वारका मित्र सिधायो।
सो श्रम के बदले उन लायक
ना त्रैलोक पदारथ पायो;
लै धन थोरिक सो अधरात
सँकोचत हौं तुम्हरे ढिग आयो।
है धन थोरिक सो यह भावज,
लीजिए सो अपराध छमा कै;
कीजिए सेवक जानि मया पुनि,
दीजिए आयसु मोहि कृपा कै।
जाकर मित्रहु देहुँ पठाय,
न भूलहु मोहिं रहौ अपनाकै;
दंपति संपति सो निशि-बासर,
भोग-विलास करौ सुख पाकै।"

इधर सुदामाजी को एक दमड़ी भी नहीं मिली। बेचारे पछताते हुए घर लौट रहे हैं। ज़रा आपकी स्थिति तो देखिए—

"एक टका घर कों न दयो,
अब नारि सों जाइ कहा हम कैहैं;
भूखन मरत हू हैं घरनी,
हम हूँ अब जाय कहा उत खैहैं।
नाहक भर्म गयो हमरो,
पुर-लोग सुनैं कन भीख न दैहैं;
पाहन पेट भरैं घर में,
पै द्वारकानाथ के द्वार न जैहैं।*
चाँवर-चाव लए गथ के,
तिनके बदले न कछू हम पायो;
नम्रित ह्वै कर जोरि कही,
अध सेरक चून न हाथ लगायो।
ओढ़न को कमरी न दई,
दमरी न दई घर को पहुँचायो;
नारि कहे हम द्वारकै जायकै,
आयकै नाहक भर्म गँवायो।"

स्थानाभाव से और उदाहरण देने, की आवश्यकता नहीं। उक्त उदाहरणों से ही पाठक अंदाज़ लगा सकते हैं कि कवि कैसा प्रतिभाशाली रहा होगा। कवि ने अपने पूर्ववर्ती कवियों के भाव भी अच्छी तरह ग्रहण किए हैं। हम तो सुदामा-प्रबंध को इसलिये महत्वपूर्ण समझते हैं कि एक तो वह प्राचीन कवि की रचना है, दूसरे उसमें भक्ति-भाव की पुट है, और तीसरे संसार के एक आदर्श और मनोहर

* इस छंद में छंदोभंग है। अक्षत प्रति में शायद कुछ और हो।—सुधा-संपादक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आख्यान को स्थान दिया गया है। प्रसन्नता की बात है कि बलौनियाजी इस प्रबंध को मुद्रित कराने की चेष्टा में हैं।

संवत् १६३१ में कवि ने 'सुदामा-प्रबंध' की रचना की थी। इसके तीन वर्ष पश्चात् ही संवत् १६३६ में ६२ वर्ष की आयु में उसका देहांत हो गया। बिहारीलालजी के पश्चात् उनके पुत्र श्री० गणेशप्रसादजी क़ानूनगो हुए। आजकल आप खुरई में रहते और ब्रिटिश सरकार की ओर से पेंशन का उपभोग करते हैं।

ज़हूरबख़्श

× × ×

५. "प्रतीक्षा" *

न आए क्यों अब तक चितचोर?
सजनी! निशा बढ़ी आती है;
अँधियारी छाती जाती है।
नहीं दिखते हैं मग के छोर;
न आए क्यों अब तक चितचोर?
बिजली चमक-चमक जाती है,
मेघ-घटा उमड़ी आती है;
प्रभंजन देता है झकझोर;
न आए क्यों अब तक चितचोर?
सूनी इस कुटिया के बाहर—
भैरव-सागर शोर मचाकर—
उठाता है उत्तुंग हिलोर;
न आए क्यों अब तक चितचोर?
हृदय में ले पीड़ा का भार—
यहाँ ही बैठे किसी प्रकार—
सजनि! क्या हो जाएगा भोर?
न आए क्यों अब तक चितचोर?
क्षण-क्षण आश घटी जाती है;
फटती-सी जाती छाती है।
न होगी क्या करुणा की कोर?
न आए क्यों अब तक चितचोर?

श्रीबाबूलाल भार्गव "कीर्ति" बी० ए०

* अप्रकाशित "कलरव" काव्य से

× × ×

६. अश्रु-सम्मान

मेरी करुण विकल आँखों से
निकले जो आँसू खरतर,
था मेरा विश्वास, खो गए
तुच्छ धूल में वे मिलकर!
निर्धन की अमोल निधियाँ वे
हाय! न आईं कोई काम;
शेष रहा चिर-रुदन एक
मुखरित रखने को अंतर्धाम!
पर है भ्रम; तूने अलक्ष्य,
व्यापक निज हाथों से चुनकर,
पहर लिया है उन्हें गूँथकर
अपनी माला में सुंदर!

श्रीकेदारनाथ मिश्र 'प्रभात' विद्यालंकार

सुज़ाक की शर्तिया दवा
फ़ायदा न हो जीवन-सुधा तो दाम वापस
४८ घंटे में सुज़ाक को जड़ से आराम करती है। मूल्य फ़ी शीशी २॥).
मैनेजर भारत-जीवन-कंपनी, पो० नं० ११, अलीगढ़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

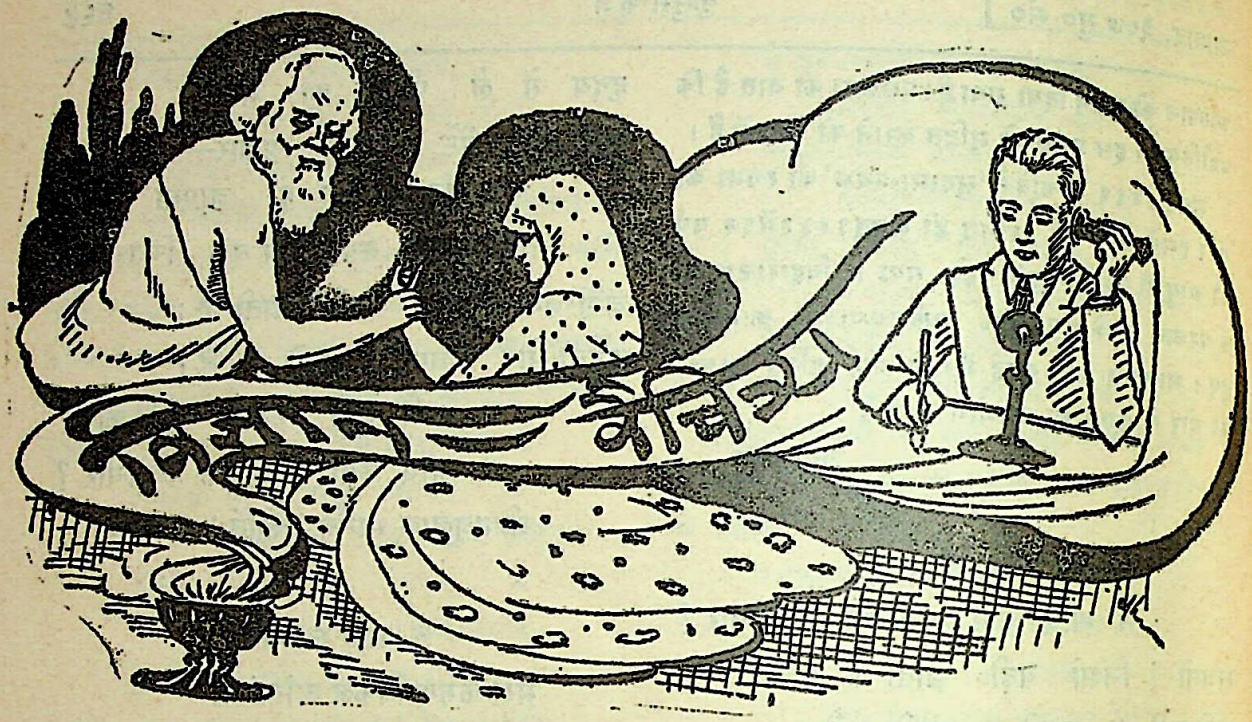

१. एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक की भविष्य-वाणी

बेतार का तार क्या करेगा ?

ए० एम्० ला एक बड़े प्रतिभाशाली ब्रिटिश वैज्ञानिक हैं। अभी हाल ही में उन्होंने बेतार के तार के विषय में कुछ शब्द लिखे हैं। उनका कहना है कि मनुष्य धीरे-धीरे इतना आरामतलब हो चला है कि वह घर से बाहर, धूल-धूसरित, आवाज़-पूर्ण गलियों द्वारा, मनोरंजन या स्वास्थ्य-सुधार के लिये भी अन्य स्थानों को जाना नहीं चाहता। विज्ञान भी उसकी मदद करने को तैयार है। कुछ दिनों में उसकी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति घर के अंदर ही हो जाया करेगी। इस कार्य में रेडियो का विशेष हाथ रहेगा।

पचास वर्ष पहले दूर के मनुष्य से बात करने के लिये पैदल जाना पड़ता था, परंतु आज टेलीफ़ोन के द्वारा न केवल हम पास के मित्र ही से वार्तालाप कर सकते हैं, बल्कि महासागर-पार व्यक्तियों से बातचीत करना बाएँ हाथ का काम है। इतना सब होने पर भी टेलीफ़ोन को एक जंगली यंत्र कहना अनुचित न होगा, क्योंकि दूर के व्यापारी से केवल बातचीत कर लेने में ही व्यापारिक सफलता प्राप्त नहीं होती, परंतु उसके

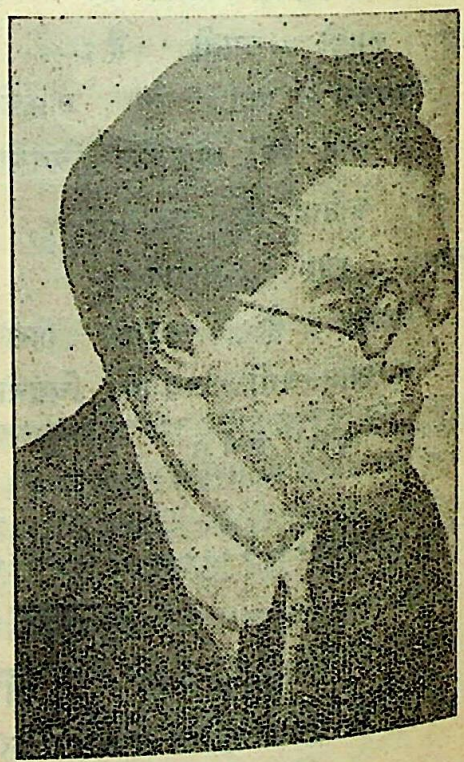

प्रोफ़ेसर ए० एम्० ला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिये अपने चेहरे की भावनाओं, आवाज़ तथा अन्य अवयवों का प्रभाव डालना पड़ता है। टेलीफ़ोन यह कार्य करने में असमर्थ है। इसके लिये अन्य आविष्कारों की आवश्यकता है।

टेलीफ़ोन बेतार के तार में इतनी कमी अवश्य है कि वह यद्यपि टेलीविजन के द्वारा मनुष्य ख़ुद या ख़ुद की भावनाओं को दूसरी जगह भेज सकता है; पर इतने से ही काम नहीं चलता। हमें ऐसे आविष्कारों को अवश्य करना चाहिए, जिससे हम अपनी दृष्टि, स्पर्श और कल्पना इत्यादि को भी भेज सकें। भले ही यह कुछ लोगों को आश्चर्यमय मालूम हो, परंतु विज्ञान मनुष्य की इन आवश्यकताओं को थोड़े या अधिक समय में पूर्ण कर देगा।

हम कहा करते हैं कि बेतार के तार द्वारा दृष्टि और आवाज़ दूसरी जगह भेजी जा सकती है, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। हम केवल एक स्थान से दूसरे स्थान को कंपन भेजते हैं। लघु स्पीकर द्वारा निकलनेवाली आवाज़ हमारी आवाज़ का बिलकुल चित्रण नहीं रहती।

विचारों पर पड़नेवाले बास के असर को लोग पूर्ण रीति से नहीं जानते। यह हमारी बहुत-सी पसंदगी-नापसंदगी की जड़ है। औरतें सैकड़ों वर्षों तक सुगंधों द्वारा मनुष्यों को रिझाया करती हैं। बास ही घृणा और प्रेम का कारण है। कीड़ों की दुनिया में भी हम इसकी महत्ता पाते हैं। एक प्रकार के कीड़े दूरी पर होने पर भी आपस में बातचीत कर सकते हैं। पुरुष-जाति का कीड़ा स्त्री-जाति के कीड़े को एक बड़े नगर के फ़ासले पर होने पर भी गंध द्वारा अपने पास बुला सकता है।

बास हमारी नसों के द्वारा दिमाग़ में असर पैदा करती है। यह कोई कारण नहीं दिखता कि हम कृत्रिम क्रियाओं द्वारा उसे न तैयार कर सकें। मेरा यह संकेत नहीं है कि सुगंध की घटती और बढ़ती को हम दूसरे स्थान पर भेज सकेंगे, परंतु जिस तरह टेलीपेथी द्वारा भय और प्रेम की भावना भेजी जा सकती है, उसी तरह 'कंपन' द्वारा बास के तीव्र चिह्नों को हम भेजने में समर्थ हो सकेंगे।

शीघ्र ही बेतार के द्वारा भविष्य का मनुष्य शक्ति को दो-चार केंद्रों द्वारा सारे देश में भेज सकेगा। इस शक्ति द्वारा बड़े-बड़े कारख़ाने और गाड़ियाँ चल सकेंगी। यद्यपि इस समय बेतार के द्वारा शक्ति को भेजने का प्रयत्न हो रहा है, परंतु उसमें विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई है। इस प्रकार भेजी गई शक्ति एक पक्षी के पंख को भी उठाने में समर्थ नहीं होती, परंतु अब केंद्रित शक्ति-संचालन की परीक्षाएँ हो रही हैं। हम आशा करते हैं कि बेतार की शक्ति से हम अपने घर में विद्युत् का उपयोग कर सकेंगे, मोटर-गाड़ियाँ चला सकेंगे, और वायुयानों का संचालन कर सकेंगे।

विचार दिमाग़ की एक प्रकार की क्रिया का परिणाम माने जाते हैं, यदि यह बात ठीक है, तो क्या हम ऐसे यंत्र नहीं बना सकते, जिनके द्वारा दिमाग़ के अंदर उठनेवाले विचार दूसरे स्थान को भेजे जा सकें। दूसरे शब्दों में इन यंत्रों द्वारा दूसरे मनुष्य के विचारों को जानना आसान हो जायगा।

इसी बेतार के द्वारा हम 'शांति' को भी दूसरे स्थानों पर भेज सकेंगे, ताकि एक व्यक्ति चारो ओर कोलाहल होने पर भी उसके आघात से बच सकेगा। भविष्य के चुनाव आदि के नियमों में परिवर्तन हो जायगा।

इस तरह की बहुत-सी बातें इस विद्वान् ने कही हैं। उसका कहना है कि 'रेडियो-युग' का तो अभी जन्म ही हुआ है। इसकी वृद्धि संसार की काया पलट देगी।

× × ×

२. बर्लिन की घड़ी

घड़ियाँ अक्सर बहुत समय तक नहीं चलतीं। कुछ वर्षों में ही अपने हाथ-पाँवों के ढीलेपन को दरसाने लगती हैं, पर जर्मनी की इस 'बिग-बेन' ने इस वर्ष अपनी आयु के ६० वर्ष व्यतीत कर दिए। वह एक मिनट के लिये भी बंद नहीं हुई। इसका प्रधान कारण यह हो सकता है कि यह घड़ी उसके बनानेवाले के निरीक्षण में हमेशा रही। यह घड़ी अपने बनानेवाले की प्रतिभा सूचित कर रही है। सप्ताह में एक बार इसमें चाबी भरी जाती है।

× × ×

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

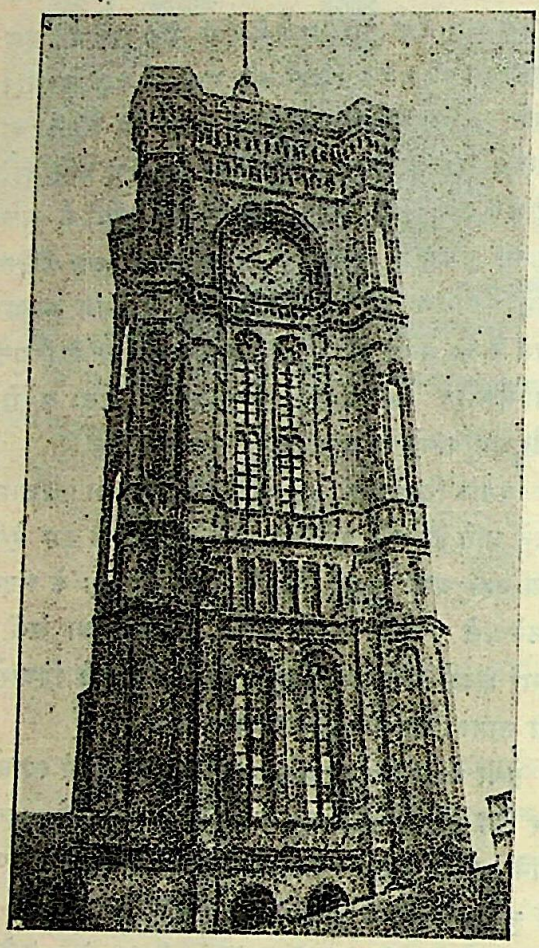

सठिया जानेवाली जर्मन घड़ी

३. बुझ जानेवाला लैंप

लैंप प्रकाश के लिये बनाए जाते हैं, परंतु कई अवसरों पर उनका स्वयं ही बुझ जाना अधिक अच्छा मालूम देता है। कारख़ानों, गोदामों तथा अन्य स्थानों में नौकर लोग बत्तियाँ जलती हुई छोड़कर चले जाते हैं। इससे व्यर्थ ही विद्युत् का ख़र्च होता है, अतएव एक आविष्कारक ने ऐसे स्थानों के लिये एक नवीन प्रकार का लैंप बनाया है, जो जलाए जाने पर कुछ मिनटों के बाद स्वयं ही बुझ जाता है।

एक तार के खींचते ही बल्ब के ऊपर एक स्प्रिंग कस जाता है। वह दो मिनटों से दस मिनटों तक उसी

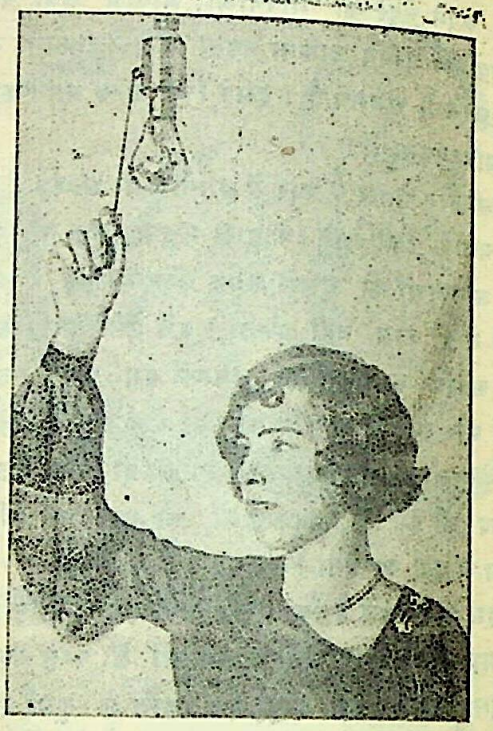

आप ही बुझ जानेवाला लैंप

अवस्था में रहता है। इसके बाद ढीला हो जाता है, और बत्ती बुझ जाती है।

× × ×

४. क्या मंगल-ग्रह (Mars Planet) पर प्राणी हैं?

मंगल-ग्रह आबाद है, यह कल्पना कई मनुष्यों के दिमाग़ों में प्रवेश कर गई है। धीरे-धीरे इस पर विश्वास भी बढ़ता चला जाता है। बात यहाँ तक पहुँच गई है कि कुछ मनुष्य बेतार के द्वारा वहाँ के समाचार पाने तक की घोषणा करने लगे हैं। एच्० जी० वेल्स-सरीखे महाशयों ने तो वहाँ के प्राणियों के चित्र तक बना डाले हैं।

परंतु यह एक ऐसा विषय है, जिसे एक वैज्ञानिक मनुष्य को बड़ी ही विचार-पूर्ण विधि से तय करना पड़ेगा। कोरी कल्पनाओं की उड़ानों से काम न चलेगा।

ग्रहों का निर्माण कैसे हुआ? इस विषय का सब-से नया सिद्धांत यह है कि किसी समय सूर्य जलती हुई गैस का अपार समूह था। अचानक उसके समीप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक दूसरा कोई स्वर्गीय पदार्थ आ पड़ा। परिणाम यह हुआ कि उस पदार्थ की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति के कारण सूर्य के दोनो ओर उभार-भाटा उठे, और छोटे तथा बड़े टुकड़े सूर्य से अलग निकल पड़े। ये टुकड़े सूर्य की आकर्षण-शक्ति के कारण उसके चारो तरफ़ घूमते रहे। इनमें से कुछ ने परस्पर मिलकर बड़ा आकार धारण किया, परंतु वे सूर्य की परिक्रमा करते ही रहे। ये टुकड़े ही हमारे ग्रह कहलाते हैं। बहुत छोटे टुकड़े इन ग्रहों के आकर्षण में पड़कर उपग्रह कहलाने लगे। इस सिद्धांत के अनुसार चंद्रमा हमारी पृथ्वी का जन्मा कभी नहीं कहला सकता।

अतएव हम इन ग्रहों की क्रमानुसार उमर बतलाने में अपने को असमर्थ समझते हैं। किस क्रम से वे उत्पन्न हुए हैं, यह नहीं कहा जा सकता। उनके आकार का उनकी सूर्य से दूरी से कोई संबंध नहीं दीखता। जुपिटर सबसे बड़ा ग्रह है। वह मंगल के बाद ही आता है। जुपिटर से आधे आकारवाला नेपचून सूर्य से बड़ी दूरी पर है। इनके एक-एक अंग के

मंगल-ग्रह के प्राणी (एच० जो० वेल्स की कल्पना)

मंगल-ग्रह के पौधे (एच० जी० वेल्स की कल्पना)

विकास में अनेकों वर्षों का अंतर हो सकता है। पृथ्वी पर प्राणियों के जन्म-काल आने की तिथि में तथा मंगल-ग्रह के प्राणियों की तिथि में निश्चय ही अंतर होगा। परंतु इतना अवश्य है कि मंगल-ग्रह में ज़मीन है, पानी है, बर्फ़ है, और समय-समय पर बादल भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

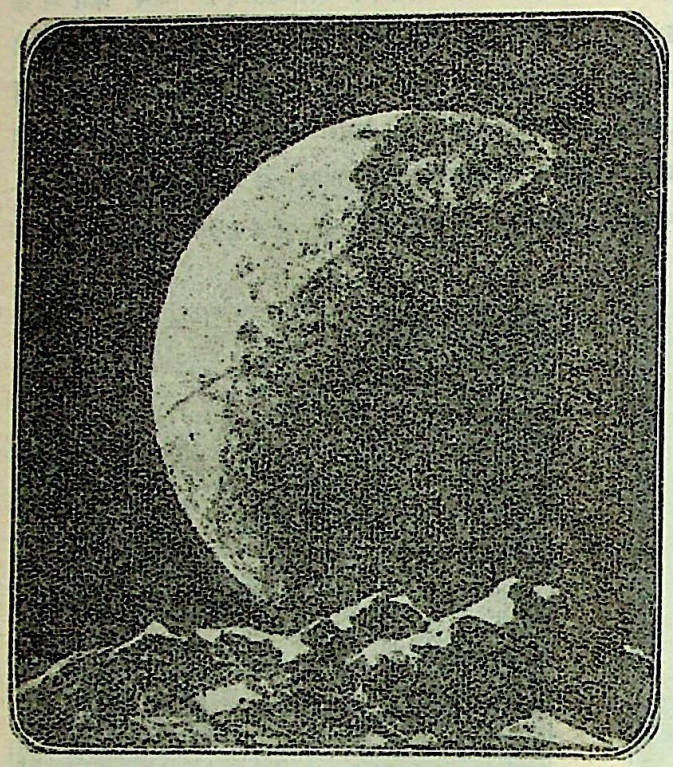

मंगल-ग्रह

देख पड़ते हैं। बर्फ़ के कारण उत्पन्न हुई ध्रुव को चकित कर देनेवाली ज्योति भी वहाँ दीखती है।

प्राणियों का जीवन, आकार और आचरण वहाँ की आब-हवा पर ही निर्भर रहते हैं। मंगलवालों को पृथ्वी के मनुष्यों के समान समझना बुद्धिमत्ता नहीं। मंगल पर से सूर्य पृथ्वी पर से देखने की अपेक्षा छोटा दिखेगा। ऐसी हालत में प्रकाश की मात्रा भी पृथ्वी पर प्राप्त मात्रा की अपेक्षा कम होगी तथा वहाँ पर भूमितल का ताप-क्रम यहाँ की अपेक्षा भिन्न होगा। इसके अतिरिक्त वहाँ पर गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की अपेक्षा $\frac{3}{8}$ है, इसलिये वहाँ की हवा का दबाव कम होगा, वायुमंडल का विस्तार अधिक उँचाई तक होगा, बादल विरले और भू-पृष्ठ से दूर रहते होंगे, और पानी सरलता से, परंतु देरी में भाप बनता होगा।

जीवन की आवश्यक बातें पृथ्वी पर उसके वायु-मंडल से संबंध रखती हैं, अर्थात् वायुमंडल में स्थित ओषजन, नेत्रजन और कार्बनिक-अम्ल-गैस पर निर्भर हैं। परंतु मंगल के वायुमंडल के विषय में हमें कोई भी बात नहीं मालूम। अतएव पृथ्वी के प्राणियों के आधार पर मंगल के प्राणियों का निर्माण करना कहाँ तक युक्ति-संगत है, यह प्रश्न अभी विचाराधीन है।

पृथ्वी पर जब पहले-पहल 'जीवन' का 'आगमन' हुआ, उस समय वह छोटे-से टुकड़ों के रूप में थी। इनका वैज्ञानिकों ने "प्रोटोप्लाज़्म" नाम रक्खा है। यद्यपि प्रोटोप्लाज़्म एक रासायनिक वस्तु है, परंतु उसमें कोई नए तत्त्व नहीं हैं। वह इसी पृथ्वी की (In-organic) वस्तुओं से तैयार हुआ है। जिस समय यह परिवर्तन हुआ, उस समय का ताप-क्रम, वायु-मंडल आदि कई बातें किसी विशेष प्रकार की रही होंगी। संभव है, वैसी परिस्थितियों का समागमन फिर कभी न हुआ हो। इस विकास का सबसे चिर-स्मरणीय वह समय कहा जा सकता है (कम-से-कम पौधों और वनस्पतियों के संबंध में), जब कि पौधों के हरे रंग के कारण भूत-वस्तु क्लोरो-फाइल (chlorophyll) का आविष्कार हुआ। इसके द्वारा पौधे सूर्य की शक्ति का उपयोग कर अपने भोजन के अत्यंत उपयोगी अंशों को हवा से खींच लेते हैं। विकास होते-होते इस पृथ्वी के वर्तमान प्राणी-मंडल का उदय हुआ।

प्राणियों के संबंध में हीमाग्लोबिन (Haema-globin) का आविष्कार महत्ता रखता है, क्योंकि हीमाग्लोबिन ही प्राणियों के शुद्ध ख़ून के लिये ज़िम्मे-दार है। इसी तरह की पृथ्वी से संबंध रखनेवाले जीवों की विकास-संबंधी बहुत-सी बातें हैं। जैसे हड्डियों का विकास, पुट्ठों का विकास इत्यादि।

इन सब गूढ़ बातों की ओर संकेत करने से हमारा अभिप्राय केवल यही है कि जब हमारा विकास एक विशेष विधि से हुआ है, तब हम यह बात कैसे मान सकते हैं कि मंगल-ग्रह में भी उसी समय वैसी ही परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई होंगी, और यदि हम मान भी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लें कि जीवन का सारभूत प्रोटोप्लाज़्म मंगल पर भी उसी समय पहुँचा, तो क्या वह प्रोटोप्लाज़्म वहाँ की भिन्न आब-हवा और स्थितियों में हमारे ही समान प्राणियों को उत्पन्न कर सकता है ? क्या मार्स के निवासी, यदि वहाँ कोई हैं, हमारे यहाँ के प्राणियों के समान हड्डीवाले होंगे ?

अतएव प्रोटोप्लाज़्म का विकास वहाँ पृथ्वी पर होने-वाले विकास के रास्ते पर नहीं चल सकता । सबसे बड़ी संभावना तो यह है कि उनके विकास के रास्ते भिन्न होंगे । हमें स्मरण रखना चाहिए कि विकासवाद ने क्लोरोफ़ाइल, हीमाग्लोबिन, हड्डियों आदि को पैदा नहीं किया, बल्कि परिस्थितियों के सम्मेलन से ये उत्पन्न हुईं, और 'विकासवाद'-'विकासवाद' की पुकार मची ।

विकासवादियों के अनुसार पृथ्वी के वर्तमान प्राणी अस्तित्व के अनेक युद्धों और प्रकृति के चुनाव के परिणाम-मात्र हैं । भिन्न-भिन्न परिस्थितियों से प्राणियों के शरीर और आचरण में भेद-भाव हो गया । इस तरह से वास्तव में नई-नई जातियों के प्राणियों का विकास हुआ । फिर हम कैसे और किस आधार पर यह मान लें कि मंगल पर ऐसी ही परिस्थितियाँ रही होंगी, और ऐसे ही प्राणी होंगे ?

उपसंहार में हम यही कहना चाहते हैं कि मंगल पर प्राणियों के होने की संभावना अधिक दीखती है, परंतु वे प्राणी पृथ्वी के प्राणियों से भिन्न होंगे, और यदि वहाँ पर मनुष्यों का निवास है, तो वे मनुष्य पृथ्वी पर के मनुष्यों के समकालीन हों, यह संभावना नहीं दीखती ।

भले ही मनुष्य दूसरी दुनियों को प्राणी-हीन मानने को तैयार न हों, परंतु जब तक हमें उनके प्राणी-युक्त होने के कोई चिह्न नहीं मिलते, तब तक एच्० जी० वेल्स-सरीखी कोरी कल्पना करना मनुष्यों की विचार-शक्ति को धोखा देना है । सच तो यह है कि बिना आधार, अनुभव और प्रत्यक्ष ज्ञान और परीक्षाओं पर की हुई कल्पना मनोविनोद का कारण भले ही हो, परंतु उसका इससे अधिक आदर नहीं हो सकता । अतएव हमारा तो यह कहना है कि मंगल के प्राणियों और मनुष्यों के विषय में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता, जो कुछ यंत्रों से दीख पड़ा है, उसी पर हमें विश्वास करना चाहिए ।

नाथूराम शुक्ल

करामात तैल

कान बहने, कम सुनने, निपट बहरेपन, परदों की कमज़ोरी, शब्द होने व कान के सर्व रोगों की रामबाण अनुभवी दवा है । मूल्य फ़ी शीशी १।) रु०, तीन शीशी एकसाथ मँगाने पर डाक-व्यय की छूट ।

कर्ण-बिंदु—कान के घाव को साफ़ करने की दवा । मूल्य फ़ी शीशी ।)

वल्लभ एंड संस, पीलीभीत (यू० पी०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आजकल छायावादियों में 'प्रसाद'जी का घोड़ा तेज़ जा रहा है। दिक़्क़त सिर्फ़ एक है। घोड़ा नाज़ुक है, 'प्रसाद'जी स्थूल।

❀ ❀ ❀

'निराला'जी का ऊँट बुरा नहीं, लत बुरी। घुटने टेक दिए, तो उठना क़सम। खोदिए, करवट बदल दी। फिर चुप।

❀ ❀ ❀

पंतजी बाबू महादेवप्रसादजी सेठ को लिखनेवाले हैं, अब आप अपना पुराना मोटो बदल दीजिए, अब "तुंग हिमालय-शैल-शृंग" मुझे लिखिए, और "चंचल-गति सुर-सरिता" 'निराला'जी को।

❀ ❀ ❀

गर्म ख़बर है कि 'माधुरी' के अगले अंक में मुख्य संपादकीय नोट नायिकावाद पर होगा।

❀ ❀ ❀

'त्याग-भूमि' में आते ही 'सुमन'जी ने हंडी उलट दी। पहले पृष्ठ की पहली ही पंक्ति में बानगी—"मेरे जीते, मैं देखूँ, तेरे पैरों में कड़ियाँ?" अर्थात् "मैं मेरे जीते तेरे पैरों की कड़ियाँ देखूँ?" देश-भक्ति का उबाल है न? शुद्धाशुद्ध का ख़याल नहीं रहा, न कवि को, न संपादक को। और भी सुनिए। इसके बाद है—"क्यों न टूट पड़ती हैं मुझ पर नभ की ये फुलझड़ियाँ?" फुलझड़ियाँ जैसे कोई तोप के गोले हों।

हों न हों, 'कड़ियाँ' का तुक तो मिलाना ही था। 'घड़ियाँ' का प्रयोग हृदयवादी जुठार चुके थे, 'छड़ियाँ', 'लड़ियाँ' शृंगार-पंथियों के हक़ में गई थीं, 'जड़ियाँ' वैद्यराजों की झोली में; कवि के हाथ "फुलझड़ियाँ" लगी, बैठा दिया। भाव पर बे-भाव की पड़े, तो पड़े। कवि का क्या क़सूर? तुक तो चाहिए ही।

❀ ❀ ❀

कहते हैं, बनारस में शीघ्र मुछंदर-मुछमुंड-भिड़ंत होगी। कारण है "काव्य में रहस्यवाद"-पुस्तक।

❀ ❀ ❀

सुनते हैं, "उग्र"जी "दीन"जी के पास फिर जानेवाले हैं। कारण, उनकी प्रतिभा का गैस उड़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गया है, दीनजी पंप करके फिर साहित्य-संसार में छोड़ देंगे।

❀ ❀ ❀

समझ में नहीं आता कि उपाध्यायजी लोगों से इतनी मीठी-मीठी बातें क्यों करते हैं। सम्मेलन के सभापति तो हो चुके।

❀ ❀ ❀

दीनजी जहाँ रहते हैं, वहाँ विद्यार्थियों को नाक दबाकर जाना पड़ता है। इसलिये दीनजी को २०) मासिक एलाउएंस मिलेगा।

❀ ❀ ❀

बहुत सोचकर साहित्य-मंत्री श्रीयुत कृष्णदेवप्रसाद गौड़ एम्० ए० ने 'प्रसाद'-प्रशंसा की सोल एजेंसी ली थी। पर अभी तक विशेष फ़ायदा नहीं हुआ। अगले साल से छोड़ देनेवाले हैं।

❀ ❀ ❀

जोशी-बंधुओं में साहित्य के विरह ने फिर ज़ोर मारा है। चतुर्वेदी बनारसीदासजी उन्हें ढाढस दे रहे हैं। यह विरह "विशाल-भारत" के 'कला-अंक' के लिये चढ़ा है।

❀ ❀ ❀

"विशाल-भारत" का कला-अंक अद्वितीय होगा। पर ग्राहक अब तक अतृतीय हैं।

❀ ❀ ❀

चतुर्वेदीजी से किसी ने पूछा, क्या आपका यह कलांक १९३० ई० में निकल जायगा? आपने कहा, हाँ, प्रो० तारादास अगली फ़रवरी तक लेख भेज देंगे।

❀ ❀ ❀

हास्यरसावतार पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी स्टेट की मैनेजरी छोड़नेवाले हैं। क्योंकि वहाँ उन्हें मारवाड़ी नहीं मिलते।

❀ ❀ ❀

प्रो० पं० सकलनारायण शर्मा को चतुर्वेदीजी का पद्य ज़्यादा पसंद है। क्योंकि उसमें कभी-कभी उन्हें सुधार करने का मौक़ा मिलता है।

❀ ❀ ❀

शास्त्री चतुरसेनजी 'चाँद' के लिये "अब, जब, तब" लिख रहे हैं। सहगलजी जप रहे हैं—"सब, कब", "सब, कब"।

❀ ❀ ❀

कहते हैं, जब सहगलजी का मंत्र सिद्ध हो जायगा, तब ये बातें उलट जायँगी; सहगलजी कहेंगे, "अब, जब, तब," चतुरसेनजी जपेंगे—"सब, कब"।

❀ ❀ ❀

पं० विनोदशंकर व्यास आजकल निराश हैं। क्योंकि उग्र-मंत्र का उन्हें आशु-फल मिला है।

❀ ❀ ❀

पं० देवीदत्त शुक्ल तंत्र-मंत्र पर क्यों ज़्यादा लिखते हैं, इसका पता लगाते-लगाते लोगों ने अब मतलब लगा पाया है। कहते हैं, इसलिये, चूँकि वह बाला के शुक्ल हैं।

❀ ❀ ❀

प्रो० पं० बदरीनाथजी भट्ट ने पाँच महीने की छुट्टी ली है। भट्टजी कहते हैं, स्वास्थ्य-सुधार करेंगे। मित्र लोग कहते हैं, कोई बड़ा शिकार फाँसा है।

❀ ❀ ❀

भट्टजी की जगह के लिये इलाहाबादवाले दो हिंदी के एम्० ए० सर के बल खड़े हैं। पर जगह किसी बलियाटिक को मिलनेवाली है।

❀ ❀ ❀

अभ्युदय-संपादक पं० कृष्णकांतजी वर्तमान आंदोलन के सूत्रधार होकर भी स्कूली किताबें छपवाना चाहते हैं, इसलिये कि शिक्षा आदि जो कुछ विभाग मिल गए हैं, वे अपने हैं, जो नहीं मिले, उनके लिये पूर्ण-स्वतंत्रता-संग्राम होगा।

❀ ❀ ❀

पं० रामनरेशजी त्रिपाठी अब "नरेश-कौमुदी" निकालनेवाले हैं। इसमें सब राजकवि होंगे। जिन राजा और तअल्लुक़दारों के पिता-प्रपितामह कवि थे भी नहीं, त्रिपाठीजी को उनके काव्य की भी हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हो गई हैं।

"अभ्र वृत"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

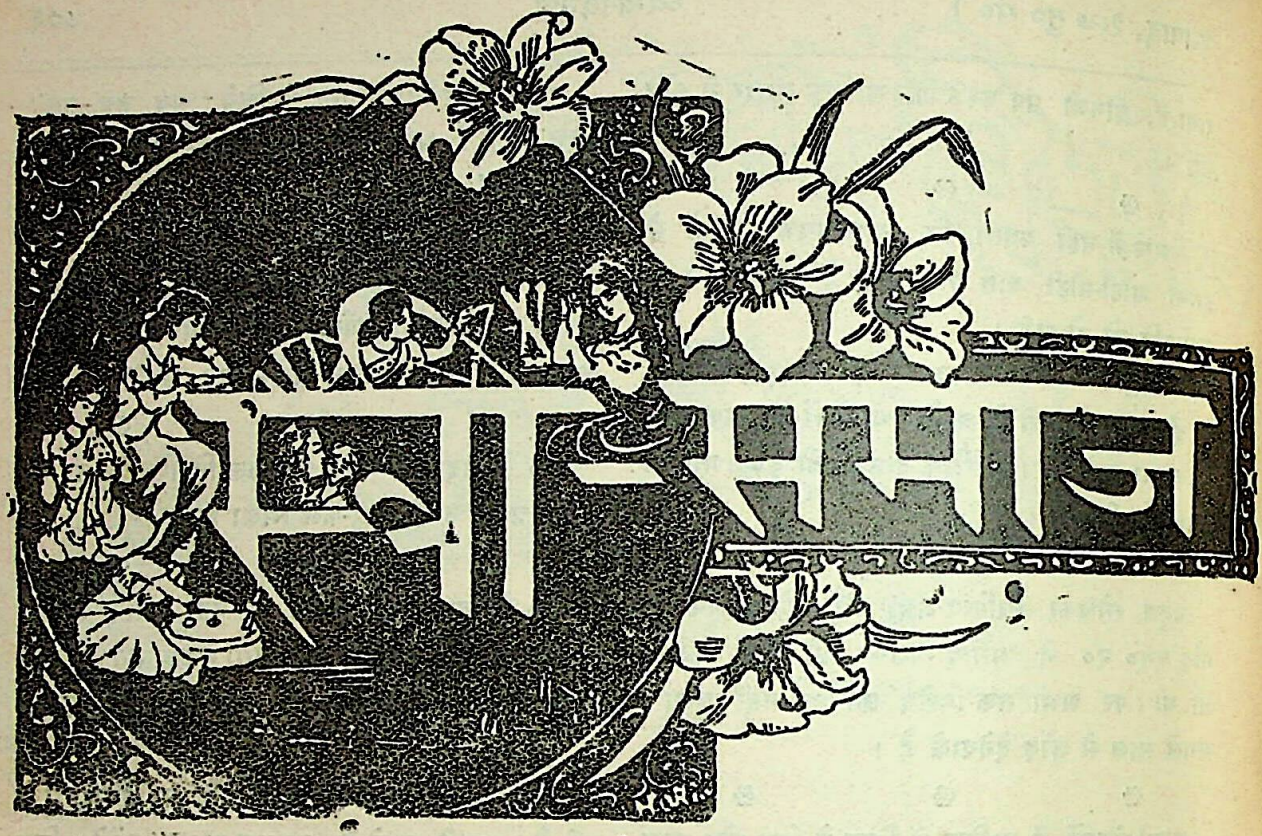

इँगलैंड में स्त्री-पुलिस

मर्दों की तरह महिलाएँ भी मनुष्यों के हर पेशे अख़्तियार कर रही हैं। योरप में, इधर पचास वर्षों से, वे लगातार मर्दों से अपने अधिकारों के लिये लड़ रही हैं। पहलेपहल फ़्लोरेंस नाइटिंगेल ने शिक्षित महिलाओं में पीड़ितों की सेवा का भार उठाया था। विलायत में इनसे पहले अशिक्षित स्त्रियों के हाथ में पीड़ितों की सेवा का भार था, जिससे चिकित्सा सहानुभूति के साथ नहीं होती थी, और पीड़ितों को अनेक प्रकार के कष्ट सहन करने पड़ते थे।

आजकल, योरप में, वकालत, डॉक्टरी तथा शिक्षा के सभी विभागों में महिलाओं का प्रवेश हो गया है। पर इसके लिये उन्हें बहुत दिनों तक पुरुषों के साथ स्पर्द्धा की लड़ाई लड़नी पड़ी। अब जीवन के सभी उपायों में महिलाओं का अस्तित्व समा गया है। १९१४ ई० के अगस्त में, योरप में, महायुद्ध का श्रीगणेश हुआ। उस समय यह समझ में आ गया कि वहाँ की महिलाएँ तब तक चुपचाप अपनी शक्तियों को केंद्रीभूत कर रही थीं। अपने देशवालों के उस दुःख के परीक्षा-काल में उन्होंने अपने-अपने देश की पूरी मदद की। ऑफ़िस, कारख़ाने, दूकान आदि छोड़कर पुरुषों को रण-क्षेत्र की तैयारी करनी पड़ी। महिलाओं ने पुरुषों के स्थान पर अधिकार जमाया। उधर नाइटिंगेल के प्रदर्शित मार्ग पर भी स्त्रियाँ बढ़ती गई थीं। वे घायलों की सेवा के लिये युद्ध-भूमि में भी आईं। इस तरह योरप का रुका हुआ तमाम काम महिलाओं के हाथ आया, और ये बड़ी कुशलता से उसका निर्वाह करती रहीं। ट्राम चलाना, पिअन बनकर चिट्ठियाँ बाँटना, बस चलाना, साइंस का काम, ऑफ़िसों की क्लर्की, संवाददाता का काम, यहाँ तक कि पुलिस का काम भी महिलाओं ने अख़्तियार किया। इस तरह के घोर परिश्रम के कार्य भी महिलाओं ने अपने सर उठा लिए, और वे सब बड़े-बड़े घरानों की महिलाएँ थीं। देश की भलाई के लिये अपने पति, पिता और पुत्र को उन्होंने लड़ाई के लिये बिदा कर दिया, और ख़ुद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनकी ग़ैरहाज़िरी से रुका हुआ काम सँभालने लगीं। कुछ दिनों के बाद विलायत में ऐसी एक भी महिला नहीं रह गई थी, जो किसी-न-किसी कार्य में लगी हुई न हो। तमाम समाज जैसे व्यापक एक ही उद्देश्य की साधना करने लगा।

उस समय यह काम, समय की प्रेरणा के विचार से ही, महिलाओं को करना पड़ा था। जब महासमर समाप्त हो गया और पुरुष लोग लौटे, तब फिर वे चुपचाप, उनके हाथों में कार्यों का कठोर भार अर्पित कर, गृहों में शांतिमय जीवन पार करने चली गईं। लेकिन इस समय से एक विभाग पर महिलाओं ने दख़ल जमा रक्खा। वह पुलिस-विभाग है। महायुद्ध के पहले भी पश्चिम के समाज-संस्कारकों ने यह आवाज़ उठाई थी। १९०२ ई० में बर्लिन में स्त्रियों की पुलिस कर दी गई थी। अमेरिका में भी इस विभाग में स्त्रियों की परीक्षा हो रही थी।

अधिकारों के संबंध में दिन-ब-दिन अवस्था संगीन होती गई। अंत में स्त्रियों की चंचलता को रोकना असंभव हो गया। महिलाओं की जातीय कौंसिल के किसी एक सेनाध्यक्ष ने कहा, आप लोग मिलकर एक ऐसा संगठन क्यों नहीं करते, जिससे स्त्रियाँ आवारगी से बचा ली जा सकें। औरतों के लिये क़ानून तथा शृंखला की रक्षा करने का एक अच्छा अवसर मिला। लंडन में नारी-कौंसिल का एक अधिवेशन हुआ। इस सभा में कुछ चुने हुए पुरुषों को लेकर एक छोटी-सी सब-कमेटी इस उद्देश्य से तैयार कर ली गई कि इस समय औरतें देश को कौन-सी मदद दे सकती हैं, इस पर सामरिक और साधारण कार्यकर्ताओं की सलाह ली जाय।

उस समय सर एडवर्ड हेनरी लंडन के पुलिस-कमिश्नर थे। यही एक वक़्त बंगाल के पुलिस-विभाग के इंस्पेक्टर जेनरल थे। इनकी नेक सलाह और हार्दिक सहानुभूति के लिये नारी-समिति विशेष रूप से ऋणी है। सर एडवर्ड की सलाह से इन ज़रूरत के वक़्त काम करनेवालों को पुलिस नहीं कहा जाता था, और इसलिये पहलेपहल इन्हें कोई पोशाक भी नहीं दी गई। देश के सामरिक और साधारण कार्यकर्ताओं ने इस सहायता को सादर स्वीकार कर लिया। औरतों की पुलिस का नाम "वीमेन पैट्रल" दिया गया। १९१४ ई० के अगस्त के अंतिम दिनों से इसमें सैकड़ों स्त्रियाँ आ गईं। अपनी इच्छा से ये लोग शरीक हुई थीं। ये सब काफ़ी पढ़ी-लिखी थीं, और समाज में प्रतिष्ठित थीं। ज़िला के प्रधान पुलिस-कर्मचारी की अधीनता में ये लोग भर्ती होने लगीं। क्रमशः स्त्रियों की संख्या बढ़ गई। एक बात ख़ास तौर से उल्लेख करने योग्य है—संध्या के अंधकार में एकांत-पथ पर अन्याय-पूर्ण आनंद के प्रलोभन से स्त्रियों को ले आने के लिये उनके सामने ग़ैर-क़ानूनी ऐश की जगह कोई ऐसा काम रखना चाहिए, जिससे उन्हें आनंद हो। इसीलिये जिन-जिन जगहों में स्त्रियों की पुलिस खुली, वहाँ उनके लिये संध्या-समितियाँ क़ायम कर दी गईं। देखा गया कि बदली और तूफ़ानवाली रात में भी समितियाँ खुलती रहीं, और वहाँ अधिकांश स्त्रियाँ आ-आकर भाग लेती रहीं। वे अपनी सहेलियों को भी साथ ले आने लगीं। इस तरह समितियों की संख्या क्रमशः बढ़ चली, और लड़ाई में पुलिस के कांस्टेबुल लोग ज्यों-ज्यों काम छोड़कर जाने लगे, त्यों-त्यों वहाँ स्त्रियों की संख्या भी बढ़ती गई, वे भर्ती होती गईं। धीरे-धीरे कार्य भी जटिल और मनोरंजक हो गया। १९१६ ई० में सर एडवर्ड हेनरी ने लंडन-पुलिस की मदद के लिये कुछ पुलिस-स्त्रियों को बुला भेजा। इनकी तनख़्वाह मुक़र्रर कर दी गई। इसी साल नवंबर में हाइड-पार्क में दिन-रात पहरा देने के लिये और स्त्री-पुलिस बुलाई गई। काम अच्छी तरह होता था, अतएव माँग भी बढ़ चली, और संख्या भी बढ़ने लगी। इसके बाद ऐसा हो गया कि स्त्रियों के इस काम में स्वयंसेविका के कार्य का भेद न रह गया। १९१७ ई० के प्रथम चरण में वैतनिक स्त्री-पुलिस का कार्य-संचालन और देख-रेख के लिये पुलिस-कमिश्नर ने स्त्रियों की कौंसिल को एक योग्य स्त्री देने के लिये अनुरोध किया। इस पद पर एक स्टानली बहाल हुई। देखा गया कि स्वेच्छासेवकों के साथ अपनी ही इच्छा से नियुक्त होनेवाली स्त्रियाँ उसी मुस्तैदी से काम करती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लड़ाई ख़त्म होने पर सर एडवर्ड हेनरी ने काम से अवसर ले लिया। उनकी जगह लंडन के पुलिस-कमिश्नर हुए सर नेविल मैकरेडी। उनके चार्ज लेने के साथ ही प्रायः सभी समितियों से उनके पास अनुरोध आने लगे कि लंडन के पुलिस-विभाग में स्त्रियाँ भी सम्मिलित की जायँ, और वे स्थायी रूप से रहें। जब चारो तरफ़ से उनके पास इस तरह के अनुरोध आने लगे, तब उन्होंने गत चार साल को स्त्रियों की कार्रवाई देखकर स्वराष्ट्र-सचिव को सलाह दी कि उनके मत से पुलिस-कमिश्नर की अधीनता में, पुरुष-पुलिस की तरह, शिक्षित स्त्रियों की पुलिस का एक दल नियुक्त कर लिया जाय। स्वराष्ट्र ऑफ़िस के कार्यकर्ता राज़ी हुए, और एफ़्० स्टानली १९१८ ई० के नवंबर में स्काट-लैंड-यार्ड में नारी-पुलिस-सुपरिंटेंडेंट नियुक्त हुईं। दस स्त्री-सर्जंट और एक सौ स्त्री-कांस्टेबुल नियुक्त कर स्त्रियों का पुलिस-विभाग खोलना इनका अभीप्सित लक्ष्य बन गया। हर जगह से तरह-तरह की पाँच हज़ार अर्ज़ियाँ आईं। पढ़ने पर स्टानली साहिबा को मालूम हुआ, इनमें अधिकांश अयोग्य हैं। इनमें सिर्फ़ २५ स्त्रियाँ परीक्षा में पास हुईं। वे डॉक्टर की परीक्षा के लिये भेज दी गईं, और वे परीक्षा में पास भी हो गईं। फिर वे पुलिस-ट्रेनिंग-स्कूल में भेज दी गईं। इस तरह ६ हफ़्ते तक निर्वाचन चलता रहा। पुलिस में आकर स्त्रियों ने मर्दों के तमाम क़ानून और क़ायदे मान लिए और पुरुषों की तरह उनकी भी वर्दी हो गई। १९२१ ई० में पार्लामेंट के क़ानून के अनुसार इनकी पेंशन की भी व्यवस्था हुई। ये दिन में सात घंटे काम करती रहीं, पुरुष आठ घंटे। इसी हिसाब से इनकी तनख़्वाह भी कम रही। नए क़ायदे के अनुसार कार्य-क्षेत्र विस्तृत हो गया, संख्या भी स्त्रियों की उसी तरह बढ़ गई। अब जान पड़ता है, इनकी प्रकृति में कार्य की दृढ़ बुनियाद बन गई है।

युद्ध में ख़र्च बहुत बढ़ गया था। राष्ट्र को बड़ा आर्थिक धक्का पहुँचा। अंत में, १९२२ ई० में, यह सूचना निकाली गई कि पार्लामेंट से एक कमिटी तैयार की जाय, जो सब विभागों का निरीक्षण करे, और कहाँ-कहाँ व्यय घटाया जा सकता है, बतलावे। इसने बड़ी बेदर्दी दिखलाई। अन्यान्य विभागों के क्रम-संकोच के साथ ही पुलिस से नारी-विभाग उठा देने की इसने सलाह दी। स्त्री-पुलिस की उपयोगिता साधारण लोग कहाँ तक पसंद करते थे, यह इस कमिटी की समझ में नहीं आया। १८३९ ई० में जब पहले-पहल लंडन को पुलिस-वाहिनी संगठित हुई थी, उस समय सर राबर्ट पील ने यह क़ायदा बनाया था कि घोर अपराधों को रोकना ही पुलिस का पहला कर्तव्य है। स्त्री-पुलिस के द्वारा इस संबंध में भी बड़ा उपकार होता था, यह विलायत के साधारण जन उनके कार्यों को देखकर समझ गए हैं। जिन कारणों से युवक और युवतियाँ घोर अपराध करते हैं, स्त्री-पुलिस के रहने से उन कारणों की जड़ ही कट जाती थी। उनके भीतर के वे मनोभाव ही नष्ट हो जाते थे। इसलिये चारो ओर से आपत्तियाँ उठने लगीं। पार्लामेंट की कामंस-सभा में इसकी घोर चर्चा छिड़ गई। पर निश्चय किया गया कि यह तो उठा ही देना होगा। हाँ, बीस स्त्रियों की नौकरी क़ायम रहेगी। जब देश की आर्थिक दशा कुछ सुधर जायगी, तब फिर इसी बुनियाद पर और स्त्रियाँ भर्ती कर ली जायँगी। यह संख्या चार साल में २० से ५० हो गई। अब धीरे-धीरे बढ़ रही है।

मनोरमा मेहता (एम्० ए०)

सुधा के ग्राहकों से निवेदन

किसी भी संबंध में हमें पत्र लिखते समय अपना ग्राहक-नंबर कृपया अवश्य लिखा करें, अन्यथा आपके पत्र की समुचित कार्रवाई होने में बड़ी अड़चन और दिक़्क़त होगी। इसे कदापि न भूलें।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

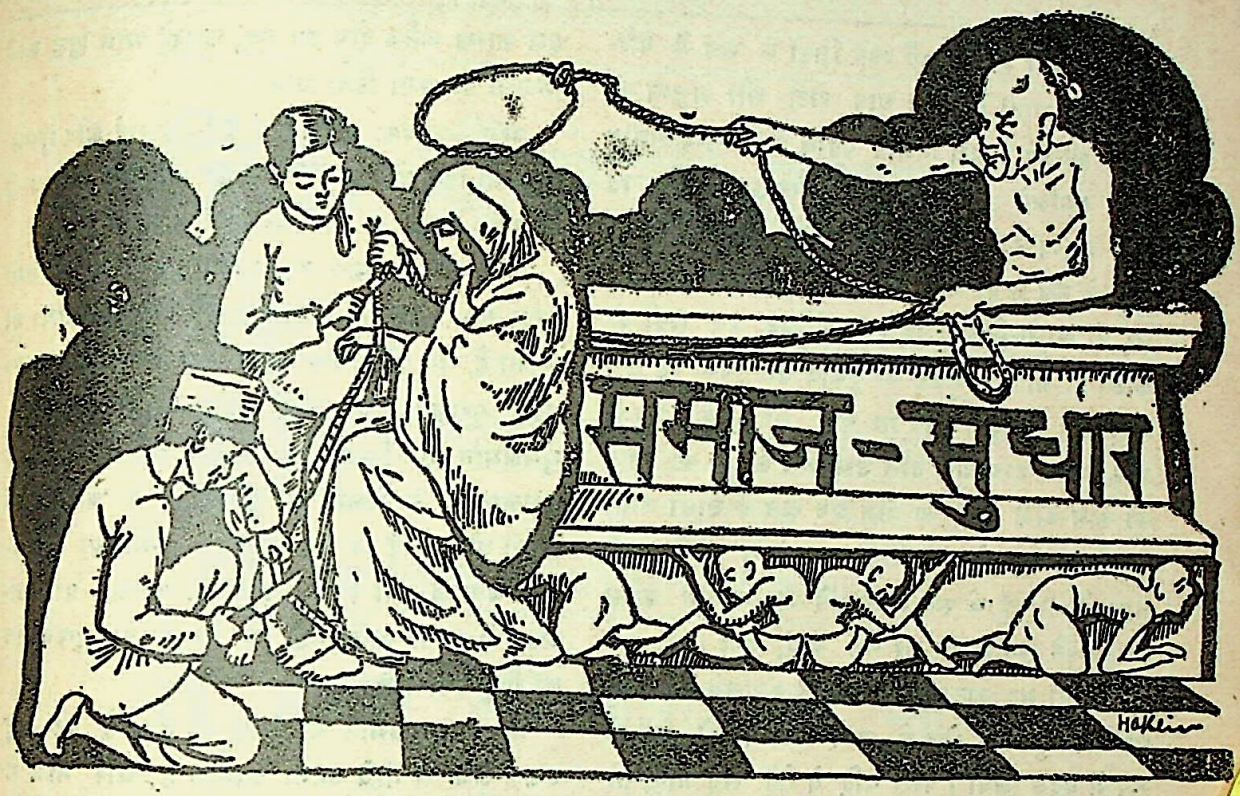

शुद्धि

[वैशाख से आगे]

इ

सीलिये शाका, हूण, यूनानी और यहूदी आदि जातियाँ, जो बाहरी देशों से भारतवर्ष आईं, यहीं के लोगों में हिल-मिल गईं, और ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि के नामों से प्रसिद्ध हो गईं। आजकल इनका पृथक् एक भी चिह्न नहीं मिलता। परंतु पृथ्वीराज आदि के समय यह अवस्था न थी। नाम के आर्य थे। अनार्यत्व का प्रभाव जम चुका था। इसलिये बाहर से जो जातियाँ आईं, उन्होंने इनको पादाक्रांत किया, और इन पर अपनी सभ्यता का भी ठप्पा जमाया। आर्य लोग हिंदू कहलाने लगे। आनेवाली जातियों ने हिंदुओं को घृणा की दृष्टि से देखा, और उन्हें सुगमता से हड़पने लगे। पहले कुछ दिनों तक केवल मुसलमान ही आए। फिर ईसाई भी आने लगे। इस प्रकार मुसलमान और ईसाई, दोनो मिलकर हिंदू-जाति को कम कर रहे हैं। इससे न केवल हिंदुओं की संख्या ही कम हो रही है, किंतु इनकी सभ्यता का भी लोप होता जा रहा है। और देश तो सर्वथा भूल गए हैं कि प्राचीनकाल में कोई आर्य-सभ्यता थी भी या नहीं। भारतवर्ष में भी कुछ-के-कुछ सदा के लिये इस सभ्यता को तिलांजलि दे रहे हैं। वह शिक्षा, जिससे आत्मिक ज्ञान के प्यासों की प्यास बुझ सकती थी, अब लोप हो रही है। वह दीपक, जिसके प्रकाश से अविद्या-अंधकार से सताए हुए मनों में उजाला हो सकता था, बुझा जा रहा है। यह सब इसलिये हो रहा है कि जिनके हाथों में हिंदू-सभ्यता का कोश था, वे अविद्या और स्वार्थ में फँसकर उसकी रक्षा के लिये तत्पर नहीं रहे। उन्होंने मनमाने ढकोसले बना लिए, और अपनी प्राचीन सभ्यता को छोड़कर एक कल्पित सभ्यता ग्रहण कर ली। इससे आर्य-जाति मृतप्राय हो गई है।

प्रश्न—यह कैसे कहते हो कि आर्य-जाति मृतप्राय है?

उत्तर—देखो, मुर्दे और ज़िंदे में यह भेद होता है कि ज़िंदा वस्तुएँ अन्य वस्तुओं को अपने रूप में परिवर्तित कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेती हैं, और मुर्दा वस्तुएँ स्वयं ज़िंदों के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। जैसे आप रोटी और मनुष्य का दृष्टांत लीजिए। रोटी निर्जीव पदार्थ है। मनुष्य सजीव है। इसलिये जब मनुष्य रोटी खाता है, तो वह रोटी मनुष्य के शरीर में जाकर उसके नाक, कान या हाथ के रूप में हो जाती है। एक युवा पुरुष के चेहरे पर जो लाली दिखाई पड़ रही है, वह उन सेबों की लाली है, जो कल कुँजड़े की दूकान पर बिक रहे थे। परंतु यदि वह युवा पुरुष मर जाय, तो उसके शरीर के नाक, कान, हाथ और दाँत उसी सेब के वृक्ष की खाद का काम करेंगे। गेहूँ का बीज जब खेत में डाला जाता है, तो वह उस खेत की मिट्टी, जल, वायु आदि सभी वस्तुओं को गेहूँ के रूप में बदलने की कोशिश करता है। आपने खेत में सेर-भर गेहूँ बोए, और आज एक मन या दो मन काट रहे हैं। क्यों? इसलिये कि उन एक सेर गेहुँओं ने खेत के अन्य पदार्थों को गेहूँ के रूप में बदल लिया। परंतु यदि वे गेहूँ सड़ जाएँ, तो क्या होगा? वे स्वयं उस वस्तु का रूप धारण करेंगे, जिससे उनका संसर्ग होगा। अर्थात् गाजर के खेत में गाजर होंगे, और मूली के खेत में मूली। जब आर्य-जाति जीवित थी, तो जो जाति इसके संसर्ग में आती थी, वह आर्य हो जाती थी। परंतु आज वही हिंदू-जाति एक मुर्दा निर्जीव जाति है। इसलिये यह जिस जाति के संसर्ग में आती है, उसी का रूप धारण कर लेती है। मुसलमान इसको मुसलमान बना लेते हैं, और ईसाई ईसाई। यह न मुसलमानों को अपने में ले सकती है, न ईसाइयों को।

प्रश्न—तो आप क्या चाहते हैं?

उत्तर—हम यह चाहते हैं कि हम अपने धर्म और अपनी सभ्यता का निर्भीकता और निःस्वार्थता से प्रचार करें। और, जो मनुष्य इस सभ्यता और धर्म को स्वीकार करे, उसे अपने में शामिल करके सभी सामाजिक अधिकार दे दें, जो उसे अपनी योग्यता के कारण प्राप्य हैं। इसी का नाम हमने शुद्धि रक्खा है। अर्थात् जो पुरुष या जिसके बाप-दादे कभी हमारी या अपनी भूल से धर्म-पथ से डिग गए थे, और जिनमें इस कारण अनेक दोष आ गए, उनको आज शुद्ध करके सन्मार्ग पर लगा दिया जाय।

प्रश्न—आपका यह तात्पर्य है कि ईसाई और मुसलमान भी हिंदू हो सकते हैं? भला यह कैसे संभव है कि गधा बछड़ा हो जाय या कौआ हंस?

उत्तर—जिस प्रकार बछड़ा गधा हो सकता है, उसी प्रकार गधा बछड़ा भी हो सकता है। जैसे हंस कौआ हो सकता है, वैसे कौआ हंस भी हो सकता है। जिस प्रकार हिंदू मुसलमान या ईसाई बन सकता है, उसी प्रकार मुसलमान या ईसाई हिंदू भी बन सकता है। अगर मुसलमानों के कलमे या ईसाइयों के बप्तिस्मे में इतनी योग्यता है कि एक हिंदू को ईसाई या मुसलमान बना ले, तो क्या हिंदुओं की गायत्री या गंगा-जल में इतनी शक्ति नहीं कि ईसाई या मुसलमान को हिंदू बना सके?

प्रश्न—मुसलमान या ईसाई तो नीच हैं, और हिंदू उच्च। ऊँचे से नीचे बनना आसान है, और नीचे से ऊँचा बनना मुश्किल। ऊपर से गिरना सुगम है, और नीचे से ऊपर उठना मुश्किल। हिंदू के मुसलमान या ईसाई होने से कुछ नहीं बिगड़ता, और मुसलमान या ईसाई के हिंदुओं में मिलने से तो समस्त हिंदू-जाति भ्रष्ट हो जायगी।

उत्तर—यह ऊँच-नीच तो तुम्हारी कल्पना है। तुम अपने को ऊँच कहते हो, परंतु ईसाई-मुसलमान तुमको नीच बताते हैं। चढ़ना और उतरना तो लगा ही रहता है। जिस प्रकार छत से नीचे उतरते हैं, उसी प्रकार चढ़ते भी हैं। तुम यह समझते हो कि ईसाई या मुसलमान के मिलने से हिंदू-जाति भ्रष्ट हो जायगी, यह तुम्हारा भ्रम है। कोई जाति अपनी सभ्यता के प्रचार और वृद्धि से भ्रष्ट नहीं होती। यदि ईसाई और मुसलमान हिंदू हो जायँ, तो हिंदू-सभ्यता का प्रचार करेंगे, गो-रक्षा होगी, अहिंसा का प्रचार होगा। शुद्धता और पवित्रता का जो आदर्श हिंदू-जाति के शास्त्रों में लिखा है, उसका सभी अनुकरण करेंगे। हिंदुओं की संख्या बढ़ेगी, और उनको धर्म-कर्म में सुविधा होगी। शुद्धि की प्रथा के बंद या कम हो जाने से हिंदुओं की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी-अँगरेज़ी-छपाई

रंगीन तिरंगे चित्र

सर्वश्रेष्ठ जिल्द-बँधाई

सोने की छपाई, चिट्ठी के काग़ज़, लिफ़ाफ़े, पोस्टकार्ड,
विज़िटिंग-कार्ड, बिल, मिमो, रसीद-बुक, कैलेंडर,
नोटिस, निमंत्रण-पत्र, अभिनंदन-पत्र, पुस्तक आदि—

सब प्रकार की छपाई का काम

हमारे यहाँ सुंदर और सस्ता

साथ ही

ठीक वक़्त पर किया जाता है।

काम संतोष-प्रद होने की गैरंटी!

आपको छोटा-मोटा, सुंदर, सस्ता, किसी प्रकार का भी छपाई का कोई काम कराना हो, तो उसे तुरंत हमारे पास भेजिए।

अब इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं।

सब प्रकार की छपाई के काम के लिये सुविधा-जनक स्थान

गगन-फ़ाइन आर्ट-प्रेस
लखनऊ

CC-0.Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

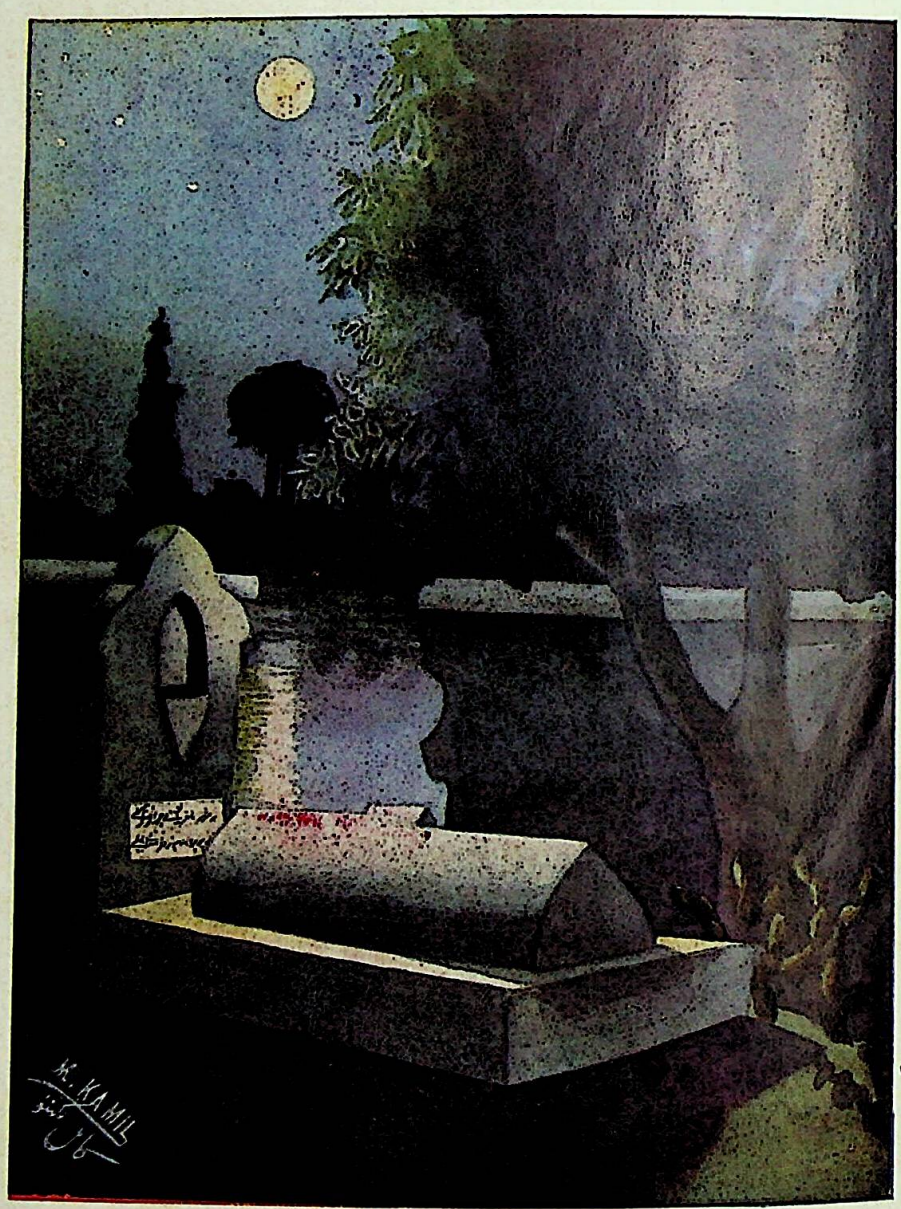

मज़ार

[चित्रकार—श्रीकामिल लखनवी]

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनेकानेक हानियाँ हुई हैं। प्रथम तो इनका आदर्श संसार से उठता जा रहा है। दूसरे, अन्य मतावलंबियों की संख्या-वृद्धि के कारण इनको अपना धर्म पालने में अड़चनें पड़ती हैं। आज एक कहता है कि बाजा मत बजाओ। कल दूसरा कहता है, यहाँ हवन मत करो। परसों तीसरा कहता है, यहाँ शंख बजाना नहीं चाहिए। तीसरे, अन्य मतावलंबियों की संख्या-वृद्धि के कारण रहे-सहे हिंदुओं की संख्या में दिन-प्रति-दिन न्यूनता होती जाती है। आज अमुक मुसलमान अमुक हिंदू-स्त्री को बहका ले गया, और आज अमुक हिंदू-बालक अमुक ईसाई के चंगुल में फँस गया। आज अमुक हिंदू-विधवा अमुक मुसलमान के साथ भाग गई! यह सब क्यों होता है? केवल इसलिये कि चारो ओर अन्य मतावलंबियों की संख्या बढ़ रही है। हिंदू दाँतों के बीच ज़बान की तरह रहते हैं। उन मतावलंबियों के रहन-सहन का आदर्श इतना उच्च नहीं है कि वह भूले-भटके हिंदुओं के बहकाने में संकोच करें। परिणाम यह होता है कि जो हिंदू उनके संसर्ग में आते हैं, उनका भी आचरण भ्रष्ट होता जाता है। चौथे, शुद्धि की प्रथा से हिंदुओं के डरने के कारण मनुष्य-जाति वैदिक सभ्यता से वंचित हो रही है। यह उसके ऊपर सबसे बड़ा पातक है। अनेक सज्जनों ने चाहा कि आर्य-धर्म को ग्रहण करके अपनी आत्मा की प्यास बुझावें, परंतु हिंदू-धर्म के ठेकेदारों ने उलटा ही पाठ पढ़ाया, और उनको अपने धर्म में न लिया। अकबर ने कितनी इच्छा प्रकट की कि उसको हिंदू बना लिया जाय। परंतु लोगों ने हँस-कर टाल दिया कि बगला हंस नहीं हो सकता। यदि अकबर को हिंदू बना लिया जाता, तो औरंगज़ेब और उसके उत्तराधिकारियों के जो-जो अत्याचार हिंदू-जाति को सहने पड़े, उनसे बचत हो जाती। औरंगज़ेब की तलवार ने जो-जो मंदिर ढाए, उनका पाप अकबर के समकालीन हिंदुओं पर है। औरंगज़ेब के लड़कों ने सिक्खों की जो गति बनाई, उसका पाप भी इन्हीं के सिर है। गुरु गोविंदसिंह के लड़कों का दीवार में चुना जाना, गुरु तेगबहादुर का किन अत्याचारों के बीच में प्राण गँवाना, गुरु बंदे की बोटियाँ-बोटियाँ होना, अनेकों सिक्खों के सिरों के बालों का राँपियों से छीला जाना, यह सब केवल एक बात से बच सकता था, अर्थात् अकबर हिंदू हो जाता। काश्मीर का पहला विदेशी नरेश मुसलमान न था। वह एशिया से आकर काश्मीर की गद्दी पर बैठ गया था। उसने हिंदू पंडितों से कहा कि मुझे अपना धर्म सिखाओ। पंडितों ने उत्तर दिया कि हिंदू-धर्म वही स्वीकार कर सकता है, जो हिंदू-कुल में उत्पन्न हुआ हो। इस प्रकार तिरस्कृत होकर उसने मुसलमान-धर्म स्वीकृत कर लिया। परंतु उस पर भी वह पंडितों का मान करता रहा। एक दिन एक पंडितजी ने गीता के एक श्लोक * का अर्थ समझाते हुए कहा कि अपना बुरा धर्म भी मानने के योग्य है, और दूसरे का श्रेष्ठ धर्म भी त्याज्य है। इस बुरी शिक्षा का उस बादशाह के ऊपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह हिंदुओं का शत्रु हो गया। वह कहने लगा कि हिंदुओं का धर्म स्वयं यह शिक्षा देता है कि दूसरों के धर्म को त्यागना चाहिए, तो मुझे हिंदुओं के धर्म को जड़-मूल से उखाड़ने में क्या आपत्ति है। इस प्रकार काश्मीर में मुसलमान बढ़ने लगे। हिंदुओं पर अत्याचार होने लगे, और अच्छे कुल के हिंदू लोग वहाँ से भागकर इधर-उधर आ बसे। जिस काश्मीर में संस्कृत-विद्या का प्रचार था, जो काश्मीर हिंदू-धर्म का एक उत्तम गढ़ था, वही काश्मीर मुसलमानों से भर गया, और उनकी सभ्यता ने तो काश्मीरियों पर इतना प्रभाव डाला कि इस समय तक वह उससे उभर नहीं सके। इनमें आजकल भी मुसलमानी चाल-ढाल, मुसलमानी भाषा, मुसलमानी विचार अधिकतर हैं। सैकड़ों काश्मीरी पंडितों में एक-दो संस्कृत का विद्वान् चाहे भले मिले, परंतु अठानबे-निन्नानबे प्रति-शतक फ़ारसी के विद्वान् मिलेंगे। यदि कहीं उस बादशाह को वैदिक धर्म की शिक्षा दी जाती, तो परिणाम अन्यथा ही होता।

(अपूर्ण)

गंगाप्रसाद उपाध्याय (एम्० ए०)

---

* श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्;
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।
(गी० ३-३५)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुरब्बे बनाने की विधि

अखरोट

फ़ेद चीनी की दो तार की चाशनी बनाकर अख़रोट की मींगी डाल दो। एक सप्ताह में अख़रोट का मुरब्बा तैयार हो जायगा।

अदरक

अदरक को छीलकर लंबे-लंबे टुकड़े बना लो। फिर उनको गाढ़ी चाशनी में डाल दो। पंद्रह दिन में मुरब्बा तैयार हो जायगा।

आलू

आलू को थोड़ा-सा उबालकर छील डालो। फिर काँटे से गोदकर दो तार की चाशनी में डाल दो। तीन रोज़ के बाद आग पर रखकर एक हल्का-सा उबाल और दो, जिससे आलुओं के अंदर से निकली हुई पसीज जल जायगी। यदि चाशनी पतली हो जाय, तो उसमें थोड़ी-सी चीनी मिलाकर गाढ़ी कर लेना चाहिए।

अनन्नास

इसके ऊपर और भीतर के भाग को बड़े लंबे टुकड़े कर प्रथम भीतर के लंबे-लंबे टुकड़ों को क़लई की बटलोई में बिछा पुनः ऊपर के टुकड़ों को उन पर बिछा बटलोई का मुँह बंद कर दो, और मुलायम आग से उबालो। जब वह गल जाय, तब उतारकर नस को साफ़ कर मिश्री की चाशनी डाल दो।

बादाम

सेर-भर पानी में दो तोले रेह डालकर, जिसमें बादाम उसमें भीग सकें, छीलकर भिगो दो। चार दिन बाद आध घंटे तक आग पर रहने दो। फिर शहद की चाशनी करके बादामों को डाल दो। तीन दिन बाद यह शहद निकालकर दूसरा उमदा शहद डाल दो।

बेर

पके हुए बड़े-बड़े बेर लेकर उनको छील लो, चाहे गुठली निकाल लो या न निकालो। फिर काँटे से गोदकर चाशनी में डाल दो, और तीन रोज़ बाद देखो कि अगर चाशनी कुछ पतली पड़ जाय, तो उसे फिर पकाकर कुछ गाढ़ा कर लो।

कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाल-मृत्यु के कारण

(गतांक से आगे)

रिद्रता—सब रोगों की जननी, सब कष्टों की अधिष्ठात्री यदि कोई है, तो वह दरिद्रता ही है।* मनुष्य के पास साधन न हो, तो ज्ञानवान् व्यक्ति भी कुछ नहीं कर सकता। जिनके पास रहने को घर नहीं, खाने को अन्न नहीं, पहनने को कपड़े नहीं, बिछाने को बिस्तर नहीं, लेटने को पर्याप्त भूमि भी नहीं मिलती, वे बच्चे का पोषण किस प्रकार करें? जिन्हें पेट-पालन करने के लिये पुतली-घरों में या सड़कों पर जाकर मज़दूरी करनी पड़े एवं साथ ही बच्चे भी उत्पन्न करने पड़ें, वे उनका क्या पोषण करेंगे? वह दूसरे को क्या खाने को देगा और क्या पहनने को, जिसके पास ख़ुद खाने और पहनने को नहीं?

जिनको पेट-भर खाने को नहीं मिला, जिनको सूखी बाजरे या ज्वार की रोटी चलते-चलते खानी पड़ी, वे बच्चे को क्या दूध पिलाएँगी? जिसके पास अपना दूध नहीं, पास में सर्व-सिद्धि-दायिनी लक्ष्मी (फूटी कौड़ी) भी नहीं, वे कहाँ से दूध लेकर पिलाएँगी? निदान, वही बाजरे के टिक्कड़ शिशु को भी चबाने पड़ेंगे, जिससे जब बीमार होगा, तो बिना चिकित्सा के शीघ्र ही, इस पृथ्वी के दुःख से मुक्त होकर, परम पिता की गोद में जा विराजेगा। जब पैसे ही नहीं, तो चिकित्सा कहाँ?

परंतु भगवान् की अपार दया है कि प्रायः मृत्यु-संख्या शहरों एवं अमीरों में ही अधिक होती है। भगवान् ने कुछ रोग अमीरों के लिये रिज़र्व कर रक्खे हैं। जहाँ-जहाँ नवीन सभ्यता का सूर्य चलता जाता है, वहाँ-वहाँ भगवान् भी अपने राहु-केतु को भेजते जाते हैं।

---

* "प्राणेभ्यो ह्यनंतरं धनमेव पर्यष्टव्यं भवति। नह्यतः पापात्पापं योऽस्ति यदनूपकरनस्य दीर्घमायुः। तस्मादुपकरनानि पर्येष्टुं यतेत। तत्रोपकरनोपाया ननुव्याख्यास्यामः। तद्यथा—कृषिपशुपाल्यवाणिज्यएज्योपसेवादीनि, यानि चान्यपि सत्तामाविहितानिव वर्त्माणि वृत्तिपुष्टिकरानि विद्यात् तान्यारभेत कर्तुम्।" (आत्रेय)।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनके पास रुपया भरा है, लक्ष्मी ने उनके ऊपर ही कृपा की है, अतः भगवान् भी किसी के घर यक्ष्मा, किसी के घर हैज़ा, किसी के घर चेचक और किसी-किसी के घर प्लेग भेजकर लोगों की लक्ष्मी को चलायमान कर देते हैं। इन्हीं के आश्रय चिकित्सकों की जीविका भी आराम से चलती जाती है।

ग़रीबों को पहले ही खाने-पहनने के लिये रुपया नहीं मिलता, उनके पास चिकित्सा के लिये कहाँ से आवे? अतः भगवान् ने उन्हें प्रायः रोगों से सुरक्षित रक्खा है। ❀

दरिद्रता के कारण मनोरथ, इच्छाएँ और ज्ञान सब रक्खा रह जाता है। अतः आवश्यक है कि यथासंभव उपायों से इस देवी को नमस्कार करके प्रसन्न किया जाय।

अस्तु। कुछ भी हो, यथासंभव उपायों से सहायता लेने का प्रयत्न किया जाना आवश्यक है। जंगली पशुओं के पास भी पैसा नहीं, परंतु फिर भी वे अपने बच्चों की रक्षा करते हैं। उसी प्रकार मनुष्य को भी चाहिए कि सादा जीवन व्यतीत करते हुए प्रकृति के बताए हुए मार्ग की ओर चले।

माता की अनभिज्ञता—यदि माता शिक्षिता एवं अभिज्ञ है, तो वह दरिद्रता के समुद्र को अपनी जीवन-नौका द्वारा सुगमता से पार करती चली जाती है। माता के उत्तम नाविक होने से शिशु भी पार हो जाता है। परंतु यदि माता फूहड़, अशिक्षिता है, तो वह लक्ष्मी के समुद्र (अमृत) में भी शिशु को डुबो देती है। वह उसे भड़कीले, तंग वस्त्रों को पहनाती है। उसका पालन नौकरों पर छोड़ दिया जाता है। दूध भी धात्री का या कृत्रिम दिया जाता है। पूरी देख-रेख नहीं रहती।

प्रायः सब दोष या मृत्यु इसी अज्ञानता के कारण होते हैं। अतः प्राचीन एवं अर्वाचीन संजनन-शास्त्र के पंडितों का विचार है कि माता अवश्य शिक्षिता होनी चाहिए। ❀

शिक्षित माता ही बालक का पालन-पोषण भले प्रकार कर सकती है। वही सच्ची माता हो सकती है। जहाँ वह बालक के शरीर का ध्यान रख सकती है, वहाँ वह उसकी मानसिक शक्तियों को भी उन्नत कर सकती है। ऐसी माता की शिक्षा में पले हुए बालक जहाँ अपने घर के लिये उपयोगी हैं, वहाँ अपनी जाति और देश के भी अच्छे स्तंभ बन सकते हैं।

उपर्युक्त कारणों से भारत में बच्चों की मृत्यु एक बड़ी संख्या में होती है। इसके साथ यह नियम भी है कि जहाँ की जन-संख्या अधिक होगी, वहाँ मृत्यु भी अधिक होगी, और जहाँ कम होगी, वहाँ कम, जैसे मद्रास में। परंतु इन मृत्युओं का कारण उपर्युक्त कारणों में से ही होता है। यदि इन कारणों को हटा दिया जाय, तो मृत्यु-संख्या का घटना अवश्यंभावी है।

यदि प्रकृति की इच्छा के विरुद्ध अशुद्ध परिस्थितियों में जन-संख्या बढ़ा दी जाय, तो प्रकृति उसको घटाने के लिये अपने शस्त्रों का प्रयोग करती है। यथा युद्ध, महामारी, प्लेग आदि। परंतु यदि उचित और उत्तम अवस्थाओं में जन-संख्या बढ़े, तो प्रकृति देश को उन्नत, समृद्ध बना देती है। जिस प्रकार मुट्ठी में उतनी ही वस्तु सुरक्षित रक्खी जा सकती है, जितनी उसमें सुगमता से आ जाय। अधिक वस्तु स्वयं बाहर निकल जायगी।

मृत्यु-संख्या के प्रतिरोधक उपाय

१. ग्रामों और शहरों में माता और शिशुओं के स्वास्थ्य के लिये प्रबंध करना।

२. प्रसव या सूतिका-गृह बनाना, जहाँ पर बिना किसी फ़ीस के प्रसव कराया जाय।

❀ बड़े-बड़े रोग अमीरों को ही होते हैं, निर्धनों को नहीं। (जैसे यक्ष्मा, कुष्ठ आदि। देखिए, आत्रेय)।

❀ सुरूपा यौवनास्था या लक्ष्मैश्वर्या विभूषिता ;
या वश्या शिक्षिता या च सा स्त्री वृध्यतमामता। (आत्रेय)

"In your search for the attainable, avoid the ignorant and wrongly educated."

(Cown. M. D.)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

३. प्रत्येक मुहल्ले में शिक्षित धात्रियाँ रखनी चाहिए, जो समय-समय पर गुप्त शिक्षा देती एवं घरों का निरीक्षण करती रहें। ग़रीबों को वस्त्र, भोजन, दूध, सब मुफ़्त दिया जा सके।

४. भारतीय दाइयों को शिक्षित किया जाना चाहिए। संक्रमण का विषय भले प्रकार समझा देना चाहिए।

५. इँगलैंड की भाँति भारत में भी प्रमाण-पत्र-प्राप्त धात्रियों को ही प्रसव-कार्य करने देना चाहिए।

६. प्रत्येक ज़िले में रजिस्टर्ड धात्रियाँ रखनी चाहिए।

७. कन्या-पाठशाला में भी शिशु-पालन की शिक्षा दी जानी चाहिए।

८. गोशालाएँ खोलनी चाहिए, जहाँ उत्तम दूध सस्ते दामों मिल सके।

९. सब जमे हुए (कंडेंस्ट) दूध की परीक्षा करनी आवश्यक है।

१०. गर्भवती स्त्री को प्रसव के एक मास पूर्व और दो मास पश्चात् कोई परिश्रम नहीं करना चाहिए।

११. भोजन और दूध का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

१२. स्थान-स्थान पर शिशु-प्रदर्शिनियाँ होनी चाहिए।

१३. स्वास्थ्य एवं शिशु-पालन के विषय में समय-समय पर सरक्यूलेशन छपाकर मुफ़्त बाँट देने चाहिए।

१४. चिकित्सक या निरीक्षकों के पास मोटे कार्ड-बोर्ड पर छपी आवश्यक सूचनाएँ होनी चाहिए।

१५. शिशुओं के लिये पृथक् राजकीय औषधालय होने चाहिए, जहाँ पर निरीक्षकगण शिशुओं को भिजवा दिया करें। उनकी चिकित्सा का संपूर्ण प्रबंध राष्ट्र को अपने ऊपर लेना चाहिए। ❀

माता का शिशु पर प्रभाव—शिशु माता और पिता के अंश से उत्पन्न एक प्राणी है। माता के गर्भाशय में ९ मास तक उसका पोषण होता है। यह माता के रक्त द्वारा होता है। यह रक्त संपूर्ण अवयवों में सिर से पैर तक चक्कर काटता और फिर शिशु में आकर दूसरे सिरे से लौट जाता है। माता के विचार, उसकी आकृति, उसका रंग, उसके विकार सब इसमें घुले होते हैं। यही विचार आदि घूमते-घूमते रक्त द्वारा शिशु में भी पहुँचते हैं। अतः उस पर इनका प्रभाव होना अनिवार्य है।

इसके (प्रसव के) पश्चात् शिशु का मुख्य भोजन एक साल तक दूध रहता। यह दूध मासिक आर्तव के सिवा और कुछ नहीं। मासिक आर्तव गर्भ-धारण से बंद होकर गर्भाशय में गर्भ का पोषण करता और पीछे उत्पन्न होने पर स्तनों में आकर दूध बन जाता है। स्तन-ग्रंथियाँ रक्त में से दूध बना लेती हैं। जिस प्रकार निकंठ कंठ-ग्रंथि रक्त में से आयडोथायरीन उत्पन्न कर लेती है। ❀

यही कारण है कि जिस प्रकार इष्ट वस्तु के देखने, सुनने अथवा स्पर्श करने से कामेच्छा जाग्रत् हो जाती है, उसी प्रकार पुत्र के चुंबन से, स्पर्श से और दर्शन से स्तनों से दूध झरने लग जाता है †। अतः इस दूध के कारण शिशु का पोषण भी होता है।

रक्त से पृथक् किए जाने के कारण इसमें भी माता के विचार घुले होते हैं, जिनको शिशु दूध के रूप में पीता है।

इसके अतिरिक्त शिशु का उठना-बैठना, सोना-जागना, सब माता के साथ ही होता है। अतः माता की प्रत्येक छोटी-छोटी क्रिया का शिशु के निर्मल, शुद्ध चित्र पर प्रभाव पड़ता रहता है। इस समय शिशु का मस्तिष्क, हृदय बिलकुल साफ़, स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध, पारदर्शक होता है। उस पर इस समय जैसा भी चिह्न बनता है, वह स्थायी होता है। इस निशान को संपूर्ण वैज्ञानिक भी मिलकर मिटा नहीं सकते।

शिशु में उत्तम संस्कार, शिक्षा का प्रादुर्भाव हो, इसके लिये माता का शिक्षिता होना आवश्यक है एवं अनिवार्य है। विना इसके उत्तम शिशु बन सकेगा, इसमें अभी संदेह है। अतः माता को आवश्यक है कि वह अपने उत्तरदायित्व को समझकर अपनी क्रिया करे।

अत्रिदेव गुप्त

❀ विस्तार के लिये आप "शिशु-पालन" पुस्तक देख सकते हैं, जो काशी-नागरी-प्रचारणी सभा से प्रकाशित हुई है।

❀ रसादेव स्त्रियः स्तन्यं रजः संज्ञा प्रवर्त्तते। ..... विश्वमित्र

† देखिए, सुश्रुत में विसर्प-रोग में दूध के झरने का कारण।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्यास

बथुआ को पानी में पकाकर उस पानी से ख़ूब सर धो डालो। प्यास जाती रहेगी।

हाथ-पैर फटना

सरदी के मौसिम में हाथ-पैर फट जाते हैं। इन्हें चीनी के शरबत से धोने से वे अच्छे हो जायँगे। अलसी का तेल लगाने से भी लाभ होता है।

होंठ फटना

सरदी के कारण यदि होंठ फट जायँ, तो उसमें शहद और अच्छा गुलाब-जल फेंटकर लगाने से बड़ा लाभ होता है।

भोजन के बाद पेशाब करने से मूत्रेंद्रियाँ-संबंधी कोई रोग नहीं होता और कमर का दर्द भी जाता रहता है।

सर का दर्द

सोंठ को गाय के दूध में घिसकर लगाने से सर-दर्द जाता रहता है। अथवा सोंठ, कूठ, एरंड की जड़ को बाँटकर लगाने से भी आराम होता है।

दीमक न लगना

जिस जगह दीमक लगने का भय हो, कपूर और तम्बाकू को बराबर-बराबर लेकर पीसकर रख लो और कभी-कभी उस जगह डाल दिया करो, दीमक न होगी।

दिल की धड़कन

सेवती का गुलक़ंद खाने से दिल की धड़कन बंद हो जाती है।

गठिया

करेले के कच्चे फलों का रस निकालकर गर्म करके गठिया पर लेप करने से आराम होता है।

हिचकी

हिचकी के रोगी को कच्चा सिंघाड़ा खिलाने से लाभ होता है।

अफ़ीम का नशा

अंडी के पत्तों का रस पिलाने से अफ़ीम का नशा उतर जाता है।

फोड़ा पकाने के लिये

मैनफल को पानी में घिसकर गर्म करके लगाने से फोड़े जल्दी पक जाते हैं।

पुनः अजूबा के पत्तों में घी चुपड़कर गर्म करके बाँधने से लाभ होता है।

अथवा गाय के दूध में खाने की तंबाकू पीसकर बाँधने से बहुत लाभ होता है।

कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. वेदांत

उपनिषद्-सुधा—रचयिता, स्वर्गीय बाबू जयनारायणजी; प्रकाशक, पं० हरिशंकर विद्यार्थी, प्रताप-प्रेस, कानपुर ; मूल्य २) । काग़ज़ तथा छपाई-सफ़ाई साधारण । पृष्ठ-संख्या ४४० के इधर-उधर ।

आरंभ में, भूमिका लिखते हुए, प्रयाग-विश्वविद्यालय के संस्कृताध्यापक साहित्याचार्य पं० रघुवर शास्त्री एम्० ए०, एम्० ओ० एल्०, काव्यतीर्थ, वेदांततीर्थ महाशय ने उपनिषदों के इतिहास तथा प्रकाश में आने का जो परिचय दिया है, वह बड़ा ही सुंदर, विद्वत्ता-पूर्ण, सार-गर्भ तथा मनोहर है । उपनिषदों के संबंध को यह छानबीन इतिहास की दृष्टि से तो कोई बड़ी बात नहीं थी, पर उनकी उपयोगिता तथा स्थान-निर्णय पर शास्त्रीजी ने जो अभिमत ज़ाहिर किया है, वह अत्यंत विशद तथा उनके निर्मल उपनिषद्-ज्ञान का सुखप्रद प्रमाण हो रहा है । हिंदुओं के उत्कर्ष का सर्वोत्तम साहित्य उपनिषद् ही हैं । उनका साधारण-जनों में अधिकाधिक प्रचार देश तथा जाति के कल्याण का सर्वोत्तम साधन है । प्रस्तुत पुस्तक में उपनिषद्-वाक्यावली का सरल हिंदी में पद्यानुवाद किया गया है, जिससे पढ़ने की रुचि बढ़ती है । पुस्तक में चुने हुए ५२ उपनिषदों का भाषांतर किया गया है । पद्य-बंध किसी अच्छे उत्तरदायी कवि से दिखा लिए जाते, तो कहीं-कहीं भाषा में जो खटकनेवाली अशुद्धियाँ, स्खलन आदि रह गए हैं, उनका निराकरण हो जाता । पुस्तक के लेखक तथा प्रकाशक को धन्यवाद ।

× × ×

भगवद्गीता की समालोचना—श्रीमत् परमहंस सोऽहं स्वामी-प्रणीत; अनुवादक, पं० गोपालचंद्र वेदांतशास्त्री; प्रकाशक, श्रीसूर्यकांत वंद्योपाध्याय बी० एल्०, नं० ३८ सदानंद बाज़ार, स्वयंभाति-पुस्तकालय, काशी । मूल्य २) सजिल्द । छपाई-कागज़ साधारणतः अच्छा । पृष्ठ-संख्या ३३२ ।

पुस्तक आलोचनात्मक है । श्रीमत् परमहंस सोऽहं स्वामी गीता-ज्ञान के अधिकारी पुरुष हैं । उनकी की हुई आलोचना अच्छी ही होगी । यह धारणा पहले ही बँध जाती है । पढ़ने पर यह विचार दृढ़ हो जाता है । स्वामीजी की समालोचना बड़ी विशद तथा उनके सत्य ज्ञानानुभव की पूर्ण परिचायिका है । "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिस्वजाते" आदि, इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रुति-वाक्य में अपर तटस्थ रहकर देखनेवाले पक्षी के रूपक में आत्मा की जीवात्मा में व्यापकता दिखलाते हुए स्वामीजी ने इसके मूल-तत्त्व का बड़ी उत्तम रीति से प्रदर्शन कर दिया है। गीता की इतनी अच्छी आलोचना हमें इधर नहीं मिली। यह मुक्त आलोचना है। केवल विषय का संबंध लेकर चलती है। भाषा बड़ी साफ़ तथा प्रशस्त है। गीता के प्रेमी सज्जन यह पुस्तक एक बार अवश्य देखें।

× × ×

२. उपन्यास

अरुणोदय—लेखक, पं० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' बी० ए०; संपादक, जगद्गुरु श्रीमान् सच्चिदानंद शर्मा। छपाई-कागज साधारण; पृष्ठ-संख्या २८२; मूल्य २) ऐसी रद्दी छपाई और कागजों के इतने ही पृष्ठों के लिये बहुत अधिक हो गया है।

पहले मैं समझता था, मेरे मित्र एकमात्र अर्जुन चमार जो प्रति दिन मेरे यहाँ हिंदी पढ़ने के लिये आया करते हैं, "गुण" को "गुड़" कहकर उच्चारण में अधिक मिठास लाने के प्रवर्तक हैं। पर क्रमशः मेरा यह भ्रम दूर हो रहा है। हिंदी में अनेक प्रवर्तक होते जा रहे हैं। इस पुस्तक के भूमिका-लेखक श्रीमान् सच्चिदानंद शर्मा रस, भाव तथा भाषा सबके प्रवर्तक हैं। आत्म-प्रसाद की भाषा ठहरी, फिर क्या, "ऊँचे उरोज उलारि-उलारि चमारी चना धना लागीं पछोरन"। गिरीशजी के सभी चरित्र शिथिल हैं। उपन्यास में पढ़ाई की मिहनत भी नहीं वसूल होती। गिरीशजी के गद्य की बड़ी तारीफ़ सुनी थी, पर भाषा क्या, बेरी-बेरी रोग है।

× × ×

भूली बात—लेखक, पं० विनोदशंकर व्यास; प्रकाशक, पुस्तक-मंदिर, काशी। छपाई-सफाई-कागज़ बढ़िया। पृष्ठ-संख्या १२०; मूल्य १)।

यह वाणी-विनोद-पुस्तकमाला की दूसरी संख्या है। विनोदजी छोटी-छोटी, कहानियाँ इधर कई साल से लिख रहे हैं, और इस तरफ़ उन्हें सफलता मिली है। सीधी भाषा, सुंदर भाव। जहाँ कहीं प्रयत्न असफल हुआ है, वहाँ ज़्यादा बुरा नहीं लगता। कारण, वह हिंदी ही के भीतर से किया गया प्रयास भविष्य के सफल शिल्प की वर्तमान असफलता है, प्रयत्न में सूक्ष्म सौंदर्य और लघुता ले आने का कारण। पुस्तक में ६ कहानियों का संग्रह है। जहाँ नई भावना वैसी ही भाषा के भीतर से एक छोटे-से झरने की तरह फूटकर बह चली है, वहाँ उसकी उज्ज्वलता, स्वच्छता देखकर जी ख़ुश हो जाता है। चित्रण में सहानुभूति है, भावों में स्थिरता। पर "उसका सौंदर्य दरिद्रता से प्रणय-भिक्षा माँग रहा था।" यहाँ वरदान शाप बन रहा है। प्लाटों में भी भावातिरेक की सृगी है, कहीं-कहीं।

× × ×

सिंहगढ़-विजय—संपादक, पं० कृष्णकांत मालवीय; प्रकाशक, अभ्युदय-प्रेस, प्रयाग। छपाई-सफ़ाई साधारण; पृष्ठ-संख्या २०१; मूल्य ॥।)।

इतिहास के तौर पर लिखी गई इस कहानी में अच्छा आकर्षण है। कमलकुमारी के भीतर हिंदू-युवती की मनोवृत्तियाँ जो मिलती हैं, बड़ी रुचिकर हैं।

× × ×

३. साहित्य

हिंदी में नाट्य-साहित्य का विकास—लेखक, पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र; प्रकाशक, साहित्य-सेवक-कार्यालय, ब्रह्मनाल, काशी; मूल्य ।-); पृष्ठ-संख्या ५२; छपाई-कागज साधारण और अच्छा।

लेखक ने हिंदी-नाट्य-साहित्य पर लिखी गई कुछ हिंदी की और कुछ अँगरेज़ी की पुस्तकों के आधार पर यह प्रबंध-पुस्तिका लिखी है। हिंदी के नाटकों के लिये इतना ही बहुत नहीं। इसमें नाट्य-साहित्य के विकास की बड़ी-बड़ी बातें नहीं हैं, जो उसके भविष्य का निर्माण करें।

× × ×

प्रबंध-पुष्पांजलि—संपादक, पांडेय रामावतार शर्मा बी० एन्० (आनर्स), विशारद; प्रकाशक, जे० एन्० बासु बी० ए०, कमलाबुक-स्टोर्स, बाँकीपुर, पटना; मूल्य ॥=), पृष्ठ-संख्या १३२; छपाई-सफ़ाई और कागज़ साधारण।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस पुस्तक में बिहार के साहित्यिकों के प्रबंध एकत्र किए गए हैं। ये प्रबंध 'सुधा,' 'भारतमित्र,' 'बालक' आदि पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं। अधिकांश 'बालक' ही में निकले हैं। पुस्तक पाठ्य-पुस्तकों में आ सकती है। पं० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी लिख रहे थे—"ब की बहार", हो गया "व का वहार"। आप नहीं समझे। चतुर्वेदीजी की इच्छा हुई, एक लेख "ब"-आदि-वर्ण में लिखकर खूब बलबलाएँ। पर हिंदी में "ब" वाले शब्द बहुत ही कम हैं, और "व" वाले सबसे ज़्यादा। अस्तु। "ब की बहार" पर "व का वहार" चढ़ गया।

× × ×

मानस-मकरंद—संग्रहकार, श्रीपांडेय रामावतार शर्मा एम्० ए०, विशारद; प्रकाशक, शर्मा-साहित्य-सदन, खूरौंधी, पो० भवनाथपुर, जिला पलामू; पृष्ठ-संख्या १२५ के इधर-उधर; छपाई-कागज़ साधारण; मूल्य ।।।-)

गोस्वामी तुलसीदासजी की जीवनी के साथ, उन्हीं की रामायण के आकर्षक स्थलों के, उसी तरह पद्य में, उद्धरण दिए गए हैं। संग्रहकार की चुनी हुई लाइनें तुलसीकृत रामायण की उत्तमोत्तम पंक्तियाँ हैं।

× × ×

सुंदर सरोजिनी—लेखक, पं० देवीप्रसाद शर्मा उपाध्याय; प्रकाशक भी वही, नेपाली कोठी, रामपुरा, बनारस सिटी; पृष्ठ-संख्या १११; छपाई-सफ़ाई साधारण; मूल्य ॥) आठ आने।

लोगों के मनोरंजन का काम चल जायगा।

× × ×

४. नाटक

सुदर्शन—लेखक, पं० मूलचंद्र जैन "वत्सल"; प्रकाशक, साहित्य-रत्नालय, बिजनौर; मूल्य ।।।) बारह आने; छपाई-सफ़ाई साधारण; पृष्ठ-संख्या ११२।

पुस्तक पुरानी परिपाटी के अनुसार अच्छी है। शेरों में ग़लतियाँ हैं, प्रूफ़ अमार्जित है।

× × ×

५. शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा का इतिहास—लेखक, श्रीयुत कन्हैयालाल; प्रकाशक श्रीयुत वीरबलसिंह, पीठ-स्थविर, काशी-विद्यापीठ, काशी; पृष्ठ-संख्या तीन सौ के लगभग; छपाई-सफ़ाई तथा कागज़ अत्युत्तम; मूल्य २)।

आजकल देश में जिस अँगरेज़ी शिक्षा का ज़ोर है, इसकी नींव पहले सरकार तथा विदेशी व्यापारियों के खाता-पत्र आदि लिखने के उद्देश्य से, क्लर्क तैयार करने के इरादे पर, डाली गई थी। पर विश्व-विद्यालय क्रमशः जिस अधिकता से पास-शुदह छात्रों की संख्या बढ़ाने लगे, उतनी ही अधिक माँग सरकार तथा मर्चेंट-हौसों में न रह गई। फलतः अकर्मण्य पठितों की संख्या बढ़ने लगी। साइंस के मास्टर केवल किताबों के ज्ञान में बँधे रह गए। साधनों के अभाव से देश की तथा अपनी तरक़्क़ी के लिये नए-नए आविष्कार न कर सके। अतः शिक्षा का सदुपयोग नहीं हुआ। डॉक्टर भी इसी तरह विदेशी यंत्रों तथा दवाओं के बेचनेवाले पैदा होने लगे। आर्ट में अपने यहाँ की कला का अभाव और रानी एलिज़ाबेथ के समय की साहित्य-साधना की चर्चा ज़ोरों पर होने लगी। इंजीनियर एंजिन तैयार करने के लिये नहीं, साफ़ करने के लिये होते गए। वकील उसी तरह क़ानून की सत्ता पर विचार करने, उसकी उपयोगिता की वृद्धि के लिये नहीं, क़ानूनों को रटकर अभियोग के दफ़ा-निर्देश के लिये हुए। इस प्रकार शिक्षा की सार्वभौमिक पराधीनता रही। बेकार शिक्षितों की संख्या भी बहुत ज़्यादा बढ़ गई। यह सब देखकर देश के स्वतंत्र मस्तिष्कवाले मनुष्यों में शिक्षा के सुधार की भावनाएँ पैदा होने लगीं। विद्यार्थियों को विद्या के उचित लक्ष्य की ओर ले चलने की प्रेरणा से उन्होंने राष्ट्रीय विद्यालयों की नींव डाली। वहाँ की शिक्षा में राष्ट्रीयता के साथ-साथ विद्यार्थियों के भीतर आत्म-निर्भरता के भाव भरने का क्रम रक्खा गया। प्रस्तुत पुस्तक उसी का इतिहास है।

मुख्य-मुख्य सत्रह शिक्षालयों के उल्लेख से इसकी शान बढ़ाई गई है। सबका इतिहास तथा कार्य-क्रम भी दिया गया है। पुस्तक इतनी सुंदर है, भाषा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाव, निबाह—सब इतने साफ़, मार्जित तथा मनोहर हैं, जिनका उल्लेख करने में हम पूर्णतः असमर्थ हैं। काशी-विद्यापीठ-शिक्षा-परिषद् के निश्चय तथा आदेशानुसार वहीं के उप-पीठस्थविर श्रीयुत कन्हैयालालजी ने इस अमूल्य पुस्तक की रचना की है। हिंदी के भाग्य को सराहिए, जो ऐसे सुबोध लेखक और ऐसी प्रांजल भाषा में लिखी गई पुस्तक भी वह दे सकती है।

× × ×

६. चिकित्सा

मंथरज्वर की अनुभूत चिकित्सा—लेखक, स्वामी हरिशरणानंद; प्रकाशक, दि पंजाब आयुर्वैदिक फ़ार्मेसी, अमृतसर; मूल्य १); पृष्ठ-संख्या पौने दो सौ के लगभग; छपाई-सफ़ाई साधारण।

व्याधियों की सृष्टि के इतिहास के साथ साफ़ भाषा में रोगों के लक्षण तथा चिकित्सा भी बतलाई गई है। पुस्तक काम की है। एक शुद्धि-पत्र तथा पारिभाषिक शब्द भी दे दिए गए हैं।

× × ×

सूर्य-रश्मि-चिकित्सा—लेखक, श्रीयुत बांकेलाल वैद्य; प्रकाशक, मैनेजर धन्वंतरि-कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़); मूल्य ।।); पृष्ठ-संख्या ६०। छपाई-सफ़ाई साधारण।

सूर्य की रश्मियों से ही रंग निकले हैं। इसमें रंगों से चिकित्सा बतलाई गई है। पुस्तक अच्छी है।

× × ×

७. फुटकल

प्रलाप—लेखक, श्रीयुत केशवलाल झा "अमल"; प्रकाशक, महावीरप्रसाद ऐंड ब्रदर्स, बुकसेलर्स ऐंड पबलिशर्स, सुल्तानगंज, भागलपुर; मूल्य ॥=); पृष्ठ-संख्या ६६।

इस गद्य-काव्य की भूमिका में अपने विचार ज़ाहिर करते हुए पं० अक्षयवट मिश्र, हिंदी-प्रोफ़ेसर पटना-कॉलेज लिखते हैं—"भावों में कहीं कविता की झलक है, कहीं प्रतिभा का स्वाभाविक दिग्दर्शन। 'मधुप' में हार्दिक चंचलता का प्राबल्य है, प्रेमी के प्रति अज्ञात-यौवना, विस्मृत-लालसा कुमारी के क्या भाव होते हैं, यह दिखलाया गया है। आकांक्षा पढ़कर किसे संयोग की उत्कंठा नहीं होती!"

× × ×

मकरंद—लेखक, पं० गंगासहायजी पराशरी "कमल"; प्रकाशक, प्रेम-मंडल, कालीबाड़ी, बरेली; मूल्य ।।); पृष्ठ-संख्या ७४; छपाई-सफ़ाई साधारण।

यह 'कमल'जी की ७५ कविताओं का संग्रह है। कविताएँ खड़ी बोली में हैं। कोई-कोई कविता सरस तथा प्रांजल भाषा में लिखी हुई मिलती है।

"निराला"

× × ×

८. शरीर-रचना

हमारे शरीर की रचना (२ भाग)—लेखक, डॉक्टर त्रिलोकीनाथ वर्मा बी० एस्-सी०, एम्० बी०, बी० एस्० एफ़० आर० पी० एस्० (ग्लासगो), डी० टी० एम्० (लिवरपूल), एल्० एम्० (डबलिन), भूतपूर्व सीनियर डिमोंसट्रेटर एनाटोमी, किंगजार्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ; मूल्य २।।) तथा ४=)।

इस पुस्तक के प्रथम भाग की चौथी आवृत्ति और दूसरे भाग की तीसरी आवृत्ति हमारे सामने है। दोनो भागों में लगभग १००० पृष्ठ और ४०० चित्र हैं, जिनमें १८ रंगीन हैं। इस पुस्तक पर लेखक को मंगला-प्रसाद-पारितोषक तथा रेडिचे-पदक भी प्राप्त हो चुका है। इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि इसके लिखने में डॉक्टर साहब ने बड़ा भारी परिश्रम किया है, और हमें यह लिखते प्रसन्नता होती है कि हिंदी-संसार ने भी उनका तथा उनकी कृति का समुचित आदर करके अपनी गुण-ग्राहकता का परिचय दिया है। यह प्रायः देखने में आया है कि शरीर की रचना लिखते समय लेखक अधिकतर मनुष्य-शरीर पर ही सीमाबद्ध रहते हैं। पर हमारे डॉक्टर साहब ने एक सेल यक्क प्राणी अमीब्य और फिर बहु सेल यक्क प्राणियों पर प्रकाश डालकर किताब की सुंदरता को ही नहीं बढ़ाया, वरन् साधारण पाठकों के समझने में सुगमता कर दी है। पुस्तक इस अच्छे ढंग से लिखी गई है कि हमारे शरीर की रचना (Human anotomy) के साथ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साथ इंद्रिय-व्यापार-शास्त्र (Physiology) का भी मज़ा चखने को मिल जाता है, और हरएक बात ठीक-ठीक समझ में उतरती आती है। पुस्तक के अंत में अँगरेज़ी और हिंदी में अनुक्रमणिका भी दी हुई है, जिसने इस पुस्तक को बड़ा सरल बना दिया है। हमारी राय में उन वैद्य-डॉक्टरों को, जो बिना शरीर-ज्ञान के वैद्यक या डॉक्टरी में पैर अड़ाने लगते हैं, इस पुस्तक का पहले अवलोकन कर लेना अच्छा होगा। जिन लोगों को वैद्यक नहीं करनी है, उन्हें यह पुस्तक ज्ञान-वर्द्धक तो है ही, साथ-साथ रोचक भी साबित होगी।

अचलेश्वरनाथ व्यास

प्रकाशित हो रहा है ! प्रकाशित हो रहा है !!

वर्तमान हिंदी का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य !

साकेत

यह अनूठा महाकाव्य हिंदी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त की चमत्कार-पूर्ण लेखनी से लिखा गया है। यह ग्रंथ उनकी आजीवन साधना का फल है। पुस्तकाकार प्रकाशित होने के पहले ही यह सहस्रों हिंदी-प्रेमियों का हृदय मुग्ध कर चुका है। आज से चौदह-पंद्रह वर्ष पूर्व इसके कुछ अंश "सरस्वती" में प्रकाशित होते समय सर्वत्र इसकी चर्चा हो चुकी है। तब से हिंदी के साहित्य-सेवी विद्वान् बड़ी उत्कंठा के साथ इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। भाव, भाषा, माधुर्य, ओज और विषय, सभी दृष्टियों से यह अभूतपूर्व है। हमारा विश्वास है कि गोस्वामी श्रीतुलसी-दासजी के श्रीरामचरितमानस के बाद रामचरित को लेकर आज तक किसी ने ऐसे उच्चकोटि का काव्य नहीं लिखा। इस ग्रंथ से हिंदी-भाषा का मस्तक ऊँचा होगा। इस प्रकार के महत्व-पूर्ण ग्रंथ शताब्दियों में एकआध बार ही अवतरित होते हैं। कुछ समय के बाद "साकेत" की यह प्रथमा-वृत्ति एक मूल्यवान् ऐतिहासिक वस्तु हो जायगी और इसकी एक-एक प्रति के लिये लोग सैकड़ों रुपए खर्च करने के लिये तैयार होंगे। गुप्तजी की 'भारत-भारती', 'जयद्रथ-वध' और 'हिंदू' नामक पुस्तकों के पहले संस्करण महीने दो-दो महीने में ही समाप्त हो गए थे। अतएव इस अपूर्व ग्रंथ के लिये आप आज ही अपना आर्डर हमारे पास नोट करा दीजिए, जिसमें आप इसे प्रकाशित होते ही निश्चय रूप से प्राप्त कर सकें। ग्रंथ ३२ पौंड के सुंदर ऐंटिक पेपर पर छप रहा है। पृष्ठ-संख्या ४०० से अधिक, सुंदर जिल्द, मूल्य केवल तीन रुपए। पता:—

प्रबंधक साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रति मास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में नीचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) 'कविता-कौमुदी, पाँचवाँ भाग' (ग्राम-गीत)—लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी; मूल्य ३)

(२) 'प्रथमा-साहित्य-दर्पण'—संपादक, श्रीयुत बाबूराम-वित्थारिया; मूल्य १)

(३) 'यौवन सौंदर्य और प्रेम'—लेखक, श्रीयुत श्रीनाथसिंह; मूल्य १॥)

(४) 'यौवन और उसका विकास'—लेखक, श्रीयुत केशवकुमार ; मूल्य ॥)

(५) 'साहित्य-समालोचना'—लेखक, प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा एम्० ए०; मूल्य १)

(६) 'आत्म-कथा'—लेखक, महात्मा गांधी, दो भाग; मूल्य २)

(७) 'अग्नि-समाधि'—संपादक, श्रीप्रेमचंद; मूल्य १)

(८) 'विज्ञान-वार्ता'—लेखक, पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी; मूल्य १।=)

(९) 'ठलुआ-क्लब'—लेखक, श्रीयुत गुलाबराय; मूल्य ।॥)

(१०) 'बाल-कथा-कौमुदी'—लेखक, श्रीयुत तुलसी-देवी दीक्षित; मूल्य ॥=)

(११) 'दुखी दुनिया'—लेखक, चक्रवर्ती राज-गोपालाचार्य; मूल्य ॥)

(१२) 'कौन जागता है'—लेखक, श्री० विनायकनंद-शंकर मेहता आई० सी० एस्; मूल्य ॥)

(१३) 'स्वप्नों के चित्र'—लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी; मूल्य ।॥)

(१४) 'प्रतिबिंब'—लेखक, श्रीयुत सत्यप्रकाश एम्० एस्-सी०; मूल्य १॥)

(१५) 'लंबी दाढ़ी'—लेखक, श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव; मूल्य २॥)

(१६) 'काला पहाड़'—लेखक, पं० शिवनारायण मिश्र; मूल्य ।॥)

(१७) 'चंद्रकला'—लेखक, श्रीयुत चंद्रगुप्त विद्या-लंकार; मूल्य ॥।=)

(१८) 'विजयी बारडोली'—लेखक, पं० बैजनाथ महोदय; मूल्य २)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१. आर्यों की आदिभूमि, पंजाब

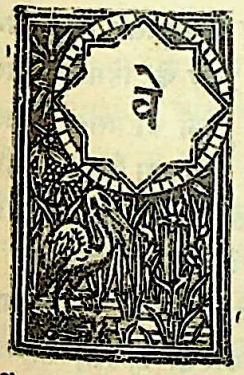

वेद अपौरुषेय कहलाते हैं। कम-से-कम हिंदोस्तान के अधिकांश मनुष्यों का यही विश्वास है। वे मनुष्य-कृत नहीं, ब्रह्मा के मुख से निकले हैं। महाप्रलय होने पर वे फिर अनादि आत्मा में लीन हो जायँगे। हिंदुओं के इस विश्वास में, और कुछ नहीं तो, वेदों की प्राचीनता अवश्य ही सूचित होती है। आजकल बहुत-से अँगरेज़ विद्वान् भी हैं, जो वेदों को ही संसार के साहित्य में सबसे पुराना मानते हैं।

इन पश्चिमी पंडितों और उनके पूर्वीय शिष्यों के मत से वेदों की रचना, प्राचीन पंजाब में, ईसा के डेढ़-दो हज़ार साल पहले, हुई थी, और इन मंत्रों के निर्माता ऋषि मध्य योरप की किसी जगह से आए थे। वे कहते हैं, पहले यहाँ काले-काले आदमी, चोर, लुटेरे आदि के रूप में, रहते थे। उन लोगों ने लड़ाई में इन्हें परास्त किया। फिर यहाँ अपना दख़ल जमा बैठे। उनके मत से आर्यों की यह चढ़ाई चार-पाँच हज़ार साल पहले यहाँ हुई थी। भारतवर्ष के अधिकांश पंडितों की यही राय है, और इसी के आधार पर यहाँ के प्राचीन इतिहास का निर्माण हुआ, और स्कूलों तथा कॉलेजों में हमारे लड़के यही पढ़ते और इसी सिद्धांत पर विश्वास करते हैं।

आजकल वेदों का पठन-पाठन हमारे देश में एक प्रकार है ही नहीं। स्वामी दयानंदजी सरस्वती को इस देश में वेद-पाठ के उद्धार का सबसे बड़ा श्रेय है। पश्चिम के विद्वानों ने भी इसके उद्धार के लिये बड़ा परिश्रम किया। आचार्य मैक्समूलर की लगातार ४० साल की तपस्या प्रसिद्ध है, जिससे वेदों का यथार्थ उद्धार हुआ, और यंत्रालय से मुद्रित होकर निकलने की नौबत आई। स्वामी दयानंद के स्कूल के पं० भीमसेन शर्मा-जैसे भारत के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् अब तक बहुत थोड़े हुए हैं, जिससे यह कहने में कोई द्विधा नहीं होनी चाहिए कि अब वेद-पाठ में योरप का ही प्राधान्य यहाँ माना जाता है, और इस देश के लोगों में उन्हीं की राय मानी भी जाती है। यहाँ के दो-एक वैदिक पंडितों को छोड़कर पश्चिमी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विद्वानों के मतों पर और दूसरे पंडितों ने रायज़नी नहीं की। पश्चिम के लोगों के पास अर्थ हैं, सुविधाएँ हैं, सुयोग हैं, प्रोत्साहन मिलता है, ख़र्च के लिये देश से अर्थ मिलता है, स्वाधीनता है, इसलिये वे अपने उद्यम में सफल होते हैं। वे प्रसन्न हैं, स्वच्छंद हैं, जीवन की जटिलताओं का प्राप्त शक्ति से मुक़ाबला कर जाते हैं। और लोग, जो अपर कारणों से दबे हुए हैं, उनके स्वच्छंद विचारों से भी दब जाते हैं; न दबने पर भी उसी वज़न का उत्तर देने के लिये उनके पास न तो समय है, न विद्या, न प्रोत्साहन और न ख़र्च।

जिन दो-एक मनुष्यों ने पश्चिमी विद्वानों को अपनी आलोचना द्वारा उत्तर दिए, और एक प्रतिकूल मत की स्थापना की थी, वेदों में आर्यों के संबंध का एक नया आविष्कार किया, स्वर्गीय लोकमान्य बालगंगाधर तिलक उन्हीं में से एक हैं। १९०३ ई० को इन्होंने आर्कटिक्स् होम इन दि वेदज़् (Arctics Home in the Vedas) नाम की एक किताब लिखी। इसके बाद बंगाल में पंडित उमेशचंद्र विद्यारत्न महाशय ने मंगोलिया-प्रदेश में आर्यों का आदिस्थल साबित करते हुए बँगला में एक किताब लिखी। गुजरात के श्रीयुत पावगीजी ने Aryavartic Home द्वारा आर्यावर्त को ही आर्यों की आदिम भूमि सिद्ध किया। इधर अनेक प्रमाणों से पं० रघुनंदन शर्मा साहित्य-भूषण महोदय ने हिंदी में अक्षर-विज्ञान लिखकर उसके एक प्रकरण में गंगा, यमुना और सरस्वती के बीच की भूमि में ही आर्यों का आदिम वास सिद्ध किया। श्रीयुत अविनाशचंद्र दास महाशय के अंदर, लोकमान्य तिलक की पुस्तक पढ़ने के बाद, वैदिक साहित्य के अवलोकन की इच्छा प्रबल हुई। १५ साल तक उन्होंने वैदिक साहित्य पढ़ने की तैयारी की, और वेदों का अध्ययन किया। आपके मत से आर्यों के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद-संहिता के समूह-मंत्र सप्तसिंधु (वर्तमान पंचनद या पंजाब) में ही तीन युगों तक लगातार आविष्कृत होते रहे (ऋग्वेद ३। ३२। १३; ६। २१। ५)। आपका कहना है कि उस समय देश की भौगोलिक स्थिति ऐसी नहीं थी। पंचनद या सप्तसिंधु के कुछ दूर पूर्व से लेकर आसाम की उपत्यका तक समुद्र था। पंजाब के दक्षिण तरफ़, वर्तमान राजपूताना में, एक दूसरा समुद्र था। पश्चिम तरफ़ आजकल के सिंध-देश को जोड़कर एक दूसरा समुद्र था, और उत्तर तरफ़ हिंदुकुश-पर्वत के उत्तर तमाम मध्य एशिया-भर में एक बृहत् और भूमध्य-सागर था। इन चारों समुद्रों की सीमा के भीतर आर्य-भूमि थी (ऋग्वेद ६। ३३। ६; १०। ४७। २)। सप्तसिंधु-प्रदेश के उत्तर-पश्चिम, बाह्लीक, गांधार और वर्तमान अफ़ग़ानिस्तान और पश्चिम की वर्तमान आरकोसिया (Arachosia) आर्य-भूमि के अंतर्गत थी। ऋग्वेद में कुभा (आजकल की काबुल-नदी), क्रुमु (वर्तमान कुरम-नदी) और वजीरिस्तान के प्रांत भागों से प्रवाहित गोमती (आजकल की गोमल-नदी) आदि के उल्लेख मिलते हैं। इन नदियों के तट पर रहकर आर्य-ऋषि याग-यज्ञ किया करते थे। ऋग्वेद में बाह्लीक में प्रवाहित कुछ और नदियों के भी उल्लेख मिलते हैं, और उसमें पंचनद या सप्तसिंधु की तो सभी नदियों का ज़िक्र आया है। उत्तर के हिमालय तथा मूजवान (आधुनिक कैलास) का भी प्रसंग मिलता है।* मूजवान-पर्वत पर उत्तम सोमलता पैदा होती थी।

ऋग्वेद में कीकट आदि देशों के जो वर्णन आए हैं, ये अवश्य ही परवर्ती काल के हैं। कीकट मगध के दक्षिण के एक पर्वत का हिस्सा है। यह टापू-सा था। चारो ओर सब समुद्र था। कारुष, कोशल, पांचाल, वत्स, विदेह, अंग, बंग आदि के उल्लेख ऋग्वेद में नहीं मिलते। इससे जान पड़ता है कि ये सब देश उस समय जल-मग्न थे, और कीकट-पार्वत्य एक टापू-सा था। वहाँ के लोग दूध के साथ सोमलता का रस मिलाकर

* महाभारत में (१४। ८। १) मुंजवान् या मूजवान्-पर्वत के संबंध में लिखा है—

"गिरेर्हिमवतः पृष्ठे मुंजवान् नाम पर्वतः।
तप्यते तत्र भगवांस्तपो नित्यमुमापतिम्।"

यास्क के निरुक्त में भी है—"मौजवतो मूजवति जातो मुजवान् पर्वतो मुंजवान् मुंज।"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देवतों को अर्पित नहीं करते थे। गाएँ भी ज़्यादा दूध नहीं देती थीं।

पंजाब ही आर्यों का आदिम स्थान है। दृशद्वती का उल्लेख ऋग्वेद में सिर्फ़ दो बार आया है। गंगा और यमुना का उल्लेख है ही नहीं। कारण, ये नदियाँ हिमालय से चलकर नीचे समुद्र में मिल जाती थीं। आकार की छोटी थीं, इसलिये उल्लेख नहीं हुआ। फिर ज्यों-ज्यों समुद्र हटता गया, ये अपना पथ निकालकर समुद्र की तरफ़ बढ़ती गईं, और इनके तटों की भूमि को वास के योग्य देख, यज्ञादि द्वारा स्थानों की शुद्धि कर आर्य लोग पंजाब से पूर्व को बढ़ते आए।

× × ×

२. समय का फेर

कुछ समय पहले की बात है—कोई २० साल का वक़्त गुज़रा होगा। इटली का वर्तमान विधाता मुसोलिनी, ग़रीबी हालत में, अपने दुःख के दिन पार करता था। यह जेनेवा में एक पुल के नीचे पड़ा रहता था। दिन में पत्थर फोड़ता, रात को कभी-कभी अवैतनिक स्कूल में पढ़ने के लिये जाया करता। भिक्षुक था। एक निरा भिक्षुक, पर आँखों में आग थी। आप ही अपने भाग्य पर आक्रमण करता था। स्वभाव में बड़ा गर्व, आँखों से कोई भविष्य-वाणी कर रहा था।

एक दिन की बात है, मुसोलिनी—दरिद्र मुसोलिनी—कई दिन का भूखा था। चेहरे पर राक्षस का पूरा आधिपत्य था। एक गृहस्थ मकान के सामने टेबल पर खाने की तश्तरियाँ रक्खे हुए अपने छोटे-छोटे बच्चों से घिरा बैठा था। भिक्षुक मुसोलिनी वैसा ही चेहरा लिए सामने जाकर खड़ा हो गया। लड़के चौंककर डर गए। गृहस्थ को दया आ गई। एक रोटी उसने भिक्षुक को दे दी। होंठ चबाकर भिक्षुक ने रोटी का टुकड़ा ले लिया, और चला गया। रोएँ-रोएँ से विद्रोह की शिखाएँ निकल रही थीं। वह भी मनुष्य है, पर आज दया के दान से वह पेट भर रहा है। निवाला मुँह से बाहर निकल आने लगा। भूखे भिक्षुक के चेहरे पर दंभ फूट पड़ा। दो घंटे तक रोटी का टुकड़ा हाथ में लिए खड़ा रहा। आँखों की आग से आकाश को जैसे जला देना चाहता था। भौंहें सिकोड़कर उसने रोटी के टुकड़े को देखा, और ज़मीन पर फेंक दिया। वह आग आकाश के देवतों की देह में लगी। वे सब जलने लगे। भय से उन्होंने भिक्षुक को वरदान दिया। वह राजा हो गया। जेनेवा का भिक्षुक इटली का मुसोलिनी बना।

आज सभ्य संसार आँखें फाड़कर उसे देख रहा है। योरप की राजनीति आज आश्चर्य की दृष्टि से एक बार मुसोलिनी को देखती है, और एक बार सोविएट रशिया को। मुसोलिनी की महाशक्ति ने फ़ैसिस्ट-दल का उसे नायक कर दिया। इसी से वह इटली का विधाता बन गया। इस दल के विरोधी भी हैं, जिनके कारण कई बार मुसोलिनी की जान ख़तरे में पड़ी। फैसिसिम के संबंध में अनेक प्रकार की उक्तियाँ हैं, पर मुसोलिनी के व्यक्तित्व पर सबकी आँखों में तअज्जुब।

मुसोलिनी दो हैं, एक ही में; एक आदर्शवादी, दूसरा राजनीतिक। दोनो इस प्रकार मिले हुए हैं कि पहचानना मुश्किल है। दोनो को एक दूसरे से कोई अलग नहीं कर सकता।

सिनेमा का अभिनेता वालेनटिनो मरा। वह इटली में पैदा हुआ था। उसकी लाश देखने के लिये अमेरिकन आपस में लड़ मरे थे, इतनी भीड़ हुई थी। उसके लिये इटली से, मुसोलिनी के पास से, भेजा गया उपहार—फूलों की माला। लोग चकित हो गए। किसी ने कहा, राजनीतिक चाल है। किसी ने कहा, मुसोलिनी आदर्श तथा उच्च कला का पुजारी है।

मुसोलिनी ने कवींद्र रवींद्रनाथ को बुलाया, बड़ी इज़्ज़त की। स्पेशल ट्रेन दी। कला, प्रतिभा और व्यक्तित्व की इज़्ज़त की। रवींद्रनाथ पहले से व्यक्तित्व के पक्षपाती थे। उन्होंने मुसोलिनी के विकास की तारीफ़ की। लोगों ने कहा, "ख़ुशामद की, यह कैसा विश्व-प्रेम?" समझदारों ने कहा, "यह व्यक्तित्व को महत्व दिया।"

× × ×

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

३. व्याख्यान का नतीजा

१९२९ ई० की ७वीं नवंबर को, बनारस-स्टार-कैंप में, श्रीमती ऐनीबेसंट के प्रचारित नए मसीहा श्री-कृष्णमूर्तिजी का भाषण हुआ था, जो "नव ज्योति" की गत मई की संख्या में निकला है। जब ज़र्रे-ज़र्रे में कवियों को ख़ुदा देख पड़ता है, दार्शनिकों को ईश्वरीय सत्ता के सिवा दूसरी सत्ता देख ही नहीं पड़ती—"सर्वं खल्विदं ब्रह्म" है, तब व्यक्ति-विशेष में किसी को या किसी संप्रदाय को ईश्वरी शक्ति का विकास देख पड़ना कोई आश्चर्य की बात नहीं। इसके मूल में यदि कोई अपर उद्देश्य हो, जिधर युक्ति और तर्क स्वभावतः प्रेरित कर देते हैं, तो उसके लिये भी विशेष चिंता की बात नहीं, जब कि राह भूलना राह चलते हुए मनुष्यों के स्वभाव में दाख़िल है, और खोजकर फिर राह पर आ जाना भी उनका स्वभाव।

इस व्याख्यान में श्रीकृष्णमूर्तिजी श्रीगणेश में ही कहते हैं—"संसार में कोई नई बात नहीं। प्रत्येक वस्तु पर विचार हुआ है, विचार को हर प्रकार से समझाया जा चुका है, और प्रत्येक दृष्टिकोण दिखलाया जा चुका है। जो पूर्वकाल में कहा गया है, वही भविष्य में भी सदैव कहा जायगा, इसलिये साधारण दृष्टि-कोण से कोई बात नई नहीं हो सकती। आप केवल उसी बात को दूसरे शब्दों में कह सकते हैं। परंतु उस मनुष्य के लिये, जो किसी चीज़ को, किसी विचार को स्वयं परीक्षा करना चाहता है, प्रत्येक वस्तु नई हो जाती है।"

क्यों नई हो जाती है, किस तरह नई हो जाती है, यह आपने नहीं बतलाया। क्या लाल वस्तु पीली दिखने लगती है या हरी सफ़ेद? या "उसे मारो" का अर्थ "मुझे मारो" प्रतीत होने लगता है? जितने शब्द आपने अपने व्याख्यान में प्रयुक्त किए हैं, उनमें कोई भी आपका गढ़ा हुआ न होगा, और अवश्य नहीं; फिर उनके संगठन से तैयार हुआ एक अर्थ ही आपका कैसे होगा? और जो आपने कहा, "यदि किसी को सब धार्मिक पुस्तकों, विचार के आविर्भावों और शब्दों के मायाजाल से परे जाने की इच्छा है, तो उसके लिये प्रत्येक वस्तु नवीन, स्पष्ट और सारगर्भित हो जाती है।" अर्थात् अभी जो हम वसंत-काल में पत्तों और फूलों की शोभा देखते हैं, इनका रंग तब और गहरा या हलका दिखने लगेगा? और वही नवीन तथा स्पष्ट होगा, ऐसा? अथवा, आँखों में अभी जो प्रकाश है, उसकी जगह पावरवाले चश्मे की तरह दूसरी शक्ति भर जायगी, जिससे वस्तु की सच्ची सत्ता दिखने लगेगी—ऐसा? और सारगर्भित, किस तरह सारगर्भित? अभी आम के जिस स्वाद का ज्ञान है, तब दूसरा ही स्वाद मिलेगा और तभी आम सारगर्भित मालूम होगा—ऐसा? आपने कुछ समझाया नहीं। छायावादी या रहस्यवादी तरीक़े से कहते ही चले गए हैं।

पहले आपने कहा, नया नहीं, अब कहते हैं—

"जीवन के पूर्ण महत्त्व को समझने के लिये आप परंपरा से चली आई विचार-शैली या पुराने ख़यालों को दिमाग़ में रखकर उस महत्त्व के पास नहीं पहुँच सकते (हम कहेंगे, पहुँच सकते हैं, पहुँचे हैं, पहुँचते हैं, और पहुँचेंगे—सं०), चाहे आप पुराने साहित्य में कितने ही निपुण क्यों न हों, और चाहे उन मीठे-मीठे सिद्धांतों को भले ही क्यों न जानते हों, जिनका मूल्य कुछ नहीं है।" और यदि कोई नया कवि हो, ख़ूब नई-नई बातें बनाना जानता हो, किताबें पढ़कर उनकी पंक्तियों का यहाँ-वहाँ प्रयोग करता हो, सर के चारो ओर उँगली फेर-फेरकर नाक दिखाता हो तो?

एक बात और बड़े मज़े की है। जहाँ प्रत्येक मनुष्य में ब्रह्म है, चेतन सत्ता है, स्वतंत्रता के बीज हैं, और प्रोत्साहन से उसके वे गुण विकसित होने लगते हैं, जैसा कि कहा जाता है—"डाँके दून, प्रचारे चौगुन", वहाँ आप सबको मिट्टी का पुतला समझकर उपदेश देते हैं, यानी डूबते हुए पर और बोझ बनकर गिरते हैं, जड़त्व-गुणाश्रय मनुष्यों पर अपनी तरफ़ से भी जड़ प्रहार करते हैं। आपने अपनी स्वतंत्रता की जैसी आवाज़ लगाई है, वह वास्तव में भ्रमात्मक नहीं, इसका आपके पास क्या प्रमाण है? और, स्वयं भ्रमित होकर दूसरों को आप भटका रहे हैं, इसके विरोध में ही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आपके पास कौन-सी युक्ति है ? आपने जो कुछ कहा है, उसका जब अधिकांश ही हमें पुराना, विशृंखल रूप से रक्खा हुआ दिखलाई दे रहा है, तब एक बहुत बड़ी नवीनता आपको मिल गई, हमें इस पर कैसे विश्वास हो ?

× × ×

४. व्यापक साहित्य

विचार के लिये साहित्य के अनेक रूप हैं। पर इस समय देश की नवीन वाणी जिस रूप को ग्राह्य करना चाहती है, वह अपनी व्याप्ति में एक ही महत् विश्व-रूप है, देश और काल से निरवच्छिन्न। भारतवर्ष की व्यापक साहित्यिकता, जहाँ अंकुश कोई नहीं, केवल चंद्र की तरह उज्ज्वल भाव-राशि की पीयूष-वृष्टि है—एक दूसरे के हृदय के स्नेह का स्रोत, शब्दों का श्रवण-सुखद कलरव अधिकांश मनुष्यों को अभिप्रेत नहीं। उनके विचार से यह पराधीन देश के लिये धोखा है। जहाँ पराधीनता का बदला, दूसरों को पराधीन कर, ज्ञात या अज्ञात भाव से, लिया जाता है, वहाँ पराधीन करने-वाले घातक बीज सूक्ष्म रूप से मौजूद रहते हैं। यह उच्च सभ्यता के अनुकूल नहीं। "देश को स्वतंत्र कर लें, फिर विश्व-मैत्री पर सोचा जायगा ; अभी देश ही स्वतंत्र नहीं हुआ, विश्व-बंधुत्व की आवाज़ उठाने लगे; देश की सेवा ज़रा मुश्किल है न, विश्व-मैत्री से क्या बिगड़ता है", आदि-आदि आक्षेप ज़हर से ख़ाली नहीं ; इन भावनाओं के रहते देश-सेवा भी विधि-पूर्वक नहीं हो पाती। कारण, इस ज़हर का प्रभाव देश के लिये घातक होगा।

पर निरंकुश साहित्यिक और साहित्य, देश, समाज, स्वधर्म, परधर्म तथा विश्व के लिये समान रूप से उप-योगी है। यहाँ जिस तरह "उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्" था, वैसे ही, योरप में भी, कास्मोपलिटन हुए। पर देश-सेवकों की संख्या अधिक होने के कारण स्वार्थ का बोलबाला ज़्यादा रहा। विश्ववाद के कुछ चुने हुए लोग केवल अपने व्यक्तित्व का प्रकाश दिखा-कर बुझ गए। साधारण लोग उनके चरण-चिह्नों तक भी नहीं पहुँच सके।

संसार की अशांति अनेक प्रकार से वदन-व्यादान करती, बढ़ती, फैलती हुई इस बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण को पूरा कर चुकी। पर समाज की भावना अब भी हज़ार शताब्दी पीछे है।

हमारे देश में एकमात्र त्याग के द्वारा अमृतत्व प्राप्त करने की शिक्षा आदि कवि के मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र के चरित्र से लेकर आधुनिक "बादशाह राम" (स्वामी रामतीर्थ) के जीवन तक परिमित देख पड़ती है। महात्मा गांधी इसी त्याग के शिखर पर खड़े हुए संसार के सर्वश्रेष्ठ मनुष्य हैं। संत-साहित्य भारतवर्ष में इसीलिये अपराजित है। वह विश्व-मैत्री का सच्चा सिद्धांत है।

पर इससे गृहस्थों को क्या ? गृहस्थों का धर्म त्या-गियों के धर्म से बिलकुल पृथक् है। यदि त्यागी ज्ञान के द्वारा समस्त संसार को एक ही दृष्टि से प्रत्यक्ष कर सकते हैं, तो गृहस्थ सहानुभूति, हमदर्दी, ममता तथा अपनाव के द्वारा। गृहस्थ और त्यागियों के आश्रम अलग-अलग हैं, पर ज्ञान पर दोनों का समान अधि-कार है।

यह समान अधिकार नहीं रहा। त्यागियों की गृहस्थों पर विजय हुई। कारण, गृहस्थों के हृदय के कमल में कामना के कीट पैदा हो गए। प्रार्थी बनकर उन्होंने त्यागियों के मुक़ाबले में सर झुका दिया। परलोक-रहस्य का भी गृहस्थों पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा, जैसे हर स्वाभाविक गृहस्थ-दर्शक-नट पर सिनेमा के नटों का प्रभाव पड़ गया हो। वे परलोक के छाया-चित्रों पर विश्वास करने लगे।

इस तरह संत-साहित्य का गृहस्थों पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। पर मौखरिये की रागिनी से मुग्ध सर्प को ज़रा देर के श्रवण-सुख के परचात् चिरकाल की स्वतंत्रता खो देनी पड़ी। उसकी टोकरी में रहकर उसके इच्छानुसार सर्प को नाचते रहना पड़ा। यह पराधीनता अब संसार के सभी उत्कृष्ट देशों को खलती जा रही है। इस धार्मिक पाश से छुटकारे की आवाज़ बलंद हो रही है। ईसाई गिर्जे से नफ़रत करने लगे, मुसलमानों ने मसजिदें ढहा दीं, चीनियों ने चोटियाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काट डालीं। पर हमारे देश में शिखा (चोटी) का झंडा उसी तरह फहरा रहा है। इस झंडे के नीचे जितनी बुराइयाँ हुईं, सब उसी तरह जी रही हैं।

अस्तु, संत-साहित्य की श्रेष्ठता पर आक्षेप नहीं, आक्षेप है गृहस्थों के धर्म पर। यदि ज्ञान-रहित कर्मों की क़वायद ही गृहस्थों के हक़ में है, तो इससे उन्हें कोई फ़ायदा नहीं पहुँच सकता। और, यह जानी हुई बात है कि "भरत" के नाम के जप से किसी का भरण-पोषण नहीं हो सकता, इसके लिये काम करना चाहिए। उसी तरह केवल आग में घी जलाकर वायु-शोधन करते रहना मूर्खता ही है; कारण, पहले के इतना अब यहाँ दूध-घी नहीं होता। जहाँ आदमियों को घी-दूध न मिलता हो, वहाँ वायु-शुद्धि से रक्त-शुद्धि अवश्य ही अधिक महत्व रखती है, और जब कि बगीचा लगा लेने से, धूप आदि के जलाने से भी वायु-शुद्धि हो सकती है।

ख़ैर, जिस साहित्य की ज़रूरत पर हम लिख रहे हैं, वह नियमों के पुनर्वर्तन की तरह मस्तिष्क को ख़ाली कर, शरीर पर अधिकार करनेवाला कुछ नहीं। वह मस्तिष्क की उपज है। मस्तिष्क ही उसका स्थान है, और वही मस्तिष्क, जिसे किसी भी प्रकार की शृंखला ने जकड़ नहीं रक्खा।

साहित्य का मार्जन, शालीनता, स्नेह, भावना उसकी उच्चता के प्रमाण हैं। मस्तिष्क में जितनी रोशनी रहेगी, वह उतना स्वच्छ रहेगा, और जितने विचार-रहित कर्म रहेंगे, उतना ही बोझीला। नवीन साहित्य का उद्देश्य केवल प्रकाश है, जो अनेक रेखाओं से अनेक कार्यों पर पड़ता हो, और प्रत्येक जीवनोपाय को सरल तथा सुगम करता हो। इससे भी उच्च रहकर वह संसार के लोगों को एक ही पदार्थ तथा ज्ञान के सूत्र से बाँध सकता है, और संतों के जितने परित्यक्त विषय रहे हैं, उनमें भी सत्य तथा शिव को प्रत्यक्ष कर उनका चित्र अंकित कर सकता है। इस तरह गृहस्थ को अपने ही पैरों खड़े होने की ज़मीन मिलती है, और साहित्य की श्रेष्ठ आकांक्षा की पूर्ति। उपाध्यायजी ने जैसा लिखा है—

"जो उदारता-सुधा परम रुचि से पी लेगी,
वह क्यों प्रतिद्वंदिता-सुरा-प्रेमिका बनेगी?"

इस आर्य-नारी की तरह हमारा साहित्यिक ध्येय जब बृहत् होगा, सार्वभौमिक होगा, तब हम आप ही क़तरे में दरिया प्रत्यक्ष करेंगे।

देश की जिस स्थिति के सुधार के लिये आवाज़ उठ रही है, उसमें हम यदि कहें, इसका कारण विशाल साहित्य का अभाव है, जिससे पारस्परिक मैत्री दृढ़ नहीं है, तो कदाचित् और स्पष्ट होगा, और उस साहित्य की व्यापकता में देश भी आ जायगा, जब कि देश संसार से कोई पृथक् अस्तित्व नहीं रखता। साथ ही हमें स्मरण रखना चाहिए, विशालता कभी क्षुद्रता से धोखा नहीं खा सकती।

× × ×

५. मार्जन और स्वतंत्रता

विद्या ज्ञान है। ज्ञान का प्रकाश मार्जन। इससे मन और बुद्धि प्रखर होती है, चमकती है, जैसे अस्त्र शान पर। हमारी पराधीनता का कारण अविद्या है, जिसके अंधकार में हम दिग्भ्रांत पथिक की तरह लक्ष्य-शून्य चलते ही जा रहे हैं। मार्जन अथवा प्रकाश पथ का निर्णायक है। उससे उद्देश्य और विधेय का ज्ञान होता है; मनुष्य केवल यंत्र नहीं रह जाता, उसे अपने कर्तृत्व का बोध होता है।

प्रकाश के आने पर मनुष्य अपनी राह आप खोज लेता है। तमाम मनुष्यों को एक ही मार्ग से चलने की आवश्यकता नहीं पड़ती। सब मनुष्यों को एक मार्ग से ले चलना उन्हें बुद्धि से तिरस्कृत करना, यंत्र कर देना है। और, जब तक विद्या का प्रकाश नहीं फैलता, मनुष्य आप ही अपने पथ का निर्देश नहीं कर सकता। सूर्य एक है, पर पादप सहस्र-सहस्र। इसी तरह ज्ञान एक है, पर जीवनोपाय अनेक। वे अनेक जीवनोपाय उस प्रकाश के बिना नहीं सूझ सकते। प्रकाश में, जितनी गुत्थियाँ हैं, सुलझ जाती हैं।

संगठन भी ज्ञान-मूलक ही दृढ़ हुआ करता है। तोते को रटाइए; बाबा, काका, दादा कहेगा। पर उसे इन शब्दों के अर्थ नहीं मालूम, इसलिये इस शब्द-जन्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संगठन का सूत्र उसके पास नहीं। उसके बाबा, काका, दादा शब्दों को सुनकर प्रसन्न होनेवाले भी सद्भानुभूति के मोह में हैं।

चीनवालों ने अफ़ीम छोड़ दी, उन्हें अपनी कमज़ोरी का पता चला। इटली ने अपने चारो ओर की अवस्था देखी। चौदह सौ वर्ष के बाद स्वाधीन हो गया। आज वह योरप के आश्चर्य का केंद्र है। इसकी जड़ में है मार्जन और व्यक्तिगत विकास का महत्त्व।

किसी भी देश को एक ही प्रकार की उन्नति अभीप्सित नहीं। एक ही प्रकार की उन्नति यथार्थ उन्नति है भी नहीं। उन्नति वही, जो सब तरफ़ से हो। सार्वभौमिक उन्नयन व्यक्तित्व के विकास से होता है, जब हर मनुष्य अपने ही प्रिय मार्ग से चलकर विकास प्राप्त करे। मनुष्य में ऐसी इच्छा-शक्ति विद्या-जन्य मार्जन के द्वारा ही आ सकती है, अन्यथा बुद्धि विकसित नहीं हो सकती।

इँगलैंड की शक्ति अपराजित है, जिसका कारण, वहाँ के मनुष्य हर मार्ग से बहुत दूर तक पहुँचे हुए हैं, हर रास्ते का हाल बतला सकते हैं, और देश पर संकट पड़ने पर सब लोग एक ही व्यूह में संबद्ध हो जाते हैं। फल यह होता है कि जितने प्रकार से उन लोगों ने तरक़्क़ी करके स्वतंत्रता को क़ायम रक्खा है, वे सब प्रकार उनके संगठित युद्ध में अमोघ अस्त्रों की तरह काम देते हैं। केवल भेड़धसान से मनुष्य-समूह के लिये हारने की ही अधिक संभावना रहती है। कारण, अमार्जित मनुष्य परमुखापेक्षी हुआ करता है। वह हर वक़्त अपने चलने के लिये दूसरे के इंगित की अपेक्षा में रहता है, अतः वह सदा ही पराधीन है।

मार्जन प्रभावित करनेवाला है, प्रभावित होनेवाला नहीं। प्रत्येक विभाग के उच्चतम मनुष्यों ने ही संसार के अपर मनुष्यों को प्रभावित कर रक्खा है। ऐसे मनुष्य भारतवर्ष में भी हैं। पर समष्टि ऐसी नहीं, इसीलिये ज्ञान-जन्य वृहत् संगठन नहीं हो पाता। ज्ञान और मार्जन ही स्वतंत्रता के आधार हैं।

× × ×

लेनिन और महात्मा गांधी

कर्मवीरों के जीवन-चरित के अधिकांश अध्याय मिलते-जुलते रहते हैं। बोल्शेविक-आंदोलन के प्रवर्तक लेनिन तथा असहयोग और सविनय-अवज्ञा के कर्णधार महात्मा गांधी के उपाय और-और होने पर भी जीवन-घटनाओं में कहीं-कहीं साम्य मिलता है। जन-नायक जिस सूक्ष्म-दृष्टि के अधिकारी हुआ करते हैं, वह दोनों में पर्याप्त मात्रा में मिलती है, जिस तपस्या तथा कर्मयोग का आश्रय लेते हैं, वह दोनो में परिस्फुट है। फ़र्क़ इतना ही है कि लेनिन रशिया के भाग्य के निर्णायक थे, और महात्मा गांधी भारतवर्ष के। लेनिन ने रशिया के जन-समूह के मन के अनुकूल आविष्कार किया विप्लव; महात्मा गांधी ने भारतीयों के मनोनुकूल असहयोग, सविनय-अवज्ञा, अहिंसा-संग्राम। लेनिन के हृदय में आग थी; गांधी के हृदय में शांति, सहृदयता, करुणा। लेनिन विप्लवी थे, गांधी महात्मा हैं।

योरप-भर में बोल्शेविज़्म की चर्चा हो रही थी, धनी लोग इसके ख़िलाफ़ थे। किसी ने लेनिन से इसका ज़िक्र किया, तो लेनिन कहते हैं—"वे लोग अपने देश के चारो ओर चीन की दीवार उठा दें। सब जगह, जल-स्थल-आकाश में, उनकी पुलिस है, वे जब चाहें, बोल्शेविकों को मार सकते हैं। विप्लव किसी दिन भी प्रचार पर नहीं टिका। यदि देश की अंतरात्मा विप्लव के अनुकूल न हुई हो, तो प्रचार द्वारा वह कभी भी संभव नहीं हो सकता। इस महायुद्ध से तमाम देशों में वह हवा फैल गई है। अगर रशिया आज अथाह समुद्र में डूब जाय, तो भी योरप में विप्लव के बीज अंकुरित होंगे। यदि किसी तरह रशिया बीस साल पानी में डुबा रक्खी जाय, तो क्या इँगलैंड के मज़दूरों की अशांति घट सकती है?"

महात्माजी के नायकत्व में साधारण जनों की तरफ़ से अहिंसाश्रित ऐसी ही ध्वनि उठती है। लोग भूखों मर रहे हैं, अनेक प्रकार के टैक्स देने की शक्ति उनमें नहीं; वे मूक हैं, वाणी नहीं; पंगु हैं, व्यवसाय नहीं। महात्माजी अपनी महत्ता के अनुकूल ही बड़े लाट साहब से उनके लिये प्रार्थना करते हैं। देश की आबोहवा, मानसिक प्रगति की परीक्षा कर वर्तमान पंथ अहिंसा-संग्राम निरूपित करते हैं। फल प्रत्यक्ष है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शायद महात्माजी के सिवा किसी भी दूसरे को आंदोलन के वर्तमान परिणाम तक की नहीं सूझी थी, शायद भारत-सरकार को भी नहीं।

राजनीतिक क्षेत्र में, लेनिन और ट्राट्स्की में, बहुत समय मत-विरोध हुआ करता था। पर लेनिन की भविष्य-वाणी प्रायः सच निकलती थी। बोल्शेविक विप्लव के पूर्व-मुहूर्त तक जेनोविव आदि नेता कहते रहे—"इस समय विप्लव होने पर हम हार जायँगे।" लेनिन ने कहा—"यही समय है।" वैसा ही हुआ। ज़ार के प्रताप की पताका का दंड टूट गया। प्रसिद्ध ब्रेस्ट-लेवस्क् शर्त पर, विजय के गर्व से, ट्राट्स्की जर्मनी के आगे सिर नहीं झुकाना चाहता था, लेनिन ने कहा—"इस शर्त को मंज़ूर नहीं करोगे, तो इससे छोटी शर्त मंज़ूर करनी होगी।" ऐसा ही हुआ।

लाहौर-कांग्रेस में सभापति बनने के लिये मालवीयजी आदि नेताओं ने महात्माजी को बहुत समझाया। पर उन्होंने सभापतित्व स्वीकार नहीं किया। इसका कारण जहाँ तक हमारी समझ में आता है, महात्माजी की प्रखर राजनीतिक दृष्टि ही है। पं० जवाहरलालजी का युवकों पर अद्भुत प्रभाव है। इससे दो-तीन साल पहले का उनका कार्य-क्रम भी देश के लिये महत्त्व-पूर्ण रहा। महात्माजी ने उन्हें सभापति चुनने के लिये कहकर देश की जन-शक्ति का साथ दिया, उसे समझा। आज युवकों तथा महिलाओं का जितना ज़ोर है, इसके मूल में महात्मा-प्रोत्थित जवाहरलाल ही हैं। महात्माजी आड़ में हैं, जवाहरलालजी सामने; महात्माजी जेल के लिये पहले तैयार हैं, जवाहरलालजी नायकत्व कर रहे हैं; सब तरह महात्माजी निर्देशक हैं, और जवाहरलालजी फिर भी सामने। और, आंदोलन का रुख़ इसकी सफलता का परिचय दे रहा है।

लेनिन की लोक-प्रियता, जो उसे पीछे से मिली थी, महात्माजी को पहले मिली। यह महात्माजी की तपस्या तथा महत्ता का परिणाम है। ज़ारशाही का नाश कर हर प्रदेश से लेनिन ने कृषकों को बुलाया। इस सभा में, एक वृद्ध कृषक ने उठकर आनंद से काँपते हुए लेनिन से कहा—"तमाम रास्ता झंडा उड़ाते और गाते गाते हुए कितने आनंद से हम यहाँ आए कि तुमसे क्या कहें। हम लोगों ने ज़मीन पर पैर नहीं रक्खे। अँधेरे में, गाँव के एक कोने में, हम पड़े थे, तुमने हमें प्रकाश दिया। अभी उस दिन तक इस प्रासाद के किनारे से डरते हुए दूर रहते थे। आज उसके भीतर बैठे हैं! उस दिन ज़ार की बातें कहा ही करते थे, आज नए ज़ार लेनिन का हाथ छू रहे हैं। ज़ार लेनिन की जय!"

महात्माजी की लोक-प्रियता प्रसिद्ध है। बापू को भूखा भारत कितना चाहता है, इसके प्रमाणों की आवश्यकता नहीं। महात्माजी भी वर्तमान शासन की क्रूरता, नृशंसता का अंत कर देना चाहते हैं। यही उन्होंने बार-बार कहा है, लिखा है, और प्रचार किया है। ये बातें देश के हृदय में कितनी गहराई तक पहुँची हुई हैं, देश-व्यापी आंदोलन इसका प्रमाण है।

रशिया के विधाता लेनिन ने, रशिया के भूखे किसानों की तरह, दोनो वक्त जली रोटियाँ खाकर, साल-पर-साल बिता दिए हैं। इनकी रोटियाँ भी गिनी हुई होती थीं। इन्हें टुकड़े-टुकड़े कर ड्रायर में रख देते थे, और काम से फ़ुर्सत मिलने पर एक-एक टुकड़ा खा लिया करते थे। इनकी स्त्री इनमें और टुकड़े मिला देती थीं। महात्माजी के जीवन की सादगी, विवस्त्र भारत में लँगोटी लगाकर रहना, इसी सत्य की समता कर रहा है, और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती 'बा' की सेवा का कहना ही क्या! 'प्रवासी' में विद्यावयोवृद्ध रामानंद बाबू उनके संबंध में लिखते हैं—"उनका पातिव्रत्य अनतिक्रांत है, और अनेक विषयों में महात्माजी से भी वह श्रेष्ठ हैं।"

लेनिन को कितनी ही बार विपत्ति में फँसना पड़ा। एक बार साधारण-जन लेनिन के ख़िलाफ़ पागल हो गए। लेनिन का ऑफ़िस घेर लिया। सब सशस्त्र थे। लेनिन के पहरेवालों ने ख़बर दी, और गोली चलाने की आज्ञा माँगी। लेनिन ने स्थिर होकर कहा, इसकी कोई ज़रूरत नहीं, तुम उनके नेताओं को बुलाओ। नेता लोग सशस्त्र, लेनिन के सामने आकर, खड़े हो गए। लेनिन को हँसी आ गई। उन्होंने कहा, "कामरेड (मित्र),

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखा तुमने, मैं भागा नहीं। तुममें से बहुतों के पैदा होने के पहले से मैं विप्लव के लिये काम कर रहा हूँ। तुममें से बहुतेरे मर जायँगे, तब भी मैं काम करता रहूँगा। तुम अगर यह समझते हो कि मेरे द्वारा विप्लव को हानि पहुँच रही है, तो मुझे मार सकते हो। पर मुझसे जानने लायक़ बहुत-सी बातें हैं।" लोग सुनने लगे, मंत्र-मुग्ध हो गए, वह ओज और मुद्राएँ देखकर। फिर पिस्तौल जेब में भर ली, और लेनिन की जय बोलते, सीटी बजाते हुए बाहर निकल गए।

महात्मा गांधी के जीवन में निरस्त्र भारतवर्ष में रहने के कारण ऐसी घटना नहीं हुई, पर इससे मिलती-जुलती घटनाएँ हुई हैं। जिस मृत्यु का भय लेनिन को नहीं था, वह महात्माजी को भी नहीं है। सब के गिरफ़्तार होते समय महात्माजी ज़रा भी विचलित नहीं हुए। वे कभी भी सुरक्षित नहीं रहते। निरस्त्र का साहस कदाचित् सशस्त्र के साहस से बढ़कर है।

लेनिन और महात्माजी की हँसी भी विचित्र है, और दोनों के रहन-सहन भी एक ही-से हैं। लेनिन को भी बिना बतलाए, उस सादगी के कारण, कोई पहचान नहीं सकता था, यही हाल महात्माजी का है। लेनिन में अहंकार का लेश नहीं था, महात्माजी तो सादगी की प्रतिमा हैं। लेनिन बड़े ज़ोर से हँसते थे। पहले वह हँसी बहुत साधारण, मित्र की हँसी जान पड़ती थी। पर पीछे मालूम होता था कि उस हँसी में कितने गूढ़ अर्थ छिपे हुए हैं। महात्माजी का एक फ़ोटो ही हँसता हुआ है, उस समय का, जब वे असहयोग-आंदोलन में गिरफ़्तार हुए थे। इनकी हँसी में सरल मृदुता है, जिसमें किसी प्रकार के शासन तथा नियंत्रण की परवा नहीं, किसी तरह की भी कठोरता जिसे झुका नहीं सकती। लेनिन प्रति दिन १८-२० घंटे काम करते थे। १८ घंटे महात्माजी भी काम करते हैं, पर लेनिन से इनका शरीर दुर्बल है। लेनिन महान् विप्लवी थे, महात्माजी महान् सुधारक हैं।

× × ×

७. ग़ैरक़ानूनी संस्था

भारत-सरकार ने इधर जो आर्डिनेंस निकाले थे, जिनमें पिकेटिंग, सरकारी कर्मचारियों के बहिष्कार आदि की रँगीली दफ़ाएँ क़ायम की गई थीं, और शासन को धक्का पहुँचानेवाले आंदोलन का मुक़ाबला किया गया था, उनके जवाब में कांग्रेस-वर्किंग-कमेटी ने इन आर्डिनेंसों का मुक़ाबला करने की घोषणा की थी, जिससे सरकार को काफ़ी ख़तरा मालूम हुआ, और इस प्रकार क़ानून का उल्लंघन करने की घोषणा करनेवाली कमेटी यानी कांग्रेस की वर्किंग-कमेटी को सरकार ने ग़ैरक़ानूनी संस्था क़रार दे दिया।

× × ×

८. ढाके का हिंदू-मुसलमान-दंगा

ढाका पूर्व-बंगाल का मुख्य शहर है, जैसे पश्चिम-बंगाल का कलकत्ता। यों कलकत्ते से ढाके की तुलना नहीं हो सकती। कारण, कलकत्ता भारतवर्ष का सबसे बड़ा शहर है। १९२१ ई० की मर्दुम-शुमारी के अनुसार ढाके की जन-संख्या १,१८,४७० है। हिंदू हैं ६६, १४५ और मुसलमान ४६, ३२५।

इधर बंगाल के संवाद-पत्रों में, एक महीने से ऊपर हुआ, हिंदू-मुस्लिम-दंगे की बराबर ख़बरें छपती रहीं। ज़्यादातर नुक़सान हिंदुओं का हुआ है। मुसलमानों का भी हुआ है, पर कम। इस दंगे के मुख्य कारण का पता अब तक नहीं लगा। 'माडर्न रिव्यू' के संपादक, विद्यावयोवृद्ध बाबू रामानंद चटर्जी महाशय के पास जो अनेक प्रकार के पत्र आदि शिक्षित लोगों ने इस दंगे के संबंध में भेजे हैं, उनका उचित आशय जाँच के पहले प्रकाशित करना आपने अनुचित समझा है। कहते हैं, एक मुसलमान की लाश का जुलूस निकाला गया था, जिस पर हिंदुओं ने ढेले फेंके, जिससे दंगे का रूप बढ़ गया। पर वह मुसलमान किसके हाथ से मरा था, यह कुछ समझ में नहीं आया। यदि हिंदुओं के हाथ से मरा, तो इस पूर्व लड़ाई का क्या कारण है, यह भी नहीं मालूम। यदि हिंदुओं के हाथ से मरा, तो इसके लिये भी ढाके के कुल हिंदू अपराधी नहीं थे, अपराधी या उस समूह की जाँच करके उसे ही क्यों नहीं दंड दिया गया, तमाम हिंदुओं पर इस तरह आक्रमण क्यों किया गया, कोई वजह नहीं। इतनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुलिस के रहते दंगे का इतना भयंकर रूप क्यों हुआ, पता नहीं। इतना ही पता है कि हिंदुओं को पुलिस की मदद से निराश हो जाना पड़ा।

कायथटोली का सुशीला-निवास, जिसके सामने डॉ० शम्सुद्दीन अहमद और बिलकुल नज़दीक डिप्टी-मजिस्ट्रेट मि० ग़यासुद्दीन सफ़दर रहते हैं, और जिसके मालिक हैं बरीसाल के पुलिस-सब-इंस्पेक्टर, जला डाला गया। दीवानबाज़ार का इंदुप्रभा कैबिनेट वर्क्स, जिसके २०० गज़ के अंदर ढाका-युनिवर्सिटी के मुसलमान रजिस्ट्रार, इस्लामिया इंटरमीडिएट-कॉलेज के मुसलमान प्रिंसिपल, दो मुसलमान मजिस्ट्रेट और एक मुसलमान सब-जज रहते हैं, नष्ट-भ्रष्ट कर डाला गया। कायथटोली का माधवानंद-धाम, जिसके मालिक श्रीयुत राधाकृष्ण गोस्वामी, सीनियर डिप्टी-मजिस्ट्रेट ढाका हैं, जला दिया गया। इस तरह हिंदुओं के अनेक मकान जला दिए गए हैं। मुसलमानों की भी क्षति हुई है, पर थोड़ी।

यद्यपि हिंदू वहाँ मुसलमानों से संख्या में ज़्यादा हैं, और लाठी-डंडेबाज़ी में भी उनसे कम मुस्तैद नहीं, तथापि उनमें एक दोष बहुत बड़ा है, वे संगठित नहीं, जिसका मुख्य कारण जातिगत ईर्ष्या है। मुसलमान संगठित हैं। ढाके में मुसलमानों का एक संगठन "बाईस पंचायत" के नाम से है। ढाके में २२ मुहल्ले हैं। हर मुहल्ले के प्रतिष्ठित मुसलमान सरदार हैं, जिनमें राजमिस्त्री, दरज़ी, भिश्ती, आढ़तिये, चमड़ेवाले और क़साई आदि भी हैं। ये लोग ढाके के नवाब के मातहत हैं, और मुहल्ले के मुसलमान इनकी हुक्म-तामीली के लिये मजबूर हैं, न माननेवाले का हुक्क़ा-पानी बंद कर दिया जाता है। हिंदुओं में इस तरह का कोई संगठन नहीं। इसके भीतरी और बाहरी, अंतर्जातीय और राजनीतिक अनेक कारण हैं।

यह भी सुना गया है कि बहुत-से हिंदू मुसलमानों को अर्थ देने के पश्चात् भागने या शहर में रह सकने में समर्थ हुए। यह भी पढ़ा कि अनेक मुसलमान इस दंगे के ख़िलाफ़ रहे, और कहीं-कहीं उन्होंने हिंदुओं की मदद भी की। हमें अत्यंत दुःख है कि हिंदू-मुसलमानों की अकारण छेड़छाड़ और मारपीट के भयंकर परिणाम अब भी देश को देखने पड़ते हैं। धार्मिक कट्टरता के कारण आपस में लड़कर ये लोग अपनी कितनी बड़ी हानि करते हैं, इसका अशिक्षा के कारण अब तक इन्हें ज्ञान नहीं हुआ।

हिंदू सब जगह भागे, ऐसी बात नहीं; बहुत जगह अपनी जान, माल और इज़्ज़त की रक्षा के लिये हमला करनेवालों का उन्होंने मुक़ाबला भी किया, और लुटेरों को परास्त कर भगा भी दिया, पर संगठित और असंगठित हमले का जैसा रूप और परिणाम हुआ करता है, ढाके में भी वही हुआ। हमारे विचार से जब तक हिंदू असंगठित हैं, और पारस्परिक जाति-गत विरोध उनके अंदर इसी प्रकार रहेगा, वे कभी किसी संगठित शक्ति से अपनी रक्षा नहीं कर सकते। ढाके में हिंदू सब प्रकार, अर्थ, शिक्षा, साहस, बल, बुद्धि आदि में मुसलमानों से आगे हैं। फिर भी वही पिटे, उन्हीं का ज़्यादा नुक़सान हुआ, इसका कारण उनका असंगठन ही है। यदि हिंदू संगठित होते और ढाके-भर के हिंदुओं की कोई एक पंचायत होती, तो वे आत्म-रक्षा तो करते ही, मुसलमानों को निर्भय-भ्रातृ-स्नेह से वे मना रखने में भी समर्थ रहते, डर का कोई कारण न होता और न उसके फल-स्वरूप यह मारपीट, दंगे और हंगामे होने की नौबत आती। इस दंगे में एक देवी श्रीमती अर्निंद्य-बाला नंदी ने आत्म-रक्षा के लिये गुंडों का सामना किया, और इस वीर-बालिका ने बड़ी ख़ूबी से अपनी रक्षा की। पीछे इनके सिर पर चोट आई।

ढाके के दंगे में हिंदुओं को ज़्यादा नुक़सान पहुँचा। वही अधिक संख्या में मरे, और उन्हीं की अधिक संपत्ति लुटी। मुसलमानों से हिंदुओं की क्षति हज़ारों हिस्से ज़्यादा हुई। अब यह तांडव शहर की सीमा को छोड़कर गाँवों में पहुँचा है। इससे और शंका होती है। व्यापक संगठन के सिवा इस दर्द की और कोई दवा नहीं।

× × ×

सम्राट् का संदेश

सम्राट् पंचम जार्ज ने इंडिया-हाउस का उद्घाटन करते हुए गत ८ जुलाई को एक वक्तृता दी, जिसमें आपने महारानी के साथ भारत आने का पिछला ज़िक्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किया, और कहा कि तब से आप भारत पर बराबर सहानुभूति रखते हैं, और तब से भारत में अनेक परिवर्तन हो जाने पर भी आपको यह जानकर प्रसन्नता है कि संसार में अपना यथोचित स्थान अधिकृत करने के लिये भारत साबित-क़दम है, और ऐसी स्थिति में, जब कि भारत को प्यार करनेवाला हर मनुष्य उसके चमकीले भविष्य की चाह रखता है, आपकी उसके साथ सहृदयता है। इधर जो दिल दहलानेवाली घटनाएँ हुई हैं, उन्हें आप बड़ी बेचैनी से देख रहे हैं। फिर भी आपको उस दिन की आशा है, जब ईश्वर की शक्ति से एक दूसरे को अच्छी तरह पहचान लेगा, और हर जाति और अलग-अलग उद्देश्य रखनेवाले मिलकर भारत की जनता में शांति-स्थापना की कोशिश करेंगे।

× × ×

१०. वस्त्र-समस्या

विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की धूम है। देश के युवक हज़ारों की संख्या में पिकेटिंग करते हुए जेल चले गए। इधर महिलाओं ने भी इस आंदोलन में भाग लिया है। अब तक भारत की महिलाओं में जागृति नहीं हुई थी। इस आंदोलन से वे अपने मकान की सीमा को पारकर देश-भर में फैल गई हैं। अनेक प्रकार की यातनाएँ, अपमान, लांछन बरदाश्त करती हैं, पर अपने उद्देश्य की ओर बढ़ती ही जा रही हैं। अभी बंबई में महिलाओं ने जुलूस निकाला, और ढाई लाख राष्ट्रीय झंडे बेचे। उनके प्रयत्न से तीन लाख के क़रीब बंबई के लोगों ने स्वदेशी कपड़े पहनने की प्रतिज्ञा की। अभी-अभी वर्तमान राष्ट्रपति पटेल ने बंबई के व्यापारियों की सभा में भाषण करते हुए कहा, १९२१ ई० में अगर आप लोग महात्माजी की पुकार के अनुसार काम करते, तो आज यह नौबत ही न आती। इस समय जो आंदोलन खड़ा हुआ है, इसे देखते हुए, आप लोगों को पीछे नहीं हटना चाहिए; कारण, इस आंदोलन को धक्का पहुँचा, तो आप लोगों को दोहरी हानि उठानी पड़ेगी। कांग्रेस की आज्ञा के अनुसार चलने से आपका दिवाला निकलता है, पर विदेशी वस्त्रों के विक्रय से देश चौपट हुआ जा रहा है। जब से आप लोगों ने व्यापार शुरू किया, अरबों रुपए विदेश भेज चुके, अब अपनी हानि का मुक़ाबला करके बतलाइए कि यह ठीक है या नहीं।

वस्त्रों के संबंध में पूज्या श्रीमती गांधी ने उत्तर भारत के दौरे में जो कहा था कि देवियाँ चर्खे चलाएँ, यह बड़े काम की बात है। गाँवों के लोग यदि इतना भी ध्यान दें कि अपने-अपने परिवार-भर के कपड़े का सूत अपने ही घरों में कात लिया करें, तो एक बहुत बड़ी समस्या हल हो जाय। अन्न और वस्त्रवाला सवाल जब तक गृहस्थ स्वयं हल नहीं कर लेता, उसे विपत्ति का सामना करना पड़ता है। हर ज़िले में एक-एक चर्खा-संघ स्थापित होना चाहिए, जिसकी अनेक शाखाएँ हों, और उस ज़िले के क़स्बों तथा बड़े-बड़े गाँवों से फूटी हुई, ज़िले के एक ही केंद्र से जुड़ी हुई हों। ज़िले-भर को वस्त्र देने का भार केंद्र रक्खे, और ख़र्च का हिसाब, ताकि अगले साल से कम-से-कम उतनी कपास खेती द्वारा वहाँ पैदा करा ली जाय, और यदि वहाँ कपास की खेती न होती हो, तो दूसरे केंद्र से उसकी पूर्ति कराई जाय। इस तरह व्यापक वस्त्र-व्यवसाय के साथ-साथ ग्राम-संगठन भी सुदृढ़ होगा, और भारत-वर्ष-भर का वस्त्र-व्यवसाय अपने अधिकार में रहेगा। इसके लिये कार्यकर्ताओं को बहुत शीघ्र ध्यान देना चाहिए। जैसा कि पहले नेताओं ने कहा है, हिंदोस्तान की मिलों से दो-तिहाई कपड़ा निकल आता है, फिर कोई कारण नहीं कि एक ही साल के उद्यम से एक-तिहाई खद्दर-वस्त्र तैयार न कर लिए जा सकें।

यदि वस्त्रों के निर्माण में ग़फ़लत होगी, इसी तरह बाहरी आडंबर में लोग पड़े रहेंगे, तो एक समय इसका अभाव बहुत ही बुरी तरह धक्का देगा। शहर और देहात के लोगों तथा व्यवसायियों को इधर जल्द ध्यान देना चाहिए।

× × ×

११. "नवजीवन"-प्रेस ज़ब्त

महात्माजी के "नवजीवन"-प्रेस को सरकार ने ज़ब्त कर लिया। इस छापेख़ाने की क़ीमत ४० हज़ार रुपए के लगभग है। इस प्रेस के लिये महात्माजी ने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सरदार वल्लभभाई पटेल, श्रीयमुनालाल बजाज, श्रीमहादेव देसाई आदि का एक सार्वजनिक ट्रस्ट कर दिया था। पहले इस प्रेस से ज़मानत माँगी गई थी। पर इसने ज़मानत नहीं दी, "यंग इंडिया" और "नव-जीवन" छापता रहा। इसी वजह सरकार ने प्रेस ज़ब्त कर लिया है।

× × ×

१२. महिलाओं के भाषण

इस आंदोलन में नेहरू-परिवार की महिलाएँ बहुत आगे हैं। अभी कानपुर में, श्रीहक़्क़ालकृष्ण कपूर के सभापतित्व में, राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी श्रीमती कमला नेहरू और बड़ी बहन श्रीमती रूपकुमारी पंडित ने बड़े सुंदर भाषण दिए। श्रीमती नेहरू ने कहा, देश के कार्यों को सँभालने के लिये विद्यार्थियों को स्कूल और कॉलेज छोड़ देना चाहिए, वे अधिक-से-अधिक संख्या में कांग्रेस के मेंबर बनें, माताओं और बहनों को भी इस कार्य में सहायता करनी चाहिए।

श्रीमती पंडित ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा, अब विद्यार्थियों के लिये वह समय नहीं रहा कि वे किताबों के पन्ने उलटें और बी० ए०, एम्० ए० की पदवियाँ प्राप्त करते रहें। हरएक भाई को चाहिए कि वह अपने घर की देवियों से इस आंदोलन में हाथ बटाने के लिये कहे। अब माताओं और बहनों के लिये पर्दे के अंदर रहने का समय नहीं रहा कि वे वहाँ बैठी हुई अपनी दूसरी बहनों की बेइज़्ज़ती देखती रहें। उन्हें अपने पतियों से पहले जेल जाना, डंडे और गोलियाँ खानी चाहिए। आपने विद्यार्थियों से कहा, सिर्फ़ एक साल के लिये सब छोड़कर आप लोग देश के काम में लग जायँ, तो ६ महीने के अंदर आज़ादी मिल जायगी, और एक साल में आप लोगों का कुछ बिगड़ भी नहीं सकता। यदि आप लोग तैयार न हुए, तो याद रखिएगा, आप ही लोगों की वजह देश का मुँह काला होगा। बहनें कहती हैं, मेरे बच्चे हैं, मुझ पर गृहस्थी का भार है; मैं कहती हूँ, मुझपर भी गृहस्थी का भार है, और आठ महीने की एक छोटी लड़की मेरी गोद में भी है, पर मैं जेल जाने के लिये तैयार हूँ। मेरे बूढ़े पिता और भाई जेल में हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ, मुझे पति से पहले जेल की सज़ा हो।

"वीर-भारत" का आशय है, श्रीमती सरस्वतीदेवी ने कहा, स्त्रियों को फ़ैशन छोड़ देना चाहिए, वे सादगी अख़्तियार करें। पेशावर की एक वीरांगना का ज़िक्र करते हुए आपने कहा, एक स्त्री का पति और बच्चा पेशावर-कांड में गोलियों का शिकार हुआ था; उस देवी ने उन्हें जाकर देखा, तो पति की पीठ पर छः गोलियाँ लगी थीं, और बच्चे के सीने पर १२। उसने उसी समय पति की लाश पर थूक दिया, और पुत्र की लाश को छाती से लगाकर कहने लगी, आज मैं पुत्रवती हुई। सब माताओं और बहनों को इस वीर बाला का अनुकरण करना चाहिए।

× × ×

१३. शेली और रवींद्रनाथ का दर्शन

भारतवर्ष और योरप में दर्शन के अनेक प्रकार हैं। दोनों जगहों के दर्शनकारों की इधर पचास साल से यथेष्ट आलोचनाएँ की जा चुकी हैं, अनेक प्रकार के साम्य और वैषम्य दिखलाए जा चुके हैं। पर भारतवर्ष के त्यागी तत्त्ववेत्ता विद्वान् संन्यासियों ने योरप के दर्शन को जटिल उधेड़बुन में पड़ा हुआ अपरिणामदर्शी बतलाया है।

भारत और योरप में दर्शन की जो परिभाषाएँ हैं, उनमें बड़ा अंतर है। भारत में दर्शन के मानी साक्षात्-कार है, सत्य को देखना, केवल विश्वास करना नहीं; पर योरप में ज्ञान की तलाश दर्शन कहलाती है। जहाँ ज्ञान की तलाश है, वहाँ साक्षात्कार नहीं, और जहाँ साक्षात्कार है, वहाँ तलाश नहीं; इस तरह भी दोनों में अंतर देख पड़ता है।

रवींद्रनाथ भारत में पैदा होने के कारण भारतीय दर्शन के विद्यार्थी पहले हैं, पश्चात् पश्चिमी दर्शन के ज्ञाता। रवींद्रनाथ अपने ब्रह्मसमाज के अनुसार उपनिषद्दर्शन के माननेवाले हैं। पर उन्होंने अपनी कविता में भारतीय उपनिषद्दर्शन और पश्चिमी कवियों के प्यार को मिलाकर काव्यमय अपना एक नया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही दर्शन तैयार किया है, जो रूप, रस, शब्द, गंध और स्पर्श से मिला हुआ कभी रूपमय है और कभी अरूप; कभी अनेक प्रकार की भंगिमाओं के भीतर से अभीष्ट देवता की पूजा करता है, कभी केवल शून्य "Endless blue" है—

"धूप आपनारे मिलाइते चाहे गंधे,
गंध से चाहे धूपेरे रहिते जुड़े।
सुर आपनारे धरा दिते चाहे छंदे,
छंद फिरिया छुटे जेते चाय सुरे।
भाव पेते चाय रूपेर माझारे अंग,
रूप पेते चाय भावेर माझारे छाड़ा।
असीम से चाहे सीमार निविड़ संग,
सीमा चाय होते असीमेर माझे हारा।
प्रलय-सृजने ना जानि ए कार युक्ति,
भाव होते रूपे अविराम जावा-आसा,
बंध फिरिछे खुंजिया आपन मुक्ति,
मुक्ति मागिछे बांधनेर माझे वासा।"

"धूप अपने को गंध में मिलाना चाहती है, गंध धूप के साथ मिल रहना। स्वर अपने को छंद में पकड़ाई देना चाहता है, छंद लौटकर स्वर में भग जाना। भाव रूप के भीतर स्वरूप-प्राप्ति चाहता है, रूप भाव के भीतर छूट। असीम सीमा का गहरा साथ चाहता है, सीमा असीम में खो जाना। प्रलय और सृष्टि में न जाने यह किसकी युक्ति है कि भाव से रूप में अविराम आना-जाना लगा हुआ है, बंधन अपनी मुक्ति खोजता फिरता है, और मुक्ति बंधन में वास-प्राप्ति चाहती है।"

यह अनुलोम-विलोम विचार है, जैसे यहाँ ब्रह्म से रूप और रूप से ब्रह्म तक उतरा-चढ़ा गया है। रामायण इसका प्रामाणिक ग्रंथ है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने सच्चिदानंद ब्रह्म को ही राम के रूप में अवतरित होते हुए लिखा है, और फिर लीला के पश्चात् अपने स्थान को प्रत्यावर्तन करना। इसी भावना को रवींद्रनाथ काव्यमय कर देते हैं। पर उनकी दार्शनिकता इस तरह की नहीं। वे योरप के कवियों की तरह प्रेम-दर्शन के भी कवि हैं। कहीं-कहीं मार्जित उपनिषद्-भाव आते हैं।

शेली में प्रेम ही की प्रधानता है, साथ-साथ एक अज्ञात सत्य की जिज्ञासा, कविता में उसी की झलक। शेली की कविता में स्वप्नमय कल्पना-चित्र ही रंगीन पंखों से पक्षी की तरह अज्ञात की ओर उड़ जाते हैं, संसार को स्वर्ग बना देते हैं।

"A Sensitive plant in a garden grew,
And the young winds fed it with silver dew,
And it opened its fan-like leaves to the light,
And closed them beneath the kisses of night,
And the spring arose on the garden fair,
And the spirit of love fell everywhere."

"एक होशमंद पौधा बग़ीचे में उगा। युवती हवा इसे चाँदी की ओस पिलाने लगी। इसने पंखों-से अपने पत्रों को प्रकाश की ओर खोल दिया, और उन्हें रात्रि के चुंबन के नीचे बंद कर लिया। उस सुंदर बग़ीचे में वसंत आया। सर्वत्र प्यार की शक्ति फैली।"

इस प्यार की शक्ति से शेली को तमाम प्रकृति चेतन देख पड़ती है। यह शेली के दर्शन की आत्मा है। "Love's Philosophy" (प्रेम-दर्शन) में भी दो आत्माओं का मेल ही उसका कहना है। अन्यत्र जहाँ कहीं एक दार्शनिक की तरह थोड़ा-सा उसने लिखा है, वहाँ सत्यानुभूति, जो काव्य की आत्मा के रूप से प्रायः उसमें देख पड़ती है, दब गई है, और केवल युक्ति का प्राबल्य हो गया है। जैसे—

"I will be wise,
And just, and free, and mild, if in me lies
Such power."

"मैं बुद्धिमान्, न्यायशील, स्वतंत्र और नम्र हूँगा, अगर मुझमें ऐसी शक्ति है।"

यहाँ "अगर" शक्ति के अस्तित्व पर संदेह करता है, जिससे कविता में वे प्राण नहीं, जो पहली पंक्तियों में हैं, जहाँ वह सभी को सजीव तथा चेतन देखता है। "अगर" की जगह "जब कि" करने से ज़ोर तो आता है, पर रूप युक्ति ही का रहता है। शेली का दर्शन बहुत जगह काल्पनिक है, पर काव्य सब जगह दर्शन की चेतन-सत्ता से प्रफुल्ल। प्यार का शेली की कविता में बड़ा महत्व है—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"Whose eyes have I gazed fondly on
And loved mankind the more ?"

यहाँ अपनी प्रेयसी को लक्ष्य करके कवि कहता है—"किसकी आँखों को अनुरक्ति से मैं देखता रहा, जिससे मनुष्यों को मैं और भी प्यार कर सका ?" अन्यत्र जहाँ जीवन के गूढ़ रहस्यों पर शेली ने लिखा है, वहाँ दर्शन की अपेक्षा काव्य ही प्रधान है, इसलिये सुंदर है, अथवा दर्शन को काव्य के द्वारा ज़ाहिर करने की शेली ने चेष्टा की है। रवींद्रनाथ भी इस प्यार को ग्रहण करते हैं। अनेक भावनाओं में, अनेक छंदों के आवर्त में, तरह-तरह के रूप ग्रहण कर उनका प्यार, साहित्य के पृष्ठों में, आया है—

"तोमार सौंदर्ये होक मानव सुंदर
प्रेमे तव विश्व होक आलो।
तोमारे हेरिया जेन मुगुध अंतर
मानुषे मानुष बासे भालो।"

"तुम्हारे सौंदर्य से मनुष्य सुंदर हो, तुम्हारे प्रेम से विश्व प्रभामय, तुम्हें देखकर अंतर-मुग्ध की तरह मनुष्य को मनुष्य प्यार करे।"

× × ×

१४. कविवर रॉबर्ट ब्रिजेज़

इँगलैंड के प्रख्यात कवि रॉबर्ट ब्रिजेज़ इस नश्वर-संसार में अपनी अमर रचनाएँ छोड़कर गत २१ एप्रिल, १९३० ई० को सुरलोक प्रयाण कर गए। आप अँगरेज़ी साहित्य के Poet Laureate * थे।

आपका जन्म २३ ऑक्टोबर (Encyclopædia Britannica † के हाल के संस्करण के अनुसार २५ ऑक्टोबर) १८४४ ई० को इँगलैंड के नार्थ सी (North Sea) ज़िले में हुआ था। आपके पिता मिस्टर आई० टी० ब्रिजेज़ थे। आप अपने पिता की ९ संतानों में आठवें थे। आप बचपन में बड़े ही कौतुक-प्रिय और मशहूर खिलाड़ी थे। ग्यारह आदमियों के खेलों में, तारुण्य में ही, आपने नामवरी हासिल कर ली थी। १८५४ ई० के सितंबर में पढ़ने के लिये आप एटन भेजे गए। वहाँ ९ साल तक रहे। फिर १८६३ ई० के ऑक्टोबर में कारपस क्रैस्टी कॉलेज (Corpus christi college), ऑक्सफोर्ड आए। यहाँ आपने चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन किया, और पदवी प्राप्त की। आपके चिकित्सक-रूप से कवि-रूप का कितना वैषम्य! डॉक्टर ब्रिजेज़ से उस समय किसे आशा थी कि आगे चलकर यही मनुष्य एक दिन इँगलैंड का प्रसिद्ध राज-कवि होगा ? आप निविष्ट-चित्त, दृढ़-व्रत तथा उज्ज्वल-चरित्र विद्यार्थी थे। कालेज-जीवन में ही आपके चेहरे पर महत्वाकांक्षा की किरणें फूट रही थीं। वहाँ आप अपने चारित्रिक विशेषत्व के कारण एक दर्शनीय विद्यार्थी थे।

सलाहकार-चिकित्सक की हैसियत से लंदन के ग्रेट आरमोंड स्ट्रीट के शिशु-अस्पताल तथा ग्रेट नार्दर्न अस्पताल में कुछ दिनों तक आप चिकित्सा करते रहे। १८८२ ई० से आपने इस जीवन का बिलकुल ही परित्याग कर दिया, और एक कवि तथा साहित्यिक की हैसियत से रहने लगे। इस बीसवीं शताब्दी में आपकी अंतिम कृति (The Testament of Beauty) आपकी ८१वीं वर्ष-गाँठ के समय प्रकाशित हुई, जिसमें आपकी बदली हुई रुचि-विशेषता के उत्तम विचार हैं। पहले, १८७३ ई० में, जब आपकी रचनाओं का पहला खंड प्रकाशित हुआ, आपका "अव्यापारेषु व्यापारः" अच्छी तरह ज़ाहिर हो रहा था, जैसे किसी जल्द शुद्ध किए हुए मनुष्य के पूर्व-संस्कार झलक रहे हों। यद्यपि इस समय भी साधारण-जनों में आपका उतना प्रसार नहीं, आपकी अपनी भाषा में भी नहीं, तथापि ऐसविथ की सरकार ने आपकी प्रतिभा तथा परिश्रम के पुरस्कार-स्वरूप, आपको, १९१३ ई० में, आल्फ्रेड आस्टिन के बाद, "Poet Laureate" की उपाधि से सम्मानित किया। साधारण जनों तक आपका नाम न रहने पर भी कुछ चुने हुए आदमी आपके प्रशंसक हो गए थे। १८७३ ई० से आपकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगी थीं।

* राजकवि।
† अँगरेज़ी का कोष।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आपकी अनेक रचनाएँ हैं, पर स्थानाभाव के कारण हम उनका उल्लेख नहीं कर सके। १९२९ ई० में क्लारेडन प्रेस, आक्सफ़ोर्ड, से प्रकाशित आपकी अंतिम पद्य-रचना "Tastament of Beauty" आपकी कृतियों में सर्वोत्तम मानी गई है। इसमें टेनिसन की सादगी है, और साथ-ही-साथ भावों की उच्चता। भाषा के मार्जन में भी, इस पुस्तक में, आपने कमाल दिखला दिया है। आपने शैली में अपने देश के अनेक कवियों की राह ग्रहण की। कभी कीट्स की तरह लिखा, कभी शेली का अनुकरण किया; कभी वर्डस्वर्थ के प्रकृति-चित्रों का साम्य दिखलाया, कभी ब्लेक की राह पकड़ जीवन-रहस्यों का उद्घाटन किया। भाषा के नवीन युग के कार्यकर्त्ताओं में आपका नाम आदर से लिया जाता है। आपकी कृतियों से मालूम पड़ता है, आप ईश्वर पर विश्वास रखते थे। आपकी धार्मिक भावों की कृतियाँ ईश्वर-परायणता सूचित करती हैं।

× × ×

१५. राजा और प्रजातंत्र

योरप के लोगों ने पहले-पहल इस भावना का प्रचार किया कि भारतवर्ष में प्रजातंत्र-राज्य कभी था ही नहीं, इसका उद्भव योरप से ही हुआ है। प्रायः अधिकांश पश्चिमी विद्वानों की पूर्वीय देशों के संबंध में एक ही प्रकार की विचार-धारा है। ओरिएंटल-शब्द की सृष्टि द्वारा यौगिक जो अर्थ पूर्वीय देशों के मनुष्यों के लिये लगाते हैं, उसमें कहीं रद्दोबदल नहीं करते, जैसे सब धान बाईस पसेरी हों, जैसे पूर्वीय सभी देश एक ही तरह की सभ्यता, समाज-शृंखला तथा राष्ट्र-शासन में अभ्यस्त रहे हों। भारतवर्ष को छोड़कर पूर्वीय और जो देश हैं, जैसे यहूदी, अरब, काकेशियन, पारसी आदि, इनमें प्रजातंत्र न था। बादशाह अथवा समाज का मुखिया नेता होता था, उसकी ज़बान ही क़ानून थी। यहूदियों में एकतंत्र-शासन न था। वे लोग देवतों की दोहाई देकर, दैवी शासन क़ायम रखते थे, इसलिये उसे हम प्रजातंत्र-शासन नहीं कह सकते। यही हाल मुसलमानों का था। इधर के पूर्वीय देशों में पश्चिमी सभ्यता-विस्तार के पहले समय तक मुसलमानों का शासन था, और ख़लीफ़ों के बाद से बादशाहत में परिणत होनेवाली मुसलमानी सल्तनतें अन्यान्य बातों को छोड़ जाने पर भी पहले के नियामानुवर्तन को नहीं छोड़ सकीं, वह एकाधिकार, जो पहले से शासन में उनके यहाँ प्रचलित था, अब भी रहा। अब बादशाह का हुक्म ही क़ानून बन गया। अवश्य जातिगत कुछ धार्मिक आदर्श क़ानून में रक्खा गया, पर यह गणतंत्र नहीं।

योरप के लोग इतिहास के इसी युग में चक्कर काट-कर रह जाते हैं, और गणतंत्र या प्रजातंत्र-शासन को इन सभ्यताओं में न पाकर तमाम पूर्वी सभ्यता को इस शासन से अनभिज्ञ क़रार देते हैं। भारत को छोड़-कर अपर देशों में यह बात थी भी नहीं। देव-शासन पारसियों में भी था। सिर्फ़ भारतवर्ष में पहले ही से क़ानून थे, जिन्हें मानकर राजा को भी चलना पड़ता था। इँगलैंड में यह बात अब भी नहीं है। पार्लामेंट जो क़ानून पास कर देता है, सम्राट् यद्यपि उसका खंडन नहीं करते, पर खंडन करने की शक्ति उन्हें मिली हुई है, वे चाहें तो कर सकते हैं। यहाँ वाइसराय तथा गवर्नरों को भी वह शक्ति मिली हुई है, और समय-समय पर वे इसका उपयोग भी करते हैं। यह गणतंत्र नहीं हुआ।

भारतवर्ष के राजों में क़ानून के उल्लंघन की शक्ति न थी। जो क़ानून यहाँ समाज तथा राज्य के शासन में धर्म-शास्त्र के नाम से प्रचलित हैं, वे मनुष्य-शास्त्र ही हैं, उनका संबंध केवल यथार्थ मनुष्यता के साथ जुड़ा हुआ है। बहुत पहले राजा नहीं था, मनुष्यों को शासन की आवश्यकता नहीं थी। कारण, सब लोग अपने धर्म-मार्ग पर चलते थे, यह भारत का स्वर्ण-युग था। महाभारत में महामना भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं, पीछे जब शृंखला के टूटने से अत्याचार बढ़ने लगा, तब पृथ्वी ने अपनी रक्षा के लिये ब्रह्मा से विनय की। ब्रह्मा ने ध्यान-मग्न हो विधानों की सृष्टि की। उन्होंने मानस पुत्र पैदा किया, वह पहला राजा हुआ। विधानों का अनुसरण करता रहा। अमेरिका के प्रेसिडेंट के पहले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भी यहाँ प्रजापति होते थे। वे मनुष्यों को राह पर रखने की बराबर प्रचेष्टाएँ करते और स्वयं भी धर्मानुकूल चलते थे। जब-जब वे धर्म-च्युत हुए, तब-तब उनका प्रजापतित्व जाता रहा। जिस रोमन आटोक्रैसी का पश्चिम में उस दिन तक इतना प्रभाव रहा है, वह भी भारत से ही गई है। आटोक्रेसी भारत के बिगड़े-दिमाग़ व्यक्तित्व-के-इच्छुक राजाओं ने खड़ी की थी। परशुराम ने इक्कीस बार जिन शक्तियों का नाश किया था, वे सब इसी श्रेणी के, गणतंत्र के न माननेवाले, इन राजे-महाराजे थे। आटोक्रैसी इस तरह यहीं से फैली। पर वह भारत का अनुकूल शासन न था।

यहाँ साधारण-जनों द्वारा ही राजा चुना जाता था। वेद-ब्राह्मण-जातक आदि में इसके उल्लेख मिलते हैं। राजपुत्र होने के कारण ही कोई राजा न हो सकता था, जब तक वह प्रजा-द्वारा निर्वाचित न हो। अभिषेक की रीति तथा मंत्रों से स्पष्ट है कि केवल राज-रक्त से संबंध होने के कारण कोई राजा न हो पाता था, उसे जब तक प्रजा न चुने।

राजा मनोनीत करने का वैदिक मंत्र बड़ा ही सुंदर तथा महत्वपूर्ण है, अर्थ है—

"प्रसन्न चित्त से तुम हम लोगों के भीतर आकर प्रतिष्ठित हो, स्थिर हो, हमारे भीतर रहो, सब लोग तुम्हें चाहते हैं।" इस तरह के अनेक मंत्र और अभिषेक के महत्वपूर्ण विधान हैं।

राजा रक्षा के लिये होता था, मारने के लिये या ठगने और लूटने के लिये नहीं। राजा को तलवार ब्राह्मण देता था। कारण यह, ब्राह्मण की दी हुई तलवार हिंसा नहीं करेगी, रक्षा करेगी। वह तलवार सदा ही नीति तथा शांति की प्रतिष्ठा करती रहेगी, अत्याचारियों का दमन तथा दुर्बलों का उद्धार करेगी।

राज-प्रकरण से स्पष्ट है, भारत में पहले गणतंत्र था। बुद्ध-काल में, जहाँ तक आधुनिक इतिहास पहुँच सकता है, भारत में प्रजातंत्र शासन ही था। कभी-कभी अत्याचारियों के कुचक्र से देश फँस जाया करता था, शासन दूसरा रूप ग्रहण कर लेता था। अस्तु, योरप के लोग जो यह कहते हैं कि राष्ट्रीय स्वाधीनता का पूर्वीय लोगों को ज्ञान था ही नहीं, यह माननेवाली बात नहीं, प्रत्युत यह उन्हीं का अज्ञान है।

× × ×

१६. विद्यार्थी और राजनीति

देश के प्रमुख नेता तथा देवियों ने बराबर अपने भाषणों में विद्यार्थियों से अपील की कि वे इस साल देश का राजनीतिक रुख़ देखकर स्कूल तथा कॉलेजों का परित्याग करें, और देश को इस आंदोलन में मदद दें, जिसके फल-स्वरूप गर्मियों की छुट्टी के बाद जो स्कूल खुले हैं, उनमें जगह-जगह स्वयंसेवकों ने पिकेटिंग की। अबके विद्यार्थियों के बलियों से यह शर्त कराई जा रही थी कि विद्यार्थी किसी राजनीतिक कार्य में भाग न लेगा; लखनऊ और इलाहाबाद की पिकेटिंग का कारण यह भी है। लाहौर में कॉलेज-बहिष्कार सबसे पहले किया गया था। यू० पी० में और सर्वत्र चल रहा है। बंगाल में पाँच हज़ार विद्यार्थियों ने खुलने में सभा की, और वहाँ कॉलेज-बहिष्कार का प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है।

× × ×

१७. ढाके का उपद्रव

पहले हम ढाके के उपद्रव का हाल लिख चुके हैं, और यह भी लिखा है कि अभी वह आग बुझी नहीं, बल्कि देहातों में भी फैलती जा रही है। अब एक सरकारी कमेटी ने जाँच करते हुए पता लगाया है कि रोहितपुर में १६१ घर लूट लिए गए, और कई लाख की संपत्ति मुसलमान गुंडे हड़प गए। घर जला दिए, लोगों को पीटा और स्त्रियों पर भी हाथ छोड़ा। पर कमेटी के सामने मुसलमान हिंदुओं पर ही सारा कलंक रखते हैं, शरीफ़ और साधारण, सब मुसलमान हिंदुओं को दोषी बतलाते हैं।

× × ×

१८. कविता में चित्र और भाव

काव्योद्यान में मुख्यतः दो तरह के पुष्प हैं; एक, सीज़नल फ़्लावर की तरह, अनेक रंगों की चमक और सजधज से आँखों में तृप्ति, सुख, चकाचौंध भर देते, दूसरे सिर्फ़ सफ़ेद सादगी रखने पर भी सुगंध से चित्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को चुरा लेते हैं। पहले प्रकार के पुष्प चित्र हैं, दूसरे प्रकार के भाव। दोनों अपरापर इंद्रियों से एक ही मन को प्रसन्न करते हैं, अतः दोनों में कौन काव्य के ऊँचे स्थान पर है, हम नहीं कह सकते।

एक प्रकार की मिश्रित कविता और है, मिश्र-रागिनी की तरह, जिसके हृदय में भाव भी है, और आँखों में सौंदर्य का जादू भी। इस प्रकार की रचनाएँ बहुत ऊँचे दर्जे के कवि कर सकते हैं। ब्रौनिंग और मैथ्यू आर्नल्ड-जैसे कवियों को भी इस प्रकार की रचनाओं में साफल्य नहीं मिला। वे काव्य-समुद्र के अतल-स्पर्श तक पहुँचे अवश्य हैं, पर मुक्ता-प्राप्ति उमर, शेली, रवींद्रनाथ-जैसे कवियों को हुई है। उमर ख़ैयाम ने एक जगह भाव-चित्र के मिश्रित रूप पर लिखा है, जिसका हम यहाँ हिंदी-रूप पाठकों के अवलोकनार्थ रखते हैं—

"जागो, जागो; रात बीत गई; तरुणी-प्रभात ने आँखों की किरणों के तीरों से रात्रि को बेध डाला है।"

कवि बड़ी ख़ूबी से संसार को प्रकाशाभिमुख कर रहा है। यहाँ भावना भी है, एक किशोरी का ज्योतिर्मय चित्र भी।

प्रभात पर कल्पना करते हुए रवींद्रनाथ ने एक जगह चित्र और भावना का निहायत आला चमत्कार दिखलाया है—

"चपल भ्रमर, हे कालो काजल आँखी,
खने खने एसे चले जाव थाकि थाकी।
हृदय-कमल टुटिया सकल बंध
बातासे-बातासे मेलि देय तार गंध,
तोमारे पाठाय डाकी,
हे कालो काजल आँखी!"

"चपल-भ्रमर! हे काले काजल नेत्र! क्षण-क्षण में आ रह-रहकर चले जाते हो। हृदय-कमल समस्त बंधनों को तोड़ वायु-वायु में अपना गंध फैला देता, तुम्हें बुला भेजता है।"

फिर—

"गियाछे आंधार गोपने कांदार राति,
निखिल भुवन हेरो कि आशाय माति
आछे अंजलि पाति।
हेरो गगनेर नील शतदल खानि
मेलिल नीरव वाणी।
अरुण पक्ष प्रसारि सकौतुके
सोनार भ्रमर आसिल ताहार बुके
कोथा होते नाहीं जानी॥
चपल भ्रमर, हे कालो काजल आँखी,
एखनो तोमार समय असिल ना की?
मोर रजनीर भेंगेछे तिमिर बांध
पावनि कि संवाद?
जेगे उठा प्राणे उथलिछे व्याकुलता,
दिके-दिके आजि पावनि किसे वारता?
शोनोनि कि गाहे पाखी?
हे कालो काजल आँखी!"

"अंधकार, निर्जन में रोने की रात बीत गई। देखो, संसार किस आशा में अंजलि फैला रहा है! आकाश के नील शतदल को भी देखो, उसकी नीरव भाषा खुल गई। सकौतुक अरुण पंख फैला, कहाँ से, नहीं मालूम, सोने का भौंरा उसके हृदय पर आ गया। हे चपल-भ्रमर, कज्जल-कृष्ण नयन! क्या तुम्हारा समय अब भी नहीं आया? मेरी रात के तिमिर का बाँध टूट गया है, क्या तुम्हें संवाद नहीं मिला? मेरे जगे हुए प्राणों में व्याकुलता की तरंगें छलक रही हैं, तमाम दिशाओं में क्या तुम्हें वह संवाद नहीं मिला? क्या तुमने नहीं सुना—चिड़ियाँ क्या गाती हैं?"

यह कविता का सर्वोत्तम सौंदर्य है। इन पंक्तियों में कवि ने अपना जीवन ही गूँथ दिया है। आकाश के कमल पर सोने का भ्रमर आ गया है, पर कवि की प्रिया, भौंरे-सी आँखें, अभी नहीं आईं। उनसे वह अपने प्रभात-जीवन की तमाम बातें कह जाता है। पक्षियों के गाने में उसी की स्तुति, प्रशंसा है। रात के तिमिर का बाँध टूट गया, जीवन में प्रभात का प्रकाश है, पक्षियों के मिस तमाम संसार के लोग सभी दिशाओं में उसकी स्तुति करते हैं, पर हाय, उसकी प्यारी वे, न-जाने कौन, भौंरे-सी चंचल आँखें नहीं आईं, यह भावना और रूप का सार्थक निबाह है। अंत में, प्रभात के जीवन का परिणाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कवि के भीतर से कितना मधुर, कवित्व-पूर्ण प्रकट होता है—

"एल ए आमार मन विलाबार बेला,
खेलिब एवार सब हाराबार खेला,
जा किछु दिबार राखिब ना आर ढाकी,
हे कालो काजल आँखी !"

"यह मेरा मन लुटा देने का समय आया। अब सब खो देने का खेल खेलूँगा, जो कुछ देना है, अब ढक नहीं रक्खूँगा—ऐ काजल की काली आँखें !"

आँखों को लक्ष्य कर काव्य के स्वप्न-चमत्कार के भीतर से प्रकाश के पथ पर चलता हुआ कवि सर्वस्व दान कर रिक्त हो जाता है।

भावनामय एक चित्र हिंदी के सुकवि सेवक का—

"सर-सरिता लौं सब सेवक थलानि जल
सरसि गए ते फेरि सरसन लागे री ;
कामना-लता के दल बीर बिरहागिनि तें
झरसि गए ते फेरि झरसन लागे री ।
जोर जब जागे नए बीजुरी से डोरे लाल
दरसि गए ते फेरि दरसन लागे री ;
देखि घनस्याम घनस्याम-से घुमड़ि नैन
बरसि गए ते फेरि बरसन लागे री ।"

सेवक का "ज़ोर जब जागे" ज़रा भावना को कलुषित कर देता है, यों लाल डोरों में हमारे प्राचीन साहित्य-प्रेमियों को 'ज़ोर' भले ही दिखलाई पड़ता हो, और बिजली का साम्य।

"आजु रजनि हम भागे पोहायनु
पेखनु पिय - मुख - चंदा ।"

वैष्णव कवि के इस कीर्तन में भाव और रूप, दोनों निर्मल हैं।

केवल भाव-प्रधान जो कविता होती है, उसमें रूप नहीं होता। भावना की ही चदाँनी रहती है। अधिकांश मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक कविताएँ इसी तरह की होती हैं। वेदांत के भाव इसी तरह के हैं, पर रूप न रहने के कारण बहुत-से समीक्षक उन पंक्तियों को कविता नहीं मानते।

"तुम मुझे भुला दो मन से,
मैं इसे भूल जाऊँगी,
पर वंचित मुझे न रखना
अपनी सेवा से पावन ।"

—सुमित्रानंदन पंत

केवल एक भाव की अभिव्यक्ति है, जो सीधे प्राणों में चोट करती है।

जहाँ सिर्फ़ चित्र है, वहाँ कविता की मूर्तिमात्र रहती है—

"तेरे जहाँ-जहाँ वह बाल
तहाँ तहँ ताल में होय त्रिवेनी।"

—पद्माकर

"All touch, all eye, all ear,
The Spirit felt the Fairy's burning
speech."
—Shelley

रूप-सी अप्सरा को दिखाकर भी शेली केवल एक ज्योति-स्पर्श करा जाता है, जो रूप का बहुत ही सूक्ष्म अनुभव है।

मैथ्यू आर्नल्ड ने "Consolation" में लिखा है—

"Two young fair lovers,
Where the warm June-wind
Fresh from the summer-fields
Plays fondly round them,
Stand, traced in joy."

चारो तरफ़ क्रीड़ा करती हुई ग्रीष्म-समतल की गर्म हवा में पुलकित दो युवक-युवती खड़े हैं। यह तीसरे दर्जे का चित्र है। यद्यपि कवि आर्नल्ड का उद्देश्य विशद है, तथापि अभिव्यक्ति अनुकूल नहीं हुई। जहाँ दोनो आनंद से खड़े हैं, वहाँ पाठक को जान पड़ता है, दोनो के प्रेम का तार कट गया है, वह अपने आनंद में मस्त है, वह अपने में। प्रेमियों के जिस योग-सूत्र की काव्य में आवश्यकता थी, वह नहीं रहा। यहाँ दोनो पाज़िटिव हैं। पर प्रकृति-गत यह निगेटिव-पाज़िटिव का जोड़ा है, जिसके प्रदर्शन में "Consolation" पर लिखनेवाले आर्नल्ड ग़लती कर गए हैं, ख़ूबी नहीं दिखला सके। यदि यहाँ एक ही आनंद-पूर्वक खड़ा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो भी इतने अंश की ऐसी ही छटा रहती। दो के मानी ही हैं शृंगार की पुष्टि, पर चित्र में की झलक नहीं।

"नव कुसुमों में छिप-छिपकर
जब तुम मधुपान करोगे,
फूली न समाऊँगी मैं
उस सुख से हे जीवनधन!"

—सुमित्रानंदन पंत

यह दो प्रेमियों का यथार्थ आदान-प्रदान है। यहाँ तार कटता नहीं, 'Consolation' की यथार्थ झलक, निहायत सुंदर चित्र है। प्रियतम की तृप्ति से ही प्रेमिका प्रसन्न होती है। एक जगह मद्यपान है, दूसरी जगह प्रसन्नता; सिलसिला बँधा हुआ है। पर यदि दोनो एक ही जगह रहकर अलग-अलग मधु पीते और प्रसन्न होते रहते, तो प्रेम की कविता में हास्य-रस की ही अवतारणा हुई होती। आर्नल्ड के चित्र में दोनो मन-ही-मन संयुक्त, आनंद-पूर्वक खड़े हैं। "Fraced" को यौगिक कार्य में किसी तरह लाकर अर्थ-शुद्धि कर ली जा सकती है, पर चित्र फिर भी सुंदर नहीं बन पाता।

कविता-कुमारी की समाराधना कर सिद्ध हुए संसार के बड़े-बड़े साहित्यिक किसी भी बड़े वीर, बड़े संत तथा बड़े राजनीतिक से बड़ा महत्त्व रखते हैं। इन्हीं निर्मल चित्रों तथा भावनाओं से धुली हुई आत्माएँ संसार के प्रत्येक प्रदेश के मनुष्यों से साम्य तथा मैत्री-स्थापना का अपार प्रेम भरकर सरिताओं की तरह दिगंत-विस्तृत हो गई हैं। मनुष्यों की सहानुभूति, स्नेह, प्रेम, ममता और करुणा ने सहस्रों धाराओं में फूटकर अपने हृदय के अमृत से मनुष्यों को सिक्त कर दिया है। वहाँ जाति, वर्ण और धर्म का विचार नहीं रहा।

हर्ष की बात है, हिंदी की आँखों में भी अब साहित्य की नई किरण देख पड़ती है, और उसके कुछ साहित्यिक उच्च साहित्य के निर्माण के लिये, ख़ास तौर से काव्य-साहित्य में, प्रशंसनीय प्रगति दिखला रहे हैं। इसके लिये मानसिक जितना ही प्रसार किया जायगा, साहित्य का उतना ही कल्याण है। पश्चिम के कवियों ने अपर देशों से अपार सहानुभूति प्रकट की है। उनकी आत्माएँ उन्हीं के देश में बँधी नहीं रह गईं। जो लोग इस तरह की भावना को देश के लिये घातक समझते हैं, वे वास्तव में ग़लती करते हैं। कारण, प्रसार ही जीवन है। यदि देश की आत्मा तमाम विश्व में व्याप्त हो जायगी, तो वह कभी मर नहीं सकती। सहयोग ही जीवन है। वर्तमान प्रतिरोध में भी प्रकारांतर से सहयोग ही है। नहीं तो प्रतिरोध किससे? काव्य की भूमि अनंत प्रसार से ही महान् कल्प-वृक्ष को उगा सकती है, जिससे राष्ट्र की सब कामनाएँ सफल होती हैं।

Royal College of Physicians and Surgeons of India (Registered).
Member and Fellowship (M. R. C. P., M. R. C. S., M. R. C. P. & S., F. R. C. P., F., R. C. S., F. R. C. P. & S. Registered) certificate awarded to the medical Practitioners and Students. For Prospectus apply with anna stamp to the Registrar, Dayoganj Road, Dacca, Bengal.

Homeopathic University of India (Registered by the Govt.)
Member and Fellowship certificate granted to the Homeopathic Doctors and Students. Also H.L. M.S., H.M.B., H.M.D. & L.L.D. diploma to Successful Candidates. Apply with anna stamp to the Registrar, 21, Chota Katara, Dacca, Bengal.

LIBRARY
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक नई ख़बर

एक नई पुस्तक "हारमोनियम, तबला ऐंड बाँसुरी-मास्टर" प्रकाशित हुई है। इसमें बहुत-से नई-नई तर्ज़ों के गायनों को सरगमों व नंबरों द्वारा एक नए क़ायदे से समझाकर राग-रागिनी का वर्णन ख़ूब किया है। इसके ज़रिए बिना उस्ताद के हारमोनियम, तबला और बाँसुरी बजाना न आवे, तो मूल्य वापस देने की गारंटी है। पहला संस्करण ख़त्म हो चुका है। पब्लिक ने पुस्तक ख़ूब पसंद की है। मूल्य केवल १), डा० ।-)

पता—गर्ग ऐंड शर्मा कंपनी, हाथरस

लखपती कैसे बन सकते हो?

मूल्यवान् जिंस पैदा करने से

कपास की खेती उन मूल्यवान् जिंसों में है, जिसमें बीघा पीछे ३००), ४००) की आय हो सकती है। 'कपास की खेती'-नामक पुस्तक में बताया गया है कि हम साधारण और सरल रीतियों से कपास की दुगुनी-तिगुनी उत्तमोत्तम उपज कैसे कर सकते हैं? विलायतवाले इसकी उपज से कितने बड़े धनवान् हुए हैं, यह सब विषय बड़े विस्तार से बताया गया है। पुस्तक सचित्र व सजिल्द है। मूल्य ३) कृषि-संबंधी पुस्तकों के प्रख्यात लेखक—

बाबू रामप्रसाद

सूबा व डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट

गुना (ग्वालियर) से हिंदी-उर्दू-भाषा में मिल सकती है।

फ़ैंसी कटार

आत्मरक्षा के लिये स्टील का लोहा

अब आपको दुश्मन, चोर, डाकू और घातकों से भय करने की आवश्यकता नहीं रही। कटार खटकेदार का ग्यान मख़मल ज़री का है। कटार सीप के मूँठ की लंबाई इंच ११ का ३॥) रु०, कटार निकिल की मूँठ की लंबाई इंच १५ का ३), इंच १२ का २), इंच ८ का १॥), पेटी फ़ैंसी मख़मल की १॥), चमड़े की १) ख़र्चा ॥); ऑर्डर के साथ १) रु० भेजिएगा। बंदूक़, तलवार, गुप्ती, भाले, परसा, जेबीडंडा, चाक़ू, जेबी दुधारा कटार, पेशक़ब्ज़, मथुराजी व्रज-भूमि के प्राचीन स्थानों के फ़ोटो इंच ३॥) × ५॥ पूरे सेट में १२ दाम ३), ख़र्चा ।=)

पता—जे० डी० मूँदड़ा, बी ७, मथुरा

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके एक ही रोज़ के तीन बार के लेप से सफ़ेद दाग़ जड़ से न छूटे, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें, प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। दाम ३) रु०।

पता—वैद्यराज पं० महावीर पाठक

नं० ३९, दरभंगा (बिहार)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri